साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ?? अंक १ | रविवार १३ नवम्बर १९८८ | सृष्टि संवत १९७२९४९०८८ | कार्तिक २०४५ | दयानन्दाब्द—१६३
?? एक प्रति ८० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० डालर १० पौंड

★

...ों से—

...हमने लोगो के कठोर हृदयो
...कोमल बनाना है, दूर
...तो को आकर्षित करना है।
...वे अत्याचार भी करे तो
...े उदात्त उद्देश्य को दृष्टि
...खकर हमे तो उनसे प्रेम ही
...ना चाहिए। धर्म के नाम
...दला लेने की भावना सर्वथा
...द्ध है। हमारे उपदेश आज
...चक औषधि को आति
...राहट अवश्य लाते हैं। परन्तु
...जातीय शरीर के संशोधक
...आरोग्यप्रद, वर्तमान आर्य
...न चाहे जो हमे कहें।

—महर्षि दयानन्द

★

- ❁ युग प्रवर्त्तक
- ❁ वेदो के सच्चे अनुयायी
- ❁ 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' मन्त्र के दाता
- ❁ आर्यसमाज के महान् संस्थापक
- ❁ स्वतन्त्रता संग्राम के सूत्रधार
- ❁ महान् समाज सुधारक
- ❁ स्त्री-जाति के उद्धारक
- ❁ दलितोद्धार के कट्टर समर्थक
- ❁ हिन्दी भाषा के उन्नायक
- ❁ गो-माता के रक्षक
- ★ अन्ध-विश्वास और पाखण्ड पर प्रहार करने वाले

युगद्रष्टा

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

महर्षि-स्तवनम्

प्रचण्ड पाखण्ड दलितोऽखण्डयदलम्,
अखण्ड भूखण्ड विमल-यशसाऽमण्डयदयम्।
अनाथाता नाथः पतित-मनुजोन्नीति-निपुणो,
दयानन्दः स्वामी निगम-पथ-गामी विजयते ॥१॥

श्रुतीनामुद्धर्त्ता युग-नवल-जागर्तिमविता,
घनाज्ञानध्वान्तापनयन - पटुर्ज्ञान-सविता ।
समाजोद्धारायार्पित-निज-वपुर्बुद्धि-विभवो,
दयानन्दो योगी त्रिदिव-सुख-भोगी विजयते ॥२॥

—डा० विशुद्धानन्द

ऋषि-निर्वाण-विशेषांक

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त
प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

आतंकवादियों को कुचलने का वैदिक सिंहनाद

लेखक—सोमनाथ शास्त्री
वेद मन्दिर, ज्वालापुर, हरिद्वार

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम् ।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा ।।
अथर्व० काण्ड १, सू० १६, मं० ४ ।।

(यदि) यदि (न) हमारी (गाम्) गाय को (हंसि) मारता है (यदि अश्वम्) यदि अश्व को मारता है (यदि पूरुषम्) यदि पुरुष को मारता है (तं त्वा) उस तुझ आततायी को (सीसेन) सीसे की गोली से (विध्याम) हम बींध देते हैं (यथा) जिस से तू (न) हमारे (अवीरहा) वीरों का वध न करने वाला (असः) होवे।

आज मेरे राष्ट्र का हर तरह से हनन किया जा रहा है। राष्ट्र पर चारों ओर से असुरों ने आक्रमण कर दिया है। हर तरह से असुर मेरे राष्ट्र को नोच लेना चाह रहे हैं। कोई मेरे राष्ट्र की पृथ्वी को बांट लेने की बात करके इसकी अखण्डता का हनन करना चाह रहा है। कोई गाय सदृश उपकारी पशुओं का हनन कर रहा है ताकि मेरा राष्ट्र बल-रहित एवं दुग्ध व धन-धान्य से वंचित रहकर पतन के गहन गर्त में गिर जाए। इतना ही नहीं यह असुरों का आक्रमण मेरे राष्ट्र सैनिकों के सुरक्षा साधनों तक पर भी हुआ है। मेरे राष्ट्र के सैनिकों के हथियारों को ध्वस्त करने का प्रयास किया जा रहा है।

ये असुर शक्तियां मेरे राष्ट्र के शस्त्रों को समाप्त करने पर ही तुली हैं, ये शक्तियां मेरे राष्ट्र की द्रुत संचार व्यवस्था को भी नष्ट-भ्रष्ट कर देना चाह रही हैं, जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र ने [illegible] प्राप्त शस्त्र को भांति द्रुत संचार [illegible] व्यवस्था पंगु हो जाए तथा असुर [illegible] अपने पाप कर्म करने का [illegible] मिल जाए। यह घृणित चाल [illegible] सीमित नहीं है, सर्वाधिक [illegible] विषय तो यह है कि मेरे [illegible] में बसने वाले सभ्य पुरुषों पर [illegible] प्राणघातक हमला किया जा रहा है। राष्ट्रहित में सर्वस्व [illegible] करने को उद्यत वीर, [illegible] पुरुष [illegible] रक्त बहाया जा रहा [illegible] कितने [illegible] निर्दोष, निष्पाप, राष्ट्र-भक्त, सुशील, सभ्य, सुसंस्कृत भद्र पुरुषों के रक्त से ये असुर अपने [illegible] को नित्य कलंकित कर रहे हैं। [illegible] और त्राहि-त्राहि मचा है। [illegible] घृणित कृत्य असह्य हो [illegible] राष्ट्रभक्त भद्र जनता [illegible] सुरक्षा की प्रत्याशा [illegible] करता किन्तु [illegible] होने पर भी [illegible] अवगत हो नहीं [illegible] राष्ट्र में असुरों [illegible] चरम सीमा तक [illegible] हूं कि असुर प्रवृत्तियां मेरे राष्ट्र को पतन की ओर ले जा रही हैं। कहीं राष्ट्रद्रोह है, कहीं मानव रक्त बहाया जा रहा है, कहीं अविश्वास की भावना है। कहीं, स्वार्थवृत्ति है, कहीं एक-दूसरे को नीचा दिखाने की बेढगी चालें हैं। लेकिन मैंने इन्हें समझ लिया है, मैं इन से सख्ती के साथ निपटूंगा। मैं अपने राष्ट्र में किसी भी निर्दोष की हत्या सहन नहीं कर सकता, मैं मानव रक्त को सड़कों, गलियारों, बाजारों में प्रवाहित होता नहीं देख सकता। मैं चाहता हूं कि किसी भी निर्दोष का एक कतरा रक्त भी धरती मां के वक्ष-स्थल पर न पड़े। क्या तुम जानते नहीं हो? मां के वक्ष पर उसी के पुत्र का रक्त गिरने से मां पर क्या बीतेगी? क्या तुम्हें मां के उपकार याद नहीं हैं? जब तुम्हारा एक भी आंसू आंखों से निकलने को होता था, तब तुम्हारी मां क्या कुछ करने को उद्यत नहीं हो जाती थी? उस मां को मत सताओ, उसकी ममता का ध्यान करो।

ऐ राष्ट्रद्रोह से युक्त असुर प्रवृत्ति के हत्यारो, मैं तुम्हें अपने राष्ट्र से खदेड़ कर ही दम लूंगा। मैं तुम्हें अच्छी तरह पहचान गया हूं। अब मैं तुम्हारा सर्वनाश ही करूंगा। मैं तुम्हें तुम्हारे पुत्र-पौत्रों तक से रहित कर दूंगा, मैं तुम पर प्राण-घातक अस्त्रों से वार करूंगा, सीसे की गोली से छलनी कर दूंगा, बन्दी बनाकर कारागार में डालूंगा, तुम्हें ताड़ित करूंगा। ऐ राष्ट्रद्रोह के पंक में स्वयं को कलंकित करने वाले असुरो, तुम शीघ्र ही मेरे राष्ट्र से पलायन कर जाओ, किन्हीं पर्वत मालाओं में जाओ, वहां जाकर अपने आपको समाप्त कर दो, गहन वनों में जाकर वृक्षों से टकराओ, कुछ भी करो, लेकिन मेरी धरती मां को घृणित कार्यों से कलंकित न करो। मेरे राष्ट्र को अशान्ति, दुःख, दारिद्रय, कलह, वैमनस्य, विद्रोह का अड्डा मत बनाओ। मेरा मन राष्ट्र भावों से ओतप्रोत है। राष्ट्रवेदी पर मैं तथा मेरे राष्ट्र के निवासी अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को उद्यत हैं। राष्ट्र को सशक्त एवम् उन्नत करने के लिए मैं सर्वस्व बलिदान के पथ पर बढ़ता हूं। मैं चाहता हूं कि मेरे राष्ट्र के सभी निवासी पूर्ण राष्ट्र-भक्त हों, परस्पर मित्र-भाव से बरतते हों, जिस से मेरे राष्ट्र में सुख और शान्ति का साम्राज्य हो।

आर्यसमाज लाहौर की स्थापना जिनके घर पर हुई—

खान बहादुर डा० रहीम खाँ

—डा० भवानीलाल जी भारतीय

११ अप्रैल १८७७ को स्वामी दयानन्द जब अविभाजित पंजाब की राजधानी लाहौर पहुंचे तो उन्हें रतनचन्द दाढ़ी वाले के बाग में ठहराया गया और बावली साहब नामक स्थान में उनके प्रवचनों की व्यवस्था की गई। जब पौराणिकों ने यहां उनके व्याख्यानों में विघ्न उत्पन्न किया तो ब्रह्मसमाज के मन्दिर में जो अनारकली बाजार में था, उनके उपदेश होने लगे। विरोधियों को इससे भी सन्तोष नहीं हुआ और उन्होंने रतनचन्द दाढ़ी वाले को इस बात के लिए विवश किया कि वह स्वामी जी को अपने स्थान से हट जाने के लिए कहे। परिणामतः स्वामी जी को जिस व्यक्ति के यहां रहना पड़ा वह इस्लाम का अनुयायी होने पर भी वस्तुतः मानवता का विश्वासी था। इतिहास इस डा० रहीम खां के नाम से जानता है। इन्हीं डा० रहीम खां ने स्वामी जी को अपना अतिथि बनाया और उस अकिंचन सन्यासी के निवास की व्यवस्था कर इन्सानियत के ऊंचे आदर्श का नमूना पेश किया।

लाहौर से प्रकाशित होने वाले पत्र दि ब्राह्म ने इस सम्बन्ध में लिखा था—"स्वामी जी के शुभ चिन्तकों ने निवास के लिए एक दूसरी कोठी का प्रबन्ध कर दिया। यह नई कोठी इस नगर के प्रसिद्ध डा० खान बहादुर रहीम खां साहब की है जिनके सौजन्य और उदारता का पाठक इस बात से भली प्रकार अनुमान कर सकते हैं कि मुसलमान होने पर भी जब लोगों ने उनसे कोठी के लिए प्रार्थना की तो उन्होंने अत्यन्त प्रसन्नता के साथ कोठी स्वामी जी के लिए प्रदान की। वस्तुतः खान साहब की यह ऐसी कृपा थी, जिसके लिए स्वामी जी के शुभ-चिन्तक सदा आभारी रहेंगे। यह कोठी स्वयम् इतनी बड़ी थी और उसके आगे का चौक इतना विस्तृत था कि स्वामी जी के निवास के अतिरिक्त उनके व्याख्यान के लिए भी अत्यन्त श्रेष्ठ और उपयुक्त समझी गई।"

डा० रहीम खां का विस्तृत परिचय हमें उपलब्ध नहीं होता, किन्तु इतिहास इस बात का साक्षी है कि विश्व के सर्वाधिक सक्रिय और सुख्यात लाहौर के आर्यसमाज की स्थापना भी इन्हीं डा० रहीम खां की कोठी में ही हुई थी। पं० लेखराम रचित श्री महाराज के जीवन चरित्र के अनुसार जब स्वामी जी डा० रहीम खां साहब की कोठी में (जो नगर के बाहर छज्जू भगत के चौबारे से लगी हुई थी) उतरे थे, उस समय उन्होंने लोगों को बताया कि आर्य धर्म की उन्नति तभी हो सकती है जब नगर-नगर और ग्राम ग्राम में आर्यसमाज स्थापित हो जावे। अतः २४ जून १८७७ रविवार तदनुसार ज्येष्ठ सुदी १३ सं० १९३४ वि० के दिन लाहौर के वार्षिक विवरण में स्पष्ट अंकित है कि प्रथम सप्ताह की उपासना डाक्टर रहीम खां साहब की कोठी में हुई और हवन भी हुआ और वहीं आर्यसमाज की नींव रखी गई। यह भी उल्लेख मिलता है कि स्वयं डा० रहीम खां आर्यसमाज लाहौर के सभासद बने थे।

इन पंक्तियों के लेखक ने स्वामी दयानन्द के शोध पूर्ण जीवन-चरित

(शेष पृष्ठ ३ पर)

राष्ट्रीय जागरण के इतिहास मे

महामानव महर्षि दयानन्द

लेखक—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

संसार के इतिहास मे प्राय देखा जाता है कि समय समय पर मानव जाति को उठाने के लिए कुछ विशेष आत्माए इसी धरती पर अवतीर्ण होती हैं। सृष्टि की उत्पत्ति एक अरब सत्तानवे करोड वर्ष पुरानी हो चुकी है। महापुरुषों की लम्बी सूची में अनेक पराक्रमी व चक्रवर्ती राजा-महाराजा, ऋषि-मुनि, बड-बडे योद्धा एवम् उच्चकोटि के महामानव इस धरती में पैदा हुए और अपना-अपना काम करके, अपनी छाप संसार में छोड गए।

संसार की राजनीति में सब से पहले सम्राट् वैवस्वत मनु हुए, उन्होने राज्य प्रणाली का आविष्कार किया और वेद के आधार पर उस समय की जनता को अपने-अपने कर्तव्य के पालन की ओर अग्रसर किया। इसी प्रकार सदिया बीतती गइ और बड-बड महापुरुष अपना अपना काम करके चलते रहे किन्तु इतिहास मे उनकी अमर गाथाए आज भी सुरक्षित हैं।

आर्यभूमि भारत मे लगभग ५ हजार वर्ष पूर्व महाभारत के युद्ध के पश्चात बड बड राजाओ और महाराजाओ का ह्रास हुआ और वैदिक धर्म का लोप होने लगा। महाभारत पश्चात भारत मे धर्म का जो ह्रास हुआ उसका दिग्दर्शन इतिहास के पृष्ठो मे देखा जा सकता है। राजनीतिक गिरावट के साथ साथ धार्मिक गिरावट भी देश मे आई और वैदिक धर्म अनेक भागो मे बट गया। वाम मार्ग का उदय हुआ और वाम मार्ग के कारण जैन और बौद्ध धर्म ने जन्म लिया। हिन्दू समाज वैष्णव तथा शाक्त आदि अनेक सम्प्रदायो मे विभक्त हो [illegible] जिसके परिणामस्वरूप [illegible]वाद का प्रादुर्भाव हुआ।

धार्मिक चेतना

जैन और बौद्ध धर्म के प्रचार का सामना करने के लिए शंकराचार्य भारतीय मंच पर उभरे और इन नास्तिक मतो का मुकाबला करने के लिए उन्होने अद्वैत ब्रह्म का प्रतिपादन किया। जहा नास्तिक लोग प्रकृति की उपासना करते थे और ईश्वर की स्तुति व सत्ता से इंकार करते थे, वहा आचार्य शंकर ने प्रकृति का खण्डन कर एक ईश्वर [illegible] का प्रचार किया। इसके बाद महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होने ईश्वर-जीव और प्रकृति के अनादि सिद्धान्त का प्रतिपादन किया और धर्म के नाम पर मूर्तिपूजा, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध, छूत-छात आदि का घोर विरोध किया। महर्षि दयानन्द ने यह अनुभव किया कि धर्म के ह्रास के कारण राज्य का भी ह्रास हो गया है। इसलिए उन्होने देश की राजनीतिक परिस्थितियो को सुधारने का काम किया, जिसके परिणामस्वरूप हिन्दू जाति मे राजनीतिक और धार्मिक चेतना पैदा हुई।

सन १८७५ में महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की। अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश' मे खुले रूप में अपने देश में अपने राज्य का समर्थन किया और विदेशी राज्य की बुराइयो पर खुले रूप मे अपने विचार जनता के सामने रखे।

सन १८८५ वर्ष मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना एक अंग्रेज मि० ह्यूम ने की किन्तु उस समय कांग्रेस के सामने पूर्ण स्वतन्त्रता का कोई लक्ष्य नहीं था, बल्कि लक्ष्य यही था कि जिलाधीश और पुलिस अधिकारी भारतीय हो, इसी आधार पर मि० ह्यूम ने तत्कालीन शासको से विचारविमर्श किया, किन्तु इससे १० वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना करके पूर्ण स्वतन्त्रता की माग कर दी थी, जिसे ४६ वर्ष पश्चात् कांग्रेस ने लाहौर अधिवेशन में पं० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में स्वीकार किया था।

स्वामी दयानन्द ने १८७२ मे कलकत्ता के प्रमोद कानन में बैठकर तत्कालीन वायसराय मि० लार्ड नार्थब्रुक के साथ जो भेंट की उसमे वायसराय महोदय ने महर्षि दयानन्द से कहा— स्वामी जी! आप ईसाई, मुसलमान पौराणिक व जैन आदि धर्म का खण्डन करते हैं, आपको जान का कोई खतरा तो नही है? अन्यथा आपकी सुरक्षा का प्रबन्ध कर दिया जाएगा।' महर्षि दयानन्द ने जवाब दिया—"नही महोदय, आपके शासन मे मेरे धर्म प्रचार मे किसी प्रकार का खतरा नहीं है। मुझे सर्वशक्तिमान ईश्वर पर विश्वास है, वही मेरा सरंक्षक है।" इस पर वायसराय ने बड गम्भीर भाव से कहा— 'महाराज यदि हमारा राज इतना अच्छा है तो आप जब उपदेश करते हैं, तो परमात्मा से प्रार्थना कर दिया कर कि अंग्रेजों का राज बहुत दिनो चलता रहे।" वायसराय की यह बात सुनकर महर्षि दयानन्द का चेहरा ताम्बे की तरह लाल हो गया उन्होंने कहा— "अंग्रेज सरकार बहुत दिन तक चले, ऐसी प्रार्थना मै नही कर सकता। मैं तो भगवान से यही प्रार्थना करता हू कि वह कैसा अच्छा दिन होगा जब अंग्रेज भारत छोडकर चले जाएगे।" इस मुलाकात के बाद अंग्रेज सरकार का रवैया स्वामी दयानन्द के प्रति बहुत कठोर हो गया और उनके पीछे सी० आई० डी० लगा दी गई और उन्हें मरवाने के षड्यन्त्र किए जाने लगे।

जोधपुर में डा० अली मर्दान खा जिसने महर्षि का इलाज अन्तिम समय मे किया था, वह भी अंग्रेजो का पिट्ठू था राष्ट्रीय और धार्मिक चेतना के अग्रदूत महर्षि दयानन्द ने अजमेर में आज से ठीक १०० वर्ष पूर्व दीपावली के दिन इस संसार को सदैव के लिए त्याग दिया।

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के दस नियम बनाकर धर्म के सिद्धान्त का जो स्वरूप हमारे सामने रखा है वह इतना पूर्ण है कि इससे बाहर कोई चिन्तन की चीज नहीं रही।

मैं आर्य बन्धुओ से इतना ही कहना चाहता हू कि वे आपसी झगड, मन मुटाव को दूर कर यही आर्यसमाज की प्रगति मे रोडा है। हम एक दूसरे पर विश्वास करके समझने का प्रयास करना चाहिए। यज्ञो के माध्यम से धार्मिक वृत्ति का प्रचार कर। घर-घर में वैदिक ज्योति जगाए और इसका प्रचार-प्रसार करें।

नया जन आन्दोलन अपेक्षित

४० वर्ष की राजनीतिक स्वतन्त्रता का सिंहावलोकन करते हुए यह कहने मे सकोच नही है कि इस समय राजनीतिक दल धर्म निरपेक्षता की आड मे भारत के बहुमत की पग पग पर अवहेलना कर रहे हैं। इन सब का मुकाबला करने के लिए आर्यसमाज को हिन्दू जाति का एक प्रचण्ड संगठन खडा करके ईसाई, मुसलमान व सिक्खों के अलगाववाद के नारे का देश भर में सक्रिय विरोध करके जन-आन्दोलन चलाना चाहिए। आज केवल चुप-चाप होकर काम करने का अवसर नही है, अपितु प्रचार की भी बडी आवश्यकता है। आर्यबन्धु इस दिशा मे भी सदैव जागरूक रहे।

निर्वाण दिवस पर युग द्रष्टा स्वामी दयानन्द के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हम 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' के उद्घोष को अपने कार्यक्रम का अंग बनाए।

●

(पृष्ठ २ का शेष)

आर्यसमाज लाहौर की स्थापना

"नवजागरण के पुरोधा—दयानन्द सरस्वती' मे इस प्रसंग में लिखा है—'क्या यह सुखद आश्चर्य नही है कि इस बार जिस व्यक्ति ने स्वामी जी को अपनी कोठी पर रहने के लिए आमन्त्रित किया, वह और कोई नहीं धर्म विषयक [illegible] मे अत्यन्त सहिष्णु तथा उदार-भावापन्न पुरुष डा० रहीम खा थे। आर्यसमाज प्रवर्तक के उदात्त एवं मानवतावादी दृष्टिकोण को हृदयंगम करने में असमर्थ व्यक्ति इस बात का अनुमान भी नही कर सकते कि दयानन्द की प्रगाढ सत्य निष्ठा ने उन्हें आर्य धर्मतर लोगों में भी पर्याप्त लोकप्रिय तथा श्रद्धास्पद बना दिया था।'

अनुपम युगविधाता

लेखक—अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

यह लेख अब से लगभग ५८ वर्ष पूर्व सम्भवतः सन १९२५ में—स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने लिखा था। एक सन्यासी की दूसरे सन्यासी के प्रति—जिसने उच्छृङ्खल युवक मुन्शीराम को सत्पथ पर प्रवृत्त करके स्वामी श्रद्धानन्द के रूप में देश और धर्म का दीवाना बना दिया, की इस विवरणिका को काल भी जीर्ण नहीं कर सकता।

अन्य धार्मिक संशोधकों की तरह दयानन्द केवल एक ऐतिहासिक पुरुष ही नहीं हैं अपितु वह करोड़ों नर-नारियों के सामने प्रत्यक्ष कार्य करते रहे हैं और उनके चरित्र से परिचित इस समय भी बहुत से पुरुष विद्यमान है, जिनमें से लेखक भी एक है। यूरोपियनों ने उसे भारतीय लूथर' कहा, हिन्दुओं ने शंकराचार्य का अवतार लिखा, अमेरिका में बैठे योगी ऐन्ड्रयू जैक्सन डविस ने परमात्मा का आज्ञापालक पुत्र बतलाया, जिसने जो कुछ समझा, उसी रूप में दयानन्द को देखा। दयानन्द के अन्दर शारीरिक, मानसिक और आत्मिक सभी प्रकार की उत्तम शक्तियों का उत्तम रूप में समावेश था। दो गज से ऊँचा कद, तेजोमय उन्नत तथा प्रशस्त ललाट, दुहरा परन्तु गठा हुआ बदन, पक्का न बदलने वाला रंग, आँखों की ज्योति में असीम आकर्षण शक्ति, जिसके तेज के आगे ठहरना कठिन, वाणी में माधुर्य और वीर रस का मेल. सारांश यह कि उस विशाल, प्रभावशाली मूर्ति को देखकर यह ज्ञात होता था कि परमेश्वर ने इसे मनुष्यों के हृदयों पर राज्य करने के लिए जन्म दिया है। आधुनिक हिन्दुओं ने योग के साथ शरीर की सूक्ष्मता का सम्बन्ध जोड़ रखा है। दयानन्द ने प्रत्यक्ष सिद्ध कर दिया कि बाल ब्रह्मचारी योगी के अन्दर शारीरिक शक्ति की भी पराकाष्ठा होती है। बिहार में एक ब्रह्मचारी को साथ लिए जा रहे हैं २० मन बोझ से लदे हुए छकड़े को ३ मजबूत बैल खींच रहे हैं, पहिए अर्ध कीचड़ के अन्दर धस गए हैं बीसियों आदमी प्रयत्न करने पर भी छकड़े को आगे चला नहीं सकते। दयानन्द अपनी पुस्तकों का बोझ रख कीचड़ में उतर जाता है। बैल खोल दिए जाते हैं। जुए को बगल में दबा कर बाल ब्रह्मचारी चल देता है, छकड़ा कीच से निकल सड़क पर आ जाता है।

निर्भीकता और दयालुता

निर्भीकता का एक ही उदाहरण पर्याप्त है। सत्य सनातन वैदिक मत का मण्डन और असत्य मतों का खण्डन हो रहा है। क्रोध से विवश हो कलियुगी राजपूत म्यान से तलवार निकाल लेता है। पुरुष सिंह की गरज से लरज कर राजपूत की तलवार हाथ से गिर जाती है, और ऋषि का गम्भीर नाद सुनाई देता है—"क्षत्रिय का कृपाण अधर्म को देखे बिना म्यान से बाहर नहीं निकलता और जब निकलता है तब बिना दुष्टों को दण्ड दिए म्यान में नहीं जाता।" कितनी ही बार बड़े से बड़े सांसारिक आक्रमणों के सामने दयानन्द का विशाल वीर हृदय चट्टान की तरह दृढ़ रहा। इसके उदाहरण पर उदाहरण देने के लिए स्थान नहीं है। फिर हृदय की कोमलता का क्या ठिकाना है। खण्डन रूपी खड्ग से दलित ब्राह्मण ने विषयुक्त पेड़ सामने धर दिए, योगी ने परीक्षा करके भाँप लिया ब्राह्मण घबड़ा गया, परन्तु दयालु आचार्य ने उसे उपदेश देकर विदा किया। ऋषिभक्त मुसलमान तहसीलदार ने दुष्ट ब्राह्मण को अन्य अपराध लगाकर ६ महीने का कारावास दिया। तहसीलदार अपनी कारगुजारी की दाद लेने आया। ऋषि ने मुँह फेर पूछने पर उत्तर दिया— मैं कैद कराने नहीं आया हूँ किन्तु संसार को अविद्यान्धकार-रूपी कारावास से छुड़ाने आया हूँ।'

दयानन्द की शारीरिक, मानसिक और आत्मिक योग्यता के इतने उदाहरण ही पर्याप्त हैं। उन सब घटनाओं से इतना ही पता चलता है कि दयानन्द एक उच्चकोटि का मनुष्य था। परन्तु जो शिक्षा उसने अपने समय में फैलाई उसकी दृष्टि से हम उसे 'तत्त्ववेत्ता' कह सकते हैं क्योंकि हमें वह भारत वर्ष में वर्तमानयुग का विधाता दिखाई देता है।

युग विधाता दयानन्द

एक यूरोपियन विचारक ने लिखा है—

"किसी युग का आदर्श मध्यस्थ संशोधक अपने समकालीन पुरुषों की अधिक संख्या की दृष्टि में अवश्यमेव पीछे की ओर ले जाने वाला प्रतीत होता है। इसके कई कारण हैं परन्तु मुख्य कारण एक ही होता है जो विविध दृष्टियों से देखा जाता है। सच्चा संशोधक वह मनुष्य नहीं है जिसने समय की क्षणिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए कोई नई बात गढ़ने की मौलिकता हो। सच्चा संशोधक वह है जो प्राचीन संशोधकों के काम के अन्दर घुसकर उनके विचारों के स्वाध्याय से स्थिर मूल्य और महत्त्व के सिद्धांतों को चुन लेता है।"

भारत में यह सर्वमान्य सच्चाई है कि आत्मज्ञान के प्रसारक बालब्रह्मचारी स्वामी शंकराचार्य के पश्चात बालब्रह्मचारी दयानन्द ने ही सच्चे संशोधक का आसन ग्रहण किया था। वे अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के अन्त में लिखते हैं—"सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् साम्राज्य, सार्वजनिक मुनि पर्यन्तों के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं। मैं अपना मन्तव्य उसको जानता हूँ कि जो तीन काल में सब को एकसा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना या मत मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है।"

संसार में ऐसे विरले ही लोग होते हैं। जो सर्वथा किसी नए सिद्धान्त का प्रादुर्भाव करें। तत्त्ववेत्ता वे नहीं कहाते जो किसी नये सिद्धान्त का प्रादुर्भाव करें, क्योंकि इन अर्थों में तत्त्ववेत्ताओं की संख्या छंटते छंटते शायद शून्य तक पहुँच जाए। तत्त्ववेत्ता वे कहाते हैं जो पहले से विद्यमान अनेक सिद्धांतों की परीक्षा कर एक नवीन रूप तथा अपेक्षया सत्य के अधिक पास विद्यमान सिद्धांत का प्रकाश तथा व्याख्यान करें। तत्त्ववेत्ता का काम ठीक ठीक चुनाव करना है, नई घड़न्त करना नहीं। इस अनन्त जीर्णाङ्ग संसार में भला नई घड़न्त कैसे सम्भव है? उपस्थित सच्चाइयों में से चुनाव किया जा सकता है, उनमें से किसी एक का विस्तार भी किया जा सकता है किन्तु किसी नई सच्चाई का सर्वथा उद्भव करना असम्भव है। कपिल मुनि भारी दार्शनिक थे किन्तु उनका दर्शन "अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णाम्" इत्यादि उपनिषद वाक्य का व्याख्यान मात्र था। यूरोप के विकासवादी (Evolutionist) डार्विन, हर्बर्टस्पेंसर और वीजमैन तत्त्ववेत्ता कहाते हैं, किन्तु वस्तुतः वे भी कपिलमुनि के परिणामवाद के व्याख्याता मात्र ही हैं। तत्त्ववेत्ता सच्चाई के उद्भावक नहीं होते, किंतु चुनने वाले और व्याख्या करने वाले होते हैं। चुनना तथा व्याख्या करना तत्त्ववेत्ताओं के सम्बन्ध में बहुत बड़ा महत्त्व को पा जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि तत्त्ववेत्ताओं का कार्य चुनाव तथा व्याख्यान का है। इस दृष्टि से ऋषि दयानन्द ने वेदादि सत्य शास्त्रों में से जिन छिपे रत्नों को चुनकर जनता के सामने रक्खा उन्हें देख दयानन्द की बुद्धि का चमत्कार प्रतीत होता है।

युग की आवश्यकता

दयानन्द के कार्यक्षेत्र में आने के समय यद्यपि भारत में कई छोटे-बड़े सम्प्रदाय काम कर रहे थे परन्तु सबके सब अपने पुराने आदर्शों से गिर चुके थे। विचार-स्वातन्त्र्य का ऐसा तिरोभाव था मानो उसका कभी प्रादुर्भाव ही नहीं हुआ। धार्मिक सामाजिक और राजनैतिक साहस नहीं होता था। ऋषि दयानन्द ने अन्य संशोधकों की तरह बाह्य कुरीतियों से जूझने का प्रयत्न ही न किया प्रत्युत गिरावट के कारणों की तह में जाकर मुर्दा जाति में प्राण डालने का साहस किया।

धार्मिक संशोधन के क्षेत्र में मायावाद, प्रकृतिवाद और नैष्कर्म्यवाद तथा शून्यवाद के एकदेशीय जालों को छिन्न भिन्न कर दयानन्द ने कर्मवाद तथा त्रयीवाद की स्थापना करके समकालीन सम्प्रदायों की सब कमियों को पूरा कर दिया। मूर्ति पूजन, अद्वैतवाद, मृतकश्राद्ध, पाप की क्षमा, अवतारवाद और इसी तरह के बीसियों अन्धविश्वासों के जाल पर वार करने का उस समय किसे साहस होता था? दयानन्द ने दृढ़ता से इन सबका मुकाबला किया। पण्डितों मौलवियों और पादरियों की दासता से जनता को छुड़ाने के लिए तर्क के ऐसे बाण छोड़े कि सारा जाल कट गया। उन्होंने दिव्य दृष्टि से देखा कि परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति तीनों प्राचीन हैं। उनके परस्पर सम्बन्ध का ज्ञान भी अनादि है। सारे संसार के सम्प्रदायों का स्रोत भी वही ज्ञान होना चाहिए। जब नवीन कुछ भी नहीं, तो नवीन कल्पना से क्या प्रयोजन? जब सम्पूर्ण मतमतान्तर एक अनादि ज्ञान से ही निकले हैं तो उनमें पराया है ही क्या? जब सब अपने हैं तो उन सबमें पीछे से मिली हुई अविद्या को दूर करना भी अपना

(शेष पृष्ठ ५ पर)

(पृष्ठ ४ का शेष)

अनुपम युगविधाता

ही कर्त्तव्य है। इस उदार दृष्टि से दयानन्द ने किसी मत को भी पराया न समझते हुए, सब में धार्मिक संशोधन का ही प्रयत्न किया। इस सच्चाई को न समझकर साधारण मस्तिष्क वाले पुरुष ऋषि दयानन्द के खण्डन खडग की निंदा करते हैं, परन्तु दीर्घदर्शी पुरुष जानते हैं कि 'दयानन्द ने जो खण्डनात्मक कार्य किया वह उस उदार आत्मा का कर्त्तव्य ही था। अल्पबुद्धि जन उसे समझ नहीं सकते।

सब मतों में सुधार

सबसे पहले वैदिक धर्म से निकले मतों को सीधा रास्ता दिखाने के लिए वेदार्थ का सरल मार्ग ऋषि ने दिखलाया। पौराणिकों की बुद्धि चकित रह गई। मुसलमानों में सर सैयद अहमद ने दयानन्द के महत्त्व को समझा और उनसे शिक्षा पाकर कुरान का बुद्धि पूर्वक भाष्य आरम्भ कर दिया। बहिश्त के नये अर्थ किए और कुरानियों को अन्ध विश्वास से निकालने का प्रयत्न किया। कादियानी मिरजा ने भी अपने मत को बचाने के लिए उसी स्रोत से शिक्षा लेकर भी कृतघ्नता से स्रोत पर लाञ्छन लगाना आरम्भ किया। खालसा वीरों ने भी अन्धविश्वास की दासता से निकलने का उसी समय पाठ पढा। ईसाइयों में भी खलबली मच गई और उन्होंने भी उस समय से अपनी धर्म पुस्तक के नये नये भाष्य करने प्रारम्भ किए।

सामाजिक स्वतन्त्रता की बुनियाद

सामाजिक क्षत्र में वर्णाश्रम व्यवस्था को क्रियात्मक स्वरूप देकर दयानन्द ने सारे युग को टा दे दिया। ब्रह्मचर्य और सन्यास का शुद्ध स्वरूप अपने जीवन में दिखा, गृहस्थों को गुणकर्मानुसार वर्णव्यवस्था को मर्यादा बतला, जहाँ एक ओर स्वछन्दतारूपी बोलशेविज्म (Bolshevism) से संसार को बचाया, वहाँ दूसरी ओर प्राकृत नियमों के विरुद्ध स्थापित जाति-बन्धन की जंजीरों को तोड़कर सामाजिक स्वतन्त्रता की बुनियाद डाली। शताब्दियों से अन्ध विश्वास में जकड़ा हुआ हिन्दूसमाज स्थिर सड हुए छप्पड (कच्चे तालाब) की तरह तामसवृत्ति में बेहोश पड़ा था, ऋषि ने तालाब को हिलाकर हिन्दुओं को जागृत किया। जो सडांद उठी उससे वह घबरा गए, परन्तु जब सम्पूर्ण कीचड से बाहर निकाल कर समाजरूपी जल को स्वच्छ कर दिया जाएगा, तब हिन्दू जनता ऋषि के उपकार समझेगी।

राजनैतिक चेतना

दयानन्द धार्मिक और सामाजिक क्षत्र में ही युग का विधाता नहीं हुआ, प्रत्युत—

राजनैतिक क्षत्र में भी उसने बड परिवतन कर दिए। आज 'स्वदेश भक्ति' 'साम्राज्य और 'प्रजातन्त्र राज्य की चारों ओर धूम मच रही है, परन्तु ऋषि दयानन्द ने ४२ वर्ष पूर्व राजनैतिक शास्त्र की स्पष्ट बुनियाद डाल दी थी। जिस आर्य शास्त्र को एक सत्तात्मक राज्य का गुलाम समझा जाता था उसी में से दयानन्द ने सिद्ध किया कि एक सत्तात्मक राज्य प्राकृतिक नियम के विरुद्ध है। सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में तीन सभाओं (विद्यायसभा, धर्मार्य सभा और राजार्य सभा) को बुनियाद डालकर शतपथ ब्राह्मण के प्रमाण से बतलाया कि एक सत्तात्मक राज्य कभी न होना चाहिए उससे प्रजा का कभी कल्याण नहीं हो सकता। राजसभा के प्रधान और सदस्यों के परस्पर संबंध बतला कर राज्य का सम्पूर्ण प्रबन्ध-स्वदेशी अधिकारियों के ही अधीन करने पर बल दिया। फिर लक्ष ग्रामों की एक राजसभा के प्रबन्ध का वर्णन करके लिखा—

'लक्ष ग्रामों की राजसभा को (कर्मचारीगण) प्रतिदिन का वर्तमान जनाया कर और वे सब राजसभा, महाराजसभा अर्थात् सार्वभौम महाराज चक्रवर्ती राजसभा में सब भूगोल का वर्तमान जनाया कर।' इस प्रकार से अन्तर्राष्ट्रीय सभा की भी बुनियाद आर्य ग्रन्थों से दिखला दी।

राजनैतिक उन्नति के अभिमानी योरोप का केन्द्र ब्रिटेन समझा जाता है। कहा जाता है कि इंग्लैंड की भूमि पर पैर रखते ही गुलाम आजाद हो जाता है। ब्रिटेन प्रजातन्त्र राज्य का आदर्श समझा जाता था और उसका नाम राष्ट्रीय सभाओं की माता रखा हुआ था। परन्तु अन्य देशस्थ मनुष्य समाजों को गुलाम बनाने में उसे कोई संकोच नहीं होता और उस राष्ट्र की पार्लियामेंट में भी पहिले पहल यह भाव प्रधानामात्य सर हेनरी कैम्पबैल बनरमैन ने ही प्रकट किया था कि प्रजातन्त्र शासन का स्थान उत्तम शासन भी नहीं ले सकता।" परन्तु उससे भी बीस वर्ष पहिले सच्चे संशोधक दयानन्द ने लिखा था —

'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रहरहित अपने और पराए का पक्षपातशून्य प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है।" इससे अधिक स्वराज्य की महिमा कोई क्या कहेगा? परन्तु सच्चे दीर्घदर्शी ऋषि ने अयोग्य शीघ्रगामी राजनैतिक स्थिति से सावधान भी कर दिया। स्वराज्य प्राप्ति के लिए जो प्रत्येक देशवासी का कर्त्तव्य है। 'परन्तु भिन्न-भिन्न भाषा पृथक-पृथक शिक्षा अलग अलग व्यवहार का विरोध छूटना अधिक दुष्कर है। बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है। इसलिए जो कुछ वेदादि शास्त्रों में व्यवस्था वा इतिहास लिखे हैं उसी का मान्य करना भद्र जनों का काम है।

यह बड़ी कठिन मंजिल है। इसके लिए वेद शास्त्रों के सिद्धान्तों को समझकर उस पर अमल करना आवश्यक है। जहां धार्मिक और सामाजिक उन्नति के क्षत्र में भी प्रजा को दयानन्द के पीछे चलकर ही कल्याण-मार्ग प्राप्य है, वहाँ राजनैतिक क्षत्र में भी ३१ करोड [अब ६२ करोड स०] भारतवासियों को ऋषि दयानन्द के बतलाये मार्ग पर ही चलना पडेगा। यह सम्भव है कि झूठ अभिप्राय में फंस कर भारत के वर्तमान नेता ऋषि दयानन्द का नाम लेने में आनाकानी करें परन्तु उन को वास्तविक सफलता के लिए चलना उसी के निर्दिष्ट मार्ग पर पडेगा।

आओ 'तत्त्ववेत्ता, सच्चे संशोधक युगविधाता स्वाभिमानी भारत के भाग्य-निर्माता ऋषि दयानन्द की शिक्षा का गहरी दृष्टि से स्वाध्याय करें

योगी एक निराला आया

तम पूरित जग में जिसने,
बन सूर्य रश्मि आलोक दिखाया।

(१)

वेद ज्ञान ज्योति से ज्योतित, प्रभु प्रेम पावन रस प्लावित।
महामहिम महिमा से मंडित, दिग्दिगन्त जिसका यश छाया॥

(२)

ताम्रवर्ण ब्रह्मचर्यदीप्त तन, सरल-सरल कोमल-कोमल मन।
निर्मल बुद्धि, उज्ज्वल जीवन, विधि ने कैसा रूप बनाया॥

(३)

सत्य स्नेह, स्रोत सुख सागर, प्रबल प्रताप पुञ्ज पाप हर।
देख दिव्य दयानन्द दिवाकर, भागी निशा प्रात मुस्काया॥

(४)

ले पाखण्ड खण्डनी कर में,
बढ़े ऋषि शास्त्रार्थ समर में।
भगदड़ मची पोप के घर में,
कांपी पाखण्डों की माया।
योगी एक अनोखा आया॥

—श्री उत्तम चन्द शरर एम० ए०

महर्षि दयानन्द—चिंतन और कार्य

लेखक—स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

आर्यसमाज की स्थापना स्वामी दयानन्द द्वारा सन् १८७४ में की गई थी। सत्य के प्रति आग्रह और वेदो की शिक्षा के प्रति आस्था इसके मुख्य आदर्श हैं। महर्षि दयानन्द का मत है कि वेद हमारे वैयक्तिक और राष्ट्रीय जीवन के उत्थान के लिए सर्वश्रेष्ठ दिशा दर्शक हैं। आर्य-समाज की प्रथम शाखा की स्थापना बम्बई में १८७५ मे हुई। आयसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द के जीवन काल मे ही इसकी शाखाएँ देश के प्रत्येक महत्त्वपूर्ण नगरो और प्रदेशो में स्थापित हो गई थी।

पाँच हजार से अधिक शाखाएँ

आज सारे देश और विदेशो में इसकी लगभग ५००० से अधिक शाखाए हैं। स्वामी दयानन्द का देहावसान १८८३ मे हुआ, लेकिन इस १५-२० वर्ष की अवधि मे ही उनके महान् विचारो का सन्देश भारत की सीमाओ को लाघकर सुदूर वैस्ट इण्डीज, फीजी, मारीशस, द० अफ्रीका तथा पूर्वी अफ्रीका के विभिन्न देशो तक पहुच चुका था।

स्वामी दयानन्द का यह आन्दोलन देश मे व्याप्त अन्धविश्वास, रूढिवाद, जातिवाद और विभिन्न कुरीतियो के विरुद्ध एक प्रबल सघर्ष था। उन्होंने इस जागरण आन्दोलन के द्वारा आर्यसमाज के माध्यम से भोले-भाले और अज्ञान से घिरे लोगो मे ज्ञान की ज्योति जगाई।

महर्षि का व्यावहारिक जीवन दर्शन

स्वामी दयानन्द ने दैववाद के विचित्र सिद्धान्त के बजाय पुरुषार्थ-वाद के सिद्धान्त को प्रतिष्ठित किया। वे जीवन के निराशावादी और मायावादी दशन के विरोधी थे।

स्वामी जी ने यथार्थवादी और उपयोगितावादी दशन की वकालत की। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होने पूर्व और पश्चिम के चिन्तन मे समन्वय करते हुए पश्चिम के विज्ञान और तकनीक का स्वागत किया। उन्होने हमे गतिशील व्यावहारिक दर्शन की राह दिखाई। उनका यह भी कहना था कि हमारे जीवन की एक वास्तविकता है यह स्वप्न या कल्पना नही है। यह वास्तविकता है। इसलिए इससे पलायन करना उचित नहीं है। उनका यह भी कहना था कि जिस विश्व मे हम रहते हैं, वह भी काल्पनिक नहीं अपितु यथार्थ है और इसमें प्रत्येक प्राणी का एक निश्चित उद्देश्य है।

आर्यसमाज की आधारभूत मान्यताए

प्राकृतिक विधान और जीवन के उच्च आदर्शों के प्रति सम्मान आर्यसमाज के सिद्धान्तो की आधार-भूत मान्यताए हैं। आर्यसमाज का मत है कि मनुष्य केवल व्यक्ति' नही है बल्कि वह एक सामाजिक प्राणी भी है और समाज की सेवा ईश्वर की सेवा है। महर्षि दयानन्द के अनुसार मनुष्य का समाज मानव मात्र तक ही सीमित नही है अपितु इसमे प्राणीमात्र सम्मिलित हैं इस-लिए मनुष्य को अपनी उदारता के क्षेत्र का अपरिमित विस्तार करना चाहिए।

युगपुरुष को प्रेरणा

स्वामी दयानन्द का जन्म १८२४ मे गुजरात में हुआ था। वे १८४६ में उस समय गृह-त्याग कर निकल पड़े, जब उनके विवाह की योजना बन रही थी। वह जीवन के रहस्य को खोजना चाहते थे इसलिए वे ज्ञान की तलाश मे एक स्थान से दूसरे स्थान तक भटकते रहे। सच्चे योगी की तलाश मे वे हिमालय की कन्दराओ और अन्य अनेक विख्यात धार्मिक केन्द्रों में गए। उन्होने १८४७ मे सन्यास की दीक्षा ली। देश की तत्कालीन दुरवस्था और देशवासियो की दारुण दरिद्रता, अज्ञानता, अन्धविश्वास और उनके धार्मिक शोषण से दुखी होकर अन्त मे वे सुयोग्य गुरु विरजानन्द के पास मथुरा मे पहुचे। मई, १८५९ से १८६३ तक वे गुरु विरजानन्द के सान्निध्य मे रहे।

गुरु विरजानन्द से प्रेरणा प्राप्त कर स्वामी दयानन्द परिपूर्ण विद्वत्ता गाम्भीर्य और निर्भयता के साथ अपने महान् लक्ष्य मे साधनालीन हो गए। उन्होने १८६७ मे हरिद्वार मे कुम्भ के पर्व पर अज्ञान के विरुद्ध जागरण का अपना अभियान प्रारम्भ किया और हरिद्वार की पवित्र भूमि पर पाखण्डखण्डिनी पताका' गाड-कर देश में से सब प्रकार के आड-म्बरो को समाप्त करने का दृढ सकल्प लिया।

सत्य-साधना के लिए प्राणोत्सर्ग

स्वामी दयानन्द ने अनेक बार यह प्रयत्न किया कि विभिन्न मत-मतान्तरो को एक मच पर लाकर और उनके साथ मिलकर देश मे फैले अज्ञान अन्धकार को दूर किया जाए। उन्होने अनेक पुस्तक लिखकर ईर्ष्या, घृणा, अन्धविश्वास एवं रूढियो को प्रोत्साहन देने वाले विचारो का खण्डन किया। वह सत्य के मार्ग पर अकेले अविचल डटे रहे। अनेक बार उन्हें अपने ही लोगो द्वारा जहर दिया गया, गालिया दी गई, उन पर पत्थर फके गए और सत्य की इसी साधना में उन्हें अपने प्राणों की आहुति भी देनी पडी। ऐसे ही एक पथ-भ्रष्ट व्यक्ति द्वारा जहर दिए जाने से ३० अक्तूबर, १८८३ को दीपावली के दिन उनका बलिदान हो गया।

वेदों के रास्ते पर लौटने का आह्वान

स्वामी दयानन्द इस देश की दयनीय दशा को देखकर बडे व्यथित होते थे। उस समय १९वी शताब्दी मे जबकि भारत पराधीन था, देश मे दरिद्रता चरम सीमा पर थी, अकाल और महामारियाँ उत्सवों की तरह हर साल आती थी और अनेक प्रकार से देश का शोषण हो रहा था, स्वामी दयानन्द भारत को अतीत के गौरव से फिर मण्डित हुआ देखना चाहते थे। उन्होने देश का आह्वान किया, वेदो के रास्ते पर लौट चलो।' इस कथन से उनका मन्तव्य था कि वैदिक युग की तेजस्विता की ओर लौट चलो, जहा तुम्हारी सभ्यता, कठोर परिश्रम, नतिकता और सत्यवादिता के उच्चतम शिखरों को स्पर्श करती थी। अपने महान् ज्ञान और चिन्तन को फिर से प्राप्त करो। 'योग और क्षेम की प्राप्ति के लिए सगठित हो जाओ।' उन्होंने भारतीयो को स्मरण कराया कि 'मानव सभ्यता के आदिकाल से ५ हजार वर्ष पूर्व महाभारत के युद्धकाल तक आर्य जाति ने विश्व का नेतृत्व किया है, आर्यावर्त (भारत) ने विश्व के अन्य देशो को ज्ञान विज्ञान का निर्यात किया है।' इस प्रकार उन्होंने भारत के अतीत गौरव का स्मरण कराकर फिर से आत्म गौरव के शिखर पर खडे होने का आह्वान किया।

सुसगठित भारत की कल्पना

महर्षि दयानन्द, एक राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति से युक्त सुसगठित स्वाधीन भारत की कल्पना करते थे। उनके अनुसार आर्यावर्त भारत) के लोग आर्य हैं, उनकी भाषा एक आर्य भाषा (हिन्दी) है इसके साथ ही देवभाषा सस्कृत के पठन-पाठन को भी देश के लिए आवश्यक मानते थे। उन्होंने कभी मजहबी राज्य की अवधारणा का समर्थन नहीं किया अपितु वे एक राष्ट्र और एक राष्ट्री-यता, सब के लिए समान नागरिक कानून तथा अल्पसख्यक एव बहु-सख्यको के प्रति समान व्यवहार के पक्षपाती थे। वे भारत के लिए सघीय या गणतन्त्रीय ढाचे के बजाय एकात्मक ढाचे को उपयोगी मानते थे।

महर्षि दयानन्द का सब से बडा योगदान यह है कि उन्होने हमे वेदों के अध्ययन के बारे मे नई अन्त-र्दृष्टि दी। उन्होने बताया कि वेद-ज्ञान केवल धर्म चर्चा का वाङ्मय नहीं अपितु व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के आचरण का पाथेय है।

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

लेखक—सावित्री शर्मा, वेदाचार्य

यदि हमारी शस्यश्यामला मातृ-भूमि भारत माता कहे कि मैं संसार के विशाल पर्वत शिखरो मे सर्वोच्च नगाधिराज हिमालय हू, कलकल-निनादिनी सरिताओं मे पतित पावनी भागीरथी जाह्नवी हू। विश्व की समस्त भाषाओ मे लोक—मगलकारिणी सुर-भारती सस्कृत भाषा हू। इस लोक मे सभी वैदिक व इमय के मर्मज्ञ दार्शनिक ऋषियों मे मैं महर्षि दयानन्द सरस्वती हू तो कोई अत्युक्ति न होगी। पांच हजार वर्षों से छायी वसुन्धरा के अज्ञान-अविद्या के निविड अन्धकार में वेद मार्तण्ड की चिरस्थायिनी अलौकिक आभा बिखरने वाले भारतीय सस्कृति के दिव्य दूत ऋषिवर दयानन्द ही थे। क्योंकि उनके आविर्भाव से पूर्व अनेक सुधारक जननायकों ने भी सामयिक समस्याओं का समाधान करने में अपने पवित्र जीवन अर्पित किए थे किन्तु स्वामी जी ने न केवल तात्कालिक कुरीतियों का ही निवारण किया अपितु मानवीय जीवन की सर्वाङ्गीण विषमताओं एव दुरन्त विपदाओं को समूलोच्छेदन करने में सत्य धर्म की बलिवेदी पर अपना बलिदान कर दिया। यही था उनका ऋषित्व। अमर साधना कर दिव्य स्रोत जहा से प्रेरणा प्राप्त कर न जाने कितने महापुरुष दीप ज्योति पर मर मिटने वाले पतङ्गो की भाति लोक-हित साधना के मन्दिर में सहर्ष अपने प्राण प्रसूनो को चढा गए। स्वामी जी के अनन्त उपकारो की तुलना मे विराट् आकाश के विशाल प्राङ्गण में बिखरे हुए असंख्य टिमटिमाते नक्षत्र भी नगण्य से प्रतीत होते हैं। उनके दिव्य ब्रह्मचर्य तेज के समक्ष भुवन भास्कर भी लजाता सा प्राची मे नित्य उदय होता है।

चान्द्रमसी ज्योत्स्ना भी करुणा-वरुणालय ऋषि के सदय हृदय के माधुर्य के लिए तृषित सी दीखती है। वे विश्व के लिए वेदवीणा के मादक स्वरों मे उदात्त सस्कृति का पावन सन्देश सुनाने आये। उनके आप्त वचन प्रामाणिक वेद वाक्य बनकर प्रसुप्त हृदयो को झङ्कृत करने लगे। उनका एक-एक शब्द तार्किक जिज्ञासुओं के हृदय मे स्थायी शब्द कोष बनकर गूंजने लगा। वेद राशि से उद्धृत वे सार्वभौम चिरन्तन परिभाषाएँ अजर अमर बन गई। इस संक्षिप्त लेख में उनके कतिपय विचार धाराओं का साराश निम्नाङ्कित रूप से प्रस्तुत किया जाता है।

१-वैदिक धर्म—सत्य सनातन वैदिक धर्म ही ससार की सम्पूर्ण मानव जाति का एक मात्र धर्म है। विविध मत मतान्तरो की मिथ्या कल्पना और अन्ध विश्वास पूर्ण मान्यताओ से विश्व पटल पर विघटनकारिणी प्रवृत्तियो ने नृशस हिंसा द्वेष छल प्रपचादि कुटिल दुर्भावनाओ को जन्म दिया। मतान्ध व्यक्तियो से शातिमय सन्देश की आशा करना मूर्खता मात्र है। इन मतवालों ने मानव धर्म, धर्म मन्दिर धार्मिक महापुरुष एव धर्म ग्रन्थो के बीच कट्टर विभाजक रेखाए खीच दी। एकता, सहिष्णुता, पारस्परिक सामञ्जस्य तथा विश्वप्रेम की दिव्य भावनाओ पर कुठाराघात कर मानव को मानवता का शत्रु बना दिया। राष्ट्र विभाजन का कुत्सित राजनैतिक षड्यन्त्र रचाने वाला आतकवाद इसी साम्प्रदायिक दुष्प्रवृत्ति की देन है। मत, पन्थ, सम्प्रदाय, मजहब आदि शब्द कदापि धर्म के अनुवादक नहीं हो सकते। केवल वैदिक धर्म के सत्य मार्ग से ही भूली भटकी मानवता अपने शाति निकेतन को पुन प्राप्त कर सकेगी। ऋषि ने स्पष्ट घोषणा की—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढना-पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

२-स्वराज्य सदेश—सत्यार्थ-प्रकाश के षष्ठ समुल्लास मे स्वामी जी भारतीय राजनेताओ को साधिकार स्वदेश मे स्वराज्य स्थापना का जन्म सिद्ध अधिकार बताते हुए विदेशी शासन का कडा विरोध करते हैं। निष्पक्ष न्याय पूर्ण होने पर भी विदेशी राज्य विमाता के समान प्रजा को कष्टप्रद होता है। इन आर्ष वचनो मे आर्य राष्ट्र निर्माण की बलवती कामना प्रकट हो रही है। स्वराज्य का यह स्वप्न अद्यावधि साकार नही हो सका है। प्यारे ऋषि के स्वर्गीय प्रसारण आज भी आर्य पुत्रों को राष्ट्रभृत् यज्ञ की सफलता के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। वैदिक संविधान के बिना हमारी संस्कृति, सभ्यता, राष्ट्र भाषा सुर-भारती एव राष्ट्रीय एकता कभी सुरक्षित नहीं रह सकती। अत हम सभी आर्य बन्धु सुसंघटित होकर पाश्चात्य आवरण को हटाते हुए भारतीय धर्मतन्त्र से सम्बद्ध आर्य साम्राज्य की स्थापना कर।

३-शिक्षा प्रणाली—वर्तमान प्रशासन के द्वारा निर्धारित नव शिक्षा नीति आर्य सस्कृति और भाषा का विनाश कर देगी ऐसा सभी प्रबुद्ध विद्वान शिक्षको का मत है। स्वामी जी ने न केवल भारत अपितु विश्व की प्रतिभाओ के समग्र मानव की शारीरिक बौद्धिक-मानसिक शक्तियों के विकास हेतु विशुद्ध वैदिक शिक्षा प्रणाली का प्रकाशन किया। विद्या प्राप्ति का लक्ष्य पुरुषार्थ चतुष्टय की साधना है 'सा विद्या या विमुक्तये" 'विद्यय ऽमृत-मश्नुते" जैसे अमृत वाक्यो में शिक्षा के वास्तविक प्रयोजन का निर्देश निहित है। ऐसी आपत्तिकालीन स्थिति मे महर्षि दयानन्द के शैक्षिक सिद्धान्त ही देश के नागरिकों को चारित्रिक बल प्रदान कर सकेंगे।

४—सामाजिक सुधार—देव दयानन्द ने भारतीय जन समाज मे व्याप्त अनेक कुरीतियो के विरुद्ध आवाज उठाई। बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, अस्पृश्यता, ईश्वर के स्थान पर जड पाषाण पूजा, नारी जाति को विद्याधिकार से वञ्चित रखना, गुणकर्म स्वभाव से वर्ण व्यवस्था न मानकर केवल जन्मना जाति निर्धारण, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, मांस भक्षण सुरापान आदि का प्रबल खण्डन करके मनुष्यो का न्यायोचित पथ प्रदर्शन किया।

५ स्थितप्रज्ञ महान् योगी—जन कल्याण के निमित्त आत्म समर्पण करने वाले स्वामी दयानन्द वस्तुत निस्पृह निष्काम सेवक थे। धर्म प्रचार मे मनसा वाचा कर्मणा सलग्न रहते हुए मौन साधक ऋषि ने अनेक बार विरोधियो के द्वारा किए गए दुर्व्यवहारों को प्रसन्नता पूर्वक सहन किया। मनुस्मृति का निम्नाङ्कित श्लोक उन्होंने अपने जीवन में चरितार्थ कर दिखाया।

सम्मानाद् ब्राह्मणो नित्य-
मुद्विजेद् विषादिव।
अमृतस्येव चाकाक्षेद्
अवमानस्य सर्वदा॥

अर्थात् ब्राह्मण धर्मोपदेशक सम्मान से सर्वदा विषपान के समान उद्विग्न होवे और दु खद अपमान को अमृत तुल्य समझ कर सहन करे। मानापमान मे समद्रष्टा, शत्रु मित्र को समान हार्दिक स्नेह देते हुए उन्होंने 'वसुधैव कुटुम्बकम्" का नारा लगाया। उनके जीवन का लक्ष्य था "ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।" अन्तिम निर्वाण की वेला मे नश्वर शरीर का परित्याग करते समय अमर हुतात्मा के मुखारविन्द से निकले वे प्रेरणाप्रद वाक्य उनकी वीतराग प्रवृत्ति और स्थितप्रज्ञता के पूर्ण परिचायक है—

"प्रभो ! तूने अच्छी लीला की तेरी इच्छा पूर्ण हो।" गुरुवर तपस्वी दयानन्द ने राष्ट्र के सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक तथा शास्त्रीय विचारों में क्रांति का शखनाद करते हुए निर्भ्रान्त सत्यार्थ का प्रकाश किया। उनकी वेदोक्त सत्य सनातन जीवन पद्धति ही वर्तमान कष्टों का निवारक अमोघ उपाय है। युग प्रवतक महर्षि के तप पूत चरणो में मेरी सादर श्रद्धाञ्जलि समर्पित है—

पाषाणरत्ज हनोऽ प
सुमना प्रादात शुभ सौरभम !
साक्षात्मातस्सु धरेव
मनम सदभावमावेदयत ॥
इत्थ येन तपस्विनाऽ
तिकष्टे स्वजीवन यापितम्।
मानार्हाय मनस्विने ऋषि
दय नन्दाय तस्मै नम ॥

सत्य के सबल समर्थक—स्वामी दयानन्द

लेखक—स्व० प्रकाशवीर शास्त्री

★

आयसमाज की स्थापना तो जरूर १८७५ मे हुई। पर उससे पहले भी स्वामी दयानन्द ने ऐसे ही कुछ और सगठनो की भी नीव डाली थी। उत्तर प्रदेश मे आर्य-समाज की स्थापना से एक साल पूर्व ननीताल मे स्वामी जी ने ऐसा ही एक सगठन बनाया जिसका नाम सत्यशोधक समाज था। प्रतीत ऐसा होता है—ब्रह्मसमाज प्राथना समाज आदि सगठनो से लगता मिलता नाम आर्यसमाज सभवत स्वामी जी को अधिक रुचा हो। इसीलिए उन्होने बाद मे उसे अपना लिया। पर धार्मिक और सामाजिक क्षत्रो मे स्वामी दयानन्द जिस सत्य का प्रचार करना चाहते थे उसका आभास सत्यशोधक नाम से ही अच्छा पता लगता है। सत्य का प्रचार करते समय स्वामी जी के मन मे न तो कोई पूर्वाग्रह ही था और न ही दूसरे धर्माचार्यो की तरह किसी बात को उन्होने यह कहा कि यह ही अन्तिम सत्य है, कोई बिन्दु इस पर लग ही नही सकता। बल्कि कही-कही तो उनके लेखो मे यह भी सकेत मिलता है—जो कुछ उन्होने लिखा है उसमे प्राप्त तथ्यो से यदि परिवर्तन की गुजाइश दिखाई दे तो वह निस्सकोच कर लिया जाये।

सत्यशोधक समाज की ही राह पर चलते हुए ऋषि दयानन्द ने अपनी प्रमुख पुस्तक का नाम भी सत्याथप्रकाश रखा। सत्य की तह मे पहुचने के लिए स्वामी जी ने इसके चौदह समुल्लासो मे यो तो प्राय हर प्रमुख विषय को ही उठाया है। ग्रथ का प्रारम्भ भी उन दिनो आस्तिकता की आड मे भिन्न-भिन्न नामो से चल रही ईश्वर छाप दुकानो की असलियत क्या है? यही से उन्होने किया है। यह समय वह था जब शैव लोग वैष्णवो की पगडी उछालते थे और वष्णव उन्हे बुरा भला कहते थे। स्वामी जी ने सप्रमाण उन सब नामों की व्याख्या करते हुए कहा यह तो सब ही नाम उस एक अद्वितीय शक्ति के हैं फिर झगडा किस बात का है? गीता के शब्दो मे यह तो सारे रास्ते पहुचाते ही एक मजिल पर हैं। ऐसे ही और भी अनेको सामाजिक प्रश्न सत्यार्थ-प्रकाश मे स्वामी जी ने उठाये। जन्मना जाति स्त्रियो को शिक्षा से वचित करना, बाल विवाह, वृद्ध विवाह और पुनर्विवाह का निषध आदि अनेको सामाजिक अभिशाप ऐसे थे जिनमे देश और समाज दोनो तबाह हो रहे थे। स्वामी जी ने अपने भाषणो मे और ग्रन्थो मे इन्हे बड आड हाथो लिया। भारत मे प्रचलित सभी मत मतान्तरो को वह अपना मानते थे। इसीलिए उनकी कमजोरियो का भी इस ग्रन्थ मे उन्होने प्रश्न उठाया है। सत्यार्थ-प्रकाश की भूमिका मे बड ही निर्लेप भाव से उन्होने यह लिखा है—

मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य अथ का प्रकाश करना है। अर्थात जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अथ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नही कहलाता जो सत्य के स्थान मे असत्य और असत्य के स्थान मे सत्य का प्रकाश किया जाय। किन्तु जो पदाथ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहलाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने मे प्रवृत्त होता है। इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नही हो सकता। इसीलिए विद्वान आप्तो का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लख द्वारा सब मनुष्यो के सामने सत्या-सत्य का स्वरूप समर्पित कर द। पश्चात वे स्वयम अपना हिताहित समझ कर सत्याथ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द मे रहे। मनुष्य की आत्मा सत्यासत्य को जानने वाली है। तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हेतु हठ दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड असत्य मे झुक जाता है। परन्तु इस ग्रन्थ मे ऐसी बात नही है और न किसी का मन दुखाना या किसी को हानि पहुचाने का तात्पर्य है।

इससे अधिक निरभिमानीपन और क्या किसी का हो सकता है। दूसरा कोई होता तो लिख जाता इसमे अब कही कोई सशोधन की गुंजायश नही है। पर स्वामी जी का मस्तिष्क इस विषय मे बहुत साफ था—सत्य की खोज जारी रहनी चाहिए और जब भी कोई नया सत्य सामने आये तो उसे खुल हृदय से स्वीकार कर लेना चाहिए।

आर्यसमाज के दस नियमो मे एक नियम के तो शब्द ही यह हैं—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। इन दस नियमो मे भी सब से अधिक बल स्वामी जी ने सत्य पर ही दिया है। दस मे से तीन नियमो मे तो सत्य का स्पष्ट उल्लख भी है। पहल ही नियम मे आता है सब काम धर्मानुसार सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए। इसी तरह तीसरे नियम के प्रारम्भ मे लिखा है—वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है। उसका पढना और पढाना सब आर्यो का परम धर्म है। वेद का ज्ञान किसी जाति अथवा देश विशेष की सम्पत्ति नहीं है। मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए आदि सृष्टि मे मिला यह ईश्वरीय ज्ञान है। प्राणिमात्र को मित्र की दृष्टि से देखन का आदेश भी सब से पहल वेद ने ही दिया।

स्वामी दयानन्द के समाज सुधार कार्यक्रमो और सद्धान्तिक सच्चाइयो की उन दिनो देश विदेश दोनो मे भी अच्छी धूम मची हुई थी। थियोसेफिकल सोसायटी के सचालकगण तो आर्यसमाज के विचारो से इतने प्रभावित थे जो एक बार उन्होने सोसायटी को आर्य-समाज मे मिलाने का निर्णय ही ल लिया। स्वामी जी से बहुत दिनो तक इस सम्बन्ध मे उनका पत्र-व्यवहार भी चला। अन्त में उक्त सोसायटी के सस्थापको मे से दो प्रमुख व्यक्ति कर्नल अलकाट और मैडम ब्लवट्स्की बम्बई आकर स्वामी जी से मिले। कई दिनो तक यहा भी विचार विनिमय चलता रहा। लगभग सभी बातो पर दोनो पक्ष सहमत भी हो गए। पर यह ही बात ऐसी रही जिससे बेल मढे न चढ सकी। आर्यसमाज के तीसरे नियम में जो यह वाक्य है—वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, इसमे से सत्य शब्द को थियोसिफिकल सोसायटी वाले हटाना चाहते थे। उनका कहना था—इससे दूसरे धर्मग्र थों का अप्रत्यक्ष खडन होता है। स्वामी जी ने उनकी बात बडी गम्भीरता से सुनी और सहज भाव से उत्तर देते हुए कहा—सत्य पर तो आर्यसमाज की नींव ही मैंने रखी है। यदि सत्य ही उसमें से निकल गया तो रह क्या जायगा। सत्य से समझौते का अभिप्राय ही असत्य को प्रोत्साहन देना है। इस तरह थियोसिफिकल सोसायटी की वह विलय वार्ता बीच मे ही टूट गई।

ऐसा ही एक प्रकरण उदयपुर मे स्वामी दयानन्द के जीवन मे आया। महाराणा उदयपुर उनकी विद्वत्ता पर मुग्ध थे। स्वामी जी भी महीनो-महीनो रह कर वहा उपदेश करते रहे और सत्यार्थप्रकाश तथा वेदभाष्य के लिखने का काम भी उनका वहा चलता रहा। महाराणा उदयपुर ने एक बार स्वामी जी से कहा—महाराज यह तो आप जानते ही है यह मेरी गद्दी एकलिंग महा-देव जी की गद्दी है। मैं और मेरा परिवार तो उनकी धरोहर का रखवाला है। पर मेरी बजाय आप जैसा विद्वान साधु यदि इस धरोहर को सभाले तो कितना अच्छा हो धर्म प्रचार में भी यह सहायक होगी और दूसरे भले कार्यों मे भी इसका सदुपयोग हो सकेगा। पर महाराज! एक छोटी सी शर्त इसके साथ यह है—मूर्तिपूजा का जो खडन आप करते हैं वह जरूर बन्द करना पडगा। भले ही आप स्वय चाहे मूर्ति न पूजें। स्वामी जी उठ और कमडल हाथ मे लेकर उदयपुर से चल दिये। कहने लगे राजन्! एक दौड मे तेरी रियासत पार कर सकता हूं। इसका प्रलोभन देकर मुझे सत्य से डिगाना चाहता है। मैं तो उस राजा की आज्ञा पालन करने ससार मे आया हू—जिसकी रियासत में जीवन भर दौडूंगा तो भी उसे पार नही कर सकता।

लोकैषणा और वित्तैषणा यह दो प्रलोभन ऐसे हैं, जिनमे साधारण मनुष्य फंस कर रह जाता है। पर स्वामी जी को यह दोनो ही प्रलोभन भी अपने पथ से डिगा न सके। तीसरी स्थिति बल प्रयोग की और थी। जब उनसे अमृतसर में किसी ने काश्मीर यात्रा में प्राणो के सकट का भय दिखा कर रोकना चाहा

(शेष पृष्ठ १० पर)

ऋषि-निर्वाण-दिवस का संदेश

लेखक – स्व० आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

महाभारत काल के बाद भारत देश कई मत-मतान्तरों में जहां एक ओर विभक्त हो गया, वहां कई कुरीतियां भी उभर आईं। बौद्ध और जैन मत का प्रचार हो गया। धार्मिक कुप्रथाओं में यज्ञों में पशुबलि और कभी-कभी नरबलि के प्रचार से भयंकर पशुहिंसा की प्रथा चल पड़ी। सामाजिक क्षेत्र में एक ओर जहाँ जन्मना वर्णव्यवस्था—विशेषत ब्राह्मण वर्चस्व वहाँ दूसरी ओर अस्पृश्यता के रोग भयावह रूप से देश में फैल गए। इनके साथ साथ नारी के प्रति हेय और निरादर—गृहस्थ आश्रम घृणा का पात्र साधु-सन्यासी बन अपने को ब्रह्म समझना इत्यादि चतुर्दिक् पतनोन्मुख प्रबाध सामाजिक प्रवाह चल पड़े। सर्वाधिक दुर्दशा नारी और उसके साथ अविभाज्य गृहस्थ आश्रम—इन दोनों की हुई। शंकराचार्य ने यद्यपि अपनी अगाध विद्या और तर्क शक्ति के प्रभाव से नास्तिकता के प्रचारक बौद्ध और जैन—दोनों मतों का उन्मूलन कर दिया, विशेषत बौद्ध मत के अनेक प्रमुख विद्वान और अनुयायी—बिना किसी प्रकार को तनिक भी हिंसा व बाध्यता के स्वयं भारत छोड़ अन्य पड़ोसी देशों में चले गए, पर यह शास्त्रज्ञ परिवार शंकर—बौद्ध और जैन मत द्वारा प्रचलित मूर्तिपूजा, अवतार और नारी-घृणा तथा गृहस्थ आश्रम-निन्दा—इन सब समाज-घातक और अनाचार-प्रचारक दोषों से मुक्त न हो सके। मूर्ति-पूजा और अवतार का शंकर ने प्रचार किया सम्भवत इस सम्बन्ध में एक विद्वान ने ठीक ही कहा है कि "प्रत्येक सुधारक और महापुरुष जहां युगप्रवर्तक होने से नये युग का पिता होता है, वहां अपने पूर्ववर्ती युग से अवश्य प्रभावित हो उसका पुत्रवत् होता है।' यह ऐतिहासिक तथ्य विश्व के प्रत्येक महापुरुष के जीवन और कायकलाप से अविभाज्य है। शंकर भी बौद्ध और जैनियों की मूर्तिपूजा और अवतारवाद से अपने को अछूता न रख सके। पर, इसके साथ ही शंकर ने अपने पूर्ववर्ती सम्प्रदायों से जो दो अन्य दोष अपनाए वह भी किसी प्रकार न्यून घातक और समाज विध्वंसक नहीं थे। ये थे—नारी-शूद्र निन्दा और गृहस्थ की हेयता और सन्यास व साधु जीवन की वरीयता।

शंकर शूद्र, नारी और गृहस्थ के घोर निन्दक

शंकर ने ब्रह्मसूत्र (वेदान्त) भाष्य में अध्याय १, पाद ३, सूत्र ३८ की संस्कृत भाषा में व्याख्या करते हुए शूद्र के वेदाधिकार के बारे में जो कुछ लिखा है, वह कितना भयंकर है, उसका हिन्दी अनुवाद निम्न है—

'शूद्र का वेदाधिकार नहीं है' क्योंकि स्मृति में शूद्र के वेद अध्ययन और श्रवण पर प्रतिषेध के द्वारा शूद्र के लिए ज्ञान और अनुष्ठान—दोनों निषिद्ध हैं। यदि वह शूद्र कभी वेद सुन ले तो उसके कान में लाख व सिक्का गर्म कर डाल देना होगा। शूद्र श्मशान तुल्य है इसलिए उसके समीप कभी वेदपाठ नहीं करना चाहिए। अगर शूद्र वेद का उच्चारण करे तो जिह्वा छेदन कर देना होगा। 'न शूद्राय मति दद्यात्'—इस स्मृति वाक्य से शूद्र के अतिरिक्त शेष वर्णों के लिए इतिहास, पुराण आदि के सुनने का अधिकार है वेद का तो शूद्र को सर्वथा अधिकार नहीं है।"

स्त्री के सम्बन्ध में वेदान्त दर्शन १।३।३८ सूत्र के भाग ६ में शंकराचार्य कहते हैं—

लड़की का पाण्डित्य घर के कार्यों में ही है, वेद में उसका कोई अधिकार नहीं है।

बृहदारण्यक उपनिषद के ६।४।१९ में—

"अथ य इच्छेत् दुहिता मे पण्डिता जायेत' (अगर कोई यह चाहे कि मेरी लड़की पंडिता हो) तो शंकर कहते हैं—'गृहतन्त्रविषय एव च वेदे अनधिकारात्'—अर्थात् घर-गृहस्थी के विषय को ही जान ले, क्योंकि उसका वेद में अधिकार नहीं है।

आचार्य शुक्र ने अपनी स्मृति ४।३८ में पति की मृत्यु के साथ ही नारी भी मर जाए—कहा है। इसी नीति ग्रन्थ के ४।१६१ श्लोक में स्त्री और पापी को गवाही देने के अयोग्य ठहराया गया है। इतना ही नहीं शुक्रनीति के ४।१६४ श्लोक में नारी के ८ अवगुण बताए गए हैं—(१) झूठ बोलना, (२) बिना विचारे काम कर डालना, (३) भीतर-बाहर से छल कपट, (४) मूर्खता, (५) अत्यन्त लालच, (६) अशौच-अपवित्रता (७) निर्दयता, (८) घमण्ड।

आजकल तुलसी रामायण का बड़ा प्रचार है। उसमें स्त्री और शूद्र को ताड़न योग्य कहा है 'शूद्र गवार ढोल पशु नारी, ये चारों ताड़न के अधिकारी।' शुक्र नीति में जो स्त्री के आठ अवगुण बताए गए हैं, तुलसी रामायण में भी इन्हीं की पुष्टि की गई है। शंकराचार्य ने अपनी 'प्रश्नोत्तरी' में नारी के प्रति बड़े अपमानपूर्ण शब्द कहे हैं—

द्वार किमेक नरकस्य नारी। का शृङ्खला प्राणभृताम् हि स्त्री।—कि तद् विष भाति सुधोपमम् स्त्री। विश्वासपात्र न किमस्ति नारी। अर्थात नरक का एक ही द्वार क्या है—नारी। प्राणियों के लिए बंधन क्या है—नारी विष क्या है जो अमृत प्रतीत होता है—नारी कौन विश्वास का पात्र नहीं है—नारी।

इसी प्रकरण में गृहस्थ की निन्दा करते हुए शंकर कहते हैं—'कौपीनवन्त खलु भाग्यवन्त' केवल कौपीनधारी ही भाग्यशील हैं। इस प्रकार के नारी और गृहस्थ निन्दक अनेक वाक्य तत्कालीन आचार्यों और नीतिकारों के दिये जा सकते हैं।

नारी और शूद्र उद्धारक केवल—दयानन्द

शंकराचार्य और मध्य युग के नीतिकारों और इन वचनों के एकदम विपरीत ऋषि दयानन्द नारी के विषय में 'सत्यार्थप्रकाश' के तृतीय समुल्लास में 'क्या स्त्री और शूद्र भी वेद पढ़ें" इसके उत्तर में कहते हैं—सब स्त्री और पुरुष अर्थात मनुष्य मात्र को (वेद पढ़ने का अधिकार है। और सब मनुष्यों के वेदादि शास्त्र पढ़ने सुनने के अधिकार का प्रमाण यजुर्वेद के ३६वें अध्याय में दूसरा मंत्र है—'यथेमां वाचम' का अर्थ करते हुए ऋषि कहते हैं 'परमेश्वर कहता है कि जैसे मैं सब मनुष्यों के लिए इस कल्याणी अर्थात संसार और मुक्ति के सुख देनेहारी 'ऋग्वेदादि चार वेदों की वाणी का उपदेश करता हूं वैसे तुम भी किया करो।' इसी प्रकरण में ऋषि शूद्रों को वेदादि पढ़ने के अधिकार के सम्बन्ध में बड़े प्रबल शब्दों में कहते हैं—क्या परमेश्वर शूद्रों का भला करना नहीं चाहता क्या ईश्वर पक्षपाती है कि वेदों के पढ़ने-सुनने का शूद्रों के लिए निषेध और द्विजों के लिए विधि करे। जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्रादि के पढ़ाने और सुनाने का न होता तो इनके शरीर में वाक और श्रोत्र इन्द्रिय क्यों रचता? जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र सूर्य और अन्नादि पदार्थ सबके लिए बनाए हैं वैसे ही वेद भी सबके लिए प्रकाशित किए हैं।'

स्त्री को वेद तथा अन्य विद्याएं पढ़ने के अधिकारों के प्रश्न के उत्तर में ऋषि सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास में श्रौत सूत्र के प्रकरण 'इमं मन्त्रं पत्नी पठेत' के प्रमाण से कहते हैं अर्थात स्त्री यज्ञ में इस मन्त्र को पढ़े। जो वेदादि शास्त्रों को न पढ़ी हो तो वे यज्ञ में स्वरसहित मंत्रों का उच्चारण और संस्कृत भाषण कैसे कर सकें। भारतवर्ष की स्त्रियों में भूषणवत गार्गी आदि वेदादि शास्त्रों को पढ़कर पूर्ण विदुषी हुई थी—यह शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट लिखा है। भला जो पुरुष विद्वान् और स्त्री अविदुषी और स्त्री विदुषी और पुरुष अविद्वान हो तो नित्य प्रति देवासुर संग्राम घर में मचा रहे।'

इसके आगे ऋषि ने स्त्रियों को भी 'व्याकरण धर्म, वैद्यक गणित शिल्प विद्या तो अवश्य ही सीखनी चाहिए। ऐसी घोषणा करते हैं।

जहां नारी आदर वहीं आनन्द-ऐश्वर्य

गृहस्थ आश्रम में पति पत्नी का पारस्परिक सम्बन्ध कैसा हो और नारी तथा पत्नी की समाज में क्या स्थिति हो—इस बारे में ऋषि दयानन्द ने मनुस्मृति आदि ग्रन्थों के आधार पर 'सत्यार्थप्रकाश' के चतुर्थ समुल्लास में—भारत के मध्य युग और पौराणिक युग के बुद्ध महावीर, शंकर, नीतिकार शुक्राचार्य गोस्वामी तुलसीदास इत्यादि द्वारा जो अत्यन्त गर्हित और निन्दित विचार प्रकट किए गए हैं और जिनका कुछ दिग्दर्शन हम पहले करा चुके हैं इन सब के एकदम विपरीत—जो निर्देश दिए हैं उनमें नमूने के रूप में कुछ यहां हम प्रस्तुत करते हैं—

(शेष पृष्ठ ११ पर)

(पृष्ठ ८ का शेष)

सत्य के सबल समर्थक . .

तब स्वामी जी ने कहा—सत्य का प्रचार करने में यदि मेरे हाथों की अगुलिया भी मोमबत्ती की तरह तिल-तिल करके जलाई जायेगी और उनसे असत्य का अन्धेरा दूर होने मे मदद मिलेगी तो मैं अपने प्रयास को सफल समझूंगा। तेरह बार तो उनके शरीर पर विष का प्रयोग किया गया। कभी पान से, कभी दूध में और कभी भोजन में जहर मिलाकर दिया गया। कर्णवास मे तो एक जागीरदार ने तलवार से ही उन पर वार कर दिया। पर स्वामी जी ने तलवार रोक कर ज्यो ही उसका गट्टा पकडा तो ऊपर का खून ऊपर और नीचे का नीचे बन्द हो गया। तलवार ही उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ी। इसी तरह हरिद्वार के लगे कुम्भ के मेले में उन दिनो पाखड के विरुद्ध आवाज उठाना कितना कठिन काम था। वह भी तब जब कि सगी-साथी कोई न हो। पर सत्य पर जमी आस्था ने उनमें न जाने कहा का साहस भर दिया। वो वह अकेले ही पाखड खंडिनी पताका हाथ में लेकर वहा डट गए।

सत्यार्थप्रकाश में स्वामी जी ने कई ऐसी सेद्धांतिक सचाइयों का भी प्रतिपादन किया है जो व्यवहार मे आज तक आर्यसमाजियों के गले से नीचे भी नही उतर सकीं। इनमें एक नियोग का सिद्धान्त भी है। समाज को भ्रष्ट होने से बचाने के लिए महाभारत में जो काम युद्ध के बाद महात्मा विदुर ने किया लगभग वैसा ही सुझाव ऋषि दयानन्द ने दिया है। छिप-छिप कर पाप करने की बजाय यदि उसे धार्मिक प्रथा का रूप मिल जाय तो समाज मे अनाचार भी नही फलगा और मर्यादा भी बनी रहेगी। सत्यार्थप्रकाश मे उन्होंने लिखा है—बहुत सी परिस्थितिया ऐसी होती हैं जब वश चलाने के लिए और भ्रष्ट होने से बचने के लिए नियोग आवश्यक है। स्त्री-पुरुष दोनो में से कोई भी सन्तानोत्पत्ति के लिए अशक्त हो अथवा लम्बे अरसे के लिए प्रवास चले गए हो तो बजाय छिप-छिप कर दुराचार करने के उसे वैध रूप ही क्यो न दिया जाय। वैसे भी यह कोई नया सिलसिला नही है। स्वामी जी ने लिखा है—

'पाण्डु राजा की स्त्री कुन्ती और माद्री आदि ने नियोग किया। व्यास जी ने चित्रागद और विचित्र वीर्य के मर जाने के पश्चात् उन अपने भाइयों की स्त्रियों में नियोग करके अम्बिका अम्बा में धृतराष्ट्र और अम्बालिका मे पाण्डु और दासी मे विदुर की उत्पत्ति की। इतिहास भी इस बात मे प्रमाण है।

कुछ दिन पहले तक यह बात सुनने मे भी अटपटी सी लगती थी। पर अब जबकि विज्ञान ने विधवाओं और अविवाहित माताओ को गोद पुरुष सयोग के बिना हरी करनी प्रारम्भ कर दी तो किसी को आश्चर्य नहीं लगता। ट्यूब से जो बालक आजकल जन्म ले रहे हैं आखिर वह भी तो नियोग का ही परिवर्तित रूप है। पीछे नई दिल्ली के बालक इण्डिया मेडिकल इस्टीट्यूट मे जब एक देवी ने इसी विधि से बच्चे को जन्म दिया तो वह यो तो बहुत खुश थी पर एक ही शिकायत उसे रही—बालक की नाक बैठी हुई है उसका चेहरा कुछ ठट पहाडो जैसा है। डाक्टर ने कहा—अगली बार जो भी चेहरा आप पसन्द करे। पहले उस व्यक्ति को हमारे पास भेज दे। फिर आप को दुबारा शिकायत का अवसर नहीं आयेगा। अब बताइये यह नियोग नही है तो क्या है ?

युक्ति-तर्क और प्रमाणो से पुष्ट सिद्धान्तो के आधार पर सत्यार्थप्रकाश जब स्वामी जी लिख चुके तो उसके अन्त मे पृथक् से भी कुछ पृष्ठ उन्होंने जोडे। इन पृष्ठो का नाम उन्होंने रखा—'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश, अर्थात् कुछ वह बातें जिन्हें वह मानते हैं अथवा जिन्हें नही मानते। इनमे मनुष्य की परिभाषा करते हुए स्वामी जी ने लिखा है—जो अन्याय को मिटाने मे प्राणों तक की बाजी लगा दे मैं उसे ही मनुष्य कहता हूं। मनुष्य की यह परिभाषा और किसी पर घटती हो या न घटती हो पर स्वामी जी पर तो पूरी ही घटती है। एक देशी रियासत (जोधपुर) मे इसी तरह के अन्याय का सामना करते हुए उन्हें विष दिया गया और उसी मे उनका निर्वाण भी हुआ। सत्य का प्रचार करने मे कठिनाइया तो आना स्वाभाविक ही हैं। जिसके स्वार्थ पर अथवा कमजोरियो पर चोट पड़ती है उनका तिलमिलाना भी स्वाभाविक है। पर यह ही वह समय है जब व्यक्ति के धैर्य और साहस की परीक्षा होती है। इन्हीं पृष्ठों मे महर्षि भर्तृहरि के एक श्लोक का उदाहरण भी स्वामी जी ने दिया है। प्रतीत होता है यह श्लोक उन्हें बहुत पसन्द था।

निन्दन्तु नीतिनिपुणा
यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु
वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु
युगान्तरे वा,
न्याय्यात् पथ प्रविचलन्ति
पद न धीरा ॥

राजनीति के पडित प्रशसा करें चाहे निन्दा करें। सम्पत्ति रहे चाहे जाय और मृत्यु भी आज आती है या कल आती है, इनकी परवाह किए बिना धैर्यवान् पुरुष कभी सत्य और न्याय का मार्ग नहीं छोडते।

बुझ न पावें दीप

—कवि कस्तूरचन्द 'घनसार'

(१)

तमसा विभावरी थी भारत मे आच्छादित,
भटक गये थे सत्य मिला नही रास्ता।
चमक रहा था एक मथुरा मे दिव्य-दीप
वही ले प्रकाश आया, दयानन्द खास्ता ॥

प्रकाश बढाया वेद-ज्योति ले के स्वामी जब,
भागे उल्लू छुपे कहीं, रहा नहीं वास्ता।
दीवालो प्रकाश प्रकाश आज, दिवाली का रूप भासा,
दिन-दिन बढो 'घनसार' की सुवास्ता ॥

(२)

वेदिक दिवाली यदि देश में आती तब,
कभी नही दुख-तम, अन्धेरा न आगता।
मान बैठे दिवाली ये, मिट्टी का लगाय दीप,
क्षणिक लौकिक कैसी ! दिवाली ये रागता ॥

दिव्य-दीप जाग गया ब्रह्मचारी दयानन्द,
यही है दिवाली आज प्रेम को परागता।
कवि 'घनसार' यही दिवाली मनाते नित्य,
दिव्य-दीप दिवाली मे रहे सदा जागता ॥

(३)

दिवाली दिवाली लोग, गाते नित्य दिवाली को,
दिवाली न देखी कभी दिवाली न जानता।
दिवाली के दिन ऋषि, दिव्य-दीप दिखाया था।
अन्धेरा हटाय गये, भरी थी अज्ञानता ॥

अरे ! याद आती हमें, दिवाली-प्रकाश पाया,
वैदिक दिवाली जिन आर्य लोग मानता।
जगाओ वेदिक दीप, यदि जो दिवाली चाहो,
कवि 'घनसार' सत्य-दीप पहिचानता।

(४)

वेदिक विचार वही ज्ञान का प्रकाश उद,
यही दिवाली घर अन्धेरा हटाया है।
दिव्य-दीप जगे जिन, दयानन्द जगा गये,
वही है प्रकाश आज, तिमिर भगाया है ॥

आई तू दिवाली ब्रह्मचारी को ले जाने हेतु,
इसी से हुआ है दुख मन मुरझाया है।
सकेत किये थे ऋषि दिव्य-दीप दिखाकर,
बुझ नहीं पावे कभी ऐसा फरमाया है ॥

आत्मत्याग के प्रेरक दीप—महर्षि दयानन्द

—डा० सुरेशव्रत राय

भुवन भास्कर के देखते-देखते विश्व को निगल जाने वाला गहन अन्धकार! वह भी अमावस की काली अंधियारी! कहते हैं न 'करेला, ऊपर से नीम चढ़ा!' इस अभेद्य अन्धकार की तुलना में नगण्य होने के बावजूद चतुर्दिक् आलोक फैलानेवाले टिमटिमाते दीप और, इस दृढ़ संकल्प कर्तव्य निष्ठा का प्रतीकात्मक पर्व दीपोत्सव!

दीप-नन्हा-सा माटी का दीया, नाम मात्र तेल और नन्ही-सी बाती दीया, जो सृष्टि के प्रारंभ से सूर्य के अस्ताचलगामी होने पर टिमटिमाता हुआ संसार का मार्गदर्शन करता चला आ रहा है- स्वयं तिल-तिल कर जलते हुए अंतिम क्षण तक दूसरों को प्रकाश देने के अद्वितीय आत्मत्याग, अपने कर्तव्य के प्रति असीम निष्ठा और जागरूकता सजोये भारतीय चिंतन के अनुसार अन्धकार में रजत-रेख पर्याप्त नहीं है, भीतर-बाहर आलोकित, भौतिक प्रकाश की परम प्रकाश में परिणति साधना का लक्ष्य है दीप इस ओर संकेत करते हैं।

एक ओर दीप, जिसने अकेले, नितांत एकाकी, अन्धविश्वास, अज्ञान, शोषण के अन्धकार में डूबे समाज को आलोकित किया और स्वयं बलिदान हो कर अखंड ज्योति में लीन हो गया। एक ओर धर्म के नाम पर फैले स्वार्थी सम्प्रदायों द्वारा वेद- शास्त्रों की कुत्सित तथा भ्रष्ट व्याख्या करते हुए अनाचार को शास्त्रोक्त प्रमाणित करने के षड्यन्त्र तथा समाज में दुराचार, जनता के शोषण और अज्ञान के योजनाबद्ध पोषण के विरुद्ध पाखंड खंडिनी पताका ले कर ढोंगियों, मठाधीशों को चुनौती तथा शास्त्रार्थ। दूसरी ओर, बहका, फुसला कर हिंदू धर्म पर हो रहे आक्रमण का प्रतिरोध तथा समाज की मुक्ति के लिए सतत निर्भीक संघर्ष,

विरोधियों ने एक नया नारा दिया 'समाजी से अच्छे नमाजी' महर्षि दयानन्द विचलित नहीं हुए और अपने सिद्धांत के लिए आत्म-बलिदान कर दिया। किसी के प्रति कटुता नहीं। 'प्रभु उन्हें क्षमा करो क्योंकि वे नहीं जानते कि उन्होंने क्या किया।' 'अपने हत्यारों के प्रति यह कहनेवाले क्षमाशील महापुरुष तो मिलेंगे परन्तु अपने हत्यारे जगन्नाथ को क्षमा करने के साथ रुपयों की थैली देते हुए भक्तों तथा शासन के आक्रोश से बचाने के लिए सुरक्षित स्थान पर चले जाने का परामर्श महर्षि दयानन्द जैसा संत हो दे सकता है। जिस देश के प्रधान मन्त्री पद पर महिला हो, राज्यपाल या अन्य उच्चतम पदों पर महिलाएँ काम कर रही हों, पुलिस, सेना, विज्ञान, न्यायपालिका आदि कोई क्षेत्र जिनसे अछूता न रहा हो, इन सब को इस अद्वितीय झिलमिलाते दीप के प्रति सदैव कृतज्ञ होना चाहिए,

स्त्री-शिक्षा, संस्कृत अध्ययन, समस्त वर्गों को वेद पठन-पाठन की समान स्वतन्त्रता, विधवा-विवाह, पाखंड-खंडन, हरिजनोद्धार, गो-रक्षा, शुद्धि आंदोलन, जीवन में धर्म के व्यावहारिक पक्षों का विवेचन, धार्मिक साधना का व्यावहारिक रूप, दूसरों की उन्नति में अपनी उन्नति समझने परोपकार में रत रहने, मानवप्रेम, प्राणिमात्र के प्रति ममता वैदिक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना धर्म को दुराचार से मुक्ति आदि शायद उस प्रखर व्यक्तित्व तथा युगद्रष्टा को ठीक-ठीक कल्पना उसके योगदान का मूल्यांकन संभव नहीं है।

धर्मयुग २५ अक्तूबर १९८१ से
साभार सम्पादक

(पृष्ठ ९ का शेष)

ऋषि-निर्वाण-दिवस का सन्देश

(१) जो अपनी ही स्त्री से प्रसन्न और अनुगामी होता है, वह गृहस्थ में भी ब्रह्मचारी के सदृश है।

(२) जिस कुल में भार्या से भर्त्ता और पति से पत्नी अच्छे प्रकार प्रसन्न रहती हैं, उसी कुल में सौभाग्य और ऐश्वर्य निवास करते हैं।

(३) जिस घर में स्त्रियों का सत्कार (पूजा) होता है उसमें विद्यायुक्त पुरुषों की देव संज्ञा धर के आनन्द से क्रीड़ा करते हैं और जिस घर में स्त्रियों का सत्कार नहीं होता, वहाँ सब क्रिया निष्फल हो जाती हैं।

(४) जिस घर व कुल में स्त्री लोग शोकातुर होकर दुःख पाती हैं, वह कुल शीघ्र नष्ट हो जाता है और जिस घर या कुल में स्त्री लोग आनन्द से उत्साह और प्रसन्नता से भरी हुई रहती हैं, वह कुल सर्वदा बढ़ता रहता है, यह बात सदा ध्यान में रखनी चाहिए कि पूजा शब्द का अर्थ 'सत्कार' है और दिन-रात में जब-जब प्रथम मिले वा पृथक् हों, तब-तब प्रीतिपूर्वक 'नमस्ते' एक दूसरे को करे।

गृहस्थ आश्रम सबसे बड़ा—दयानन्द

गृहस्थ आश्रम नरक का द्वार नहीं किन्तु स्वर्ग है और इसमें परिवार के प्रत्येक अंग—छोटे-बड़, माता-पिता, बहिन-भाई इत्यादि को किस प्रकार रहना चाहिए, इसका सुन्दर और भावपूर्ण विवेचन ऋषि दयानन्द ने 'संस्कारविधि' के गृहस्थाश्रम प्रकरण में वेद, मनुस्मृति इत्यादि ग्रन्थों के आधार पर किया है। कुछ अंश यहां अंकित किए जाते हैं—

(१) जैसे वायु के आश्रय से सब जीवों का वर्तमान सिद्ध है, वैसे ही गृहस्थ के आश्रय से ब्रह्मचारी वानप्रस्थ और सन्यासी, अर्थात् सब आश्रमों का निर्वाह होता है। (मनु ३।७७)।

(२) जिससे ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और सन्यासी—इन तीन आश्रमियों का अन्न-वस्त्रादि दान से नित्यप्रति गृहस्थ धारण-पोषण करता है, इसलिए व्यवहार में गृहाश्रम सब से बड़ा है। (३) रे स्त्री, पुरुषो! जो तुम अक्षय मुक्ति सुख और इस संसार में सुख की इच्छा रखते हो, तो जो दुर्बलेन्द्रिय और निर्बुद्धि पुरुषों के धारण योग्य नहीं है, उस गृहाश्रम को नित्य प्रयत्न से धारण करो। (मनु० ३।७८।७९)।

सुखी परिवार के आधार—वेद

गृहस्थ में आपस में पारिवारिक सम्बन्ध कैसे हों, इस विषय में वेद के मन्त्रों के—प्रमाण से जो निर्देश ऋषि ने दिए हैं उनमें कुछ इस प्रकार हैं—

१ हे गृहस्थो! जैसे तुम्हारा पुत्र माता के साथ प्रीतियुक्त मन-वाला, अनुकूल आचरण युक्त और पिता के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार का प्रेम वाला होवे, वैसे तुम भी पुत्रों के साथ सदा वर्ता करो। जैसे स्त्री पति की प्रसन्नता के लिए माधुर्य गुण युक्त वाणी को कहे वैसे पति भी शान्त होकर अपनी पत्नी से सदा मधुर भाषण किया करे।

२ हे गृहस्थो! तुम्हारे में भाई-भाई के साथ द्वेष कभी न करे और बहन-बहन से द्वेष कभी न करे तथा बहिन भाई भी परस्पर द्वेष मत करो, किन्तु सम्यक प्रेमादि गुणों से युक्त समान गुण, कर्म स्वभाव वाले होकर मंगलकारक रीति से एक दूसरे के साथ सुखदायक वाणी को बोला करो।

३ रे देवी! तू अपने श्वसुर से प्रीति करके (सम्राज्ञी) सम्यक् प्रकाशमान चक्रवर्ती राजा की रानी के समान पक्षपात छोड़ के प्रवृत्त हो, अपनी सास में प्रेम युक्त हो, उसी की आज्ञा से सम्यक् प्रकाशमान हो-कर और अपनी ननद से प्रीतियुक्त और अपने देवर और ज्येष्ठ अथवा कनिष्ठ हैं, उनमें भी प्रीति से प्रकाश-मान, अविकारयुक्त हो, अर्थात् सब से अविरोधपूर्वक प्रीति से वर्ता कर।

निर्वाण दिवस का सन्देश

इस प्रकार वेदों और प्राचीन आर्य ग्रन्थों में गृहस्थ की वरीयता, पति-पत्नी व्यवहार और पारस्परिक संबंधों में मधुरता, सन्तान-उत्पादन, पालन, शिक्षण, गृहस्थों के लिए *कल्याण और सुखप्रद दैनिक धार्मिक कर्त्तव्य—यज्ञ का महत्त्व*—इत्यादि समस्त दैनिक और गृहस्थ की पूरी अवधि तक—पूर्ण ब्यौरे के साथ वर्णित हैं और महर्षि दयानन्द की अपरिमित कृपा और अकथनीय उपकार है, जो यह सब साहित्य सहज उपलब्ध है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के अवसर पर प्रत्येक आर्य गृहस्थी का परम कर्त्तव्य है कि वह स्वयम् और अपनी सन्तानों को इस श्रेष्ठ और जीवन उन्नायक मार्ग पर चलने के लिए सतत प्रयत्नशील हो। आज देश में पश्चिम की आंधी बड़ वेग से परिवारों के भारतीय स्वरूप का अकथनीय परिवर्तन कर रही है। पारिवारिक श्रेष्ठ मर्यादाएं और परम्पराएं एकदम टूट रही हैं। परिवार और समाज में कदम-कदम पर उलझन पैदा हो रही हैं। आर्य पुरुषों को इस दिशा में अपना दायित्व समझना है।

दयानन्द के जीवन की रोमांचपूर्ण घटनाएँ

संस्मरण भावों को उद्वेलित कर जीवन को गति प्रदान करते हैं। महापुरुषों के संस्मरण हमारी अमूल्य निधि हैं। मानव इनसे प्रेरणा-प्राप्त कर जीवन का लक्ष्य निर्धारित करता है। इसी उद्देश्य को दृष्टि में रखकर यहां पर कुछ पुष्प चुनकर मानव जीवन को सुरभित करने के लिए जन-मानस की सेवा में अर्पित हैं। रोचकता जीवन को सरस बनाती है, मधुर बनाती है। इसीलिए संस्मरण केवल संस्मरण के रूप में संकलित न करके रोचक संस्मरण के रूप में प्रस्तुत हैं। जिससे मानव समाज प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को सरस बनाते हुए उच्च आदर्श स्थापित करे। वैसे तो संस्मरण रूपी सिंधु अथाह है परन्तु यहां उस अथाह समुद्र से संचित वे अनमोल मोती प्रस्तुत हैं जो निश्चय ही उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होंगे— ❀

ब्रह्मचर्य की शक्ति

❀ एक दिन स्वामी दयानन्द जी नमदा के तट पर बैठे प्राकृतिक शोभा निहार रहे थे। नदी में बच्चों व स्त्री-पुरुषों से भरी एक नाव आती दिखाई दी। नाव के पास आते ही बड़ी भयंकर आंधी-तूफान एवम् वर्षा आ गई, जिससे नाव में सवार सभी व्यक्तियों में भय और आतंक छा गया और सभी जोर जोर से रोने, चीखने व चिल्लाने लगे। इस भगदड़ में नाव में पानी भर गया और वह नीचे को धंसने लगी। इस समय बच्चों व स्त्रियों का करुण चीत्कार दिल को दहला दे रहा था। ऋषि यह करुण दृश्य देखकर आगे बढ़ तथा "बलमसि बलं मयि देहि" का जाप करते हुए पचासों आदमियों से भरी नाव को अकेले ही तट पर खींच लाए। ★

अहिंसा सिद्ध-योगीराज

एक दिन कानपुर में महर्षि दयानन्द गंगा के जल में लेटे हुए थे। आधा शरीर जल में और आधा शरीर जल से बाहर था कि इतने में थोड़ी दूर पर ही एक मगर निकला। प० हृदयनारायण वकील के लघु भ्राता उसे देखकर भागे और चिल्लाये कि स्वामी जी मगर निकला है। परन्तु उनके मुंह पर भय की किंचित् मात्र रेखा भी न दिखाई दी, वे जैसे पड़े थे वैसे ही पड़े रहे और बोले कि जब हम उसका कुछ नहीं बिगाड़ते तो वह भी हमें दु:ख न देगा। ❀

गुरुडम के विरोधी दयानन्द

कविराज श्यामलदास ने स्वामी जी से कहा कि आपका कोई स्मारक चिह्न बनना चाहिए। उन्होंने उत्तर दिया ऐसा न करना, अपितु मेरे शव की भस्म किसी खेत में डाल देना, जिससे वह खाद के काम आवे। स्मारक न बनाना। ऐसा न हो कि मूर्ति की भांति उसका पूजन होने लगे। ★

सन्ध्या करना धर्म, न करना पाप है।

पण्डित लखराम जी सन्ध्या वन्दन में बड़े पक्के थे। एक बार वे महात्मा मुन्शीराम जी के साथ शिक्रम में लुधियाना से जगराव जा रहे थे। मार्ग में पानी लेकर शौच गए। लौटने पर पता लगा कि हाथ-पैर धोने और कुल्ला करने के लिए पानी नहीं है। सन्ध्या का समय हो चुका था। पण्डित जी सन्ध्या करने बैठ गए। जब सन्ध्या कर चुके तब एक व्यक्ति ने दिल्लगी में पूछा—पण्डित जी! क्या पेशावरी सन्ध्या कर चुके। प० जी ने गम्भीर स्वर में कहा—तुम पोप हो जो बिना पानी मिले ब्रह्मयज्ञ नहीं कर सकते। भोले भाई! स्नान कर्म है हुआ या न हुआ। परन्तु सन्ध्या धर्म है और उसका न करना पाप है। ★

पालक के प्रतिस्नेह

❀ चाणोद आश्रम में रहते हुए ऋषि योगाभ्यास में लीन रहते थे। वे उन दिनों केवल दूध ही पीते थे जो पास के ग्रामवासी आश्रम में भेज देते थे। एक दिन उनके गुरु तथा साथी कुछ दिनों के लिए आश्रम से बाहर चले गए। ग्रामवासियों ने समझा कि आश्रम में कोई नहीं है और उन्होंने दूध भेजना बन्द कर दिया। ईश्वर प्रणिधानी दयानन्द निराहार समाधि में लीन रहे। दूसरे दिन ही एक गाय भागती हुई आई और ऋषि की कुटिया के आगे रम्भाने लगी। तभी गाय को खोजते हुए उसके मालिक भी वहां आ गये और उसे खींचकर ले जाने लगे, लेकिन गाय टस से मस न हुई। कोलाहल सुनकर ऋषि बाहर आये तो गाँव वालों को अपनी भूल मालूम पड़ी। वही पर गाय का बछड़ा लाया गया और दूध दुहकर ऋषि को पिलाया गया। इस तरह दयानन्द जी को दूध पिलाकर ही गोमाता लौटी। ○

सत्संग का जादू

१४ श्रावण सवत् १९३६ के दिन ऋषि दयानन्द बरेली आये। उनकी सभा का प्रबन्ध-भार मुंशीराम के पिता जी पर पड़ा। पहले दिन के व्याख्यान से ही प्रभावित होकर अपने नास्तिक पुत्र के सुधार की आशा से पुत्र को कहा—"बेटा मुन्शीराम! एक दण्डी सन्यासी आये हैं, बड़े विद्वान् और योगीराज हैं। उनकी वक्तृता सुनकर तुम्हारे संशय दूर हो जायेंगे। कल मेरे साथ चलना।" यद्यपि केवल संस्कृत जानने वाले के मुख से बुद्धि की कोई बात सुनने की आशा न थी, परन्तु जाने पर पहले दस मिनट के व्याख्यान ने ही इन पर विलक्षण असर किया। फिर तो महर्षि के सत्संग में सर्वप्रथम आने वाले और सब से पीछे जाने वाले मुन्शीराम ही बन गये। ❀

निर्लोभी दयानन्द

एक दिन महाराणा उदयपुर ने एकान्त में महर्षि दयानन्द से निवेदन किया—कि आप मूर्तिपूजा का खण्डन न करें। ऐसा करने से आप एकलिंग के महन्त बन जायेंगे। आपका कई लाख रु० का अधिकार हो जायेगा और एक अर्थ में यह राज्य भी आपके अधीन रहेगा। महाराणा के इस प्रस्ताव को सुनकर महर्षि बोले कि आप लोभ देकर मुझ से सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की आज्ञा भंग कराना चाहते हैं। यह छोटा सा राज्य और उसके मन्दिर जिससे मैं एक दौड़ में बाहर हो सकता हूं मुझे कभी भी वेद और ईश्वर की आज्ञा भंग करने पर उतारू नहीं कर सकते। मैं कदापि सत्य को छोड़ व छिपा नहीं सकता। ❀

शक्ति-पुञ्ज दयानन्द

मेरठ की घटना है एक रात्रि ६ बजे बेनीप्रसाद और उनके कुछ मित्रों ने महाराजा की सेवा में उपस्थित होकर कहा कि हम आपके पैर दबाना चाहते हैं। महर्षि जान गए कि इस कहावी से वह लोग उनके बल की परीक्षा करना चाहते हैं। अत: उन्होंने कहा कि पैर तो पीछे दबाना पहले हमारे पैर को उठाओ। यह कह कर उन्होंने पैर फैला दिए। युवकों ने बहुतेरा बल लगाया, परन्तु पैर को न उठा सके। ❀

ब्रह्मचर्य का प्रताप

जालन्धर में सरदार विक्रम सिंह ने स्वामी जी से कहा कि सुनते हैं ब्रह्मचर्य से बहुत बल बढ़ता है। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि यह सत्य है और शास्त्रों में भी ऐसा कहा गया है। वह बोले कि आप भी ब्रह्मचारी हैं परन्तु आप में बल प्रतीत नहीं होता। महाराज उस समय तो चुप रहे किन्तु एक दिन जब सरदार विक्रमसिंह अपनी दो घोड़ों की गाड़ी पर सवार हुए तो स्वामी जी ने चुपके से उनकी गाड़ी का पिछला पहिया पकड़ लिया। कोचवान के चाबुक मारने पर भी जब घोड़े आगे न बढ़े तो कोचवान और सरदार ने पीछे मुड़कर देखा कि स्वामी जी ने गाड़ी का पहिया पकड़ा हुआ है। स्वामी जी बोले—मैंने यह ब्रह्मचर्य-बल का आपको परिचय दिया है। ❀

भक्त का रक्षक ईश्वर

□ ऐसे ही एक दिन पेड़ के नीचे सो रहे थे कि सर के पीछे सांप की फुफकार सुनाई दी। ऋषि यह सोच ही रहे थे कि अपनी रक्षा कैसे करें, एक बाज उड़ता हुआ आया और झपट्टा मारकर सांप को ले उड़ा।

□ महर्षि स्वामी दयानन्द योगियों की खोज में गहन वनों में घूमते फिरते थे। दो दिन तक बिना अन्न-जल ग्रहण किये चलते रहे। अन्त में भूख और थकावट से निढाल होकर एक पेड़ के नीचे जा लेटे। तभी चार-पांच भालू आए लेकिन स्वामी जी बिना डरे लेटे रहे। एक भालू उनके पास आया और सूंघ कर चला गया लेकिन थोड़ी देर बाद ही आश्चर्य था कि वह भालू मुंह में शहद का छत्ता दबाये आया और दयानन्द जी के पास

(शेष पृष्ठ १५ पर)

एकता के प्रतिपादक ऋषि दयानन्द

लेखक—श्री प० सत्यप्रिय जी शास्त्री एम ए

महर्षि दयानन्द को लोगों ने भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से देखा है, परन्तु ऋषि के सत्य को प्रकट करने एव मिथ्यामत को खण्डित करने के सर्वोचित कार्य से कुछ लोगों को मनस्य तथा विघटनवादी प्रवृत्ति की गन्ध आती है। यह बात केवल सामान्य लोगों की ही नहीं, बल्कि महात्मा गांधी जैसे व्यक्ति ने भी किसी काल्पनिक भावावेश में आकर एक समय महर्षि तथा सत्यार्थप्रकाश के विरुद्ध अनर्गल बातें लिख कर सर्वप्रिय होने का असफल प्रयास किया था, तो क्या वास्तव में महर्षि के विचार एवं कार्य मानव समाज में विघटन उत्पन्न करते हैं? आइये, मस्तिष्क के कपाट खोल कर शान्ति के साथ इस पर विचार करें। महर्षि से पूर्व ईश्वर की मान्यताओं का सत्र एक विश्वव्यापी अखाड़ा बना हुआ था। राम का उपासक कृष्ण को गाली देता था, कृष्ण के भक्त राम तथा विष्णु के भक्तों को कोसते थे इसी प्रकार शिव इन्द्र ब्रह्मा, सरस्वती इत्यादि के भक्तों के वर्ग बने हुए थे जो एक दूसरे को देख कर राजी नहीं थे, सारा हिन्दू समाज ईश्वर के नाम पर असख्य टुकड़ों में बटकर युद्ध का अखाड़ा बना हुआ था ऋषि ने उस समय ईश्वरैक्य का पाठ पढ़ाया और उपरोक्त सारे नाम ईश्वर के गौण तथा कार्मिक बताते हुए, सबको एकेश्वरोपासना के सूत्र में बांध कर मानव समाज को सगठित किया, सत्यार्थप्रकाश का प्रथम समुल्लास ईश्वर के नाम पर झगड़ते हुए विघटित मानव समाज के सुसगठित करने के सत्प्रयास का मुंह बोलता चित्र है, क्या इतने पर भी ऋषि को फूट डालने वाला कह कर अपनी अज्ञानता प्रकट करने का कोई साहस करेगा?

ऋषि से पूर्व धर्म ग्रन्थ के नाम पर कितना रक्तपात होता था और मानव समाज कितने वर्गों में बटा हुआ था? इसका तो इतिहास ही साक्षी है, परन्तु ऋषि ने कहा कि सब सम्प्रदायों का मूल वेद है अत वेद को अपना धर्म ग्रन्थ मानो क्योंकि यह सार्वभौम है, अन्य सारे ग्रन्थ किसी देश विशेष, वर्ग विशेष, एवं विचार विशेष से ही बंधे हुए हैं, औरों की क्या कहें, आस्त में ही धर्म ग्रन्थों के सम्बन्ध में न जाने कितने वर्ग बने हुए थे, ऋषि ने प्रबल घोषणा की कि इन सभी धर्म ग्रन्थों में जितना सत्य है, वह वेद से गया है, अत आगे वेद पर एक मत होकर आचरण कर पाठक सोचें कि ग्रन्थ विशेषों से विभक्त अनेक मत निष्ठ लोगों को एकसूत्र में पिरोने का कार्य सगठित करने का प्रशसनीय प्रयास नहीं कहलायेगा क्या?

महर्षि के समय विश्व मजहबों की टुकड़ियों में बटकर पारस्परिक जघन्य सघर्ष का घृणित क्षेत्र बना हुआ था, मजहब के नाम पर क्या-क्या अमानवीय कृत्य किए गए उन्हें लिखते हुए लेखनी भी थर्राती है, ऋषि ने सब को सगठित होने का उपाय मानवीय धर्म वर्णन किया। अर्थात् धर्म उत्तमाचरणों को धारण करने का नाम है। ऋषि ने कहा कि वर्तमान मजहबों में जो अच्छी बातें हैं, वे सभी मानव धर्म वेद से गई हैं, दूसरी बात यह कि सभी मत मनुष्य विशेषों के आश्रय पर खड़े किए गए हैं इसलिए मजहब आपस की फूट का कारण बने हैं। ऋषि ने कहा जो भी उत्तमाचरण करो वह धार्मिक और उत्तमाचरण में सभी एकमत हैं भेद है तो अपनी कपोल कल्पनाओं में है अत तुम सब मानव समाज को झगड़ों की भट्टी में झोंकने वाले इन मजहबों के प्रपञ्चों से ऊपर उठ कर "आत्मवत सर्वभूतेषु आत्मन प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्" तथा धारणाद्धर्म इत्याहु । से यथार्थ धर्म को अपनाओ क्योंकि धर्म आपस में लड़ाता नहीं है बल्कि परस्पर सौहार्द सिखाता है।

और की छोड़िए एक ही ईश्वर के मानने वाले ईश्वर के सगुण तथा निर्गुण स्वरूपों पर विभक्त होकर लड़ते थे। ऋषि ने समझाया प्रत्येक वस्तु सगुण तथा निर्गुण होती है, जो गुण वस्तु में हो उनके कारण तो सगुण और जो न हो उनके कारण निर्गुण होती है। यह नियम सर्वत्र लागू होगा, अत ईश्वर सगुण भी है तथा निर्गुण भी है। इस कारण एक ही ईश्वर के भक्तो तुम्हें एक ईश्वर के नाम पर काल्पनिक मिथ्या बात बना कर झगड़ना नहीं चाहिए, मानवों को सगठित करने का कितना सुन्दर उपाय बताया।

इसके अतिरिक्त लोग कहते थे कि दर्शनकारों में परस्पर मतभेद हैं, इस विचार का प्रभाव आर्यों में फूट को बढ़ाने में सहायक होता था, स्वामी जी ने कहा कि दर्शनकारों में कोई मतभेद नहीं था। सृष्टि के छः अवयवों की एक एक दर्शनकार एक एक की व्याख्या करता है, वेद एवं वैदिक मान्यताओं पर किसी का भी मतभेद नहीं है। ऋषि ने इसी विचार के माध्यम से आर्यों को सगठित करने का प्रयास किया।

ऋषि दयानन्द के काल में जन्मगत जाति पाति के द्वारा तो फूट पिशाचनी आर्यों को निगले ही जा रही थी, दयानन्द ने उसका विरोध कर गुण कर्म, एवं स्वभाव के आधार पर ऊंच नीच का निर्णय दिया जिसके कारण मानव समाज को सगठित होने में अत्यधिक सहायता मिली उस समय प्रान्तवाद एवं भाषावाद तो सीमा पार करने को हो रहा था ऋषि ने इनकी सीमाएं तोड़ कर स्वयम् उत्तर भारत में प्रचार किया और अपना साहित्य आर्य भाषा में लिख कर सारे राष्ट्र को सगठन के सूत्र में पिरोने का दूरदर्शिता पूर्ण कार्य किया। फूट के प्रतीक छुआ छूत ने जो विनाश किए वे शताब्दियों तक मिटने असम्भव हैं। इसी डायन ने देश के टुकड़े करा दिए और आज भी और टुकड़े होने के आसार हो रहे हैं काश हम महर्षि के बताए ऐक्य के उपायों को अपना पाते तो आज देश का नक्शा ही और कुछ होता। इस प्रकार ऋषि के लगभग प्रत्येक कार्य से देश के सगठन को बल ही मिला, परन्तु आज के चोर एवं मत प्रियता वादी लोग ऋषि पर विघटन वाद का आक्षेप लगाते हैं। चूं कि ऋषि ने सत्य कह दिया है यह उनका दोष समझ लीजिए आज तो जो हलवा एवं गोबर को एक जैसा बताए वह ठीक परन्तु यदि बुद्धि से काम लेकर दोनों में भेद बताए तो फूट डालने वाला साम्प्रदायिक कहलाएगा। ऋषि दयानन्द के साथ भी यही सब कुछ हो रहा है, यदि ऋषि जी चोर को चोर और शाह को शाह न कह कर दोनों को समान कह देते तो इन लोगों की दृष्टि में ठीक था। अत ऋषि दयानन्द सत्यता के आधार पर ही एकता स्थापित करना चाहते थे, जो सर्वथा उचित था। आर्यों! अपने कार्य से मानव समाज को एकता के सूत्र में पिरोने वाले आचार्य दयानन्द के शिष्य हो कर क्यों अनेकता विघटन एवं कलह के शिकार बन रहे हो सोचो तुम अपने आचार्य के आदेशों से कितनी दूर जा रहे हो क्या ऋषि का ज्वलन्त जीवन तुम्हें कुछ सिखाएगा नहीं? लौटो सम्भलो और होश में आओ तथा ऋषि के सच्चे शिष्य होने के गौरव एवं अधिकार को प्राप्त करके अपने सच्चे आर्यत्व का प्रमाण दो।

★

महर्षि दयानन्द शिक्षण समिति, खण्डवा :
बालक के विकास में पालक एवं शिक्षक का सहभाग महत्त्वपूर्ण है :

खण्डवा, गत दिवस श्री डी सी चदेल कार्यपालन मंत्री लोक स्वास्थ्य यान्त्रिकी विभाग खण्डवा ने महर्षि दयानन्द बाल मंदिर एवं प्राथमिक शाला रामा कॉलोनी खण्डवा की 'पालक शिक्षक सगोष्ठी' के आयोजन दिनांक १६।१०।८८ के अवसर पर अध्यक्ष पद से बोलते हुए उक्त विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर आर्य शिक्षण समिति के अध्यक्ष श्री रामचन्द्र आर्य व पालक श्री एम पी सोनी श्री लखनलाल मालवीय श्रीमती कुसुम फुलरे, श्रीमती जीवनलता चौधरी, श्रीमती रजना वोमे श्रीमती सरोज झवर तथा डा० श्रीमती स्नेहलता चदेल, श्री छगनलाल चौधरी तथा श्री अनोखीलाल आर्य ने अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव प्रदान किये।

—श्री डी सी चदेल

शिक्षा समिति के मंत्री श्री कैलाशचंद पालीवाल ने समिति द्वारा सचालित सस्थाओं के माध्यम से शिक्षा की प्रगति हेतु शिक्षण समिति के प्रयासों की जानकारी दी तथा सस्था की सर्वांगीण प्रगति हेतु आश्वासन दिया।

—कैलाशचन्द पालीवाल

आर्यसमाज के संस्थापक—

महर्षि दयानन्द सरस्वती

लेखक—अक्षयकुमार जैन
पूर्व सम्पादक नवभारत टाइम्स विख्यात पत्रकार

भारत की यह खूबी रही है कि जब जब और जिस-जिस प्रकार के व्यक्तियों की राष्ट्र को जरूरत पड़ी तब-तब वैसे राष्ट्र नेताओं का आविर्भाव हो गया। महात्मा बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य, विवेकानन्द की परम्परा में ही स्वामी दयानन्द भी आते हैं, जिन्होंने देश को रूढ़ियों में पड़ते जाने से बचाया। उन्हीं के शब्दों में मेरा देश जो संसार भर का शिक्षक रहा, संसार भर में धनी माना रहा संसार भर में सत्य और सदाचार में अनुकरणीय रहा, किसी प्रकार पुन अपना वही पहला उच्च स्थान प्राप्त करे, यही मेरे हृदय की अभिलाषा है।' इसी अभिलाषा को पूरा करने में उन्होंने जीवन भर लगा दिया। वह जीवन पर्यन्त अखण्ड ब्रह्मचारी रहे, किन्तु गृहस्थी के दु खों का ध्यान करके उन्होंने उन्हें भी उपदेश दिये।

यह संयोग की बात है कि महात्मा गांधी की तरह स्वामी दयानन्द भी गुजरात के रत्न थे भारत के पश्चिमी भाग मे सौराष्ट्र नामक प्रदेश है। उसे काठियावाड़ कहा जाता है। स्वराज्य से पहले गुजरात प्रदेश में मोरवी नाम का एक देसी राज्य था जिसके टंकारा नगर के शिवापुर मुहल्ले में महर्षि दयानन्द का जन्म हुआ।

स्वामी जी के बचपन का नाम मूलशंकर था। उनके पूर्वज त्रिवाड़ी (त्रिपाठी) ब्राह्मण थे। प० कर्शन जी के घर विक्रम संवत् १८८१ सन् १८२४) में महर्षि का जन्म हुआ। दयानन्द अपने पिता की ज्येष्ठ सन्तान थे। नाम उनका मूलशंकर रखा गया, किन्तु दुलार में उन्हें दयाराम भी कहा जाता था।

इस प्रकार मूलशंकर का जन्म एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण कुल में हुआ। यही कारण है कि गृह त्यागी होने पर अनेक बार ऐश्वर्य-भोग के प्रलोभन मिलने पर भी दयानन्द अपने व्रत से न डिगे। ओखीमठ के महंत को एक बार उन्होंने स्पष्ट उत्तर दिया था— 'यदि मैं धन-सम्पत्ति का इच्छुक होता तो पितृ-गृह छोड़कर कभी न आता क्योंकि मेरे पिता की सम्पत्ति इस मठ की सारी दौलत से किसी प्रकार भी कम नहीं है।'

उनके पिता कर्शन जी धर्म के प्रति दृढ़ आस्थावान थे। वह शिव के परमभक्त, तेजस्वी और कठोर स्वभाव के पुरुष थे। कर्शन जी की धर्म परायणता का एक और प्रमाण डमो नदी के किनारे उनका बनवाया हुआ कुबेरनाथ महादेव मन्दिर मौजूद है।

मूलशंकर का विद्यारम्भ पांच वर्ष की आयु में हुआ। माता-पिता वयोवृद्ध अभिभावक कुल की प्रथा के अनुसार उन्हें शिक्षा देने लगे और उस काल में उन्होंने बहुत से श्लोक और मन्त्र कण्ठस्थ कर लिये। उपनयन संस्कार के बाद आठ वर्ष की आयु में ही सन्ध्योपासना आदि कार्यों का नियम पूर्वक पालन करना उन्होंने शुरू कर दिया। पिता जी की धर्मनिष्ठता के कारण दस वर्ष की आयु में ही मूल जी को पार्थिव पूजा का आदेश दिया गया।

स्वामी जी की तीक्ष्ण बुद्धि का पता इस बात से चलता है कि चौदहवें वर्ष में पदार्पण करने से पहले ही व्याकरण और शब्द रूपावली का अभ्यास करके उन्होंने समस्त यजुर्वेद तथा अन्य वेदों के भी थोड़े अंश कंठाग्र कर लिये थे।

चौदह वर्ष की आयु में ही कुल की प्रथा के अनुसार उनके वाग्दान की तैयारियां होने लगीं। पिता अधिक शिक्षा के पक्षपाती न थे। वह चाहते थे कि पुत्र उनकी भांति जमींदारी करे और सद्गृहस्थ बने, किन्तु पुत्र काशी जाकर उच्चशिक्षा प्राप्त करना चाहता था। वाग्दान तो स्थगित करने को पिता राजी हो गये पर काशी भेजने की बात उन्होंने अस्वीकार कर दी।

महर्षि के प्रारम्भिक जीवन में ऐसी घटना घटी, जिसके कारण वह विरक्त हुए और उनके मस्तिष्क में प्रकाश का उदय हुआ। इस घटना से उनमें मूर्तिपूजा के प्रति अविश्वास जागा। यह घटना उस समय घटी, जब मूलशंकर कुल तेरह वर्ष के थे। शिवरात्रि को धर्मनिष्ठ पिता ने उन्हें व्रत रखने का आदेश दिया। मूल जी ने विधि-पूर्वक उपवास रखा और अन्य साथियों सहित नगर से बाहर शिवालय में पूजा के लिए पहुंचे। शिवरात्रि में चार पहर में चार बार पूजा का विधान है। इस बीच पुजारी को सोना नहीं चाहिए। बालक मूल जी का यह पहला अवसर था, इसलिए वह बहुत सावधान रहा कि उसे नींद न आये।

दूसरे पहर की पूजा समाप्त होने पर मूल जी ने देखा कि मन्दिर के व्रतधारी पुजारी और उपासक मन्दिर से बाहर जाकर सो रहे। यहां तक धर्मनिष्ठ पिता भी इस व्रत का पालन न कर सके। और जब उस शिवरात्रि के उपासकों में अकेला मूल जी ही जाग रहा था तो उसने देखा कि एक बिल में से एक चूहा बाहर निकला और महादेव की पिंडी पर चढ़ाई हुई अक्षत आदि सामग्री को खाने लगा। स्वतन्त्रता-पूर्वक वह महादेव की मूर्ति के ऊपर भी घूम लेता।

इस घटना को देखकर मूल जी के मन में संदेह उत्पन्न हुआ। स्वयं स्वामी जी के शब्दों में— "देखते-देखते मेरे मन में आया कि यह क्या है? जिस महादेव की शान्त मूर्ति की कथा, जिस महादेव के प्रचण्ड पाशुपतास्त्र की कथा और जिस महादेव के विशाल वृषारोहण की कथा गतदिवस व्रतवृत्तान्त में सुनी थी क्या वह महादेव वास्तव में यही है?"

अपने संदेहों को वह देर तक न भेल सके। पिता की कठोरता, धर्म परायणता और शिवभक्ति से वह परिचित थे। धर्म के कठोर बाह्य विधानों के प्रति अपनी अनास्था को शारीरिक दुर्बलता का परिणाम मानना इस आयु में स्वाभाविक था। सम्भवत इसी कारण उन्होंने स्पष्ट विरोध न किया। पर बालक का मन शान्त न रह सका। वह सोच रहा था कि सच्चे शिव के अभाव में ही इन शिव भक्तों का मन वास्तविक पूजा पाठ से पराङ्मुख है। व्रत के माहात्म्य को जानते हुए भी उनमें निद्रा आदि के शैथिल्य का भी कदाचित् यही कारण है। बालक मूलशंकर ने मन में तय किया कि यथार्थ महादेव का दर्शन किये बिना मैं मूर्ति की पूजा नहीं करूंगा। इस निश्चय के बाद उसे नींद भी आने लगी और भूख भी सताने लगी। पिता ने अविश्वासी पुत्र को अधिक देर रोकना उचित न समझकर घर जाने की आज्ञा दे दी। रात का समय, तीन कोस का फासला, इस लिए एक सिपाही के साथ मूल जी को घर भेज दिया पर व्रत भंग न हो यह कहना वह न भूले।

पढ़ने के लिए काशी न भेजकर गांव से थोड़ी दूर पर ही अध्ययन की व्यवस्था की गई थी, किन्तु इसी बीच मूल जी के विवाह की तैयारियां हुई और पिता को पुत्र का इन्कार मिलने पर उन्हें गांव में ही बुला लिया गया। उधर विवाह की तैयारियां हो रही थीं तो एक दिन शाम को बिना किसी से कहे-सुने मूलशंकर ने २२ वर्ष की आयु में सदा के लिए घर का त्याग कर दिया।

घर से चलकर चार कोस दूर एक गांव में उन्होंने रात बिताई। पास-पड़ोस में विख्यात लाला भक्त के पास वह पहुंचे, किन्तु वहां पर भी उनके ज्ञान की प्यास न बुझी। भगवा वस्त्र पहने मूल जी तीन महीने तक वैरागियों के साथ इधर उधर घूमते रहे, फिर सिद्धपुर के मेले में वह पहुंचे। वहां पर उनके एक गांववासी ने उन्हें पहचान लिया और पिता को सूचना दे दी। पिता ने वहां पहुंच उन्हें पकड़ लिया।

पिता चाहते थे पुत्र गृहस्थी बने, पर पुत्र योगाभ्यास करके मृत्यु-यन्त्रणा से मुक्ति पाना चाहता था। तीन दिन पिता की कैद में रहकर, चौथी रात के तीन बजे वह पहरेदारों के सो जाने पर निकल पड़े और फिर न लौटे। चौदह वर्ष तक वह अमृत की खोज में दत्तचित्त रहे। आठ साल तक नर्मदा के तट पर योगाभ्यास करते रहे। इसी बीच उन्होंने ब्रह्मचारी का विधिवत् रूप धारण किया और नियमानुसार उनका नाम मूलशंकर से शुद्ध चैतन्य रखा गया।

नर्मदा तट से वह उत्तराखण्ड की यात्रा पर गये। हरिद्वार में उन्हें तांत्रिक पण्डितों, जंगम सम्प्रदाय आदि अनेकों साधु सम्प्रदायों का परिचय हुआ। स्वामी पूर्णानन्द से सन्यास लेकर दयानन्द नाम पाया। ज्ञान के लिए गुरु की खोज में दयानन्द मथुरा पहुंचे जहां उन्होंने दंडी स्वामी विरजानन्द को प्राप्त कर लिया।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

मेरा गुरु वही है

गुजरात से जो आया, योगी ऋषि कहलाया।
ब्रह्मचारी बन के जिस ने था हिन्द को जगाया ॥
मेरा गुरु वही है, मेरा गुरु वही है।

भारत के बन्धनों की जंजीर जिस ने तोडी।
उलटी जो बह रही थी गंगा की लहर मोडी ॥
मेरा गुरु वही है, मेरा गुरु वही है,

जिस ने स्वदेश भक्ति भारत को आ सिखाई।
गैरों के बन्धनों से हिन्दी को दी रिहाई ॥
मेरा गुरु वही है, मेरा गुरु वही है।

शूद्र को जिस ने आ के था वेद ज्ञान बख्शा।
दलितो को, बेकसो को, था जिसने मान बख्शा ॥
मेरा गुरु वही है, मेरा गुरु वही है।

देरोहरम[1] से जिसने आजाद कर दिया था।
वहदानियत[2] की मैं से दिलशाद कर दिया था ॥
मेरा गुरु वही है, मेरा गुरु वही है।

अमरीका, जर्मनी ने सिक्का है जिस का माना।
अहले जहां ने जिसको अपना गुरु है माना ॥
मेरा गुरु वही है, मेरा गुरु वही है।

वह भगवी झण्डो वाला, वह ज्ञान ध्यान वाला।
ऋषियों की शानवाला, जिस ने किया उजाला ॥
मेरा गुरु वही है, मेरा गुरु वही है।

ऐ वर्क जो फरिश्ता था, देवता ऋषि था।
योगेश्वर दयानन्द हादी[3] वह महर्षि था ॥
मेरा गुरु वही है, मेरा गुरु वही है।

१ मन्दिर व मस्जिद
२ प्रभु भक्ति का नशा
३ मार्ग दर्शक

—प्रिंसीपल मेरा राम वर्क करवाल

(पृष्ठ १२ का शेष)

दयानन्द के जीवन की घटना

रखकर चला गया। ऋषि ने शहद को चाटकर नवजीवन पाया और अपनी यात्रा पर आगे बढ गये।

भारत की दुर्दशा से विह्वल दयानन्द

★ मुक्तिकामी दयानन्द समाधि मे लीन थे कि उनके कानो मैं किसी स्त्री का आर्तनाद सुनाई पडा। उन्होने आख खोली तो देखा कि एक विधवा अपने मृतक पुत्र को साडी के आचल में लपेटे ले जा रही है और शव को नदी मे प्रवाहित करके वह कपडा उसने अपने पास रख लिया। "सोने की चिडिया" कहलाने वाले विश्व गुरु भारत की यह दुर्दशा देखकर ऋषि जार-जार रो पड़े। तभी से मोक्षसुख के लिए गृह त्याग करने वाले दयानन्द जी देशोद्धार के लिए जी जान से जुट गये।

क्षमा-अवतार दयानन्द

अनूपशहर (बुलन्दशहर) मे एक ब्राह्मण ने स्वामी जी के मूर्ति पूजा खण्डन से रुष्ट होकर उन्हे पान मे विष दे दिया। उन्होने न्योली कर्म करके उसे अपने शरीर से निकाल दिया और स्वस्थ हो गये। सैय्यद मुहम्मद को जो यहाँ के तहसीलदार थे, यह वृत्त ज्ञात हुआ तो उसने उस ब्राह्मण पर कोई अभियोग लगाकर कद कर दिया। वह समझता था कि स्वामी जी उसके इस कार्य से प्रसन्न होगे, परन्तु जब वह उनके सामने आया तो उन्होने उससे बोलना बन्द कर दिया। उसने इस अप्रसन्नता का कारण पूछा तो स्वामी जी ने कहा—"मैं दुनिया को कैद कराने नहीं अपितु उसे कैद से छुड़ाने आया हू।" वह यदि अपनी दुष्टता को नही छोडता तो हम अपनी श्रेष्ठता को क्यों छोड़े?

सर्वोन्नायक दयानन्द

लाहौर मे ११ मार्च सन् १८७७ को स्वामी जी ने मुसलमानी मत की आलोचना में व्याख्यान दिया। बगीचे के मालिक नवाब नवाजिशअली खा पास ही टहल रहे थे और उनका व्याख्यान सुन रहे थे। व्याख्यान की समाप्ति पर किसी ने स्वामी जी से कहा कि महाराज आपको न कोई हिन्दू ठहरने को स्थान देता है, न ईसाई, न मुसलमान, नवाब साहब ने कृपा करके आपको यह स्थान दिया था सो यहाँ भी आपने इस्लाम का खण्डन किया, ऐसा न हो कि नवाब साहब आपसे अप्रसन्न हो जाए। महाराज ने उत्तर दिया कि मैं यहा पर इस्लाम व किसी अन्य मत की प्रशंसा करने नही आया हू। मैं तो केवल वैदिक धर्म को ही सच्चा मानता हू और उसी का उपदेश करता हू। मैंने देख लिया था कि नवाब साहब सुन रहे हैं। मैं जान-बूझकर उन्हें वदिक धर्म के गुण सुना रहा था। मुझे परमात्मा से भिन्न अन्य किसी का भय नहीं है। ★

(पृष्ठ १४ का शेष)

आर्यसमाज के संस्थापक

दयानन्द की असली शिक्षा यहा पर हुई। ग्रन्थ-अध्ययन के अलावा गुरु-शिष्य मे वार्तालाप भी हुआ करता था। इस वार्तालाप में आर्यावर्त के पुनरुत्थान की चर्चा होती थी। दण्डीजी की पाठशाला में दयानन्द ने लगभग तीन वर्ष तक अध्ययन किया। स्वामी विरजानन्द की शिक्षा दीक्षा ने ही स्वामी दयानन्द को आदर्श सुधारक बना दिया। कहते हैं जब दयानन्द चलने को हुए तो उन्होने गुरु दक्षिणा के रूप में आधा सेर लौंग गुरु को भेंट की, पर गुरु ने आशीर्वाद देते हुए कहा—'मैं तुम्हारे जीवन की दक्षिणा चाहता हूँ। प्रतिज्ञा करो कि जब तक जीवित रहोगे अनार्ष ग्रन्थो का खण्डन तथा वैदिक धर्म की स्थापना के हेतु अपने प्राण तक न्योछावर कर दोगे।" ऋषि दयानन्द ने 'तथास्तु' कह गुरु की आज्ञा शिरोधार्य की।

उसके बाद ऋषि दयानन्द ने देश भर का दौरा किया। राजे-रजवाडो मे गये और जहा अनेक राजा महाराजा उनके भक्त हो गये वहां कुछ नरेश अप्रसन्न भी हुए, पर उसकी चिन्ता उन्होने नहीं की। उनके विरोधियो ने उनकी हत्या कराने के यत्न किये, किन्तु अन्त मे उन्हें ही मुह की खानी पडी। कर्णवास की घटना सर्वविदित है जहा हत्या करने के लिए आने वाला स्वय स्वामी जी के चरणो मे गिर गया। बडे-बड धुरन्धर पण्डितो से उनका शास्त्रार्थ हुआ। उनकी दृढता का सिक्का उनके विरोधियों ने भी माना।

स्वामी जी की सेवा के लिए कल्लू कहार नामक एक नौकर रहता था। वह स्वामी जी के सामान की चोरी करके भाग गया। षड्यन्त्र का आरम्भ वही से हुआ। ३० सितम्बर १८८३ को यथानियम स्वामी जी दूध पीकर सोये, किन्तु कुछ देर बाद ही उन्हें उदरशूल हो निकला और उनकी निद्रा भग हो गई। जी मचलाने लगा और तीन बार वमन हुआ। सुबह हुई, डाक्टर बुलाया गया, उसने दवा दी, किन्तु लाभ न हुआ तथा दिन मे कई दस्त हुए।

१६ अक्तूबर तक डाक्टरी चिकित्सा चलती रही, किन्तु रोग बढता ही गया। उसी दिन महर्षि को आबू भेजने का निर्णय हुआ। उन्हें डोली मे ले जाया गया, किन्तु मार्ग लम्बा था। आबू पर्वत की चढाई। किसी प्रकार वहा पहुचे किन्तु दशा बिगडी देख उन्हें अजमेर लाने का निर्णय किया गया।

२६ अक्तूबर को प्रात काल स्वामी जी अजमेर पहुचे। चिकित्सा की गई, किन्तु दशा चिन्ताजनक हो गई। ३० अक्तूबर को ग्यारह बजे से ही श्वास की गति बढ गई। उन की औषधि बन्द कर दी गई और उसी दिन सायकाल ऋषि का देहावसान हो गया।

महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होने राष्ट्र के लिए एक भाषा की बात कही। गुजराती भाषा-भाषी होते हुए भी उन्होने हिन्दी को राष्ट्र-भाषा बनाने का उपदेश दिया। उनकी महत्ता इसलिए भी है कि उन्होने राष्ट्रीयता का दृष्टिकोण अपनाया। उस समय जो रूढिवादिता फैल रही थी स्वामी जी ने वैज्ञानिक और विवेकशील दृष्टिकोण अपनाने का मार्गदर्शन किया। वह गुजरात के होकर वहां बन्धकर न रहे और समग्र भारत के हो गये। उनके विचार साम्प्रदायिक न थे, जो कुछ उन्होने सोचा वह राष्ट्र को उन्नत करने के लिए था और उसी में उन्होने अपना जीवन अर्पण कर दिया।

आर्यसमाज के माध्यम से, समाज सुधार व हिन्दी के प्रचार व प्रसार के महान यज्ञ मे आहुति देना प्रत्येक भारतीय का परम कर्तव्य है।

स्वामी दयानन्द निर्वाण तिथि (दीपावली) पर विशेष

स्वामी दयानन्द का मेरे जीवन पर प्रभाव

लेखक—स्व० चौ० चरणसिंह

मैं जहां राजनीति क्षेत्र में महात्मा गांधी को अपना गुरु या प्रेरक मानता हूं वहां धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र में मुझे सब से अधिक प्रेरणा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने दी। इन दोनों विभूतियों से प्रेरणा प्राप्त कर मैंने धार्मिक व राजनीतिक क्षेत्र में पदार्पण किया था। एक ओर आर्यसमाज के मंच से हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध मैं सक्रिय रहा वहां कांग्रेसी कार्यकर्ता के रूप में भारत की स्वाधीनता के यज्ञ में मैंने यथाशक्ति आहुतियां डालने का प्रयास किया।

स्वदेशी, स्वभाषा व स्वधर्म का गौरव

छात्र जीवन में लगभग १९२० वर्ष की आयु में स्वामी सत्यानन्द लिखित महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवनी पढ़ी। मुझे लगा कि बहुत समय बाद भारत में संपूर्ण मानव गुणों से युक्त एक तेजस्वी विभूति महर्षि के रूप में प्रकट हुई है। उनके जीवन की एक एक घटना ने मुझे प्रभावित किया, प्रेरणा दी। स्वधर्म (वैदिक धर्म) स्वभाषा, स्वदेशी स्वराष्ट्र सादगी, सभी भावनाओं से ओत प्रोत था, महर्षि का जीवन। राष्ट्रीयता की भावनाएं तो जैसे उनको रग रग में ही समायी हुई थी। इन सब गुणों के साथ तेजस्विता उनके जीवन का विशेष गुण था। इसीलिए आर्यसमाज के नियमों में 'सत्य को ग्रहण करने एवम असत्य को तत्काल त्याग देने को उन्होंने प्राथमिकता दी थी।

महर्षि दयानन्द की एक विशेषता यह थी कि वे किसी के कन्धे पर चढ़ कर आगे नहीं बढ़े थे। अंग्रेजी का एक शब्द भी न जानने के बावजूद हीन भावना ने आज कल के नेताओं की तरह उन्हें ग्रसित नहीं किया। अपनी हिन्दी भाषा सरल प्रभावपूर्ण जनता की भाषा में उन्होंने सत्यार्थप्रकाश जैसा महान ग्रन्थ लिखा। इस महान ग्रन्थ में उन्होंने सबसे पहले अपने हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों पर कड़े से कड़ा प्रहार किया। बाल-विवाह पर्दा प्रथा, महिलाओं की शिक्षा की उपेक्षा, अस्पृश्यता धर्म के नाम पर पनपे पाखंड आदि पर जितने जोरदार ढंग से प्रहार स्वामी जी ने किया उतना अन्य किसी धार्मिक नेता या आचार्य ने नहीं। अपने समाज में व्याप्त गली सड़ी कुरीतियों पर प्रहार करने के बावजूद स्वामी जी ने, राजा राममोहन राय आदि पश्चिम से प्रभावित नेताओं की तरह वैदिक धर्म को उन दोषों के लिए दोषी नहीं ठहराया वरन स्पष्ट किया कि वैदिक, हिन्दू धर्म सभी प्रकार की बुराइयों व कुरीतियों से ऊपर है वैदिक धर्म पूर्ण वैज्ञानिक व दोषमुक्त धर्म है तथा उसकी तुलना अन्य कोई नहीं कर सकता।

स्वामी जी ने अपने वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के उद्देश्य से आर्यसमाज की स्थापना की। उन्होंने नाम भी आकर्षक व प्रेरक चुना। आर्य' अर्थात श्रेष्ठ समाज। इसमें न किसी जाति की संकीर्णता है न किसी समुदाय की। जो भी आर्यसमाज के व्यापक व मानव मात्र के लिए हितकारी नियमों में विश्वास रखे वही आर्यसमाजी। आर्यसमाज नाम से उनकी दूरदर्शी व्यापक व संकीर्णता से सर्वथा मुक्त दृष्टि का ही आभास होता है।

स्वामी जी ने स्वदेशी व स्वभाषा पर अभिमान करने की भी देशवासियों को प्रेरणा दी। अंग्रेजी को वे विदेशी भाषा मानते थे तथा संस्कृत व हिन्दी के प्रबल समर्थक थे। वे प्रायः अपने प्रवचनों में स्वदेशी, अपनी भाषा तथा अपनी वेश-भूषा अपनाने पर बल देते थे। जिन परिवारों में वे ठहरते थे उनके बच्चों की वेश भूषा पर ध्यान देते थे तथा प्रेरणा भी देते थे कि हमें विदेशों की नकल छोड़ कर अपने देश के बने कपड़े पहनने चाहिए अपना कामकाज संस्कृत व हिन्दी में करना चाहिए। गाय को स्वामी जी भारतीय कृषि व्यवस्था का प्रमुख आधार मानते थे। इसीलिए उन्होंने 'गोकरुणा निधि' लिखी तथा गोरक्षा के लिए हस्ताक्षर कराये। वे ग्रामों के उत्थान, किसानों की शिक्षा की ओर ध्यान देना बहुत जरूरी मानते थे।

जाति प्रथा के विरुद्ध चेतावनी

स्वामी जी दूरदर्शी सन्यासी थे। उन्होंने इतिहास का गहन अध्ययन कर के यह निष्कर्ष निकाला था कि जब तक हिन्दू समाज जन्मना जाति प्रथा की कुरीति से ग्रस्त रहेगा वह बराबर पिछड़ता जायेगा। इसीलिए उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' में तथा अपने प्रवचनों में जाति प्रथा व अस्पृश्यता पर कड़े-से कड़े प्रहार किये। वे दूरदर्शी थे अतः उन्होंने पहले ही यह भविष्य वाणी कर दी थी कि यदि हिन्दू समाज ने जाति प्रथा व अस्पृश्यता के कारण अपने भाइयों से घृणा नहीं छोड़ी, तो यह समाज तेजी से बिखरता चला जायेगा जिसका लाभ विधर्मी स्वतः उठायेंगे। उन्होंने यह भी चेतावनी दी थी कि अस्पृश्यता का कलंक हिन्दू धर्म के साथ-साथ देश के लिए भी घातक होगा।

६ नवम्बर १९७७ धर्मयुग से साभार

—सम्पादक

यह तो मेरे गुरु का कार्यक्रम है—चौ० चरणसिंह

सितंबर १९७७ गृहमन्त्री श्री चौधरी चरण सिंह ने अनेक महत्त्व-पूर्ण कार्यों में व्यस्त रहने के कारण दस दिनों तक किसी से भी न मिलने की विधिवत घोषणा समाचारपत्रों में करायी थी। किसी को भी इस दौरान उन्होंने मिलने का समय नहीं दिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रसिद्ध आर्य विद्वान् व पत्रकार पं० क्षितीश कुमार वेदालंकार द्वारा संपादित महर्षि दयानन्द सरस्वती के सचित्र व विस्तृत दयानन्द दिव्य दर्शन' ग्रंथ का विमोचन चौधरी साहब से करने की प्रार्थना की। उनके निजी सचिव ने कहा कि चौधरी साहब के पास समय नहीं है। किसी प्रकार उन्हें इसकी भनक मिल गयी। वे बोले, "भाई, यह तो मेरे गुरु के सम्मान का प्रश्न है, वहां जरूर जाऊंगा' तथा वे आर्य-समाज दीवान हाल दिल्ली में आयोजित, इस कार्यक्रम में पूरे डेढ़ घण्टे तक रहे तथा एक घण्टे तक धारा प्रवाह शैली में बोलते रहे।

सम्पादक

पतित पावनी दयानन्द गंगा की परिक्रमा

परमहंस गण गंगा की उत्पत्ति भूमि से आरम्भ करके गंगा के किनारे विचरते हुए गंगा सागर तक गमन करके अपने परिक्रमण का कार्य समाप्त समझते हैं। हमने भी दयानन्द के जन्म-गृह से आरम्भ करके उनकी श्मशान भूमि तक पर्यटन किया है। टंकारा से, जिसके जीवापर मुहल्ले के एक घर में उन्होंने जन्म लिया था, उससे प्रारम्भ कर अजमेर के तारागढ़ के नीचे अश्रुपूर्ण नेत्रों से उस निदारुण श्मशान भूमि को देख कर आये हैं, जहां उस भावन के सूर्य, दिव्यदेह को चितानल ने कुछ मुट्ठी भर भस्म में परिणत कर दिया था।

कोई कोई सन्यासी कहते हैं कि हरिद्वार से प्रारम्भ कर के गंगा सागर तक पर्यटन करने में प्रायः तीन वर्ष लगते हैं, परंतु हमने दयानन्द गंगा के परिक्रमण में प्रायः पन्द्रह वर्ष काटे हैं। सन्यासी परमहंस-गण अपने विश्वास में गंगा-परिक्रमण या नर्मदा-परिक्रमण से कुछ न कुछ पुण्यार्जन करते हैं। पाठकगण, तो क्या हमने दयानन्द-गंगा का परिक्रमण करके कुछ पुण्यार्जन नहीं किया है?

—ऋषि दयानन्द के जीवन-चरित्र की भूमिका में श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय

महर्षि दयानन्द ने धर्म जागृति बढायी, आर्य संस्कृति का, वेदाभ्यास का, संस्कृत भाषा का, हिन्दी का प्रेम बढाया, अस्पृश्यता रूपी कलंक को धोने का प्रयास किया। ऐसे सब कार्यों के लिए महर्षि का स्मरण चिरस्थायी रहेगा। इसमें कोई संदेह नहीं है।

—महात्मा गांधी

* मेरा सादर प्रणाम हो उस महान गुरु दयानन्द को, जिसकी दृष्टि ने भारत के आध्यात्मिक इतिहास में सत्य और एकता को देखा और जिसके मन ने भारतीय जीवन के सब अंगों को प्रदीप्त कर दिया। जिस गुरु का उद्देश्य भारत वर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्त्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति में लाना था, उसे मेरा बारम्बार प्रणाम है।

मैं आधुनिक भारत के मार्ग-दर्शक उस दयानन्द को आदर-पूर्वक श्रद्धांजलि देता हूँ, जिसने देश की पतितावस्था में सीधे व सच्चे मार्ग का दिग्दर्शन कराया।

—डा० रवीन्द्रनाथ ठाकुर

वह दिव्य ज्ञान का सच्चा सैनिक, विश्व को प्रभु की शरण में लाने वाला योद्धा और मनुष्य व संस्थाओं का शिल्पी तथा प्रकृति द्वारा आत्मा के मार्ग में उपस्थित की जाने वाली बाधाओं का वीर विजेता था और इस प्रकार मेरे समक्ष आध्यात्मिक क्रियात्मकता की एक शक्ति-सम्पन्न मूर्ति उपस्थित होती है। इन दो शब्दों का, जो कि हमारी भावनाओं के अनुसार एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं, मिश्रण ही दयानन्द का उपयुक्त परिभाषा प्रतीत होती है। उसके व्यक्तित्व की व्याख्या की जा सकती है—एक मनुष्य, जिसकी आत्मा में परमात्मा है, चर्म चक्षुओं में दिव्य तेज है और हाथों में इतनी शक्ति है कि जीवन-तत्त्व से अभीष्ट स्वरूप वाली मूर्ति गढ सके तथा कल्पना को क्रिया में परिणत कर सके। वह स्वयं दृढ़ चट्टान थे। उनमें दृढ शक्ति थी कि चट्टान पर घन चलाकर पदार्थों को सुदृढ व सुडौल बना सकें। प्राचीन सभ्यता में विज्ञान के गुप्त भेद विद्यमान हैं, जिनमें से कुछ को अर्वाचीन विद्याओं ने ढूढ लिया है, उनका परिवर्तन किया है और उन्हें अधिक समृद्ध व स्पष्ट कर दिया है, किन्तु दूसरे अभी तक निगूढ ही बने हुए हैं। इसलिए दयानन्द की इस धारणा में कोई अवास्तविकता नहीं है कि वेदों में विज्ञान सम्मत तथा धार्मिक सत्य निहित हैं।

महान् स्वामी दयानन्द सरस्वती

यहां महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों द्वारा समय समय पर प्रकट की गई सम्मतियों का संकलन किया गया है, जिससे उनकी महत्ता का दिग्दर्शनमात्र हो सकता है। —सम्पादक

वेदों का भाष्य करने के बारे में मेरा विश्वास है कि चाहे अन्तिम पूर्ण अभिप्राय कुछ भी हो, किन्तु इस बात का श्रेय दयानन्द को ही प्राप्त होगा कि उसने सर्वप्रथम वेदों की व्याख्या के लिए निर्दोष मार्ग का आविष्कार किया था। चिरकालीन अव्यवस्था और अज्ञान-परम्परा के अन्धकार में से सूक्ष्म और मर्मभेदी दृष्टि से उसी ने सत्य को खोज निकाला था। जंगली लोगों की रचना कही जाने वाली पुस्तक के भीतर उसके धर्म पुस्तक होने का वास्तविक अनुभव उन्होंने ही किया था। ऋषि दयानन्द ने उन द्वारों की कुञ्जी प्राप्त की है, जो युगों से बन्द थे और उसने पटे हुए झरनों का मुख खोल दिया।

—ऋषि दयानन्द के नियम-बद्ध कार्य ही उनके आत्मिक शरीर के पुत्र हैं, जो सुन्दर, सुदृढ और सजीव हैं तथा अपने कर्त्ता की प्रत्याकृति हैं। वह एक ऐसे पुरुष थे जिन्होंने स्पष्ट और पूर्ण रीति से जान लिया था कि उन्हें किस काम के लिए भेजा गया है।

—श्री अरविन्द घोष

ऋषि दयानन्द ने भारत के शक्ति शून्य शरीर में अपनी दुर्धर्ष शक्ति अविचलता तथा सिंह पराक्रम फूंक दिए हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती उच्चतम व्यक्तित्व के पुरुष थे। यह पुरुष-सिंह उनमें से एक था जिन्हें यूरोप प्रायः उस समय भुला देता है जबकि वह भारत के सम्बन्ध में अपनी धारणा बनाता है, किन्तु एक दिन यूरोप को अपनी भूल मानकर उसे याद करने के लिए बाधित होना पड़ेगा, क्योंकि उसके अन्दर कर्मयोगी, विचारक और नेता के उपयुक्त प्रतिभा का दुर्लभ सम्मिश्रण था।

दयानन्द ने अस्पृश्यता व अछूतपन के अन्याय को सहन नहीं किया और उससे अधिक उनके अपहृत अधिकारों का उत्साही समर्थक दूसरा कोई नहीं हुआ। भारत में स्त्रियों की शोचनीय दशा को सुधारने में भी दयानन्द ने बड़ी उदारता व साहस से काम लिया। वास्तव में राष्ट्रीय भावना और जनजागृति के विचार को क्रियात्मक रूप देने में सब से अधिक प्रबल शक्ति उसी की थी। वह पुनर्निर्माण और राष्ट्र-संगठन के अत्यन्त उत्साही पैगम्बरों में से था।

—फ्रेंच लेखक रोम्यां रोलां

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू धर्म के सुधार का बडा कार्य किया, और जहां तक समाज-सुधार का सम्बन्ध है, वह बड़े उदार-हृदय थे। वे अपने विचारों को वेदों पर आधारित और उन्हें ऋषियों के ज्ञान पर अवलम्बित मानते थे। उन्होंने वेदों पर बड़े-बड़े भाष्य किये, जिससे मालूम होता है कि वे पूर्ण अभिज्ञ थे। उनका स्वाध्याय बडा व्यापक था।

—प्रो एफ मैक्समूलर

आर्यसमाज समस्त संसार को वेदानुयायी बनाने का स्वप्न देखता है। स्वामी दयानन्द ने इसे जीवन और सिद्धान्त दिया। उनका विश्वास था कि आर्य जाति चुनी हुई जाति, भारत चुना हुआ देश और वेद चुनी हुई धार्मिक पुस्तक है ।'

—ब्रिटेन के (स्व) प्रधानमन्त्री रेमजे मैकडानल्ड

स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुयायी उन्हें देवता-तुल्य जानते थे, और वह निस्सन्देह इसी योग्य थे। वह इतने विद्वान और अच्छे आदमी थे कि वे प्रत्येक धर्म के अनुयायियों के लिए सम्मान-पात्र थे। उनके समान व्यक्ति समूचे भारत में इस समय कोई नहीं मिल सकता। अतः प्रत्येक व्यक्ति को उनकी मृत्यु पर शोक करना स्वाभाविक है।

—सर सैयद अहमदखां

स्वामी दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषों में से थे, जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया और जो उसके आचार सम्बन्धी पुनरुत्थान तथा धार्मिक पुनरुद्धार के उत्तरदाता हैं। हिन्दूसमाज का उद्धार करने में आर्यसमाज का बहुत बड़ा हाथ है। रामकृष्ण मिशन ने बङ्गाल में जो कुछ किया, उससे कहीं अधिक आर्यसमाज ने पंजाब और संयुक्त प्रान्त में किया। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण न होगा कि पंजाब का प्रत्येक नेता आर्यसमाजी है। स्वामी दयानन्द को मैं एक धार्मिक और सामाजिक सुधारक तथा कर्मयोगी मानता हूं। संगठन-कार्यों के सामर्थ्य और प्रभाव की दृष्टि से आर्यसमाज अनुपम संस्था है।

—श्री सुभाषचन्द्र बोस

दयानन्द स्वतन्त्रता के मेरे पितामह थे।

—लोकमान्य तिलक

मैंने राष्ट्र, जाति और समाज के लिए जो भी किया, उसका श्रेय उस महर्षि को प्राप्त है जो सर्वहितैषी, वेदज्ञ और युगद्रष्टा था, उनका शिष्य होने का मुझे गर्व है।

—श्याम जी कृष्ण वर्मा

स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं, मैंने संसार में केवल उन्हीं को गुरु माना है। वह मेरे धर्म के पिता हैं और आर्यसमाज मेरी धर्म की माता है। इन दोनों की गोद में मैं पला। मुझे इस बात का गर्व है कि मेरे गुरु ने मुझे स्वतन्त्रतापूर्वक विचार करना, बोलना और कर्त्तव्य पालन करना सिखाया तथा मेरी माता ने मुझे एक संस्था में बद्ध होकर नियमानुवर्तिता का पाठ दिया।

—पं केसरी लाला लाजपतराय

महर्षि दयानन्द भारतमाता के उन प्रसिद्ध और उच्च आत्माओं में से थे, जिनका नाम संसार में सदैव चमकते हुए सितारों की तरह प्रकाशित रहेगा। वह भारत-माता के उन सपूतों में से हैं, जिनके व्यक्तित्व पर जितना भी अभिमान किया जाए थोड़ा है। नेपोलियन और सिकन्दर जैसे अनेक सम्राट एवं विजेता संसार में हो चुके हैं, परन्तु स्वामी उन सब से बढ कर थे।

—खदीजा बेगम एम ए

स्वामी दयानन्द निःसन्देह एक ऋषि थे। उन्होंने अपने विरोधियों द्वारा फेंके गये ईंट-पत्थरों को शान्तिपूर्वक सहन कर लिया। उन्होंने अपने में महान भूत और महान् भविष्य को मिला दिया। वह मर कर भी अमर हैं। ऋषि का प्रादुर्भाव लोगों को कारागार से मुक्त करने और जाति-बन्धन तोड़ने के लिए हुआ था। ऋषि का आदेश है—आर्यावर्त, उठ जाग, समय आ गया है, नये युग में प्रवेश कर, आगे बढ।

(पाल रिचर्ड प्रसिद्ध फ्रेंच लेखक)

—रेवरेण्ड सी एफ एण्डरूज

(शेष पृष्ठ १९ पर)

मानवता के शाश्वत पथ-प्रदर्शक :

महर्षि दयानन्द

लेखक—स्व० स्वामी सोमानन्द (प० नरेन्द्र)

१८७५ से १९७५ तक पूरी एक शताब्दी। इस अवधि में विश्व में अगणित क्रान्तिकारी अकल्पनीय और अचिन्त्य परिवर्तन हो गए। विश्व की बात छोड अपने देश की ही चर्चा कर। इस एक सदी मे इतिहास ने कितनी नई करवट ले ली। उस समय हम सात समुद्र पार से आये विदेशी शासन के नीचे निरन्तर पिस रहे थे आज हम स्वतन्त्र हैं। उस समय स्वराज्य का नाम लेना भी राजद्रोह था, आज स्वराज्य के वातावरण मे अबाध श्वास लेते हुए 'सुराज्य' की स्थापना के लिए प्रयत्नशील हैं। उस समय अनेक प्रकार की पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, वैचारिक, बौद्धिक परम्पराओ, रूढियो और सड़े गले रिवाजो के गुलाम थे आज उनसे प्राय मुक्त हैं। उस समय हिन्दू समाज का आधा वर्ग नारी और दूसरा आध के लगभग निम्न व दलित वर्ग दोनो ही पशुवत् सामान्य मानवीय सुविधाओ से भी युग-युगान्तर से सर्वथा वंचित था। दलितवर्ग उच्चाभिमानियो द्वारा न केवल घृणा और अवहेलना का ही शिकार था अपितु अस्पृश्य और दृष्टिमात्र से भी सवर्ण हिन्दू को पाप सज्जित करने वाला था। आज यह पाशविक और गर्हित विषमता समाप्त हो चुकी है। आज देश के सम्पूर्ण क्षेत्रो मे प्रत्येक भारतीय के लिए बिना जन्म, जाति-भेद के अवसर प्राप्त करने और उन्नति करने के अधिकार की पूर्ण स्वतन्त्रता और समानता है दीमक की तरह भीतर से खोखली विविध प्रकार की धार्मिक और सामाजिक ध्यक्तियो की शिकार हिन्दू समाज को विदेशी शासको के गहरे षड्यन्त्र के परिणामस्वरूप विधर्मी लगातार हड़प रहे थे। आट के दीपक के समान हिन्दू अपने घर मे और बाहर दोनो ओर से प्राय पतन और क्षतिक्षय का शिकार हो रहा था।

मानवता के शाश्वत पथ-प्रदर्शक

१८७५ मे आदित्य ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द ने बम्बई मे अपने भक्तो, शिष्यो और अनेक उच्च शिक्षित देशभक्त विद्वज्जनो के इस प्रबल आग्रह पर कि आप इन वेदानुकूल विश्व कल्याण के सिद्धान्तो का प्रचार करने के लिए कोई दृढ स्थिर संस्था कायम कर, सहर्ष स्वागत किया। इस संस्था का नाम रखने का प्रश्न जब उस समय उठा, तब समस्त उपस्थित सज्जनवृन्द ने ऋषिवर से ही नाम के निर्धारण करने की प्रार्थना की। महर्षि दयानन्द सभा से उठ भीतर कक्ष मे विराजे। ध्यानावस्थित हो गए। लगभग १५-२० मिनट के बाद बाहर आये और उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे सभासदो के सम्मुख इस संस्था का नाम 'आर्यसमाज' रखने की घोषणा की। आर्य अर्थात् श्रेष्ठ, उत्तम, धार्मिक प्रबुद्ध-व्यक्तियो का समाज अर्थात एक निश्चित विचारित पारस्परिक गहनविचार-विमर्श और चिन्तन के बाद यह नाम रखा गया। उसमे महर्षि ने अपने व्यक्तित्व को तनिक भी गौरवास्पद और विशिष्ट नही बनाया। उन्होने कभी भी नही कहा कि मैं कोई नया मत सम्प्रदाय वा पथ चलाने आया हू, अथवा जो कुछ मैं कहता हू वह ही एकदम सत्य नया, अर्वाचीन और अद्भुत है। उन्होने यही कहा कि ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि तक जिन वेदानुकूल सिद्धातो को मानते आये हैं, उन्ही का प्रतिपादन करता हू। कोई बात अपनी ओर से मैं नहीं कहता।' कितनी विनम्रता और निरभिमानिता है।

विषपान : अमृत दान

ऋषि दयानन्द युगनिर्माता, क्रान्तिकारी और नवभारत के पुरोधा थे, उन्हें कार्य करने का थोडा ही समय मिला। एक दर्जन से अधिक बार उन्हें विष दिया गया और अपने ही देशवासियों और जाति व्यक्तियों द्वारा। बारम्बार के इस विषपान का उस पूर्ण योगी के भौतिक शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव पड बिना नही रहा और अन्तिम कालकूट विष ने तो उन्हें मोक्ष का यात्री बना दिया। पर देव दयानन्द के चरित्र की ऐसी अनोखी उज्ज्वलता तो इतिहास में अपवाद रूप ही है कि उस महायोग ने प्रत्येक बार अपने विषदाता को बिना किसी प्रकार के प्रतिशोध के क्षमा कर दिया। विश्व के इतिहास में ऐसा महामानव ढूढने से भी शायद ही मिले।

टकारा की ज्योति की चतुर्दिक् ज्वालाएं

महाभारत के बाद महर्षि दयानन्द पहले महापुरुष थे जिन्होंने एकाकी केवल प्रभु विश्वास के आधार पथ निर्माण की दिशाओं मे अदम्य उत्साह से अनेक विविध अकथनीय और अकल्पनीय बाधाओ, विरोधो, आक्षेपो इत्यादि के बावजूद क्रान्ति की ज्वालाए चतुर्दिक् प्रज्वलित की। एक हाथ में ईश्वरार्पण सहित वेद का अमृतकलश और दूसरे हाथ मे धार्मिक सामाजिक बौद्धिक मिथ्या विश्वासो रूढियो जर्जरित गलित अन्ध परम्पराओ और साथ ही विदेशी दासता, आत्महीनता शतधा विच्छिन्न समाज और राष्ट्र के मूलगत दोषो के सर्वथा उच्छेदन का खडग लेकर महर्षि ने अपने शुभ निष्कलक, पूर्ण समाधि के आनन्दयुक्त जीवन, ओजस्वी वाणी और सदा यात्रा में रहते हुए भी प्रचुर नव दिशा प्रेरक साहित्य द्वारा जो अद्भुत, चिरस्थायी पथ निर्माण किया है, वह योगीराज कृष्ण के बाद प्रथम बार ही हुआ है। ऐसा निसकोच कहा जा सकता है। हिन्दी के प्रमुख राष्ट्र कवि पद्मश्री श्री हरिशंकर शर्मा के शब्दो में —

ओ टकारा की ज्वलित ज्योति,
तू कभी नही बुझने वाली।
तुझ से जगमग यह जगती तल
तुझ से भारत गौरवशाली॥
तू दमक रही दुनिया भर में,
तू चमक रही रन बै वन मे।
अभ्युदय और निःश्रेयस बन,
तू रमी हुई जगजीवन मे॥

आर्यसमाज प्रत्येक क्षेत्र में क्रान्तिकारी

आर्यसमाज ऋषि दयानन्द प्रतिपादित वैदिक और सार्वभौम सिद्धान्तो का एकमात्र उत्तराधिकारी है। १८७५ में ऋषि के कर-कमलो द्वारा बोया गया यह बीज इस एक शती मे महान् वटवृक्ष के सदृश विशाल, विस्तृत शाखाओ, उपशाखाओ, घने पत्र पुष्पो से पल्लवित हो भव्य रूप धारण कर चुकी हैं। इन १०० वर्षों के अल्पकाल में आर्यसमाज ने देश विदेशों में सफर सेना सदृश विविध क्षेत्रो मे जो ठोस स्पृहणीय और वरेण्य कार्य किया है, भारत के इतिहास मे शायद ही किसी संस्था ने किया हो। ईश्वरीय ज्ञान वेद का पुस्तक जो कुछ ब्राह्मणो के घर मे लाल कपड मे सर्वथा अस्पृश्य और असूर्यम्पश्य के रूप में बन्द था, आज घर-घर में सुलभ हो रहा है। उस के पठन-पाठन का अधिकार भारत ही नहीं विश्व के प्रत्येक नर नारी के लिए बिना जन्म जाति लिंग देश के भेद भाव के उन्मुक्त हो गया है। आर्य समाज के प्रचार से तथाकथित शूद्र और नारी को अन्य द्विजातियो के सदृश वेद के पठन श्रवण का पूरा अधिकार आर्यसमाज के आन्दोलन से आज प्राप्त है।

भारत में स्वराज्य का मन्त्र सब से पहले ऋषि दयानन्द ने जनता को दिया। आर्यसमाज ने अपने आचार्य के आदेश के अनुसार भारत को विदेशी शासन से मुक्त कराने मे किसी भी अन्य राजनीतिक व धार्मिक सामाजिक संस्था से अधिक ही सहयोग दिया है। स्वतन्त्रता की वेदी पर अपनी जवानी अपना तन, मन और सर्वस्व अर्पण करने मे आर्य वीरो का सर्वाधिक भाग है। स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग महर्षि ने स्वय सदा किया और आर्यसमाज इसका पालन करता रहा। पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक राष्ट्रीय जीवन के प्रति आर्यसमाज ने वेदानुकूल ऋषि प्रदर्शित मार्ग का अवलम्बन करते हुए इन के विकास में उल्लेखनीय कार्य किए हैं। समाज सुधार के द्वारा जहा शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को अपना कर सफल परीक्षण से पश्चिम प्रमी शिक्षाविज्ञो को चकित कर दिया, वहा साथ ही प्राचीन भारतीय शिक्षा-पद्धति की सार्थकता और उपयोगिता भी सिद्ध कर दी। जिससे कि आज शिक्षा-पद्धति मे कई लाभकारी परिवर्तन हो सके हैं। आर्यसमाज द्वारा सचालित डी०ए० वी आन्दोलन ने हिन्दी और वैदिक धर्म के प्रचार मे सहायता तथा हिन्दुओं में आत्मविश्वास और सहयोग-भावना में प्रशंसनीय बढ़ोतरी की। यह निर्विरोध कहा जा सकता है कि आज हिन्दू जाति मे से जो इनकी सामाजिक कुरीतियों और अन्ध परम्पराओ का लोप हो गया है उस का श्रेय एक मात्र आर्यसमाज को ही हैं। स्त्री-शिक्षा प्रचार, दलितोद्धार, अस्पृश्यता निवारण, बालविवाह, बहुविवाह, अनमेल विवाह का विरोध, नारी और शूद्र के प्रति हीनता और घृणा के भाव के प्रतिकूल समानता सहृदयता और अपनेपन की भावना का प्रसार

(शेष पृष्ठ २० पर)

आर्यसमाज का द्वार सबके लिए

लेखक—महात्मा आर्य भिक्षु

मनुष्य एक जाति है और उसका स्वाभाविक विभाजन गुण, कर्म स्वभाव के आधार पर एक हो हो सकता है, वह है आर्य और अनार्य। आर्य की परिभाषा देव दयानन्द के शब्दों में परोपकार की वृत्ति वाले मनुष्य से है और अनार्य की परिभाषा स्वार्थ वृत्ति वाले मनुष्य से है। किसी को कितना और कहे लाभ पहुंचाया जाय, यह सहज आकांक्षा हो आर्यत्व को प्रदर्शित करने वाली है और इसके विपरीत किसी से कितना लाभ उठाऊं यही अनार्यत्व को बतलाता है।

सभी मनुष्यों की आचरण संहिता एक जाति का होने के नाते एक ही होनी चाहिये। यह कहना सर्वथा अविवेक पूर्ण है कि पहुंचना एक ही स्थान पर है किन्तु रास्ते अलग अलग हैं। ऐसा नहीं अपितु पहुंचना सब को एक ही स्थान पर है और उसका रास्ता भी एक ही है। ईश्वर प्रदत्त रास्ता ही एक मात्र रास्ता है अन्य छलावे और भटकाव हैं, रास्ते नहीं। स्वामी दयानन्द ने इसी ईश्वर प्रदत्त मार्ग अर्थात् वैदिक आचरण संहिता के प्रचार प्रसारण पर पूरा जोर दिया जिससे कि मनुष्य समाज में तथा अन्य मार्गों से फैलते हुए वाद विवाद और विद्वेष का अन्त हो जाये।

महर्षि दयानन्द ने कहा था कि आर्यसमाज का दरवाजा सबके लिए खोल दो। उनके सपनों का समाज वह होगा जिसका प्रधान पौराणिक व्यक्ति हो, मन्त्री कोई मुस्लिम हो कोषाध्यक्ष कोई ईसाई हो, पुस्तकाध्यक्ष कोई जैन हो और आय-व्यय निरीक्षक कोई सिख हो अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष का एक स्थल पर उपकार के लिए एकत्रित और संघटित होना ही सच्चा आर्यसमाज है।

बुराई अपने आप ही बुरे लोगों को एकत्रित करने का गुण रखती है। इसके विपरीत भले मनुष्यों को एकत्रित करना पड़ता है। संसार का कल्याण भले मनुष्यों के एकत्रित होने से होता है। महर्षि दयानन्द का यह सार्वभौम चिन्तन उसे संसार के अन्य महापुरुषों से सर्वथा पृथक् खड़ा कर देता है। आर्यसमाज की उसके द्वारा स्थापना उसके इसी चिन्तन का परिणाम है। पिछले पांच हजार वर्षों का एक मात्र प्रयोग है।

आचार्य को हमारी श्रद्धाञ्जलि सच्चे अर्थों में उस दिन सफल समझी जायेगी जिस दिन संसार के सभी मतों के यहां उपस्थित प्रतिनिधि महोदय मनुष्य जाति के कल्याण निमित्त परोपकार की भावना से प्रेरित होकर इस निर्वाण-कक्ष से यह कहते हुए बाहर निकलेंगे कि मनुष्य मात्र की आचरण-संहिता एक है और वह ईश्वर प्रदत्त ही है इसके अतिरिक्त दूसरा कोई मार्ग नहीं है।

(पृष्ठ १७ का शेष)

महान् स्वामी दयानन्द

ऋषि दयानन्द ने हिन्दू-समाज के पुनरुत्थान में इतना अधिक हाथ बटाया है कि उन्हें १९ वीं शताब्दी का प्रमुखतम हिन्दू समझा जायेगा।
—श्री तारकनाथ दास एम ए. पी एच डी (म्यूनिख)

"स्वामी दयानन्द जी के राष्ट्र प्रेम, उन के क्रांतिकारी हृदय, उनकी हिम्मत, उन के ब्रह्मचर्यपूर्ण जीवन का मैं सदा उपासक रहा हूं। समाज की सब कुरीतियों और बुराइयों के विरुद्ध उन्होंने क्रांतिघोष किया था। यदि स्वामी जी न होते तो हिन्दू समाज की क्या हालत होती, इस की कल्पना करना कठिन है।"
—सरदार वल्लभ भाई पटेल

"स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं। आर्यसमाज मेरी माता है। इन दोनों की गोद में मैं खेला हूं। मेरे हृदय मस्तक दोनों को उन्होंने घड़ा है। इन दोनों ने मुझे स्वतन्त्रता पूर्वक विचार करना सिखाया है। आर्यसमाज ने मुझे प्राचीन आर्य सभ्यता का मान करना सिखाया। आर्यसमाज ने मुझे कुर्बानी का मार्ग दिखलाया। आर्यसमाज ने मेरे अन्दर सत्य, धर्म और स्वतन्त्रता की रूह फूंकी।"
पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

"मुझे एक आग दिखाई पड़ती है जो सर्वत्र फैली हुई है अर्थात् असीम प्रेम की आग जो कि द्वेष को जलाने वाली है और प्रत्येक वस्तु को जला कर शुद्ध रही है। पर यह आग एक भट्ठी में थी, जिसे आर्यसमाज कहते हैं। यह आग भारतवर्ष के परम योगी दयानन्द के हृदय से प्रज्वलित हुई थी।"
ऐण्ड्रू ज जेक्सन
अमेरिका के महान् विद्वान्

"स्वामी दयानन्द सरस्वती तेजस्वी और आध्यात्मिक तो थे ही, साथ ही वे एक युग-प्रवर्तक और समाज सुधारक भी थे।"
प्रियदर्शनी इन्दिरा गांधी

"जब स्वराज्य मन्दिर बनेगा तो उस में बड़े-बड़े नेताओं की मूर्तियां होंगी और सब से ऊंची मूर्ति दयानन्द की होगी।"
श्रीमती एनीबीसेंट

मन का रावण आज जलाओ

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

असुर वनियों का धरती पर
होता है ताण्डव नर्तन।
युग के रावण का होता है—
वसुन्धरा पर अभिनन्दन।

एक नहीं, लाखों सीताओं—
की लज्जा लुटती है आज।
प्रतिदिन भू पर मातृशक्ति को—
धूल मिलाई जाती लाज।

घोर अनाचारों का भू पर,
फैला है विस्तृत साम्राज्य।
अत्याचारों को बल मिलता—
अन्यायों का छाया राज्य।

पाखण्डों का राक्षस— दल है,
निर्भय होकर बढ़ता जाता।
मानवता के पुण्य गेह में,
सीना ताने सेंध लगाता।

आज, राम के वंशज सारे,
गहरी निद्रा में सोते हैं।
रावण के अनुयायी सारे,
बीज अनय के बोते हैं।

उठो आर्यो !! निर्भय, होकर—
दानवता की वृत्ति भगाओ।
लेकर नवसंकल्प हृदय में—
मन का रावण आज जलाओ॥

समाचार पत्रों की दृष्टि में—

महर्षि दयानन्द का व्यक्तित्व

(१) बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी इण्डियन नेशनल कांग्रेस अपने पत्र "बंगाली" दिनांक ३-११-१८८३ में लिखते हैं —

"हम यह कहने से नहीं रुक सकते कि स्वामी दयानन्द कोई असाधारण पद का धार्मिक आचार्य था। चाहे उस के और हमारे धार्मिक विश्वासों में भेद हैं, तो भी हमारा विश्वास है कि वह बहुत ही उच्च शक्तियों वाला सत्य वक्ता अध्यापक था। चाहे वह योगी था, जिसने संसार को छोड़ दिया तो भी व्यावहारिक बुद्धि उसे इतनी प्राप्त थी कि वैसी विरले मनुष्यों को प्राप्त है। उनकी मृत्यु से सभी देशवासियों को दुःख हुआ है। भारतवासी उनको विद्या पर सदा अभिमान करते रहेंगे, और प्रेम से उन्हें स्मरण करते रहेंगे।'

(२) इण्डियन मैसिंजर कलकत्ता ११-११-१८८३

"आज तक कोई पुरुष ऐसा पैदा नहीं हुआ, जो इस देश के मिथ्या विश्वासों को इस से अधिक घृणा करता हो। जैसा कि महात्मा दयानन्द करता था। जिसने ऐसे साहस और धैर्य से परमात्मा के उस सच्चे भगत ने अपनी उत्तम प्रार्थना में अपने नोबल मिशन को उत्पत्ति कर्त्ता की इच्छा पर छोड़ दिया है। ईश्वर करे कि हमारे सारे कार्यों में उस प्रार्थना की स्प्रिट आ जाये"।

(३) इण्डियन ऐम्पायर कलकत्ता ४-११-१८८३

"ऋषि दयानन्द" अपने समय का सब से बड़ा सुधारक था। भारतीय इसकी विद्या, विचित्र शक्ति दृढ़ अन्तःकरण को सदा याद रखेंगे।

(४) बंगाल पब्लिक ओपिनियन कलकत्ता ८-११-१८८३

"स्वामी दयानन्द की मृत्यु से सारे हिन्दू जगत् में अन्धेरा सा छा गया है। ऋषि दयानन्द हमारे देश के भूषण और हमारे मान के दाता थे।"

५. हिन्दू पैट्रियार कलकत्ता ८-११-१८८३

हम बड़े खेद से भारत के एक संस्कृत विद्वान् महर्षि दयानन्द की मृत्यु का समाचार लिखते हैं, वे बहुत ही ऊंचे दर्जे के वेदज्ञ थे। वे संस्कृत बोला करते थे, ।"

६ लिबरल कलकत्ता ११-११-१८८३

"पण्डित दयानन्द का मत चाहे कुछ ही क्यों न हो, पर वह हमारी सहानुभूति का पात्र था। वह अपने बल से हम से अपनी प्रशंसा करवाता था। चाहे उसने पश्चिमी विद्याओं को न सीखा था तो भी उस के विचार अद्वितीय थे और वह अपने आप इस के स्वभाव से टपकते थे।"

७ इंग्लिश क्रानिकल बांकीपुर ५-११-१८८३

"स्वामी दयानन्द संस्कृत का बड़ा विद्वान् था और आर्यन फिलासफी की हरेक शाखा का पूरा-पूरा जानने वाला उत्तम वक्ता, और बड़ा मिलनसार था। उसमें एक महान् आचार्य के सब गुण विद्यमान थे।

८ हिन्दू आबजर्वर मद्रास ८-११-१८८३

'स्वामी दयानन्द संस्कृत का एक प्रसिद्ध विद्वान् था। सशोधन के मैदान में शुद्ध अन्तःकरण से काम करने वाला था। उस की मृत्यु से देश को बड़ी हानि हुई है।

९. 'पिण्डूर' मद्रास

"स्वामी दयानन्द एक लासानी विद्वान् था उसकी मृत्यु से देश भर में हाहाकार मच गया है।

१० "इण्डियन स्पोकर" बम्बई

"हम स्वामी दयानन्द को भारत का एक स्तम्भ मानते हैं। गुजरात देश ने ऐसा प्रबल सुधारक पैदा नहीं किया जैसा कि स्वामी दयानन्द था। जो लोग उसे स्वामी शंकराचार्य के साथ स्थान देते हैं वे कुछ अधिक नहीं करते। ईश्वर पर असाधारण विश्वास और आयु भर के अपने उद्देश्य की दृढ़ता से उसने हम को इतना लाभ पहुंचाया कि एक वंश कई वर्षों तक धन्यवाद का अधिकारी हो गया।

ईसाइयत और पश्चिमी सभ्यता के मुख्य हमले से हिन्दुस्तानियों को सावधान करने का सेहरा यदि किसी व्यक्ति के सिर बांधने का सौभाग्य प्राप्त हो तो स्वामी दयानन्द की ओर इशारा किया जा सकता है। १९ वीं सदी में स्वामी दयानन्द जी ने भारत के लिए जो अमूल्य काम किया है, उससे हिन्दू जाति के साथ-साथ मुसलमानों तथा दूसरे धर्मावलम्बियों को भी बहुत लाभ पहुंचा है।

—पीर मुहम्मद यूनिस

स्वामी दयानन्द सरस्वती राष्ट्रीय, सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से भारत का एकीकरण चाहते थे। भारतवासियों को राष्ट्रीयता के सूत्र में ग्रथित करने के लिए उन्होंने देश को विदेशी दासता से मुक्त करना आवश्यक समझा था।

—श्री रामानन्द चटर्जी (सम्पादक 'माडर्न रिव्यू'

जब भारत के उत्थान का इतिहास लिखा जायेगा तो नंगे फकीर दयानन्द सरस्वती को उच्चासन पर बिठाया जायेगा।

—सर यदुनाथ सरकार

मेरी सम्मति में स्वामी दयानन्द एक सच्चे जगत् गुरु और सुधारक थे।

—मि फोक्स पिट्

(जनरल सैक्रेटरी मोरल एजूकेशन लीग लण्डन)

(पृष्ठ १८ का शेष)

मानवता के पथ-प्रदर्शक

पुरुष और स्त्री में सम्पूर्ण समानता की भावना का प्रबल समर्थन, विधवा विवाह का प्रचार, जन्मना वर्ण व्यवस्था की क्रियात्मक पुष्टि, जात-पात तोड़कर विवाह, दहेज का विरोध और विवाह इत्यादि अवसरों पर मितव्यय और सादगी, इत्यादि विविध पारिवारिक और सामाजिक क्रान्ति का श्रेय एकमात्र आर्यसमाज को ही है।

आर्य वीरों के बलिदान

इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि इन सुधारों को अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक जीवन में सक्रिय रूप देने के लिए अनेक आर्ययुवकों को परिवार, बिरादरी और जाति की ओर से कठोर यातनाओं, उत्पीड़नों और अत्याचारों को सहना पड़ा। पर अपने आचार्य स्वामी दयानन्द के ये शिष्य अपने गुरु की तरह दृढ़ निश्चयी रहे, कष्टों को प्राणों की बलि भी देनी पड़ी, पर कष्टों से तनिक भी नहीं घबराए। अन्त में इन बलिदानों से समाज और देश पर जादू का असर पड़े बिना नहीं रहा।

नवचेतना के स्रष्टा ऋषि दयानन्द

हिन्दू जाति ने अपने धर्म-प्रवेश के द्वारा बन्द कर बाहर निकालने के द्वार खूब उदारता से कई पीढ़ियों से खोल रखे थे। ईसाई मुसलमान इसका खूब लाभ उठा रहे थे। आर्यसमाज ने गंगा के इस उलटे प्रवाह को बदल निष्कासन के द्वार प्रबलता से अवरुद्ध कर दिये और प्रवेश के द्वार उदारता से उन्मुक्त कर दिये। साथ ही, हिन्दुओं में सामाजिक एकता, समानता, भाईचारे को बढ़ावा दिया। इस शुद्धि और संगठन के आन्दोलन ने हिन्दू जाति को असीम नवजीवन प्रदान किया है। ऐसे दिव्य गुणयुक्त महापुरुष के प्रति हमारा कोटिशः प्रणाम।

स्वदेशी और स्वभाषा के परिकल्पक—महर्षि दयानन्द सरस्वती

लेखक—डा० विष्णुदत्त राकेश
अध्यक्ष हिन्दी विभाग, गुरुकुल कागडी विश्व

महर्षि दयानन्द ने हिन्दी को आर्य भाषा का गरिमापूर्ण अभिधान देकर सर्वप्रथम राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया। उन्नीसवीं सदी के मध्य उत्तर भारत में पुनर्जागरण की जो लहर उठी, उसमें स्वामी दयानन्द और भारतेन्दु की भूमिका प्रमुख थी। यूरोप के नवीन ज्ञान विज्ञान ने सचार साधनो के सुलभ हो जाने के कारण रूढिग्रस्त भारतीय समाज को पूरी तरह झकझोर दिया। समुचित शिक्षा के अभाव मे समुचित दृष्टिकोणो से तथा भारतीय समाज इस सघात को झेल पाने मे असमर्थता का अनुभव करने लगा। श्री रमेशचन्द्र मजूमदार ने ब्रिटिश पैरामाउन्सी तथा रिचर ने 'हिस्ट्री आफ मिशन्स इन इण्डिया' मे स्पष्ट लिखा कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकारी तथा ईसाई शासक शराबी, कामुक, गालिया देने वाले, ठगने और धोखा देने वाले हैं। उनका जीवन इतना अनैतिक है कि उससे भारत मे किसी को ईसाई बनने की प्रेरणा नही मिल सकती। अग्रेज अधिकारियो ने ईसाई नैतिकता के सिद्धान्तो का पूर्णतया परित्याग कर दिया है। १८१३ के बाद भारत मे ईसाई मिशनरी बडे पमाने पर आने लगे तथा हिन्दू मुस्लिम धर्मो के खण्डनात्मक साहित्य के वितरण तथा धनलोभ द्वारा ईसाइयत का अनुसरण करने और धर्म परिवर्तन करने के लिए प्रोत्साहित करने लगे। मिशनरी स्कूलो की स्थापना भी इसी उद्देश्य से हुई। हिन्दुओं के उच्च वर्ग के छात्रो को परोक्ष रूप से ईसाई बनाने का यह व्यापक, सुनियोजित षड्यन्त्र था। इधर पाश्चात्य विद्वान् जब सस्कृत तथा अरबी साहित्य के अध्ययन मे प्रवृत्त हुए तो उन्होने शिक्षा के ढाँचे मे परिवर्तन किया। मनरो तथा एलफिन्स्टन जैसे प्रबुद्ध शासको ने बगला, मराठी, गुजराती, तमिल तथा हिन्दी और उर्दू के माध्यम से पश्चिमी ज्ञान विज्ञान और आधुनिक विचारधारा को जन साधारण तक पहुचाना चाहा। मकाले अग्रेजी भाषा का वर्चस्व स्थापित करना चाहते थे विल्सन तथा प्रिन्सेप ने इसके विपरीत सस्कृत तथा अरबी-फारसी को प्रोत्साहन देने के लिए कलकत्ता, बनारस, आगरा व दिल्ली मे मदरसे तथा सस्कृत कालिज की स्थापना पर बल दिया। परिणाम स्वरूप इनकी स्थापना हुई तथा जहा इन भाषाओं के ग्रन्थो के सम्पादन और प्रकाशन का काय शुरू हुआ वहा अग्रेजी पुस्तको का इन भाषाओ मे अनुवाद कार्य भी प्रारम्भ हुआ। इसी के साथ प्राच्य तथा पाश्चात्य भाषा, दर्शन और साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन की प्रवृत्ति को बल मिला। बाद मे दोनो धाराओ की उत्कृष्टता तथा अपकृष्टता का विवाद खडा हुआ और एक बडा वर्ग भारत की सामाजिक, धार्मिक, सास्कृतिक और नैतिक परम्पराओ को अनुपयोगी और निरर्थक प्रतिपादित करने के लिए एडी चोटी का जोर लगाने लगा। अग्रेजी शिक्षा और सस्कृति का नवयुवको पर ऐसा कुप्रभाव पडा कि उन्होने भारतीयता को तिलाजलि देकर पश्चिम का अधानुकरण शुरू कर दिया। आत्महीनता की इस आधी ने भारतीय अस्मिता की जडें उखाड दीं। हिन्दू धराशायी हो गया।

महर्षि दयानन्द ने पतनोन्मुख हिन्दुत्व का पुनरुद्धार किया। दिनकर जी के शब्दो मे—'रणारूढ हिन्दुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए वैसा और कोई भी नहीं हुआ।' पुनर्जागरण के राजा राममोहन राय जैसे नेता मात्र समाज सुधारक थे पर दयानन्द क्रांति के जुझारु सेनापति। उनके एक हाथ में प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान की मौलिक व्याख्या और हिन्दुत्व के जागरण का महाशख था तो दूसरे हाथ में अज्ञान, सम्प्रदाय, पाखण्ड, रूढि और धार्मिक अन्धविश्वासो को जलाने वाली तर्क, आस्था और युक्ति की राष्ट्र प्रेममयी क्रांति की मशाल। राजनीति, धर्मशास्त्र, स्वदेशी, राष्ट्रवाद, स्त्री शिक्षा, राज्य व्यवस्था, वर्णाश्रम समत्व, स्वतन्त्रता, आर्थिक समानता और मानवतावाद की व्याख्या कर स्वामी जी ने हिन्दुत्व का गौरव प्रतिष्ठित किया। सस्कृति के इतिहास मे भारत की पहचान बनाई तथा राष्ट्रीयतावादी विचारों के उन्मेष द्वारा पददलित हिन्दुत्व को शिर ऊचा कर खडा करने की प्रेरणा दी। बालकृष्ण शर्मा नवीन ने महर्षि के इस कर्तृत्व को आस्था के पुष्प चढाते हुए लिखा है—

> दयानन्द हो, हिन्दूपन की या
> तुम पहली परिपाटी हो।
> हे महर्षि ! क्या आर्य जगत्
> के पथ की मूर्तिमती घाटी हो !
> सुगम अगम का सम्मिश्रण हो,
> या सद्दार वेदपाठी हो।
> अथवा तुम पाखण्ड खण्डिनी
> विजय पताका की लाठी हो।
> तुम ही सब कुछ हो भारत की,
> जागृति की पहली करवट हो।
> दीना जननी की पुकार के
> तुम प्रत्युत्तर रूप प्रकट हो।
> पापो के बकवाद जाल की
> आग बुझाने को जल घट हो।
> लौकिक लका के दाहन को
> तुम प्रकटे हनुमान् सुभट हो।
> दश दशाब्दियाँ बीती हैं
> बीत जायगी सहस्राब्दियां।
> हम बिगड फिर बन जायगे
> यह है जो जायेगी भी हाँ।
> किन्तु दूर भावी के तल से
> उट्ठेगी ध्वनि यही सभलना।
> भूल न जाना विप्लवकारी शिशु,
> ऋषि दयानन्द का पलना।

पराधीन देशवासियों में सामूहिक प्रगति मुखी चेतना का उन्मेष दयानन्द की वेद समर्थित वाणी ने किया। अग्रेजी राज्य की स्थापना के बाद सम्पूर्ण राष्ट्र को भावनात्मक और सास्कृतिक एकता के सूत्र मे बाधने का कार्य स्वामी जी ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से किया। हिन्दी और स्वदेशी धारणा के उद्भावक थे महर्षि दयानन्द। भारतीयो में आत्म गौरव का बोध और मातृभूमि के प्रति रागात्मक अटूट लगाव की प्ररणा उनके प्रवचनों और ग्रथो में निहित थी। भारतेन्दु इसी कारण स्वामी जी के भक्त और प्रशसक थे। स्वामी जी जब शास्त्रार्थ के लिए काशी पधारे तब उन्हे स्टेशन पर लेने के लिए दो सनातनी विद्वान गए थे। एक थे भारतेन्दु और दूसरे थे डा० भगवान् दास जी के पिता बाबू माधवदास जी। पण्डित श्री नारायण जी चतुर्वेदी ने 'आधुनिक हिन्दी का आदिकाल' ग्रथ मे इस घटना का सुपरिणाम यह माना कि अतीत के प्रति आकर्षण और उसके गौरव को पुन स्थापित करने की प्रवृत्ति ने जोर पकडा। दयानन्द जी के धार्मिक खण्डन मण्डन के विरुद्ध यद्यपि भारतेन्द ने खूब लिखा पर प्रभावित भी वह केवल दयानन्द से हुए।

भारतेन्दुपत्र के सम्पादक श्री आचारण गोस्वामी के स्वामी जी से मतभेद थे पर उन्होंने स्वामी जी के विरोधियो को उत्तर देते हुए लिखा था कि स्वामी जी के देशोपकारी होन मे जो सदेह करे वह नारकी है और आर्यसमाज के देशोन्नति करने मे किसी को भ्रम हो तो वह साक्षात्पशु है। पण्डित प्रतापनारायण मिश्र ने लिखा कि परमेश्वर ने बडी दया की कि स्वामी दयानन्द को उत्पन्न कर दिया जिनके वचन रूपी वरुणास्त्रो से क्रिस्तान की भयानक अग्नि बहुत कुछ शात हो गई। स्वामी जी के सिद्धान्तो से अनुप्राणित रचनाएं मिश्र जी के ब्राह्मण पत्र में खूब प्रकाशित हुइ। हिन्दुओ मे प्रचलित बाल विवाह, वेश्यानृत्य, अज्ञान, श्राद्ध, मूर्ति पूजा आदि कुरीतियो के विरोध मे मिश्र जी ने एक आल्हा लिखी। इनमें कट्टर पथियो पर कडा प्रहार किया गया था। एक उदाहरण लीजिए—

> मरत-मरत दयानन्द मरिगे,
> हिन्दू रहे आजु लगि सोय।
> पुन विवाह पाच बरस को,
> गहने परत फिरत घर बार
> रुपया फकें जन्मादन पर
> घर भरि देय पतुरिया क्यार।
> वेद मगेवे के चदा को
> सुनतै नाम सूखि जिउ जाय।
> मरेहु खाउ तुम खीर खाड
> हम जियहिं क्षुधाकुश निपट निकाम।

तदीय सर्वस्व' ग्रन्थ मे स्वामी दयानन्द के अनुरूप युक्ति एव तर्काश्रित धर्म के अगीकार करने की प्ररणा भारतेन्दु ने दी। स्वामी जी ने बाइबिल, कुरआन, पुराण तथा अनार्ष ग्रथों को स्वार्थ निहित दृष्टि से लिखा हुआ मानकर वेदो की महत्ता प्रतिपादित की। परम्परा

स्वदेशी और स्वदेश

से हटकर स्वामी जी ने वेदों की सार्वजनीन सार्वकालिक तथा मानवोपयोगी बुद्धिगम्य हिन्दी व्याख्या की।

भारतेन्दु ने लिखा कि हम आर्य लोगों में धर्मतत्त्व के मूलग्रन्थों का भाषा में प्रचार नहीं। यही कारण है कि भिन्नता स्थान स्थान पर फैली हुई है। कच्चे, गले, सड-सूत व चींटी की दशा हमारे धर्म की हो गई है। अनेक कोटि देवी-देवताओं का माहात्म्य, छोटी छोटी बातों मे ब्रह्म हत्या का पाप और तुच्छ बातो मे बड बड यज्ञो का पुण्य, मूल धर्म को छोडकर उपधर्मों में आग्रह ने भारतवर्ष से वास्तविक धर्मों का लोप कर दिया है। स्वामी दयानन्द के मन्तव्य की छाया निम्नांकित पंक्तियों में दिखाई पडती है—

जाति अनेकन करी
नीच अरु ऊच बनायो।
खान पान सम्बन्ध
सबनि सो बरजि छुडायो।
करि कुलीन के बहुत ब्याह
बल बीरज मार्यो।
विधवा ब्याह निषध कियो
बिभिचार प्रचार्यो।
रोकि विलायत गमन
कूप मण्डूक बनायो।
औरन को ससर्ग
छुडाइ प्रचार घटायो।

यहाँ ध्यातव्य है कि स्वामी जी ने ही सवप्रथम यजुर्वेद के रुद्रसूक्त के 'नमस्तीर्थाय' मत्र की व्याख्या करते हुए समुद्र यात्रा को विहित ठहराया था। हिन्दी के प्रसिद्ध गद्य लेखक पण्डित बालकृष्ण भट्ट ने स्वामी दयानन्द के राष्ट्र-उद्धारक रूप के प्रति श्रद्धाजलि व्यक्त करते हुए लिखा था—'इस मे कुछ सदेह नही कि इस अभागे भारत की भलाई और कल्याण के प्रयत्न मे आपने अपने जीवन पर्यन्त एक क्षण का भी अन्तर नहीं डाला। आपका यह पवित्र विग्रह यूरोप खण्ड के किसी देश में इस गुरुभाव से प्रकट हुआ होता तो जिस उन्नति के शल शिखर तक पहुचाने को सीढी आप बना रहे थे, उसको अवश्य पूर्ण कर देते और देश का देश आपका सहकारी और सहयोगी बन जाता। जीवन आज यदि किसी सम्प्रदाय या समाज मे है तो वह आर्यसमाज में ही है।'

द्विवेदी युग के असाधारण कवि पण्डित नाथूराम शकर ने ऋषि की पुनीत स्मृति में कृतज्ञ राष्ट्र की सुमनांजलि अर्पित करते हुए लिखा—

आनन्द सुधा सार
दयाकर पिला गया,
भारत को दयानन्द
दुबारा जिला गया।
डाला सुधार वारि
बढी बेल मेल की,
देखो समाज फूल
फबीले खिला गया।
काटे कराल जाल
अविद्या अधर्म के,
विद्यावधू को धर्म
धनी से मिला गया।
ऊचे चढे न क्रूर
कुचाली गिरा दिए,
यज्ञाधिकार वेद अपठों
को दिला गया।
खोली कहाँ न पोल
ढके ढोग ढोल की,
ससार के कुपथ मतों
को हिला गया।
शकर दिया बुझाय
दिवाली को वेद का
कैवल्य के विशाल
बदन मे विला गया।

हिन्दी के माध्यम से जो स्वतत्रता की लडाई महात्मा गांधी के नेतृत्व में लडी गई, उसका पृष्ठाधार महर्षि दयानन्द और भारतेंदु का खडा किया हुआ है। मई १८७४ में स्वामी जी ने वाराणसी में अपना पहला व्याख्यान हिन्दी में दिया। जून १८७४ मे सत्यार्थप्रकाश हिन्दी में बोलकर लिखाना शुरू किया तथा १८७५ में बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना करते हुए प्रत्येक आर्यसमाजी के लिए हिन्दी का पढना पढाना अनिवार्य कर दिया। पूरे देश को हिन्दी के सूत्र में पिरोकर स्वामी जी राष्ट्रीय एकता का दृढ आधार प्रस्तुत कर रहे थे। कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारतीयो के लिए वह एक भाषा का प्रयोग विहित मानते थे। हिन्दी में उन्होंने इसलिए लिखा कि जो लोग स्वामी जी को पढना समझना चाहेंगे वे हिन्दी अवश्य पढेंगे। मदाम ब्लेवेट्स्की तथा कर्नल अल्काट हिन्दी की ओर इसीलिए आकृष्ट हुए। भारतेंदु इस दृष्टि से स्वामी जी के शिष्य थे। हिन्दी नई चाल में उन्हीं की प्रेरणा से ढली। हिन्दी और उर्दू के विवाद में शिवप्रसाद सितारे हिन्द की अपेक्षा भारतेंदु दयानन्द के साथ थे। भारतेंदु की 'उर्दू का स्यापा' रचना इस दृष्टि से पठनीय है। एक समस्या पूर्ति मे सरकार की उर्दू अग्रेजी प्रचारक नीति के विरुद्ध उन्होने लिखा—

सोच मरे अरु विक्रमहू जिन को
अब कोई के काव्य सुनाइये।
भाषा भई उर्दू जग की
अब तो इन ग्रन्थनि नीर डुबाइए।
राजा भये सब स्वारथ पीन
अमीरहू हीन जिन्हें दरसाइए।
नाहक देती समस्या अबे
यह ग्रीषम प्यारे हिमत बना इए।

स्वामी विरजानन्द आर्ष ग्रथो की प्रतिष्ठा के लिए एक सार्वभौम व्याकरण महासभा आमन्त्रित करना चाहते थे। उन्होंने जयपुराधीश रामसिंह जी से इसकी सफलता के लिए सहायता चाही पर स्वामी को निराशा हाथ लगी। इसके बाद स्वामी जी ने ग्वालियर नरेश को पत्र लिखा पर सफलता वहाँ भी कोसों दूर थी। स्वामी दयानन्द ने देश के राजा महाराजाओं को जब जागरण अभियान के लिए प्रेरणा दी पर कुछ को छोडकर शेष तटस्थ और उदासीन ही रहे। इन्दौर के राजा तुकोजीराव उनके अनन्य भक्त थे। १८७७ मे लार्ड लिटन के दिल्ली दरबार में सभी राजा महाराजा उपस्थित हुए थे। स्वामी जी दिल्ली पधारे ताकि राजाओं को देश की दुर्दशा समझाकर देशोन्नति के कार्य मे लग जाने की प्रेरणा दें पर ऐसा सभव न हो सका। काश, यदि राजा महाराजा इसके लिए तयार हो जाते तो देश का कायापलट हो गया होता। स्वामी जी की यही व्यथा उक्त सवैये मे परिलक्षित होती है।

स्वदेशी और राष्ट्रवादी आदोलन की जो नींव स्वामी जी ने रखी, भारतेन्दु ने जिसे अग्रसर किया, गाधी जी में आकर वह प्रौढ और परिपक्व हुई। हिन्दी की द्विवेदी युगीन काव्यधारा दयानन्द और गाधी की अनुवर्तिनी है। हरिऔध का प्रिय प्रवास तथा मैथिलीशरण गुप्त का साकेत दयानन्द और गांधी के विचारो की छाया में पल्लवित हुआ है। बलभद्र मिश्र कृत दयानन्द चरित देशोपकारक व्याख्यान सत्य सिंधु, नाथूराम शकर कृत धर्मरक्षा रहस्य तथा शकर सरोज, पण्डित नारायण प्रसाद बेताब कृत नारायण शतक तथा दयानन्द दिग्दर्शन, हरिशकर शर्मा कृत दयानन्द दिग्विजय, प्रसादकृत चित्राधार के अतिरिक्त श्रीधर पाठक, रायदेवीप्रसाद पूर्ण, सनेही बदरीनाथ भट्ट गोपाल शरण सिंह तथा रामनरेश त्रिपाठी की मुक्तक राष्ट्रवादी रचनाओं पर भी दयानन्द चिंतन की छाप दिखाई पडती है। अछूत समस्या पर इस युग मे खूब लिखा गया। सियाराम शरण जी की रचनाए इस दृष्टि से पठनीय हैं। देशप्रेम तथा सामाजिक जागृति पर रामचरित उपाध्याय जैसे परम्परावादियो ने भी नये ढग से सोचना आर्यसमाज के परोक्ष प्रभाव से ही शुरू किया—

क्यो देश उसकी मानियो में
भूलकर गिनती करे।
निज जाति से जो एठ कर
पर जाति से विनती करे।
इससे अधिक निर्लज्जता
क्या हो सकेगी बोलिए।
जीवन मृतक क्यों हो गए हैं
चेतिए दृग खोलिए।

अछूत समस्या पर सर्वप्रथम आर्यसमाज ने सोचा। गाधी जी ने इसे जीवन का व्रत बनाया। शकर जी ने दयानन्द और गाधी के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष की वदना नहीं की। गाधी जी क्योंकि दयानन्द के सिद्धान्तों को राजनीति मे उतार कर देशोद्धार कर रहे थे इसीलिए शकर जी ने लिखा—

श्री गाधी गुरु का फले,
असहयोग मय मन्त्र
भारत लक्ष्मीनाथ हो
पाय स्वराज्य स्वतन्त्र।

ठाकुर गोपाल शरणसिंह ने एक हृदयद्रावक छद लिखा है जिसमे अस्पृश्यता पर आर्यसमाजी दृष्टि की छाप है।

पत्थर हैं छूते और धूल
को भी छूते आप
फिर किस कारण से
हम को न छूते हैं।
यह तो बताइए क्या
आप मे विशेषता है,
आपके करो मे क्या
सुधा के बिंदु चूते हैं।
आप ही कहें कि आप
कैसे हैं विचारवान,
हमको न छूते किन्तु
छूते नित्य जूते हैं।
हम तो सदैव मानते हैं
अपने को पूत,
कैसे हैं अछूत हम
पाप से अछूते हैं।

गुप्त जी आर्यसमाज के सांस्कृतिक नवजागरण के स्वरों से गहराई के साथ जुडे थे। १९१२ से ४६ तक जितनी रचनाए उन्होंने लिखी, उन

(शेष पृष्ठ २३ पर)

मौत ऐसी हो नसीबों में, तो क्या जीने में है ?

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'
वेद सदन, अबोहर १५२११६

ऋषि ने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे एक बड़ा मार्मिक वाक्य लिखा है कि "महापुरुष तो बड़े उत्तम धर्मयुक्त पुरुषार्थ से होता है।" ऋषि के इस वाक्य के पीछे उनका सारा कर्मबल और तपोबल बोल रहा है। ये शब्द ऋषि की लेखनी से तो लिखे गये हैं परन्तु ये शब्द उनके अधरो से निकले मात्र नहीं हैं। ऋषि का पूरा जीवन इस एक वाक्य की व्याख्या है।

ऋषि सत्यार्थप्रकाश के प्रारम्भ में प्रार्थना के रूप मे अपनी एक प्रतिज्ञा करते हैं—

'ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि।'

ऋषि ने अपना सारा जीवन ऋत और सत्य के प्रकाश व रक्षा के लिए लगा दिया। इस मार्ग पर ऋषि ने कौनसा कष्ट है जो नहीं झेला ? परन्तु जान जोखिम मे डाल कर ऋषि क्या डगमगाए और घबराए ?

वे डगमगाते व घबराते ही क्यों जबकि उनका Security Guard (अंगरक्षक) उनके अंगसंग ही रहता था। ऋषि ने स्वयं वेद के प्रमाण को उद्धृत करके उस अंगरक्षक में अपनी अडिग श्रद्धा व्यक्त की है। ऋषि वेद वाणी का घोष करते हैं—

'स ओत प्रोतश्च विभु प्रजासु'।

ऋषि जी ने फिर स्वमन्तव्य अमन्तव्य में अपनी दृढ प्रतिज्ञा को दोहराया है कि धर्म रक्षा मे चाहे ही दारुण दुःख प्राप्त हो, भले ही प्राण भी चले जावें परन्तु, मनुष्यपन रूपी धर्म को कदापि न छोड़े।

इतिहास साक्षी है कि ऋषि ने प्रभु की आज्ञा का पालन करते हुए सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, दारुण दुःख झेले और विषपान करके बलिदान भी दे दिया परन्तु वे ऋत व सत्य के मार्ग से पीछे नहीं हटे। उनको अपनी प्रतिज्ञा के पालन करने पर पूर्ण सन्तोष था तभी तो देहत्याग करते हुए कहा, "प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो, पूर्ण हो, पूर्ण हो।"

कुछ वर्ष पूर्व दिवंगत श्री विद्यानन्द विदेह रावोरी गार्डन वालों ने यह मिथ्या प्रचार प्रारम्भ कर दिया था कि ऋषि ने 'प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो, पूर्ण हो, पूर्ण हो।' ये शब्द नहीं कहे। भाव यह था कि वे कहना चाहते थे कि ये शब्द आर्यों ने बाद मे घड लिये। जो विदेह का यह कथन काला झूठ था।

लेखक के पास उस समय की एक पत्रिका में ऋषि के अन्त समय का विस्तृत वृत्तान्त है। उसमे प्रत्यक्षदर्शियो ने लिखा है कि ऋषि जी ने ये शब्द कहे थे।

लोग पढते-पढाते तो हैं नहीं। मनघडन्त गप्प व अप्रामाणिक बातें कह कर व लिखकर इतिहास को बिगाडने का पाप करते रहते हैं। अभी अभी किसी आचार्य ने आर्य मित्र में अमरीकन गुप्तचर विभाग सी० आई० ए० को ऋषि की हत्या व स्वामी श्रद्धानन्द जो के बलिदान के लिए दोषी ठहराया है। पता नही ऐसा लिखकर इन आचार्य महोदय को क्या प्राप्त हो गया है ? अब आचार्य भी तो लोग यू ही बन जाते हैं। पढते-पढाते हैं नही। प्राज्ञ, विशारद पास नहीं करते। कहीं से मानद उपाधि भी प्राप्त नहीं हुई। कहीं पढाने लिखाने का सौभाग्य भी नहीं मिला। ऐसी बात घड घडा कर आचार्य पद को प्राप्त कर लेते हैं। आर्य लोग पहले तो असत्य को सहन नही किया करते थे परन्तु अब आर्यसमाज की 'वेदी' कोई वेदी न रहकर 'मंच' बनाई जा रही है। मञ्च से जो चाहो सो कह दो, लिख दो। शुद्धि के विरुद्ध बकवाद करने वाला भी नेता और शुद्धि के लिए जान देने वालो की भी जय बोल दो।

हमारा ऋषि तो ऐसा ज्ञान समुद्र था कि बंगाल के एक न्यायाधीश ने ऋषि के सम्बन्ध में अपने संस्मरणों मे लिखा है कि वे बिना पुस्तक देखे सब प्रमाण देते थे। उनको सब वेद शास्त्र कण्ठ थे। उनकी जिह्वा पर प्रमाण हर घडी उपस्थित थे। उस न्यायाधीश के ये संस्मरण हमने अपनी पुस्तक 'तड़प वाले तडपाती जिनकी कहानी' में दिये हैं।

आज आवश्यकता है कि ऋषि-जीवनी को विकृत दूषित करने के षड्यन्त्रों का भण्डा फोडा जावे।

(शेष पृष्ठ २४ पर)

(पृष्ठ २२ का शेष)

स्वदेशी और स्वदेश

सब पर आर्यसमाज को प्रभा मढी मिलती है। उन्होने आर्यसमाज पर श्रद्धा के साथ लिखा—

आर्यसमाज, आर्य भूमि पर
अरुणोदय सा,
उठा ऊष्ण तु सजकर साज,
आर्यसमाज—आर्यसमाज।
अन्धकार था चारो ओर,
देख लिया पर तूने चोर,
घर मे शोर मचाया घोर,
सोये स्वजनो को धिक्कार,
जगा दिया ठोकर तक मार।
अरे राष्ट्र भाषा की लाज।
आर्यसमाज—आर्यसमाज।
मुह न फिराया भय को देख,
लिखकर निज शोणित से लेख।
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्,
जयति कृत बुद्धिकार्यम्
शुद्धि वितान तले श्रद्धा का,
दान किया तूने द्विजराज,
आर्यसमाज—आर्यसमाज।

मुन्शी प्रेमचन्द तो आर्यसमाज के नियमित सदस्य थे। उनके सहपाठी पण्डित गंगाप्रसाद उपाध्याय आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध नेता बने। अमृतराय जी ने लिखा है कि आर्यसमाज में उनकी पूरी दिलचस्पी थी। जलसों मे जाते ही रहते थे, शायद वह आर्यसमाज के बाजाब्ता सदस्य थे। १९२७ में गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव पर पधारे थे और १९३६ में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्वर्णजयती पर लाहौर समाज के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित हुए थे। अपने अध्यक्षीय भाषण मे उन्होने आर्यसमाज की उपलब्धियो पर प्रकाश डाला था। प्रेमचन्द की रचनाओ मे छुआछूत दलितोद्धार, पण्डों, पुरोहितो और महन्तो की भर्त्सना, धार्मिक तथा आर्थिक शोषण, शिक्षा का पतन, विधवा विवाह, बाल विवाह, नारी शिक्षा, राष्ट्र प्रेम तथा देशोद्धार का चित्रण आर्यसमाज के प्रभाव का फल है। चतुरसेन शास्त्री, सुदर्शन, यशपाल, गुरुदत्त, विष्णु प्रभाकर, शारिगपुडि, यज्ञदत्त शर्मा तथा कचनलता सब्बरवाल आर्यसमाज से कही न कही जुड़े लेखक हैं। कुछ की तो शिक्षा-दीक्षा ही आर्यसमाजी वातावरण मे हुई है।

महर्षि दयानन्द स्वभाषा में स्वदेशी की पहचान कराने वाले जागरण काल के वह अग्रणी पुरुष हैं, जो आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने १८८३ में थे। ज्ञान-विज्ञान सम्बन्धी विविध आर्य साहित्य का विशद अध्ययन करने के बाद हम देखेंगे कि स्वामी दयानन्द और उनके अनुयायियो के अवदान का फलक कितना विराट् है और उनका कर्तृत्व कितना बहुआयामी है। पूर्वाग्रह विहीन होकर शास्त्रो के अभिप्राय को निश्छल किंतु सतर्क आधार पर प्रस्तुत करने की परिपाटी को जन्म देने के कारण तो स्वामी जी वन्दनीय हैं ही, राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति की राष्ट्रभाषा के माध्यम से प्रथम परिकल्पना के कारण भी वरणीय हैं। स्वतंत्र भारत की सर्वतोमुखी उन्नति का जब भी इतिहास लिखा जाएगा, स्वामी जी का कर्तृत्व सदैव अग्रणी रहेगा। स्वामी जी का धार्मिक तथा सामाजिक आन्दोलन तब तक प्रासंगिक है जब तक पृथ्वी पर धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक शोषण विद्यमान है। भारत मे हुए और होने वाले हर सामाजिक पुनरुत्थान और क्रांतिकारी परिवर्तन के मूल सूत्र दयानन्द की वाणी में ही मिलेंगे। द्विवेदी युग के महाकवि श्री रामनरेश त्रिपाठी के शब्दों में—

लोकहित चिंतन में
गृहसुख त्यागी वेद-
ब्रह्म का अनन्य
अनुरागी ऊर्ध्वरेता था।
ज्ञानी, अद्वितीय अभिमानी
आर्य सभ्यता का,
जीवन का दानी कर्मव्रत
का प्रणेता था।
हरि के समान कोटि-
कोटि शिव मङली में,
विकट विरोधियो के
वृन्द का विजेता था।
भारत के भाग्य का
भविष्य रूप दयानन्द,
शकर के बाद हिन्दुओं
में एक नेता था।

आवाहन किसका—श्री का या लक्ष्मी का ?

लेखक—क्षितीश वेदालंकार

वेद प्रभु का अजर अमर काव्य है (पश्य देवस्य काव्य न ममार न जीर्यति'), इसलिए प्राय उसमे कोई बात काव्यात्मक या आलंकारिक ढग से कही जाती है। उदाहरण के लिए वेद का यह मन्त्र देखिए—

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्र पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन्निषाणाम म इषाण सर्वलोक म इषाण ॥ —(यजु० ३१।२२)

इस मन्त्र मे भगवान् की दो पत्नियो का वर्णन है जिनमें एक श्री है, और दूसरी लक्ष्मी। यह बात को कहने का आलंकारिक ढग है। बाद मे इसी आधार पर विष्णु की दो पत्नियां मान ली गई।

सामान्यत श्री और लक्ष्मी दोनो विभिन्न प्रकार की सम्पदा के वाचक हैं। परन्तु साहित्य की दृष्टि से श्री का वाहन कमल और लक्ष्मी का वाहन उल्लू बता कर अलकार को समझाने का प्रयत्न किया गया है। श्री और लक्ष्मी मे जो अतर है वह इन दोनो के पुराण वर्णित वाहनों से स्पष्ट हो जाता है।

उक्त मंत्र का अर्थ इस प्रकार होगा—हे प्रभो ! श्री और लक्ष्मी आपकी दो स्त्रियो के तुल्य हैं। दिन-रात पार्श्व के समान हैं। नक्षत्र आपके रूप हैं। द्युलोक और पृथ्वी लोक आपके खुले हुए विस्तृत मुख के समान हैं। मैं जिस सुख की कामना करता हू, वह मुझे प्रदान कीजिये और मेरे लिए सब लोको के ऐश्वर्य का मार्ग प्रशस्त कीजिये।

कमल भारतीय सस्कृति का प्रतीक है। भारतीय कला मे जितना महत्त्व कमल के इस प्रतीक का है उतना अन्य किसी प्रतीक का नही। कमल सूर्य का प्रकाश पाकर खिलता है। पक मे पैदा होकर भी और सदा पानी में रह कर भी वह इन दोनो से अलिप्त रहता है। इसके अतिरिक्त कमल का रूप उत्तेजक नहीं सौम्य सौन्दर्य का आभास देता है, और उसकी गध भी ऐसी भीनी-भीनी होती है कि वह अपने रूप और गध दोनो से ही मानव मन में सात्त्विक भावो का उद्रेक करता है।

श्री के साथ श्रम का भी सबध अवश्य है। अन्यथा उसके साथ पक का साहचर्य क्यो ? बिना श्रम के प्राप्त या दूसरो के श्रम के शोषण से प्राप्त धन श्री के बजाय लक्ष्मी का द्योतक है। लक्ष्मी का वाहन उल्लू दिन मे नहीं देखता वह रात मे ही देखता है। चोर बजारी या अवैध ढग म धन की प्राप्ति के प्रयास भी प्राय रात्रि के अधकार के आवरण मे ही अधिक होते है।

दीपावली के पर्व पर व्यापारी लोग अपने मकान दुकान और बही खातो पर स्वस्तिक का चिह्न बना कर शुभ—लाभ'' भी लिखते हैं। इस स्वस्तिक को भी भारतीय संस्कृति का प्रतीक माना जाता है। स्वस्तिक का चिह्न वास्तव में श्री का ही विकृत रूप है। यदि वह श्री का रूप न होता, तो लाभ' के साथ 'शुभ' की क्या सगति थी ?

बगाली हिन्दुओ मे आज भ यह रिवाज है कि वे किसी नई ब्याहता के घर मे आने पर या दीपावली के दिन सामूहिक रूप से अपने मुख से ''उलू-ध्वनि'' (उलूक ध्वनि) का उच्चारण करते हैं ताकि उलूक की ध्वनि सुनकर लक्ष्मी अपने वाहन के पास उनके घर मे सहष चली आये।

चारो तरफ श्री के बजाय लक्ष्मी के आवाहन का जोर है। बेचारी श्री तो विगत श्री हुई पडी है। उस श्री को कौन पूछता है ? अब ससार मे और कही श्री के दर्शन नही होते तो भले लोग अपने नाम के प्रारम्भ मे ही श्री' लगा कर सतोष कर लेते हैं। पर यहा भी नाम के प्रारभ में कितनी बार श्री लगाये, इसकी होड चल पडी। जब नाम के प्रारम्भ मे श्री की सख्या की स्पर्द्धा बढी तो महन्तों और मठाधीशो ने अपने नाम से पूर्व 'श्री १०८' और उससे आगे बढ कर 'श्री १००८'' लिखना प्रारभ कर दिया। तब सब से बडे मठाधीश शकराचार्यो ने सख्या के इस प्रपच से बचने के लिए अपने नाम के प्रारभ में विशेषण लगाया—'अनन्त श्री-विभूषित' अर्थात् उनके नाम से पहले लगने वाले श्री की सख्या का कोई अत नही है।

श्री के बजाय लक्ष्मी के आह्वान का एक प्रमुख कारण यह भी है कि आजकल जिधर भी नजर डालो उधर ही हर शाख पर 'लक्ष्मी-वाहन' विराजमान हैं। इसलिए वे पद्मासना श्री के महत्त्व को क्यो आगे आने देगे ? वे तो अपनी प्रियाधीश्वरी लक्ष्मी का ही आह्वान करेगे।

अघनगे फकीर महात्मा गाधी के जीवन की एक घटना स्मरण आती है। जब वर्धा और उसके निकटवर्ती ग्रामो मे बिजली आ गई, तो सेवाग्राम आश्रम के निवासी कुछ लोगों ने महात्मा गाधी के पास जाकर कहा कि अब तो आश्रम के पास वाले गाव मे भी बिजली आ गई, इसलिए आप भी आश्रम में बिजली लगवा लीजिए बडी आसानी से तारो की फिटिंग हो जायेगी।

'पास के गाव मे बिजली आ गई है' इस समाचार से गाधी जी प्रसन्न तो हुए पर अपने आश्रम में बिजली लगवाने को तैयार नहीं हुए। जब आश्रमवासी बहुत जिद करने लगे, तब गाधी जी ने कहा—मैं एक शर्त पर आश्रम में बिजली लगाने की बात मान सकता हू।'' आश्रमवासियो को आशा बधी। उत्साह के अतिरेक में बोले—''आप बताइए तो सही, हम सब शर्तें पूरी कर दगे।'' गाधी जी ने मुस्कराते हुए कहा—'मेरी तो केवल एक ही शर्त है। जिस दिन तुम मुझे यह शुभ समाचार सुनाओगे कि भारत के हर गाव में बिजली पहु च गई है—एक भी गाव ऐसा नहीं रहा जहा बिजली नही पहु ची, उसी दिन मैं अपने इस आश्रम मे बिजली लगाने की सहर्ष अनुमति दे दू गा।''

हमने लक्ष्मी का आवाहन करके उसी की कृपा से, एक शीश महल तैयार किया है। उस शीशमहल के अदर, खूब ठाठबाट से, कृपणता का रत्ती भर सकेत दिये बिना, हमने आकाश के तारो को लजाने वाली दीपमाला का विशाल आयोजन किया है। जगमग अट्टालिका पर जगमगाती यह दीपो की माला मुबारक—सद सद मुबारक।

इस शीशमहल के बाहर जनता-जनार्दन, वह दरिद्रनारायण, वह सोने की चिडिया का असली वारिस पर अब गरीबी का शिकार वह देशवासी—जिसकी सख्या सख्याविदो के अनुसार अब अस्सी करोड तक है पर जो गूगा है अपने हाथो में मिट्टी के खाली दिये लिये खडा है। उसके हाथ के दीपक मे न तेल है, न बाती। वह टुकुर-टुकुर निहार रहा है शीशमहल के के अन्दर जगमगाती दीपको की आलीशान पक्तियों को। हा, उसका दीपक खाली है और शीशमहल में लक्ष्मी-वाहन लक्ष्मी का आह्वान कर रहे हैं।

शीशमहल के भरे दीपों की दिवाली मुबारक।

शीशमहल के बाहर खडे वाणी विहीन अभावग्रस्त दरिद्रनारायण के खाली दीयो की दीवाली मुबारक।

वेदमत्र से बात शुरू की थी तो वेदमत्र से बात समाप्त करे। अथर्ववेद का मत्र है -

या मा लक्ष्मी पतयालुरजुष्टा-
भिचस्कन्द वन्दनेव वृक्षम्।
हिरण्यहस्तो वसु नो रराणः।
अथर्व० ७।११।२

जो लक्ष्मी पतन की ओर ले जाने वाली है, दुखदायक और असेवनीय है, पर वृक्ष से लिपटी लता की तरह मुझे घेरे हुए है, हे सविता देव ! उस मलिन लक्ष्मी को मुझ से दूर रखो। मुझे तो वह वसु (धन) प्रदान करो जो मेरे लिए और समग्र समाज के लिए हितकारी हो, रमणीय हो और मुझे तम से हटा ज्योति की ओर ले जाय।

सुपर्ण,'

(पृष्ठ २३ का शेष)

मौत ऐसी हो न सीनों में

किसी भी प्रकार की बोगस आत्म-कथा या 'अज्ञात जीवनी' अथवा अपना 'जन्म चरित' नाम की Forgery जालसाजी को सहन न किया जाये

ऋषि का जीवन गौरवपूर्ण है। ऋषि का बलिदान गौरवपूर्ण है। ऋषि की गरिमा के लिए किसी पुराण हदीस के घढने की कोई आवश्यकता नही। घर-घर में शेर-वर प० लेखराम रचित जीवन चरित का पाठ करके हमें ऋषि जीवन चरित्र के प्रचार का अभियान चलाना चाहिए। वेद प्रचार के लिए ऋषि के जीवन में घटी घटनाए क्या हैं ?

ऋषि ने वेद को जीवन में उतारा। ऋषि की प्यारी-प्यारी घटनाए वेद की बोलती ऋचाए हैं। भक्त प्रवर अमीचन्द जी ने कभी लिखा था—

परिव्राजकाचार्य स्वामी दयानन्द,
पधारा है परलोक डके बजाता।
परमेश्वर करे कि हम भी ऐसे हो
निर्भीक बनकर वेद धर्म पर जीवन
वार सके।
मौत ऐसी हो न सीनों में,
तो क्या जीने में है।

ऋषि दयानन्द की वेद भाष्य शैली

लेखक—डा० भवानी लाल भारतीय

★

ऋषि दयानन्द का वेद भाष्य एक ओर जहां सायण, उव्वट, महीधर आदि आचार्यों के भाष्य से भिन्न है वहां ग्रिफिथ, मैक्समूलर, मैकडोनल आदि पाश्चात्य विद्वानों के भाष्य से भी उसकी पृथकता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। सायण आदि प्राचीन आचार्यों ने वेद को ईश्वरीय ज्ञान स्वीकार किया था, परन्तु इसके अर्थ की वास्तविक शैली से अनभिज्ञ होने और पौराणिक संस्कारों से प्रभावित होने के कारण वे इस सिद्धान्त का सर्वत्र पालन नहीं कर सके। उन्होंने अनादि वेद ज्ञान में भी ऋषियों और राजाओं का इतिहास मान लिया और पशु-हिंसा आदि के निर्मूल विचारों से अपने भाष्यों को दूषित कर दिया। दूसरी ओर ग्रिफिथ आदि पाश्चात्य भाष्यकारों के लिए वेद केवल ऐतिहासिक पुस्तकें मात्र थी जो आर्यों के सामाजिक, धार्मिक, नैतिक और आर्थिक जीवन पर पर्याप्त प्रकाश डालती हैं।

ऋषि दयानन्द जहां वेद को ईश्वरीय ज्ञान घोषित करते हैं, वहां उसे धर्म का मूलाधार मानते हैं। मनु के शब्दों में उन्होंने धर्म जिज्ञासुओं के लिए श्रुति को ही परम प्रमाण माना है। ऋषि दयानन्द ने वेदार्थ की आर्ष प्रणाली को स्वीकार किया। इससे उनका तात्पर्य यही था कि प्राचीन ब्राह्मण, निरुक्त, अष्टाध्यायी आदि ऋषिकृत ग्रन्थों की सहायता से ही वेद का वास्तविक अर्थ निश्चित हो सकता है। सायण आदि ने इनकी बहुत कम सहायता ली है और यत्रतत्र अपनी कल्पना से ही काम चलाया है। पाश्चात्य विद्वानों के भाष्य तो सायण के अर्थों का ही अनुसरण करते हैं, इसलिए जो दोष सायण के हैं वे इनमें भी आ गये हैं। वास्तव में बात यह है कि लौकिक संस्कृत व वैदिक संस्कृत में बहुत अन्तर है। लौकिक भाषा में "अहि" सांप को कहते हैं परन्तु वेद में इसके "मेघ" आदि कई अर्थ हैं। इसी नियम के अनुसार जो लौकिक संस्कृत का ही ज्ञान रखते हैं, उनकी वेद में गति होना कठिन है। ऋषि ने इस सत्य का उद्घाटन किया। निरुक्त आदि शास्त्रों में वैदिक भाषा के शब्दों का जिस शैली से निर्वचन किया गया है, ऋषि को वह मान्य था। अतः उनकी भाष्य शैली निरुक्त पद्धति के सर्वथा अनुकूल है। एक बात और भी है वैदिक शब्दों के अर्थ धातुज होने के कारण यौगिक होते हैं, रूढ नहीं। यही कारण है कि वेद में धातु के आधार पर एक शब्द के अनेक अर्थ लगाये जा सकते हैं और प्रकरणानुकूल व सब ठीक होते हैं। उदाहरण के लिए लोक में अग्नि केवल आग को कहते हैं परन्तु इसकी निरुक्ति इस प्रकार है 'अग्नि कस्मात् अग्रणी भवति'। अर्थात् आगे बढ़ने और गमनशील होने के कारण अग्नि शब्द ईश्वर, आत्मा, राजा, नेता, विद्वान्, अध्यापक और भौतिक अग्नि सबके लिए प्रयुक्त होता है। इसी शैली का अनुकरण कर ऋषि ने यह सिद्ध किया है कि इनमें जो किन्हीं विशेष व्यक्तियों के नाम दिखाई पड़ते हैं वास्तव में वे वैसे नहीं हैं। शतपथ के प्रमाणानुसार उन्होंने वसिष्ठ आदि को 'प्राण' माना है।

इसी यौगिकवाद का अनुसरण करने के कारण ऋषि दयानन्द वेद में लौकिक इतिहास की सत्ता स्वीकार नहीं करते। अनादि ईश्वर प्रदत्त ज्ञान में साधारण मानवों का इतिहास होना सम्भव नहीं। पुरुरवा उर्वशी आदि की कथा तथा इन्द्र और वृत्र का युद्ध, सुदास, दिवोदास आदि राजाओं का वर्णन आदि जो वेद में बताये जाते हैं उनके वास्तविक तात्पर्य को समझ लेने पर ये इतिहास की घटनाएं नहीं रहतीं वृत्र और इन्द्र का युद्ध बादल और सूर्य का युद्ध है जो सदा होता रहता है। ऐसे इतिहास माने जाने वाले स्थलों की व्याख्या ऋषि ने अपनी 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में विशेष रूप से की है। यह निश्चित है कि किसी समय में वेद में इतिहास मानने वाला एक सम्प्रदाय अवश्य विद्यमान था, क्योंकि निरुक्त में ही उसकी उपस्थिति का प्रमाण—"तत्को वृत्र, मेघ इति नैरुक्ता, त्वाष्ट्रोऽसुरो इत्यैतिहासिका." आदि वाक्यों में मिलता है। यास्क महाराज ने इस सिद्धान्त का स्थान-स्थान पर निराकरण किया है। महर्षि दयानन्द को भी यही मत हो अभिप्रेत था।

ऋषि के वेद भाष्य की एक और विशेषता यह है कि उन्होंने वेद मंत्रों के त्रिविध अर्थ किये हैं—आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक। यह ऋषि का मौलिक आविष्कार नहीं था। प्राचीन स्कन्द स्वामी, भट्ट भास्कर, दुर्गाचार्य और वैदिक विद्वानों ने इस प्रक्रिया का समर्थन किया है। सायण आदि का दृष्टिकोण एकांगी था। उन्होंने वेदों की याज्ञिक कर्मकाण्डपरक व्याख्या तक ही अपने भाष्य को सीमित रक्खा। इसका एक भयंकर परिणाम यह निकला कि वेद की उदात्त और जीवन को उत्थान की ओर प्रेरित करने वाली शिक्षाओं को भूल कर लोग उन्हें केवल यज्ञ में प्रयुक्त होने वाली वस्तु समझने लगे। तभी तो सायण ने "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" जैसी उच्च भावना रखने वाली ऋचा को सोमरस पीसने और छानने के कर्म में नियुक्त किया। यह कर्मकाण्ड की लीला बड़ी विचित्र है। शन्नो देवी · मंत्र इसीलिए शनि ग्रह की पूजा में प्रयुक्त होने लगा। प्रकरणानुकूल वेद मंत्रों की व्याख्या करना और उनसे राजधर्म, भौतिक विज्ञान, गृहस्थजीवन, सृष्टिविज्ञान आदि विषयों का निष्कर्ष प्रकाशित करना ऋषि का ही काम था।

वेदभाष्य की परम्परा में ऋषि दयानन्द ने एक और क्रान्तिकारी परिवर्तन किया था। वेदों से एकेश्वरवाद की सिद्धि। पाश्चात्यों का वेदों पर सब से बड़ा आक्षेप यही था कि वेदों में विविध प्राकृतिक शक्तियों की पूजा और उपासना का विधान है। प्राचीन आर्यों को ईश्वर की सर्वोच्च सत्ता का ज्ञान नहीं था, इसलिए जब सृष्टि की शैशवावस्था में प्राकृतिक शक्तियों से उन्हें पीड़ा पहुंचती, तो उससे निस्तार के लिए वे सविता, इन्द्र, अग्नि, पूषा, सोम आदि की स्तुति करते। इन स्तुतियों का ही संग्रह ऋग्वेदादि है। ऋषि ने इस कल्पना का प्रमाण पुरस्सर खण्डन किया। उन्होंने कहा कि "एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति अग्नि यमं मातरिश्वानमाहु।" (ऋग्वेद) आदि मन्त्रों के रहते वेदों पर बहुदेवतावाद का आरोपण करना दुःसाहस मात्र है। अरविन्द आदि विद्वानों ने ऋषि के इस मत को मुक्त कंठ से स्वीकार किया है। एकेश्वरवाद की स्थापना के लिए वैदिक साहित्य में ऋषि का नाम अमर रहेगा।

ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण वेद मनुष्यों के लिए सार्वभौम और सार्वकालिक नियमों का प्रतिपादन करता है। वह समस्त ज्ञान-विज्ञान का स्रोत है। यह ऋषि का निश्चित मत है। संसार की समस्त भौतिक और आध्यात्मिक विद्याओं का मूल वेद में ढूंढा जा सकता है, यह ऋषि का दावा था। उन्होंने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में वैद्यक, गणित, ज्योतिष, तार, विमान आदि विविध ऋचाओं का संकलन किया है। यद्यपि पं० बलदेव उपाध्याय जैसे पूर्वाग्रह रखने वाले विद्वानों ने ऋषि के इस कथन का मजाक उड़ाया है। परन्तु अरविन्द जैसे सुप्रसिद्ध योगी और विद्वानों ने ऋषि के इस मत को सादर ग्रहण करते हुए उसकी सत्यता में निश्चित विश्वास व्यक्त किया है।

वेद का ज्ञान देश, काल, सम्प्रदाय और वर्ग के संकुचित भेदों से ऊपर है। इसलिए कुरान, बाइबिल, जेन्दा वस्ता आदि व वेद के समक्ष नहीं टिकती। इन ग्रन्थों का निर्माण समूह विशेष के हित को दृष्टि में हुआ था। इन की उपयोगिता सीमित समय के लिए एवं निर्माता मनुष्य विशेष थे।

यदि वेद को ईश्वर का ज्ञान माना जाय तो उसका उपदेश मनुष्य मात्र के लिए होना चाहिए। मध्यवर्ती सम्प्रदायाचार्यों ने स्त्री और शूद्रों के लिए वेदाध्ययन का निषेध कर दिया। अर्वाचीन कल्पित स्मृतियों में तो वेद के पढ़ने और सुनने वाले शूद्रों के लिए कठोर शारीरिक दण्ड की व्यवस्था की गई थी। ईश्वरीय ज्ञान के नाम पर होने वाले इस अमानुषी अत्याचार को ऋषि दयानन्द का दयालु हृदय नहीं देख सका अतः लोकोपकार के लिए समाधि अवस्था में उसने "यथेमां वाचं कल्याणी' इस यजु मंत्र के अर्थ का साक्षात्कार करते हुए संसार के सामने अपनी गम्भीर वाणी से यह घोषणा की 'परमात्मा का यह कथन है कि मैं यह कल्याणकारी वाणी मनुष्यमात्र के हित के लिए प्रदान कर रहा हूं। क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, सेवक तथा दास प्रत्येक व्यक्ति के लिए इस वाणी का उपदेश है' ऋषि की उदारता का यह ज्वलन्त उदाहरण है।

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

वैदिक काल की एक झलक

—ओम प्रकाश "आर्य" विद्यावाचस्पति
रावतभाटा—३२३३०५

पावन वैदिक-काल मे, मानव कितना खुशहाल था!

नहीं व्यथाए मानस में थीं
नही रोग शारीरिक था,
नहीं किसी को कोई चिन्ता
हर सुख का वह मालिक था,

दूध दही, घी का सबके ही घर-घर बहता नाला था। १।

वन कुञ्जो के छायापथ में
प्राणी ससुख विचरते थे,
माँ प्रकृति के उपहारो से
जीवन-यापन करते थे,

कही सघन तरु, नगर सरलतम, कही मनोरम ताल था। २।

निष्ठुर वैज्ञानिक कोलाहल
नहीं सुनाई पडता था,
फिर भी मानव कर चरणों-बल
अतिशय सुखमय रहता था

प्रकृति के अञ्चल में सारे सुख का सारा माल था। ३।

पतिप्रेमी कामिनियां घर की
सत् देवी प्रतिरूप थी,
जीवन के सब दुःख भारों की
नन्दन स्रोत अनूप थीं,

निर्मल हाथो म हीरे-मोती मणियो का थाल था। ४।

वेद-ऋचाओं की शुचि ध्वनियां
प्रात. दिशि-दिशि भर जाती,
जिसको सुनकर पक्षिनियां भी
तरु-तरु पर प्रति सुख पातीं,

द्रव्य-सुगन्धित हवन यज्ञ जग मे होता सब काल था। ५।

ब्रह्मचर्य की विमल पताका
अन्तरिक्ष मे लहराती,
नरह्वीपो मानव के बल से
धरा भया सी कप जाती,

दुर्विचार, सब दुर्व्यसनों का फुकारित नर व्याल था। ६।

धर्मों का आक्रोश धरा पर
नहीं सुनाई पडता था,
मनुज ईश की पावन प्रतियां
पल-पल बाधा करता था,

सुख सौरभ की बहु निधियो से मनु का ऊंचा भाल था। ७।

★

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है ?

लेखक—शिव कुमार शास्त्री काव्य-व्याकरण तीर्थ

बड़े लम्बे समय के बाद ऋषि दयानन्द ने वेद के सम्बन्ध में कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।' इस गुरु गम्भीर नाद को सुनकर पौरस्त्य और पाश्चात्य जगत् के बुद्धिजीवियों में एक हलचल सी मच गयी। यह वह समय था कि जब भारत के तथाकथित विद्वान् ब्राह्मण प्रत्येक धार्मिक व्यवस्था के लिए नाम तो वेद का लेते थे। किन्तु वास्तविक वेद के उन्होंने दर्शन तक भी नहीं किये थे। आद्य शंकराचार्य जैसे दिग्गज विद्वानों की पहुंच भी उपनिषदों तक ही सीमित थी। उन्होंने वेदान्त दर्शन के भाष्य में अपनी स्थापना की पुष्टि के लिए यत्र तत्र उपनिषदों के प्रमाण ही दिये हैं। यदि वेद पर उनका अधिकार होता तो प्रभाव और महत्व की दृष्टि से प्रमाण वेदों के ही देते उपनिषदों के नहीं।

महर्षि दयानन्द को भी वेद बड़ी खोजबीन के बाद मिले। जब सम्वत् १९२६ में ऋषि दयानन्द प्रथम बार काशी में गये तो रुडल्फ हार्नलि क्वीन्स कालिज वाराणसी में आचार्य थे, वह कई बार ऋषि से मिले। उन्होंने एक प्रसंग में लिखा है कि श्री स्वामी जी ने सर्वप्रथम अथर्ववेद मेरे पास देखा। हरियाणा के आद्य आर्यप्रचारक के दादा बस्तीराम ने ऋषि की वेद प्राप्ति की धुन का इन मार्मिक शब्दों में ठीक ही चित्रण किया है कि वेद के कारण यों जग ढूंढा जैसे राम ढूंढी सिया। बड़े-बड़े अच्छे विद्वान रात्रि को छिपकर ऋषि के पास वेदों को देखने के लिए आते थे।

महाराष्ट्र के ब्राह्मणों के कतिपय परिवारों में परम्परा से अपनी अपनी वेदशाखाओं के सस्वर पाठ का प्रचलन था। मन्त्रों के अर्थ से उन्हें भी कुछ मतलब नहीं था। पाठ मात्र में ही वे पुण्यार्जन समझते थे। अपनी शाखा के अतिरिक्त वेद के लिए उनके मन में कोई आकर्षण भी नहीं था। चारों वेदों के अभ्यास का चलन तो लुप्त हो ही गया था। पुराणों के विशालकाय पोथों को देखकर वेदों के आकार के विषय में उनकी यह कल्पना थी कि वेद तो न जाने कितने बड़ होंगे? सन् ३५ में अलीगढ़ जिले के खासनी कस्बे में आर्य समाज का पौराणिकों के साथ "मूर्तिपूजा वेद विरुद्ध है।" इस विषय पर शास्त्रार्थ हुआ। आर्यसमाज के विद्वान् ने अपने पक्ष के समर्थन में यजुर्वेद के प्रमाण दिए। विपक्षी पण्डित ने मूल यजुर्वेद संहिता पतली सी पुस्तक आर्य विद्वान् के हाथ में देखकर पूछा क्या आपके पास यजुर्वेद है इधर पण्डित जी ने हाथ में संहिता पकड़ के दिखाते हुए कहा कि यह यजुर्वेद है। पौराणिक पण्डित ने देहात की जनता की अनभिज्ञता का लाभ उठाने के लिए लोगों को सम्बोधित करके कहा कि यजुर्वेद इतनी छोटी सी पुस्तक। बस इतना कहना था कि अधिकांश जनता इस भुलाव में बहक गयी कि वेद तो बहुत लम्बा चौड़ा ग्रन्थ होना चाहिए। क्योंकि वद देखे ही किसी ने नहीं थे। यद्यपि आर्यसमाज की सक्रियता और वेद पारायण यज्ञों के प्रचार से भारत के बहुत बड़े भाग में वद संहिताएं अब सुलभ हैं तथापि अब भी हजारों शास्त्री ऐसे मिल जायेंगे जिन्होंने वेद देखे नहीं हैं। यदि शास्त्रियों को भी यह कहा जाय कि अक्षरों की इयत्ता की दृष्टि से अकेली वाल्मीकि रामायण जिसमें २४००० श्लोक हैं, चारों वेदों से बड़ी है तो उन्हें विश्वास नहीं होगा। जबकि तथ्य यही है—

चतुर्विंशति सहस्राणि
श्लोकानामुक्तवानृषि।
तत सर्गशतान् पञ्च
षटकाण्डानि तथोत्तरम्॥

वाल्मीकि रामायण
बालकाण्ड श्लोक २ सर्ग ४

क्योंकि चारों वेदों के मन्त्रों की संख्या २०३०७ है।

भारतीय विद्वानों में अब भी जो वैदिक साहित्य के अनुशीलन में लगे हुए हैं कोई भी इतनी लम्बी छलांग लगाने वाला हमें नहीं मिला जो वेद को सब सत्य विद्याओं का आकर मानता हो। अपितु आर्यसमाजियों की खिल्ली उड़ाने को उद्यत रहते हैं। यथा सायण के वेद भाष्यों के सम्पादक हिन्दू विश्व विद्यालय वाराणसी के संस्कृत विभाग के पूर्व प्राध्यापक श्री बलदेव उपाध्याय साहित्याचार्य, एम० ए० अपनी सम्पादकीय भूमिका में लिखते हैं— 'केचन समाजविशेषानुरागमाद धाना संस्कृत भाग को विस्तारभय से छोड़कर भाषा में उसका सार लिखता हूं। "समाज विशेष से लगाव रखने वाले कुछ लोग अर्थात् आर्यसमाजी बड़े परिश्रम से वद का अध्ययन करते हैं। किन्तु मन्त्रों का उच्चारण करते हुए सदा उनकी दुर्गति करते हैं इन लोगों की यह धारणा है कि पाश्चात्य भौतिक विज्ञान ने अब तक जो भी आविष्कार किये हैं और भविष्य में भी जो आगे चलकर होंगे उन सब का मूल वद में है।"

मैं उपाध्याय जी को कहना चाहता हूं। जिस बात पर आप आर्यसमाजियों का उपहास कर रहे हैं। उस बात को वद स्वयं घोषणा कर रहा है—

यस्मात पक्वादमृत सबभूव
यो गायत्र्या अधिपतिर्बभूव।
यस्मिन् वेदा निहिता विश्वरूपा-
स्तेनौदनेनातितराणि मृत्युम्॥

अथर्व० ४।३५।६

मन्त्र में वद को विश्व रूप स्पष्ट कहा है। अर्थात विश्व का समस्त ज्ञान विज्ञान बीज रूप से वद में हैं। इस समय का समस्त भौतिक विज्ञान मोटर, वायुयान आदि ऋषि दयानन्द के देहावसान के बाद के हैं। पहली मोटर ऋषि निर्वाण के दो वर्ष पश्चात बनी। वायुयान की पहली उड़ान सन १९०१ में हुई और ऐसे यान जो एक ही वायु में उड़े भी सड़क पर दौड़ भी और पानी में भी तैरे। ऐसे तो अभी तक बन भी नहीं पाये। किन्तु ऋषि दयानन्द ने वेद मन्त्रों के आधार पर ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में ऐसे यानों का वर्णन किया है। यदि ये विद्याएं वेद में न होतीं तो वे कहां से लिखते? ऐसे यानों का वर्णन वद में स्पष्ट रूप से है।

अनश्वो जातो अनभीशु रुक्थ्यो३
रथस्त्रिचक्र परिवर्तते रजः।
महत्तद्वो देव्यस्य प्रवाचन
द्यामृभवः पृथिवीं यच्च पुष्यथ॥'

ऋ० ४।३६।१

ऐसा यान जिसमें घोड़ा न जुड़ जिसमें लगाम का प्रयोग न हो जिसमें तीन चक्र हों। यह यान पृथिवी और आकाश में निर्बाध रूप से गति कर सकता है। प्राचीन ऋषि कृत ग्रन्थ यन्त्रसर्वस्व और विमानशास्त्र अब तो प्राप्त भी हो गये हैं, जिनकी परिभाषाओं को पढ़ने से उनके गम्भीर ज्ञान का अनुमान होता है। ये ऋषि अपनी कृतियों में वद का नाम लेकर अपनी स्थापना की पुष्टि करते हैं। वशेषिक दर्शन के पाचवें अध्याय में महर्षि कणाद जलादि की कुछ वैज्ञानिक प्रक्रियाओं का वर्णन करके सूत्र लिखते हैं—वैदिक च

वै० द० अ० ५। आह्निक २ सू० १०

वेद के विषय में इस प्रकार के भ्रम पाश्चात्य विद्वानों ने कहीं अनभिज्ञता और कहीं जानबूझ कर भी उत्पन्न किये हैं। अपवाद स्वरूप कतिपय स्कालरों को छोड़कर इन पाश्चात्यों की वद के सम्बन्ध में अच्छी धारणा नहीं थी। ऋषि दयानन्द के पाण्डित्यपूर्ण वद के ज्ञान तथा दुर्दमनीय व्यक्तित्व से प्रभावित होकर श्री मैक्समूलर ने वद के प्रति कुछ आदर के भाव प्रकट किये हैं अन्यथा वास्तविक मानसिक स्थिति वही थी जो व अनेक बार प्रकट कर चुके थे।

श्री मैक्समूलर ने एक पत्र में अपने पुत्र को लिखा था —

Would you say that anyone sacred book is superior to all others in the world ? I say the New testament after that I should place the Koran, which in its moral teachings is hardly more than a later of the new testament then would the Old testament the southern Budhist Tripitika the Veda and the Avesta

तुम जानना चाहोगे कि इन पवित्र पुस्तकों में से सर्वोत्तम कौन-सी है, तो मेरा उत्तर है कि— संसार की सब धर्म पुस्तकों में नयी प्रतिज्ञा (ईसा की बाइबिल) उत्कृष्ट है। इसके पश्चात कुरान जो आचार की शिक्षा में नयी प्रतिज्ञा का रूपान्तर है देखा जा सकता है। इसके पश्चात् पुरातन प्रतिज्ञा, दाक्षिणात्य बौद्धत्रिपिटिक, वेद और अवेस्ता आदि हैं।

ये ही मैक्समूलर साहब १६ दिसम्बर सन् १८६८ में भारतीय सचिव ड्यूक आफ आर्गाइल को एक पत्र में लिखते हैं —

(शेष पृष्ठ २९ पर)

परम्परागत प्रति वर्ष दीवाली आती है। हम श्रद्धांजलि के रूप में निर्वाणोत्सव मनाते हैं। लोग मिलते हैं। मेला लगता है। नेतागण आते हैं। जोर शोर से भाषण होते हैं। कुछ देर बाद भीड़ बिखर जाती है। बस-हमारा कर्तव्य पूरा हो गया। क्या यही निर्वाणोत्सव की मूलचेतना-प्रेरणा, भावना और सन्देश है ? क्या यही उस महामानव के कृतित्व एवं व्यक्तित्व के मूल्यांकन का मापदण्ड है ? क्या यही उस पुण्यात्मा के तप त्याग, तपस्या एवं बलिदान का प्रतिदान है ? क्या केवल उत्सव-सभा प्रदर्शन तथा मेले एकत्र करने के लिए ही वह आजीवन विषपायी बना था ? ये बात हृदय में उठती उभरती, सालती, कचोटती व बेचैन करती हैं। हम ऋषि की मूल चेतना-प्रेरणा और आदर्श सिद्धान्तों से दूर हो रहे हैं। निर्वाणोत्सव का अमर संदेश-ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो, मेरे पीछे खड़े हो जाओ, सब दरवाजे खोल दो, जैसे गहन-गंभीर प्रेरक उपदेश को जीवन जगत् एवं व्यवहार में उतारना है। यही उस कालजयी देवात्मा के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। आओ, इसी पुनीत पावन प्रकाश वेला में पवित्रात्मा का श्रद्धावनत होकर स्मरण करें।

ऋषि का व्यक्तित्व एवं कृतित्व अपने में महान् है। इनका तेजस्वी, वर्चस्वी, ओजस्वी एवं यशस्वी व्यक्तित्व चुम्बकीय है। उनकी निर्माण चेतना विश्ववन्दनीय है। उनकी मानवता को देन प्रातः स्मरणीय है। उनका जीवन-दर्शन अनुकरणीय है। उनके तप, त्याग, तपस्या एवं बलिदान का अमर इतिहास स्मरणीय है। उनकी करुणा, दया, श्रद्धा और आस्था स्पृहणीय है। उनकी "संसार का उपकार करना, इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।" इस कथन की स्थापना संसार के लिए अभिनन्दनीय है। उन्होंने जो मानव परिवार, समाज और राष्ट्र के निर्माण के लिए जो नियम व्यवस्था आदर्श तथा प्रेरणाएं दी हैं वे युग युग तक पूजनीय हैं। उनकी धार्मिकता, पवित्रता, सज्जनता दिव्यता, भव्यता उच्चता, गुरुता आदि महामानवीय गुण प्रशंसनीय हैं। ऐसा दिव्य गुणों वाला महापुरुष जिस राष्ट्र, समाज और मानव को मिला हो। वह निश्चय ही धन्य और महान् है। जिसकी तुलना में समग्र वसुधा के महापुरुष फीके, हल्के एवं सामान्य हो जाते हैं। जिसके समक्ष बलवान शत्रु भी नत होकर लौट जाते हों।

कालजयी देवता को प्रणाम

लेखक—डा० महेश विद्यालंकार

जिसके जीवन में आद्यन्त न्यूनता, दुर्बलता कमजोरी वासना व कामना न रही हो। ऐसा देवपुरुष इतिहास में न मिलेगा। जिसने अपने को मिटाकर, अपने सुख, आराम सुविधाओं को भुलाकर अपने यौवन को हँसते हँसते मानवता के कल्याण एवं मंगल के लिए भेंट चढ़ा दिया हो। ऐसा विलक्षण अद्भुत अनुपम क्रान्तिकारी योगी संसार में न मिलेगा। जिसने मृत्यु को मुस्कराकर गले लगाया हो, और जिसे देखकर नास्तिक भी आस्तिक बन गया हो। जो विषदेयी को भी दयादाता बन गया हो ऐसा मुक्तात्मा देव दयानन्द संसार का अनूठा श्रेष्ठतम रत्न है।

कल्पना करो, यदि ऐसे दैवीय गुणों वाला महापुरुष संसार की किसी अन्य धरती पर पैदा हुआ होता तो लोग उसको देवदूत, पैगम्बर तथा मसीहा की तरह पूजा करते। उसके सन्देश को स्तूपों शिलालेखों और इतिहास में अमर बना देते। उसके चित्रों को देवताओं की तरह पूजते। उसके चरण रज को पाकर सौभाग्य मनाते। उसके नाम की माला पहनते। किन्तु हम भारतीयों ने उसके उपकारों के बदले में उसे दिया ही क्या है ? जहर पिलाते रहे, पत्थर मारते गए, गालियां देते रहे, अन्ततः कालकूट पिलाकर ही हमें चैन आया ?

आज जो आर्यसमाजों, सभाओं में उसके नाम पर जो हो रहा है। वह चिन्तनीय एवं विचारणीय है। किसी ने उसके नाम पर संस्था खोल दी, किसी ने आश्रम बना दिया, किसी ने गुरुकुल चला दिया, किसी ने संस्थान खड़ा कर दिया, किसी ने स्कूल बना लिया, किसी ने बारात घर किसी ने औषधालय, किसी, ने दुकान, किसी ने प्रकाशन, किसी ने कुछ तो किसी ने कुछ, इसी से सब जगह फैल रही है एकाधिकार की का भावना, गुटबाजी, व्यक्तिगत स्वार्थ पदलिप्सा, झगड़, भाग दौड़, तोड़ फोड़। ऋषि के नाम, पर उनके यश कीर्ति, तप, त्याग और बलिदान से बनी संस्थाओं में जो वातावरण व निर्माण हो रहा है, उसे सभी जानते हैं। आर्यो ! हृदय की धड़कनों पर हाथ रखकर, सच्चाई से अपने से पूछो ? क्या ऋषि ने इसी उद्देश्य और सन्देश के लिए आर्यसमाज बनाया था ? क्या हम उस शुद्धात्मा के चित्र के नीचे बैठकर उसके सिद्धान्तों मन्तव्यों व आदर्शों की आहुति नहीं दे रहे हैं ? इससे बढ़कर दुर्भाग्य और क्या होगा ? दयानन्द के नाम के स्कूलों में अंग्रेजी टाई, पाश्चात्य वातावरण नाचना गाना और कव्वालियां हो रही हैं। जिन बातों का ऋषि ने निषेध किया था। हम उन्हीं बातों पर पूरी तरह चल रहे हैं। समाज-मन्दिरों,गुरुकुलों, संस्थाओं और सभाओं आदि के वातावरण में धार्मिकता, मिशनरी भावना, कर्त्तव्य बोध नैतिकता एवं सेवाभावना धीरे-धीरे लुप्त हो रही है, जो चिन्तनीय है।

यदि हम सच्चे ऋषि भक्त हैं। सच्चे अर्थों में आर्य हैं। अपने को ऋषि का ऋणी समझते हैं। यह मानते हैं कि उनके द्वारा प्रदत्त-जीवन संजीवनी से हमें जीवन प्रकाश मिला है। उनके द्वारा दिखाये मार्ग से हम अनेक प्रकार के अज्ञान, अन्धविश्वास, रूढियों, कुरीतियों से बच गये हैं। हमें सच्चे शिव का स्वरूप पता चल गया है। जीवन का मतलब समझ में आ गया है। जीने की कला हाथ लग गई है तो आओ प्रभु को साक्षी मानकर संकल्प करें। व्रत लें। ऋषि की सौगन्ध मानें। दृढ़ प्रतिज्ञा करें कि हमने सच्चे अर्थ और भाव में आर्य बनना है। जीवन को पवित्र, धार्मिक उच्च बनाना है। आर्यसमाज का कार्य कर्त्तव्य भावना और सेवाभाव से काम करना है। ऋषि के ऋण से उऋण होने के लिए तन मन धन से आर्यसमाज का प्रचार प्रसार करना है। मन्दिरों व संस्थाओं में व्यावसायिक भावना नहीं लानी है। तभी निर्वाणोत्सव मनाने की सार्थकता सिद्ध होगी। यही ऋषि की स्मृति में सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

●

भारतीय संविधान महर्षि दयानन्द की प्रेरणाओं से प्रभावित

डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन, भूतपूर्व राष्ट्रपति

जब देश पर संकट के बादल छाए हुए हो, तब हमें शत्रु की चुनौती को स्वीकार करके उस शिक्षा को याद करना चाहिए जो स्वामी दयानन्द ने हमें दी।

स्वामी दयानन्द एक महान् सुधारक और प्रखर क्रांतिकारी महापुरुष तो थे ही साथ ही उनके महान् हृदय में सामाजिक अन्यायों को उखाड़ फेंकने की प्रचण्ड अग्नि भी विद्यमान थी। उनकी शिक्षाओं का हम सबके लिए भारी महत्त्व है क्योंकि आज भी हमारे समाज में बहुत सी विभेदकारी बातें विद्यमान हैं। हम अपनी फूट के कारण ही अतीत में पराधीनता के पाश से जकड़े गये थे। हमारे पारस्परिक भेद और असहिष्णुता ही हमारे पतन का कारण बनी थी। हमें अतीत की भूलों से शिक्षा ग्रहण करनी ही होगी तभी हमारा भविष्य उज्ज्वल और गौरवशाली हो सकेगा। आज की स्थिति का सामना महर्षि दयानन्द के बताए हुए मार्ग पर चलकर ही किया जा सकता है।

जब आध्यात्मिक अव्यवस्था सामाजिक कुरीतियां तथा राजनैतिक दासता देश को जकड़े हुए थी तब महर्षि दयानन्द ने राजनैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक उद्धार का बीड़ा उठाया। सत्य, सामाजिक एकता और एक ईश्वर की आराधना का सन्देश उन्होंने दिया। उन्होंने शिक्षा व ईश्वर पूजा की स्वतन्त्रता सभी के लिए उपलब्ध करने पर बल दिया था।

भारत के संविधान में सामाजिक क्षेत्र के लिए अनेक व्यवस्थाएं महर्षि दयानन्द के उपदेशों से प्रेरणा लेकर ही की गयी हैं।

स्वामी दयानन्द ने स्वराज्य का जो सबसे पहले सन्देश हमें दिया था उसकी आज रक्षा करनी है। उनके उपदेश सूर्य के समान प्रभावशाली हैं।

उन्होंने हमें यह भी महान् सन्देश दिया था कि हम सत्य की कसौटी पर कसकर ही किसी बात को स्वीकार करें।

कान्स्टीट्यूशन क्लब नई दिल्ली में २४-२ १९६३ को आयोजित महर्षि दयानन्द बोधोत्सव समारोह में प्रधान अतिथि के रूप में तत्कालीन राष्ट्रपति डा. राधाकृष्णन के महर्षि के प्रति उद्गार।

(पृष्ठ २७ का शेष)

वेद सब सत्य विद्याओं . . .

The ancient religion of India is doomed and if christianity does not step in, whose fault will it be ?

भारत का प्राचीन धर्म नष्ट प्राय है यदि ईसाई धर्म उसका स्थान नही लेता तो यह किसका दोष होगा ?

इन्हीं मक्समूलर साहब ने २९ जनवरी, सन् १८८ में वाई० राम जी मालाबारी को लिखा—

I wanted to tell what the true historical value of his ancient religion is, looked upon, not from on exclusively European or Christion but from historical point of view But discover in it, steam engines electricity and European philosophy and morality', you deprive it of its true character

मैं केवल पाश्चात्यो को ईसाई दृष्टि से नही, परन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से बताना चाहता था कि पुरातन वेद धर्म का सत्य ऐतिहासिक मूल्य क्या है ? परन्तु जब तुम इस वेद धर्म मे वाष्पयन्त्र, विद्युत् और पाश्चात्य दर्शन और आचार का आविष्कार करते हो तो तुम इसका सत्य स्वरूप नष्ट करते हो।

इन्हीं मैक्समूलर महोदय ने Chips from German workshop second edition 1966

Page 27 पर वेद के सम्बन्ध मे लिखा—Large number of Vedic hymns are childish in the extreme-tedious low common place

अर्थात वैदिक सूक्तो की एक बडी संख्या परम बालिश, जटिल, अधम और साधारण है।

हमारे देश के इंग्लिश ज्ञाता मैक्समूलर को वद का महान् विद्वान् मानते हैं। किन्तु वह कट्टर ईसाई था और वैदिक मान्यताओ का विरोधी था। वद पर लिखने का उसका उद्देश्य विचारकों की दृष्टि मे वद को गिराने का था। यह पत्नी को लिखे पत्र से सर्वथा स्पष्ट है—

लेख के कलेवर को देखते हुए हम उसे उद्धृत नही करते। मैक्समूलर ने वेद को प्रशंसा भी की है। किन्तु वह ऋषि दयानन्द से प्रभावित होने के पश्चात् ही लिखी है।

ऋषि दयानन्द ने उस भयंकर समय में वद की रक्षा की जबकि वेद मिलते न थे। उनका पठन-पाठन चतुर्वेदी त्रिवदी और द्विवदियों मे भी नही रहा था। ऐसे सकट काल मे उसे ज्ञान विज्ञान के उच्चतम शिखर पर आसीन करना ऋषि के अतिरिक्त और किसी का काम नहीं हो सकता था। अब समस्त ससार के गम्भीर विद्वानो में वेद का आदर है। वद के विभिन्न विषयो पर समस्त सभ्य संसार के विश्वविद्यालयों में सुधी छात्र डाक्टरेट कर रहे हैं। अन्त मे ऋषि की वेद मे भौतिक विज्ञान की स्थापना के विषय मे योगिराज अरविन्द के विचारो का उल्लेख करके लेख समाप्त करते हैं।

वेदो में सृष्टि विद्यातत्व का भी कुछ कम आविर्भाव नहीं हुआ है। ऋषि सदा लोकों की उन दृढ नियमो की जो उन लोकों को नियन्त्रित करते हैं और सृष्टि में परमात्मा की क्रियाओं की चर्चा करते हैं। परन्तु दयानन्द इससे भी आगे जाता है, वह कहता है कि आधुनिक पदार्थ विज्ञान की सत्यताए भी वैदिक मन्त्रो से प्रकटित होती हैं। यही एक बात मौलिक सिद्धान्त की है जिसके विषय मे हमें कुछ सदेह करने के कारण मिल सकते हैं। मैं इस विषय मे किसी निश्चित सम्मति देने की अपनी अयोग्यता को स्वीकार करता हू परन्तु इतना कहना आवश्यक है कि इस समय प्राचीन जगत् के सम्बन्ध मे जो हमारे ज्ञान की प्रवृत्ति है उससे इस विचार की बढती हुई पुष्टि हो रही है। प्राचीन सभ्यताओं के पास विज्ञान के रहस्य अवश्य थे जिनमे से कुछ का तो आधुनिक ज्ञान ने फिर से उद्घाटन किया है उनका विस्तार किया है और उन्हें अधिक सम्पन्न और शुद्ध बना दिया है, परन्तु कुछ रहस्य ऐसे हैं जिनका अब भी प्रकाशन नहीं हुआ है। इसलिए दयानन्द के इस विचार मे कि वेदो में विज्ञान के तत्त्व और धर्म की सत्यताए हैं, कोई बात उच्छृङ्खलता की नही है। मैं अपना विश्वास भी इसमें सम्मिलित करूगा कि वेदो में एक दूसरे विज्ञान की सत्यताए हैं जो आधुनिक जगत् के पास नहीं हैं, और यदि ऐसा है तो दयानन्द ने वैदिक ज्ञान की गम्भीरता और विस्तार का अनुमान कम किया है अधिक नहीं। 'Dayanand and the Veda' नामक अपने निबन्ध में श्री अरविन्द लिखते है —

There is nothing fantastic in Dayanand's idea that Veda contains truths of science as wall as truth of religion I will even add my own conviction that Veda contains the other truths of science which modern world not at all possess and in that case Dayanand has rather understated than overstated the depth and range of Vedic wisdom

अर्थात दयानन्द की इस धारणा मे कि वद मे धम और विज्ञान दोनो की सचाइया पायी जाती हैं, कोई उपहासास्पद या कल्पना मूलक बात नही है। मैं इसके साथ अपनी भी धारणा जोडना चाहता हू कि वदो मे विज्ञान की व सच्चाइया भी हैं जिन्हें आधुनिक विज्ञान अभी तक नही जान पाया है। इस स्थिति मे स्व भी दयानन्द ने वदिक ज्ञान की गम्भीरता के सम्बन्ध मे अतिशयोक्ति से नही न्यूनोक्ति से ही काम लिया है। इतने लेख से ही ऋषि की यह स्थापना कि "वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है" सुतरा सिद्ध है।

आर्यसमाज हिंसा का घोर विरोधी है।

आर्यसमाज एक राष्ट्रीय सस्था है। पिछले दिनो मलयाना जाकर श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने बिदर काण्ड के विषय में बोलते हुए अल्पसंख्यक आयोग को सवैधानिक दर्जा देने की माग की। इस पर श्री ओम प्रकाश शर्मा आर्य ने उन्हे पत्र लिखकर आग्रह किया कि वे किसी समुदाय विशेष की भावनाओ को भडकाकर देश की भावात्मक एकता को खंडित करने का प्रयास न करे। ★

प्रकाश पुञ्ज ! तुम्हें प्रणाम

लेखक—डा० रघुवीर वेदालकार

दीपक ! छोटे से दीपक ! मिट्टी के दीपक ! तुम क्यों जल रहे हो ? यह तपस्या क्यों कर रहे हो ? आंधी तूफान वर्षा के सामने भी तुम क्यों अडिग बन हुए हो ? ठिठुरती सर्दी में निश्चल भाव से तुम क्यों अपनी तपस्या में लीन हो ? झंझावात में भी तुम क्यों अपना सिर ऊंचा किए खड़े हो ?

तुम जगत को क्या देना चाहते हो ? प्रकाश। केवल प्रकाश। स्वल्प प्रकाश। यह तुम्हारे चारों ओर ही सिमट कर रह गया है। क्या भला हो रहा है इससे तुम्हारा या इस संसार का ? क्या कहा ? तुम इससे समस्त संसार को प्रकाशित करना चाहते हो। संसार के अन्धेरे को इससे दूर भगाना चाहते हो। यह यह कैसे सम्भव है ? तुम्हारी यह लघुकाया, तुम्हारी यह लघु बाती, तथा इससे फलता हुआ स्वल्प प्रकाश संसार में व्याप्त अंधेरे को दूर कैसे करेगा ?

पथिक ? तुम नहीं जानते। मेरा शरीर छोटा है। मेरी बाती भी छोटी है। मेरा प्रकाश भी स्वल्प है। प्रश्न न्यूनता या अधिकता का नहीं है। प्रश्न है—कर्तव्यनिष्ठा का। प्रश्न है—मार्ग पर अग्रसर होने का। प्रश्न है अपने लघु कलेवर से ही विश्व की सेवा करने का।

पथिक ? क्या तुम नहीं जानते कि मैं अपने लघु कलेवर से भी यह कार्य कर रहा हूं। विश्व को प्रकाश देना मेरा धर्म है। निरन्तर जलते रहना मेरा कर्म है। अन्धकार को दूर भगाना मेरा स्वभाव है। अपने पथ पर अडिग रहना मेरी निष्ठा है, लगन है। इसी निष्ठा के आधार पर इसी लगन के आधार पर मैं अन्धकार से लोहा लेने को तत्पर हूं।

पथिक ? मेरा विश्वास है अन्धकार चाहे कितना भी सघन हो, कितना भी व्यापक हो, कितना भी विशाल हो मेरे प्रकाश की एक किरण भी उसे दूर करेगी, अवश्य करेगी। मेरा प्रकाश अजर है, अमर है, स्थायी है अटूट है, अभेद्य है अछेद्य है, यह निश्चय ही आगे बढ़ता जायेगा। अन्धकार सिमटता चला जायेगा। क्षीण होता चला जायेगा।

मुझे परवाह नहीं है कि मैं अकेला हूं। मुझे भय नहीं है आंधी-वर्षा-सर्दी-गर्मी का। वे मुझे दबा नहीं सकते, झुका नहीं सकते, हरा नहीं सकते। मिटा नहीं सकते। मैं व्रती हूं। मैं दीक्षित हूं मैं दृढ़ हूं जो घोषणा करता है—न पराजिग्ये। मैं पराजित नहीं हो सकता।

मैं अपनी ज्योति से दूसरे दीपक को भी ज्योतिर्मय कर दूंगा। तब तुम देखोगे मेरे साथ, मेरे बाद एक नहीं हजारों दीपक जल रहे हैं। वे अडिग हैं अटल हैं अपनी जगह पर। उनका व्रत है—संसार के अन्धकार को नष्ट करना, समूल नष्ट करना जगत को उज्ज्वल प्रकाश देना। और यह अन्धकार नष्ट होकर रहेगा। नष्ट होकर रहेगा।

पथिक ? क्या अभी भी कोई शंका है तुम्हें ? क्या अभी भी कोई भय है तुम्हें ? कहो क्या कहना चाहते हो ?

दीपक ? जाज्वल्यमान दीपक ? संघर्षरत दीपक ? पथ प्रदर्शक दीपक ? तुम्हें प्रणाम। मुझे कुछ नहीं कहना। मुझे कुछ नहीं कहना।

दीपक दयानन्द ? तुम जलते रहे। अन्धकार से जूझते रहे। तूफानों से टक्कर लेते रहे। मानापमान की सर्दी गर्मी को झेलते रहे। ठिठुरती रातों में तपस्या करते रहे। किन्तु फिर भी जग को प्रकाश देते रहे। हे अटल व्रती ? कोई भी तुम्हारा यह सत्योपदेश का व्रत न तुड़वा सका। अनेक व्यक्तियों ने संगठनों ने राजाओं ने तुमको भय दिखलाया, तलवारें चमकायीं किन्तु ऐसा सत्योपदेष्टा कौन होगा जो संसार की गालियां खाकर अपमान सहकर यहां तक कि विष पीकर भी संसार का कल्याण करता गया। उसको अमृत बांटता गया।

निःस्पृह परिव्राट् ऊंचे से ऊंचा प्रलोभन भी तुम को सत्य के मार्ग से विमुख न कर पाया। हे दीपक, जोधपुर जाते समय वहां मृत्यु का भय दिये जाने पर तुमने कहा था-मेरी एक एक अंगुली को चाहे दीपक में बत्ती बनाकर जला दिया जाए फिर भी मैं सत्य ही कहूंगा। निर्भीक वक्ता, अनेक सम्भ्रान्त पुरुषों द्वारा अंग्रेजी राज्य की प्रशंसा किये जाने पर तुमने उद्घोष किया था कोई कितना ही कहे किन्तु पिता के समान पूर्ण सुखकारी भी विदेशी राज्य अच्छा नहीं होता। इसलिए मैं नित्य प्रति भगवान् से प्रार्थना करता हूं कि अंग्रेज भारत से चले जाएं।

दयानन्द, तुम जले। दीपक की भांति जले। तिल तिल जले। अनवरत, जले। तुम्हारा जलना व्यर्थ नहीं गया। तुमने अज्ञानान्धकार को अपने ज्ञानप्रकाश से चीर डाला। अज्ञान की जड़ता की शदियों में चली आ रही सघनता गहनता टूट गयी। अंधेरा दूर होने लगा। प्रकाश फैलने लगा जिज्ञासुओं को यात्रियों को मार्ग मिलने लगा। दीपक ? यह तुम्हारा ही प्रकाश था तुम्हारा प्रताप था तुम्हारा ही धैर्य था कि तुमने अभेद्य अन्धकार का भेदन किया।

तुमने भारत को भारतवासियों को अपने अतीत पर गौरव करना सिखाया। उपहास के पात्र बने वेदों की पुनः प्रतिष्ठा की। पराधीन भारत को सर्वप्रथम मैं स्वराज्य तथा स्वाधीनता जैसे शब्द दिये। तुमने संसार को प्रेम का पाठ पढ़ाया। हे क्षमामूर्ति, तुमने कहा- मैं संसार को कैद कराने नहीं अपितु बन्धनमुक्त कराने आया हूं। इसलिए तुमने विषदाता को भी क्षमा कर दिया।

अनोखे दीपक ? तुमने अकेले जलना शुरू किया था। अकेले ही अन्धकार से लोहा लेने का व्रत लिया था किन्तु कालान्तर में एक नहीं हजारों दीपक तुम्हारी ज्योति से जगमगा उठे। वे भी अन्धकार को नष्ट करने में तुम्हारे अनुगामी बने तथा संसार का अज्ञानान्धकार सिमटने लगा भागने लगा। प्रकाश फैलने लगा।

मिट्टी का दीपक पार्थिव दीपक। ऋषिवर तुम्हारा शरीर भी पार्थिव था। दीपक तैल तथा बाती के सहारे जलता है अन्धकार हरता है तथा प्रकाश देता है। तुमने भी ज्ञान प्रकाश दिया, सत्य एवं तपस्या के सहारे तुम बढ़े अन्धकार से लड़े। यही तुम्हारा तेल था। दीपक में तेल डालता है एक सीमित तथा सान्त व्यक्ति। तुम्हारा सम्बन्ध तो असीम से था अनन्त से था। वही तुम्हारे अन्दर शक्ति ओज सत्य तपस्या रूपी तेल डाल रहा था। अज्ञानान्धकार दूर भाग रहा था।

किन्तु यह क्या हुआ ? किसी ने क्या किया ? दीपक में तेल की जगह विष का घोल भर दिया। ज्योति मन्द पड़ गयी। प्रकाश धूमिल हो गया। इतना होने पर भी यह जाज्वल्यमान दीपक किसी के भी अकल्याण की कामना न करता हुआ इसे भी प्रभु की इच्छा समझकर 'ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो' कहकर शान्त हो गया। सर्वथा शान्त हो गया। अनन्त में खो गया।

दीपक ! तुम चले गये किन्तु तुम्हारा प्रकाश अभी भी संसार में फैल रहा है। एक नहीं हजारों दीपक अन्धकार से लड़ रहे हैं। तुम्हारा दिया गया प्रकाश शाश्वत है।

हे प्रकाश पुञ्ज ! तुम्हें प्रणाम

महापुरुषों में अग्रणी

"जिस क्षण देह में दुर्बलता प्रतीत हो उसी क्षण एक महान् विशालकाय गुजराती का स्मरण करो। जिस क्षण तुम्हारे मन में शिथिलता या कायरता का प्रवेश हो, उसी क्षण जीवन और उत्साह से ओतप्रोत उस तेजस्वी देशभक्त का स्मरण करो। जिस क्षण तुम्हारे हृदय में मोह और विलास का साम्राज्य प्रवर्तित हो, उसी क्षण धन को ठोकर मारने वाले उस नैष्ठिक ब्रह्मचारी की ओर दृष्टि करो। अपमान से आहत होकर जिस क्षण तुम नजर ऊंची न उठा सको, उसी क्षण हिमालय के समान अडिग और उन्नत व्यक्ति के ओजस्वी मुख को अपनी कल्पना में उपस्थित करो। मृत्यु का वरण करते हुए डर लगे, तो उस निर्भयता की मूर्ति का ध्यान करो। द्वेष-भाव से खिन्न होकर जब तुम्हें अपने विरोधी को क्षमा करने में हिचकिचाहट हो, तो उसी क्षण विष पिलाने वाले को आशीर्वाद देते हुए एक रागद्वेष-मुक्त सन्यासी को याद करो।

यह गुजराती व्यक्ति स्वामी दयानन्द हैं। यह गौरवशाली पुरुष भारतीय महापुरुषों में अग्रस्थान पर विराजमान हैं।"

—रमणलाल वसन्तलाल
देसाई
(गुजराती के राष्ट्रकवि)

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R.N N o. 32387/77 Post in N.D.P.S O. on 10,11,11,88 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३९

दान उन संस्थाओं को दें, जिनसे आप हिसाब ले सकें

आर्यसमाज माडल टाउन दिल्ली के समारोह में ३० अक्तूबर को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव जी ने कहा कि आज चारो ओर नई नई संस्थाएं खोली जा रही हैं, तथा नये नये ट्रस्टो का निर्माण किया जा रहा है। यह संस्थाएं व्यक्तिगत संस्थाए हैं। इनका हिसाब किताब देखने वाला भी कोई नही है। दिल्ली में कई ट्रस्टो की सम्पत्ति नष्ट हो गयी है। ये संस्थाए और ट्रस्ट साहित्य प्रकाशन के नाम पर "सूखे के नाम पर बाढ के नाम पर अथवा भूकम्प के नाम पर और कभी कभी नई आर्यसमाजें शुरू करने के नाम पर दान मागते रहते हैं। ये किसी भी धनराशि का हिसाब भी जनता को नहीं देते। आर्यसमाज मॉडल टाउन के भाइयो ने गत वर्ष सूखा पीडितों के लिए १३ हजार रुपये का गेहूं दिया था। उसका हिसाब आपके सामने है। सार्वदेशिक सभा की ओर से धर्मरक्षा महाभियान, साहित्य प्रकाशन तथा सामाजिक कुरीतियो के निवारण तथा भूकम्प बाढ पीडितो की सहायतार्थ कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमो के लिए आर्य जनता से जो भी आर्थिक सहयोग मिलता है उसका हिसब रखा जाता है तथा प्रतिवर्ष चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट से लेखा निरीक्षण कराया जाता है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का हिसाब मागने का देखने का आप सभी को अधिकार है। श्री सूर्यदेव ने अन्त मे पुन अनुरोध किया कि आप अपना सात्त्विक दान केवल उन्हीं संस्थाओ के माध्यम से दें जिनके ऊपर आपका नियन्त्रण हो जिन पर आपको विश्वास हो कि इनके माध्यम से दिया दान सही उद्देश्यो पर व्यय किया जाएगा और जिनसे आप हिसाब मांग सके। —सूर्यदेव

(पृष्ठ २५ का शेष)

ऋषि दयानन्द की वेद ..

ऋषि दयानन्द और पाश्चात्य विद्वानो की भाष्य प्रणाली मे मौलिक भेद उत्पन्न होने का कारण यह था कि पाश्चात्य लोग जहा डार्विन के विकासवाद के अनुयायी होने के कारण वेदो को असभ्य मानव की अटपटी वाणी से अधिक महत्त्व देने के लिए तैयार नही थे वहां ऋषि उन्हे प्रभु प्रणीत होने के कारण ज्ञान विज्ञान का भण्डार मानते थे। ऋषि ने पाश्चात्यो द्वारा वेदो पर लगाई गई अनेक भ्रान्तिपूर्ण उपपत्तियों का खण्डन किया, यथा अश्लीलता, जादू टोना, अस्पष्टता आदि का निराकरण। मन्त्रो के गूढ भावो को समझने में असमर्थ होने के कारण ग्रिफिथ आदि विद्वानों ने मन्त्रो में अश्लीलता और अस्पष्टता का दर्शन किया है, उन्होने कहीं कही ऋचाओ के लेटिन भाषा में अर्थ इसीलिए किये हैं कि वे उन्हें अत्यन्त असभ्यतापूर्ण जान पडे। परन्तु वास्तव में वहां ऐसा कुछ नहीं था। वेदार्थ को वास्तविक परिपाटी को न समझने वाले के लिए ही ये कठिनाइयां आती हैं। उन्हें ही वेदों में पशु हिंसा के दर्शन होते हैं और वे ही अथर्ववेद के मन्त्रो में जादू टोने और अभिचारों की क्रियाएं देखते हैं। वास्तव में वेद इन दोषो से सर्वथा मुक्त तथा सत्य गुण युक्त हैं यह ऋषि ने ही प्रतिपादित किया है।

अन्त मे ऋषि ने वेद संज्ञा विचार प्रकरण के अन्तर्गत यह भी सिद्ध कर दिया कि संहिता भाग ही वास्तव में वेद हैं सनातनी अब भी ब्राह्मण और उपनिषद् को वेद ही मानते हैं चाहे व इसे सिद्ध कर सके या नही। ऋषि ने ईश्वरकृत संहिता भाग और उनके व्याख्यान स्वरूप ब्राह्मण भाग का भेद स्पष्टतया सिद्ध कर दिया और अज्ञानियों में जो यह धारणा फैली हुई थी कि वेदो को शंखासुर पाताल में ले गया, उस अज्ञान रूपी शंखासुर का हनन कर ऋषि ने वेदो का उद्धार किया।

सेवा में—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली न०१७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ : अंक २ | रविवार २० नवम्बर १९८८ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८ | कार्तिक २०४५ | दयानन्दाब्द—१६४

मूल्य : एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० डालर, ३० पौंड

आर्यसमाज शिक्षण संस्थाओं को जातीय रूप प्रदान करने का घोर विरोध करेगा

—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय को मुस्लिम स्वरूप प्रदान करने के लिए वहां छात्र एवं अध्यापक गण जिस प्रकार का आन्दोलन कर रहे हैं, उसके बारे में सार्वदेशिक सभा ने सरकार को चेतावनी दी है कि वह इस साम्प्रदायिक मांग के आगे न झुके, अन्यथा इसकी ऐसी प्रतिक्रिया होगी, जिसे सम्भालना सरकार की शक्ति में नहीं होगा।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने एक वक्तव्य में कहा कि सरकार अलीगढ़ विश्व विद्यालय को मुस्लिम रूप प्रदान करके पहले ही भारी भूल कर चुकी है। उसे प्रति वर्ष करोड़ो रुपये का सरकार अनुदान देती है जो धन मुख्यत हिन्दू करदाताओं से प्राप्त होता है। जामिया मिलिया को मुस्लिम रूप देने से सरकार स्वयं राजधानी मे साम्प्रदायिक संघर्ष व तनाव को निमन्त्रण देगी। सरकार जब धर्म निरपेक्षता की बात करती है, ऐसी स्थिति में शिक्षण संस्थाओं को जातीय स्वरूप प्रदान करना छात्रो के मन में साम्प्रदायिकता का बीज बोना है। देश में विभिन्न वर्गों के यथा—वैश्य, जाट, जैन, खत्री, अग्रवाल, धर्म आदि सैकड़ों नामों से शिक्षण संस्थाएं चल रही हैं। यदि ये सब अपने स्वरूप की मांग करेंगे तो देश में शिक्षण संस्थाओं का राष्ट्रीय रूप क्या रहेगा?—विचारणीय है।

देश की अखण्डता के लिए आर्यसमाज सजग

—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने मालद्वीप के सम्बन्ध में की गई शानदार कार्यवाही के लिए, भारत सरकार को बधाई देते हुए कहा कि भारतवर्ष आज विश्व की शक्ति के रूप में उभर कर सामने आया है। देश की अखण्डता की रक्षा के लिए, आर्यसमाज सदैव सजग रहा है, और भविष्य में भी महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वप्नों को साकार करने के लिए राष्ट्रीय एकता के लिए कार्य करता रहेगा। उल्लेखनीय है कि स्वामी जी आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा आयोजित १०५वें ऋषि निर्वाणोत्सव के अवसर पर बोल रहे थे।

केन्द्रीय रक्षा मन्त्री श्री कृष्ण चन्द्र पंत ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे युगपुरुष थे, जिन्होंने न केवल स्वतन्त्रता-आन्दोलन, नारी उत्थान, शिक्षा के क्षेत्र, सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिए अद्वितीय कार्य किया, वरन् समाज एवं राष्ट्र में आत्मविश्वास की अटूट भावना उत्पन्न की।

इस अवसर पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार का अभिनन्दन किया गया। पं० जी पिछले पचास वर्षों से वैदिक अनुसन्धान-कार्य में लगे हुए हैं। आपने चारों वेदों तथा उपनिषदों का भाष्य भी किया है।

समारोह के अध्यक्ष डॉ० शेर सिंह, कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में महर्षि दयानन्द को विश्व कल्याणी बताते हुए उनके मार्ग का अनुसरण करने का आह्वान किया।

"आर्य सन्देश" के
—स्वयं ग्राहक बनें।
—दूसरों को बनायें॥

"आर्यसमाज" के
—स्वयं सदस्य बनें।
—दूसरों को बनायें॥

"हिन्दी-संस्कृत"
—स्वयं पढ़ें।
—दूसरों को पढ़ायें॥

सम्पादक—सुखचन्द गुप्त | प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

हे धरा के अमर सुत !

लेखक— राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

३० अक्तूबर १८८३। दीपावली की शाम ५ बजे थे। राजस्थान के अजमेर नामक स्थान पर एक ऐसे जाज्वल्यमान नक्षत्र का अवसान हुआ था जिसने स्वयं का जीवन दीप बुझा कर हजारों जीवन दीपों को प्रज्वलित किया था। वह नक्षत्र था, महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती। स्वामी दयानन्द का नाम अठारहवीं शताब्दी के समाज सुधारकों में अग्रगण्य है। जर्जर एवं सुषुप्त राष्ट्र में नव चेतना का मन्त्र फूक कर देशवासियों के मन व मस्तिष्क को झकझोरने वाले स्वामी दयानन्द ने धार्मिक, सामाजिक व राजनीतिक मोर्चे पर एक सुदृढ आन्दोलन-अभियान चलाया था। 'स्वराज्य' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख स्वामी जी ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ-प्रकाश' में किया। भारतीय स्वाधीनता संग्राम में सत्यार्थप्रकाश ने युद्धाग्नि को हवा देने का कार्य किया। लाला लाजपत राय, श्याम जी कृष्ण वर्मा, हरदयाल, वीर सावरकर, रामप्रसाद बिस्मिल, रोशनसिंह, गेंदालाल दीक्षित, सरदार भगतसिंह प्रभृति क्रान्तिकारियों ने प्रेरणा प्राप्त की। महात्मा हंसराज, स्वामी श्रद्धानंद ने सत्यार्थप्रकाश से ही अनुप्रेरित होकर डी० ए० वी० कालेजों व गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की स्थापना की। स्वामी दयानन्द ने हिन्दुओं के धार्मिक ग्रन्थ चारों वेदों को अपौरुषेय प्रतिपादित करके उन्हें समस्त ज्ञान, विज्ञान विद्या का अनुपम भंडार बताया। वेदों के आधार पर ही वे समस्त सामाजिक, धार्मिक, नैतिक राजनीतिक व्यवस्थाओं का निर्माण करने के पक्ष में थे। उन्होंने आजीवन वेदों का प्रचार किया। वेदों का प्रबल प्रमाण देकर स्वामी जी ने मूर्ति पूजा, जातिवाद, अवतारवाद, छुआछूत, मृतक श्राद्ध, भूत-प्रेत आदि को हिन्दू धर्म की बुराई बताकर उसे वेदों के विरुद्ध बताया।

उन्होंने वेदों के आधार पर अनेक स्थानों पर शास्त्रार्थ किये। स्वामी दयानन्द के प्रबल पांडित्य, अकाट्य तर्क शक्ति, भव्य व्यक्तित्व देशधर्म के प्रति समर्पित जीवन के समक्ष बड़े बड़े पंडितों, मुल्लाओं व पादरियों को झुकना पड़ा।

स्त्रियों की दशा में सुधार, बाल विवाह, बहु विवाह का विरोध, दहेज प्रथा का विरोध, जाति पांति का विरोध आदि अनेकानेक कार्यक्रम चलाकर स्वामी जी ने समाज को सुधारने का प्रयास किया। स्वामी जी के पूर्व तक स्त्रियों को व शूद्रों को ज्ञान प्राप्त करने के अधिकार नहीं थे। यहां तक कि शंकराचार्य जैसे विद्वान् ने भी लिख दिया था— नारीशूद्रौ नाधीयताम्।' स्वामी जी ने इस व्यवस्था का डटकर विरोध किया और घोषणा की कि ज्ञान (वेद) प्राप्त करने का अधिकार मनुष्य मात्र को है, फिर चाहे वह शूद्र हो या स्त्री। स्वामी जी ने विधवा विवाह को भी वेदानुकूल बताया। उसके पहले समाज विधवाओं का मुंह तक देखना नहीं पसन्द करता था।

अपने सुधारवादी आन्दोलन को गति देने के लिए स्वामी दयानन्द ने बम्बई में ११ अप्रैल १८७५ ई० को आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज ने अपने संस्थापक के कार्य को आगे बढ़ाया। देश में आजादी के संघर्ष का वातावरण तैयार किया। आर्यसमाज के उपदेशकों व भजनोपदेशकों ने सारे देश में घूम घूम कर राष्ट्र की सोयी जनता को जगाने का कार्य किया। आर्यसमाज व स्वामी दयानन्द के कार्यों की विवेचना करते हुए सन् १९७५ ई० में कानपुर में आर्यसमाज शताब्दी समारोह में बोलते हुए तत्कालीन रक्षा मन्त्री श्री जगजीवन राम ने कहा था कि यह स्वामी महर्षि दयानन्द की देन है कि मैं हरिजन होता हुआ भी भारत का रक्षा मन्त्री हूं तथा श्रीमती इन्दिरा गांधी विधवा होते हुए भी भारत की प्रधान मन्त्री हैं। स्वामी दयानन्द के पूर्व समुद्र में यात्रा करना धर्म विरुद्ध माना जाता था लेकिन स्वामी जी ने समुद्री मार्ग से विदेशों की यात्रा करना देश की प्रगति के पक्ष में धर्मानुकूल बताया। ग्रन्थों की रचना करके तथा वेद का सरल भाषा में भाष्य करके स्वामी जी ने सामान्य जन का अति उपकार किया। किसी विद्वान् ने ठीक ही कहा है कि "यदि स्वामी दयानन्द का जन्म भारत में न होता तो आर्यों का विशालराष्ट्र चिरनिद्रा में सोता रहता।"

भारत ही नहीं अपितु विश्व के नभाकाश में स्वामी दयानन्द एक जाज्वल्यमान नक्षत्र बन कर चमके और आज से ठीक सौ वर्ष पूर्व वह ज्योति पुञ्ज दीपमाला के दिन मानवता का पथ प्रदर्शित करता हुआ, सोए हुए राष्ट्र को जागरण का मन्त्र देता हुआ, आर्यों में आर्यत्व की गरिमा भरता हुआ अनन्त आकाश में विलुप्त हो गया। आर्यसमाज आज भी स्वामी जी के कार्यों को आगे बढ़ाने व वेद प्रचार करने में संलग्न है आज दीपमाला के दिन उस युग पुरुष को शत-शत श्रद्धाञ्जलि।

●

दयानन्द की दीवाली

(देवनारायण भारद्वाज से)

स्वयं पिया विष, हमें सुधा का पान कराया,
धन्य धन्य ऋषि दयानन्द की दया निराली।
एक सूर्य छिप गया हजारों दीप जला कर,
हो सफल आर्य, यह दयानन्द की दीवाली ॥

देव दिवाकर दयानन्द ने
दूर किया जग का अंधियारा।
वेद ज्योति का दान किया
हमें बताया धर्म हमारा ॥
भारत ने ही नहीं विश्व ने,
लिया ऋषि का सबल सहारा।
निज धर्म ग्रन्थ संशोधित कर
सबने अपना पन्थ सुधारा ॥

उत्पीड़ित सूखे समाज के जन जीवन में,
ऋषि ने बिखराई वर्णाश्रम की हरियाली।
एक सूर्य छिप गया हजारों दीप जला कर,
हो सफल आर्य, यह दयानन्द की दीवाली ॥

श्रद्धानन्द नारायण स्वामी,
लेखराम ने पाई ज्वाला।
गुरुदत्त, दर्शनानन्द आदि,
बन गए ऋषि की जयमाला ॥
शुभ शिक्षा का उद्धार किया,
दे दिए पुन. गुरुकुल शाला।
मन्त्र-विषय के सत्य अर्थ कर,
वेदों से विज्ञान निकाला ॥

ऋषि ने आज हो रहे इन आविष्कारों को,
पहले ही बतला दी थी प्राचीन-प्रणाली।
एक सूर्य छिप गया हजारों दीप जलाकर,
हो सफल आर्य, यह दयानन्द की दीवाली ॥

दूर रही सब भव्य योजना,
प्रिय सत्यार्थप्रकाश हमारा।
पहुंच न जन-जन में पाया कि,
किया आर्यों ने बटवारा ॥
आर्य-आर्य ने कभी कहा था,
मिल अन्धकार को ललकारा।
अब उन्हीं आर्य संस्थाओं ने,
निज घर में विघटन स्वीकारा ॥

तज भेद संगठित हो, अब भी हो सावधान,
कर लो इतिहास याद, ऋषि का गौरवशाली।
एक सूर्य छिप गया, हजारों दीप जलाकर,
हो सफल आर्य, यह दयानन्द की दीवाली ॥

ओ३म्

आर्य सन्देश

देवनागरी और आर्यभाषा

दयानन्द के नेत्र तो वे दिन देखना चाहते हैं कि कश्मीर से कन्या-कुमारी तक और अटक से कटक तक नागरी अक्षरों का ही प्रयोग और प्रचार हो। मैंने आर्यावर्त्त भर में भाषा के ऐक्य सम्पादन करने के लिये ही अपने ग्रन्थ आर्यभाषा में लिखे और प्रकाशित किये हैं।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्यसन्देश

हमें अपार प्रसन्नता है कि "आर्य सन्देश" जिसका उदय ऋषि निर्वाण दिवस" दिनांक १३ नवम्बर १९७७ को हुआ था, अपने गौरवशाली ग्यारह वर्ष पूर्ण कर बारहवें वर्ष में प्रवेश कर चुका है।

आज का युग प्रचार का युग है। हां! प्रचार ठीक प्रकार का होना चाहिए, न कि झूठी बातों का, या यूं ही बढ़ा चढ़ाकर। आर्यसमाज ने सदैव शुद्ध प्रचार के महत्त्व को सर्वोपरि रखा है। यह पत्र भी भारत की राजधानी दिल्ली में वैदिक सिद्धान्तों के प्रकटीकरण, महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों के स्पष्टीकरण तथा आर्य-समाज के क्रियाकलापों का दिग्दर्शन कराता हुआ दिल्ली राज्य की आर्य-समाजों के संगठित दृष्टिकोण के लिए यथाशक्ति भरपूर प्रयास करेगा। दिल्ली विश्व की विख्यात नगरी होने के कारण वहां विश्व के समस्त देशों के राजनयिक निवास करते हैं— में हम आर्यत्व के संदेश को फैलाने में सफल होंगे तथा "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के मूल मन्त्र की ओर एक और कदम बढ़ा सकेंगे इस सबके लिए आवश्यक है कि दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के अधिकारी तथा आर्यजन इस पत्र को एक ऊंचे स्तर का पत्र बनाने में हमें पूरा सहयोग दें।

आर्य विद्वान् उच्चकोटि के लेख भेजें और कविगण कविताएं समाजों के अधिकारी अपनी समाजों के प्रभावशाली कार्यक्रमों का विवरण भेजें और नेतागण स्नेह पूर्ण पथप्रदर्शन करें। साथ ही दिल्ली की समस्त आर्यसमाज, आर्य शिक्षण संस्थाएं तथा आर्य परिवार इस पत्र के ग्राहक बनें और व्यापारीगण पत्र के लिए अपने संस्थानों के विज्ञापन दें। इस प्रकार के सहयोग से जहां आपका यह पत्र आर्थिक कठिनाइयों से मुक्त होगा वहां यह पत्र उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होता जायेगा।

★

१७ नवम्बर

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

भारत के राष्ट्रीय-आन्दोलन में "लाल-बाल-पाल" की त्रिमूर्ती जगत् प्रसिद्ध है। इस त्रिमूर्ती के "लाल" पंजाब केसरी लाला लाजपतराय का बलिदान दिवस १७ नवम्बर को देश भर में उत्साह से मनाया जाता है। देश के पश्चिमोत्तर क्षेत्रों के सामाजिक, राजनैतिक तथा शिक्षा जगत् में लाला जी का स्थान सर्वोपरि था। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिए अपने उग्र विचारों के लिए विख्यात लाला जी को ब्रिटिश सरकार ने देश से दूर माण्डले में नजरबन्द कर दिया था। लाला जी के "साइमन कमीशन वापस जाओ" के जलूस का नेतृत्व करते हुए ब्रिटिश सरकार की लाठियों का सामना किया था और इन लाठियों के फलस्वरूप ही लाला जी शहीद हुए थे। उनके बलिदान से देश तथा समाज में नव जागरण की ज्योति प्रज्वलित हुई।

आर्यसमाज एवं राष्ट्रवादी तत्वों के स्वर्गीय लाला जी के समाज सुधार तथा राष्ट्र-निर्माण के कार्यों को समुन्नत कर उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि प्रस्तुत करनी चाहिये।

●

२३ नवम्बर

पं प्रकाशवीर शास्त्री

आर्यनेता पं० प्रकाशवीर शास्त्री के २३ नवम्बर १९७७ को असामयिक निधन पर तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री मोरारजी देसाई द्वारा व्यक्त श्रद्धांजलि—

"पं० प्रकाशवीर शास्त्री हमेशा देशभक्ति से कार्य करते रहे। वे भारतीय-संस्कृति वैदिक-धर्म देश की एकता और हिन्दी भाषा में अनन्य आस्था रखते थे। परन्तु वे कट्टर नहीं थे, शालीनता थी उनके व्यवहार एवं भाषा में। वे कभी बोलने के लिए नहीं बोलते थे, कोई ठोस विचार व्यक्त करने के लिए ही बोलते थे। हिन्दी को इतने प्रभावी ढंग से बोलने वाले बहुत कम ही मिलेंगे।

शास्त्री जी महान देशभक्त एवं वैदिक-धर्म के महान् प्रचारक वैदिक साहित्य के प्रकाण्ड पंडित भारतीय संस्कृति के अपूर्व व्याख्याता जाने माने साहित्यकार, दूरद्रष्टा एवं समाज-सुधारक थे। उनके विरोध में प्रखरता तो होती थी लेकिन कटुता नहीं। उनके धारा-प्रवाह भाषण को सुनकर लोग मन्त्रमुग्ध हो जाते थे।

शास्त्री जी आर्यसमाज के एक सबल स्तम्भ थे। हमें उनके पद चिह्नों पर चलकर, उनके प्रति श्रद्धांजलि प्रस्तुत करनी चाहिये।

—सम्पादक

प्रार्थना गीत माला

दुःख दूर करें

मन्त्र—ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आसुव स्वाहा ॥

दुर्व्यसन दोष दुख दुर्गुण सब, हे नाथ हमारे दूर कर।
सदगुण शुभ कर्म सम्पदा से, हे नाथ हमें भरपूर कर॥

तुम सकल जगत के उत्पादक
ऐश्वर्य सर्व के तुम साधक
करते उत्पत्ति पिता सविता
हो सकल सम्पदा सम्पादक।

हम भी उत्पत्ति मनोरम कर, सब नष्ट दानवी क्रूर करें।
सद्गुण शुभ कर्म सम्पदा से, हे नाथ हमें भरपूर करें॥

दिव्य देव है रूप तुम्हारा
प्रिय पवित्र है रूप तुम्हारा
तुम्हीं हमारे सुख दाता हो
शुभ प्रेरक है रूप तुम्हारा।

चेतना चित्त में लाकर हम, चित चंचलता को चूर कर।
सद्गुण शुभ कर्म सम्पदा, से हे नाथ हमें भरपूर कर॥

जब होंगे हम प्रभु अधिकारी
बन जाय जगत् तब फुलवारी
मम देह गेह स्नेह सभी है
हो हर क्षण प्रभु मंगलकारी।

अभिमान-उग्रता मर्दन कर, मन नर्तन मृदुल मयूर कर।
सद्गुण शुभ कर्म सम्पदा से हे नाथ हमें भरपूर कर॥

देवनारायण भारद्वाज

राम-राज्य का लक्ष्य

स्व० श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक

चीन के महात्मा कन्फ्यूशस की गणना संसार के महापुरुषों में की जाती है। व दार्शनिक शासक के नाम से प्रख्यात हैं। उनकी शिक्षाओं ने चीन की सामाजिक एवं राजनीतिक कायापलट कर दी थी। हमारा इतिहास विविध राजनैतिक आदर्शों से जाज्वल्यमान है जिससे हमें अमित प्रेरणा मिलती है। परन्तु हमारे देश में आजकल वैसी ही दुरावस्था व्याप्त है जैसी चीन में, महात्मा कन्फ्यूशस के समय व्याप्त थी। राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने के पश्चात् अपराधों में मुकदमों में और भ्रष्टाचार में बहुत वृद्धि हुई। लूट पाट अपहरण बलात्कार, हत्या आत्महत्या आदि-आदि दिन प्रतिदिन की घटनाएं बनती जा रही हैं। चारित्रिक पतन इस सीमा तक पहुंचा हुआ है कि उसे देख और सुनकर ऐसा लगता है मानो लोगों के हृदयों से राज्य और ईश्वर का भय निकल गया है। महात्मा कन्फ्यूशस ने अपने देश में व्याप्त इस प्रकार की दुरावस्था को बदलने के लिए जिन उपायों का अवलम्बन किया उनका अध्ययन और अनुसरण करना श्रेयस्कर होगा।

उन्होंने एक बार मुख्य प्रशासक और एक न्यायमन्त्री के रूप में कार्य किया। चुगटू के लोगों की प्रार्थना पर व वहां के राजा द्वारा नगर के मुख्य प्रशासक नियुक्त हुए। एक वर्ष के भीतर भीतर समस्त प्रांत में चुगटू का नगर प्रसिद्ध हो गया। चुगटू की प्रसिद्धि और समृद्धि का समाचार पाकर लू के राजकुमार ने महात्मा कन्फ्यूशस को अपने यहां बुलाया और चुगटू की समृद्धि का कारण पूछा। कन्फ्यूशस ने कारण बताते हुए कहा "मैंने सत्पुरुषों को पुरस्कृत और दुष्टों को दंडित किया। जब लोगों ने देखा कि भला बनना अच्छा और बुरा बनना बुरा है। तो वे भले बन गये सज्जन पुरुष राज्य के प्रति निष्ठावान् होते हैं। मैंने सदाचारी और ज्ञानवान लोगों को चुनकर लोगों को शिक्षित करने और उन पर दृष्टि रखने के काम पर लगाया। फल यह हुआ कि लोगों को सत्पुरुषों का सम्पर्क प्राप्त हो गया। जब लोग अच्छे वातावरण में रहते और उन्हें अच्छी संगति प्राप्त रहती है तो व भले बन जाते हैं।

कन्फ्यूशस के इस कार्य से प्रसन्न होकर लू के राजकुमार ने उन्हें समस्त प्रान्त का न्याय मन्त्री बना दिया। कन्फ्यूशस ने कई महीने लगाकर कैदियों की दशा का विवरण तैयार कराया। जब उन्हें पूर्ण जानकारी हो गयी तो उन्होंने जजों वकीलों और जेलरों को एकत्र करके कहा—"मैंने जेलों के पूर्ण विवरण प्राप्त कर लिये हैं। निर्धनता और अज्ञान के वशीभूत होकर लोग अपराध करते और कानून को तोड़ते हैं। यदि हम शिक्षा के द्वारा लोगों को ज्ञानवान् बना दें और उनके लिए ईमानदारी से रोटी कमाने की सुविधा उत्पन्न कर द तो प्रान्त में अपराध बन्द हो जाय।

एक जज ने पूछा—"इसका उपाय क्या है?" कन्फ्यूशस ने उत्तर दिया—"सब से पहले आप लोग अच्छे बनें। लोगों को ऐसे शासकों की आवश्यकता होती है, जिनका व अनुकरण कर सकें। यदि शासक भ्रष्ट होंगे तो प्रजा भी भ्रष्ट होगी।

कन्फ्यूशस के २ वर्ष के शासन में लू प्रान्त की जेलें खाली हो गईं। जज वकील और जेलर हाथ पर हाथ धरकर बैठ गये।

कन्फ्यूशस का शासन इतना अच्छा था कि दुष्टों को लज्जा के मारे मुँह छिपाने का स्थान न मिलता था। प्रजा राज-भक्त बन गई थी। स्त्रियों ने अपने शील और सदाचार के लिए प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी।

आज हमारे देश को कन्फ्यूशस जैसे दार्शनिक शासकों की आवश्यकता है, जो कर्त्तव्यनिष्ठ, सच्चरित्र और सुयोग्य हों और शासन की शुद्धि करके उसे ऐसा बना दें जिसमें सत्पुरुष पुरस्कृत हो और दुष्ट पुरुष दण्ड से न बच पायें, जिसमें प्रजा की जान माल की सुरक्षा हो लोग ईमानदारी से अपनी आजीविका चलायें एवं भलाई करना सुगम और बुराई करना कठिन हो जायें।

राजनियमों की उपयोगिता होती है परन्तु एकमात्र राजनियमों से ही शासन सूत्र अच्छी गति में नहीं चलता। उनके पीछे शासकों को उच्च चरित्र होना चाहिए जिससे वे नियम शासकों की स्वार्थ-सिद्धि के लिए प्रयुक्त न होकर प्रजा के हित के लिए प्रयुक्त हों। प्रजा का अपने आभ्यन्तर पर जितना कम अधिकार होता है उस पर उतना ही अधिक बाह्य अधिकार या शासन आवश्यक होता है प्रजा को अपने आभ्यन्तर पर अधिकार रखने की अवस्थाएं विद्यमान रखनी चाहिए और राज्य को इनकी रक्षा और वृद्धि में योगदान करना चाहिए इसके लिए सबसे आवश्यक बात यह है कि वातावरण शुद्ध एवं सात्विक बनाया जाय, प्रजा की सत्-शिक्षा की व्यवस्था हो और उसके अज्ञान तथा अभावों को दूर किया जाय।

शासन की पद्धति कोई भी क्यों न हो उसका इतना महत्त्व नहीं होता जितना उसकी भावना का होता है। हमारे वर्तमान शासन की भावना प्रजा के आर्थिक-स्तर को ऊंचा करने और ऐसी समाज-व्यवस्था बनाने की ओर प्रेरित है, जो हमें उन्नत और प्रगतिशील राष्ट्रों की श्रेणी में जा बिठाये। यह भावना अच्छी तो है परन्तु अधूरी और गलत है। आर्थिक स्तर को ऊंचा करने की अन्ध-भावना के कारण नैतिक स्तर को ऊंचा उठाने की भावना आंखों से ओझल हो रही है। समाज के पुन निर्माण के कार्य में देश की विशद परम्पराओं की उपेक्षा न होनी चाहिए। राज्यों की समृद्धि का माप-दंड एकमात्र अर्थ ही नहीं होता अपितु नैतिकता भी होती है।

जिन राज्यों की नींव नैतिकता के सिद्धान्त पर खड़ी की जाती है उनकी स्थिरता और सुरक्षा सुनिश्चित कर दी जाती है। लोगों के जीवन-स्तर को ऊंचा उठाने के प्रयत्न के साथ-साथ उन्हें सच्चरित्र एवं राजभक्त बनाने का भी यत्न होना चाहिए। इस कार्य का श्रीगणेश घर और स्कूल से हुआ करता है। यदि राज्य के घर और स्कूल ठीक हों तो इसका सब से बड़ा सुप्रभाव यह होता है कि जेलें प्रायः खाली पड़ी रहती हैं। समाज की इकाई घर होता है। सुशासन का आरम्भ भी घर से ही होता है। यदि घरों की व्यवस्था ठीक होती है तो राज्य भी व्यवस्थित रहते और उनमें शान्ति व्याप्त रहती है। इस प्रसंग में चीन के एक प्राचीन ग्रन्थ में बड़ा उत्तम प्रकाश डाला गया है। उसमें लिखा है कि प्राचीनकाल के लोगों ने अपने राज्य को सुव्यवस्थित करने की इच्छा से सर्वप्रथम अपने परिवारों की सुव्यवस्था की, अपने परिवारों को सुव्यवस्थित करने की इच्छा से उन्होंने सर्वप्रथम अपने शरीर का ब्रह्मचर्य से विकास किया। अपने शरीर का विकास करने की इच्छा से उन्होंने सर्वप्रथम अपने मस्तिष्क को ठीक किया। अपने मस्तिष्क को ठीक करने की इच्छा से उन्होंने सर्वप्रथम अपनी इच्छाओं को पवित्र किया। अपनी इच्छाओं को पवित्र करने की इच्छा से उन्होंने सर्वप्रथम अपने ज्ञान को बढ़ाया। ज्ञान की वृद्धि वस्तुओं की ऊहा-पोह पर निर्भर हुई। वस्तुओं की ऊहा पोह से ज्ञान परिपक्व हो जाने पर इच्छाएं पवित्र हुईं। इच्छाओं के पवित्र हो जाने पर मस्तिष्क ठीक हुए। जब मस्तिष्क ठीक हुए तो शरीरों का विकास हुआ। शरीरों के विकसित हो जाने पर परिवार व्यवस्थित हो गए। परिवारों के व्यवस्थित हो जाने पर राज्य व्यवस्थित हो गए। इसका भाव यह है कि जितेन्द्रिय, ज्ञानवान बलवान, कर्मठ और शासन में रहने वाले व्यक्ति उत्तम परिवारों से उत्पन्न होते हैं और वे ही राज्य को सुखधाम बना देते हैं।

मनुष्य के जीवन का ध्येय आत्मिक विकास है। ब्रह्मचर्य, विद्याध्ययन, तप-त्याग और अनुशासन के जीवन की नींव घर और पाठशाला में पड़ती है। यहीं से आत्मिक विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। इस विकास में अर्थ का भी प्रमुख योग होता है परन्तु वह सहायक तत्त्व होता है, मुख्य तत्त्व नहीं होता। इन्द्रियों से ऊपर आत्मा जैसी उच्च सत्ता है और आत्मा से भी ऊँची ईश्वर सत्ता जगत में ओत-प्रोत है। वेद ने बताया है कि आत्मा के स्वरूप को न जानने से पारस्परिक विद्वेष, कटुता और विविध पापों की सृष्टि होती है। आत्मा का स्वरूप ईश्वर भक्ति से जाना जाता है। जो मनुष्य शरीर की सजावट और इन्द्रियों की सन्तुष्टि में जितना अधिक ग्रस्त होगा उतना ही अधिक अशान्त और दुःखी रहेगा और दूसरों को भी अशान्त एवं दुःखी बनायेगा। जिन जातियों ने हिंसा और भोग को जीवन का लक्ष्य समझा और मारकाट, लूटपाट,

(शेष पृष्ठ ६ पर)

[illegible]—

पं० जवाहरलाल नेहरू के जन्म दिवस पर

जनता के आराध्य जवाहरलाल

लेखक—श्री गुरुदयाल मल्लिक

[illegible] उपास्य मूर्तियों की भी देन है और उपासकों का भी। किन्तु इन उपास्य देवताओं में से अधिकांश पत्थर की मूर्तियां भर हैं, जिनके प्रशस्त भाल और आजानु भुजाएं केवल मिट्टी से बनी हैं। किन्तु कुछ मूर्तियां ऐसी भी हैं, जिनका निर्माण विधाता ने रक्त और मांस के पवित्र तत्वों से किया है। उनकी रगों में प्राणों का स्पन्दन उष्ण होकर बहता है। उनके रूप का छन्द गति का छन्द होता है। ऐसी जीती-जागती मूर्तियां बहुत थोड़ी ही हुआ करती हैं। हमारे देश की कोटि कोटि जनता के आराध्य जवाहरलाल ऐसी ही मूर्तियों में से एक हैं।

जवाहरलाल अमर आराध्य हैं, एक नहीं, एकाधिक दृष्टियों से आराध्य हैं। अपने व्यक्तित्व और विश्वास दोनों में वे आजादी की सजीव आकांक्षा और उसकी सिद्धि का जीवित सौन्दर्य बसाए हुए हैं। स्वतन्त्रता आज इस २०वीं सदी की सबसे बड़ी देन है। अधिकांश जनता को दूर ही से उनके दर्शन-भर करके सन्तुष्ट होना पड़ता है, लेकिन जो साथी और दोस्त हैं, उन थोड़े-से चुने हुए व्यक्तियों को जवाहरलाल के निकट तक पहुंचने का अवसर आसानी से मिला करता है। बाहर की यह पहुंच आसान होते हुए भी जवाहरलाल के चित्त के निभृत एकान्त तक पहुंच पाना आसान नहीं है। लेकिन उनके दोस्त होने का अधिकार उन सभी को मिल जाता है, जो गुलामी की बोझिल जंजीर को झकझोरने और तोड़ने के लिए जवाहरलाल के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर जूझने के लिए तैयार हुए हों। ऐसे सब सिपाही जवाहरलाल के दोस्त होते हैं। बाकी जनता केवल आम जनता बनी रह जाती है। फिर भी उनका नाता इससे भी बराबर रहता है।

पिछली गरमियों में इन पंक्तियों के लेखक को आपस की जान-पहचान के फल-स्वरूप मुलाकात की उपलब्धियों में एक ऐसे अवसर पर उपस्थित रहने का मौका मिला था, जिसमें पण्डित जी अपने कुछ परिचितों से मिल रहे थे। कोई उन्हें अधिक निकट से जानता था, कोई दूर से। उस दिन भी वह पहाड़ी प्रदेश बादलों से गहरी होकर सबीला चेहरा लिए हुए थी। उस समय जवाहरलाल का मुख भी गम्भीर हो गया, जब स्कूल के कुछ विद्यार्थियों ने उनके पैर छूने चाहे। एक प्रकार की दबी हुई सख्ती के हल्के इशारे से पण्डित जी ने उन्हें इससे विरत कर दिया। ऐसा जान पड़ा, मानो रुद्र-आक्रोश की एक जरा-सी झलक दिखाई दे गई हो। या शायद उन के अन्तर में निवास करने वाले गौरवशाली बादशाह को गुलामी का यह अभिनन्दन पसन्द न आया हो।

जवाहरलाल पहाड़ की एक चोटी पर अपने एक मुसलमान मित्र के अतिथि थे। मैंने कल्पना की थी, महात्मा गांधी के इस उत्तराधिकारी के दर्शन लंगोटी में ही होने चाहिएं, और कुटिया के बाहर मिमियाती हुई बकरी भी आंखों से ओझल नहीं होगी। ऐसा ही मेरा ख्याल था। लेकिन मुझे निराशा हुई। मैंने देखा पचास से अधिक उम्र की प्रशस्त भवों वाली, ईषत् खल्वाट एक वीर मूर्ति को जो 'आजादी का लिबास' अर्थात् खादी तो पहने ही हुए थी। लेकिन उसका पहनावा चार हाथ की लंगोटी का नहीं, किसी राजपूत का सा चुस्त था, बकरी की आवाज मैंने नहीं सुनी। भोजन की मेज पर भी बकरी के दूध के दर्शन नहीं हुए, बल्कि मैंने उन्हें सामने के भोजन की तरफ भरपूर फैसला करते हुए पाया। और यह स्वाभाविक भी था। जवाहरलाल का इस बात पर पूरा जोर रहता है कि न्याय और उसका फैसला भरपूर ही होना चाहिए।

ठीक इसी समय पण्डित जी का नन्हा सा दौहित्र—राजीव उस कमरे में आ पहुंचा। मातामह के चेहरे का गाम्भीर्य देखते-देखते विलीन हो गया और प्रसंग की बात। ठीक उसी समय मानो आकाश का मेघाच्छन्न गुरु-गम्भीर चेहरा भी प्रकाश से उद्भासित हो उठा। सूर्य ने जैसे सहसा अपना दायित्व समझ लिया हो और शिशु के प्रवेश के साथ ही साथ खिड़की की राह आलोक का ऐश्वर्य बिखेर दिया हो। मेरी भावना कल्पना में खो गई और मैंने स्पष्ट अनुभव किया कि आकाश से शिशु के रूप में देवदूत उतर आया है और हमें अपने उद्बोधन का सन्देश सुना रहा है। कह रहा है निराश मत होना, क्योंकि सृष्टिकर्त्ता ने मनुष्य से अब भी अपनी आशा नहीं छोड़ी है। आज हमारा देश और हमारे ही समान अन्यान्य विजीत देश साम्राज्यवादियों की शतरंज के मुहरे बने हुए हैं लेकिन स्वतन्त्रता भी अनिवार्य है—स्वतन्त्रता जिसका जन्म स्वर्ग में होता है पर जो धरती पर मानव मात्र की स्वतन्त्रता के रूप में ही अवतरित होती है।

और सचमुच ही उस समय का वह दृश्य देखने योग्य था, जब कि गम्भीर मुखवाले मातामह अपने प्रसन्न मुखवाले शिशु दौहित्र के साथ हँसते हंसते खेलकूद में खो गए थे। पण्डित जी इसी समय पैदल व घोड़े की पीठ पर कश्मीर के चक्करदार पथ पर सैर के लिए निकलने वाले थे। उन्होंने फल्ट की बनी अपनी टोपी सिर पर लगाई। लेकिन दौहित्र ने अपनी शान और शौकत को कबूल करने के ख्याल से ही शायद टोपी अंगुलियों के इशारे से नीचे ढुलका दी। पास में श्वेत केशों वाले एक वृद्ध खड़े थे। मुस्कराते हुए बोले—'आखिर पुराने दरख्त की ही तो पैदावार ठहरे। इसी कच्ची उम्र में ही नाना की निराली शान विरासत में पा ली है। उन्हीं की तरह किसी की हुकूमत बर्दाश्त नहीं होती।'

मुझे राजीव को आजाद हिन्दुस्तान का शाहजादा कहकर सम्बोधित करने का जी हुआ।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

भारतवर्ष के तीन प्रधानमन्त्री

प० नेहरू अपने दौहित्र राजीव तथा पुत्री इन्दिरा के साथ

(यह चित्र तीन पीढ़ियों का सम्मिलित चित्र है। संयोग से तीनों स्वतन्त्र भारत के प्रधान मन्त्री बने हैं। यह चित्र "विश्वामित्र" कलकत्ता के "[illegible]" १९४६ से साभार लिया गया है—सम्पादक)

(पृष्ठ ४ का शेष)

राम राज्य का लक्ष्य

भ्रष्टाचार-अनाचार और भोग-विलास में रत रहीं प्राय उनका नाम कहीं नहीं सुनाई देता। अतः जीवन का दृष्टिकोण आत्मा पर केन्द्रित और उसी के द्वारा प्रशासित होना चाहिए।

राज्य, धर्म, न्याय, सत्परामर्श एवम् धार्मिक समृद्धि पर आश्रित रहना चाहिए। भारत ने अपने सौभाग्य-काल में इस प्रकार के राज्य के दर्शन राम-राज्य के रूप में किये हैं। जिसके विकास का राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी स्वप्न देखते थे और जिसकी पृष्ठ-भूमि महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रभृति आचार्यों और सुधारकों ने तैयार की थी। हमारा लक्ष्य राम-राज्य की स्थापना होना चाहिए। राम-राज्य का आदर्श कविकुल-शिरोमणि वाल्मीकि ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है —

(युद्ध काण्ड सर्ग १२८)

राघवश्चापि धर्मात्मा,
प्राप्य राज्यमनुत्तमम्।
ईजे बहुविधैर्यज्ञैः,
ससुतभ्रातृबान्धव. ॥९७॥
न पर्यदेवन् विधवा
न च व्यालकृत भयम्।
न व्याधिज भय आसीद्,
रामे राज्य प्रशासति ॥९८॥
निर्दस्युरभवल्लोको,
नानर्थं कश्चिदस्पृशत।
न चास्य वृद्धा बालाना,
प्रेतकर्माणि कुर्वते ॥९९॥
सर्वं मुदितमेवासीत्,
सर्वो धर्मपरोऽभवत्।
राममेवानुपश्यन्तो,
नाभ्यहिंसन् परस्परम् ॥१००॥
नित्यपुष्पा नित्यफला,
तरव स्कन्धविस्तृता।
कामवर्षी च पर्जन्यः,
सुखस्पर्शश्च मारुतः ॥१०२॥
स्वकर्मसु प्रवर्तन्ते,
तुष्टाः स्वैरेव कर्मभिः।
आसन् प्रजा धर्मपरा,
रामे शासति नानृता ॥१०३॥
ब्राह्मणक्षत्रियवैश्याः,
शूद्रालोभविवर्जिता।
सर्वलक्षणसम्पन्ना.,
सर्वे धर्मपरायणाः ॥१०४॥

अर्थात् धर्मात्मा राम ने श्रेष्ठ राज्य को प्राप्त करके अपने पुत्रों, भाइयों और बन्धुओं के साथ अनेक प्रकार के यज्ञ किये। उनके राज्य में कहीं विधवाओं का विलाप न सुनाई देता था। कहीं सर्पादि का भय न था और न बीमारियों के फैलने का भय था अर्थात् स्वास्थ्य रक्षादि की ऐसी उत्तम व्यवस्था उस राज्य में थी। दूसरों को हानि पहुंचाने वाले चोर, डाकू, लुटेरे आदि दस्यु भी राम के राज्य में कोई न थे। न लोग अनर्थ या अधर्म के कार्य करते थे। वृद्ध बालकों के दाह संस्कार आदि न करते थे। अर्थात् बाल्य मरण न होता था। सब लोग प्रसन्न और धर्म परायण थे। श्री राम को आदर्श राजा के रूप में देखते हुए और परस्पर हिंसा न करते थे। राम के राज्य में सब निरोग और शोक रहित थे। वृक्षों पर फल फूल खूब लगते थे। प्रजा की कामनानुसार बादलों द्वारा वर्षा होती थी, और वायु सुखकारी तथा सुगन्धित थी। सब मनुष्य अपने-अपने कार्यों में सन्तुष्ट होकर उनको प्रेम करते रहते थे। श्री राम के शासन में सब प्रजाएं धर्म का पालन करने वाली थीं। वे कभी असत्य न बोलती थीं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सब लोभ रहित उत्तम लक्षणों से सम्पन्न और धर्मात्मा थे। इत्यादि इत्यादि।

श्री राम के अधीनस्थ राष्ट्रों एव नगरों की अवस्था का वर्णन करते हुए बताया गया है।

(बालकांड)

नगराणि च राष्ट्राणि,
धनधान्ययुतानि च।
न चापि क्षुद्भय तत्र,
न तस्करभय तथा॥
प्रहृष्टमुदितो लोक.,
हृष्टस्तुष्टः सुधार्मिकः।
निरामयो विशोकश्च,
दुर्भिक्षभयवर्जितः ॥

अर्थात् सब नगर और राष्ट्र के सब भाग धन धान्य से समृद्ध थे। किसी को भूख का भय न था। न चोरों का भय था। सब लोग सर्वथा प्रसन्न, हृष्ट, पुष्ट, सन्तुष्ट, अत्यन्त धार्मिक, रोग और शोक रहित थे। दुर्भिक्ष या अकाल के भय से सर्वथा रहित थे। राम का वर्णन करते हुए रामायण में बताया गया है :—

धर्मज्ञः सत्यसन्धश्च,
प्रजानां च हिते रतः।
रक्षिता जीवलोकस्य,
धर्मस्य परिरक्षिता ॥
समुद्र इव गाम्भीर्ये,
धैर्येण हिमवानिव।
विष्णुना सदृशो वीर्ये,
सोमवत् प्रियदर्शन ॥
व्यसनेषु मनुष्याणां,
भृशं भवति दुःखितः।
उत्सवेषु च सर्वेषु,
पितेव परितुष्यति ॥
रामो लोकाभिरामोऽयं,
शौर्यं वीर्यं पराक्रमे.।
अन्तो. सर्वप्रकाकान्तें.
प्रीतिसञ्जननैर्नृणाम्
गुणैः विरोचते रामो,
दीप्त. सूर्य इवांशुभि ॥

अर्थात् श्री राम धर्म को जानने वाले, सत्य प्रतिज्ञ, सदा प्रजा के हित में तत्पर, सब प्राणियों की रक्षा करने वाले, धर्म के रक्षक थे। वे गम्भीरता में समुद्र के समान थे, धैर्य में हिमालय, वीर्य में (विष्णु) सूर्य के और चन्द्र की तरह प्रियदर्शन थे। मनुष्यों के दुःख में वे बड़ा दुःख अनुभव करने वाले थे और सब उत्सवों में वे पिता की तरह प्रसन्न होते थे। श्री राम शूरता, वीरता, पराक्रम तथा संयम युक्त, सुन्दर, मनुष्यों में प्रीति उत्पन्न करने वाले अपने गुणों से ऐसे चमकते थे जैसे सूर्य अपनी किरणों से। □

आर्यसमाज माडल टाउन में वेद प्रचार सप्ताह

आर्यसमाज माडल टाउन में वेदप्रचार सप्ताह २४ अक्तूबर से ३० अक्तूबर तक मनाया गया। प्रतिदिन प्रात काल प० श्यामसुन्दर स्नातक के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ। श्रीमती शकुन्तला दीक्षित और प० गमाचरण शास्त्री ने वेद पाठ किया रात्रि में प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री, प प्रेमचन्द श्रीधर, डा० महेश विद्यालकार और प० श्यामसुन्दर स्नातक के प्रवचन हुए।

मुख्य समारोह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की अध्यक्षता में हुआ। उन्होंने आर्यसमाज के प्रभावी अतीत का स्मरण करते हुए आर्यजनों का आह्वान किया कि वे किसी आलोचक की परवाह न करके, वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में बढ़ चढ़ कर सहयोग दें। उन्होंने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा चलाए जा रहे धर्मरक्षा महाभियान में तन मन धन से सहयोग देने की अपील की। श्री स्वामी जी ने बताया कि नवम्बर के अन्तिम सप्ताह में मध्यप्रदेश के रायपुर आदिवासी क्षेत्र में आर्यसमाज की ओर से एक सम्मेलन का आयोजन किया गया है जिसमें हजारों ईसाइयों और मुसलमानों को शुद्ध करके वैदिक धर्म में प्रविष्ट कराया जाएगा। उन्होंने स्वामी धर्मानन्द जी और प० पृथ्वीराज शास्त्री के सराहनीय कार्य का भी स्मरण किया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान प० रामचन्द्र राव वन्दे मातरम् दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल और महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने भी आर्यजनों को सम्बोधित किया। श्री सूर्यदेव ने सूखा पीड़ितों और भूकम्प पीड़ितों के लिए आर्यसमाज माडल टाउन के उल्लेखनीय सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। डा० धर्मपाल ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन कार्य, वेद प्रचार, ग्राम प्रचार और विशेष रूप से युवाओं के लिए किए जा रहे कार्य का उल्लेख किया। उन्होंने आर्यजनों से आग्रह किया कि वे अपने जीवन को श्रेष्ठ और अनुकरणीय बनाए। श्री सूर्यदेव जी ने कहा कि उन शल्य जैसे व्यक्तियों की परवाह न करो जो केवल हतोत्साहित करते हैं। निर्भीक होकर आगे बढ़ो और रचनात्मक कार्य करो। सभा का संचालन श्री श्री कृष्णचन्द्र शर्मा मंत्री ने किया। बच्चों ने भी अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

आर्यसमाज जंगपुरा भोगल नई दिल्ली

आर्यसमाज जंगपुरा भोगल नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव २२ अक्तूबर से ३० अक्टबर १९८८ तक मनाया गया। इस अवसर पर २२ अक्टूबर को एक शोभायात्रा निकाली गई और २३ से ३० अक्टूबर तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ किया गया। रात्रि में आचार्य श्री पुरुषोत्तम जी शर्मा के प्रवचन हुए। शनिवार २९ अक्टूबर को स्वर्गीया श्रीमती सत्यप्रिया का जन्मदिवस समारोह मनाया गया। दिल्ली के अनेक विद्यालयों की छात्र-छात्राओं ने इस अवसर पर आयोजित प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता में भाग लिया।

हुआ कैवल्य में विलीन दयानन्द दिव्यात्मा

लेखक—ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति, एम० ए०, एल० टी०
परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय न० २
रावतभाटा वाया कोटा, राजस्थान

मृत्युञ्जय दयानन्द का निर्वाण दीपावली के दिन हुआ था। कहा जाता है कि महापुरुषों की मृत्यु भी रहस्यमय ढंग से होती है। मृत्युञ्जय संज्ञा प्राप्त दयानन्द की भी मृत्यु प्रभावशाली ढंग से हुई थी। इसका प्रबल प्रमाण थे—पं० गुरुदत्त विद्यार्थी। जो दयानन्द की रहस्यमयी मृत्यु को देखकर इतना प्रभावित हुए कि उनके जीवन की दिशा ही बदल गई। उनकी नास्तिकता का काला आवरण ही उसके प्रभाव से फट गया और उनकी आत्मा आस्तिकता के निर्झर मे किलोल करने लगी।

३० अक्तूबर १८८३ का दिन था। राजस्थान के अजमेर शहर में भिनाय की कोठी जहां पर स्वामी जी ठहरे हुए थे। देश में दीपावली का पर्व मनाया जा रहा था। एक तरफ भौतिक दीप का प्रकाश था तो दूसरी तरफ अलौकिक शक्ति का प्रकाश। महाराज का भौतिक शरीर कई बार विषपान के प्रभाव से काफी प्रभावित हो चुका था। उनको अपनी मृत्यु का ज्ञान पहले ही हो चुका था। उस समय उन्होंने अपना समस्त उपचार बन्द कर दिया। इसी दिन ११ बजे से ही उनके श्वास की प्रक्रिया कुछ तेज होने लगी। अपने शरीर की आन्तरिक सफाई हेतु वे शौच गए। पानी पिये और दातुन किये। उनकी इच्छा के अनुसार लोगो ने उन्हें पलग पर लिटाया। उनके श्वास की प्रक्रिया तीव्रतर होती जा रही थी। उनकी दिव्य आत्मा उस परम आत्मा मे विलीन होने के लिए मानो आकुल हो रही थी। उस समय उनका ध्यान ईश्वर की ओर लगा हुआ था। लाला जीवनदास के कुशल पूछने पर उन्होंने कहा कि मैं ईश्वरेच्छा मे भ्रमण कर रहा हूँ।

काल का चक्र पल-पल बीत गया। घड़ी ने चार बजाए। महाराज ने आत्मानन्द को बुलाकर कहा कि आप या तो पीछे खड़े हो जाओ या सिरहाने बैठ जाओ। आत्मानन्द पीछे खड़े हो गए। उनकी दिव्य मुद्रा को देखकर आत्मानन्द जी प्रशान्तचित्त से खड़े थे। महाराज ने उनसे पूछा कि आप क्या चाहते हैं? आत्मानन्द ने महाराज के स्वास्थ्य की कामना की। महाराज ने कहा "यह तो भौतिक शरीर है यह क्या अच्छा हो सकता है।" तत्पश्चात् स्वामी जी ने आत्मानन्द के सिर पर अपना हाथ रखकर उन्हें अपना अपूर्व आशीर्वाद दिया और उनके कल्याण की कामना की। इसी प्रकार का प्रश्न काशी के एक सन्यासी गोपाल गिरि ने भी किया। वे भी उन्हें देखने के लिए आए थे। स्वामी जी ने तथावत् उत्तर उन्हें भी दिया। उनके भी कल्याण की कामना की।

इसी समय महाराज के दर्शनाभिलाषी कई सज्जन पधार चुके थे। सब के सब स्वामी जी की दिव्य मुद्रा को पीछे खड़े होकर देख रहे थे। महाराज की कृपादृष्टि सब को विह्वल कर रही थी। उस समय की अपूर्व स्थिति का वर्णन ही नहीं किया जा सकता है। महाराज की दिव्य आत्मा मानो सब को अपूर्व भाव में डुबो रही थी। मृत्युञ्जय के चेहरे पर अब भी अद्भुत मुस्कान विद्यमान थी। उनका चेहरा खिला हुआ था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि दिव्य प्रकाश की किरणें फूट फूट कर उनके हृदय पकज को विकसित कर रही थी। एक तरफ तो शारीरिक पीड़ा का प्रभाव था और दूसरी तरफ प्रवाहित होती एक अजस्र आनन्द की सरिता। इसी सरिता के जल में उनकी शारीरिक यातना भी विलीन होती जा रही थी और महाराज के मुख से एक भी यातनासूचक शब्द निकलता ही नहीं था। वे पास खड़े लोगों से बातचीत भी करते रहे। घड़ी की सुई ने पल-पल कर पाच बजा दिये लोग उनके कुशल क्षेम बीच-बीच में पूछते जा रहे थे। किसी ने उनसे पूछा कि महाराज आपकी तबियत कैसी है? उन्होंने कहा, 'तेज और अन्धकार का भाव है।" इस बात को लोग समझ नहीं पाये।

साढे पाच बजे का समय था। स्वामी जी के सामने भी इधर उधर कुछ दर्शनार्थी सज्जन खड़े थे। स्वामी जी ने सब को सामने से हटा कर पीछे खड़ा होने का आदेश दिया। सब लोग पीछे खड़े हो गए तत्पश्चात् उन्होंने कमरे की खिड़कियों और रोशनदान आदि सब को खुलवा दिया और पूछा कि आज कौनसी तिथि, कौनसा पक्ष और कौनसा वार है? एक सज्जन ने कहा, "आज कृष्ण पक्ष का अन्त और शुक्ल पक्ष का प्रारम्भ है। अमावस्या और मगलवार है। इसे सुनकर स्वामी जी ने दीवारों की ओर एक अद्भुत दृष्टि डाली और कुछ वेदमन्त्रों का पाठ किया। उसके बाद ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना के आठ मन्त्रों का पाठ किया। इन मन्त्रों का पाठ करने के बाद बड़ी ही प्रसन्नता के साथ वे गायत्री मन्त्र का पाठ करने लगे। कुछ क्षण समाधिस्थ रहे और पश्चात् अपनी आखें खोल दीं और कहने लगे — हे सर्वशक्तिमान ईश्वर! तेरी यही इच्छा है तेरी इच्छा पूर्ण हो, तूने अच्छी लीला की।" वे सीधे लेटे हुए थे। इन शब्दों के कहने के बाद उन्होंने स्वयं करवट बदली और अपनी श्वास खींचकर सदा-सदा के लिए ब्रह्मलीन हो गये। उनकी दिव्यात्मा

(शेष पृष्ठ ९ पर)

महर्षि देव दयानन्द

लेखक—विश्वदेव शास्त्री, कैलाशनगर, दिल्ली-३१

ऋषिवर दयानन्द भारतवर्ष को जिस शोचनीय परिस्थिति में जर्जरित, पददलित, हताश, महान अज्ञानान्धकार की तिमिड तमिस्रा में पथ से भटके सोये देश को सत्यार्थ के प्रकाश से प्रकाशित कर वेदों के अनूठे अनुपम, अपौरुषेय उद्बोधन से उद्बोधित करने के लिए कार्यक्षेत्र में उतरे। वह अवतरण दीनबन्धु दीनानाथ प्रभु का इस देश पर महती अनुपम अनुकम्पा थी।

महाभारत काल व उसके पश्चात् भी कुछ काल तक वेदों की परम्परा इस देश मे व अन्य देशों में भी कुछ कुछ विद्यमान थी उसके उसके पश्चात् ईसा पूर्व प्रथम शती से बौद्ध, जैन, चार्वाक आदि के द्वारा प्रसारित, अज्ञानान्धकार, अन्धविश्वास से देश ग्रस्त हुआ। फलतः देश परतन्त्रता की बेड़ियों में आबद्ध हो गया। इतने सुदीर्घ अन्तराल में भवर में पड़ी इस देश की नैया को पार लगाने वाला कोई भी तो महापुरुष ऐसा न हुआ जो देश को शोचनीय मझधार मे पड़ी स्थिति से उभारता।

उभरने के लिए मानव को ज्ञान की परमावश्यकता होती है। ज्ञान के बिना किसी देश, राष्ट्र, समाज, जाति का सकटापन्न स्थिति से उबरना सभव नहीं। 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः। सा विद्या या विमुक्तये। विद्या वही है जो दुःखो से छुड़ाये।

इस भारत के धरातल पर सारे भारतीय इतिहास में—ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः। वेदों के किन्हीं सूक्तों, ऋचाओं दर्शनों, उपनिषदों आदि के द्वारा ज्ञान के प्रकाशक ऋषि तो अनेक हुए। महर्षि कुछ गिने चुने ही हुए। यथा महर्षि विश्वामित्र, महर्षि भरद्वाज, महर्षि वशिष्ठ आदि। यत इन महर्षियो में ज्ञान के साथ कर्म भी था अत वे महर्षि कहलाये। महर्षि दयानन्द को इस विश्व में एक अनोखा प्रभु का प्रदत्त आश्चर्य कहें तो अत्युक्ति न होगी। यत इस दिव्य महर्षि ने जहां मन्त्रद्रष्टा होकर प्रसुप्त अपौरुषेय वेद के ज्ञान सूर्य का पुन प्रकाश किया वहां ज्ञान के प्रकाश को करते हुए कर्म मे भी वे अद्वितीय रहे। सारे भारत मे घूम-घूम कर प्रचार कार्य करते एक नहीं अनेक नहीं असख्य मानव जाति के अपरिमित प्रबल विरोध से युद्ध किया वह भी निरस्त्र होकर।

भगवान् राम और कृष्ण ने शस्त्रास्त्रों, सेनाओ से युद्ध में विजय प्राप्त की पर महर्षि ने अतुलित ब्रह्मचर्य से भीम, भीष्म के समान अद्भुत उत्साह से देश को उबारा। महर्षि ने ज्ञान कर्म के साथ 'योग कर्मसु कौशलम्' का अद्भुत कौशल दिखाया।

महर्षि का महर्षित्व यही था जो लुप्त वेदों की विद्या का जग में पुन यथार्थ प्रकाश कर गये। साथ ही विद्या, अविद्या का उच्चादर्श जीवन में सक्रिय रूप से घटा कर दिखा गये। वे अपने वेदज्ञान के साथ सारे भारत में घूमे। अज्ञानान्धकार, अन्धविश्वासों को मिटाने में दिन रात एक कर बलि हो गये। कहिये क्या ऐसा ऋषि सारे भारतीय क्या विश्व के इतिहास में अन्य हुआ है। महर्षि ने जहां ज्ञान के प्रकाश से भारत को आ-प्लत किया वहां कर्म से असत्य से महायुद्ध भी किया।

(शेष पृष्ठ १० पर)

विविध समाचार

अब "भारत माता की जय" पर भी रोक

पटना से प्रकाशित दैनिक 'हिन्दुस्तान' समाचार पत्र के वर्ष ३, संख्या-४१, दिनांक १५ सितम्बर १९८८ के पृष्ठ ३ पर 'भारत माता की जय कहने पर रोक नामक शीर्षक से प्रकाशित समाचार के अनुसार, मासाराम स्थित टाउन इण्टर स्कूल के प्रधानाचार्य ने अब 'भारत माता की जय' के नारे पर पाबन्दी लगा दी है।

बताया जाता है कि परम्परानुसार स्कूल में रघुपति राघव राजाराम की प्रार्थना के पश्चात् "भारत माता की जय" का उद्घोष किया जाता था। पिछले दिनों कुछ शरारती तत्वों के उकसाने पर कुछ छात्रों ने इस उद्घोष पर आपत्ति की, जिस पर प्रधानाचार्य ने उक्त उद्घोष न किये जाने के आदेश दिये।

शहर के सम्भ्रान्त नागरिकों और स्कूल के छात्रों में इस आदेश के प्रति घोर असंतोष तथा क्षोभ व्याप्त है।

आर्यजगत उपरोक्त घटना को राष्ट्रद्रोह मानता है तथा भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय से मांग करता है कि उक्त घटना की अविलम्ब जाँच कर, दोषी लोगों को कठोर दण्ड दिलाने तथा उक्त राष्ट्रद्रोही आदेश को वापस लेने का आदेश दिया जाय।

आर्यसमाज निर्माण विहार

आर्यसमाज मन्दिर का शिलान्यास

आर्यसमाज निर्माण विहार में मन्दिर का शिलान्यास ३० अक्टूबर १९८८ को सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आर्यसमाज का कार्य क्षेत्र बहुत विस्तृत है। आर्यसमाज धार्मिक कार्यकाण्ड तक सीमित नहीं है, अपितु सामाजिक कुरीतियों के निवारण के लिए भी आर्यसमाज कार्य कर रहा है। जनसेवा का कार्य भी हम करते हैं। मुझे विश्वास है कि यहां पर एक भव्य भवन शीघ्र ही बनेगा और इस क्षेत्र के लोग आर्यसमाज के कार्य के लिए तथा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए समर्पित होकर कार्य करेंगे। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान प० रामचन्द्र राव वन्देमातरम् दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ० धर्मपाल, महामन्त्री श्री सूर्यदेव, आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री शिवकुमार शास्त्री और वैदिक विद्वान् प०यशपाल सुधांशु ने भी अपनी शुभ कामनाएं दीं। समारोह की अध्यक्षता लाला गोपीचन्द मित्तल ने की और स्वागत भाषण आर्यसमाज के प्रधान श्री बलेश्वर नाथ शर्मा ने दिया। इससे पूर्व सात दिन तक प्रातः प० यशपाल सुधांशु के ब्रह्मत्व में सामवेद यज्ञ और रात्रि में वेद प्रवचन हुए। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प० वेदव्यास के भजनोपदेश हुए।

महर्षि वाल्मीकि जयन्ती

हिन्दू पर्व समन्वय समिति की ओर से शनिवार २९ अक्तूबर १९८८ को मावलंकर हाल परिसर में महर्षि वाल्मीकि जयन्ती धूमधाम से मनायी गयी। इस में दिल्ली की अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया वक्ताओं ने महर्षि के जीवन और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए गुण कर्म स्वभाव के अनुसार वर्ण व्यवस्था का प्रतिपादन किया।

शोक समाचार

श्री चैतन्य स्वरूप कपूर, मन्त्री आर्यसमाज करोल बाग नई दिल्ली के दामाद श्री गणेशदास गुलाटी का निधन २७.१०.८८ को एक बस दुर्घटना में हो गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारिगण, सभा कर्मचारी इस दुखद घटना से स्तब्ध रह गए। ईश्वर से प्रार्थना है कि शोक-सन्तप्त परिवार को शान्ति प्रदान करे।

माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय

नेत्र ज्योति बचाओ अभियान

एक नवम्बर १९८८ को चिकित्सालय के प्रांगण में दिल्ली के उप राज्यपाल श्री रोमेश भण्डारी ने 'ज्योति बचाओ अभियान' का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने आर्यसमाज के द्वारा जनसेवा हेतु किए गए कार्यों की सराहना की और आशा व्यक्त की कि इस अस्पताल के माध्यम से इस क्षेत्र की गरीब जनता की सेवा की जाएगी। उन्होंने दिल्ली प्रशासन से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया, समारोह की अध्यक्षता श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा ने की। उन्होंने महाशय धर्मपाल तथा श्री ओम प्रकाश आर्य का इस पवित्र कार्य के लिए धन्यवाद किया। सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम्, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द जी, महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी ट्रस्ट के मंत्री श्री ओमप्रकाश आर्य तथा क्षेत्रीय जनसेवी संस्थाओं के अधिकारियों ने उपस्थित जनता को सम्बोधित किया।

मातृमन्दिर आर्य कन्या गुरुकुल वाराणसी में

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

मातृ मन्दिर आर्य कन्या गुरुकुल वाराणसी का वार्षिकोत्सव २८ से ३० अक्टूबर १९८८ तक धूम-धाम से मनाया गया। प्रतिदिन प्रातः काल यज्ञ, दोपहर में विचार गोष्ठियाँ तथा रात्रि में प्रवचन एवं सम्मेलनों का आयोजन किया गया। २८ अक्टू० को एक भव्य शोभायात्रा भी निकाली गयी। डा० पुष्पावती आचार्या ने आर्य जनता से इस अवसर पर विशेष अपील की कि गुरुकुल की कुछ भूमि वाराणसी बाईपास के लिए अधिगृहीत की जा रही है उसे बचाने में सभी लोग सहयोग करें। उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने इलाहाबाद हाई कोर्ट से इस सबंध में स्थगन आदेश प्राप्त कर लिया है और उन्होंने सार्वदेशिक सभा के प्रधान माननीय स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती से भी निवेदन किया है कि वे उत्तर प्रदेश प्रशासन से अनुरोध करके इस भूमि को बचाने में सहयोग करके हमें सहयोग करें जिससे कि हम वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में यथाशक्ति जुट जायें।

सदीप स्मारक उद्यान का

उद्घाटन

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध नेता श्री लाजपत राय निझावन के दौहित्र और श्री केवल कृष्ण सेठी के सुपुत्र श्री सदीप आर्य की स्मृति में गुलाबी बाग में सदीप स्मारक उद्यान का उद्घाटन एक नवम्बर १९८८ को माननीय श्री कुलानन्द जी भारतीय, कार्यकारी पार्षद, (शिक्षा) दिल्ली के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता महानगर परिषद के मुख्य सचेतक श्री नन्दलाल चौधरी ने की। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, मिलाप सन्देश के सम्पादक श्री नवीन सूरी, निगम पार्षद श्री राजवीर, श्री गोपालसिंह, श्री प्रभीचन्द सब्बरवाल तथा श्री भजनप्रकाश आर्य ने अमर शहीद बालक सदीप आर्य को श्रद्धांजलि अर्पित की। सदीप आर्य की स्मृति में श्री चन्द्र मोहन आर्य महामन्त्री केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के प्रयास से खेलकूद प्रतियोगिताएं भी सम्पन्न हुईं। विजयी छात्र छात्राओं को माननीय श्री कुलानन्द जी भारती ने पुरस्कार वितरित किए। श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने आशीर्वाद दिया। सभा का संचालन उपनिरीक्षक विवेक ने किया।

अलवर (राज०) में आर्य महासम्मेलन की जोरदार तैयारियां

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के अध्यक्ष श्री छोटू सिंह जी एडवोकेट के प्रेस वक्तव्य के अनुसार आगामी ३०,३१ दिसम्बर १९८८ तथा १ जनवरी १९८९ को अलवर में आयोजित किये जा रहे राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के शताब्दी-समारोह एवम् आर्य-महासम्मेलन की तैयारियां बड़े जोरों पर चल रही हैं। सभा के अधिकारियों ने प्रदेश के जिन-जिन जिलों का दौरा किया है, वहां-वहां उन्हें सम्मान सहित धन राशियां भेंट की जा रही हैं।

समारोह में उच्चकोटि के वैदिक विद्वान्, सन्यासी, उपदेशक तथा राजनेताओं को आमन्त्रित किया गया है। इस अवसर को अन्तर्राष्ट्रीय रूप देने के लिए मारीशस के प्रधानमन्त्री डा० जगन्नाथ अनिरुद्ध तथा नेपाल नरेश को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया है।

सम्मेलन में जहां आगामी ५ वर्षों के लिए आर्यसमाज के भावी-कार्यक्रम के लिए योजना तैयार की जायेगी, वहीं वर्तमान की अनेकों सामाजिक तथा धार्मिक-समस्याओं पर भी विचार किया जाएगा। ●

वैदिक विद्वान् एव कविरत्न आचार्य क्षेमचन्द जी 'सुमन' का अभिनन्दन

जीवन के ७२ वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष्य में, आर्यजगत के प्रसिद्ध वैदिक-विद्वान् तथा हिन्दी-साहित्य के वरिष्ठ-साहित्यकार एव प्रख्यात कवि आचार्य प० क्षेमचन्द्र जी "सुमन" का भावभीना-अभिनन्दन आर्यसमाज, विवेक विहार के सौजन्य से गत १५ अक्तूबर को श्री रामचन्द्र जी 'विकल" ससद सदस्य के सान्निध्य तथा डा० श्यामसिंह "शशि" की अध्यक्षता मे किया गया। दिल्ली तथा अन्य शहरों से आये हुए साहित्यकारो, सामाजिक तथा धार्मिक नेताओ ने 'सुमन' जी को अभिनन्दन-पत्र तथा शाल भेंट किया। उनके व्यक्तित्व एव कृतित्व पर विशद प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर साहित्य सगोष्ठी तथा कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया, जिसका सचालन डा० इन्द्र सेंगर ने किया।

उल्लेखनीय है कि आचार्य जी दिवगत हिन्दी-साहित्यकारों की स्मृति तथा उनके व्यक्तित्व एव कृतित्व को चिरस्थायी रखने के लिए, "दिवगत हिन्दी सेवी" ग्रथ-माला के सम्पादन कार्य को पूर्ण करने में लगे हुए हैं।

समस्त आर्यजगत् को ओर से, "आर्य-सन्देश" आचार्य जी के शतायु होने की कामना करता है।'

वेद प्रचार दिवस

दिनाक २७ सितम्बर को, करोल बाग क्षेत्रीय आर्य महिला मडल की ओर से, वेद प्रचार दिवस आर्यसमाज हनुमान रोड में बडे समारोहपूर्वक मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता श्रीमती सरला महता प्रधाना प्रातीय आर्य महिला सभा ने की।

समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती को बाढ पीडितो की सहायतार्थ ५१०० रुपये की थैली तथा ३००० कपडे भेंट किये गये। इसी अवसर पर श्रीमती शाति देवी अग्निहोत्री ने भी अपनी ओर से १००० रुपये की राशि स्वामी जी को भेंट की।

आर्य समाज, आबूरोड, राजस्थान

का वार्षिकोत्सव दिनाक २६,२७ व २८ नवम्बर' ८८ को बडे समारोहपूर्वक मनाया जायगा। समारोह का उद्घाटन राजस्थान के राज्यपाल माननीय श्री सुखदेव प्रसाद जी दिनाक २६ नवम्बर को प्रात ९ बजे करेंगे। समारोह मे प्रान्त के अनेक मन्त्रीगण, आर्य विद्वान् तथा नेता पधार रहे हैं। २७ नवम्बर को हरिजन-सम्मेलन का भी आयोजन किया गया है, जिसमें जिले के अनुसूचित जाति व अनुसूचित जन-जाति के कार्यकर्ता बडी सख्या में भाग लेंगे। □

चुनाव सम्पन्न
आर्यसमाज, शादी खामपुर, नई दिल्ली-८

इस समाज का वार्षिक चुनाव, श्री वेदव्रत जी शर्मा पर्यवेक्षक—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की देखरेख में दिनाक ३० अक्तूबर ८८ को सम्पन्न हुआ। निम्नलिखित अधिकारी निर्वाचित हुए—

प्रधान—श्री खेमचन्द जी चौहान
उपप्रधान—श्री कला राम जी
मन्त्री—श्री श्याम सुन्दर जी पालीवाल
उपमन्त्री—श्री खुशीराम जी शर्मा
कोषाध्यक्ष—श्री गिरीश कुमार जी कालिया

समारोह सम्पन्न
आर्यसमाज, यमुना विहार दिल्ली—५३

आर्यसमाज, यमुना विहार, दिल्ली-५३ का आठवा वार्षिकोत्सव दिनाक ४,५, व ६ नवम्बर १९८८ को बडे समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन प्रात काल यज्ञ तथा भजनोपदेश एव रात्रि में वेद प्रवचन का मनोहर कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज आबूरोड मे हरिजन सम्मेलन सम्पन्न

२५ सितम्बर, १९८८ को, आर्यसमाज आबूरोड की ओर से एक विशाल हरिजन सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें राजस्थान के आयुर्वेद मन्त्री श्री मागो लाल जी आर्य एव विधानसभा के मुख्य सचेतक श्री रघुनाथ जी परिहार विशेष रूप से पधारे। सार्वदेशिक सभा के निर्देश पर आयोजित, इस समता-दिवस के कार्यक्रम में आर्यसमाज के स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ पांच सौ से अधिक अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जन-जाति के कार्यकर्ताओ ने मिलकर भोजन किया तथा शराब आदि बुराइयो को छोडने का सकल्प किया।

पता परिवर्तन

श्री श्याम वीर जी "राघव" आर्य भजनोपदेशक का नया पता इस प्रकार है

द्वारा-राम गली आर्यसमाज
सी०-१३ हरिनगर घटाघर,
नई दिल्ली-११००६४

आर्यसमाज, टैगोर गार्डन (विस्तार), नई दिल्ली-२७

का २४ वा वार्षिकोत्सव ७ से १३ नवम्बर' ८८ तक बडे समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रतिदिन प्रात काल सामवेद पारायण-यज्ञ तथा भजनोपदेश का कार्यक्रम महात्मा रामकिशोर जी वैद्य, प० सत्यदेव स्नातक तथा प० ज्योतीप्रसाद जी ने सम्पन्न कराया। रात्रि मे स्वामी सजीवनी आनन्द सरस्वती द्वारा मनोहर कथा की गयी। १३ नवम्बर को पूर्णाहुति तथा ऋषि लगर का आयोजन किया गया।

आर्यसमाज, मालवीय नगर नई दिल्ली—१७

आर्यसमाज मन्दिर, मालवीय नगर में ३१ अक्टूबर से ५ नवम्बर ८८ तक मनोहर वेद प्रवचन का आयोजन किया गया। वेद-प्रवचन से पूर्व भजनोपदेश हुए।

वैदिक योगाश्रम (गुरुकुल) शुक्रताल (उ० प्र०)

का २४ वा वार्षिकोत्सव २० से २३ नवम्बर ८८ तक भारी धूमधाम के साथ मनाया जायगा। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ, योगसाधना शिविर, तथा नवीन ब्रह्मचारियो को प्रवेश दिया जायगा। महोत्सव में आर्य विद्वानो, सन्यासियो, उपदेशको के साथ-साथ केन्द्रीय तथा प्रातीय नेता भी भाग ले रहे हैं।

(पृष्ठ ७ का शेष)

हुआ कैवल्य मे विलीन . .

अनन्त के गर्भ मे विलीन हो गई।

जिस समय महाराज की दिव्यात्मा ने इस नश्वर शरीर का त्याग किया उस समय सायकाल के ६ बज रहे थे। इसी अद्भुत दृश्य को देखकर प० गुरुदत्त 'विद्यार्थी" का हृदय झकझोर उठा। उनकी नास्तिकता की भावना एकदम तिरोभूत हो गई और वे स्वामी जी के पक्के अनुयायी हो गए। उनकी ईश्वर में पूर्ण आस्था जाग्रत हो गई। यद्यपि दयानन्द की भौतिक देह अब नहीं है किन्तु उनके बताए मार्ग और कार्य आसृष्टि समस्त मानव जाति को प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे। ●

(पृष्ठ ७ का शेष)

महर्षि दयानन्द

इस अपने लेख में हमने तीन शीर्षक दिये हैं—महर्षि देव, दयानन्द। महर्षि का विश्लेषण कुछ शब्दो में ऊपर करने का प्रयत्न किया है। अब देव देवो दान द्वा दीपनाद्वा द्योतनाद्वा। देवा हि विद्वास। महर्षि देव ही नही इस युग के महादेव थे। इतिहास में शकर पार्वती की कथा पढते सुनते आये हैं। उमापति शिव बड दयालु और तप से प्रसन्न होकर देवो मानवो दानवो यक्षादि को वर प्रदानादि से कल्याण करते रहते थे, अतएव महादव थे।

महादेव तो तपस्या से प्रसन्न होकर ही वरप्रदानादि से देव, मानव यक्ष रक्ष दि का कल्याण करते थे। देव दयान द महादेव से इन अर्थों में क्या विशेष नही थे कि उन्होंन किसी से तपस्या को अपेक्षा न कर सारे भारत को ही बिना मागे वेद शास्त्रादि का ज्ञान धन उन्मुक्त हस्त से बिना ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य, शूद्रादि के भेद दया से द्रवित होकर सत्यार्थ ज्ञान के प्रकाश से आनन्दित किया। भारत क निवासी सभी पण्डित-अपण्डित, यवन, ईसाई ही नही सारे विश्व के ही कल्याण के लिए अपनी अपूर्व देन दी। भारत को परतन्त्रता के गहनान्धकार से निकलने का मार्ग प्रशस्त किया। महादेव उमापति थे पर देव दयानन्द अखण्ड ब्रह्मचारी।

इस भारत देश की दरिद्रता को दूर करने क लिए मङ्गलकारिणी गोमाता की रक्षा का बीडा उठाया परतन्त्रता को दूर करने के लिए—राष्ट्रस्य मूल ब्रह्मचर्यम'

महामना चाणक्य इसके सूत्रानुसार स्वयम अखण्ड आदित्य ब्रह्मचारी बन ब्रह्मचर्य का उपदेश किया। जिस ब्रह्मचर्य के पालन से यह देश चरमोत्कर्ष को प्राप्त करे, उसक लिए गुरुकुलादि को शिक्षा का विधान किया, उस ब्रह्मचर्य क पालन से देश कभी परतन्त्र न हो ऐसे सुपथ का दिग्दर्शन किया। ऋषि ने सर्वथा नीरोग, स्वस्थ रहें अत यज्ञ, महायज्ञो के अदभुत लाभकारी शुद्ध स्वरूप का प्रचार किया। सभी मे भावात्मक ऐक्य के लिए भाषा, धम एकेश्वर उपासना का उपदेश दिया। बिना मांगे इस महादेव ने क्या नहीं दिया। उन्होंने कितना सटीक लिखा है कि 'देश क अन्न-जल से बने हाड मास का यह शरीर है।'

आज महर्षि के तीनो कार्य वेद, गोरक्षा, ब्रह्मचर्य जहा के तहा अधूरे हो पडे हैं और आर्यसमाज गहरी निद्रा मे निमग्न है। वेद पर केवल शोध पत्र लेखन के कोई रचनात्मक आविष्कार कर वेदो की सार्थकता प्रतिपादन के कोई प्रयत्न नहीं हो रहे। आज भी गो-हत्या यथापूर्व ही चल रही है। गोरक्षा का कार्य अधूरा ही पडा है। ब्रह्मचर्य विनाश से देश का विनाश यथापूर्व चल रहा है। १ आर्यसमाज अपने साधु सन्तो को क्षेत्र वार बाट दे जिससे ये देश सुधार रूप अश्वमेध सत्र निर्विघ्न सम्पन्न होता रहे। सभी प्रकार का भ्रष्टाचार क्यो न समाप्त होगा।

२ आर्यसमाज का देशव्यापी सगठन है। प्रत्येक समाज गोरक्षा को आपरेटिव सोसायटी बनाकर गोशालाए स्थापित करें। विशुद्ध आर्थिक आधार पर चलाये। अपने सदस्यो को उनका उत्पादन विक्रय कर। गोरक्षा भी होगी। सदस्यो को शुद्ध घी दूध मिलेगा। महर्षि का एक कार्य भी पूर्ण होगा

३ ब्रह्मचर्य— सिनेमादि के प्रचार द्वारा ब्रह्मचर्य विनाश की आधी चलाई जा रही है। शराब खाने के लाइसस बढ बढ कर दिये जा रहे हैं। पुन, शराबबन्दी, नशबन्दी के अभियान चलाये जाते हैं। क्या विचित्र स्थिति है। एक तरफ तो राज्य आग लगवाता है और फिर उसे बुझाने के लिए हल्ला गुल्ला करता है। अतः ब्रह्मचर्य के प्रचारार्थ जनता को उद्बोधन दिया जाये।

४ राजा राष्ट्र विरक्षति—राजा राष्ट्र की रक्षा हो नहीं विरक्षा करता है। अर्थात् न्याय और रक्षा ही राज्य का विशुद्ध धम है। आज उसका उलटा व्यापार करना ही राज्य का विशुद्ध धर्म रह गया है।

५ सस्कृति की रक्षा से ही राष्ट्र और देश की रक्षा होती है। इस देश के विनाश के लिए अ ग्रेजों ने देश के इतिहास, शिक्षा सस्कृति और स्वास्थ्य विनाश की गहरी चोट की है। अ ग्रेजो के मानसिक गुलाम उसी विकृत इतिहास, शिक्षा आदि को उसी बिगडे रूप मे चलाकर खुश हैं।

६ एक अदभुत विचित्र बात है कि सारे विश्व मे किसी देश के तीन नाम नही हैं पर इस देश के तीन नामो का खूब प्रचार चल रहा है। इण्डिया अ ग्रेज ईसाइयों का, हिन्दुस्तान मुसलमानो का, भारत जो प्रमुख नाम है उसे धक्के मार कर बाहर धकेला जा रहा है हिन्दी को तरह।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R.N N. o. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on 17,18-11-88 Licenced to post without prepayment; Licence No. U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५१ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३९

(पृष्ठ ५ का शेष)

जनता के आराध्य जवाहरलाल

पण्डित जवाहरलाल के स्वभाव में कश्मीर के पण्डित का 'स्पृश्या-स्पृश्य-विचार' बराबर है, लेकिन उसकी बाधा जात-पांत की बाधा नहीं है। वह तो कहीं ऊंची और उदात्त वस्तु है—अर्थात् महज किसी की उम्र या पाण्डित्य या आदर्शवाद जवाहरलाल पर रौब नहीं गालिब कर पाते। मनुष्य की कीमत की एक ही पैमाइश उनके पास है उसमें आजादी की बढ़ती हुई उमग कहां तक है? वह राजपूत योद्धाओं की तरह साहस के साथ दुनिया की या रौब की सब जंजीरों को झनझना-कर तोड़ देने के लिए कहां तक कमर बांधता है? इसीलिए जवाहरलाल सोफे पर बैठे बठे राजनीति हांकने वालों की अपेक्षा जग में सीना अड़ाने वाले सिपाहियों को कहीं अधिक प्यार करते हैं।

और फिर भी 'पण्डित' की ही तरह ज्ञान के क्षेत्र में उनमें वैसी ही दृढ़ लगन और सीमाहीन उत्साह है। जानकारी संग्रह करने की प्यास उनकी कभी नहीं बुझती। साइबे-रिया के एस्किमो के धर्म से शुरू करके अपने समाजवादी कैम्प के आसपास के बाशिन्दों तक—सब के बारे में जानने-सुनने की उनकी आकांक्षा अदम्य होती है। आप बातचीत करते ही जान लेंगे कि यह भला-मानस जिस तरह सब से ताजी ब्रैण्ड की सिगरेट के बारे में पक्की पैठ रखता है, अपने ज्ञान के बारे में भी उससे कम नहीं।

पण्डित जवाहरलाल के प्रति शिक्षितों और नुसस्कृतों में बहुत सजीव उत्साह देखने को मिलता है, लेकिन आम जनता केवल दूर से श्रद्धा अर्पण करके रह जाती है। यह स्वाभाविक भले हो, लेकिन देश के बुद्धिजीवियों का यह फर्ज है कि जवाहरलाल के अग्निमय विचारों को वे आम जनता के निकट सुबोध बनाएं। रेडियो के 'ट्रांसमिट' करने वाले स्टेशनों की तरह जवाहरलाल की आजादी की उमग को सर्वसाधा-रण के बीच समर्पित करते रहें।

("विशाल भारत"-कलकत्ता के फरवरी, १९४६ से साभार—सम्पादक

(पृष्ठ १० का शेष)

महर्षि दयानन्द

७. नागरिकों के स्वास्थ्य के लिए खान पान शुद्ध रहने से ही शारीरिक-आत्मिक बल वृद्धि होता है। खान पान में भी दूध पदार्थ को बजाय नकली डालडा, डबलरोट आदि अच्छी खाद्य का प्रचलन है। उन्हें लेकर नागरिक प्रसन्न हैं फिर शारीरिक स्वास्थ्य कहां से बनेगा।

८. महर्षि के लिखे ये शब्द आर्यसमाज याद करे—'हमारा शरीर बहुत देर तक नहीं रहेगा, आप आजीवन हमारी पुस्तकों सन्देश देते रहना। जहां तक बन पड़े अपने भूले भटके भाइयों का भी सन्मार्ग दिखलाते रहना। —महर्षि दयानन्द।

सेवा में—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी (सी०) ७५१

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ : अंक ३ | रविवार २७ नवम्बर १९८८ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८ | कार्तिक २०४५ | दयानन्दाब्द—१६४
मूल्य : एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० डालर, ३० पौंड

दिल्ली नगर निगम में हिन्दी-आशुलिपिकों की नियुक्ति करके, केन्द्र के आदेशों की पालना की जाए

सभा द्वारा उपराज्यपाल को पत्र

सेवा में,
माननीय श्री रोमेश भंडारी,
उपराज्यपाल दिल्ली,
राज निवास,
दिल्ली ११००५४

विषय : दिल्ली नगर निगम में केन्द्रीय सरकार के आदेशों के अनुसार अंग्रेजी आशुलिपिकों की बजाय हिन्दी के आशुलिपिक रखे जाने की आवश्यकता।

महोदय,

२६ अक्तूबर, ८८ के साप्ताहिक "रोजगार समाचार" में छपे विज्ञापन के अनुसार दिल्ली नगर निगम ने अंग्रेजी के १०० आशुलिपिकों के पदों के लिए आवेदन पत्र मांगे हैं। किन्तु हिन्दी के एक आशुलिपिक के पद के लिए भी मांग नहीं की गई है। भारत सरकार के राजभाषा विभाग ने अपने हिन्दी भाषी क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों, निगमों और राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि को २० अगस्त, १९८७ के अपने आदेशों के अनुसार कहा है कि जब तक उनके कार्यालय में कुल आशुलिपिकों के पदों पर न्यून से न्यून ५० प्रतिशत हिन्दी के आशुलिपिक नियुक्त न हो जाएं तब तक अंग्रेजी के आशुलिपिक न रखे जाएं। ऐसे ही आदेश राजभाषा विभाग के एक फरवरी ८८ के कार्यालय ज्ञापन के अनुसार हिन्दी टाइपिस्टों की नियुक्ति और २७ नवम्बर, ८७ के आदेशों के अनुसार हिन्दी टाइपराइटरों की खरीद के विषय में दिए हैं।

आवश्यकतानुसार उपरोक्त प्रतिशत से अधिक भी हिन्दी के आशुलिपिक और हिन्दी के टाइपिस्ट रखे जा सकते हैं। किन्तु, बड़े आश्चर्य की बात है कि दिल्ली नगर निगम जिसका जनता से सीधा ताल्लुक है इतनी बड़ी संख्या में केवल अंग्रेजी के आशुलिपिक रख रहा है। सरकार ने यह स्पष्ट किया हुआ है कि अधिकारी लोग तकनीकी कार्यों में यथा आवश्यकता अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग भी कर सकते हैं। अतः उनके साथ हिन्दी के आशुलिपिक लगा दिए जाएं तो हिन्दी के कार्य की मात्रा अपने आप बढ़ सकती है। अतः आपसे अनुरोध है कि आप दिल्ली नगर निगम के अधिकारियों को निर्देश दें कि वे उक्त विज्ञापन को निरस्त करा कर केवल हिन्दी के आशुलिपिकों की मांग संबंधी विज्ञापन दें।

इस विषय में आप जो भी आदेश दें अथवा कार्यवाही करें उसकी सूचना यथासमय देने की कृपा करें और इसी बीच इस पत्र की पावती भिजवाने का कष्ट करें।

धन्यवाद,

भवदीय
मूलचन्द गुप्त
मन्त्री

प्रतिलिपि-सूचनार्थ तथा आवश्यक कार्यवाही हेतु —

१-माननीय श्री बूटासिंह जी। गृह मन्त्री
२-स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा।
३-श्री महेन्द्रसिंह साथी, महापौर, दिल्ली नगर निगम
४-सभी संसद सदस्य (दिल्ली क्षेत्र)
५-संयोजक, संसदीय राजभाषा समिति
६-संयोजक, राजभाषा कार्य, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्,
७-सभी निगम पार्षद, दिल्ली नगर निगम,

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर

"आर्यसंदेश" का उत्कृष्ट विशेषांक

अपने सुविज्ञ पाठकों की पुरजोर मांग को ध्यान में रखकर, साप्ताहिक "आर्य-सन्देश" अपनी गौरवमयी परम्पराओं के अनुसार अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान दिवस पर एवं उत्कृष्ट लेखों से भरपूर आकर्षक विशेषांक प्रकाशित कर रहा है। यह विशेषांक नवीन तथ्यों, शिक्षाप्रद लेखों से सुसज्जित एवं संग्रहणीय होगा।

यदि आप घर बैठे ऋषियों, आप्तपुरुषों, सन्तों, विद्वानों की वाणी एवं सत्योपदेश पढ़ना चाहते हैं, तो आज ही साप्ताहिक "आर्य-संदेश" के नियमित ग्राहक बन जाइये और वर्ष-पर्यन्त प्रकाशित होने वाले विशिष्ट विशेषांकों को भी निःशुल्क प्राप्त कीजिए।

—सम्पादक

संस्कृत सीखना सब भारतीयों का कर्त्तव्य है।
संस्कृत भारत का मेरुदण्ड है।

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त
प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

विश्वव्यापी असमानता से मुक्ति पाने के वैदिक उपाय

लेखक—चमन लाल आर्य

जिस ओर भी हम दृष्टिपात करके देखें हम को सारा संसार विषमता पूर्ण दीख पडता है। विषमता ही विषमता चहुं ओर दिखाई देती है। समानता तो जीवन में कहीं दीख नहीं पडती। हाँ एक मृत्यु ही एक ऐसी वस्तु है जिसके लिए राजा रंक सब समान हैं। अतः सर्वतः फैली हुई विषमता के कारण संसार को विषमतामय भी कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। जड जगत् हो या भोग योनि वाले पशु-पक्षी व उभय योनि (भोग तथा कर्मयोनि) वाले मानव देहधारी प्राणी इन तीनों ही प्रकार के संसार में इस सर्वव्यापी विषमता देवी का ही साम्राज्य है।

सर्वप्रथम जड जगत् को ही लीजिये हम देखते हैं कि एक फूल राजा के मुकुट की शोभा बढा रहा है या किसी सुन्दरी के गले के हार में पिरोया जाकर उस की सुन्दरता को चार चाँद लगा रहा है। दूसरी ओर इसी तरह का कोई भाग्य हीन दूसरा फूल धरती पर पडा मार्ग में आते जाते लोगों के पाँवों के तले रौंदा जाता है। एक कूए का पानी बडा मीठा, निर्मल, ठण्डा होता है, जिसे सब बडी चाह से पीते हैं, जब कि दूसरे कूए का गन्दला, खारा, पीने योग्य नहीं होता और लोग जिसे प्यासे होते हुए भी पीना पसन्द नहीं करते। एक पत्थर अनेक शिवभक्तों के लिए शिवलिङ्ग के रूप में लाखों करोडों स्त्री-पुरुषों का आराध्य देव बन जाता है, तो दूसरी ओर वैसा ही पत्थर का ढेला गलियों के इधर उधर व्यर्थ सा समझ कर ठुकराया जाता है।

भोग योनि के पशु-पक्षी प्राणियों की भी यही दशा है एक बकरी किसी निर्धन साधनहीन किसान के घर में कुछ रूखे-सूखे घास के तिनके खाकर ही रह जाती है, जब कि दूसरी ओर वैसी ही बकरी को महात्मा गांधी जैसे महापुरुष की होकर नाना प्रकार के बहुमूल्य पदार्थ—किशमिश, बादाम जैसे कीमती मेवों को खाते देखते थे। एक बिल्ली अपनी क्षुधा की तृप्ति के लिए घर-घर में मारी-मारी ही फिरती है और अवसर पाकर जब कहीं इधर-उधर रखे दूध-दही में ज्यों ही मुंह डालने लगती है तो तुरन्त झटपट पीछे से घर वाली का बेलन पीठ पर आ लगता है और बेचारी को दुम दबाकर भागना पडता है, परन्तु वैसी ही कोई अन्य बिल्ली विदेश या अपने ही देश में अमीर धनी महिलाओं और उनके बच्चों के प्यार का पात्र बनकर दूध मलाई खाती है और गुदगुदे मखमल के गद्दों पर सोती देखी सुनी जाती है। कुत्तों की बात तो क्या कही जाये बडे-बडे राजा-महाराजा नवाब और रईस हमारे ही देश में हो चुके हैं जो देश के विभाजन के पूर्व कुत्तों के पालन पोषण में लाखों रुपया खर्च करते थे। इनकी देखभाल के लिए नौकर रखे जाते थे। प्रतिदिन ऋतु अनुकूल गरम ठण्डे पानी से साबुन मलकर इनको नहलाया जाता था। यही नहीं उनके बीमार पड जाने पर देखभाल करने वालों को कितनी परेशानी पड जाती थी। सगे सम्बन्धी के समान तुरन्त डाक्टर को बुलाने अथवा पशु चिकित्सालय में दाखिल कराने का प्रबन्ध किया जाता था। दूसरी ओर इसी जाति के ऐसे कुत्तों की कमी नहीं जो रोटी के एक-एक टुकड़े के लिए मारे-मारे फिरते हैं और गरमी के दिनों में इस अभागे प्राणी को प्यास से व्याकुल हांफते हुए कहीं छाये में सिर छुपाने की जगह तक नहीं मिलती। कितनी विषमता और कैसी अद्भुत लीला है।

तीसरी प्रकार की दुनिया मानव देहधारी उभय भोग तथा कर्म योनि वाले प्राणियों की है। शास्त्रों उपनिषदों आदि में मानव योनि को श्रेष्ठ योनि कहा है। महाभारत कार महर्षि व्यास ने स्पष्ट लिखा है कि— 'नहि मानुषात् श्रेष्ठतर हि किञ्चित्।' परन्तु यह श्रेष्ठ प्राणी भी विषमता के विष से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। विषमता का भयङ्कर रोग इस जाति को बुरी तरह से ग्रसित किये हुए है। मनुष्य के हाथ को ही लीजिये उसकी अङ्गुलियों में भी लेशमात्र भी समता नहीं पाई जाती। मनुष्य समाज में भी कोई राजा है तो कोई रङ्क। कोई धनी है तो कोई दरिद्र। कोई सुखी है तो कोई दुखी। कोई अभाव की आग में झुलस रहा है तो कोई दूध मलाई खाना पसन्द नहीं करता। वेद में भी इस असमानता को बड़े ही काव्यमय ढंग से दर्शाया है—

समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः
संमातरा चिन्न समं दुहाते।
अक्षयोश्चिन्न समा वीर्याणि
ज्ञातो चित्सन्तौ न समं पृणीतः॥
ऋग्वेद १०।११७।९।

अर्थात् मनुष्य के दो हाथ हैं किन्तु दोनों में एक समान बल नहीं होता। एक माँ से उत्पन्न हुई दो गौएं एक जैसा दूध नहीं देतीं। जोडिये भाई एक साथ पैदा होने पर भी एक जैसे बलवान् नहीं होते। एक परिवार में उत्पन्न होकर दो मनुष्यों की भावना एक जैसी नहीं होती। भगवान् तो बडा न्यायकारी व दयालु है, फिर भी इतनी भारी असमानता उसकी सृष्टि में? अतः इस के कारणों पर गम्भीरता से विचार करके उससे मुक्ति पाने के उपाय पर विचार करना अत्यन्तावश्यक है।

विषमता के कारण संसार में फैली इस भारी विषमता को देख कर कोई भी विचारशील आदमी गहरी चिन्ता में पड जाता है। श्रवण, मनन और चिन्तन से उसे निश्चय हो जाता है कि यह शरीर नाशवान् वस्तु नहीं है। मृत्यु उसे शरीर से अतिरिक्त एक चेतन सत्ता (अविनाशी) आत्मा का बोध कराती है कि प्राणियों में यह विषमता प्रभु की पैदा की हुई नहीं है। वह तो बिना किसी पक्षपात के जीवों को उनके कर्मों का फल-प्रदाता है। वहां किसी प्रकार की सिफारिश आदि को कोई स्थान नहीं है। वह एक पक्के बनिये की तरह जीवों को जितना जिसका बनता है। ठीक उतना ही देता है। उसमें लेशमात्र भी न्यूनाधिकता नहीं होती क्योंकि उसकी स्मरण-शक्ति बडी तेज है। उसके विषय में वेद में आया है—

'संख्याता अस्य निमिषो जनानाम्।
अथर्व वेद ४-१६-५

अत: उसके हिसाब में किसी प्रकार की भूल-त्रुटि नहीं होती। भूल-गलती तो मनुष्य ही करता है क्योंकि भूल करना तो मनुष्य का स्वभाव ही है। परन्तु भगवान् में यह दोष नहीं लगता। किसी ने ठीक ही तो कहा है-'सब घट सुल्तान-हार है, एक अभुल्ल करतार; अथर्व वेद में तो इस तथ्य को बड़े ही सुन्दर ढंग से स्पष्ट किया है।

न किल्बिषमत्र नाधारो अस्ति,
न यन्मित्रैः समममान एति।
अनूनं पात्रं निहितं न एतत्
पक्तारं पक्वः पुनराविशाति॥
अथर्व वेद १२ ३-४८

प्रभु तो केवल द्रष्टा हैं और साक्षी होकर जीव को उसके किये कर्मों का फल देते हैं। ऋग्वेद १।१६४।२० मुण्डकोपनिषद् तथा श्वेताश्वतरोपनिषद् में यह एक ही मन्त्र इस भाव को बडे ही सुन्दर आलंकारिक रूप में व्यक्त करता है।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया,
समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्य-
नश्नन्नन्यो अभिचाकशीति॥
ऋग्वेद

अतः स्पष्ट है कि यह घोर असमानता जीव के अपने अच्छे बुरे कर्मों का फल है अर्थात् यह विषमता मनुष्यकृत है ना कि ईश्वरकृत। जीव को मातरिश्वा कहा गया है क्योंकि वह अपने कृत कर्मों के फल भोगने के लिये बार-बार माता के गर्भ में आता जाता रहता है, और वह इस प्रकार इस विषमता का कारण बन जाता है। इस बात को सांख्यदर्शनकार कपिल मुनि ने अपने सांख्यदर्शन में यूं कहा है—
कर्मवैचित्र्यात् सृष्टिवैचित्र्यम्।

इसी तथ्य की पुष्टि गोस्वामी सन्त तुलसीदास ने यूं की है—
कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।
जो जस करहि तस फल चाखा॥

और योगीराज भगवान् श्री कृष्ण जी का कहना है कि यह देह धारी मनुष्य बिना काम किये एक क्षण मात्र भी नहीं रह सकता।

नहि कश्चित् क्षणमपि
जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवशः कर्म
सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः॥ गीता ३।५

यह भी याद रहे कि कोई भी कर्म बिना फल दिये नहीं रहता। कर्म फल से असावधान मत रहो। महाभारत कार ने ठीक ही लिखा है कि हजारों गौओं में से बछड़ा जैसे अपनी माँ को जा पकड़ता है वैसे ही पूर्वकृत कर्म कर्ता का ही पीछा करता है।

(क्रमशः)

ओ३म्

आर्य सन्देश

"जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण स्वीकार कीजिये, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नहीं हो सकता।"

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

ब्रह्मचर्य का अभाव

संसार में रह कर, जीवन के कठिन संग्राम में हमें शारीरिक, आत्मिक, मानसिक सब प्रकार का बल खर्च करना पड़ता है। यह बल ब्रह्मचर्य द्वारा ही हम संचय कर सकते हैं—ब्रह्मचर्य को छोड़ इस अनुष्ठान का अन्य सुयोग नहीं है। ब्रह्मचर्य के द्वारा यदि हम वह बल इकट्ठा न कर सकें तो खर्च कहां से करेंगे? जिसको पूंजी नहीं है, गांठ खाली है, वह क्या खर्च करेगा आज जो हमें जीवन-निर्वाह के सामान जुटाए नहीं जुटते, बात बात में मुहताजी रहती है और पल भर को भी शान्ति नहीं मिलती उसका कारण केवल यही है कि ब्रह्मचर्य की आवश्यक प्रथा का हमने लोप कर डाला है। हमारा शरीर रोगी क्यों? ब्रह्मचर्य के अभाव से। सन्तान क्यों नहीं होती? ब्रह्मचारी न रहने और कच्चा वीर्य फेंकने से। सन्तान क्यों होकर मर जाती या दुर्बल रहती है? ब्रह्मचर्य नष्ट करके वीर्य कमजोर कर दिया। गरीब क्यों हो? कुछ सीखा नहीं, जल्दी गृहस्थ हो गए। दुखी क्यों हो? इसलिए कि तन पर, मन पर, आत्मा पर जो बोझ है वह अधिक है। तन, मन, आत्मा इनका बल ब्रह्मचर्य से मिलता, उसे पालन नहीं किया। एक-दो मनुष्य नहीं, सारा संसार निर्बल है, इसका भी कारण ब्रह्मचर्य का अभाव है। ब्रह्मचारी बन कर विद्या पढ़ने से आत्मिक बल बढ़ता है— आत्मा बलिष्ठ होने से मनोवृत्ति गन्दी नहीं होने पाती—विशुद्ध मनोवृत्ति होने से शारीरिक बल कुचेष्टाओं द्वारा खण्डित न होकर सुरक्षित रहता है। व्यक्तियों का समुदाय ही समाज है, जब हमारी आत्मा और शरीर बली हैं तो समाज भी बली है। ब्रह्मचर्य के भक्त प्राचीन आचार्यगण अपने बल का अखण्ड प्रताप जगत् के सामने रख गए हैं— और ब्रह्मचर्य-भ्रष्ट हमारा भी बल जगत् के सामने है। जो है सो सब जानते हैं— कहना सुनना व्यर्थ है।

सच तो यों है कि हमारी आरोग्यता, आयु, सौन्दर्य, ऐश्वर्य और हमारी सारी भावी कामनाओं का जो मूल है, एकमात्र इसी के अनुष्ठान करने से हमारी धार्मिक और नैतिक सारी मनोकामनाएँ पूरी होंगी। ब्रह्मचारी ही आदर्श सन्तान पैदा करके उन्हें योग्य पुत्र बना सकता है। उत्तम सन्तान की कामना करने वाले को उचित है कि वह ब्रह्मचारी बने और पूर्ण ब्रह्मचारी बने। ब्रह्मचर्य का नियम पालन करने से हमें अधिकाधिक विद्या-प्राप्ति का बड़ा अवसर मिलता है। विद्या क्या है? शास्त्र क्या हैं? यही सब महानुभावों के सच्चे तजुर्बे हैं, उन्हें देख कर, समझ कर हम जानते हैं कि इस अगम्य संसार की गति कैसी है। किस काम को किस प्रकार करके क्या हानि-लाभ होगा। ईश्वर, माता, पिता, पुत्र, स्त्री व धर्म इन सबको जानने ही के लिए ब्रह्मचर्य की सृष्टि है। हमारे सामने जीवन का, सुख-दुःख का, लाभ-हानि का, साहस, वीरता और परोपकार का जो बृहत् भवन खड़ा हो सकता है ब्रह्मचर्य ही उसकी नींव है। यह जो हमारे सामने धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष चतुर्वर्ग प्राप्ति का महान् वृक्ष है, ब्रह्मचर्य ही उसका मूल है। अगर हम चाहते हैं कि हमारा भवन दृढ़ बने, अगर हम चाहते हैं कि हमारा उद्देश्य-वृक्ष आंधी के बड़े-बड़े झोंकों से भी न उखड़े तो हमें चाहिए कि पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करके कृत-कृत्य हो जायें।

मनुष्य-जीवन का उद्देश्य बड़ा गहन है। संसार में आकर उसे न केवल अपना ही उद्धार करना होता है, वरन् समस्त प्राणियों का अधिपति बन कर जगत् पर शासन करना होता है। महान् शक्ति प्राप्त किए बिना शासन नहीं हो सकता! और शक्ति सम्पादन का एक ही उपाय है— वह ब्रह्मचर्य है। मनुष्य की उन्नति का मार्ग बड़ा प्रशस्त है, वह मोक्ष तक खुला पड़ा है। इसलिए मनुष्य चाहे तो बहुत-कुछ कर सकता है। अपनी गहन मेधा-बुद्धि से, प्रबल बाहुबल से, सारे संसार को अपनी झलक दिखा सकता है। प्राचीन काल में भीष्म, भीम, कृष्ण राम, लक्ष्मण आदि महानुभाव और शुक, व्यास, कपिल, आदि मुनिगण इसके उत्कृष्ट प्रमाण हैं। इन सब में ब्रह्मचर्य का बल था, उसी से वे दुर्जय योद्धा और अन्तर्दृष्टि वाले हो गए थे। कोई ब्रह्मचर्य-भ्रष्ट वैसी कामना करे तो कैसे वहां तक पहुंच सकता है?

जब द्वापर का युग हुआ, तब जरासन्ध, कालयवन, कंस, शिशुपाल आदि अधर्मियों के अत्याचार के दौर-दौरों का बाजार इतना गरम हो गया था कि प्रजा में हाहाकार मचा हुआ था। उनके उत्कृष्ट बल और प्रभाव को देख कर किसी की भी उनके आगे सिर उठाने की हिम्मत नहीं हुई, पर कृष्ण ने बारह ही वर्ष की अवस्था में उनके आगे सिर उठाया उनके गर्व को तोड़ा और निरन्तर परिश्रम करके बल, युक्ति और धन से उनका मूलोच्छेद करके धर्म-राज्य की नींव स्थापित की। इतना करते हुए भी किसी ने उन्हें घबराते या उदास नहीं देखा, वे सदा आनन्दकन्द रहे। दुःख मानो जगत् में उनके लिए था ही नहीं। द्वारिका में जब शाल्व के साथ उनका घोर युद्ध हो रहा था, उस आपत्तिकाल में भी द्यूत-सभा में द्रौपदी के वस्त्राहरण के समय उसकी रक्षा करना कृष्ण नहीं भूले। कुरुक्षेत्र में युद्ध की अग्नि भड़कना चाहती है, खून के प्यासे योद्धा जान पर खेल कर समर-भूमि पर डटे हैं, भीषण दृश्य सम्मुख है जिसके ध्यान से रोंगटे खड़े हो जाते हैं बाप, बेटे भाई, दादा सब अपने ही आत्मीयों के रक्त से हाथ रंगने को पागल हो रहे हैं, सभी हतचेत हैं सभी उन्मत्त हैं हिंसा और स्वार्थ की अग्नि सभी के हृदय में प्रचण्ड वेग से धधक रही है। उन सब को देख कर अर्जुन धनुष पटक देता है, दुःख में भर कर कृष्ण से कहता है— महाराज मेरे हाथ से धनुष खिसका पड़ता है, चमड़ी जली जाती है, मन में उद्वेग आ रहे हैं, मैं खड़ा भी नहीं रह सकता। अपने स्वजनों को मार कर अपना श्रेय मैं नहीं चाहता। जिनके लिए हम राज्य धन चाहते हैं, वे ही प्राणों का मोह छोड़ कर मरने पर डटे हैं! ये गुरु हैं, ये चाचा हैं, ये भतीजे हैं ये भाई हैं ये सम्बन्धी हैं, ये सब हमें मारने को तुले हुए हैं, यह सब जान कर भी हे मधुसूदन! इनको मार कर हम त्रिलोकी का भी राज्य नहीं चाहते। अर्जुन का ऐसा मोह देख कर कृष्ण मन ही मन हंसे। उनका मन तब भी पूर्ण शान्त था, स्तब्ध था, और इसी कारण ऐसी गड़बड़ के समय में भी कृष्ण ने बड़े शान्त-भाव से गीता का महोपदेश अर्जुन को दिया। यह क्या साधारण बात है? बिना ब्रह्मचर्य की प्रतिष्ठा के ऐसा धैर्य! ऐसी अन्तर्दृष्टि ऐसी स्थिरता आ सकती है क्या? कभी नहीं।

और चलो, मर्यादा-पुरुषोत्तम के ऊपर भी एक दृष्टि दो। उनका धैर्य, शान्ति, त्याग और क्षमा विचारते ही हृदय आनन्द से गद्गद हो जाता है। कैसा चित्र है— एक ओर प्रबल पराक्रमी दुर्जय रावण खड़ा है, लङ्का सा कोट समुद्र-सी खाईं बड़े बड़े शूर वीर जिसके रक्षक, जिनका काम ही हिंसा और कुटिलता है। कुम्भकर्ण जैसा भाई इन्द्रजीत जैसा पुत्र सहायक है। दूसरी ओर क्या है? अकेले राम हैं नङ्गा सिर है नङ्गे पैर हैं केवल हृदय में अपूर्व साहस और आत्मिक बल है। बस विजय की यह उपयुक्त सामग्री है। ऐसा मारा कि रावण का नाम लेवा और पानी-देवा भी न बचा। सच है, ब्रह्मचर्य की बड़ी महिमा है।

जिस समय क्षत्रिय मदोन्मत्त होकर धर्म की मर्यादा को उल्लङ्घन कर चले थे, उन्हें अपने प्रबल-प्रताप से नाथने वाले परशुराम, और हिरण्यकश्यपु को केवल नाखूनों से चीर फेंकने वाले नृसिंहदेव— ये सब पूर्ण-ब्रह्मचर्य के ही प्रताप से अपना अटल आतङ्क संसार पट पर मढ़ गए हैं। जिस भीष्म ने एक बार श्रीकृष्ण को भी प्रतिज्ञा भङ्ग करा कर क्षुब्ध कर दिया था कौन नहीं जानता कि वे आदर्श ब्रह्मचारी थे? रावण के पुत्र मेघनाद का जिसने हनन किया, उस केसरी का नाम कौन नहीं जानता? सुलोचना बड़ी पतिव्रता स्त्री थी उसी के पातिव्रत्य धर्म के बल से मेघनाद अजेय हो गया था। उसके पास खबर पहुंची कि मेघनाद मारा गया तो उसने एकदम विश्वास करने से इनकार कर दिया। उसने कहा— राम में क्या शक्ति है कि मेरे पति को पराजित करे? जो बारह वर्ष नींद मार कर अखण्ड ब्रह्मचारी रहेगा वही कहीं उन्हें पराजित कर सकेगा? नहीं तो मेरे

पति का बाल बांका करने वाला किसी माता ने नहीं जन्मा है। उसकी प्रचण्ड मूर्ति और तीक्ष्ण वाणी सुन कर बाल-बालो बच से थर-थर कांपने लगे। उसका क्रोध सीमा से बाहर हो गया। उसे अपने पति की मृत्यु पर बिल्कुल विश्वास नहीं था। तब एक दासी ने हाथ जोड़ कर कहा— देवी! सत्य ही लक्ष्मण ने आज उनका वध कर डाला है। बस, लक्ष्मण के नाम में ही बिजली का प्रभाव था। उसे सुनते ही सुलोचना का लाल मुख पीला पड़ गया, आंखों का प्रकाश बुझ कर अंधेरा छा गया, उद्दण्ड मुख नीचे झुक गया— हा, तब तो मैं निश्चय विधवा हुई"— यही उसके मुख से निकला और मूर्छिता हो, धरती पर गिर गई। उसे लक्ष्मण के ब्रह्मचर्य पर उतना ही विश्वास था जितना अपने पतिव्रत-धर्म पर।" और क्यों न हो? लक्ष्मण यती थे भी इसी प्रशंसा के योग्य? जिस समय राम सीता की तलाश में ऋष्यमूक पर्वत पर आते हैं, उस समय सुग्रीव कुछ आभूषण पहचानने को उन्हें देता है। उन्हें राम, लक्ष्मण को दिखा कर पहचानने को कहते हैं। पर लक्ष्मण क्या उत्तर देते हैं! सुनो —

केयूर नैव जानामि नैव जानामि कुण्डलम्।
नूपुराण्येव जानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्॥

इन बाजूबन्दों को नहीं जानता क्योंकि कभी उनको नहीं देखा और न इन कुण्डलों को ही पहचानता हूं। हां उन बिछुओं को जानता हू, क्योंकि चरण-वन्दना करते वक्त नित्य देखा करता था।" यह लक्ष्मण यती के वाक्य हैं जो भाभी के लिए उन्होंने कहे थे। वे वीर मेघनाद क्या समस्त विश्व को विजय कर सकते थे। सच है ब्रह्मचर्य को क्या दुर्लभ है!

बाल्यावस्था से जिनको बड़े-बड़े सिद्ध मुनियों में उच्चासन मिलता था ऐसे प्रबल दिव्य-ब्रह्मचारी व्यास पुत्र शुकदेव का नाम सभी हिन्दू जानते होंगे। जिस समय वे पिता के आश्रम से निकल कर विरक्त होकर वन को चले, मार्ग ही मे गङ्गा पार करनी पड़ी। तब कितनी ही नग्न नहाती स्त्रियों ने उन्हें देखा और नहाती रहीं। पर जब व्यास वहां उन्हें ढूंढते ढूंढते पहुंचे तो स्त्रियों ने एकदम पर्दा कर लिया। व्यास बड़े चकित हुए। पुत्रशोक तो भूल गए और कहा— 'देवियो, यह क्या बात? युवा शुकदेव तुम्हारे बीच से निकल गया, पर तुमने पर्दा नहीं किया? और मैं वृद्ध हूं, तुम सब मेरी पुत्री हो, फिर मुझ से क्या पर्दा?" स्त्रियों ने मुस्करा कर भक्तिपूर्वक व्यासदेव को प्रणाम किया और कहा— "देव! ऐसा कौन है जो परन्तप व्यास को न जानता हो! ऐसे तत्त्वदर्शी के दर्शनों से सच्ची शान्ति मिलती है। परन्तु हे शान्ति धाम मुनि! शुकदेव युवा है तो क्या हुआ," वह जानता ही नहीं कि हम स्त्रियां हैं और आप सब कुछ होने पर भी हमें जानते हैं, इसी से हमने आपसे पर्दा किया है, आप क्षमा करें।" अहा! ऐसे ब्रह्मचारी युवा ऋषि की पूजा न करें तो किसकी करेंगे? ऋषि क्या, वह ब्रह्मचारी त्रैलोक्य पूज्य है। हां! कब उनका पद रज भारत के मस्तक पर फिर नसीब होगा?

दूर कहां जावें? जिस समय समस्त भारत में घोर खलबली मची थी वैदिक-धर्म का तेल रहित दीपक टिमटिमा रहा था, दर के दर हिन्दू धड़ाधड़ मुसलमान-ईसाई हो रहे थे; हिन्दुओं के शिखा सूत्र पर घोर आपत्ति आने को थी, अविद्या का अन्धकार प्रबल था— ठीक उसी समय एक प्रभावशाली व्यक्ति ने उन बहते हुए प्रवाह में एक ऐसी ठोकर लगाई कि सारा संसार चकित हो गया। वह वीर 'कार्य्यं वा साधयामि शरीर वा पातयामि' कह कर कर्म क्षेत्र में कूद पड़ा। गति का प्रवाह एकदम फिर गया। मरी हिन्दू जाति भी उठी, भी ही न उठी, वरन इस योग्य हो गई कि शत्रुओं का मुंहतोड़ मुकाबला कर सके। इस यति का नाम दयानन्द स्वामी था। सदी का सारा संसार एक स्वर से हमारी हां में हां मिला कर इस ब्रह्मचारी के प्रबल प्रताप को स्वीकार नहीं करेगा?

ब्रह्मचारियों की हमने इतनी महिमा गाई है। इसका अन्त कहीं नहीं है। हमें यही कहना है कि इन सबके हमारे जैसे हाथ, पैर, मुख, बुद्धि थी। अन्तर था तो इतना कि वे सब ब्रह्मचर्य-व्रत पर आरूढ़ थे और हम व्रत-भङ्ग हैं। इसलिए संसार में वे अमर हो गए और हम कौवों कुत्तों की मौत मर रहे हैं! ऐसी आवश्यक प्रथा का नाश होना किसको न अखरेगा? जिसे जातित्व का अभिमान है, जिसमें वंश मर्यादा की प्रतिष्ठा है, जिसके मन में पूर्वजों के अनुकरण करने के हौसले हैं, वह इस अमूल्य धन से ऋषि सन्तान को भ्रष्ट देख कर कैसे जीवित रह सकता है? कैसे उसे चैन पड़ सकता है? उसकी छाती पर विषैला छुरा चुभा पड़ा रहे और उसे चैन पड़े, यह कैसे हो सकता है? आज भी बाल-विवाह की निकृष्ट प्रथा द्वारा ब्रह्मचर्य का लोप कर, विद्याभ्यास में बाधा डाल, समस्त वृद्धि का ही मूलोच्छेद किया जा रहा है। हाय! यह बड़े ही संकट की बात है। ईश्वर हमें सुबुद्धि दे।

प्राचीन काल में गुरुकुलों की सुन्दर पद्धति देश भर में थी। वे गुरुकुल एकान्त वनों में होते थे, इनके आचार्य पूर्ण विद्वान् जितेन्द्रिय और तपस्वी होते थे। राजा और रङ्क सबके बालक यहां एक समान भाव से रहते और विद्याध्ययन करते थे। कृष्ण और सुदामा की अपूर्व मैत्री इन्हीं गुरुकुलों की बदौलत हुई थी। यहां नागरिक जीवन की दुर्गन्ध और निकम्मे दृश्य देखने को न मिलते थे। यहां बचपन से भर पूर जवानी तक लड़के लड़कियां आनन्द, उत्साह और शान्ति से शरीर और आत्मा को पुष्ट बनाते थे और फिर वे सच्चे गृहस्थ बन कर जीवन के चार फल धर्म-अर्थ-काम मोक्ष की प्राप्ति करते थे। ऋषि दयानन्द ने संस्कार-विधि में उपनयन संस्कार के समय ब्रह्मचारी को जो सुन्दर उपदेश किया है, वह इस प्रकार है —

"तू आज से ब्रह्मचारी है। नित्य सन्ध्योपासना किया कर। भोजन से पूर्व शुद्ध जल का आचमन किया कर। दुष्ट कर्मों को छोड़, धर्म किया कर। दिन में शयन कभी मत कर। आचार्य के अधीन रह नित्य साङ्गोपाङ्ग वेद पढ़ने में पुरुषार्थ किया कर। एक-एक वेद साङ्गोपाङ्ग पढ़ने के लिए १२ वर्ष—कुल ४८ वर्ष चाहिए। जब तक तू पूरे तौर से वेदों को न पढ़ ले, अखण्ड ब्रह्मचारी रह। आचार्य के अधीन धर्माचरण में रहा कर। परन्तु यदि आचार्य अधर्म और मिथ्या उपदेश करे तो उसे कभी न कर। क्रोध और मिथ्याभाषण मत कर। अष्ट प्रकार के मैथुन — स्त्री का स्मरण, कीर्तन, केलि, प्रेक्षण, गुह्य भाषण सङ्कल्प, अध्यवसाय और क्रिया-निवृत्ति से बचा रह। भूमि में शयन करना, पलंग पर न सोना। गाना, बजाना, नृत्य, गन्ध, अञ्जन, अति स्नान, अति भोजन, अति निद्रा, अति जागरण, निन्दा, लोभ मोह भय शोक, कुविचार मत ग्रहण कर। रात्रि के चौथे पहर में जाग। नित्य-क्रिया स्नानादि से निवृत्त हो ईश-प्रार्थना और उपासना नित्य किया कर। मांस, रूखा-सूखा अन्न, मद्य मत सेवन कर। तेल मत मल। अति खट्टा, तीखा, कषैला, क्षार और रेचक द्रव्य मत सेवन कर। नित्य युक्ति से आहार-विहार करके सुशील और थोड़ा बोलने वाला बन तथा सभा में बैठने योग्य गुण ग्रहण कर।

क्या ही अच्छा हो कि देश भर के माता-पिता और गुरु अपने बच्चों को इन उपदेशों पर चलाने की चेष्टा करें। —सम्पादक

प्रार्थना गीतमाला

ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥

जब सृष्टि-प्रलय में वर्तमान, प्रभु आदि पूर्व से वर्तन।
जब किया आत्म धन अर्पण, तब हुआ नाथ का दर्शन॥

जब सृष्टि नहीं थी ये सारी
थी घोर प्रलय की अधियारी
था एक हमारा स्वामी ही
कर रहा सृजन की तैयारी।

पति एक अकेला ईश्वर, निज गर्भ लोक सब सर्जन।
जब किया आत्म धन अर्पण, तब हुआ नाथ का दर्शन॥

जग की रचना और धारणा
सर्व लोक की नियत नालना
पृथ्वी से भी सूर्य लोक तक
हे ईश सनातन पोष पालना।

जग प्रजा प्रजापति अपनी, हो सतत ज्योति आकर्षण।
जब किया आत्म धन अर्पण, तब हुआ नाथ का दर्शन॥

वन-पर्वत सिन्धु नदी वसुधा
सब सूर्य-चन्द्र जग की सुविधा
परमात्म सभी को देता है
जग जीवन की प्रिय प्राणसुधा॥

यह हव्य भव्य या भीत भव्य, सब किया आपको अर्पन।
जब किया आत्म धन अर्पण, तब हुआ नाथ का दर्शन॥

—देवनारायण भारद्वाज

दो मार्मिक प्रसंग

ऋषि निर्वाणोत्सव

—सुरेन्द्रपाल सिंह

इस बार दि० ८।११।८८ को रामलीला मैदान दिल्ली में आयोजित ऋषि निर्वाण उत्सव पर दो प्रसग मुझे व्यक्तिगत रूप से मार्मिक लगे, जिन्हें मैं आर्यसन्देश के सुविज्ञ पाठकों के साथ बांटना चाहूंगा।

मुझे अति सुखद आश्चर्य और हार्दिक प्रसन्नता हुई जब आर्य जगत् के वयोवृद्ध, ज्ञान वृद्ध और सब से बढ़ कर तप. पूत विद्वान् पंडित हरिशरण जी सिद्धान्तालंकार को सम्मानित किया गया। पंडित जी के मैं ने बहुत से प्रवचन कई सत्सगों में सुने। प्रत्येक प्रवचन में उन का आग्रह वेद पढने का होता है और साथ ही आश्वासन भी कि यदि पढना आरम्भ कर दिया जाए तो वेद इतने सरल हैं कि समझ में भी आने लगेंगे और पढने वाले में मन्त्रों के भाष्य की योग्यता भी विकसित होने लगेगी। उन्होंने अपनी फुसलाने वाली शैली में यही बात रामलीला मैदान में इस अवसर पर भी कही। इस बात से मेरी स्मृति में सन् १९८३ का आर्यसमाज पहाड़गंज (चूना मंडी) का एक रविवारीय सत्संग उभर आया जिसमे मैं अचानक पहुच गया था और पंडित जी का प्रवचन हो रहा था। वह ऋषि दयानन्द के निर्वाण का शताब्दी वर्ष था और पंडित जी ने उस प्रकरण से जोड़ते हुए कुछ श्रोताओं को हाथ खड़े करने को कहा जो कम से कम १५ मिनट प्रति दिन वेदपाठ करेंगे। मैंने भी हाथ उठाया और इस बात को निभाया। वह पन्द्रह मिनट अब पेंतालीस मिनट बन चुके हैं और तब से अब तक मैं ४ बार वेद पाठ (चारों वेदों का) कर चुका हूं और पंडित जी की बात मैंने अक्षरश सत्य पाई है। अब तक के अभ्यास के बल पर मैं लगभग ७०% वेद मंत्रों के अर्थ पाठ करते समय इस तरह समझ जाता हूं जैसे कविता पाठ के समय कविता की पंक्तियां। २०% मन्त्रों के कुछ अंश अभी भी समझ में नहीं आते और १०% मन्त्र अभी भी पल्ले नहीं पड़ते परन्तु मैं पढ सब को लेता हूं। पहले यह पाठ बोझ लगता था, फिर इस में सुख का अनुभव हुआ और अब लगता है जैसे ज्ञान के सागर में डूबा जा रहा हूं परन्तु इस डूबने में भय की नहीं आनन्द की अनुभूति होती है। मेरा यह लिखने का उद्देश्य इतना ही है कि पंडित हरिशरण जी के बहकावे में आकर मैं बहुत लाभान्वित हुआ हूं और चाहता हूं कि सभी पाठक इस बहकावे में आ जायें। प्रथम दृष्टि में यह बात बहकावे जैसी ही लगती है।

दूसरा मार्मिक प्रसग 'दर्शनाचार्य' प्रोफेसर रत्न सिंह जी का प्रवचन रहा। १९५८ में आर्यसमाज करोलबाग में मैंने पहली बार प्रोफेसर साहब की एक सप्ताह की कथा सुनी थी और वहीं से दर्शन तथा तर्क में रुचि हुई जो प्रोफेसर साहब के प्रवचनों और आर्यसमाज के उस समय के विश्वप्रसिद्ध विद्वान् प० रामचन्द्र देहलवी जी के प्रवचनों से उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होती रही। अपने प्रवचन में प्रो० रत्नसिंह जी ने स्वामी दयानन्द को मुक्तात्मा बताया और 'अपने को स्वामी दयानन्द का शिष्य बताने वालों' को सम्भावित साक्षी कहा। काश प्रोफेसर साहब ने अपने प्रवचन में एक दो मिनट स्वामी दयानन्द को मुक्तात्मा प्रमाणित करने में लगाए होते। जहां तक प्रेरणा प्राप्त करने की बात है वह तो हम महर्षि के यश· शरीर को अपने मन में रखकर कभी भी प्राप्त कर सकते हैं परन्तु प्रश्न यह है कि क्या कोई ऐसा व्यक्ति जो देह त्याग के समय भी कोई इच्छा लेकर ससार से विदा हुआ हो मोक्ष को पा सकता है। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पढ़ने से स्पष्ट है कि महर्षि चारों वेदों का भाष्य पूर्ण किए बिना ससार से विदा होना नहीं चाहते थे। "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" की प्रतिध्वनि भी यही है कि "प्रभु मेरी इच्छा पूर्ण नहीं हुई"। महर्षि ईश्वर की इच्छा पूर्ण करते हुए संसार से विदा हो गए। आओ हम सब अपने को महर्षि की इच्छा पूर्ण करने के लिए, उन के सपनों का द्वेष रहित, प्रेमसहित' संसार बनाने के लिए समर्पित करें।

एक निवेदन उत्सव के प्रबन्धकों से भी करना चाहूंगा। चन्दा इकट्ठा करने वालों और इश्तहार बांटने वालों से कह दिया जाए कि वे यह काम मुख्य द्वार पर जब श्रोता आ जा रहे हों तब कर लिया करें। इस से श्रोताओं का ध्यान नहीं बंटेगा और वक्ताओं का तारतम्य नहीं टूटेगा।

राजेन्द्र लाल गुप्त
मन्त्री-आर्यसमाज साकेत, नई दिल्ली

एक बार फिर दीप जलेंगे . .

एक बार फिर दीप जलेंगे,
और फिर से अंधियारी रात जगमगा उठेगी,
हजारों दीपों की माला सँजोए।
पर क्या हजारों टिमटिमाते नक्षत्र मिलकर भी
मिटा सकेंगे यह घनतम,
कर सकेंगे दूर निशाकर के अभाव को !

ऐसा ही अभाव दूर किया था कभी मर्यादा पुरुषोत्तम ने,
जब वे सुदूर दक्षिण तक का अन्धकार दूर कर लौटे थे,
उस अयोध्या में, जो उनके अभाव में अपनी चांदनी खो चुकी थी,
जिसके हर्ष-विषाद उनके ही साथ चले गए थे बनवास को।
और जब वे लौटे तो वह तपस्विनी अनायास ही खिलखिला उठी थी
लाखों दीपों की माला अपनी हंसी के सुमनों के हारों के साथ लिये।

सहस्रों वर्ष बीत गए,
तब एक और पूर्ण पुरुषोत्तम आया,
जिसने गीता के सात सौ दीप जलाकर जो,
लाखों नक्षत्रों जितना प्रकाश चारों ओर फैला दिया।
और मिटा दिया अंधकार उस घोर महातमिस्रा का !
परन्तु बढ़ते अधर्म के चरणों ने,
डस लिया धर्म की उस प्रतिमूर्ति को ही।
और तब एक बार फिर से सुरसा सी फैल गई वह घोर तमिस्रा।

उसके भी पांच सहस्र वर्ष बाद,
गुजरात के पश्चिमी समुद्रतट से,
एक बार फिर जन्म लिया एक नये सुधाकर ने।
जिसका अमित तेज सहस्रों आदित्यों के बराबर था,
फिर भी जिसकी शीतलता सर्वसन्तापहारिणी थी।
लाखों नक्षत्रों के अभाव में भी, वह एकाकी ही चमका था,
युग के घन अन्धकारमय नभ पर !
एक बार लगा था,
जैसे युग-युग का अन्धकार मिट गया हो,
जैसे मानवता एक बार फिर से कृतसंकल्प हो जगी हो,
अमावस्या की महातमिस्रा को फिर से न आने देने के लिए।

लगने लगा था कि एक बार फिर से कृतयुग आएगा,
जिसमें धर्म अपने चारों चरणों पर फिर से खड़ा होगा,
समाज से, युग से, मिटेगा शोषण नारी का और दलितों का,
और दिव्य ज्ञान का प्रकाश फिर से धरा पर फैलेगा !

परन्तु अधर्म अपने चारों चरणों पर फिर एक बार निकला !
इस बार उसने विषधर का फण उभार लिया,
और फिर से एक युग पुरुष को उस महाविष से डस लिया,
जिसे उस दयामूर्ति सुधाकर की अमर सुधा भी दबा न सकी।
बाहर हजारों दीप टिमटिमाते रहे,
परन्तु उनमें ज्योति जगाने वाला सुधाकर,
स्वयम् उस परम ज्योति में विलीन हो रहा था,
जिससे सभी भौतिक ज्योति अपना जीवन पाती है॥

और एक बार फिर से महातमिस्रा एक,
नये ज्योतिधर की खोज में निकल पड़ी॥

डा० सत्य काम वर्मा,
३३३- दीपाली पीतमपुरा, नई दिल्ली- ३४

आर्यसन्देश पढ़ें, पढ़ायें

बाढ़ पीड़ित क्षेत्र के सम्बन्ध में

आर्यसमाज को मुख्यमंत्री द्वारा आश्वासन

पिछले दिनों बिहार के भूकम्प तथा बाढ पीडित क्षेत्रों में आर्य-समाज द्वारा चलाए जा रहे सेवा सहायता केन्द्रों के निरीक्षण के लिए सार्वदेशिक सभा की ओर से सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री बाल दिवाकर हंस को बिहार भेजा गया था। श्री हंस जी लगभग एक मास तक बिहार के अनेक प्रभावित क्षेत्रों में गांव गांव जाकर आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं के साथ पीडितों को वस्त्र, अन्न तथा अन्य आवश्यक सामान बंटवाते रहे।

श्री हंस जी ने वहां दरभंगा से मधिहारी तक जाने वाली सडक, जो कि बाढ से पूरी तरह कट चुकी थी और कई गांवों को आने जाने के मार्ग बन्द होने और वहां की माताओं और बहिनों के बेघरबार होने की स्थिति की शिकायत मुख्यमंत्री श्री भगवत झा आजाद को की थी और उनसे अनुरोध किया गया था कि इस सडक को तुरन्त मरम्मत की जाए। मुख्यमंत्री ने अपने पत्र द्वारा श्री हंस जी को सूचित किया है कि उनकी शिकायत पर तुरन्त उचित कार्रवाई करने का आदेश पथ-निर्माण विभाग बिहार को दे दिया गया है।

तिलक प्रेरणा के स्रोत थे।

सण्डवा, महर्षि दयानद शिक्षण समिति के द्वारा तिलक पुण्य तिथि मनाई गई, कार्यक्रम में मुख्य अतिथि लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के श्री डी सी पटेल ने सबोधित करते हुए कहा कि, तिलक एक चतुरस्त्र पत्रकार महान् समाज सुधारक तथा विशाल व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे। इस अवसर पर श्री तरुण कुमार नागडा जी ने कहा कि बच्चों को तिलक जी से प्रेरणा लेनी चाहिए ताकि उनमें अच्छे सस्कारों का विकास हो सके। शिक्षिका सुधा सोनी व प्रभा मालवाया ज्योति सर-मंडल ने अपने विचार प्रस्तुत किये। इस कार्यक्रम का सचालन मंत्री श्री कैलाश चन्द्र पालीवाल ने किया, स्वागत श्री बाबूलाल चौधरी आभार प्रदर्शन श्री मावजी भाई मानुशाली ने किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य

क्रम	पुस्तक	लेखक	मूल्य
१	नैतिक शिक्षा (भाग प्रथम)		१.५०
२	नैतिक शिक्षा (भाग द्वितीय)		१.५०
३	नैतिक शिक्षा (भाग तृतीय)		२.००
४	नैतिक शिक्षा (भाग चतुर्थ)		३.००
५	नैतिक शिक्षा (भाग पचम)		३.००
६.	नैतिक शिक्षा (भाग षष्ठ)		३ ००
७.	नैतिक शिक्षा (भाग सप्तम)		३.००
८.	नैतिक शिक्षा (भाग अष्टम)		३.००
९	नैतिक शिक्षा (भाग नवम)		३.००
१०	नैतिक शिक्षा (भाग दशम)		४ ००
११	नैतिक शिक्षा (भाग एकादश)		४.००
१२	नैतिक शिक्षा (भाग द्वादश)		५ ००
१३.	धर्मवीर हकीकतराय	वैद्य गुरुदत्त	५.००
१४.	फ्लेश आफ ट्रूथ	डा० सत्यकाम वर्मा	२.००
१५	सत्यार्थप्रकाश सन्देश	,,	२.००
१६	एनाटोमी आफ वेदान्त	स्वा० विद्यानन्द सरस्वती	५.००
१७	आर्यों का आदि देश	,, ,,	२.००
१८.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	प० सच्चिदानन्द शास्त्री	५ ००
१९	सत्यार्थ सुधा	पं० हरिदेव सि० भू०	२.००
२०.	प्रस्थान त्रयी और अद्वैतवाद	—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती	२५ ००
२१.	दी ओरीजन होम आफ आर्यन्स	—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती	५ ००
२२.	चत्वारो वै वेदा.	,, ,,	२.००
२३	द्वैतसिद्धि	,, ,,	५.००
२४	आर्यसमाज आज के सदर्भ में	—डा० धर्मपाल, डा० गोयनका	२०.००
२५.	दयानन्द एण्ड दा वेदाज (ट्रैक्ट)		५०/-रु० सैकड़ा
२६.	पूजा किसो ? (ट्रैक्ट)		५०/-रु० सैकडा
२७.	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (ट्रैक्ट)		५०/-रु० सैकड़ा
२८	योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश (ट्रैक्ट)		५०/-रु० सैकडा
२९.	आर्योद्देश्य रत्नमाला (सुगम व्याख्या)	डा० रघुवीर वेदालकार	५०/-रु० सैकडा
३०	महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी स्मारिका (सन् १९८३)		५ ००
३१	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्धशताब्दी स्मारिका १९८५		५ ००
३२	महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी स्मारिका १९८५		१०.००
३३	महर्षि दयानन्द निर्वाण विशेषांक		१० ००
३४	ऋषिबोधांक		१०.००
३५	योगीराज श्रीकृष्ण विशेषांक		१०.००

नोट—उपरोक्त सभी पुस्तकों पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा। पुस्तकों की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक-व्यय पृथक् नहीं लिया जाएगा। कृपया अपना पूरा पता एवं नजदीक का रेलवे स्टेशन साफ-साफ लिखें। पुस्तक प्राप्तिस्थान—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

"पालकों के सहयोग से ही चरित्र निर्माण होगा"

सण्डवा दिनांक ७।११।८८ श्री स्वामी विरजानंद बाल मंदिर प्राथमिक शाला मरोसमाज सण्डवा की पालक शिक्षक संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए श्री गया-प्रसाद तिवारी ने उपरोक्त शब्द कहे। उन्होंने पालकों से आग्रह किया कि बच्चों के चरित्र निर्माण में शिक्षिका को सफलता घर के परिवेश सुधार से ही मिलेगी। स्थानीय अन्य प्राथमिक शालाओं की तुलना में इस संस्था का स्तर अपेक्षाकृत उत्तम बताते हुए उन्होंने पालकों को भी सुझाव देने का आह्वान किया। पालक सौभाग्यवती शुक्ला, श्री नाथूराम निम्नोकर तथा श्री रामप्रताप श्रीमाली, भीम सिंह राठौर ने संस्था के प्रति संतोष व्यक्त किया।

महर्षि दयानद शिक्षण समिति सण्डवा के मन्त्री श्री कैलाशचंद पालीवाल ने भवन का परकोटा शीघ्र बनवाने का आश्वासन दिया। आभार प्रदर्शन श्री लक्ष्मी-नारायण भागव उपाध्यक्ष आर्य समाज सण्डवा ने किया। इस अवसर पर श्री माव जी भाई भानु-शाली अध्यक्ष आर्यसमाज सण्डवा विशेष रूप से उपस्थित थे।

कालमुखी में आर्यसमाज की स्थापना व चुनाव

श्री लक्ष्मीनारायण जी भार्गव मन्त्री एवं प्रधान श्री माव जी भाई भानुशाली ने जानकारी दी कि ग्राम कालमुखी में आर्यसमाज की स्थापना हुई व निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये

- प्रधान : श्री जीवनसिंह केलकर
- उप प्रधान : श्री कृष्णजी गुप्ता
- मन्त्री : श्री शशिकान्त जो पटेल
- उप मन्त्री : श्री रामदेव भाई सुकिल
- कोषाध्यक्ष : श्री शकरलाल जी गुप्ता
- पुस्तकाध्यक्ष : श्री चन्दूभाई वासावाल

कार्यकारिणी :

१ श्री लखन पाल जी केलकर,
२ श्री मांगी लाल जी चौहान,
३ श्री जीवा जी भाई,
४. श्री मंगा राम जी,
५. श्री केदार नाथ नागौरी,
६. श्री हरी राम मन्नाती,
७. श्री सुख राम चौहान,
८. श्री रामचन्द्रजी सिन्धी,
९. श्री रमेश चन्द्र चौहान।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N N. o. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on 24,25-11-88 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७९९ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३९

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली

दूरभाष-३१०१५०

मुख्य गतिविधियां

—वेद प्रचार
—ग्राम प्रचार
—वैदिक संस्कारों की व्यवस्था
—रविवासरीय वेद प्रचार की व्यवस्था
—वैदिक साहित्य का प्रकाशन
—साप्ताहिक आर्यसंदेश का प्रकाशन
—आर्य वीर दल
—संस्कृति समम
—विद्वत् परिषद्
—आर्य विद्या परिषद् द्वारा संचालित स्कूल
—नैतिक शिक्षा परीक्षाएं
—मातृ मन्दिर आर्य कन्या गुरुकुल वाराणसी
—गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार
—आर्य कन्या गुरुकुल देहरादून
—आर्यविद्या सभा द्वारा संचालित गुरुकुल कांगड़ी तथा संबंधित संस्थाएं
—दीवान चन्द स्मारक गोकुल चन्द आर्य चिकित्सालय चौबन्दी
—राष्ट्रीय सामाजिक सांस्कृतिक सम्मेलनों का आयोजन
—आपातकालीन सहायता सेवा कार्य

□

शोक समाचार

ला० रामावतार आर्य

दिल्ली के सुप्रसिद्ध सामाजिक तथा धार्मिक कार्यकर्ता एवम् आर्यसमाज दीवान हाल के भूतपूर्व उप-प्रधान ला० रामावतार आर्य का आकस्मिक निधन १३ अक्तूबर १९८८ को हो गया है।

श्री टेकचंद गुप्ता

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के भूतपूर्व मन्त्री श्री सुरेन्द्र कुमार जी "हिन्दी" के पूज्य पिता श्री टेक चन्द जी गुप्ता एडवोकेट का आकस्मिक निधन—११ नवम्बर १९८८ को हो गया है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारीगण एवं सदस्य, ईश्वर से प्रार्थना करते हैं, कि वे दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करें तथा शोक-संतप्त परिवारों को धैर्य प्रदान करें।

"आर्य सन्देश" के
—स्वयं ग्राहक बनें।
—दूसरों को बनायें॥

"आर्यसमाज" के
—सदस्य स्वयं बनें।
—दूसरों को बनायें॥

सेवा में—

'प्रखर'—वैशाख'२०४२

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
... प्रेस, गली नं० १६, ...नगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी (सी) ७९९

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ . अंक ४ | रविवार ४ दिसम्बर १९८८ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८९ | मार्गशीर्ष २०४५ | दयानन्दाब्द—१६४

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २१ रुपये | आजीवन २१० रुपये | विदेश में ... ३० पौंड

सरकार संस्कृत के मामले पर पुनर्विचार करेगी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती तथा वरिष्ठ उप प्रधान श्री सत्यानन्द वन्दे मातरम् ने १० नवम्बर १९८८ को मानव संसाधन विकास मन्त्री श्री पी० शिवशंकर से एक भेंट वार्ता में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के माध्यम द्वारा नई शिक्षा पद्धति पर जारी किए गए परिपत्र पर चर्चा की। बोर्ड के इस परिपत्र के अनुसार संस्कृत भाषा को अन्य विदेशी भाषाओं यथा—जर्मन, फ्रेंच, अरबी, फारसी आदि के समकक्ष रखा गया है, तथा उसे अनिवार्य भाषा के रूप में अध्ययन के लिए स्कूलों के हिन्दी पाठ्यक्रम (अ) के साथ जोड़ा गया है।

बातचीत के परिणाम स्वरूप मन्त्री महोदय ने इस बात को स्वीकार किया कि संस्कृत को अन्य विदेशी भाषाओं के साथ एकसम करने से जनता में जो रोष पैदा हुआ है, वह अकारण नहीं है। संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। उन्होंने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष को निर्देश दिया कि इस दोषपूर्ण स्थिति को शीघ्र दूर किया जाये। आर्य समाज के नेताओं ने बातचीत के समय यह प्रश्न भी उठाया कि संस्कृत भाषा के साथ यह भेदभाव क्यों बरता जा रहा है जबकि संविधान के अनुच्छेद आठ में दी गई प्रमुख भारतीय भाषाओं की सूची में उसका स्थान भी है। हिन्दी को प्रथम भाषा के रूप में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की तरह अन्य भारतीय भाषाओं को प्रथम भाषा के रूप में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में भी संस्कृत को क्यों सम्मिलित नहीं किया गया है।

वार्तालाप के अन्त में मन्त्री महोदय ने शिष्टमण्डल को आश्वासन दिया कि संस्कृत के मामले पर वे सब दृष्टिकोण से पुनः विचार करेंगे।

●

संस्कृत भाषा सारी भाषाओं का मूल है। इस भाषा के सदृश मृदु, मधुर और व्यापक सर्व भाषाओं की माता—ऐसी कौन सी भाषा है ?

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्यसमाज झण्डेवालान का वार्षिकोत्सव

सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य

—सूर्यदेव

आर्यसमाज का कार्य सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के उद्देश्य से ही प्रारम्भ हुआ था। यद्यपि सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन इसका मुख्य उद्देश्य था, तथापि यह आन्दोलन तत्कालीन राजनैतिक और आर्थिक परिस्थितियों के प्रभाव से अछूता न रह सका। आर्यसमाज ने वे सभी कार्य हाथ में लिए जो इस राष्ट्र को सुदृढ़ बनाने के लिए अनिवार्य होते हैं। स्त्री शिक्षा, दलितोद्धार, स्त्रियों के लिए समानता, अनाथालयों की स्थापना करना आदि ऐसे ही कार्य थे। उस समय देश पराधीन था और पराधीनता की बेड़ियों को काटे बिना भी हमारा कर्त्तव्य बन गया था। उस समय अनेक देवी देवताओं की पूजा होती थी। समाज अनेक जातियों में बंटा था। इसे समाप्त करना भी हमारा कर्त्तव्य बन गया था। यही सब तो महर्षि दयानन्द ने किया और आज आर्यसमाज के नेता और कार्यकर्त्ता कर रहे हैं। ये उद्गार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने आर्यसमाज झण्डेवालान के वार्षिकोत्सव पर कहे। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने आर्यजनों का आह्वान किया कि वे किसी भी प्रकार की विपरीत परिस्थिति में घबराएं नहीं तथा राष्ट्र की अखण्डता के लिए प्राणपण से कार्य करें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ० धर्मपाल ने कहा कि आर्यसमाज का इतिहास बलिदानों का इतिहास है और बिना बलिदान के न देश को आजादी मिल सकती थी और न ही समाज का कल्याण हो सकता है। कुछ लोगों को तो आगे आ कर अपना सर्वस्व त्याग कर समाज कल्याण के कार्य अपने हाथ में लेने ही होंगे। मुख्य अतिथि श्री ... जैन ने आर्यसमाज के द्वारा किए जा रहे कार्यों—विशेषकर राहत कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और विश्वास व्यक्त किया कि ये कार्य ही 'जीओ और जीने दो' की भूमिका को सार्थक करेंगे। उन्होंने स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के जन कल्याण के कार्यों का भी विवरण दिया। इस अवसर पर पं० चन्द्रशेखर शर्मा और पं० प्रेमचन्द श्रीधर तथा प्रान्तीय आर्य महिला सभा की महामन्त्री श्रीमती प्रकाश आर्या ने भी आम जनता का मार्गदर्शन किया।

सम्पादक—सूर्यभानु गुप्त

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

गुरुकुल छात्रा का साहसिक कार्य

लेखक—कु० नन्दिता शास्त्री

अञ्जलिबद्ध अर्धनिमीलितनयन भक्तिभाव सम्पन्न पौराणिक नारी समाज शक्ति की अधिष्ठात्री दुर्गा देवी की पूजा चाहे जितनी कर ले किन्तु स्वयं को भी आतताियों दुष्टों के प्रति कालस्वरूपा मानकर व्यवहार कर पाना इन नारियों के लिए आज भी असम्भव सा ही है। उपास्य का भाव उपासक में होना ही चाहिये पर जब उपासना में ही कुछ वैगुण्य हो तो यह होगा कैसे? वर्तमान हिन्दू समाज में पत्नी नारियां अपना दब्बूपन छोड दें, इसके लिए केवल डिग्री प्राप्त कराने वाली शिक्षा की ही आवश्यकता नहीं अपितु हृदय में उस धधकती आग को जगाने की है कि जो प्रत्येक अन्यायी दुष्ट पापियों का मुंह तोड उत्तर दे सके। प्रस्तुत है यहां इस पत्र के माध्यम से एक ऐसी प्रकार की साहसपूर्ण सच्ची घटना का विवरण—

अभी कुछ दिनों पूर्व पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी की आचार्या सुश्री डॉ० प्रज्ञा देवी जी अपनी दो ब्रह्मचारिणियों सुश्री माधुरी स्नातिका तथा कु० सुमित्रा के साथ वैदिक धर्म प्रचारार्थ सुदूर यात्रा पर जी. एल ट्रेन से गोहाटी जा रही थीं। रात एक बजे का समय था। बडी बहिन माधुरी जी नीचे की बर्थ पर अपने सिरहाने रखी अटैची पर हाथ फैलाकर सोने की मुद्रा में अर्धजागृत लेटी हुई थीं। तभी पटरियों पर खिसखिस करती हुई ट्रेन सिलीगुडी स्टेशन पर आकर रुक गई और एक घण्टे पश्चात् यानी ठीक दो बजे जब वह सिलीगुडी स्टेशन से छूटने को हुई थी कि पांच मिनट पूर्व एक सन्दिग्ध व्यक्ति उस डिब्बे में प्रविष्ट हुआ। प्रविष्ट होते ही उसने पूरे डिब्बे का आदि से लेकर अन्त तक दो एक बार सर्वेक्षण किया पर सब को निद्राधीन देख निश्चिन्त हो प्लेट फार्म के दूसरी तरफ का दरवाजा खोलकर खडा हो गया और जैसे ही ट्रेन चलने को हुई वह लपककर अन्दर घुसा और पलक झपकते ही उस बहिन के पास से उस अटैची को जबरदस्ती ही खींचकर भाग खडा हुआ तथा चलती ट्रेन से प्लेटफार्म के दूसरी तरफ वाले द्वार से अटैची सहित कूद गया। एक क्षण का भी बिना विलम्ब किये हमारी साहसी बहिन माधुरी जी चोर चोर चिल्लाते हुए उसके पीछे चलती ट्रेन से ही कूद पडीं। कई पटरियों, बीच में खडी मालगाडी को लांघते हुए गहन अन्धकार में अटैची लेकर भागते की उस चोर ने भरपूर चेष्टा की पर माधुरी बहिन ने उसका पीछा नहीं छोडा और वे भी मालगाडी के नीचे से ही निकलकर उसके पीछे झपटीं। आखिर वह पापी जिसकी आत्मा साक्षात रणचण्डी दुर्गा को अपना पीछा करते देख डर से स्वयं प्रकम्पित हो रही थी जिसके हाथ पैर अपनी गतिमत्ता से जवाब दे रहे थे वह किसी तरह अन्धेरी झाडी तक पहुंच उस अटैची को वहीं फेंक अपना कलंकित मुंह छिपाते हुए अदृश्य हो गया तथा अदम्य साहस की प्रतिमूर्ति हमारी वीर बहिन माधुरी जी अपनी अटैची को वापिस लेकर ही लौटीं।

इधर भयाक्रान्त स्थिति में अनेक सम्भावनाओं से त्रस्त हमारी पूज्या आचार्या डा० प्रज्ञा देवी जी ने तत्काल अपने प्रयास से ट्रेन रुकवाई। ट्रेन रुकते ही आचार्या जी सहित पूरा जन समूह तथा रेलवे स्टाफ घटना स्थल की ओर बढ़ा ही था कि उधर से अटैची लिये हुए माधुरी बहिन को सुरक्षित आता देखकर सब आश्चर्य चकित हो धन्य धन्य कह उठे। आचार्या जी को तो इस विस्मयकारी क्षण ने कुछ पलों के लिए मानो भाव विह्वल जडवत् ही बना दिया। पुन आनन्दातिरेक से अपनी पुत्री को हृदय से लगाते हुए वे ट्रेन में आ बैठीं। वहां माधुरी बहिन के दाये पैर में आयी चोट की तात्कालिक चिकित्सा रेलवे विभाग द्वारा करायी गई और तभी सिलीगुडी प्लेट फार्म से ट्रेन आगे बढ सकी।

वस्तुत आज के युग में इस प्रकार की घटनाये महिला-जगत् के लिए एक चुनौती सदृश है। कहना न होगा कि ऐसा सतेज आत्मबल गुरुकुलीय शिक्षा नीति के प्रभाव से ही उपलब्ध हो सकता है अन्यत्र कालिज आदि के फैशनपरस्ती के वातावरण या मात्र दुर्गा की प्रतिमा पूजन से नहीं।

आर्यसमाज दरियागज का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वेद ईश्वर द्वारा सृष्टि के आदि में दिया गया ज्ञान है। यह ज्ञान प्राणीमात्र के कल्याण के लिए है। यह किन्ही विशेष भौगोलिक सीमाओं मे आबद्ध व्यक्तियों के लिए नही है। यह ज्ञान किसी विशेष जाति के लिए भी नही है। यह विश्वजनीन और सार्वभौमिक है। वेद का ज्ञान मनुष्य मात्र को कर्त्तव्य की भावना से अनुप्राणित करता है। यह किसी से घृणा करना नही सिखाता अपितु सभी के लिए सहृदयता, सद्भाव और स्नेह की शिक्षा प्रदान करता है। हमारा कर्त्तव्य होना चाहिए कि सन्ध्या और यज्ञादि करते समय हम वेद मन्त्रो के अर्थों को आत्मसात् करें तथा तदनुसार अपने जीवन व्यवहार में सुधार लाए। ये विचार दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ० धर्मपाल ने आर्यसमाज दरियागज के वार्षिकोत्सव पर आयोजित वेद सम्मेलन में अपने अध्यक्षीय भाषण में व्यक्त किए। इस अवसर पर लब्धप्रतिष्ठ वैदिक विद्वान् श्री प्रेम चन्द्र जी श्रीधर और महात्मा वेदेश भिक्षु जी महाराज ने भी आर्य जनता का मार्ग दर्शन किया। श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज ने अपनी हास्य कविताओं से श्रोताओं आनन्दित किया। इस से पूर्व राष्ट्रीय एकता सम्मेलन में अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र प्रताप चौधरी, श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, आचार्य नरेश पाल जी और प० शिव वीर शास्त्री के और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव जी ने राष्ट्रीय एकता के लिए आर्यसमाज द्वारा किए गए कार्यों की चर्चा की और आशा व्यक्त की कि कोई भी शक्ति राष्ट्रीय एकता को भग नहीं कर सकेगी। आर्य महिला सम्मेलन प्रान्तीय आर्य महिला सभा की अध्यक्षा श्रीमती सरला मेहता की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्रीमती ऊषा शास्त्री और डॉ० शशिप्रभा ने आर्य महिलाओं को सम्बोधित किया।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

प्रार्थना गीतमाला

ओ३म य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिष यस्य देवा ।
यस्य च्छायाऽमृत यस्य मृत्यु: कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥

प्रभु को छाया से हट जाये, उस पर मृत्यु सदा मडराये ।
वह क्यो माया में भरमाये, प्रभु की छाया जो पा जाये ॥

यह आत्म नाथ दे दो सब को
दियाज्ञान भी उसका हम को
जीव-प्राण दाता बलदा ने
दे दिया त्रिविध बल भी हमको ।

तन मन-इन्द्रिय का बल पाये, इसका अनुशासन अपनायें ।
वह क्यो माया में भरमाये, प्रभु को छाया जो पा जाये ॥

विद्वान् मूर्ख सब जड चेतन
बसें उसी के नियम निकेतन
जहां जीव उल्लघन करते
हों दण्ड योनि में उनके तन ।

जो दिव्य नियम में ढल जाये, प्रभु साथ बैठ वह सुख पाये ।
वह क्यों माया मे भरमाये, प्रभु की छाया जो पा जाये ॥

हो सत्य पिता के विश्वासी
कर प्रेम भक्ति हो सहवासी
वह संग परम सुखदायक के
हों अमर लोक के अधिवासी ।

केवल माया में भटकाये, उससे माया ही छूट जाये ।
वह क्यों माया में भरमाये, प्रभु की छाया जो पा जाये ॥

—देवनारायण भारद्वाज

ओ३म्
आर्य सन्देश

"जो उन्नति करना चाहो तो 'आर्यसमाज' के साथ मिलकर उनके उद्देश्यानुसार आचरण स्वीकार कीजिये नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा, क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है आगे भी होगा उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें इसलिये जैसा 'आर्यसमाज' आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता।"

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्वदेशी

एक समय वह था, जब भारतवर्ष संसार का सब से अधिक सम्पत्तिवान् और वैभवशाली देश समझा जाता था। हमारे प्राचीन-साहित्य तथा इतिहासकारों के ग्रन्थों से विदित होता है कि उस काल में यहां पर क्वाचित् ही कोई व्यक्ति भूखा, नंगा दिखलायी पड़ता था और सैकड़ों वर्षों में कभी एक बार दुष्काल का नाम सुनने में आता था। उस युग में शस्य-श्यामला भारतभूमि कामधेनु बनी हुई थी और यहां सचमुच ही घी-दूध की नदियां बहती थीं। यहां के सोने, चांदी और जवाहरातों का वर्णन सुनकर विदेशियों के मुंह में पानी भर आता था और वे इस देश का मार्ग ढूंढने के लिए व्याकुल होकर इधर-उधर भटकते फिरते थे। परन्तु जब से हमारे देश पर विदेशियों का आधिपत्य शुरू हुआ हम अपनी चीजों का आदर करना भूल गये और विदेशी वस्तुओं का मोह करने लगे। तभी से हमारा पतन प्रारम्भ हुआ और लक्ष्मी-स्वरूपिणी भारत माता दीन-हीन भिखारिणी बनने लगी। आज प्रतिवर्ष करोड़ों नहीं, अरबों रुपयों के माल का आयात इस भूमि पर होने लगा है। यदि हम इस शोचनीय अवस्था से निकल कर पुनः अपने प्राचीन वैभव को प्राप्त करना चाहते हैं, तो विदेशियों की भांति हमें भी, 'भारतीय बनो, भारतीय सामान का उपयोग करो" Be Indian Buy Indian इस आदर्श वाक्य के अनुसार आचरण करना चाहिये। यदि प्रत्येक भारतीय नर-नारी मनसा कर्मणा यह प्रतिज्ञा कर ले कि वे अपने देश की बनी वस्तुओं को त्याग कर कभी विदेशी वस्तुओं की आकांक्षा नहीं करेंगे, चाहे वे कैसी भी सस्ती और सुन्दर ही क्यों न हों, और जो वस्तुएं अभी देश में उपलब्ध नहीं हैं, उनका प्रयोग जहां तक बन पड़ेगा कम कर देंगे, तो थोड़े समय में ही हमारी वर्तमान आर्थिक अवस्था में आश्चर्य जनक परिवर्तन आ जायेगा, और हम विश्व के अन्य पूर्णतया स्वावलम्बी राष्ट्रों के निवासियों की तरह सुखी और स्वच्छन्दतापूर्वक जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

श्रद्धानन्द बलिदान अंक

'आर्यसन्देश' के लेखकों कवियों, पाठकों, आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से विनम्र निवेदन है कि २५ दिसम्बर को अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान दिवस पर प्रकाश्य 'आर्यसन्देश' के विशेषांक के लिए अपने अमूल्य मौलिक-लेख, कविताएँ तथा विज्ञापन शीघ्र भेजें, जिससे यह अंक समय पर सभी पाठकों तक पहुंचाया जा सके।

महर्षि दयानन्द परमात्मा की अनुपम भेंट थे

—रामबलि उपाध्याय

अजमेर, ..।११।८८, महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास भवन में महर्षि दयानन्द जी महाराज का १०५ वाँ निर्वाणोत्सव मनाया गया।

मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए श्री रामबलि उपाध्याय उप कुलपति अजमेर विश्वविद्यालय ने महर्षि दयानन्द के कृतित्व एवं व्यक्तित्व का विवेचन करते हुए बताया कि महर्षि दयानन्द परमात्मा की अनुपम देन थे। आडम्बर व कुरीतियों से आज भी आर्यसमाज को जूझना है और इसके लिए आत्म अनुशासन आवश्यक है। आर्यसमाज का अतीत बहुत ही उज्ज्वल व गौरवपूर्ण रहा है। आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर चल कर हम मन व इन्द्रियों को वश में कर अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं। हमें आत्मवत सर्वभूतेषु की दृष्टि से देखना है महर्षि दयानन्द ने एक क्रान्ति उपस्थित कर दी और यही वजह थी कि देश एक नई दिशा में सोचने लगा। आपने बताया कि गंगा पवित्र होते हुए भी कीचड़ आ जाता है, इसी प्रकार भारत में कुछ कुरीतियां व आडम्बर कीचड़ के रूप में आ गया था, जिसे महर्षि जी ने साफ किया। आपने आह्वान किया कि आर्यसमाज अपना कार्यक्षेत्र बढ़ाये और इस बात का ध्यान रखे कि आर्यसमाज हिन्दुओं से अलग न होकर, पथ प्रदर्शक बना रहे।

अध्यक्षीय पद से अपने उद्बोधन में "दैनिक-न्याय" के प्रधान सम्पादक श्री विश्वदेव जी शर्मा ने आर्यों का आह्वान किया कि आर्यसमाज में आई शिथिलता को दूर कर तथा ऋषि के मार्ग पर चलते हुए देश व समाज की सेवा करें।

इस अवसर पर वैदिक विद्वान् महात्मा आर्यभिक्षु प्रो० बुद्धिप्रकाश सुश्री सरला शारदा ने भी महर्षि के प्रति भाव पूर्ण श्रद्धांजली अर्पित की।

महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास के मन्त्री श्री मदन मोहन शास्त्री ने सभी अतिथियों का स्वागत किया तथा न्यास की गतिविधियों का परिचय दिया।

श्री मदन मोहन शास्त्री ने उप कुलपति जी को न्यास की ओर से एक ज्ञापन देते हुए अजमेर विश्वविद्यालय में दयानन्द पीठ प्रारम्भ करने की मांग की।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
आचार्य गोवर्धनशास्त्री पुरस्कार–१९८९

सघड़ विद्यासभा ट्रस्ट जयपुर द्वारा निर्धारित १२००/-रु० का आचार्य गोवर्धनशास्त्री पुरस्कार प्रतिवर्ष गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा दिया जाता है। गत वर्षों में यह पुरस्कार डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, प० रामप्रसाद वेदालंकार, प० भगवद्दत्त वेदालंकार, डा० भवानीलाल भारतीय, प० विश्वनाथ विद्यालंकार, श्री दत्तात्रेय बाब्ले, डा० लक्ष्मी नारायण दुबे आदि जैसे आर्यसमाज के मनीषियों को उनके द्वारा किये गये वेद प्रचार व सामाजिक सेवाओं के लिए प्रदत्त किया गया है।

आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार उन्हीं सज्जनों एवं संस्थाओं को दिया जाता है जो वेद, उपनिषद्, दर्शनशास्त्र आदि आर्ष साहित्य का प्रचार एवं प्रसार जन सामान्य तक करते हैं।

आपसे निवेदन है कि यदि आप की दृष्टि में कोई महानुभाव अथवा संस्था आगामी वर्ष के लिए इस पुरस्कार के योग्य हो तो उसका पूर्ण विवरण डा० वीरेन्द्र अरोड़ा, कुलसचिव, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के पते पर ३१ दिसम्बर ८८ तक भेजें।

सभ्यतायुक्त आचरण करने से ही, मनुष्य सभ्य समझा जाता है।

मैक्समूलर के वेद भाष्य का उद्देश्य—हिन्दुओं का धर्मान्तरण

डा० कृष्णवल्लभ पालीवाल, पी० एच० डी०

आज अपने देश में प्राच्य विद्या विशारद एवं संस्कृतज्ञ ही नहीं अपितु सामान्य नागरिक भी मैक्समूलर के नाम से परिचित हैं और कुछ उसे भारत का अत्यन्त हितैषी भी मानते हैं कुछ यहां तक कहते नजर आते हैं कि जर्मन होते हुए भी उसने हमारे वेदादि शास्त्रों को अंग्रेजी में भाष्य कर के बडा उपकार किया है। पश्चात्य जगत् मे आज जो भी वैदिक वाङ्मय का प्रचार है वह प्रो० मैक्समूलर की सतत साधना एवम् अगाध निष्ठा का परिणाम है। विदेशों में संस्कृत एवं वेदादि शास्त्रों में अध्ययन की रुचि मैक्समूलर की प्रेरणा का फल है, जब कि वस्तुत पाश्चात्यों के इन धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन का मूल उद्देश्य कुछ और ही है।

निःसंदेह प्रो० फ्रैडरिक मैक्समूलर ने वेदों, भाषा विज्ञान, संस्कृत साहित्य भारतीय दर्शन एवं धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन पर विशाल साहित्य सृजन किया है। वेदों को मुद्रण कराने का श्रेय उनको है। इसके अतिरिक्त उन्होंने आक्सफोर्ड विश्व विद्यालय (१८४७-१९०० से पूर्व की पवित्र पुस्तकें ग्रन्थ माला के अन्तर्गत पच्चीस ग्रन्थों को सम्पादित कर के पचास भागों में प्रकाशन कराया है। ये पुस्तकें वेद, उपनिषद, गीता, वेदान्त से लेकर जैन, बौद्ध इस्लाम और चीनी धर्म से सम्बन्धित हैं। आखिर इन धार्मिक ग्रन्थों पर इतने विशाल साहित्य सृजन में प्रो० मैक्समूलर का मूल उद्देश्य क्या था? क्या वे वेदों की सार्वभौमिक, सर्वकालिक एवं सार्वदेशिक शिक्षाओं से पाश्चात्य जगत् को अवगत करना चाहते थे? या एक निष्पक्ष शोधकर्ता की दृष्टि से केवल उनका तुलनात्मक अध्ययन करना चाहते थे? या इस सब के पीछे मूल भावना कुछ और ही थी। इन्हीं कुछ प्रश्नों पर यहां संक्षेप में विचार किया जावेगा।

इन प्रश्नों का उत्तर प्रस्तुत करने से पहले मैं आपका ध्यान भारत की तत्कालीन आन्तरिक एवं राजनैतिक अवस्था की ओर आकर्षित करना चाहूंगा।

१९ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में इधर मैकाले अंग्रेजी में शिक्षा द्वारा भारतीय नवयुवकों को यहां की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति से दूर ले जाने का प्रयत्न कर रहा था तो उसके विपरीत भारतीय जन समूह अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह की तैयारियां कर रहा था, जिसकी चिनगारियां १८५७ के स्वातन्त्र्य संग्राम में प्रस्फुटित हुईं जिन्हें दबाना अंग्रेजों को बडा मुश्किल हो रहा था। अत मैकाले आदि शासकों ने सोचा कि इस क्रान्ति को केवल सैनिक शक्ति से ही नहीं बल्कि तोड-फोड की नीति से भी दमन करना चाहिए। 'विभाजन और शासन' जो बुराकी शोषण नीति है, भारत के लिये हमारी भी वही होनी चाहिये। इसका प्रमाण एशियाटिक जरनल (१८२१), लै० जनरल जौन कुक (१८५७) और लार्ड ऐल्फिन्स्टन् (१८५९) आदि के लेखों से स्पष्ट मिलता है। धर्म और संस्कृति के क्षेत्र में इस नीति को क्रियान्वित करने के लिए लार्ड मैकाले एक ऐसे व्यक्ति की तलाश में थे जिसका अंग्रेजी और संस्कृत दोनों ही भाषाओं पर अधिकार हो ताकि वह अपनी प्रवाहमयी लेखनी से भारतीयों के दिल और दिमाग में उनके धर्म और संस्कृति के प्रति अश्रद्धा एवं हेय भावना पैदा कर सके। और भारत के दुर्भाग्यवश उसे ऐसे समय में पैरिस विश्वविद्यालय में संस्कृत प्रोफेसर यूजिन बरनोफ से ऋग्वेद का अध्ययन करता हुआ एक ऐसा नवयुवक मिल भी गया। वह था फ्रेडरीक मैक्समूलर। २८ दिसम्बर १८५५ को लार्ड मैकाले मैक्समूलर भेंट भारत विरोधी साहित्य सृजन के नींव की तारीख थी। मैक्समूलर ने स्वयं स्वीकार किया कि मैकाले से मिलने के पश्चात् वह अधिक गम्भीर हो गया (मैक्समूलर की जीवनी और पत्र)।

मैक्समूलर को भारतीय धर्म एवं संस्कृति विरोधी साहित्य रचने के लिए आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में एक पद दिया गया। वस्तुत इस विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग, भारतीय सांस्कृतिक ग्रन्थों का अनुवाद करने के लिए स्थापित किया गया था, ताकि भारत में धर्म परिवर्तन का कार्य सरलता पूर्वक चलाया जा सके। वहां संस्कृत प्रोफेसर के लिये बोडन चेयर, इसी उद्देश्य से स्थापित की गई थी जिसके स्थापक कर्नल बोडन की १५ अगस्त सन् १८११ की वह इच्छा थी जिसे मोनीयर विलियम्स ने अपनी संस्कृत इंगलिश शब्द कोष की भूमिका में स्पष्ट व्यक्त किया है। यहां आकर मैक्समूलर ने योजनाबद्ध कार्य प्रारम्भ कर दिया। सर्वप्रथम उसने ऋग्वेद का मुद्रण कराया। तत्पश्चात् उसका भाष्य सायण शैली पर प्रारम्भ किया, परन्तु हम देखते हैं कि अनेकों मौलिक सिद्धान्तों पर मैक्समूलर सायण से बिलकुल भिन्न हैं। जैसे वेदों का रचना काल, वैदिक देवतावाद हिनोथी इस्म वेदों की रचना, वेदों में इतिहास आदि जो बाद में असत्य सिद्ध हो रहे हैं। मैक्समूलर की वैदिक वाङ्मय को नष्ट करने एवं उनमें भारतीयों के मन में अश्रद्धा उत्पन्न करने की भावना की झलकियां उनके साहित्य, जीवनी एवं पत्रों से स्पष्ट होती हैं।

यदि हम प्रो० मैक्समूलर के साहित्य को गम्भीरता पूर्वक अध्ययन करें तो इसमें एक विचित्र विरोधाभास प्रकट होता है। एक ओर वे भारतीय धर्म ग्रन्थों एवं वेदादि शास्त्रों की अगाध निष्ठा से प्रशंसा करते नजर आते हैं। और विश्व इतिहास भाषा विज्ञान एवं विकास की प्रगति में इन ग्रन्थों का महत्त्वपूर्ण योग मानते हैं तो दूसरी ओर बडी ही व्यंग्यात्मक भाषा में वे उन पर कटु प्रहार करते हैं। उदाहरणार्थ दी वेदाज की भूमिका में लिखते हैं कि 'यह विचार सही करना चाहिये कि ऋग्वेद के जर्मन, फ्रेन्च और अंग्रेजी में अनेकों भाष्य हुए हैं, अत हमने वेदों की समस्त शिक्षाओं को समझ लिया है। वस्तुत: इसके अलावा प्रत्येक भाष्य में अनुवादक के अपने प्रस्तावित विचार हैं। हम अभी वैदिक साहित्य की ऊपरी सतह पर ही घूम रहे हैं।" यह उनकी वेद की अन्तरात्मा को समझने की जिज्ञासा को प्रकट करता है। वे वेद पठन-पाठन की आवश्यकता को इस प्रकार व्यक्त करते हैं।

मैं मानता हूं कि जो स्वयम् अपना, पूर्वजों और अपने इतिहास का अध्ययन करना चाहता है उसके लिए वेद आवश्यक हैं। आर्यजाति के अध्ययन के लिए वेद से अधिक महत्त्व पूर्ण कुछ अधिक नहीं है।" भारतीय संस्कृति के अध्ययन के लिए वेद क्यों आवश्यक हैं—इसका उत्तर उन्होंने 'इण्डिया वाट इट केन टीच अस" में कुछ लोगों के पूछे जाने पर कि वेदों के अध्ययन एवं मुद्रण से हमें, मिशनरियों या जो भारतीयों को प्रभावित करना चाहें उन्हें इससे क्या लाभ है? उन्होंने बताया कि "क्योंकि वेद की महिमा अन्य समस्त प्राचीन ग्रन्थों जैसे मनुस्मृति, महाभारत आदि में गाई है। वेद ही इन सब का आधार हैं।" इस प्रकार की प्रशंसा के अलावा वहां ऐसे भी अनेकों उदाहरण हैं जिनसे सिद्ध होता है कि मैक्समूलर के हृदय में वैदिक वाङ्मय के प्रति श्रद्धा नहीं है और वे किसी और ही उद्देश्य से वैदिक वाङ्मय पर विशाल साहित्य निर्माण में संलग्न हैं। उदाहरणार्थ 'वाट इज वेद' भाषण में कहते हैं कि "वैदिक ऋचाएं, बचपनी मुश्किल, सामान्य और निम्न स्तर की हैं।" ५० वर्षों के वेदाध्ययन से उन्हें वेदों में यही मिला। वे आगे कहते हैं कि 'उस समय के लोगों ने सर्वप्रथम, सूर्य, चन्द्र, नदी, पर्वत, वायु, पृथ्वी आदि देखे। अत उनसे भयभीत होकर अपनी रक्षा के लिए उनसे प्रार्थना करने लगे। यही विषय बार बार दोहराया गया है। वेद बहु देवतावाद से भरे पडे हुए हैं और वह शक्तियों की उपासना व्यक्त करते हैं, जब कि सत्य इसके विपरीत है।" मैक्समूलर का वैदिक दृष्टिकोण मूलत वेद की आत्मा से दूर ही नहीं विपरीत भी है। यह उनकी भारतीय वेदाध्ययन पद्धति की अनभिज्ञता प्रकट करता है। वास्तव में वेदों में न कहीं जड पूजा है, न बहु देवतावाद। उनमें एक ही ईश्वर को विभिन्न नामों से पुकारा गया है जो कि 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति। ऋ० १।१६४।४६ से स्पष्ट है। परन्तु जैसा कि उन्होंने अपनी पत्नी को पत्र लिखते हुए (१८६६) स्पष्ट कर दिया कि मेरे वेद भाष्य का मूल उद्देश्य तो वेदों को समूल नष्ट करना है, न कि उसके वास्तविक रूप को प्रस्तुत करना तो जितना भी वेद की मौलिक

मैक्समूलर के वेद भाष्य का उद्देश्य . .

भावना के विरुद्ध जिस देवें उतना ही थोडा है। उनका वह पत्र इस प्रकार है—"मुझे आशा है कि मैं यह कार्य सम्पूर्ण कर सकूगा और मुझे पूर्ण विश्वास है, यद्यपि मैं उसे देखने को जीवित नहीं रहूगा तथापि मेरा यह संस्करण और वेद भाष्य आद्योपान्त बहुत हद तक भारत के भाग्य पर और उस देश की लाखों आत्माओं पर प्रभाव डालेगा। वेद उनके धर्म का मूल हैं और मुझे विश्वास है कि इनको यह दिखाना ही कि वह मूल क्या है। उस धर्म को नष्ट करने का एक मात्र उपाय है जो गत तीन हजार वर्षों से उससे (वेद से) उत्पन्न हुआ है।"

मैक्समूलर वेद की मूल आत्मा को नष्ट कर के ही शान्त नहीं हो जाना चाहता है। वरन आगे भी वह अपने उद्देश्य को १६ सितम्बर १८६८ को ड्यूक आफ आरगायल तत्कालीन मुख्य सचिव भारत सरकार को लिखे पत्र में इस प्रकार स्पष्ट करता है—

"भारत के प्राचीन धर्म का पतन हो गया है, यदि अब भी ईसाई धर्म प्रचलित नहीं होता है तो इसमें किस का दोष है ?"

व अपने एक पत्र में बतलाते हैं कि भारतीय धर्म ग्रन्थ एवं वेदादि शास्त्रों को किस प्रकार पढ़ना चाहिए और इस तरह से पढने पर ही भारत में तुम्हारा भविष्य सरल हो जायेगा।

२० जनवरी १८८२ को श्री बाईरेन्जी मालाबारी को लिखा, उनका वह पत्र इस प्रकार है—

मैं कम से कम उन थोड से लोगो को बताना चाहता हू जिन तक मैं अपने विचार अग्रेजी द्वारा पहुचा सकता हू कि उस प्राचीन धर्म का ऐतिहासिक महत्त्व क्या है ? जैसा कि समझा जाता है न केवल योरोपीय या ईसाई की दृष्टि से अपितु ऐतिहासिक दृष्टिकोण से मैं आपको दो आपत्तियों से चेतावनी देना चाहता हू, प्रथम तो भारतीय राष्ट्र धर्म को अवहेलना या न्यून मूल्यांकन करना जो प्राय तुम्हारे अर्ध यूरोपीय नवयुवकों द्वारा किया जाता है और दूसरे वेदों का अधिक मूल्यांकन या ऐसा अनुवाद करना जो कभी नहीं किया गया। ऐसा दुखद थोथ वेदों पर दयानन्द सरस्वती के भाष्य में प्रकट होता है। वेदों को प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थ मानो जिनमें एक प्राचीन और सरल प्रकृति के मनुष्यो के विचारों का चित्रण है तब तुम इसकी प्रशसा कर सकोगे और इसमें से उपनिषदों की शिक्षाओं को इस आधुनिक युग मे भी ग्रहण कर सकोगे लेकिन तुम वेदों में खोज करो, वाष्प इजन, बिजली, योरोपीय दर्शन और नैतिकता की। वेदो को उसके सत्य रूप से अलग कर दो और उसके वास्तविक रूपों को नष्ट कर दो। और तुम प्राचीन और अर्वाचीन के ऐतिहासिक क्रम को जो इन्हें बाधे हुए हैं छिन्न भिन्न कर दो। अतीत एक सत्य है ऐसा मानो। उसका अध्ययन करो तब तुम्हें भविष्य में अपना मार्ग ठीक करने में कम कठिनता होगी।"

यह है वास्तविक उद्देश्य, जिसके लिए प्रो० मैक्समूलर ने भारतीय धम ग्रन्थो पर इतना परिश्रम किया और अन्त मे आपको उसके लक्ष्य की ओर ले आना चाहता हू। वहाँ वे किस प्रकार भारतीय नवयुवको को स्वधर्म में दीक्षित होने के लिए प्रोत्साहित करता है। १८९९ मे ब्रह्म समाजो नेता एन. के मजुमदार को लिखे पत्र में यह भावनाए स्पष्ट झलकती हैं वह लिखता है कि "तुम जानते हो कि मैंने तुम्हारे भारत के प्रिय धर्म को शुद्ध करने के लिए प्रयत्न एवम् उसके द्वारा उसे अन्य धर्म विशेषकर ईसाईयत पवित्रता और पूर्णता के समीप लाने के कार्य का अनेक वर्षों से अध्ययन किया है। सब से पहले तुम्हें यह निश्चय करना होगा कि तुम अपने प्राचीन धर्म का कितना भाग त्यागने को तैयार हो यदि उसका समस्त नही जो कि पुराना कहा जाता है। तुमने इसमें से काफी मात्रा में त्याग दिया है, जैसे बहु देवतावाद, मूर्ति पूजा और धूमधाम से की गई बलि पूजा। तत्पश्चात् न्यूटैस्टामेण्ट उठाओ और स्वय पढो और निश्चय करो कि उसमें लिखे ईसा के शब्द तुम्हें सतुष्ट करते हैं अथवा नहीं, ईसा के श्रद्धायुक्त वचनों में अन्तरनिहित उपदेश तुम तक वैसे हो आयेंगे जैसे कि वे हम तक आते हैं। हमें उन उपदेशों का अपना धर्म करने का अधिकार नहीं है। विशेष कर यदि हम इनका स्वय भिन्न अर्थ करें। यदि तुम इसकी शिक्षाओं को अक्षरश: स्वीकार करो तो तुम भी ईसाई हो या हो सकते हो। यदि तुम उसे अपनी मुख्य परेशानियां बताओ जो तुम्हें स्पष्ट रूप से ईसाई बनने में बाधा डालती हैं, और जब मैं लिखूगा तब उसे स्पष्ट करने की पूरी कोशिश करूगा कि किस प्रकार मैंने और मेरे साथियो ने उनका मुकाबला किया है। मेरी दृष्टि में भारत का मुख्य भाग ईसाई बन चुका है। तुम्हें ईसाई बनने में समझाने बुझाने की जरूरत नहीं है। तब तुम स्वयम् अपने धर्म परिवर्तन के बारे मे विचार करो। तुम से पूर्वगामियों ने पुल का निर्माण कर दिया है। निर्भयता पूर्वक आगे बढो। यह तुम्हारे कारण टूटेगा नही और उस पर तुम्हारे स्वागत के लिए अनेको मित्र हैं, जिनमें तुम्हारे पुराने मित्र और साथी फ्रेड्रिक मैक्समूलर से ज्यादा कोई प्रसन्न नहीं होगा।

विश्व के प्रमुख धर्म ग्रन्थो में वेद का क्या स्थान है ?

इसका उत्तर वे अपने पुत्र को इस प्रकार देते हैं —

'श्रेष्ठता की दृष्टि से ये धर्म ग्रन्थ क्रमश इस प्रकार हैं—

ओल्ड, न्यू टैस्टामेण्ट, कुरान, बोद्धों की त्रिपिटका, कन्फूसीस का धर्म ग्रन्थ, वेद और जिन्दावस्ता। तथाकथित वद प्रेमो प्रा० मैक्समूलर का यह है तुलनात्मक मूल्याकन।

फ्रड्रिक मैक्समूलर के भारतीय धर्म ग्रन्थों के भाष्य एव साहित्य सृजन मे विशेष रुचि लेने के उद्देश्य का प्रामाणिक उत्तर इन व्यक्तिगत पत्रों से अधिक और क्या हो सकता है। व आजीवन एक छद्मवेशी की तरह वैदिक वाङ्मय विरोधी साहित्य सृजन करते रहे और इन भावनाओं को स्पष्ट रूप से अपने भाषणों या ग्रथो में व्यक्त न कर सके। उसे उन्होंने अपने पारिवारिक सदस्यों एव मित्रो को लिख कर दिया। वे ५० वर्ष तक लगातार लार्ड मैकाले की भारत विरोधी साहित्य सृजन की योजनानुसार भारतीय जनता का वेदादि शास्त्रो के प्रति अश्रद्धा और पाश्चात्य जगत् मे इनको हेय एव निम्न कोटि का सिद्ध करने का प्रयत्न करते रहे। हालांकि अब उनकी वेदसम्बन्धी लगभग सभी कल्पनाए मिथ्या सिद्ध हो चुकी हैं और भारतीय धीरे-धीरे मैक्समूलर के वैदिक वाङ्मय अध्ययन के उद्देश्य को समझते जा रहे हैं। फिर भी उनके बोये बीज आज भी कभी कभी अकुरित हो उठने हैं। आज जो भी सांस्कृतिक आधार पर राष्ट्रीय अखडता एव सामाजिक व राजनैतिक समस्याए हैं उनका आधार प्रो० मैक्समूलर का भारत विरोधी भ्रामक साहित्य एव प्रचार है।

समस्त पत्र मैक्समूलर की जीवनी और पत्रों से लिये गये हैं। मैक्समूलर का समस्त वैदिक साहित्य भारतीय परम्परा के पूर्णतया विपरीत एव त्याज्य है।

●

(पृष्ठ २ का शेष)

दरियागंज का वार्षिकोत्सव

समाज सुधार सम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती मुख्य अतिथि थे। श्री जगवीर सिह एडवाकेट, डा० महेश विद्यालकार और प० प्रेमचन्द्र श्रीधर ने आर्य जनता को समाज मे फैली बुराइयों को दूर करने में यथाशक्ति सहयोग देने के लिए प्रेरणा दी। इस सम्मेलन की अध्यक्षता पूर्व पार्षद श्री प्रकाश चन्द्र जैन ने की। वार्षिकोत्सव के अवसर पर श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मात्व में बृहद्यज्ञ का आयोजन किया गया। प० शिववीर शास्त्री और रामचन्द्र शर्मा सगीताचार्य ने अपूर्व योगदान किया। आर्यसमाज के प्रधान श्री वी वी सिंगल, मन्त्री श्री वीरेन्द्र पाल; प्रधाना श्रीमती लक्ष्मी देवी और मन्त्रिणी श्रीमती सत्या वेद ने अपने साथियो के सहयोग से इस समारोह को सफल बनाने में रातदिन अथक प्रयास किया।

शोक समाचार—

श्री सुन्दर लाल भल्ला

आर्यसमाज दीवान हाल के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री राजसिह के बडे भ्राता श्री सुन्दर लाल जी भल्ला का आकस्मिक निधन १० अक्तूबर १९८८ को हो गया है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी एव सदस्य ईश्वर से उनकी दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए तथा परिजनों को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

■

गतांक से आगे. .

विश्वव्यापी असमानता से मुक्ति पाने के वैदिक उपाय

लेखक—चमन लाल आर्य

यथा धनुसहस्रेषु
वत्सो विन्दति मातरम्।
तथा पूर्वकृत कर्म
कर्तारम् अनुगच्छति ।।
महाभारत ६।२२

अत कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है। अवश्यमेव भोक्तव्य कृत कर्म शुभाशुभम्। अत मनुष्य को चाहिए कि सर्वहितकारी कर्म करके पुण्य का भागी बनें।

विषमता के भयानक परिणाम—

"विषमता' राष्ट्र के लिए एक घोर अभिशाप है। जिस को दूर करना प्रत्येक देशभक्त, बुद्धिमान् तथा सम्पन्न धनवान् व्यक्ति का परम पवित्र कर्त्तव्य होना चाहिए। इस के अभाव मे ही आज देश मे अशान्ति और अराजकता की लहर दौड रही है। विषमता के कारण ही एक वर्ग के लोग दूसरे वर्ग के लोगो के शत्रु बन गये हैं। अभावग्रस्त लोग सम्पन्न लोगो के वैभव को देखकर ईर्षा की अग्नि मे जल रहे हैं और तोड फोड कर हताश होकर देश मे अशान्ति और अराजकता फैलाते हैं। मारपीट, तोड फोड, प्रदर्शन करना धरने धरना, सरकारी सम्पत्ति का नष्ट करना बसो का फूकना हडताल करना, राष्ट्रविरोधी नारे लगाना और इसी प्रकार के अनेको अराष्ट्रीय तत्त्वो के द्वारा जन साधारण का जीवन अस्त व्यस्त करना—ये सब विषमता के दुष्परिणाम होते हैं। जो धनराशि हमारे कल्याण और राष्ट्र के विकास कार्यों मे लगनी चाहिए थी, वह इन राष्ट्र विरोधी तत्त्वो को दमन करने में लगती है। इसलिये निर्धनो को जीवन उपयोगी जरूरी वस्तुएँ सुविधा से सही मूल्यो पर उपलब्ध नही होती। ईर्ष्या और द्वेष की अग्नि चहु ओर भडक रही है।

विषमता मानो एक अमर बेल की तरह है जो राष्ट्ररूपी वृक्ष पेड से ऐसे चिपट, लिपट गई है कि जिस कारण यह राष्ट्र वृक्ष पनपने फलने फूलने नही पाता। यह असमानता रूपी विष राष्ट्र-समाज की रग-रग में ऐसे व्याप गया है कि जिससे छुटकारा पाना कठिन ही नहीं, अपितु कुछ असम्भव सा प्रतीत होता है। परन्तु यह भी सत्य है कि इस विषमता असमानता में कुछ सुधार लाये बिना देश-समाज का कल्याण भी तो नही दीखता। सवर्ण पर धनी, सम्पन्न, सत्ताधारी लोग अभाव ग्रस्त, साधन हीन अशिक्षित वर्ग हीन लोगों से कुछ पशुओ से भी अधिक दुर्व्यवहार करते हैं। बिहार प्रान्त की ताजी घटनाओ से यह स्पष्ट हो जाता है अत इस प्रकार के असह्य व्यवहारो को दूर करने के कुछ सक्रिय कदम उठाना जरूरी हैं। जिन के कार्य मे लाने से समाज में शान्ति स्थापित की जा सकेगी।

विषमता को दूर करने के कुछ उपाय

निस्सदेह विषमता असमानता एक विश्वव्यापी रोग है। परन्तु इस के कुप्रभाव हमारे देश मे कुछ अधिक ही दिखाई देते हैं। वैसे तो चीन रूस आदि तथाकथित समाजवादी देशो में भी इस विषमता का कुछ कम प्रभाव नही है। उन देशों की सरकारो ने राजनीतिक उपायो से इस विषमता को दूर करने हेतु कुछ उपाय किये तो अवश्य परन्तु उन उपायो मे राजदण्ड का भय और जबरदस्ती की भावना के कारण कुछ प्रगति हुई प्रतीत नही होती। अत वे देश भी जबरदस्ती वाली नीति को छोड प्रजा जनो के कामो मे कुछ कुछ स्वतन्त्रता देकर विषमता से छुटकारा पाने पर विवश हो गये हैं। रूस के महान नेता श्री गोरबाचौव ने तो अभी हाल मे ही कुछ सक्रिय कदम उठाये हैं इस दिशा में, वास्तविकता तो यह है कि हम इस विषमता को शत प्रतिशत तो दूर नही कर सके परन्तु इस मे कुछ सदेह नही कि धनी सम्पन्न लोग अपनी उदारता, हृदय की विशालता, व्यापक मनोवृत्ति, दानशीलता, दयालुता, सदभावना आदि अनेकों मानवीय और सहानुभूति की भावनाओ के द्वारा इस घोर भयानक रोग असमानता से बहुत दूर तक मुक्ति पा सके हैं। हमारे धर्म ग्रन्थों उपनिषदो तथा सृष्टि के आदि में ईश्वर प्रदत्त वेदो मे हमारे जीवन यापन के कुछ ऐसे अमूल्य सारगर्भित सिद्धान्तों का बडे सुन्दर ढङ्ग से विवेचन किया गया है और उनको व्यवहार में लाने आत्मसात करने मात्र से ही यह विषमता बहुत हद तक स्वत ही दूर हो सकती है। इस सम्बन्ध मे हमें किसी समाजवादी देशों से कुछ भी सीखने की आवश्यकता नहीं है। बृहदारण्यक उपनिषद् में आया है कि सृष्टि के प्रारम्भ मे आत्मा ने कामना की कि धन प्राप्त हो जिससे मैं यज्ञ करूं और दान दू।

अथ वित्तं मे स्यादथ कर्म कुर्वीयेति।

वास्तव में यज्ञीय जीवन ही दीन दुखी अभाव ग्रस्त साधन हीन लोगो की सहायता करने का नाम है। ऋग्वेद में आया "अराति" शब्द स्पष्ट कर रहा है कि प्रदान की भावना को छोडकर दानशील बनो एक और प्रसङ्ग में आया है "मान्तः-स्थूर्नो अरातय' अर्थात् हमारे बीच मे कोई अदानी कजूस न रहे। यही नहीं वद मे हमने धन की कामना रयि शब्द द्वारा की 'रयिन्दा' ऋग्वेद १०-४७-४ वय स्याम पतयो रयीणाम् ऋ० १०।१२१।१० परन्तु याद रहे कि यह रयि शब्द ऐसे धन के लिए प्रयुक्त हुआ है जो केवल अपनी ही तृप्ति के लिए न होकर दूसरे दीन हीन दुखियो की पीडा दूर करने की देने की भी क्षमता रखता हो। जो लोग वेदो मे बतलाये गये जीवन सम्बन्धी आदर्शो का पालन नहीं करते अर्थात लोक कल्याण को कुछ नहीं देते वद की दृष्टि मे वे लोग पापी होते हैं—"केवलाघो भवति केवलादी।" यजुर्वेद के ४० १ में तो स्पष्ट ही कह दिया है

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा।
मा गृध कस्य स्विद्धनम्।।

अर्थात् यह सब धन परमात्मा का है तू केवल निमित्त मात्र है अत इस पर तेरे अकेले का अधिकार नहीं, इसे बाट कर उपभोग कर। महात्मा जरतुश्त का भी धन के सम्बन्ध में ऐसा ही मत है कि ईश्वर प्राप्त यह धन केवल अपने उपभोग के लिए नहीं अपितु योग्य पात्रो के देने के लिए भी है। हमारे धर्म ग्रन्थो मे जीवन यापन के बडे सुन्दर आदर्शों की स्थान-स्थान पर व्याख्या मिलती है कि यज्ञमय जीवन परोपकार की भावना से भरा जीवन यापन करना ही मनुष्य का परम पुनीत कर्त्तव्य है। सम्भवतः इसी को दृष्टि में रखकर नीतिकारों ने मानव को सामाजिक प्राणी कहकर पुकारा है। वेद में बडा सुन्दर आदेश है कि हम किसी से घृणा न करें किसी की हत्या न करें, किसी प्रकार की तोड फोड न करें और समाज के छोटे से छोटे प्राणी को साथ लेकर चल और आनन्द मनाए।

नकिर्देवा मिनीमसि,
नकिरा योपयामसि।
मन्त्रश्रुत्यं चरामसि
पक्षेभिरपि कक्षेभिरत्राभि
सरभामहे ।।
ऋग्वेद १०।१३४।६

वास्तव मे धन तो उसका सफल कहलाने योग्य है जो दीन दुखियों की सहायता करने में काम आए। जीव सामवेद मे प्रदान की सकुचित भावना और आपसी द्वेष की वृत्ति से दूर रहने की प्रार्थना भी तो करता है—

स्व नो अग्ने महोभि पाहि
विश्वस्याराते उत द्विषो मर्त्यस्य ।।

इस मन्त्र मे प्रदान की भावना और आपसी द्वेष की वृत्ति जो दोनो ही मानव समाज के घोर शत्रु हैं दूर करने की कामना की गई है। अत. हम इन दोनो दुष्टवृत्तियो को छोड कर समाज में फैली असमानता को बहुत हद तक दूर कर सकते हैं।

नीतिकारो और अन्य अनेको विचारशील लोगों की मान्यता है कि दीन दुखियों की पीडा और उनके दु खो को दूर करना ही भगवान् की सच्ची भक्ति है। उसके बन्दो को राहत पहुचाना ही उसकी (खुदा की) सच्ची बन्दगी है। किसी नीतिकार ने बडा ही सुन्दर कहा है—

नत्वह कामये राज्य
न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दु खतप्तानां
प्राणिनामार्तिनाशनम् ।।

अत धनादि की असमानता के कारण समाज मे विषमता ही विषमता छाई हुई है। और जिसके फल स्वरूप चहु ओर अशान्ति का वातावरण बना हुआ है, उस अशान्ति को रोकने का एक मुख्य उपाय यही है कि जो अभाव ग्रस्त, पीडित साधन हीन वर्ग के लोग हैं जिन्हें अन्न धन की कमी है, सम्पन्न समृद्ध लोग उदार चित्त होकर यथाशक्ति यथा सम्भव उन की इस कमी को पूरा करने को अपना पुनीत कर्त्तव्य समझें और परमात्मा के प्रिय वत्स बनें।

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली में
महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह

आर्यसमाज मंदिर हनुमान् रोड नई दिल्ली में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह ६ नवम्बर १९८८ को समारोह पूर्वक आयोजित किया गया। दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ० धर्मपाल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में आर्य जनों का आह्वान किया कि वे महर्षि दयानन्द जी महाराज के बताए मार्ग पर चलें तथा किसी अन्यायी के सामने किसी भी दशा में न झुकें। आर्यसमाज एक शक्तिशाली संगठन है और वह तभी फल-फूल सकता है जब हम किसी भी व्यक्ति या सम्प्रदाय के साथ अपने सिद्धान्तों के विपरीत कोई भी समझौता न करें। हम अपने सिद्धान्तों पर अडिग रहें।

दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा० वाचस्पति उपाध्याय ने कहा कि हमारा मूलाधार वेद है। किसी भी सार्वदेशिक या प्रादेशिक की ओर आर्यसमाजों को नहीं ताकना चाहिए बल्कि स्वयं वेद विद्यालय खोलने चाहिये। इस अवसर पर वैदिक विद्वान् डा० रघुवीर वेदालंकार, और डा० रूपकिशोर शास्त्री ने भी आर्यजनों का मार्ग दर्शन किया।

□

आर्यसमाज चूनामंडी का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज चूनामंडी का वार्षिकोत्सव २४ नवम्बर से ४ दिसम्बर १९८८ तक धूम धाम से मनाया जा रहा है। महात्मा दयानन्द जी तपोवन वाले यजुर्वेद महा यज्ञ के ब्रह्मा होंगे। तथा प० यशपाल जी सुधांशु वेदकथा करेंगे। भजनोपदेश के लिए श्री सत्यपाल जी पथिक अमृतसर से पधार रहे हैं। प्रतिदिन प्रातःकाल प्रभातफेरी का भी आयोजन किया गया है। इस अवसर पर राष्ट्र निर्माण सम्मेलन, समाज सुधार सम्मेलन, महिला सम्मेलन और आर्यवीर सम्मेलन का भी आयोजन किया गया है।

आर्यपब्लिक स्कूल नाँगलोई में
महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह

आर्य पब्लिक स्कूल नांगलोई में ७ नवम्बर १९८८ को विद्यालय का स्थापना दिवस और महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह यज्ञोपरान्त आयोजित किया। आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर की छात्राओं ने सस्वर वेदपाठ किया। डा० धर्मपाल, श्री सूर्यदेव श्री धनुदेव जी और प्रि० होशियार सिंह जी ने बच्चों का मार्गदर्शन किया तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस अवसर पर विद्यालय के संस्थापक प्रधान स्वर्गीय वैद्य प्रह्लाद दत्त जी को आर्यसमाज के कार्य के लिए स्मरण किया गया और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गयीं।

●

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश भाग १ का वार्षिकोसत्व

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश का वार्षिकोत्सव २८ नवम्बर से ५ दिसम्बर १९८८ तक आयोजित किया गया है। पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज राष्ट्रभृत महायज्ञ के ब्रह्मा होंगे तथा वेद कथा करेंगे और श्री सोहनलाल पथिक भजनोपदेश करेंगे। इस अवसर पर वेद सम्मेलन, राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन, कवि सम्मेलन, महिला सम्मेलन और राष्ट्ररक्षा सम्मेलन आदि का भी आयोजन किया गया है। इस समारोह में भी डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, पं० क्षमदेव भारद्वाज विद्यालंकार, डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, पं० शिव कुमार जी शास्त्री, डा०धर्मपाल, श्री सूर्यदेव जी, श्री राम नाथ सहगल, प० क्षितीश वेदालंकार, प० यशपाल सुधांशु, प० जैमिनी शास्त्री, पं० पुरुषोत्तम जी पूर्व ३ मास श्री जयप्रकाश जी आर्य तथा अन्य अनेक महानुभाव पधार रहे हैं।

●

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N N o 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on 1,2-12-88 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (डी०) ७५१ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३९

चुनाव समाचार

आर्यसमाज जंगपुरा (विस्तार) नई दिल्ली

इस समाज का वार्षिक निर्वाचन दिनांक २० नवम्बर ८८ को, श्री वेद व्रत शर्मा (मन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) पर्यवेक्षक की उपस्थिति मे सम्पन्न हुआ। सर्वसम्मति से निम्नलिखित अधिकारी निर्वाचित हुए —

प्रधान । श्री गणपत राम टक्कर
उपप्रधान ,, राम शरणदास आर्य
उपप्रधान ,, लक्ष्मी चन्द भाटिया
उपप्रधान । ,, कृष्ण लाल छिब्बा
मन्त्री ,, आर्यमित्र बजाज
उपमन्त्री ,, महेन्द्र आर्य
उपमन्त्री । ,, ब्रह्मदेव
कोषाध्यक्ष ,, डी डी कल्याण
शिक्षा निरीक्षक । ,, एन डी हुसीजा
अधिष्ठाता आर्यवीरदल ,नारायण बतरा

आर्यसमाज धुर्वा रॉची

प्रधान श्री चिरजीवी लाल भण्डारी
उपप्रधान वंशीधर प्रसाद केसरी
मन्त्री आदित्य नारायण
उपमन्त्री कामेश्वरी प्रसाद
कोषाध्यक्ष । रामलाल कुशवाहा
पुस्तकाध्यक्ष रामविलास प्रसाद

वेद प्रचार हेतु दिल्ली-अजमेर साईकिल यात्रा

आर्यसमाज जनकपुरी (बी-ब्लाक नई दिल्ली के सौजन्य से गत वर्ष की भांति, इस वर्ष भी आर्य युवाओ द्वारा वेद-प्रचार हेतु दिल्ली से अजमेर तक साईकिलों पर २५ दिसम्बर, ८८ से १ जनवरी' ८९ तक की यात्रा का कार्यक्रम बनाया गया है। यात्रा के इच्छुक युवकों से १० दिसम्बर तक नाम मांगे गये हैं।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज हनुमान-रोड, नई दिल्ली

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का ६६वां वार्षिकोत्सव, समाज मंदिर में १२ से १८ दिसम्बर ८८ तक आयोजित किया गया है। समारोह में विशाल यज्ञ तथा अनेक सम्मेलनों का आयोजन किया जायगा।

१७ दिसम्बर को उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो के छात्र-छात्राओ की भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गयी है, जिसका विषय "महर्षि दयानन्द के स्वप्नों का भारत' रखा गया है, तथा अनेक पुरस्कारों की घोषणा की गयी है।

आर्यसमाज, न्यू मुल्तान नगर

महर्षि-निर्वाण दिवस सम्पन्न

आर्य समाज, न्यू मुल्तान नगर रोहतक रोड नई दिल्ली में रविवार ६ नवम्बर को महर्षि-निर्वाण दिवस बड़े समारोहपूर्वक मनाया गया। समारोह में आर्य परिवारो के सैकड़ों बच्चो ने भाग लेकर, वैदिक मन्त्रों आर्यसमाज के नियमो का बड़ा उच्चारण किया तथा महर्षि दयानन्द के जीवन वृत्त पर प्रकाश डाला। सभी बच्चो को उपहार स्वरूप वैदिक साहित्य, महर्षि दयानन्द के चित्र तथा मिष्टान्न दिया गया।

★

सेवा में—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली न०१७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (डी०) ७५१

वर्ष १२ : अंक ५ | रविवार ११ दिसम्बर १९८८ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८ | मार्गशीर्ष २०४५ | दयानन्दाब्द—१६४
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० डालर ३० पौंड

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा युवा संचेतना के लिए

आर्य युवा महासम्मेलन

मनुष्य जीवन में कई अवस्थाओं को पार करना है—बालक, किशोर युवा, प्रौढ़, और वृद्ध। यदि हम ध्यान दें तो कार्यक्षमता सर्वाधिक युवाओं में ही होती है। सृजन और निर्माण में सर्वाधिक योगदान युवा-शक्ति का ही है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि नये आविष्कार और नई विचारणों का सृजन युवा मस्तिष्क की ही देन रही है। बौद्धिक पक्ष के साथ कर्म पक्ष में भी युवाओं का ही योगदान अधिक रहा है। स्वाधीनता संग्राम में शहीद भगत भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खां, लाला लाजपतराय, सुभाष चन्द्र बोस, प० जवाहर लाल नेहरू आदि की भूमिका से सभी परिचित हैं। उस दौर में ये सभी युवा थे। किसी देश की संस्कृति और सभ्यता की रक्षा का भार भी इन्हीं पर है। राष्ट्र की रक्षा का भी मूलाधार युवा शक्ति ही है। सक्षमता का साक्षात्कार युवा शक्ति में ही होता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए युवा शक्ति को संगठित करने के लिए तथा उन्हें निश्चित पथ पर अग्रसर करने-कराने हेतु पिछले पांच वर्षों से निरन्तर आर्य युवा महासम्मेलनों का आयोजन किया गया है। देश, धर्म, राष्ट्र, सभ्यता और संस्कृति के उन्नयन के लिए युवाओं में प्रेरणा का संचार करना ही इन सम्मेलनों का मुख्य उद्देश्य रहा है और इस कार्य में सफलता भी मिली है। इन आयोजनों की देखा देखी दिल्ली की सभी आर्यसमाजों में वार्षिकोत्सवों के अवसर पर युवा सम्मेलन भी किए जाने लगे हैं। सन्तोष का विषय यह है कि इन कार्यक्रमों का सम्पूर्ण आयोजन युवाओं के ही हाथ में है।

इस वर्ष आर्य युवा महासम्मेलन के अन्तर्गत ये कार्यक्रम किए गए। सर्वप्रथम श्री रतन चन्द सूद आर्य पब्लिक स्कूल विजय नगर में ५ नवम्बर १९८८ को चित्रकला एवं निबन्ध प्रतियोगिताएं कक्षा १ से १२ तक के बच्चों के लिए आयोजित की गयी। प्रतियोगियों को तीन वर्गों में बांटा गया। इस कार्यक्रम की संयोजिका प्रिंसिपल श्रीमती अनीता कपिला ने उत्साहपूर्वक अपना दायित्व वहन किया। १२ नवम्बर को बिरला आर्य कन्या सीनियर सैकण्ड्री स्कूल कमला नगर में वाद-विवाद प्रतियोगिताएं कक्षा १ से १२ तक के बच्चों के लिए तीन वर्गों में विभाजित करके की गयी। इसकी संयोजिका प्रिंसिपल श्रीमती सुशीला सेठी थी। १८ नवम्बर को सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग में प्रिंसिपल श्रीमती बृजबाला सल्ला के संयोजन में खेल-कूद प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी। इसी दिन आर्य वीर दल के छात्रों के लिए भी शिक्षक श्रीकृष्णपाल के संयोजन में खेल कूद प्रतियोगिताएं हुईं। १९ नवम्बर को रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकण्ड्री स्कूल राजा बाजार में प्रिंसिपल श्रीमती चन्द्रा किनरा के संयोजन में भाषण प्रतियोगिताएं उपर्युक्त तीन वर्गों के लिए आयोजित की गयी। २६ नवम्बर को प्रिंसिपल श्रीमती शीला सेठी के संयोजन में सत्य आर्य कन्या सीनियर सेकण्डरी स्कूल करोलबाग में समूह गान प्रतियोगिताएं उपर्युक्त तीनों वर्गों के लिए आयोजित की गयी। ३ दिसम्बर को केवल बालिकाओं के लिए वालीबाल प्रतियोगिताएं प्रिंसिपल श्रीमती सुशीला गोयल के संयोजन में आयोजित की गयी।

मुख्य समारोह १४ जनवरी १९८९ को तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम में होगा। इस समारोह में विभिन्न विद्यालयों की टीमें पी०टी० डम्बल, लेजिम के अतिरिक्त योग आदि की सामूहिक प्रतियोगिताओं में भाग लेंगी। उसी दिन लगभग ५०० पुरस्कार भी वितरित किए जाएंगे।

(शेष आगामी अंक में)

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का शताब्दी समारोह

भावी कार्यक्रम के लिए आर्यसमाजों के प्रधान व मन्त्रियों का बृहद सम्मेलन

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह आगामी ३०-३१ दिसम्बर १९८८ और १ जनवरी १९८९ को जयपुर में आयोजित हो रहा है। इस अवसर पर आर्य महासम्मेलन का भी आयोजन होगा। इस समारोह में भारत तथा विदेशों से बड़ी संख्या में आर्य जन, सन्त, विद्वान् व नेतागण भाग लेंगे।

आज की बदलती हुई परिस्थितियों में यह आवश्यक हो गया है कि आर्यसमाज की ओर से इन विषम परिस्थितियों के निराकरण के लिए कोई ठोस कार्यक्रम तैयार किया जावे।

शताब्दी समारोह समिति की ओर से आगामी ३१ दिसम्बर १९८८ को सायकाल ३ बजे से भारत तथा विदेशों के समस्त आर्यसमाजों के प्रधान व मन्त्रियों का एक बृहत् सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है जिसमें आर्य जगत को नया दिशा निर्देश जारी किया जायेगा।

"संस्कृत-भाषा एक ही देश की नहीं है,
सब भाषाओं का मूल संस्कृत में है।"
—महर्षि दयानन्द सरस्वती

सम्पादक—सूर्यचन्द्र गुप्त | प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

उप त्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया वयम् ।
नमो भरन्त एमसि ॥

—ऋ० म० १ । सू० १ । म० ७

धन्य आपकी दया की वृष्टि ! हम तुच्छ आत्मा, जिससे आप किसी प्रकार की सेवा की आवश्यकता नहीं रखते उस पर ऐसी अपार दया ! आपने नेत्र देकर हमें इस योग्य बनाया कि हम आज आपकी विस्तृत सृष्टि में आपकी रचना देख आपके महान् ज्ञान के सम्मुख विस्मित हो रहे हैं। आपने कर्ण देकर हमें उस उपदेश को श्रवण करने योग्य बनाया जिसके श्रवण बिना कोई भी मनुष्य अपने ज्ञान की वृद्धि कर आत्मज्ञानी नहीं बन सकता एवम् आपकी महिमा को नहीं जान सकता। प्रभो ! आपने जो वाणी दी है उसके द्वारा उपदेश कर हम सहस्रों आत्माओं का हृदयान्ध दूर कर एवं पुण्यभागी बन आपका साक्षात् दर्शन पाने के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। जिससे ये इन्द्रियां बनी रहें आपने यह शरीररूप यन्त्र कैसा अद्भुत बनाया है ! उदान वायु के द्वारा अन्न-पान भीतर जाता है, जिसके विकृत भाग को अपान वायु बहिष्कृत करता है और सार-भाग को समान वायु क्रमश रक्तरूप में परिणत करता हुआ लक्षो नाडियो में विस्तृत कर देता है। इस रक्त के विकार को फेफडो द्वारा प्राणवायु बारम्बार परिशुद्ध करता हुआ उसे शरीरावयवों के पोषण के उपयुक्त बनाता है जिससे इस शरीररूप यन्त्र में बैठा हुआ आत्मा अपने कार्यों को सिद्ध करता रहता है। भगवन् ! एक क्षण भी तो ऐसा नहीं है जिसमें आपकी कृपा का फल हम न भोगते हों। प्रति श्वास में आपका ही वायु लेकर सुखी होते हैं, फिर प्रति श्वास में आपको नमस्कार क्यों न करें ! इस पृथिवी के छोटे छ टे कण शिशु-कालावस्था में हमारे व्यवहार के अयोग्य थे। आपने उन्हें पृथिवीरूप में परिणत कर और इस पृथिवी पर नाना प्रकार के फलफूल कन्दमूल उत्पन्न कर हमारी रसना के द्वारा हमें कितना सुख पहुंचाया !

पिता-पुत्रवत् हमें पोषण करने वाले ! आपकी असीम कृपाओं का कहां तक हम वर्णन करें ? सच्चे सम्बन्धी तो आप ही हमारे हैं। पूर्वजन्म के शरीर, स्थान, प्यारे पिता-माता सभी से सम्बन्ध टूट गया, परन्तु आपके कृपामय शरण में जिस प्रकार पूर्वजन्म में सुख भोगते थे उसी प्रकार इस जन्म में भी भोग रहे हैं। आप जैसे दयामय पिता का एक बार दर्शन पाते ! आप हैं तो हम आत्मा में ही विद्यमान, परन्तु हाय ! हमारे पाप इतने बढ़े कि हम अपने में ही आपका दर्शन नहीं पाते। अनात्मा में फँसकर हमने आत्मस्वरूप को विस्मृत कर दिया है। पिता ! प्रकृति की ओर से ध्यान खींच लेने की शक्ति प्रदान करो जिससे आत्मस्थ होकर हम अपने में ही आपको पा जावें और फिर प्रतिदिन आप ही की उपासना करते रहें।

प्यारे पाठकगण ! प्राणायाम से मन को निश्चल कर प्रत्याहार और धारणा की साधना कीजिये। हम हैं न अन्नमय कोष, न मनोमय कोष और न ज्ञानेन्द्रियाँ, प्रत्युत हैं हम एक सूक्ष्म चेतन सत्ता। हमें अपने में ही अपने प्रभु को खोजना है अतएव हम अपने प्रभु के ध्यान में कैसे निमग्न हों जब तक कि हम प्रकृति का ध्यान न छोड देवें ! क्या हम अपने मनुष्य-जीवन को यों ही बीतने दे और अपने प्रभु को हृदयङ्गम न करें ?

शब्दार्थ—(अग्ने) हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन् (धिया) ज्ञान-प्रकाश के लिए (वयम्) हम सब (त्वा) आपकी (दिवे दिवे, दोषावस्त) प्रतिदिन-रात (नमो भरन्त) नमस्कार करते हुए विनय के साथ (उप एमसि) उपासना करते हैं।

●

सत् का दीप

—डा० कृष्ण वल्लभ पालीवाल

इक दीप सत् का भी जलालो
तुम मुझे अपना बनालो

घन घोर तम की इस निशा में
जुगनुओं से टिमटिमाते तरल नभ में
जब न अपना दीखता कोई न हो
निकट सम्बन्धी भी न अपना मानता हो
सघनता की इस दशा में, दीपमाला का जला लो। इक दीप…

द्वेष ईर्ष्या दम्भ छलना हो
रहा व्यवहार जग का
स्वार्थ परता आत्मपरायणा
तो रहा व्यापार जन का
दनुजता से ग्रसित जग में
प्यार का दीपक जलालो। इक दीप ..

ठिठकता हू, टिक न पाऊंगा
झकोरों में जगत् के
क्या करेगी एक बाती दीप की
जब चलेंगे बाण प्रतिपल असत् के
इस भयावह कालिमा के क्षणों में
सतमयी इक ज्योति पावन भी जला लो। इक दीप...

सत्य का दीपक अकेला ही बहुत है
आस और विश्वास का सम्बल बहुत है,
प्रेम और ममतामयी इस रात में,
सत्य निष्ठा न्याय का दीपक बहुत है
सत्य की पतवार पकड़ें असत् की मझधार में
आस का दीपक सजा लो। इक दीप .

चल रहा हर एक अपनी राह पर
झलकती है स्वार्थता हरबात पर
अतुल वैभव में सभी उनके लबोलब
कर रहा शोषण मनुज हर बात पर
दनुजता को जीतने के वास्ते अब
मनुजता का दीप अन्तस में सजा लो।
इक दीप सत का भी जला लो
तुम मुझे अपना बना लो
इक दीप मेरा भी जला लो।

डॉ० भवानीलाल भारतीय सम्मानित

सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् लब्ध-प्रतिष्ठ अनुसन्धित्सु एव पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ की दयानन्द शोधपीठ के अध्यक्ष डा० भवानीलाल भारतीय को परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्त्वावधान में आयोजित ऋषि मेले के अवसर पर आर्यसमाज फुलेरा जिला जयपुर राजस्थान की ओर से सम्मानित किया गया। डा० भवानीलाल भारतीय ने अपने जीवन काल में वैदिक वाङ्मय की सेवा करते हुए साठ से अधिक ग्रन्थों की रचना की है। महामानव स्वामी दयानन्द के जीवन और महान् कार्यों पर लिखकर आपने नव कीर्तिमान स्थापित किया है।

●

विशेषांक संग्रहणीय रहा

"आर्यसन्देश" का ऋषि निर्वाण विशेषांक प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफी सुन्दर एव आकर्षक था। इसमें सभी लेख शिक्षाप्रद एव प्रेरणादायक थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में काफी ठोस एवं महत्त्वपूर्ण सामग्री पढ़ने को मिली। अतः यह विशेषांक सभी दृष्टियों से संग्रहणीय रहा। आशा है आप निकट भविष्य में भी समय-समय पर ऐसे विशेषांक पाठकों को देते रहेंगे। विशेषांक की सफलता के लिए बधाई।

रामकुमार सोरायण, सोनीपत

●

ओ३म्

आर्य सन्देश

"जब मनुष्य उत्तम गुणों से युक्त होता है, तब सब लोग सब प्रकार से उसका सत्कार करते हैं।"

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्रो० शेरसिंह ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद का कार्यभार संभाला

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का कुलाधिपति तीन वर्षों के लिए निर्वाचित होता है। इसके लिए तीनों आर्य प्रतिनिधि सभाओं— पंजाब, हरियाणा और दिल्ली के प्रधानों की बैठक में निर्णय लिया जाता है और बाद में शिष्ट परिषद् की बैठक में इसकी सम्पुष्टि होती है। डा० सत्यकेतु विद्यालंकार १९८५ में इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति बने थे। वे इसी गुरुकुल के स्नातक हैं और वे यहीं पर अध्यापक, प्राध्यापक, प्रोफेसर और कुलपति भी रहे हैं। पिछले तीन वर्षों से उन्होंने इस पद को सुशोभित किया था। डा० सत्यकेतु विद्यालंकार पेरिस से डी० लिट हैं और सुप्रसिद्ध इतिहासकार हैं। अपने कार्यकाल में उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उत्थान के लिए कई योजनाएं दी हैं और वे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से स्वीकार कर ली हैं। उनके कार्यकाल में यहां पर कई आधुनिक पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ किए गए। कम्प्यूटर, योग और पत्रकारिता के पाठ्यक्रम इसी काल में प्रारम्भ किए गए। डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने अपनी कुलमाता की सेवा प्राणपण से की। यद्यपि वे इस समय कुलाधिपति पद से निवृत्त हो रहे हैं पर वे इस संस्था से सदैव सम्बद्ध रहेंगे, ऐसा सभी का विश्वास है। वे इसके उत्थान के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे। उन्होंने आर्यजगत् के ऊपर एक और बड़ा उपकार किया है। आर्यसमाज का इतिहास सात भागों में उन्होंने अभी अभी पूरा किया है जो उनके लिए तो गौरवपूर्ण उपलब्धि है ही, आर्यसमाज की भी एक महती उपलब्धि है। शिष्ट परिषद् ने उन्हें एक और महत्त्वपूर्ण कार्य सौंपा है और उस कार्य को करने में वे ही एक मात्र सक्षम भी हैं। उन्हें गुरुकुल कांगड़ी का इतिहास लिखने का कार्य सौंपा गया है इतिहास लेखन कोई आसान काम नहीं होता। कुछ तथ्य ऐसे होते हैं, जो मात्र हवा में तैरते हैं, उनका रिकार्ड नहीं होता, ऐसे तथ्यों का उपयोग कर पाना एक कठिन कार्य होता है। कुछ बातें रिकार्ड में होती हैं, पर उसका वातावरण पर, भविष्य पर क्या प्रभाव पड़ेगा, यह बात भी लेखक के मन को उद्वेलित करती है। इन सब के प्रति न्याय कर पाना, एक असाध्य कार्य नहीं तो दुःसाध्य कार्य अवश्य है।

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार जैसा परिश्रमी और मेधावी व्यक्ति ही इस इतिहास को लिख सकता है। गुरुकुल कांगड़ी का इतिहास एक संस्था का इतिहास नहीं है, बल्कि यह आर्यसमाज का ही इतिहास है। आर्य समाज के सिद्धान्तों का इतिहास है, आन्दोलनों का इतिहास है सामाजिक सिद्धान्तों के विकास का इतिहास है और इन सब से ऊपर यह स्वाधीनता संग्राम का इतिहास है। इस संस्था ने ऐसे रत्नांकुरे देश को दिए जो अपने अपने क्षेत्र में आज भी देदीप्यमान हैं। उन सब का इतिहास डा० साहब को लिखना होगा। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सम्पूर्ण विश्व की आर्यसमाज की प्रतिनिधि संस्थाओं में अग्रिमशालिनी रही है। आज इस सभा के कई टुकड़े हो चुके हैं। बहुत बड़ा भाग पाकिस्तान में चला गया। जम्मू-कश्मीर की अलग सभा बन गयी। हिमाचल प्रदेश में अलग सभा बन गयी और बची हुई पंजाब सभा का भी—पंजाब हरियाणा और दिल्ली सभाओं के रूप में विभाजन हो गया है। गुरुकुल कांगड़ी और सम्बद्ध संस्थाओं का संचालन इन तीनों सभाओं का संयुक्त दायित्व है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय तथा उसके अंगभूत कालेज— वेद और कला महाविद्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, मेडीकल कालेज, आर्य कन्या महाविद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय विभाग, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, स्वामी श्रद्धानन्द चिकित्सालय, पुण्य भूमि कांगड़ी ग्राम, डा० हरिराम आर्य इण्टर कालेज मायापुर और आर्य इण्टर कालेज ज्वालापुर, कन्या गुरुकुल देहरादून आदि सभी संस्थाओं का इतिहास एक साथ लिखा जाएगा। प्रकारान्तर से उन संस्थाओं का इतिहास भी आएगा जो इसकी अंगभूत संस्थाएं थीं, अथवा इससे सबद्ध थीं। कहना न होगा कि यह एक बहुत ही कठिन कार्य है और डा० साहब पर इसकी जिम्मेदारी सौंपी गयी है और वे स्वयं तथा जिस किसी का भी वे चाहें उनका सहयोग लेकर अपने स्वभाव के अनुसार शीघ्र ही इस कार्य को पूरा करेंगे। इस प्रकार कुलाधिपति से निवर्तमान होते हुए भी वे गुरुकुल में ही हैं।

प्रो० शेरसिंह जी का कुलाधिपति पद के लिए चयन तीनों सभाओं के प्रधानों की १७ सितम्बर की बैठक में बहुसम्मति से किया गया था। यह हर्ष का विषय है कि प्रोफेसर साहब के नाम की सीनेट की १३ नवम्बर की बैठक में सर्वसम्मति से कुलाधिपति पद पर चयन की सम्पुष्टि की गयी। इस प्रकार एक सद्भाव और सहयोग का वातावरण बना।

प्रोफेसर शेरसिंह जी के कुलाधिपति बनने पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के समुज्ज्वल भविष्य की विश्वस्त आशाएं बंधी हैं। प्रोफेसर साहब शिक्षाविद् तो हैं ही उनका प्रशासन का भी लम्बा अनुभव है। साथ ही समाज सेवा की कार्यावधि भी बहुत ही लम्बी है। उनके कार्यक्षेत्र का फलक भी किन्हीं सीमाओं में नहीं बंधा रहा है। अविभाजित भारत के पंजाब प्रान्त के वे एम एल ए रहे, मन्त्री रहे और बाद में स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद पंजाब प्रान्त में तो उनकी सक्रियता रही ही पंजाब और हरियाणा के विभाजन के समय दोनों प्रान्तों के अधिकारों के समन्वय में भी उनकी भूमिका विशिष्ट रही है। हरियाणा रक्षा वाहिनी के माध्यम से उन्होंने पंजाब प्रान्त को कोई नुकसान न पहुंचाते हुए हरियाणा के हितों के लिए सदैव सफल संघर्ष किया।

केन्द्रीय सरकार में आने पर उन्होंने कई विभागों को सफल नेतृत्व प्रदान किया। शिक्षा संचार, समाज कल्याण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा प्रतिरक्षा जैसे महत्त्व पूर्ण विभागों में प्रोफेसर साहब केन्द्रीय मन्त्री रहे हैं। भारतीय संस्कृति के प्रति उनकी अगाध निष्ठा के फल स्वरूप ऐसी योजनाएं स्वीकृत हुई जिनसे देश का नाम उज्ज्वल हुआ सम्पूर्ण देश में उन्होंने केन्द्रीय मन्त्री के नाते भ्रमण किया तथा भारतीय जनता का मार्ग के दर्शन किया।

इसके अतिरिक्त वे विदेशों में भी गए और वहां पर भारतीय शिष्टमण्डलों के सदस्य के रूप में तथा अध्यक्ष के रूप में भारत के दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया तथा सफलता प्राप्त की। चीन और पाकिस्तान की यात्राओं के दौरान भी उन्होंने भारत के हितों के लिए उल्लेखनीय कार्य किया। अमेरिका, रूस, आस्ट्रेलिया और यूरोप तथा अफ्रीका के अनेक देशों में भी वे सद्भावना यात्राओं पर गये। गुरुकुल की शिक्षा पद्धति के प्रति तो उनका अगाध स्नेह सर्वविदित है।

प्रोफेसर साहब शिक्षाविद् हैं। अनेक संस्थाओं के संचालन में उनका सहयोग है। वे हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं और इस समय हरियाणा में ही सर्वाधिक गुरुकुल हैं। गुरुकुलीय परम्परा से वे भली भांति परिचित हैं। गुरुकुल कांगड़ी की भी उन्होंने समय-समय पर सहायता की है। अतः यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि प्रोफेसर साहब के कुलाधिपतित्व काल में यह संस्था अपने गौरव के अनुकूल प्रगति करेगी। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि इस संस्था में अनेक समस्याएं रही हैं और आज भी हैं। कांगड़ी ग्राम में स्थित पुण्यभूमि की ओर भी ध्यान दिया जाना आवश्यक है। वहां पर नये नये कोर्स प्रारम्भ करने की मांग, समय समय पर उठती रही है और नये कोर्स प्रारम्भ भी किए गए हैं, पर यह संस्था स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने जिन आदर्शों के लिए प्रारम्भ की थी और बाद के आचार्यों ने भी इसे जिन आदर्शों के लिए पल्लवित किया था, उन आदर्शों का संरक्षण एवं संवर्धन यहां पर अवश्य किया जाना चाहिए। पुरानी भूमि में कृषि कालेज खोला जा सकता है या योगसाधना से सम्बन्धित कालेज खोला जा सकता है। कोई भी कोर्स प्रारम्भ किया

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आज के युग में दयानन्द की प्रासंगिकता

लेखक—सत्यकाम वर्मा

आज जब हम भारत की वर्तमान स्थिति पर नजर डालते हैं तो एक विचित्र सी स्थिति सामने आती है। ब्राह्मसमाज की स्थापना के बाद लगने लगा था कि समाज की अनेक कुरीतियां मिटाने के लिए लोग कृतसंकल्प हो उठे हैं। आर्यसमाज की स्थापना के बाद लगा था धर्म राजनीति समाज और अर्थनीति के क्षेत्र से सभी विकार मिटकर भारत फिर से अपनी खोई आत्मा को पहचान सकेगा और स्वयं प्रबुद्ध होने के बाद विश्व से भी अज्ञानान्धकार और अन्धविश्वासों का समूलोन्मूलन कर सकेगा। कांग्रेस की स्थापना और स्वराज्य के प्रति उसके संकल्प के बाद लगने लगा था कि त्याग और बलिदान का पथ अपनाने वाले नेताओं का युग फिर से आ गया है। परन्तु आज डेढ़ सदी के इन महान प्रयासों के बाद यह लगने लगा है जैसे वह अन्धकार और घना हो गया हो, वह अज्ञान और बढ़ गया हो, और वह परापेक्षिता और भी बढ़ गई हो, जो इन सब आन्दोलनों में हल विद्यमान थी। सच तो यह है कि स्वामी दयानन्द के मैदान में उतरने से पूर्व जितना अन्धकार, अन्धविश्वास पिछड़ापन और अज्ञान इस देश को विनाश की निम्नतम सीमाओं पर ले जा चुका था आज स्थिति उससे भी कहीं विकटतर है। आज गुरुडम पहले से दस गुणा बढ़ गया है। समाज के सर्वाधिक शिक्षित लोग धर्म सम्बन्धी जिज्ञासा में स्वयं शून्य रहकर ऐसे ही गुरुओं के चक्कर में फसते जा रहे हैं। फलतः ज्योतिष पर अन्धविश्वास इतना बढ़ गया है कि इस देश का बड़े से बड़ा नेता भी बिना ज्योतिष का सहारा लिये एक कदम भी उठाने में समर्थ नहीं रह गया है संस्कृत एवं प्राचीन भारतीय ज्ञान विज्ञान के प्रति अनुराग और शोधाकांक्षा की बात तो दूर रही, जिस राष्ट्रभाषा का सहारा लेकर स्वातन्त्र्य प्राप्ति का संघर्ष लड़ा गया आज उसे पढ़ना भी पिछड़ापन की निशानी माना जा रहा है। इसके विपरीत कभी गुलामी की प्रतीक मानी जाने वाली अंग्रेजी का प्रसार स्वातन्त्र्य के बाद से कम से कम सौगुना हो चुका है। सती-प्रथा विधवा की दशा दहेजप्रथा, कन्या-बलिदान, आदि प्रथाओं को धर्म का जामा पहना कर आज भी समाज में अपने अपने स्वार्थ के अनुकूल ढाला जा रहा है। जबकि शेष दुनिया मनु से लेकर दयानन्द तक के युग नेताओं की इस पुकार को सत्य मानकर कि कभी भारत ही हर क्षेत्र में जगदगुरु था और आज भी उसके अतीत के साहित्य में अनेकानेक अनमोल रहस्य भरे पड़े हैं प्राचीन भारतीय ज्ञानविज्ञान के मंथन में आगे बढ़ती जा रही है, हमारा बुद्धिजीवी वर्ग अपनी प्राचीन धरोहर का उपहास उड़ाने और पश्चिम की जूठन को चाटने में अपना गौरव समझ रहा है। कभी मैकाले ने कहा था। हमें भारत की शिक्षा पद्धति में ऐसा परिवर्तन करना है कि शिक्षित भारतीय बाहर से भारतीय लगे किन्तु मन बुद्धि से वह अंग्रेज बन जाए।" किन्तु आज हम उस शिक्षापद्धति को इस सीमा तक बढ़ाने में जुट गए हैं कि आज का शिक्षित भारतीय न केवल मन बुद्धि से अंग्रेज होने में अपना गौरव समझता है बल्कि तन और सभ्यता के क्षेत्र में भी वह पश्चिम के अन्धानुकरण में स्वयं पाश्चात्यों से भी आगे बढ़ गया है।

और आर्यसमाज—जिसने ऋषिवर दयानन्द के स्वप्नों को साकार करने का बीड़ा उठाया था—क्या कर रहा है?

वेद और मानवता

ऋषि दयानन्द ने वेद को परमात्मा की दिव्य वाणी और नित्य ईश्वरीय ज्ञान घोषित करते हुए उसे वेद के ही शब्दों में, सम्पूर्ण मानवता की बपौती बताया था। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का आदर्श तभी पूरा हो सकता है, जब हम वेद को पढ़ने पढ़ाने और सुनने सुनाने' को सचमुच मानवमात्र का धर्म बना सकते। और ऐसा तब ही सकता था जब स्वयं भारतवासी तो वेदों के स्वाध्याय एवम् अनुसन्धान को अपना अनिवार्य धर्म समझते। इसे हमें अपना दुर्भाग्य ही समझना चाहिए कि न तो सम्पूर्ण भारतवासी ही आज तक वेद' को पढ़ना अपना धर्म समझ सके और न ही सारे आर्य या हिन्दू ही। औरों की बात क्या, सारे विश्व के आर्यसमाजियों में से ऐसे कितने हैं जिन्होंने चारों वेदों का पढ़ना तो दूर उन्हें एक जगह एकत्र देखा या उनका पाठ या सम्पूर्ण यज्ञ होते सुना है! केवल मानव दिन हवन करके अपने कर्म की इतिश्री मानने वाले आर्यसमाज के अनुयायियों में एक प्रतिशत के घर में भी चारों वेदों के मूल या भाष्यग्रन्थ नहीं पाये जाते। तब फिर सारे विश्व अथवा सम्पूर्ण भारतवासियों को हम उनके कर्तव्य का बोध कैसे करा सकते हैं। हम चुपचाप बैठे सुनते रहते हैं और हम रे सामने बोलने वाला वक्ता वेद के नाम पर मनगढ़न्त बातें कहता रहता है। बहुधा ऐसा भी हुआ है कि बहुत बड़े विद्वान समझे जाने लोग भी गीता और उपनिषद के वचनों को वेद के बचन कहकर अपने वेद ज्ञान का परिचय देते हैं।

इतना ही नहीं! आर्यसमाज की आज अनेकानेक शिक्षासंस्थाएं हैं। केवल कुछ छोटे मोटे गुरुकुलों को छोड़कर कितने स्कूल कालिज ऐसे हैं, जहां वेद के अध्ययनाध्यापन को अनिवार्य बनाया गया है। आज तो आर्यसमाज के भी अनेक पब्लिक स्कूल खुलने लगे हैं, जिनका आर्यसमाजी होने का एकमात्र लक्षण यह है कि वहां एक बार सन्ध्याहवन या रोज एकाध मन्त्र का पाठ हो जाता है। संस्कृत की अनिवार्यता की बात ही दूर रही, उनमें हिन्दी का स्थान भी अंग्रेजी के बाद ही आता है। और यह तब जब कि ऋषि दयानन्द हिन्दी को 'आर्यभाषा' कहकर उसे विश्व की एक महानतम भाषा बनाने का स्वप्न देख रहे थे!

वास्तविकता तो यह है कि हमने कभी इस ओर ध्यान दिया ही नहीं और न ही कभी पूरे जोर के साथ इस बात को उठाया कि वेद केवल हिन्दुओं की बपौती नहीं हैं। यह तो भारत का सौभाग्य है कि उनकी पुण्यभूमि पर वेद आज तक भी एक परम्परा में सुरक्षित रहते आए हैं। अन्यथा, हिन्दु मुस्लिम-ईसाई विभेद तो बहुत बाद के हैं। यदि विश्व की प्राचीनतम ज्ञानराशि का स्रोत भारत में सुरक्षित रह पाया है, तो इसका अर्थ यह कहां से हुआ कि वह केवल हिन्दुओं का ही ग्रन्थ है। जो भी सच्चा भारतवासी है उसे अपनी प्राचीन विरासत पर गर्व होना ही चाहिए। यदि कोई राम, कृष्ण, भरत और युधिष्ठर को इसलिए नकारता है कि वे 'हिन्दू थे तो उससे बड़ा भारतद्रोही कौन हो सकता है। यदि उन्हीं महान पुरुषों को कुछ सन्तानें अपना धर्मपरिवर्तन कर दूसरे धर्म में दीक्षित हो गई हैं तो इससे यह कसे सिद्ध होता है कि उन पूर्वजों की सन्तान नहीं रही? वेद तो उन महापुरुषों से भी पहले के हैं। उन्हें हम अपना धर्मग्रन्थ भले ही न मान किन्तु अपनी विरासत मानकर उनके प्रति आदर तो व्यक्त कर सकते हैं। और फिर उनमें जो बात कही गई हैं वे ही तो सब अन्य धर्मग्रन्थों में भी कही गई हैं। अतः उन्हें यत्किंचित् मात्रा में पढ़ना और समझना तो हर भारतवासी के लिए अनिवार्य होना चाहिए पर सच तो यह है कि जब ऋषि के अनुयायी ही इन्हें पढ़ना अपना धर्म नहीं समझते, तब वे अपने अन्य हिन्दु भाइयों और उनसे बढ़कर अपने अन्य भारतवासी भाइयों से उन्हें पढ़ने या उनके प्रति निष्ठा रखने की आशा कैसे कर सकते हैं?

और जब तक ऐसा नहीं होगा, तब तक न तो भारतीयता के प्रति गौरव जाग सकेगा, और न ही सम्पूर्ण विश्व का कल्याण हो सकेगा। आर्यसमाज का एक नियम हमें 'सारे संसार के कल्याण' की बात याद दिलाता है। मानवता का एकमात्र उद्घोषक 'वेद' है जिसे हम एकमात्र ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं।

अतः ऋषि-ऋण से उऋण होने का स्वप्न देखने वालों को सब से पहले इस ओर ध्यान देना चाहिए।

रूढ़ियां और प्रथाएं।

एक ओर तो हम पाश्चात्य ज्ञान अपनाने पाश्चात्य सभ्यता की नकल करने और भौतिक लिप्सा में दिनों दिन डूबने की प्रवृत्ति भारतीय जनमानस में बढ़ती जा रही है, तो दूसरी ओर अपने अतीत के ज्ञान विज्ञान, प्राचीन भारतीय इतिहास, स्वदेशी भाषा धर्म और सामाजिक परम्पराओं के प्रति उपेक्षा भी नवशिक्षित वर्ग में बढ़ती जा रही है। परिणाम यह हुआ है कि समाज के सामने स्वयं को 'धार्मिक' प्रवृत्ति का सिद्ध करने की लालसा में वे तथाकथित

आज के युग में दयानन्द की प्रासंगिकता

'शिक्षित' लोग दिखावे के लिए उन परम्पराओं और अन्धविश्वासों को बिना किसी विवेचन के अपना लेते हैं जिनसे जनता की दृष्टि में वे 'धार्मिक' प्रवृत्ति के सिद्ध हो जाएँ, फिर वे परम्पराएँ भले ही कितनी दकियानूसी हों। यही कारण है कि ऐसे लोग ही न केवल 'गुरुडम' का सब से सरल और सर्वाधिक शिकार होते हैं बल्कि तथाकथित गुरुओं' को खुश करने के लिए बहुत ही अज्ञानपूर्ण बातों को भी करने लगते हैं। स्वयं धर्म से बिना परिचित हुए वे लोग धर्म कमाने का यह सरल मार्ग समझ लेते हैं।

और जब यह वर्ग शासक बन जाता है तब या तो सतीप्रथा, विधवा पीड़न, दहेज-प्रथा कन्या-उन्मूलन, आदि प्रथाओं को चुपचाप स्वयं भी अपना लेता है या फिर कम से कम समाज में इनका विरोध करने की हिम्मत नहीं रखता। बहाना यह होता है कि अनेक धर्म-गुरु भी इन प्रथाओं के पक्ष में फतवा देते हैं। हरिजनों के मन्दिर प्रवेश तक के विषय में ये लोग खुलकर कुछ नहीं कह सकते।

इन सब प्रथाओं का विरोध करने के लिए साहस चाहिए। यह साहस केवल राजा राममोहनराय और स्वामी दयानन्द का ही जन्म-सिद्ध अधिकार नहीं था। बल्कि उन्होंने तो इन प्रथाओं का विरोध करके एक विशाल सामाजिक क्रान्ति को जन्म दिया था। अतः इस दिशा में स्वयं को 'हिन्दू-विरोधी' कहे जाने का खतरा उठा कर भी आर्यसमाज को ब्राह्मसमाज समेत उन सभी शक्तियों का साथ लेना चाहिए जो समाज से इन कुरीतियों को मिटाकर उसे आगे ले जाना चाहती हैं।

परन्तु ऐसा करने के लिए आर्यसमाज का एक अलग मोर्चा होना चाहिए, जो आर्यसमाज के अन्य-कर्तव्यों से अपने को अलग रखकर केवल इन कुप्रथाओं को मिटाने के लिए ही कृतसंकल्प और कटिबद्ध हों।

शिक्षा-प्रसार और अछूतोद्धार

कहा जा सकता है कि शिक्षा प्रसार में आर्यसमाज का कार्य दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। यदि विद्यालयों और विद्यार्थियों की संख्या से यह मूल्यांकन करना हो, तब यह कथन सत्य स्वी-कार करना होगा। परन्तु हमें यह न भूलना चाहिए कि हमारी शिक्षा पद्धति भी यदि वेद और प्राचीन भारतीय ज्ञान के प्रति अनुसन्धान की भावना को न जगा सकी, तब उस क्षेत्र को अपनाने की भावना को आर्यसमाज के लक्ष्यानुकूल न मानकर किसी अन्य प्रेरणा से प्रसूत मानना होगा। सच तो यह है कि साधनों के अभाव में सामान्य गुरुकुलों में भी केवल वेदमन्त्रों के अर्थ और संस्कृत का पठन पाठन साक्षरता के उद्देश्य से ही किया जाता है, न कि अनुसन्धान की दिशा में बढ़ावा देकर भारत को ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में फिर से अगुआ बनाने के लिए। यहाँ तक कि स्वतन्त्रतापूर्व की इस उद्देश्य को लेकर चलने वाली एकमात्र शिक्षा संस्था गुरुकुल कांगड़ी भी आज एक रूढ़ि का अनुयायी विश्व विद्यालय बनकर रह गया है। उसका मूल लक्ष्य भारतीय संस्कृति का पुनरुत्थान न होकर केवल एक और विश्वविद्यालयमात्र बनना रह गया है। यही कारण है कि वहाँ भी अन्यान्य विश्वविद्यालयों की भाँति नवीनतम विषयों का समावेश तो होता जा रहा है किन्तु उन क्षेत्रों की प्राचीन भारतीय मान्यताओं की छानबीन और शोध तथा विश्व के मार्गदर्शन की भावना का वहाँ की वर्तमान व्यवस्था में पूर्णतया अभाव है।

कारण की खोज करने लिए हमें अधिक दूर न जाना होगा। आर्यसमाज की सभी शिक्षा संस्थाओं में अधिकाधिक प्रसार की होड़ में आज प्रशासन में उन लोगों का हाथ और महत्त्व बढ़ता जा रहा है, जो न तो इस क्षेत्र के आदमी हैं और न जिन्हें स्वयं वेदों या वैदिक विज्ञान से परिचय है। लगन की तो बात ही दूर रही। एक दुकानदार एक प्रेसमालिक, एक वकील या एक व्यावसायिक प्रबन्धक जब आर्य समाज की किसी शिक्षा संस्था का प्रबन्धक या संचालक बन जाता है, तब उसकी दृष्टि केवल प्रबन्ध और धनसंयोजन तक ही सीमित रह जाती है। उसकी एकमात्र भावना यह हो जाती है कि उसका विद्यालय या विश्वविद्यालय औरों से अच्छा चले। पर उसका लक्ष्य क्या हो और वह उस लक्ष्य को पाने की दिशा में क्या करे, इसकी सुध उसे रहती ही नहीं, रह सकती नहीं।

और यह सब हुआ इस कारण है कि आर्यसमाज में नेता या नायक बनाने के लिए वोट जुटाने की योग्यता तो होनी चाहिए लक्ष्यों के ज्ञान और उनके प्रति लगन और समर्पण की कोई आवश्यक शर्त वहाँ नहीं है। आर्यसमाज की सम्पदा किस के अधिकार में रहे और उनके कोष और संस्थाओं का संचालन कौन करे जितनी चिन्ता इन बातों की रहती है उतनी इस विषय में नहीं कि आर्यसमाज के ऋषिप्रदत्त लक्ष्यों को पाने या न पाने की विवेचना के अभाव और कमियों को दूर कैसे किया जाए। परिणाम यह कि केवल कुछ छोटे गुरुकुलों को छोड़कर आर्यसमाज की सभी शिक्षण संस्थाएं अन्य किसी भी शिक्षा संस्था जैसी ही बनकर रह गई हैं। उनमें सैद्धान्तिक या वैज्ञानिक जोश नहीं है। सोद्देश्यता तो उनमें से जैसे समाप्त ही हो गई है। जब तक फिर से इस क्षेत्र में भी सोद्देश्यता और धार्मिक जोश जैसी भावना नहीं पैदा होती इस क्षेत्र को आर्यसमाज का अपना क्षेत्र नहीं कहा जा सकता।

आवश्यकता

अब आवश्यकता इस बात की है कि यदि स्वामी दयानन्द के स्वप्न को आज की अंधियारी रात में फिर से उजाला करने का स्वप्न आर्य समाज ने देखना ही है तो उसे अपने घर को फिर से सुधारना होगा। इसके लिए इसे तीन चार ऐसे संगठनों में बांटना होगा, जो एक दूसरे से धार्मिक पक्षों में जुड़े होकर भी अपने अपने दायरे में सर्वथा स्वतन्त्र हों। अन्तर्राष्ट्रीय आधार पर कार्य एक सर्वथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठन को दिया जा सकता है जिसका लक्ष्य आर्यसमाज के व्यापक से व्यापकतर जाल को बिछाना हो तथा उन सब केन्द्रों को विभिन्न जाति समुदायों के अधिकाधिक सम्पर्क में लाना हो। यह संगठन प्रत्येक राष्ट्र के विविध आर्य संगठनों की अन्तर्राष्ट्रीय योजनाओं में भी परस्पर सम्बन्ध स्थापित करने का दायित्व निभा सकता है। परन्तु इसे किसी भी देश की अन्द-रूनी समस्याओं में तब तक उलझना नहीं होगा, जब तक कि ऐसा करना सार्वभौम हित की दृष्टि से उचित न हो।

प्रत्येक देश के स्तर पर एक-एक सार्वदेशिक सभा हो, जो वहाँ के संगठनात्मक प्रबन्ध की अधीक्षिका हो। शिक्षा के लिए सम्पूर्ण देश की आर्यसमाजों का प्रतिनिधित्व करने वाला और नीति-निर्धारण करने वाला एक सर्वथा स्वतन्त्र संगठन हो, जिसके सदस्य केवल उस देश की सार्वदेशिक द्वारा मान्य आर्य-समाजी हों और जिनका व्रत आर्य-समाज के लक्ष्यों के अनुरूप भारतीय संस्कृति और प्राचीन गौरव के अनुकूल महर्षि दयानन्द द्वारा प्रति-पादित शिक्षाप्रणाली को अधिका-धिक प्रचलित करना हो। एक अन्य संगठन का कार्य केवल सामाजिक आन्दोलनों को चलाना और उनके विषय में नीतिनिर्धारण करना होना चाहिए। इस संगठन को आर्यसमाज के प्रचार प्रसार आदि के विषय में चिन्तित नहीं रहना चाहिए।

इसी तरह धर्म सम्बन्धी विवादों के गठित धार्मिक सभा का गठन भी देशीय स्तरों पर भी किया जाना चाहिए और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी। एक बार अस्तित्व में आने के बाद इन संगठनों को अपने अपने क्षेत्र में कार्य करने की पूरी स्वतन्त्रता होनी चाहिए। निस्सन्देह इन संग-ठनों के कार्यकारी मण्डल का गठन प्रत्येक देश की सार्वदेशिक और सारे विश्व की अन्तर्राष्ट्रीय सभा द्वारा किया जाना चाहिए— एक निश्चित कालसीमा के साथ। परन्तु उसके बाद इनके कार्य में तब तक हस्तक्षेप न किया जाए जब तक कि कोई वैधानिक या सैद्धान्तिक आपत्ति ही न आ जाए। इसके निर्णय के लिए वर्तमान की तरह देशीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर न्यायार्य सभाओं का निर्माण किया जा सकता है।

इस प्रकार यदि सामाजिक और शिक्षा कार्यों के लिए सार्वदेशिक और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के संगठन स्वतन्त्र रूप में कार्य करने लगें तो वर्तमान सार्वदेशिक को जो बहुमुखी कार्य करने पड़ते हैं उनसे छुटकारा भी मिल जाएगा और इन क्षेत्रों में सार्वदेशिक स्तर पर जोर शोर से और पूरे समर्पण के साथ काम भी होने लगेगा। तब हमें केवल सार्वदेशिक के कुछ गिने चुने कर्मठ नेताओं का मुख ही हर बात के लिए नहीं देखना पड़ेगा। उनके पास सभी मोर्चों पर कार्य एक साथ करने के लिए न तो शक्ति रह जाती है, न ही समय। इस प्रकार की स्वतन्त्रता देने के बाद हर बात के लिए सार्व-देशिक की वृहत् अन्तरंग सभा बुलाने और स्वीकृति लेने की आवश्यकता नहीं रह जायेगी। तब सार्वदेशिक भी अपने उद्देश्य को पूर्ण करने में अधिक समर्थ हो पाएगी और समाज और शिक्षा के क्षेत्र में अब तक बरती

(शेष पृष्ठ ६ पर)

जगत्‌राम आर्य के निवास पर वैदिक सत्संग

स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में प० जगत्‌राम आर्य के नये निवास बी-१०६ प्रीत विहार में वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, महामन्त्री श्री सूर्यदेव और राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री छोटूसिंह एडवोकेट और महामन्त्री श्री ओम प्रकाश भंवर ने वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में प० जगत्‌राम आर्य के योगदान की प्रशंसा की और परिवार के लिए सुख समृद्धि तथा यश की कामना की। दिल्ली के सभी क्षेत्रों से आए हजारों आर्यजनों ने भी मंगल कामनाएं कीं। सभा प्रधान डा० धर्मपाल ने बताया कि काफी कठिनाइयों के पश्चात आर्य समाज प्रीतविहार के लिए दिल्ली विकास प्राधिकरण ने एक भूखण्ड आवण्टित कर दिया है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि सभी आर्य जनों के सहयोग से वहां पर शीघ्र ही एक मन्दिर का निर्माण किया जाएगा और वेदप्रचार के कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों से भी अपील की कि वे इस मन्दिर के लिए अपना योगदान शीघ्र भेजें।

हरिद्वार में संस्कृत सम्मेलन

संस्कृत अकादमी उत्तर प्रदेश के सहयोग से श्री ऋषि संस्कृत महाविद्यालय निर्धन निकेतन, खड़खड़ी हरिद्वार में २८ २९ ३० नवम्बर १९८८ को संस्कृत सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में संस्कृत अकादमी उत्तरप्रदेश के अध्यक्ष श्री करुणापति त्रिपाठी, ऋषि संस्कृत महाविद्यालय के संस्थापक ऋषि केशवानन्द, अखिल भारतीय साधुसमाज के अध्यक्ष स्वामी रामस्वरूप महाराज, महामन्त्री स्वामी श्यामसुन्दर महाराज सम्पूर्णानन्द संस्कृत विद्यालय के डा० देवस्वरूप मिश्र, डा० कैलाश पति त्रिपाठी संस्कृत अकादमी के निदेशक श्री रमेशचन्द रस्तोगी तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के डा० वेदप्रकाश शर्मा, मानव संसाधन विकास मन्त्रालय के सहायक शिक्षा सलाहकार डा० रामकृष्ण शर्मा आदि महानुभावों ने भाग लिया।

*

पाठकों के पत्र—सम्पादक के नाम

—आर्य सन्देश" ने ११ वर्ष सफलतापूर्वक तय किये आपको हार्दिक बधाई। मेरा प्रस्ताव है कि अब इसे पत्रिका का रूप देने पर विचार करें ताकि इसके अंक लायब्रेरियों में सुरक्षित रखे जा सकें। ऋषि निर्वाणांक तो बहुत ही अच्छा बन पाया है। २० नवम्बर के अंक में पाठक जी का रामराज्य, मलिक का जवाहर लाल पर लेख ओजपूर्ण थे।"

—[illegible] कुमार [illegible]
ए-१५-ए, विजय पथ, जयपुर

(पृष्ठ २ का शेष)

आज के युग में दयानन्द

व्यक्तिगत स्वतन्त्रता मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना' की स्थिति भी समाप्त हो जाएगी। और भी अच्छा होगा, यदि धर्मार्य सभा को ही यह भी कार्य दे दिया जाए कि वह समस्त विश्व में वेदप्रचार की नीति का निर्माण एवम् उसके लिए उचित व्यवस्था करे।

यदि हम धर्म, समाज शिक्षा और वेद प्रचार के सम्बन्ध में इतने कटिबद्ध होकर बढ़ने को तैयार हैं, तब अगली सदी हमारी है। पर यदि हम इसी स्तर और गति पर बढ़ना चाहते हैं, जिस पर आज चल रहे हैं, तब ऋषि के स्वप्न दूर से दूरतर होते चले जाएंगे और आर्यसमाज का कार्य केवल साप्ताहिक सत्संगों कुछ वार्षिक उत्सवों एवं कुछ मन्दिरों के निर्माण तक ही सिमट कर रह जाएगा।

पर स्वामी दयानन्द तो 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का स्वप्न और सन्देश हमें देकर गए हैं। यदि चारों ओर से घिरती इस अमावस को दूर करना है तो फिर से सैकड़ों गुरुदत्तों को सामने लाना होगा और उन्हें कार्य करने में पूरा समर्थन और सहयोग देना होगा। ताकि वे सहस्रों दीप इस बढ़ते अंधकार को मिटाने के लिए कृतसंकल्प होकर अहर्निश जलने का व्रत लें। □

त्रिभाषा से संस्कृत हटाने पर बीकानेर के विद्वानों में रोष

बीकानेर राजस्थान संस्कृत परिषद् के महामन्त्री श्री अम्बिका दत्त शास्त्री आर्य ने विद्वानों की सभा को सम्बोधित करते हुए भारत के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से आग्रह किया है कि केन्द्रीय शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन ने त्रिभाषा फार्मूला से संस्कृत हटाने का जो आदेश दिया है वह सर्वथा अदूरदर्शितापूर्ण है जिससे समस्त भारत के संस्कृत प्रेमियों को गहरा धक्का लगा है इस आदेश को वापस लिया जाय ताकि संस्कृत प्रेमियों को आश्वस्त किया जा सके। शास्त्री ने देश की संस्कृत प्रेमी जनता से अनुरोध किया है कि जगह-जगह संस्कृत रक्षा समिति बनायी जायें।

●

गुरु० कांगड़ी विश्वविद्यालय में पारिवारिक सत्संग

यह सभी आर्य जनों के लिए हर्ष का विषय है कि वर्षों बाद पारिवारिक सत्संगों की परम्परा को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में पुन प्रारम्भ किया गया है। वास्तव में यह कार्य वही कर सकते हैं जिनके मन में लग्न हो। गुरुकुल कांगड़ी में अनेकों आर्यसमाजी हैं, पर जो तड़प नये विताधिकारी श्री सहगल में देखने को मिली, वह कम ही लोगों में होती है। इस वर्ष सीनेट की बैठक वाले दिन उनके निवास पर पारिवारिक-सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आचार्य राम प्रसाद जी वेदालंकार ने यज्ञ कराया और आचार्य प्रियव्रत वेद वाचस्पति और डा० सत्यकेतु विद्यालंकार के प्रवचन हुए। यह पारिवारिक सत्संगों की परम्परा चलती रहे, ऐसी हमारी कामना है।

श्रद्धानन्द बलिदान अंक

'आर्यसन्देश' के लेखकों कवियों, पाठकों, आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से विनम्र निवेदन है कि २५ दिसम्बर को अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान दिवसे पर प्रकाश्य 'आर्यसन्देश' के विशेषांक के लिए अपने बहुमूल्य [illegible], कविताएं या विज्ञापन शीघ्र भेजें, जिससे यह अंक समय पर सभी पाठकों तक पहुंचाया जा सके।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R. N N. o. 32387/77 Post in N.D.P.S O. on 8 9-12 88 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५१ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३९

(पृष्ठ ३ का शेष)

प्रो० शेरसिंह ने गुरुकुल कांगड़ी का...

जाए, उसमें आधुनिकता तो हो पर उसकी आधारभूमि वेदसम्मत भारतीय परिवेश तथा भारतीय ज्ञान का ही होनी चाहिए।

गुरुकुल कांगडी के हितैषियों का प्रोफेसर साहब को पूरा पूरा सहयोग मिलेगा और निश्चय ही यह गुरुकुल अपने गौरव को प्राप्त करेगा, ऐसी हमारी कामना है।

१३ नवम्बर १९८८ को आचार्य सेल्ल प्रोफेसर शेरसिंह जी ने कुलाधिपति पद का कार्यभार संभाल लिया। इसी संदर्भ में १५ नवम्बर १९८८ को विश्वविद्यालय के वेदभवन में प्रोफेसर शेरसिंह जी का स्वागत समारोह आयोजित किया गया। यज्ञोपरान्त पुष्पमालाओं से प्रोफेसर शेरसिंह जी का तथा डा० सत्यकेतु विद्यालंकार का अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जयदेव वेदालंकार ने प्रोफेसर साहब के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए आशा व्यक्त की कि गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय प्रगति के सोपान पर सतत आरूढ़ होता चलेगा। डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने गुरुकुल के साथ अपने गहरे सम्बन्धों का विवरण देते हुए, विश्वास व्यक्त किया कि उनका जीवन सदैव गुरुकुल के उत्थान के लिए अर्पित रहेगा। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने कहा कि गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के वैभव के साथ साथ हमें गुरुकुल कांगडी के विद्यालय विभाग को भी देखना चाहिए क्योंकि विश्वविद्यालय की आधारभूमि वही है। आजकल जो स्नातक इस विश्वविद्यालय से निकलते हैं उन्हें गुरुकुलीयता का पता ही नहीं है। हमें विद्यालय विभाग को भी पल्लवित करना चाहिए क्योंकि असली गुरुकुल तो वही है। डा० हरिप्रकाश ने कहा कि मेरी कामना है कि प्रोफेसर साहब इस कण्टकाकीर्ण मार्ग पर बिना किसी बाधा के आगे बढ़ते रहें। पूर्व कुलपति आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति और श्री बलभद्र कुमार हूजा ने भी अपना सहयोग देने का आश्वासन दिया। कुलपति प्रोफेसर आर सी शर्मा ने विश्वविद्यालय की गत तीन वर्षों की उपलब्धियों का जिक्र करते हुए विश्वास दिलाया कि वे विश्वविद्यालय की प्रगति के लिए यथाशक्ति प्रयास करते रहेंगे। कर्मचारियों के प्रतिनिधि श्री वेदपाल ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। श्रीमती प्रभात शोभा पण्डिता ने वैदिक ऋचाओं के गायन के साथ अपना वक्तव्य आरम्भ किया और भाव-विह्वल होकर कहा कि यह मेरा मायका है। मैं यहां लौटकर आयी हूं। हमारा किसी प्रकार का भी स्वार्थ नहीं है। मैं इसके लिए कुछ कर सकूं तो अपने को धन्य समझूंगी। अन्त में प्रोफेसर साहब ने सभी का धन्यवाद करते हुए कहा कि मेरे लिए अधिकार का कोई अर्थ नहीं है, मेरा अधिकार तो कर्त्तव्य से नियन्त्रित है। संस्था के हित में कार्य करते हुए यदि किसी प्रकार की बाधा आती है, तो अधिकार प्रयोग की कोई सीमा नहीं होगी। मैं वही करूंगा जो संस्था के हित में आवश्यक होगा।

अगले दिन गुरुकुल कांगडी के विद्यालय विभाग में भी प्रोफेसर साहब का स्वागत किया गया। इस अवसर पर प्रो० शेरसिंह, डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, प्रो आर सी शर्मा, डा धर्मपाल, श्री अर्जुनदेव, डा हरिप्रकाश, डा. निरूपण विद्यालंकार तथा श्रीमती प्रभात शोभा पण्डिता ने गुरुकुल के लिए अपना सहयोग देने का आश्वासन दिया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस, गली नं०१७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी (सी०) ७५१

वर्ष १२ अंक ६ | रविवार १८ दिसम्बर १९८८ | सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८८ | मार्गशीर्ष २०४५
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल की ओर से महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस

दुःखी और संकटग्रस्त लोगों की सहायता करना आर्यसमाज का महत्त्वपूर्ण कार्य है

—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना बम्बई के काकड़वाड़ी मोहल्ले में १८७५ में की थी। पिछले ११३ वर्षों का आर्यसमाज का इतिहास संघर्षों का इतिहास है। आज भारतवर्ष में उस समय प्रारम्भ किए गए आन्दोलनों का कहीं भी नामोनिशान नहीं है। ब्राह्मसमाज, प्रार्थना समाज और देवसमाज उसी काल में प्रारम्भ किए गये थे, परन्तु उनका कोई अस्तित्व इसलिए नहीं रहा क्योंकि उनके पास राष्ट्र के हित में और मानवता के हित में करने के लिए कोई कार्यक्रम नहीं था। आर्यसमाज के कार्यक्रमों में मानव कल्याण सर्वोपरि है और महत्वपूर्ण है राष्ट्र कल्याण के कार्यक्रम। पिछले दिनों बिहार के भूकम्प पीडितों के लिए और उससे पहले राजस्थान व मध्यप्रदेश के सूखा-पीडितों के लिए आर्यसमाज ने सहायता कार्य हाथ में लिये। पंजाब के विस्थापितों के लिए जो कार्य दिल्ली के आर्य भाइयों और बहनों ने किया, वह प्रशंसनीय है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में अनेक स्थानों पर, आर्यसमाजों में पंजाब से आए भाइयों के लिए शिविर लगाए गए। आर्यसमाज सेवारत है ये लोग अभी भी कष्ट [illegible] रहे हैं। [illegible] के लिए [illegible] [illegible] जुटाई और [illegible] आर्य [illegible] वस्तुओं का प्रबन्ध किया। [illegible] आनन्दबोध सरस्वती ने दक्षिण वेद-प्रचार मण्डल द्वारा आयोजित महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के अवसर [illegible] [illegible] समारोह के बाद ऋषि-लंगर का भी प्रबन्ध किया गया।

पूर्वी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि उपसभा की ओर से

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस

महर्षि दयानन्द सरस्वती का आर्य जाति पर जो उपकार है उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जो मनुष्य जीवन से सम्बंधित हो और उसके लिए उन्होंने कार्य न किया हो। उन्होंने मनुष्य की शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक विकास की कामना की और तदनुसार कार्य किया। उन्होंने मनुष्य-मात्र को समानता का अधिकार दिलाया। वे वर्णाश्रम व्यवस्था के हिमायती थे। जन्मना जाति का उन्होंने विरोध किया। यदि आर्यसमाज के अनुयायियों ने इन ११३ वर्षों में इन सिद्धान्तों का ईमानदारी से पालन किया होता तो हमें आज समता समारोह, अस्पृश्यता निवारण सम्मेलन आयोजित करने की आवश्यकता न पड़ती। पर ऐसा हुआ नहीं। हमने अपने चारों ओर न जाने कितनी तरह की दीवारें खींच रखी हैं। पराधीन भारत में तो हम विवश थे, पर आज ऐसा क्यों है? हम सभी को समान मानें तभी हम महर्षि के उपकार से उऋण हो सकते हैं।

उन्होंने स्त्री जाति के कल्याण के लिए भी अनेक कार्य किए। स्त्रियों के लिए वेद का अध्ययन निषिद्ध था। 'स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम्'। महर्षि ने स्वयं इस विचारधारा का विरोध किया और सभी जातियों/वर्णों की स्त्रियों के लिए शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया। पूना में महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रवचन हुए थे। वहां एक महापुरुष हुए हैं – ज्योति बा फूले। उन्होंने महर्षि से प्रेरणा लेकर अनेक बालिका विद्यालय खोले। आज महाराष्ट्र में ज्योति बा फुले के नाम से अनेक संस्थाएं चल रही हैं। [illegible] और आन्दोलन चल रहे हैं—ज्ञान-वर्धिनी सभा'। इस संस्था के तत्त्वावधान में गरीब परन्तु योग्य व मेधावी बालकों के लिए विशेष शिक्षा की व्यवस्था की जाती है। क्या हम ऐसा नहीं कर सकते। हमारा यह विद्यालय - माता रतन देवी स्कूल—बच्चियों की शिक्षा के लिए है। आर्यसमाज द्वारा संचालित

(शेष पृष्ठ ७ पर)

जैसी पूरी विद्या संस्कृत में है, वैसी किसी भाषा में नहीं।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

सम्पादक—सुखचन्द गुप्त | प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक के नाम पत्र—

पाठकों के पत्र

(पाठकों के पत्र से सम्पादक का पूर्णत सहमत होना आवश्यक नहीं है।)

"नशाबंदी आर्यसमाज का महत्त्वपूर्ण कार्य है ?"

(उक्त पत्र किन्ही गुमनाम महिला ने लिखा है, तथा उन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर कटु सत्य को उजागर किया है—अतएव ज्यों का त्यों प्रकाशित किया जा रहा है।

—सम्पादक

आज आपकी सप्ताहिक पत्रिका आर्यसन्देश में एक लेख 'नशाबन्दी आर्यसमाज का महत्त्वपूर्ण कार्य है' पढा आपका यह लेख पढ कर ऐसा लगा कि आप शराब को ही नशा समझते हैं। आप शायद नहीं जानते कि दिल्ली में तीन लाख से भी अधिक युवा पीढी Smak (स्मैक) के नशे से पीडित है और उन तीन लाख युवा तथा युवतियों से सम्बन्ध रखने वाले लाखों से भी अधिक उनके परिवारों के सदस्य हैं जो आग में जल रहे हैं। जिनके घर बरबाद हो रहे हैं। जिनकी अभागिन माताएं और पत्निया तथा बच्चे रोटी के मोहताज हो गये हैं अगर आपका समाज लोगो की भलाई के लिए कुछ कर सकता है तो सब से पहले इस नशे को खत्म करने के लिए कदम उठाइये। दिखावे के लिए हमारी सरकार और कुछ Private agencies Deaddiction camps भी खोलती रहती हैं। पर इनसे लाभ किसको हुआ है. ७,८ दिन जब तक withdrawl होता है, addict को camp में रखा जाता है, उसके बाद कोई followup नही। addict की एक एक नस में smack इस तरह से mix हो जाती है कि उसकी body उसके बिना रह ही नही सकती। जब तक दिल्ली में स्मैक प्राप्त है कोई उसका आदी उसे छोडने को तैयार नहीं है। मेरी एक मित्र का बेटा ६ साल से स्मैक से पीडित है। बडी कोशिशों के बाद भी जब वह नहीं छोड पाया तो उसे दिल्ली से बहुत दूर एक छोटे से गांव में किसी सम्बन्धी के पास भेज दिया गया। ६ महीने के के बाद दिल्ली वापस लाया गया। डेढ़ साल बिल्कुल ठीक रहा। पढा लिखा था, अच्छा कार्य भी मिल गया, मां ने शादी कर दी। डेढ़ साल के बाद फिर शुरू हो गया। अब बच्चा है, बीबी है, दिल्ली से बाहर कहां भेजा जाये। जब भी शुरू करता है, एक महीने में ही पकड़ा जाता है। अब डेढ साल से यही चल रहा है कि दो महीने नौकरी छुडवा कर घर बिठा लिया जाता है खूब सेवा की जाती है। फिर नौकरी पर जाता है, जब भी पैसे हाथ में आते हैं तो सीधा स्मैक के अड्डे पर जाता है। लडके के पिता रिटायर्ड हैं, थोडी सी पेंशन मिलती है। इस बेटे के चक्कर में घर भी बिक गया है। फिर सिर पर हजारों रु० कर्ज हो गया है। घर में हर समय बडा तनाव रहता है। मेरी मित्र टैगोर गार्डन में रहती है। और walking distance पर ही रघुबीर नगर है जहां smack बडी मात्रा में बिकती है। availability इतनी नजदीक है कि उसका छुटकारा बहुत बडी समस्या बन गई है। police officials को सब knowledge है कि रघुबीर नगर में Peddllers कौन-कौन से हैं ? constables consumers को तो पकड लेते हैं, उनसे ले दे कर उन्हें छोड देते हैं। परन्तु सप्लायर्ज को वे पकडते नहीं। दक्षिणी दिल्ली के जल विहार में खुली बिक रही है। कोई रोक नहीं है। हमारी सरकार ने स्मैक बेचने और उपभोग करने वालों के लिए कडी सजा रखी है, वह केवल जनता को दिखाने के लिए। ३ लाख लोग रोजाना स्मैक का उपभोग करते हैं उनमें से कितनों को पकड कर जेल भेजा गया है ? करोडों रु० का रोज का व्यापार चलता है। मैं कामना करती हू कि हमारे किसी उच्च पुलिस अधिकारी का या बहुत बडे राजनयिक का कोई पारिवारिक सदस्य इस रोग से पीडित होता तो उन्हें पता चलता कि क्या तकलीफ होती है।

मेरा आपसे निवेदन है कि आप अपने पूरे सगठन को साथ लेकर पुलिस कमीशनर से मिलिए और उसके रघुबीर नगर और जल विहार के Peddllers से अवगत कराईये। वैसे ऐसी कोई जगह नहीं है जो पुलिस कमीशनर से छिपी हो। दिल्ली की हर re-setlement colony में यह विष available है। पुलिस कमीशनर चाहे तो क्या नहीं कर सकता ? आप उनसे प्रार्थना करें कि ईमानदार पुलिस अधिकारी को इन कालोनियों में भेजें सिपाही भी ईमानदार हों। SHO ईमानदार हो तो नीचे के सब कर्मचारी सीधे हो जाते हैं। जब तक दिल्ली की पुलिस कोई एक्शन नहीं लेती, यह बिमारी बढती जायेगी। करोडों घर बरबाद हो रहे हैं और हो जायेंगे। यह सामाजिक बुराई है, आर्यसमाज का छठा नियम मुझे याद आ गया संसार का उपकार करना इस "समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।" अगर आप स्मैक को खत्म करवाने की ओर अपने कदम बढायेंगे तो आप समझ लीजिये कि आपने जीवन में बहुत बडा कार्य किया है। आप सीधे स्वर्ग में जायेंगे। मोक्ष प्राप्त हो जायेगा। दोबारा जन्म लेने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी को भी मेरा सन्देश दे दीजिए। इससे बढ़ कर और कोई समाज का कार्य नहीं है। शराब का नशा तो स्मैक के सामने कुछ भी नहीं। शराब छोडना तो बडी आसान बात है। आपने smak के बारे में सुना ही होगा। मैंने अपनी मित्र के साथ अपने सामने बहुत कुछ होते देखा है। इस नशे की आदत के कारण उसके बेटे ने कौन सा बुरा काम नही किया ?

इतना कुछ होने पर भी उसके बेटे को कोई आत्मज्ञान नहीं है। न उसे कोई लज्जा है, न भय है, न उसकी कोई इज्जत है। पुलिस से पकडे जाने पर भी अगले दिन वहीं जाता है। आपके आर्यसमाज का इतना बडा सगठन है। दिल्ली की सब समाजों से अपील करिये, सब

(शेष पृष्ठ ६ पर)

प्रार्थना गीतमाला

ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥

—देवनारायण भारद्वाज

सब छोड जगत् के आडम्बर, आओ हम निश्छल भक्ति करें।
वह कैसा देव निराला है, आओ हम उसकी भक्ति करे॥

यह प्राणवान सब जीव जगत्
या प्राण रहित जड मीत जगत्
एक वही है राजा सब का
महिमा अनन्त उसकी अद्भुत।

अपने पितु प्यारे राजा की, सन्तान प्रजा बन भक्ति करें।
वह कैसा देव निराला है, आओ हम उसकी भक्ति करें॥

प्राणी मानव दो पद वाले
सब पशु वर्ग चार पद वाले
प्रकृति जन्तु जीवाणु सभी के
उसने शरीर में रच डाले।

अति सूक्ष्म बृहत्-निर्माण की, निर्माता शक्ति की भक्ति करें।
वह कैसा देव निराला है, आओ हम उसकी भक्ति करें॥

सुख स्वरूप वह देव हमारा
वही बढ़ाये विभव हमारा
जड चेतन या भौतिक धन
सभी उसी ने दिया हमारा।

अपनी उत्तम सामग्री से, आओ विधेय हम भक्ति करें।
वह कैसा देव निराला है, आओ हम उसकी भक्ति करें॥

ओ३म्
आर्य सन्देश

"हिन्दी के द्वारा ही सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।"
—महर्षि दयानन्द सरस्वती

हमें कब तक राष्ट्रभाषा का अपमान सहना होगा ?

समाचार पत्रों में यह पढ़कर बहुत ही प्रसन्नता हुई कि २२ नवम्बर १९८८ को राज्यसभा ने यह मत व्यक्त किया कि देश में सभी को अपनी मनचाही भाषा बोलने का अधिकार है। श्री एस० ए० अहलूवालिया ने राज्य सभा में बताया कि पंजाब में हिन्दी बोलने वालो पर जुल्म ढाये जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि बिहार से आये स्वर्णसिंह बग्गा को लुधियाना की एक अदालत में हिन्दी बोलने से रोका गया। उनका कहना था कि अदालत में हिन्दी बोलने की वजह से उन्हें न सिर्फ हत्या की धमकियाँ दी गई बल्कि उन्हें मारा पीटा गया और उनकी बहिन का अपहरण भी कर लिया गया। इसके बावजूद भी श्री बग्गा ने कहा कि वे अदालत में सिर्फ हिन्दी में बोलेंगे क्योंकि अपनी भाषा में बोलना उनका अधिकार है।

एक अन्य उदाहरण भी पंजाब में हिन्दी के अपमान का सामने आया है। लक्ष्मीकान्ता चावला, गली नरसिंह दास, अमृतसर पंजाब का पिछले दिनों सम्पादक के नाम एक पत्र पढ़ा था। उन्होंने लिखा था कि दो अक्तूबर १९८८ को उन्होंने चण्डीगढ़ टेलीफोन एक्सचेंज से अमृतसर के लिए काल बुक कराने के लिए अपना फोन नम्बर हिन्दी में बताया तो ड्यूटी पर तैनात कर्मचारी गर्म हो उठा और उसने डाटकर कहा कि फोन नम्बर अंग्रेजी में बताओ। इससे पहले भी उन्हें १९६९-७० में एम ए. संस्कृत की परीक्षा के प्रश्नपत्र भी अंग्रेजी में लेने पड़े थे। १९७२ में पुन जब उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से ज्ञानी परीक्षा के लिए गलती से या जान बूझकर फार्म हिन्दी में भर दिया तो उन्हें परीक्षार्थी ही नहीं माना गया। १९७६ में गुरुदेव नानक विश्वविद्यालय का एल एल बी का प्रवेश फार्म भरा तो खूब डाट मिली था। इसी विश्वविद्यालय में एक शोधनिबन्ध केवल इसलिए प्रस्तुत करने से रोक दिया गया था, क्योंकि यह हिन्दी में लिखा था। यहाँ तक कि लोहिया मशीन्स कानपुर की स्कूटर बुकिंग का फार्म भी हिन्दी में भरने के कारण रद्द हो गया था।

दिल्ली के प्रगति मैदान में समय समय पर व्यापार मेलों का आयोजन होता रहता है। वहाँ पर उत्तर प्रदेश का भी मण्डप होता है। आज तक मण्डप अपनी उत्तर प्रदेशीय सांस्कृतिक विरासत का प्रभाव छाने जाने वालों पर नहीं छोड़ पाया। पंजाब मंडप में मक्का की रोटी, सरसों का साग मिलेंगे, तमिलनाडु मंडप में डोसा बड़ा मिलेंगे पर उत्तर प्रदेश मंडप में काफी ही मिलेगी। क्या उनके अपने व्यंजन नहीं हैं। हमें इससे भी दुःख नहीं होता। हमें दुःख इस बात का है कि वहां पर जितने भी सूचना पट थे, उन सब में अंग्रेजी का बोल बाला था और हिन्दी से परहेज था। क्या अपने घर में भी हिन्दी की यही दुर्गति होनी चाहिए।

यह सब कितनी अजीब बात है। हम हिन्दी के सम्मान की बात करते हैं। हम खूब हिन्दी दिवस मनाते हैं। हिन्दी में काम करने की कसमें खाते हैं। परन्तु जब व्यवहार में हिन्दी लाने की बात होनी है तो वही ढाक के तीन पात। अक्सर लोग राष्ट्रभाषा हिन्दी की वकालत करते मिल जाते हैं। मगर सच तो यह है कि जो हिन्दी की वकालत करते हैं, वे भी अंग्रेजी का सहारा लिये बिना, अपनी बात समझा नहीं पाते। हमारे कुछ नेता तो यह भी कहते सुने गए कि वे अंग्रेजी शब्दों का बातचीत में प्रयोग इसलिए करते हैं, ताकि लोग यह न समझ बैठें कि उन्हें अंग्रेजी नहीं आती। इसी कारण वे अपनी प्रेस कान्फ्रेंस में जरूर अंग्रेजी बोलते हैं। मानो अंग्रेजी जानना ही सभ्यता की निशानी हो हमारे सारे दस्तावेज अंग्रेजी में होते हैं। शादी ब्याह और जन्म दिन के निमन्त्रण पत्र अंग्रेजी में छपाए जाते हैं। ऐसा लगता है कि हिन्दी में कार्ड छपाने वाले तो सभी जाहिल होते हैं। हमारी मानसिकता विकृत हो चुकी है।

दीवाली या नव वर्ष के अवसर पर आप बाजार में जाय तो हिन्दी में छपा शुभकामना पत्र बहुत ही मुश्किल से मिलगा। हम अंग्रेजी में लिखे छपे शुभकामना पत्र ही खरीदते हैं और भेजते हैं। हम क्यों नहीं स्वयं छपवा लेते या हाथ से ही लिखकर भेजते। शायद यह सब हमारी शान के विपरीत है। हम केवल हिन्दी का ढिंढोरा पीटते हैं। हम हिन्दी को पूजा करते हैं। उसे व्यवहार में नहीं लाते।

बहुत ही कम लोग होंगे जो उन समारोहों का बहिष्कार करते हो जिनके निमन्त्रण पत्र उन्हें अंग्रेजी में मिलते हैं। हम बहिष्कार कर कैसे सकते हैं, क्योंकि हमारे स्वयं के व्यवहार में अंग्रेजी रची बसी है, हिन्दी या संस्कृत को तो हमने भाषणों या पूजा पाठ की भाषा बना दिया है। किसी विदेशी भाषा का ज्ञान होना अच्छी बात है पर उसे दिखावे की भाषा बनाना गलत है।

न जाने कितने वर्षों से हिन्दी प्रेमी चिल्ला रहे हैं कि—लोक सेवा परीक्षाओं से अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त की जाये, पर यह समाप्त नहीं हो रही है। कालेजों में भी हिन्दी के तो विकल्प हैं, परन्तु अंग्रेजी अनिवार्य है। यह अनिवार्य उस समय तक रहेगी, जब तक हमारी कथनी और करनी अलग-अलग रहेगी।

यदि हम चाहते हैं कि हिन्दी हो तो हमें हिन्दी को व्यवहार में लाना होगा। पिछले दिनों भारत में रूस के राष्ट्रपति श्री गोर्बाचेव आये। वे अपनी भाषा में बोले और हमारे नेता अंग्रेजी में बोले। वे यह भूल गये कि वे वाशिंगटन या लन्दन में नहीं हैं बल्कि दिल्ली में बोल रहे हैं। नहीं ऐसी बात नहीं है। वे भूले नहीं थे। उन्हें पता था कि वे दिल्ली में बोल रहे हैं। असलियत यह है कि वे हिन्दी को अपनी भाषा नहीं मानते। वे तो अंग्रेजी को अपनी भाषा मानते हैं। पिछले दिनों मद्रास में भी यह सब हुआ। पता नहीं, हमें कब तक राष्ट्रभाषा का अपमान सहना होगा।

देश के सब से बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है।

—नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

क्या हिन्दुस्तान में हिन्दू होना अपराध है ?

लेखक—प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा

विश्व के सभी जनतान्त्रिक देशों में बहुसंख्यक वर्ग का स्वाभाविक रूप से वर्चस्व होता है। अल्पसंख्यकों की अधिक से अधिक मांग यह रहती है कि कानूनन उन्हें बहुसंख्यकों के समकक्ष माना जाय और धर्म या भाषा के आधार पर उनसे किसी प्रकार का भेदभाव न किया जाय। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व भारत के मुसलमानों ने पृथकता के आधार पर विशेष अधिकार प्राप्त किए और पाकिस्तान बन जाने के बाद भी उन अधिकारों को प्राप्त करते रहना वह अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानने लगे हैं। धार्मिक आधार पर पाकिस्तान के गठन और पाकिस्तान के इस्लामी राज्य घोषित होने के बाद भारत के मुसलमानों को चाहिए था कि वह पृथकतावाद को छोड़कर भारत की राष्ट्रीय धारा में सम्मिलित हो जाते।

परन्तु पृथक्तावाद के आधार पर वह लाभ में रहते हैं। इसका अनुभव वह कर चुके थे और सत्तारूढ़ दल व अनेक विपक्षी दलों में अल्पसंख्यकों के वोट लेने के लिए तुष्टीकरण की दौड़ ने उन्हें और पृथक्तावादी दृष्टिकोण अपनाने के प्रोत्साहित किया। इसलिए अल्पसंख्यकों की भारत में मांग योग्यता के आधार पर बराबरी की नहीं अपितु विशेष अधिकारों और सुविधाओं की रही है और सत्तारूढ़ दल उस अनुचित मांग को पूरा भी कर रहा है।

जापान स्विटजरलैंड, जर्मनी, चीन, यूगोस्लाविया आदि के संविधान में यह स्पष्ट प्रावधान है कि 'कानून के समक्ष सब नागरिक बराबर होंगे।'' मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा की धारा ७ कहती है। ''कानून के आगे सब बराबर हैं और बिना किसी भेदभाव के कानून की सुरक्षा के अधिकारी हैं।''

किसी मुस्लिम देश ने इन मानव अधिकारों को नहीं माना। मुस्लिम देशों में इस्लाम राज्य धर्म होता है और अल्पसंख्यकों के अधिकार नगण्य होते हैं। अनेक मुस्लिम देशों में अन्य धर्मावलम्बियों को पूजा उपासना करने, अपने उपासना स्थल बनाने, यहां तक कि अपने धर्मग्रन्थ रखने का भी अधिकार नहीं है। मलेशिया, जहां मुस्लिम जनसंख्या ४५ प्रतिशत से ५० प्रतिशत के बीच है, वहां भी इस्लाम राज्यधर्म है और अन्य धर्मावलम्बियों को बराबर के अधिकार प्राप्त नहीं हैं।

भारत में १९८७ की जनगणना में हिन्दुओं की जनसंख्या ८२, ६ प्रतिशत है और सिख, बौद्ध व जैन भी यदि इनमें सम्मिलित कर लिये जाएं तो यह संख्या ८६ २ प्रतिशत हो जाती है।

भारत के संविधान में यद्यपि अनुच्छेद १४ में कानून के सामने बराबरी अनुच्छेद १५ में भेदभाव की मनाही अनुच्छेद १६ में नौकरियों में समान अवसर, अनुच्छेद २९ (२) में शिक्षा के समान अवसर घोषित किए गए हैं परन्तु अनुच्छेद ३० में अल्पसंख्यकों को अपनी शिक्षा संस्थाएं स्थापित करने और और चलाने का अधिकार देने अनुच्छेद ४४ में देश के सभी नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता (सिविल कोड) बनाने के निदेशक सिद्धान्त को लागू न करने और प्रधानमन्त्री के अल्पसंख्यकों के लिए १५-सूत्री कार्यक्रम से अल्पसंख्यकों को ऐसे अधिकार और सुविधाएं प्राप्त हो गई हैं जिनके कारण समय समय पर और स्थान स्थान पर हिन्दुओं को ऐसा भेदभाव व पक्षपात सहन करना पड़ता है जिससे उसके मन में यह क्षोभ पैदा होता है कि क्या हिन्दुस्तान में हिन्दू होना अपराध है ?

इससे अधिक विडम्बनापूर्ण व आश्चर्यजनक बात क्या हो सकती है कि हिन्दुत्व के श्रेष्ठतम प्रचारक महर्षि दयानन्द व स्वामी विवेकानन्द की संस्थाएं, आर्यसमाज व रामकृष्ण मिशन न्यायालय के द्वार खटखटाए कि वह हिन्दू संस्थाएं नहीं और उन्हें अल्पसंख्यकों की श्रेणी में रखा जाये।

डी० ए० वी० संस्थाओं की प्रबन्धकर्तृ सभा के अध्यक्ष सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश स्वर्गीय श्री जे० एन० कपूर प्रायः मुलाकात में खिन्न हृदय से मुझे कहते थे कि 'मेरी आत्मा न्यायालय में आर्यसमाज के अनुयायी हिन्दू नहीं'' तर्क प्रस्तुत करते हुए चिल्लाती है, परन्तु मैं क्या करूं, डी० ए० वी० संस्थाओं को बचाने का और कोई उपाय नहीं।

प्रदेश सरकारों की शिक्षा संहिताओं के अनुसार कोई मान्यता प्राप्त स्कूल व कालेज अपने स्कूलों में धार्मिक शिक्षा नहीं दे सकता। स्कूल कालेज का भवन किसी संस्था के कार्यक्रम के लिए नहीं दिया जा सकता। छात्रों का प्रवेश तथा अध्यापकों व कर्मचारियों की नियुक्तियां सरकारी व शिक्षा विभाग के आदेशों नियमों व निरीक्षण में की जाती है। परन्तु यह नियम संहिताएं व आदेश अल्पसंख्यक स्कूलों पर लागू नहीं होते। वह अपने यहां कोई भी धार्मिक पाठ्यक्रम रख सकते हैं, भवन व मैदान को किसी भी संस्था को उपयोग के लिए दे सकते हैं। कम नम्बर होने पर भी किसी को प्रवेश दे सकते हैं और प्राध्यापकों के चयन में शिक्षा विभाग व विश्वविद्यालय का उनके यहां कोई दखल नहीं।

राजधानी दिल्ली में कालेजों में दाखिले दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा संचालित होते हैं और कालेज प्रबन्ध समितियों को भी स्वेच्छा से एक भी विद्यार्थी दाखिल करने का अधिकार नहीं। परन्तु विश्वविद्यालय के जो नियम डी० ए० वी० कालेज, सनातन धर्म कालेज, रामजस कालेज, हिन्दू कालेज आदि में लागू होते हैं वह सेंट स्टीफंस, जोसेफ एण्ड मेरी खालसा, जाकिर हुसैन कालेज पर लागू नहीं होते। कम नम्बर होने पर भी मुस्लिम सिख, ईसाई छात्र एवं छात्राओं को दाखिला मिल जाता है जबकि अधिक नम्बर होने पर भी हिन्दू छात्र एवं छात्राओं को नहीं।

जब मैं दिल्ली का मुख्य कार्यकारी पार्षद था तो क्वीन मेरी स्कूल की प्रबन्ध समिति ने स्कूल की प्रिंसिपल के लिए एक विज्ञापन दिया। विज्ञापन में कहा गया था कि प्रत्याशी के लिए कैथोलिक ईसाई होना अनिवार्य है। किसी की शिकायत पर कि ऐसा विज्ञापन शिक्षा संहिता के विरुद्ध है, शिक्षा विभाग ने स्कूल प्रबन्ध समिति के पदाधिकारियों को सुझाव दिया कि वह किसी को भी अपनी इच्छानुसार प्रिंसिपल रख लें परन्तु विज्ञापन में कैथोलिक ईसाई होने की अनिवार्यता की शर्त न रखें।

प्रबन्ध समिति ने इसे स्वीकार न किया और न्यायालय में चले गए। न्यायालय में शिक्षा विभाग ने तर्क दिया कि स्कूल में प्रायः सब छात्राएं हिन्दू हैं तो यह स्कूल ईसाई स्कूल कैसे हुआ ? न्यायालय ने निर्णय दिया कि भारत के संविधान के अनुसार धार्मिक अल्पसंख्यकों द्वारा चलाई जा रही शिक्षा संस्थाओं में सरकार हस्तक्षेप नहीं कर सकती। उसमें पढ़ने वाले छात्र, शिक्षक व कर्मचारी चाहे सभी हिन्दू हों, परन्तु प्रबन्ध समिति यदि धार्मिक अल्पसंख्यकों की है तो वह शिक्षा संस्था अल्पसंख्यक संस्था कहलायेगी।

आर्यसमाज सनातन धर्म व अन्य हिन्दू संस्थाओं द्वारा चालित शिक्षा संस्थाओं के प्रिंसिपल मुख्याध्यापक व अध्यापक किसी भी जाति, धर्म व विचार के हो सकते हैं। इन संस्थाओं के अनेक अध्यापक इनकी विचारधारा के कट्टर विरोधी हैं यहां तक कि धर्म के ही कट्टर विरोधी प्राध्यापक इन धार्मिक संस्थाओं के स्कूलों में पहुंच गए हैं। परन्तु ईसाई मुस्लिम, सिख संस्थाओं द्वारा चालित शिक्षा संस्थाओं में वह अपने कट्टरपंथी शिक्षक व कर्मचारी भर्ती कर सकते हैं।

रामकृष्ण मिशन को भी न्यायालय में जाकर सिद्ध करना पड़ा कि वह हिन्दुओं से अलग है और अल्पसंख्यक श्रेणी में आते हैं। अन्यथा प० बंगाल की मार्क्सवादी सरकार अपने पाठ्यक्रम और अपनी नियुक्तियों द्वारा उन शिक्षा संस्थाओं का स्वरूप ही बदलकर उनको चलाने का उद्देश्य ही पूर्णतया नष्ट कर देती।

डा० वी० के० आर० वी० राव भारत के शिक्षा मन्त्री थे। उन्होंने एक बार अत्यन्त उत्साह में घोषणा कर दी थी कि अपने मन्त्रित्वकाल में वह देखना चाहेंगे कि बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का उपकुलपति मुसलमान व अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का उपकुलपति हिन्दू हो। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में उन दिनों आंदोलन प्रारम्भ हो चुका था कि अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय केवल मुसलमानों के लिए

क्या हिन्दुस्तान में हिन्दू होना अपराध है।

और मुस्लिम धर्म व मान्यताओं के संरक्षण के लिए है और उसका मुस्लिम स्वरूप बना रहना चाहिए। यह अल्पसंख्यक संस्था है और भारतीय संविधान की धर्मनिरपेक्षता इस पर लागू नहीं होती।

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के शिष्टमण्डल को श्री राव ने तर्क दिया कि यह विश्वविद्यालय धन-प्रतिशत केन्द्रीय सरकार के अनुदान से चलता है। सरकार का धन किसी एक धर्म के प्रश्रय व प्रोत्साहन के लिए खर्च नहीं किया जा सकता। मुस्लिम मतावलम्बी यदि चाहें तो अपने धन से कोई संस्था चला लें, सरकार उसमें हस्तक्षेप नहीं करेगी। सर्वोच्च न्यायालय ने भी अपने निर्णय में यह उद्घोषित किया कि पूर्णतया सरकारी अनुदान से कोई मजहबी शिक्षा संस्था नहीं चलाई जा सकती। परन्तु मुस्लिम मतों का आकर्षण और अपने सामूहिक मतदान के सामर्थ्य को भयादोहन के रूप में सफलतापूर्वक प्रयोग करने के मुस्लिम स्वभाव के कारण सरकार ने संसद में कानून के जरिए केन्द्रीय सरकार के कोष से पूर्णतया संचालित अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का मजहबी रूप सुरक्षित कर दिया।

जम्मू कश्मीर एक छोटा-सा प्रदेश है। उसकी आबादी दिल्ली की आबादी से कहीं कम है। लगभग ४० लाख इसकी आबादी है। इसकी राजस्व आय नगण्य है। राजस्व व्यय के साथ-साथ योजना का लगभग पूर्ण व्यय केन्द्रीय सरकार उठाती है। यह एक मात्र ऐसा प्रदेश है जहां पूर्ण शिक्षा बी० ए०, एम० ए० के साथ साथ इन्जीनियरिंग व डाक्टरी की शिक्षा भी निःशुल्क है। एक डाक्टर पर पांच वर्षों में लगभग दो लाख से अधिक रुपये खर्च होते हैं। हमारे संविधान में अनुसूचित जाति के लिए शिक्षा व नौकरियों में स्थान सुरक्षित करने का प्रावधान है। पिछड़े वर्गों के लिए भी शिक्षा व नौकरियों में स्थान सुरक्षित किए जा सकते हैं। जम्मू कश्मीर में जहां मुसलमान बहुमत में हैं सभी मुसलमानों को पिछड़ा वर्ग घोषित कर दिया गया है। इसका यह परिणाम निकला है कि जम्मू कश्मीर में विद्यार्थी यदि मुसलमान है तो इन्जीनियरिंग कालेज व मैडिकल कालेज में बहुत कम अंक होने पर भी दाखिला मिल जाता है और यदि विद्यार्थी हिन्दू है तो कहीं अधिक अंक होने पर भी दाखिला नहीं मिलता।

सभी प्रदेशों ने अपने-अपने मेडिकल कालेजों को अपने-अपने प्रदेशों के विद्यार्थियों के लिए सुरक्षित किया हुआ है। दिल्ली के विद्यार्थियों के लिए देश के किसी अन्य प्रदेश में दाखिला नहीं मिलता था और दिल्ली में मेडिकल कालेजों में दाखिला अंकों के आधार पर समस्त देश के लिए खुला था। अनेक प्रादेशिक विश्वविद्यालय हायर सेकेण्डरी में इतने अधिक अंक देते थे कि उनके प्रदेश के अधिकांश विद्यार्थी दिल्ली के मेडिकल कालेजों में प्रवेश प्राप्त कर लेते और उनसे कहीं अधिक योग्य दिल्ली के विद्यार्थी प्रवेश पाने से वंचित रह जाते थे। अतः हमने निर्णय किया कि दिल्ली प्रशासन के अन्तर्गत मेडिकल व इन्जीनियरिंग कालेज के स्थान दिल्ली के छात्रों के लिए सुरक्षित कर दिए जाएँ और केन्द्रीय सरकार के अन्तर्गत मेडिकल कालेजों में प्रवेश के लिए चयन परीक्षा हो।

उस समय जम्मू कश्मीर के कुछ विद्यार्थी मेरे पास आए। उनके नम्बर ८० प्रतिशत से अधिक थे। वह मौलाना आजाद मेडिकल कालेज में दाखिला चाहते थे। उस समय दिल्ली में पुरुषों का यही मेडिकल कालेज था। उसमें कुछ स्थान उन प्रदेशों के विद्यार्थी के लिए हमने सुरक्षित रखे थे जहां कोई मेडिकल कालेज नहीं है।

जम्मू-कश्मीर में क्योंकि मेडिकल कालेज था अतः जम्मू कश्मीर के लिए सीट सुरक्षित हो नहीं सकती थी। कश्मीर घाटी के उन हिन्दू विद्यार्थियों की विडम्बनापूर्ण परेशानी थी कि कश्मीर मेडिकल कालेज में दाखिला इसलिए नहीं मिल सकता था क्योंकि वह हिन्दू थे और देश के अन्य किसी भाग में इसलिए नहीं कि वह कश्मीर निवासी थे और वहां मेडिकल कालेज था।

मुस्लिम नेता इस बात का विकट प्रचार करते रहते हैं कि आई० ए० एस० आई० एफ० एस०, आई० पी० एस० आदि केन्द्रीय और प्रादेशिक सेवाओं में मुसलमानों का प्रतिशत कम है अतः उनके लिए विशेष स्थान सुरक्षित करने चाहिए। उनका ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित किया गया कि इन सेवाओं में भर्ती खुली परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं के आधार पर होती है और उत्तर पत्रों में नाम न होने के कारण धार्मिक आधार पर किसी से भेदभाव सम्भव ही नहीं। इस पर इनकी मांग है कि धार्मिक आधार पर भेदभाव करके मुसलमानों को बिना योग्यता भी इन सेवाओं में लेना चाहिए। भारत का संविधान इसकी अनुमति देता नहीं अतः सरकार की ओर से यह रास्ता निकाला गया कि मुस्लिम व अन्य अल्पसंख्यकों को इन प्रशासनिक परीक्षाओं के लिए तैयार करने के लिए विशेष कक्षाएं आयोजित की जाएं। प्रदेश सरकारों को निर्देश दिए गए कि धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए। ऐसे कालेज खोले जाय व ऐसी कक्षाएं आयोजित की जाएं जो उन्हें निःशुल्क परीक्षाओं के लिए तैयार करें।

भारत सरकार के शिक्षा एवं संस्कृति मन्त्रालय की सचिव के हैसियत से श्रीमती सरला ग्रेवाल ने १० सितम्बर १९८४ को निम्न परिपत्र सभी राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों के मुख्य सचिवों को लिखा—

'प्रिय

प्रधानमन्त्री ने साम्प्रदायिकता रोकने के उपाय पर ११-५-१९८३ के अपने टिप्पण में निर्देश दिए थे कि

(१) क—अनेक पदों पर भर्ती खुली परीक्षाओं द्वारा होती है। प्रायः अल्पसंख्यक वर्ग शिक्षा पद्धति का लाभ उठाने में पिछड़ने के कारण इन प्रतियोगी परीक्षाओं में टिक नहीं पाते। इस अड़चन को दूर करने के लिए अल्पसंख्यक शिक्षा संस्थाओं में ऐसी प्रशिक्षण कक्षाएं लगाने को प्रोत्साहित किया जाय जिनसे यह लोग सफलतापूर्वक प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग ले सकें।

ख—अल्पसंख्यकों द्वारा ऐसा तकनीकी कौशल प्राप्त करने से, जिसमें वह पिछड़े हुए हैं राष्ट्रीय विकास में सहायता मिलेगी। सरकार व निजी संस्थाओं द्वारा अल्पसंख्यक बहुल क्षेत्रों में औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र व पोलिटेक्निक खोलने के प्रबंध किए जाएं जिनमें अल्पसंख्यक वर्ग के पर्याप्त संख्या में प्रवेश को प्रोत्साहित किया जाये।

(२) प्रधानमन्त्री के यह निर्देश गृह मन्त्री ने एक पत्र के साथ आपके मुख्यमन्त्री / उपराज्यपाल को २४-८-८३ को भेज दिए थे परन्तु एक वर्ष बीत जाने पर भी अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थाओं में प्रशिक्षण कक्षाएं प्रारम्भ करने में विशेष प्रगति नहीं हुई। प्रधानमन्त्री का विचार है कि जब विश्वविद्यालय व कालेज विद्यमान हैं तो ऐसी कक्षाएं कुछ महीनों में खुल जानी चाहिए थीं।

(३) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अल्पसंख्यक छात्रों के लिए प्रशिक्षण कक्षाएं प्रारम्भ करने के लिए सहायता देने की योजना बनाई है। अपने प्रदेश के विश्वविद्यालय व कालेजों में यह योजना विस्तारित कीजिए और उनसे अल्पसंख्यक प्रशिक्षण कक्षाएं प्रारम्भ करने के प्रस्तावों को तुरन्त अपनी सिफारिश के साथ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पास भेजिए।

(४) १९७१ की जनसंख्या के आधार पर उन क्षेत्रों की सूची भी संलग्न है जिनमें अल्पसंख्यक वर्ग अधिक संख्या में रहता है। आप ऐसे क्षेत्रों के जिला मजिस्ट्रेटों को निर्देश दें कि वह विश्वविद्यालय अल्पसंख्यक शिक्षा संस्थाओं के प्रतिनिधियों व प्रमुख अल्पसंख्यक नागरिकों से बैठक करके विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की आर्थिक सहायता से प्रतियोगी प्रशिक्षण कक्षाएं खोलने पर विचार करें।

(५) अपने प्रदेश के ऐसे क्षेत्रों की सूची तैयार कर जिनमें अल्पसंख्यक वर्ग पर्याप्त संख्या में रहता है और जहाँ कोई पोलिटेक्निक कालेज नहीं है। वहां पोलिटेक्निक कालेज खोलने का प्रस्ताव ३० सितम्बर तक इस मन्त्रालय के पास भेजिए और उसकी एक प्रति गृह मन्त्रालय के अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ में भी भेजिए।

पहली दृष्टि में यह पत्र मासूम सा लगता है परन्तु इसके परिणामस्वरूप हिन्दुओं से कितना अन्याय हुआ है इसका अनुमान लगाना कठिन था।

इंजीनियरिंग कालेज व मेडिकल कालेजों में दाखिले अब प्रायः प्रतियोगी परीक्षाओं द्वारा होते हैं परन्तु पोलिटेक्निकों में दाखिला १० वीं व १२ वीं कक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर होता है। इंजीनियरिंग कालेज, मेडिकल कालेज व पोलिटेक्निक कालेजों में प्रशासन ने प्रवेश का अपना कोटा निर्धारित कर रखा था। मैंने अपने काल में प्रशासन का कोटा समाप्त कर प्रवेश को केवल विश्वविद्यालय व हायर सेकेण्डरी बोर्ड की परीक्षाओं में प्राप्त अंकों के आधार पर कर दिया। (क्रमशः)

(शेष १ जनवरी ८५ के अंक में)

दक्षिण दिल्ली में ग्राम प्रचार

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध सिंहनाद किया था। आर्यसमाज सदा से ही इन बुराइयों को दूर करने के लिए प्रयास करता रहा है परन्तु ये बुराइयाँ ऐसी विषधर हैं जिनके सपोलिए कभी समाप्त नहीं होते और अचानक मिट्टी के किसी भी छिद्र से बाहर निकल आते हैं। दिल्ली के सीमावर्ती क्षेत्रों में मद्यपान एक ऐसी ही बुराई है। पुनर्वास कालोनियों में गांजा चरस, स्मैक, ब्राउन सुगर जैसी नशीली वस्तुओं का प्रचलन बहुत अधिक है। इन्हीं बुराइयों के प्रति ग्रामीण जनता को सचेत करने के लिए दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल के सहयोग से १८ और १९ नवम्बर १९८८ को फतेहपुर बेरी में ग्राम प्रचार का कार्यक्रम आयोजित किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशकों स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती पं० सत्यदेव स्नातक, पं० चुन्नीलाल व पं० विष्णुदत्त ने मधुर भजनोपदेश से ग्रामीणों का मनमोह लिया और उन्हें इन बुराइयों से दूर करने के लिए सचेत किया। दक्षिण दिल्ली की अन्य समाजों से विशेष बल की व्यवस्था की गयी थी। इस कार्य में श्रीरामशरणदास आर्य का विशेष सहयोग मिला।

प्रियदर्शिनी इन्दिरा गांधी वर्तमान पीढ़ी की प्रकाश-स्तम्भ व प्रेरणा स्रोत थीं।

महर्षि दयानन्द आर्य शिक्षण समिति खण्डवा द्वारा संचालित बाल मंदिर प्राथमिक शाला एवम् माध्यमिक शालाओं में स्व० इन्दिरा गांधी का निर्वाण दिवस ३१।१०।८८ को संकल्प दिवस के रूप में मनाया गया। इन्दिरा जी के देश के प्रति बलिदान को याद किया गया। सभी ३५ शिक्षिकाओं एवम् १२०० छात्र छात्राओं ने देश की प्रगति में पूर्ण निष्ठा व लगन से आजीवन प्रयत्न करने का संकल्प लिया।

संस्था की व्यवस्थापिका ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए इन्दिरा जी की कथनी करनी के तादात्म्य का प्रतिपादन करते हुए संकल्प को केवल औपचारिकता मात्र न बनाकर अपने जीवन में कार्यरूप में परिणित करने पर बल दिया।

(पृष्ठ २ का शेष)

नशाबंदी आर्यसमाज . .

को साथ ले जा कर सभी Resettlemend colonies के S H O से मिलिये। सब से पहले तो पुलिस कमिश्नर के पास जाइये। पुलिस के लिए तो कोई मुश्किल काम नहीं है। एक एक इन्च जगह से पुलिस परिचित है। पर धन के लालच में आकर ये बेचने वालो को पकड़ते नहीं हैं हम अकेले कुछ नहीं कर पाते। सब कुछ जानते हुए भी पुलिस वालो की शिकायत नहीं कर पाते क्योंकि पुलिस से दुश्मनी लेकर जाय कहां? आप सामूहिक रूप से कुछ भी कर सकते हैं क्योंकि इसमे आपकी अपनी दिलचस्पी नहीं है। समाज का और देश का हित है। हमारी युवा पीढ़ी और हमारे देश का भविष्य अन्धकार में है। आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था है जो देश को इस समय डूबने से बचा सकती है। दिल्ली मे और कोई भी संस्था इस कार्य को करने मे सफल नहीं हो सकी। मुझे आप पर भरोसा ही नहीं पूरा विश्वास भी है कि आप दिल्ली मे स्मैक के अड्डों को समाप्त करने मे सहायता करेंगे। एक बार समाप्त करने से भी यह काम चलने वाला नहीं है। आपको इसका अनुसरण भी करना पड़ेगा। इस काम के लिये आपको सत्याग्रह भी करना पड़े तो करिये। मुझे बड़ी खुशी होगी जब आपके आर्यसन्देश में मुझे यह पढ़ने को मिले कि आपने इस कार्य को करने के लिए क्या क्या कदम उठाये हैं? मैं केवल अपनी मित्र के बेटे के लिए ही यह पत्र नहीं लिख रही हूं। मेरे लिए सारे देश के बच्चे अपने हैं। बहुत देर से मन में एक पीड़ा थी, टीस थी आज इस पत्र को लिख कर कुछ शान्ति मिली है। ऐसे महसूस हो रहा है कि अपना सारा बोझ आपके ऊपर डाल दिया है। अपना परिचय नहीं देना चाहती क्यों कि इसमें भी समस्याएं आती हैं मैं स्वयं तस्वीर में नहीं आना चाहती।

—भावी पीढ़ी की शुभचिन्तक

आर्यसमाज के इतिहास में क्रांतिकारी धार्मिक जागरण

छह हजार ईसाइयों द्वारा

स्वैच्छिक वैदिक धर्म में प्रवेश

वनवासी आर्य महासम्मेलन में

विदेशी पादरियों के देश से निष्कासन की जोरदार मांग

गत २६ २७ और २८ नवम्बर को सरगुजा (म० प्र०) के सीतापुर नामक स्थान में वनवासी आर्य महासम्मेलन सफलता पूर्वक सपन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने की। २ नवम्बर को विशाल शोभा यात्रा में लगभग ४० हजार वनवासी युवकों के पारम्परिक लोक नृत्य संगीत तथा वैदिक धर्म के जयजयकार से सारा वनवासी क्षेत्र गूंज उठा था। रायगढ़ से पत्थलगांव सीतापुर तक के लम्बे बीहड़ मार्गों तथा पगडंडियों पर वनवासी स्त्री-पुरुषों द्वारा स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा अन्य आर्य नेताओं का जोरदार स्वागत किया गया। रात्रि के अन्धकार में भी सड़क के दोनों ओर वनवासी आग का प्रकाश करके आर्यसमाज के धार्मिक नेताओं के स्वागत मे खड़े रहे। वनवासी बहुल इस क्षेत्र में इससे पूर्व ऐसा कार्यक्रम पहले कभी नहीं हुआ ऐसा वनवासी जनता का कहना था।

सीतापुर मे एक विशाल यज्ञकुण्ड के चारो ओर २८ अन्य यज्ञकुण्डों की व्यवस्था की गई थी। ऋषिमुनियों की प्राचीन परम्परानुसार यजुर्वेद पारायण यज्ञ के कार्यक्रम की व्यवस्था इतनी सुन्दर और मनोहारी लग रही थी कि जब आनन्द विभोर होकर गद गद हो गये। वैदिक मन्त्रों के साथ वनवासियो ने बड़ी श्रद्धा के साथ यज्ञोपवीत ग्रहण किये। इस यज्ञ अनुष्ठान से धार्मिक जागरण की एक ऐसी लहर पैदा हुई कि हजारों की संख्या मे वनवासी आर्य नर नारी जो कभी ईसाइयों के लोभलालच अथवा अशिक्षा के कारण ईसाई बन गये थे, स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण करने के लिये आतुर थे। पुर्नमिलन के लिये उनका तांता लगता जाता था, जबकि आर्यसमाज के पण्डित तथा कार्यकर्त्ता प्रात से सायंकाल तक यज्ञ करते थे।

छः हजार वनवासी वैदिक धर्म में प्रविष्ट

तीन दिनो के लगातार कार्यक्रम में पहले दिन १७००, दूसरे दिन तीन हजार सात सौ और तीसरे दिन ५०० लोगो को ही वैदिक धर्म में वापस लिया जा सका जबकि सैकड़ो लोगों को निराश होकर वापस लौटना पड़ा और आगे होने वाले समारोह तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। आर्यसमाज के इतिहास में धार्मिक जागरण की यह क्रान्ति पहले कभी नहीं देखी गयी था। यद्यपि १९८२ में मीनाक्षीपुरम में बलात मुसलमान बनाये हरिजनो की धर्मरक्षा महाभियान के अन्तर्गत शुद्धि की गई थी। इसके अतिरिक्त उड़ीसा तथा मध्य प्रदेश मे भी कई क्षेत्रों में शुद्धि का कार्य होता रहा था। किन्तु इस समारोह में राष्ट्रीय एकता अखण्डता और हमारी प्राचीन वैदिक संस्कृति की रक्षा के लिये समर्पित भावना का जो उत्साह था, वह पहले कभी नहीं देखा गया था।

वनवासी आर्य महासम्मेलन में विदेशी पादरियों को देश से बाहर करने की जोरदार मांग

आर्यसमाज के सर्वोच्च नेता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने शुद्ध हुए लोगों को आशीर्वाद देते हुए आर्यसमाज द्वारा उनके उत्थान के लिये सहयोग का आश्वासन दिया। स्वामी जी ने कहा—यह सम्मेलन राष्ट्रीय एकता अखण्डता और प्रभुसम्पन्नता की कड़ियों को मजबूत करेगा। उन्होंने भारत सरकार तथा मध्य प्रदेश सरकार से भी वनवासियों के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक उत्थान के लिये कार्यक्रम चलाने की मांग की। स्वामी जी ने घोषणा की कि आर्यसमाज मध्य प्रदेश तथा उड़ीसा के अनेक गांवो में बाल विद्यामन्दिर, प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र तथा दयानन्द सेवाश्रम संघ की स्थापना करने के कार्यक्रम को सर्वोच्च प्राथमिकता देगा। सम्मेलन में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया कि विदेशी पादरियों को तुरन्त देश से बाहर निकाल दिया जाय, क्योंकि उनका लक्ष्य धार्मिक जागरण नहीं अपितु राजनीतिक षड्यन्त्र है। यह समारोह २६ से २८ नवम्बर तक चला, इसमें दिल्ली व अन्य प्रान्तों के बन्धु थे उपस्थित आर्य प्रतिनिधि सभा के स्वामी धर्मानन्द का परिश्रम प्रशंसनीय रहा।

(पृष्ठ १ का शेष)

पूर्वी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

वह सस्ता है। हमारे इस विद्यालय की शिक्षिकाओं का कर्तव्य है कि वे इन बच्चियों में ऐसे संस्कार जागृत कराएं कि वे अपने जीवन में मानव मात्र के कल्याण के लिए सन्नद्ध हों। यदि कोई अपनी जीविकोपार्जन के लिए शिक्षा प्राप्त करता है तो वह शिक्षा अधूरी है। वह डाक्टर या इन्जीनियर बन जाए, बड़ी नौकरी पा ले, वह अच्छा वेतन प्राप्त कर ले, फिर भी उसकी शिक्षा अधूरी है। उसकी शिक्षा तभी पूरी है, जब वह दूसरों का दर्द समझे। ये उद्‌गार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने पूर्वी दिल्ली उप-सभा द्वारा आयोजित महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के अवसर पर कहे। सभा की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की उपप्रधाना श्रीमती ईश्वर देवी नवन ने की और सभा का संयोजन श्री मनोहर लाल ने किया। पूर्वी दिल्ली की सभी आर्यसमाजों के प्रतिनिधि माता रत्नदेवी आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल कृष्ण नगर के प्रांगण में आयोजित इस समारोह में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर प० खुशीराम शर्मा, श्री रामलाल शास्त्री और प० क्षत्रपाल सुधांशु ने आर्य जनता का मार्ग दर्शन किया और आर्य जनता से महर्षि के बताए मार्ग पर चलने का आह्वान किया। श्री सुधांशु ने भारत की आजादी के लिए महर्षि की तड़प का जिक्र करते हुए कहा कि यदि हम आजाद हैं तो इसका श्रेय उस दीवाने महर्षि को है जिसने हमें सर्वप्रथम स्वराज्य शब्द से परिचित कराया। वे सुराज्य की अपेक्षा स्वराज्य को अधिक महत्त्व देते थे। प० खुशीराम शर्मा ने कहा कि महर्षि का दूसरे मतावलम्बियों की विचारधारा का खण्डन किसी विद्वेष से प्रेरित नहीं था, बल्कि उनका उद्देश्य विशुद्ध रूप से सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन करना था। श्री रामलाल शास्त्री ने सभी को मिलकर आर्यसमाज का कार्य करने की प्रेरणा दी।

प्रेमचन्द पर आर्यसमाज का गहरा प्रभाव

पिछले दिनों नई दिल्ली में श्री कैलाश जोशी की पुस्तक 'प्रेमचन्द और मैथिलीशरण गुप्त' पुस्तक का विमोचन श्री विष्णु प्रभाकर ने किया। उन्होंने कहा कि अगर प्रेमचन्द और मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं को आंखों से ओझल कर दिया जाए तो भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास को समझना मुश्किल हो जायेगा। हिन्दी के वयोवृद्ध लेखक और क्रान्तिकारी श्री मन्मथनाथ गुप्त ने कहा कि प्रेमचन्द और मैथिली शरण गुप्त दोनों को ही महात्मा गांधी से प्रेरणा मिली थी। अपने आखिरी दिनों में वे गांधीवाद से कहीं आगे निकल गए थे। प्रेमचन्द साहित्य के अधिकारी विद्वान डा० कमल किशोर गोयनका ने कहा कि महात्मा गांधी के भारत आने से पहले ही प्रेमचन्द ने समाज सुधार और पुलिस अत्याचार के विरोध में अपनी कलम तलवार की तरह चलाई थी।

डा० गोयनका ने यह भी कहा कि प्रेमचन्द साहित्य में ऐसे अनेक स्थल हैं जिन्हें पढ़ने पर स्पष्ट हो जाता है कि प्रेमचन्द हिन्दुत्व के उज्ज्वल पक्षों से गहरे जुड़े हुए थे। उनके निर्माण काल पर महर्षि स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज का गहरा प्रभाव था। उक्त समारोह में रघुवीर सहाय, डा० वेदप्रताप वैदिक, सज्जनप्रसाद व्यास तथा चेकोस्लोवाकिया की हिन्दी विदुषी प्रोफसर डागमार मार्कोवा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

महर्षि दयानन्द के चरणों में-

ऋषिवर ! तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे ४१ (अब १०५) वर्ष हो चुके, परन्तु दिव्य मूर्ति मेरे हृदय पट पर अब तक ज्यों की त्यों, अंकित है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते गिरते तुम्हारे स्मरणमात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। तुमने कितनी गिरी हुई आत्माओं की काया पलट दी, इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है— परमात्मा के बिना, जिनकी पवित्र गोद में तुम इस समय विचर रहे हो, कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशों से निकली हुई अग्नि ने संसार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया है? परन्तु अपने विषय में मैं कह सकता हूं कि तुम्हारे सहवास ने मुझ कैसे गिरी हुई अवस्था से उठाकर जीवन-लाभ करने योग्य बनाया।

मैं क्या था, इसे इस कहानी में मैंने छिपाया नहीं। मैं क्या बन गया और अब क्या हूं? वह सब तुम्हारी कृपा का ही परिणाम है। इसलिये इससे बढ़कर मेरे पास तुम्हारी जन्म शताब्दी पर और कोई भेंट नहीं हो सकती कि तुम्हारा दिया आत्मिक जीवन तुम्हें ही अर्पण करूं। तुम वाणी द्वारा प्रचार करने वाले केवल तत्ववत्ता ही न थे परन्तु जिन सचाइयों का तुम संसार में प्रचार करना चाहते थे उनको क्रिया में लाकर सिद्ध कर देना भी तुम्हारा ही काम था। भगवान् कृष्ण की तरह तुम्हारे लिये भी तीनों लोकों में कोई कर्तव्य शेष नहीं रह गया था, परन्तु तुमने भी मानव-संसार को सीधा मार्ग दिखलाने के लिए कर्म की उपेक्षा नहीं की।

भगवन्! मैं तुम्हारा ऋणी हूं, उस ऋण से मुक्त होना चाहता हूं। इसलिये जिस परमपिता की असीम गोद में परमानन्द का अनुभव कर रहे हो, उसी से प्रार्थना करता हूं कि मुझे तुम्हारा सच्चा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान करे।

—स्वामी श्रद्धानन्द सन्यासी

ओ३म्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक

मूल्य एक प्रति २) वार्षिक २५) | रविवार २५ दिसम्बर, १९८८ पौष – वि० २०४५ | वर्ष १२ अंक ७ दयानन्दाब्द—१६४

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

त्याग-तपस्या मूर्ति धन्य, श्री श्रद्धानन्द महान् हुए।
धर्म-धीरता ध्रुवता की वर-वेदी पर बलिदान हुए॥
उनका विमल विवेक विश्व में भव्य भाव भर जायेगा।
पावन पुण्य चरित्र जगत् में जीवन ज्योति जगायेगा॥
आज अमर जिसकी सुकीर्ति है, भला कहीं वह मरता है।
उसका तो आदर्श चरित कल्याण त्राण नित करता है॥

—डॉ० हरिशंकर जी शर्मा डी० लिट्

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त | प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

तमीश्वराणा परम महेश्वर, त दवताना परमञ्च दैवतम् ।
पति पतीना परम पुरस्ताद् विदाम देव भुवनेशमीड्यम् ।।

—श्वेताश्वतरोपनिषद् अ० ६, म० ७

क्या यह पुरुष जिसे अपनी शक्तियां प्रयोग मे लाने का मौका ही नही मिला या वह जो सच्चाई के मार्ग से भटका हुआ है, जिसने अपनी शक्तियों का अनुचित रूप से प्रयोग किया है, क्या वह कभी भी सर्वशक्ति ो के मालिक को जान सकता है? पहले इसके कि सर्वशक्तिमान की महानता को समझने का साहस कर सके, मनुष्य के लिए आवश्यक है कि वह स्वय, शक्ति की महानता को अनुभव करके उसका उचित प्रयोग सीखे और उसपर आचरण करे। कौन मनुष्य है जिसे ताकत अन्धा नही कर देती!

"अस नर कोउ उपज्यो जग माही। प्रभुता पाय जाहि मद नाहीं।" मननशील, सच्चा मनुष्य वही है जिसने ताकत के रहस्य को समझा है। इन्द्रियो की दासना मे फँसे हुए, विषयो की मजबूत जजीरों के अन्दर जकड हुए पशु भाव को प्राप्त हुए पुरुष अविद्या के गढे मे गिरकर समझ लेते हैं कि विषयो को अन्धाधुन्ध भोगना ही ताकत का प्रकट करना है। जिन वीर पुरुषो ने अपने मन को हर प्रकार के मल विक्षप और आवरण से पृथक् करके परमपिता के केवल चौथे जागृत पाद पर ही विचार किया है और इसको विचित्र महिमा के लेशमात्र भी दर्शन किये है, उनका अनुभव है कि आनन्द ताकत को नष्ट करने मे नही है, अपितु उसके सुरक्षित रखने के अन्दर ही सच्चा आनन्द है। परमात्मा क्यो आनन्दस्वरूप है? इसलिए कि सांसारिक कर्म-बन्धन के अन्दर फँसना उसके स्वभाव के विरुद्ध है। अत सामर्थ्य के अभिलाषियों के लिए अत्यन्त आवश्यक है कि परम शक्तिमान् परमात्मा के शक्तिस्वरूप को अनुभव करने का प्रयत्न करें।

फिर उस परमात्मा के दैवीय स्वरूप के दर्शन कौन कर सकता है? जो स्वय प्रकाश से अलग रहता है, जिसने अपनी आयु अन्धेरे मे नष्ट की है, वह सब प्रकाशको के प्रकाशक, महादेव को कैसे जान सकता है? प्रकाशस्वरूप तक पहुचने के लिए सब से पहले हृदय के अन्दर प्रकाश को धारण करने की सामर्थ्य होनी चाहिये। किसी शीशे के अन्दर प्रकाश का ठीक यथार्थ प्रकाश होता है, उसके अन्दर नहीं जिसके मु ह पर मैल ने चमक ही बाकी नही छोडी। परम रक्षक परमात्मा को किसने समझा है? जिसने दीनो को दबाने में अपनी शक्ति को नष्ट किया है और अनाथो के लूटने में ही पुरुषार्थ को खर्च किया है वह रक्षा-धर्म को क्या समझ सकता है? जिसकी हमदर्दी का क्षत्र विस्तृत नहीं हुआ, जिसने मनुष्यो को ही केवल अपना भाई समझकर बेजुबान पशु पक्षियो की गर्दन पर बिना कारण छुरी चलाना अपना हक समझा हुआ है, वह क्या समझ सकता है? परमात्मा को उस

(शेष पृष्ठ ४४ पर)

सम्पादकीय—

आग्नेय श्रद्धानन्द

युग-प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के महान् कार्यो को जिन अमर हुतात्माओ ने कार्य रूप में परिणत किया, उनके महत्तम वैदिक आदर्शों को आगे बढाया— मूर्त रूप प्रदान किया, उनमे स्वामी श्रद्धानन्द का नाम अग्रगण्य है। बाल्य-काल मे अपने माता-पिता की लाडली सतान होने के कारण यह नवयुवक बिगड चुका था। पिता कोतवाल के पद पर थे। अग्रेजी शासन काल में कोतवाल का अच्छा रुतबा रहता था, जिसका पूरा लाभ इस नवयुवक ने भी उठा लिया। बरेली मे महर्षि स्वामी दयानन्द के भव्य-ओजस्वी व्यक्तित्व का दर्शन कर और आत्मा, परमात्मा, प्रकृति, धर्म आदि गूढ विषयो पर उनका तर्कपूर्ण प्रवचन सुन-कर इस बिगड हुए नवयुवक का जीवन ही परि-वर्तित हो गया। उस समय उस नवयुवक का नाम मुन्शीराम था। मुन्शीराम के जीवन मे महर्षि दयानन्द के सदुपदेशो का इतना अधिक अमिट व क्रातिकारी प्रभाव पडा कि आगे चलकर वही मुन्शीराम विश्व-विख्यात संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द के रूप मे देश, जाति व धर्म के उद्धारक बन गए।

मुन्शीराम के अल्हडपन मे नव क्राति का अद्भुत विस्फोट हुआ। उन्होने महर्षि दयानन्द के सन्देश को घर घर पहुचाने वैदिक धर्म प्रचार व प्रसार करने का दृढ सकल्प ले लिया। वह समय भारत के पतन व पराजय का समय था। महर्षि दयानन्द ने ज्ञान, क्राति, शक्ति, जागृति, चेतना की जो मशाल जलाई थी, उसके प्रकाश की किरणें चतुर्दिक् विस्तीर्ण हो चुकी थी। परिणामस्वरूप मुन्शीराम, लाला लाजपतराय, महात्मा हसराज, गुरुदत्त विद्यार्थी, श्याम जी कृष्ण वर्मा, महाशय राजपाल सदृश प्रभृति व्यक्तित्व धर्म व राष्ट्र के दीवाने बनकर कर्मक्षेत्र में कूद पडे थे। वह भारत में धार्मिक-सामाजिक व राष्ट्रीय जागरण का काल था। महर्षि दयानन्द ने अपने ओजस्वी प्रवचनो, भव्य व्यक्तित्व, वेदो की अकाट्य ऋचाओ अखण्ड ब्रह्मचर्य से प्रदीप्त नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा, अज्ञानान्धकारापहारिणी प्रचण्ड शक्ति के माध्यम से सारे भारत ही नही, बल्कि सपूर्ण मानवता को झकझोर दिया था और वह अगडाइया लेने को बाध्य हो गई थी।

मुन्शीराम जी ने महर्षि दयानन्द के पश्चात् अपने जीवन व व्यक्तित्व को तपस्वी, कर्मठशील बनाकर वैदिक धर्म की सेवा में समर्पित कर दिया। उन्होने धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, नैतिक शैक्षिक आदि समस्त क्षेत्रो मे नव क्राति का मन्त्र फूका। अपने कार्यों में सफलता प्राप्त करने के लिए उन्होने सन्यासाश्रम मे प्रवेश किया और मुन्शीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बन गए। भारत मे काग्रेस के नेतृत्व मे स्वाधीनता का महान् सग्राम चल रहा था। महर्षि दयानन्द से प्रेरणा प्राप्त कर लोकमान्य तिलक सरीखे काग्रेस के कर्णधारो ने 'स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" घोषित कर दिया था। तत्कालीन परिस्थितियो मे प्रत्येक नागरिक का प्रथम कर्त्तव्य था—भारत माँ को स्वाधीन कराना। महर्षि दयानन्द ने भी इसी कर्त्तव्य का बोध सारे भारत की यात्रा करके कराया था। यही कारण था कि

आर्यसमाज व उसके सचालको ने स्वाधीनता सग्राम में बढकर भाग लिया। भारत मा की बलि-वेदी पर अपने प्राणों को आहुति देने वाले अमर शहीदो में से नब्बे प्रतिशत लोग आर्यसमाज के मच से आए थे। स्वामी श्रद्धानन्द ने भी काग्रस के कंधे से कंधा मिलाकर अपना पूरा योगदान स्वाधीनता युग मे किया। पजाब मे काग्रस का अधिवेशन होने पर वह उसके स्वागताध्यक्ष बनाए गए थे। उन्ही के परिश्रम से काग्रस का यह अधिवेशन अत्यन्त सफल हुआ था।

शिक्षा-क्षेत्र मे क्राति—शिक्षा-जगत् में क्राति उत्पन्न करने हेतु स्वामी जी ने हरिद्वार मे गुरुकुल की स्थापना की। इस गुरुकुल की प्रारम्भिक आवश्यकता की पूर्ति हेतु जब तक तीस हजार रुपये नहीं एकत्र कर लिये, घर नही गए। आगे चलकर यह गुरुकुल भारत के महान नेताओ, अमर क्राति कारियों, विदेशी पर्यटको के महान आकर्षण का केन्द्र बन गया। गुरुकुल के ब्रह्मचारियो से परिश्रम कराकर स्वामी श्रद्धानन्द ने काफी धन दक्षिण अफ्रीका मोहनदास करमचन्द गाधी को भेजा, जिससे वहाँ पर उनका असहयोग आदोलन सफल हो सके। यही कारण था कि गाधी जी दक्षिण अफ्रीका से विजयी होकर जब भारत लौटे, तब सर्वप्रथम वे स्वामी श्रद्धानन्द का दर्शन करने के लिए गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय गए। स्वामी जी ने ही सर्वप्रथम गाधी जी को महात्मा गाधी की उपाधि से गुरुकुल में ही सम्बोधित किया। गुरुकुल के ब्रह्मचारियो को राष्ट्रभक्ति, भाषा भक्ति धर्म भक्ति की शिक्षा के साथ ही साथ राष्ट्र का एक आदर्श नागरिक बनने की प्रेरणा दी जाती थी। इग्लैंड के तत्कालीन प्रधान मन्त्री रैम्जे मकडा-नल्ड जब भारत आए तब वह भी गुरुकुल देखने गए और उस समय जगलो के बीच मे, गगा के उस पार गुरुकुल का दृश्य देखकर वह बहुत प्रभावित हुए। उन्होने स्वामी श्रद्धानन्द की तुलना ईसामसीह के व्यक्तित्व से की। जब गुरुकुल की व्यवस्था पूर्णतया सम्हल गई तब स्वामी जी सामाजिक क्राति की ओर उन्मुख हुए। उन्होने भारत का भ्रमण कर समाज मे व्याप्त कुरीतियो, पाखण्ड, अन्धविश्वास पर कुठाराघात किया। अछूतो की दयनीय दशा देखकर स्वामी जी को हार्दिक क्लेश हुआ। उन्होने अछूतोद्धार का बीडा उठाया। जगह जगह पर अछूत सम्मेलन करके अछूतो के हाथ से पानी पिया और खाना खाया। जो अछूत भाई अपना धर्म-परिवर्तन कर रहे थे, उन्हें भी स्वामी जी ने बचाया।

स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने कार्यो, अपने आचरण और अपने व्यवहार से किसी को दुखित नहीं किया। चाहे वह उनका सहयोगी रहा हो अथवा विरोधी। हिन्दू मुस्लिम सद्भाव के लिए उन्होने दिल्ली की जामामस्जिद से वेद मन्त्रो के उच्चारण के साथ हिन्दू-मुस्लिम एकता का ऐतिहासिक सन्देश दिया, जिसे लाखो मुसलमानो ने बडे धर्य गम्भीरता व चाव से सुना। हिन्दी भाषा के उद्धार के लिए तथा उसे राष्ट्रभाषा के पद पर पहुचाने का बहुत बडा श्रेय स्वामी श्रद्धानन्द को ही है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की स्थापना में स्वामी जी का पूरा सहयोग रहा है। वह सम्मेलन के सभापति भी थे। सत्य का मण्डन और असत्य का खण्डन वह बडी निर्भीकता के साथ करते रहे। उन्होने अपनी अकाट्य तर्क शक्ति से सपूर्ण समाज को प्रभावित किया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि आदोलन का भी सूत्रपात किया। अनेक विधर्मियो को पुन हिन्दू धर्म मे दीक्षित किया। सारे राष्ट्र मे शुद्धि यज्ञ का डका बज उठा। बडी सख्या मे ईसाई व मुसलमान बने लोग पुन अपने पूर्व धर्म (हिंदू) में वापस लौटने लगे। उसी समय श्रीमती असगरी बेगम जो एक उच्च कुल से सम्बन्धित थी, स्वामी जी के तर्कों से प्रभावित होकर सपरिवार वैदिक धर्म मे आ गई। उनका शुद्धि सस्कार समारोह सम्पन्न

(शेष पृष्ठ ४५ पर)

अमर हुतात्मा—स्वामी श्रद्धानन्द

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

जब भारत में विदेशी शासन की जड हिलने लगी थी, जब प्रथम स्वातन्त्र्य सग्राम के क्रान्तिकारी सेनानी नर्मदा के तट पर तात्या टोपे, स्वामी दयानन्द सरस्वती नाना फडनवीस आदि अग्रेजो की गुलामी की जजीरो में जकडी हुई भारत मा के माथे पर स्वतन्त्रता का ताज रखने की तैयारिया कर रहे थे उसी पावन एव क्रांतिकारी वेला में २२ फरवरी सन् १८५७ (फाल्गुन बदी १३ सवत् १९१३) को जालन्धर के तलवन ग्राम मे लाला नानकचन्द के घर मे स्वामी श्रद्धानन्द (मुन्शीराम का जन्म हुआ था।

उनके पिता श्री नानकचन्द ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कृपा पात्र सहायक थ। इसीलिए उन्हे पुलिस के उच्चाधिकार प्राप्त हुए थ। स्वामी जी की स्कूली शिक्षा यज्ञोपवीत हो जाने क उपरान्त बनारस मे प्रारम्भ हुई। उन दिनो उनके पिता लाला नानकचन्द बनारस मे इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस थे। फिर स्वामी जी ने लाहौर में वकालत की परीक्षा पास की। उनका विवाह जालन्धर के रईस राय सालगराम की पुत्री श्रीमती शिवदेवी से हुआ। उन्हीं दिनो उनके पिता का स्थानान्तरण बरेली मे हो गया। उन दिनो मुशीराम जी मे चरित्र दोष आ गया था। वे बेलगाम घोड की तरह मद्यपान और वेश्याओ के नाच रग मे तल्लीन हो रहे थ और धर्म तथा ईश्वर की सत्ता मानने से भी इकार करने लगे थे। बनारस मे एक दिन वे काशी विश्वनाथ के मदिर मे गए। वहा उन्हे प्रविष्ट होने से रोका गया कि एक रानी साहिबा भगवान विश्वनाथ के दर्शन करने मदिर मे गई हुई हैं। उनके बाहर आने पर ही किसी अन्य दर्शनार्थी को मदिर मे जाने दिया जायेगा युवा मुशीराम के मन पर चोट लगी कि भगवान के मदिर मे भी राजा और रक का भेद है। इससे उनके विचारो मे नास्तिकता के अकुर उगने लगे। इसके पश्चात् ईसाई पादरियो की चिकनी भाषण शैली का शिकार होकर वे गिरजाघर में पादरी लीफ के उपदेशो से ईसाई बनने को तयार हो गए। तिथि निश्चय करके बप्तिस्मा लने के लिए पादरी लीफ के घर पहुचे। पर्दा उठाया। लीफ साहब तो मिल नही। अन्दर कमरे मे एक सफेद पोश पादरी को एक युवती ईसाई ब्रह्मचारिणी के साथ घृणित अवस्था मे देखा। इस घटना से ईसाई मत से घृणा हो गई। मुन्शीराम घर पर आ गए। उन दिनो मास, शराब तथा नास्तिकता के शिकार हो चुके थ। कुछ दिनो पश्चात् बरेली मे जहा उनके पिता लाला नानकचन्द सिटी कोतवाल थ, महर्षि दयानन्द का पदार्पण हुआ। बरेली मे स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्याख्यानो का प्रबन्ध करने के लिए सरकारी आज्ञा

हुई। सभा स्थल में प्रबंधक के रूप म लाला नानक चद महर्षि के भाषणों से प्रभावित हुए। उन्होंने सोचा कि अपने नास्तिक तथा शराबी पुत्र को स्वामी जी के सत्सग म लाना चाहिए। उन्होंने मुन्शीराम को कहा कि एक तेजस्वी बालब्रह्मचारी सन्यासी बरेली म पधारे हैं। उनके विचार सुनने मेरे साथ चलो। मु शीराम बोला – पिता जी यह स कृत जानने वाल साधु क्या मेरे तर्कों का उत्तर देने म समर्थ हो सकते हैं?' कोनवाल साहब ने कहा– बेटा, चलने म क्या हर्ज है। यदि उनकी बात समझ म न आवे तो मत मानना।' इसके पश्चात मुन्शीराम प्रथम बार महर्षि दयानन्द का भाषण सुनने गए। जब स्वामी जी पर उनकी दृष्टि पडी तो अत्यन्त तेजोमय मुखमण्डल ब्रह्मचर्य की आभा से ओत-प्रोत सुडौल शरीर को देखा और वाणी का पाण्डित्यपूर्ण उच्चारणतथा श्रोताओ म बरेली के बडे-बड उच्च अग्रज अधिकारियों को देखा तो मुन्शीराम प्रथम साक्षात्कार म ही प्रभावित हो गया। भाषण के पश्चात् महर्षि के चरणो मे उपस्थित होकर कहा कि 'भगवन्। क्या मेरी शकाओ का समाधान भी किया जाएगा। स्वामी जी ने प्रसन्नतापूवक उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

मुन्शीराम ने ईश्वर की सत्ता पर तीखे प्रहार किए। स्वामी जी ने बड प्रम से उत्तर दिए। थोड समय के पश्चात मुन्शीराम अवाक् होकर बोल, 'महाराज, मेरी ज ान तो बन्द कर दी किन्तु हृदय मे विश्वास नही होता कि इस विश्व ब्रह्माड को बनाने वाला कोई शक्ति सम्पन्न सत्ता है। महर्षि दयानन्द बोले— बेटा, जब ईश्वर की कृपा होगी तो यह परम विश्वास भी हो जाएगा बस इन शब्दो ने मुन्शीराम पर जादू क असर किया और वे प्रतिदिन श्री महाराज के चरणो मे उपस्थित होकर अपने आपको निहाल करते रहे। यही वह घटना थी जिसने मुन्शीराम के मानस पटल को बदल दिया और धम परायण। धर्मप नो शिवदेवी की प्रेरणा और अन्य घटनाओ से मास और शराब छट गई। जालन्धर मे वकालत शुरू कर दी। उनकी गणना उस समय के विख्यात वकीलो मे थी। वे झूठे मुकदमे की पैरवी नहीं करते थे। उनके दो पुत्र और दो पुत्रिया थी। उनके छोटे पुत्र प० इन्द्र विद्यावाचस्पति जी अपने समय के अखिल भारतीय स्तर के राष्ट्रीय नेता थे और उन्होंने सर्वप्रथम राजधानी दिल्ली में हिन्दी को प्रमुख स्थान देने के लिए दैनिक विजय और तत्पश्चात् वीर अर्जुन का सपादन किया। हिन्दी की जो महती सेवा आचार्य इन्द्र विद्यावाचस्पति ने की है वह हिन्दी के समर्थको के लिए बड गौरव की वस्तु है। उनके बड पुत्र श्री हरिश्चन्द्र विद्यालकार थे जो स्नातक बनने के अनन्तर राजा महेन्द्रप्रताप के साथ विदेश यात्रा पर चल गये। कूटनीतिक अग्रजो ने उन्हें ऐसे षडयन्त्र का शिकार बनाया कि आज तक भारतवासियो को उनका पता ही नही चला। वे बडे ही क्रातिकारी, धार्मिक एव ओजस्वी देशभक्त थे। उनकी दूसरी पुत्री अमृतकला का विवाह प्रसिद्ध देशभक्त डाक्टर सुखदेव से हुआ। स्वामी जी ने अपने पुत्र और पुत्रियो के विवाह जात पात के बन्धनो को तोडकर किए।

मुन्शीराम जी ने वकालत छोडकर वानप्रस्थाश्रम मे प्रवश किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को अपने योगद न से देश भर मे अग्रगण्य सस्थाओ मे लाकर खडा किया। उस समय उनके सामने भारतीय शिक्षा पद्धति से ऐसे विद्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव विचाराधीन था जिससे अग्रेजी सत्ता के चगुल से भारतीय विद्यार्थी बचाये जा सक। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय का स्थापना हरिद्वार मे की और अग्रजी राज्यकाल मे यह प्रथम विद्यालय था जिसमे शिक्षा का माध्यम हिन्दी रखा गया। कल्याण मार्ग के पथिक महात्मा मुन्शीराम ने सर्वात्मना त्याग भावना से प्रेरित होकर सन्यास आश्रम में प्रवश करने से पूर्व अपनी जालन्धर

वाली कोठी व सब सम्पत्ति आर्यसमाज को दान कर दी।

परमात्मा मे उनकी असीम श्रद्धा थी इसलिए उन्होंने स्वय ही प्रस्ताव किया कि सन्यास आश्रम मे प्रवेश करने पर उनका नाम श्रद्धानन्द रखा जाय।

'कल्याण मार्ग का पथिक' के शीर्षक से उन्होने अपना जीवन-वृत्तान्त लिखा है जो अनेक घटनाओ से परिपूर्ण है। यहा उनके जीवन सबधी कुछ विशेष घटनाओ का सक्षप मे उल्लेख किया जाना अभीष्ट है—

गुरुकुल कागडी का प्रबन्ध आचार्य रामदेव को सौंपकर स्वामी श्रद्धानन्द महाराज दिल्ली मे पधारे और यहा से उनकी राजनैतिक एव धार्मिक प्रगतियो का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

सन् १९२२ मे जब सिक्खो ने गुरु के बाग का सत्याग्रह प्रारम्भ किया और अग्रेजी सरकार उस आंदोलन को दबाने की तैयारी करने लगी तो इस समाचार को सुनकर स्वामी श्रद्धानन्द तुरन्त अमृतसर पहुच गये और गुरु का बाग सत्याग्रह का सचालन उन्होने स्वयम् अपने हाथ मे लिया। वीर सन्यासी ने गुरु का बाग सत्याग्रह के प्रथम जत्थे में प्रथम सत्याग्रही के रूप में अपने को प्रस्तुत किया और वे अग्रजी सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिये गए।

महात्मा गाधी द्वारा चलाये गए असहयोग आदोलन में स्वामी जी ने सक्रिय भाग लिया और उस समय के देश की अग्रिम पक्ति मे खडे हुए नेताओ में वह दिखाई दिए।

अमृतसर के जलियावाले बाग जनरल ओडवायर ने जो अत्याचार किए थे पजाब को आत्मा उनसे काप उठी थी। कौडियावाले खूह स्थित बाजार से जहा एक अग्रेज का वध किया गया था गुजरने वाले लोगो को छाती के बल रग कर उस सडक को पार करने का हुक्म दिया गया। अग्रेजो आतक से पजाब की वीर भूमि प्रकम्पित हो उठी। ऐसी स्थिति में कांग्रेस का नाम लेने वाला भी पजाब में नही दिखाई देता था। तब स्वामी जी ने इण्डियन नेशनल काग्रेस का अधिवेशन अमृतसर में बुलाने का प्रस्ताव किया और स्वयम् उसके स्वागताध्यक्ष बने। काग्रेस के इतिहास में सर्वप्रथम स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपना भाषण हिन्दी मे पढा।

१९१९ मे जब दिल्ली मे काग्रेस की सभाएँ और जलूस बन्द करने का आदेश दिया गया तो उस समय स्वामी जी के नेतृत्व मे एक बहुत बडा जलूस पत्थर वाले से घण्टाघर की ओर चला। अग्रेज कमाण्डर ने सैनिको को भीड पर गोली चलाने का आदेश दिया। इस पर सैनिको ने अपनी सगीन तान ली। उस समय स्वामी जी महाराज अपने कुर्त्ते के बटन खोलकर और सीना तानकर सगीनों के सामने खडे हो गए और कहा, निहत्थी प्रजा पर गोली चलाने की अपेक्षा मेरी छाती पर गोली चलाओ।' इस दृश्य को देखकर जवानों को सगीन हटा लेने का आदेश दिया गया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज हिन्दू मुस्लिम इत्तिफाक के प्रबल समर्थक थे। इसलिए मुसलमानो ने जामा मस्जिद के मिम्बर पर खडे होकर उपदेश करने की प्रार्थना की। इस्लाम के इतिहास मे यह पहली घटना थी कि किसी गैर मुस्लिम को इस प्रकार का सम्मान दिया गया हो।

स्वामी श्रद्धानन्द जी सिद्धान्तवाद के प्रबल समर्थक थे इसलिए उन्होने जामा मस्जिद मे उपदेश वेद मन्त्रों से प्रारम्भ किया।

महात्मा गांधी और काग्रस के कुछ नेताओ की मुस्लिम पोषक नीति के कारण स्वामी जी ने काग्रेस से त्याग पत्र दे दिया और खुले रूप से भारतीयकरण का कार्य अपने हाथ में लिया। सर्वप्रथम उन्होंने आगरा के मलकाने राजपूतो को स्वधर्म मे वापस लेकर इस महान् आन्दोलन का सूत्रपात किया। इससे कुछ साम्प्रदायिक लोग उनसे नाराज

हो गए और २३ दिसम्बर, १९२६ को एक मतान्ध साम्प्रदायिक अब्दुल रशीद ने धोखे से वर्तमान श्रद्धानन्द बलिदान भवन में रुग्णावस्था मे पड़े हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी की छाती पर दिन दहाड़े तीन गोलिया दाग दीं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने जीवन पर्यन्त देश, धर्म और जाति के लिए सर्वस्व बलिदान किया और अन्तिम क्षणों मे अपना भौतिक शरीर भी राष्ट्र को अर्पण कर दिया।

उनके स्मारक का अनावरण उसी घण्टाघर के उसी पुनीत स्थान पर किया गया जहा स्वामी जी ने छाती तानी थी।

अंग्रेजी सरकार आर्यसमाज को क्रान्तिकारियो का सगठन और गुरुकुल कागडी को उसका प्रधान गढ समझती थी। इसलिए गुरुकुल कागडी के कार्य-क्रम की जाच करने के लिए ब्रिटिश पार्लियामेंट ने श्री रेम्जे मेकडानल्ड की अध्यक्षता मे एक कमीशन भारत में भेजा।

श्री रेम्जे मेकडानल्ड ने गुरुकुल की जाच पडताल करने के अनन्तर जो रिपोर्ट पेश की उसमें स्वामी श्रद्धानन्द जी को १९ वीं शताब्दी का महापुरुष घोषित करते हुए कहा था कि—

"यदि यूरोप मे ईसाई, ईसा मसीह के दर्शन करना चाहते हैं तो वे गुरुकुल कागडी के आचार्य महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के दर्शन करें।"

अपने मार्ग द्रष्टा गुरु महर्षि दयानन्द के प्रति उनके हृदय में कितनी अटूट श्रद्धा थी इसका दिग्दर्शन कराने के लिए ४१ वर्ष पश्चात् स्वामी जी की कलम से लिखा हुआ श्रद्धा पत्र नीचे अंकित किया जाता है—

"ऋषिवर! तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे ४१ वर्ष हो चुके (१९२६) परन्तु तुम्हारी दिव्य मूर्ति मेरे हृदय-पट पर अब तक ज्यो की त्यो अंकित है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरण धर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। तुमने कितनी गिरी हुई आत्माओ की काया पलट की, इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है? पर-मात्मा के सिवा जिसकी पवित्र गोद में तुम विचर रहे हो कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशो से निकली हुई अग्नि ने ससार मे व्याप्त कितने पापो को दग्ध कर दिया है परन्तु अपने विषय मे मैं कह सकता हू कि तुम्हारे सहवास ने मुझ जैसी गिरी हुई अवस्था से निकालकर सच्चा जीवन लाभ करने योग्य बनाया। नास्तिक रहते हुए भी वास्तविक आनन्द मे निमग्न कर देना ऋषि आत्मा का ही काम था।"

स्वामी श्रद्धानन्द उवाच

● इस अभागे देश के अतिरिक्त सभ्य ससार मे और भी कोई देश है जहां शिक्षा का माध्यम मातृभाषा के अतिरिक्त कोई विदेशी भाषा हो? परन्तु भारतवर्ष एक विचित्र देश है जहां हिन्दू बालको के लिए शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी बनाने वालो को देश हितैषी और बुद्धिमान् समझा जाता है।

● सम्मिलित अग्निहोत्र के पश्चात् घर के सदस्य पृथक् पृथक् स्वाध्याय मे लग जाय। वृद्ध युवक बालक, स्त्री-पुरुष सब को ही प्रतिदिन स्वाध्याय करना चाहिए धर्म के मर्म को जानने के लिए स्वाध्याय से बढकर अन्य कोई साधन नहीं।

—श्रद्धानन्द

★ श्रद्धा पुष्प ★

श्रद्धानन्द की भारत को देन उनकी सत्य मे श्रद्धा है। श्रद्धानन्द यह नाम ही उनकी उस भावना का परिचायक है। उनके लिये सत्य और जीवन एक हो गये थे—सत्य ही जीवन और जीवन ही सत्य था। उनकी मृत्यु उनके निर्भीक अनथक प्रयत्नों के अमर चित्रों कोआलोकित करती हुई एक प्रकाश किरण की तरहहमारे सामने आती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

प्रात. स्मरणीय स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान को अनेक वर्ष हो गये। गुरुकुल की स्थापना कर और उसमें हिन्दी को मुख्य स्थान देकर उन्होंने शिक्षा-सम्बन्धित दूरदर्शिता और सच्ची राष्ट्रीयता का रास्ता दिखाया था। उनकी सात्विक सरलता, सिद्धान्तों में दृढता, देश, मानव-समाज तथा प्राणि-मात्र के लिए सच्चा प्रेम और स्वाभाविक निर्भयता आदि गुणों की छाप आज भी मेरे हृदय पर अंकित है और मेरे जीवन की सुरक्षित सम्पत्ति है।

—पुरुषोत्तम दास टण्डन

उनकी निर्भीकता, साहस व स्पष्टवादिता के गुणो को अंग्रेजी सरकार अच्छी तरह जानती थी। परन्तु इन गुणों को उनके स्वदेशवासी सहयोगी कार्यकर्ता भी तीव्रता से अनुभव करते थे। जो लोग काले कानून के विरोधी आन्दोलन के समय दिल्ली के चांदनी चौक मे मौजूद न भी थे, उनके हृदय पट पर भी स्वामी जी की वह निर्भीक मूर्ति अमिट रूप से चित्रित है। उस समय स्वामी जी ने अंग्रेजी गोलियो और सगीनों के सामने अपना सीना खोल-कर हृदय की निर्भीकता तथा उच्चता का प्रत्यक्ष उदाहरण उपस्थित किया। उनकी उस शुद्ध तथा उच्च भावना ने जामामस्जिद के मिम्बर पर से उनसे उपदेश करवाया और हिन्दू मुस्लिम ऐक्य का मनोरम दृश्य दिखलाया और उसी दृढता, सत्य-निष्ठा, स्पष्ट वादिता और निर्भीकता के कारण आततायी के हाथों से शहादत प्राप्त की। भारत के आधुनिक इतिहास में स्वामी जी का स्थान प्रथम सास्कृतिक पथप्रदर्शक का है। जिनको स्वामी जी के साक्षात दर्शन का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ, उनके लिये स्वामी जी के जीवन वृत्तान्त को पढाना ही मनुष्य को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करने वाला है।

—देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

स्वामी श्रद्धानन्द में निर्भीकता की आश्चर्यजनक मात्रा थी। लम्बा कद, शाही शक्ल, सन्यासी के वेश मे बहुत उम्र हो जाने पर भी बिलकुल सीधी चमकती हुई आंखे और चेहरे पर कभी-कभी दूसरों की कमजोरियो पर आने वाली चिडचिडाहट या गुस्से की छाया का गुजरना मैं इस सजीव तस्वीर को कैसे भूल सकता हू? अक्सर यह मेरी आंखों के सामने आ जाती है।

—जवाहरलाल नेहरू

स्वामी जी की पुण्य स्मृति को निरन्तर देश और समाज के सामने जीवित और जागृत रखना उपयोगी और आवश्यक है। स्वामी जी का स्थान हमारे देश की सर्वश्रेष्ठ विभूतियो मे है और सदैव रहेगा। उनका देश-प्रेम, भारतीय सस्कृति और सभ्यता के प्रति अगाध श्रद्धा और विश्वास, अदम्य साहस और वीरता, असाधारण त्याग, निबल और दलितो के प्रति आन्तरिक प्रेम व सहानुभूति और पुनीत सदाचार भारतीय पुरुष रत्नो के इतिहास में सदैव अंकित रहेंगे। उनके यशस्वी जीवन के प्रधान गुण—त्याग और सेवा से आज हम भारतवासियों का मस्तक गर्व से ऊँचा है।

—प० गोविन्द वल्लभ पंत

नि सन्देह राजनीतिज्ञों और योद्धाओ का किसी जाति के निर्माण करने में बड़ा हाथ होता है परन्तु उनके नाम सहज में ही भूल जाते हैं, जब कि उन महात्माओ के नाम, जो किसी जाति के नवीन जीवन को बनाते हैं आगामी नस्लों की स्मृति में सदा बने रहते हैं। उन्ही में से स्वामी श्रद्धानन्द जी थे। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हू कि उनका नाम ऐसे जातीय निर्माताओ के रूप मे, जिन्होने बड़े से बड़े बलिदान किये, सदा स्मरण रहे। उनके बलिदानो में से सब से बड़ा बलिदान यह था कि उन्होने हिन्दू मुस्लिम एकता की वेदी पर अपने शरीर को आहुति दे दी। —पट्टाभि सीतारमैया

स्वामी श्रद्धानन्द ! वे लक्ष्य पर पहुंचे, उन्होने सब-कुछ पाया, वह अपना नाम इतिहास मे बहुत गहरा अंकित कर गये। उन्हें मेरी श्रद्धांजलि ?

प्रत्येक जीवन का कोई चिन्ह होता है। उनके जीवन का चिन्ह था 'सेवा'।

उनकी स्मृति नये जीवन को जगा देवे और राष्ट्र के युवकों मे नई रूह फूंक देवे।

दीन दलितो की इस सेवा के लिए, जो धर्म और आजादी दोनो का दिल है, हम से अलग होकर भी वे मरे नही वे तो अब बोल रहे हैं।

और उन सब को जिन्हें मैं सुना सकता हू, उस शहीद का वह सन्देश सुनाना चाहता हू जो इस क्षण मुझे याद आ रहा है।

यह वह सदेश है जिसमे प्राचीन नवीन का अभि-नन्दन करता है— धन्य है वह जीवन जो बलि मे प्रज्वलित हो।' —साधु टी० एल० वासवानी

स्वामी जी पहले व्यक्ति थे जिन्होने भारत मे माध्यमिक और उच्च शिक्षा के माध्यम के रूप मे देशभाषा को प्रयुक्त किया। अब तो इस सिद्धान्त का अनेक विश्वविद्यालयो ने अनुसरण कर लिया है। वे स्वामी जी ही थे जिनसे प्रेरणा पाकर मैंने अपनी भारतीय महिला विद्यापीठ की समस्त परीक्षाओ मे स्वभाषा को माध्यम बनाया !

—महर्षि अण्णा साहब कर्वे

स्वामी जी की हड्डियों से यमुना के तट पर एक विशाल वृक्ष उत्पन्न होगा जिसकी जड पाताल मे पहुचेगी। शहीदो के खून से नये शहीद पैदा होते हैं।

—लाला लाजपतराय

वर्तमान काल का कोई कलाकार यदि भगवान् ईसा की मूर्ति बनाने के लिए कोई सजीव माडल (Model) चाहे तो मैं इस भव्यमूर्ति (महात्मा मुन्शीराम जी) की ओर इशारा करूगा। यदि कोई मध्यकालीन चित्रकार सेन्ट पीटर के चित्र के लिए नमूना मागेगा तो मैं उसे इस जीवित भव्यमूर्ति के दर्शन करने को प्रेरणा दूंगा।

—रेम्जे मेकडानल्ड (भू० पू० ब्रिटिश प्रधानमन्त्री)

इस जीवन में बहुत कम ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्हे मैं उतना प्रेम करता हूं जितना स्वामी श्रद्धानन्द जी को करता था। हमारी स्वच्छ निर्मल तथा प्रगाढ मैत्री में कदाचित् ही धुधलापन आया हो। उनके उच्च चरित्र की ही महत्ता थी जिसने उनके प्रति मेरे प्रेम को सच्चा और गहरा बनाया था। यह जानकर मैं प्रसन्न होता था कि स्वामी जी मुझ से प्रेम करते है।

आज मैं २० वर्ष पूर्व के उस दिन की ओर आख उठाकर देखता हूं, जब मैंने पहले पहल महात्मा गाधी जी से गुरुकुल रिद्वार के उस तपस्वी महात्मा मुन्शीराम जी के सम्बन्ध में बातचीत की थी। दक्षिण अफ्रीका के प्रिटोरिया मे जब हम आपस मे बातचीत कर रहे थे महात्मा गाधी, गुरुकुल और महात्मा मुन्शीराम जी के प्रति प्रकट किए गए मेरे उत्साह पर बीच बीच मे मुस्करा उठते थे। महात्मा गाधी उस समय की प्रतीक्षा में थे जब कि वे गुरुकुल को देखने का प्रसन्नतादायक अवसर प्राप्त करेगे। हम दोनो ने यह प्रतिज्ञा की थी कि यदि सम्भव हुआ तो हम दोनो एक साथ ही महात्मा मुन्शीराम जी से भेट करेगे।

—दीनबन्धु सी० एफ० एण्ड्रूज

संस्मरण के रूप मे—

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

—स्व० रघुनाथ प्रसाद पाठक

काठ (मुरादाबाद) के हाई स्कूल के छात्र जीवन में श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम सुना था। आर्यसमाज और देश के एक बडे नेता के रूप मैं उनकी कीर्ति फली हुई थी। १९२५ में मथुरा शताब्दी (महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी) के पुण्य अवसर पर उनके दर्शन करने और उसके दो तीन महीने बाद (८।४।१९२५) सार्वदेशिक सभा मे आने पर उनके सीधे सम्पर्क मे आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

स्वामी जी महाराज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के जन्मदाताओ में से थे। २७ सितम्बर १९०८ ई० के दिन आर्यसमाज मन्दिर आगरा (हीग की मण्डी) मे हुई प्रान्तीय सभाओ के जिन नेताओ की बैठक मैं सार्वदेशिक सभा (अ र्यावर्त्तीय सार्वदेशिक आर्य सभा) के निर्माण का निश्चय हुआ था, उसमे श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी (उन दिनों के महात्मा मुंशीराम जिज्ञासु) भी शामिल हुए थे।

प्रारम्भ मे सार्वदेशिक सभा के भाग्य का निर्माण स्वामी जी महाराज के हाथो मे रहा। वे वर्षो पर्यन्त उसके प्रधान रहे। सभा की अन्तरङ्ग के सदस्य तो बलिदान के समय (१९२६) तक रहे। श्रीमद्दयानन्द जन्म शताब्दी के समय सभा की बागडोर एक प्रकार से उन्ही के हाथो मे थी यद्यपि शताब्दी के कुछ पूर्व वे स्वेच्छया प्रधान पद से मुक्त हो गये थे। उनका स्थान महात्मा नारायण स्वामी जी ने ग्रहण किया था जो वर्षो पर्यन्त इस सभा के मन्त्री रह चुके थे और मथुरा शताब्दी के समय कार्यकर्त्ता प्रधान थे।

सार्वदेशिक सभा का कार्यालय १९२५ में परेड ग्राउण्ड स्थित सार्वदेशिक भवन में व्यवस्थित किया गया था। इससे पूर्व सभा का नियमित कार्यालय न था। वह सभा मन्त्री के घर पर ही रहता था। जब नारायण स्वामी जी महाराज (मुन्शी नारायण प्रसाद) सभा के मन्त्री थे तब काफी समय तक १९१८ के आस पास यह उनके मुरादाबाद के आवास स्थान पर रहा था। मथुरा शताब्दी के अवसर पर इस भवन के नीचे के तबेलो को खाली कराके और दो कमरे तथा एक हाल बनवाकर कार्यालय भवन का रूप दिया गया था। ऊपर की मजिल में पूर्व से ही दो बडे कमरे थे और उनके ऊपर टीन के शेड थे। ऊपर के इन कमरो में ज्योति पाठशाला (सस्कृत) लगती थी जो भवन की दानदात् श्रीमती जानकी देवी (दरीबा कला दिल्ली) के पति श्री ला० ज्योतिप्रसाद की स्मृति में चलाई गई थी। इसी पाठशाला मे श्री प० प्रियरत्न आर्य (स्वामी ब्रह्ममुनि जी) ने हमारे वहा रहते हुए अध्यापन कार्य किया था। श्री सत्याचरण जी भी उन दिनो उसके एक छात्र रहे थे जो बाद मे ट्रीनोदाद प्रचारार्थ गए और सुरीनाम डच गायना के हाई कमिश्नर बनाकर भारत सरकार द्वारा भेजे गए थे।

सार्वदेशिक सभा की बैलेन्स शीट ४०० चार सौ रुपया मात्र थी जो इस समय (१९८०) लाखों मे है।

मथुरा शताब्दी पर प्रकाशित पुस्तको के अव-

शिष्ट स्टाफ से सार्वदेशिक सभा के विक्रय पुस्तक भडार की नींव पडी थी और अपील पर प्राप्त धन से जो लगभग ५७ हजार था, सभा की अर्थव्यवस्था व्यवस्थित और परिवर्धित की गई थी। जिससे सुचारु रूप से कार्य चले।

उन दिनो श्री डा केशवदेव शास्त्री एम० डी० सभा के मत्री और श्री लाला नारायणदत्त जी कोषाध्यक्ष थे, जो उन दिनो सार्वदेशिक भवन से सटे एक किराए के मकान में रहते थे। पुस्तक भडार का कार्य सार्वदेशिक भवन मे और कार्यालय का कार्य शास्त्री जी की कोठी (३ श्रीराम लेन अलीपुर रोड, दिल्ली) पर और गर्मियो मे डाक्टर साहब की राजपुर (देहरादून) स्थित कोठी से होता था।

कार्यालय के मुख्य लेखक श्री नाथूराम प्रेमी थे जिन्होंने महात्मा नारायण स्वामी जी के अधीन मथुरा शताब्दी के कार्यालय में काम किया था और स्वामी जी सहित उनका दाहिना हाथ पत्र लिखते लिखते सूज गया था। उन दिनो हिन्दी टाइपिस्ट की सुविधा प्राप्त न थी।

हम सार्वदेशिक भवन मे ही पुस्तक विभाग का कार्य करते थे। हमे श्री ला० नारायण दत्त जी ने एक छोटी सी मेज आर्यकुमार सभा की दिलाई थी और पाँच रुपये की एक कुर्सी क्रय करके दी थी। एक चपरासी भी दे दिया गया था। हम सार्वदेशिक भवन की सब से ऊपर की छत पर बने टीन शेडो मे रहते थे। साथ ही डाक्टर साहब की उपस्थिति और अनुपस्थिति दोनो मे श्रीराम लेन स्थित उनकी कोठी पर नाथूराम जी के साथ तथा अकेले भी रहे थे। सभा का चपरासी और एक माली भी वहाँ रहते थे।

१. संस्मरण

एक दिन दोपहर के समय श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज आर्य अनाथालय पाटौदी हाउस (दरियागज) से लौटते हुए सभा के कार्यालय मे पधारे और आर्य पर्व पद्धति की एक प्रति ले गए।

उस दिन शाम को सभा पुस्तकाध्यक्ष श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी ठेकेदार पुस्तकालय में आए और दिन भर के काम और हिसाब की जाच पडताल की। पर्व पद्धति की प्रति स्वामी जी के नाम में दिखाई हुई थी। लाला जी को यह जानकर प्रसन्नता हुई कि हमने स्वामी जी से उस पुस्तक की कीमत की माग नहीं की थी।

दूसरे दिन सायकाल के समय स्वामी जी पुन पधारे और उस पुस्तक की दस आने कीमत देकर हम से रसीद मागी। हमने पैसे लेने में असमर्थता प्रकट करके जब यह कहा कि वह पुस्तक भेंट मे डाल दी गई है तो उन्होंने कुछ आक्रोश की मुद्रा में कहा, "यह काम गलत हुआ है। मैंने यह पुस्तक निजी प्रयोग के लिए ली थी। इसकी कीमत सभा में जमा होनी चाहिए।" इस पर भी जब हम ने सभा पुस्तकाध्यक्ष का आदेश बताकर पैसे लेने से इन्कार किया तो वे पैसे मेज पर रखकर जाने के लिए उठ खडे हुए फलत हमने कैशमीमो बनाकर उन्हें दे दिया।

२ दो नेताओ की उच्चमनस्कता

उन्ही दिनो स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने आर्यमित्र मे अपना एक वक्तव्य छपवाया जिसमे लिखा गया था कि 'सार्वदेशिक सभा प्रधान (नारायण स्वामी जी महाराज) रामगढ (नैनीताल) शैल पर हैं और सभा मत्री (डा० केशवदेव शास्त्री) मसूरी शैल पर हैं। सभा कार्यालय में एक क्लर्क बैठा मक्खी मारता रहता है। सभा सम्बन्धी कार्य के लिए लोग मेरे पास आते और मुझे तग करते रहते हैं।"

इस वक्तव्य के छपने पर सभा प्रधान श्री नारायण स्वामी जी ने बहुत बुरा मनाया और उन्होंने एक पत्र स्वामी जी महाराज को लिखकर जवाब तलब किया। इसके उत्तर मे स्वामी श्रद्धा-

नन्द जी महाराज ने केवल यह लिख भेजा कि जब आप दिल्ली पधारेंगे तब बातचीत हो जायेगी।

कुछ दिन बाद महात्मा नारायण स्वामी जी दिल्ली पधारे और सार्वदेशिक भवन के ऊपर के कमरे में ठहरे। दूसरे दिन प्रात इन पंक्तियों के लेखक को साथ लेकर आर्यसमाज देहली (बावड़ी बाजार, वर्तमान आर्यसमाज दीवान हाल) के साप्ताहिक सत्सग में सम्मिलित होने के लिए पैदल चल दिए। बड़ाबुल्ला के मोड पर नई सड़क से आता हुआ स्वामी श्रद्धानन्द जी का तांगा मिला। महात्मा नारायण स्वामी जी को देखकर स्वामी जी महाराज तांगे से उतर पड़े और दोनो नेता पैदल चलकर ही समाज मन्दिर में पहुचे।

साप्ताहिक सत्सग की समाप्ति पर स्वामी श्रद्धानन्द जी महात्मा नारायण स्वामी जी को अपने साथ तांगे में नया बाजार स्थित (वर्तमान श्रद्धानन्द बलिदान भवन) अपने आवास स्थान पर ले गए और हमें कह गए कि स्वामी (नारायण स्वामी) जी का भोजन वहीं होगा। बाजार से न लाया जाय।' साथ ही यह आदेश भी दिया गया कि हम एक बजे (मध्याह्नोत्तर) नया बाजार पहुच। हम ठीक एक बजे स्वामी जी के आवास स्थान पर पहुच गए।

दोनो सन्यासी भोजनोपरान्त पास पास बैठे थे। हमें भी बाहर बैठने को कहा गया। छज्जे पर स्वामी जी के गेरुए वस्त्र टगे हुए थे, जिसे कुछेक आर्यजन परिहास में कहा करते थे—स्वामी जी इन हैं अर्थात् दिल्ली में हो हैं।

कुछ क्षण के उपरान्त श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने कहा, "आर्यमित्र में वक्तव्य निकाल कर मैंने भूल की है।" इस पर महात्मा नारायण स्वामी जी ने कहा

"मैंने आपसे जवाब तलब (वक्तव्य) करने की भूल की है।" दोनो के ही हृदय भाव-विभोर थे। पाच मिनट में ही यह मामला समाप्त हो गया जबकि दोनों ने ही कहा, 'यह मामला यहीं समाप्त समझा जाय।'

३ हृदय की सरलता

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज कांग्रेस में शामिल होने के लिए १९२५ में कानपुर गए थे। उस अवसर पर श्री स्व० राय ज्वालाप्रसाद जी की देख रेख में सार्वदेशिक सभा के आर्थिक सहयोग से वैदिक धर्म के प्रचार की व्यवस्था की गई थी। कांग्रेस कैम्प के भीतर ही आर्यसमाज का प्रचार कैम्प लगाया गया था। आर्यसमाज के इसी कैम्प में स्वामी जी महाराज के लिए पृथक् डेरा लगाया गया था।

एक दिन दोपहर बाद स्वामी जी कांग्रेस की अध्यक्षा श्रीमती सरोजिनी नायडू महात्मा गांधी आदि नेताओं से मिलने गए हुए थे। इसी बीच स्वामी जी के एक बगाली भक्त डेरे पर आये। दो धूर्तों ने उन्हें आता देखकर एक चाल चली। उनमें से एक स्वामी जी की गेरुआ चादर ओढकर तख्त पर मुह ढक कर लेट गया और दूसरा उनका प्राइवेट सेक्रेटरी बनकर बाहर कुर्सी डालकर बैठ गया। जब वे बगाली भद्र पुरुष डेरे पर आये तो उन्होंने स्वामी जी से भेंट करने के लिए कहा। उस धूर्त ने कहा, 'स्वामी जी इस समय विश्राम कर रहे हैं। कोई सन्देश हो तो छोड जाओ जगने पर उन्हें दे दिया जायेगा।"

इस पर उन भद्र पुरुष ने कहा, 'मुझे वेद प्रचारार्थ एक सौ रुपया स्वामी जी को भेंट करना था। इक्यावन रुपया मैं मनी आर्डर से उनके पास भेज चुका हू। शेष इक्यावन रुपये देने आया हू। ये रुपए आप रख ले और उन्हें दे देना।" मुझे अभी थोडी देर में ट्रेन से कलकत्ता लौटना है।' उस धूर्त ने इक्यावन रुपये लेकर उन्हें विदा कर दिया।

उस भद्र पुरुष ने कलकत्ता लौटने पर इसकी

सूचना पत्र द्वारा स्वामी जी को दी। पत्र पढकर स्वामी जी आश्चर्य चकित रह गए क्योकि उन्हें वे इक्यावन रुपये प्राप्त ही न हुए थे। फिर भी उन्होने लिख दिया कि उन्हें कानपुर मे दिए रुपये मिल गए हैं।

लगभग एक वर्ष के बाद एक धूर्त दिल्ली आया हुआ था। बातचीत मे जब स्वामी जी ने कानपुर वाली धोखा धडी की बात उसे बताई तो वह बोला "भगवन् जिसने आप जैसे महात्मा को धोखा दिया है उसने महापाप किया है, जिसके दण्ड से वह बच न सकेगा ' स्वामी जी ने कहा, ' मैंने आर्यसमाज को बदनामी से बचाने के लिए उस भद्र पुरुष को लिख दिया है कि वे रुपये मुझे मिल गए हैं।"

यह सुनना था कि उस धूर्त के हृदय ने पलटा खाया। "उसने स्वामी जी को इक्यावन रुपये देकर अपने अपराध की क्षमा मागी। स्वामी जी उसके हृदय परिवतन पर प्रसन्न हुए और उसे प्रेम पूर्वक विदा कर दिया।"

४. विलक्षण सूझ बूझ

एक दिन एक आर्य प्रचारक स्वामी जी के पास गया और कहा, "महाराज, मेरे विवाह को हुए कई वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, पर सन्तान का मुह देखने से वचित हूं। एक पत्नी के रहते हुए दूसरा विवाह करना हम लोगो के लिए वर्जित है। यदि आप अनुमति दे द तो दूसरा विवाह कर लू। वैसे महात्मा नारायण जी की लिखित अनुमति मैं प्राप्त कर चुका हू आपकी अनुमति प्राप्त करना जरूरी है।"

स्वामी जी ने उसकी पूरी बात सुनकर कहा, यदि नारायण स्वामी जी ने अनुमति दे दी है तब फिर वह काफी है। मेरी अनुमति की खास जरूरत नही रह गई है। उसने श्री नारायण स्वामी जी की लिखित अनुमति पढवाते हुए अपना अनुरोध जारी रखा। इस पर स्वामी जी ने कहा, "देखो भाई मैं वकील रहा हूँ। तुम्हारी और तुम्हारी पत्नी की डाक्टरी परीक्षा करवाने के बाद ही अनुमति देने का फैसला करूगा।"

यह सुनना था कि वे प्रचारक मौन हो गए और बिना आगे कुछ कहे वहा से खिसक गए। बाद में पता लगा कि उनके दो बच्चे, एक लडका व एक लडकी मौजूद थे।

५ वह चपरासी से क्लर्क बना

सार्वदेशिक भवन (परेड मैदान दिल्ली की पहली मजिल मे सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग बैठक होने वाली थो। कार्यालय नीचे की मजिल मे था। अध्यक्ष श्री महात्मा नारायण स्वामी जी पहली मजिल मे विराजमान थे। बैठक से लगभग आधा घटा पूर्व स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज आए और दोनो नेताओ में बातचीत होने लगी। सभा के चपरासी की ड्यूटी पहली मजिल मे बैठने की लगी थी। उसे कहा गया था कि वह वही बैठा रहे और नीचे कार्यालय में न आए।

कुछ देर बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने उससे कहा, "नीचे से अपने बाबू को बुलाओ।" उसने नीचे जाने से इकार करते हुए कहा, "बाबा, मैं नीचे नही जा सकता।" स्वामी जी ने दो तीन बार जाने के लिए कहा परन्तु वह तैयार न हुआ। स्वामी जी ने कहा, "आवाज देकर बुलाओ।" उसने ऐसा करने से भी यह कहकर इन्कार कर दिया कि 'मुझे शोर मचाने की भी इजाजत नही है।"

स्वामी जी उसके व्यवहार से मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे, और नारायण स्वामी जी नाराज हो रहे थे। अन्त मे स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने आवाज देकर हमें बुलाया। जब हम उनके पास गए तो उन्होने हसकर पूछा, "यह चपरासी भला कहा से पकडा है, बडा ही आज्ञाकारी है।"

श्री नारायण स्वामी जी ने उसकी धृष्टता की

पूरी बात बताकर कहा, "इसे सर्विस से हटा दो बड़ा निकम्मा है।"

बैठक के बाद जब स्वामी श्रद्धानन्द जी अपने आवास स्थान (बर्न वैस्टन रोड नया बाजार) को जाने लगे तो उस चपरासी को कहा, 'तुम मेरे पास आना।" उसने कानों पर हाथ रखते हुए कह दिया, "ना बाबा, मुझे बाबा नही बनना है।"

अगले दिन वह चपरासी सर्विस से अलग कर दिया गया। स्वामी जी के बहुत आग्रह पर वह उनसे मिला। उन्होंने उसे अपने यहाँ नौकर रखने को कहा पर वह राजी न हुआ।

लगभग चार-पाँच महीने के बाद एक दिन स्वामी जी हकीम अजमल खा के साथ घोड़ा गाड़ी मे बैठे कहीं जा रहे थे। जब गाडी रायल थियेटर (वर्तमान मोती टाकीज) के पास से गुजरी तब उस चपरासी ने अकस्मात् स्वामी जी को देख लिया। वह दौड़ा-दौड़ा आया और कहा, "बाबा, नाटक देखते जाओ, बेताब का कृष्ण सुदामा चल रहा है। मैंने इस थियेटर में नौकरी कर ली है। फ्री पास दूंगा।" उसका निमन्त्रण पाकर स्वामी जी कह-कहा लगाकर हस पड़े और बोले, "शिवराम, तू अभी बच्चा है। तेरी उम्र पढने की है। तू यहाँ अपनी जिन्दगी क्यो बरबाद कर रहा है। पढना चाहे तो इन्तजाम कर दूं। नौकरी ही करना चाहे तो दूसरी अच्छी जगह लगवा दूं।" शिवराम ने कहा, 'स्वामी जी, पढने के लिए मन तो है। पर घर में विधवा मा के सिवा दूसरा कोई नही है। पढूंगा तो दोनो का पेट कैसे भरेगा?"

इस घटना के बाद स्वामी जी ने उसकी पढाई का प्रबन्ध कर दिया और अपने एक भक्त सेठ से उसको मा को ३० रुपये महीने की सहायता दिला दी।

उसने मैट्रिक पास करके सरकारी नौकरी कर ली और कालान्तर मे वह लोअर डिवीजन क्लर्क बन गया।

एक दिन भेंट होने पर उसने स्वामी जी के उपकार की चर्चा करते हुए हमें कहा था, 'उन्होंने मुझे जमीन से उठाकर आसमान में चढाया है।"

६ सहृदयता

सभा के मुख्य लेखक नाम मैट्रिक थे। शताब्दी का कार्य करते हुए मथुरा मे उनके हाथ सूज गए थे। यही हाल महात्मा नारायण स्वामी जी के दाहिने हाथ का हुआ था। उनकी योग्यता और कार्यकुशलता में कोई सन्देह नही था। उन्हीं के अधीन हमने लगभग दो वर्ष काम किया था। परन्तु इस आधार पर कि वे नान मैट्रिक हैं उनकी सेवाए समाप्त कर दी गई। स्वामी जी ने इस कार्यवाही का इस आधार पर विरोध किया कि डिग्रिया ही किसी व्यक्ति की योग्यता और कार्य कुशलता का पैमाना नही होना। हमे देखना यह है कि वह हमारे लिए कितना उपयोगी है।"

सभा की सर्विस से अलग कर दिए जाने पर वह बड़े दुखी और निराश हुए, और एक दिन स्वामी जी की सेवा में उपस्थित होकर अपने हृदय की वेदना प्रकट की। स्वामी जी ने उन्हें साठ रुपए ६० रु० मासिक पर (श्रद्धानन्द) दलितोद्धार सभा मे नियुक्त कर दिया, स्वामी जी की प्रेरणा पर ही उन्होंने न केवल प्राइवेट रूप से मैट्रिक ही वरन् एम ए किया और दलितोद्धार सभा में काफी दिनो तक काम करने के बाद दरियागंज स्थित डी ए वी हाई स्कूल मे अध्यापक होकर चले गए और वहा से ही रिटायर हुए। वे हमारे मित्र थे। स्वामी जी महाराज की कृपा और उनकी प्रेरणा को भाव-विभोर हो स्मरण किया करते थे। उनका नाम नाथूराम प्रेमी है।

७. व्यावसायिक प्रचारकों को वापस बुलाया

स्वामी जी को आसाम प्रचार की बड़ी चिन्ता

रहती थी। वे इस प्रान्त में भी मदरास प्रान्त की तरह आर्यसमाज को एक शक्ति के रूप मे देखने के के लिए उत्सुक और प्रयत्नशील रहते थे। उन्होंने दो सन्यासियो को तैयार करके उस क्षत्र में प्रचारार्थ भेजा जो अंग्रेजी के भी अच्छे ज्ञाता और वक्ता थे। परन्तु एक महानुभाव को प्रयाग (इलाहाबाद) से ही वापस बुलाना पड गया। व एक मात्र भोजन व्यय पर ही वहा जा रहे थे परन्तु दिल्ली से प्रयाग तक पहुंचने का उनका दूध और फलो का बिल बीस (२०) रुपये हो गया था। दूसरे महानुभाव का दूध और फलो का एक महीने का बिल दो सौ (२००) रुपये हो गया था। उन्हें भी वापस बुलाना पड गया। वे वहा मिशनरी स्प्रिट रखने वाले विद्वान् को भेजने का विचार कर रहे थे कि इसी बीच में २३।१२।१९२६ को उनका बलिदान हो गया।

८ प्रभावशाली व्यक्तित्व

स्वामी जी महाराज ने ही प्रथम बार मदरास प्रान्त में १९।२३।१९२४ में सार्वदेशिक सभा की ओर से व्यवस्थित प्रचार की व्यवस्था की थी। उन्होंने प्रथम बेच के रूप में श्री प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार, श्री प० धमदेव जी विद्यावाचस्पति आदि को जो गुरुकुल कागडी के स्नातक थे वहा बिठाया था।

एक दिन स्वामी जी वहां एक सार्वजनिक सभा में व्याख्यान देने के लिए खडे हुए जिसमें स्कलों, कालेजों के छात्र, वकील, डाक्टर पत्रकार व अन्य अनेक शिक्षित व्यक्ति भी सम्मिलित हुए थ।

स्वामी जी को अग्रेजी मे ही बोलने को प्रर्थना की गई। इस पर उन्होने कहा, 'यदि आप मेरी टूटी फूटी अग्रेजी को शान्ति पूर्वक सुनने के लिए उद्यत हों तो मैं अग्रेजी मे ही बोल दूगा अन्यथा मैं नहीं बोलूगा।" हुआ यह था कि उनसे पूर्व आचार्य रामदेव जी ने जिनका अ ग्रेजी लिखने और बोलने पर पूर्ण आधिपत्य था, मदरास नगर म एक सार्वजनिक मीटिंग म भाषण दिया था और स्कूल के बजाय सकूल उच्चारण कर दिया था जिस पर छात्रो ने उन्हें आगे बोलने से रोक दिया था। श्रोताओं ने स्वामी जी के अग्रजो भाषण को बडी शान्ति और शालीनता से सुना और बीच में कही भी गलत उच्चारण पर व्यग्य करने का छात्रो को अवसर न न मिला।

●

स्वामी श्रद्धानन्द उवाच–

"प्यारे भ्रातृगण! आओ! दोनो समय नित्य प्रति सन्ध्या करते हुए ईश्वर से याचना करें और उसकी सत्ता और दया से इस योग्य बनने का यत्न कर कि हमारे मन, वाणी और कर्म सब सत्य ही हो। हमारे हर प्रकार के कर्म सत्यमय हो। सर्वदा सत्य का चिन्तन कर। वाणी द्वारा सत्य ही प्रकाशित कर और कर्मों में सत्य का ही पालन कर।"

यह आर्य धरा फिर से चमके, ऐसा संन्यासी दे देना।

भारत के लोगो सन्यासी उस श्रद्धानन्द का ध्यान करो।
गुरुकुल मर्यादा पालन का उसका सपना साकार करो॥

मेरा वक्षस्थल खुला हुआ इस पर गोली का वार करो।
आजादी के दीवाने की यह तुच्छ भेंट स्वीकार करो॥

जामा मस्जिद के मिम्बर पर थे वेद मन्त्र उपदेश दिये।
एक ईश की प्रजा सभी मन मोहक बोल उदार दिये॥

जो थे भूले भटके भटके उनको भी मार्ग दिखाया था।
शुद्धि का शंख बजा करके फिर वैदिक पथ बतलाया था॥

गुरु के बाग सत्याग्रह मे एक अदभुत खेल रचाया था।
इस भांति वीर सेनानी ने सिक्खों का भाग्य जगाया था॥

तेईस दिसम्बर छब्बीस मे स्वामी जी रोगाक्रान्त हुए।
एक नीच अराधम पापी की गोली के उन पर वार हुए॥

भारत माता की छाती पर एक शोक का पर्वत टूट पडा।
उनकी अर्थी के पीछे तो भारत का जन जन उमड पडा॥

भारत के लोगो सन्यासी उस बलिदानी को याद करो।
इस काल जो सकट छाये हैं उनको फिर से निर्मूल करो॥

हे नाथ हमें अनुकम्पा से श्रद्धा का पाठ पढा देना।
फिर से इस भारत भूमि पर श्रद्धानन्द सा यतिवर देना॥

आसुरी वृत्तियां बढ रही हैं इसका भी लेखा ले लेना।
यह आर्यधरा फिर से चमके ऐसा सन्यासी दे देना॥

—ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति
शास्त्री सदन ११/१२४ पश्चिम आजाद नगर, दिल्ली ५१

स्वामी जी के जीवन का एक पृष्ठ

—उपन्यास सम्राट् मुन्शी प्रेमचन्द, बी० ए०

यों तो श्री स्वामी श्रद्धानन्द ने देश और समाज के हितों की रक्षा के लिए अपना जीवन ही अर्पित कर दिया था, पर उन में सब से बड़ा गुण जो था वह उन की अपूर्व शालीनता थी। उन्होंने जाति सेवा के लिए जो मार्ग निश्चित किया था उसमें अन्य मत वालों से मतभेद होना अनिवार्य था, लेकिन सिद्धान्तों के भेद को उन्होंने कभी अपने सौजन्य पर आधिपत्य न जमाने दिया। यही कारण है कि मुसलिम नेताओं में भी शायद ही कोई ऐसा हो जिस ने मुक्त कण्ठ से आप की कीर्ति का अनुमोदन न किया हो। हिन्दुओं के कलम से अब तक आप के गुणानुवाद और शोक में हजारों लेख निकल चुके हैं, लेकिन एक सच्चे सहृदय मुसलिम के कलम से इस विषय में जो लेख निकला है वैसा अब तक किसी हिन्दू ने नहीं लिखा। लेख क्या है एक भक्त की श्रद्धांजलि है, जिसके एक-एक शब्द में लेखक के विशुद्ध भाव झलक रहे हैं। यह लेखक दिल्ली निवासी मि० आसफ अली, बार ऐट ला हैं। आपका लेख इसी महीने के 'हिन्दुस्तान रिव्यू' में छपा है। उस को पढ़ने से ज्ञात होता है कि राष्ट्रवादी मुसलिमों को भी आप से कितना प्रेम था। और उस प्रेम का क्या कारण था ? यही कि स्वामी जी की स्वाभाविक मृदुता, सौम्यता और शालीनता कभी उन का साथ नहीं छोड़ती थी। उनका हृदय निष्कपट था, उसमें क्षुद्रता के लिये स्थान ही न था। आप स्वामी जी के सामाजिक और धार्मिक कृत्यों का उल्लेख करने के बाद लिखते हैं।

"सन् १९१८ में जब दिल्ली में पहली बार कांग्रेस का अधिवेशन हुआ तो स्वामी जी स्वागत-कारिणी समिति के उपप्रधान चुने गए थे। मैं भी सहकारी मन्त्री था और मुझे स्वामी जी के साथ काम करने का उस समय बहुत अवसर मिला। आपकी स्नेहमय उदारता, अपूर्व सज्जनता, नम्रता और निष्कपट मैत्री ने शीघ्र ही मुझे वशीभूत कर लिया। उन की गुरुजन सुलभ सौम्यता और स्नेह और मेरी ओर से भक्ति और सम्मान के भावों ने हमारे बीच में एक ऐसा प्रगाढ़ सम्बन्ध उत्पन्न कर दिया जो अनेक विषयों पर हम में तात्त्विक विरोध होने पर भी अन्त समय तक बना रहा।"

सन् १९२२ में मियांवाली जेल में लेखक महोदय की स्वामी जी से फिर भेंट हुई, जिन की सजा के अब थोड़े ही दिन और बाकी रह गये थे। ज्यों ही आपको मालूम हुआ कि स्वामी जी वहां हैं— 'मैं उन की कोठरी की ओर बेतहाशा दौड़ पड़ा। स्वामी जी ने दोनों बाहें फैलाकर मेरा अभिवादन किया और बड़े स्नेह से मुझे गले लगाकर अपने पास बैठा लिया।"

मियांवाली जेल में भी स्वामी जी गीता, रामायण या दर्शन पर उपदेश दिया करते थे। कैदियों को जिस सत्संग का शुभ अवसर और कहीं न मिल सकता वह इस जेल में हाथ आता। प्रेमियों की एक मण्डली रोज जमा हो जाती थी। मि० आसफ अली ने स्वामी जी से 'गीता रहस्य' मांग-

(शेष पृष्ठ २९ पर)

ऋषि प्रेम में छलकती आंखें

—श्री बुद्धदेव विद्यालंकार (स्वामी समर्पणानन्द)

दीनबन्धु एण्ड्रयूज महोदय गुरुकुल के अनेक बार अतिथि हुए हैं। एक समय की बात है कि वह कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शान्ति निकेतन से सीधे आ रहे थे। आख, हृदय और वाणी तीनो शान्ति निकेतन के दृश्यो से भरे हुए थे। उमग में आकर श्री एण्ड्रयूज महोदय ने बडा लम्बा चौडा वृत्तान्त सुनाया कि वहा ललित कलाओ का कसा विस्तार है, वहा का वायुमण्डल कैसा सगीत-मय और काव्यमय है। यह सब सुनाने के बाद एण्ड्रयूज महोदय ने कहा—"महात्मा जी! आपके इस आश्रम मे काव्य का अभाव है।" महात्मा जी ने तु न्त उत्तर दिया

"Mr andrews, there they sing poetry, but here we live poetry '—अर्थात् वहा तो काव्य कण्ठ में निवास करता है परन्तु यहा वह जीवनो में निवास करता है।

यह घटना अगले दिन प्रात हमारे अग्रेजी के उपाध्याय सेवाराम जी फरवानी ने सुनाई थी। कदाचित शब्दो को याद रखने मे मैंने कुछ भूल की हो, पर भाव यही था और उसने मेरे जीवन पर गहरा असर किया था।

दीपावली का दिन था। ऋषि के प्रम मे आखे छलकी हुई थी। वह विशाल मूर्ति, वह भव्य आकृति आज भी आखो के सामने खडी है। राम-भक्तो की एक पौराणिक गाथा—जो कि भक्त सप्रदाय मे प्रचलित है—सुनाने लगे। कथा यो थी—"एक समय महाराज रामचन्द्र ने अपने राज्याभिषेक के उपलक्ष्य में दरबार किया। सब को पारितोषिक वितरण होने लगा। आनन्द-विह्वल होकर महारानी सीता ने अपने कण्ठ का मोतियो का अमूल्य हार उतार कर हनुमान के गले मे पहिना दिया। हनुमान् एक-एक मोती तोडता, उसे दो टुकडे कर ध्यान से देखता मानो उसमें कुछ खोज रहा हो और फिर उसे फेक देता। माता सीता ने हस कर कहा—आखिर तुम ठहरे बन्दर ही। इसमें क्या देखते हो? हनुमान् ने कहा—माता! हार अमूल्य है, परन्तु मैं तो मोतियों मे देखता हू कि इन मे कहीं राम नाम भी है कि नहीं, मुझे इन में राम नाम नहीं मिला। इसलिये मैंने फेंक दिये। माता ने मीठा उलाहना देकर कहा—'क्या तुम्हारे शरीर पर राम नाम लिखा है। हनुमान् ने चमडी उतार कर दिखा दिया कि उसके सारे शरीर पर राम नाम लिखा है।'

गुरुदेव बोले—यह घटना किसी सच्ची घटना का वर्णन नहीं करती। मैंने तो केवल यह इसलिये सुनाई है कि तुम्हें इसमें जो उपदेश मिलता है, वह सुना सकू। 'पुत्रो! यह तुम्हारा आश्रम आदर्श ब्रह्मचारी दयानन्द का ब्रह्मचर्याश्रम है। तुम्हें भी दयानन्द के लिए हनुमान् की वृत्ति धारण करनी चाहिए। तुम्हें कोई अमूल्य से अमूल्य प्रलोभन भी दे तो उसे तोड कर देख लो कि उसमें ब्रह्मचारी दयानन्द लिखा है कि नहीं? जिस मे वह न मिले, वह कितना ही मूल्यवान् क्यो न हो, तोड कर फक दो।" वह कथा वह छलकी हुई आंखे, वह स्निग्ध गम्भीर मेघ की सी आवाज, उस आवाज का कथा सुनाते-सुनाते गुरु-भक्ति के आवेश में लडखडाना और वह दिव्य प्रशान्त गम्भीर आकृति आज भी आखो के सामने खडी है और मेरी वो आखे छलक रही हैं, इसलिए यही बस। ○

शहीद श्रद्धानन्द

—मोहनदास कर्मचन्द गांधी

जिसकी उम्मीद थी वह हो गुजरा। कोई ६ महीने हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी सत्याग्रहाश्रम मे आकर दो-एक दिन ठहरे थे। बातचीत में उन्होंने मुझ से कहा था कि उनके पास जब तब ऐसे पत्र आया करते थे जिनमे उन्हें मार डालने की धमकी दी जाती थी। किस सुधारक के सिर पर बोली नही बोली गयी है? इसलिए उनके ऐसे पत्र पाने में अचम्भे की कोई बात नही थी। उनका मारा जाना कोई अनोखी बात नही है।

स्वामी जी सुधारक थे। वह कर्मवीर थे। जिसमें उनका विश्वास था, उसका वह पालन करते थे। उन विश्वासों के लिए उन्हें कष्ट झेलने पड़े। वह वीरता के अवतार थे। भय के सामने उन्होंने कभी सिर नहीं झुकाया। वह योद्धा थे और योद्धा रोगशय्या पर मरना नहीं चाहता। वह तो युद्धभूमि का मरण चाहता है।

कोई एक महीना हुआ कि स्वामी श्रद्धानन्द जी बहुत बीमार पड़े। डाक्टर अन्सारी उनकी चिकित्सा करते थे। जितने अनुराग से उनसे सम्भव था, डाक्टर अन्सारी उनकी सेवा करते थे। इस महीने के शुरू में पूछने पर उनके पुत्र प्रो० इन्द्र ने तार दिया था कि स्वामी जी अब अच्छे हैं और मेरा प्रेम और दुआ मागते हैं। मैं उनके बिना मांगे ही उन पर प्रेम और उनके लिए भगवान् से प्रार्थना करता ही रहता हू।

भगवान् को उन्हें शहीदो की मौत देनी थी। इसलिए जब अभी वे बीमार ही थे तभी हत्यारे के हाथ मारे गए, जो इस्लाम पर धार्मिक चर्चा के नाम पर उनसे मिलना चाहता था, जो स्वामी जी की प्रेरणा से आने दिया गया। जिसने प्यास मिटाने को पानी मागने के बहाने स्वामी जी के ईमानदार नौकर धर्मसिंह को पानी लेने को बाहर हटा दिया, और जिसने नौकर की गैरहाजिरी में बिस्तर पर पड़े हुए रोगी की छाती में दो प्राण-घातक चोटें कीं। स्वामी जी के अन्तिम शब्दों की हमें खबर नही। मगर अगर मैं उन्हें कुछ भी पहचानता था तो मुझे बिलकुल सन्देह नही है कि उन्होंने अपने परमात्मा से उसके लिए क्षमायाचना की होगी जो यह नही जानता था कि वह पाप कर रहा है। इसलिए गीता की भाषा मे वह योद्धा धन्य है जिसे ऐसी मृत्यु प्राप्त होती है।

मृत्यु तो हमेशा ही धन्य होती है मगर उस योद्धा के लिए तो और भी अधिक जो अपने धर्म के लिए यानी सत्य के लिए मरता है। मृत्यु कोई शैतान नही है। वह तो सब से बड़ी मित्र है। वह हमें कष्टों से मुक्ति देती है। हमारी इच्छा के विरुद्ध भी हमें छुटकारा दे देती है। हमें बराबर हो नई उम्मीदें नये रूप देती है। वह नींद के समान मीठी है किन्तु तो भी किसी मित्र के मरने पर शोक करने की चाल है। अगर कोई शहीद मरता है तो यह रिवाज नहीं रहता। अतएव इस मृत्यु पर मैं शोक नहीं कर सकता। स्वामी जी और उनके सम्बन्धी ईर्ष्या के पात्र हैं, क्योंकि श्रद्धानन्द जी मर जाने के बाद भी अभी जीते हैं। उससे भी अधिक सच्चे रूप में जीते हैं। जब वे हमारे बीच अपने विशाल शरीर को लेकर घूमा करते थे। ऐसी महिमामय मृत्यु पर जिस कुल में उनका जन्म हुआ था, जिस जाति के वे थे, वह सभी धन्यता के पात्र हैं। वे वीर पुरुष थे उन्होंने वीरगति पाई।

मगर इस दृश्य का एक दूसरा पट भी है। मैं अपने को मुसलमानो का मित्र समझता हू। वे मेरे

सहोदर भाई है। उनकी भूलें मेरी भूल हैं। उनके सुख से मैं सुखी और दुःख से दुःखी होता हूं। किसी मुसलमान के पाप से मुझे उतना ही दुःख होता है जितना कि उसे कोई हिन्दू करता। एक मुसलमान ने यह घोर कृत्य किया है। मुसलमानों के मित्र की हैसियत से मुझे इसका बहुत बडा खेद है। मृत्यु की खुशी इसलिए कम हो जाती है कि उसका कारण बना था एक भूला हुआ भाई। इसलिए धर्मबलि की चाहना नहीं की जा सकती। वह तो आनन्द की वस्तु तभी बनती है जब बिना बुलाए आती है। हम अपने छोटे से छोटे भाई की भूल पर हस नही। मगर बात तो यह है कि जब तक कोई भूल भयकर रूप धारण कर नहीं लेती उसे भूल माना ही नहीं जाता। जब तक उसकी यथष्ठ निन्दा नहीं हो लेती तब तक वह दूर नहीं होती।

इस काण्ड का बहुत बडा राष्ट्रीय महत्त्व है। जाति के जीवन को नष्ट करने वाले दोष की ओर यह हमारा ध्यान खींचता है। हिन्दू और मुसलमान दोनो को ही अपना कर्तव्य चुन लेना चाहिए। यह दोनो की ही जाच का मौका है। क्रोध दिखला कर हिन्दू अपने धर्म का अपमान करेंगे और उस एकता को रोक देंगे जो एक दिन जरूर ही आयेगी। आत्मसयम के द्वारा वे अपने आपको अपनी उपनिषदों और क्षमा मूर्ति युधिष्ठिर के योग्य सिद्ध कर सकते है। एक व्यक्ति के पाप को हम सारी जाति का पाप न मान बैठे। बदला लेने के भाव हम न लावें। इसे हम एक हिन्दू के प्रति एक मुसलमान का पाप मानने के बदले एक वीर पुरुष के प्रति दूसरे भूले भटके भाई की भूल मानें।

मुसलमानो को अग्नि-परीक्षा में से होकर निकलना पडेगा। इस में कोई शक नहीं कि छुरी और पिस्तौल चलाने में उनके हाथ जरूरत से अधिक साफ हैं। तलवार कुछ इसलाम का धर्म चिह्न नहीं है मगर इसलाम की पैदाइश हुई ऐसी स्थिति में जहां तलवार की ही तूती थी और अब भी है। यीशु के सन्देश का भी कुछ असर नहीं पडा क्योंकि उसे ग्रहण करने लायक योग्य परिस्थिति ही उपस्थित नहीं (पैगम्बर के उपदेशों के साथ भी तलवार बहुत निकला करती हैं। इसलाम को अगर इसलाम यानी शान्ति बनना है तो उसे अपनी तलवार म्यान में ही रखनी होगी। इसका खतरा है कि मुसलमानों के मन्त्री इस कृत्य का समर्थन ही कर। उनके लिए और संसार के लिए यह दुर्भाग्य की बात होगी क्योंकि हमारा मसला सारे संसार का मसला है। अगर खुदा पर भरोसा करना है तो तलवार का भरोसा छोडना होगा। उनको और से स्पष्ट शब्दों में सब ओर से निन्दा के प्रस्ताव होने चाहिए।

मैं अब्दुल रशीद की ओर से भी कुछ कहना चाहता हूं। मैं उसे जानता नहीं। मुझे इससे मतलब नहीं कि उसने क्यों मारा? दोष हमारा है। अखबार वाले चलते फिरते रोगाणु बन गए हैं। वे झूठ और शिकायत की तिजारत करते हैं। अपनी भाषा की गालियों के शब्द भण्डार को वे खाली कर देते और पाठकों के सशयरहित और प्राय ग्रहणशील मनों में अपने विकार घुला देते हैं। अपने भाषाधिकार के मद से मत्त नेताओं ने अपने कलम और जबान पर लगाम लगाना सीखा हो नहीं है। गुप्त और छल कपटपूर्ण प्रचार को अपना काम और भयकर काम करने में रोक का सामना नहीं करना पडा। इसलिए हम शिक्षित और अशिक्षित लोग ही अब्दुल रशीद की मनोवृत्ति के लिए दोषी हैं। इसका निश्चय करना कि दो विरोधी दलों में कितना दोष है, बेकार है। यमराज की तुला से दोषों का न्याय-अन्याय का ठीक ठीक बटवारा कौन कर सकता है? आत्मरक्षा के लिए झूठ बोलना या बढा चढ़ा कर कहना जरूरी नहीं है। ऐसी आशा रखना बहुत बडी बात है किन्तु स्वामी जी इतने बडे थे कि जिनसे यह आशा होती है कि उनका खून हमारा पाप धो देगा, हमारे दिलों के मल को साफ कर, मनुष्य जाति के दो बडे विभागों को एक कर देगा। स्वामी जी के जीवन का मुझे जो ज्ञान है उसके विषय में अगले अक में विचार करना पडेगा। (य० इ०) □

श्रद्धानन्द

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

तारक गण के चन्द थे, शुद्ध विचार बुलन्द थे।
स्वामी दयानन्द के सच्चे शिष्य श्रद्धानन्द थे ।।

दयानन्द का भाषण सुनकर, दुर्व्यसनों को छोड़ दिया।
मिथ्यामत पन्थादि तज, सत पथ ग्रहण किया ।।
वेद के ईश्वरीय ज्ञान के, जन जन के कल्याण के।
खोल दिये दरवाजे सारे जो सदियों से बन्द थे ।।
स्वामी दयानन्द के सच्चे शिष्य श्रद्धानन्द थे ।।१।।

छुआछूत जाति पाँति के विरुद्ध खूब प्रचार किया।
शुद्धि चक्र चलाया जग में, दलितों का उद्धार किया ।।
दुखी दीन जन रोते थे रोज विधर्मी होते थे।
नव क्रान्ति के अग्रदूत, सुख कन्द श्रद्धानन्द थे ।।
स्वामी दयानन्द के सच्चे शिष्य श्रद्धानन्द थे ।।२।।

वेद धर्म अनुरागी त्यागी देव विशुद्ध विचारक थे।
जीवन अर्पण किया देश हित सत्य ज्ञान प्रचारक थे ।।
जहाँ कोई पथ-भ्रष्ट हुआ तभी देखकर कष्ट हुआ।
ऋषि मुनियों के लाल विधर्मी बनते नहीं पसन्द थे ।।
स्वामी दयानन्द के सच्चे शिष्य श्रद्धानन्द थे ।।३।।

दिल्ली में ब्रिटिश सेना ने जिस दिन हल्ला बोला था।
नंगी संगीनों के आगे उसने सीना अपना खोला था ।।
निडर सिंह सम अड़े रहे सीना खोल वे खड़ रहे।
देश स्वतन्त्र बने अपना, उर में लिये उत्साह अमन्द थे ।।
स्वामी दयानन्द के सच्चे शिष्य श्रद्धानन्द थे ।।४।।

कुछ दुष्टों ने चुपके चुपके हत्यारा एक तैयार किया।
लेकर के पिस्तौल अचानक स्वामी जी पर वार किया ।।
वह तेईस दिसम्बर था, आया समय भयंकर था।
विदा हो गये जग से जपते ओम् सच्चिदानन्द थे ।।
स्वामी दयानन्द के सच्चे शिष्य श्रद्धानन्द थे ।।५।।

वे सिर उसका धड़ से क्या जुदा करेंगे?

—प्रो० राजेन्द्र "जिज्ञासु", वेद सदन, अबोहर-१५२११६

बात बहुत पुरानी हो गई परन्तु अब भी ऐसे लगता है कि जैसे कल की घटना हो। हम हिसार एम० ए० प्रथम वर्ष में पढ़ते थे। आर्यसमाज के किसी कार्य से देहली गये। लौटते हुए बस में अगली सीटों पर एक वृद्ध पर दृष्टि पड़ी। उस वृद्ध के पास स्थान रिक्त देखकर लेखक भी नमस्ते करके उनके साथ जा बैठा। उन वृद्ध महानुभाव से जान पहचान थी। वे थे स्वाधीनता सेनानी देशभक्त गोरक्षक ला० हरदेव सहाय जी। देश व समाज सम्बन्धी बातें चल पड़ीं तो श्री ला० हरदेव सहाय जी ने बड़ी टीस से कहा कि आज हिन्दू समाज में स्वामी श्रद्धानन्द जैसा एक भी निर्भीक, परमार्थी व सर्वत्यागी नेता नहीं। आर्यसमाज मे उनके बाद स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी में बलिदान देने का साहस व उत्तम भाव था। अब कोई दूसरा व्यक्ति मुझे वैसा दिखाई नहीं देता।

ला० जी ने बताया कि जब वे पूज्य स्वामी जी के साथ मियाँवाली जेल मे थे तो एक दिन स्वामी जी महाराज ने मुझे अपनी कुटिया में बुलवा भेजा। महाराज का आदेश पाकर मैं (हरदेव सहाय) सहर्ष उनके चरणों में जा उपस्थित हुआ। श्री स्वामी जी ने बड़ी गम्भीर मुद्रा में मुझे कहा कि यह कितनी लज्जा की बात है कि हिसार जिला में हिन्दी भाषियों का प्रबल बहुमत होते पर भी हिन्दी पढ़ने पढ़ाने की कोई व्यवस्था नहीं। सरकारी स्कूलों में उर्दू का एकछत्र राज्य है। आप लोग क्या राष्ट्रभाषा के प्रचार के लिए कोई व्यवस्था नहीं कर सकते?

ला० हरदेव सहाय जी ने हमें बताया कि श्री स्वामी जी ने कुछ इस ढंग से अपनी बात कही कि मैंने वहीं कारागार में निश्चय कर लिया कि बाहर जाकर यह कार्य हाथ में लेना है। स्वामी जी को वचन दिया कि अब इस कार्य में जुट जाऊंगा। जेल से मुक्त होकर हिसार जाकर ला० जी ने अपने साथियों को साथ लेकर एक संस्था (सम्भवतः विद्या प्रचारिणी सभा नाम था) बनाई। इस संस्था ने हिसार जिला में हिन्दी माध्यम के कई स्कूल स्थापित किए। लाला जी के जन्म स्थान सातरोड का राजकीय विद्यालय पहले इसी संस्था द्वारा संचालित था।

उन्हीं दिनों की बात है कि आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् व लेखक श्री प्रो० जयदेव जी सातरोड गये। वहां इसी स्कूल के अध्यापक ने हमें बताया कि जब लाला हरदेव सहाय जी ने महान् श्रद्धानन्द की सत् प्रेरणा से राष्ट्र भाषा व विद्या प्रचार का कार्य हाथ में लिया तो मैं उन्हीं दिनों इस संस्था की सेवा में आ गया। उन दिनों हिन्दी माध्यम से पढ़ाने वाले शिक्षक भी थोड़े ही थे। उसी अध्यापक ने बताया कि उन दिनों सौभाग्य से श्री हरदयाल चोपड़ा Divisional Inspector of schools बनकर हिसार क्षेत्र में आ गए।

आज के आर्यसमाजी वीर हरदयाल को सर्वथा भुला चुके हैं। श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज व पं० शान्तिप्रकाश जी जैसे पुराने आर्यों से उनकी समाज सेवा की गाथाएँ सुनिए। इस आर्यवीर ने

राजकीय सेवा में रहते हुए विद्या प्रसार व हिन्दी प्रचार का जो कार्य किया उसे शब्दों मे वर्णन नहीं किया जा सकता। यहाँ उनकी सेवाओं की चर्चा प्रसगैतर समझी जावेगी परन्तु, इतना बता दें कि इस आर्यवीर के आगमन से ला० हरदयाल जी के आन्दोलन को बड़ा बल मिला। हिन्दी प्रचार का आन्दोलन विराट् रूप धारण कर गया। लोगो की व सरकार की समझ मे यह नही आ रहा था कि यह आन्दोलन एकदम जोर कैसे पकड़ गया। किसी को भी यह पता न था कि इस आन्दोलन का बीज वीर सन्यासी ने कारागार मे वपन किया था। एक बात फिर कह दे कि श्री हरदयाल के नाम व काम से पुराने आर्य पत्रो की फाईलें भरी पडी हैं। वह पजाब आर्यवीर दल के भी अधिकारी रहे। ऐसा मुझे कुछ कुछ ध्यान आता है। उपरोक्त घटना से पता चलता है कि श्री स्वामी जी महाराज का कितना गहरा व ठोस चिन्तन था। उनके गतिमान् व्यक्तित्व में कितना प्रभाव था कि उनके मुख से निकले शब्द को मूर्त रूप देने वाले नवयुवक सिर धड की बाजी लगाके आगे निकल आते थे।

केरल मे एक ९७ वर्षीय साधु स्वामी गोविन्द प्रसाद अभी जीवित हैं। इन्हें स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गायत्री की दीक्षा दी। इनका जन्म एक दलित परिवार में हुआ। स्वामी जी महाराज ने जिन लोगो को वायकम सत्याग्रह मे अपने साथ लिया उनमें यह भी एक थे। आज तो दलितो के मन्दिर प्रवेश की बात उठाई जात है तो उसका प्रयोजन इतना भेद भाव मिटाना व आर्य, जाति को एक करना नहीं होता, जितना कि राजनतिक स्टण्ट व व्यक्तिगत प्रचार होना है। 'हरिजन' हरिजन कहकर जन्म की जाति पाति को ये बोगस धर्म-गुरु बढ़ावा देते हैं। स्वामी गोविन्दप्रसाद आज भी जब व यकम सत्याग्रह के सस्मरण सुनाते हुए श्री महाराज की सूझ बूझ की प्रशसा करते हैं तो बताते हैं कि स्वामी जी ने सब को गायत्री मन्त्र कण्ठ करवाया। यह सत्याग्रह भी तो जाति भेद के विरुद्ध था। जब भीमकाय संन्यासी रणबांकुरा श्रद्धानन्द सिर हथेली पर धर कर आगे आगे निकला तो पीछे पीछे केरलीय सत्याग्रही थे। सब पवित्र गायत्री पाठ कर रहे थे।

पहले शोर मचता था कि आज अमुक नायर सत्याग्रह करेगा, अमुक इडवा सत्याग्रह करेगा, अमुक दलित भाई सत्याग्रह में होगा। आज जिस से पूछो तुम कौन हो, सब का एक ही उत्तर है 'हम आर्य हैं,' हम वैदिक धर्मी हैं, "हम ऋषिवर दयानन्द के सैनिक है।' यह श्रद्धानन्द का एक अद्भुत चमत्कार था। क्षण भर मे जाति भेद ध्वस्त हो गया। केरल के नारायण गुरु स्वामी व महात्मा गांधी तो श्री महाराज के केवल पहुचते ही समझ चुके थे कि अब कृत्रिम भेद नष्ट हो के रहेंगे। जब यह सत्याग्रही मन्दिर के पास पहुचे तो किसी की हिम्मत न पडी कि तेजस्वी श्रद्धानन्द पर हाथ उठाता। सत्याग्रही भी उस दिन पिटाई से बच गए। जब पुलिस ने इन्हे पकडकर बिठाया तो किसी ने गोविन्द प्रसाद को पहचान लिया कि यह तो दलित कुल में जन्मा युवक है। सब चकित थे कि यह युवक श्रद्धानन्द का प्यारा कैसे बन गया। इसे इतना सम्मान कैसे मिल गया।

श्रद्धानन्द महाराज की गौरव गाथा कहां से सुनाएँ व कहाँ से छोडे। जब लाला लाजपतराय को देश से निष्कासित करके माण्डले भेजा गया तो वहां श्रीयुत गोखले की सस्था के एक मराठे बधु ने सरकार के कोप की चिन्ता न करते हुए भी लाला जी के चरण छुए। इधर विडम्बना यह थी कि लाला जी के साथी डी० ए० वी० कालेज कमेटी के सब राय बहादुर लोग लाला जी को Disown (त्याग) कर गये। रायबहादुर मूलराज (जिसे स्वामी दर्शनानन्द आदि सब नेताओ ने आर्यसमाज में फूट का उत्तरदायी ठहराया है) ने तो यहां तक कहा था कि प्रत्येक उस व्यक्ति को आर्यसमाज से निकाल दिया जावे जिसका राजनीति से सम्बन्ध है। ईश्वर का धन्यवाद कि आर्य जनता ने यह

कायरतापूर्ण 'उपदेश' न सुना। 'राजनीति से सम्बन्धित' व्यक्ति से रायबहादुर का अभिप्राय अंग्रेजी शासन की आख मे चुभने वाला व्यक्ति था।

तब सुधीर श्रद्धानन्द ने अपनी हुकार से आर्यसमाज मे नया जोश भर दिया। प्रसिद्ध साहित्यकार स्वर्गीय श्री सन्तराम बी ए व कहानीकार सुदर्शन जी दोनो लाहौर की उस सभा मैं श्रोता बन कर सम्मिलित हुए। जिसमैं महात्मा मुन्शीराम ने डटकर लाला लाजपतराय को निर्दोष घोषित करते हुए ललकार कर कहा कि 'लाला लाजपतराय हमारा आर्य भाई है।" विरोधी भी दग थे कि यह क्या दृश्य देख रहे हैं कि कालिज पक्ष तो अपने नेता को बेगाना घोषित कर रहा है और महात्मा मुन्शीराम छाती ठोककर उसे अपना भाई व नेता घोषित कर रहा है। सन्तराम जी ने लिखा है कि तब लगता था कि आज तो मुन्शीराम को हथकडिया लगगी। न जाने और कौन-कौन पकडा जायेगा परन्तु सहस्रो के जन समूह मे जब नरनाहर मुन्शीराम ने सहस्रबाहु परमेश्वर का नाम ले ले कर उस अशरण शरण सर्वव्यापक प्रभु के आश्रित होकर आर्यों को निर्भीक होकर अपने कर्त्तव्यों के पालन की प्रेरणा दी तो आतक के स्थान पर आत्मविश्वास का वातावरण पैदा हो गया। यह भी स्मरण रहे कि कालेज पक्ष मैं जो साधारण आर्यसमाजी थे, वे भी तब रायबहादुरो की कायरता से लज्जित व दुखी थे। यदि तब स्वामी श्रद्धानन्द व उनके सहयोगी यथा धर्मवीर वजीरचन्द जी लाला लाजपतराय के Defence (पक्ष) मे छाती तानकर आगे न आते तो आर्यसमाज के इतिहास मे 'कायरतापूर्ण कुकृत्यो' का इतिहास जुड जाता।

जब कभी कही किसी गोरे ने किसी भारतीय को अकारण पीटा व जान से मारा तो महात्मा मुन्शीराम झट निरपराधी की हत्या की निन्दा करते हुए अग्रेजो के न्याय व प्रशासन को निर्भीक होकर रगडते थे। ऐसे बीसियो सम्पादकीय 'सद्धर्म प्रचारक' में मिलते हैं। मानवता और शूरता की शान श्रद्धानन्द की सदा ऋणी रहेगी।

महान श्रद्धानन्द के विरोधी प० गोपीनाथ कश्मीरी ने उनके बलिदान पर श्रद्धांजलि देते हुए लिखा था कि एक बार शास्त्राथ मे एक पुस्तक का प्रमाण देखने के लिए गोपीनाथ ने मुन्शीराम जो से पुस्तक मांगी। मुन्शीराम जी ने बडी उदारता से सहज रीति से वह पुस्तक प्रतिपक्षी को दे दी, जब कि ऐसे अवसर पर लोग कम ही ऐसी उदारता दिखाते हैं परन्तु मुन्शीराम तो सत्य का बोलबाला करने के लिए शास्त्रार्थ करते थे। उनके सामने हार जीत का प्रश्न न था। गोपीनाथ ने यह भी लिखा है कि जब गोपीनाथ ने उन पर ऐतिहासिक अभियोग चलाया तो एक ओर तो गोपीनाथ अकेला था, दूसरी ओर आर्यसमाज के सारे वकील नि शुल्क केस लडने को महात्मा जी के पीछे दीवार बन कर खड हो गये। आर्यसमाज के सभी युवक (कालेज पक्ष मे भी सब सिद्धान्तवादी मुन्शीराम के पीछे थे।) महात्मा मुन्शीराम के पूरे साथ थे। गोपीनाथ का भाव यह है कि आयवीरो मे तब भले ही दो दल थे, परन्तु दिल तो एक था।

सिर पर कफन बाध मुन्शीराम जब सग्राम मैं कूदता था तो धरती पुकार-पुकार कर कहती थी—

हथेली पे सिर जो लिये फिर रहा हो।
वे सिर उसका धड से जुदा क्या करगे॥

आइए ! उच्च स्वर से कहैं—

बोल दिल्ली की धरा जयकार तू।
शूरता की शान श्रद्धानन्द का॥

क्या घातक की गोलियों से हमारा स्वामी मर गया ? नहीं ! नहीं ! नहीं !

मर के स्वामी हमारे अमर हो गये।
मौत रो रो के हाथो को मलती रही॥

आइए ! इस जीवन दायिनी मृत्यु की प्राप्ति के लिए हम भी एसे सत्कर्म कर।

मौत ऐसी हो नसीबो मैं तो क्या जीने मे है।

महाऋषि जो राम तो, हनुमान् श्रद्धानन्द थे

श्रद्धा और आनन्द की इक खान श्रद्धानन्द थे।
धर्म पे जो हो गये बलिदान श्रद्धानन्द थे॥

बिन्दुओं से रक्त के सींची थी वैदिक वाटिका
महाऋषि जो राम तो हनुमान् श्रद्धानन्द थे।

था किया गुरुकुल स्थापित गंगा भूमि पार में
नारी शिक्षा के समर्थक, कर्म योगानन्द थे।

चांदनी के चौक दिल्ली घण्टाघर है साक्षी
तान कर छाती खड़े बलवान् श्रद्धानन्द थे।

जामा मस्जिद में गुंजाया नाद वैदिक मन्त्रों का
हिन्दू मुस्लिम एकता के प्राण श्रद्धानन्द थे।

मनके जो बिखरे थे माला में पिरोया फिर उन्हें
शुद्धि है जीवन तो इसमें जान श्रद्धानन्द थे।

कर दिया तन मन धन जीवन त्याग वैदिक मार्ग पर
सत्य वैदिक धर्म पर कुर्बान श्रद्धानन्द थे।

आज है बलिदान पर्व अमर बलिदानी को
राष्ट्र के गौरव व आर्य महान् श्रद्धानन्द थे।

(पृष्ठ १८ का शेष)

स्वामी जी के जीवन का एक पृष्ठ

कर पड़ा और जब कभी उन्हें कोई शंका होती, स्वामी जी बड़े हर्ष से उसका समाधान कर देते। कभी राजनीति पर बात चल पड़ती, कभी दर्शन पर और कभी फारसी साहित्य पर। स्वामी जी फारसी साहित्य के बड़े अच्छे मर्मज्ञ थे। मौलाना रूम की मसनवी से उन्हें बहुत प्रेम था।

मि० आसफअली का स्वास्थ्य उन दिनों कुछ अच्छा न था। शरीर में रक्त की कमी थी। चेहरा पीला पड़ गया था। स्वामी जी को उनकी दशा देख कर चिन्ता हुई। वाह! कितना सच्चा वात्सल्य भाव था। खुद जेल में थे, सभी प्रकार के कष्ट सह रहे थे, पर मौलाना आसफ अली की यह दशा देख कर आपने उन के लिए एक दूसरी कोठरी चुन दी जिस में धूप और प्रकाश स्वच्छन्द रूप से मिल सकता था। उनके आहार के सम्बन्ध में भी जेलर से सिफारिश कर दी जो स्वामी जी का बहुत लिहाज करता था। यह सद्व्यवहार था, यह सज्जनता थी, जो परिचितों को भी उनका भक्त बना देता था। हम आज उस उपदेश को भूले जा रहे हैं जिसका समीप उदाहरण श्रद्धानन्द का जीवन था।

(सन् १९२५ के 'अलकार' से साभार)

स्वामी श्रद्धानन्द वचनामृत

- आर्यो! सेवक बनने का प्रयत्न करो, क्योंकि लीडरों की अपेक्षा आर्यजाति को सेवकों की बहुत अधिक आवश्यकता है। जब कभी आप का पैर डगमगाने लगे तो राम के सेवक हनुमान् का स्मरण कर लिया करो। —श्रद्धानन्द

- यदि अग्नि और खड्ग की धार पर चलने वाले दस पागल आर्य भी निकल आयें तो राजा और प्रजा दोनों को होश में ला सकते हैं। भगवान्! आर्यसमाजियों की आंख न जाने कब खुलेगी? —श्रद्धानन्द

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवन झांकी

(कालक्रमानुसार)

सन् १८५६-फरवरी (फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी संवत् १९१३) को तलवन ग्राम (जालन्धर) में श्री नानकचन्द जी क्षत्रिय के घर जन्म। पंडित द्वारा दिया गया जन्म का नाम वृहस्पति तथा प्रचलित नाम मुन्शीराम।

सन् १८५९—बरेली में प्रारम्भिक शिक्षा प्रारम्भ।

सन् १८६६—काशी में (संवत् १९२३ के प्रारम्भ में) यज्ञोपवीत संस्कार संपन्न।

सन् १८७३—दिसम्बर (पौष संवत् १९३०) में क्वींस कालिज बनारस में उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश।

सन् १८७५—दिसम्बर (पौष संवत् १९३२) को बनारस में अंधविश्वास के जीवन की समाप्ति।

सन् १८७७—जालन्धर के प्रसिद्ध साहूकार और तहसीलदार श्री राय शालिग्राम की पुत्री शिवदेवी जी से विवाह।

सन् १८७९—अगस्त (१४ श्रावण संवत् १९३६) को बरेली के टाउन हाल में महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रथम दर्शन।

सन् १८८०—दिसम्बर (पौष) में कानून की कक्षाओं में प्रवेश।

सन् १८८१—पुत्री वेदकुमारी का जन्म

सन् १८८४—माघ संवत् १९४१ रविवार के दिन 'सत्यार्थप्रकाश' से प्रभावित होकर आर्य-समाज का सभासद् बनने का निर्णय।

सन् १८८६—१ मार्च में जालन्धर में सनातन-धर्मी पण्डित श्यामदास के साथ शास्त्रार्थ।

२ २६ जून (१२ आषाढ संवत् १९४३) को तलवन ग्राम में पिता श्री नानकचन्द जी का स्वर्गवास।

३ आर्यसमाज के सक्रिय सदस्य तथा जालन्धर की आर्यसमाज के प्रधान निर्वाचित।

सन् १८८७—(१) जून-जुलाई में पण्डित दीन-दयालु जी से मुठभेड।

(२) अगस्त में बम्बई की प्रथम यात्रा (सपत्नीक)।

(३) २७ नवम्बर रविवार को प्रात १० बजे प्रथम पुत्र हरिश्चन्द्र का जन्म।

सन् १८८८—(१) फरवरी में वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् १८ फरवरी को जालन्धर आकर वकालत प्रारम्भ।

(२) मई में नेशनल पोलिटिकल कांग्रेस के साथ सम्बन्ध स्थापित।

सन् १८८९—(१) १९ फरवरी को 'सद्धर्म-प्रचारक' (उर्दू) का प्रकाशन प्रारम्भ।

(२) ९ नवम्बर को द्वितीय पुत्र इन्द्र का जन्म।

सन् १८९०—जालन्धर में लाला देवराज जी के साथ मिलकर कन्या विद्यालय की स्थापना।

सन १८९१ (१) जनवरी में मियां शिवसिंह की ओर से मुकदमे की पैरवी के लिए मुकेरियां-यात्रा।

(२) ३१ अगस्त (१५ भाद्रपद संवत् १९४८) को पत्नी का स्वर्गवास।

सन् १८९२—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान निर्वाचित।

सन् १८६८—(१) अगस्त में गुरुकुल खोलने तथा उसके लिए ३० हजार रुपया एकत्र करने का सकल्प।

(२) अक्तूबर से 'आर्य मुसाफिर' नाम से उर्दू पत्र का सचालन एव सपादन।

(३) २६ से ३० नवम्बर तक बच्छोवाली आर्यसमाज मे श्री गोपीनाथ के साथ 'वेद किन ग्रन्थो का नाम है' विषय पर शास्त्रार्थ।

सन् १६०० —८ अप्रल को गुरुकुल स्थापना के लिए ३० हजार रुपये एकत्र करने की भीष्म प्रतिज्ञा ४० हजार रुपये एकत्र करके पूर्ण की।

सन् १६०१—नवम्बर मे पुत्री अमृतकला का डा० सुखदेव जी के साथ जातिबधन तोड कर विवाह कराया।

सन् १६०२- (१) २ मार्च को कागडी ग्राम में गुरुकुल कागडी की स्थापना।

(२) १६ दिसम्बर को प्रेस और 'सद्धर्म प्रचारक' हरिद्वार ले आया गया।

सन् १६०३—१० से १३ मार्च तक गुरुकुल का प्रथम वार्षिकोत्सव सम्पन्न।

सन् १६०७—१ मार्च को 'सद्धर्म प्रचारक' को हिन्दी में निकालना शुरू किया।

सन् १६०६ (१) १३ फरवरी को मुलतान में गुरुकुल की स्थापना।

(२) अप्रैल में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रथम प्रधान निर्वाचित।

सन् १६११—फरवरी मे श्री सी एफ ऐण्ड्रूज से प्रथम परिचय।

सन् १६१२—अप्रैल (१ वैशाख सवत् १६६६) मे गुरुकुल कुरुक्षेत्र की स्थापना।

सन् १६१३—(१) २२ २३ आश्विन सवत् १६७० को दिल्ली में अखिल भारतवर्षीय आर्य-कुमार सम्मेलन के चौथे अधिवेशन के सभापति।

(२) ६ दिसम्बर को भागलपुर में आयोजित हिन्दी साहित्य सम्मेलन के चौथे अधिवेशन का सभा-पतित्व।

(३) गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की स्थापना।

(४) लेफ्टिनैण्ट गवर्नर सर जेम्स मेस्टन से गुरुकुल-आगमन पर प्रथम भेट।

सन् १६१५ (१) ८ अप्रैल को गुरुकुल में महात्मा गाधी से प्रथम भेट तथा अभिनन्दन समारोह मे उन्हे 'मिस्टर गाधी' के बजाय 'महात्मा गाधी' कह कर सम्बोधित किया।

(२) रोहतक जिले में मटिण्डू गाव मे गुरुकुल की स्थापना।

सन् १६१ —२१ अक्तूबर को वायसराय लार्ड चेम्सफोर्ड का गुरुकुल में आगमन तथा महात्मा जी द्वारा स्वागत।

सन् १६१७—(१) ११ अप्रैल को गुरुकुल से विदाई।

(२) १२ अप्रैल को मायापुर वाटिका (कनखल) मे सन्यास-आश्रम मे प्रवेश तथा स्वामी श्रद्धानन्द नाम ग्रहण।

सन् १६१८—(१) धौलपुर (राजस्थान) में आर्यसमाज मन्दिर का कुछ भाग गिराने के विरोध मे सत्याग्रह।

(२) ३ मई को गढवाल के दुर्भिक्ष पीडितो के लिए सहायता-कार्य हेतु प्रस्थान।

सन् १६१६—(१) ७ मार्च को दिल्ली में सत्याग्रह की तैयारी के लिए आयोजित प्रथम सार्वजनिक सभा मे पहला राजनीतिक भाषण।

(२) ३० मार्च को रॉलेट एक्ट' के विरोध मे दिल्ली में निकले जलूस का नेतृत्व तथा घण्टाघर के सामने गोरो की सगीनो का सामना।

(३) ४ अप्रैल को जामा मस्जिद के मिम्बर से ऐतिहासिक भाषण।

(४) आश्विन बदी द्वादशी सवत् १६७६ को लुधियाना जिले में गुरुकुल रायकोट की स्थापना।

(५) २६ दिसम्बर को अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष के रूप मे भाषण।

(६) २ मई महात्मा गाधी से मतभेद के कारण सत्याग्रह-कमेटी से त्यागपत्र।

सन् १९२० (१) ११ फरवरी को दो वर्ष के लिए पुन गुरुकुल में पदार्पण।

(२) गुरुकुल से 'श्रद्धा' साप्ताहिक का प्रकाशन।

(३) २२ अक्टूबर को गुरुकुल के स्थिर कोष हेतु चन्दा एकत्र करने के लिए बर्मा की यात्रा।

नागपुर-कांग्रेस में अछूतोद्धार का कार्यक्रम प्रस्तुत।

सन् १९२१ (१) अप्रेल में पं० मोतीलाल नेहरू की सुपुत्री के विवाह में सम्मिलित होने के लिए इलाहाबाद-गमन।

(२) अक्टूबर में गुरुकुल से पुन प्रस्थान।

(३) ३ से ५ नवम्बर को दिल्ली में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में सम्मिलित।

(४) ७-८ नवम्बर को हिन्दुओं की एक कांफ्रेंस द्वारा असहयोग आन्दोलन के लिए सगठित उपसमिति के सभापति मनोनीत।

सन् १९२२—१० सितम्बर को गुरु का बाग सत्याग्रह में शामिल होने के लिये अमृतसर आगमन तथा २६ अक्टूबर को इसी कारण 'मियां वाली' जेल की यात्रा।

सन् ९२३—(१) कांग्रेस के कार्य से अलग।

(२) १३ फरवरी को आगरा में भारतीय हिन्दू शुद्धि-सभा की स्थापना।

(३) १३ अप्रेल को दिल्ली से प्रो० इन्द्र के सपादकत्व में दैनिक 'अर्जुन' का प्रकाशन।

(४) जुलाई में हिन्दु महासभा' में प्रवेश।

(५) १८ से २६ अगस्त तक काशी में हिन्दू महासभा के अधिवेशन में सम्मिलित तथा हिन्दू सगठन का कार्य प्रारम्भ।

(६) ८ नम्वबर को दिल्ली में कन्या गुरुकुल की स्थापना (इसी को बाद में देहरादून लाया गया)।

सन् १९२४—(१) महात्मा गांधी के व्यक्तिगत निमत्रण पर बेलगाव-कांग्रेस में दर्शक के रूप में सम्मिलित।

(२) १८ फरवरी को गुरुकुल सूपा की स्थापना।

(३) २५ अप्रेल को मद्रास की प्रथम धर्मयात्रा के लिए प्रस्थान।

(४) २-३ मई को पूना में व्याख्यान और महाराष्ट्र प्रान्तीय राष्ट्रीय शिक्षण परिषद का सभापतित्व।

(५) ६ मई को कालीकट वायकोम में दलित जातियों द्वारा अपने लिए मन्दिरों के आसपास की सार्वजनिक सडकों पर आवागमन की रोक के विरोध में किए जाने वाले सत्याग्रह में सहयोग।

(६) २० मई को मद्रास के गोखले हाल में व्याख्यान।

सन् १९२५ (१) मार्च में मथुरा में श्रीमद्दयानन्द जन्म शताब्दी का नेतृत्व।

(२) २४ जून को हिन्दू महासभा से त्याग पत्र।

(३) ८ जुलाई से १४ अगस्त तक आर्यसमाज के सगठन को सुदृढ करने के उद्देश्य से पंजाब का विस्तृत दौरा।

(४) ३० अक्टूबर से ३० नवम्बर तक दक्षिण भारत की दूसरी धर्मयात्रा।

(५) ३० अक्टूबर से १ नवम्बर तक नवसारी (गुजरात) में स्थानीय दयानन्द जन्म शताब्दी में सम्मिलित।

सन् १९२६ (१) मार्च के दूसरे सप्ताह में दिल्ली में आयोजित हिन्दू सभा कांफ्रेंस में सम्मिलित तथा विषय-नियामक समिति में प्रस्तुत महासभा के टिकट पर कौंसिलों के लिए उम्मीदवार खड़े करने विषयक प्रस्ताव का स्पष्ट विरोध किया।

(२) २५ मार्च को असगरी बेगम (शांतिदेवी) की बच्चों सहित शुद्धि।

(३) १ अप्रेल से साप्ताहिक 'लिबरेटर' (अंग्रेजी) का प्रकाशन प्रारम्भ।

(४) २३ दिसम्बर को सायंकाल ४ बजे दिल्ली में अब्दुलरशीद की गोलियों से बलिदान। ○

दयानन्द का दीवाना

लेखक—डा० रघुवीर वेदालंकार

वह दयानन्द का दीवाना था दयानन्द का परवाना इसलिए उसने लिखा था 'यदि अग्नि और खड्ग धार पर चलने वाले कुछ पागल आर्य भी निकल आए तो राजा और प्रजा दोनों की दशा में परिवर्तन ला सकते हैं? वह ऐसे ही पागल आर्यों में से था। पागल तथा दीवाना नाममात्र का ही भेद है बात एक ही है।

उसे श्रद्धानन्द कहूँ या श्रद्धावतार कहूं जिसने श्रद्धा से ओतप्रोत 'श्रद्धामयोऽयं पुरुषः' को हमारे सामने साकार कर दिया। उसने दयानन्द को गुरु बनाया। दयानन्द का अनुसरण किया दयानन्द ने लिखा था—"सत्य के ग्रहण करने तथा असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। मुन्शीराम ने उसका अक्षरशः पालन किया। जीवन भर वह सत्य को ग्रहण करता चला। जो-जो असत्य मिला, उसे छोड़ता चला। सत्य पर उसे इतनी ही दृढ निष्ठा थी जितनी कि उसके गुरु दयानन्द को। इसीलिए वह अपनी आत्मकथा में नहि सत्यात् परो धर्मः 'नास्ति सत्यसमं तपः' को उद्धृत करता है। सत्य को उसने परम धर्म तथा परम तप समझ लिया था। असत्य को दुरित को दूर भगाते भगाते अन्त में एक मात्र सत्य ही उसका उपास्य बन गया था। वह श्रद्धालु था। इस श्रद्धा के सहारे सत्य की प्राप्ति करके उसने इस सूक्ति को चरितार्थ किया था—श्रद्धया सत्यमाप्यते। इसी सत्यनिष्ठा के वशीभूत होकर वह अपने (मुन्शीराम) द्वारा ली गई किसी मुकदमे की फीस को भी असत्य की गन्ध मिलने पर वापस कर देता है।

सत्य को अपनाने का अर्थ है—सदाचार को अपनाना तथा असत्य का अर्थ है—अनाचार को अपनाना। इसी सत्यग्राहिता के कारण उसने मद्यपान, मांस भक्षण नास्तिकता आदि सभी अनाचारों से मुक्ति पाकर जीवन को पुण्य सलिला भागीरथी के समान परम पावन बना लिया था तुलना तो कर—कहाँ आरम्भ के दिनों का मुन्शीराम तथा कहां बाद के समय का श्रद्धानन्द ? उसने सच्चाई की वेदि में अपने आप को स्वाहा कर दिया था तथा कदाचित् इसीलिए लिखा था धर्म के सच्चे प्रचारक कहां हैं ? सच्चाई की वेदि पर विश्वास से सिर रखने वाले कहां दिखाई देते हैं।

केवल सत्य में ही उसने दयानन्द का अनुकरण नहीं किया। उसने दयानन्द से निर्भीकता का पाठ भी पढा था। जहाँ दयानन्द को तोप के मुंह से बांध जाने का भी कोई भय नहीं है वहाँ उसका यह सुयोग्य शिष्य गोरों की नंगी संगीनों के आगे अपनी छाती बड़े ही सहज भाव से खोल देता है। इसी निर्भीकता के कारण पराधीन भारत में अंग्रेजों की नौकरी करते हुए भी वह अपने अधिकारी कमिश्नर को तड़ाक से यह उत्तर दे सका मैं अपने अंग्रेज दमियों को दे चुका हूं। आप जो करना हो कर लें।' गुरुकुल खुल जाने पर उसे लूटने के लिए आने वाले डाकुओं से इसी निर्भीकता के आधार पर निहत्था ही मिलता है।

उसने जीवन भर दयानन्द का काम किया। दयानन्द का अनुगमन किया। दयानन्द के ऊपर, दयानन्द की धरोहर आर्यसमाज के ऊपर अपने आप को, अपनी सम्पत्ति, अपने बच्चों को भी

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी

—कवि कस्तूरचन्द 'घनसार'

श्रद्धानन्द वेष सन्यासी, श्रद्धा शक्ति दिखाई।
श्रद्धा को रख आगे स्वामी शान्ति कला बताई ॥
श्रेयस श्रेष्ठ श्रुत श्रद्धायुत, देश में कार्य किया था।
ओ स्वामी ! ऋषि के अनुगामी श्रद्धा परिचय दिया था ॥१॥

चले बढाते साथ श्रद्धा को, दीन-जनो की सेवा।
दलितोद्धारक भव्य भाव से, दायक सुख के देवा ॥
हिन्दू सगठन हेतु स्वामी, कितना कष्ट सहा था।
सही तितिक्षा, जीवन भर में, ले व्रत खडा रहा था ॥२॥

मालावार पजाब देश में, विहार में धूम मचाई।
घूम-घूम प्रचार शुद्धि का, सगठन कला दिखाई ॥
नारि सुधार-विचार साथ में, अत्यधिक रुचि लेते।
मान बढाते महिलाओ का, आर्य सुशिक्षा देते ॥३॥

कन्या गुरुकुल, खोल आपने, गौरव गहन बढाया।
विद्यादान, मान रख पूरण, सोता भाग्य जगाया ॥
अहर्निश तडफ रही थी तेरे, ओ स्वामी अभिअन्तर।
आर्य प्रकाश भरा-रग-रग में, वेद ज्ञान मन मन्दिर ॥४॥

नीलधारा, हिमगिरि, बीहड में, झोंपडिया बनवाई।
ब्रह्मचारी संन्यासी रहते, साधकता दिखलाई ॥
करते आज स्नातक अपनी, वैदिक-विशद पढाई।
सर्व स्व-समर्पित किया स्वामी ने, गुरुकुल खोल बताई ॥५॥

देशभक्त था वीर सावर कर, गोरो से सघर्ष जारी।
स्वामी से लि सुदृढ प्रेरणा, लडे वीर बलिहारी ॥
शुद्धि सगठन हेतु स्वामी, रण में नाद गु जाई।
ब्रिटिश सत्ताधीशों के आगे, स्वतन्त्र बिगुल बजाई ॥६॥

दिल्ली सत्याग्रह मे जा के, रख दी सम्मुख छाती।
सैनिको की मार सही थी, देती कष्ट निशानी।
हटे न कदम एक भी पीछे, श्रद्धा शक्तिधारी।
स्वामी के साहस श्रद्धा को धन्य धन्य बलिहारी ॥७॥

भारत के इतिहास अमिट जो, जिसमें रही कहानी।
श्रद्धानन्द सन्यासी तेरी, वैदिक अमृत बानी॥
जामा मस्जिद बैठ शिखर पर, संगठन बाज उठाई।
मुस्लिम, हिन्दू धर्म एकता, हो दृढ़ भुजा उठाई॥८॥

अविच्छेद धर्म सत्य सम्बन्ध हो, देश-भक्ति प्रिय प्यारी।
ऐसी रही भावना स्वामी, श्रद्धा-सबल तुम्हारी॥
काम किया हमदर्दी से के, गौरव रखा हमारा।
वैदिक धर्म का कार्य सद-मस्त, करते चले सुधारा॥९॥

अब्दुल रशीद, हत्यारा खल शठ, गोली अचानक दागी।
तेईस दिसम्बर शहीद हुए थे, चोट गजब सी लागी॥
सद्धर्म की वेदी ऊपर अपना प्राण दिया था।
हंसते-हंसते सौंप काम को, सत्य धाम लिया था॥१०॥

अमर कीर्ति रहे तुम्हारी, ओ सन्यासी! तेरी।
यश गाते "धनसार" चल चित, बढ यथा मत्ति मेरी॥
लाज उठावे चले देश में, याद तुम्हारी आती।
अमर शहीद देवता तेरी, करणी सुखद सुहाती॥११॥

—कवि कुटीर, पीपाड शहर (राज०)

(पृष्ठ ३० का शेष)

दयानन्द का दीवाना

न्योछावर कर दिया। उसने दयानन्द की आत्मा को, दयानन्द की भावना को सही रूप में पहचाना था। दयानन्द ने लिखा था 'सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए। श्रद्धानन्द लिखते हैं 'एक ऐसे धार्मिक दल की आवश्यकता है जो विरोधी को धोखा देना भी वैसा ही पाप समझता हो जैसा कि अपने भाई को, जो मौत के भय से भी न्याय के पक्ष को छोड़ने का विचार तक मन में न लाने वाला हो।' श्रद्धानन्द का जीवन इसी आदर्श पर टिका था।

इन्हीं आदर्शों के आधार पर उन्होंने जीवन में आशातीत सफलता प्राप्त की तथा लिखा 'मेरा जीवन आशातीत व्यतीत हुआ है। इसीलिए जब तक दम में दम है तब तक मनुष्य को बेदम नहीं होना चाहिए।'

स्वामी श्रद्धानन्द? धर्म की वेदि पर तुम्हारा बलिदान हुआ पार्थिव शरीर कभी न कभी नष्ट होना ही था किन्तु आपके इस वीरतापूर्ण बलिदान से महात्मा गांधी सदृश महापुरुष को भी ईर्ष्या हुई थी तथा उन्होंने कहा था वे वीर की तरह जिए, वीर की तरह ही मरे भी।' वीर सन्यासी? तुम्हारा बलिदान युगों तक प्रेरणा देता रहेगा। हमारा मार्ग प्रशस्त करता रहेगा।

★

अमर शहीद की अन्तिम अभिलाषा और हमारा कर्त्तव्य

—यशपाल आर्यबंधु,
आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद-२४४०३२

वे लोग जो अपने जीवन में किसी महान् कार्य को करने की ठान लेते हैं, ससार से विदा होते समय, यदि वह कार्य अधूरा रह जाता है तो उनकी प्राय यही अन्तिम अभिलाषा होती है कि वह कार्य अवश्य पूरा हो। महर्षि दयानन्द सरस्वती की यह अभिलाषा थी कि चारों वेदो का भाष्य पूरा करूँ और ससार में वेदों का प्रचार करूँ और यदि इसके लिए दूसरा जन्म भी लेना पड़े तो भी वह कार्य अवश्य पूरा करूँगा। किन्तु प्राणघातक विषों के प्रभाव से उन्हें अपना शरीर बिना वह कार्य पूरा किये ही त्याग देना पड़ा। और अन्तिम समय में अपनी इच्छा से भी अधिक ईश्वर की इच्छा को मानते हुए, उसके आगे आत्मसमर्पण उन्होने कर दिया। पण्डित लेखराम आर्यमुसाफिर लेखन कार्य पर अधिक जोर दिया करते थे और उसे प्रचार का ठोस और स्थायी साधन मानते थे और स्वयं भी बहुत कुछ लिखना चाहते थे। इसी लिए उनकी यही अन्तिम इच्छा थी "आर्यसमाज में तहरीर (लेखन) का काम नहीं रुकना चाहिए।"

स्वनाम धन्य स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने जीवन में कई एक महत्त्वपूर्ण महान् कार्यों को एक साथ छेड़ दिया था। गुरुकुल शिक्षा-पद्धति दलितोद्धार एव शुद्धि। ये तीन कार्य राष्ट्रीय दृष्टि से वे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समझते थे। उन्होने अपने जीवन के अन्तिम दिनो मे दलितोद्धार और शुद्धि पर सर्वाधिक बल दिया था। रायसाहब रामविलास शारदा से अपनी अन्तिम भेंट में श्री स्वामी जी ने इस बात को स्वय स्वीकारा है। उन्होंने रायसाहब, रामविलास शारदा से कहा था कि—"रामविलास लोग और तुम भी बार-बार मुझ को अपना कार्यक्रम शीघ्र-शीघ्र बदलने का उलाहना देते हो, परन्तु क्या करूँ आर्य जाति की किसी भी नई क्षति को मैं जब देखता हूँ, चित्त काबू मे नहीं रहता और उसको ठीक करने के लिए मुझ उद्यत होना पड़ता है। मैंने शेष जीवन के लिए अपना अन्तिम प्रोग्राम अछूतोद्धार, शुद्धि, सगठन ही निश्चय किया है। इसके बिना आर्य जाति जीवित नहीं रह सकती।" (द्रष्टव्य—स्वामी श्रद्धानन्द एक विलक्षण व्यक्तित्व, पृष्ठ ३४८)

आनरेबल सर राजा रामपालसिंह जी को अपने एक पत्र मे श्री स्वामी जी ने अपनी रुग्ण अवस्था मे भी स्वामी चिदानन्द जी से लिखवाया था कि "इस समय यद्यपि मैं कुछ स्वस्थ हूँ, किन्तु मेरा यह शरीर इस योग्य नहीं रहा कि जिससे कोई काम ले सकू। इसलिए अब तो मेरी यह कामना है कि इस पुराने शरीर को छोडकर दूसरा शरीर धारण करूँ और फिर भारत मे आकर शुद्धि के द्वारा देश व जाति की सेवा करूँ।" (द्रष्टव्य—वही पुस्तक पृष्ठ ३६३) उपरोक्त पत्र लिखवाने के पश्चात् श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज अपने सहयोगी स्वामी चिदानन्द जी से बोले कि—स्वामी चिदानन्द जी, देखो मैं रहूँ या न रहूँ, किन्तु मेरे पश्चात् शुद्धि का काम बन्द न होने पाये। शुद्धि कार्य हिन्दू जाति के लिए अमर बूटी है, इसे बराबर सींचते रहना। पता नहीं कल क्या हो? आप मेरी इस बात को खूब याद रखना कि हिन्दुओं का कोश

पानी के बुलबुले जैसा है। मैंने अमृतसर सिक्ख आन्दोलन में जेल-यात्रा के पश्चात् १९२३ ई० में जब कि आगरा के पास-पास मुस्लिम मुवल्लिमों ने मलकानों में बड़ा ऊधम मचा रखा था, शुद्धि के काम को बड़े उत्साह के साथ आरम्भ किया था। उस समय आर्य हिन्दुओं का जोश शुद्धि के पक्ष में बेताब उबल पड़ा था। और ऐसा प्रतीत होता था मानो हिन्दुओं से करोड़ों नौमुस्लिम बने हुए भाइयों को कुछ दिनों में ही शुद्ध करके हिन्दु उन्हें अपने में एक रस मिला लेवेंगे।

किन्तु वह जोश पानी के बुलबुले जैसा ही साबित हुआ। इसलिए मेरा कहना है कि आर्य हिन्दुओं में शुद्धि के लिए उस समय तक बराबर जोश भरते रहने की आवश्यकता है जब तक कि हिन्दुओं से बने करोड़ों नौ-मुस्लिम भाई पुन अपनी पुरानी आर्य जाति मे पूर्ण शामिल नहीं हो जाते। "(वही पुस्तक, पृष्ठ ३६३-३६४) इस पर श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज लिखते हैं कि—"यह थी हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द की अन्तिम कामना, जो आज भी उसी तरह कानों में गूज रही है।" और फिर स्वामी चिदानन्द जी महाराज पूछते हैं कि— "पर प्रश्न होता है कि क्या हमने, हमारे सहयोगियो ने और सम्पूर्ण आर्य-जाति ने श्रद्धेय स्वामी जी की कामना को पूरा करने के निमित्त कोई कदम आगे बढ़ाया ? क्या हम ने उस अमर हुतात्मा के आदेश रूप शुद्धि को अपनी अन्तरात्मा की तुष्टि के लिए, आर्य जाति के सगठन एवम् उसकी उन्नति के लिए भारत देश के हित के लिए और समस्त विश्व की सुख-शान्ति के लिए सच्चे हृदय से अपनाया और उसके प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन किया है?" (वही, पृष्ठ ३६४) हमें यह लिखने में कोई सकोच नहीं अपितु खेद तो है कि हम अपना कर्त्तव्य पालन करने मे पिछड़ गए हैं। हमने शहीद की अन्तिम अभिलाषा के प्रति कोई विशेष ध्यान नहीं दिया।

एक अन्य प्रकार से भी हम शुद्धि के कार्य को हतोत्साहित कर रहे हैं। जन्मगत जाति भेद की गहरी भावनाएँ हम छोड नहीं सके, इस लिए शुद्ध हुए व्यक्तियों को हम पूर्णरूपेण समाज में खपा नहीं पाये। उन्हे आत्मसात् नही कर पाये। यह शुद्धि आन्दोलन की सफलताओं पर पानी फेरने के सदृश है। आवश्यकता इस बात की है कि हम जन्मगत जाति भेद को जड से उखाड फेंके, तभी स्वामी श्रद्धानन्द की अन्तिम अभिलाषा पूर्ण हो सकती है। अन्यथा केवल नारेबाजी से कुछ होने का नहीं। हिन्दू जाति की दशा आज भी उस उलटी चूहेदानी की सी है जिसमे से एक बार कोई बाहर निकल जावे तो फिर उसमें प्रवेश पा ही नहीं सकता। कल्पना कीजिये वह जलाशय कितने दिन चलेगा जिसमें पानी की निकासी की तो व्यवस्था हो पर नवीन जल के प्रवेश के सभी द्वार बन्द हो।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने 'कितने अवसर बिसार दिये" नामक अपने एक लेख में सम्राट् अकबर के हिन्दू बनने और बीरबल द्वारा गधे को घोडा बनाने के भोंडे उदाहरण द्वारा मना करने की घटना का वर्णन किया है। यह घटना लिखने के बाद श्री स्वामी जी लिखते हैं कि— 'बीरबल का वह ३५० वर्ष पुराना उत्तर अब तक आर्य जाति के सकुचित विचारों का उदाहरण है। यदि उस समय अकबर को आर्य जाति में मिला लिया जाता तो न औरगजेबी जमाना आता और न भारत की वह दुर्दशा होती जो आचारहीन मुगल बादशाहों के नीचे रहने से हुई और न जाने उस वीरता का कदम उठाने पर आज ससार ने कैसा पलटा खाया होता। वह अकबर जिसने अपने सारे जीवन में पक्षपाती मोहम्मदी मत से किनारा रखा, अपनी मृत्यु के समय मुसलमान मुल्ला को बुला कर कलमा पढता है, क्योंकि आर्य-जाति के सकुचित विचार रखने वालो ने उसे धर्म भाई मानकर अगीकार न किया। जो बर्ताव आर्य सभ्यता की चोबदार (प्रहरी) आर्य जाति ने अकबर के

(शेष पृष्ठ ४६ पर)

सदाचार का आशीर्वाद : धन की वृष्टि

—स्व० सेठ रघुमल जी दिल्ली

सेठ रघुमल जी अपने समय के प्रसिद्ध दानी थे। आर्यसमाज में उनकी श्रद्धा कैसे उत्पन्न हुई, इसका भी एक छोटा सा इतिहास है, जो सेठ जी ने इस इतिहास के लेखक को स्वयं सुनाया था। सेठ जी ने जो कुछ सुनाया उसका अभिप्राय अधोलिखित है—

"यह तो आपने देखा ही है कि दिल्ली मे मेरी दुकान चावडी बाजार में है, उससे आर्यसमाज मन्दिर बहुत समीप है। मैं कभी-कभी आर्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशनो मे अपने मित्रो के साथ चला जाया करता था। एक दिन सुना कि गुरुकुल कांगडी के संस्थापक महात्मा मुन्शीराम जी का उपदेश होगा। मैं साप्ताहिक-सत्संग में चला गया। महात्मा जी ने सदाचार की व्याख्या करते हुए इस बात पर बहुत खेद प्रकट किया कि जिस बाजार में आर्यसमाज का मन्दिर है उसी में वेश्याओं का अड्डा है। शहर भर की प्रसिद्ध वेश्याए चावडी बाजार में ही रहती हैं, जिस कारण यह बाजार दुराचार का गढ बना हुआ है। जिन चौबारो में वेश्याएँ रहती हैं, वे सब व्यापारियो को जायदाद के हिस्से हैं। यह निश्चय है कि पाप की कमाई कभी सफल नहीं हो सकती। जो व्यापारी वेश्याओ को मकान किराये पर देकर धन कमाते हैं उनका अपना जीवन तो बिगडता ही है, उनकी सन्तानें भी अच्छे चरित्रवाली नही रह सकती और चरित्रहीन के पास सम्पत्ति कैसे बच सकती है। मैं देखता हू कि यहा कई ऐसे व्यापारी बैठे हैं, जिनकी जायदाद में वेश्याएँ बसी हुई हैं। मैं उन्हे विश्वास दिलाता हूँ कि वे अपनी जायदाद मे से वेश्याओ को निकाल द तो उनकी आय बढगी, घटेगी नहीं। मेरे कहने से वे यह परीक्षा करके देख ल।"

सेठ जी ने कहा कि "मेरे मन पर महात्मा जी के कथन का गहरा असर हुआ। मैं समाज से सीधा उठकर दुकान पर गया और न केवल अपनी जायदाद में रहने वाली वेश्याओ को एक महीने का नोटिस दे दिया अपितु दूकान की बही में भी लिख दिया कि इस पीढी की कोई जायदाद भविष्य मे भी कभी किसी वेश्या को किराये पर नही दी जाय। मेरे इस कार्य का मुझ पर, मेरी दुकान पर और सम्पूर्ण व्यापार पर अद्भुत असर पडा।"

इसके पश्चात् सेठ जी ने भरे हुए गले से कहा, "मुझे मालूम नहीं उसके पश्चात् मुझ पर धन की कहा से वृष्टि हो गई। हजारो को लाखों और लाखो को करोडो में बदलते देर न लगी। इसके साथ ही मेरी दान मे प्रवृत्ति बढ गई। जितना पैसा देता हू, उससे अधिक आता है। यह सब स्वामी दयानन्द जी और महात्मा जी की कृपा का फल है आज मुझे सूझता नहीं कि मैं अपना रुपया कहां रक्खू।"

●

क्रान्ति के पुजारी –श्रद्धानन्द

—स्व० प० प्रकाशचन्द 'कविरत्न'

विश्व वन्द्य, देव दयानन्द के प्रसिद्ध शिष्य
प्राच्य शिक्षा दानी, गुरु ज्ञानी ध्रुव ध्यानी थे।

राष्ट्र के परम हितकारी क्रान्ति के पुजारी
सत्य व्रत धारी, आर्य सभ्यताभिमानी थे ॥

आश्रय विहीन, दुखियाओं दीनो के दृगो मे
देखकर पानी जो हो जाते पानी-पानी थे।

ईश अनुरागी, त्यागी परम गभीर, धीर
कर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द बलिदानी थे ॥

देव दयानन्द के सदेश के प्रचार हेतु
जगती के वैभव, सुखो पे लात मार दी।

स्थापित किये पुनीत गुरुकुल ठौर ठौर
शिक्षा दिव्य वेद के आदेश अनुसार दी ॥

देशद्रोही-दल के मनसूबे क्षार क्षार किये
आर्य जाति की थी दशा बिगडी सुधार दी।

किया नवस्फूर्ति का सचार देश भारत मे
सदियो से छायी हुई मूर्च्छना उतार दी ॥

दमन की चक्की मे कुशासक फिरगियो के
पिस रही खूब भारतीय प्रजा भोली थी।

चलती थी गोली निहत्थे निरपराधियो पे
कपट कुनीति क्रूरता की हद होली थी ॥

डट गए स्वामी जो स्वातन्त्र्य समराङ्गण मे
जिनकी निशङ्क सिंह के समान बोली थी।

स्वाधिकार प्राप्त करने के हेतु देहली मे
शत्रु की सगीनों के समक्ष छाती खोली थी ॥

भारतीयता की भव्य चादर पे थी जो लगी
छतछात की कुयश कालिमा को धो गये।

देके सहयोग, सान्त्वना सदय सर्व भाति
दलितो के दारुण दारिद्रय, दुःख खो गये ॥

शुद्धि, सगठन का बजाके शख भारत मे
बिछुडे जनो को स्नेह-सूत्र मे पिरो गये।

आर्य जाति राष्ट्र के उद्धार हेतु ही 'प्रकाश'
पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी शहीद हो गये ॥

★

स्वामी श्रद्धानन्द जी का उत्कृष्ट उदाहरण युवक-पीढियो के लिए स्फूर्ति का स्रोत होगा जो सदा उनमे आत्म-त्याग, तपस्या और कष्ट सहन की भावना का विकास करने वाला होगा।

—प मदन मोहन मालवीय

गुरुकुल और महात्मा गांधी

सन् १६५०, ईस्वी सन १६१३—१६१४ मे जब महात्मा गांधी ने अफ्रीका मे भारतीयों के अधिकारों के लिए सत्याग्रह का धर्मयुद्ध छेडा हुआ था और भारत में स्वर्गीय गोखले उसके लिए चन्दा एकत्रित कर रहे थे, तब गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने भोजन मे कुछ कमी करके और अधिकतर हरिद्वार के दूधिया बांध पर ठिठुरती सरदी में कठोर मजूरी करके १५०० रुपया उस धमयुद्ध की सहायतार्थ भेजा था। यह रुपया श्रीयुत गोखले के पास तब पहुंचा था, जब वे हताश होकर गहरी चिन्ता मे पड़ हुए थे। कहते हैं उन्होंने उस रकम को १५ हजार से भी अधिक कीमती समझा था और वे प्रसन्नता मे कुर्सी पर से उछल पड़े थे। श्रीयुत गोखले ने महात्मा मुन्शीराम जी को ता० २७ नवम्बर सन् १६१३ को देहली से एक पत्र मे इस सम्बन्ध मे लिखा—मुझ रेवरेण्ड ऐण्डरूज और प० हरिश्चन्द्र ने बताया है कि किस प्रकार गुरुकुल के ब्रह्मचारी दक्षिण अफ्रीका के सत्य ग्रह के लिए घी, दूध छोडकर और साधारण कुलियो और मजदूरो की तरह मजूरी करके रुपया इकट्ठा कर रहे हैं। दिल-हिला देने वाले देशभक्ति पूर्ण कार्य के लिए मैं उनको क्या धन्यवाद दू ? यह तो उनका वैसे ही अपना काम है जैसा कि आपका और मेरा शरीर है, वे इस प्रकार भारत माता के प्रति अपने ढग से अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं। फिर भी भारत माता की सेवा के लिए त्याग और श्रद्धा का जो आदर्श इन्होने देश के युवको और वृद्धो के सामने उपस्थित किया है उसकी अन्त करण से प्रशसा किए बिना मैं नहीं रह सकता। मैं आपका अत्यन्त कृतज्ञ होऊंगा यदि आप मेरे ये भाव किसी तरह उन तक पहुचा देंगे।" इसी पत्र में आपने लिखा था। 'आप मुझ गुरुकुल आने के लिए प्राय कहते है। मुझको अत्यन्त खेद है कि मैं अब तक भी गुरुकुल नही आ सका। यदि अवस्था अनुकूल रही तो जरूर ही १६१५ में वहां आऊंगा। मैं आपके प्रति आदर व्यक्त करता हुआ सस्था का सब प्रकार से अभ्युदय चाहता हूं।" यह पत्र श्रीयुत गोखले का अपने हाथ से लिखा हुआ है।

इनसे गुरुकुल के प्रति आपके प्रेम का भी परिचय मिलता है। गुरुकुल न आ सकने का दु ख आपको अन्त तक बना रहा और गुरुकुल वासी भी आपके दर्शनो से वचित रहना दुर्भाग्य ही समझते थे।

ब्रह्मचारियो के त्याग की इस भावना ने गाधी जी को गुरु० का प्रेमी बनाया था। मि० एण्ड्रूज भी इस सत्याग्रह मे गाधी जी के सहायक थे। उन्होने भी आपके दिल मे गुरु० के लिए प्रेम और आकर्षण पैदा किया था। २१ अक्टूबर सन् १६१४ को फोनिक्स नेटाल से गाधी जी ने मुन्शीराम जी को निम्नलिखित सब से पहला खत अगरेजी मे लिखा था —

'प्रिय महात्मा जी,

मि० एण्डरूज ने आपके नाम और काम का मुझ को परिचय दिया है। मैं अनुभव कर रहा हूं कि मैं किसी अजनबी को पत्र नही लिख रहा। इसलिए आशा है आप मुझे आपको "महात्मा जी" लिखने के लिए क्षमा करेंगे। मैं और मि० एण्डरूज आपकी और आपके काम की चर्चा करते हुए आपके लिए इसी शब्द का प्रयोग करते हैं। मि० एण्डरूज ने मुझको यह भी बताया है कि आप,

गुरुदेव और मि० रुद्रा से वे किस प्रकार प्रभावान्वित हुए हैं। आपके शिष्यों ने सत्याग्रहियों के लिए जो काम किया है उसका वर्णन सो उन्होंने मुझ से किया है। गुरुकुल के जीवन का जो चित्र उन्होंने खींचा है उससे मैं यह पत्र लिखते हुये अपने को गुरुकुल में ही बैठा हुआ समझता हूं। निःसन्देह उन तीनों संस्थाओं के संचालकों, भारत के तीन सपूतों के प्रति मैं अपना आदर व्यक्त करना चाहता हूं।

—आपका 'मोहनदास करमचन्द गांधी"

गांधी जी के भारत आने से पहले आपके फोनिक्स के सत्याग्रह आश्रम के विद्यार्थी भारत आ गये थे और अहमदाबाद में आश्रम की स्थापना का अभी निश्चय नहीं हुआ था। इसलिये आपने अपने विद्यार्थियों के लिये सर्वोत्तम स्थान गुरुकुल ही नियत किया था। और आपके विद्यार्थी संवत् १९७१ में गुरुकुल आकर महीनों वहां रहे भी थे। संवत् १९७२ के कुम्भ पर गांधी जी हरिद्वार आये थे। और बिना किसी पूर्व सूचना के गुरुकुल भी एकाएक पधारे थे। इतने महान पुरुष में नम्रता इतनी थी कि गुरुकुल आने पर उसने मुन्शीराम जी के चरण छूकर नमस्कार किया था। इस समय गुरुकुल आने से पहले ही आपने पूना से जो पत्र महात्मा जी को लिखा था वह आपकी ही भाषा में यहां दिया जाता है— महात्मा जी, आपका तार मुझको मिला था। उसका प्रत्युत्तर तार से भेजा था। वो आपको मिला होगा। मेरे बालकों के के लिये जो परिश्रम आपने उठाया और उन्हीं को जो प्यार बतलाया उस वास्ते आपका उपकार मानने को मैंने भाई एण्ड्रूज को लिखा था। लेकिन आपके चरणों में शीश झुकाने की मेरी उम्मेद है। इसीलिए बिना आमन्त्रण आने का भी मेरा फरज समझता हूं। मैं बोलपुर में पीछे फिरूं उस वक्त आपकी सेवा में हाजिर होने की मुराद रखता हूं। आपका सेवक— 'मोहनदास गांधी।" पत्र का एक-एक शब्द नम्रता की स्याही में कलम डुबो कर लिखा गया था। उसके बाद मायापुर वाटिका में विशेष मण्डप सजाकर गुरु० वासियों की ओर से ८ अप्रैल सन् १९१५ को गांधी जी का विशेष अभिनन्दन किया गया। उसके पहल और बाद भी महात्मा गांधी जी को सैकड़ों मान पत्र मिले होंगे। किन्तु उस मान-पत्र की मिठास और अपनापन किसी और मान-पत्र में आपको अनुभव नहीं हुआ होगा। वह मान-पत्र गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के भावों को भी अभिव्यक्त करता था। उसके कुछ प्रारम्भिक शब्द ये थे—मातृभूमि के वस्त्र फटे हुए हैं दिन-दिन कृशता घेर रही है, शरीर कांटों से छिदा हुआ है, रुधिर बह रहा है। ऐसे समय में आप ही की ओर वह स्नेह और आशा से देख रही है। आप ही दूसरी जातियों में उसका मुख उज्ज्वल करने वाले हैं। आप स्वाधीनता के दिव्य मन्त्र में दीक्षित हैं। जातीयता की नौका के कर्णधार हैं। देशभक्तों के सर्वस्व हैं। इस कुल के पूजनीय अतिथि हैं।

गांधीजी ने उसके उत्तर में कहा—'मैं हरिद्वार केवल महात्माजी के दर्शनों के लिए आया हूं। मैं उनके प्रेम के लिए कृतज्ञ हूं। मि० एन्ड्रूज ने मुझ को भारत में अवश्य मिलने योग्य जिन तीन महापुरुषों का नाम बताया था, उनमें महात्मा जी एक हैं। ब्रह्मचारियों की सहायता के लिए मैं उनको धन्यवाद देता हूं। उन्होंने फोनिक्स के विद्यार्थियों के प्रति जो प्रेम दिखाया है, उसको मैं कभी नहीं भूलूंगा। मुझे अभिमान है कि महात्मा जी मुझको भाई कहकर पुकारते हैं। मैं अपने में किसी को शिक्षा देने की योग्यता नहीं समझता किन्तु देश के किसी भी सेवक से मैं स्वयं शिक्षा लेने का अभिलाषी हूं। व्याख्यान का एक-एक शब्द नम्रता और कृतज्ञता के भाव में सना हुआ था। कुम्भ के बाद फोनिक्स के विद्यार्थी दुबारा फिर गुरुकुल में रहे थे। गुरुकुल के १४वें वार्षिकोत्सव पर ४ चैत्र संवत् १९७२ को भी फिर गांधी जी गुरुकुल पधारे

(शेष पृष्ठ ४२ पर)

आचार्य श्रद्धानन्द जी और उनके अन्तेवासी

—डा० पुष्पावती आचार्य, मातृ मन्दिर कन्या गुरकुल, वाराणसी।

स्वा० श्रद्धानन्द जी का बहुमुखी व्यक्तित्व था जिससे अनेक दिशाओं समाज व राष्ट्र को प्रकाश मिला। हम यहां पर उनके आचार्यत्व के विषय में श्रद्धांजलि रूप कुछ कहना चाहेंगे। "आचार ग्राहयति इति आचार्य।" यह संक्षिप्त सी भावपूर्ण आचार्य की परिभाषा शास्त्रों ने की है। इसी में शिक्षा का भी सार व्यक्त हो गया है। आचार क्या है? इसके दो पक्ष हैं। (१) नैतिकता के सामान्य नियम जिनमें आत्म शुद्धि एवं व्यवहार शुद्धि सम्मिलित रहती है। (२) आजीविका के साधन। यह ध्यान देने की बात है कि भारतीय आचार संहिता में आजीविका के साधन को भी आचारान्तर्गत लिया गया है। गीता के स्वधर्म का भाव भी आजीविका साधन से है। आजीविका-साधन में धर्मभाव या आचार का सन्निवेश ही कर्म को महत्ता प्रदान करता है।

'आचार्य' शब्द की उपर्युक्त परिभाषा के अनुसार आचार्य वह व्यक्ति या शिक्षाधिकारी है (शिक्षाधिष्ठाता) है जो विद्यार्थी को आत्म संशोधन, व्यवहार कुशलता एवं कर्म (कर्त्तव्य) चयन में समर्थ एवं पटु बनाता है। इस भावपूर्ण व्याख्या के प्रकाश में आचार्य का विद्यार्थी के प्रति कितना गंभीर उत्तरदायित्व है, यह स्वतः बोधगम्य है।

कहना न होगा कि अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी सच्चे अर्थों में आचार्य थे। उनका प्रकृष्ट आचार्यत्व एक ओर राष्ट्र व समाज व्यवस्थापन में प्रतिफलित हुआ, दूसरी ओर गुरुकुल के अन्तेवासियों के अन्त प्रकाश में उजागर हुआ। इसी कारण तत्कालीन गुरुकुल कांगडी उच्च नैतिक गुणों का मूर्त्तस्वरूप था। जो कि एक संस्मरण से स्पष्ट है। मेरे नाना जी के साथ मेरी माता जी भी गुरुकुल के उत्सव में गई थीं। तब स्वा० श्रद्धानन्द जी विद्यमान थे। माता जी हमें सुनाती थी कि ब्रह्मचारियों ने उनका सामान अतिथि निवास में एक पर्ण कुटीर में सजा दिया और हमें कहा कि आप निश्चिन्त होकर जहां जाना है, घूम आइये। पर्णकुटीर सुन्दर व स्वच्छ बने थे, उनमें ताला लगाने की कोई व्यवस्था नहीं थी। पहले तो नाना जी आदि सब लोग यह सुन कर अवाक रह गए। मेरी माता जी से रहा न गया तो पूछ ही बैठी बिना ताला लगाए ही चल जाएं! तो वहां नियुक्त ब्रह्मचारी बटु बोला 'यहां पर चोरी नहीं होती। ताला लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।" और तभी दूर से उन्हें ब्रह्मतेज से आलोकित स्वा० श्रद्धानन्द जी दिखाई पड़े जिन के व्यक्तित्व की आभा से वे अभिभूत हो गए और नाना जी गद्गद होकर बोल उठे, "बेटी! यह गुरुकुल है जो कि प्राचीन ऋषियों की तपोभूमि का नमूना है। सचमुच यहां चोरी नहीं होती होगी। चलो हम गंगा स्नान करें तथा प्रवचन सुनें। "माता जी व सभी परिजन चित्र लिखे से मुग्धभाव से बिना ताला लगाए सामान खुली पर्णकुटी में छोड़ कर चले गए। माता जी बताती थी कि पूरे उत्सव भर में चोरी की कोई घटना नहीं सुनाई पड़ी। सभी आगन्तुकों का सामान बिना ताले के ही पड़ा रहता था। यदि किसी का आभूषण या सामान गिर जाता था तो सूचनापट्ट पर लिखा मिलता था, "पहचान बता कर अपना अमुक

सामाय ले जाए।" माता की श्रद्धापूरित शब्दों में कहती थीं कि गुरुकुल भूमि में विचरण करते हुए प्रतीत होता था पवित्रता की देवी के लोक में घूम रहे हैं।

यह तो हुई आचार' के व्यवहार पक्ष की बात। अब शिक्षा एवम् आजीविका पक्ष को लें। इसके लिए पुरानी पीढ़ी के स्नातकों को देखना उचित होगा। प० बुद्धदेव जी विद्यालंकार तथा प० धर्मदेव जी विद्यामार्त्तण्ड पुरानी पीढ़ी (स्वा० श्रद्धानन्द जी के आचार्यत्व काल) के प्रतिनिधि-स्वरूप थे। प० धर्मदेव जी के निर्देशन में अपने शोधग्रन्थ के लिए मुझे कुछ दिन रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वे कितने सरल, सौम्य वर्चस्वी एवं उत्कृष्ट विद्वान् थे! उनकी दिनचर्या अति सात्त्विक एवम् वेद मन्त्रों की विवेचना अति प्रखर होती थी। मैं सुनकर चकित रह गई थी कि विज्ञान विषय का उच्च शिक्षण भी तत्कालीन गुरुकुलीय पाठ्यक्रम में सन्निविष्ट था। पण्डित जी वेद मन्त्रों की विज्ञान सम्मत व्याख्या भी करते थे। प० बुद्धदेव जी (बाद में स्वा० समर्पणानन्द जी) की प्रखर प्रतिभा से सभी परिचित हैं। उस समय के स्नातकों ने राष्ट्रीय जागरण तथा स्वातन्त्र्य आन्दोलन में अविस्मरणीय उत्कृष्ट योगदान किया था। यह सत्य इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। गुरुकुल के तत्कालीन स्नातक पूर्णतः विश्वसनीय एवं श्रद्धा के भाजन होते थे। इस देदीप्यमान आचार (व्यक्तित्व) निर्माण में कौन प्रेरणास्रोत था? यह प्रेरणास्रोत था स्वा० श्रद्धानन्द जी का अपना शुभ्र व्यक्तित्व। दूसरे शब्दों में प्रकृष्ट आचार्यत्व। उनके आचार्यत्व में अग्नित्व अग्रणीत्व का समावेश था। आचार्य के भीतर ब्रह्मतेज का होना अनिवार्य शर्त है जो अन्तेवासी के हृदय के कल्मष का दहन कर उस में नव चेतना का संचार करके उसे पूर्ण व्यक्ति' बनाती है। इस अग्नित्व के साथ साथ वात्सल्य का समावेश भी आवश्यक है।

स्वा० श्रद्धानन्द जी में वात्सल्य भी अपरिमित रूप में था। एक ओर जहाँ अन्तेवासियों की कठोर दिनचर्या के पर्यवेक्षक थे दूसरी ओर वे उन्हें प्यार भी बहुत करते थे। अनेक घटनाएं हैं जिनमें उन्होंने अपने प्राणों को संकट में डाल कर ब्रह्मचारियों की रक्षा की थी रात रात भर जाग कर उनकी परिचर्या की थी। अपने को तपाए बिना विद्यार्थी से तपोऽभ्यास नहीं कराया जा सकता, अपने को जगाए बिना विद्यार्थी के अन्तस् में जागृतिकिरण का संचार नहीं किया जा सकता। बस आचार्य का यही आचार्यत्व है कि विद्यार्थी को अन्दर बाहर सभी तरह से जगा दे परिपुष्ट कर दे। प्रातः स्मरणीय स्वा० श्रद्धानन्द जी ऐसे ही आचार्य थे जिनके आचार्यत्व निर्वहन में वेदारम्भ तथा उपनयन संस्कार की प्राणभूत प्रक्रिया 'मम चित्त ते चित्तमनुदधामि"। सर्वांशतः चरितार्थ थी और जिसका परिणाम था क्रियाशील तेजस्वी व्यक्तित्व से युक्त स्नातकों की एक लम्बी परंपरा जिन्होंने आधुनिक भारत के आदिम अन्धकाराच्छन्न प्रभाग में जीवन्त प्रकाश भर दिया था जिनकी ओजस्वी वाग्धारा में भारत राष्ट्र का कल्मष धुल गया था जिनके स्वच्छ आश्वासों की सुगन्ध से भारतीय हृदय का दैन्यभाव नष्ट होकर नव आशा उत्साह से उद्दीप्त हो उठा!

अतः यदि आज ऐसे आचार्य होते तो क्या देश की यह विडम्बना, समाज की किंकर्तव्यविमूढता एवं विद्यार्थियों की ऊर्जा (ब्रह्मचर्य) विनाश का यह अनवरत क्रम क्या चल सकता था। आज उस अप्रतिम आचार्य की टीस भरी याद आ रही है! और विवश व्यथाभरी आह वातावरण को बोझिल बना रही है। किस दिगन्त से उस तप पूत आचार्य का पुनरागमन इस धरती पर होकर नव पीढ़ी का मनस्ताप हरेगा, भारतीय हृदय चीख चीख कर यह अनन्त से पूछ रहा है।

आर्यों, हिन्दुओं, मुहम्मदी, ईसाइयों एवं शिक्षित भारतीयों का आह्वान

—महात्मा मुन्शीराम जिज्ञासु

यह लेख सन १८९७ में लिखा गया था। तब स्वामी श्रद्धानन्द जी अभी सन्यासी नहीं बने थे। गुरुकुल कांगडी की स्थापना से ढाई वर्ष पहले यह लिखा गया है। उस समय वह मुन्शीराम वकील से मुन्शीराम जिज्ञासु हो चुके थे। महर्षि के निर्वाण को १४ वर्ष और प० लेखराम शर्मा के बलिदान को कुछ मास ही हुए थे। उस समय का लेख आज के सदर्भ में सर्वथा उपयोगी है और महात्मा मुन्शीराम जिज्ञासु के उस 'जादू' को समझने मे सहायता देता है, जिसके कारण स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जामा मस्जिद की वेदी से अपना प्रवचन गायत्री मन्त्र से प्रारम्भ किया था। उस लेख का अविकल रूप यहा प्रस्तुत है— —सम्पादक

ब्राह्मणधर्मियों से निवेदन—आर्य पुरुषो! सोचो कि वे कौन से सिद्धान्त थे, जिन्होने एक लगोट बद साधु को वह शक्ति प्रदान की थी, जो इस समय महाराजाओ मे भी दिखाई नही देती। पता लगाओ कि आर्यसमाज के स्थापित करने से ऋषि का क्या प्रयोजन था? दयानन्द की जीवन-यात्रा के माग पर पथ-प्रदर्शन के लिए चिह्नो की खोज करो और जिस समय कि तुम्हें उन्नति का शिखर बडा ऊचा और भयावना प्रतीत हो, उस समय इस ज्योति-स्तम्भ की ओर टकटकी लगाकर ऊपर चढते जाओ। फिर देखो कितनी सरलता से माग समाप्त हो जाता है।

मेरे प्यारे हिन्दू भाइयो!—ब्राह्मण धर्म का अभिमान करने वालो! तुम्हारे लिए महर्षि दयानन्द के जीवन का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। तुम पुराणो में सुनते आए हो कि कलियुग में भी सतयुग की लडी वर्तमान रहेगी अपने हृदय से पूछो कि सतयुग किस प्रकार से आ सकता है। तुम्हें बतलाया जाता है कि दयानन्द ने तुम्हारे धर्म का नाश कर दिया है। सुनी हुई बातो का कुछ समय के लिए त्याग करके घटनाओ के आधार पर, जरा विचार तो करो कि दयानन्द ने धर्म का नाश किया है या कि तुम्हारे बिछुडे हुए धर्म को तुम से फिर मिलाने की चेष्टा की है। क्या तुम्हारा हृदय साक्षी देता है, कि—

वेदो का सम्मान करने वाला दयानन्द,
वेदो के प्रेम मे पागल कहलाने वाला दयानन्द,
आर्य ग्रन्थो में रुचि रखने वाला दयानन्द,
ऋषियो की निन्दा सहन न करने वाला दयानन्द

कभी भी धर्म को हानि पहुचा सकता है! क्या तुम अस्वीकार कर सकते हो कि दयानन्द ने तुम्हें उन वेदो का पता दिया जिनका कि चिरकाल से तुमने दर्शन तो क्या श्रवण भी नही किया था। आओ, प्रकाश के एकाएक प्रकट होने पर चुंधिया मत जाओ। सावधान होकर दृष्टि डालो। यह प्रकाश तुम को अविद्यारूपी गर्त से निकालने वाला है। प्रकाश का पता देने वाले के जीवन को दीर्घ दृष्टि से पढो ताकि तुम्हें प्रकाश से लाभान्वित होने का ज्ञान प्राप्त हो सके।

बिछुडे भाइयो से अपील - हे मेरे बिछुडे हुए मोहम्मदी और ईसाई मित्रो! अविद्या की अन्धकारमयी रात्रि मे जबकि हाथ पसारा नही सूझता था तुमने भाइयों के हाथ छोडकर अन्यो के हाथ

में अपना हाथ दे दिया। जब क्रियात्मक रूप में तुम्हें विदित हो गया कि तुमने मूर्खता की है, और तुम्हारे आत्माओं ने साक्षी दी कि तुम निज गृह से दूर जा रहे हो तो तुमने व्याकुल होकर आतुर वचनों से अपने भाइयों की ओर देखा। तुम्हारे भाई उस समय स्वयं देखने योग्य न थे। फिर तुम्हारा हाथ क्यों कर पकड़ते? परन्तु अब अन्धकार दूर हो गया है, वेद रूपी सूर्य का प्रकाश हो गया है। जीवन के उद्देश्य को समझो और अपने उस भाई के जीवन को पढ़ो, जिसमें कि तुम्हारे लिए— नहीं, केवल तुम्हारे लिए ही नहीं, प्रत्युत सत्य की खोज करने वाले के लिए, अपनी जान को हेय समझा,

सांसारिक सुख तथा आनन्द को हेय समझा,
और परमेश्वर के अटल नियम के आगे,
सिर झुकाए हुए
अपने मिशन को पूरा किया।

हे शिक्षा प्राप्त भाइयो! इतिहास का सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन करने वालो! उन्नीसवीं शताब्दी में ऋषि जीवन क्या एक अचम्भा नहीं है? मतवादियों के अद्भुत से अद्भुत चमत्कारों से बढ़कर क्या यह अद्भुत और आश्चर्यमय चमत्कार नहीं है?

हे दयालु पिता! प्रत्येक मनुष्य को, चाहे वह किसी वर्ण, स्वभाव, जाति अथवा सम्प्रदाय का हो, सामर्थ्य दे कि वह दयानन्द का जीवन पढ़ते हुए और उसके मिशन पर विचार करते हुए, उन सिद्धान्तों को दयानन्द से पृथक् करके उन पर विचार करने की शक्ति प्राप्त करे, जिनके विचार के लिए तूने दयानन्द को विशेष शक्तियां प्रदान की थी।

(पृष्ठ ३८ का शेष)

गुरुकुल और महात्मा गांधी

थे। उस अवसर पर आपने अपने भाषण में कहा था—'इस समय मैं महात्मा जी का बन्दा बन कर यहां आया हूं। महात्मा जी मेरे बड़े भाई हैं। जब मैं विदेश में था तब मेरे लड़के यहां रहे थे। महात्मा जी उनके पिता और ब्रह्मचारी उनके भाई थे। अब भी मेरे लड़के मुझे महात्मा जी के पितृवत् व्यवहार और ब्रह्मचारियों के भ्रातृवत् व्यवहार के विषय में प्रायः कहा करते हैं। मैंने १४ वर्षों से देखा है कि आर्यों में स्वार्थ त्याग, शिक्षा और भारत के हित का भाव है। अतएव मैं उनका सत्संग करना चाहता हूं।

☼

स्वामी श्रद्धानन्द के गुरुकुल विश्वविद्यालय से आज का गुरुकुल विश्वविद्यालय कितना भिन्न है?

—छतरसिंह अध्यापक, विद्यालय विभाग, गुरुकुल कांगड़ी

स्वामी श्रद्धानन्द का गुरुकुल विश्वविद्यालय प्रथम श्रेणी से लेकर विश्वविद्यालय की सर्वोच्च उपाधि देने वाले विभागों तक एक था। विद्यालय विभाग से विद्यार्थी निकल कर कालेज विभाग मे जाते थ और वहा भी विद्यालय की ही भांति आश्रम में रह कर अपने गुरुजनो के सरक्षण मे अपनी दैनिक चर्या व्यतीत करते थ, शारीरिक स्वास्थ्य के लिए व्यायाम, खेल आदि मे अपना कीमती समय अनुशासन मे रह कर लगाते थ। स्वास्थ्य, वृत्ताभ्यास और जीवन के लिए आवश्यक तत्वो का गहनता से अध्ययन करना ही उनका एकमात्र उद्देश्य होता था। अपने गुरुजनो के प्रति उनके हृदय मे श्रद्धा और आदर की भावना होता थी। गुरुजनो के शुभ आशीर्वाद से उनका भविष्य दिन-प्रतिदिन उज्ज्वल होता जाता था। देश के प्रति सेवा के भाव उनके हृदय मे लिख दिये जाते थ। समय-समय पर गुरुजनों के सरक्षण मे सरस्वती यात्राए हुआ करती थी। इससे विद्यार्थियो को सांसारिक जीवन देखने का मौका मिलता था और उनके हृदय मे छुपे भाव भी प्रकट हो जाया करते थें जिससे गुरुजनो को उनके निर्माण करने मे और सहायता मिलती थी। ऐसे स्वतन्त्र वातावरण मे एक बार विद्यार्थी की परख भी हो जाया करती थी। ठीक इसी तरह की व्यवस्था लडकियो के लिए कन्या गुरुकुल देहरादून मे कर दी गई थी।

आयुर्वेद कालेज, वेद कालेज, साइंस कालज, कृषि विद्यालय, उद्योग विभाग सब गुरुकुल विश्वविद्यालय से जुड थे। स्वामी जी गुरुकुल का एक नाटा रूप देखना नही चाहते थे। वे चाहते थे हमारे विद्यार्थी विश्व स्तर पर ऊँची से ऊँची उडान भर। बाहर के विश्वविद्यालय और स्वामी जी के विश्वविद्यालय के ब्रह्मचारियो मे सिर्फ यही अन्तर था कि यहाँ के विद्यार्थी नैतिक दृष्टि से साफ-सुथरे होते थे उनका हृदय निमल होता था। वे दुनिया के लिए एक आदर्श होते थें। सूर्य की किरण उनके अग प्रति अग से निकल कर दुनिया को प्रकाश देती थी। गुरुकल विश्वविद्यालय कोई साधारण विश्वविद्यालय नही था यह एक आन्दोलन था। यह दुनिया के लिए प्रेरणा का स्रोत था। वैदिक सस्कृति के महत्त्व को इस विश्वविद्यालय ने दुनिया के सामने रखना था। वैदिक सस्कृति क्या है उसकी महानता को दुनिया के सामने इस प्रकार रखना था कि हमारे पास दुनिया के लोगो के दुःख का, चाहे वे किसी भी मजहब के हो इलाज है। हमारे नुस्खे से सब को आराम मिल सकता है। हमारे इस वृक्ष पर लगे मीठे फलो का स्वाद चखकर, फिर सभी ऐसे वृक्ष खुशी-खुशी लगाते। इस वृक्ष को इतना बडा बनाना था कि दुनिया के लोग इसको छाया मे बैठ सकते। यह था स्वामी जी का गुरुकुल।

आज का गुरुकुल विश्वविद्यालय अधूरा है, उसके महाविद्यालय विभाग को सरकार अनुदान दे रही है और विद्यालय विभाग गुरुकुल को अपनी

बाय पर निर्भर है। दोनो अलग अलग दीखने लगे हैं। विद्यालय से विद्यार्थी निकलकर भटकते हैं। विश्वविद्यालय उनको आश्रम पद्धति से नही सम्भाल पा रहा है। अब विश्वविद्यालय में लगभग सभी विद्यार्थी बाहर से पढने आते हैं जिनका कालेज से आने के बाद विश्वविद्यालय से कोई मतलब नहीं। गुरुजनो से दूर वे माता पिता के सरक्षण में चल जाते हैं। बाहर के कालेज और गुरुकुल विश्वविद्यालय मे अब कोई अन्तर नहीं। स्वामी जी के समय विदेशी सरकार थी। इसलिए सारी अर्थव्यवस्था उन्होंने अपने तरीके से सम्भाली हुई थी। अब सरकार अपनी है। विश्वविद्यालय को एक देशसेवक सस्था मानकर आर्थिक सहायता की जिम्मेदारी सरकार ने अपने ऊपर ली है। यह अच्छा है क्यो कि जो समय सस्था के सचालको को अर्थ यवस्था मे देना पडता था वह समय अब सस्था के विकास मे ही लगेगा। सरकार को विद्यालय विभाग को भी आर्थिक सहायता देनी चाहिए तभी विश्वविद्यालय अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सकेगा।

यह सस्था पूर्ण रूप से देश को समर्पित है इस लिए यह अपना कुछ भी नही समझती जो है देश का है, जनता का है। □

(पृष्ठ २ का शेष)

शक्ति को जिसके द्वारा वह सारे ससार की रक्षा करते हैं किसने समझा है ? ससार में अनगिनत मनुष्य हैं जो मन द्वारा शक्ति के पृथक् पृथक् पहलुओं पर विचार कर सकते हैं लेकिन उनके अन्दर एक मूर्ख नेकनीयत इन्सान जितनी शक्ति भी नही है। सैकडो दार्शनिक विद्वान् हैं जो आकाश के हरेक बाह्य प्रकाश को बडी खूबी से बयान कर सकते हैं। परन्तु यदि वे अपने मन के अन्दर के भावों को प्रकट कर, तो उसके अन्धकार का केवल विचार करने से ही शरीर काप उठता है। मैंने हजारों सुडौल और दृढ शरीरधारी देखे जो कुश्ती के हर किस्म के दाव-पेच मे निपुणता रखते हुए भी दूसरो की तो और रहो, अपने शरीर की रक्षा के योग्य भी न सिद्ध हुए। इसका कारण क्या है ? यही कि केवल ज्ञान से उद्देश्य की प्राप्ति नही नही होती बल्कि जब उसके साथ साधन और कर्त्तव्य सम्मिलित हो जाय, तब मनुष्य-जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करता है। विद्या बिना आचरण के, बजाय सुख के, दु ख का साधन बन जाती है। इसलिये अगर शक्तिमान, प्रकाशस्वरूप परम-रक्षक परमात्मा तक पहुचना है तो शक्ति, प्रकाश और रक्षा धर्म को अपने अन्दर धारण करो।

शब्दार्थ—(ईश्वराणाम्)शक्तिमानो मे(त परम महेश्वर)उस परमशक्ति (देवतानां) देवत ओ मे (त परम देवत) उस बड देव(पतीना)रक्षको में (त परम पतिम्)उस परमरक्षक(भुवनेशम)सारे ससार के पति (ईडयम स्तुति योग्य (देवम्) देव को (पुरस्तात्) सर्व प्रथम (विदाम) हम जानें।

(पृष्ठ ४ का शेष)

आग्नेय श्रद्धानन्द

हुआ। इस काण्ड से कठमुल्ले ढग के कुछ मुस्लिम भाई बौखला उठे। और २३ दिसम्बर १९२६ को सायकाल, जब स्वामी जी, दिल्ली मे अपने आवास पर, रोगशय्या पर लेटे थे तब अब्दुल रशीद नामक एक धर्मान्ध युवक ने इस महान् सुधारक पर धोखे से गोली चला दी। स्वामी जी की दुखद मृत्यु का समाचार सारे ससार मे फैल गया। समस्त राष्ट्रीय नेताओ ने इस काण्ड पर महान् दु ख व्यक्त किया। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी मतो के लोगो ने इस दुखद समाचार को सुनकर आंसू बहाए क्योंकि स्वामी जी ने, अपने व्यवहार से, चतुर्दिक्, मत-सम्प्रदाय जाति की खाइयों को पार कर, सब के दिलो मे अपना स्थान बना लिया था। इस प्रकार वह महान् सन्यासी धर्म की बलि वेदी पर शहीद हो गए।

स्वामी श्रद्धानन्द एक महान् युगचेता सुधारक, अजेय व्यक्तित्व वाले निर्भीक सन्यासी, क्रातिकारी अग्नि सदृश प्रखर मेधा सम्पन्न जननायक थे। वह आजन्म प्रचण्ड तूफान की तरह बुराइयो, अन्ध-विश्वासो, सामाजिक कुरीतियों से निरन्तर जूझते रहे। उनका व्यक्तित्व तूफानो से टकराते-टकराते जुझारू बन गया था। महर्षि स्वामी दयानन्द के महान् जीवन से उत्प्रेरित होकर यह आग्नेय सन्यासी अपने जीवन मे कही पर भी किंचित् भी हताश व निराश नहीं हुआ। इसी क्रातिदर्शक सन्यासी के कार्यकलापो ने भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे अमर शहीदो के जीवन की दिशा निर्धारित की। स्वामी श्रद्धानन्द के समय का 'आर्य-समाज' सोचते ही रोगटे खड़े हो जाते हैं और नेत्र अश्रु पूरित हो उठते हैं। काश ! आज इस वरेण्य व्यक्तित्व वाले आग्नेय सन्यासी के बलिदान दिवस पर हम ! आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता ! महर्षि दयानन्द के सैनिक ! देश और धर्म के लिए कुछ करने का व्रत लेते और उस महान् शहीद की अमर शहादत से कुछ प्रेरणा लेकर देश और धर्म पर मर मिटने का सकल्प लेते ?

पृष्ठ ३४ का शेष)

साथ किया था, वही बर्ताव उसका अब तक विदेशी हितचिन्तको के साथ जारी है।

आर्य सभ्यता के पुराने आदर्श पर मोहित होकर कितने भद्र पुरुष बाहर से मातृभूमि के (भारत के) सेवक बनकर आये, परन्तु आर्य जाति ने उनको अपने से अलग ही रखा और अन्त को वे, प्रबल इच्छा रखते हुए भी भारतमाता की वह सेवा न कर सके जो वे हम से मिलकर कर सकते। ('देख श्रद्धानन्द ग्रन्थ सग्रह पृष्ठ ९३)

पाठकवृन्द ! कितनी मार्मिक पीडा है स्वामी जी के उपरोक्त शब्दो मे ? इस पर भी हम न चेत तो दोष किस का है ? आवश्यकता इस बात की है कि हम शुद्धि को राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में सोच और उसके महत्त्व को जानते हुए उसे और अधिक उत्साह से अपनाव। साथ ही अपना हाजमा इतना तेज रख कि शुद्ध हुए भाइयो को अपने मे पचा सक।

यह सब तभी हो सकेगा जब हम जन्मगत जाति पाति को तिलाजलि दे डालगे। याद रहे, स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा था कि—"मुझे पता नही था कि आयसमाजी लोग जातपात तोडने से इतना भयभीत हैं । मुझे ऐसा पता होता तो मैं गुरुकुल न बनाकर जातपात तोडक मण्डल ही बनाता।" ये शब्द उन्होने जात-पात तोडक मण्डल के वार्षिक उत्सव पर तब कहे थे जब उन्होने देखा कि इसमे एक भी आर्य नेता शामिल नही हुआ। आज जात-पात के विरुद्ध भाषण देने वाले तो बहुत मिल जाते हैं किन्तु व्यवहार मे विशेषतया शादी ब्याह के अवसर पर जात-बरादरी ही ढूढते दिखाई देते हैं। यह स्थिति समाप्त होनी चाहिए। हमारी कथनी और करनी मे अन्तर नही होना चाहिए। यही समय की पुकार है और यही है वह सदेश जो स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस लेकर आया है।

आन्तरिक वस्त्रों में एक मात्र विश्वसनीय नाम...
Groversons
अजमल खान रोड
करोल बाग
नई दिल्ली 110005
फोन 587036 5715878
Paris Beauty PANTY
पैरिस ब्यूटी ब्रा
ग्रोवर सन्स
Shalini BRA
शालिनी ब्रा
Sparsh BRA
स्पर्श ब्रा
alignpoint

चाट मसाला

चाट सलाद और फलों को
अत्यन्त स्वादिष्ट बनाने के लिये
यह बेहतरीन मसाला है।

CHAT MASALA

Excellent for garnishing
Chat Salads and fruit to
provide delicious taste and
flavour

अमचूर

अपनी क्वालिटी तथा शुद्धता के
कारण यह खाने में विशेष स्वाद
और लज्जत पैदा करता है।

AMCHOOR
(Mango Powder)

It adds special tangy
taste and flavour to
your dishes with its
quality and purity

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ अंक ४ | रविवार १ जनवरी १९८९ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८ | पौष २०४५ | दयानन्दाब्द—१६४

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० डालर, ३० पौंड

आर्यसमाज हनुमान् रोड के वार्षिकोत्सव पर—

मानव मात्र के कल्याण के लिए वेदों का पढ़ना आवश्यक है

—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

वेद परमपिता परमात्मा का मनुष्य को सृष्टि के आदि में दिया गया ज्ञान है। यह ज्ञान किसी जाति विशेष, देश विशेष अथवा धर्म विशेष के अनुयायियों के लिए नहीं है, अपितु मानव मात्र के लिए है। इस बात को और स्पष्ट रूप से कहा जाए तो यह ज्ञान प्राणीमात्र के कल्याण के लिए है। इसमें सम्पूर्ण सृष्टि के कल्याण के लिए ज्ञान उपलब्ध है। वेदों में जो भी संज्ञाएं प्रयुक्त हुई हैं, वे किसी व्यक्ति, स्थान का वाची नहीं हैं, वे सभी गुण वाची हैं। हमें वेदों में विहित ज्ञान का अनुसरण अपने जीवन में करना चाहिए। ये विचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने आर्यसमाज हनुमान रोड के ६६ वें वार्षिकोत्सव पर वार्षिकोत्सव से पूर्व १२ दिसम्बर से १८ दिसम्बर तक इसी अवसर पर आयोजित वेद सम्मेलन में व्यक्त किए। स्वामी जी महाराज ने आर्य जनों का आह्वान किया कि वे वेदों को घर-घर तक पहुंचाने के लिए संकल्प लें तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रारम्भ किये धर्मरक्षा महाभियान में सहयोग दें। उत्सव पर आचार्य रामकिशोर वैद्य के ब्रह्मत्व में ऋग्वेद पारायण यज्ञ तथा रात्रि में वेद प्रवचन का आयोजन किया गया। रविवार को आर्यवीर दल दिल्ली के युवकों ने लाठी, भाला, तलवार और योगासनों का सराहनीय प्रदर्शन किया।

इससे पूर्व पंजाब विश्वविद्यालय में दयानन्द चेयर के अध्यक्ष डा० भवानी लाल भारतीय ने वेदों के ऐतिहासिक, सामाजिक एवं व्यावहारिक पहेलियों पर प्रकाश डालते हुए एक खोज पूर्ण वक्तव्य दिया। उनके अतिरिक्त आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वानों पं० शिवकुमार शास्त्री भूतपूर्व संसद सदस्य श्री रामचन्द्र विकल, संसद सदस्य, डा० वाचस्पति जी उपाध्याय, डा० महेश विद्यालंकार, आचार्य पुरुषोत्तम, पं० यशपाल सुधांशु आदि ने अपने अपने विचार प्रकट किये।

अमर हुतात्मा

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर भव्य जलूस

२५ दिसम्बर को दिल्ली की सभी आर्यसमाजों, आर्य विद्यालयों, गुरुकुलों तथा अन्य आर्य संस्थाओं को ओर से अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर विशाल भव्य जलूस निकाला गया। लगभग ५ किलोमीटर लम्बा जलूस स्वामी श्रद्धानन्द बाजार से प्रारम्भ होकर खारी बावली, नया बास, हौज काजी, चावड़ी बाजार, श्रद्धानन्द चौक (घंटाघर), चांदनी चौक, दरीबा होता हुआ लालकिला मैदान में एक सार्वजनिक श्रद्धाञ्जली सभा में परिवर्तित हो गया।

जलूस के पूरे रास्ते को बहुत सुन्दर ढंग से सजाया गया था। जगह जगह आर्य शहीदों के नाम से तोरण द्वार बनाये गये थे। रास्ते में हर मकान और दुकान पर 'ओ३म्' ध्वज मस्ती में लहरा रहे थे। ध्वनि विस्तारकों द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द के जीवनवृत्त पर प्रकाश डाला जा रहा था। इस शहीदी जलूस का भव्य स्वागत श्रद्धानन्द चौक (घण्टाघर) पर दिल्ली की प्रमुख समाज दीवान हाल द्वारा बनाये गये विशाल मंच द्वारा किया गया। मंच पर आर्य जगत् के सर्वमान्य नेताओं तथा विद्वानों ने आकर जलूस को सम्बोधित किया।

लाल किला मैदान में एक विशाल पण्डाल में श्रद्धाञ्जलि सभा प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी पं० रामचन्द्र राव वन्देमातरम् की अध्यक्षता में हुई। सर्वश्री रामचन्द्र 'विकल' सांसद, डा० वाचस्पति उपाध्याय, पं० राजगुरु शर्मा, डा० धर्मपाल आर्य, श्री कृष्ण चन्द्र आर्य, सुश्री सुनीति आर्या तथा घाना से पधारे डा० चार्ल्ज ने अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को भावपूर्ण शब्दों में श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। सभी वक्ताओं ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के पद-चिह्नों पर चल कर अछूतोद्धार (दलितोद्धार) शुद्धिकरण का कार्य निर्भय बनकर करने का आह्वान किया।

आर्य युवा महासम्मेलन

१४ जनवरी ८९ को तालकटोरा स्टेडियम में

भारी संख्या में पधारें।

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

अनुद्वेगकर वाक्य सत्य प्रियहित च यत् ।
स्वाध्यायाभ्यसन चैव वाङ्मय तप उच्यते ॥

—गीता १७।१५

शारीरिक तप जहा अपने आप तक सीमित रहता है वहां वाणी का तप अपना क्षेत्र विस्तृत कर लेता है। वाणी का सम्बन्ध दूसरे प्राणियों से अधिक रहता है। पहली विशेषता वाणी के तप की यह है कि ऐसा तपस्वी जो शब्द मुह से निकाले उसमें कठोरता का लेशमात्र भी न हो। वाणी साधन है एक मनुष्य के विचारो को दूसरे के मन तक पहुचाने का। किन्तु कठोर वचन से बोलने पर असल अभिप्राय नष्ट हो जाता है। जिस मनुष्य तक तुम किसी सचाई को पहुंचाना चाहते हो, अगर वह तुम्हारी बात सुनने के लिए तैयार ही नहीं होता तो तुम्हारे बात करने का क्या लाभ? किन्तु केवल कठोर वचन को छोडने से ही काम नहीं निकलता। कठोर बोलने से तुम्हारे छुटकारे का केवल परिणाम यही हो सकता है कि तुम्हारे भाषण से दूसरा घृणा न करेगा। परन्तु मतलब उस समय तक सिद्ध नहीं होता जब तक वह मनुष्य जिसे तुम अपनी बात सुनाना चाहते हो तुम्हारी तरफ आकृष्ट न हो जावे। इन आकर्षण का कारण क्या हो सकता है? किस आचरण से दूसरे मनुष्य की रुचि स्वय तुम्हारी ओर खिच सकती है? विशेष पुरुषों के भाषण में विशेष प्रकार का रस होता है इसके कारण उनका कठोर भाषण भी सुनने के लिए लोग मजबूर हो जाते हैं। इसका रहस्य क्या है? कृष्ण भगवान् उत्तर देते हैं अपनी वाणी को प्रिय बनाओ, प्रेम भाव उसके अन्दर कूट कूटकर भर दो फिर मनुष्यो के दिल तुम्हारे कथन की तरफ स्वय खिचे चले आवेंगे। जिस कथन के अन्दर यह शक्ति है कि तुम से समाज को दूर फेंक दे उसी कथन के अन्दर यह शक्ति भी है कि वह हृदयो को खीच कर तुम्हें सौंप दे। माना कि कथन में सख्ती न होनी चाहिये और यह भी मान लिया कि तुमने अपने कथन को दूसरो के लिए प्यारा बना दिया, परन्तु जब तक वह कथन हितकारी नही जब तक मनुष्य की भलाई के हेतु से नहीं बोला जाता तब तक उसका वास्तविक फल तुम को नहीं मिल सकता। ससार मे बड बड मधुर भाषी हो चुके हैं जिनके मधुर भाषण का सारा बल मनुष्यों की उन्नति में लगता रहा है। जिस तरह विद्या एक प्रबल शक्ति है उसी तरह वाणी भी एक प्रबल शक्ति है, जिसके द्वारा विद्या का प्रकाश होता है। परन्तु जिस तरह विद्या एक दोधारा वाली तलवार की तरह दोनो तरफ चलती है, वही अवस्था वाणी की है। स्वार्थ सिद्धि के लिए कही हुई प्रिय वाणी ससार में हलचल मचा देती है। परन्तु वही प्रियवाणी जब ससार के उपकार के लिए बोली जाती है तो अनगिनत मनुष्यों के लिए शान्ति का कारण होती है। सत्य यह है कि स्वार्थ सिद्धि के लिए बोली हुई वाणी चाहे कैसी हो प्रिय क्यों न हो, उसका बल केवल दिखलावे का ही होता है, उसका प्रभाव देर तक नहीं र[illegible]। किन्तु जिस वाणी का प्रयोग प्राणधारियों के लिए होता है उसके अन्दर स्वाभाविक बड़ा बल है। क्या वाणी की विशेषताएं यहीं तक ही समाप्त हो जाती हैं? बिल्कुल नहीं। चाहे वाणी कैसी भी कठोरता से रहित हो, चाहे कैसी प्यारी और कितना ही परोपकार करने वाली हो, अगर उसकी नींव सत्य पर नहीं है तो वह मनुष्य का कर्तव्य कर्म नहीं है।

वह सत्य जिस पर सारा ब्रह्माण्ड आश्रित है वही वाणी का भी आधार है। प्रश्न स्वत उत्पन्न होता है—

'क्या दु खित मनुष्य के सम्मुख सत्य बोलकर उसे और दु खित करना हित कहला सकता है?" यह प्रश्न अविद्या के कारण हम मनुष्यों के हृदयों के अन्दर उठता है। यह समझना हमें कठिन नहीं है। जो सत्य नहीं वह सर्वहित के लिए कैसे हो सकता है? हितकारी क्या है? हम यहां तक तो पता नहीं लगा सकते कि हमारे लिए क्या हितकारी है, फिर यह पता लगाना कैसे कठिन है कि दूसरों के लिए हितकारी क्या है? इसलिए हरेक वाणी को उचित अनुमान लगाने के लिए उसे केवल सत्य की कसौटी पर रखना ही पर्याप्त है। अगर सत्य बोलने के लिए वाणी में सख्ती का आना आवश्यक है तो आने दो, किन्तु सचाई को विशेष मनुष्य के हित के लिए कभी भी न्योछावर न करो यह ऋषियों का उपदेश है। उपदेश बड़ा लाभकारी है। किन्तु इस पर चलें कैसे? इसका उत्तर ऋषि मुनि सदैव से एक ही देते आए हैं। जिस तरह दूसरे कर्तव्य कर्मों में दृढ होने के लिए अभ्यास की आवश्यकता है उसी तरह वाणी भी तभी ठीक हो सकती है जब कि उसकी पवित्रता के लिए विशेष अभ्यास किया जावे, और वह स्वाध्याय से बढकर और अभ्यास हो नहीं सकता। नित्य वेदों का अर्थसहित पाठ करना ही स्वाध्याय कहलाता है। आज वेदार्थ का समझना तो दूर रहा आर्यों में से दस प्रतिशतक भी वेदों का पाठ तक नहीं कर सकते। ऐसी अवस्था में उन को चाहिए कि ऋषिप्रणीत धर्मग्रन्थों का पाठ नियम से करें। प्रातःकाल ब्राह्म मुहूर्त में उठकर शारीरिक व्यायाम और स्नान के पश्चात् पहला कार्य ब्रह्मयज्ञ है। परमात्मा के सत्सग से मन को स्थिर करके शारीरिक स्वास्थ्य के लिए देवयज्ञ अर्थात् अग्निहोत्र के पश्चात स्वाध्याय का समय है। यदि और धर्मग्रन्थ नहीं समझ सकते तो न्यून से न्यून जिस भाषा को समझ सकते हैं उसमें लिखे हुए सत्पुरुषो के उपदेश का पाठ अवश्य किया करें। आर्यसमाज के सदस्यों के लिए ऋषि दयानन्द-कृत सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका बडा रास्ता दिखाने का काम दे सकते हैं। जो मनुष्य इससे आगे बढना चाहते हैं वे वेद-भाष्य का विचार आरम्भ कर सकते हैं। स्वाध्याय मनुष्य को गिरते-गिरते बचा सकता है। इसलिए वाणी को कठोरता रहित करने उसे प्रिय हितकारी बनाने और सत्य के सीधे सरल मार्ग से न डगमगाने देने के लिए आवश्यक है कि स्वाध्याय का कभी त्याग न किया जाय। हर देश प्रत्येक सम्प्रदाय और प्रत्येक समय में महापुरुषों ने स्वाध्याय पर बडा भारी बल दिया है। वाणी के तप के बिना शारीरिक तप की सिद्धि नहीं हो सकती इसलिए वाणी को पवित्र करो। उसे सत्य मे साजकर प्रिय और हितकारी बनाओ जिससे ससार के अन्दर सुख और शान्ति का राज्य आवे और हम सब प्रेम-पूर्वक एक दूसरे के आत्मिक बल को बढाते हुए मुक्तिधाम में परमानन्द लाभ करने के अधिकारी बन सकें।

शब्दार्थ—(अनुद्वेगकरम) कठोरता रहित (सत्य प्रियहित च) सत्य प्रिय तथा हितकारी (यत—वाक्यम) वचन बोलना (च) और (स्वाध्यायाभ्यसनम) नियम से उत्तम ग्रन्थों का पाठ करना (वाङ्मय तप) यह वाणी का तप (उच्यते) कहलाता है।

अन्तरिक्ष मे लोक बसाये

—देवनारायण भारद्वाज

चलो चक्र भगवान् लोक में, कर भ्रमण मगन मन भक्ति कर।
अपनी सारी शक्ति लगाकर, हम चलो पिता की भक्ति कर॥
अति उग्र सूर्य दृढ धरती को
सब अन्तरिक्ष की जगती को
धारण किया मधुर सुख जिसने
दुःख रहित मोक्ष की मस्ती को
यदि गोद मोक्ष की पानी है, तो परम पिता की भक्ति कर।
अपनी सारी शक्ति लगाकर, हम चलो पिता की भक्ति करें॥
अन्तरिक्ष में लोक बसाय
वायुयान सा जिन्हें उडायें
जैसे पक्षी उडें व्योम में
वैसे ये चक्रमण कराय।
आनन्द लोक तक जाने को, सुख रूप ओ३म् की भक्ति करें।
अपनी सारी शक्ति लगा कर, हम चलो पिता की भक्ति करें॥
परमेश वही सुखदायक है
प्रभु वही कामना नायक है
जग निर्माता और नियन्ता
वह सञ्चालक गति दायक है।
यदि उड कर उस तक जाना है, तो हृदय लोक में भक्ति करें।
अपनी सारी शक्ति लगाकर, हम चलो पिता की भक्ति करें॥

ओ३म्
आर्य सन्देश

दिवंगत आर्य श्रेष्ठी

जहां भगवान् का, श्रेष्ठ जनों का विस्मरण हो आपदा है, वहीं उनका स्मरण सच्ची सम्पदा है।

प्राय हम उन्हें भूल जाते हैं, जिन्हें भूलना नहीं चाहिये, और उन्हें याद रखते हैं, जिन्हें भूल जाना चाहिये। थोडा उपकार कर हम बार-बार बखान करते हैं और भूलना नहीं चाहते। यही नहीं अपितु यदि कोई हमारा बुरा करता है तो उसे हम सदैव याद रखते हैं। ये दोनों बातें हमें अखरने में खटकती रही हैं। प्रकाश का मार्ग तो यह है कि हम दूसरों के प्रति की भलाई को भूल जाय और दूसरों द्वारा की गयी अच्छाइयों को सदैव याद रखें। हम गम्भीरता से विचार करें कि जिन्हें नहीं भूलना था उन्हें भूल बैठे, और भूल जाने की बातों को याद करते रहते हैं।

हम भूलते जा रहे हैं अन्यानेक बातों के साथ-साथ ऐसे "आर्य श्रेष्ठियों" को जो पिछले सौ वर्षों में दिवंगत हो गये—जिन्होंने ऋषिवर दयानन्द और उनके मिशन आर्यसमाज के मन्तव्यों के प्रचार प्रसार में अपना सर्वस्व होम कर दिया—बिना किसी निजी स्वार्थ के। यह कैसी विडम्बना है कि उनमें से बहुतों के नाम भी आज हमारी पीढ़ी को पता नहीं है। उन श्रेष्ठ आर्यजनों को हमने अपनी भूल की धूल से ढक दिया है। इसका एक कारण यह भी जान पड़ता है कि हमारा ध्यान अब राजनीतिज्ञों पर केन्द्रित होता जा रहा है। ये राज-पुरुष चाहे इनका सम्बन्ध वैदिक-सिद्धान्तों और आर्यसमाज से दूर तक का भी न रहा हो, आर्य विद्वानों, त्यागी और तपस्वियों तक को उपदेश देने लगते हैं, और उनको सही मार्ग भी दिखाने लगते हैं परन्तु वास्तविकता यह है कि आर्यजगत् के श्रेष्ठ आर्यजन अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बल पर सदैव अमर रहेंगे, चाहे हा उनके नाम राजनीति की धुन्ध में साफ-साफ न दिख पाये, परन्तु निस्सन्देह उनका यश स्थायी रहेगा।

जीवित व्यक्तियों का वृत्त जान लेना जितना सरल है, उतना ही कठिन और श्रम साध्य है दिवंगत व्यक्तियों का भूला-बिसरा, जीवनवृत्त संकलित करना। फिर भी हमारा यह प्रयास होगा कि 'आर्यसन्देश" अपने प्रत्येक अंक के द्वारा अपने उन 'दिवंगत आर्य श्रेष्ठियों"—जिन्होंने मानव-मात्र के कल्याण हेतु वैदिक मान्यताओं के आधार पर अपने उपदेशों से, भाषणों से और साहित्य से, आर्य जगत् को आलोकित किया है—का संक्षिप्त व्यक्तित्व एवं कृतित्व अपने पाठकों के सामने लाये हमारा यह भी प्रयास रहेगा कि आर्य श्रेष्ठियों के परिचय उनके जन्म माह अथवा स्वर्गारोहण माह में प्रकाशित होने वाले अंक में ही दें।

प्रबुद्ध पाठकों से भी हमारी विनम्र प्रार्थना है कि वे हमें अपने उपयोगी सुझावों के साथ-साथ दिवंगत आर्य श्रेष्ठियों के लिये उपयुक्त सामग्री भी भेजकर, इस यज्ञ में अपनी आहुति देते हैं।

दिवंगत आर्य श्रेष्ठी

श्री अलगूराय शास्त्री

श्री शास्त्री जी का जन्म २९ जनवरी सन् १९०० को उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जनपद के 'अमिला' ग्राम में हुआ था। आपने राष्ट्रीय गतिविधियों तथा शिक्षा के क्षेत्र में अनेक क्रांतिकारी कार्यों में भाग लेने के साथ-साथ समाज सुधार की अपनी प्रवृत्तियों में कमी नहीं रखी और आर्यसमाज के क्रांतिकारी-कार्यों में सक्रिय रूप से जुड़ गये। विविधविषयीय सत्संगों में आपके भाषण बड़ी ही रुचिपूर्वक सुने जाते थे। आप जहाँ कुशल कवि और गम्भीर समीक्षक थे वहीं दार्शनिक विषयों पर भी आपका पूर्ण अधिकार था, जिसका प्रमाण आपकी रचनाओं ऋग्वेद दर्शन तथा 'ऋग्वेद रहस्य' "वेदान्त-दर्शन" (अप्रकाशित) में भली भांति मिल जाता है।

शास्त्री जी अनेक वर्षों तक आर्य जगत् की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान रहे। जिन दिनों आप लोकसभा के सदस्य थे, तब आपने आर्यसमाज के अनुरोध पर पंजाब 'हिन्दी आन्दोलन' के साथ सत्याग्रह होने पर फिरोजपुर जेल में किये गये अत्याचारों के सम्बन्ध में एक ऐतिहासिक प्रतिवेदन प्रधानमन्त्री प० जवाहरलाल नेहरू को दिया था।

मेरठ की सुप्रसिद्ध शिक्षा-संस्था गुरुकुल डौरली" की स्थापना में आपका प्रमुख सहयोग रहा। बाद में बहुत समय तक आप इस संस्था के कुलपति भी रहे। स्वतन्त्रता-आन्दोलन में आपको अनेक बार कारावास भुगतना पड़ा, वहां भी आपकी लेखनी साहित्य-सर्जन का कार्य करती रही।

संपादक के नाम पत्र

आपने बहुत ठीक किया जो "एक गुमनाम" महिला का पत्र उपर्युक्त विषय पर अपनी प्रतिष्ठित पत्रिका में प्रकाशित किया।

मैं इस देवी के स्वर में काङ्गडी ग्राम की महिलाओं बेटियों, बहनों माताओं का स्वर जोड़ना चाहूँगा। आपको विदित होगा कि गत ८ वर्षों के कार्यक्रम के फलस्वरूप काङ्गडी ग्राम के निवासियों की आय १० से १४ रुपये प्रतिदिन तक की बढ़ी है। लेकिन सरकार ने वहीं एक शराब का ठेका खोल दिया है जिस से वहां की महिलाओं को नवीन प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ रहा है। मैं जब गत बार उस ग्राम में गया था। तो महिलाओं ने मुझे घेर लिया और कहा कि आप सत्याग्रह करें हम आपके साथ हैं। मैं उन्हें अगले दिन कलक्टर महोदय के पास ले गया। उन दिनों मेरठ, मुजफ्फर नगर में साम्प्रदायिक दंगे हो रहे थे। कलक्टर साहब ने आश्वासन दिलाया कि स्थिति सुधरने पर इधर ध्यान देंगे। लेकिन अभी तक सिर्फ कागजी घोड़ दौड़ रहे हैं सुना है। अब अदालत ने सरकारी आदेश पर स्थगन आदेश जारी कर दिया है और ठेका बदस्तूर कायम है। मैंने यह मामला गुरुकुल कांगडी की शिष्ट परिषद् में भी उठाया, परन्तु कुछ हुआ नहीं।

महर्षि दयानन्द के भक्ष्य अभक्ष्य विचारों को तो हम सब ने पढ़ा है। मैं "गुमनाम" बहन से सहमत हूं कि शराब, स्मैक का दानव अब देश के युवक युवतियों को भक्षण करने जा रहा है। यह खतरा किसी भी विदेशी आक्रमण से अधिक खतरनाक और गम्भीर है।

गांधी जी ने स्वराज्य आन्दोलन में इस कार्यक्रम को प्रमुखता दी थी। उनके चेले तो अब उसे भूल गये हैं। क्या दयानन्द और श्रद्धानन्द के चेले भी उसी तरह अपने गुरुओं का संदेश भूल जायेंगे?

मैं मैजिस्ट्रेट रहा हूँ दावे से कह सकता हूं जितने भी अपराध होते हैं। शराब के नशे में होते हैं। शराब बंदी से अपराध भी कम होंगे देश का भविष्य उज्ज्वल होगा। सरकार पर जोर डालना चाहिए कि देश से शराब का भूत खदेड़ दिया जाय।

आर्य संदेश इस से बढ़कर क्या संदेश देगा? यही आज की मांग है।

भवदीय
बलभद्र हूजा
A १५-A विजय पथ, जयपुर-३०२००४

परोपकारिणी सभा, अजमेर का निर्वाचन सम्पन्न

१५ नवम्बर १९८८ को परोपकारिणी सभा अजमेर का निर्णायक चुनाव स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज तथा श्री गजानन्द आर्य को सर्वसम्मति से प्रधान तथा महामन्त्री चुना गया। पूरी कार्यकारिणी निम्न प्रकार निर्वाचित हुई—

प्रधान— सर्वदानन्द जी महाराज
वरिष्ठ उपप्रधान— स्वामी ओमानन्द जी महाराज
उपप्रधान— श्री ओंकारनाथ जी आर्य
उपप्रधान— श्री भवानीलाल जी भारतीय
महामन्त्री— श्री गजानन्द जी आर्य
संयुक्तमन्त्री— श्री कर्मचन्द जी गुप्त
कोषाध्यक्ष — श्री ओमप्रकाश जी झवर
पुस्तकाध्यक्ष— प्रो० धर्मवीर जी

क्या हिन्दुस्तान में हिन्दू होना अपराध है।

एक नम्बर कम होने पर भी किसी को दाखला न मिल सके, इसके कठोर प्रबंध कर दिए गए। सिफारिश का नामोनिशान मिटा दिया गया था। अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को छोड़कर शेष सब बिना धार्मिक व अन्य भेदभाव के योग्यता के आधार पर दाखिला पाते थे।

परन्तु सरकार ने १९८५ में केवल अल्पसंख्यकों को प्रवेश देने के लिए दस पोलिटेक्निक देश में खोल दिए। राज्य सभा में ४ दिसम्बर, १९८५ को दिए गए उत्तर के अनुसार इनमें से दो पोलिटेक्निक दिल्ली में और एक-एक अलीगढ़, लखनऊ, मुरादाबाद, अजमेर, गोवा, भोपाल, रांची और किलाकराई (तमिलनाडु) में खोला गया है। अल्पसंख्यकों के लिए और भी पोलिटेक्निक खोलने पर बल दिया जा रहा है।

७० प्रतिशत अधिक अंक प्राप्त किए बिना पोलिटेक्निक में दाखिला असंभव है। परन्तु मुस्लिम व ईसाई विद्यार्थी को उपयुक्त पोलिटेक्निकों में, जहाँ दाखिला उनके लिए सुरक्षित है काफी कम अंक प्राप्त करने पर भी दाखिला उपलब्ध है।

देश में हिन्दुओं की जनसंख्या ८४ प्रतिशत है जिसमें से अनुसूचित जातियों को छोड़कर शेष ७० प्रतिशत है। इन ७० प्रतिशत में से कम से कम ५० प्रतिशत ऐसे हैं जो मुसलमानों से भी अधिक गरीब हैं और झुग्गी-झोंपड़ी गंदी बस्तियों, ग्रामीण क्षेत्रों, कटरों या रैनबसेरों में रहते हैं। ३५-४० करोड़ की इस जनसंख्या के लोग अपना पेट काटकर, अपना खून सुखाकर अपनी सन्तान को पढ़ाएं और १२ वीं कक्षा में उसके ७० प्रतिशत अंक भी आ जाएं परन्तु उसे पोलिटेक्निक में दाखिला न मिले और उसी के साथ पढ़ने वाले मुस्लिम विद्यार्थी को कहीं कम अंक मिलने पर भी दाखिला मिल जाए तो उस हिन्दू विद्यार्थी के मन पर क्या बीतेगी। क्या उसके मन में यह स्वाभाविक प्रतिक्रिया नहीं होगी कि हिन्दुस्तान में हिन्दू होना अपराध है।

केन्द्रीय व प्रादेशिक सेवाओं पुलिस सेवाओं, बैंकिंग सेवाओं व अन्य कोटियों सेवाओं के लिए प्रतियोगी परीक्षाएं होती हैं। इनमें केवल मुसलमानों का प्रतिशत कम हो, ऐसी बात नहीं है। पब्लिक स्कूलों में पढ़ने वाले, कई ट्यूशन लगा सकने वाले, अमीर घरानों, प्रशासनिक सेवाओं के उच्च पदस्थ अधिकारियों की सन्तानें ही अधिकांशतः इन परीक्षाओं में सफल होती हैं।

इन परीक्षाओं की तैयारी एक विशेष प्रकार की होती है। इसके लिए कुछ प्रशिक्षण संस्थाएं हजारों रुपये प्रति मास लेकर लिखित एवं मौखिक परीक्षाओं की तैयारी कराती हैं।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने जुलाई १९८४ में 'अल्पसंख्यकों की प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए प्रशिक्षण कक्षाओं" की योजना तैयार की जिसका उद्देश्य केन्द्रीय व राज्य सरकारों की सेवा भर्ती की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अल्पसंख्यक समुदाय के व्यक्तियों को तैयार करना घोषित किया गया।

इसके अनुसार प्रत्येक विश्वविद्यालय में भारतीय प्रशासनिक सेवा (आइ० ए० एस०), भारतीय विदेश सेवा (आई० एफ० एस०) व अन्य अखिल भारतीय सेवाओं के लिए १०० अल्पसंख्यक विद्यार्थी, पी० एस० सी० व अन्य इसी स्तर की सेवाओं के ५० विद्यार्थी व बैंकिंग, एल आई. सी आदि की प्रतियोगी परीक्षा के लिए ३०० विद्यार्थी प्रशिक्षित किए जाते हैं और कालेजों में प्रत्येक कालेज में ५० अल्पसंख्यक विद्यार्थी लिए जाते हैं।

लोक सभा में २७ अप्रैल, १९८८ को श्री प्रमोद महाजन व श्री शंकर सिंह वघेला के प्रश्न के उत्तर में श्री एल पी शाही ने बताया कि दस विश्वविद्यालयों—आगरा, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, भोपाल, कालीकट गौहाटी, गोरखपुर, जामिया मिलिया इस्लामिया, लखनऊ व मेरठ विश्वविद्यालयों तथा इनके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश के पाँच, केरल के दो, मध्य प्रदेश, गुजरात व तमिलनाडु के एक एक कालेज में मुस्लिम व ईसाई परीक्षार्थियों के लिए यह प्रशिक्षण कक्षाएं प्रारम्भ हो चुकी हैं और लगभग ३० लाख रुपये उनके लिए अनुदान दिया जा चुका है। शेष विश्वविद्यालयों व कालेजों में यह कक्षाएं शीघ्र प्रारम्भ की जायेंगी।

स्थिति यह है कि देश भर में मुस्लिम, ईसाई व अन्य अल्पसंख्यकों को प्रमुख केन्द्रीय व सरकारी पदों, पुलिस बैंक, इन्श्योरेंस आदि की प्रतियोगी परीक्षाओं की तयारी के लिए मुफ्त प्रशिक्षण प्राप्त होता है और उनसे अधिक गरीब, अधिक विपन्न हिन्दू या तो हजारों रुपये खर्च कर यह प्रशिक्षण प्राप्त करें अथवा पैसे की कमी के कारण प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने का सपना ही छोड़ दें।

एक साथ पढ़ने वाले, एक जैसी आर्थिक स्थिति वाले अपने मुसलमान मित्र को निःशुल्क यह प्रशिक्षण प्राप्त करते देख लाचार हिन्दू परीक्षार्थी के मन में यह भाव क्यों पैदा नहीं होगा कि उसका कसूर केवल इतना है कि हिन्दुस्थान में वह हिन्दू होकर पैदा हुआ।

तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने ११ मई, १९८३ को सभी केन्द्रीय मन्त्रियों को पत्र लिखकर अपने १५ सूत्री अल्पसंख्यक कार्यक्रम की घोषणा की थी जिसके अनुसार केन्द्रीय पुलिस दलों, प्रदेशों की पुलिस सेवाओं, बैंकों, रेलवे, पब्लिक सेक्टर संस्थाओं में मुसलमानों, ईसाइयों की भर्ती में विशेष बल और ध्यान देने चयन समितियों में भी अल्पसंख्यकों को रखने, बैंकों से अल्पसंख्यकों को ऋण की विशेष सुविधाएँ देने के निर्देश दिए गए थे।

प्रधानमन्त्री ने इन १५-सूत्री कार्यक्रम के अतिरिक्त और भी निर्देशों के साथ यह भी घोषणा कि १५ सूत्री कार्यक्रम के अतिरिक्त और भी कदम उठाए जायगे। गृह मन्त्रालय में एक विशेष अल्पसंख्यक सेल खोला जायेगा आदि-आदि। श्रीमती गांधी ने विश्वास प्रकट किया कि १५ सूत्री कदमों व अन्य पगों से, जो बाद में उठाए जायेंगे मुसलमान व अन्य अल्पसंख्यक राष्ट्रीय जीवन के सभी पहलुओं में पूरी तरह भाग लेंगे और राष्ट्रीय एकता के कार्य को आगे बढ़ायेंगे।

अल्पसंख्यक आयोग पहले ही था। १९८३ के बाद गृह मन्त्रालय में अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ की स्थापना की गई, शिक्षा मन्त्रालय में अल्पसंख्यक सेल बनाया गया, केन्द्र में प्रधानमन्त्री की अध्यक्षता में १५ सूत्री निर्देशों की मानिटरिंग के लिए अल्पसंख्यक समिति और प्रदेशों में मुख्य मन्त्रियों की अध्यक्षता में ऐसी समितियां गठित की गई, जिनकी बैठक अनिवार्य रूप से तीन महीने में एक बार और जिला कलक्टर व डिविजनल कमिश्नरों की अध्यक्षता में पुनर्विलोकन अल्पसंख्यक समितियों की बैठक एक मास में एक बार करने का नियम बना दिया गया। इन सब समितियों में तथा लोक सभा, राज्य सभा में प्रश्नोत्तरों व बहसों में बारबार अल्पसंख्यकों के विशेष अधिकारों व सुविधाओं के प्रश्न उठाए गए जिससे हिन्दुओं से अधिक अधिकार व सुविधाएं अल्पसंख्यकों को मिलती चली गई।

रिजर्व बैंक ने सभी बैंकों को निर्देश दिए कि अल्पसंख्यक यदि ऋण के लिए आवेदन दें तो उन्हें तुरन्त ऋण देने के लिए विशेष पग उठाए जायें। आम मामलों में बाकी हिन्दुओं के मामले में ऋण के लिए मकान, जायदाद या आभूषणादि गिरवी रखे जाते हैं, परन्तु अल्पसंख्यकों के लिए यह नियम बना दिया गया कि जो ऋण उन्हें दिया जाये, उस ऋण से कारोबार करके ऋण चुकता किया जा सकता है अथवा नहीं, केवल यह देखा जाये।

सभी बैंकों को यह भी निर्देश दिए गए हैं कि बैंकों में भर्ती में अल्पसंख्यकों को भर्ती के लिए विशेष प्रयत्न किए जायें। साक्षात्कार समितियों में अल्पसंख्यक समुदाय को अवश्य स्थान दिया जाय।

देश में ४० जिले चुने गए हैं जिन्हें पहले तो अल्पसंख्यक प्रमुख के जिले घोषित किया गया। जब लोक सभा में इस पर आपत्ति उठाई गई कि जिन जिलों में मुसलमानों की संख्या १५ या २० प्रतिशत है वह मुस्लिम प्रमुख के जिले कैसे हो गए? इस पर उन जिलों का नामकरण अल्पसंख्यक प्रमुख के स्थान पर अल्पसंख्यक सकेन्द्रित जिले कर दिया गया है। इनमें से १३ जिले उत्तर प्रदेश के, ८ प० बंगाल के, ५ केरल के, ३ बिहार के, ३ कर्नाटक के, २ महाराष्ट्र के, २ आन्ध्र प्रदेश के, एक-एक हरियाणा मध्य प्रदेश राजस्थान व गुजरात का है।

१८ मार्च, १९८८ को लोक सभा में मुस्लिम लीग के श्री जी० एम० बनातवाला के प्रश्न के उत्तर में श्री एदुआर्द फलेरो ने बताया कि इन ४० जिलों में एक एक बैंक को प्रमुख रूप से अल्पसंख्यकों की जिम्मेदारी दी गई है। इन बैंकों ने अल्पसंख्यकों को ऋण प्रदान को मानिटर करने के लिए 'स्पेशल आफिसरों" की नियुक्ति कर दी है। इसके साथ ही बैंकों में अल्पसंख्यकों की भर्ती को मानिटर करने के लिए सपर्क अधिकारियों की भी नियुक्ति हो चुकी है।

श्री फलेरो ने आगे बताया कि सभी बैंकों को कहा गया है कि अल्पसंख्यकों में ऋण के प्रवाह को बढ़ाने के लिए यह पग और उठायें।

क्या हिन्दुस्तान में हिन्दू होना अपराध है।

(१ प्रत्येक बेंक में अल्पसख्यको मे ऋण प्रवाह को मानिटर करने के लिए एक विशेष कक्ष गठित किया जाये।

(२) प्रदेश स्तरीय बेंकिंग के समितियो तथा जिला सलाहकार समितियो की बैठको में अल्पसख्यको को ऋण दिलाने में हुई प्रगति की निरतर समीक्षा की जाये।

(३) जहा कही भी अल्पसख्यकों आबादी घनी है और विशेषकर इन ४० जिलों में सरकार के गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमो का विशेष प्रचार किया जाये।

विशेष रूप से नियुक्त अधिकारी अल्पसख्यक समुदाय में बेंकों के ऋण प्रदान कार्यक्रमों का प्रचार करें और ब्राच मेनेजरो के सहयोग से अल्पसख्यको के हित के लिए उपयुक्त योजनाए तैयार करें।

४० जिलों के बेंको द्वारा अल्पसख्यको को दिए गए ऋण का ब्यौरा निर्धारित प्रफोर्मा पर प्रत्येक तीन महीने मे तथा शेष सब बेंकों द्वारा प्रत्येक छह महीनों मे भेजा जाये।

इसके अतिरिक्त सरकार ने एक कक्ष की स्थापना की है जो देखेगा कि १५—सूत्री कार्यक्रम के दिशानिर्देशों के अनुसार अल्पसख्यकों की नौकरियो मे भर्ती हो रही है अथवा नहीं।

यह तो समझ में आता है कि सरकार इस बात का प्रबन्ध कर कि धर्म, मजहब के आधार पर भेदभाव न हो, परन्तु एक ही क्षत्र मे रहने वाले एक ही कारोबार के लिए आवेदन देने वाले हिन्दु को ऋण न मिले और मुसलमान को तुरन्त ऋण मिल जाये तो गरीब बेरोजगार हिन्दू के रूप में पैदा होकर उसने क्या अपराध किया है।

पुलिस में भर्ती के लिए अब विशेष आकर्षण पैदा हो गया है। लिखित परीक्षा में प्रत्येक प्रदेश में हजारों नौजवान बैठते हैं। फिर साक्षात्कार होता है। डाक्टरी परीक्षा होती है। कद, भार शारीरिक बनावट की नाप, लेखा-जोखा होता है। इस पर भी आम मान्यता है कि २०-२५ हजार रुपये की रिश्वत दिए बिना अब पुलिस की नौकरी मिलती नहीं। प्रधानमन्त्री के १५-सूत्री कार्यक्रम व दिशानिर्देशों के अन्तर्गत प्रादेशिक पुलिस सेवा में व केन्द्रीय रिजर्व पुलिस सीमा सुरक्षा बल आदि मे अल्पसख्यको विशेषकर मुसलमानों की भर्ती की विशष मुहिम चलाई जा रही है। यद्यपि उनके लिए प्रतिशत निश्चित नही किया गया परन्तु इतनी पर्याप्त सख्या में उनकी भर्ती के आदेश दिए गए हैं कि पुलिस बल हिन्दू मुस्लिम मिलाजुला प्रतीत हो। योग्यता के आधार पर भर्ती के स्थान पर धार्मिक आधार पर भर्ती सविधान के विरुद्ध तो है ही, हिन्दुओ के लिए क्षोभकारक एव ग्लानिकारक भी है।

इसी प्रकार मुस्लिम निजी कानून मे सरकार द्वारा दखल न देने से भी विडम्बना पूर्ण और भेदभाव पूर्ण स्थिति पैदा हुई हैं। भारत के सभी नागरिको के लिए एक समान नागरिक सहिता का सिद्धात सविधान के निदेशक सिद्धान्तो में सम्मिलित है। दण्ड प्रक्रिया सहिता यद्यपि भारत के सब नागरिको के लिए एक समान है परन्तु नागरिक सहिता मुसलमानों के लिए पृथक है और सरकार ने सविधान के निदेश के अनुसार उसे एक समान बनाने के स्थान पर शाहबानो केस में तो दण्ड प्रक्रिया सहिता में ही सशोधन कर कठमुल्लापन के आगे घुटने टेक दिए।

१९६७ में मेरे मुख्य कार्यकारी पार्षद बनने के कुछ ही दिनो बाद एक घटना हुई कि दिल्ली के एक प्रसिद्ध नेता ने तीसरा विवाह कर लिया। पहली पत्नी के रहते दूसरा विवाह कानूनन अपराध है। उसकी पहली पत्नी की ओर से एक सम्बन्धी मेरे पास आये और उन्होंने अनुरोध किया कि प्रशासन हस्तक्षप करे और उस विवाह को अवैध करार अथवा दें विवाग मेंने कानून को रिपोर्ट देने को कहा। उस नेता को पता चला और उसकी ओर से उनके एक वकील मित्र मेरे पास आए। उन्होंने कहा कि विवाह तो हो चुका है। उसकी पहली पत्नी ने न्यायालय में आपत्ति नही की है और फिर उसने कहा कि "हमारे पास दिल्ली की जामा मस्जिद के इमाम का सर्टीफिकेट है कि उक्त विवाह से पूर्व वह मुसलमान बन चुका था। अब यदि आप चाहते हैं कि वह सदैव के लिए मुसलमान बन जाए तो आप कार्यवाही करें।"

इस घटना के बाद तो इस प्रकार के बीसियो केस मेरे ध्यान में आए। लाजपतनगर की आर्यसमाज के प्रतिनिधि मेरे पास आए कि उनके क्षत्र की एक युवती के पति ने दूसरा विवाह कर लिया है। युवती और उसके बच्चो को घर से निकाल दिया है। शिक्षा विभाग ने जब उसके विरुद्ध कार्यवाही प्रारम्भ की तो उसका बचाव था कि विवाह से पहले वह मसलमान वन गया था। सरकारी कर्मचारी बिना अनुमति दूसरा विवाह नही कर सकता।' इस नियम के आधार पर जब कार्यवाही की गई तो उसने भी वह हथियार इस्तेमाल किया कि यदि उसके विरुद्ध कार्यवाही की गई तो वह हमेशा के लिए मुसलमान बन जायगा। न जाने कितने ऐसे कर्मचारियो के मामले मेरे पास आये जो दूसरा विवाह करने के लिए मुसलमान बन गए थे।

एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह अनैतिक है अनुचित है महिलाओं पर अत्याचार है, अन्याय है और उसे सहन नहीं करना चाहिए। परन्तु एक व्यक्ति हिन्दु है तो एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह नहीं कर सकता। परन्तु वही व्यक्ति यदि अपना नाम मुसलमान रख ले, इमाम से मुसलमान होने का प्रमाण पत्र ले आए तो उसे खुली छूट है कि एक नही दो नहीं, तीन पत्नियो के रहते चौथा विवाह कर ले। भेदभाव दूर करने का हल यह नही कि हिन्दुओ को भी दो या अधिक विवाह करने की अनुमति दी जाये अपितु मुसलमानो के इस अवांछित अधिकार पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए।

इस प्रकार के भेदभाव पक्षपात पूर्ण रवैये से कुछ समय के लिये अल्पसख्यको को लाभ हो सकता है। यह भी ठीक है कि हिन्दू-हिन्दू के नाते प्राय नही सोचता, परन्तु सहन करने की भी एक सीमा होती है। अपने ही देश मे जहा वह ८६ प्रतिशत है यदि उनसे द्वितीय श्रेणी के नागरिक का व्यवहार किया जायगा तो भारत में सेक्युलरिज्म जो हिन्दुओं की उदारता के कारण कायम है कब तक चल पायेगा?

गुरुकुल कागडी फार्मेसी मे प्रो० शेरसिंह जी का स्वागत

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के मन्तव्यों के आधार पर शिक्षा देने के लिए गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी। स्वामी जी महाराज ने वेदो पर आधारित शिक्षा पद्धति के प्रचार हेतु अनेक कष्ट सहन किए। उनका विश्वास उस पुरातन पद्धति में था, जिसमे ब्रह्मचारी आचार्य के सान्निध्य मे रह कर शिक्षा ग्रहण करता है। गुरुकुल में हिन्दी संस्कृत, विज्ञान, गणित और दर्शन आदि की शिक्षा के साथ व्यावहारिक शिक्षा का भी प्रावधान किया था। फार्मेसी की स्थापना इसी उद्देश्य से हुई थी। ये उद्गार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय कुलाधिपति प्रोफेसर शेरसिंह जी ने गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए कहे। प्रोफेसर साहब ने कहा कि फार्मेसी के कर्मचारियों का गुरुकुलीय शिक्षा मे विशेष योगदान है। उनके परिश्रम के कारण फार्मेसी की जो बचत होती है, उसमे गुरुकुल कांगड़ी और कन्या गुरुकुल देहरादून को आर्थिक सहायता दी जाती है। गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के कर्मचारियों की ओर से प्रोफेसर साहब का स्वागत फार्मेसी मे १७ दिसम्बर १९८८ को किया गया था। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध, इतिहासकार पूर्व कुलपति एवं कुलाधिपति डा सत्यकेतु विद्यालंकार ने इतिहास के उन क्षणों को स्मरण किया। जब गुरुकुल कांगड़ी के गंगा पार के पुराने भवनो के एक छोटे से कमरे मे फार्मेसी की स्थापना हुई थी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने कहा कि गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी की दवाइयों की मार्केट मे भारी माग है। इसका बाजार मे अपनी साख है, इसके लिए कर्मचारी बधाई के पात्र है फार्मेसी निरन्तर आपूर्ति करने पर भी जनता की माग को पूरा नही कर पाती। हमारा प्रयास होना चाहिए कि उपलब्ध सुविधाओ के अनुसार उत्पादन को बढाया जाए। उन्होने यह भी बताया कि सभी व्यावसायिक सस्थानो मे कुछ समस्याए चलती रहती हैं। अच्छा व्यावसायिक सगठन वही होता है जहा प्रबन्धको और कर्मचारियो मे सही तालमेल रहता है। इस अवसर पर कर्मचारी सगठनो की ओर से प्रोफेसर साहब का स्वागत किया गया।

आर्यसमाज लक्ष्मीनगर का वार्षिकोत्सव

हमारा मन जिस प्रकार जाग्रत अवस्था में कर्म करता है, उसी प्रकार वह सुषुप्तावस्था मे भी कार्य करता है। हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह हमारा मन शिवसकल्पो वाला हो। वे सभी बात जो केवल अपने कल्याण तक सीमित नही हैं बल्कि जिनमें दूसरो का कल्याण भी निहित है, शिवसकल्प के अन्तर्गत आती है। आर्यसमाजों के नियमो मे यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि हमें केवल अपनी ही उन्नति मे सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए बल्कि दूसरो की उन्नति के लिए भी प्रयत्नशील रहना चाहिए। यह प्रयत्नशीलता शिव सकल्प का अग है। ये विचार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने ११ दिसम्बर १९८८ को आर्यसमाज लक्ष्मीनगर विस्तार के वार्षिकोत्सव पर व्यक्त किए। इस अवसर पर डा नरेश कुमार ब्रह्मचारी श्रीमती लीलावती जी विदुषी और प० क्षितीश वेदालंकार ने आर्य जनता का मार्ग-दर्शन किया। वैदिक विद्वान प० यशपाल शास्त्री ने कहा कि हम कर्मकाण्डी हो हम सत्साहित्य का अध्ययन कर और श्रेष्ठ मार्ग पर चल। जिस प्रकार सूर्य और चन्द्रमा सभी कल्याण करने वाले हैं वैसे ही हम भी बन। आर्यसमाज लक्ष्मी नगर विस्तार मे प्रति सप्ताह पारिवारिक यज्ञ का आयोजन किया जाता है।

गुमशुदा की तलाश

मेरा पोता राजू आयु २२ वर्ष कद साढे पाच फुट रंग गदमी, पतला शरीर, २० अक्टूबर से लापता है, सूचना देने वाले अथवा लाने वाले को किराया के अतिरिक्त ५०० रु० इनाम दिया जावेगा

जयदेव जतोई वाला
प्रधान आर्यसमाज गन्नौर शहर
जिला सोनीपत (हरियाणा)

आर्यसमाज राष्ट्र की अमूल्य धरोहर है

आर्यसमाज निमड़ी दिल्ली का वार्षिकोत्सव २ दिसम्बर से १८ दिसम्बर, ८८ तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर १७ दिसम्बर को समाज के आर्य पब्लिक माडल स्कूल के बच्चो द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसमें देशभक्ति, लोक नृत्य व संगीत के रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। समारोह के मुख्य अतिथि महानगर परिषद् के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम गोयल ने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती एक ऐसे युग पुरुष थे जिन्होने सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन, नारी उत्थान आदि के लिए अद्वितीय कार्य किये हैं। उन्होने आगे कहा कि आर्य समाज हमारी अमूल्य धरोहर है और स्वामी दयानन्द के मार्ग पर चलकर ही देश प्रगति कर सकता है श्री गोयल ने आगे कहा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव जी सभा के गौरव हैं और उन्होने सभा की गतिविधियो व कार्यक्रमो की भी सराहना की।

समारोह की अध्यक्षता दिल्ली प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्य देव ने की और बच्चो को आशीर्वाद दिया। उन्होने कहा कि बच्चे राष्ट्र के भावी कर्णधार हैं और उन्होंने बच्चो में अनुशासन, देशप्रेम आपसी भाई चारे, व प्रभु भक्ति के उत्तम सस्कार डालने के लिए स्कूल के शिक्षकों का आह्वान किया ताकि बड होकर ये बच्चे देश के सुयोग्य नागरिक बनकर दयानन्द के मिशन को आगे बढा सक।

इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रख्यात विद्वान् प० यशपाल 'सुधांशु द्वारा प्रतिदिन रात्रि को वेद, शास्त्रो, रामायण महाभारत, गीता व आर्य ग्रन्थो के गूढ रहस्यो पर सरल, सुबोध एव सरल शैली मे प्रवचन हुये और भारी सख्या में आर्यजनो ने श्रद्धापूर्वक श्रवण कर लाभ उठाया।

आर्यसमाज राधेपुरी का वार्षिकोत्सव

हम प्रतिदिन परमपिता परमात्मा से कामना करते हैं कि सभी सद्‌गुणों को हम प्राप्त करें तथा दुर्गुणों का त्याग कर दें। यह वाचिक संकल्प जब हमारे कार्य में आ जाएगा तभी हमारा कल्याण होगा तभी हमारे अन्दर दूसरों के लिए काम करने की भावना आएगी। दूसरों के लिए वही काम कर सकता है जो उन्हें अपना मानता हो तथा जिसमें काम करने की सामर्थ्य हो। अतः यह भी आवश्यक है कि हम अपने को समर्थ बनाएं। हम सभी अपने अपने कार्य करते हैं परन्तु सामाजिक कार्य के लिये समय नहीं निकाल पाते इसका सीधा अर्थ है कि कहीं सामर्थ्य की कमी है, अथवा संकल्प की कमी है। अतः सामाजिक कार्यों में आगे आने के लिए जरूरी है कि हम समर्थ हों। कई बार यह रोना रोया जाता है कि बच्चे बड़ों का सम्मान नहीं करते। वास्तव में यह भी हमारी ही कमी है। हम अपने बड़ों का सम्मान नहीं करते, इसलिए बच्चे भी नहीं करते।

आचरण की भाषा बहुत शक्तिशाली होती है। जैसा हम व्यवहार करेंगे, वैसा व्यवहार दूसरे भी हमारे प्रति करेंगे। हमें श्रद्धावान होना चाहिए। ये उद्‌गार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने आर्यसमाज राधेपुरी दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर व्यक्त किए।

वैदिक विद्वान प० रामलाल जी शास्त्री ने आर्यजनों से आग्रह किया कि वे जनता दर्प्य जनम की भावना को अपने जीवन में उतारें।

प० यशपाल सुधांशु ने ५ दिसम्बर १९८८ से ११ दिसम्बर १९८८ तक रात्रि में वेद कथा की। उनका विशेष बल इस बात पर रहा कि हम अपने इतिहास को याद रखें। जो इतिहास को याद नहीं रखते उससे प्रेरणा नहीं लेते उन्हें वह इतिहास दुहराना पड़ता है।

इस अवसर पर चतुर्वेद शतक यज्ञ का आयोजन किया गया। श्री जगदीश चन्द्र आर्य एवं प० आशानन्द जी के मधुर भजनोपदेश हुए।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी

आर्यसमाज लल्लापुरा का ५३ वां वार्षिक समारोह ८ से ११ दिसम्बर १९८८ तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर महिला एवं संस्कृत सम्मेलन के आयोजन उत्सव के विशेष आकर्षण रहे। प्रात यज्ञ डा० प्रज्ञा देवी जी की अध्यक्षता मे हुआ। डा० भवानीलाल जी भारतीय (चण्डीगढ़) ने स्वामी दयानन्द जी के ऐतिहासिक प्रसंग रामायण महाभारत का तुलनात्मक अध्ययन एवं संस्कृत के सन्दर्भ में अपने विचार प्रकट किये। डा० वेदप्रकाश जी (लखनऊ) ने आर्यसमाज के अतीत तथा भारत की प्राचीन परम्परा का विशद विवेचन किया। आचार्य धर्मपाल जी शास्त्री (गुरुकुल ततारपुर) ने आर्यसमाज का भविष्य आर्य वीर दल पर ही निर्भर है एवं संस्कृत को देश की आत्मा बताया। डा० प्रशस्य मित्र जी के व्यंग्य भी सराहे गये। श्री सत्य मित्र जी शास्त्री ने पुराणों का पर्यालोचन किया संस्कृत सम्मेलन में संस्कृत विश्वविद्यालय के डा० रामयत्न जी शुक्ल व्याकरण विभागाध्यक्ष एवं बौद्ध विभाग के श्यामधर द्विवेदी तथा काशीनाथ न्यूपाने रामशरण शास्त्री आदि आदि ने भाग लिया और संस्कृत को राष्ट्रभाषा बनाने पर बल दिया गया। इस अवसर पर पुस्तकों की प्रदर्शनी का आयोजन उल्लेखनीय रहा।

शोक समाचार

श्री द्वारकानाथ सहगल

आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता तथा आर्यसमाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली के प्रधान श्री अशोक सहगल के पिता श्री द्वारकानाथ जी सहगल का देहावसान ५ दिसम्बर १९८८ को हो गया है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी एवं सदस्य ईश्वर से उनकी दिवंगत आत्मा की शांति के लिए तथा परिजनों को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No 32387/77 Post in N D P S O on 29 30-12 88 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139

दिल्ली पो स्ट र (जि० न० डी० (सी०) ७५१ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३९

शोक समाचार
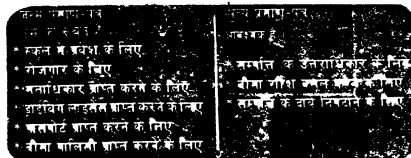
श्री राम शास्त्री बैरागी का पटना जाते हुए भगवानपुर में स्वर्गवास हो गया है। श्री बैरागी आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के मन्त्री थे। पिछले दिनों वह सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में पधारे थे और उन्होंने बिहार के भूकम्प एवं बाढ पीडितों की सेवा सहायता कार्यक्रम की चर्चा की थी।

श्री बैरागी जी आर्यसमाज के हर कार्य में अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर कार्य करते रहे हैं। समाज के सेवा कार्य में संलग्न रहने वाला यह आर्य वीर हमेशा पूरी निष्ठा से वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में लगा रहा। वर्षों तक बैरागी जी आर्य वीर दल के कुशल संगठक के रूप में भी कार्य करते रहे थे। भूकम्प एवं बाढ पीडितों की सहायता कार्य के लिए वह पटने हमारे साथ और हमारे बाद में श्री बाल दिवाकर हंस जी के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर सेवा कार्य में लगे रहे। उन्होंने नेपाल एक हिन्दू राष्ट्र नामक पुस्तक भी लिखी थी। उनके निधन से बिहार ने एक प्रमुख निष्ठावान् आर्य वीर खो दिया है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी तथा सदस्य परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को सद्गति और उनके पारिवारिक जनों को इस महान वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

सेवा में—

टेलीफोन २६१४३८ 'प्रकर—वैशाख' १०८२

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली न० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५१

वर्ष १२ अंक ६ | रविवार ८ जनवरी १९८९ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८ | पौष २०४५ | दयानन्दाब्द—१६४
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० डालर ३० पौंड

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के शताब्दी समारोह के अवसर पर

आर्य महासम्मेलन

पूर्ण मानव बनने के लिए संस्कृत का अध्ययन आवश्यक है

—डा० बलराम जाखड

आर्यसमाज का योगदान राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में सर्वविदित है। आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सर्वप्रथम स्वराज्य शब्द हमें दिया था। इसी शब्द की महत्ता थी कि भारतीय नौजवानों ने संकल्प लिया कि वे भारत को आजाद कराकर ही रहेंगे यह प्रेरणा आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को कहा से मिली। इसके स्रोतबिन्दु हमारी प्राचीन सभ्यता में अनुप्राणित है। आर्यसमाज का मूलाधार वेद है और वहा पर जिस समाज की परिकल्पना है, वैसा समाज हमें आज तक को इस पूर्णत विकसित आधुनिक सभ्यता वाले किसी भी देश या राष्ट्र के राजनीति शास्त्र में कहीं भी चित्रित नहीं मिलता। वेदों के अध्ययन के लिए संस्कृत का अध्ययन आवश्यक है। मैं तो यह कहूँगा कि सही मायनों में आदमी बनने के लिए संस्कृत का अध्ययन आवश्यक है। ये उद्गार लोकसभा अध्यक्ष डा० बलराम जाखड ने राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के शताब्दी समारोह के अवसर पर अलवर के आयोजित वैदिक विद्या मन्दिर के प्रागण में आर्य महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहे। डा० जाखड का श्री छोटूसिंह एडवोकेट श्री ओ३म् प्रकाश भँवर, प्रो० शेरसिंह, डा० धर्मपाल, श्री सूर्यदेव, श्री राजगुरु शर्मा श्री मगलसेन चोपडा, श्रीमती कमला आर्या तथा विभिन्न प्रान्तों से आए प्रतिनिधियों ने माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने की। उन्होंने अपने वक्तव्य में आर्यसमाज द्वारा बिहार के भूकम्प पीडितों तथा मध्य प्रदेश, उडीसा के आदिवासियों में किए गए कार्य का विवरण दिया। सीतापुर (मध्यप्रदेश) में आयोजित वन वासी आर्य महासम्मेलन में पिछले दिनों ६ हजार धर्मच्युत भाइयों को पुन वैदिक धर्म में दीक्षित करने की घोषणा पर सारा पण्डाल वैदिक धर्म के नारों से गूंज उठा। डा० बलराम जाखड ने बताया कि मेरे पिता जी और चाचाओं को संस्कृत पढाने के लिए स्वामी केशवानन्द जी महाराज आए थे जैसे कि स्वामी विरजानन्द जी महाराज अलवर नरेश को संस्कृत पढाने यहा आए थे। संस्कृत संस्कार की भाषा है। मुझे आज के आदमी की षड्यन्त्रकारी प्रवृत्ति को देखकर बहुत ही उद्विग्नता होती है। श्री सीताराम केसरी संसद सदस्य ने आर्यजनों का आह्वान किया कि वे वैदिक धर्म के शाश्वत मूल्यों को अपने जीवन व्यवहार में अपनाएं। संसद सदस्य श्री रामसिंह ने अलवर नगरी को राष्ट्रीय चेतना में योगदान के लिए आर्यसमाज का ऋणी बताया। अपने स्वागत भाषण में राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री छोटूसिंह एडवोकेट ने आर्यसमाज के कार्यक्रम में राजस्थान की भूमिका का विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि राजस्थान स्वामी दयानन्द सरस्वती की कर्म स्थली रहा है। उनका अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश भी यहीं लिखा गया और उनका निर्वाण भी यहीं हुआ। डा० सत्यकेतु विद्यालंकार द्वारा अथक परिश्रम से तैयार किए गए 'आर्यसमाज का इतिहास' के सात खंडों का भावाभिभूत होकर डा० बलराम जाखड ने विमोचन किया।

दोपहर बाद आयोजित 'राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा सम्मेलन' में भारत वर्ष की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधानों ने विशाल जन-समूह को अपने प्रान्तों में किए जा रहे कार्यों तथा समस्याओं का विवरण देते हुए भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की। अपने अध्यक्षीय भाषण में स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने बताया कि पोप पाल के आगमन के अवसर पर आर्यसमाज ने, ईसाइयों के धर्मान्तरण के कुचक्र को

शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य युवा महासम्मेलन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य वीर दल की ओर से शनिवार, १४ जनवरी १९८८ को प्रात ९.०० बजे से ताल कटोरा इण्डोर स्टेडियम नई दिल्ली में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती की अध्यक्षता में आयोजित किया गया है।

इस अवसर पर विभिन्न विद्यालयों में आयोजित चित्रकला, निबन्ध वादविवाद, भाषण संगीत एवं खेलकूद प्रतियोगिताओं में विजयी छात्र-छात्राओं तथा प्रशंसनीय कार्यों के लिए विद्यालयों को आकर्षक पुरस्कार प्रदान किए जायेंगे। विद्यालयों के छात्र छात्राओं और आर्य वीरों द्वारा पी टी, योग, शरीर सौष्ठव और भाला या लाठी तलवार चलाने के प्रदर्शन के साथ वेद-गायन, सामूहिक गान आदि आयोजित किए जा रहे हैं।

समारोह में राष्ट्रीय नेता एवं वैदिक विद्वान् आर्यजनों को सम्बोधित करेंगे।

इस समारोह में दिल्ली की आर्यजनता भारी संख्या में पधार कर युवाशक्ति का उत्साह वर्धन करेगी।

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त
प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजन शौचमार्जवम ।
ब्रह्मचर्यमहिसा च शारीर तप उच्यते ॥
—गीता १७ १४

तप की महिमा प्राचीन ऋषियो ने अपने शास्त्रो मे स्थान स्थान पर की है । वदो की व्याख्या करते हुए, एकान्त मे बैठ हुए अपने शिष्यो को ब्रह्माण्ड का रहस्य बतलाते हुए वे यही समझाते थे कि सृष्टि की उत्पत्ति मे भी तप का ही बडा भारी हाथ है । तप कहते हैं असीम दृढता को। और उसी परमात्मा के गुण का परिणामरूप प्रकृति का रूप मे आना है । यह तप का विचार यहाँ तक आर्यों के अन्दर घर चुका था कि पौराणिक घोर अन्धकार के समय मे भी पार्वती के तप का जिक्र करते हुए तुलसीदास ने निम्नलिखित चौपाई नारद के मुँह से पार्वती के उपदेश के लिए कहलायी है ।

तप बल रचिय प्रपच विधाता ।
तप बल विष्णु सकल जगत्राता ।
तप बल शम्भु करहिं सहारा ।
तप बल शेश धरहिं महि भारा ।
तप आधार सब सृष्टि भवानी
करहु जाय तप यह जिय जानी ।

सारा ब्रह्माण्ड ही तप के सहारे खडा है । महामुनि पतञ्जलि ने अपने योगशास्त्र में पहली क्रिया योग का वर्णन करते हुए तप की प्रधानता बतलायी है । अत जीवन-उद्देश्यरूपी लक्ष्य के मार्ग पर चलने के अभिलाषियो के लिए आवश्यक है कि वे सब से पहले तप की असलियत को समझ । मालूम रहे कि वेद धर्म के अनुयायी सदव से प्रत्येक कर्त्तव्य को तीन भागो में बाटते हैं अर्थात् मन, वाणी और कर्म सम्बन्धी । सब पहले शारीरिक तप का वर्णन कृष्ण भगवान् ने किया है, और वह इसलिए कि अभ्यास के लिए शारीरिक तप सब से सुगम है । सब से पहले बुद्धिमान् द्विजों की पूजा लिखी है और वह इसलिए कि द्विज दो जन्मों के कारण सर्वसाधारण से बुद्धिमान् होंगे गुरु की पूजा और फिर अन्य विद्वानों की पूजा, चाहे वे जन्म से कैसे ही क्यो न हो। इन तीन प्रकार के मनन करने वाले विद्वानो की पूजा का अभ्यास इसलिए करना चाहिए, ताकि जहा एक तरफ अभिमान का नाश हो, वहा दूसरी तरफ ऐसे तपस्वी मनुष्यों के सत्सग से अपने में अच्छे गुण आव। यही कारण था कि गुरु की शारीरिक सेवा को विद्यार्थी के कर्तव्य कर्मों मे से बहुत बडा कर्त्तव्य कर्म बतलाया जाता था। अपने गुरु श्री स्वामी विरजानन्द जी के स्नान के लिए महान् दयानन्द का स्वय प्रेम से जमुना-जल भरकर लाना इसी नियम पर आश्रित था। अपने शरीर से दूसरो की सेवा करना, यह शारीरिक तप का आरम्भ है । जो सेवक नही बना वह कभी प्रभु नहीं बन सकता। इसका स्पष्ट परिणाम यही होगा कि शारीरिक पवित्रता, स्वयमेव मनुष्य में पहुच जायेगी। पवित्र मनुष्यो की सगति में रहकर मनुष्यो को पवित्र रहने के लिए किसी मौखिक उपदेश लेने की आवश्यकता नही रहती। जब स गत में रहकर मनुष्य के अन्दर शारीरिक पवित्रता का गुण आ जाता है तब उसके लिए अपने अगों को सरल-सीधा रखना कठिन नही रहता। परन्तु प्रश्न हो सकता है कि अगो को सरल सीधा रखने का जीवन के उद्देश्य से क्या सम्बन्ध है ? इसके समझाने के लिए अहिसा व्रत के धारण की आवश्यकता है । बाकेपन से रहने का धर्म से बडा भारी वैर है। जो अकडकर चलता है और दिखावे का आदी है वह किसी न किसी प्राणी का दिल दुखाये बिना नहीं रह सकता। अहिंसा का पालन कठिन है, जब तक मनुष्य वीर्य-रक्षा नही कर सकता।

बस, जीवन उद्देश्य की ओर चलने के लिए जिस प्रकार की सामग्री जीवात्मा को मिली है उसमें इस शरीर का साधारण दर्जा है, उसे ठीक रखना मुमुक्षु का पहला कर्त्तव्य है। इसका अभ्यास करना यद्यपि कठिन है परन्तु आरम्भ करने पर उसके अन्दर स्वय सफलता हो जाती है। सब से पहले चतुरता के साथ गुरु और विद्वानों की तलाश करनी चाहिए। यदि परखने से कसौटी पर ठीक उतरें तो उनके सत्सग के योग्य बनने का यत्न करना चाहिए। मान-अपमान का विचार त्याग करके ऐसे महापुरुषो की शारीरिक सेवा करते हुए, धीरे-धीरे अपने शरीर को शुद्ध रखने का स्वभाव पड जायेगा। ऐसे आलस्य का ख्याल छोड देना चाहिए कि सरदी की ऋतु में एक दिन न स्नान करने से क्या बिगड सकता है, एक दिन के व्यायाम छोडने से क्या हानि हो सकती है, एक बार अशुद्ध अन्न खाने से क्या बिगाड हो सकता है। नियम पूर्वक शरीर के सब अगों को शुद्ध रखना चाहिए और फिर बाकेपन को छोडकर शरीर को सरल सीधा रखने का स्वभाव डालना चाहिए। इससे ब्रह्मचर्य की रक्षा में भी बहुत सहारा मिलेगा। अनुभव बतलाता है कि जिनके शरीर शुद्ध हैं उनके मन भी बहुत हद तक शुद्ध रहकर, दुष्चेष्टा को रोकने का साधन सिद्ध होते हैं। जब देवपूजा से शुद्ध होकर मनुष्य अपने अग प्रत्यगो को वश में रखना हुआ वीर्य रक्षा करके बलिष्ठ होगा, तब उसके लिए अहिंसा धर्म का पालन एक स्वाभाविक बात हो जायेगी उसे सारे ससार को मित्र बनाने में किसी परिश्रम की आवश्यकता न होगी।

शब्दार्थ— (देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनम) बुद्धिमान द्विजो गुरु और विद्वानो की पूजा, (शौचम) शारीरिक पवित्रता (आर्जवम) अग सीधे रखना, (ब्रह्मचर्यम) ब्रह्मचर्य (अहिंसा च) और अहिंसा का पालन (शारीर) ये पाच शारीरिक (तप उच्यते) तप कहलाते हैं।

—०—

प्रार्थना गीतमाला

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय स्याम पतयो रयीणाम् ॥६॥ ऋ० मडल १० / सू० १२१ / मत्र १०

काव्यानुवाद

—देवनारायण भारद्वाज

हे परमेश प्रजापति प्यारे, मत करो हमारा तिरस्कार ।
सर्वोपरि ओ३म प्रजापति को, हो मान्य हमारा नमस्कार ॥

उत्पन्न जगत् उत्थामी हो
सम्पूर्ण प्रजा के स्वामी हो
जो जगत सम्पदा ठुकराये
वह अन्य कौन उपनामी हो

सब बसा धरा जो जड चेतन, कर सको तुम्ही वह बहिष्कार ।
सर्वोपरि ओ३म् प्रजापति को, हो मान्य हमारा नमस्कार ॥

जब तक कामना हमारी है
जग वस्तु वांछित सारी है
प्रभु करे पूर्ण वह अभिलाषा
जिसमें सुख स्वस्ति हमारी है

पद प्रगति प्रतिष्ठा मिल जाये, सब यथायोग्य प्रिय पुरस्कार ।
सर्वोपरि ओ३म् प्रजापति को हो मान्य हमारा नमस्कार ॥

सब सिद्ध कामना हो जाये
ऐश्वर्य हमारा हो जावे
तुम अखिल विश्व के स्वामी हो
सेवक युत स्वामी हो जावे ।

सब सम्पत्ति विपुल बल आवे, आवे जीवन में परिष्कार ।
सर्वोपरि ओ३म् प्रजापति को, हो मान्य हमारा नमस्कार ॥

महर्षि दयानन्द और आयुर्वेद

वैद्य प० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी आयुर्वेदाचार्य
आनन्द चिकित्सा सदन, केसरगंज, अजमेर

वेदों की वास्तविक स्थिति को हृदयङ्गम करने के लिए कुछ बातों पर ध्यान देना अत्यावश्यक है। पश्चिमी विद्वानों ने वेदों का अध्ययन श्रमपूर्वक किया। उनका आलोचन भी किया और परिणामस्वरूप कुछ ग्रन्थ लिखे जो कि आज विशेष महत्त्व के समझे जाते हैं। परन्तु उनके अध्ययन के समय उन्होंने अपनी मूल मान्यताओं को जो पश्चिमी धार्मिक तथा साहित्यिक वातावरण के कारण उनके चित्त में बद्धमूल थी नहीं छोड़ा। इसलिए वेदों के विषय में उन्होंने अनेक भ्रान्त धारणाएँ प्रस्तुत की हैं जिनसे कि वास्तविकता छिप गई और अवास्तविकता तथा असत्य के प्रसार में बड़ा योग मिला है।

सब से बड़ी बात यह है कि आज तक वेद से पूर्वकाल के किसी ग्रंथ का ज्ञान नहीं हुआ है। वेदों में कोई ऐसी अन्तःसाक्षी प्राप्त नहीं है, जिससे कि यह अनुमान किया जा सके कि उनसे पूर्व कोई ग्रन्थ विद्यमान था। वेदों के अनन्तर जितने भी ग्रन्थ मिलते हैं उनमें अपने से पूर्व के ग्रंथों और लेखकों का इङ्गित प्राप्त होता है। जितना वैदिक वाङ्मय है उनमें भी कहीं भी किसी रूप में किसी भी प्रकार से वेदों के पूर्व के किसी भी ग्रन्थ का कोई इङ्गित प्राप्त नहीं होता। ब्राह्मण ग्रन्थ उपनिषद्, सूत्र ग्रन्थ धर्मशास्त्र दर्शन इतिहास पुराण, ज्योतिष, आयुर्वेद शिक्षा कल्प व्याकरण आदि के ग्रन्थों में किसी भी वेद से पूर्व के ग्रन्थ का नाम प्राप्त नहीं होता। यह एक बहुत बड़ा आधार वैदिकों की इस मान्यता का है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं और उनका प्रकाश मानव के मार्ग दर्शन के निमित्त हुआ है। महर्षि दयानन्द ने इसी मान्यता को 'स्थूणानिखनन न्याय' से पुनः पुनः तर्क के आधार पर दृढ़ता और स्थायित्व प्रदान किया है।

उन्होंने वैदिक वाङ्मय के ग्रंथों को वेदों के आधार पर ही प्रामाणिक स्वीकार किया है। अपने सत्यार्थप्रकाश ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा संस्कारविधि आदि ग्रंथों में उन्होंने वैदिक वाङ्मय के सभी ग्रन्थों का खुल कर प्रयोग किया है। आयुर्वेद के विषय में उनका अध्ययन अन्य विषयों के अध्ययन के समान ही गम्भीर और निर्भ्रान्त था। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास के लिए आयुष्य के निर्णय के विषय में जो उनकी मान्यता का मूल आधार आयुर्वेद ही था। स्त्रियों के लिए विवाह की कम से कम वयस् १६ वर्ष नियत करने में उनके समक्ष आयुर्वेद की मान्यता विद्यमान थी। आयुर्वेद ने इस बात को माना है कि इस वयस् से पूर्व विवाह नहीं होना चाहिए और सन्तान की उत्पत्ति भी नहीं होनी चाहिए। यदि इससे पूर्व सन्तानोत्पत्ति होती है तो शारीरिक और मानसिक दृष्टि से उसमें कमियाँ और दोष रहते हैं, जो कि मानव सन्तति के विकास में बाधक होते हैं।

इतना ही नहीं महर्षि ने बल और पौरुष की प्राप्ति के लिए, इच्छित सन्तान की प्राप्ति के निमित्त मेधा और बुद्धि को तीव्र बनाने के लिए संस्कारविधि आदि में अनेक औषधियों का प्रयोग करने के निमित्त निर्देश दिया है। जो औषधियां उन्होंने बताई हैं, जो आहार विहार, दिनचर्या और ऋतुचर्या आदि का संकेत एवं वर्णन उन्होंने किया है, उसको देखने से ज्ञान होता है कि उन्होंने आयुर्वेद का अध्ययन भी गम्भीरता से किया था। जिस प्रकार से उन्होंने यह सब लिखा है उससे ज्ञान होता है कि आयुर्वेद के प्रति उनकी विशेष प्रीति थी विशेष श्रद्धा और आस्था थी।

उन्होंने यावज्जीवन सत्य की प्राप्ति एवं प्रतिपादन तथा असत्य के निराकरण और खण्डन के लिए अविश्रान्त एवं प्रचण्ड प्रयास किया। वैदिक आदर्श एवं संस्कृति का प्रचार किया। आयुर्वेद उनका मुख्य प्रतिपाद्य विषय नहीं था। फिर भी उनकी सुनिश्चित धारणा थी कि आयुर्वेद के नियमों के पालन करने से मानव को स्वास्थ्य, बल जीवन के सुख एवं दीर्घायुष्य की प्राप्ति होगी। गर्भाधान के पूर्व से लेकर मृत्यु पर्यन्त मानव आयुर्वेद के विशिष्ट नियमों के आधार पर ही संचालित होता है। उसके अनुकूल आचरण से ही मानव अपनी कम से कम १०० वर्ष की आदर्श आयु प्राप्ति कर सकता है।

महर्षि ने आयुर्वेद के प्रति जो अपना विश्वास व्यक्त किया, उसमें जो उनका प्रेम था उसका कारण आयुर्वेद की अपनी विशेषताएँ थी। आयुर्वेद के सिद्धान्तों में जो त्रिकालाबाधित सत्य है, उसकी औषधियों में जो सुनिश्चित रोगहारक, स्वास्थ्य वर्धक और दीर्घायुष्य प्राप्त कराने वाली शक्ति है उससे ही प्रेरित होकर महर्षि ने मानवजाति के कल्याणकारी अपने व्यापक एवं विस्तृत कार्यक्रम में आयुर्वेद का अवलम्बन लेना स्वीकार किया। यदि थोड़े में भी विचार से देखा जाय तो ज्ञात होगा कि आयुर्वेद में ही वह शक्ति है जिससे कि मानव जाति रोगों से मुक्त रह कर दीर्घ जीवन और सौख्य प्राप्त कर सकती है। आधुनिक तथाकथित वैज्ञानिक पद्धति से मानव को स्वास्थ्य लाभ हो नहीं सकता है यह एक सत्य है।

तथ्य यह है कि समस्त देश में एलोपैथिक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों औषधालयों अस्पतालों रोग परीक्षण केन्द्रों, मेडिकल कालेजों और अनुसन्धान संस्थानों का जाल बिछा हुआ है। इस सबके निमित्त केन्द्रीय बजट में अरबों रुपय का प्रावधान प्रतिवर्ष किया जाता है। प्रदेश शासन भी प्रतिवर्ष इसी प्रकार बड़ी राशि इस निमित्त बजट में स्वीकृत किया करते हैं। इतना होने पर भी देश की स्वास्थ्य समस्या का समाधान नहीं होता दिखाई देता। जब यह सत्य सामने लाया जाता है तब वर्तमान व्यय से भी कई गुने अधिक धन की अन्य योजनाएं प्रस्तुत कर दी जाती हैं।

यही क्यों यह एक प्रकट सर्वविदित और अप्रकाशनम रहस्य है कि चिकित्सा की दृष्टि से यह पद्धति भयंकर रूप से असफल हुई है। जो रोगी इन अस्पतालों में पहुंचते हैं उनमें अधिकांश को यही अनुभव होता है जो कि पहाड़ खोदकर चुहिया पाने वालों को हुआ करता है। क्योंकि देश में आयुर्वेदिक अथवा देशीय चिकित्सा की कोई समुचित व्यवस्था नहीं है आयुर्वेदिक औषधालय और अस्पतालों का अभाव है, इसलिए इस चिकित्सा से निराश, खिन्न और दुखित होकर भी रोगी अन्य कोई मार्ग न देख कर इसी चिकित्सा के चौरासी चक्कर में पड़ा रहता है। डिस्पेन्सरी से अस्पताल में और अस्पतालों से विशेषज्ञों—स्पेशलिस्टस् के पास, वहां से रिसर्च इन्स्टीट्यूटस् में चक्कर लगाता रहता है। यदि अन्य कोई चिकित्सा की व्यवस्था हो तो वह इधर भूलकर भी झांके नहीं।

कहते हैं कि इस बात में सन्देह नहीं करना चाहिए कि इन अस्पतालों में शल्य चिकित्सा—सर्जिकल् ट्रीटमेन्ट बड़ी सफलतापूर्वक और आश्चर्यजनक रूप से होता है। बहुत अंशों में यह बात ठीक कही जा सकती है। वर्तमान समय में जो सशाहूर अनेस्थेटिक द्रव्यों के अ विविध उपकरणों के आविष्कार हुए हैं उनकी सहायता से शल्य चिकित्सा में प्रगति हुई है। फिर भी यह देखकर आश्चर्य होता है कि जो सामान्य अस्थिभग्न, हड्डी टूटने से भी पीड़ित रोगी इन अस्पतालों में पहुंचते हैं उन्हें अधिकांश में निराश होना पड़ता है। अस्पतालों में समस्त साधन विद्यमान हैं। एक्सरे की सहायता से भग्न की वास्तविक स्थिति सरलता से देख ली जाती है। फिर भी उसके अनन्तर जब प्लास्टर पट्टी चढ़ा दी जाती है और उसके बाद जब पट्टी खोली जाती है तब अधिकांश में देखने को मिलता है कि अस्थि ठीक प्रकार से जुड़ी नहीं है, हाथ या पैर टेढ़ा हो गया है या अंगुलियां तथा अंग विकृत हो गए हैं। इसका परिणाम यह होता है कि लोग अस्थि जोड़ने वाले सामान्य पहलवानों और मालिश करने वालों के पास पहुंचते हैं।

इन्हें डाक्टर लोग 'क्वैक' और 'अताई' कहते हैं। परन्तु यह एक आश्चर्य की बात है कि यह अताई लोग इन विशेषज्ञों के द्वारा असाध्य बताए हुए रोगियों को अल्प समय में ही नीरोग कर देते हैं। कुछ समय पूर्व की बात है कि हमारे मित्र श्री प० भूदेव शास्त्री, प्राध्यापक की मणिबन्ध की अस्थि टूट गई। प्लास्टर चढ़ाया गया परन्तु ठीक नहीं हुई। हाथ बाहर की ओर मुड़ नहीं पाता था। स्थानीय अस्पताल में विशेषज्ञों ने बताया कि यह इससे अधिक घुमाया नहीं जा सकेगा। हां, शल्य-कर्म करने पर कुछ सम्भावना हो सकती है। परन्तु शल्य कर्म से ठीक हो सकेगा इसकी आशा भी नहीं समझ है। परिणामतः उन्होंने एक

पहलवान अस्थि विशेषज्ञ को हाथ दिखाया। उसने कहा कि वह १५ दिन में उसे बिलकुल ठीक कर देगा। यह आश्चर्य की और प्रसन्नता की बात है कि उसने १५ दिन में ही शास्त्री जी का हाथ बिल्कुल ठीक कर दिया।

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन के संचालक प्राणाचार्य श्री प० दुर्गाप्रसाद शर्मा ने श्री लंका की यात्रा के अनन्तर एक लेख में लिखा है कि "वहां पर अस्थिभग्न और सर्पदंश के रोगी ऐलोपैथिक अस्पतालों में नहीं जाते। इसके विपरीत वे आयुर्वेदिक अस्पतालों में जाते हैं और स्वास्थ्य लाभ करते हैं। भारत में इस प्रकार की व्यवस्था नहीं है। अन्यथा शल्य कर्म साध्य अनेक रोगों के रोगी आयुर्वेदिक अस्पतालों में ही उनकी चिकित्सा के लिए जाय। अर्श (पाइल्स) भगन्दर (फिस्चुला एवल्) श्लैष्मिकलिंग नाश कैटेरेक्ट, मोतियाबिन्द) अस्थिभग्न (सब प्रकार के फ्रैक्चर), नाडीव्रण (विविध प्रकार के साइनसेज) आदि से पीड़ित रोगी आयुर्वेदीय चिकित्सालयों को छोड़कर अन्यत्र कहीं न जाय।"

यह शल्यकर्म (सर्जरी) के विषय में आंशिक टिप्पणी है। इस विषय में डाक्टरों को पारगत समझा जाता है। कहना नहीं होगा कि सुश्रुत संहिता इन विषयों पर जो चिकित्सा बताती है वह बेजोड़ है और यह तो तथाकथित शल्य चिकित्सा का भूला हुआ थोड़ा बहुत अंश मात्र है।

काय चिकित्सा के विषय में तो स्थिति बड़ी भयकर है। हमें स्मरण है कि जब हम स्नातक होकर घर बाड़मेर पहुंचे तब वहां डाक्टर श्री पद्मचन्द जी सरकारी डिस्पेन्सरी के प्रभारी थे। यह सन १९३१ की बात होगी। डाक्टर साहब सदा यही कहते थे कि एलोपैथी में चिकित्सा जैसी कोई वस्तु नहीं है, चिकित्सा आयुर्वेद में है। तब से आज तक हम इस वचन के सत्य का निरन्तर अनुभव प्रतिक्रियाएं (रिएक्शन्स्) और परिणाम प्रायः बड़े भयकर हुआ करते हैं। ऐसी शीघ्र प्रभाव करने वाली चमत्कारी औषधियों के लेबल पर प्रायः रंग में (पायजन-विष) लिखा रहता है। यही इस बात का द्योतक है कि उनकी वास्तविक स्थिति क्या है।

जब कि पेनिसिलिन् का आविष्कार हुआ तब लोगों ने कहा कि— ऐसी औषध न पहले थी और न आगे होगी। जिस रोगी को देखिये उसे पहले पेनिसिलिन दवा जाने लगा। चमत्कार ही जो ठहरा। न जाने कितने रोगी पेनिसिलिन की प्रतिक्रियाओं के शिकार होकर सड होंगे और न जाने कितने यम के दरबार में पहुंचे होंगे। इसका कोई हिसाब नहीं है। मानव जीवन के प्रति इतनी उपेक्षा सम्भवत किसी काल में नहीं बरती गई। जब अस्पतालों की मेजों पर ही पेनिसिलिन् के इन्जेक्शन से रोगी मरते देखे गए और जब इसके आविष्कारक ने हाथ उठाकर उच्च स्वर से चिल्लाकर इसके भयानक परिणामों से सचेत करना प्रारम्भ किया तब लोग कुछ चेते। इस वडर ड्रग के विषय में सन् १९५५ में ही लिखा गया था—

'इट् इज नोट् ए नार्मल बाडी सब्स्टेन्स, इट मे बी एलर्जिक एण्ड् शुड् नाट बी गिवन इफ द पेशेन्ट हैज एवर एक्सपीरिएन्सड एलर्जीरेश आर स्वोलेन ज्वाइन्टस फ्राम् इटस यूज स्किन टेस्ट्स शुड बी मेड बिफोर गिविंग्, मेनी सडडन् डेथ्स् फालोइंग एड्मिनिस्ट्रेशन् हैव बीन् रिपोर्टेड" टैबर्'स साइक्लोपीडिक् मेडिकल् डिक्शनरी १९५५।

अमेरिका के एक अस्पताल में पेनिसिलिन के दुष्परिणामों का लेखा-जोखा रखा गया। ज्ञात हुआ कि प्रतिदिन लगभग तीन व्यक्तियों पर इसके बुरे परिणाम देखे गये। यह परिणाम त्वचा के विकार एक्जिमा आदि से लेकर मृत्यु तक के रूप में प्रकट हुए थे। यह दुष्परिणामों की संख्या बहुत बड़ी है। एक वर्ष में लगभग एक सहस्र व्यक्ति एक छोटे अस्पताल में इसके भयकर परिणामों के शिकार बने तो संसार के इन असंख्य अस्पतालों में इस सुई की नोक पर परलोक को प्रस्थान करने वाले रोगी कितने होंगे इसकी कल्पना ही सिहरा देने वाली है।

यदि ऐसी स्ट्रेप्टोमाइसीन आदि औषधों के परिणामों का भी लेखा-जोखा सामने आवे तो यह ज्ञात हो सकेगा कि इन शीघ्र प्रभावकारी आश्चर्यजनक औषधों के पीछे कितने भयङ्कर परिणाम छिपे हुए हैं। ऐसी औषधों में से निर्दोष औषध ढूंढकर निकालना भी एक बड़े अनुसंधान का कार्य समझा जाना चाहिये। हम समझते हैं कि आज इन औषधों के दुष्परिणाम जन्य रोगों से ग्रस्त रोगियों की संख्या इनके द्वारा स्वस्थ होने वाले रोगियों से कम नहीं होगी।

इसके विपरीत आयुर्वेद में उस औषध को औषध ही नहीं माना जाता, जिसके प्रयोग से एक रोग शांत होकर दूसरा उत्पन्न हो जावे।

प्रयोग शमयेद् व्याधिं,
योऽन्यमन्यमुदीरयेत्।
नासौ विशुद्धस्तु शमयेद्
यो न कोपमेद ॥
चरक। निदान। अ० ८/२५

औषध वही ठीक है जिससे आरोग्य की ही प्राप्ति होती है, और श्रेष्ठ वैद्य वही है जो कि रोगी को रोग से मुक्त करता है न कि एक रोग हटाकर दूसरा रोग दे देता है।

तदेव युक्तं भैषज्यं
यदारोग्याय कल्पते।
स चैव भिषजां श्रेष्ठो
रोगेभ्यो यः प्रमोचयेत ॥
चरक सूत्र अ० १/१३२

यही कारण है कि आयुर्वेदीय औषधों के दुष्परिणाम नहीं देखे जाते। इनके दुष्परिणाम तभी हो सकते हैं जब कि औषध का उचित विधि से निर्माण न हो अथवा जब कोई अज्ञ उसका अनुचित प्रयोग करे।

आधुनिक एलोपैथी द्वारा असाध्य घोषित रोग भी आयुर्वेदिक चिकित्सा से शान्त होते हैं। आयुर्वेद चक्रवर्ती श्रीयुत प० शिव शर्मा जी ने अमेरिका तथा पश्चिमी देशों की विस्तृत यात्रा की है। वहां पर आयुर्वेद की विशेषताओं के विषय पर महत्त्वपूर्ण व्याख्यान दिये हैं और अमेरिका वासियों द्वारा अत्यन्त उत्सुकता से देखे गये टेलिविजन इण्टरव्यू भी उनके हुए हैं। श्री शर्माजी के पास एलोपैथी द्वारा असाध्य और छोड़े हुए तथा आयुर्वेद द्वारा आरोग्य प्राप्त करने वाले विदेशी रोगियों की विस्तृत तालिका ही बनी हुई विद्यमान है। प्रतिदिन उसमें वृद्धि भी होती जाती है। स्वयं हमारा चिकित्सा व्यवसाय भी अधिकांश ऐसे रोगियों पर निर्भर करता है जो कि एलोपैथी द्वारा दुःसाध्य या, असाध्य घोषित करके छोड़ दिये जाते हैं।

विदेशों में तो आयुर्वेद का प्रचार भी नाम मात्र को है। परन्तु भारत में आज भी ८५ प्रतिशत जनसंख्या आयुर्वेदीय चिकित्सा से ही स्वास्थ्य प्राप्त करती है। फिर भी यह विचारणीय बात है कि सरकार जो महान् व्यय ऐलोपैथी पर करती है उसका लगभग शतांश ही कठिनाई से आयुर्वेद पर व्यय करती है।

आयुर्वेद की विशेषताएं इस लेख में प्रदर्शित करने का हमारा उद्देश्य नहीं है। क्योंकि उसके लिए यहां अवकाश भी नहीं है। परन्तु यह बात ध्यान में रखने की है कि अरबों रुपया विदेशी चिकित्सा पर व्यय करते जाने पर भी देश का ग्रामीण भाग अभी तक चिकित्सा सेवा से वञ्चित है। विदेशी चिकित्सा पद्धति हमारे ग्रामों के लिए अपरिचित और अस्वाभाविक सी है। सभी एलोपैथिक औषधियां चाहे वे कितनी ही छोटी और साधारण हों ग्रामों में उत्पन्न नहीं हो सकती, और न वहां लोग बना सकते हैं। इसलिए उनका नगरों से ही आयात करना होता है। चिकित्सा सम्बन्धी यह एक परवशता है और परमुखापेक्षिता है। आयुर्वेदीय चिकित्सा तथा औषधि यहां के लोगों की संस्कृति, व्यवहार और परम्परा में प्रविष्ट है। ग्रामों में भी सुलभ है। अधिकांश सामान्य चिकित्सा तो प्रत्येक गृहस्थ के घर में उपलब्ध होने वाले और ग्रामों में प्रायः समीपस्थ वनौषधियों से ही हो जाती है

महर्षि दयानन्द ने इन सब बातों को अच्छे प्रकार समझा था। वे वेद मूल से विकसित होने के कारण इस पर उनकी स्वाभाविक आस्था थी। उन्होंने इस पर विचार और मनन भी किया था। गर्भाधान पुंसवन आदि प्रकरणों में तथा अन्यत्र अनेक स्थलों पर मेधा तथा बुद्धिवर्धक उपायों एवं औषधों की उन्होंने चर्चा की है। देश के बालक ब्रह्मचारी बन शारीरिक एवम् मानसिक दृष्टि से स्वस्थ एवं सबल हों यह उनकी हार्दिक अभिलाषा थी। इसीलिए ब्रह्मचर्य पालन का उन्होंने सबके लिए उपदेश किया है। आयुर्वेद का उपयोग भी स्वास्थ्य और बल के लिए रोगों के निवारण के लिए उन्हें विशेष अभीष्ट था। महर्षि द्वारा निर्दिष्ट औषध योगों का एक संग्रह भी हमने देखा है।

आर्यसमाज ने कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का उद्घोष किया है। यह कार्य अति विशाल एवं परिश्रम साध्य है। इसमें आयुर्वेद का विशेष महत्त्व पूर्ण योग हो सकता है। वैदिक विज्ञान और वैदिक संस्कृति की रक्षा आयुर्वेद को बल देने से अधिक सरलता से की जा सकती है और आयुर्वेद को बल देने से तथा उसका साहाय्य अपने प्रचार कार्य में लेने से आर्यसमाज का प्रचार कार्य अधिक सरल और सुचारु रूप से

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्यसमाज ही एक ऐसी शक्ति है जिसने वैदिक संस्कृति को अपना आधार मानकर आध्यात्मिक जगत में सामाजिक क्षेत्रों में क्रान्ति का सूत्रपात किया है

आज फिर आर्यसमाज को दोबारा से अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना है क्योंकि यही एक ऐसी संस्था है जिससे जनता अपने हर प्रश्न के जवाब की आशा करती है। आर्यसमाज हमेशा देश के हित में सोचने वाला एक शक्तिशाली संगठन है। यह एक ऐसा संगठन है जो आत्मनिर्भर होकर अपने पवित्र उद्देश्यों की पूर्ति कर सकता है और की है

आज हम राष्ट्र की रक्षा के कोई एसा प्रश्न ... खोजना चाहते ... जो ... देश ... के ... और ... के ... से शिक्षा ... स्वामी श्रद्धानन्द ... महा ... शिथिल सा ... चुस्ती के साथ अपना आलस्य और निद्रा ... । वरना समय हम मिटा देगा। क्योंकि बिना कर्म किए ... कोई महत्व नहीं। ... कर्म ... नहीं। ऐसा निम्न मंत्र में कहा ... है

अन्धं तमः प्रविशन्ति
ये ऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो
य उ विद्यायां रताः।

(जो लोग अविद्या केवल कर्म) की उपासना करते हैं वे अंधकार में पड़े रहते हैं और जो विद्या (केवल ज्ञान) ... रहते हैं वे उससे भी अधिक ... अंधकार में चले जाते हैं।

आर्यसमाज एक जीता जागता संगठन है जिसके रहते हुए देश के सामने कोई कठिनाई नहीं होना चाहिए तभी यह देश के बाहर दुनिया में भी अपना झंडा ऊंचा कर सकता है। कृण्वन्तो विश्वमार्यम के ... को ... कर ...

... हम मर्यादा ... से अपने लक्ष्य की ओर बढते रहें या ... होकर अपने कदम आगे बढाते रहें हमें यह नहीं भूलना है कि हमारा तन मन धन राष्ट्र को समर्पित है। क्योंकि वैदिक धर्म के झंडे को हाथ में लेने वालों को

आर्यसमाज की शक्ति

तू चला तो चल दिया जमाना तेरे साथ साथ।
तू रुका तो रुक गया जमाना तेरे साथ साथ।
—छत्रसिंह विद्यालय विभाग गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

दूसरे धर्मों को भी रास्ता दिखाना है। धर्म राष्ट्र की कैसे सेवा कर सकता है। यह आदर्श आर्यसमाज ने दूसरे धर्मों के और सरकार के सामने रखना है।

राजनीति के क्षेत्र में स्वामी दयानन्द और श्रद्धानन्द ने कैसे सेवा की शिक्षा के क्षेत्र में ... के ... जनसेवा के क्षेत्र में इस ... देश के सामने या देश की गरीबी ... के सामने कोई कष्ट आय ... आर्यसमाज ने ... सदा ... प्रसिद्ध ...

आज देश के सामने जहाँ ... ... और ... श्रद्धा ... अपने रूप से देश प्रेम की भावना से ... देश के लिए दिए।

आज देश के सामने गरीबी को दूर करना भ्रष्टाचार को समाप्त करना खाद्य पदार्थों को जहरीला न होने देना अपने को गुमराह न होने देना आदि ऐसे कार्य हैं जो बहुत शीघ्र होने चाहिए इसमें आर्यसमाज को आगे बढकर कार्य करना है। समय के साथ आगे बढते रहना ही आर्यसमाज का लक्ष्य है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में आगे बढ़कर देश के सामने आयी सभी समस्याओं का निराकरण करते रहना सरकार का मार्ग प्रशस्त करते रहना औद्योगिक क्षेत्र में सदा एकत्र ... नये नये कारखाने खोलकर भरोसेमंद वस्तुएं तैयार करना और अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करना कृषि के क्षेत्र में उन्नत किस्म के बीज तैयार करना और उत्पादन में रिकार्ड कायम करना आधुनिक तकनीक में प्रवीण किसान तैयार करना जहां तक एक एक पहलु का वर्णन किया जाय। संक्षेप में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को एक तीर्थस्थल बनकर सब को अपने अनेक रूपों में अपने दर्शन कराना लोगों के कष्टों को दूर करना उनका मार्ग प्रशस्त करना, अपनी पवित्रता को बनाये

रखना अपनी असीम शक्ति का प्रदर्शन करते रहना हमेशा जागरूक रहना देश के लिए विश्वसनीय ठोस कार्यकर्ता तैयार करके देना औद्योगिक क्षेत्र में क्रांतिकारी कार्य करना है।

आर्यसमाज का हर एक सदस्य या अपने को आर्य मानने वाला हर एक व्यक्ति चाहे वह जहां भी हो देश के लिए चिन्तन मनन करे। देश के सामने आयी प्रत्येक चुनौती का सामना करने के लिए तत्पर रहें। अपनी विश्व ख्याति प्राप्त संस्था गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय पर अपनी पूरी शक्ति लगाकर उसे दुनिया का एक ऐसा सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय बनाना जरूरी है जो विश्व ... विद्यार्थी को सभी विषयों

को उच्चतम शिक्षा वैदिक मान्यताओं के आधार पर दे सके। उसके पवित्र प्रांगण में प्रवेश करते ही ऐसा प्रतीत हो कि हम स्वर्ग भूमि में प्रवेश कर रहे हैं। यहां का प्रत्येक कर्मचारी एवं विद्यार्थी देवतुल्य हो। यहां की सुगन्ध दुनिया को आकर्षित करे। सर्वश्रेष्ठ सैनिक, सर्वश्रेष्ठ किसान सर्वश्रेष्ठ मजदूर सर्वश्रेष्ठ, इंजीनियर सर्वश्रेष्ठ डाक्टर कवि, लेखक सम्पादक लीडर वैज्ञानिक अध्यापक पुरोहित जिलाधीश आदि आदि अर्थात मनुष्य की हर आवश्यकता को पूरा करने वाले विद्यार्थी यहां से निकलें।

स्वस्थ एवं शक्तिशाली संगठन आर्यसमाज तभी जीवित रह सकता है जब वह अपने परम लक्ष्य की ओर शीघ्रता से कदम बढ़ाए और नाश के साथ प्रगतिशील दुनिया में पिछड़कर वह अपने अस्तित्व को मिटा देगा। दुनिया की नजरों में घृणा की दृष्टि से देखा जाएगा। इसलिए दुनिया का नेतृत्व करने वाले हे आर्य ... अपनी शक्ति को पहचान अपने कर्तव्य को पहचान अपने पूर्वजों के ऋण से और ऋषि ऋण से उऋण हो

आर्यसमाज के नेताओं को इस विषय पर गम्भीरता से विचार करके उचित पग इस दिशा में उठाना चाहियें।

शरीर की उन्नति वा अवनति की विधि
जैसी वैद्यक शास्त्र में है
वैसी अन्यत्र नहीं।
—महर्षि दयानन्द

(पृष्ठ पांच का शेष)

सचालित हो सकता है। आर्य सामाजिक संस्थाओं ने इधर ध्यान भी दिया है। गुरुकुलों में तथा कालेजों में यथाशक्ति अनेक स्थलों पर इसकी शिक्षा की व्यवस्था है। कहीं कहीं औषध निर्माण भी होता है। परन्तु इस सब से ... के प्रचार कार्य में ... किस प्रकार प्राप्त की जा सकती है इस बात पर समुचित ध्यान नहीं दिया गया है।

आज से बहुत समय पूर्व बौद्ध भिक्षुओं ने धर्म ... के ... का आश्रय लिया था उन्होंने उस कार्य के विस्तार और सफल परिणामों को देखकर आश्चर्य होता है। आज भी चिकित्सा कार्य की सहायता से ईसाई लोग अपने धर्म का प्रचार कर रहे हैं। यद्यपि उस में धार्मिक भावना की कमी है फिर भी। प्रचार की दृष्टि से चिकित्सा कार्य का जो महत्व है वह किसी से छिपा हुआ नहीं है। इस कार्य के लिये आर्यसमाज द्वारा आयुर्वेद का अवलम्बन सब प्रकार से उचित और लाभप्रद है। पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति का भी अवलम्बन किया जा सकता है परन्तु वह बहुत व्यय साध्य है। उतना व्यय भार उठाना समाज के लिए वर्तमान परिस्थितियों में सम्भव नहीं है। साथ ही उसमें वह सरलता नहीं है। सांस्कृतिक, और भावनात्मक तादात्म्य नहीं है।

आर्यसमाज ... पश्चिमी शालीमार बाग में

खेल उत्सव

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के बलिदान दिवस पर २५ दिसम्बर १९८८ को आर्य समाज मन्दिर ... पश्चिमी शालीमार बाग दिल्ली में निगम पार्षद श्री राजेश यादव की अध्यक्षता में खेल उत्सव आयोजित किया गया। इस अवसर पर खेद कूद प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी तथा शरीर सौष्ठव प्रदर्शन प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार श्री बृजमोहन सिंह की ओर दिए गए। श्री जे एस मेहलुवालिया श्री प्रदीप होता दिल्ली कुश्तीसंघ के सचिव श्री सुरेन्द्र सिंह और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने आर्य युवकों का उत्साह वर्धन किया। वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के साथ युवाशक्ति के निर्माण कार्य में आर्य समाज के अधिकारी संलग्न हैं।

(पृष्ठ १ का शेष)

शताब्दी समारोह सम्मेलन

समारोह तो किया ही था। साथ ही धर्मच्युत भाइयों को वैदिक धर्म मे दीक्षित भी किया था। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान प० इन्द्रराज ने अपने वक्तव्य मे आर्यवीर दल को शक्तिशाली बनाने पर बल दिया।

उन्होंने गुरुकुल प्रभात आश्रम के आचार्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती द्वारा सार्वदेशिक सभा तथा धर्म रक्षा महाभियान के लिए किए गए कार्य की सराहना की।

हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रोफेसर शेरसिंह ने कहा कि भारतीय सविधान से धारा ३० को निकालने की बात आज प्रात श्री छोटूसिंह एडवोकेट ने उठाई थी। वास्तव मे अल्पसख्यकों को मुख्य धारा से जोडने के लिए यह आवश्यक है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने दिल्ली मे आर्यसमाज के कार्यक्रमो का जिक्र करते हुए बताया कि राष्ट्र के सामने जब भी कोई समस्या आती है और आर्यसमाज की ओर से जो भी कार्यक्रम बनाया जाता है। दिल्ली प्रान्त के ऊपर उसका सर्वप्रथम एव सर्वाधिक प्रभाव पडता है। दिल्ली की आर्य जनता सभी कार्यक्रमो मे बढ चढकर भाग लेती है। यहाँ तक कि यदि सगठन के ऊपर कोई आघात लगता है तो उसका परिहार भी वही से प्रारम्भ होता है उन्होंने बताया कि हमें आर्यसमाज के कार्यक्रमों में वेद प्रचार, विद्यालयो की स्थापना युवा सगठना के कार्यक्रमो के साथ-साथ सगठन को शक्तिशाली बनाने के लिए भी सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए। इस अवसर पर भारत देश की विभिन्न सभाओं के प्रधानो ने भी राष्ट्रीय समस्याओ तथा आर्यसमाज की भूमिका के सम्बन्ध मे अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर सम्पूर्ण भारत के कोने कोने से विशिष्ट आर्यजन तथा गुरुकुलो एव अन्य शिक्षणालयो से विद्यार्थीगण पधारे। दिल्ली से स्पेशल बसो से, रेल से तथा अपने साधनो से सकडो आर्यजन तथा आर्यवीर इस समरोह में सम्मिलित हुए।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज लाजपत नगर

आर्यसमाज लाजपतनगर नयी दिल्ली का ३४ वां वार्षिकोत्सव ६ जनवरी से १६ जनवरी ८९ तक धूम-धाम के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर वेद कथा—आचार्य रामकिशोर जी शास्त्री की होगी। भजन—श्री ओ३म्प्रकाश जी वर्मा के। १२ जनवरी दोपहर २ से ४ बजे तक शोभा यात्रा निकाली जायेगी।

१५ जनवरी प्रात १० से १ बजे तक आर्य सम्मेलन होगा १६ जनवरी दोपहर १२ से ४ बजे तक महिला सम्मेलन होगा।

सेवा में—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली न०१७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५१

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ अंक १० | रविवार १५ जनवरी १९८९ | सृष्टि संवत १९७२९४९०८८ | पौष २०४५ | दयानन्दाब्द—१६४
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० डालर ३० पौंड

अंग्रेजी हटाओ भारतीय भाषाएँ लाओ
आर्यसमाज देशव्यापी आंदोलन करेगा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वा० आनन्दबोध सरस्वती ने केन्द्रीय लोक सेवा आयोग, नई दिल्ली के कार्यालय के बाहर आयोग की परीक्षाओं में हिन्दी को परीक्षा माध्यम के रूप में स्वीकार किए जाने की मांग को लेकर भूख हड़ताल पर बैठे सत्याग्रहियों से भेंट की। हिन्दी के प्रति उनकी निष्ठा एवं त्याग की सराहना करते हुए स्वामी जी ने सत्याग्रहियों को आश्वासन दिया कि लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में हिन्दी को माध्यम बनाने की मांग का आर्य समाज पूरा समर्थन करता है। आजादी के ४० वर्ष बाद भी अंग्रेजी की अनिवार्यता देश के लिए बड़े दुर्भाग्य की बात है।

स्वामी जी ने गृह मन्त्रालय के १८ जनवरी १९६८ के संकल्प सं० ५।८।६५ के ४ (क) की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि इसके अनुसार सब सेवाओं अथवा पदों के लिए भर्ती करने हेतु उम्मीदवारों के चयन के समय हिन्दी अथवा अंग्रेजी में से किसी एक का ज्ञान अनिवार्यतः अपेक्षित होगा, ऐसी व्यवस्था है।

स्वामी जी ने धरने पर बैठे लोगों को विश्वास दिलाया कि आर्यसमाज सार्वदेशिक सभा द्वारा अलवर में आयोजित आर्य महासम्मेलन के निश्चय के अनुसार अंग्रेजी हटाओ और भारतीय भाषाएं लाओ का देशव्यापी अभियान प्रारम्भ करने वाला है। उन्होंने देशवासियों से इस आन्दोलन में पूरा सहयोग करने की अपील की।

आर्यसमाज सदर बाजार में

राष्ट्ररक्षा महाभियान

दिल्ली की बहुत पुरानी आर्यसमाज सदर बाजार को इस बात का श्रेय प्राप्त है कि यहां पर रह कर आर्यसमाज के दिग्गजों ने वेद प्रचार तथा आन्दोलन के कार्यों में अभूतपूर्व सहयोग प्रदान किया है। स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी सर्वदानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी अमर स्वामी, स्वामी रामेश्वरानन्द, स्वामी ब्रह्मानन्द, स्वामी ध्रुवानन्द, स्वामी अनुभवानन्द, तर्क शिरोमणि, शास्त्रार्थ महारथी पं० रामचन्द्र देहलवी, प्रो० आर्य मुनि, पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति, पं० व्यासदेव जी, पं० मुरारीलाल शर्मा, पं० गणपति शर्मा, पं० अखिलानन्द कव्यतीर्थ, स्वामी सत्यदेव परिव्राजक, आर्य मुसाफिर कुंवर सुखलाल, पं० लोकनाथ तर्क वाचस्पति, पं० भगवद्दत्त रिसर्च स्कॉलर, ठाकुर शेरसिंह, दादा बस्तीराम, पं० बुद्धदेव विद्यालंकार, पं० सुरेन्द्र शर्मा गौड़ आदि महानुभावों ने इस आर्यसमाज में पधारकर आर्य जनता को वैदिक पथ दिखलाया। इन के शास्त्रार्थ आज भी हमारे चिन्तन को ऊर्जा प्रदान करते हैं।

इसी आर्यसमाज में १ जनवरी १९८९ को सार्वदेशिक धर्मरक्षा महाभियान के लिए पं० पृथ्वीराज शास्त्री को पांच हजार एक सौ रुपये, आर्य केन्द्रीय सभा के लिए श्री सूर्यदेव को ग्यारह सौ रुपये और आर्य युवा महासम्मेलन के लिए डॉ० धर्मपाल को पन्द्रह सौ रुपये भेंट किये गये। आर्यसमाज के मन्त्री श्री इन्द्रदेव ने आर्यसमाज सदर बाजार का परिचय देते हुए विश्वास दिलाया कि वे दिल्ली के सभी कार्यक्रमों में बढ़चढ़ कर सहयोग देंगे। इस अवसर पर आर्य समाज मन्दिर में प्रमुख आर्य नेताओं के चित्र भी लगाए गए जिससे कि आर्य जन प्रेरणा ग्रहण कर सकें। आर्यसमाज के प्राणाधार स्वर्गीय श्री वैद्य प्रह्लाद दत्त जी को भावांजलि अर्पित की गयी।

आचार्य वह है,
जो अपने आचार से हमें सदाचारी बनावे।

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त | प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः ।
भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते ॥
—मनु० अ० १२ श्लोक १४

मानस तप के बगैर शरीर और वाणी के तप स्थिर नहीं रह सकते क्योंकि मन ही इन सबका आधार है। मन के द्वारा ही जीवात्मा वाणी और शरीर पर शासन करता है। सबसे प्रथम मन की प्रसन्नता आवश्यक है। मन में आनन्द जब तक नहीं तब तक इन्द्रियां और शरीर समता में नहीं रहते और इसलिए अपने कर्तव्य को पूरा नहीं कर सकते। किन्तु मन को आनन्द कैसे हो? यही प्रश्न तो प्राचीन सब महापुरुषों को चक्कर में डालता रहा और आज उससे ज्यादा भंवर में डाल रहा है। अनुभवी ऋषियों ने बतलाया है कि मन के एकाग्र करने के लिए मन का आनन्द आवश्यक है और इस आनन्द के लिए विशेष साधन आवश्यक हैं। सबसे पहला कर्तव्य मन के आनन्द के लिए यह है कि मित्रता उनसे की जाय जो वास्तव में सुखी हों। दिखावे के सुख में और वास्तव के सुख में भेद है। सुखी के साथ मित्रता का यही परिणाम संसार में दुखियों के प्रति वैरभाव समझा जाएगा। परन्तु ऋषियों का ऐसा सिद्धान्त नहीं है। वे दुखी पर दया का आदेश करते हैं। दुख के कारण जो काम क्रोध इत्यादि दुर्गुण हैं उनसे जिस कदर घृणा की जाय उचित है। उन्हें जिस कदर दबाया जाय ठीक है। परन्तु जो मनुष्य हमारा भाई इन बुराइयों में फंसकर दुखी हो रहा है उससे घृणा करना मनुष्यत्व से गिरना है। मानस तप मनुष्य के पद से बढ़कर देवता के पद पर पहुंचने का साधन है। इसलिए जिस किसी को दुखी देखो उस पर दया करो और पूर्ण सहानुभूति से उनके साथ व्यवहार करो। जिस किसी नियतात्मा को देखो उसके आचरण को देखकर अत्यन्त प्रसन्न रहो। उसके साथ एकता का प्रकाश करो। क्या परमात्मा को देखकर उससे विरोध तथा घृणा करनी चाहिए? कदाचित नहीं। यदि परमात्मा ने तुम्हें शक्ति दी है तो उसे बुरे मार्ग से हटाकर सीधे मार्ग पर लाने का यत्न करो। अपने गिरे हुए भाई को उठने के लिए सहारा दो। यदि इतना सामर्थ्य नहीं है तो उससे कोई सम्बन्ध न रक्खो। इन साधनों को नियमपूर्वक पालने से मन को आनन्द की प्राप्ति हो सकती है और जब मन में आनन्द है तो इन्द्रियां भी इधर उधर नहीं हो सकतीं और न ही शरीर की अवस्था इन्द्रियों को अशक्त करने के योग्य हो सकती है।

इस पहले साधन से मन शान्त होकर दूसरों के लिए आकर्षक बन जाएगा। स्वभाव के, स्वभाव के भाने से संसार को विजय करना कुछ कठिन नहीं होता। दिलों को खींचने की शक्ति मनुष्य को बड़े बड़े उपकार के लिए तैयार कर सकती है। इस गुण को अपने अन्दर धारण करने के लिए भी बड़े भारी साधनों की आवश्यकता है। अभ्यास इसका मूल है। तुम्हारा मन चाहे हाथ से जा रहा हो परन्तु यदि आत्मा को दृढ़ करके जाते जाते मन को भी वश में करने का दृढ़ यत्न हो तो मन काबू में आ सकता है। इस अवस्था में पहुंचकर मौन रहना एक विशेष गुण साबित होता है। यही कारण था कि प्राचीन आर्य ऋषियों की ब्रह्मचारियों को दो मुख्य आज्ञाओं में एक यह आज्ञा भी थी कि बोले कम और सुने ज्यादा। एक मौन न केवल हमारे अवगुणों पर पर्दा डालता है बल्कि लाखों मन में आए हुए पापों से बचाता है। जब तक मनुष्य किसी विचार को मुंह से प्रकट नहीं करता तब तक उस पर आचरण करना उसके लिए रुकावट से खाली नहीं होता। बुराई को बार बार मुंह से निकालना मनुष्य को लज्जित करता है। न केवल यही बल्कि एक विद्वान का कथन ठीक है कि मुख से निकला हुआ वचन, धनुष से छूटे हुए तीर की तरह फिर लौटकर नहीं आता। आह! पुरानी घटनाओं को स्मरण कर हरेक मनुष्य कितने समयों के बेमौका वार्तालाप से लज्जित होता है और उनके परिणामों को स्मरण कर पश्चात्ताप करता है। जब तक चुप रहने के स्वभाव का अभ्यास नहीं किया जाता तब तक हर समय बोलने की इच्छा बनी रहती है। चुप रहने का बड़ा भारी लाभ यह है कि उसके आचरण से मनुष्य भूल करते करते रुक जाता है। विषय दिन रात इन्द्रियों को अपनी ओर खींचते हैं। उनसे बचने का उपाय सिवाय इसके और कोई नहीं है कि मन को वश में किया जाए और मन को वश में करने में मौन बहुत कुछ सहायता देता है। इसी तरह पर जीवन व्यतीत करता हुआ मनुष्य नेकनीयत हो जाता है जिस पर कि भविष्य की भलाई आश्रित है। क्या सन्देह है कि तप के बिना साधारण से साधारण काम जब सिद्ध नहीं होता तो जीवन का सच्चा उद्देश्य कब पूरा हो सकता है? जिस तप के प्रभाव से बड़े बड़े चक्रवर्ती महाराजे करोड़ों के भाग्य का निर्णय करते हैं जिस तप के प्रभाव से योगीजन अमृतधाम की ओर चलते हैं उसके प्रभाव को जिसने नहीं समझा और उसके नियमों के पालन करने में जिसने अपना सारा बल नहीं लगाया वह संसार के भंवर में कैसे निकल सकता है?

शब्दार्थ—(मनःप्रसाद) मानसिक प्रसन्नता (सौम्यत्व) स्वभाव में सौम्यता (मौनम्) मौन (आत्मविनिग्रह) विषयों से अपने मन को रोकना (भावसंशुद्धि) नेकनीति से परस्पर बर्ताव (इत्येतत) ये सब (मानस तप) मानसिक तप (उच्यते) कहलाता है।

प्रार्थना गीतमाला

धर्म मार्ग से आये

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम॥
यजु० अ० ४० । मं० १६।

काव्यानुवाद

विज्ञान मिले धन राज्य मिले शासन सत्ता भी मिल जाये।
ऐश्वर्य हमारे घर आये पर धर्म मार्ग से वह आये॥

प्रभु अग्नि तुम्हारा यह प्रकाश
दे ज्ञान तुम्हारा यह प्रकाश
हे अग्नि जहाँ छा जाते हो
हो वहीं तुम्हारा यह प्रकाश।

विद्वान तुम्हीं प्रभु मन भायें हम को भी भायें विद्यायें।
ऐश्वर्य हमारे घर आये पर धर्म मार्ग से वह आये॥

विज्ञान राज्य तब आयेगा
जब ज्ञान कर्म ढल जायेगा
आप्त जनों का उत्तम सुपन्थ
जो धर्म युक्त अपनायेगा।

जो सुपथ सत्पुरुष सा पाये धनवान भव्य वह बन जाये।
ऐश्वर्य हमारे घर आये पर धर्म मार्ग से वह आये॥

कटु कुटिल पाप के कर्म सभी
अन्तर घ याव अधर्म सभी
ये नाथ हमारे दूर करें
दे धर्म कर्म के मर्म सभी।

नित विनत भावना मन लाये प्रभु गीत प्रशंसा के गाये।
ऐश्वर्य हमारे घर आये, पर धर्म मार्ग से वह आये॥

—देवनारायण भारद्वाज

ओ३म्
आर्य सन्देश

नारी के प्रति अत्याचार कब रुकेगा ?

कोई दिन नहीं जाता जब हम नारी के शोषण, उत्पीडन, बलात्कार की घटनायें समाचारो मे न पाते हो। नारी सदा से शोषिता रही है।

कुछ सौ साल पहले की घटना होगी। उस समय बच्ची को जन्म के समय ही गला घोट कर मार दिया जाता था और माँ तडप कर रह जाती थी। कुछ बच्चियों को उनके माँ बाप जिन्दा जमीन मे गाड देते थे। कुछ बच्चियो को दरिया में फेंक दिया जाता था। प्रश्न उठता है कि क्या ये बाते बीते युग की हैं ? नहीं, यह सब कुछ तो आज भी हो रहा है। पिछले दिनो यह बात समाचार पत्रों की सुर्खियो मे थी कि राजस्थान के किन्हीं विधायक के घर में लडकियों को जन्म लेते ही मार दिया गया। आज विज्ञान का युग है। सम्भवत स्त्रियों पर अत्याचार का तरीका भी वैज्ञानिक हो गया है। पहले आपरेशन चीरफाड करके होते थे आज लेसर किरणो से होते हैं, उसी प्रकार पहले बच्चियो के मारने का ढग कुछ क्रूर था, आज यह भी सभ्रान्त हो गया है। आज शहरों में सब जगह गर्भ-परीक्षण केन्द्र खुल गये हैं। वहा पर गर्भ मे ही लिंग का परीक्षण किया जाता है और कन्याओं की भ्रूण अवस्था में ही हत्या कर दी जाती है। वास्तव मे भ्रूण हत्या नारी के उत्पीडन का एक नवीनतम वैज्ञानिक तरीका है।

कहने को तो आर्यसमाज ने इस प्रकार के परीक्षणो के विरुद्ध आवाज उठाई है, पर सफलता कितनी मिली ! जैसी सफलता नारी शोषण के अन्य तरीको को रोकने में मिली है, उतनी ही यहा भी मिली है। आर्यसमाज ने एक काम अवश्य किया है और वह है नारी को अपने पैरो पर खडे होने में सहयोग देने का। नारी शिक्षा के लिए, स्त्री जाति के प्रशिक्षण के लिए तथा स्त्रियों को पारिवारिक जिम्मेदारियों में सहभागिता के अवसर दिलाने के लिए, आर्यसमाज ने उल्लेखनीय कार्य किया है।

गये काल का पिता बच्चियों का गला क्यों घोंटता था ? आज का पिता भ्रूण-हत्या क्यों कराता है ? ये प्रश्न हमारे सामने मुह बाये खडे हैं। इसका सबसे बडा कारण दहेज समस्या है। कानपुर में तीन पढी-लिखी लडकियो ने आत्महत्या कर ली। पालघाट केरल मे चार बहनों ने सामूहिक आत्महत्या कर ली। हाल ही मे उडीसा के जेपुर कस्बे मे अविवाहित बहनो की सामूहिक हत्या की खबर मिली है।

फरवरी में कानपुर की घटना ने सभी का दिल दहला दिया था। उस समय यह सोचा था कि शायद वे लडकियां आत्मघाती अति भावुकता की शिकार हो गयीं और आगे ऐसा नहीं होगा, पर यह त्रासद स्थिति ऐसी भयावह होती जा रही है। यह सोचकर भी कपकपी आती है कि कहीं यह प्रवृत्ति और अधिक न बढ जाए। आखिर ऐसे परिवारों की कमी नहीं है जहा पर दहेज का दबाव पडता है और इस आर्थिक विषमता के युग मे यह दबाव घटने वाला प्रतीत नहीं होता। महगाई दिन-दूनी रात-चौगुनी तरक्की कर रही है। भ्रष्टाचार बढ रहा है। सयम और शील बीते दिनों की बात हो रही हैं। नैतिकता की बात करने वाले बुर्जुआ और पिछड कहलाने लगे हैं। उन्हें प्रगतिशील नही माना जाता।

पुराने युग की बहू की मागलिक सत्ता समाप्त हो गयी है। पहले गृहिणी को गृहलक्ष्मी माना जाता था आज वह मात्र भोग्या है अथवा एक कमाऊ मशीन। परिवारों के सम्बन्धो में आई दरार को वैवाहिक सम्बन्धों से पाट दिया जाता था। पर आज परिवार और विवाह की संस्थाओ की पवित्रता ही नष्ट हो रही है। तलाक का सरलीकरण इस स्थिति को और भी दयनीय बना रहा है। दहेज की नगी लूट-खसोट पर लगाम लगाना कठिन हो गया है। इसे कानूनी नियन्त्रण से रोक पाना कठिन होता जा रहा है। यदि इसे रोका जा सकता है तो मात्र आपसी समझ, नैतिक मूल्यो और सचेत सामाजिक दबाव के द्वारा ही रोका जा सकता है और यह सामाजिक दबाव पैदा करना आर्यसमाज का दायित्व है। ●

संपादक के नाम पत्र

आर्यसन्देश का श्रद्धानन्द विशेषांक बहुत अच्छा बन पडा है। सामग्री चयन और मुद्रण सज्जा उत्कृष्ट है। स्व० रघुनाथ प्रसाद पाठक के सस्मरणो तथा स्वामी जी के उद्धृत उद्धरणों से लाला मुशीराम, जिज्ञासु मुशीराम तथा स्वामी श्रद्धानन्द तक की यात्रा का सजीव वर्णन इस विशेषाक की मील का पत्थर है।

मेरी बधाई स्वीकार करें।

ब्रह्मदत्त स्नातक, एम० ए, शास्त्री
अवै० प्रेस एव जनसम्पर्क सलाहकार
सा० आ० प्र० सभा

विशेषाक की सफलता

आर्यसन्देश का "स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान" विशेषाक प्राप्त हुआ। विशेषाक वास्तव में काफी सुन्दर एव आकर्षक था। सभी लेख शिक्षाप्रद एव प्रेरणादायक थे। स्वामी जी के जीवन पर काफी ठोस एव महत्त्वपूर्ण सामग्री पढने को मिली। विशेषाक में सम्पादकीय लेख का तो अपना अलग ही महत्त्व रहा। अत यह अक सभी दृष्टियो से सफल एव उत्तम रहा। आशा है आप भविष्य मे भी ऐसे अक पाठकों तक पहुचाते रहेंगे। विशेषांक की सफलता के लिए बधाई।

—रामकुमार सोरायण
जलधर जोशी चौहान (सोनीपत) हरि०

'स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषाक" बहुत अच्छा बन गया। एतदर्थ बधाई स्वीकार करें। इससे पूर्व ऋषि निर्वाण विशेषाक भी उत्तम था किन्तु उसका आकार साप्ताहिक पत्र जैसा ही था। बलिदान विशेषाक अच्छे आकार में छपा है। इतने न्यून समय में २-२ विशेषाक निकालने का सभा का प्रयास श्लाघनीय है।

आपका
रघुवीर वेदालकार
नई दिल्ली

विश्वविद्यालय में डिग्रियाँ प्राप्त करने वालों की नहीं, अपितु अपने अहंकार पर विजय प्राप्त करने वालों की आवश्यकता है।

आध्यात्मिकतावादी देव दयानन्द के द्वारा आध्यात्मिकता का प्रचार

लेखक—चमनलाल एम० ए०

आर्यसमाज के संस्थापक, महान् वेदभाष्यकार परम विद्वान्, वर्तमान जागृति के अग्रदूत, प्राचीन वैदिक मूल्यों के पुनरुद्धारक, महान् क्रान्तिकारी, समाज सुधारक सच्चे शिव के उपासक और निष्ठावान् देशभक्त महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती सच्चे शिव की खोज और मृत्यु पर विजय प्राप्ति के लिए १८ वर्ष की युवावस्था में सुसम्पन्न समृद्ध परिवार के सुखों को और माता-पिता के प्यार-दुलार को लात मार कर गुरु की खोज में घर छोड़कर भाग निकले और निरन्तर १८ वर्ष तक पहाड़ों-पर्वतों जंगलों-वनों की खाक छानते रहे। भूख प्यास और शारीरिक सुखों की लेशमात्र भी चिन्ता न करते हुए जहां कहीं भी किसी योगी साधु महात्मा का पता चला, वहां उनकी तलाश में उनके आश्रमों मठों और गुफाओं में जा पहुंच और उस काल में शास्त्र और योग के नाम पर जो कुछ पढ़ाया और सिखाया जाता था उसे बड़ी निष्ठा और तन्मयता से ग्रहण किया और मानो जैसे ब्रह्मविद्या के लक्ष्य तक भी पहुंच गए हों। इन्हीं दिनों उनके मन में कुछ ऐसे विचार भी आए कि अब इस नश्वर शरीर का क्या लाभ, क्यों न इसको त्याग प्रभु चरणों में रमण करें और जैसे एक दिन वह महान् आत्मा तक पहाड़ की चोटी पर चढ़ नीचे कूद कर शरीर त्यागने की सोच रहे थे, कि तुरन्त अन्तरात्मा से आवाज आई "दयानन्द! ठहरो, यह क्या कर रहे हो, अभी तुम्हारे लिए बहुत कुछ करने को शेष है।" 'बस इसके पश्चात् वह महान् योगी (देव दयानन्द) ज्ञान की पिपासा लिये हुए जैसे-तैसे प्रज्ञाचक्षु महान् योगी, तत्कालीन महान् वैय्याकरण दण्डी स्वामी विरजानन्द की कुटिया पर मथुरा जा पहुंचे। कुछ वार्तालाप के पश्चात् वहां योगी शिष्य दयानन्द ने योगी गुरु ब्रह्मर्षि स्वामी विरजानन्द से लगभग तीन वर्ष तक व्याकरण ग्रन्थों—अष्टाध्यायी महाभाष्य आदि का अध्ययन किया। गर्मी, सर्दी, बरसात और गुरु की फटकारों को सहते हुए बड़ी निष्ठा से विद्या ग्रहण करके दीक्षा के समय गुरु दक्षिणा के रूप में कुछ लौंग के सिवाय अपने पास कुछ भी न पाकर बड़ी श्रद्धा से गुरु चरणों में अपने आपको समर्पित करके बोले, "आज्ञा करो भगवन् मैं वही पालन करूंगा" और वह देव दयानन्द अपने लम्बे अनुभव से धारी हुई धारणाओं को छोड़कर गुरु दक्षिणा के रूप में गुरु के निर्देश के अनुसार जनता जनार्दन के अज्ञात अन्धकार को मिटा कर ज्ञान का प्रचार करने में जीवन के अन्तिम क्षणों तक जुटे रहे।

महर्षि देव दयानन्द की रचनाओं उपदेशों और जीवन का अध्ययन करने से जो तथ्य उभर कर सामने आता है, वह है 'मानव-निर्माण'। ऋषि के द्वारा किये गये खण्डन-मण्डन, विभिन्न मतमतान्तरों की आलोचनाएँ और आर्यसमाज की स्थापना के पीछे एक ही ध्येय प्रतीत होता है कि मानव मात्र का उपकार अधिक से अधिक हो सके। अतः हम देखते हैं कि देव दयानन्द का मनन, चिन्तन और कार्य का मुख्य ध्येय मानव समाज की उन्नति, उन्नति के चार फल—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि और इस सिद्धि के लिए वेद मार्ग के अनुकरण करने का प्रचार था। इसी ध्येय को लेकर उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि, व्यवहारभानु गोकरुणानिधि, पंचमहायज्ञविधि, वेदभाष्य, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रंथों को रचकर उनमें मनुष्य जीवन का उद्देश्य परम्परा से मान्यता प्राप्त चार फलों धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति पर बल दिया गया है। वेदादि सत्यशास्त्र, सब ऋषि-मुनि इस विषय में सहमत हैं कि मनुष्य जीवन का वास्तविक उद्देश्य धर्म अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति करना है न कि विषय भोगों में फसना। नीतिकारों ने भी यही कुछ ऐसे लिखा है—

धर्म-अर्थ-काममोक्षाणाम्,
यस्य एकोऽपि न विद्यते।
अजागलस्तनस्य इव,
तस्य जन्म निरर्थकम॥

ऋषिकृत ग्रन्थों में स्थान-स्थान पर धर्म, अर्थ का वर्णन।

१ जो मनुष्य इस ब्रह्मचर्य को प्राप्त होकर लोप नहीं करते, वे सब प्रकार के रोगों से रहित होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होते हैं। सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास।

२ विद्वानों का यही काम है कि सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण, असत्य का त्याग करके परम आनन्दित होते हैं, वे ही गुण ग्राहक पुरुष विद्वान् होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्षरूप फलों को प्राप्त होकर प्रसन्न रहते हैं। सत्यार्थप्रकाश (दशम समुल्लास)

३ उपदेश्योपदेष्टृत्वात् तत्सिद्धिः। इतरथान्धपरम्परा। सांख्य ३। ७९, ८१ अर्थात् जब उत्तम-उत्तम उपदेशक होते हैं तब अच्छे प्रकार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सिद्ध होते हैं। और जब उत्तम उपदेशक और श्रोता नहीं रहते, तब अन्ध परम्परा चलती है। फिर भी जब सत्पुरुष उत्पन्न होकर सत्योपदेश करते हैं तभी अन्ध परंपरा नष्ट होकर प्रकाश की परम्परा चलती है। सत्यार्थप्रकाश (एकादश समुल्लास)

४ किन्तु मूर्तिपूजा करते-करते ज्ञानी तो कोई न हुआ प्रत्युत सब मूर्तिपूजक अज्ञानी होकर मनुष्य जन्म व्यर्थ खोके बहुत-बहुत से मर गये और जो अब हैं वा होंगे वे भी मनुष्य जन्म के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति रूप फलों से विमुख होकर निरर्थ नष्ट हो जायेंगे। सत्यार्थप्रकाश (एकादश समुल्लास)

५ चला अब तो जो हुआ सो हुआ परन्तु अब तो अपनी मिथ्या अपवादि बुराइयों को छोड़ो और सुन्दर ईश्वरोक्त वेदविदित सुपथ में आकर अपने मनुष्यरूपी जन्म को सफल कर धर्म, अर्थ काम, मोक्ष इन चतुष्टय फलों को प्राप्त होकर आनन्द भोगो। सत्यार्थप्रकाश (एकादश समुल्लास)

६ जब ऐसा जिज्ञासु विद्वान् के पास जाये उस शान्त चित्त जितेन्द्रिय समीप प्राप्त जिज्ञासु को यथार्थ ब्रह्म विद्या परमात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव का उपदेश करे और जिस-जिस साधन से वह श्रोता धर्मार्थ, काम, मोक्ष और परमात्मा को जान सके वैसी शिक्षा किया करें।

सत्यार्थप्रकाश (एकादश समुल्लास)

७ जो पुरुष विद्वान्, ज्ञानी, धार्मिक, सत्पुरुषों का संगी, योगी, पुरुषार्थी, जितेन्द्रिय, सुशील होता है वही धर्मार्थ, काम, मोक्ष को प्राप्त होकर इस जन्म और परजन्म में सदा आनन्द में रहता है। सत्यार्थप्रकाश (एकादश समुल्लास)

८ सर्वशक्तिमान् परमात्मा की कृपा सहाय और आप्तजनों की सहानुभूति से यह सिद्धान्त सर्वत्र भूगोल में शीघ्र प्रवृत्त हो जावे जिससे सब लोग सहज से धर्मार्थ, काम, मोक्ष की सिद्धि करके सदा, उन्नत और आनन्दित होते रहें, यही मेरा मुख्य प्रयोजन है। सत्यार्थप्रकाश स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश

९ विषयरूपी सुखमात्र को पुरुषार्थ का फल मानकर विषय दुःख निवारणमात्र में कृतकृत्यता और स्वर्ग मानना मूर्खता है। अग्निहोत्रादि यज्ञों से वायु, वृष्टि, जल की शुद्धि द्वारा आरोग्यता का होना उससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि होती है उसको न जानकर वेद ईश्वर और वेदोक्त धर्म की निन्दा करना धूर्तों का काम है। सत्यार्थप्रकाश, (द्वादश समुल्लास)

१० हे ईश्वर दयानिधे! भवत् कृपयानेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्न (वैदिक संध्या)

११. जिस करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त हो सकते हैं और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं इसलिए संस्कारों का करना सब मनुष्यों को अति उचित है। (संस्कार विधि भूमिका)

१२ सर्वशक्तिमान जगदीश्वर आप मुझ और सब पढ़ने पढ़ाने हारे तथा सब संसार पर अपनी कृपादृष्टि से सबको सभ्य, विद्वान्, शरीर और आत्मा के बल से युक्त और परोपकारादि शुभ कर्मों की सिद्धि करने कराने में चिरायु, स्वस्थ पुरुषार्थी उत्साही करें कि जिससे हम परमात्मा की सृष्टि में उसके गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल अपने गुण, कर्म-स्वभावों को करके धर्मार्थ काम और मोक्ष की सिद्धि कर कराके सदा आनन्द में रहें। (संस्कारविधि समावर्तन प्रकरण)

१६ गायत्री मन्त्र का अर्थ विचारपूर्वक परमात्मा की स्तुति प्रार्थनोपासना करे। पुनः हे जगदीश्वर दयानिधे! आपकी कृपा से जपोपासनादि कर्मों को करके हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि को शीघ्र प्राप्त होवें। (संस्कारविधि गृहाश्रम प्रकरण)

१४. जिस परमात्मा का यह "ओ३म्" नाम है उसकी कृपा और

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आर्यसमाज हनुमान रोड मे

प्रोफेसर नरदेव वेदालंकार का सम्मान

दक्षिण अफ्रीका मे गुरुकुल कांगडी के सुयोग्य स्नातक प्रोफेसर नरदेव वेदालकार ने पिछले चालीस वर्षों मे वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार और आर्यसमाज के सगठन को आधारभित्ति प्रदान करने के लिए अभूतपूर्व कार्य किया है। पिछले दिनों वे अपनी मातृभूमि पर भारतीय जनमानस के दर्शन करने और यहा के कर्मठ कार्यकर्ताओं एव मनीषियों से साक्षात्कार करके नई ऊर्जा प्राप्त करने हेतु भारत आए। वे दक्षिण अफ्रीका में गुजराती अध्यापक के रूप में गए थे। उन्होंने इस बात पर चिन्ता व्यक्त की कि यद्यपि दक्षिण अफ्रीका में जन्मगत जातिभेद समाप्त हो चुका है, पर भारत मे इसकी जड और ज्यादा मजबूत होती जा रही हैं। वहा पर एक ही परिवार के भाइयों में से एक ब्राह्मण है, दूसरा क्षत्रिय, तीसरा वैश्य और चौथा शूद्र। वहा पर वर्ण व्यवस्था गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार है। दक्षिण अफ्रीका के डरबन विश्वविद्यालय में पाश्चात्य भाषाओं के साथ साथ हिन्दी, गुजराती तेलुगू और तमिल पढाने की व्यवस्था है। जब उन्हें पता लगा कि भारत मे लोक सेवा आयोग की परीक्षाएं केवल अ ग्रजी मे होती हैं, तो उन्हें बहुत ही दुख हुआ। वैदिक धर्म के प्रचार में उन के सामने सबसे बडी कठिनाई विद्वानों और साहित्य का अभाव है। भारत से समय-समय पर वहा विद्वान् गये अवश्य हैं पर वे अपने कार्य का अच्छी तरह निर्वाह नही कर पाए। स्वामी भवानी दयाल जी और स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज से वहा के लोग बहुत ही प्रभावित हुए। उन्होंने बताया कि वहा पर धन की कोई कठिनाई नहीं है, वहां पर काम करने वाले नही मिलते।

प० नरदेव वेदालकार का सम्मान अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद भारत के तत्त्वावधान में आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली के सभागार मे किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, उपप्रधान प० रामचन्द्र राव वन्दे मातरम्, मन्त्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, महामन्त्री श्री सूर्यदेव मन्त्री श्री मूलचन्द गुप्त मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री पुरुषोत्तमलाल गुप्त, भाषा के सम्पादक डा० वेद प्रताप वैदिक, परिषद् के सचिव श्री बालेश्वर अग्रवाल श्री हरि बाबू कसल श्री ब्रह्मदत्त स्नातक प० सत्यदेव भारद्वाज वेदालकार, श्री सरदारीलाल वर्मा श्री खैरायती लाल भाटिया तथा अन्य अनेक महानुभावों ने अपनी शुभ कामनाएं दी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य

क्रम	पुस्तक	लेखक	मूल्य
१	नैतिक शिक्षा (भाग प्रथम)		१ ५०
२	नैतिक शिक्षा (भाग द्वितीय)		१ ५०
३	नैतिक शिक्षा (भाग तृतीय)		२ ००
४	नैतिक शिक्षा (भाग चतुर्थ)		३ ००
५	नैतिक शिक्षा (भाग पचम)		३ ००
६	नैतिक शिक्षा (भाग षष्ठ)		३ ००
७	नैतिक शिक्षा (भाग सप्तम)		३ ००
८	नैतिक शिक्षा (भाग अष्टम)		३ ००
९	नैतिक शिक्षा (भाग नवम)		३ ००
१०	नैतिक शिक्षा (भाग दशम)		४ ००
११	नैतिक शिक्षा (भाग एकादश)		४.००
१२	नैतिक शिक्षा (भाग द्वादश)		५ ००
१३	धर्मवीर हकीकतराय	वैद्य गुरुदत्त	५ ००
१४	फ्लेश आफ ट्रुथ	डा० सत्यकाम वर्मा	२ ००
१५	सत्यार्थप्रकाश सन्देश	,,	२ ००
१६	एनाटोमी आफ वेदान्त	स्वा० विद्यानन्द सरस्वती	५ ००
१७	आर्यों का आदि देश	,, ,,	२ ००
१८	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	प० सच्चिदानन्द शास्त्री	५ ००
१९	प्रस्थान त्रयी और अद्वैतवाद	—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती	२५ ००
२०	दी ओरिजन होम आफ आर्यन्स	—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती	५ ००
२१	चत्वारो वै वेदा	,, ,,	२ ००
२२	द्वैतसिद्धि	,,	५ ००
२३	आर्यसमाज आज के सदर्भ में	—डा० धर्मपाल, डा० गोयनका	२०.००
२४	हसता चल हसाता चल	स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती	६ ५०
२५	दयानन्द पुत्र दा वदाज (ट्रैक्ट)		५०/-रु० सैकडा
२६	पूजा किसकी ? (ट्रैक्ट)		५०/ रु० सैकडा
२७	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (ट्रैक्ट)		५०/-रु० सैकडा
२८	योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश (ट्रैक्ट)		५०/ रु० सैकडा
२९	आर्योद्देश्यरत्नमाला (सुगम व्याख्या)	डा० रघुवीर	५०/-रु० सैकडा
३०	महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी स्मारिका (सन १९८३)		५ ००
३१	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्धशताब्दी स्मारिका १९८५		५ ००
३२	महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी स्मारिका १९८५		१० ००
३३	महर्षि दयानन्द निर्वाण विशेषाक		१० ००
३४	ऋषिबोधाक		१० ००
३५	योगीराज श्रीकृष्ण विशेषाक		१० ००

नोट—उपरोक्त सभी पुस्तकों पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा। पुस्तकों की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक-व्यय पृथक् नही लिया जाएगा। कृपया अपना पूरा पता एव नजदीक का रेलवे स्टेशन साफ-साफ लिखें।

पुस्तक प्राप्तिस्थान—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

(पृष्ठ ४ का शेष)

आध्यात्मिकतावादी देव दयानन्द के द्वारा...

अपने धर्मयुक्त पुरुषार्थ से हमारे शरीर, मन और आत्मा का त्रिविध दुख जो कि अपने दूसरे से होता है नष्ट हो जावे और हम लोग प्रीति से एक दूसरे के साथ वेदोक्त धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि में सफल होके सदव स्वयम् आनन्द में रहकर सब को सानन्द में रखें। (सस्कार-विधि गृहाश्रम प्रकरण)

१५ हे परमेश्वर, भगवन्! धर्मार्थ, काम, मोक्षादि तथा विज्ञानादि दान से अत्यन्त मुझ को बढ़ा। (आर्याभिविनय द्वितीय प्रकाश यजुर्वेद ३६।१८

१६ क्योंकि सब पुरुषार्थ यही है कि परमात्मा उसकी आज्ञा और उसके रचे जगत का यथार्थ से निश्चय(ज्ञान) करना। उसी से धर्म, अर्थ काम और मोक्ष—इन चार प्रकार के पुरुषार्थ के फलो की सिद्धि होती है अन्यथा नहीं। इससे तन, मन, धन और आत्मा इनसे नम्रतापूर्वक ईश्वर के सहाय से सब मनुष्यों को धर्मादि पदार्थों की यथावत् सिद्धि अवश्य करनी चाहिए।

आर्याभिविनय द्वितीयप्रकाश (४२) यजुर्वेद १७।२७

अतः स्पष्ट है कि महर्षि का जीवन आध्यात्मिकता से ओत प्रोत रहा और अन्तिम श्वास तक इसका ही प्रचार और प्रसार करते रहे। कुछ लोगो का यह कहना है कि स्वामी जी केवल समाज सुधारक थे' सारहीन यथार्थ के नितान्त विरुद्ध है। निस्सन्देह महर्षि अपने समय के महान् समाज सुधारक थे परन्तु इसमें भी आध्यात्मिकता की पुट लगी थी, और आध्यात्मिकता निहित थी। हमारे शास्त्रो और नीतिकारों ने मानव जीवन को द्विचक्र वाहन कहके पुकारा है एक चक्र भौतिकता का और दूसरा आध्यात्मिकता का। अत हमें चाहिए कि हम अपने जीवनों में दूसरे चक्र आध्यात्मिकता को विशेष स्थान दे कर अपने जीवन को सौम्य सरस बनायें। और इस प्रकार इस नाशवान् ससार को रहने योग्य बनाकर महर्षि के स्वप्नो को साकार करने का भरसक प्रयत्न करें।

आर्यसमाज विवेक विहार में स्वस्ति शांति राष्ट्रभृत् यज्ञ सम्पन्न

भारतीय दर्शन और संस्कृति को अपने जीवन में बनाए रखने के लिए मनुष्य का संस्कारी होना अति आवश्यक है। संस्कार का मनुष्य के जीवन में बहुत ही महत्त्व है। यदि संस्कार अच्छे होंगे तो व्यक्ति सदाचारी होगा और वह किसी का बुरा नहीं चाहेगा। हम प्रतिदिन कहते हैं कि हम प्राणीमात्र का भला करेंगे, परन्तु यदि हम स्वार्थ में लिप्त रहेंगे तो हम केवल अपनी ही सोचेंगे दूसरे की क्यों सोचेंगे। इसलिए संस्कारी होना बहुत ही आवश्यक है। संस्कारी के लिए संस्कृत का पढना आवश्यक है। भारत के शिक्षाविद्, पता नहीं कि उन्हें कहां से प्रेरणा मिलती है वे संस्कृत को समाप्त करने पर तुले हुए हैं। आर्यसमाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत संस्कृत रक्षा समिति का गठन किया गया है। स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती के नेतृत्व में शिष्ट मण्डल कई बार केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री तथा अन्य अधिकारियों से मिल भी चुके हैं। हमारे देश में आश्वासन देना सरल हो गया है उसे क्रियान्वित करना कठिन कार्य है। यदि हम चाहते हैं कि हमारी आने वाली पीढियां संस्कारवान बन तो यह आवश्यक है कि हम अपनी संस्कृति की रक्षा करें और उस के लिए संस्कृत की रक्षा करें। ये उद्गार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने आर्यसमाज विवेक विहार के वेद प्रचार समारोह के अवसर पर व्यक्त किए। आर्यसमाज विवेक विहार में २६ दिसम्बर १९८८ से १ जनवरी १९८९ तक राष्ट्रभृत यज्ञ तथा मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामकथा का आयोजन किया गया था। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक आचार्य रामकिशोर वैद्य के प्रवचन हुए तथा प० वेद व्यास और प० विष्णुदत्त के भजनोपदेश हुए। पूर्णाहुति के अवसर पर स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने आशीर्वाद दिया।

✡

आवश्यक सूचना

सभी आर्य सज्जनों को विदित ही है कि हमारे द्वारा प्राचीन अप्राप्य शास्त्रार्थों का संग्रह तीन भागों में "निर्णय के तट पर" नाम से प्रकाशित किया जा चुका है। जिसमें लगभग एक सौ शास्त्रार्थों का समावेश हो चुका है। परन्तु हमारे पूर्ण प्रयास के बाद भी जो शास्त्रार्थ सामग्री इन तीन भागों में नहीं आ पाई उसे अब इस ग्रन्थ के चौथे भाग में प्रकाशित किया जाएगा। जिसकी लागत मात्र केवल ८०) रुपये में बुक किया जा रहा है, छपने के बाद इसका मूल्य दो सौ रुपये होगा। 'यह छूट केवल ३१ मार्च १९८९ ई० तक लागू रहेगी।"

आप अभी केवल तीस रुपये भेज कर अपनी प्रति बुक करा सकते हो, बकाया पचास रुपये आप से हम ग्रन्थ के तीन हिस्से छपने के बाद मंगा लिये जायेंगे। ग्रन्थ की सामग्री व आकर्षक प्रारूप को देखकर आप स्वयं ही चकित रह जायेंगे क्योंकि यह कार्य किसी व्यापारिक दृष्टिकोण से नहीं किया जा रहा है। बल्कि 'पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज" की अन्तिम इच्छानुसार किया जा रहा है।

आशा है आप इस ग्रन्थ के अधिक से अधिक सदस्य बन कर उस महान दिवंगत पुण्यात्मा की अन्तिम इच्छापूर्ति में भागी बनेंगे।

निवेदक—लाजपत राय अग्रवाल
संचालक
अमर स्वामी प्रकाशन विभाग
१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद

राष्ट्रभृत् यज्ञ एवं विराट् ऋषि मेला

महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद) के पावन प्रांगण में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी वि० सं० २०४५ फाल्गुन कृष्णा ४, ५, ६ शनिवार, रविवार, सोमवार तदनुसार २५, २६, २७ फरवरी १९८९ को "राष्ट्रभृत यज्ञ एवं विराट् ऋषि मेला" का समायोजन किया गया है। जिसमें आर्य जगत् के लब्धप्रतिष्ठ मूर्धन्य विद्वान्, सन्यासी एवं महोपदेशक पधारेंगे।

राष्ट्रभृत यज्ञ की सुफलतार्थ पुष्कल मात्रा में घृत-सामग्री, दाल-चावल, चीनी, अन्न, वस्त्रादि पदार्थ प्रदान कर तथा अधिकाधिक संख्या में पधारकर पुण्य के भागी बनें।

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश की

अलवर यात्रा

—कृष्णपाल, प्रधान प्रशिक्षक आर्य वीर दल

दिल्ली प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत चल रहे आर्य वीर दल के ३५ आर्य वीरों का एक दल राजस्थान शताब्दी के लिए सभा कार्यालय १५ हनुमान रोड से संयोजक श्री प्रियतम दास रसवन्त आर्य वीर दल अधिष्ठाता व श्री डा० ज्ञानप्रकाश संचालक आर्य वीर दल दिल्ली के नेतृत्व में वैदिक धर्म की जय आर्य वीरो जागो ! के घोष के साथ २८ दिसम्बर की रात्रि १० बजे चला।

इससे पहले आर्यसमाज हनुमान रोड के मन्त्री श्री खैराती लाल चाटिया के द्वारा सभी आर्य वीरों का स्वागत किया गया। २९ तारीख को प्रात ५ बजे दिल्ली से मथुरा पहुंचा। वहां पर आर्य वीरों ने नित्य-कर्म के पश्चात शाला में व्यायाम किया और तुरन्त ही स्नान करके सन्ध्या आदि से निवृत्त होकर स्वामी विरजानन्द सरस्वती की कुटिया के स्थान को देखा। फिर श्री कृष्ण जन्म भूमि देखी। वृन्दावन गये वहां पर गुरुकुल विश्वविद्यालय को देखा। फिर वहीं प्रवेक मन्दिर, चीरघाट विधवा मन्दिर आदि-आदि स्थान देखे। वहीं पर दोपहर का खाना खाकर ताजमहल को देखने के लिए आगरा पहुंचे। रात्रि में विश्राम के लिए आर्यसमाज मंदिर जयपुर हाउस में ठहरे। शाम को नित्य कर्म के बाद मन्त्रोच्चारण के बाद शयन हुआ। अगले दिन ३० दिसम्बर को प्रात काल नित्य कर्म के बाद शाखा लगायी गयी। आर्य वीरों को अलग-अलग व्यायाम का अभ्यास कराया गया।

वहां से फतेहपुर सीकरी का बुलन्द दरवाजा देखकर भरतपुर आये और महाराजा सूरजमल का किला देखा। शाम को अलवर पहुंचे वहां श्री सत्यवीर जी शास्त्री संचालक आर्य वीर दल राजस्थान से मिले और रात्रि के भोजन का कार्य दिल्ली आर्य वीर दल ने संभालने की जिम्मेवारी ली।

३१ दिसम्बर को प्रात ५.३० बजे आर्य वीर दल कैम्पस में शाखा लगी जिसमें लगभग २०० आर्य वीर उपस्थित थे। फिर प्रात यज्ञ करने के बाद शोभा यात्रा के लिए तैयारी की।

दिल्ली के आर्य वीरों का व्यायाम प्रदर्शन ऐतिहासिक शोभा यात्रा में सराहनीय रहा।

चुनाव सम्पन्न—

आर्यसमाज सीहोर, भोपाल क्षेत्र (म०प्र०)

आर्यसमाज सीहोर (म० प्र०) के अधिकारियो का चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ।

प्रधान	श्री जगमोहन जी ...
मन्त्री	श्री कमलेश कुमार याज्ञिक
कोषाध्यक्ष	श्री राम भरोस जी आर्य
पुस्तकाध्यक्ष	श्री मा० बाबूलाल जी आर्य

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ प्रबन्ध समिति (फरीदाबाद) साधारण अधिवेशन सम्पन्न

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ प्रबन्ध समिति (फरीदाबाद) को साधारण सभा का विशेष अधिवेशन स्वामी शक्तिवेश जी की अध्यक्षता मे १ जनवरी १६८६ रविवार को ११ बजे सम्पन्न हुआ। जिसमे सर्वसम्मति से पारित हुआ कि गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र के रूप मे विकसित कर सन्यासी, युवक अधिकारी उपदेशक, पुरोहित कृषक, श्रमिक तथा विदेशियों को वैदिक आध्यात्मिक, योग सम्बन्धो विषयो का मार्गदर्शन कराया जाएगा। इसके अतिरिक्त सन्यासियो के वृद्धावस्था तथा रुग्ण अवस्था में आश्रय के लिए विशेष व्यवस्था की जाएगी। गुरुकुल मे शीघ्र ही प्राथमिक स्तर पर शिक्षा प्रारम्भ की जाएगी। अधिवेशन में अगले तीन वर्षों के लिए नयी प्रबन्ध समिति का गठन इस प्रकार हुआ—

स्वामी शक्तिवेश जी	प्रबन्ध निदेशक एव प्रधान सचालक
श्री डा सत्यकेतु जी विद्यालकार	प्रधान
श्री हरिराम जी आर्य	मन्त्री
श्री कुलवीर जी	कोषाध्यक्ष

अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डो पर सूचना हिन्दी में

देश के चारो अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों पर कुछ ही महीनो में क्लोज सर्किट टी० वी० पर सूचनाए हिन्दी में उपलब्ध कराई जायेंगी। इन हवाई अड्डों पर लगे क्लोज सर्किट टी० वी० पर शीघ्र ही यात्रियो के लिए सूचनाओं का प्रदर्शन अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी मे भी शुरू हो जाएगा।

—पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार
२ १ ८६

आर्यसन्देश पढ़े, पढ़ाये

आर्य जगत् के समाचारों व उपयोगी लेखो, अध्यात्म विवेचनों से युक्त, सामयिक चेतावनियो से जूझने की योजना देने वाले साप्ताहिक आर्यसन्देश के ग्राहक बनिए और बनाइए। साथ ही वर्ष में चार अन्य विशेषांक प्राप्त कीजिए। वार्षिक शुल्क केवल २५ रुपये। आजीवन २५० रुपये मात्र।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No 32387/77 Post in N D P S O on 12 13 1 89 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७७६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसंस नं० यू १३६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से

आर्य युवा महासम्मेलन

शनिवार १४ जनवरी ८९, प्रातः ९ बजे
तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली

अध्यक्ष :

श्री स्वामी आनंद बोध सरस्वती

प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

मुख्य अतिथि :

महामहिम डॉ. शंकरदयाल शर्मा

उप-राष्ट्रपति, भारत

उद्बोधन : श्री रामचन्द्र विकल, संसद सदस्य
पं० शिवकुमार शास्त्री, पूर्व संसद सदस्य
डॉ० वाचस्पति उपाध्याय
श्री बाल दिवाकर हंस

❀ वेद गायन ❀ व्यायाम प्रदर्शन—पी० टी०, योग, शरीर सौष्ठव इत्यादि प्रदर्शन।

पुरस्कार वितरण : · · ·

आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है।

डॉ० धर्मपाल	सूर्यदेव	प्रियतम दास रसवन्त
(प्रधान)	(महामन्त्री)	(अधिष्ठाता आर्य वीर दल)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

सेवा में—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस, गली न० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित । रजि० न० डी (सी०) ७७६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ अंक ११ | रविवार २२ जनवरी १९८९ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८९ | माघ २०४५ | दयानन्दाब्द—१६४
मूल्य : एक प्रति ६० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० डालर, ३० पौंड

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लोगों को नारा दिया—वेदों की ओर लौट चलो

—डा० शंकरदयाल शर्मा, उपराष्ट्रपति भारत

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लोगों को वह मार्ग दिखाया जो सब के लिए कल्याणकारी है। इसके लिए उन्होंने वेदों के आदेशों का पालन करने, उन की शिक्षाओं को अपने जीवन और व्यवहार में लाने की प्रेरणा दी। मेरी मान्यता है कि वेदों में कोई ऐसी बात नहीं है जो मानव मूल्यों की स्थापना के विरोध में जाती हो, लोगों को बाटती हो या उन्हें एक दूसरे के प्रति घृणा करना सिखाती हो। वेदों की सारी बात इन्सान को अच्छा इन्सान बनने की प्रेरणा देती हैं। वेदों में 'मनुर्भव' का उपदेश है। यह उपदेश शाश्वत है। इसलिए वेद शाश्वत हैं। शाश्वत वही है जो था, जो है और जो रहेगा। यह शाश्वतता उसी को मिल सकती है, जो जोड़ता है, जो उठाता है। आर्यसमाज ने यही कार्य किया है। आज मैं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों का धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने मुझे यहाँ बुलाकर आप सब से बात करने का अवसर प्रदान किया। ये उद्गार भारत के उपराष्ट्रपति, महामहिम डॉ० शंकर दयाल शर्मा ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य वीर दल की ओर से आयोजित आर्य युवा महासम्मेलन के समापन समारोह में व्यक्त किए।

डॉ० शंकर दयाल शर्मा ने कहा कि भारत के स्वाधीनता संग्राम में जो योगदान आर्यसमाज ने दिया है, वह चिरस्मरणीय रहेगा। उन्होंने बताया कि जिस समय [illegible] लगभग समाप्त थे, जब उन पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव था, आर्यसमाज पूर्णत भारतीय संस्कृति की मिट्टी से उत्पन्न, पोषित तथा प्रफुल्लित था, इसीलिए आर्यसमाज भारत की राष्ट्रीय विचारधारा में इतना सक्रिय एवं ऐतिहासिक योगदान करने में समर्थ हुआ।

माननीय मुख्य अतिथि महोदय ने अनेक वेद मन्त्रों के उद्धरण देकर इस मान्यता की पुष्टि की कि वही व्यक्ति श्रेष्ठ है जो केवल अपने लिए नहीं बल्कि सभी के लिए जीवित है तथा सभी की उन्नति में सन्तुष्टि महसूस करता है। यह बात आर्यसमाज के नियमों में है। इसलिए आर्यसमाज के कार्यकर्ता तथा उनके कार्यकलाप प्रशंसनीय हैं। डॉ० शर्मा ने आर्यसमाज के छठे नियम को प्रस्तुत करते हुए आशा व्यक्त की कि अन्य [illegible] भी इसे अपनायेंगे। उन्होंने शान्ति पाठ के एक-एक पद को उद्धृत करते हुए व्याख्यायित किया और बताया कि जब हम नक्षत्रों और अन्तरिक्ष की शांति की कामना करते हैं तो इससे तात्पर्य 'स्टार वार' से छुटकारा दिलाने से है। शान्ति पाठ का एक-एक पद इस बात की [illegible] की प्रेरणा देता है कि [illegible] शान्ति हो। [illegible] यू० एस० ओ०, सूमीग्रेफ, [illegible] वाकीवन [illegible] सर्वत्र शान्ति [illegible] के लिए ही स्थापित किए गए हैं। [illegible] हमारे वेदों में है कि सम्पूर्ण विश्व में, कोने-कोने में, [illegible] एक-एक अणु में [illegible] शान्ति हो।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ० धर्मपाल ने सभा की गतिविधियों का परिचय देते हुए युवा सचेतना के लिए किये गये कार्यों का विवरण दिया। उन्होंने बताया कि युवा शक्ति ही निर्माण के कार्यों को कर सकने में समर्थ है। वृद्ध लोग परामर्श देने के लिए होते हैं। वही समाज तरक्की कर सकता है जिसमें बड़े लोग सदुपदेश कर, सही मार्ग दिखायें और युवा लोग उस मार्ग पर चलें। डॉ० धर्मपाल ने इस आर्य युवा महासम्मेलन में पधारने के लिए उपराष्ट्रपति महोदय के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए माल्यार्पण द्वारा उनका स्वागत किया। सम्पूर्ण स्टेडियम चारों ओर से तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। उपराष्ट्रपति महोदय का श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, श्री सूर्यदेव, श्री महाशय धर्मपाल, श्री बाल दिवाकर हंस श्री रामचन्द्र विकल, प्रो० शेर सिंह, श्री रामनाथ सहगल श्री ओ३म् प्रकाश आर्य, श्रीमती सरला महता, श्रीमती प्रकाश आर्या, डॉ० वाचस्पति उपाध्याय, श्री [illegible] रसवन्त आदि आर्यजनों ने माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया।

इस अवसर पर डा० वाचस्पति उपाध्याय, प्रो० शेर सिंह, श्री बाल दिवाकर हंस, श्री सूर्यदेव, श्री रामचन्द्र विकल ने भी [illegible] का मार्गदर्शन किया।

[illegible] श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्यसमाज द्वारा किए गए कार्यों का [illegible] करते हुए, आर्य जनों का आह्वान किया कि वे सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिए, हर दीन दुःखी की सहायता के लिए, वैदिक धर्म के प्रसार के लिए, और युवा शक्ति में राष्ट्रीय भावना का संचार करने के लिए तैयार रहें। उन्होंने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यों की और विशेष रूप से युवा शक्ति, महिला जागरण अस्पृश्यता उन्मूलन तथा व्यसन मुक्ति कार्यक्रमों की सराहना की।

दिल्ली के ४० से अधिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने आर्य युवा सम्मेलन के अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। सर्वश्रेष्ठ पी० टी०, योग तथा अस्त्र-संचालन के लिए एम डी. एच के मालिक महाशय धर्मपाल द्वारा प्रदत्त तीन भव्य विजयोपहार, महामहिम उपराष्ट्रपति द्वारा क्रमश रतनचन्द सूद आर्य पब्लिक स्कूल, श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर तथा आर्य कन्या गुरुकुल नरेला को प्रदान किये गये। एक विशेष पुरस्कार सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल को श्रेष्ठ प्रस्तुति के लिए दिया गया।

श्री रामचन्द्र विकल ने बाकी लगभग ३८० बड़ी शील्ड, कप तथा वैदिक साहित्य अपने करकमलों से भेंट करते हुए युवा शक्ति से राष्ट्रोत्थान के कार्यों में तत्परतापूर्वक लगने की प्रेरणा दी। श्री बाल दिवाकर हंस ने आर्य वीरों को पुरस्कृत करके प्रोत्साहित किया। सभी कार्यक्रमों का सफल संचालन श्री मूलचन्द गुप्त ने किया।

पुरस्कारों की सूची अगले अंक में प्रकाशित की जायेगी।

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त | सहायक सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

काम्यानां कर्मणां न्यासं सन्न्यासं कवयो विदुः।
सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः ॥

—गीता १८।२

सन्यास कैसा कठिन परन्तु उच्च पद है और वैराग्य कैसा शुद्ध मार्ग है!

'न लिङ्गं धर्मकारणम्।

गेरुवे वस्त्र पहनकर कोई भी मनुष्य सन्यासी नहीं बन सकता। जिसका मन दृढ नही, जिस ने लगातार अभ्यास से आज्ञा-पालन के नियम नही सीखे और जिस ने किसी तरह कवायद करके शस्त्र-सचालन नहीं सीखा, वह अगर सैनिक वेष पहन भी ले तो युद्ध-भूमि में क्या करेगा? इसी तरह जिस मनुष्य ने निरन्तर साधनों द्वारा अपनी इन्द्रियों और अपने मन को आत्मा का दास नहीं बनाया, जिस ने यम-नियम के पालन द्वारा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहङ्कार आदि के मुकाबले के लिए धैर्य, क्षमा आदि के शस्त्र धारण नही किए, उसने अगर गेरुवे वस्त्र धारण कर भी लिये हैं तो उसे कौन दीर्घदर्शी सन्यासी कहेगा? सन्यास बड़ा ऊँचा पद है। जिस प्रकार ऊँची चोटी पर उस का मन्दिर है इसी प्रकार उसे प्राप्त करना कठिन है। भारतवर्ष में इस समय लाखों भगवे वस्त्रधारी घूम रहे हैं। एक-एक के आसन के पास सैकड़ों हजारों स्त्री-पुरुष श्रद्धा और अश्रद्धा से बैठे हुए हैं। अगर सचमुच वे सन्यासी होते, यदि इन मे से एक-चौथाई भी सन्यास पद के अधिकारी होते तो क्या भारतवर्ष में इसी प्रकार हाहाकार मचा रहता?

सं+न्यास न केवल यही है कि फल भोग की इच्छा को छोड़ देना, अपितु ऐसे कर्मों को भी न करना जिनका निश्चित परिणाम कुछ न कुछ जरूर होने वाला हो। सकाम कर्मों से सर्वथा त्याग एक पुरुष को त्याग की पहली सीढ़ी पर पहुँचा सकता है। परन्तु निष्काम कर्म किस तरह करने चाहिएं, यह बड़ा टेढ़ा प्रश्न है। अनेक कर्म फलभोग की इच्छा से किए जाते हैं, राजा अश्वमेध यज्ञ प्रजा के पालन के निमित्त करता है, ताकि प्रजा को सन्तुष्ट करे, राज्य की उन्नति करे, राज्य-प्रबन्ध के लिए राज्य-कोष को भर देवे। धार्मिक गृहस्थ पुरुष, पुत्रेष्टि यज्ञ इसलिए करता है कि उसके पुत्र उत्पन्न होकर उसे आनन्दित करें। ससार में ये सब कर्म, फलभोग की इच्छा से किए जाते हैं। उन का त्याग बड़े परिश्रम और आत्मदृढता से हो सकता है। पर कृष्ण भगवान् इसको त्याग की अन्तिम सीढ़ी नहीं कहते। उनकी सम्मति में अब तक जिज्ञासु के लिए और साधन शेष रह जाते हैं। सकाम कर्म को त्याग करके सन्यास का अभिलाषी, निष्काम कर्म प्रारम्भ करता है और समझता है कि अब मार्ग पूरा कर लिया। परन्तु नहीं। निष्काम कर्मों का कोई विशेष फल न हो, यह बात नहीं है। सन्ध्या से पुत्र, धन आदि की प्राप्ति चाहे न हो, किन्तु इसमें क्या सन्देह है कि प्रीतिपूर्वक नित्य सन्ध्या करने से मनुष्य की विशेष शान्त अवस्था हो जाती है। इसी प्रकार दीन-अपाहिजों की सहायता करने से, निर्बलों का उपकार करने से, चाहे दीन, अपाहिज और निर्बल पुरुष ऐसे परोपकारी का प्रत्युपकार न कर सके, एक उपकारी पुरुष को विशेष आनन्द धर्म के काम करने से प्राप्त होता है। कृष्ण भगवान् कहते हैं सर्व निष्काम कर्मों से जो साधारण अवस्था भी जीवात्मा की स्वयमेव हो सकती है, यदि मनुष्य उस का जरा ध्यान भी बीच में रखकर उस काम को करता है, तो वह सच्चा त्यागी नहीं है।

यह ऊँचा आदर्श है। आज का कौन मनुष्य इसे पूरा कर सकता है! आजकल लोग यश के लिए परोपकार के कामों में लगे हुए हैं, उनको अनुकरणीय समझा जाता है। मैं मानता हूं कि जो मनुष्य यश के लिए भी नेक काम करता है वह भी संसार का भला करता है और इसलिए उन मनुष्यों से बहुत अच्छा है, जिनकी रुचि परोपकार की ओर बिल्कुल नहीं है। परन्तु क्या इस तरह की प्रसिद्धि का अभिलाषी पुरुष सैकड़ों और भाइयों को कुमार्ग की तरफ नहीं धकेलता? इसलिए न केवल यही कि मनुष्य निष्काम कर्म करे, बल्कि उस निष्काम कर्म के स्वाभाविक परिणाम की भी बिल्कुल उपेक्षा कर दे, तब वह संन्यास पद का अधिकारी होता है। इसका स्पष्ट अभिप्राय क्या है? प्रत्येक आर्य प्रातः काल सन्ध्या करता है, उस समय न केवल उसका यह भाव होना चाहिए कि वह उस के बदले सांसारिक इच्छा न रखे, किन्तु यह भी वह विचार न करे कि सन्ध्या करने से मुक्ति मिल सकेगी। अग्निहोत्र करते हुए, महापुरुषों की सेवा करते हुए, अतिथियों के आदर-सत्कार के समय, दीन-अपाहिजों को अपनी कमाई में से भाग देते समय, मनुष्य को जरा भी यह विचार मन में न लाना चाहिए कि उसकी बाबत आम लोगों की क्या सम्मति होगी या उसके बदले में परमात्मा, कब उसे अपने समीप बुलायेंगे। यह है कर्तव्य का ख्याल, जो आर्य महान् पुरुषों ने अपना मार्गदर्शक बनाया हुआ था। यदि एक कर्म के आरम्भ करने से पहले लाभ-हानि का बही-खाता खोल कर हम बैठ जायें तो ससार के बड़े-बड़े दुःख कैसे दूर हो सकेंगे? यदि इस बहीखाते को खोल कर शंकर और दयानन्द काम करते तो क्या वे अपने पुरुषार्थ से इस संसार को पलटा दे जाते? कभी नहीं। सम्भवतः प्रश्न होगा—हमें क्या? जिसे संन्यासी बनना हो वह यह कठिनाइयाँ सहे!

आह! प्यारे भाइयो! हम कैसी अविद्या के अन्धकार में डूबे हुए हैं! क्या सन्यासी बनने की इच्छा करना या न करना तुम्हारे वश में है? कदाचित् मत भूलो, हर एक जीवात्मा जो मनुष्य-शरीर धारण करके जन्म लेता है अपने साथ एक कर्तव्य लाता है और कुछ नियमों जंजीरों में जकड़ा हुआ आता गति ससार का नियम है। अगर तुम अपने कर्तव्य पर दृढता से स्थिर नहीं होते और उनके सहारे से ऊपर को नहीं चलते तो गति तुम्हें नीचे की ओर ले चलेगी। तुम नहीं कह सकते कि हम संन्यासी नहीं बनना चाहते। तुम्हारा कर्तव्य है तुम सन्यासी बनो। एक तरफ ऊँचा पर्वत, दूसरी ओर भी ऊँचा पर्वत; बीच में बारीक किन्तु पक्का तार लग रहा है। तुम बीच के भाग में खड़े हो। अगर हिम्मत से तार पर दृढता से पग रखते हुए आगे न चलोगे, तो आंधी तुम्हें तुम्हारी जगह पर नहीं ठहरने देगी और जब एक बार पहाड़ के ऊपर की ओर से दृष्टि नीचे डालोगे तो विवशता से तार से जुदा हो जाओगे और फिर अथाह जल में गिरोगे जिसका आर-पार तुम्हें नजर नहीं आता। सोचो, समझो और संन्यास की तरफ पग उठाओ, क्योंकि यही तुम्हारा इष्ट है।

शब्दार्थ—(कवय.) क्रान्तदर्शी, दीर्घदर्शी लोग (काम्यानां) फलभोग की कामना से किए जाने वाले (कर्मणां न्यासम्) कर्मों के त्याग को (सन्यास विदु.) सन्यास कहते हैं। और (विचक्षणा) विचारशील और प्रामाण्युक्त विद्वान् (सर्वकर्मफलत्यागम्) सब काम्य कर्मों के फलत्याग को (त्याग प्राहु) यथार्थ त्याग कहते हैं।

ग्राम प्रचार

वेद प्रचार मण्डल दिल्ली देहात की ओर से रविवार ८ जनवरी, १९८९ को ग्राम प्रचार का कार्यक्रम नवीन रोशनपुरा, नजफगढ दिल्ली में आयोजित किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ० धर्मपाल ने विश्वास व्यक्त किया कि श्री श्रद्धानन्द और प० उदय श्रेष्ठ धर्माचार्य के नेतृत्व में बृहद् यज्ञों, भजनोपदेशों एवं वैदिक प्रवचनों के माध्यम से परमपिता परमात्मा की दिव्य वाणी वेद का सन्देश घर-घर तक पहुंचेगा। वेद प्रचार मण्डल का कार्यालय ग्राम रंगपुरी, पोस्ट महिपाल पुर, नई दिल्ली-३७ में स्थापित किया गया है और इस कार्य में श्री रामस्वरूप, श्री सूरजसिंह देशवाल, श्री जगदीश मलिक आदि महानुभाव सहयोग दे रहे हैं। इस अवसर पर यज्ञोपरान्त भजनोपदेश एवं प्रवचन हुए। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द ने आशीर्वाद दिया।

ओ३म्

आर्य सन्देश

मनुष्य

'जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मतमतान्तरों का विरुद्ध वाद न छूटेगा तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विशेष विद्वज्जन ईर्ष्या, द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना कराना चाहें तो हमारे लिए यह बात असाध्य नहीं है।"

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

क्या भगत जी वास्तव में नींद में हैं।

पिछले दिनों भारत के संसदीय मामलों तथा सूचना प्रसारण मन्त्री तथा दिल्ली के आर्यविधाताओं में प्रमुख व्यक्तित्व श्री हरिकृष्ण लाल जी भगत की नींद के सम्बन्ध में दैनिक समाचार पत्रों ने बहुत चुटकुले-बाजियां जन-साधारण तक पहुंचायीं। साधारण जन के अनुसार हमें भी इन चटकुल-बाजियों पर विश्वास नहीं आया, क्योंकि उनका सुपरिचित चेहरा प्रतिदिन दूरदर्शन के सभी समाचार-प्रसारणों में कई कई बार मुस्कराता हुआ दृष्टिगोचर होता है। इस सबके बावजूद पिछले दिनों कुछ ऐसी घटनाएं घटी हैं जिन से सचमुच लगने लगा है कि श्री भगत सचमुच ही कुम्भकरणी नींद में सो गये हैं। कारण, उनका मन्त्रालय या तो उनके नियन्त्रण के बाहर हो गया है, अथवा वह भी नींद में है।

दूरदर्शन दिल्ली चैनल-२ में अधिकांश समाचार दिल्ली तथा आस-पास के क्षेत्रों से सम्बन्धित होने चाहिए, तथा चैनल १ पर राष्ट्रीय स्तर के समाचार होने चाहिए। परन्तु यह सब केवल दूरदर्शन के अधिकारियों के विवेक पर निर्भर है कि वे किस समाचार को दूरदर्शन के चैनल १ अथवा चैनल-२ या फिर किसी भी लायक न समझें। वे लोग, जिन्होंने पब्लिक स्कूलों में शिक्षा प्राप्त की है, जहां उन्हें केवल विदेशी साहित्य और संस्कृति पढ़ाई गई, वहां की चकाचौंध से ग्रसित वे पाश्चात्य सभ्यता के हामी, जिन्हें भारतीय इतिहास और संस्कृति का पता ही नहीं, भारत के करोड़ों जन मानस की भावनाओं से खेलने के लिए निरंकुश छोड़ दिए हैं। दिल्ली तथा निकटवर्ती क्षेत्रों की घटनाओं, दुर्घटनाओं, हत्याओं, बलात्कारों और चोरी-डकैतियों से दैनिक राष्ट्रीय अखबारों के पन्ने भरे होते हैं। अब प्रतिदिन देशभर में एक-आध राजनैतिक हत्या भी होती रहती है। इस सम्बन्ध में पंजाब सबसे आगे है। परन्तु आश्चर्य इस बात का है कि पिछले दिनों एक मासूम तथा सुप्रसिद्ध कलाकर्मी की साहिबाबाद में उसके एक अन्य साथी के साथ हत्या हुई। यह हत्या राजनैतिक थी अथवा नहीं, यह प्रशासन देख रहा है, परन्तु आश्चर्य है कि दूरदर्शन प्रतिदिन सभी प्रसारणों में उसका पूरा उल्लेख कर पता नहीं क्या कहना चाहता है? क्या दूरदर्शन साम्प्रदायिक दंगे अथवा राजनैतिक दंगे करवा कर दिल्ली की शांति भंग करवाना चाह रहा है? पंजाब में आये दिन किसी न किसी राजनैतिक अथवा धार्मिक नेता की हत्या हो जाती है परन्तु दूरदर्शन केवल एक दिन उनका नाम लेकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर लेता है।

पिछले दिनों दिल्ली के प्रबुद्ध नागरिकों को यह देख कर भारी विस्मय-सा हुआ जब २५ दिसम्बर, १९८८ को अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान की स्मृति में आयोजित एक पांच किलोमीटर लम्बा भव्य जलूस जो दिल्ली के ऐतिहासिक बाजारों से होता हुआ गुजरा जिसमें दिल्ली की ३०० आर्यसमाजों, १०० स्कूल व गुरुकुलों तथा दिल्ली से बाहर के लगभग १०० स्कूलों तथा आर्य संस्थाओं के अधिकारियों, स्त्री, पुरुषों तथा बच्चों ने भारी वर्षा के बावजूद कदम से कदम मिलाकर जलूस में भाग लिया तथा दिल्ली की जनता, जिसमें सभी धर्मों तथा वर्गों के लोग थे, ने भी भारी उत्साह के साथ दिल खोलकर स्वागत किया और राष्ट्रीय एकता भारतीय स्वतन्त्रता सब धर्म समभाव के लिए समर्पित उस महान् सन्यासी के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। परन्तु श्री भगत के मन्त्रालय की कुम्भकर्णी नींद नहीं खुली, शायद वह ईसा मसीह के जन्मदिवस की खुशी में कुछ अधिक पी गया और उसे यह ध्यान ही नहीं रहा कि यह दूरदर्शन हिन्दुस्तान का है, इंगलिस्तान का नहीं।

हमारे कार्यालय में दिल्ली से ही नहीं देश के कोने कोने से हजारों पत्र, टेलीफून और तार आ चुके हैं यह पूछने के लिए कि हम हिन्दुस्तान के नागरिक हैं अथवा किसी अन्य देश के, जो दूरदर्शन पर भारतीय संस्कृति और भारतीयता के लिए समर्पित जीवनों को छोड़कर अधिकांश समय पाश्चात्य संस्कृति और विदेशियों की सूचनाएं ही दी जाती हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द, जो अपने समय में विश्ववंद्य बापू (महात्मा गांधी) मोतीलाल नेहरू जवाहरलाल नेहरू, तिलक, गोखले आदि नेताओं के लिए प्रेरणा पुञ्ज रहे हैं वर्तमान कांग्रेसी सरकार के लिए शायद कुछ नहीं हैं। दिल्ली के चांदनी चौक में गोरी सरकार के सैनिकों के सामने छाती खोलने वाले, शिक्षा जगत् में क्रान्ति मचा देने वाले, मुसलमान भाइयों को पवित्र जामा मस्जिद में खड़े होकर एकता का पाठ पढ़ाने वाले, सिखों के हितों की रक्षार्थ अमृतसर में सत्याग्रहियों का नेतृत्व करने वाले महान् देशभक्त स्वामी श्रद्धानन्द को सरकार की कृपा की आवश्यकता नहीं है। परन्तु प्रश्न उठता है कि क्या हम उन देशभक्तों, जिनके त्याग और रक्त से सिंचित यह स्वतन्त्रता हमें मिली, की देशभक्ति को भूल जाएं और सरकार की 'भारतीय संस्कृति को भूल जाओ' की नीति का अवलम्बन करें? देश के जागरूक नेताओं और नागरिकों को इस का विचार करना होगा।

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-१ के वार्षिकोत्सव पर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश १ के वार्षिकोत्सव पर राष्ट्ररक्षा सम्मेलन श्री स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने कहा कि बाहरी शक्तियों से राष्ट्र की सीमाओं की रक्षा करना हमारी सेनाओं का दायित्व है। सेनाएं भी हमारी सहायता के बिना नहीं बनेंगी। सरकार भी तो हमीं बनाते हैं अन्त देश की विदेश नीति के निर्माण में समाज का महत्वपूर्ण दायित्व है। जो बात हम कहेंगे, वो बात सारी जनता कहेगी, वही जन प्रतिनिधियों के माध्यम से हमारी सरकार तक पहुंचेगी और फिर उसी के अनुसार वह आचरण भी करेगी। इससे भी बड़ी जिम्मेवारी जनता की एक और है। सीमाओं की सुरक्षा तो हो सकती है, पर जब जनता के मन में एक-दूसरे के प्रति अविश्वास हो, वे जातीय, प्रान्तीय तथा धार्मिक संकीर्णताओं से ग्रस्त हों तो देश की अखंडता को कैसे बचाया जा सकता है? इसका एकमात्र उपाय है कि हम इन दोषों से बचें और अपने आप को सही मानव बनाएं मानवता के लिए समर्पित हों, और 'मनुर्भव' के वेदादेश का हम पालन करें। राष्ट्र के तीन प्रमुख तत्व हैं—भूभाग, जन और संस्कृति। तीसरा तत्व और भी महत्वपूर्ण है। हम अपनी संस्कृति की रक्षा कर, उसका संवर्धन करें। इसके लिए आवश्यक है कि हम गुरुकुलों को पूर्ण सहयोग दें। संस्कृत भाषा की रक्षा करें। सार्वदेशिक सभा के आदेश पर संस्कृत रक्षा के लिए कार्य किया जा रहा है। आप सभी इस कार्य में सहयोग करें। इस अवसर पर पं० शिवकुमार जी शास्त्री, पं० वेदकुमार वेदालंकार, पं० सत्यदेव जी भारद्वाज, श्री रामनाथ सहगल, श्री लखीराम जी कटारिया आदि महानुभावों ने भी आर्य जनता का मार्गदर्शन किया। वार्षिकोत्सव के अवसर पर वेद सम्मेलन शिक्षा सम्मेलन, कवि सम्मेलन और महिला सम्मेलन का भी आयोजन किया गया।

श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती महाराज ने ऋग्वेदीय यज्ञ सम्पन्न कराया और अपने विद्वत्तापूर्ण प्रवचनों से आर्य जगत का मार्गदर्शन किया।

चिन्ता—मनुष्य की अकारण शत्रु

सुरेशचन्द्र वेदालंकार, एम ए, एल टी.
आर्यसमाज गोरखपुर

उत नः सुभगाँ अरिर्वोचेयुर्दस्म कृष्टयः । स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि ।

ऋ० १।४।६

दुर्गुणों और पापों को क्षीण करने वाले हे परमात्मन् ! हमारे शत्रु मनुष्य भी हमें श्रेष्ठ और सौभाग्यशाली कहें। तुझ परमैश्वर्य शाली भगवान के कल्याण में हम रहें ही।

भगवान के कल्याण में रहने वालों का सदा लाभ होता है। उन्हें आनन्द मिलता है।

आज से बहुत दिन पहले मैं गुरुकुल कांगडी के महाविद्यालय में अध्ययन करता था। मेरे अनन्य मित्रों में सुनील भी था। हंसमुख, परिश्रमी और खेलों में रुचि लेने वाला। खिलाडी तो मैं भी था। वालीबाल और हाकी में प्रथम एकादश में था। सुनील खेलने के साथ साथ हंसमुख भी था और प्रसन्न नजर आता था। पर इधर कुछ दिनों से वह दुखी और मायूस दिखाई दे रहा था।

मैं उसके कमरे में घुसा। पीठ पर एक जोर का मुक्का मारा और पूछा 'अरे भाई क्यों क्या चिन्ता आ गई है कि उससे तुम घुले जा रहे हो? फिर मैंने कहा मन पर से चिन्ता का बोझ हटाओ, क्यों अपना स्वास्थ्य चौपट करने पर तुले हुए हो?" मेरी बात पर वह चिन्ता भरी मुस्कराहट हंसा और गंभीर बन गया। एक दिन मैं एक अंग्रेजी पत्रिका पढ रहा था। उसमें एक चित्र के नीचे लिखा था 'वरी इज द इन्टरेस्ट पेड बाई दोज हू बारो ट्रबल' अर्थात् दुख दर्द का ऋण लेने वालों को चिन्तारूपी ब्याज चुकाना पडता है।

चिन्ता रूपी शत्रु के कारण चिकित्सकों का कहना है चिन्ता अनेक उदर रोगों तथा पैरालिसिस जैसे शारीरिक रोगों की जन्मदात्री है। मानस शास्त्रियों का मत है कि चिन्ता मनुष्य की शक्तियों का अनुत्पादक एवं निरुद्देश्य कार्य कलापों में बरबाद करके जीवन को असहनीय कष्टों से पूर्ण बना देती है और आयु को घटा देती है। सुनील को दुखी देखकर उसको ठीक करने के भाव मेरे मन में आने लगे।

अनेक चिन्तित व्यक्तियों को छुटकारा पाने के लिए अगाध का शराब का सहारा लेते हुए और वण्डर ड्रग्स (चमत्कारिक औषधियों का) सहारा लेते हुए देखा है। परन्तु मेरा ख्याल है, कि चिन्ता से मुक्त होने के लिए आपको यह ध्यान रखना होगा कि चिन्ता जो कि वास्तव में हमारे अपने मन में होती है, वह हमारी कल्पना के पथभ्रष्ट होने का परिणाम होती है। अतः हमें अपनी चिंतन प्रणाली पर नियन्त्रण स्थापित करना होगा। हम अनेक दुर्घटनाओं का कारण बनने वाली चिन्तारूपी मोटर को उसके गैरेज में बन्द रख सकते हैं। अपने जीवन को एवं जगत् को दुःखों के स्थान पर सुखों का खजाना बना सकते हैं।

सुनील के चिन्तित होने का कारण जानने का मैंने प्रयत्न किया। मुझे उसका कारण पता लगा। उसने आंख से आंसू गिराते हुए कहा—"सुरेश भाई बात यह है कि मैंने अबकी बार बनारस विश्वविद्यालय की अखिल भारतीय हिन्दी वाद विवाद परीक्षा में भाग लेने और विजय प्राप्त करने का निश्चय किया था। जब सार्वजनिक सभा में भाषण देने का अवसर आ गया तो कई सप्ताह पहले से ही उसके सिर पर चिन्ता सवार हो गई—वह भाषण कैसे देगा, कौन सी मुद्रा में खड़ा होगा, कैसी भाषा का प्रयोग करेगा इत्यादि। वह चिन्ता इस सीमा तक बढ गई कि उसे भय हो गया कि उसको सभा में भाषण देते समय लकवा न मार जावे।

सुनील की बात जाने दीजिए। मैं गुरुकुल कांगडी से वेदालंकार की उपाधि लेकर बस्ती में अपने पिता जी के पास पहुंचा। कांगडी में शुरू से ही मैं पढाई, भाषण और लेखन आदि को बहुत महत्त्व न देता था। परन्तु गुरुकुल के विद्यार्थी से आर्य जगत् वक्ता, लेखक आदि होने की आशा तो करता ही है। अतः शिवरात्रि के अवसर पर आर्यसमाज के मन्त्री मेरे घर पहुंच गये और मेरे पिता जी से शिवरात्रि को व्याख्यान के लिए कहने को कहा। मैंने कांगडी में पढते हुए कभी भाषण नहीं दिया था परिणामतः भाषण से तीन दिन पहले से ही रातें में कमी आ गई। चेहरा उतरा उतरा रहने लगा और उस दिन तो मेरा मानसिक तनाव इतना बढ गया कि मैंने बीमारी का बहाना कर छुटकारा पाना चाहा। मैंने साहस पूर्वक परिस्थिति का सामना करना चाहा। सोचा कि शिवरात्रि के भाषण के समय मेरे साथ निकृष्टतम घटना क्या हो सकती है? मैंने सोचा यह घटना कितनी भी कष्टप्रद क्यों न हो, कितनी भी विनाशकारी क्यों न हो, लेकिन आसमान नहीं गिरेगा मेरे सिर पर। मैं एक व्यक्तिगत समस्या को प्रलयकारी रूप व्यर्थ में दे रहा हूं। मैं उस दिन जीवन का पहला भाषण देने गया और बाद में लोगों ने और उस सभा के सभापति नारंग जी ने बडी प्रशंसा की। मैंने सुनील को यह बात समझाई और थोडी देर में उसमें आत्मबल आ गया और वह प्रसन्न नजर आने लगा। वह उस प्रतियोगिता में विजयी हुआ।

परमपिता परमेश्वर ने इस मनोहर पृथ्वी पर हमें इसलिए उत्पन्न किया है कि हम हमेशा खुश रहें, मस्त रहें, आनन्द के समुद्र में गोते लगाते रहें, न कि उदास और खिन्न मुद्रा बनाये रहें।

इमर्सन नामक लेखक ने कहा है "आनन्द और उत्साह भरी मुद्रा ही हमारी मानसिक उन्नति और सभ्यता की परमौषधि है। उस मनुष्य की ओर देखकर जिसके मुखमंडल पर अलौकिक प्रकाश चमक रहा हो अपूर्व शान्ति झलक रही हो देखो आनन्द आता है। जहां जहां वह जाता है, वहां वहां स्वभाव से ही आनन्द, उत्साह और उल्लास की वर्षा करता जाता है।"

क्या आप घबराये हुए हैं? चिन्तित हैं? तरह तरह के भय आप को परेशान कर रहे हैं? आप समझ लीजिए कि चिन्ता संहारक है, आशा जीवन दायिनी है। चिन्ता शिथिल कर देने वाली विष है, आशा जीवनदायक अमृत है। चिन्ता ने आज तक कभी किसी की कोई सहायता नहीं की परन्तु आशा ने अनगिनत ऐसे व्यक्तियों के जीवन बचाये हैं।

इसलिए जब कभी आप को मालूम हो कि चिन्ता जनक विचार आप पर अपना प्रभाव जमाना चाहते हैं, उदासीनता का आपके ऊपर आक्रमण हुआ चाहता है, तब आप स्थिर, शांत और तन्मय होकर अपने हृदय केन्द्र से इस तरह के उद्‌गार निकालें—अहा! मैं मनुष्य हूं। मेरी आत्मा दिव्य है, निर्दोष है। अनन्त शक्तियां गुप्त रूप से उसमें विद्यमान हैं। वह सुख, शान्ति, आनन्द और पूर्णता का आगार है। भला किसी दशा में वहां दुःख, चिन्ता रोग, शोक का क्या काम? मानव जाति के शत्रुओं से कहो, हे शत्रुओ! तुम मेरे मन से निकल जाओ, नहीं तो मैं तुम्हें धक्का देकर निकाल दूंगा।

संस्कृत (देव)भाषा अद्भुत एवम् अद्वितीय

सचमुच देवताओं की भाषा

सबसे प्राचीन, सर्व भाषाओं की माता

सर्वमुखी-सम्पूर्ण-सर्वोत्तम ।

आदि में देवों द्वारा शुक्र ग्रह से अवतरित ।

प्रमाण

कम्प्यूटर द्वारा सर्वोत्तम—सर्वश्रेष्ठ प्रमाणित

न्यायमूर्ति श्री बनवारी लाल यादव, न्यायाधीश उच्च न्यायालय, इलाहाबाद अपने पत्र दिनांक २५।६।१९८५ को श्री नन्दकिशोर जी महामन्त्री, केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर के नाम में लिखते हैं—

अभी हाल ही में कम्प्यूटर में संसार भर की सभी भाषाएं इस उद्देश्य से रखी गयी कि कौन सी भाषा सुनने, समझने, लिखने, बोलने, पढ़ने, समझने तथा अपने विचार दूसरे से व्यक्त करने में तथा कर्णप्रिय होने में सर्वश्रेष्ठ है ? तो उत्तर मिला कि केवल 'संस्कृत भाषा' । इस प्रकार 'देव भाषा' होने के अतिरिक्त आधुनिकतम वैज्ञानिक यन्त्र द्वारा भी संस्कृत भाषा सर्वश्रेष्ठ भाषा सिद्ध हो चुकी है ।" पत्र में आगे विद्वान् न्यायाधीश लिखते हैं, 'यदि ईश्वर की कृपा बनी रही तो भविष्य में कुछ अन्तिम निर्णय तथा आदेश 'संस्कृत भाषा में ही पारित करता रहूँगा ।

आदिकाल में देवताओं—महाऋषियों द्वारा शुक्र ग्रह से संस्कृत अवतरित हुई

'हम सब योगी यह देखकर चकित रह गये कि जिस भाषा को इस पृथिवि लोक में संस्कृत के स्वरूप में जानते हैं, वह इतने अत्यंत प्राचीन काल में बिल्कुल इसी स्वरूप में विद्यमान थी । हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यही वह सर्व भाषाओं की माता संस्कृत ही है, जो देवताओं द्वारा 'शुक्र ग्रह' से आदि काल में इस पृथिवि लोक पर अवतरित हुई थी । यही सचमुच देवताओं की भाषा है। इसे यहाँ पृथिवि लोक में मनुष्यों द्वारा इतने लम्बे काल तक प्रयोग किये जाने के बाद भी यह अपने स्वरूप को स्थिर रखने में सफल रही है ।

साभार उद्धृत—"Man, Whence, How & Whither' (सदा विद्यमान ब्रह्माण्ड के रिकार्ड अर्थात् चित्रगुप्त' का कुछ योगियों द्वारा किया गया शोध कार्य) प्रकाशक—थ्योसोफिकल सोसायटी, अडयार, मद्रास ।

प्रस्तुतकर्ता : भोलानाथ दिलावरी
प्रधान, केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर ।

(इस विषय पर वैदिक विद्वानो के विचार सादर आमंत्रित है—सम्पादक)

"जो संस्कृत विद्या को नहीं पढ़े वे भ्रम में पड़कर कुछ का कुछ लिखते और कुछ का कुछ बकते हैं ।"

—महर्षि दयानन्द सरस्वती (सत्यार्थप्रकाश)

शोक समाचार

आर्यसमाज मन्दिर, राम गली, बी-१३ हरिनगर घण्टाघर, नई दिल्ली के भूतपूर्व प्रधान समाजसेवी श्री सोहनलाल जी का असामयिक निधन हो गया है । इसी समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री अमृतलाल जी उनके दो भ्राता श्री जगजीतसिंह जी तथा श्री दर्शनलाल का कार दुर्घटना में निधन हो गया है ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य वीर दल, दिल्ली के अधिष्ठाता श्री प्रियतम दास जी रसवन्त की सास श्रीमती लक्ष्मी देवी जी का आकस्मिक निधन हो गया है । श्रीमती लक्ष्मी देवी जी आर्य विचारों की धर्मपरायणा देवी थीं ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी एवं सदस्य ईश्वर से दिवंगत आत्माओं की शान्ति तथा परिजनों को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं । ●

वधू की आवश्यकता

२५ वर्षीय, कद ५ फुट ५ इंच, रंग गेहुंआ, दिल्ली आई आई. टी. में फील्ड आफिसर, मासिक आय १५००), क्षत्रिय (राजपूत), दहेज विरोधी आर्य युवक हेतु सुशिक्षित, सुन्दर, सुशील वधू की आवश्यकता है ।

मिलें अथवा लिखें—

मन्त्री, आर्यसमाज
पसौंडा (मेरठ)-२५०६२२

उडीसा के अकाल पीडितो के लिए दान—

आर्य स्त्री समाज माडल टाउन

आर्य स्त्री समाज, माडल टाउन, नई दिल्ली के आमन्त्रण पर स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती दिल्ली पधारे, जहा स्त्री समाज की ओर से स्वामी जी का भव्य स्वागत किया गया। उडीसा मे हुए ऐतिहासिक शुद्धि-कार्य तथा अकाल पीडित आदिवासियो की सहायतार्थ पाच हजार रुपये मूल्य की दो सौ धोतिया तथा चावल आदि के लिए २२००) नकद श्री स्वामी जी को भेट किये गये, तथा भविष्य मे और अधिक सहयोग का आश्वासन दिया गया।

वैद्य की आवश्यकता

आर्यसमाज मन्दिर नया बांस, दिल्ली के धर्मार्थ औषधालय के लिए एक सुयोग्य अनुभवी तथा कर्मठ होम्योपैथिक डाक्टर की आवश्यकता है।

प्रार्थी मन्त्री आर्यसमाज नया बास दिल्ली को अपने प्रमाणपत्रों की प्रतिलिपि व स्वीकार्य वेतन सहित सम्पर्क करे।

धर्मपाल आर्य, मन्त्री
आर्यसमाज मन्दिर
नया बांस, दिल्ली-६
दूरभाष . २२८३६०, २३३११२

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Post in N D P S O on 19 20 1 9 Licensed to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५१ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३९

आर्यसमाज चूनामण्डी पहाड़गंज के वार्षिकोत्सव पर

आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए युवा शक्ति को आगे आना जरूरी है : सूर्यदेव

आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य कुरीतियों का निवारण रहा है। इस दिशा में आर्यसमाज के कर्णधार सदा से ही प्रयत्नशील रहे हैं। हमारे सामने सती प्रथा दहेज भ्रूण हत्या स्त्रियों का शोषण जैसी समस्याएँ आज भी विद्यमान हैं। हमें इनका सामना करने के लिए और इन पर काबू पाने के लिये युवा शक्ति को जागृत एवं प्रोत्साहित करना चाहिए। ये उद्‌गार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने आर्यसमाज चूनामण्डी के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित आर्य वीर सम्मेलन में अपने अध्यक्षीय भाषण में व्यक्त किये। इस सम्मेलन में पं० ओ३म वीर शास्त्री पं० चन्द्रशेखर डा० शिवकुमार शास्त्री और पं० यशपाल सुधांशु ने भी युवा शक्ति का उद्‌बोधन किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने सभा द्वारा आयोजित 'आर्य युवा महासम्मेलन' की चर्चा करते हुए श्री प्रियतमदास रसवन्त के सहयोग की सराहना की। उन्होंने बताया कि आज की इस शृङ्खला में बालिकाओं की वालीबाल प्रतियोगिताएँ माता रतनदेवी आर्य कन्या सीनियर सेकण्डरी स्कूल में आयोजित की गयी थीं।

इससे पहले दिन आर्य महिला सम्मेलन भी आयोजित किया गया था। यजुर्वेद महायज्ञ श्री महात्मा दयानन्द जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। श्री सत्यपाल जी पथिक के मधुर भजनोपदेश हुए और पं० यशपाल सुधांशु ने रात्रि में वेदकथा की।

यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद महात्मा दयानन्द जी की अध्यक्षता में समाज सुधार एवं राष्ट्रनिर्माण सम्मेलन आयोजित किया गया। इस में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल प्रान्तीय आर्य महिला सभा की प्रधाना श्रीमती सरला महता, पं० यशपाल सुधांशु, पं० चन्द्रशेखर शास्त्री, पं० यशपाल शास्त्री पं० प्रेमचन्द श्रीधर श्रीमती प्रकाश आर्या, पं० क्षितीश वेदालंकार पं० सत्यपाल पथिक आदि महानुभावों ने आर्य जनता का मार्गदर्शन किया।

आर्यसमाज चूना मण्डी की ओर से विद्वानों का अभिनन्दन किया किया गया। अन्य आर्यसमाजों को भी इस परम्परा को अपनाना चाहिए। ●

सेवा में—

'अमर'—१०८२

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी (सी०) ७५१

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ ' अंक १२ | रविवार २९ जनवरी १९८९ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८ | माघ २०४५ | दयानन्दाब्द—१६४

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० डालर, ३० पौंड

आर्यसमाज लाजपत नगर का वार्षिकोत्सव

बुराइयों को दूर करने और ईमानदारी को स्थापित करने का नाम आर्यसमाज है

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

आर्यसमाज को यदि वास्तव में फैलाना चाहते हैं, यदि हम 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' को जिह्वा तक सीमित नहीं रखना चाहते तो यह आवश्यक है कि हम युवा शक्ति को आगे लाए। हम अपने रचनात्मक कार्यक्रमो से उन्हें जोडें। हम बडो का आशीर्वाद लें, उनसे मार्गदर्शन प्राप्त कर, उनसे आर्थिक सहयोग भी ले, और युवको को प्रोत्साहित करे। निश्चय ही किसी भी सगठन को युवा शक्ति ही आगे बढा सकती है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि कुछ नया कर गुजरने की भावना युवको मे ही होती है। शकराचार्य, गौतम, दयानन्द, विवेकानन्द, भगतसिह, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद—ये सभी इतिहास पुरुष हैं, क्योंकि इन्होंने लीक से हटकर कार्य किया। इन्होंने आलोचना की परवाह नही की। आलोचना तो वह भी कर सकता है, जो कभी घर से बाहर नहीं निकलता। मारते के हाथ पकडे जा सकते हैं, बोलते की जबान कौन पकडेगा। पिछले दिनो एक सुप्रसिद्ध वकील ने प्रतिदिन समाचार पत्रों में नए-नए प्रश्नों की झडी लगा दी, पर उनके उत्तर न मागे थे, न आए, क्योंकि इनके उत्तर तैयार करने के लिए समय लगाना बेमानी होता। आर्यसमाज में भी कुछ लोग रोज आक्षेप लगा रहे हैं। यदि उनसे लडाई प्रारम्भ कर दें तो 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' तो धरा रह जाएगा। हमारा उद्देश्य वैदिक धर्म का प्रतिपादन है न कि उत्तर-प्रत्युत्तर में समय खराब करना। ये उद्‌गार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने १५ जनवरी १९८९ को आर्यसमाज लाजपत नगर नई दिल्ली में वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित 'आर्य महासम्मेलन' मे व्यक्त किए। उन्होंने सभी आर्यजनों का दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा द्वारा तालकटोरा स्टेडियम मे आयोजित आर्य युवा महासम्मेलन में सहयोग के लिए धन्यवाद किया। उन्होंने बताया कि सभा के अधिकारियों ने पिछले दो महीनों से स्थान-स्थान पर कार्यक्रम आयोजित किए। इन कार्यक्रमों के विषय उनमे राष्ट्रीय भावना और नैतिकता का सचार करने वाले थे। इन्ही कार्यक्रमों से प्रभावित होकर उपराष्ट्रपति डा० शकरदयाल शर्मा ने युवको के इस कार्यक्रम की सराहना की। उन्होंने वेद ज्ञान को सार्वभौम बताया। इससे सगठन की शक्ति का पता चलता है। श्री सूर्यदेव ने आह्वान किया कि वे किसी के बहकावे में न आए और वह कार्य करे जो धर्मसम्मत है, जो उचित है, जो वेदानुकूल है। उन्होंने एक रूपक के माध्यम से अपनी बात को स्पष्ट किया। एक बार राजा अकबर ने बीरबल से पूछा कि यदि मूर्खों से पाला पडे तो क्या करना चाहिए, बीरबल ने कहा कि ऐसे समय चुप रहना ही श्रेयस्कर है। आर्य युवा महासम्मेलन में दिल्ली के अनेक युवकों ने भाग लिया। यह उनके आर्यसमाज के प्रति आकर्षण का द्योतक है। मैं सभी आर्य भाई बहनों से अनुरोध करता हूं कि वे इन कार्यक्रमों में तन-मन-धन से सहयोग करे।

इस समारोह की अध्यक्षता आर्य जगत् के यशस्वी सम्पादक प० क्षितीश वेदालकार ने की। इस अवसर पर बोलते हुए वैदिक विद्वान् प० शिवकुमार शास्त्री ने कहा कि आलोचना से स्वामी दयानन्द सरस्वती भी न बच सके थे। उनके सामने भी अनेक रुकावट आई। बुराई फैलाना आसान है, पर अच्छाई का विस्तार मुश्किल होता है। मुझे प्रसन्नता है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो ने युवको को जोडने के लिए अनेक कार्यक्रम किए। प० शिवकुमार शास्त्री ने दूरभाष पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल को भी फोन पर इस समारोह की सफलता के लिए बधाई दी और आशा व्यक्त की कि भविष्य मे इसी प्रकार सुन्दर कार्यक्रम आयोजित किए जायेंगे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने आर्य महासम्मेलन अवसर मे आर्यसमाज के भावी कार्यक्रमो के सम्बन्ध में लिये गये निर्णयो की चर्चा करते हुए बताया कि धर्मरक्षा महाभियान के अन्तर्गत पिछले दिनो मध्य प्रदेश में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में ६००० वनवासियों को शुद्ध करके वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया। पिछले दिनो बिहार मे भूकम्प पीडितों की दिल्ली के लोगों ने जो दिल खोलकर सहायता की उसके लिए स्वामी जी ने सभी का धन्यवाद किया। स्वामी जी ने बताया कि इस समय सघ लोक सेवा आयोग के सामने पुष्पेन्द्र चौहान और उनके साथी हिन्दी तथा भारतीय भाषाओ के लिए जो सघर्ष कर रहे हैं, उसमें आर्यसमाज की अहम् भूमिका है। संस्कृत को अपना स्थान दिलाने के लिए सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत सस्कृत रक्षा समिति बनाई गई है। पिछले दिनों अनेक बडे राष्ट्रीय नेताओ—डा० बलराम जाखड, श्री पी० वी० नरसिह राव और श्री पी० शिवशकर से तो इस सम्बन्ध मे हम मिले ही हैं, शास्त्री भवन के सामने सस्कृत की रक्षा के सम्बन्ध में एक धरने का आयोजन किया गया था। यह ज्ञातव्य है कि इस अवसर पर अनेक सस्कृत के विद्वानो के अतिरिक्त श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् ने भी उस अवसर पर सम्बोधित किया था।

श्री स्वामी जी महाराज ने अपने सासदकाल की एक घटना को उद्धृत करते हुए बताया कि आर्यसमाज के लोगो से सरकार भी समयोचित कार्यवाही की अपेक्षा करती है। एक बार मैंने ससद मे दिल्ली की नागरिक समस्याओ के सम्बन्ध में विचार रखे तो तत्कालीन ससदीय कार्यमन्त्री ने और बाद में गृह मन्त्री ने दिल्ली

शेष पृष्ठ ७ पर)

सम्पादक—सुखचन्द गुप्त

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

आठ खम्भों वाली मातृभूमि

—अमित प्रताप नारायण सिंह
ग्राम हाटा, डा० बदौली, जनपद देवरिया, यू०पी०

सत्य बृहद् ऋतम् उग्र दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ पृथिवीम् धारयन्ति।
सा नो भूतेषु भव्येषु उरु लोक पृथ्वी न कृणोतु॥

अथर्ववेद १२।१।१

सत्य, बृहत्, ऋत उग्र, दीक्षा तप, ब्रह्म, यज्ञ मातृभूमि के आठ खम्भे हैं। यह आठ खम्भों वाली मातृभूमि हमारे भूत तथा भविष्य काल की रक्षिका है। यह मातृभूमि हमारे लिए बड़े ससार (क्षेत्र) का निर्माण करे।

मातृ उदर से निकलने के बाद ही धरती माता अपनी दुलार भरी गोद मे चिपका लेती हैं। भला ऐसा कौन पापी होगा जो उसके प्रति श्रद्धा व्यक्त नहीं करेगा। अथर्ववेद का मन्त्र है—'माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या" अर्थात् पृथ्वी माता है और हम उसके पुत्र हैं। यह मन्त्र देशभक्ति का मूल मन्त्र है। जिसने अपने देश की भूमि को माता मान लिया वह उसकी रक्षा और सम्मान के लिए सर्वस्व न्यौछावर करेगा ही। भारत माता की जय का अर्थ है—इस हिमालय से लेकर कन्या-कुमारी तक पूर्व में असम से लेकर पजाब तक जो विशाल प्रदेश है, इस प्रदेश में रहने वाले नर नारी अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति की उन्नति। भारत में रहने वाले प्रत्येक की उन्नति हमारी उन्नति है। हमारा विकास है। इसलिए अथर्ववेद में कहा गया है— नमो पृथिव्यै नमो पृथिव्यै" अर्थात् मातृभूमि को नमस्कार। आप जितनी अधिक देश की सेवा और राष्ट्र की आराधना करेंगे उतने ही अधिक प्रतिष्ठित, सम्पन्न, उच्च और महान् बन जायेंगे। इतिहास मे महाराणा प्रताप, शिवाजी, स्वामी दयानन्द, सुभाष चन्द्र बोस, स्वामी श्रद्धानन्द, सरदार पटेल, महात्मा गाधी, जवाहर लाल नेहरू ने देश सेवा करके इतना प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त किया। रामप्रसाद बिस्मिल भगत सिंह राजगुरु सुख-देव, रोशन लाल और अशफाक उल्लाह ने इसी मातृभूमि के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। राम ने कहा था—

"जननी जन्मभूमिश्च
स्वर्गादपि गरीयसी।"

अर्थात मा और मातृभूमि की महिमा स्वर्ग से भी बढ़कर है। इस-लिए वेद कहता है—'यतेमहि स्व-राज्ये' कर पुरुषार्थ स्वराज्य मे।

मन्त्र मे मातृभूमि रूपी इमारत की प्रथम आधार शिला सत्य को बताया गया है। वास्तव मे सत्य की महिमा अपार है। बाईबिल का कथन है—यदि तुम सत्य जानते हो तो सत्य तुम्हें मुक्त कर देगा। संस्कृत की सूक्तियां हैं—"सत्यमेव जयते नानृतम्" तथा "न सत्यात् परो धर्म" और "सत्येनोत्तभिता भूमि" सत्य की विजय होती है, असत्य की नहीं तथा सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है और सत्य से ही मातृभूमि को धारण किया है। सत्य-वादी के हृदय में प्रभु निवास करता है। सत्यप्रेमी को सब चाहते हैं। सब उससे स्नेह करते हैं। सत्यवादी लोक और परलोक का विजेता होता है। सत्यवादियो का सर्वत्र मान और विश्वास होता है। सत्यवादी की विद्या, लक्ष्मी, श्री और सम्पदा निरन्तर बढती है।

ससार में जितने महान् व्यक्ति हुए हैं सबने सत्य का सहारा लिया है। सत्य की उपासना की है। राजा हरिश्चन्द्र की सत्यनिष्ठा जगद्वि-ख्यात है। राजा दशरथ ने सत्य वचन निर्वाह हेतु अपना प्राणोत्सर्ग तक किया। महात्मा गाधी ने सत्य की शक्ति से अत्यन्त शक्तिशाली ब्रिटिश शासन की जड काट दी। उनका कथन है—"सत्य एक विशाल वृक्ष हैं, उसकी ज्यों-ज्यों सेवा की जाती है त्यो-त्यो उसमें अनेक फल आते हुए नजर आते हैं। उसका अन्त नहीं होता। सत्य पर ही ससार का ज्ञान-विज्ञान आधारित है। सारा मानव समाज इसी धुरी पर कायम है। जिस समाज में खाली झूठ ही झूठ का प्रचलन हो वह समाज कभी उन्नति नहीं कर सकेगा। अपने देश मे बडी गिरावट आयी है। भ्रष्टाचार और बेईमानी बढी है। नागरिकों मे नैतिकता का अभाव होता जा रहा है। बड दिन के अवकाश में इलाहबाद से मैं त्रिवेणी एक्सप्रेस से गाव आ रहा था। उप ट्रेन के आर० पी० एफ० के जवानो के डिब्बे में सभी यात्री बिना टिकट थे और आर०पी०एफ० के जवानों ने यात्रियों से आधा किराया लेकर उनके स्टेशन तक पहुँचाने की बात तय की थी। जिस देश के रक्षकों की ऐसी धारणा तथा आचरण है उस देश का भला कैसे होगा? पश्चिमी देशों मे समाचार पत्रों को बेचने के लिए हाकर्स की आवश्यकता नही होती। डिब्बे लगे होते हैं। क्रेता समाचार पत्र का मूल्य डिब्बो में डाल देते हैं और पत्र ले जाते हैं। कितनी ईमानदारी है वहा के लोगो मे।

मन्त्र में मातृभूमि की दूसरी आधार शिला ऋत को बताया गया है। ऋत का अर्थ है—प्राकृतिक सत्य या न्याय। हमारी मातृभूमि की ऋतुएँ अति सुखदायी तथा सुहावनी हों और निश्चित समय पर आने वाली हों। हमारे देश की ऋतुएँ रग बिरगी हैं। इन ऋतुओं का नाम है—बसत, ग्रीष्म, पावस, शरद्, हेमन्त और शिशिर। हम ऋतुओं को स्पष्टतः गर्मी जाडा और बर-सात के नाम से जानते हैं। वैदिक ऋषियो ने वर्षा ऋतु का वर्णन किया है—"निकामे निकामे व पर्जन्यो-ऽभिवर्षतु।" अर्थात् हमारे मन मुताबिक बादल वर्षा कर। वास्तव में वर्षा ऋतु ऐसी महादेवी हैं जिनके कृपा कटाक्ष के लिए हम लालायित रहते हैं। यदि वर्षा देवी का पदार्पण न हो तो सारे ससार में अकाल का ताण्डव हो जाए, भूख की ज्वाला में सृष्टि की हर खूबसूरत कली मुरझा जाए। अत सभी ऋतुएँ अपने निश्चित समय पर आवें। उनमें कोई अनिश्चितता न हो।

मन्त्र मे कहा गया है कि हमारी मातृभूमि विस्तृत (बृहत्) हो तथा इसमें क्षात्र शक्ति हो। क्षात्र शक्ति का अर्थ है—क्षत्रियत्व, वीरता, साहस इत्यादि। वीरता रणभूमि मे या डूबते हुए जहाज के लिए जितनी आवश्यक है, उतनी हो व्यक्तिगत जीवन में सफलता या विजय प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। ससार में वीर न होने के कारण हमें बहुत से दुखों और बहुत सी समस्याओ का सामना करना पडता है। स्वतन्त्र-ता की रक्षा करना एक बहुत ही दुष्कर कर्म हैं। स्वतन्त्रता और आत्म-सम्मान की रक्षा करने के लिए अपने आपको दृढ, साहसी और सबल बनाना होगा। मानव जाति के इति-हास के पृष्ठ रक्तरंजित युद्धो से भरे पड़े हैं। यदि कोई आपकी मातृभूमि पर आक्रमण करता है तो आपको अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए समर क्षेत्र में आना होगा। और मातृभूमि की रक्षा करने के लिए अपना सब कुछ बलिदान करना होगा। दिनकर के शब्दों में—

छीनता हो स्वत्व कोई और तू
त्याग तप से काम ले यह पाप है।
पुण्य है विच्छिन्न कर देना उसे
बढ रहा तेरी तरफ जो हाथ है।

पुन —

अनगढ पत्थर से लडो,
लडो किटकिटा नखो से दातों से।
या लडो ऋच्छ के रोम
गुच्छ पूरित वज्रीकृत हाथो से।

और किसी भी उच्च कार्य के लिए अपने को मिटा देता है। यह भावना हमारे छात्रो में भी होनी चाहिए। यह निर्विवाद सत्य है कि छात्रों में असीमित शक्ति स्रोत छिपा है। यदि उन्हें उचित मार्ग निर्देश मिलता रहे तो वे बड़े से बडा कार्य करने में सफल हो सकते हैं। समाज और राष्ट्र के जीवन मे जब कभी भी इन्कलाब की आवाज उठी है, छात्र क्रान्ति की मशाल ढोने वालो की अगली पक्ति में रहे हैं। हमारे देश के छात्रो ने स्वतन्त्रता की लड़ाई में अपनी जान हथेली पर रखकर ट्रेनो पर बम फेंका है, गोलियां खाई हैं, और हँस हँस कर फासी के तख्ते पर अपनी जान तक गँवाई है। इस समय वे अपनी शक्ति अन्धविश्वास, जात-पात, समाज में फैली कुरी-तियों, प्रान्तीयता, अलगाववाद तथा आतकवाद को मिटाने में लगा सकते हैं। समाज में भ्रष्टाचार व्याप्त है। दहेजप्रथा से समाज कलंकित है। इन सामाजिक बुराइयो के उन्मूलन हेतु छात्रों को आगे आना चाहिए। एक बार लाला लाजपत राय ने बोलते हुए कहा था—'हमारे देश के छात्रों में लौह शक्ति और लहू होना चाहिए। तभी हमारे देश को कोई कुदृष्टि से ताक नहीं सकेगा।" स्वामी विवेकानन्द ने एक बार नव-युवकों को सम्बोधित करते हुए कहा था—'राष्ट्र की स्वतन्त्रता और उसकी रक्षा के लिए हमारे नवयुवको को पर्वतों की चोटियों में और नदियों की छाती पर सवार होना होगा। उन्हें खेल के मैदानों और क्रीडा-स्थलों में उतरना होगा।" कमाल पाशा एक साधारण गरीब परिवार का बच्चा था। उसकी मा इतनी कठोर पर्दे में रहती थी कि उसने

(शेष पृष्ठ ४ पर)

ओ३म्
आर्य सन्देश

सम्पादक की कलम से

सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य की परिकल्पना की है। उन्होंने मनुस्मृति के श्लोक को व्यवस्थापित करते हुए लिखा है—और वे सब राज सभा, महाराज सभा अर्थात् सार्वभौम चक्रवर्ती महाराज सभा में सब भूगोल का वर्तमान जताया कर। इस परिकल्पना से यह स्पष्ट है कि स्वामी जी महाराज की दृष्टि संकुचित न थी। वे विश्वबन्धुत्व, कृण्वन्तो विश्वमार्यम् और वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को सब स्थानों तक पहुंचाना चाहते थे। उनका ध्येय किसी भी दिशा में देख लीजिए महान् था और इसका कारण है कि उनका मस्तिष्क एवं चिन्तन किसी भी प्रकार की लालसाओं से परे था। उनका जीवन लालसानिष्ठ न होकर, ध्येयनिष्ठ था। वेदों में किसी स्थानविशेष या व्यक्तिविशेष के लिए कुछ भी नहीं कहा गया है। वहाँ मानवमात्र और प्राणीमात्र के लिए व्यवस्थाएँ दी गई हैं। इसीलिए महर्षि ने 'वेदों की ओर' लौट चलने का आह्वान किया। सच्ची शान्ति की स्थापना इन्हीं आदेशों के आधार पर जीवनयापन करने से हो सकता है।

यू० एन० ओ० यूनेस्को, सार्क, कामनवल्थ जैसे संगठनों की स्थापना बहुत बाद में हुई परन्तु इनके बीजबिन्दु भारतीय दर्शन में और धर्मशास्त्रों में उपलब्ध हैं। ये मनु महाराज की व्यवस्था में उपलब्ध हैं परन्तु आवश्यकता तो इनके सही आकलन की है और यही कार्य युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने किया था।

पिछले दिनों दिल्ली में 'विश्व नागरिक बनाने की ओर' विषय पर सेमिनार हुआ। मैं इस विस्तार में नहीं जाना चाहता कि इनके आयोजकों का उद्देश्य क्या था, पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इस विषय पर विचारणा आज की आवश्यकता है। इस अवसर पर भारत के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने बड़ी ही सम्यक्मत बात कही। उन्होंने कहा कि ऐसी व्यवस्था स्थापित की जानी चाहिए जिससे 'विश्व नागरिक' बन सकें। उन्होंने कहा कि दुनिया की मौजूदा व्यवस्थाएँ विश्व नागरिक बनाने में नाकाम रही हैं। हमें ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए जिससे एटमी शक्ति वाला कोई भी देश विश्व नागरिकों पर, विश्व नागरिकों के लिए हथियार इस्तेमाल कर सके। यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि भारतीय दर्शन विश्वबन्धुत्व की कामना हथियारों के बल पर नहीं स्नेह सौहार्द और परस्पर सहिष्णुता के आधार पर करने का इच्छुक है। यदि कहीं पर अत्याचार हो रहा हो, केवल तभी बल का प्रयोग किया जाए।

श्री गांधी ने कहा कि भारतीय सभ्यता की ऊँची परम्परा रही है। हमारा मकसद सदा ही मानव कल्याण का रहा है। अन्य सभ्यताओं में भी समय-समय पर नागरिक आन्दोलन होते रहे हैं। इन आन्दोलनों ने अन्धकार और सहार करने वाली शक्तियों का खत्म किया है। शंकराचार्य, गौतम बुद्ध, महावीर जैन, गुरु नानक, राजा राममोहन राय, महर्षि दयानन्द सरस्वती, अरविन्द घोष, रवीन्द्र नाथ टैगोर, रामकृष्ण परमहंस विवेकानन्द और गांधी इसी धारा के व्यक्ति रहे हैं। ये सभी लोग मानवता के कल्याण की बात को सर्वोपरि मानते थे।

वेद का आदेश है—'मनुर्भव'। इसके अन्तर्गत सभी कुछ समाहित है। वेद का यह आदेश हमें इन्सानियत की बात सिखाता है और इन्सान बनना आसान नहीं है। सभ्यता के उदय के साथ कबीले गांव राज्य, साम्राज्य संघ विश्वसंघ की परिकल्पनाएँ समय-समय पर हमारे सामने आई हैं। श्री गांधी ने कहा कि कई प्रकार की विविधताओं के बावजूद भी मानव लगातार बड़ समूह बनाता रहा है। उन्होंने कहा कि इस शताब्दी में कई क्षेत्रीय देशों के संगठन बनाना इसी दशा में एक नहीं कदम है। हमें उम्मीद रखनी चाहिए कि इस क्रम के चलते एक दिन पूरी धरती पर एकता और समानता की भावना आएगी और हम सच्चे भूनागरिक हो सकेंगे।

उपर्युक्त सारी बात का विवरण देने के पीछे हमारा एक ही उद्देश्य है कि हम सब लोग मिलकर वेद के आदेश का पालन करते हुए अपनी विचारणा को विशाल आयाम दें और वसुधैव कुटुम्बकम् को आधार बना कर विश्व नागरिकता का स्वीकार करें। संसार में कहीं भी किसी के प्रति अन्याय हो रहा हो तो हम उनकी सहायता के लिए तत्पर हों। पिछले अंकों में नेपाल फिजी मोरिशस सूरीनाम दक्षिण अफ्रीका में भेदभाव के जो मामले सामने आए थे उनके प्रति भी पाठकों का ध्यान आकर्षित किया गया था। आओ हम सब प्राणीमात्र के कल्याण के लिए समर्पित हों।

दिवंगत आर्य श्रेष्ठी

आर्यसन्देश के पिछले अंकों में समय समय पर दिवंगत आर्य श्रेष्ठियों के जीवनवृत्त, व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। हमें इन महानुभावों का स्मरण करते हुए उनके कार्यों से प्रेरणा लेकर आर्यसमाज के प्रचार प्रसार के लिए जुट जाना चाहिए।

महात्मा दयानन्द

दिव्यात्मा महात्मा दयानन्द का अभी स्वर्गवास हुआ। रोहतक में २२ जनवरी १९८९ को उनका अन्तिम संस्कार किया गया। महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों का प्रचार प्रसार करने में उनका योगदान सर्वविदित है। 'तपोवन' देहरादून में जो भी लोग गए हैं, वे जानते हैं कि कितनी भव्य और अनुकरणीय यजन और ध्यान पद्धति बनाने में उन्होंने अपना समय लगाया। महात्मा दयानन्द का दिल्ली की आर्यसमाजों में बहुत आगमन होता था। पिछले दिनों वे आर्यसमाज चूनामण्डी के वार्षिकोत्सव पर आए थे। उनका धीर गम्भीर मुखमण्डल किंचित् मुस्कान लिये अभी भी हमारी आँखों के सामने है। आर्यसन्देश परिवार की ओर से उस पुण्यात्मा के लिए शतशत श्रद्धांजलि।

आचार्य शुक्रराज नेपाली

इस वीर पुरुष का नाम आर्यसमाज के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। नेपाल यद्यपि हिन्दू राज्य है परन्तु इसे पौराणिक धर्म ने इतना अधिक जकड़ रखा है, मूर्ति पूजा, मांस मदिरा का प्रचार भैंसों बकरों की बलि और सम्प्रदाय व तान्त्रिकों का जाल इतना भयंकर है कि साधारण जनता को इससे निकलने का कोई रास्ता नहीं सूझता। ऐसे प्रदेश में इन कुरीतियों का भण्डाफोड़ करने वाले हुए हैं, आचार्य शुक्रराज शास्त्री। जिनको आज से ४८ वर्ष पूर्व २९ जनवरी १९४१ को खुले आम फांसी पर लटका दिया गया था। उस वीर के पिता ने कहा था—हे पुत्र, स्वार्थी लोगों ने यह सब कराया है। महाराज ने तुमको मृत्युदण्ड सुना दिया। तुम धर्म पर दृढ़ हो, तुम ने कोई पाप कर्म नहीं किया है। यदि पाप कर्म का दण्ड पाते, तो मेरे लिए लज्जा की बात होती और तुम्हारे लिए भी। धर्म पर मरना गौरव की बात है।

वाह, रे वीर, तुम धर्म के लिए। सच्चा रास्ता दिखाने के लिए मरे। इसी धरती पर समय आयेगा और सच्चे धर्म का आलोक फैलेगा। सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन में नेपाल के प्रतिनिधि भी आए थे। यह इस बात का प्रमाण है जो सत्य है वही विद्यमान रहता है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

(पृष्ठ २ का शेष)

आठ खम्भो वाली…

कभी सूर्य का दर्शन तक नहीं किया था। अपनी मा की दयनीय दशा देखकर उसने निश्चय किया था कि बड़ा होने पर मैं इस अभिशाप को दूर करूंगा। वह सेना में भर्ती हुआ। युद्ध मे विजय हासिल कर लेने पर वह टर्की का शासक बन गया। सर्व प्रथम उसने पर्दा प्रथा का उन्मूलन किया। उसने उसका प्रयोग करने वाली महिलाओ को दण्ड दिया। कमाल पाशा ने शिक्षा विभाग को आदेश दिया था कि वे एक वर्ष के अन्दर लाखो हृष्ट पुष्ट स्वस्थ तथा चरित्रवान युवक पैदा कर। कुछ ही दिनो मे सचमुच इन बहादुर बच्चों ने टर्की का भाग्य बदल दिया। टर्की इतना शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बन गया कि कोई पडोसी देश उससे भिडने का साहस नहीं कर सका। अतः राष्ट्र के उन्नयन और प्रगति के लिए क्षात्रशक्ति परम आवश्यक है। यह स्वतन्त्रता की रक्षा का मूल मन्त्र है। नजीर बनारसी के शब्दो में—

जिनको आता है जान देना वो
अपनी धरती नहीं दिया करते
धरती माता है और माता का—
बेटे सौदा नही किया करते।

मातृभूमि को पाचवी आधार शिला दीक्षा है। दीक्षा का अर्थ है संकल्प शक्ति। जब तक देश के नागरिको में दृढ निश्चय, दृढ संकल्प किसी भी कार्य के प्रति अटूट उत्साह और उसके लिए निरन्तर अभ्यास की भावना नही आएगी तब तक राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता। जिस व्यक्ति मे संकल्प शक्ति है उसके लिए कोई कार्य असम्भव नहीं है। वह अपनी पूरी शक्ति लक्ष्य प्राप्त करने मे लगाता है। कोई विघ्न बाधा उसे मार्गच्युत नही कर सकती। उसे न भूख सताती है और न प्यास उसमें न तो वनिता की ममता होती है न सुत का स्नेह खीचता है। वह घोडे की पीठ पर सोता है। छाल की रोटिया खाता है और हर घडी सर पर कफन बाध अपने लक्ष्य का दीवाना होता है। याद रख जिस राष्ट्र और समाज मे संकल्प शक्ति सम्पन्न लोग नही हैं, वह राष्ट्र तथा समाज पतन की ओर जाता है। संकल्प-शक्ति विहीन लोग आलसी निष्क्रिय तथा प्रमादी होते हैं। वे लोग मार्ग में आने वाली विघ्न बाधाओ से घबरा जाते हैं और अपने लक्ष्य तक नहीं पहुच पाते हैं। वे लोग बाधाओ को अपने से बडा समझते हैं। अत सबल राष्ट्र के लिए यह आवश्यक है कि उस राष्ट्र का हर नागरिक तेजस्वी और दृढ निश्चयी हो तथा कठिन और असम्भव कार्यों को भी परिश्रम विद्या और बल से करे। विद्या और बल से तेज बढता है।

आपने चाणक्य का नाम सुना होगा। एक दिन वे स्नान करने नदी को जा रहा था। उसके पैरो मे कुश धस गया। उसने उसे नष्ट करने का संकल्प किया। वह कठिन परिश्रम से उसे खोदता था और नष्ट करने हेतु उसकी जडो में मट्ठा डालता था। नन्द साम्राज्य का निष्कासित कुशल मन्त्री शकटार इसे देख रहा था। उसने युवक चाणक्य से इसका कारण पूछा। चाणक्य का कथन था कि इस कुश ने मुझे कष्ट दिया है और मैं इसे समूल नष्ट कर रहा हूं। इस पर शकटार को लगा कि यह उपयोगी व्यक्ति है और नन्द वंश के नाश के लिए इसका उपयोग किया जा सकता है। वह उसे अपने साथ ले गया। अब शकटार और चाणक्य दोनों साथ साथ रहने लगे। शकटार योजनाबद्ध तरीके से श्राद्ध के अवसर पर राजा महानन्द के महल में उसे ले गया और चाणक्य को मुख्य आसन पर बिठाकर किनारे हो गया। महानन्द ने जब मुख्य आसन पर पुरोहित के बदले एक काले कुरूप व्यक्ति को देखा तो क्रोध से उसकी आंख लाल हो गयीं और गर्जा भागो! चाण्डाल, दुष्ट! कहाँ से आकर इस आसन पर बैठ गया।' चाणक्य ने क्रोध में तिरछे देखा और चोटी खोली जल छिडका और हाथ ऊपर उठाकर चिल्लाया—'महानन्द! तुमने आज मुझे बहुत अपमानित किया। मैं इसका बदला लूगा और नन्द वंश का नाश करके ही दम लूंगा।' क्या था? शकटार अपनी योजना मे सफल हो गया। चाणक्य वनो में, पर्वतों में, नदियो की घाटियों में गांवों में अपना संकल्प पूरा करने के लिए पागल होकर घूमता रहा। अन्त में उसने नन्द वंश का अंत करके ही दम लिया। ऐसे ही दृढ निश्चयी लोगों से ही देश महान बनता है। अत कहा है—"क्रियासिद्धि सत्वे भवति महतां नोपकरणे।" महान् व्यक्तियों को सफलता उनके दृढ निश्चय से होती है।

मातृभूमि का छठा आधार तप है। तप का अर्थ है—शारीरिक साधना। अपने लक्ष्य को निर्धारित करके उसमे तल्लीनता पूर्वक निरन्तर लगे रहना साधना है, तप है। इसमे प्रथम कर्तव्य यह है कि मनुष्य अपना लक्ष्य सर्वप्रथम निर्धारित करे और उसकी प्राप्ति के लिए दृढ संकल्प करे। यही व्रत या अनुष्ठान है। किसी व्रत या अनुष्ठान को विधिपूर्वक पूरा करना साधना है। इसी को तप कहते हैं। तप का वास्तविक रूप साधना है। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दृढ निश्चय एवं कटिबद्धता की आवश्यकता होती है। इस दृढ निश्चय से मनुष्य धीरे धीरे सफल होता हुआ उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुंचता है। सच्चे अभ्यास से तपोनिष्ठ मनुष्य अजेय और अधर्षणीय हो जाता है। सभी सिद्धियां उसे प्राप्त होने लगती हैं। उसे अपने सभी कार्यों में सफलता मिलती है। जिस देश के लोग तपस्वी एवं साधक होंगे उस देश की उन्नति अवश्यम्भावी है। हमारा देश तपस्वियो और साधकों का रहा है। यहीं से ज्ञान की किरण विश्व के कोने कोने में फैली है। वेद इस इस पृथ्वी के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। प्राचीन काल से इसका गौरव विश्व के कोने कोने में फैला था। एक कवि ने ठीक ही कहा है—

जिसका गर्वोन्नत शीश
युगों तक था भू पर,
लहराई जिसकी कीर्ति
किनारों को छूकर।
जिसके वैभव का ज्ञान
सृष्टि की लय में था,
जिसकी विभूतियां देख
विश्व विस्मय में था।
वह देश वही भारत
उसको क्या हुआ आज,
सोने की चिड़िया
निगल गया कौन बाज?

अत यदि आप अपना वैयक्तिक विकास चाहते हैं। सामाजिक उन्नयन चाहते हैं विश्व की प्रगति चाहते हैं तो देश के युवाओ को तप को ही आधार बनाना होगा। तप को ही मूलमन्त्र मानकर जाप करना होगा, तप से युवकों में अजेयता आयेगी और हमारी मातृभूमि भी अजेय हो हो जाएगी।

हमारी मातृभूमि का सातवा आधार ब्रह्म शक्ति है। ब्रह्मशक्ति का अभिप्राय है ज्ञान। ज्ञान ही मानव में दिव्य चक्षु है। यही कर्तव्याकर्तव्य का विवेचन करके मनुष्य को सत्पथ पर चलाता है। दुर्गुणों से हटाता है। कर्मनिष्ठा का भाव जागृत करता है। और जीवन के सभी विघ्नो का निवारण करता है, दूसरी ओर क्षात्र शक्ति, सामर्थ्य, पुरुषार्थ और प्रगतिशीलता देती है। जहाँ क्षात्र बल है वहाँ सिद्धि स्वयं उपस्थित रहती है। अत राष्ट्र की प्रगति के लिए ब्रह्मशक्ति और क्षात्र शक्ति दोनों गुणो की प्रतिक्षण आवश्यकता अनुभव की जाती है। यजुर्वेद में कहा गया है—

'इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे
श्रियमश्नुताम्।"

परमात्मा की उपासना का अभिप्राय है कि व्यक्ति ईश्वर सान्निध्य द्वारा ईश्वरी गुणो को अपने अन्दर लावे। यही ब्रह्मशक्ति का अपने अन्दर पुण्याशन और उद्बोधन है। ब्रह्मशक्ति की प्राप्ति के लिए कुछ विशेषताओ का जीवन मे समन्वय होना आवश्यक है। ये विशेषताएँ हैं—जीवन में पवित्रता, शिव संकल्प, पापों से निवृत्ति सद्गुणो मे प्रवृत्ति और उन्नति की तीव्र आकांक्षा। यदि ये गुण है तो जीवन में पवित्रता सात्त्विकता आस्तिकता आयेगी और मनोबल ऊँचा होगा। यह पवित्रता ही ब्रह्मशक्ति का आधार है। जिस देश के नागरिक ब्रह्मशक्ति सम्पन्न हैं। उस देश का कोई बाल बांका नही कर सकता। वह राष्ट्र सर्वांगीण विकास करता है। उस देश में विज्ञान का विकास होगा।

मातृभूमि का आठवा स्तम्भ है—यज्ञ। यज्ञ का अर्थ है—देवपूजा संगतिकरण और दान। देव पूजा शब्द का अर्थ है—विद्वानो माता-पिता तथा गुरुजनो का आदर करना, उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित करना। दूसरे शब्दो में अनुशासन में रहना यज्ञ है। संगतिकरण का अर्थ है—संगठन। अत यज्ञ का अर्थ है संगठन। समाज के संचालन एवं निर्माण के लिए संगठन अत्यन्त आवश्यक है। बिना संगठन और एकता के कोई कार्य सम्भव नही हो सकता है। इसलिए संगठन भी यज्ञ है। डाकुओ का संगठन यज्ञ नहीं हो सकता। क्योंकि संगठन उसी दशा में यज्ञ हो सकता है जब मनुष्य उस संगठन के लिए अपना कुछ दान या बलिदान कर रहा हो। यह बलिदान राष्ट्र एवं मानव समाज के लिए किया जाए। यज्ञ स्वार्थ त्याग का प्रतीक है। स्वाहा' और इदं न मम' इसी भाव की पुष्टि करते हैं। मनुष्य जितना स्व+आ+हा (स्वार्थ-त्याग) को अपनाता जायेगा उतना ही वह विश्व बन्धुत्व की भावना को जागृत करता जायेगा। यही सृष्टि के सुख का मूल है। स्वार्थ त्याग एवं परोपकार की भावना से ही विश्व का कल्याण होता है। यज्ञ सामाजिक उन्नति का साधन है। 'यज्ञो वै विष्णु' यज्ञ परमात्मा का रूप है। सृष्टि क्रम और ऋतु चक्र

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य युवा महासम्मेलन के पुरस्कार विजेताओं की सूची

चित्रकला प्रतियोगिताएँ

१ श्रीमती मनीषा गुप्ता पुरस्कार—कक्षा ९ से १२
I हिमांशु—सेंट फ्रांसिस डीसेल्स स्कूल, जनकपुरी
II रूपा—रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल, राजा बाजार
III चेतना— ,, ,, ,, ,,

२ श्रीमती प्रकाश आर्या पुरस्कार—कक्षा ६ से ८
I कुमारी अविनाश कौर—रतनचन्द सूद आर्य पब्लिक स्कूल, विनय नगर
II विजय—डी ए वी पब्लिक स्कूल, मस्जिद मोठ
III उमेश कुमार—राजकीय सी० सै० स्कूल, साकेत (पुष्प विहार)

३ श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा पुरस्कार—कक्षा १ से ५
I संजय—रतनचन्द सूद आर्य पब्लिक स्कूल, विनय नगर
II आनन्द प्रकाश— ,, ,, ,,
III मीनाक्षी—डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, मस्जिद मोठ

निबन्ध प्रतियोगिताएँ

१. श्री मुंशी राम आर्य पुरस्कार—कक्षा ९ से १२
I प्रणव देव—दयानन्द वेद विद्यालय, गौतम नगर
II कुमारी अलका सक्सेना—रघुमल आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, राजा बाजार
III हृदय वीर—दयानन्द वेद विद्यालय, गौतम नगर

२ श्री देवव्रत धर्मेन्दु पुरस्कार—कक्षा ६ से ८
I राहुल मिश्रा—रतनचन्द सूद आर्य पब्लिक स्कूल, विनय नगर
II राखी गुप्ता ,, ,, ,, ,,
III कु० मनीषा—दयानन्द आदर्श विद्यालय, मन्दिर मार्ग

३ श्री ओमप्रकाश आर्य पुरस्कार—कक्षा १ से ५
I समा सिद्दीकी—रघुमल आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, राजा बाजार
II सुनीना रावत—रतनचन्द सूद आर्य पब्लिक स्कूल, विनय नगर
III राज कुमार—दयानन्द आदर्श विद्यालय, मन्दिर मार्ग

वादविवाद प्रतियोगिताएँ

१ श्रीमती सत्यप्रिया पुरस्कार—पहला वर्ग कक्षा ९ से १२
I अर्चना—बिरला आर्य कन्या सी० सै० स्कूल कमला नगर
II रजना—रघुमल आर्य कन्या सी० सै० स्कूल राजा बाजार
III शालिनी—बिरला आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, कमला नगर

२ दूसरा वर्ग—कक्षा ६ से ८
I उपमा—बिरला आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, कमला नगर
II विनीता—रघुमल आर्य कन्या सी० सै० स्कूल राजा बाजार
III मृदुला— ,, ,, ,, ,,

३ तीसरा वर्ग—कक्षा १ से ५
I सौरभ—जे डी टाइटलर स्कूल, राजेन्द्र नगर
II गौरव — ,, ,, ,,
III पुष्पा—रघुमल आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, राजा बाजार

खेल प्रतियोगिताए

१ महाशय चुन्नीलाल पुरस्कार—१०० मीटर दौड़ (बालक) ५-१० वर्ष
I हृषीश कुमार—राजकीय सी० सै० स्कूल, ईसा पुर
II रवि गोयल—विरमानी पब्लिक स्कूल, रूप नगर
III प्रमित शर्मा— ,, ,, ,,

२ माता चमनदेवी पुरस्कार—१०० मीटर दौड़ (बालिका) ५-१० वर्ष
I जेनी स्टेल—दयानन्द माडल स्कूल, विवेक विहार
II सोनिया—बिरला आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, कमला नगर
III सुमन—विरमानी पब्लिक स्कूल, रूप नगर

३. श्री इन्द्रनारायण पुरस्कार—२०० मीटर दौड़ (बालक) ११-१३ वर्ष
I राजेश कुमार—डी ए वी. सी० सै० स्कूल, शालीमार बाग
II ललित कुमार—राजकीय सी० सै० स्कूल, पूसा इन्स्टिच्यूट
III नरेन्द्र कुमार— ,, ,, ,,

४ श्रीमती सत्यवती सूद पुरस्कार—२०० मी० दौड़ (बालिका) ११-१३ वर्ष
I पुष्पा—रघुमल आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, राजा बाजार
II मृदुला— ,, ,, ,, ,,
III सुनीता—राजकीय सी० सै० स्कूल, कर्मपुरा

५ श्री चुन्नीलाल मेहता पुरस्कार—४०० मी० दौड़ (बालक) १४-१७ वर्ष
I मनीष चावला—डी ए वी सी सै० स्कूल, शालीमार बाग
II आदित्य कालरा— ,, ,, ,,
III सुरेश कुमार—राजकीय सी० सै० स्कूल, पूसा इन्स्टीच्यूट

६ कुमारी विद्यावती पुरस्कार—४०० मीटर दौड़ (बालिका) १४-१७ वर्ष
I अलका—राजकीय सी० सै० स्कूल, कर्मपुरा
II अनिता शर्मा—रघुमल आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, राजा बाजार
III कमलेश चौधरी— ,, ,, ,, ,,

७ श्री राकेश केला पुरस्कार—ऊँची कूद (बालक) १४ से १७ वर्ष
I राजन—डी ए वी सी० सै० स्कूल, शालीमार बाग
II मनीष चावला— ,, ,,
III संजय ठाकुर—राजकीय सी० सै० स्कूल, पूसा इन्स्टीच्यूट

८ श्रीमती शान्तोदेवी पुरस्कार—ऊंची कूद (बालिका) १४ से १७ वर्ष
I अनुराधा—दयानन्द माडल स्कूल, मन्दिर मार्ग
II मीना—रघुमल आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, राजा बाजार
III राज—बिरला आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, कमला नगर

९ श्री हरबंस सिंह खेर पुरस्कार—लंबी कूद (बालक) १४ से १७ वर्ष
I राजन—डी ए वी सी० सै० स्कूल, शालीमार बाग
II दयाराम—आर्य बाल गृह, पटौदी हाउस
III सुरेन्द्र कुमार—राजकीय सी० सै० स्कूल, पूसा इन्स्टीच्यूट

१० श्रीमती प्रेमवती पुरस्कार—लंबी कूद (बालिका) १४ से १७ वर्ष
I अनुराधा—दयानन्द माडल स्कूल मन्दिर मार्ग
II अनिता—रघुमल आर्य कन्या सी० सै० स्कूल राजा बाजार
III रीटा— ,, ,, ,,

११ श्री प्रियतम दास रसवन्त पुरस्कार—चक्का फेंकना (बालक) १४ से १७ वर्ष
I राजन—डी ए वी सी० सै० स्कूल, शालीमार बाग
II सुरेन्द्र कुमार—राजकीय सी० सै० स्कूल, पूसा इन्स्टीच्यूट
III आदित्य कालरा—डी ए वी सी० सै० स्कूल, शालीमार बाग

१२ श्रीमती वीरावन्ती भसीन पुरस्कार—चक्का फेंकना (बालिका) १४ से १७ वर्ष
I अनुराधा चौधरी दयानन्द माडल स्कूल मन्दिर मार्ग
II सगीना—बिरला आर्य कन्या सी० सै० स्कूल कमला नगर
III नीतू— ,, ,, ,,

१३ डॉ० उमा शशि दुर्गा पुरस्कार—भाला फेंकना (बालिका), १४ से १७ वर्ष
I निशा—रघुमल आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, राजा बाजार
II नीतू—बिरला आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, कमला नगर
III सगीता ,, ,, ,, ,,

१४ श्री लालमन आर्य पुरस्कार—२०० मी दौड़ (आर्य वीर) १८ से २५ वर्ष
I रमेश कुमार—आर्य वीर दल, ईसा पुर
II सुन्दर सिंह— ,, ,, सागर पुर
III संजय कुमार— ,, ,, पटौदी हाउस

१५ श्री रतनलाल सहदेव पुरस्कार—४०० मीटर दौड़ (आर्य वीर) १८ से २५ वर्ष
I जय वीर—आर्य वीर दल, ईसा पुर
II रमेश कुमार— ,, ,,
III दया राम— ,, पटौदी हाउस

१६ श्री विशम्भर नाथ भाटिया पुरस्कार—८०० मीटर दौड़ (आर्य वीर) १८ से २५ वर्ष
I रमेश कुमार—आर्य वीर दल, ईसा पुर
II जय वीर— ,, ,, ,,
III राम गोपाल— ,, ,, , नारायणा विहार

१७. श्री ईश्वरचन्द्र आर्य पुरस्कार—लंबी कूद (आर्य वीर) १८ से २५ वर्ष
I रमेश कुमार—आर्य वीर दल, ईसा पुर
II राम गोपाल— ,, ,, , नारायणा विहार
III जय वीर— ,, ,, , ईसा पुर

१८ श्री ज्ञानचन्द आर्य पुरस्कार—ऊँची कूद (आर्य वीर) १८ से २५ वर्ष
I रमेश कुमार—आर्य वीर दल ईसा पुर
II राम गोपाल — नारायणा विहार
III सुन्दर सिंह— सागर पुर
१९ श्री केशवचन्द्र आर्य पुरस्कार—चक्का फेंकना (आर्य वीर) १८ से २५ वर्ष
I सुन्दर सिंह—आर्य वीर दल सागर पुर
II जितेन्द्र सिंह—
III सतपाल— ईसा पुर

भाषण प्रतियोगिताएं

१ श्रीमती सत्यप्रिया पुरस्कार—पहला वर्ग—कक्षा ६ से १२
I दीपिका—रघुमल आर्य कन्या सी० स० स्कूल राजा बाजार
II अंजुला—
III ममता—बिरला आर्य कन्या विद्यालय कमला नगर
२ दूसरा वर्ग—कक्षा ६ से ८
I बलराम कुमार—दयानन्द वेद विद्यालय, गौतम नगर
I प्रभजोत—रघुमल आर्य कन्या सी० स० स्कूल राजा बाजार
II पारुल सक्सेना—दयानन्द मॉडल स्कूल विवेक विहार
III {शिवानी— , मनोज द्विवेदी—रतनचन्द सूद आर्य पब्लिक स्कूल विनय नगर}
३ तीसरा वर्ग—कक्षा १ से ५
I रिंकू मन्त्री—दयानन्द मॉडल स्कूल विवेक विहार
II {गौरव—जे०डी० टाइटलर स्कूल राजेन्द्र नगर, सौरभ— ,}
III रश्मि महरोत्रा—दयानन्द मॉडल स्कूल विवेक विहार

समूहगान प्रतियोगिताएं

१ श्री लालमन आर्य पुरस्कार—कक्षा ६ से १
I सत्यभामा आर्य कन्या सी० स० स्कूल करोल बाग
II रघुमल आर्य कन्या सी० स० स्कूल राजा बाजार
III ,,
२ श्री लालमन आर्य पुरस्कार—कक्षा ५ से ८
I {सत्यभामा आर्य कन्या सी० स० स्कूल करोल बाग, रघुमल आर्य कन्या सी० स० स्कूल राजा बाजार}
II महाशय धर्मपाल विद्या मन्दिर, बेरी वाला बाग सुभाष नगर
III दयानन्द मॉडल स्कूल, विवेक विहार
३ श्री लालमन आर्य पुरस्कार—कक्षा १ से ५
I सत्यभामा आर्य कन्या सी० सै० स्कूल, करोल बाग
II आर्य विद्या मन्दिर केशवपुरम
III महाशय धर्मपाल विद्या मन्दिर, सुभाष नगर

वालीबाल प्रतियोगिताएँ

१ श्री रामलाल मलिक पुरस्कार—१८
I राजकीय भारतीय महिला स्कूल शाहदरा
२ श्रीमती सरला मेहता पुरस्कार—१२
II रतनदेवी आर्य कन्या सीनियर सेकण्डरी स्कूल कृष्ण नगर
३ श्री तीर्थराम आर्य—आर्यसमाज न्यू मोती नगर पुरस्कार—१२
III राजकीय कन्या राजगढ मिडिल स्कूल गांधी नगर

(पृष्ठ ३ का शेष)

लाला लाजपत राय

स्वातन्त्र्य समर के निर्भीक योद्धा शेरे पंजाब लाला लाजपत राय का नाम हम आज भी बड़े गौरव के साथ ऊंचे स्वर में गाते हैं— तू ने हो लाला लाजपत, शेरे बबर बना दिया।' आर्यसमाज मेरी माता है—यह उद्घोष करने वाले वीर लाला लाजपत राय का जन्म २८ जनवरी १८६५ को हुआ था। पं० गुरुदत्त और महात्मा हंसराज के साथ रह कर आपका सार्वजनिक जीवन प्रारम्भ हुआ था। साइमन कमीशन के विरोध के समय आपने कहा था— मेरे शरीर पर पड़ी हुई एक एक लाठी अंग्रेजी साम्राज्य के विनाश के लिए कफन की कील साबित होगी।

और यही हुआ। उनका जीवन हमें राष्ट्रमाता के लिए पूर्ण समर्पण का सन्देश देता है। गणराज्य दिवस पर आओ हम उनका पुनीत स्मरण करें।

(पृष्ठ ४ का शेष)

यज्ञ के ही रूप हैं।

यज्ञ का वास्तविक अर्थ है—छोटे समुदाय का बड़े समुदाय के लिए अपने आप को अर्पण करना। जब कोई वस्तु अपने को दूसरे के लिए मिटा देती है तो उसकी अभिवृद्धि होती है। दीपक की बत्ती जब अपने को जलाकर मिटा देती है तब अंधेरे में भटकने वाले अपना मार्ग पहचानते हैं। जब बीज अपने को मिट्टी में मिला देता है तब वहां नये अंकुर पैदा होते हैं और एक दाने के स्थान पर सैकड़ों दाने उगते हैं। यही यज्ञ चक्र है। यही यज्ञीय भावना है। यज्ञ या हवन इसी भावना का प्रतीक है। इस प्रकार यज्ञ हमें 'सर्व भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया। सब सुखी हों सब स्वस्थ हों की भावना अपने हृदयों में लाने की प्रेरणा देता है। हृदय में जब सबके प्रति प्रेम की भावना का उदय हो जाता है तो हम अपने में और दूसरों में अन्तर नहीं करते हैं। उस समय जिस प्रकार बादल सारा पानी दे डालते हैं वृक्ष अपने फल दे देते हैं, वैसे ही मनुष्य भी दूसरों के लिए अपना सब कुछ दे देता है। राष्ट्र के लिए यह आवश्यक है।

इस प्रकार वेदों ने मातृभूमि की आधार शिला के रूप में इन आठ तत्वों के पालन की हमें प्रेरणा दी है। जो राष्ट्र इन आठ तत्वों का पालन करेगा वह अवश्य ही उन्नत होगा। इसलिए हमारे देशवासियों को अवश्य ही इन्हें पालन करने का प्रयत्न करना चाहिए।

आर्य वीर दल, दिल्ली

के

बढ़ते चरण

सभी आर्य सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने पिछले चार पांच वर्षों से आर्य वीर दल, दिल्ली को पुनर्गठित किया है। वर्ष में एक या दो बार सभा दिल्ली प्रदेश के आर्य वीरों का शिविर लगाती रही है जिसमें आर्यवीरों को आत्मा के लिए अच्छे संस्कार और शरीर के विकास के लिए योग्य शिक्षकों द्वारा कुशल प्रशिक्षण दिया जाता है। इस दिशा में इन आर्यवीरों ने जो प्रगति की है उसको आप देख ही रहे हैं।

यह अनुभव किया गया है कि इस कार्यक्रम को अधिक व्यापक बनाने के लिए तथा आर्य सज्जनों का ध्यान इस महत्त्वपूर्ण कार्य की ओर आकर्षित करने के लिए क्षेत्र-वार कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। वर्ष १९८९ के प्रारम्भ में पश्चिम दिल्ली क्षेत्र की लगभग ३०-३५ आर्यसमाजों के सहयोग से हम एक कार्यक्रम ५ फरवरी १९८९ को नांगल राया में आयोजित कर रहे हैं जिसकी विस्तृत जानकारी हम सभी आर्य बन्धुओं को अलग से भेज रहे हैं। इसी प्रकार हम दिल्ली के अन्य क्षेत्रों में भी ये कार्यक्रम आयोजित करना चाहते हैं। सभी आर्य सज्जनों से प्रार्थना है कि आर्यसमाज की भावी पीढ़ी को तैयार करने के लिए तन-मन-धन से सहयोग करें।

ओ३म वीर शास्त्री
बौद्धिक अध्यक्ष

(पृष्ठ १ का शेष)

बुराइयों को दूर करने…

की समस्याओं के प्रति ध्यान आकर्षित करने के लिए तो बधाई दी, और साथ कहा कि जब आप आदिवासी क्षेत्रों की पूर्वोत्तर प्रदेशों की तथा सुदूर दक्षिण प्रान्तों में जनजातियों में धर्मान्तरण की समस्या पर अपने विचार प्रस्तुत करते हैं तो इससे हमें उन स्थानों की समस्याओं को जांचने के लिए एक आधार मिल जाता है। श्री स्वामी जी ने यह भी बताया कि १९७५ में आर्यसमाज के स्थापना शताब्दी समारोह के अवसर पर किसी महिला के कानों के बुन्दे गिर गये। उन्हें हमने सभाकोश में जमा करा दिया और घोषणा कर दी कि जिसका हो ले जाए। एक महिला आई और ले गई। अगले दिन वह वापस आई कि ये तो सच्चे मोतियों के हैं। ये मेरे नहीं हैं। आदयो मैं बताना चाहता हूं कि आर्यसमाज यही ईमानदारी सिखाता है। स्वामी जी ने बताया कि आर्यसमाज के सामने अनेक कार्यक्रम हैं हमें सभी रचनात्मक कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर सहयोग देना चाहिए तथा अनावश्यक छेड़ छाड़ से दूर रहना चाहिए।

आर्य महासम्मेलन में प० धर्मपाल शास्त्री ने भी आर्यजनों का मार्गदर्शन किया। इस समारोह में दक्षिण दिल्ली के अनेक आर्यजन उपस्थित थे। आर्य सम्मेलन से पहले वेद सम्मेलन युवा सम्मेलन, महिला सम्मेलन शिक्षा सम्मेलन आदि कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। एक सप्ताह तक यज्ञ एवं वेदोपदेश के कार्यक्रम रखे गये। लाजपत नगर में आकर्षक शोभायात्रा भी निकाली गयी। जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचार वाहन के द्वारा वेद प्रचार विभाग के भजनोपदेशकों ने स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती के नेतृत्व में सहयोग प्रदान किया।

☆

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No. 32387/77 Post in N D P S O on 26 27-1 89 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३९

दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल की ओर से—

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके राष्ट्रीय समुन्नति में विशेष योगदान दिया है

—डा० धर्मपाल

स्वामी श्रद्धानन्द ने महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों द्वारा प्रतिपादित शिक्षा सिद्धान्तों को मूर्त रूप प्रदान किया। उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, गुरुकुल कुरुक्षेत्र का इतिहास यह बताता है कि कितने स्नातक वहाँ से निकले हैं जिन्होंने राष्ट्र की समुन्नति के विभिन्न आयामों को सुसमृद्ध किया। चाहे राजनीति का, चाहे शिक्षा का चाहे पत्रकारिता का, चाहे समाज कल्याण का क्षेत्र हो। सभी में गुरुकुल के स्नातकों ने अपूर्व योगदान किया। यहां तक कि उद्योग के क्षेत्र में भी स्नातको ने सराहनीय कार्य किया है। प० बुद्धदेव विद्यालंकार आचार्य रामदेव, प० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार तथा डा० सत्यकेतु विद्यालंकार का योगदान सदैव याद किया जायेगा। इन महानुभावों ने आर्यसमाज के लिए भी अनुपम योगदान किया। ये उदगार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने आर्यसमाज श्री निवास पुरी के प्रांगण में दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्त्वावधान मे आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर व्यक्त किए।

इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय भाषण मे प० सत्यदेव भारद्वाज ने स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए कहा कि आज भी हमें श्रद्धानन्द जैसे लोगों की आवश्यकता है। तभी आर्यसमाज के कार्य को प्रसार मिल सकता है। श्री सूर्यदेव, प० जयप्रकाश आर्य (पूर्व इमाम), प० श्याम सुन्दर स्नातक, श्री गोपाल शरण विद्यार्थी, श्री सोहनलाल पथिक, प० वेदव्यास जी आदि ने भी स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। समारोह का संयोजन श्री रामशरण दास आर्य ने किया।

सेवा में—

'प्रखर —वैशाख'२०४२

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली न०१७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म्
आर्य सन्देश
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वर्ष १२ अंक १३ | रविवार ५ फरवरी १९८९ | सृष्टि संवत १९७२९४९०८८ | माघ २०४५ | दयानन्दाब्द—१६४
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० डालर ३० पौंड

जम्मू की सद्भावना यात्रा
राज्यपाल श्री जगमोहन और मुख्यमंत्री श्री फारूक अब्दुल्ला से भेंट के बाद
श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती और प्रो० बलराज मधोक का संयुक्त वक्तव्य

जम्मू और उसके आसपास के क्षेत्रों में १३ जनवरी और उसके बाद के घटनाचक्र और उससे उत्पन्न स्थिति का अध्ययन करने के लिए २५ जनवरी को हम जम्मू पहुंचे। हमने जम्मू, ऊधमपुर और उसके आसपास के दंगाग्रस्त क्षेत्रों का दौरा किया। हमने यहां के प्रमुख नागरिकों, राज्यपाल श्री जगमोहन और मुख्य मंत्री श्री फारूख अब्दुल्ला से भी भेंट की। हमने वहां जो कुछ देखा और सुना, है, उससे हम निम्न निष्कर्ष पर पहुंचे हैं—

१—१३ जनवरी और उसके बाद जम्मू में जो दुर्भाग्यपूर्ण काण्ड हुआ उसके लिए जम्मू काश्मीर सरकार और मुख्यमंत्री श्री फारूक अब्दुल्ला जिम्मेदार हैं। क्योंकि क्षेत्रीय प्रशासनाधिकारियों द्वारा जलूस निकालने की अनुमति न दिये जाने पर मुख्यमंत्री ने अपने अधिकारों का प्रयोग करके अनुमति दे दी। चूंकि जलूस में असामाजिक तत्वों की मौजूदगी और राष्ट्र विरोधी तत्वों की जानकारी पहले से ही थी। पुलिस की अक्षमता और फायर ब्रिगेड के घण्टों देर तक न आने के कारण इन तत्वों को बिना रोक-टोक तोड़-फोड़, मारकाट और आगजनी करने का खूब अवसर मिला।

२—हमें जो कुछ पता चला है, उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि इन घटनाओं के पीछे काश्मीर सरकार की राष्ट्र विरोधी तत्वों के साथ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में मिलीभगत है। इस कोताही के पीछे कुछ राजनीतिक कारण भी हो सकते हैं। सरकार अपनी असफलता को छिपाने के लिए किस प्रकार बेकसूर लोगों की अन्धाधुन्ध गिरफ्तारी कर रही है, यह अन्यायपूर्ण है।

३—जलूस में शुरू से ही जम्मू के बाहर के कुछ असामाजिक, राष्ट्रविरोधी और आतंकवादी युवक शामिल हो गए थे। वे गड़बड़ी के लिए पूरी तरह तैयारी करके आए थे। उनके पास हथियार और आगजनी करने का सामान भी था। जलूस के प्रबन्धकों और प्रशासन के अधिकारियों का ध्यान जम्मू के नागरिकों ने कई बार इन तत्वों की कार्यवाहियों और इरादों की तरफ खींचा परन्तु कोई कार्यवाही नहीं की गई थी। ऐसा भी सुना गया है कि कुछ सिख व्यापारियों ने अपनी दुकानों का बीमा भी इस घटना से एक सप्ताह पूर्व ही कराया था। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह गड़बड़ी सुनियोजित थी।

४—जम्मू के साधारण केशधारी सिखों और अन्य हिन्दुओं में परम्परागत भाईचारा कायम है। हिन्दुओं ने जगह-जगह गुरु-गोविन्द सिंह के जन्म दिवस समारोह के लिए स्वागत द्वार बना रखे थे और दंगों के समय भी उन्होंने बहुत से सिखों, उनकी स्त्रियों और बच्चों की जिस ढंग से रक्षा की, वह प्रशंसनीय है।

५—अवकाश प्राप्त न्यायाधीश न्यायमूर्ति अनसारी द्वारा घटनाक्रम की जांच करने का निर्णय लोगों को आश्वस्त नहीं कर सका क्योंकि मुख्यमंत्री श्री फारूख अब्दुल्ला ने जम्मू काश्मीर के बाहर के सुप्रीम कोर्ट के किसी अवकाश प्राप्त न्यायाधीश से जांच कराने की बात की थी, परन्तु अब उन्होंने अपने जम्मू काश्मीर के ही अवकाश प्राप्त न्यायाधीश से जांच कराने का निर्णय लेकर लोगों के मन के इस संदेह को दृढ़ कर दिया है कि वह निष्पक्ष जांच से घबड़ा गए हैं।

६—जम्मू नगर में इस समय शान्ति है परन्तु इसके आसपास कुछ क्षेत्रों में जहां अराष्ट्रीय तत्वों का जोर है यह छुटपुट घटनाएं अब भी हो रही हैं। इस कारण नगर में चिन्ता व्याप्त है। इन तत्वों को दबाने के लिए प्रभावी कार्यवाही करने की आवश्यकता है।

७—मुख्यमंत्री श्री फारूक अब्दुल्ला ने हमें भेंटवार्ता में यह तो स्वीकार किया कि कुछ शरारती और असामाजिक युवक जो जलूस में शामिल थे ने ही शरारत की

(शेष पृष्ठ ५ पर)

रतनदेवी आर्य कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल के वार्षिकोत्सव पर—
कन्याओं के लिए पाठशालाएँ खुलवाकर महर्षि दयानन्द ने स्त्री जाति के ऊपर बहुत बड़ा उपकार किया है—डा० धर्मपाल

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समाज सुधार के लिए अनेक कार्य किये उनमें से एक प्रमुख कार्य है, स्त्रियों के लिए शिक्षा की व्यवस्था करना। उनके आदेश पर उन्हीं के काल में संस्कृत पाठशालाएं प्रारम्भ कर दी गयी थीं। बाद में उनके शिक्षा सिद्धान्तों से प्रभावित होकर अनेक कन्या पाठशालाएँ भी प्रारम्भ हुईं। उनसे पहले शूद्रों और स्त्रियों के लिए पढ़ना पढ़ाना निषिद्ध था। स्वामी जी महाराज ने सबको समानता का अधिकार दिलाया तथा स्त्रियों के लिए भी शिक्षा दिये जाने की हिमायत की। उन्हीं के इस परिश्रम का प्रयास है कि आज हम जगह जगह कन्याओं के स्कूल और कालेज

(शेष पृष्ठ ८ पर)
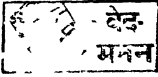
उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

यज्ञदानतप कर्म न त्याज्य कार्यमेव तत् ।
यज्ञो दान तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् ॥
—गीता अ० १८, श्लोक ५

एतान्यपि तु कर्माणि संग त्यक्त्वा फलानि च ।
कर्तव्यानीति मे पार्थ ! निश्चित मतमुत्तमम् ॥
—गीता अ० १८, श्लोक ६

कर्मों के नाश से मुक्ति होनी है। जब तक कर्म का बन्धन नहीं छूटता तब तक मनुष्य शरीर रूपी कारागार मे बन्द रहता है इसलिए मुक्ति की इच्छा रखने वालों के लिए आवश्यक है कि वे कर्मो का अन्त कर दें। क्या इसका अभिप्राय यह है कि कर्म कर ही नही ? नही। मैंने एक बार एक दृश्य देखा जो कभी भूलता नही। एक साधु महात्मा मेरे स्थान के समीप आकर ठहरे। उनका नाम ही जनता ने "निष्काम" रख लिया था। वह नग्न रहते थे। मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी, दर्शनो के लिए उपस्थित हुआ। न बोलते थे, न न कुछ करते थे। कुएँ पर चौकड़ी मारे बैठे थे। उनके स्थूल शरीर को चार आदमी मल-मलकर धो रहे थे। उन्ही मे से एक भक्त ने बदन अंगोछ दिया, उठाया उठ खड़े हुए, हिलाया हिल पड़, परन्तु गद्दी पर पहुंचते ही बैठ गये। मैं भी प्रणाम करके बैठ गया। गले मैं सुगन्धित फूलो की माला डाली गयी। साधु जी ने मौन साधन किया हुआ था और भक्तजन प्रशंसा के पुल बाँध रहे थे। इतने मे एक देवी आई और उसने मुह के पास कलाकन्द(मिठाई) रक्खी। महात्मा जी ने मुह खोल दिया। जब कलाकन्द मुह के अन्दर गया तो खाने लग गये। तब मुझ से न रहा गया और मैंने कहा, "महात्मा जी ! अगर आप मुंह न खोलते और मिठाई को दांतो से न चबाते, तब मैं इन मनुष्यों के कहने पर आपको 'निष्काम' समझता।" महात्मा जी की आँख लाल सुर्ख हो गई और मौन व्रत टूट गया। मैं बाहर चला आया। लोगो ने आकर मुझ से कहा, यह साधु सदाचारी तो है ? मैंने जवाब दिया यदि सदाचारी है तो यही इसका कर्तव्य है ? परन्तु जो मनुष्य क्रोध को वश मे नही कर सकता, उससे हमें क्या लाभ हो सकता है ? जैसा कि कहा गया था 'सम्भव है कि वह साधु सदाचारी हो' परन्तु फिर वह क्यों क्रोध मे आया ? इसलिए कि उसने 'निष्काम' शब्द के अर्थ नहीं समझे। कर्म कौन मनुष्य छोड सकता है ? क्या आंख से देखना बन्द हो सकता है ? कान को सुनने से रोका जा सकता है ? कोई भी इन्द्रिय अपने काम को नही छोडती। तब क्या करना चाहिए ?

कृष्ण भगवान् कहते हैं—यज्ञ, दान और तप इन कर्मो का कभी भी त्याग न करना चाहिए। छोड़ने योग्य बुरे काम हैं, न कि अच्छे। वैदिक कर्म को न छोड परन्तु इन कर्मों को नियम पूर्वक करना मनुष्य का परम धर्म है। यह क्यों ? इसलिए कि मनुष्य एक स्थान पर ठहर नही सकता। गति जगत का नियम है। सिवाय परमात्मा के और किसी सांसारिक पदार्थ की स्थिति नही, फिर निर्बल मनुष्य कब एक स्थान पर ठहर सकता है। मुक्ति बड़ी दूर है। आत्मिक हिमालय की चोटी पर उसकी झलक-सी दीखती है। मुक्ति के अभिलाषियो को ऊपर चलना है। मार्ग बडा विकट है, चढाई सीधी है। अगर दृढता के साथ श्वास को ठीक कर, बदन को ठीक अवस्था मे रखकर, ऊपर को नही चलते तो एकदम नीचे गिर पडोगे। नीचे की दूरी से सिर में चक्कर आ जाए और न जाने किस प्रकार नीचे आन गिर। इसलिए कृष्णदेव कहते हैं कि आत्मा की शुद्धि और दृढता के लिए यज्ञ, दान और तप का अभ्यास नित्य करे। बिना तप के मनुष्य दान के योग्य नहीं होता जिसके पास स्वयं धन नहीं, वह दूसरों को क्या देगा ? जिसके अपने पास विद्यारूपी रत्न नहीं, वह दूसरो को विद्यादान कैसे कर सकता है ? इसलिए तप का अभ्यास सब से पहले करना चाहिए, उसके साथ दान का अभ्यास स्वयमेव होगा। जिसके पास ऐश्वर्य है, उसका चित्त देने की तरफ प्रवृत्त होगा। जिसके शरीर में बल नहीं, वह दोनो की रक्षा क्या करेगा ? जब तप और दान दोनों इकट्ठे हो जाते हैं तब यज्ञ का प्रकाश होता है।

क्या कभी इस तरह कर्मों का अन्त हो सकेगा ? यदि कर्मों का अन्त न होगा तो क्या कभी भी हम मुक्ति की चोटी पर पहुंच सकेंगे ? इसका उत्तर फिर ईश्वरीय विज्ञान की सहायता से भगवान् कृष्ण देते हैं–कर्म बराबर करो क्योकि इन्द्रिया बिना कर्मों के रह नही सकती किन्तु उन कर्मों के फलभोग की इच्छा को छोड दो। बस, यही निष्काम कर्म कहलाते हैं। कर्म करते हुए ही पूरी आयु भोगने की इच्छा करो, परन्तु उन कर्मो के फल से कुछ भी सम्बन्ध न रक्खो। इस तरह तुम उन कर्मों के बन्धन से छूट सकते हो। कर्म अपने आप में कुछ भी नही कर सकते, उनमे फँसावट ही सब कुछ करती है। मनुष्यो को यदि पापरूपी नरक मे गिराती है तो कर्मों की फँसावट ! इसलिए ऐ मेरे प्यारे भाइयो ! संसार के गृहस्थरूपी युद्ध से मत भागो ! जिसने इन्द्रियों को वश में किया है उसका घर भी तपोवन है, किन्तु जो वन मे जाकर भी इन्द्रियो का दास ही रहा, वह घोर संग्राम मे फँसा हुआ है। ऋषि लोग निष्काम कर्म करने से ही जगद्गुरु कहलाते थे, अन्यथा उनके शरीर भी दूसरे मनुष्यों की तरह के ही थे। इस समय निष्काम भाव से काम करने की बड़ी भारी आवश्यकता है। मैं भूल गया—इस क्या, हर समय ही निष्काम भाव से काम करने की आवश्यकता है। तुम यश के भूखे हो ! निष्काम भाव से काम करो, यश तुम्हारे पीछे मारा-मारा फिरेगा। तुम्हें आश्चर्य होगा कि यश का निष्काम भाव से क्या सम्बन्ध ! परन्तु आश्चर्य की कोई बात नही है। कवि ने सच कहा है, "बिन मांगे मोती मिले, मांगे मिले न भीख।" तुम अपना उद्देश्य उच्च बनाओ। उसके लिए तप, दान और यज्ञ के अभ्यास की आवश्यकता है। इन तीनों प्रकार के कर्मों से शरीर, मन और आत्मा को शुद्ध करो। फिर निडर होकर संसार में विचरो जब फलभोग की कामना न रखो तो बजाय इसके कि विषय इन्द्रियो को अपनी तरफ खींच सके, मन इन्द्रियो को अन्दर की तरफ खींच सकेगा और बजाय इसके कि मन आत्मा को बहिर्मुख कर सके, आत्मा अपने अन्दर मन और इन्द्रियों को खींचकर उनका राजा बना हुआ, परमधाम की तरफ चल सकेगा। उस परमधाम का मालिक परम आत्मा है। उसीका सारा ऐश्वर्य है। उसको पाकर फिर किसी वस्तु की इच्छा बाकी नही रहती। परमात्मा पूर्ण कृपा कर कि हम सब योगिराज कृष्ण के गम्भीर नाद को सुन और उसके अनुकूल चलें।

शब्दार्थ—(यज्ञदानतप) मनुष्य के लिए यज्ञ दान और तप (कर्म) ये तीन कर्तव्य हैं। (न त्याज्यम) ये कर्तव्य मनुष्य कभी न छोड (कार्यमेव तत्) इन्हें अवश्य करता ही रहे क्योकि (यज्ञो दान तपश्चैव) यज्ञ, दान और तप ये तीनो (मनीषिणाम) बुद्धिमान् मनुष्यो के (पावनानि) हृदयो को शुद्ध पवित्र करने वाले हैं। अतएव (पार्थ !) हे अर्जुन ! एतान्यपि तु कर्माणि) ये सब कर्म (संग फलानि च त्यक्त्वा) आसक्ति तथा फलत्याग की भावना से कर्तव्यानि) करने चाहिएँ, यह (उत्तम मत निश्चितम्)मेरा उत्तम तथा निश्चित मत है। ●

---

३० जनवरी शहीदी दिवस पर–

क्या सरकार बापू की ये दो बाते स्वीकार करेगी ?

"दो काम तो तत्काल किये जा सकते हैं—

एक प्रस्ताव पास कर के केन्द्रीय सरकार और प्रान्तीय सरकारो से अनुरोध किया जावे कि वे अपने समस्त विभागों की जरूरत पूरी करने के लिए केवल हाथ कते सूत की और हाथ बुनी खादी ही खरीदें।

और दूसरे प्रस्ताव में शराब और नशीली चीजों से होने वाली पूरी आय को समाप्त करने और उससे जो घाटा हो उसको पूरा करने के लिए सेना के कार्य में उतनी ही कमी करने की माँग की जावे। सम्भव है सरकार इन प्रस्तावों की भी परवाह न करे।"

११ अप्रैल १९२४ —महात्मा गांधी

ओ३म्
आर्य सन्देश

'मेरी अन्त करण से यही कामना है कि भारतवर्ष के एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त तक आर्यसमाज स्थापित हो और देश में व्यापी हुई कुरीतियां उन्मूलित हो जाय।" —महर्षि दयानन्द सरस्वती

सम्पादक की कलम से

भारतीयों की अंग्रेजी-परस्ती : एक त्रासदी

पिछले दिनों हमारे देश में अंग्रेज कवि स्टीफन स्पेण्डर आए थे। वे सदा भारतीय अंग्रेजी को घटिया अंग्रेजी कहा करते थे। इस बार उन्होंने ऐसा नहीं कहा, यह हमारे लिए आश्चर्य की बात हो सकती है, पर अगला ही वाक्य उन्होंने जो कहा वह हमारे रोंगटे खड़े कर देने वाला था— हिन्दुस्तानियों की अंग्रेज परस्ती वह प्रेम-प्रसंग है जो न चल पाता है, न नवाक ले पाता है, बल्कि घुट घुट कर सिसकता रहा है।" यह इस बात का स्पष्ट संकेत है कि हिन्दुस्तानी लोग आंग्लभाषी बिरादरी में दूसरे दर्जे के ही नागरिक माने जाएंगे। इन पंक्तियों में हमें कोई कारुणिकता खोजने की आवश्यकता नहीं है यह हमारे स्वाभिमान पर करारी चोट है।

फिर भी हम अंग्रेजी के दीवाने हैं। हम उस अंग्रेजी के दीवाने हैं, जो भारतीय भाषाओं के बीच दरार पैदा करके अपना स्थान बनाती आई है। विनोबा भावे ने कहा था कि हिन्दुस्तानी को दूसरी हिन्दुस्तानी भाषाएं सीखने में उतना समय नहीं लगेगा जितना अकेले अधकचरी अंग्रेजी सीखने में बरबाद हो जाएगा। हम दूसरी भाषाएं सीखने की कोशिश नहीं करते और बेकार ही अंग्रेजी को सम्पूर्ण भाषा बनाए रखने के चक्कर में समय बरबाद किए जा रहे हैं।

संघ लोक सेवा आयोग के सामने आत्मविश्वासी और दृढ विचारणा वाले युवकों का एक वर्ग इस बात को लेकर धरने पर बैठा है कि चयन परीक्षाओं में से अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया जाये, परन्तु उन्हें प्रोत्साहन देने या उनकी बात मान लेने की बजाय उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाता है। पुष्पेन्द्र चौहान, शिवचन्द्र तिवारी और हीरालाल को १४ जनवरी को दूसरी बार गिरफ्तार किया गया।

हमें चाहिए यह कि अंग्रेजी के कलंक को अपने माथे से धो दें। यह गुलामी का प्रतीक है। पर हम इसे तिलक समझ बैठे हैं। यह हालत कब तक चलती रहेगी? हमारे एक साथी ने बताया कि यह तब तक चलेगा जब तक अंग्रेजी जानने वालों को पढ़ा लिखा माना जाएगा, जब तक हम यह भ्रम पाले रहेंगे कि अंग्रेजी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता और जब तक हम अंग्रेजी को अपने कामकाज की भाषा बनाए रखेंगे।

हम यह नहीं कहते कि अंग्रेजी को देश से निकाल दें, पर त्रासदी तो यह है कि हम अंग्रेजी से चिपट रहे हैं।

अभी २४ जनवरी से अंग्रेजी के विरोध में एक मशाल जुलूस निकाला गया। इसका नेतृत्व अनेक भारतीय भाषाओं की समुन्नति के लिए प्रयत्नशील संस्थाओं के नेताओं ने किया। मुख्य मुद्दा यह था कि राष्ट्रपति गणतन्त्र दिवस के अवसर पर दिया जाने वाला अपना संदेश भारतीय भाषा में रखें पर इसका कोई खास असर नहीं पड़ा।

बात यह नहीं है कि नेता लोग अंग्रेजी के खिलाफ सत्याग्रह कर रहे लोगों की भावनाओं के खिलाफ हैं। डा० शंकरदयाल शर्मा, डा० बलराम जाखड, श्रीमती नजमा हेपतुल्ला, श्री ललितेश्वर प्रसाद शाही। इन सभी की सत्याग्रहियों के साथ सहमति है, पर फिर भी अंग्रेजी की गांठ ढीली नहीं हो पा रही है।

१८ जनवरी १९६८ को संसद में यह संकल्प स्वीकृत हुआ था कि भारतीय भाषाओं को ही परीक्षा का माध्यम बनाया जाएगा पर अभी तक भी हम इसे क्रियान्वित नहीं कर पाए हैं।

अंग्रेजी एक जादूगरनी है। इससे सभी भाषाएं डरती हैं। यह राजरानी है और भारतीय भाषाएं नौकरानी हैं। अंग्रेजी की एक दहशत है। हमने बचपन में सुना था कि शेर से क्या डरना, डर तो उसकी दहाड़ का है। वास्तव में अंग्रेजी की यह गिटपिट ही हमारे हृदयों को कम्पायमान किए है।

संघ लोक सेवा आयोग के सामने बैठे सत्याग्रहियों की लड़ाई क्रमिक रूप से अग्रसर है। उन्होंने पहले धरना दिया, फिर भूख हड़ताल की और वे अब जनसम्पर्क कर रहे हैं।

हमें चाहिए कि हम अपनी भाषाओं के लिए जागरूक हों। हम स्वयं अपनी भाषा में व्यवहार करें। अंग्रेजी की दासता को छोड़ें। सभी भारतीय भाषाओं को अपना मानें। संस्कृत इन सभी के बीच एक सेतु का कार्य कर सकती है।

दिवंगत आर्य श्रेष्ठी

इस विचार शृङ्खला में हम उन महानुभावों का स्मरण करते हैं जिन्होंने वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए अपना जीवन अर्पित किया। पाठकों से हमारा विनम्र निवेदन है कि वे भी इस स्तम्भ के लिए सामग्री भेजते रहा करें ताकि अन्य पाठकों को उन महापुरुषों की जानकारी मिल सके और वे अपने जीवन में प्रेरणा पा सकें।

पं० रामचन्द्र देहलवी

पं० रामचन्द्र देहलवी का जन्म सन् १८८१ में रामनवमी के दिन मुंशी छोटेलाल और रामदेई के घर मालवा की छावनी नीमच नगर में हुआ था। उनका देहावसान ३ फरवरी १९६८ को रात को ९.३० बजे हुआ था। अगले दिन दीवानहाल से जब उनकी शव यात्रा प्रारम्भ हुई तो दिल्ली के हजारों लोग उनके पीछे थे। स्वामी दयानन्द का वह अनन्य भक्त आर्यसमाज का अथक सेवक, ईश्वर विश्वासी और आत्मिक बल का धनी, दिव्य पुरुष सदा हमें प्रेरणा देता रहेगा। उन दिनों चांदनी चौक फव्वारे पर दो दिन मुसलमानों का और दो दिन ईसाइयों का प्रचार होता था। माननीय पंडित जी का नियम था कि वे दिल्ली में रहते, अपने साथ अपनी चटाई स्वयं लाते और गाकी मैदान में बिछा लेते। वहाँ पर उनके साथी मित्रों की भीड़ जमा हो जाती और वे अपनी बात युक्ति संगत तरीके से कहना प्रारम्भ करते। उनका वेद प्रचार का यह अनूठा ढंग आज भी हमें पार्कों में और सड़कों के किनारे प्रचार की प्रेरणा देता है। वे ईसाइयों और मुसलमानों की बात भी ध्यान से सुना करते थे और अपनी बारी आने पर उनकी बातों का युक्ति युक्त उत्तर देते थे। पंडित जी ने अन्य धर्मग्रन्थों का भी गहन अध्ययन किया था। हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी सत्याग्रह में उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

स्वामी स्वतन्त्रतानन्द सरस्वती

स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज का जन्म जनवरी मास में हुआ था। उस लौह पुरुष ने वैदिक धर्म, आर्यसमाज और देश के लिए अपने आपको न्यौछावर कर दिया। उन्होंने स्वतन्त्रता आन्दोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। स्वाधीनता के लिए वायसराय की आज्ञा से बन्दी बनाए गए, वे ही अकेले साधु थे। उस समय वे श्रीमद् दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर के आचार्य थे। स्वामी जी महाराज की कथनी और करनी एक थी। स्वर्गीय वैद्य सच्चिदानन्द जी उनके कार्य व्यवहार को देखकर आर्यसमाज के प्रति आकर्षित हुए थे। इसी वीर पर लोहारू हरियाणा में लाठियां और कुल्हाड़े चले पर वह दयानन्द का सच्चा सिपाही अपने रास्ते पर अडिग रहा। उस वीर को हमारी श्रद्धा विनत श्रद्धांजलि!

विद्वान् दरिद्री भी अच्छा, परंतु करोड़पति मूर्ख अच्छा नहीं।

धन्य है ! धर्मवीर हकीकत

—यशपाल सुधांशु

१७३४ को वसन्त पंचमी का दिन लाहौर से ५ किलोमीटर दूर रावी नदी का तट चारों तरफ लोगों की भीड़ एक ऊंचा सा चबूतरा हाथ में भारी तलवार लिये खड़ा जल्लाद। पन्द्रह वर्ष का एक किशोर तरुणाई के चिह्न अभी उसके चेहरे पर प्रकट होने लगे थे। एक आवाज उसके कानों में आती है—देख लड़के अभी भी मौका है माफी मांग कर इस्लाम कबूल कर, नहीं तो अन्जाम तुम अच्छी तरह जानते हो। वह किशोर शान्त होकर बोला मेरा जवाब भी तुम जानते हो और अन्जाम से मैं न डरा हूं और न डरूंगा। ये शब्द थे हिन्दु समाज के गौरव स्तम्भ धर्मवीर हकीकत के। आखिर जल्लाद की तलवार चली और उस वीर का शिर कट कर गिर पड़ा। चारों तरफ हाहाकार मच गया। धरती हिल उठी। आकाश फट पड़ा। ऐसा अन्याय! ऐसा अत्याचार!! एक मासूम निरपराध बालक की जघन्य हत्या!!!

उन दिनों दिल्ली के तख्त पर मुगल बादशाह मोहम्मदशाह रंगीला राज्य करता था। पंजाब सूबे के सयालकोट नगर से जुड़ी है यह ऐतिहासिक घटना। धन और धर्म के धनी भागमल के घर १७१९ ई० में हकीकत का जन्म हुआ था। धार्मिक शिक्षाओं के कारण हकीकत राय दुर्गा का उपासक था। गीता के प्रति उसकी असीम श्रद्धा थी। ५ वर्ष की आयु में उसे पढ़ने के लिए भेजा गया। १० वर्ष की उम्र में मस्जिद में मुल्ला के पास फारसी पढ़ने के लिए भेजा गया। उस समय फारसी का प्रचलन सरकारी कामकाज में इसी प्रकार था जिस प्रकार इस समय अंग्रेजी भाषा का प्रचलन है। १२ वर्ष की आयु में उसका विवाह गुरदासपुर जिले के बटाला नगर के एक खत्री परिवार में हो गया हकीकत पढ़ने में सदा प्रथम रहता था जब अन्य विद्यार्थी खेल कूद और शरारत में मस्त रहते थे वह अपनी पुस्तक खोलकर अध्ययन में निमग्न रहता था। उसके पढ़ने रहने तथा कक्षा में प्रथम आने से कई शरारती विद्यार्थी उससे चिढ़ते रहते थे। एक दिन पुस्तक पढ़ते-पढ़ते हकीकत को मुस्लिम छात्रों ने खींच कर बाहर ले जाना चाहा, हकीकत के मुंह से सहसा निकला—

कसम दुर्गा भवानी की" आगे दो मुल्ला जी को तुम सबकी शिकायत करूंगा। हकीकत की कसम सुन कर उन्होंने हकीकत को गाली देते-देते उसकी आराध्या दुर्गा भवानी को भी कई गालियां दीं। हकीकत को भी जोश आ गया उसने भी उसी प्रकार की गाली 'फातिमा' को दे डाली। बस यही बात मूल कारण बन गयी। जिसके कारण हकीकत को कत्ल करने का दण्ड दिया गया।

"फातिमा मोहम्मद साहब की पहली पत्नी के पहले पति से उत्पन्न कन्या का नाम था। जबकि दुर्गा हिन्दुओं में पूज्या और आराध्या देवी मानी जाती है। काजी ने 'शरा' की पुस्तक निकाली उसमें पढ़कर सुनाया—जिसका मतलब था यदि कोई गैर मुसलमान इस्लाम का अपमान करता है तो उसको दोजख की आग में जलना पड़ता है। बस काजी को स्रोत मिल गया। उसने हजरत मोहम्मद के रिश्तेदार को गाली देना इस्लाम की तौहीन मान लिया। इस अवसर पर हकीकत ने कहा। उन लोगों ने भी तो मेरे इष्ट को गाली दी थी, किन्तु इसको कोई कारण नहीं माना गया। लेकिन मानवता के नाते सियालकोट का हाकिम इस दण्ड को जघन्य समझता था परन्तु मजहबी उन्मादियों के सामने दबकर उसने सूबे की राजधानी लाहौर में केस को भेज दिया।

मुस्लिम राजसत्ता ने इस तरह के अनेक अत्याचार कराये हैं जिससे इस्लाम की शिक्षाओं के प्रति लोगों के विचार और की तरह के हो गये। प्रमुख बुद्धिजीवी 'सैय्यद आले वजनत जैदी" ने इस्लाम की राजसत्ता के क्रूर रूप को सचमुच आईना दिखाया है। वे लिखते हैं—

दुनिया में इस्लाम के दो रूप उभर कर आये हैं। एक फकीरों सन्तों पीरों का इस्लाम है। दूसरा बादशाहों का इस्लाम है। बादशाहों के इस्लाम ने दुनिया में बड़े बड़े इस्लामी कारनामे किए हैं। इस्लाम के सहिष्णुता और प्रेम के संदेश को तलवार की ताकत में बदला है। दुनिया में बड़े-बड़े पुस्तकालय जलवाए हैं। इसी राजशाही वाले इस्लाम ने रसूले इस्लाम के अत्यन्त वरिष्ठ सहयोगियों को करबला में भूखा प्यासा मार डाला। मुसलमानों के चौथे खलीफा की मस्जिद में हत्या कर दी। तीसरे खलीफा भी इन्हीं घटनाओं में तलवार की धार के शिकार हुए। अगर इसी धारा को इस्लाम माना जाए तो मुसलमानों को तवारीख में अत्यन्त घिनौने कारनामे देखने को मिलेंगे।

दूसरी तरफ फकीरों और पीरों की धाक रही है। भारत में ख्वाजा अजमेरी इसी धारा के प्रतीक रहे। आज उनके आस्तानों पर सभी धर्मों के लोग इकट्ठे होते हैं। ऐसे ही लोगों से इस्लाम का नाम रोशन हुआ है, उसका सच्चा संदेश फैला है। इस धारा से बाहर के लोगों का मुसलमान होना तो संयोग ही था। उनकी लूट मार को डकैती को इस्लाम के नाम पर कलंक ही माना जाना चाहिए। इसीलिए मोहम्मद गजनी ने सोमनाथ का मन्दिर लूटा तो उसे डाकू कहने में संकोच नहीं होना चाहिए। क्या इस्लाम इजाजत देता है किसी के धर्मस्थल को लूटने की? कुतुबुद्दीन ऐबक एक बादशाह था जिसने २७ मन्दिरों के मलबे से कुतुबमीनार बनवाई जो मलबा कालिंजर तक ले जाया गया था। इस बात को सर सय्यद अहमद खां ने अपनी पुस्तक असर रुल सनदीद में खुद मंजूर किया है।

औरंगजेब ने अपने आपको बादशाह ही नहीं इस्लामी बादशाह भी दिखाने की कोशिश की। तब भारत में कई मुस्लिम सन्तों ने इसका विरोध किया था। ऐसे कई लोगों को फांसी दे दी गई थी। बादशाही की राह में जो भी रोड़ा बना उसे किराए के मौलवियों से कुफ्र का फतवा दिलवा कर कत्ल कर दिया गया। इस्लाम के सभी सन्त दरबारों से दूर दरगाहों में रहते थे। अकबर को भी अजमेर शरीफ जाना पड़ता था। इस्लाम में बादशाह की कोई कल्पना तक नहीं है। रसूले इस्लाम में खलीफा की महल नहीं बख्शे गए। जो सबसे पवित्र, धार्मिक, ज्ञानी या तपस्वी व्यक्ति हैं वही नेतृत्व देने लायक हैं, वही इमाम हो सकते हैं। आज इस्लाम की इन खूबियों को भूलकर कर्मकाण्ड को ही इस्लाम बताया जा रहा है। इस्लाम में मस्जिद बनाने के भी कुछ सर्वमान्य नियम हैं कि वह जमीन कब्जा की हुई न हो, स्वेच्छा से दी गई या खरीदी गई हो। मस्जिद बनवाने का उद्देश्य सिर्फ इबादत हो और वह पाक साफ हाथों से बनवाई गई हो।

गौर करने की बात है कि राजाओं ने सिर्फ सोमनाथ मन्दिर ही नहीं लूटा। ऐसे ही लोगों ने रसूले इस्लाम का पवित्र मदीना भी लूटा। करबला में रसूले इस्लाम के पूरे परिवार के ७२ लोगों को भूखा प्यासा मार डाला गया जिनकी याद में मुहर्रम मनाया जाता है। मुस्लिम बादशाह यजीद ने तो काबे में आग लगाई थी। अपने आप को खलीफा बादशाह घोषित कर दिया। —जनसत्ता १३ जनवरी

राजसत्ता के मद में इस्लाम के नाम को उसके अनुयायियों ने खुद बदनाम किया उसी का उदाहरण "हकीकत का बलिदान" है।

हकीकत को मुसलमान बनने के लिए अनेक प्रलोभन दिये गये। परन्तु वह नहीं माना। उसने अत्याचार की तलवार के सामने कायरता से गर्दन झुकानी स्वीकार नहीं की।

आज के सन्दर्भ में हकीकत का बलिदान और भी अधिक प्रेरणाप्रद है। युवा चेतना का प्रतीक है। इस बाल वीर के खून की छींटे तमाम हिन्दू समाज की सुषुप्त चेतना को जागृत एवं झिंझोड़ने वाले हैं। रावी नदी का तट उस बलिदान को भूला नहीं है। धन्य है! वह वीर, धन्य है! वह धर्म का पुजारी, धन्य है! वह मां का सपूत, धन्य है! भारत मां का लाल धर्मवीर हकीकत, जिसने अपने धर्म अपनी संस्कृति, अपनी आन बान शान के लिए सर कटाना पसन्द किया सर झुकाना नहीं। सचमुच—

शूर धर्म है अभय
दहकते अंगारों पर चलना।
शूर धर्म है शोणित,
असि पर धर कर शीश मचलना।
शूर धर्म अभय कहते हैं,
छाती तान तीर खाने को।
शूर धर्म कहते हैं,
हंस कर हलाहल पी जाने को।

पुस्तक समीक्षा—

वैदिक विवाह पद्धति

लेखक डा० रूपकिशोर शास्त्री
मूल्य ८.०० रुपये
प्रकाशक वैदिक प्रकाशन,
२४०८, बाजार सीताराम, दिल्ली ६

डॉ० रूपकिशोर शास्त्री, वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित अधिकारी विद्वान हैं। आपने अपनी इस छोटी आयु मे जो प्राप्त किया है वह किसी के लिए भी ईर्ष्या का विषय हो सकता है। आपने गुरुकुलीय शिक्षा के अनुसार पालित पोषित होकर कॉलेज और विश्वविद्यालय की शिक्षा भी प्राप्त की है। अत आप में दोनों विधाओं की श्रेष्ठताओं का मणिकांचन संयोग है। पुस्तक हाथ में लेते समय मैंने सोचा भी न था कि आप वैदिक विवाह पद्धति की इतनी सुन्दर व्याख्या कर सकते हैं। पर जब मैं पढ़ने बैठा तो तब तक पढ़ता रहा जब तक कि इसके आखिरी पृष्ठ तक न पहुंच गया। विवाह पद्धति मे कुछ छूट गया हो या जोड़ दिया गया हो, इस का विवेचन तो सुधी विद्वान ही कर सकेंगे। पर यह निस्सदेह कहा जा सकता है कि डॉ० साहब ने अग्रजी पढ़े लोगों के लिए सुमधुर और सुललित शैली में विवाह पद्धति को समझाया है। वाक्य विन्यास ऐसा गुम्फित है कि हम यह मानने को बाध्य हो जाते हैं कि डा० साहब ने अग्रजी भाषा पर ऐसा अधिकार पाया है, जैसा कि मातृभाषा पर हो सकता है।

पुस्तक का कलेवर सुन्दर है।

—मूलचन्द गुप्त

(पृष्ठ १ का शेष)

जम्मू सद्भावना यात्रा

थो। परन्तु यह पूछे जाने पर कि क्या उन मे से किसी को पकडा गया है ? तो उन्होंने उत्तर दिया नहीं। मुख्यमंत्री जी दगाई भावना से भी ग्रस्त लगते हैं उसकी झलक हमें उस समय मिली जब उन्होंने कहा यहां भाजपा का कब्जा और हम क्षति पहुंचाने के लिए शिवसेना को बनाया गया है। मैं इन सैन्य-नाबूद कर दूंगा और इनके लोगों को पकड़वा कर लद्दाख के बर्फानी जेल मे मरने के लिए डालूंगा। इससे लगता है कि वह इस दुर्भाग्यपूर्ण काण्ड का लाभ केवल शिवसेना को दबाने के लिए उठाना चाहते हैं तथा सिखों और हिन्दुओं में भेद बढ़ाना चाहते हैं। उनके इस खतरनाक संकेत पर हमने कहा जब तक गुरु नानक गुरु गोविन्दसिंह और गुरु ग्रंथ हैं, हिन्दू-सिखों को कोई अलग नहीं कर सकता है।

हमारी राय में—

१—इन दंगों को साम्प्रदायिक दंगा कहना ठीक नहीं, क्योंकि यह कुछ असामाजिक और राष्ट्र विरोधी तत्वों द्वारा प्रशासन की अक्षमता और मिलीभगत से की गई सुनियोजित गड़बड़ी थी।

राष्ट्रवादी और देशभक्त लोगों ने अपनी रक्षा में प्रतिरोधात्मक कार्यवाही न की होती तो परिणाम अधिक भयानक निकलते।

२—जम्मू कश्मीर की फारूक अब्दुल्ला सरकार की विफलता स्पष्ट है। जम्मू की जनता की माग है कि प्रशासन राज्यपाल के हाथ में दिया जाय क्योंकि राज्यपाल श्री जगमोहन की ईमानदारी और क्षमता पर वहां के हिन्दू, मुस्लिम और सिखों को फारूख अब्दुल्ला से अधिक विश्वास है।

३—जिन लोगों की जान और माल की क्षति हुई है, उनकी क्षति पूर्ति करने की आवश्यकता है। राहत कार्यों में दलगत भावना से रुकावट नहीं करनी चाहिए। जम्मू-काश्मीर प्रशासन को चुस्त बनाने और काश्मीर घाटी की साम्प्रदायिक मनोवृत्ति से जम्मू को दूर रखने के लिए भी यह आवश्यक है कि जम्मू और लद्दाख को क्षत्रीय स्वायत्तता दी जाय। यह जम्मू के लोगों की पुरानी माग है। इसे मानने में विलम्ब नहीं करना चाहिए।

अन्त में हम केशधारी और सहजधारी सभी लोगों से प्रार्थना करते हैं कि वे मिलकर शान्ति का वातावरण बनायें और अपने परपरागत भाई-चारे को कम न होने दें। हमारी मान्यता है कि जब तक गुरु नानक, गुरु गोविन्दसिंह और गुरुग्रंथ साहिब मे लोगों की आस्था है, हिन्दू सिखों को कोई शक्ति अलग नहीं कर सकती। ●

अमर रहे गणतन्त्र महान्

भारत माता के प्रांगण में—
इसने खुशियां हैं बिखरायी।
जन जन में समता की पावन—
नूतन जाग्रत ज्योति जगायी।

है प्रतिबिम्ब समृद्धि सुखों का—
भारत मां की है यह शान।
अमर रहे गणतन्त्र महान ॥

यह गणतन्त्र महान हमारा—
देता रहा हमें है शक्ति।
देश चढ़ा उन्नति शिखरों पर—
जाग्रत हुई राष्ट्र प्रति भक्ति।

गौरव है गणतन्त्र, राष्ट्र का—
अमर शहीदों का अभिमान।
अमर रहे गणतन्त्र महान ॥

इसकी रक्षा मे निशिवासर—
सतत सभी हैं हम कटिबद्ध।
देश महान् बनाएंगे हम—
सकल्पों से हम प्रतिबद्ध।

यह गणतन्त्र सिखाता हमको—
पावन त्याग तथा बलिदान।
अमर रहे गणतन्त्र महान ॥

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

बिरला आर्य कन्या सीनियर स्कूल में गणतन्त्रतादिवस समारोह—

भारत की स्वाधीनता प्राप्ति में आर्यसमाज का योगदान उल्लेखनीय है

भारत वर्ष को १९४७ में स्वाधीनता मिली थी तथा हमने अपने संविधान को २६ जनवरी १९५० को लागू किया था। इस स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए हमने अनेक बलिदान दिये। इन बलिदानियों में आर्यसमाज से आये हुए लोगों का प्रमुख स्थान रहा है। सर सीताभीपट्टाभि रमैया ने कांग्रेस का इतिहास लिखाते समय यह उद्धृत किया है कि स्वाधीनता के लिए काम करने वाली मुख्य संस्था कांग्रेस मे ८० प्रतिशत लोग वे हैं जिनकी पृष्ठभूमि आर्यसमाज है। लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, रामप्रसाद बिस्मिल, शहीद भगतसिंह, तथा अन्य अनेक लोग जिन्होंने स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर अपने आपको न्योछावर कर दिया—वे आर्यसमाजी थे। आज हमारा कर्तव्य है कि उन सब को स्मरण करते हुए सकल्प ले कि राष्ट्र के उत्थान मे हम समर्पण भाव से तन, मन धन से तथा पूर्ण निष्ठा के साथ कार्य करेंगे। यह विचार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने बिरला आर्य कन्या सीनियर सेकेण्डरी स्कूल के वार्षिकोत्सव पर आयोजित गणतन्त्र दिवस समारोह में ध्वजारोहण के बाद व्यक्त किये उन्होंने बच्चों को प्रेरणा दी कि वे इस ध्वज की रक्षा करने के लिए सदा तत्पर रहें। विद्यालय की बालिकाओं ने भाषण, कविता, नाटक तथा योग आदि के कार्यक्रम प्रस्तुत किये। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती सुशीला सेठी ने विद्यालय की गतिविधियों तथा उपलब्धियों का विवरण दिया।

प्रबन्ध समिति के सदस्य श्री बी० एस० किनरा ने शिक्षा क्षेत्र मे महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा किये गये कार्यों की सराहना की और बताया कि यह विद्यालय उन्हीं सिद्धान्तों के अनुरूप कार्य कर रहा है।

श्री जसवन्त राय साही स्कूल प्रबन्धक ने बच्चों, अध्यापिकाओं, अभिभावकों तथा क्षेत्रीय आर्यजनों का धन्यवाद किया। □

आर्यसमाज, चूना मण्डी, पहाड़गंज, दिल्ली

की ओर से

विशेष बस द्वारा यात्रा एवं प्रचार

आर्यसमाज चूना मण्डी पहाड़गंज दिल्ली की ओर से एक विशेष बस दिनांक २ मार्च ८९ को प्रातः ७ बजे प्रचारको, विद्वानों भजनोपदेशको को लेकर शावर आबू रोड, माउन्ट आबू राजकोट, टंकारा, मोरवी, जामनगर, द्वारका बेट, पोरबन्दर, सूरत बम्बई, गोआ पूना, नासिक, पंचवटी इन्दौर, आगरा, मथुरा आदि दर्शनीय स्थानो का भ्रमण तथा वेद प्रचार कर १७ मार्च ८९ को रात्रि १० बजे वापस दिल्ली पहुंचेगी।

★ बस में प्रतिदिन प्रातः यज्ञ एवं उपदेश प० यशपाल जी शास्त्री करेंगे।

★ बस मे सत्संग, भजन, प्रभुभक्ति तथा देशभक्ति के गीत हुआ करेंगे।

★ मार्ग व्यय तथा भोजन ६७५) रुपये प्रति सवारी होगा।

अधिक जानकारी तथा सीट बुक कराने के लिए निम्न सज्जनो से सम्पर्क कर सकते हैं—

बनराज आनन्द	प्रितमदास रसवन	श्यामदास सचदेव	कृष्णा रमवन
प्रधान	मन्त्री	संयोजक	मन्त्राणी
	फोन ७८८१		फोन ७३८५४०

दिल खोलकर दान दें

कृण्वन्तो विश्वमार्यम वेद का आदेश है। इसमें हम तभी सफल होंगे, जब नई कालोनियों में बनने वाले आर्यसमाजो को स्वस्थ आधार प्रदान करने मे हम सहयोगी बनें। यह हमारे लिए प्रसन्नता एवम सन्तोष की बात है कि दिल्ली मे कहीं भी नई कालोनी आबाद होती है, तो वहां के उत्साही बन्धु वहां पर आर्यसमाज की स्थापना करते हैं। आओ हम सब मिलकर इन आर्यसमाजो को खड़ा कर ताकि वहाँ पर स्वामी दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों को जन जन तक पहुचाया जा सके। सभी आर्यसमाजों, ट्रस्टों और दानी महानुभावो से निवेदन है कि वे निम्न आर्यसमाजो को यथाशक्ति दानराशि चैक ड्राफ्ट, मनीआर्डर से भेज कर यश के भागी बनें।

(१) आर्यसमाज पश्चिमपुरी नई दिल्ली
पता—श्री सतीश आर्य, मन्त्री आर्यसमाज पश्चिमपुरी, पाकेट-३ जनता क्वार्टर्स, नई दिल्ली-११००६३

(२) आर्यसमाज सैनिक विहार दिल्ली
पता—श्री ओ३म् प्रकाश, मन्त्री आर्यसमाज सैनिक बिहार, दिल्ली-३४

(३) आर्यसमाज निर्माण विहार दिल्ली
पता—श्री प्रमप्रकाश आर्य, मन्त्री आर्यसमाज सी-१४६, निर्माण विहार, दिल्ली ९२

निवेदक
मूलचन्द गुप्त, सम्पादक आर्यसन्देश
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

आर्यसन्देश पढ़े, पढ़ाये

आर्य जगत के समाचारों व उपयोगी लेखो, अध्यात्म विवेचनो से युक्त, सामयिक चेतावनियों से जूझने की योजना देने वाले साप्ताहिक आर्यसन्देश के ग्राहक बनिए और बनाइए। साथ ही वर्ष मे चार अन्य विशेषांक प्राप्त कीजिए। वार्षिक शुल्क केवल २५ रुपये। आजीवन २५० रुपये मात्र।

वीर हकीकत बलिदान दिवस पर—

भगवान् भारतवर्ष को लाखों हकीकत दीजिए !

—ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, विद्यावाचस्पति

वह कौम मिट सकती नहीं जिसमें हकीकत वीर हो।
कोई बता दे विश्व में ऐसा कोई बलवीर हो॥
जालिम के जुल्मो से हकीकत खौफ खाता है नहीं।
वह राम सीता के लिए दो गालियां सहता नहीं॥
इसको सजाये मौत का था हुक्म जालिम ने दिया।
इसको मुसलमां बनने पर था लोभ हाकिम ने दिया॥
धर्म हिन्दू छोड़कर गर तू मुसलमां बन गया।
जागीर लेकर इस जमीं पर ऐसे जन्नत कर गया॥
मुह तोड़ उत्तर था हकीकत ने उसे ऐसा दिया।
धर्म से बढ़कर न कोई वस्तु है यह कह दिया॥
समझाया काजी ने उसे पर वीर वह माना नहीं।
धर्म से बेहतर हिफाजत जान को जाना नहीं॥
लाहौर के मैदान में आया बसन्ती पर्व था।
सिर हकीकत दे गया उसको बड़ा ही गर्व था॥
उठ खड़े हो हिन्दुओ सोते रहोगे कब तलक
घर मे लुटेरे घुस रहे लुटते रहोगे कब तलक॥
आज फिर से धर्म वैदिक की परीक्षा आ गई।
न्हु ओर काली ही घटाएं फिर से घिरकर छा गईं॥
याद रक्खो आज भी ऐसे हकीकत हैं यहां।
धर्म से आगे भला कोई हकीकत है कहां॥
भगवान भारत वर्ष को लाखों हकीकत दीजिए।
कर्तव्य ही तो धर्म है यह भावना भर दीजिए॥

गुरुकुल महोत्सव
गुरुकुल चित्तौड़गढ़

महर्षि दयानन्द मनोवांछित श्री गुरुकुल चित्तौडगढ का गुरुकुल महोत्सव आगामी ११ व १२ मार्च १९८९ को, शिक्षा सम्मेलन वेद सम्मेलन, योग एवं अध्यात्म सम्मेलन एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ तथा विभिन्न विषयों की संगोष्ठियों के साथ आयोजित होने जा रहा है। आर्य जगत् के विद्वान् मनीषी आर्य नेता, राजवेता वैदिक विद्वान व अनेक शिक्षाविद इस महोत्सव को अपनी सान्निध्यता से अनुगृहीत करेंगे।

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

एम० डी० एच० सत्संग भवन कीर्तिनगर, नई दिल्ली में आगामी १२ फरवरी १९८९, रविवार को सायकाल ३ बजे से महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव बड़ समारोहपूर्वक मनाया जायगा। समारोह की अध्यक्षता श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा करेंगे। प्रमुख वक्ताओं मे डा० वाचस्पति उपाध्याय, प० यशपाल सुधांशु, श्री प्रमचन्द श्रीधर तथा श्रीमती सुनीति आर्या होंगी।

आर्यसमाज एजूकेशनल ट्रस्ट का निर्वाचन

श्री लाला इन्द्रनारायण जी —प्रधान
श्री सूर्यदेव जी —उपप्रधान
श्री महेन्द्र शास्त्री „
श्री राजसिंह भल्ला —मन्त्री
श्री ओ३मप्रकाश सुनेजा —उपमन्त्री
श्री ऋषभदास —कोषाध्यक्ष
श्री मा आनन्दबोध सरस्वती —प्रधान सदस्य
श्री अभय भल्ला —सदस्य
श्री ओम प्रकाश कपड़े वाले ,
श्री मूलचन्द गुप्त „
श्री बटेश्वर दयाल ,
श्री तीर्थराम आहूजा „
श्री इन्द्रजीत सदस्य
श्री देवराज गुप्त „
श्री शशि कान्त „
श्री लक्ष्मी चन्द „
श्री धर्म चन्द „

वेद प्रचार मण्डल दिल्ली देहात का वार्षिक निर्वाचन

प० उदयश्रेष्ठ धर्माचार्य —अध्यक्ष
श्री रामस्वरूप धर्मरत्न —महासचिव
श्री ऋषि बाबा —कोषाध्यक्ष

आर्यसमाज पालम गांव दिल्ली का निर्वाचन

श्री हरस्वरूप आर्य —प्रधान
प० उदयश्रेष्ठ धर्माचार्य —मन्त्री
श्री श्याम सुन्दर गुप्ता —कोषाध्यक्ष

फुटकर सेल्स डिपो — चमनलाल इण्टरप्राइजिज

२, बीडनपुरा पचमस सा रोड करोल बाग नई दिल्ली ११०००५

फोन ५८२०३६ ५७२९२२४

आयसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N. No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O on 2 3 2 89 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३६

(पृष्ठ १ का शेष)

कन्याओ के लिए पाठशालाएँ

देख रहे हैं। आज तो हमारे सनातन धर्मी भाइयो ने भी तथा अन्य धर्मावलम्बियों ने भी अपनी बच्चियो को पढाना शुरू कर दिया है। आज आप सब लोग जो इस विद्यालय मे एकत्रित हुए हैं यह सब उन्ही की कृपा से है। यह विचार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल न रतनदेवी आय कन्या सीनियर सेकेण्डरी स्कूल के वार्षिकोत्सव के अवसर पर व्यक्त किये। विद्यालय की बच्चियो ने अनेक मोहक सांस्कृतिक कायक्रमो के अतिरिक्त योग प्रदशन के कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये। श्री भगवत प्रसाद रुस्तगी श्री हरबंस अरोडा और श्री राज कुमार धवन ने विद्यालय की बच्चियो को अनेक प्रतियोगिताओ के लिए पुरस्कार प्रदान किये।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूयदेव ने विद्यालय की प्रधाना श्रीमती ईश्वर देवी धवन और मनेजर श्री नेतराम शर्मा को साधुवाद देते हुए कहा कि यहा की प्रधानाचार्या और सभी अध्यापिकाए इस सुन्दर कार्य क लिए बधाई की पात्र हैं। श्री नेतराम शर्मा ने विद्यालय की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए बताया कि १९५४ मे श्रीमती रतनदेवी द्वारा इस छोटे से विद्यालय की स्थापना हुई थी जो आपके सामने आज एक विशाल रूप ले चुका है। उन्होने बताया कि दिल्ली सभा के पूर्व अधिकारियो द्वारा कुछ कठिनाइयाँ पदा कर दी गयी थी जो श्री सूयदेव के सभा प्रधान व ने के बाद धीरे-धीरे समाप्त हुइ और आज जसा उल्लास का वातावरण बन सका है। उन्होने विद्यालय के सामने आने वाली कठिनाइयों का जिक्र किया तथा उपस्थित महानुभावो से अपेक्षा की कि वे समय समय पर अपना आर्थिक सहयोग तथा दिग्दशन देने के लिए विद्यालय में आते रहें।

इस विद्यालय के परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहे हैं तथा कक्षा १२ मे ४० और कक्षा १० मे १४४ डिस्टिंक्शन मिले है। इस विद्यालय की वालीबाल टीम पिछले कई वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करती रही है। धार्मिक परीक्षाओ में भी यहा की छात्राओ ने उच्च स्थान प्राप्त किये। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित आर्य युवा महासम्मेलन में अनेक पुरस्कार प्राप्त किये। कुमारी मोनिका कपूर को विज्ञान क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर शैक्षणिक तथा अन्य गतिविधियो के लिए बच्चियो पुरस्कृत किया गया। सभा प्रधान डा० धर्मपाल के हाथो सभी शिक्षिकाओ को भी प्रोत्साहन पुरस्कार दिये गये।

यह विद्यालय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सचालित संस्था है तथा आर्यसमाज के क्षेत्र मे विशेष कार्य कर रही है।

सेवा में—

'प्रकर'—वैशाख २०४२

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली न०१७ कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ अंक १४ | रविवार १२ फरवरी १९८९ | सृष्टि संवत १९७२९४९०८८ | माघ २०४५ | दयानन्दाब्द—१६४

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० डालर ३० पौंड

जम्मू के साम्प्रदायिक दंगे पूर्वनियोजित थे

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

जिस देश में प्रधानमंत्री के हत्यारों को शहीद घोषित किया जाता है उसका क्या होगा ?

अभी पिछले दिनो १३ जनवरी को जम्मू में गुरु पर्व पर हिन्दू सिखो मे भयंकर साम्प्रदायिक दंगे हुए। कई जान गयी कई दुकानें लुटी और फूकी गयी। करोडो की सम्पत्ति इस घटना मे समाप्त हुई।

इतनी बडी घटना पर हिन्दू संगठनो के नेताओ मे से केवल आर्य समाज के नेता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रो० बलराज मधोक के साथ हिन्दू सिखो में सद्भावना कायम करने के उद्देश्य से वहा गए। उनका यह प्रयत्न सराहनीय और समयानुकूल था। इन दोनो ने जम्मू के अनेक नगरो तथा प्रभावित क्षेत्रो का दौरा किया। पीडितो से मिले, विभिन्न समुदायो के प्रमुखों से बातचीत की यहां तक कि राज्यपाल जगमोहन और मुख्यमन्त्री डा० फारूक अब्दुल्ला से भी मिले।

जम्मू के घटनाचक्र पर परस्पर विरोधी दावे दिखाई दिए। प्रश्न उठता है कि यह दंगे क्यो और कैसे हुए। क्षेत्र के लोगों का कहना था कि यह पूर्वनिर्धारित योजना थी क्योंकि गुरु पर्व से एक सप्ताह पूर्व ही कुछ सिख दुकानदारो ने अपनी दुकानों का बीमा करा लिया था। इससे साफ जाहिर है कि उन्हें इस घटना की आशंका थी। दूसरी बात यह भी विशेष ध्यान देने योग्य थी कि १९८४ में प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद सतवन्त व केहरसिंह को दिल्ली मे पिछले दिनों ही फांसी दी गई थी। इसकी प्रतिक्रिया का ध्यान जम्मू-काश्मीर की सरकार को रखना चाहिए था। पता चला है कि जम्मू मे प्रशासन के अधिकारियो ने जब गुरु पर्व के जलूस की आज्ञा नहीं दी तो मुख्यमन्त्री फारूक अब्दुल्ला ने अपने विशेषाधिकार से अनुमति दे दी। जलूस निकाले जाने से पूर्व बाहर से देशद्रोही तत्त्व तथा आतंकवादी वहां पहुंच चुके थे जिस की शिकायत वहां के हिन्दू नेताओं ने प्रशासन को कर दी थी और यह भी बता दिया था कि परिस्थितियाँ गम्भीर हो सकती हैं।

किन्तु जलूस रुका नहीं। जलूस मे केहरसिंह व सतवन्त के बड़े बड़े फोटो लगाकर उन्हें शहीद घोषित किया गया। उनके सम्मान मे नारे लगाए जा रहे थे जबकि राष्ट्र तथा राष्ट्रीय नेताओ के विरुद्ध बड़ी तथा आपत्तिजनक नारेबाजी की गई थी। परिस्थिति खराब होने की संभावना देखकर हिन्दू नेता पुनः प्रशासन के अधिकारियो से मिले, जलूस के आयोजको से भी बातचीत की किन्तु परिणाम कुछ न निकला क्योंकि तब तक असामाजिक तत्त्व जलूस मे जोश भर चुके थे बदले की भावना से सिखो को उत्तेजित कर चुके थे। इतने में जलूस में से ही आतंकवादियों ने पुरानी मण्डी के खोखों में आग लगा दी। जलूस तथा दर्शक जनता मे भगदड मच गई। कुछ लोगों ने ईंट पत्थर भी चलाए। देखते ही देखते भयंकर मारकाट, लूटपाट व आगजनी का ताण्डव छा गया। असामाजिक तत्त्व पहले से ही जलूस मे आगजनी का सामान लेकर सम्मिलित थे इसलिए इसमे देर नहीं लगी। पुलिस घटना को देखती रही दमकल घण्टा देर से पहुंची तब तक सब साफ हो चुका था।

मुख्यमन्त्री फारूक अब्दुल्ला का यह कहना कि जम्मू में शिवसेना का गठन शासन को हानि करने और भारतीय जनता पार्टी को कमजोर करने के उद्देश्य से किया गया है। वह इस को तो मानते हैं कि जलूस में बाहर के तत्त्व सम्मिलित थे जिन्होने गडबडी कराई परन्तु उनमें से किसी को पकडने व गिरफ्तार करने की पुष्टि नहीं करते। उनके द्वारा केवल शिवसेना के लोगो पर दोष लगाना अथवा उन्हें गिरफ्तार करके लद्दाख की बर्फीली जेलों में मरने के लिए डालने की धमकी—फारूक अब्दुल्ला और उनकी सरकार की नियत पर एक प्रश्नचिह्न लगाता है। इससे यह संशय पैदा होना स्वाभाविक है कि वह जम्मू क्षेत्र के हिन्दुओं से अप्रत्यक्ष रूप से बदला लेकर उन की शक्ति को समाप्त करके अपनी धार्मिक कट्टरता से कश्मीर के उन मुसलमानो को खुश करना चाहते हैं जो उन के विरोधी हैं। अब्दुल्ला जी ने प्रत्यक्ष मे न सही लेकिन परोक्ष मे इन दंगो से जन धन की क्षति रोकने के बजाय अपने दूरगामी उद्देश्य के लिए कुछ सफलता तो प्राप्त कर ही ली है।

जम्मू मे फारूक अब्दुल्ला का रुख देख लिया। अब श्रीनगर की ओर चलें जहां अनेक क्षेत्रो मे राष्ट्रविरोधी व अलगाववादी तत्त्व खुले आम राष्ट्रविरोधी हरकतो मे मशगूल है। वे राष्ट्रीय ध्वज तथा हिन्दुओं का अपमान ही नहीं करते बल्कि पाकिस्तान समर्थक नारे लगाते हैं भारतीय संविधान को जलाते हैं। किन्तु फारूक साहब इनके प्रति कुछ नहीं बोलते हैं। भारत सरकार जम्मू काश्मीर को विशेष दर्जा दिए हुए हैं किन्तु उसकी कीमत किस प्रकार चुकाई जा रही है।

यह कहने में कोई शंका नहीं रह जाती कि जम्मू के वर्तमान दंगे मुख्यमन्त्री और उनकी सरकार की उदासीनता के कारण ही हुए हैं चाहे इसके पीछे शिवसेना को दोष दें या डण्डे के बल पर अपनी इच्छा पूरी करें। इन सारी घटनाओ पर विचार करने से भारत सरकार भी इसके लिए दोषी है। क्योंकि सरकार सब जानती है नेता भी सब कुछ जानते हैं और समझते हैं। फिर प्रश्न उठता है कि जो लोग राष्ट्रविरोधी हरकतो से बाज नहीं आते राष्ट्र के ध्वज का अपमान करते हैं दूसरो के धार्मिक स्थलो की तोडफोड करते हैं संविधान को जलाते हैं उनको कडा दण्ड क्यो नहीं देती। सरकार का यह मुख्य कर्तव्य है।

आजादी की लडाई भारत के हर नागरिक ने लडी थी। उस समय यदि अंग्रेजी राज्य का झण्डा उतार या फाड दिया गया था तो वह राष्ट्रीय भावना व आजादी की इच्छा का प्रतीक था किन्तु आज

(शेष पृष्ठ ५ पर)

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

य शास्त्रविधिमुत्सृज्य, वर्तते कामकारत ।
न स सिद्धिमवाप्नोति, न सुख न परा गतिम ॥

—गीता १६ २३

जन्म दिन से ही बालक के लिए साधनो की आवश्यकता को न केवल आर्य ऋषियो ने ही अनुभव किया है बल्कि ससार के सब विद्वानो ने सस्कारो की महात्ता के आगे सिर झुकाया है। जो मनुष्य साधन सम्पन्न नहीं है वह जीवन के उच्च आदर्श की तरफ एक कदम भी आगे नहीं बढ सकता। दुखो से छूटकर शात अवस्था को प्राप्त करना मनुष्य-जीवन का परम उद्देश्य है। किन्तु दुखों से मनुष्य कैसे छूट कैसे सकता है जब तक की सुख-प्राप्ति के साधनो का उसे ज्ञान न हो? इसलिए कृष्ण भगवान् ने सिद्धि सुख और मुक्ति को क्रम से वर्णन किया है। किन्तु सिद्धि के लिए साधनो की आवश्यकता है। उन साधनो की वास्तविकता मनुष्य कहा से जाने? इसी बीसवीं शताब्दी के विद्वान नौजवान अपने दिमाग से निकले हुए विचारो के समर्थन को ही प्रकृति का समर्थन समझते हैं, किन्तु इन नवयुवको पर ही क्या निर्भर है? इस समय, प्रत्येक देश, प्रत्येक सम्प्रदाय के अनुभवशून्य नवयुवक इसी तरह अपनी बुद्धि पर निर्भर करना ही सिद्धि का साधन समझा करते हैं और जब तक कि ससार के अन्दर सच्ची शिक्षा का अभाव है तब तक बराबर इसी तरह समझा करेगे। अशिक्षित आत्मा साधनों की आवश्यकता को समझ नहीं सकता क्योकि जब उसे सुख के स्वरूप का ही ज्ञान नही है तो वह सुख के साधनो का सच्चा चित्र अपने लिए कब खीच सकता है? इसलिए मनु भगवान ने धर्मशास्त्र का उपदेश देते हुए बतलाया है कि मुक्ति के साधनो के जानने का सबसे छोटा साधन मनुष्य का अपना आत्मा है। जीवात्मा की हालत ठीक दर्पण की तरह है। जिस कदर एक शीशा अधिक साफ किया जावे उसी कदर सफाई के साथ वस्तुओ का प्रतिबिम्ब उसके अन्दर पडता है, और उसी कदर सचाई के साथ उन चीजो की बाह्य स्थिति देखने वालो के लिए प्रकट कर सकता है। परन्तु यदि शीशे पर मेल व मिट्टी आदि से उसका रूप धुधला पड जाय तो उसके अन्दर वस्तुओं का प्रतिबिम्ब बिल्कुल उलटा पडेगा। इसी तरह जो जीवात्मा अशक्त है, बिगडते बिगडते अविद्या का बिल्कुल शिकार हो जाता है, उसके लिए उसका अपना प्रकाश कुछ भी मार्गप्रदर्शक का काम नहीं कर सकता। यदि उसकी शिक्षा ठीक हो तो वह केवल ठीक रास्ते का पता लगाने वाला बन जाता है। आगे चलने के लिए उसे फिर दूसरे पवित्र आत्माओ से शिक्षा लेने की आवश्यकता पडती है। किन्तु दूसरे पवित्र आत्मा भी एक निश्चित सीमा तक मार्गप्रदर्शन कर सकते हैं। कभी-कभी ईर्ष्या या द्वेष मे फस कर सदाचारी पुरुषो का आचार भी धोखा देने वाला सिद्ध होता है, तब शास्त्र के मार्ग दिखाने की आवश्यकता होती है। जब कि बड-बड आत्मा भी सवज्ञ नही, इसलिए उनकी लिखी हुई शिक्षाए (जो उनके बनाए शास्त्रों मे लिखी हैं) भी पूरा पूरा मार्गप्रदर्शक का काम नहीं दे सकतीं। तब पूर्ण शास्त्र की ढूढ होती है और वह परमेश्वर का निर्भ्रान्त और अनन्त ज्ञान है। हे मनुष्य! उस अनन्त और निर्भ्रान्त ज्ञान को ढूढकर और उसे पाकर उसमे बयान की हुई बुद्धि के साचे मे अपने जीवन को ढाल। फिर तेरे लिए मुक्ति का मार्ग बिल्कुल सुगम हो जायेगा। वह पूर्ण शास्त्र कहा है और उस वेद ईश्वरीय ज्ञान को कहा खोज करे? यह प्रश्न किस मनुष्य के हृदय मे कभी न कभी नही उठता? इसका उत्तर देने का भी प्रत्येक मनुष्य ने किसी न किसी समय यत्न किया है। यह प्रश्न जसे मनु भगवान् के समय नवीन था, वैसा अब भी है। जब तक इस प्रश्न का ठीक उत्तर नहीं मिलता तब तक मनुष्य का हृदय डावाडोल ही रहता है। जगत्पिता अपनी कृपा से हम सब के हृदयो को हिला देवे जिससे हम उनके सच्चे ज्ञान को ढूढ कर के अपने जीवन को सिद्धि के लिए सच्चे साधन जानकर सच्चा शान्ति की ओर पग उठाए।

शब्दार्थ—(य) जो मनुष्य (शास्त्रविधिम) शास्त्र की विधि को आदेश को (उत्सृज्य) छोडकर (कामकारत वर्तते) अपनी इच्छानुकूल आचरण करता है, (स सिद्धि न अवाप्नोति) वह न तो सिद्धि को, सफलता को प्राप्त कर सकता है (न सुखम) न सुख को (न परा गतिम) और न मुक्ति को प्राप्त कर सकता है।

सम्पादक के नाम पाठकों के पत्र—

महोदय

आपका सम्पादकीय (५ फरवरी १९८९) अत्यन्त सशक्त, तर्कपूर्ण और प्रभावी भाषा मे लिखा गया है। आपके सम्पादकीय ने गुलामी के उन दिनों को याद ताजा कर दो जब भारतीय भाषाओ के पत्रकार अपनी जान को हथेली पर रखकर निर्भय होकर अग्रजो सत्ता के विरोध मे अपनी लेखनी चलाया करते थे। पुष्पेन्द्र चौहान के नेतृत्व मे चलाए गए सघ लोक सेवा आयोग के सामने सत्याग्रह के समर्थन मे तो आपका पत्र मानो उनका मुख पत्र बन गया है। हमें पूरा विश्वास है कि आगे भी आप अपनी लेखनी का चमत्कार दिखाते रहेंगे। हिन्दी माता रूपी गाय को चाहे गोरा कसाई काटे अथवा काला कसाई और वह चाहे विदेशी छुरी से काटी जाए अथवा स्वदेशी छुरी से उसमे कोई अन्तर नही पडता। कोई तर्क करे कि अब तुझे स्वदेशी कसाई अथवा स्वदेशी छुरी से काटा जा रहा है तो वह बेचारी क्या उत्तर दे? आशा है इन नौजवानों का सघर्ष बेकार नही जाएगा और मेंकाले, ब्रिटिश काउन्सिल तथा चार्ल्स ट्राउटन के दलालो को जिन्होने सत्ता के सभी ऊंचे पदो को हथियाया हुआ है, ये नौजवान जड से उखाड फकेगे अथवा उनको देश की चिन्तन धारा के साथ चलने को मजबूर कर देगे। धिक्कार है उन अग्रजी के पत्रकारो को जिन्होने इस आन्दोलन के पक्ष में सम्पादकीय तो क्या, समाचार तक प्रकाशित नही किए। धिक्कार है उन धर्म के ठेकेदारो को भी जिन्होने महर्षि दयानन्द, गुरु नानक सन्त तुलसीदास और महात्मा हसराज सरीखे हिन्दी के अग्रदूतों के नाम पर अग्रजी माध्यम के स्कूल (दुकान) चलाकर उनके पवित्र नामो पर काले रोगन की कची पोती है। उनके विरुद्ध भी ऐसी ही लडाई छडी जानी आवश्यक है।

—जगन्नाथ
ए-१६, रोहित कुज,
डा० रानी बाग,
दिल्ली-११००३४

दयानन्द गुणगान करो हे!

दयानन्द-गुणगान करो हे!
नव प्रभात-सा जीवनदायो जिसका पावन पुण्य नाम है
देशभक्ति, दाक्षिण्य, दया, दम, दूरदृष्टि का दिव्य धाम है
त्याग-तितिक्षा तप प्रतीक है कर्मठता-प्रेरक प्रकाम है,
उस ऋषिवर की सुयश चन्द्रिका से मन को अम्लान करो हे!
वही एक जिससे तूफानों मे भी दीपक जलने लगते,
निष्क्रिय मन मे नवोत्साह के शत शत उत्स उछलने लगते,
पतित अयोमय जिस पारस से स्वर्णिम छवि मे ढलने लगते,
उसके सुवचित सुधा-सीकरो से निज को सप्राण करो हे!
रूढि भित्तियाँ जिसके पथ में पग-पग पर थीं पर मडरायी,
दुरभिसन्धि विद्वेष-दुराग्रह गिरि पवित ये शीश उठाये,
रुका रच भी जो न किन्तु था देख ध्वस घन भी घहराये,
उस निर्धूम-यज्ञ-हुतभुक का मन में आह्वान करो हे!
पाहन, लकुट, गरल गाली ले सुधा-सिन्धु उपजाने वाला,
गहन तिमिर से ग्रस्त मनुजता को आलोक दिखाने वाला,
विश्व-बन्धुता के दुनिया को वैदिक सूत्र सिखाने वाला,
था विभूति वह विरल, निदेशो का उसके सम्मान करो हे!
वेद और ईश्वर के लेकर बिखरा जो आधार अनोखे,
विद्वद्वृन्द निखिल का जिसकी सह न सका प्रतिभा के झोके,
खोल दिये वेदों के जिसने मानवता के लिए झरोखे,
उस मुनिवर का दिया हुआ इसी के पथ से जग को त्राण करो हे!
दयानन्द-गुणगान करो हे!

—धर्मवीर कुमार शास्त्री
B I/५१ पश्चिम विहार, नई दिल्ली-६३

ओ३म्
आर्य सन्देश

सम्पादक की कलम से

महर्षि दयानन्द सरस्वती : प्रखर राष्ट्रवाद के प्रवक्ता

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिन पिछले कुछ ही वर्षों से मनाना शुरू किया गया है। पहले क्यो नहीं मनाया जाता था इसका तो पता नही। सार्वदेशिक सभा की धर्मार्य सभा के निर्णयानुसार महर्षि का जन्म-दिन १२ फरवरी को पड़ता है। कुछ लोग सम्भवत इस सम्बन्ध में आश्वस्त नहीं हैं। पर यह बात स्पष्ट है कि सार्वदेशिक सभा की ओर से प्रचारित और अभिलेखित जन्मदिन १२ फरवरी को है। इस दिन हरियाणा प्रान्त में, और महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में और सम्बन्धित संस्थाओ में सार्वजनिक अवकाश भी होता है।

हम किसी महापुरुष से सम्बन्धित दिवस समारोह क्यो मनाते हैं? इसका एक स्पष्ट उत्तर है ताकि हम उन्हें याद कर सकें, उनके द्वारा किए गए कार्यो को आगे बढ़ा सकें तथा अपने व्रत को दुहरा सकें। महर्षि दयानन्द के ग्रन्थो का अवगाहन करने वाला व्यक्ति अपने आपको जीवन के किसी भी क्षण में असहाय या असमर्थ महसूस नही करता। सत्यार्थप्रकाश में उन सब अवस्थाओं के लिए समाधान मौजूद हैं जब वह किंकर्तव्य-विमूढ हो जाता है। एक सामान्य सी बात है कि यदि किसी की नौकरी में रहते निधन हो जाए, तो उसके भरण पोषण की क्या व्यवस्था हो। आप को यह जानकर सुखद अनुभूति होगी कि इस विषय का विवेचन और प्रतिपादन भी सत्यार्थप्रकाश में प्राप्य है। आज बड़ा शोर मचाया जा रहा है, पर्यावरण का। महर्षि दयानन्द की गोकरुणानिधि पढ लीजिए। पिछले दिन विश्वनागरिकता की बात चली। भारतीय दर्शन तो विश्व की एकता के विचारो से ओतप्रोत है— 'यत्र विश्व भवति एकनीडम्', 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम', 'वसुधैव कुटुम्बकम'। ये वाक्य विश्व-एकता विश्व नागरिकता की भावना का ही प्रतिपादन करते हैं। पुन सत्यार्थप्रकाश के पन्ने खोलिए। आपको वहा पर 'विश्व राज्य' की परिकल्पना मिलेगी। अद्भुत था वह मनस्वी ऋषि, योद्धा ऋषि, अजेय ऋषि।

महर्षि दयानन्द सरस्वती को हम केवल धार्मिक और सांस्कृतिक जागरण तक ही सीमित नही कर सकते। उनका राष्ट्रवाद प्रखर था। वे राष्ट्रवाद के पुरोधा थे। 'स्वराज्य' शब्द देने वाले वे ही पहले व्यक्ति थे। महर्षि ने अपने ग्रन्थो में गौरवपूर्ण अतीत की व्याख्या सोद्देश्य की थी। वे चाहते थे इस देश मे कृष्ण जैसे महाबली होते। वास्तव में वे इस देश-वासियो के अन्तस्तल में क्रान्ति का सचार करना चाहते थे। उन्ही के द्वारा प्रदत्त नवचेतना के परिणामस्वरूप, उस समय चारो ओर जागृति की लहर व्याप्त थी। उन्ही के आह्वान पर चारो ओर से धार्मिक एव सांस्कृतिक घुसपैठ का विरोध शुरू हुआ था। सभी ने मिलकर अराष्ट्रीयता के विरुद्ध घोर सघर्ष का महाभियान छेड़ा था।

उस समय स्वराज्य की बात करना, मृत्यु को निमन्त्रण देना था। परन्तु महर्षि का उद्घोष था—"कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मतमतान्तर के आग्रह-रहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा न्याय और दया के साथ विदेशियो का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नही है।" महारानी का विज्ञप्ति का खण्डन करने वाला दयानन्द ही था। हेनरी केम्पबेल से उसने साफ कहा था—सुराज्य, स्वराज्य का स्थानापन्न नही हो सकता।

महर्षि दयानन्द के चिन्तन प्रखर राष्ट्रीयता के द्योतक हैं। ये शब्द राजनीति शास्त्र में महर्षि दयानन्द के नाम से नहीं, बल्कि ब्रिटेन के सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ जॉन स्टुअर्ट मिल के नाम से पढाए जाते हैं, जबकि इन शब्दो के आदि प्रणेता वही थे।

श्रीमती एनी बेसेन्ट ने उन्हें भारतीयो के लिए स्वतन्त्रता का प्रथम उद्घोषक' लोकमान्य बाल गगाधर तिलक ने उन्हें 'स्वाधीनता का प्रथम सदेशवाहक' और रोम्या रोला ने उन्हें पुनर्जागरण का अग्रदूत' माना था।

महर्षि दयानन्द का स्मरण करते हुए, भारत के राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा था कि हमारे सविधान की प्रेरणा हमे उन्हीं के ग्रथो से मिली थी। हमारा कर्त्तव्य है कि इस राष्ट्रीय भावना को अक्षुण्ण बनाए रखें।

स्वामी दयानन्द युग-प्रवर्त्तक थे

—स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी

अनन्त और परिमित काल का जब सगम होता है, कहा जाता है कि तब तब महापुरुषो का जन्म होता है।

हमारा सौभाग्य है कि भारत ने बहुत से ऐसे महापुरुषो को जन्म दिया, जिन्होंने समय पर अपनी अमिट छाप छोडी और जिनका सन्देश अमर है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती तेजस्वी और आध्यात्मिक तो थे ही, साथ ही वे एक युग-प्रवर्तक और समाज सुधारक भी थे।

श्री अरविन्द ने उनके बारे में कहा कि उनकी आत्मा मे ईश्वर था, उनके नेत्रों मे दूर-दृष्टि और उनके हाथो में शक्ति थी। वे प्रकाश के अग्र-दूत और मानव-शिल्पी थे।

स्वामी दयानन्द राजनीतिक तथा मानसिक गुलामी के विरुद्ध थे। उनका सन्देश था स्वतन्त्रता—न केवल राजनीतिक स्वतन्त्रता बल्कि अन्ध-विश्वास, रूढिवाद तथा वर्गभेद से स्वतन्त्रता। उन्होंने कहा— ससार अन्धविश्वास और अज्ञान की बेडियो में जकडा हुआ है। मैं उन्ही बेडियो को तोडने और लोगो को दासता से मुक्ति दिलाने के लिए आया हूँ। लोगो को उनकी स्वाधीनता से वचित रखना मेरे उद्देश्य के सर्वथा विपरीत है।'

मनुष्य की समानता में उनका गहरा विश्वास था। उन्होंने कहा— 'सभी मनुष्य जन्म से और प्रभु की दृष्टि मे समान हैं। इस समानता में रग और देश से कोई अन्तर नही पडता।'

स्वामी जी का ध्यान हमेशा उन लोगो की ओर लगा रहता था, जो दुख दारिद्र्य और अन्धकार से घिरे थे। उन्होने अपने लिए मुक्ति नही चाही। वे कहते थे—'यदि मैं अकेला ही मोक्ष प्राप्त कर लूं तो उससे क्या लाभ है? मेरी हार्दिक इच्छा है कि सारी मनुष्य जाति मुक्त प्राप्त करे।'

भारत के लोगो से उनका आग्रह था कि जाति पाति के अभिशाप से छुटकारा पाय और अस्पृश्यता छोड।

महात्मा गाधी के विचार में स्वामी जी द्वारा छुआछूत का विरोध और निन्दा उनकी महान् विरासत है।

उन्होंने स्त्रियो की समानता तथा शिक्षा व सामाजिक उत्तरदायित्वो के अधिकार के लिए भी सघर्ष किया।

फ्रासीसी विद्वान् रोम्या रोला ने उन्हें कर्मचिन्तक' कहा है। उनका जीवन शकराचार्य के इस सूत्र का एक दृष्टान्त है कि कर्म के बिना ज्ञान निरर्थक है।

कभी-कभी यह गलत समझा जाता है कि स्वामी दयानन्द ने केवल हिन्दू धर्म के बारे मे सोचा। उन्होंने हिन्दू धर्म को अन्धविश्वास के चगुल से अवश्य निकालना चाहा, लेकिन किसी दूसरे धर्म के प्रति अनुदारता नही दिखाई।

उनका एक उत्तम विचार है—'यदि आप भगवान् मे विश्वास करते

(शेष पृष्ठ ७ पर)

वसन्त पचमी के अवसर पर—

क्या कभी हमारे जीवन में भी वसन्त खिलेगा ?

लेखक—चमनलाल

प्रभु ने मानव को बड़ी सुन्दर देह दी है। यह मानव शरीर सृष्टि-कर्ता की सर्वश्रेष्ठ कृति है। ऐतरे योपनिषद में आया है— तास्य पुरुषमानयत ता अब्रुवन, सुकृत बतेति पुरुषो वा सुकृतो। महाभारत-कार महर्षि व्यास जी भी कहते हैं इय हि योनि प्रथमा या प्राप्य जगतीपते आत्मा वै शक्यते त्रातु कर्मभि शुभलक्षणै। अर्थात यह मनुष्य योनि ही श्रेष्ठ है क्योंकि इसको पाकर मनुष्य अपने शुभ कर्मों द्वारा आत्मविकास करने में समर्थ है। महाभारत के अन्तर्गत हसगीत मे भी महर्षि व्यास जी ने कहा है— न मानुषात श्रेष्ठ तर हि किञ्चित परन्तु यही सुन्दर अमूल्य वान वस्तु जिसे मनुष्य कठोर से कठोर विपत्ति और विकट से विकट परिस्थिति मे भयकर से भयकर विघ्न बाधाओ के आने पर भी छोड़ना नही चाहता परन्तु यही अमूल्यवान् वस्तु इसके दुख का कारण बनकर रह जाती है यदि यह बहुत समय तक एक जैसी परि स्थिति मे रहे।

परन्तु प्रभु बड़े दयालु हैं। उन्होंने अपना सारा ऐश्वर्य जीवन के लिए ही अर्पित किया हुआ है उन्होंने अपने लिए कुछ भी नहीं रख छोड़ा। जीने के लिए ही उसने नानाविध भोग्य सामग्री और उत्तम-उत्तम आकर्षक पदार्थो की रचना की है। इसी सन्दर्भ मे ऋतुओ के विभाजन का भी एक बड़ा भारी महत्व है। मनुष्य जीवन को सरस बनाने और इसमे माधुर्य भरने के निमित्त कुछ परिवर्तन चाहता है। इसके लिए भगवान ने बड़ी कृपा कर के इस आर्यावर्त देश मे वातावरण मे परि-वर्तन हेतु नाना प्रकार की भिन्न-भिन्न भाति की छह ऋतुओ की रचना की है। समूचे ससार मे किसी भी अन्य देश मे इतनी अधिक ऋतुएं नही होती। किसी किसी देश मे एक एक और किन्हीं मे दो से अधिक ऋतुए नहीं होती। इनका वर्णन महाकवि कालिदास आदि ने अपने ऋतुसहार आदि ग्रन्थों मे बड़े सुन्दर ढग से किया है। हमारे देश की काल-विभाजन पद्धति मे प्रयोग की दृष्टि से काल का रूप वर्ष है। हमारे धर्मग्रन्थो में वर्ष मे दो अयनों (उत्तरायण, दक्षिणायन) की चर्चा की गई है। और प्रत्येक अयन मे दो-दो मास की तीन-तीन ऋतुए बताई गई हैं। इस प्रकार वर्ष भर में यहाँ ६ ऋतुओ का व्यवहार किया जाता है और वास्तव में यहाँ होती भी ये छह ऋतुएँ हैं। हर ऋतु पलट पलटकर अपने करतब दिखा-कर चली जाती है जिससे जीवन में सदा ही माधुर्य भरा रहता है हमारे पुराणो में वसन्त ऋतु का कुछ इस प्रकार वर्णन है—

'यत्पुरुषेण हविषा
देवायज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्य
ग्रीष्म इध्म शरद्धवि ॥

सवत्सर या वर्ष रूप यज्ञ मे सर्वप्रथम वसन्त को आज्य(घी) कहा गया है। अर्थात देवों ने जिस सवत्सर रूपी पुरुष का हवि बनाकर यज्ञ का वितान किया था वसन्त उसका घृत था, ग्रीष्म समिधा और शरद हवि थी। यह ऋतु सर्वप्रथम होने के साथ सर्वश्रेष्ठ भी है। कुमार-सम्भव नामक काव्य में वसन्त— पुष्पाभरणं वहन्त्या' इत्यादि से वसन्त ऋतु के अवतरण के बाद ही काम-देव के द्वारा वामदेव (भगवान् शकर) पर आक्रमण करने का उपक्रम लिखा है।

यह ऋतु पृथक त्यौहार है जिसको भारत के लोग चिरकाल से बड़े उल्लास और आमोद प्रमोद के साथ मनाते चले आ रहे हैं। यह प्रतिवर्ष माघ शुक्ला पचमी को शीतकाल की समाप्ति पर होली पर्व से ठीक चालीस दिन पहले आता है। वेद में इन ऋतुओ का क्रम इस प्रकार है—

ग्रीष्माकाले भूमे वर्षाणि।
शरद्धमन्त शिशिरो वसन्त ।

अत सर्वश्रेष्ठ होने के कारण इसे ऋतुराज भी कहा जाता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह ऋतु सर्वोत्तम मानी जाती है। आयुर्वेदा-चार्य चरक ऋषि ने आयुर्वेद मे लिखा भी है—'वसन्ते भ्रमण पथ्यम्' अर्थात् वसन्त के मौसम मे बाहर भ्रमण करना, घूमना, सैर इत्यादि करना अत्यन्त लाभदायक और स्वास्थ्यवर्धक है। इस जीवनदायिनी ऋतु की रमणीयता और सुन्दरता को इन शब्दों मे कहा है।

"वसन्त इन्नु रन्त्य"

अर्थात वसन्त ऋतु अति सुन्दर रमणीय और मोहक है। अत हर्ष और उल्लास का सन्देश लाने वाली यह ऋतु जड़ चेतन—सारे जगत को नवजीवन से भर देती है। जैसे प्रात सूर्य भगवान के उदय होने पर रात्रि का तामस अन्धकार छाई भाई हो जाता है और चोर उचक्के अपने गुप्त स्थानो को भागने लगते हैं ठीक इसी प्रकार वसन्त ऋतु के आगमन पर शरद ऋतु की कठोरता समाप्त होने लगता है। और मानो प्रकृति देवी एक रङ्ग-बिरङ्गी सुन्दर चुनरी ओढ कर एक सुन्दर नव-विवाहित युवती की तरह उल्लास और उमगो से भरी नृत्य करती हुई प्रतीत होती है। पतझड़—शिशिर ने जब अपने प्रकोप से वृक्षो पेड़ो के पत्तो को सुखा कर धरती पर गिरा दिया था अब वसन्त ने अपनी उदारता से उन सब को नवजीवन देकर पुन हरा भरा कर दिया है। इसके फलस्वरूप कोमल सुन्दर नन्हीं नन्हीं मोहक मुलायम पत्तियो से लदी वृक्षो की टहनिया और लताए कैसी सुहावनी लगने लगती हैं। प्रकृति मे चहु ओर नया वाता-वरण और उल्लास भरा जीवन दिखाई देता है जिधर भी दृष्टिपात करो, हरियाली ही हरियाली दिखाई देती है कहीं-कहीं तो दूर तक दृष्टि दौड़ाने पर प्रतीत होता है। जैसे हरी हरी मुलायम मखमल का फर्श बिछा हो। सरसो के पीले बसन्ती रग के फूलो से भरे खेत अपनी ही निराली आभा बिखेरते दिखाई देते हैं। आम के पेड़ों पर नया बौर आने लगता है। बगीचो और गृह-वाटि-काओं से तरह तरह के रग बिरगे फूल खिलने लगते हैं, जो अपनी मीठी मीठी भीनी भीनी सुगन्ध से सारे वातावरण को महका देते हैं। भौरे इनका रस लेने हेतु इन पर मडराते हुए बड़े अच्छे लगते हैं। मधु-मक्खियां के झुड के झुड फूलो से शहद एकत्र करना आरम्भ कर देते हैं। बागो में कोयल पक्षी चहकने लगता है, मानो वह भी अपनी बोली में वसन्त देवी का स्वागत गीत गा रहा हो, इसीलिए तो पाश्चात्य देशो के बड़े-बड़े कवियों ने कोयल पक्षी को बसन्त का दूत कहकर पुकारा है—हारबिंजर आफ स्प्रिंग' शीतल समीर मन्द मन्द बहता हुआ जब शरीर को स्पर्श करता है तो मानो शरीर मे एक नई स्फूर्ति का सचार हो जाता है। इतना ही नही छोटे-छोटे सुन्दर पक्षी जो शीत के कारण वसन्त के आगमन से पूर्व कहीं अज्ञात स्थान में मुह छिपाए बैठे थे, इस जीवनदायिनी सुहावनी ऋतु के आन पर अपनी मधुर वाणी मे इस ऋतु-राज का स्वागत कर के अपने अपने पुराने स्थानो को उड़ जाते हैं। इस ऋतुराज के अदभुत दृश्यो को देखकर मानव भी भला क्यो न प्रभावित हो। अपने इद गिर्द भव्य, मोहक सुन्दर प्राकृतिक दृश्यो को देखकर यह भी मस्ती में भरा झूमने लगता है और अपने भीतर एक नये जीवन और चेतना का सचार अनु-भव करने लगता है। महीनो का पड़ा रोगी मनुष्य भी इस मौसम मे एक बार तो अपूर्व स्फूर्ति अनुभव कर के मस्त हो जाता है और अपनी पीड़ा और रोग को भुला बैठता है। ऐसा सुन्दर प्रेरणा-दायक वातावरण उपस्थित होने पर सभी छोटे-बड़े बड़े उल्लास के साथ इस पर्व को मनाते हैं। कहीं-कहीं लोग इन दिनो में नाच गाने रासलीलाओ तथा स्वागो का आयो-जन कर के अपनी मानसिक प्रस-न्नता का प्रदर्शन करते हैं। गुजरात, हरियाणा तथा कुछ अन्य प्रदेशो में इस दिन बाल वृद्ध पतग उड़ाकर अपनी खुशी का इजहार करते हैं।

कुछ विचित्र ही सी बात प्रतीत होता है कि कालान्तर में इस देश के निवासियो के ऋतुपरक तथा प्रकृतिक त्यौहारो के साथ किसी न किसी सस्कारी व्यक्ति विशेष के जीवन की घटना का सम्बन्ध हो गया होता है। उदाहरण के तौर पर शिवरात्रि के साथ ऋषि दयानद के बोध की घटना, होली के साथ भक्त प्रह्लाद की घटना, दीपावली के साथ महर्षि बलिदान, निर्वाण, स्वामी रामतीर्थ की जीवित जल-समाधि और जैनियो के महावीर स्वामी के निर्वाण की घटना इत्यादि। ठीक इसी प्रकार इस प्रेरणादायक वसन्त पर्व के साथ गत तीन-चार सौ वर्षों से आर्यवीर बालक हकीकत के बलिदान की रोमाचकारी घटना भी जुड़ गई है। इसी दिन मुगल बादशाह जहाँ-गीर के समय में धर्मान्ध मौलवियो तथा मुल्लाओं के अन्यायपूर्ण अमानु-षिक फतवों (आदेशों) का शिकार

क्या कभी हमारे जीवन में भी…

ही एक चौदह वर्षीय अपने बालक माता-पिता की एकमात्र आशा और जीवन का सहारा और एक युवती का सुहाग अपने धर्म प्यारे वैदिक धर्म की रक्षा हेतु अपने प्राणों की बलि करना श्रेयस्कर समझा। इस वार बालक हकीकत ने हसते हसते जल्लादों की तलवार के आगे अपनी गर्दन यह कहते हुए झुका दी— 'काट सकते हो तो बाहर का हकीकत काटो, काट सकती असल हकीकत को यह तलवार नहीं।'

इस बलिदान की याद मे शाह-आलम बाग लाहौर मे प्रतिवर्ष इस दिन बड़ा भारी मेला लगता रहा देश के विभाजन तक। उसके पश्चात् कुछ वर्षों से नई दिल्ली मे हिन्दू महासभा के विशाल प्रागण मे यह मेला लगता है। जहा भाव भरी श्रद्धाजलिया उस वीर सपूत को दी जाती हैं।

यद्यपि ऋतु अनुकूल हैं तथापि इस देश के निवासियों के जीवन मे तो शरत पतझड की खुश्क हवाए चल रही हैं। किसी के चेहरे पर वसन्त की बहार की झलक दिखाई तक नहीं देती। घह घोर मायूसी और अशान्ति का आलम है। ऐसी दशा स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व के समय मे विदेशी सत्ता के शासन-काल मे तो समझ मे आ सकती थी परन्तु बड़े ही आश्चर्य की बात है कि स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् भी पहले से भी अधिक मायूसी क्यों? गम्भीरतापूर्वक विचार करने पर पता चलता है कि देश का अच्छे ऋषि कोटि के तपस्वी दीक्षावान् और आत्म सन्तुष्ट नेता नहीं मिल। सब कुछ होते हुए भी अभाव ही अभाव दिखाई देते हैं। कोई भी जीवनोपयोगी सामग्री उचित दामों पर सुलभ नहीं है। सारा देश भ्रष्टाचार आचार हीनता, अनु शासनहीनता, अराजकता, अनैतिकता राष्ट्रविरोधी तत्वों से ग्रस्त है। बड़े-बड़े अधिकारी लोग चन्द नोटों के प्रलोभन मे फसकर राष्ट्र के गुप्त भेद विदेशियो को देने मे जरा भी नहीं लजाते। असम, कश्मीर पजाब आदि प्रान्तो की बड़ी शोचनीय स्थिति है। हर रोज कितने ही बेगुनाह लोग मौत के घाट उतार दिये जाते हैं। नेताओं और शासनाधिकारियो के आपसी निराधार झगड़े जनता की चिन्ता का विषय बने हुए हैं। भाषा प्रान्तीयता हरिजनो तथा अछूतो की समस्याए वैसे ही विकट रूप धारण किए हुए हैं। अत ऐसी अन्धकार-मयी अवस्था मे भला क्या कोई वसन्त की बहारो का मजा, आनन्द ले। सभी मायूस, हताश और खोये खोये से दिखाई देते हैं। किसी उर्दू के शायर ने क्या सुन्दर कहा है—

न छेड़ ए ! न कहते
वादे बहारो राह लग अपनी।
तुझे अठखेलिया सूझे हैं,
हम बेजार बैठे हैं॥

ऐसी विकट स्थिति में कुछ सुधार की स्थिति मे कुछ सुधार की आशा तब ही सम्भव हो सकती है जब देश का प्रत्येक व्यक्ति सरकारी कर्मचारी व्यापारी वर्ग उद्योगपति और विशेषकर तथाकथित पदलोलुप नेताओं की अपार सेना देश के हितो को सर्वोपरि दृष्टि मे रख कर और दृढ़ व्रत लेकर कुछ करने को तैयार हो। इसके लिए इन सब को सर्व-प्रथम अपने जीवन मे नैतिकता और सदाचार को प्रथम स्थान देना होगा। सतीस वर्ष बीतने पर भी हम 'स्वराज्य को 'सुराज्य' न बना पाए। अत भगवान् से यही कामना करते हैं कि—

"इस बार खुदाया
वसन्त ऐसा खिले।
कि गुलदस्त-ए सुराज्य
हमको मिले॥

अद्भुत और अनुपम व्यक्तित्व

कोई भी यह सोचने को बाध्य होगा कि इस व्यक्ति के जीवन मे विचित्र आकर्षण था। आधुनिक मानव का क्षय करने वाली राग द्वेष रोष और भय जैसी वृत्तियो से वह कितना दूर था! बनारस मे एक शिव भक्त ने भयकर विषधर सर्प को इसी प्रयोजन से पाल कर प्रशिक्षित किया कि वह प्रतिपक्षी की जीवन लीला को तुरन्त समाप्त कर दे। अपनी विजय के प्रति पूरा आश्वस्त उस शिवभक्त ने वही भयकर विषधर सर्प दयानन्द पर फेका और कहा—"अब वासुकि भगवान स्वय ही फैसला करेगे कि हम मे से कौन सच्चा है।"

दयानन्द ने अपने पाव की ओर लपकते उस भयकर सर्प को तेजी से पकड़ा और धरती पर उसका फण रगड़ दिया। फिर उस शिवभक्त से बड़े शान्त भाव से कहा—'अपने भगवान को फैसला करने दो। पर तुम्हारा भगवान तो बहुत सुस्त निकला। इधर मैंने विवाद का फैसला कर भी दिया।" और तब भीड़ की ओर [illegible] र कहा— 'अब हरेक को जाकर बता दो कि झूठे भगवानो की क्या ग[illegible] होती है।

इतनी अविचलता चट्टान भी न होती। हम ने उसे भीड़ का सामना करते देखा है। उसने अपने सब भक्तो और प्रशसको को हटा दिया और उन से कह दिया कि मेरी रक्षा की या निगरानी की चिन्ता बिलकुल न करो। फिर राक्षसी हिंस्रवृत्ति से आप्लावित क्रोधाविष्ट भीड़ के सामने वह व्यक्ति अकेला खड़ा हो जाता।

यह पूर्ण निश्चय के साथ कहा जा सकता है कि शकराचार्य के बाद भारत मे दयानन्द से बढ़कर सस्कृत का पण्डित नहीं देखा, इतना बड़ा अध्यात्मवेत्ता नहीं देखा, इतना जादू भरा व्याख्याता नहीं देखा, और बुराई का खण्डन करने वाला ऐसा निर्भीक योद्धा नहीं देखा।

—मैडम ब्लैवेट्स्की
[(द केव्स एण्ड जगलस ऑफ हिन्दोस्तान)

मेरा हाथ जोड़ के है उनके कदमों में सलाम

स्वामी दयानन्द सरस्वती का निधन ३० अक्तूबर १८८३ को दीपावली की रात अजमेर मे हुआ था। स्वामी जी का व्यक्तित्व अत्यन्त व्यापक और उदार था। देश के समस्त राष्ट्रप्रेमी हिन्दू मुसलमान, ईसाई सिख, पारसी आदि उन्हें 'सर्वहितैषी' मानते थे। स्वामी जी के इस सर्व-विदित रूप पर प्रकाश डालने वाली महत्त्वपूर्ण सामग्री कस्बा सौरम मुजफ्फरनगर जनपद उत्तरप्रदेश के ८० वर्षीय किसान चौधरी कबूलसिंह जी के यहा से प्राप्त हुई है। श्री कबूलसिंह जी के यहा लगभग १० धड़ी (१ मन १० सेर) वजन के ऐतिहासिक अभिलेख हाल मे प्रकाश में आये हैं। सन १८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य-सग्राम से कई वर्ष पूर्व से उस लड़ाई के निमित्त उनके यहा जो सभाएँ जुटती रही थी, उनकी कार्रवाई और उसके बाद के भी अनेक वर्षो की गतिविधियो से सम्बन्धित कागज पत्र, पोथी-बहियाँ आदि इस सामग्री मे हैं, जिनके कारण सौरम का अभिलेखागार बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

यहा के एक अभिलेख मे सन १८६६ के उस दिन की कार्रवाई अंकित है, जब हजरत मुहम्मद कासिम साहब देवबन्द मे 'दारुल उलूम' की स्थापना के उद्देश्य से स्वामी दयानन्द जी से मिलने सौरम पधारे थे। उस अवसर पर चौ० कबूलसिंह जी के दादा चौ० रसीराम जी ने मौलाना मुहम्मद कासिम का स्वागत पगड़ी और २५ रुपये नकद पेश करके किया था। इससे भी महत्त्व की बात यह है कि इस अवसर पर स्वय स्वामी जी ने दारुल उलूम' के लिए अपने पास से ४५० रुपये नकद चदा दिया था। शायद यह 'दारुल उलूम' के लिए मिला पहला चदा था। तब धन्यवाद देते हुए मौ० मुहम्मद कासिम साहब ने स्वामी दयानन्द सरस्वती को रहबरे आजम' कह कर सम्बोधित किया था।

इस प्रसग मे यह भी स्मरणीय है कि ७ अप्रैल १८७५ मे बम्बई के काकड़वाड़ी आर्यसमाज की स्थापना हुई। उसकी सस्थापक समिति के सदस्यों में एक मुस्लिम सज्जन हाजी अल्लारखा रहमतुल्ला सोनावाला भी थे।

सूफी फकीर रहीमबख्श जी ने सन् १८८३ में स्वामी दयानन्द के

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य जगत के समाचार

शुद्धि समाचार—

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-II

एक ईसाई युवती जो बिहार प्रान्त की निवासिनी है, परित्यक्ता है तथा दो छोटे शिशुओं की मां है, इसे शुद्ध कर वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया और इसका नाम मीना रखा गया। इसका विवाह वैदिक रीति से श्री मिश्री लाल के साथ दिनांक २०।१।८९ को सम्पन्न कराया गया।

ऋषि बोधोत्सव पर धार्मिक यात्रा

ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर, कृष्ण नगर दिल्ली से आर्य नर-नारियों का दल बस द्वारा २७ फरवरी को चल कर जयपुर, अजमेर, जोधपुर माउण्ट आबू, टंकारा, पोरबंदर, द्वारका गेट, द्वारका, अहमदाबाद, उदयपुर, नाथद्वारा, चित्तौड़गढ़, अलवर भरतपुर, आगरा, मथुरा, वृन्दावन होता हुआ वापस १५ मार्च को दिल्ली पहुंचेगा।

आने जाने का प्रति व्यक्ति किराया ६५०) रुपया है। विस्तृत जानकारी तथा आरक्षण के लिए डा० जगन्नाथ एफ-१/१७ कृष्ण नगर, दिल्ली ५१ दूरभाष २२१२८४० से सम्पर्क करें।

ऋषि बोधोत्सव तथा सीताष्टमी का आयोजन

करौल बाग आर्य महिला मण्डल की ओर से स्त्री आर्यसमाज पटेल नगर में २० फरवरी १९८९ को प्रातः ११ बजे से सायं ५ बजे तक ऋषि बोधोत्सव एवं सीता अष्टमी का पुनीत पर्व आयोजित किया गया है।

आप से विनम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारकर उत्सव को सफल बनायें।

प्रकाश आर्या
(प्रधाना)

वार्षिकोत्सव—

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया (अलवर)

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया अलवर राजस्थान ३०१४०१ का वार्षिकोत्सव दिनांक १८ व १९ मार्च १९८९ को समारोह पूर्वक मनाया जाएगा।

ठहरने तथा भोजन का प्रबन्ध गुरुकुल दाधिया की ओर से निःशुल्क होगा।

दिल्ली से गुरुकुल जाने के लिए आर्यसमाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से बस ले जाने का प्रबन्ध किया गया है।

टंकारा में भव्य ऋषि मेला

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा की ओर से महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म स्थान टंकारा (गुजरात) में दिनांक ५, ६, व ७ मार्च १९८९ (रविवार, सोमवार, मंगलवार) को भव्य ऋषि मेले का आयोजन किया जा रहा है।

ऋषि भक्तों को इस अवसर पर सपरिवार टंकारा पहुंचकर, महर्षि दयानन्द सरस्वती को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करनी चाहिए।

निर्वाचन—

आर्यसमाज, फोर्ट

आर्यसमाज फोर्ट बम्बई का वार्षिक निर्वाचन सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ। जिसमें निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए—

प्रधान श्री रामेश्वपाल अग्रवाल
उपप्रधान श्री प्रकाशचन्द त्यागी
मन्त्री सुदर्शन कुमार तेहलान
उपमन्त्री श्री सदाशिव आर० पन्नाबूर
कोषाध्यक्ष श्री निर्मल कपूर
पुस्तकाध्यक्ष बी०टी० शालीग्राम

आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर महानगर

दिनांक २६।१।८९ को आर्यसमाज मंदिर सीसामऊ में आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर महानगर का वार्षिक निर्वाचन श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता एवं श्री लक्ष्मण कुमार शास्त्री के संचालन में निम्न प्रकार सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ—

नाम पद व सम्बद्ध आर्य०
सबारामसिंह एड० 'प्रधान' दर्शन-पुरवा
श्यामप्रकाश शास्त्री 'मंत्री' बाड गोविन्द नगर
ओमप्रकाश पाहुजा 'कोषाध्यक्ष' कृष्ण नगर

आर्यसमाज पलडी

आर्यसमाज पलडी का चुनाव ३०।१।८९ को सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ—

प्रधान नरेन्द्रपाल
मन्त्री . रामगोपाल आर्य
कोषाध्यक्ष डा० राकेश कुमार

आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई
चतुर्थ वेद-वेदांग पुरस्कार १९८९

आर्यसमाज सान्ताक्रुज द्वारा प्रवर्तित वेदवेदांग पुरस्कार १९८९ हेतु आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान् एवं अनेक ग्रन्थों के रचयिता, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति माननीय डा० रामनाथ जी वेदालंकार एवं वेदोपदेशक पुरस्कार हेतु जीवनपर्यन्त भजनोपदेशक के रूप में आर्य जगत की सेवा करने वाले मान्य श्री पन्नालाल जी पीयूष का चयन किया गया है।

डा० रामनाथ जी वेदालंकार को वेदवेदांग पुरस्कार विजेता के रूप में २१०००/- की थैली, सम्मान-पत्र, ट्राफी एवं शाल से तथा श्री पन्नालाल जी पीयूष को 'वेदोपदेशक पुरस्कार' विजेता के रूप में ११०००/- की थैली, सम्मान पत्र, ट्राफी एवं शाल भेंट कर सम्मानित किया गया।

(पृष्ठ ३ का शेष)

स्वामी दयानन्द...

हैं तो सभी आस्तिक व्यक्ति परमात्मा के परिवार के अंग हैं। यदि आप उस परम तत्व में विश्वास करते हैं तो प्रत्येक मानव में उसी परम तत्व की ज्योति आलोकित हो रही है।'

स्वामी दयानन्द के निधन पर सर सय्यद अहमद खां ने कहा--'यह मुनासिब ही था कि सभी धर्मों के लोग उनकी इज्जत करते थे।'

स्वामी के हृदय में एक आग थी लेकिन वह दाहक नहीं, पावक थी। महापुरुष सदा उन सब संस्थाओं से महान् होते हैं जिनका वे निर्माण करते हैं या जो उनकी स्मृति में उनके पन्थ और सन्देश के प्रचार के लिए स्थापित होती हैं।

महापुरुषों के ऊंचे विचारों और उद्देश्यों की व्यापकता को अधिकांश लोग हमेशा पूरी तरह समझ नहीं पाते और व्यक्ति और विचार दोनों को सीमित बना देते हैं। इसको ध्यान में रखते हुए यदि हम विश्वास और नम्रता से स्वामी दयानन्द के स्वप्नों और कर्मों की दिशा में चलने की कोशिश करेंगे तो हम ठीक मार्ग पर होंगे।

आर्यसमाज सौ साल से स्वामी जी के उपदेशों को आगे बढ़ाने के प्रयत्न में लगा है। इसके दो पहलू हैं--पहला आध्यात्मिक और दूसरा सामाजिक। शताब्दी समारोह के अवसर पर मैं आर्यसमाज को बधाई देती हूं तथा विशेषकर उसके शिक्षा और समाज सेवा के कार्यक्रमों की सफलता की कामना करती हूं।

रानाडे ने एक बार कहा था कि आप धर्म में रूढ़िवादी और राजनीति में पुरोगामी नहीं हो सकते। यदि आप मनुष्य की एकता में विश्वास करते हैं तो सभी धर्मों का सम्मान करना आवश्यक है। मनुष्य की सेवा स्वयं एक धर्म है। मुझे आशा है कि आर्यसमाज इसी भावना से शिक्षा, समाज और अध्यात्म के क्षेत्रों में अपना कार्यक्रम जारी रखकर हमारे राष्ट्र की नींव मजबूत करेगा।

(पृष्ठ ५ का शेष)

उनके कदमों में...

निर्वाण पर जो 'श्रद्धांजलि' कही थी, वह नीचे प्रस्तुत है। इसे चौ० कबूल सिंह जी ने जिला मुजफ्फरनगर (उ० प्र०) के शिकारपुर ग्राम के निवासी राम जी लाल भाट की पोथी से प्राप्त किया था।

श्रद्धांजलि

सचाई पर झुठाई कभी गालिब आती नहीं।
और बलियों की जुबा से बुराई सुनी जाती नहीं॥
किसी चीज की कोमत उसका वक्त आने पे होती है।
मुल्क हिन्द में बलियों की कद्र जमाना गुजर जाने पे होती है॥

दयानन्द ने ही इस मुल्क को गहरी नींद से जगाया।
हाय अफसोस कि एवज में हम ने उन्हें जहर पिलाया॥
हिन्दू हो चाहे हो मुसलमां इस मुल्क हिन्द का।
इन्साफ से बोलो कि दयानन्द था इस जमाने में रहनुमा सबका॥

वतन को बचाया, मजहबों को बचाया।
था इन पर अंगरेजों का गलबा छाया॥
मेरा हाथ जोड के है उनके कदमों में सलाम।
मेरे जमीर का है यही सच्चा ईमान और पैगाम॥

—राजनाथ पाण्डेय

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Post in N D P S O on 9 10 2 89 Licenced to post without prepayment Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसस न० यू १३९

महापुरुषो मे अग्रणी

जिस क्षण देश मे दुर्बलता पनोत हो उसी क्षण एक महान विशालकाय गुजराती का स्मरण करो। जिस क्षण तुम्हारे मन में शिथिलता या कायरता का प्रवेश हो उसी क्षण जीवन और उत्साह से ओत प्रोत उस तेजस्वी देशभक्त का स्मरण करो। जिस क्षण तुम्हारे हृदय में मोह और विलास का साम्राज्य प्रवर्तित हो, उसी क्षण धन को ठोकर मारने वाले उस नैष्ठिक ब्रह्मचारी की ओर दृष्टि करो। अपमान से आहत होकर जिस क्षण तुम नजर ऊची न उठा सको उसी क्षण हिमालय के समान अडिग और उन्नत व्यक्ति के ओजस्वी मुख को अपनी कल्पना मे उपस्थित करो। मृत्यु का वरण करते हुए डर लगे तो उस निर्भयता की मूर्ति का ध्यान करो। द्वेष भाव से खिन्न होकर जब तुम्हें अपने विरोधी को क्षमा करने मे हिचकिचाहट हो तो उसी क्षण विष पिलाने वाले को आशीर्वाद देते हुए एक रागद्वेष मुक्त सन्यासी को याद करो।

यह गुजराती व्यक्ति स्वामी दयानन्द हैं। यह गौरवशाली पुरुष भारतीय महापुरुषो मे अग्रस्थान पर विराजमान है।

—रमणलाल वसन्तलाल देसाई
(गुजराती के राष्ट्रकवि)

(पृष्ठ १ का शेष)

जम्मू के साम्प्रदायिक दगे

मुट्ठी भर षड्यन्त्रकारी तत्त्व ऐसा करते और अलगाववाद की योजनाए बना रहे हैं तो उनके लिए दड की व्यवस्था यदि भारत सरकार या भारतीय सविधान में नही है तो इस देश को कोई नही बचा पाएगा। जिस देश मे प्रधानमन्त्री के हत्यारो को मृत्यु दण्ड दिये जाने पर उन्हें शहीद की उपाधि दी जाती हो इस आशका से इन्कार नही किया जा सकता कि भविष्य में देश के हर अपराधी को मृत्यु दण्ड मिलने पर शहीद की उपाधि देने की परम्परा न चल पड़े।

स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती व प्रो० बलराज मधोक ने हिन्दू सिखो के पुराने परम्परागत सम्बन्धो मे आई दरार को पाटने के लिए यह यात्रा की थी किन्तु मुख्य मन्त्री से हुई बातचीत से पता चलता है कि उनका नजरिया क्या है?।

गत २२ जनवरी को सनातनी नेता गोस्वामी गिरधारी लाल की स्मृति में अकाली दल (लोगोवाल) की ओर से नई दिल्ली के म्युनिसिपल स्टेडियम मे आयोजित श्रद्धाजलि सभा में अकाली दल के अध्यक्ष सरदार सिद्धपालसिह ने भी स्पष्ट शब्दो मे कहा था कि देश मे आतकवाद उग्रवाद और अलगाववाद के लिए सरदार दर्शनसिह रागी और उन के साथी जिम्मेदार हैं उनके कारण सारी सिख कौम पर शका करना उचित नहीं है। ❑

सेवा में—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली १ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली न०१७ कैलाशनगर दिल्ली ३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ अंक १५ रविवार १९ फरवरी १९८९ सृष्टि संवत १९७२९४९०८८ माघ २०४५ दयानन्दाब्द—१६४

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश में ५० डालर २० पौंड

आर्यसमाज विरोधी तत्त्वों से सावधान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक गत ५ व ६ फरवरी १९८९ को सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में दिल्ली में सम्पन्न हुई। जिसमें बंगाल बिहार उ. प्र. बम्बई, आंध्र प्रदेश मध्य भारत, मध्य प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र आदि सभी क्षेत्रों से अन्तरंग सदस्य पधारे हुए थे। बैठक में निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ।

प्रस्ताव—

पिछले कुछ दिनों से देखने में आ रहा है कि कुछ लोगों ने जो आर्यसमाज विरोधी तत्त्वों द्वारा पैसा प्राप्त कर रहे हैं, हमारे नेतृत्व को बदनाम करने और उन पर तरह तरह के निराधार आक्षेप लगाने का एक अभियान चला रखा है। इस सन्दर्भ में यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि जिन मान्य नेताओं के विरुद्ध यह अभियान चलाया जा रहा है वे सर्वविदित रूप से अनेकों संघर्षों के सफल योद्धा रहे हैं और उन्होंने अपने जीवन को आर्यसमाज की अभिवृद्धि द्वारा और सेवा द्वारा पवित्र किया है।

महर्षि दयानन्द के विरोध में भी उनके जीवन काल में अंग्रेजों के कुछ चाटुकारों ने इस प्रकार का अभियान चलाकर उन्हें तरह-तरह से हानि पहुंचाने का प्रयत्न किया था जिसकी बाद में आर्यसमाज को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी थी। सार्वदेशिक सभा का आदेश है कि आर्यसमाज को सतर्क रह कर इस प्रकार के पत्तमार्गियों को जो आर्यसमाज के चलते हुए कार्यों में बाधा डालकर अवरुद्ध करना चाहते हैं उन्हें सब प्रकार से विफल कर दें।

सार्वदेशिक सभा को इस बात की जानकारी है कि कुछ कृतघ्न सत्तालोलुप तत्त्व जिनका समाज की सेवा से कोई सम्बन्ध नहीं रहा है हमारे नेतृत्व को जनता की दृष्टि में नीचा दिखाने के लिए अनेक षडयन्त्र कर रहे हैं। वे इस विघटनकारी योजना के धन का दुरुपयोग भी कर रहे हैं।

आर्यसमाज द्वारा आयोजित जन कल्याण के कार्यक्रमों में कुछ लोगों को ईर्ष्या हो रही है। सभा का यह आशय नहीं है कि इस शुद्धिकरण की आड़ में किसी से बदला लिया जाये लेकिन सभा यह अवश्य चाहती है कि समाज में घुस आये इस प्रकार के अवांछित तत्त्वों को उनके पूर्वाचरण और सभा विरोधी गतिविधियों को देखते हुए समाज से बाहर निकाल दिया जाये। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अपने नेतृत्व में पूर्ण विश्वास व्यक्त करती है।

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली का

१०४वां वार्षिकोत्सव

दिनांक २४, २५, २६ फरवरी १९८९

स्थान : लाल किला मैदान

आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी, विद्वान्, नेता तथा राष्ट्रीय-नेताओं का शुभागमन

इस अवसर पर दिल्ली प्रदेशीय आर्य कार्यकर्त्ताओं का विशेष सम्मेलन

विस्तृत कार्यक्रम पृष्ठ ९ पर देखें।

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते ॥

श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत् त्रिविधं नरैः ।
अफलाकाङ्क्षिभियुक्तै सात्त्विक परिचक्षते ॥

—गीता १७ १७

शरीर वाणी और मन तीनो से करने योग्य जो तप हैं उन का सेवन मनुष्य को नित्य करना उचित है। अत अनुभवी योगी आदेश देते हैं कि फलभोग की इच्छा को त्याग कर इन तपो को करना जिज्ञासु के आचरण को सात्त्विक कर्म की सीमा तक पहुचाना है और सात्त्विक कर्म करते हुए ही मनुष्य अन्त मे बन्धनो से छूट जाता है। इसलिए निष्काम कर्म करना ही मनुष्य का सबसे पहला धर्म है। सकाम कर्म अर्थात फल की इच्छा से किया हुआ कर्म तो बराबर नाश होता चला जाता है जो कर्म सिद्धि की इच्छा से किए जाते हैं उनका अन्त इसकी प्राप्ति के बाद हो जाता है। इनमे से कोई कर्म भी बाकी नही रहता जो मनुष्य को इस संसार से आगे ले चले। परन्तु निष्काम कर्म की महिमा बड़ी है। जो कर्म फलभोग की इच्छा को छोड़ कर किए जाते हैं उनका बल दिन प्रति दिन बढ़ता ही रहता है और अन्त मे इस प्रकार बन जाता है कि बिना इच्छा के ऐसे निष्काम कर्म करने वाले को हरेक प्रकार की सिद्धि प्राप्त हो जाती है। कृष्ण भगवान ने स्थान स्थान पर कर्तव्य करने का आदेश देते हुए अर्जुन को समझाया है कि अपने किए हुए कर्मों के फल भोगने की अभिलाषा मत करो। सांसारिक ... के प्रबन्ध से भी हमे मार्ग दिखलाने के लिए यही शिक्षा मिलती है कि जो राज्य का कर्मचारी किसी विशेष स्वार्थ को लेकर काम करता है उसका वही स्वार्थ पूरा किया जाता है और उस से आगे उसे कुछ नही मिलता। परन्तु जो मनुष्य केवल अपने आत्मा को प्रसन्न करने और उसकी आज्ञा के यथार्थ पालन करने को ही अपना उद्देश्य समझता है उससे जहां उस का प्रभु प्रसन्न हो जाता है वहां वेतन वृद्धि पारितोषिक आदि सब काम स्वयं ही पूर्ण हो जाते हैं इसी प्रकार जो मनुष्य अपने कर्तव्य पर मात्मा के नियमो के पालन को मुख्य समझता है वह न स्वयं परमात्मा को ही प्राप्त होता है बल्कि जिन सुखो के प्राप्त करने के लिए सांसारिक पुरुष भटकते फिरते हैं उनको भी बगैर मांगे हुए प्राप्त कर लेता है। इस संसार मे जो इतनी अशांति और व्याकुलता फल रही है उसका बहुत कुछ कारण यह है कि सब साधारण पुरुष हरएक काम को सकाम भाव से करते हैं। एक आदमी सच बोलता है। क्या इसलिए कि सच बोलना उसका कर्तव्य कर्म है? कदापि नही बल्कि इसलिए कि सत्य बोलने से उसका कोई अभिप्राय सिद्ध होता है।

यह कथन साधारण बात है मुझे झूठ बोलने से क्या लाभ? अर्थात यदि कोई लाभ हो तो झूठ बोलने मे भी कोई संकोच नही। शोक यह है कि अविद्या मे फसे हुए हम लोग अपने हानि लाभ को नही समझते। देश के अन्दर दुर्भिक्ष पड़ा हुआ है हजारो लाखो हमारे भाई भूखो मर रहे हैं। क्या हम इसलिए उनकी सहायता के लिए जाते हैं कि उनकी सहायता करना हमारा कर्तव्य है? यदि यह होता तो हम समाचार पत्रो मे तार द्वारा इन खबरो को न छपवाते कि हम ने इस कदर आदमी दुर्भिक्ष से पीडितों के लिए भेजे। भूकम्प ने कांगड़ा को नष्ट कर दिया था चारो ओर से सहायता की पुकार हुई जो मनुष्य दुखियो की सहायता के लिए गए उन्होने अपनी प्रसिद्धि का नरसिंहा बड़े बल से फूंका कई समाजो के सदस्यो ने दुखियो को सहायता देने की अवस्था मे अपने चित्र खिचवाये और उन्हे समाचार पत्रो से छापा। मुझे यह मालूम हुआ कि एक रईस धनाढ्य भी दुखियो की सहायता के लिए गए। सम्भवतः कई समाजो से ज्यादा उन्होने उन्ही दिनो धन खर्च किया और स्वयं जाकर दुखियो की धन से सहायता की परन्तु न तो उन्होंने अपना नाम कहीं छपवाया और न ही सरकार से खास धन्यवाद प्राप्त करने का यत्न किया। उस सरल आत्मा ने जो कुछ किया अपना कर्तव्य समझकर किया। मैंने जब इस भद्र पुरुष का वृत्तान्त सुना रोमांच हो गया गद्गद प्रसन्न हुआ। लोग ख्याल करते हैं कि कर्तव्य का पूर्ण करना कठिन है। अनुभव बतलाता है कि इससे बढ़कर आसान और कोई कार्य नही ... संसार के धन्धो मे पड़कर हम लोगो ने स्वयं मेव अपने आपको अपने कर्तव्य के पालन करने के योग्य नही छोड़ा। हम यदि किसी भूखे को रोटी देते हैं तो अपनी प्रशंसा की इच्छा से। अगर किसी परोपकार के काम मे सम्मिलित होते हैं तो आशा यह रखते हैं कि जनता की ओर से हमारी सेवा मे अभिनन्दन पत्र पेश किया जाए हमारी सवारी निकाली जाए और सारे संसार मे हमें प्रसिद्ध किया जाए। शोक! हम यह नहीं समझते कि इस प्रकार का दिखावा भी अब ऐसा हो गया है कि अब इस का आम जनता की दृष्टियो मैं कुछ मूल्य नही रहा। और देखिए ऐसे सकाम भाव से किए कार्मो मे दुख किस कदर होता है। फल की खोज आशों का लगा रहना क्या कुछ कम कष्ट है? जिन्हें फल की अभिलाषा नही वे हर समय प्रसन्न रहते हैं काम करते हैं, उनकी चिन्ता दूर हो जाती है। अपने कर्तव्य के पूर्ण करने के बाद उन्हें परिणाम पर विचार करने की आवश्यकता नही। परमात्मा ने हमारे कर्तव्य हमें स्पष्ट बता दिए हैं सृष्टि मे उसके नियमो को ध्यानपूर्वक देखो। तुम्हारे लिए तुम्हारा कर्तव्य स्पष्ट प्रकट हो जाता है। इस कर्तव्य के पूरा करने से बढ़ कर और कोई कर्तव्य न समझो तब तुम्हें शान्ति मिल सकेगी।

शब्दार्थ—(अफलाकांक्षिभिः नरैः) निष्काम भाव से बिना फल की इच्छा के जो मनुष्य (त्रिविधं तत् तपः) पहले वर्णन किए गए शारीरिक वाङ्मय और मानसिक तप को (परया श्रद्धया) परम श्रद्धा के साथ (तप्तम्) सेवन करते हैं (युक्तैः) आचरणशील विद्वान (सात्त्विकम् परिचक्षते) उस तप को सात्त्विक तप कहते हैं

□

भवसिन्धु से वह तर गये

—सत्यभूषण वेदालंकार

तप त्याग पर उपकार की तसवीर श्रद्धानन्द थे।
आहत हुए इस देश की तकदीर श्रद्धानन्द थे
लाखो दुखी दीनो के दिल की पीर श्रद्धानन्द थे
जुल्मो सितम को दे मिटा वह तीर श्रद्धानन्द थे।

स्वामी दयानन्द से मिले वह दृश्य था कैसा अहो।
भाषण बरेली मे सुना गाथा कहूं किस विध कहो।
होकर पराजित तर्क मैं विश्वास कैसे हो भला।
ईश्वर कृपा होगी तभी ऐसा था ऋषिवर ने कहा।

सुनकर महर्षि के वचन आमूल परिवर्तन हुआ।
आयत्व अ ... बढ़ी विकृत विकल जीवन टला॥
धारा विमल ऐसी बही सत्यार्थ पा गुरुकुल बना।
अपने सुतो को ही प्रथम सबसे लिया उसमे बुला॥

आचार्य शुद्ध प्रबुद्ध जीवन रंग गया उस रंग मैं।
करके पुनीत विशुद्ध मन को लीन कर्म स संग मे॥
स्वाध्याय वेद प्रचार की थी लागी उनकी अलग।
विश्वास दृढ़ था ईश पर यो हो गए सतत सजग।

उन्नीस सौ उन्नीस ईसवी तीस मार्च प्रसिद्ध है।
दिल्ली के चांदनी चौक मे यह तथ्य स्वयं सुसिद्ध है॥
आतंकवादी दौर था निर्भय यति वह था खड़ा।
जब तनी पर झुक गयी जब छेद दो छाती कहा।

देखा कि जब षड्यन्त्र मुस्लिम चक्र शुद्धि का चला।
अशुद्ध मलकाने किए अति वेग से साहस बढ़ा॥
लख मोपला का काण्ड था आघात अति उर पर पड़ा।
कूदे विकट संग्राम मे फिर कौन था सकता हरा॥

आखिर किया सर्वस्व अर्पित जाति के हित प्राण दे।
अब्दुल रशीद बना वधिक वंचित हुए हम त्राण से।
खा गोलिया निज वक्ष पर बलिदान अपना कर गये।
श्रद्धा से श्रद्धानन्द बन भवसिन्धु से वह तर गये॥

आर्य सन्देश

सम्पादकीय

स्वामी श्रद्धानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का जन्मदिवस २२ फरवरी को है। इस दिन दिल्ली में अनेक महत्त्वपूर्ण स्थानों पर आयोजन किये जाते हैं। दिल्ली नगर निगम के कार्यालय के सामने घण्टाघर चौक पर भी यह आयोजन किया जाता है जिसमें दिल्ली नगर निगम के महापौर तथा अन्य अधिकारी भी सम्मिलित होते हैं। आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता भी इस समारोह में दिल्ली की जनता को सम्बोधित करते हैं। यह वही स्थान है जहां पर ३० मार्च १९१९ को स्वामी श्रद्धानन्द ने अंग्रेज सिपाहियों को संगीनों के सामने छाती खोलकर कहा था—'मारो' और चारों ओर सन्नाटा छा गया था। फौजों को पीछे हटना पड़ा था। रौलट एक्ट के विरोध में हो रही जनसभा की अध्यक्षता स्वामी श्रद्धानन्द ने की थी। उस समय की हिन्दू और मुसलमानों की अपार भीड़ स्वामी जी महाराज के साथ थी। स्वामी जी महाराज ने तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक और मानसिक क्रान्ति का नेतृत्व प्रदान किया था।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने ४ अप्रैल १९१९ को जामा मस्जिद से दिल्ली के लोगों को सम्बोधित किया था। वेद मन्त्रों से वह स्थान गुंजायमान था। साम्प्रदायिक सद्भाव का वह अनोखा वातावरण था। आज भी यह घटना बहुत अधिक प्रासंगिक है। इस अंक में हमने स्वामी जी महाराज के सम्बन्ध में सामग्री देने का प्रयास किया है। उनका व्यक्तित्व और कर्तृत्व इतना महान् है कि उस को इन पन्नों में समेट पाना कठिन है। इस अवसर पर आर्यसन्देश की ओर से विनत श्रद्धाञ्जलि।

जन्मदिवस पर—

महात्मा मुन्शीराम

—आचार्य क्षेमचन्द 'सुमन'

महात्मा मुन्शीराम का जन्म सन् १८५६ में जालन्धर (पंजाब जनपद के 'तलवन' नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता श्री नानकचन्द्र उन दिनों शहर कोतवाल थे और उन्हें बाद में 'रिसालदार' बनाकर सहारनपुर भेज दिया गया था। जिन दिनों वे सहारनपुर से मेलाघाट की लड़ाई पर नेपाल की तराई में गए हुए थे वहीं पर ही उन्हें मुन्शीराम जी के जन्म की सूचना मिली थी। जन्म के बाद आपके पारिवारिक पुरोहित ने बालक का नाम 'बृहस्पति' निकाला था, जो बाद में 'मुन्शीराम' हो गया और गुरुकुल की स्थापना के अनन्तर गांधी जी ने आपके नाम के साथ महात्मा शब्द और जोड़ दिया था। यही 'महात्मा मुन्शीराम' बाद में संन्यास आश्रम में दीक्षित होने के उपरान्त स्वामी श्रद्धानन्द कहलाए।

जब आपके पिता की नियुक्ति स्थायी रूप से बरेली में हो गई तो उन्होंने बालक मुन्शीराम को भी बरेली ही बुला लिया। क्योंकि उन दिनों पुलिस विभाग में फारसी का ही बोलबाला था, इसलिए मुन्शीराम जी की प्रारम्भिक शिक्षा भी फारसी में ही हुई। बाद में जब आपके पिता श्री नानकचन्द का स्थानान्तरण बनारस के लिए हो गया तब आपकी शिक्षा के लिए एक हिन्दी-अध्यापक भी लगा दिया गया, और बाद में उसे सतोषजनक न समझकर मुन्शीराम जी को इलाहाबाद के 'म्योर सेण्ट्रल कालेज' में प्रविष्ट करा दिया गया। यहाँ पर भी आपकी शिक्षा अधिक आगे नहीं बढ़ सकी और आपका विवाह कर दिया गया। विवाहोपरान्त आपने सन् १८८० में लाहौर जाकर वकालत की पढ़ाई प्रारम्भ की और वहां पर रहते हुए आप वे सामाजिक संस्थाओं में भी भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। एक बार जब आप बरेली में अपने पिता जी के पास थे तब आपको वहां पर स्वामी दयानन्द सरस्वती का भाषण सुनने का सुअवसर भी मिला था। उससे आपकी दिशा ही बदल गई और आप नास्तिक से एकदम आस्तिक बन गए।

लाहौर में मुख्तारी की परीक्षा उत्तीर्ण करके मुन्शीराम जी ने जालन्धर को अपना कार्यक्षेत्र बनाया और अपनी लगन, सत्यनिष्ठा और कर्म-कुशलता से आप नगर के प्रमुख वकीलों में गिने जाने लगे। अपना वकालत का कार्य करते हुए आप ने 'आर्यसमाज' की गतिविधियों में भी भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था। कई वर्ष तक आप वहां की आर्यसमाज का प्रधान रहने के साथ साथ 'पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा' के भी प्रधान रहे थे। आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्रचार करने की दृष्टि से आपने जालन्धर से 'सद्धर्म प्रचारक' नामक एक उर्दू साप्ताहिक भी निकालना प्रारम्भ कर दिया था जो बाद में सन् १९०८ से हिन्दी में प्रकाशित होने लगा था। उन दिनों आर्यसमाजी जगत का यह अकेला पत्र था और इसने निरन्तर २० वर्ष तक पंजाब में आर्य सिद्धान्तों तथा हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार का महत्त्वपूर्ण कार्य किया था। सैकड़ों पंजाबी आर्यसमाजियों ने 'प्रचारक' के कारण ही हिन्दी का अभ्यास किया था। जब प्रचारक उर्दू में निकलता था तब भी महात्मा जी उसमें प्रायः हिन्दी के राष्ट्रभाषा होने के पक्ष में लेख लिखा करते थे। आपके उस प्रचार का ही यह प्रभाव हुआ था कि सभी आर्यसमाजी उर्दू पत्रों की भाषा भी हिन्दी-प्रभावित उर्दू हो गई थी।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट शिक्षा पद्धति के प्रचार के लिए पंजाब में जहां महात्मा हंसराज ने डी ए वी स्कूल स्थापित करने की पहल की वहां महात्मा मुन्शीराम ने उन से एक कदम आगे बढ़कर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के द्वारा वैदिक सिद्धान्तों की शिक्षा हिन्दी माध्यम से दिलाने की दृष्टि से सन् १८९९ में शिवालक पर्वत की उपत्यकाओं में हरिद्वार के समीप भगवती भागीरथी के पुण्य तट पर कांगड़ी (बिजनौर) ग्राम में 'गुरुकुल' की स्थापना कर दी, जो बाद में 'गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय' के रूप में देशभर में विख्यात हुआ। इस संस्था ने जहां उच्चतम शिक्षा के लिए हिन्दी माध्यम की सार्थकता प्रमाणित की वहां शिक्षा तथा राजनीति के क्षेत्र में कार्य करने वाले अनेक सुयोग्य स्नातक प्रदान किये। इस संस्था का लक्ष्य अपने छात्रों को पाश्चात्य प्रभाव से सर्वथा मुक्त करके विशुद्ध भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल आलोक में देश के सच्चे नागरिक बनाना था। जिन दिनों आप गुरुकुल में मुख्याधिष्ठाता के रूप में शिक्षा तथा संस्कृति के उन्नयन का यह नया प्रयोग कर रहे थे तब आपके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर श्री रैम्जे मेकडानल्ड ने आपके सम्बन्ध में यह सही ही लिखा था— एक महान्, भव्य और शानदार मूर्ति—जिस को देखते ही उसके प्रति आदर का भाव उत्पन्न होता है, हमारे आगे हम से मिलने के लिए बढ़ती है। आधुनिक चित्रकार ईसा मसीह का चित्र बनाने के लिए उसको अपने सामने रख सकता है और मध्यकालीन चित्रकार उसे देखकर सेण्ट पीटर का चित्र बना सकता है। यद्यपि उस मछुआरे की अपेक्षा यह मूर्ति कहीं अधिक भव्य और अधिक प्रभावोत्पादक है।'

गुरुकुल तथा आर्यसमाज के कार्यों में समय देने के साथ साथ आप राजनीतिक क्षेत्र में भी सक्रिय रूप से भाग लेते थे। आपके अभूतपूर्व साहस का परिचय सन १९१९ की उस घटना से ही मिल जाता है जबकि दिल्ली के चांदनी चौक बाजार में घण्टाघर के सामने गोरे सिपाही गोलियों की बौछार करने को तैयार थे और स्वामी जी ने छाती खोलकर उन्हें ललकारते हुए यह निर्भीक घोषणा की थी— लो चलाओ गोलियां। ऐसी एक नहीं, अनेक घटनाएं आपके जीवन में घटी थीं। गांधी जी उन दिनों दक्षिण अफ्रीका के नेटाल सत्याग्रह में व्यस्त थे। दीनबन्धु सी एफ एण्ड्रूज ने मुन्शीराम जी के दिव्य गुणों का वर्णन उन से किया था। उस समय आप केवल मुन्शीराम थे और महात्मा गांधी भी महात्मा के विशेषण से विभूषित नहीं हुए थे। बाद में दोनों के नाम के साथ 'महात्मा' शब्द जुड़ गया। यह नामकरण भी दोनों ने परस्पर ही किया था। गांधी जी ने सर्वप्रथम मुन्शीराम जी को 'महात्मा' नाम से सम्बोधित करते हुए २१ अक्तूबर सन् १९१४ को दक्षिण अफ्रीका से जो पत्र लिखा था, वह इस प्रकार है—

'प्रिय महात्मा जी,

मि० एण्ड्रूज ने आपके नाम और काम का मुझे इतना परिचय दिया है कि मैं अनुभव कर रहा हूं कि मैं किसी अजनबी को पत्र नहीं लिख रहा। इसलिए आशा है कि आप मुझे आपको 'महात्मा जी' लिखने के लिए क्षमा करेंगे। मैं और एण्ड्रूज साहब आपकी चर्चा करते हुए आपके लिए इसी शब्द का प्रयोग करते हैं। उन्होंने मुझे आपकी संस्था गुरुकुल को देखने के लिए अधीर बना दिया है।

—आपका मोहनदास गांधी

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्वामी श्रद्धानन्द जन्मदिवस (२२ फरवरी)

गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली का पुनरुद्धार : स्वामी श्रद्धानन्द को महान् श्रद्धांजलि

डा० प्रशान्त वेदालंकार

मुझे ऐसा लगता है कि वैदिक संस्कृति में निर्दिष्ट गुरुकुल व्यवस्था तथा वर्तमान गुरुकुलों के स्वरूप में एक तात्त्विक अन्तर है जिस कारण गुरुकुलों की व्यवस्था ८-१० वर्ष में ही अस्त-व्यस्त हो गई है।

सैद्धान्तिक आधार पर शिक्षा का कार्य सेवानिवृत्त व्यक्ति को करना चाहिए। वह व्यक्ति जिसने सभी भोगों का उपभोग कर लिया हो जिसे धन अर्जित करने की लालसा न हो, जो केवल जीवन यापन के लिए साधनों की माँग करता हो। आज गुरुकुल की दुर्व्यवस्था का एक बड़ा कारण यही है कि वहाँ गृहस्थी अध्यापक हैं जिनका लक्ष्य अध्यापन न होकर धन का अर्जन होता है। उनमें ब्राह्मण वर्ण न होकर वैश्यवृत्ति होती है। उन्हें अपनी सन्तानों की उन्नति की चिन्ता होती है अपने शिष्यों के विकास की परवाह नहीं। वे स्वयं भोगों में रत होते हैं। भोगों के कारण लोभ, ईर्ष्या, द्वेष आदि वृत्तियाँ उनमें होती हैं। वे बच्चों को दुष्टवृत्तियों से ऊपर उठने की प्रेरणा कैसे देंगे? उनमें स्वार्थ होता है, वे परमार्थ का पाठ कैसे पढ़ाएंगे? उनका अपना चरित्र ऊँचा नहीं होता, वे सच्चरित्रता का ज्ञान कैसे करेंगे?

आजकल शिक्षा के क्षेत्र में एम० ए० पास युवक २०-२२ वर्ष की आयु में अध्यापक के रूप में आते हैं। उनके पास केवल पुस्तकीय ज्ञान होता है, अनुभव-ज्ञान का जीवन के अनुभवों के निष्कर्ष पर उन्होंने परीक्षा नहीं की होती। इस ज्ञान से मौलिकता न होकर अपरिपक्वता होती है। यदि प्रतिभा सम्पन्न वयोवृद्ध व्यक्तियों को शिक्षा के क्षेत्र में लाया जाएगा तो अध्यापन में भी परिपक्वता आएगी। इस समय प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति शिक्षा के क्षेत्र में न आकर आई०ए०एस०, वकील आदि बन जाते हैं। उक्त व्यवस्था कर देने पर इन सभी का उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में हो सकेगा।

यदि गुरुकुलों में हम वानप्रस्थी अध्यापकों को रखने की योजना बना सकें तो यह शिक्षा के क्षेत्र में एक अत्यन्त क्रान्तिकारी कदम होगा।

प्रश्न है कि क्या आर्यसमाज महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट वैदिक आश्रम प्रणाली को क्रियात्मक रूप देने के लिए तैयार है? सेवा कार्यों से जो सेवानिवृत्त हो चुके हैं वे अपनी सम्पत्ति अपनी सन्तानों को सौंप कर या उसे लेकर शहरों से दूर वनवासियों में, आदिवासियों में, सुदूर ग्रामों में जाकर अपने अपने आश्रम खोल कर अशिक्षित जन समुदाय को शिक्षित करने (केवल किताबी शिक्षा नहीं, चरित्र और व्यवहार की शिक्षा भी) के लिए तत्पर हैं? जो सेवाकार्यों में नहीं हैं, निजी कार्यों में व्यस्त हैं, क्या वे अपने अपने कामों से अवकाश लेकर कार्यभार अपनी सन्तानों को सौंप कर घरों से निकलने के लिए उद्यत हैं? यदि वे महर्षि दयानन्द का अपने को शिष्य मानते हैं तो उनको यह सब करने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए?

आज पुनः गुरुकुलों के स्वरूप में क्रान्तिकारी परिवर्तनों की एक योजना बनानी चाहिए। सेवा या कार्यनिवृत्त आर्यसमाजियों को गुरुकुलों के पुनरुद्धार के लिए सन्नद्ध करना चाहिए। वे वर्तमान गुरुकुलों में भी रह सकते हैं और अपने अपने आश्रमों की स्थापना भी कर सकते हैं।

अभिप्राय यह है कि अब आर्य समाज की स्थापना के सौ वर्षों के उपरान्त आर्यसमाज के सामाजिक व शैक्षणिक क्षेत्र में यह क्रियात्मक कदम उठाकर एक महान क्रान्ति करनी होगी। मैं यह जानता हूँ कि सैद्धान्तिक रूप से आश्रम व्यवस्था की चर्चा जितनी सरल है उसका क्रियात्मक रूप उतना ही कठिन है। किन्तु यदि मन में क्रान्ति की भावना हो, देश से प्रेम हो, दयानन्द और वैदिक विचारधारा पर आस्था हो तो ऐसा सात्त्विक वातावरण तैयार किया जा सकता है कि सभी ६०-६५ या ७० वर्षों के ऊपर के आर्यसमाजी अपने अपने घरों को छोड़ कर देश की अज्ञानता को नष्ट करने के लिए निकल पड़ें। यह यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति घर से बाहर निकल कर शिक्षक ही बने। शिक्षक और शिक्षार्थी किसी भी प्रकार की सहायता करने वाला व्यक्ति भी प्रकारान्तर से शिक्षा के विकास में ही योगदान करता है।

गुरुकुलों में एक अन्य प्रयोग भी आवश्यक है। हम आर्यसमाज के लोग वर्ण व्यवस्था को गुण-कर्म के अनुसार मानते हैं। हमने शूद्र बालकों को वैश्य, क्षत्रिय अथवा ब्राह्मण बनाने का सफल उपक्रम किया भी है पर फिर भी इस क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी कार्य करने की आवश्यकता है। इस समय हमारे देश में ५ हजार आर्यसमाज हैं। यदि इनमें से ५ सौ आर्यसमाज भी एक एक हरिजन अथवा निर्धन बालक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय स्वयं वहन करके उन्हें गुरुकुल कांगड़ी में शिक्षित अथवा संस्कारित करने को तैयार हो जाएं तो यह एक महान कार्य होगा। इस कार्य के लिए सरकार भी अनुदान देने के लिए तैयार हो जायेगी। यह कार्य भी कहने में जितना सरल है व्यवहार में उतना ही कठिन है पर योजना बनाकर इसी दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प कर लिया जाए तो आर्यसमाज के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। इससे दो लाभ होंगे (१) गुरुकुलों में छात्रों की कोई समस्या नहीं रहेगी, दूसरे यह आरोप भी समाप्त होगा कि नये लोग विशेषतः बच्चे और युवक आर्यसमाजों में नहीं आ रहे।

जिस प्रकार प्राचीन काल में दान, भिक्षा से व शासकीय अनुदान से गुरुकुल चलते थे आज भी चल सकते हैं। प्राचीन काल में लघु उद्योग व कृषि कर्म आदि भी छात्रों द्वारा होते थे। आज भी इन संस्थाओं को आत्मनिर्भर बनाने की आवश्यकता है। इस प्रसंग में शासकीय अनुदान का प्रश्न बहुत ही पेचीदा है। अपने सिद्धान्तों की कीमत पर शासकीय अनुदान लेने का कोई भी औचित्य नहीं है।

एक प्रश्न गुरुकुलों की व्यवस्था का है। गुरुकुलों की व्यवस्था कौन करे? अभी तक प्रायः आर्यप्रतिनिधि सभाएं गुरुकुलों का संचालन करती रही हैं। पर उसका दुष्परिणाम यह हुआ है कि उन समाजों के झगड़ों से गुरुकुल नष्ट हुए हैं। वस्तुतः इस प्रश्न का समाधान सैद्धान्तिक आधार पर होना चाहिए। मैं समझता हूँ कि स्वामी श्रद्धानन्द जी से यह भूल हुई थी कि उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब को सौंप दिया था। मेरे इस कथन से यह गलत धारणा उत्पन्न न हो जाए कि सभा ने इसके विकास में कोई योगदान नहीं किया या आज नहीं कर रही है। मेरा अभिप्राय यह है कि प्राचीन गुरुकुल प्रणाली में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी। वस्तुतः गुरुकुलों को किसी भी संस्था को सौंपने की आवश्यकता नहीं। गुरुकुलों के संचालन के लिए स्वतन्त्र संस्थाओं का निर्माण किया जाना चाहिए। जिनकी शिक्षा में रुचि हो, जिनका गुरुकुल से सम्बन्ध हो वे ही इनको चलाएं।

प्राचीन काल में गुरुकुल का कुलपति ही उसका सर्वोच्च अधिकारी होता था और वह गुरुकुल में ही रहता था। गुरुकुल का संचालन गुरुकुल में ही रहने वाला व्यक्ति ही करे। बाहर का व्यक्ति अथवा संस्था उसमें दखल क्यों दे। बाहर का व्यक्ति न उसकी समस्याओं से पूरा परिचित हो सकता है न उसकी उसमें पूरी रुचि हो सकती है। गुरुकुल में कार्य करने वाला व्यक्ति ही उसके नियन्त्रण को अपने हाथों में ले। आर्यसमाज की शहरों में काम करने वाली संस्थाएं अथवा उनके सदस्य गुरुकुलों में उत्सवों अथवा अन्य अवसरों पर कुछ ज्ञान प्राप्त करने के लिए एवं अपनी समस्याओं का समाधान करने के लिए आएं। वे दक्षिणा से गुरुकुलों की सहायता भी कर जाएं, साथ ही यदि उनका कोई परामर्श हो तो वह भी दे जाएं। यह एक पेचीदा प्रश्न है जिसके व्यावहारिक पक्ष पर पृथक रूप से गम्भीरता से विचार किया जा सकता है।

पुत्र व वित्त की समस्याओं को दग्ध करना कठिन है पर असम्भव नहीं है। किन्तु लोकैषणा की वृत्ति

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार

को शान्त करना असम्भव ही मानना चाहिए। लोकैषणा के अतिरिक्त एक अन्य वृत्ति भी पाय प्रत्येक मनुष्य में है, वह है—शासन करने की वृत्ति। इसी वृत्ति के कारण पति अपनी पत्नी तथा माता पिता अपनी सन्तानों पर शासन करते दिखाई देते हैं। शासन का भी क्षेत्र जितना विस्तृत किया जा सके शासक को उतना ही आत्मिक सन्तोष प्राप्त होता है। किन्तु शासन करने की शक्ति सब की अपनी-अपनी होती है। अपनी शक्ति के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति उसका विस्तार करता है। शिक्षक कक्षा में अध्यापन कार्य के साथ अपना शासन करने की वृत्ति को पूरा करता है। गुरुकुल अथवा शिक्षा संस्था के सर्वोच्च अधिकारी को शासन करने का भी एक विस्तृत क्षेत्र मिलता है। वह अपनी पूरी शक्ति व योग्यता के अनुसार इस संस्था का संचालन करता है। उस संस्था के शिक्षक, कर्मचारी व छात्र उसकी प्रजा होते हैं। यदि उसकी व्यवस्था ठीक होती है तो उसकी प्रजा उसका साथ देती है, अन्यथा वह उसको हटा कर उसके स्थान पर किसी अन्य को ले आती है। प्राचीन काल में ७५ वर्षों की आयु के उपरान्त स्वतः ही उनका वहां से हट जाने का विधान था। तब तक वह अपनी लोकैषणा अथवा शासन करने की वृत्ति पर विजय प्राप्त करने में समर्थ हो जाता था।

यदि व्यक्ति योग्य व सक्षम है तो उसे काम करने का एक पूरा अवसर प्रदान करना चाहिए। वह किस प्रकार की शिक्षा प्रणाली चाहता है? किन विषयों के अध्ययन अध्यापन पर बल देता है कैसा पाठ्यक्रम रखना है? यह अपने अधीनस्थ प्रजा के परामर्श से तय कर सकता है। यदि किसी विद्वान् शिक्षक का उसकी प्रणाली से मतभेद है तो वह वहीं अपने किसी नये प्रयोग को भी प्रारम्भ कर सकता है, और अधिक मतभेद होने पर किसी अन्य स्थान पर अपना अलग आश्रम भी खोल सकता है। उस अवस्था में वहां उस संस्था का सर्वोच्च अधिकारी होगा। वह अपने साथ वहां से शिष्यों व सहयोगियों का एक दल ले जाएगा। तब उस संस्था पर उस व्यक्ति की छाप लग जाती है। जिस कारण वह मुनि वशिष्ठ का आश्रम, विश्वामित्र का आश्रम अथवा याज्ञवल्क्य या कण्व मुनि का आश्रम कहलाने

लगता है। गुरुकुल कांगड़ी में जब तक स्वामी श्रद्धानन्द या आचार्य रामदेव रहे, गुरुकुल में उनके पूरे व्यक्तित्व का प्रभाव रहा, गुरुकुल ने अपना पूरा विकास किया। तब तक सभा का उस पर पूरा उतना नियन्त्रण नहीं था। जब कुलपति ने गुरुकुल निवास छोड़ दिया तब सभा का नियन्त्रण बढ़ता गया, गुरुकुलों पर गुरुकुलों में रहने वाले व्यक्तियों का नियन्त्रण हटता गया तब गुरुकुलों का ह्रास होना प्रारम्भ हो गया, और अब यह ह्रास की सीमा पार कर गया है।

ह्रास का एक बड़ा कारण शासकीय दखल भी है। शासकीय अनुदान को लालच में हम शासन को ही अपने गुरुकुल सौंप बैठे हैं। शासकीय अनुदान प्राप्त करने को शर्तों पर हमें फिर से गम्भीरता से विचार करना होगा।

अब हमें गुरुकुलों का नये सिरे से पुनर्गठन करने की योजना बनानी चाहिए। मेरे विचार में गुरुकुल कर्मठ व निस्पृह व्यक्तियों के हाथों सौंप देने चाहिए। वे अपने साथियों को भी वहां ले जाएं और शिक्षा के क्षेत्र में उन्हें स्वतन्त्र प्रयोग करने का अधिकार मिल जाए। पर प्रमुख रूप से सबका लक्ष्य ज्ञान के विकास व मनुष्य के निर्माण का कार्य हो।

यह शंका निर्मूल है कि कोई योग्य और निस्पृह व्यक्ति भी वहां की सम्पत्ति का उपयोग करने लगेगा। प्रथम वह सम्पत्ति उसकी निजी सम्पत्ति नहीं होगी दूसरे, उस व्यक्ति में दोष होने पर वहीं को प्रबन्धकर्त्री सभा के अन्य सदस्य अथवा सम्पूर्ण प्रजा उसे हटा कर उस संस्था का नेतृत्व किसी अन्य योग्य व्यक्ति के हाथों सौंप देगी।

इस समय हमारे देश में ६० के लगभग गुरुकुल हैं। उन सभी में ये प्रयोग प्रारम्भ करने चाहिए। वानप्रस्थाश्रमों को भी शिक्षा का केन्द्र बना दिया जाए और आर्यसमाज द्वारा संचालित अनाथाश्रमों को भी योग्य वानप्रस्थी सम्भालें। आज आर्यसमाजों में नेतृत्व के झगड़े होते हैं वहां यह नियम बना दिया जाए कि ६० या ६५ वर्षों के वृद्ध व्यक्ति उनके अधिकारी नहीं बन सकते। वे शहर छोड़कर किसी शिक्षा संस्था में जाकर अपना कार्य कर। योग्य हैं तो अपना आश्रम

खोल लें, और नेतृत्व करने की अपनी इच्छा पूरी कर लें।

यह निश्चित है कि मेरे विचार आज ही एकदम क्रियात्मक रूप में परिणत नहीं हो सकते। वस्तुतः ये केवल विचार के लिए हैं। इस पर गम्भीरता से विचार होना चाहिए। पत्रों में तथा गोष्ठियों में इस पर चर्चा चलनी चाहिए।

स्वामी श्रद्धानन्द का गुरुकुल प्रणाली के संचालन में महान् योगदान है। उनके बलिदान पर्व पर गुरुकुल प्रणाली के पुनरुद्धार की योजना बनाकर स्वामी जी को श्रद्धांजलि व्यक्त करनी चाहिए। इस समय हमारे देश में ६५ प्रतिशत व्यक्ति अशिक्षित हैं, यदि गुरुकुल से इन सबको शिक्षित करने की किसी योजना पर विचार किया जा सके तो यह स्वामी जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

श्रद्धानन्द के प्रति

—ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति

भारत के स्वाधीन समर में जिसने निज बलिदान किया,
दुश्मन के आगे जिसने फौलादी सीना तान दिया
ऐसे अमर हुतात्मा को
नमस्कार है, नमस्कार!

लगी हुई थी आग देश में भूख-दर्द, महामारी की,
शोचनीय थी दशा निम्न व मध्यवर्ग नर-नारी की,
उमड़ रही थी व्यथा की सरिता उर में दीन दुखारी की,
अपने साहस भरे कदम से जिसने सब को त्राण दिया—
ऐसे अमर हुतात्मा को
नमस्कार है नमस्कार

बनी जा रही थी हिन्दू जनता बहुसंख्यक ईसाई,
छुआछूत की बीमारी थी प्रेम भावना बिलगाई,
घृणित दृष्टि से देख रहे थे अपने भाई को भाई,
शुद्धि-चक्र चलाकर जिसने सबको नूतन प्राण दिया—
ऐसे अमर हुतात्मा को
नमस्कार है नमस्कार!

कितने हुए विधर्मी लोगों को वापस फिर ले आया,
वैदिक धर्म में दीक्षित कर जीवन का पथ था बतलाया,
कितनों का दुर्व्यसन छुड़ाकर वेद गंगा में नहलाया,
"सबको श्रेष्ठ बनाने वालो" वेदसूक्ति-आह्वान किया—
ऐसे अमर हुतात्मा को
नमस्कार है, नमस्कार!

हरिद्वार में वैदिक गुरुकुल खोल स्वपुत्रों को डाला
बड़े परिश्रम से छात्रों की पूर्ण व्यवस्था को संभाला,
जिसकी कीर्ति-कौमुदी जग में जाहिर है अब वह शाला
दयानन्द के अमर सन्देशों को जिसने ऐलान किया—
ऐसे अमर हुतात्मा को
नमस्कार है, नमस्कार!

स्वतन्त्रता-आन्दोलन में साहस की सीमा लाँघ गए,
उत्कट जोवट देख महाभट गोरे "गन" से भाग गए,
एक वृद्ध के देख शौर्य को सारे सोते जाग गए,
त्याग-तपस्या सेवा शुद्धि का जिसने अनुपान किया—
ऐसे अमर हुतात्मा को
नमस्कार है, नमस्कार!

परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय नं० ?
रावतभाटा (वाया कोटा) राजस्थान

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली का १०४वां वार्षिकोत्सव

२४ फरवरी से २६ फरवरी '८६ तक लालकिला मैदान में

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली का १०४वा वार्षिकोत्सव लालकिला मैदान में २४ २५ व २६ फरवरी '८६ दिन शुक्रवार, शनिवार तथा रविवार को बड़े समारोहपूर्वक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर २० फरवरी से २३ फरवरी तक रात्रि ८ बजे महात्मा रामकिशोर वैद्य द्वारा कथा का आयोजन होगा। उत्सव पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया है, जिसके ब्रह्मा प० राजगुरु शर्मा होंगे।

२४ फरवरी, शुक्रवार

□ प्रथम दिवस यज्ञ का शुभारम्भ दिल्ली के उपराज्यपाल श्री रोमेश भण्डारी करेंगे, तथा यज्ञोपरान्त प० राजगुरु शर्मा, महात्मा रामकिशोर, प० महेन्द्रकुमार शास्त्री प० यशपाल सुधांशु वेद प्रवचन करेंगे।

□ श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ध्वजारोहण तथा जनसमूह को सम्बोधित करेंगे। इस अवसर पर आर्य विद्यालयों के बालक बालिकाएं योग प्रदर्शन करेंगे।

□ मध्याह्न १ बजे से दिल्ली स्थित कालेजो तथा विद्यालयो के छात्र-छात्राओ के लिए भाषण प्रतियोगिताओ का आयोजन डा धर्मपाल आर्य प्रधान दि० ी आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में किया गया है।

□ कालेज स्तर के विद्यार्थियो के लिए "भारतीय राजनीति और नैतिकता" विषय रखा गया है, जिसमे प्रथम ५००) द्वितीय ३००), तृतीय २००), विशेष १००) के दो पुरस्कार दिये जायगे। प्रथम आने वाले विद्यार्थी के कालेज को शील्ड प्रदान की जायेगा।

□ स्कूल स्तर के विद्यार्थियो के लिए 'राष्ट्रीय एकता के लिए हिंदी आवश्यक' विषय रखा गया है, जिसमे प्रथम ३००), द्वितीय २००), तृतीय १००), विशेष ५०) के दो पुरस्कार दिये जायगे। प्रथम आने वाले विद्यार्थी के स्कूल को शील्ड प्रदान की जायेगी।

□ सभी प्रतियोगियों को वैदिक साहित्य, आकर्षक प्रशस्ति-पत्र तथा मार्गव्यय दिया जायेगा।

□ नैतिक शिक्षा परीक्षा

इसी अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आयोजित 'नैतिक शिक्षा परीक्षा' के विजयी बालक-बालिकाओं को भी पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र दिये जायगे।

□ कार्यकर्त्ता सम्मेलन

सायकाल ७ बजे दिल्ली की सभी आर्यसमाजो, आर्य स्त्री समाजो, आर्य शिक्षण संस्थाओ के अधिकारियो तथा कर्मठ कार्यकर्त्ताओ का खुला अधिवेशन वर्तमान मे आर्यसमाज के सम्मुख समस्याओ पर विस्तार से विचार के लिए होगा जिसमे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, महामन्त्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री, प० राजगुरु शर्मा, प० आर्य भिक्षु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल आर्य, महामन्त्री श्री सूर्यदेव तथा विभिन्न आर्यसमाजो के प्रमुख अधिकारी सम्बोधित करेंगे।

२५ फरवरी, शनिवार

□ प्रात यज्ञोपरान्त डा० महेश विद्यालंकार विशेष प्रवचन करेंगे तथा आर्य विद्यालयो के बालक सामूहिक गान प्रस्तुत करेंगे।

□ आर्य महिला सम्मेलन

मध्याह्न मे आचार्या सावित्री देवी वेदाचार्य की अध्यक्षता में आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया है, जिसमे अनेकों आर्य विदुषी देवियां मार्गदर्शन करेंगी। अनेको कन्या विद्यालयो तथा गुरुकुलो की बालिकाएं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगी।

□ राष्ट्र रक्षा सम्मेलन

सायकाल ७ बजे, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी (भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री) की अध्यक्षता में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया है जिसमे विभिन्न राजनैतिक दलों से श्री लालकृष्ण आडवाणी (अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी), श्री नरेशचन्द्र चतुर्वेदी (ससद सदस्य), श्री चन्दूलाल चन्द्राकर (ससद सदस्य) तथा वैदिक विद्वान् प० राजगुरु शर्मा अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।

२६ फरवरी, रविवार

□ प्रात काल यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मन्त्री श्री हरकिशन लाल जी भगत द्वारा होगी तथा प० शिवकुमार जी शास्त्री (भूतपूर्व सासद) का विशेष प्रवचन होगा।

□ वेद-सम्मेलन

प्रात १०-३० बजे पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे वेद-सम्मेलन का आयोजन होगा, जिसमे पं० शिवकुमार जी शास्त्री (भूतपूर्व सासद), आचार्य विशुद्धानन्द जी शास्त्री, डा० सावित्री देवी वेदाचार्य, प० राजगुरु शर्मा, प० क्षितीश कुमार जी वेदालंकार, प० आर्य भिक्षु प्रमुख वक्ता होंगे।

□ ऋषि लंगर

मध्याह्न १ बजे, आर्यसमाज मन्दिर, दीवान हाल मे विशाल ऋषि लंगर का आयोजन होगा।

□ आर्य सम्मेलन

मध्याह्न २ ३० बजे, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की अध्यक्षता मे आर्य सम्मेलन होगा जिसका उद्घाटन डा० बलराम जाखड़, अध्यक्ष लोकसभा करेंगे। सम्मेलन के मुख्य वक्ता श्री कुलानन्द भारतीय (कार्यकारी पार्षद, दिल्ली), प्रसिद्ध पत्रकार डा० वेदप्रताप वैदिक' प० राजगुरु शर्मा प० आर्य भिक्षु, प० जयप्रकाश आर्य, श्री रमाकांत गोस्वामी आदि होंगे।

समस्त कार्यक्रमो मे भारी सख्या मे पधार कर धर्मलाभ उठाये।

मूलचन्द गुप्त
मन्त्री, आर्यसमाज दीवान

(पृष्ठ ३ का शेष)

मिस्टर गांधी से महात्मा गांधी

इस पत्र को लिखने के ६ मास बाद जब गांधी जी भारत आए तो वे गुरुकुल भी पधारे थे। वहां गुरुकुल की ओर से उन्हे जो मानपत्र ८ अप्रल सन् १६१५ को दिया गया था उसमे गांधी जी को भी पहले-पहल 'महात्मा' नाम से सम्बोधित किया गया था।

इस बीच अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने सन् १६१३ मे आपको अपने भागलपुर अधिवेशन का अध्यक्ष मनोनीत किया था वहां आप ने अपनी संस्था गुरुकुल के माध्यम से राष्ट्रभाषा हिन्दी के गौरव की अभिवृद्धि में महत्त्वपूर्ण योगदान किया था। सम्मेलन के अध्यक्ष पद से बोलते हुए आप ने हिन्दी की महत्ता के सम्बन्ध मे जो विचार प्रकट किए थे उन मे आपके राष्ट्रभाषा-प्रेम का उत्कृष्ट परिचय मिलता है। आप ने न केवल 'साहित्य-सम्मेलन' के मंच से हिन्दी की महत्ता प्रतिपादित की प्रत्युत राष्ट्रीय महासभा काग्रेस के अमृतसर मे हुए अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष पद से भी हिन्दी मे ही भाषण दिया था। आपके द्वारा लिखित 'कल्याण मार्ग का पथिक' नामक रचना आत्मकथा साहित्य की एक अभूतपूर्व निधि है। अपने जीवन के उत्तरकाल में आप शुद्धि-आन्दोलन के समर्थक हो गए थे और इसी कारण अब्दुल रशीद नामक एक धर्मान्ध मुस्लिम युवक ने २३ दिसम्बर सन् १६२- को, जब आप डबल निमोनिया से अस्वस्थ थे, तीन गोलियो का निशाना बनाकर आपके जीवन की बलि ले ली। 'दिवगत हिन्दी सेवी' से साभार

आयसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No. 32387/77 Post in N D P.S O on 16 17 2 89 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३९

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली के १०४वें वार्षिकोत्सव पर भाषण प्रतियोगिताएँ

शुक्रवार, दिनाक २४ फरवरी १९८९ मध्याह्न १ बजे लालकिला मैदान में

कालेज स्तर के छात्र/छात्राओ के लिए		स्कूल स्तर के छात्र/छात्राओ के लिए
भारतीय राजनीति और नैतिकता	—विषय—	राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दी आवश्यक
पांच सौ रुपये	प्रथम पुरस्कार	तीन सौ रुपये
तीन सौ रुपये	द्वितीय ,,	दो सौ रुपये
दो सौ रुपये	तृतीय ,,	एक सौ रुपये
एक सौ रुपये प्रत्येक	दो-दो प्रोत्साहन	पचास रुपये प्रत्येक

- दिल्ली स्थित प्रत्येक कालेज/स्कूल से केवल एक छात्र/छात्रा भाग ले सकता है। भाषण का समय केवल पाच मिनट होगा।
- सभी प्रतियोगियो को वैदिक साहित्य, आकर्षक प्रशस्ति-पत्र तथा मार्गव्यय दिया जायेगा।

प्रथम पुरस्कृत छात्र छात्रा के कालेज तथा स्कूल को शील्ड प्रदान की जायेगी।

प्रतियोगी अपना नाम पिता का नाम, कक्षा, विद्यालय, घर का पता अपने विद्यालय के प्रधानाध्यक के माध्यम से शीघ्र भिजवाय।

निवेदक—मूलचन्द गुप्त मन्त्री आर्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली ६ दूरभाष २३७४४०

सेवा में—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली न०१७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

ओ३म्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

ऋषि-बोधांक

मूल्य एक प्रति २)
वार्षिक २५)

रविवार ५ मार्च १९८९
फाल्गुन—वि० २०४५

वर्ष १२ अंक १७
दयानन्दाब्द—१६४

दयानन्दः स्वामी

स वेदज्ञानांशून् दिशि दिशि किरन् भास्कर इव,
विनेता सञ्जातः सकलजगतां धर्मविषये।
य ईशस्यास्तित्वं मरणघटनातः प्रथितवान्,
दयानन्दः स्वामी यतिपतिवरोऽसौ विजयताम् ॥

जो भगवान् भास्कर के समान वेदज्ञानरूपी किरणों को दिग्दिगन्तरों में फैलाते हुए विशद धर्मक्षेत्र में सब धर्माचार्यों के नेता कहलाये, वे यतीश्वर महर्षि दयानन्द स्वामी शाश्वत विजय को प्राप्त करते रहें।

—आचार्य प० द्विजेन्द्र नाथ विद्यामार्त्तण्ड

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

स्वे स्वे कर्मण्यभिरत ससिद्धि लभते नर । स्वकर्मनिरत सिद्धि, यथा विन्दति तच्छृणु ॥
यत· प्रवृत्तिर्भूताना येन सर्वमिद ततम् । स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धि विन्दति मानव ॥

—गीता अ० १८, श्लोक ४५ ४६

प्रत्येक मनुष्य अपने उद्देश्य तक पहुचने की योग्यता रखता है। दासता के जूए में जिनको गर्दन है वे कभो भी आशा नहीं कर सकते कि उनमे से कभी भी कोई राजा बनेगा। अमरीका का एक बूट साफ करने वाला लडका भी आशा कर सकता है कि सम्भवत वह किसी समय अपने देश का राष्ट्रपति बन जाय।' ससार में कोई ऐसा जीव नहीं है जो अपने उद्देश्य तक न पहुच सके। मार्ग सबके लिए एक जसा है। उसकी कठिनताए और सुगमताएँ राजा और प्रजा, विद्वान् और मूर्ख सबके लिए एक जसी हैं। हाँ, भेद अपने-अपने कर्मों का है। गुसाईं तुलसीदास जी कहते हैं—

कर्मप्रधान विश्व रचि राखा।
जो जस करहि सो तस फल चाखा॥

'जैसी करनी वैसी भरनी'—यह नियम सबके लिए है तब अपने कर्त्तव्य के पालन करने से ही अपने उद्देश्य की ओर कदम उठ सकता है। उस वास्तविक कर्त्तव्य की पूर्ति से मनुष्य को रोकने के लिए इस ससार मे अनेक प्रलोभन हैं। एक-एक पग पर बीसो विषय जीवात्मा को अपनी ओर खीचते हैं और वह मोह मे फसकर पग पग पर ठोकर खाता है। जब इस प्रकार अनेक प्रलोभन रास्ते मे हो तो मनुष्य अपने उद्देश्य की ओर कसे चल सकता है? इसका आसान उपाय श्रीकृष्ण जी महाराज बताते हैं। अगर तुम अपने कर्तव्य के पूरा करने में दत्तचित्त होना चाहते हो तो सबसे पहले सम्पूर्ण आत्मज्ञान के तत्त्व को समझो। सारा जगत् कहा से आया? क्या इसके अन्दर स्वय बहने की शक्ति है? जड जगत् स्वय कसे बन सकता है? और फिर कैसे स्वय बिगड भी सकता है? इसलिए इसके अन्दर कोई चेतन शक्ति अवश्य काम कर रही है। जबकि हम सारे जड जगत् मे एक ही नियम का परिपालन होते देखते हैं तब हमें कोई सन्देह नही रहता कि यह चेतन शक्ति हर जगह व्यापक है। कोई सासारिक अवस्था उसकी उपस्थिति से खाली नहीं है। गुलाब के फूल को यदि सुन्दरता मिली है तो उसने उस सुन्दरता की रक्षा के लिए उसके चारो ओर काटों की बाड लगाई है। प्रभु ने हर वस्तु के अन्दर अपनी चेतनता का प्रकाश किया है। इसलिए जो बुद्धिमान् मनुष्य अपने कर्तव्य को समझ लेता है उसके लक्ष्य को सासारिक प्रलोभन बिगाड नही सकते। व्यापक परमात्मा की उपस्थिति को हर स्थान पर अनुभव करने वाला मनुष्य, प्रत्येक विषय को ठोकर से बच कर अपना कर्तव्य पूरा करता हुआ, सीधा अपने लक्ष्य की ओर चला जाता है। बड मार्ग में एक

(शेष पृष्ठ ३८ पर)

महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द सरस्वती को बोध शिवरात्रि के अवसर पर हुआ था। शिवरात्रि के अवसर पर आर्यसन्देश का यह ऋषि बोधांक पाठकों के हाथों में है। इसके माध्यम से आर्य जनता के सम्मुख, महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व से सबंधित विद्वानों के कुछ लेख प्रस्तुत किए गए हैं।

संसार में महापुरुष वे माने जाते हैं, जो अपने युग की परिस्थितियों के आधार पर विश्व को नया सन्देश देते हैं, अथवा सोई जनता को उनके पूर्वजों के महत्कर्मों का स्मरण दिलाते हैं अथवा कुछ नये आविष्कार करते हैं। ऐसे ही महापुरुषों में राम, कृष्ण, महावीर, गौतम बुद्ध, मोहम्मद पैगम्बर, ईसा मसीह, महात्मा गांधी, राजा राममोहन राय, महर्षि दयानन्द, महर्षि अरविन्द, कार्ल मार्क्स और न्यूटन आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती इन सबसे भिन्न इस अर्थ में हैं कि उन्होंने इस युग को कोई नया सन्देश अथवा आदेश नहीं दिया। उन्होंने स्पष्ट रूप से लिखा था कि मैंने संसार के सामने केवल उन्हीं बातों को रखा है जिनको ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त ऋषि मुनि मानते आए हैं। संसार में कोई छोटा सा भी काम कर देता है, तो वह यह कहते नहीं अघाता कि यह कार्य मैंने किया है, परन्तु यह उस ऋषि की महानता थी जिसने संसार का उपकार करने का सन्देश देने के बावजूद भी यही कहा कि मैं कोई नई बात कहने नहीं आया हूं। महर्षि ने अपने व्यक्तित्व को महान कार्यों से सर्वथा पृथक् रखा है। संसार में ऐसे अनेक लोग मिल जायेंगे जिन्होंने अपने आपको पुत्रकामना से अलग रखा हो, ऐसे भी मिल जायेंगे जिन्होंने धन की लिप्सा न रखी हो। ऐसे भी व्यक्ति मिलेंगे जिन्होंने पुत्र और धन दोनों की कामना पर विजय पा ली हो। पर संसार में ऐसे कोई न मिलेंगे जिन्होंने यश की कामना अर्थात् प्रसिद्धि की कामना पर भी विजय प्राप्त कर ली हो। संसार में ऐसे लोग मिलते हैं, जो बिना काम किए ही फोटो खिचवाते हैं, अखबार में नाम छपवाते हैं। उस ऋषि ने इस लालसा पर भी विजय प्राप्त कर ली थी। वह महर्षि, उसका व्यक्तित्व और कर्तृत्व वन्दनीय है। उसने इन तीनों कामनाओं पर विजय प्राप्त की थी। साथ ही पूरे देश में घूम-घूमकर सत्यधर्म का प्रचार प्रसार करने में, उसने अपने रक्त की एक-एक बूंद तक समर्पित कर दी। उसके मन में संसार उपकार की भावना सर्वोपरि थी। संसार के अनेक मतमतान्तरों का उदाहरण आपके सामने है। धर्म वही फैलता है जिसका प्रचार प्रसार करने वाले गली-गली, कूचे कूचे में घूमते हैं। बौद्ध धर्म दूर-दूर तक फैला क्योंकि इसके अनुयायी दूर-दूर तक गए, यहां तक कि राजकुमार और राजकुमारियों ने भी बौद्ध धर्म की दीक्षा लेकर अन्य देशों में जाकर अपने धर्म का प्रचार किया। ईसाई धर्म के मिशनरी शान्त भाव से अनथक रूप में दूर-दूर तक के देशों में जाकर अपने धर्म का प्रचार प्रसार करने में संलग्न हैं। यही कारण है कि संसार के अधिकांश देशों में यह धर्म फैला है। मुस्लिम धर्म भी, यह कहा जाता है कि २१वीं शताब्दी तक विश्व की २३ प्रतिशत जनसंख्या तक फैल जाएगा। यह सब धर्मप्रचारकों के भ्रमण से होता है।

हम आदि शंकराचार्य की बारहवीं शताब्दी

मना रहे हैं। आप जरा उसके जीवन पर गौर करके देखिए। केरल के कालडी ग्राम मे उत्पन्न वह बालक इस देश के उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम सभी भागो तक गया—चारो सुदूर कोनो मे शकराचार्य पीठो की स्थापना की। इसकी एक और विशेषता है कि उत्तर भारत की पीठ पर दाक्षिणात्य पण्डित शकराचार्य होगा और दक्षिण मे उत्तर भारतीय। राष्ट्रीय एकता एव अखण्डता की कितनी महान कल्पना उसने की थी।

इसी प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती भी कभी एक स्थान पर नही टिके। आर्यसमाज के प्रचार-मे उनकी इस घुमन्तु प्रवृत्ति का बहुत बडा योगदान था। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश मे स्वय भी सन्यासियों को घूम-घूमकर वेदप्रचार करने की प्ररणा दी है।

महर्षि कभी भी सत्य, न्याय एव दृढता के पथ से विचलित नहीं हुए। उन्होने कभी भी इस बात की परवाह नही की कि कोई क्या कह रहा है। उन्होने पूरी शक्ति और सामर्थ्य से सदेव सत्य का ही प्रतिपादन किया। उन्हे कोई लोभ न था। उन्हे किसी धन दौलत की परवाह न थी। वे न्यायपथ पर सदा बढते रहे। उन्हें काटों का माग ही पसन्द था। वे अपूर्व धर्य के धनी थे। उनके जीवन काल में उनके दुश्मन कम न थे, उनको जहर पिलाने वाले लोग थे उन पर ईंट पत्थर बरसाने वाले लोग थे, उनके चरित्र पर उगली उठाने वाले लोग थे, पर उस धुन के पक्के सच्चे सन्यासी ने कभी अपने चेहरे पर घबराहट न आने दी। उसने कभी धीरज नही खोया। आज लोग छोटी-छोटी बातो पर विचलित हो जाते हैं।

पजाब प्रान्त मे सर्वप्रथम और सर्वाधिक आर्य समाज का प्रचार प्रसार हुआ। इसका मुख्य कारण था कि वहा के लोग आतिथ्य प्रिय थे। वे उपदेशको का सम्मान करते थे। आज भी हमे अपने उपदेशको का मान सम्मान तथा आतिथ्य करना चाहिए। उपदेशको, सन्यासियो को भी एक स्थान पर न ठहर कर, घूम घूम कर वेद प्रचार में अपना योगदान करना चाहिए।

इस बोध पर्व पर आओ हम उस ऋषि को स्मरण कर जिसने कहा था—'मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य को जानने वाला है। तथापि अपने प्रयोजन सिद्धि हट दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड असत्य मे झुक जाता है। किन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नही रखी है, और न ही किसी का मन दुखाना अथवा किसी की हानि करना हमारा तात्पर्य है। किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग कर क्योकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नही है।'

महर्षि के ये उद्गार स्पष्ट करते हैं कि उसने मानवकल्याण के लिए ससार के सामने वही बात रखी, जिनकी उन्होंने जीवन भर खोज की। वे ससार को उस मार्ग पर ले जाना चाहते थे जिसमें मानवमात्र का कल्याण निहित हो।

हम महर्षि को सामाजिक क्राति के प्रणेता के रूप में देखते हैं। विद्वत्ता के क्षेत्र में भी जो कार्य उन्होने किया उसका स्थान निर्विवाद रूप से सर्वोपरि है। वैदिक वाङमय के जिस स्वरूप को जटिल माना जाता है, महर्षि उनके यथार्थवेत्ता थे। ससार के इतिहास मे ऐसा दिव्य पुरुष मुश्किल से मिलेगा जो शारीरिक, बौद्धिक एव आध्यात्मिक धरातल पर एक साथ समान ओज और तेज को लेकर प्रस्तुत हुआ है।

ऋषि बोधोत्सव पर हम उस ऋषि का स्मरण करते हैं जिसने बाईबिल, कुरान आदि ग्रथो का सूक्ष्म एव गहन अध्ययन किया था, जिसने भारतीय दर्शन पर तो चिन्तन किया ही था, उनकी निर्मिति के इतिहास की खोज पर भी अनुसधानात्मक लेखनी चलाई थी, जिसने विभिन्न दर्शनों एव धर्मशास्त्रो की गहराई मे उतरकर उनका बौद्धिक विश्लेषण किया था, जिसने मनुष्य को अन्ध परम्पराओ तथा रूढियो से मुक्त कराया था। □

महर्षि दयानन्द का उपकार

आनन्द सुधासार दया कर पिला गया।
भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया॥
डाला सुधार वारि बढ़ी बेल मेल की।
देखो समाज फूल फबीले खिला गया॥
काले कराल जाल अविद्या अधर्म के।
विद्या-वधू को धर्म्म-धनी से मिला गया॥
ऊचे चढ़े क्रूर कुचाली गिरा दिये।
यज्ञाधिकार वेद पढ़ों को दिला गया॥
खोली कहां न पोल ढके ढोंग ढोल की।
संसार के कुपंथ मतों को हिला गया॥
'शंकर' दिया बुझाय दिवाली को देह का।
कैवल्य के विशाल वदन में विला गया॥

—कविराज प० नाथूराम 'शंकर' शर्मा

आर्यसमाज के संस्थापक

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत

सत्यार्थप्रकाश

"मैंने सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ इसलिए लिखा कि आप लोग सत्य और असत्य का निर्णय कर सकें।"

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

विभिन्न नेताओं के विचार—

❋ सत्यार्थप्रकाश मेरे लिए ही नहीं बल्कि संसार भर के लिए सच्चा प्रकाश है। —महात्मा गांधी

❋ सत्यार्थप्रकाश की विद्यमानता में कोई धर्मावलम्बी अपने मत की शेखी नहीं मार सकता। —वीर सावरकर

❋ सत्यार्थप्रकाश जैसा सुधारक दूसरा ग्रन्थ मैंने नहीं पढा। —डॉ० राजेन्द्र प्रसाद (भू० पू० राष्ट्रपति)

❋ ऋषि दयानन्द मेरे गुरु हैं। गुरुदेव रचित सत्यार्थप्रकाश मेरे जीवन मे प्रकाश देने वाले सूर्य के समान है। —ला० लाजपत राय

❋ मैंने भारत में आकर सच्चे हिन्दू धर्म का परिचय सत्यार्थप्रकाश के स्वाध्याय से पाया है। क्योकि धर्म से भटकने वालों के लिए यह एक पथप्रदर्शक है। —पादरी सी एफ एन्ड्रयूज

❋ मैं पहला व्यक्ति हूगा जो सत्यार्थप्रकाश के लिए बलि दूगा मै सिख होते हुए स्वामी दयानन्द का सेवक हू और यदि कोई सकट हुआ तो सत्यार्थप्रकाश की पक्तियाँ मेरे खून से लिखी जायेगी। —बाबा मिल्खासिंह

❋ ऋषि दयानन्द महान् आत्मा थे, उनका ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश उनके विचार स्वातन्त्र्य का उज्ज्वल उदाहरण है। उन्होंने किसी पर झूठा लांछन नहीं लगाया है। —बहूर बक्स

स्वामी दयानन्द : एक संन्यासी योद्धा

—श्री मदनगोपाल

अनुवादक डा० धर्मपाल आर्य

१९५० के मध्य में जब प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की शताब्दी मनाये जाने की योजना बन रही थी, उस समय एक वैदिक विद्वान् ने १८५७ के गदर से सम्बन्धित लेखों का अध्ययन कर के यह निष्कर्ष निकाला कि महर्षि दयानन्द सरस्वती (१८२५-८३) ने इस १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में बड़ा ही सक्रिय योगदान दिया था। इन विद्वान् का नाम है—स्वामी वेदानन्द सरस्वती, जिन्होंने १९५४ में स्वामी विरजानन्द की जीवनी लिखी। इसमें उन्होंने कहा है कि १८५५ में स्वामी पूर्णानन्द में महर्षि दयानन्द को धार्मिक कार्यों की प्रेरणा देने के साथ-साथ यह परामर्श दिया था कि वह मथुरा में प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द जी महाराज से मिले। स्वामी दयानन्द ने मथुरा जाने के बजाय मध्य भारत में भ्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। यह वही स्थान थे जहां पर बाद मे ब्रिटिश राज्य के विरुद्ध विद्रोह हुआ। स्वामी वेदानन्द ने लिखा है कि यह विचारधारा सम्भवत लोगों को सही न लगे, पर इसको एकदम गलत भी नही कहा जा सकता।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया था अथवा नहीं, यह आर्यसमाज के क्षेत्र मे विवाद का विषय है। इस विषय पर कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित हुई। कुछ लोग इस विचारधारा का विरोध करते हैं कि स्वामी दयानन्द ने स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया था जबकि कुछ दूसरे इस विचारधारा का पूर्णतया समर्थन करते हैं। जो लोग यह कहते हैं कि स्वामी दयानद ने इस संग्राम मे भाग नहीं लिया था। उनकी दलील यह है कि १८७० तक दयानन्द केवल धार्मिक कार्यों से सम्बन्धित रहे और उन्होने स्वय को राजनीति से दूर रखा। इस विचारधारा को इस आधार पर सही नहीं माना जा सकता कि उस समय स्वामी दयानन्द की आयु ३२ वर्ष थी। और यह एक ऐसी आयु है जब व्यक्ति की भावनाए और विचारधारा विद्रोहात्मक होती है। और ऐसे मामलो में सक्रिय भाग लेने की व्यक्ति की रुचि होती है। यह बात एक और तथ्य से सिद्ध हो जाती है कि बाद के वर्षों में महर्षि दयानद ने स्वदेशी राज्य और स्वराज्य की बात को प्रचारित किया है, उन्होंने नमक कर का भी विरोध किया था। उन्होने राष्ट्रीय भाषा की बात कही थी, उन्होने स्त्री शिक्षा पर बल दिया तथा अस्पृश्यता का विरोध किया। इनसे यह स्पष्ट है कि भले ही वह धार्मिक नेता थे पर वह राजनीति से अछूते नहीं थे। वस्तुत वह दूरदृष्टि वाले व्यक्ति थे, उनकी विचारधारा ने बाद मे चलकर महात्मा गांधी के लिए भी दिशा निर्देशन का कार्य किया। उस समय विदेशी राज्य का विरोध हो रहा था और दयानन्द जैसा व्यक्ति इस विचारधारा से अप्रभावित नही रह सका।

महर्षि दयानन्द के प्रारम्भिक जीवन सम्बन्धी हमारा ज्ञान उनके उस भाषण पर आधारित है, जो उन्होंने १८७५ में पूना मे दिया था और बाद में अन्य १४ भाषणों सहित मराठी में छपा था।

महर्षि दयानन्द ने अपनी जीवनी से सम्बन्धित ३ लेख हिन्दी में लिखवाये थे। इन लेखो के लिए १८७९ में थियोसोफिस्ट सोसायटी के अध्यक्ष कर्नल एच० एस० अलकाट ने प्रार्थना की थी। यह लेख अंग्रेजी मे अनूदित किये गये और सोसायटी के पत्र थियोसोफिस्ट के अक्तूबर १८७९, दिसम्बर १८७९ और नवम्बर १८८० मे प्रकाशित हुए थे। सम्भवत महर्षि दयानन्द अपनी जीवनी को धारावाहिक रूप से लिखते, पर इसे बन्द कर दिया गया क्योकि उनके थियोसोफिस्ट सोसायटी से बाद मे चलकर सम्बन्ध खराब हो गये थे।

यह कहा जाता है कि महर्षि दयानन्द अप्रैल १८५६ से कानपुर इलाहाबाद के निकट क्षत्रो मे देखे गये। वह जनवरी, फरवरी १८५७ में इलाहाबाद में थे और मार्च १८५७ में गढमुक्तेश्वर में मार्च २६, १८५७ से नवम्बर १८६० तक यह कहा जाता है कि वह नर्मदा के किनारे-किनारे इसके स्रोत अमरकण्टक तक गये। १८६० मे वे स्वामी विरजानन्द के पास पहुचे थे। मार्च १८५७ से नवम्बर १८६० तक की स्वामी दयानन्द की चुप्पी ने विद्वानो के अन्दर यह उत्सुकता जागृत की और उन्हे यह सोचने के लिए प्रेरित किया कि वे १८५७ के स्वतन्त्रता सग्राम से सम्बन्धित थे।

उन्नीस वर्ष पश्चात् स्वामी वेदानन्द सरस्वती ने अपनी पुस्तक का दूसरा सशोधित एव परिवर्धित सस्करण प्रकाशित कराया। इसमें उन्होंने श्री मीर मुश्ताक के फारसी में लिखे हुए सर्वखाप पचायत के निर्णयों को परिशिष्ट के रूप मे दिया। इसमें उन्होने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि स्वामी जी स्वतन्त्रता सग्राम मे सक्रिय रूप से भाग ले रहे थे। सर्वखाप पचायत का मुख्य कार्यालय सोरम मुजफ्फनगर मे था। इस पचायत में मथुरा से प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द को भी बुलाया गया था। उन्होने चुने हुए लोगो की इस बैठक मे राष्ट्रीय स्वतन्त्रता कैसे प्राप्त करें इस विषय पर परामर्श दिया था। लगभग इसी समय सत्यप्रिय शास्त्री की भारतीय स्वतन्त्रता के सग्राम मे आर्यसमाज का योगदान प्रकाशित हुई थी। उसमें उन्होने दयानन्द के योगदान की बात लिखी है। श्री पिण्डीदास ज्ञानी ने भी १८५७ के स्वतन्त्रता सग्राम में स्वराज्य प्रवर्तक महर्षि दयानन्द का क्रियात्मक योगदान प्रकाशित कराया।

१९७० में पण्डित दीनबन्धु 'योगी का आत्मचरित्र" ३८ वर्षों का अज्ञात जीवन प्रकाशित हुआ इसमें यह दावा किया गया है कि महर्षि दयानन्द ने १८५७ के युद्ध मे भाग लिया था। यह महर्षि दयानन्द के उन आत्मचरितात्मक टिप्पणियो पर आधारित है जो उन्होने अपने दर्जनो प्रशसको को बगाल प्रवास के समय लिखाई थी। उन्होने यह भी कहा था कि यह सब उनके जीवन काल मे प्रकाशित नही होना चाहिए। यह टिप्पणिया बगाली भाषा मे लिखी हुई थीं और श्री दीनबन्धु ने यह दावा किया है कि उन्होने इन सब टिप्पणियो को खोज निकाला है।

इस विवरण के अनुसार १८५५ में दयानन्द ने माउण्ट आबू से हरिद्वार के लिए अपनी यात्रा प्रारम्भ की। वे अजमेर, जयपुर, दिल्ली, मेरठ होते हुए गए। वह जहां भी कही ठहरे बाजार मे, धर्मशाला में स्नान घाट पर अथवा मन्दिर में उन्होने सब जगह यही पाया कि लोग कह रहे थे कि अंग्रेज भारत को राहु और केतु की तरह ग्रस रहे हैं। दिल्ली में एक युवा ने साधुओ पर कटाक्ष करते हुए कहा कि यह लोग भारत की दशा को देखते हुए भी केवल अच्छे भोजन और अच्छे रहन सहन मे ही रुचि रखते हैं। दयानन्द को बाद में पता लगा कि यह युवा व्यक्ति हाथरस के जिमींदार दयाराम का पौत्र था, जो अंग्रेजो के विरुद्ध लडाई मे मारा गया था और जो क्रांतिकारी राजा महेन्द्रसिंह का पूर्वज भी था। दिल्ली मे लालकिला के सामने एक महाराष्ट्रियन साधु ने दयानन्द को सलाह दी कि वह हरिद्वार में जाकर अपने आपको पवित्र करे तथा देश की रक्षा के लिए कार्य करे। उस साधु ने बताया

कि वह भी उन सैकड़ों साधुओं मे से एक है जो इसी उद्देश्य को लेकर सारे देश में घूम रहे हैं। बाद में २५० साधु दिल्ली से मेरठ, बैरकपुर और बेलूर की ओर गये। इन गतिविधियों के लिए केन्द्रीय व्यक्ति दिल्ली के योगमाया मन्दिर का एक पुजारी त्रिशूल बाबा था। यह साधु अपने हाथ मे कमल का प्रतीक लेकर चल रहे थे और साधारण लोगो के बीच मे रोटियां लेकर चलते थे। इस विद्रोह के लिए मई ३१ निश्चित की गई थी पर दुर्भाग्यवश मगल पाण्डे ने समय से पूर्व २१ मार्च को अपनी कार्यवाहियां प्रारम्भ कर दी थी।

उपर्युक्त टिप्पणियो से यह भी पता लगता है कि वैष्णव लोगो ने इस कार्य मे साधुओं के सहयोग का विरोध किया था। उनका कहना था कि मन्दिर देवताओं के स्थान हैं। यहा पर केवल देवताओं की पूजा होनी चाहिए। किसी देश, समाज अथवा राष्ट्र की नही।

पुन हरिद्वार मे दयानन्द ऐसे लोगो के सम्पर्क में आये जिन्होने १८५७ के सग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। बाद में हार के पश्चात् कुछ नेताओं ने नेपाल में शरण लेने का प्रयास किया था, जहा उनको शरण नही मिल सकी थी। दयानन्द धनुषकोटि, कन्याकुमारी और रामेश्वर भी गये जहा वह साधुओं के एक ऐसे वर्ग से मिले जिनका कहना था कि वह दिल्ली के योगमाया मन्दिर से आये हैं। दयानद ने उनमें से एक को पहचान भी लिया था। यह नाना साहब थे। दयानन्द के कहने पर उसने सन्यास लिया और स्वामी दिव्यानन्द बनकर दयानन्द के राज्य मोरवी मे गये जहा पर वह मृत्युपर्यन्त एक धनी व्यक्ति के साथ वेश बदल कर रहे। उनकी स्मृति मे एक बहुत बडा स्मारक बनाया गया, जिसके लिए बिठूर के मन्दिर से धन प्राप्त हुआ था।

दीनबन्धु का कहना है कि बगाली भाषा में प्राप्त टिप्पणियों को पहले प्रकाशित नही किया जा सकता था और उन्हें १८८३ मे दयानन्द की मृत्यु के पश्चात् भी इनको प्रकाशित नही किया जा सका क्योंकि सभी लेखक ब्रह्मसमाजी थे और वह सभी दयानन्द से द्वेष रखते थे। यह बात उल्लेखनीय है कि दयानन्द को ब्रह्मसमाजियो ने बगाल मे बुलाया था। जब दिसम्बर १८७३ मे वह कलकत्ता मे थे, तब वह देवेन्द्र नाथ टैगोर और केशवचन्द्र सेन से मिले। केशवचन्द्र सेन दयानन्द से बहुत अधिक प्रभावित हुआ और इच्छा प्रकट की कि यदि दयानन्द अग्रजी जानते तो वह उन्हें ब्रिटेन मे ले जाते। दयानन्द ने कहा कि काश केशवचन्द्र सेन सस्कृत जानते और वह पश्चिम का अन्धानुकरण न करते। दयानन्द ने सेन की सलाह मानकर अपना सारा कार्य सस्कृत की जगह हिन्दी में करना शुरू कर दिया था।

बाद के वर्षो में दयानन्द और ब्रह्मसमाज मे भेद इतने अधिक बढ गये थे कि ब्रह्मसमाजियो ने दयानन्द को लाहौर मे बुलाया पर उनके भाषणो का बायकाट किया और दयानन्द के रहने की व्यवस्था भी एक मुस्लिम प्रशासक के घर करनी पडी। यह भेद इतने ज्यादा बढ कि लाहौर मे ब्रह्मसमाज के सस्थापक श्री दयालसिंह मजीठिया ने लिखा कि आर्यसमाज के सदस्यो को उनके ट्रस्ट तथा अन्य सस्थाओं से निकाल बाहर किया जाये।

फिर भी दयानन्द के बहुत से बगाली प्रशसक थे और यह उल्लेखनीय है कि दयानन्द की जीवनी लिखने वालो मे देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय थे, जिन्होने दयानन्द चरित्र (१८९६) आदर्श सुधारक दयानन्द और विरजानन्द चरित्र लिखे। मुखोपाध्याय ने विभिन्न स्थानो की यात्रा करके ऐसी सामग्री एकत्रित की थी जो बाद के जीवनी लेखक श्री घासीराम के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुई। श्री घासीराम ने दयानन्द की जीवनी मुख्यतया मुखोपाध्याय और प० लेखराम की उर्दू कृति पर आधारित की है। दीनबन्धु के इस दावे को कि

दयानन्द के बंगाली प्रशंसकों ने कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणियां लिखी थी, इसको असम्भव नहीं माना जा सकता। उन्होंने बंगाली में जो इधर-उधर टिप्पणियां उपलब्ध थीं। उन्हीं के आधार पर दयानन्द की जीवनी लिख दी। १८५७ से १८६० तक के सम्बन्ध में दीनबन्धु का कहना है कि स्वामी जी जनवरी, फरवरी १८५७ में सम्बल और मुरादाबाद में थे और गढमुक्तेश्वर में मार्च १८५७ में थे। वह कानपुर जून ५ को पहुंचे। मसवकर घाट जून २२ को और कानपुर और इलाहाबाद के बीच में वह घूमते रहे। मई, जून, जुलाई १८५७ में वह मिरजापुर में थे। जुलाई मे बिठूर में और सितम्बर में विन्ध्याचल मे। नवम्बर में वह चन्दनगढ और बनारस में थे। उनका कहना है कि इसके बाद भी वह रीवा जिले में नर्मदा के स्रोत तक पहुंचे थे। रीवा में उस समय बघेल सरदार का राज्य था। रीवा की फौजों ने नवम्बर, दिसम्बर १८५७ में विद्रोह किया।

दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में मूर्ति पूजा के सम्बन्ध में लिखा है कि १८५७ में जब बघेल बिठूर के आसपास रहते थे, उन्होने अंग्रेजों का विरोध किया और अंग्रेजों ने उनके मन्दिरों पर बम बरसाये। "तुम्हारी मूर्तियां बघेलों को बचाने के लिए उस समय क्या कर रही थीं। वह मक्खी भी नही मार सके।" दीनबन्धु का कहना है कि दयानन्द द्वारा यह विवरण ऐसा लगता है जैसे उनकी स्वयं की साक्षी हो। उन्होने यह भी कहा है कि दयानन्द लगभग उन्हीं स्थानों पर घूमे जहां पर उस समय या कुछ बाद में भीषण युद्ध हुआ। यह विवाद आज भी चल रहा है कि महर्षि दयानन्द ने स्वतंत्रता संग्राम के उस प्रथम दौर मे भाग लिया था अथवा नहीं। इस लेख में ऊपर दिए गए ऐतिहासिक तथ्य यह सिद्ध करते हैं कि दयानन्द ने इस पहली लड़ाई मे सक्रिय योगदान दिया, उन्होने लोगों को प्रेरणा दी तथा भले ही भारतीय इस पहली लड़ाई में हार गए हों पर उनके अन्दर एक ऐसा विश्वास जागृत हो गया था कि वह अंग्रेजों को अवश्य उखाड फकेंगे। दयानन्द ने सर्वत्र स्वराज्य को ही अच्छा बताया और बाद मे हमें स्वराज्य मिला भी। महात्मा गांधी को मार्ग दिखाने वाले वस्तुत दयानन्द ही थे।

स्टेट्समैन, ६ जून, १९८५

—महर्षि दयानन्द हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियो मे, सुधारको मे, और श्रष्ठ पुरुषो मे एक थे। उनका चरित्र मेरे लिए ईर्ष्या का विषय है। उनके जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान पर बहुत अधिक पडा है।

—महात्मा गांधी

महर्षि दयानन्द सरस्वती के इतिहास विषयक मन्तव्य और आर्यसमाज

—डा० सत्यकेतु विद्यालंकार

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रंथो में जो अनेक इतिहास विषयक मन्तव्य प्रतिपादित किए हैं, उनमें मुख्य निम्नलिखित हैं—

१ सृष्टि के प्रारम्भ से पाच सहस्र वर्ष पूर्व समय पर्यन्त पृथिवी पर आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य रहा। यह दशा स्वायम्भुव मनु से शुरू कर पाण्डव राजा युधिष्ठिर के समय तक रही।

२ जितनी भी विद्या, संस्कृति, विज्ञान व मत ससार में फैले, वे सब आर्यावर्त (भारत) से ही प्रसारित हुए। प्राचीन समय मे सर्वत्र वैदिक धर्म का प्रचार था या अन्य देशो के निवासी ऐसे मतो के अनुयायी थे, जिनका प्रादुर्भाव वैदिक धर्म से हुआ था।

३ महाभारत युद्ध व कौरव पाण्डवो का काल अब से लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व था। स्वाम्भुव मनु से युधिष्ठिर तक जो राजा भारत में हुए, उनका इतिहास महाभारत आदि ग्रन्थो मे लिखा है। युधिष्ठिर के पश्चात अनेक राजवंशो ने भारत के विविध प्रदेशो पर राज्य किया। इनमें दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) के राजाओं की वंशावली महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश में दी है, जिसके अनुसार बारहवी सदी के अन्तिम भाग मे दिल्ली का राजा यशपाल था, जिसे परास्त कर शाहबुद्दीन गौरी ने भारत मे अपने प्रभुत्व का सूत्रपात किया था।

४ आधुनिक विद्वानों ने भारतीय इतिहास के जिस तिथि क्रम का प्रतिपादन किया है, वह महर्षि को स्वीकार्य नहीं था। आधुनिक विद्वान् वेदों का रचनाकाल २००० से १२०० ईस्वी पूर्व तक मानते हैं। पर महर्षि वेदो को अपौरुषय मानते थे। आधुनिक इतिहासकार जो महाभारत के काल को १००० ईस्वी पूर्व के लगभग मानते हैं, और राजा विक्रमादित्य के समय को जो पाचवीं सदी ईस्वी में मानते हैं, वह महर्षि को स्वीकार नहीं था।

५ प्राचीन आर्य सभ्यता की उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुचे हुए थे। मनुष्य की सभ्यता का आदि युग पाषाण युग था, जब कि वह जंगली और असभ्य जीवन व्यतीत करता था, धीरे धीरे मनुष्य सभ्यता के मार्ग पर अग्रसर हुआ, यह मत महर्षि को स्वीकार्य नही था। सभ्यता और संस्कृति के क्षेत्र में वे विकासवाद को नही मानते थे।

६ आर्यों का निवास स्थान त्रिविष्टप (तिब्बत) था, जहा से आकर वे अन्यत्र बसे। आर्य किसी जाति विशेष का नाम नहीं है, और न ही उससे किसी नसल का बोध होता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदो की अपौरुषेयता, एकेश्वरवाद, षड्दर्शनो मे अविरोध, क्षात्रधर्म आदि के सम्बन्ध मे जो मन्तव्य प्रतिपादित किये हैं, उन की पुष्टि के लिए आर्यसमाज के विद्वानों ने पर्याप्त परिश्रम किया है। पर उनके इतिहास विष-

यक मन्तव्यों के सत्यासत्य की जाच के लिए या उनके समर्थन मे अभी तक कोई महत्त्वपूर्ण कार्य नही किया गया। केवल प० भगवद्दत्त जी बी० ए० रिसर्च स्कालर तथा आचार्य रामदेव जी ने इस दिशा मे कार्य किया था। आचार्य जी ने 'भारत का प्राचीन इतिहास' तीन खण्डों मे लिखा था, जो महर्षि के मन्तव्यो के पूर्णतया अनुरूप था। इस इतिहास के दो खण्डो के लिखने में मैंने भी आचार्य जी को सहयोग दिया था। पर गत पचास वर्षो मे न डी० ए० वी० कालिजो ने इस सम्बन्ध में कोई कार्य किया, न गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय ने और न ही किसी आर्य प्रतिनिधि सभा व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने।

भारत के स्कूलों, कालिजो, और यूनिवर्सिटियो मे भारत का जो इतिहास पढाया जाता है, वह महर्षि के मन्तव्यो के अनुरूप नहीं है। आर्यसमाज की शिक्षण सस्थाओं मे भी ऐसा ही इतिहास पढाया जाता है। इसका परिणाम यह है, कि केवल उच्च शिक्षा प्राप्त लोगो मे ही नही, अपितु (शिक्षा के व्यापक प्रसार के कारण) सर्वसाधारण जनता मे भी इतिहास विषयक वे धारणाएँ बद्धमूल होती जाती है जो महर्षि के मन्तव्यो के विरुद्ध हैं।

गत वर्षो में विश्व के विविध देशो में पुरातत्व सम्बन्धी जो खोज हुई है, और प्राचीन साहित्य का जो विवेचनात्मक अध्ययन किया गया है, उससे बहुत से ऐसे सकेत व प्रमाण उपलब्ध हुए है जो महर्षि के इतिहास विषयक मन्तव्यो की पुष्टि करते हैं। उनसे ज्ञात होता है कि अत्यन्त प्राचीन काल में ईजिप्ट एशिया माइनर मध्य एशिया आदि सर्वत्र वैदिक धर्म का प्रभाव विद्यमान था और दक्षिण पूर्वी एशिया के देशो मे भी प्राचीन हिन्दू (आर्य) धर्म की सत्ता थी। विविध देशों में आर्य राजाओं के शासन के प्रमाण भी प्रकाश मे आये हैं। पर महर्षि के मन्तव्यो के सत्यासत्य के निर्णय के लिए अभी बहुत खोज व परिश्रम की आवश्यकता है। यह कार्य विद्वानो की एक ऐसी मण्डली द्वारा किया जाना चाहिए, जो जहा सस्कृत भाषा के पूर्णतया ज्ञाता तथा प्राचीन भारतीय साहित्य व इतिहास मे पारगत हो। वहाँ साथ ही जिनमे से अनेक फ्रेञ्च, जर्मन, रूसी, चीनी व तिब्बती आदि भी जानते हो। और जिन्हे ईजिप्ट, ग्रीस चीन एशिया माइनर, ईरान आदि देशो के प्राचीन इतिहास की भी समुचित जानकारी हो। ऐसे विद्वानो द्वारा गम्भीर रूप से शोध के अनन्तर ही महर्षि के इतिहास विषयक मन्तव्यो की पुष्टि कर सकना सम्भव होगा। क्या कोई आर्य शिक्षण सस्था इस महत्त्वपूर्ण कार्य को अपने हाथ मे लेने को उद्यत है।

दयानन्द ऋषि-राज

जो न हटा मुख फेर, बढा जीवन भर आगे,
जिसका साहस हेर, विघ्न, भय, सकट भागे।
सबल सत्य की हार, अनृत की जीत न होगी,
ऐसे प्रबल विचार, सहित विचरा जो योगी॥
उस दयानन्द ऋषि-राज का प्रकृत पाठ जनता पढे।
प्रभु 'शकर' आर्यसमाज का वैदिक बल गौरव बढे॥

—कविराज प० नाथूराम 'शकर' शर्मा

बगला भाषा में प्रणीत प्रथम जीवन चरित—

महात्मा दयानन्द

मूल लेखक—नगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय
प्रस्तुति—डा० भवानीलाल भारतीय

प्राक्कथन—

स्व० प० दीनबन्धु वेदशास्त्री ने सर्वप्रथम यह सूचना दी थी कि स्वामी दयानन्द का प्रथम बगला जीवनचरित कलकत्ता ब्रह्मसमाज के आचार्य श्री नगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय ने लिखा था जो १८८६ ई० मे (स्वामी के निधन के तीन वर्ष पश्चात्) प्रकाशित हुआ था। जब १८८८ के मई मास मे मैं आर्यसमाज बडा बाजार कलकत्ता के उत्सव मे गया तो मैंने समय निकालकर नेशनल लाइब्रेरी मे इस पुस्तक की तलाश की। उक्त पुस्तकालय के सस्कृत विभाग के अध्यक्ष डा० रामदुलार सिंह ने इस कार्य मे मेरी सहायता की और १०१ वर्ष पुरानी इस दुर्लभ पुस्तक की फोटोस्टैट कापी मुझे उपलब्ध हुई। मैंने इसका हिन्दी अनुवाद अपनी शोध छात्रा कु० नीरोत्तमा शर्मा से कराया है। आशा है दयानन्द के जीवनचरित विषयक शोध में रुचि रखने वाले पाठको को इस अलभ्य सामग्री को पढकर प्रसन्नता होगी। इस सामग्री के सतर्क अध्ययन से पाठकों को पता चलेगा कि बगला जीवन चरित लेखक चट्टोपाध्याय महाशय ने स्वामी दयानन्द के प्रत्यक्ष दर्शन कलकत्ता, बम्बई तथा लाहौर मे किए थे। एक प्रबुद्ध प्रत्यक्षदर्शी द्वारा लिखा गया श्री महाराज का यह जीवन एव कार्यवृत्तान्त प्रथम बार अध्येताओ के समक्ष आ रहा रहा है। आवश्यक पाद टिप्पणिया मैंने यथ स्थान दे दी हैं।

—भवानीलाल भारतीय

अधुनातन युग में भारतवर्ष मे कुछ नक्षत्र प्रज्वलित होकर कुछ काल के लिए नयन रजन (नेत्रो को लाभान्वित कर) करके अस्तमित हो गए थे। दयानन्द उनमें से एक उज्ज्वल नक्षत्र थे। शकराचार्य के बाद दयानन्द—दयानन्द का पाण्डित्य, दयानन्द की बुद्धिमत्ता, दयानन्द का धर्मोत्साह सब चीज असाधारण थी। इस असाधारण पुरुष पर भारत भूमि ने बहुत आशास्थापन किया था। किन्तु काल के कुठाराघात ने उस आशा को तिमिराच्छन्न कर दिया। उनमे शारीरिक सुदीर्घता, सुदृढता और विलक्षण सबलता थी। जैसा देह वैसा मन। भगवान् ने बलवान् देह मे बलवान् मन की स्थापना की थी। जसा कि एक महाराष्ट्रीय पण्डित ने कहा था, "दयानन्द पाच पण्डितो की सी विद्वता तथा पाच पहलवानो का सा बल रखते हैं।"

दयानन्द जब धर्मप्रचार के लिए कलकत्ता आये, तो चारो ओर हलचल मच गई। बालक, वृद्ध, स्त्री, सब उन्हें देखने तथा सुनने के लिए उमड पडे। उनकी तर्क-शक्ति और उनका शास्त्रीय ज्ञान देखकर लोग आश्चर्यचकित रह गए। उनके पास जाकर बहुत से धर्मजिज्ञासु अपने प्रश्नों का

उत्तर प्राप्त कर अपने आपको तृप्त अनुभव करते थे।

जैसे गुणी व्यक्ति ही गुणों को ग्रहण कर पाते हैं, वैसे दूसरे नहीं। स्वर्गीय श्री केशवचन्द्र सेन ने उन्हें अपने घर ले जा कर सम्मानित किया तथा प्रकाश सभा (सार्वजनिक सभा) मे उनके वचनो का श्रवण किया था। केशव बाबू के घर मे जिस दिन दयानन्द का प्रथम व्याख्यान सुना, उस दिन एक नई चीज के हम ने प्रत्यक्ष दर्शन किये। संस्कृत मे वे इतने सरल और इतने मधुर व्याख्यान दे पाते है, यह मुझे मालूम नही था। उन्होने इतनी सरल संस्कृत मे व्याख्यान दिये कि जो व्यक्ति महामूर्ख थे वे भी उनकी भाषा को सहज ही समझने लगे। मुझे और भी एक चीज आश्चर्य में डाल देने वाली थी। अंग्रेजी भाषा से अनभिज्ञ हिन्दू सन्यासी के मुह से धर्म और समाज के बारे में इतना उदार मत इससे पहले कभी सुनने को नहीं मिला था।

कुछ साल बाद बम्बई नगर मे आकर सुना कि दयानन्द वहा भी धर्म प्रचार कर रहे हैं। एक सम्भ्रान्त मित्र के साथ उनको देखने के लिए गया। देखा, अरब सागर के निकट एक गृह मे वे बैठे हैं। अनन्त सुनील सागर सामने प्रसारित था। सागर की तरंग दयानन्द के घर के निकट लहरा रही थी। हमने उनको अपना परिचय दिया। बहुत से लोग उन्हें घेर कर बैठे थे तथा अनेक विषयो पर प्रश्न कर रहे थे। दयानन्द निरन्तर हिन्दी मे प्रत्युत्तर दे रहे थे। सुना, दो दिन दो रात ऐसे ही प्रवृत्त रह कर वे जिज्ञासुओं के प्रश्नो की मीमांसा करते रहे हैं।

महाराष्ट्र के एक भद्र पुरुष कहने लगे— इनकी (पौराणिकों की सभी पौराणिक कहानी सत्य लगती है। दयानन्द उसी समय सतेज होकर बोले, "सब झूठ बात है।" जब वे कलकत्ता आए थे, सारी बातचीत व भाषण संस्कृत भाषा मे करते थे। बम्बई मे आकर देखा कि वे संस्कृत छोड़कर हिन्दी में व्याख्यान कर रहे हैं। इस बात का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा— "इस विषय में पहले उन की भूल थी। उनका उद्देश्य ही जब प्रचार है तब जिस भाषा मे बोलने से सर्व साधारण समझेंगे उसी भाषा में बोलना ही ठीक है।" एक और विषय मे उनमें परिवर्तन देखा। उनका वो सन्यासी वेश नहीं है। एक लाल वस्त्र धारण करके वे बठे हैं।

बम्बई नगर मे दयानन्द का आर्यसमाज देखा। देखा कि अनेक भद्र पुरुष एक साथ बैठे सम्भाषण और तर्क वितर्क कर रहे थे। एक दिन एक खुले स्थान में आर्यसमाज के जन (साधारण) अधिवेशन में मूर्तिपूजा और निराकार उपासना विषय पर अंग्रजी में एक भाषण होने के बाद अनेक शिक्षित, अंग्रेज, महाराष्ट्रीय, गुजराती अपनी अपनी भाषा मे सुविधानुसार उस भाषण की समालोचना करने लगे।

वार्ता के उपरान्त दयानन्द कहने लगे - यद्यपि मैं अंग्रेजी तो नही जानता फिर भी समालोचना को सुनकर भाषण का मर्म मेरी समझ में आ गया है। वे आहिस्ता आहिस्ता दस मिनट तक बात करते रहे और श्रोतृ वृन्द के समक्ष अपना भाव आश्चर्यजनक रूप से प्रस्तुत किया। इसी का नाम क्षमता है। सभा आरम्भ होने से पहले शायद किसी के साथ पूना गमन के बारे मे बातचीत कर रहे थे।

उन्होने कहा—"पूना रेलवे स्टेशन पर उतर कर देखा कि बहुत सारे लोग उनका इन्तजार कर रहे हैं। कुछ लोग एक हाथी पर सिंहासन लगाकर मुझे ले जाने के लिए आये हैं और प्राचीन सम्प्रदाय के लोग जो दयानन्द के विरोधी थे एक गधे को सजा कर उनकी अभ्यर्चना के लिए उपस्थित हुए थे। हाथी और गधा, दयानन्द के लिए ये दोनों ही वाहन उपस्थित थे। जो लोग हाथी लाए थे, वे उन के निकट जाकर बोले – "आप के लिए हाथी उपस्थित है। आप उस पर आरोहण करके नगर मे

चाहिए।" दयानन्द ने उत्तर दिया—"मैं गरीब सन्यासी हूं। हाथी पर सवारी करना मुझे शोभा नहीं देता। राजपथ पर सैकडों लोग पैदल चलते हैं अत मैं भी पैदल ही जाऊँगा। ऊँचे स्थान पर बैठने से ही यदि मानवृद्धि होती है तो वृक्ष के ऊपर जो कौए बैठे हैं, वे तो हम से भी ज्यादा माननीय हैं।" वे दिन भर पाव से पैदल पूना नगर मे गये। वहा पर हाथी और गधा दल में आपस मे मारपीट भी हुई। गधा दल के कई लोगो को राजदण्ड भी मिला।

देखो, बम्बई नगर मे दयानन्द को लकर एक बहुत बडा आन्दोलन शुरू हुआ है। यहा वहा उनके बारे मे बातचीत हो रही है। एक वेदज्ञ हिन्दू संन्यासी मूर्तिपूजा का प्रतिवाद करके निराकार की उपासना का समर्थन कर रहा है, जातिभेद के विरुद्ध है, बालविवाह और बालविधवा का प्रतिरोध कर रहा है, जो कि अग्रेजी जानता तक नहीं, पाश्चात्य ज्ञान जिसके पास तक नही फटका। उस से लोगों के मन में और भी आश्चर्य हुआ, हिन्दू समाज में ऐसा आन्दोलन इससे पहले कभी नही हुआ था।

देखो, बम्बई शहर में क्या पडित, क्या मूर्ख, क्या धनी, क्या निर्धन सभी प्रकार के लोग उनके सगठन मे शामिल हुए हैं। उच्च सम्प्रदाय के सुपण्डित व्यक्ति से लेकर बाजार में एक मूर्ख दूकानदार भी उनका अनुसरण कर रहे हैं। अपनी आँखों से देखा, बम्बई शहर में एक छोटा सा दुकानदार—"पूना से दयानन्द आ रहे हैं" यह सुन कर दुकान बन्द करके भी उन्हे रेलवे स्टेशन लिवा ने पहुचा। लगभग पचास शिष्य उन्हें लेने पहुचे।

और एक बार लाहौर मे दयानन्द के साथ साक्षात्कार हुआ। वहा पर देखा, वे हर वक्त ही धर्म जिज्ञासुओं द्वारा घिरे रहते हैं। आश्चर्यजनक पाण्डित्य और बुद्धिमत्ता द्वारा सबकी जिज्ञासा शात कर रहे हैं। यहां भी उनका सन्यासी का सा वेश देखा। उपासना विषय मे भाषण होगा, सुन कर एक दिन उनका भाषण सुनने के लिए गये। योग और भक्ति विषय को लेकर शास्त्रों के कई श्लोक उच्चारित कर रहे थे। व्याख्यान सुन कर बहुत लाभ हुआ। व्याख्यान के अन्त में उन्होंने कहा—"प्राणायाम द्वारा योगमार्ग का अवलम्बन किये बिना ब्रह्म लाभ नही होता। इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नही है। जो योग के अन्दर प्रवेश नही किये थे वे लोग धर्म मन्दिर के बाहर ही भ्रमण कर रहे थे।

बहुत दिन हुए दयानन्द ने इहलोक का परित्याग किया है किन्तु अभी तक उनकी एक भी जीवनी पुस्तक नही निकली है। अनैतिहासिक हिन्दू आज भी अपने प्रकृति गत विषय दोषो में सशोधन करना नहीं चाहते हैं। दयानन्द अपना जीवन वृत्तान्त हिन्दी भाषा में सक्षप मे लिख गये हैं। किसी देशीय समाचार पत्र मे यह प्रकाशित हुआ था। उसी का अग्रेजी अनुवाद थियोसोफिस्ट नामक एक पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। सुविख्यात जर्मन विद्वान् मेक्समूलर ने उसी अनुवाद को आधार बनाकर एक पुस्तक में दयानन्द की सक्षिप्त जीवनी प्रकाशित की थी। उस पुस्तक में किंग्सले, कोलब्रुक जैसी यूरोपीय महान् हस्तियो के साथ-साथ राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, दयानन्द सरस्वती भी शोभायमान हुए हैं। आधुनिक भारतवासी विशेषतया, बगवासियो के लिए बहुत गौरव की बात है।

दयानन्द अगर अमेरिका मे हुए होते तो उनकी मृत्यु के पश्चात् एक सप्ताह के भीतर उनकी जीवनी प्रकाशित हो जाती। परन्तु वे कई वर्ष पहले इहलोक का परित्याग कर चुके हैं। यह भाग्यहीन देश आज तक उनके बारे मे एक भी उपयुक्त जीवनी प्रकाशित नही कर पाया है। भाग्य से दयानन्द अपने बारे मे कुछ लिख गये, वर्ना हमें उनके बारे मे कुछ भी पता नही चलता।

दयानन्द लिखते हैं, मैंने काठियावाड प्रदेश के

मौरवी राजा के अधीनस्थ एक नगर में एक उच्च ब्राह्मण के घर जन्म लिया। मैं धर्मानुरोध से अपने माता पिता का नाम प्रकाशित करने का अनिच्छुक रहा। मेरे रिश्तेदार मेरे विषय में जानकर मुझे अपने घर ले जाने के लिए बाध्य करगे, उनके साथ मिलने से उनके पास भी रहना पड़ेगा। वास करने से अभाव मोचन करने पर मुझे अर्थ (द्रव्य) स्पर्श करना पड़गा। जिस पवित्र संस्कार (सुधार) काय के लिए मैंने अपना जीवन उत्सर्ग किया है, उसमें बाधा पड़ेगी।

मेरी अवस्था अभी पाच वर्ष की भी नही हुई थी कि मैंने देवनागरी का अक्षर ज्ञान शुरु कर दिया। मेरी जाति और वंश प्रथानुसार मुझे बहुत से वैदिक मन्त्र और भाषा को कण्ठस्थ करना था। आठ वर्ष की आयु मे मेरा यज्ञोपवीत होने से मैंने गायत्री प्रात और साय सध्या एव रुद्राध्याय सहित प्रारम्भ किया। यजुर्वेद की शिक्षा भी ग्रहण की। मेरे पिताजी शैव थे। इसलिए मुझे आयु से शिव-लिंग बना कर मूर्तिपूजा करना सिखाया गया। शैव जिस प्रकार उपवास करते हैं, मेरे पिता जी ने मुझे वैसे ही कराना चाहा। मेरी शास्त्र शिक्षा हानि की आशंका से मेरी माताजी ने उसमे आपत्ति की। तथापि पिताजी मुझे उपवासादि करने के लिए दृढ करने लगे। पिताजी और माताजी मे इस बात को लेकर सदा ही विवाद रहता था।

मैं इस समय संस्कृत की व्याकरण सीखा करता था। वेद के सब मन्त्र कण्ठस्थ करता एव पिताजी के साथ मन्दिर जाता था। मेरे पिताजी शिव की उपासना को सर्वश्रेष्ठ धर्म मानते थे। चौदह वर्ष की आयु से पूर्व ही मैंने यजुर्वेद सहिता और दूसरे वेदो के कई अंश एव शब्द रूपावली नामक एक संस्कृत व्याकरण ग्रथ कण्ठस्थ कर लिया था। इसी से लोगो के मन में यह धारणा हुई कि मेरी शिक्षा सम्पूर्ण हो गई है।

मेरे पिताजी महाजनी करते थे तथा जमींदारी अर्थात् नगर से राजस्व एकत्र करने तथा मजिस्ट्रेटी का काय करने से हमारा निर्वाह अच्छी तरह से होता था। पिताजी अब मुझ से मूर्तिपूजा करवाने के लिए जिद करने लगे तो उसी समय से मेरा कष्ट शुरू हुआ। एक अनुष्ठान की तैयारी करने के लिए मुझ से उपवास कराया गया। मैं रातभर जागरण करने के लिए पिताजी के साथ शिव मन्दिर गया। मन्दिर मे चार प्रहर का जागरण था। छ घण्टे जागने के बाद रात के समय देखा कि पुजारीगण मन्दिर के सेवक एव कई उपासक मन्दिर के बाहर आ कर सो रहे हैं। इस तरह सो जाने से पूजा का सब फल नष्ट हो जाएगा, यह सोच कर मैं ही जागता रह गया। देखा, पिताजी भी निद्रामग्न थे। तब मैं एकाकी चिन्तन करने लगा कि मेरे सामने वृषभवाहन देवता जिनके बारे मे यह वर्णित है कि वे परिभ्रमण करते हैं। आहार पान करते हैं, निद्रा मे भी जाते हैं, त्रिशूल भी धारण करते है, डमरू भी बजाते है और मनुष्य को अभिशाप भी दे सकते हैं, क्या ये वही महादेव हैं ? परमपुरुष परमेश्वर ! सोचते सोचते अपने भावना स्रोत को मैं और रोक नही सका। पिताजी को उठाकर उनसे प्रश्न किया कि ये शास्त्रो द्वारा प्रतिपादित वही भयकर महादेव है ? महादेव मूर्ति के सम्मुख ले जाकर फिर प्रश्न किया, पिता बोले, तुम ऐसा प्रश्न क्यो कर रहे हो ?" दयानन्द ने कहा, 'यह देव मूर्ति सर्वशक्तिमान् जीवन्त परमेश्वर है, मैं ऐसा मान नही सकता। क्योकि जिसके ऊपर से एक चूहा गुजर जाये और वह लेशमात्र भी प्रतिवाद न करके अपने आपको कलंकित करे।'

तत्पश्चात् दयानन्द कहते हैं—"मुझे मेरे पिता ने समझाने की चेष्टा की कि यह महादेव की मूर्ति शुद्ध सद्ब्राह्मण लोगो द्वारा प्रतिपादित होने से देवत्व को प्राप्त हुई है। उन्होने यह भी कहा कि वर्तमान कलियुग मे कोई भी शिव दर्शन का लाभ प्राप्त नहीं कर सकता। भक्तगण मूर्ति के अन्दर ही उसकी सत्ता की कल्पना कर सकते हैं।"

"इन सब बातों से मेरी तृप्ति नहीं हुई। कालान्तर में भूखा और थका हुआ होने के कारण मैं पिता जी की अनुमति लेकर घर चला गया। वहां पर उपवास भग न हो, इस विषय में पिता जी ने मुझे विशेष रूप से सावधान कर दिया। किन्तु घर आने पर माता जी ने कुछ भी खाने के लिए मुझे दिया, उसे बिना खाये मैं रह नहीं पाया। आहार के पश्चात मैं सोने के लिए चला गया। 'उपवास भग करके मैंने बहुत बडा पाप किया है, "पिता जी ने घर लौट कर मुझे यही समझाने की कोशिश की। किन्तु मूर्तिपूजा पर से मेरा विश्वास उठ चुका था। इस अविश्वास को गोपनीय रखकर मैंने सोचा कि विद्या उपार्जन के बिना और कोई रास्ता नहीं है। मैं उस समय वेद के निघण्टु, निरुक्त, पूर्व मीमासा एव कर्मकाण्ड का अध्ययन कर रहा था।

"मेरी छोटी दो बहन और छोटे दो भाई थे। जब मेरी उम्र सोलह साल की थी तब हमारे सबसे छोटे भाई का जन्म हुआ था।

'एक दिन रात मे चौदह वर्ष की एक बहन की मृत्यु हो गई। मेरे लिए यह पहला शोक था। मेरे हृदय पर गहरा आघात लगा। जब मेरे रिश्तेदार चारो तरफ बैठ कर रो रहे थे, तब मैं पाषाण मूर्ति की भाति खडा सोच रहा था—'इस ससार मैं जितने भी लोगो ने जीवन धारण किया है कोई भी मृत्यु के हाथ से बच नही पाएगा। मैं भी किसी भी क्षण उसके हाथो में पड सकता हू। तब मैं इस मृत्यु भय के निवारण के लिए कहा जाऊ? कहां गमन करने से मुझे निश्चय ही मुक्ति लाभ हो सकता है?

शव दर्शन करके बुद्धदेव की तरह दयानन्द के हृदय में भी एक चिन्ता स्रोत प्रबल वेग से बहने लगा। सोचते-सोचते दयानन्द ने अपने आपको एक प्रतिज्ञा मे बाध लिया। वो अपने आपसे कहने लगे— 'इस स्थान पर खडा होकर मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं मुक्ति की राह निकालूगा एव आत्म-धारणा का समाप्त करके मृत्यु यातना से अपने आपको बचाऊगा। उपवास प्रायश्चित ये सब कुसस्कार मैं त्याग दूगा।" किन्तु मैंने अपने मन की बात सबसे छुपा कर रक्खी।

कुछ समय पश्चात् मेरे चाचा जी की मृत्यु हो गई। वे एक सुपडित व्यक्ति थे और मुझे बहुत प्यार करते थे। 'इस ससार मे स्थायी कुछ भी नही है, मूल्यवान पदार्थ भी कुछ नही है। जिसके लिए मैं अपना यह जीवन यापन कर सकू।' मेरे मन मे यह भाव उत्पन्न हुआ।

मेरे माता पिता इस समय मेरा विवाह करवाने की सोच रहे थे। मैं विवाहित जीवन बिताऊंगा, यह सोचना भी मेरे लिए असम्भव था। बहुत कठिनाई से मैंने पिता जी से एक साल तक विवाह रुकवाने की बात कही। मैंने उनसे कहा "मैं काशी जाकर अधिकाधिक सस्कृत शास्त्र पढूगा" परन्तु इसके लिए मुझे अनुमति नही मिली। मेरे घर से तीन कोस दूर एक विद्वान् पण्डित के पास मुझे पढने भेजा गया। वहा पर कुछ समय रहकर मैं फिर घर लौट आया। घर आने पर देखा, सब मेरे विवाह के लिए तैयार थे। मेरी उमर तब इक्कीस वर्ष की थी और कोई उपाय न देखकर, मैंने विवाह बन्धन से दूर रहने की प्रतिज्ञा की।

"बहुत ही जल्दी मैं घर छोड कर भाग निकला। मेरे पलायन की खबर सुनते ही पिता जी ने कई अश्वारोही मेरे पीछे भेजे, पर वे मुझे पकड नहीं पाये। अश्वारोहियो के हाथ से निकल भागने के बाद मैं पैदल ही आगे बढा। रास्ते मे कुछ भिखारी ब्राह्मणो ने मेरे पास जो कुछ भी था छीन लिया। उन्होंने मुझे यह कहा कि इस ससार मैं मै जितना भी दान करूगा, मेरे उस त्याग के अनुसार दूसरे जन्म मे मेरा उतना ही मगल होगा।"

"कुछ काल बाद मैं सैल नामक एक नगर मे आ पहुचा। इस नगर मे लालाभक्त नाम के एक पण्डित के बारे मे मैं पहले से ही जानता था। यहा

पर एक प्रौढ ब्रह्मचारी थे। मैंने उनके सगठन मैं शामिल होने का फैसला किया।"

"दीक्षा के समय मैंने "शुद्ध चैतन्य" नाम प्राप्त किया, एव गेरुए वस्त्र धारण किये। इस नववेश में मैं ग्रहमदाबाद के निकटवर्ती कोट कागडा नामक एक छोटे से कस्बे मैं प्रविष्ट हुआ। वहा पर दुर्भाग्य वश मुझे मेरे परिवार से परिचित एक वैरागी मिला। मैं सिद्धपुर मेले मे जा रहा हूँ, यह सुनकर वैरागी ने मेरे पिता जी को खबर भेज दी। मैं कुछ अन्य छात्रो के साथ जब नीलकण्ठ के मन्दिर मैं पहुचा, उसी वक्त मेरे पिता जी मेरे सामने आकर उपस्थित हुए। मैंने बहुत अनुनय विनय की किन्तु उन्होंने कुछ नही सुना।

उनके साथ आये सिपाहियो के हाथ मैं कैदी की तरह ग्रहमदाबाद लौट ग्राया एव बडोदरा पहुच कर वहा कुछ काल वास किया। बडोदरा मैं "चैतन्य मठ" नामक मन्दिर मे कुछ सन्यासियो तथा ब्रह्मचारियो एव ब्रह्मानन्द स्वामी के साथ वेदान्त पर तर्क वितर्क किया। ब्रह्मानन्द के पास से मैंने जीवब्रह्म के बारे मैं बहुत अच्छी जानकारी प्राप्त की। बडोदरे मे एक बनारसी बाई वैरागी के स्थान मे मैं बडे-बडे पण्डितों से मिला। उनम से सच्चिदानन्द परमहस के साथ विशेष रूप से परिचय हुआ। उनके परामर्शानुसार नर्मदा के किनारे "चाणोद करनाली जाकर योगविद्या के बारे मे प्राकृत रूप से दीक्षित विद्वान् के साथ मैंने साक्षात्कार किया। वहा पर परमानन्द परमहस के पास वेदान्तसार, वेदान्त परिभाषा आदि ग्रन्थो का अध्ययन करने लगा।

उसके बाद योग शिक्षार्थी के रूप में दीक्षित होकर सन्यास आश्रम म प्रवेश के लिए मै व्याकुल हो उठा। छोटा होने से मेरी दीक्षा सम्बन्ध म कुछ बाधा रहने पर भ मुझे दीक्षित करके मेरे हाथ म दण्ड प्रदान किया गया। इस उपलक्ष्य मे मेरा नाम परिवर्तित होकर दयानन्द सरस्वती हुआ।

कुछ समय पश्चात् मैं चाणोद छोडकर व्यासाश्रम जाने से पहले योगानन्द के निकट जाकर योग शास्त्र का अध्ययन करने लगा।

तत्पश्चात् योग साधन सीखने के बाद योग की उच्चतम अवस्था लाभ करने के लिये ग्रहमदाबाद के निकटवर्ती स्थान पर पहुचा। वहाँ पर दो योगियो ने योगविद्या के शेष गुप्त विषय मुझे प्रदान किये।

मैं उसके बाद योग की कुछ नई प्रणालियाँ सीखने के लिए, राजपूताना के निकट ग्राबू पर्वत पर पहुँचा।

सन् १८५५ मे मैं हरिद्वार के "महामेला" म उपस्थित हुआ। वहाँ पर उस समय बहुत सारे साधु सन्यासी योग शिक्षा के लिए एकत्रित हुए थे।

उनके पास कुछ समय रहा, वहा पर मासाहारी ब्राह्मण देखे, उनम सर्वप्रकार की बुराइयाँ देखकर तथा उनके तन्त्रशास्त्र को सुनकर मे भय ग्रस्त हुआ।

मैंने तत्क्षण श्रीनगर के लिए प्रस्थान किया तथा केदारघाट नामक मन्दिर में वास करने लगा। यहा गगागिरि नामक एक साधु के साथ मेरा परिचय हुआ। उनके पास रहकर मैं दर्शन शास्त्र का अध्ययन और उसके सम्बन्ध मे विचार करता रहा। पूरे दो मास उस सन्यासी के साथ बिताने के बाद मे रुद्रप्रयाग चला गया तथा वहा से यात्रा करके मैं अगस्त्य मुनि के आश्रम मैं पहुचा। अगस्त्य आश्रम के उत्तर मे शिवपुरी मे सर्दी के चार महीने बिता कर फिर केदारघाट और वहा से गुप्तकाशी आ गया।

महाज्ञानी सिद्ध महात्मा लोगो के दर्शन के लिये दयानन्द ने हिमालय प्रदेश की बहुत सी जगहो पर भ्रमण किया। यह सब भ्रमण वृत्तात और आश्चर्य जनक घटनाए सभी वर्णन पूर्ण हैं। दुख की बात

(शेष पृष्ठ २३ पर)

ईश्वर पाप क्षमा नही करता

आयसमाज का यह पक्ष बहुतो के गले नही उतरता कि ईश्वर किए हुए पापो को क्षमा नही करता। ईश्वर जब दयालु है तब दयालु प्रभु दया न कर यह कहा तक उचित है ? भक्त लोग जब अपना जीवन भगवत पूजा म लगाते है तब क्या ईश्वर उनकी नही सुनता ? जब ईश्वर इतनी मेहरबानी भी नही करता तब उसको मानने से क्या लाभ ? इस प्रकार की शकाओ पर आयसमाज का उत्तर है—

—ईश्वर दयालु है और न्यायकारी भी न्यायकारी होने के नाते किसी अपराधी को छोड़ देना भी बाकी प्रजा के लिए एव स्वय जीव के भविष्य के लिए अहितकर व अन्याय है एक अपराधी को छोड़ने से बहुत से जीवो को उसके कारण जो कष्ट हुआ और होगा उसका प्रभाव न्यायकारी शब्द को व्यर्थ कर देता है। दयालु प्रभु सब जीवो को कितना कुछ प्रदान करता है यह उसकी दयालुता है। दुष्ट कर्मो का दण्ड देकर अपराधी पर भी ईश्वर की दयालुता है जिससे उस जीव का भविष्य अच्छा बन सकता है।

—ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना। ईश्वर की भक्ति का यह अर्थ कदापि नही कि उस भक्ति से ईश्वर की खुशामद होती है। निर्विकार प्रभु को किसी से कुछ आकाक्षा नही है। जब अपने सुधार के लिए प्रभु की स्तुति प्रार्थना उपासना की जाती है तब इन सबका लाभ निम्नानुसार है—

स्तुति ईश्वर के गुणो को प्रशसा करना स्तुति है। प्रशसा करना तब लाभकारी होता है जब उन प्रशसाओ मे वर्णित गुणो को अपने आचरण मे लाने की चेष्टा की जाय

ईश्वर की प्रशसा करना ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का प्रकाशन है। ईश्वर के गुणो को याद न करना कृतघ्नता है।

प्रार्थना—अपने पूरे सामर्थ्य से पुरुषार्थ करते हुए ईश्वर से सहायता की प्रार्थना करना ही प्रार्थना है। निठल्ले बैठकर प्रभु से प्रार्थना या याचना करना बेकार है। प्रभु प्रार्थना से मन मे घमण्ड नही आता। कर्तव्य कर्म के प्रति उत्साह बना रहता है। सफलता मे अभिमान और असफलता मे निराशा नही होती।

उपासना ईश्वर प्राप्ति के साधना की ओर प्रयास करते रहना उपासना है। अष्टागयोग (यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि) की साधना इसके अग है। जैसे सर्दी से ठिठुरते व्यक्ति को अग्नि के समीप जाने से शीत निवारण होकर सुख मिलता है वैसे ही परमेश्वर के सान्निध्य की प्राप्ति से सब दोष और दुःख छूटकर परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव की भाति जीव के गुण कर्म स्वभाव पवित्र हो जाते है।

— महर्षि दयानन्द सरस्वती की अनुभूति है कि परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिए। इनके फल जो हैं वे तो है ही परन्तु आत्मा का बल इतना बढता है कि वह पर्वत के समान महान दुःख पडने पर भी घबरायेगा नही अपितु सब को सहन कर जायेगा। ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना मनुष्य मे साहस धैर्य व कर्तव्य बुद्धि का सृजन करती है जो जीवन की उन्नति के सवश्रेष्ठ गुण माने गये है।

हिन्दी-गद्य के प्रथम आत्मकथा लेखक–

स्वामी दयानन्द सरस्वती

—डा० रामप्रकाश आर्य

हिन्दी साहित्य के विद्वानों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित आत्मकथा हिन्दी गद्य-साहित्य की सर्वप्रथम आत्म कथा है और उसमें कवि कथाकार तथा इतिहासकार के तत्त्व एक साथ उपलब्ध होते है। लेखक के शब्द है—वह अलंकार विहीन होते हुए भी आकर्षक है, छन्दोविहीन होते हुए भी गतिमय है, सामान्य होते हुए भी विशिष्ट है पराई होते हुए भी आत्मीय सी लगती है, किसी की आलोचना न होने पर भी माननीय है, रससिद्धान्त का प्रतिपादन किए बिना भी सरस है गीतात्मकता न होते हुए भी मधुर है।

पढिए सर्वथा नये विषय पर एक गवेषणात्मक लेख। —सम्पादक

कोई ऋषि दयानन्द को धार्मिक नेता समझता है कोई उनके समाज सुधारक रूप की सराहना करता है कोई उनको शास्त्रार्थ महारथी के रूप मे स्वीकार करता है और कोई उनके व्यक्तित्व पर रीझता है। कोई उन्हे दार्शनिक मानता है और कोई उन्हें आदिम विद्रोही स्वीकार करता है। उनके इन्ही रूपो पर कुछ शोध कार्य हुआ है किन्तु उनका एक रूप अब भी उपेक्षित प्राय है और वह है हिन्दी भाषा और साहित्य के सम्बन्ध मे उनका योगदान यह वस्तुत विस्मयकारी है कि इस अहिन्दी भाषी व्यक्ति ने हिन्दी मे अपेक्षाकृत आधुनिक विधा—'आत्मकथा लेखन'—के क्षेत्र मे भी सर्वप्रथम पदार्पण किया।

संस्कृत साहित्य तथा हिन्दी साहित्य मे जीवनियां तो बहुत पर्याप्त मिलती हैं पर आत्म कथा लेखन अपेक्षाकृत नवीन विधा है। प्राचीन साहित्यकार अपने व्यक्तित्व को कम महत्त्व देते थे और साहित्य को अधिक अत उनके व्यक्तित्व के सम्बन्ध मे आज भी जो थोडा बहुत ज्ञान मिलता है वह प्रामाणिकता के आधार पर अधिक विश्वसनीय नही है। उसमे साहित्यिकता अधिक मिलती है श्रद्धा का पुट पर्याप्त होता है पर तथ्य निरूपण अधिक विश्वसनीय नही होता। और तो और आधुनिक युग के निर्माता, स्वयं भारतेन्दु हरिश्चन्द्र भी अपने चरित्रनायकों का चित्रण करने मे तटस्थ नही थे। 'आधुनिक हिन्दी का जीवनी परक साहित्य'

की आधिकारिक विदुषी 'डा० शांति खन्ना' के मतानुसार "यदि भारतेन्दु के जीवनी साहित्य का विश्लेषण किया जाए तो इसमें कई त्रुटियां दृष्टि-गोचर होती हैं। जहां तक चरित्र-चित्रण का प्रयत्न है, इन्होंने किसी भी अपने चरितनायक का विस्तृत रूप से वर्णन किया इनके चरित्र चित्रण में वह तटस्थता नहीं जो कि एक जीवनी लेखक की जीवनी में होनी चाहिए। (आधुनिक हिन्दी का जीवनीपरक साहित्य--डा० शांति खन्ना पृष्ठ १०१)। डा० श्रीमती खन्ना ने स्वामी जी की दो एक जीवनियों 'आर्य धर्मेन्द्र जीवन', 'दयानन्द चरितामृत' आदि की चर्चा अवश्य की पर न जाने क्यों स्वामी जी के आत्मलिखित जीवन चरित्र का उसमें कहीं उल्लेख नहीं है। यों स्वामी जी की लगभग एक दर्जन जीवनियाँ हिन्दी भाषा में ही उपलब्ध है, जिनमें से कुछ तो काफी विस्तृत तथा महत्त्वपूर्ण हैं। यह भी सम्भव है कि आत्मकथा लेखन के क्षेत्र में यह अभिनव प्रयोग हो अथवा आत्मकथा लेखन जीवनी परक साहित्य से कोई भिन्न वस्तु हो अथवा इसमें साहित्यिकता का अभाव समझ कर उन्होंने इसकी चर्चा न की हो। वैसे भी हिन्दी के महान साहित्यकारों ने स्वामी जी तथा उनकी रचनाओं की ओर ध्यान कम ही दिया है, अतः किसी भी शोधकर्त्ता का उस ओर से तटस्थ हो जाना अस्वाभाविक नहीं है।

'ऋषि दयानन्द स्वरचित आत्मचरित्र' यदि विधा के रूप से स्वामी जी का नवीन प्रयोग है तो इसकी जितनी सराहना की जाए कम है। यदि इस दिशा में स्वामी जी का प्रयास प्रथम न भी हो तो भी अपने विशिष्ट गुणों के कारण यह छोटी सी रचना उपेक्षणीय नहीं है। यदि इसके ऐतिहासिक महत्त्व को हम थोडी देर के लिए दृष्टि से ओझल भी कर दे तो भी अपनी साहित्यिक विशेषताओं के कारण यह आकर्षण का विषय है। स्वामी जी आत्मप्रशंसा अथवा आत्म विज्ञापन के इच्छुक नहीं थे। यह रचना उन्होंने कर्नल अल्काट के अनुरोध पर उनकी पत्रिका में छपने के लिए भेजी थी। इस रचना में तथ्य निरूपण भी है और आत्माभिव्यक्ति भी, "गुजरात देश मे दूसरे देशो की अपेक्षा मोह विशेष है। यदि मैं इष्टमित्र, भाई बंधु की पहचान दू या पत्र व्यवहार करू तो मुझे बडी उपाधि होगी। जिन उपाधियों से मै छूट गया हूँ, वही उपाधियां मेरे पीछे लग पडगी।" (ऋषि दयानन्द स्वरचित जन्मचरित्र पृष्ठ १) तथ्यो का निरूपण कितनी सरल भाषा में किया गया है, "मैंने पांचवे वर्ष मे देवनागरी अक्षर पढना आरम्भ किया था।" (वही पृष्ठ ३)।

सारा संसार जानता है कि उन्हे मूर्तिपूजा से विरक्ति क्यो हुई, पर छोटे से बच्चो के मन मे वह भाव कैसे आया होगा, उसने क्या क्या मनन किया होगा, उसका वर्णन कितनी मनोरम और अकृत्रिम शैली मे किया गया है। "अतः चूहे की यह लीला देख मेरी बाल बुद्धि को ऐसा प्रतीत हुआ कि जो शिव अपने पाशुपतास्त्र से बड बड प्रचण्ड दैत्यो को मारता है, क्या उसमें एक निर्बल चूहे को भगा देने की शक्ति नहीं ?" कदम-कदम पर उनके हृदय की उत्सुकता दिखाई पडती है, छोटी बहिन और चचा की मृत्यु और फिर अपनी मुक्ति का उपाय सोचना, सभी घटनाएं आंखो के सामने चलचित्र की भांति गुज तो चली जाती हैं। पाठक भाव मे इतना विभोर हो जाते हैं कि भाषा सौष्ठव की ओर उनका ध्यान जाता ही नहीं। संसार यात्रा के इस पथिक के हृदय मे कितनी निश्छलता तथा भोलापन था, उसका वर्णन उन्होंने कितनी सादगी से किया है, 'जो मेरे पास थोड से रुपये अंगूठी आदि भूषण था, वह सब पोपो ने ठग लिया, कि तुम पक्के वैराग्यवान तब होगे कि जब अपने पास की चीज सब पुण्य कर दोगे। उनके कहने से मैंने सब दे दिया।"

उपर्युक्त वर्णन स्वाभाविक होते हुए भी सामान्य है। कोई भी सहृदय कलाकार उसका चित्रण कर सकता था, पर फिर जिस दृश्य का वर्णन किया

गया है वहाँ कल्पना तो पहुच सकती है, वहाँ स्वय पहुचने का साहस जुटाना दुष्कर है। दूसरी समस्या यह भी है कि जो वहा तक पहुचते हैं वे वर्णन नही करते, जो वर्णन करते हैं वे पहुचे हुए नही होते, ' कुछ दूर तक चलकर मेरा गमन एक ऐसे घने वन मे हुआ, जहा के शैल खण्डखण्ड और नाले थी शुष्क और वहा से आगे को मार्ग भी न चलता था पर चोटी की उच्चता और कठिनता के विचार से मैंने सोचा कि पर्वत की चोटी पर चढना असभव है। अगम्य पहाडियो, टीलो और जगल के अतिरिक्त जिसमे मनुष्य का गमन असम्भव था अब कुछ दिखाई न पडा बड बड काटो मे उलझ-उलझ कर वस्त्रो की धज्जिया उड गई और शरीर भी क्षत हो गया और पाव भी लगड हो गए।" सारा वर्णन अभिधा मे है, पर हम चाहें तो उसका रूपात्मक अर्थ भी ले सकते हैं। पूरा ससार ही घना वन है, बाधाओ के विशाल शल खण्ड उसमें स्थित हैं, किसी पथ प्रदर्शक के अभाव मे व्याघात बढते जाते हैं और मजिल दूर होती जाती है और अत मे साधक को विषाद निराशा और दीनता के अतिरिक्त और क्या मिलता है। यह उदाहरण एकाकी नही है, खोजने वाला हृदय हो तो ऐसे अनेक उदाहरण दृष्टिगोचर होगे।

कुछ दृश्य तो ऐसे हैं जिन्हें देखकर यह विश्वास करना कठिन हो जाता है कि लेखक की मातृभाषा हिन्दी के अतिरिक्त कुछ और है, जिनमे प्रचारक और सुधारक का रूप तिरोहित होकर कवि कल्पना सुस्पष्ट हो जाती है, "पवन, मार्ग और टाले आदि सब हिम के वस्त्र पहने हुए थे और बहुत घना हिम उनके ऊपर थी अपने आपको सवथा अपरिचित और अनजान जाना।' फिर दृश्य ऐसा आता है जिसे पढकर हृदय स्तब्ध हो जाता है, कोमल चित्त वालों के नयन भी सजल हो जाते हैं, कुछ ही काल पश्चात् शीत ऐसा अधिक हुआ कि उसका सहन करना असम्भव था, क्षुधा और पिपासा ने जब मुझे अत्यन्त बाधित किया तो मैंने हिम का टुकडा खा कर उसको बुझाने का विचार किया, परन्तु उससे किंचित् आराम व सन्तुष्टि प्रतीत न हुई। पुन नदी में उतर कर उसे पार करने लगा।" वर्णन कुछ ऐसी शैली में किए गए हैं कि वे रोचक भी प्रतीत होते हैं और उत्सुकता भी बढाते जाते हैं। सम्भवत ऐसे ही स्थलो के सम्बन्ध मे किसी आलोचक ने कहा है ' Facts are stranger than the Fiction !'

आत्मकथा के लेखक को गुण तथा दोष दोनो का उल्लेख करना चाहिए, यदि उसमे दुर्बलता का समावेश न हो तो यह आत्मप्रकाशित मात्र ही रह जाएगे। वैसे भी सहृदय जन को दूसरे की उन्नति प्रसन्नता नहीं होती जितनी उनकी दुबलताओ मे। अपनी मानवीय दुबलताओ का चित्रण करने मे भी स्वामी जी ने सकोच नही किया है ' मैंने उनसे कह दिया कि यहा से हिलने का प्रयत्न करने की अपेक्षा मै मर जाना उत्तम समझता हू।" तथा 'दुर्भाग्यवश वहाँ मुझे एक बडा दोष लग गया, अर्थात् भाग पीने का स्वभाव हो गया। सो कई बार उसके प्रभाव से मैं बेसुध हो जाया करता।" इसमे वर्णित सभी घटनाए अक्षरश सत्य हैं, पर अपनी नैसर्गिकता एव शैली की मनोरमता के कारण औपन्यासिकता का भ्रम करा देती हैं ' मुझे कई झोपडिया और कुटियाएँ दिखाई पडी। उनके चारो ओर गोबर के ढेर लगे हुए थे। निकट ही स्वच्छ जल की एक छोटी सी नदी थी। उसके तीर पर बहुत सी बकरिया चर रही थीं। झोपडियो और टूटे फूटे घरो के द्वारो और छिद्रो मे से टिमटिमाता हुआ प्रकाश दिखाई देता था, जो जाते हुए पथिक को स्वागत और बधाई के शब्द सुनाता हुआ प्रतीत होता था। मैंने वही एक विशाल वृक्ष के नीचे जो एक झोपडी के ऊपर फला हुआ था, रात्रि व्यतीत की।"

स्वामी जी की अकाल मृत्यु ने उनकी यह कथा पूरी नही होने दी, केवल "और मैंने जो उपकार करना निश्चित किया है, जहा तक बन सकेगा, आमरण तक करूगा, पुनर्जन्मान्तर मे भी।" कह-

कर उन्होंने इसका पटाक्षेप कर दिया। यह अपूर्ण तथा लघुरचना भी अपने अभिनव प्रयोग की दृष्टि से महान् है, इस में जीवन के घात प्रतिघातों का समावेश, मानवीय दुर्बलताओं और शक्तियों का सशक्त चित्रण, शैली में मनोरमता, प्रसादगुण, नैसर्गिकता तथा प्रभावोत्पादकता का सम्मिश्रण है, इस में कवि कथाकार तथा इतिहासकार के तथ्य एक साथ उपलब्ध होते हैं। अलंकार विहीन होते हुए भी यह आकर्षक है, छंदोविहीन होते हुए भी गतिमय है, सामान्य होते हुए भी विशिष्ट है, क्षीणकाय होते हुए भी महिमामय है, पराई होते हुए भी अपनी सी लगती है, किसी की आलोचना न होने पर भी मानवीय है, रससिद्धान्त का प्रतिपादन किए बिना भी सरस है, गीतात्मकता का अभाव होते हुए भी मधुर है। सर्वाधिक विस्मयकारी बात तो यह है कि इतनी विशेषताओं से युक्त होने पर भी यह हिन्दी गद्य की सर्वप्रथम आत्मकथा है। डा० सोनवणे ने भी अपने शोध प्रबन्ध में इस तथ्य को स्वीकार किया है। (देखिये डा० चन्द्रभानु सीताराम सोनवणे-हिन्दी गद्य साहित्य-पृष्ठ २६६)

(पृष्ठ १८ का शेष)

महात्मा दयानन्द...

यह है कि उनकी आत्मकथा के ये अंश आज तक प्रकाशित नहीं हुए हैं।

जीवन के अन्तिम वर्षों में वे दूध और अन्न छोड़कर और कुछ भी ग्रहण नहीं करते थे। यहां तक कि आखिर में वे अन्न का भी परित्याग करके केवल दूध पर ही निर्वाह करने लगे थे।

दयानन्द के जीवन का प्रधान कार्य भारत वर्ष में बहुत सी जगहों पर आर्यसमाजों की स्थापना एवम् ऋग्वेदादिक भाष्यों का प्रकाशन है। ये भाष्य उनके स्वलिखित हैं। वेदानुसार उन्होंने सचराचर मूर्तिपूजा के स्थान पर एकेश्वरवाद का समर्थन किया है। दयानन्द की व्याख्या पण्डित समाज को ग्राह्य होगी, इसमें सन्देह है। परन्तु यह तो निश्चित ही है कि उनके भाष्य, उनकी आश्चर्यजनक बुद्धिमत्ता और उनका असाधारण पाण्डित्य इस जगत् म प्रतिष्ठित होकर रहेगा।

दयानन्द ने उनसठ वर्ष म अजमेर नगर म ३० अक्तूबर मंगलवार सायं छः बजे इहलोक का परित्याग किया। बहुत सारे लोग उनके शव के पीछे-पीछे श्मशान भूमि गये थे। उनके शिष्यगण भी वेदगान करते हुए उनके पीछे गये। एक बड़ी सी चिता म उनका शव दहन किया गया। एक मन चन्दन की लकड़ी, आठ मन अन्य लकड़ी, चार मन घी, अढ़ाई सेर कपूर के साथ उनका संस्कार किया गया।

दयानन्द तो चले गये, किन्तु उनकी शिक्षाएँ (विचारधारा) भारत भूमि म उनके प्रतिनिधि स्वरूप काम कर रही हैं तथा करती रहेंगी।

आओ ! ले हम सब संकल्प

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

नयी उमग नयी तरग
ले कर बोध दिवस है आया।
नव उल्लास, नवल अभिलाषा
जन जन मे है बिखराया।

बोध दिवस ने ही बदला था,
मानवता का वह इतिहास।
ऋषिवर दयानन्द के उर म-
किया इसी ने ज्ञान प्रकाश।

ली युग ने नूतन अगडाई
वेदों का फैला आलोक।
हुई प्रफुल्लित भारत माता
ऋषिवर के सत्कर्म विलोक।

सारे भारत मे नव जागृति
की अभिराम आभा छायी।
नये जागरण की बेला मे
जगी जवानो की तरुणायी।

वेद पथो पर बढ सभी हम
बजा पुन वेदो का डका।
धरती पर अज्ञान अनय की
जली पुन रावण की लका।

आज पुन सारे भारत मे
बढता है अन्याय अनय।
भारत की धरती पर होता
दानवता का सूर्य उदय।

आर्य सपूतो उठो बढो तुम
बनो वेद पथ के अनुगामी।
दूर करो भारत माता की
निर्मम सी सांस्कृतिक गुलामी।

ऋषिवर दयानन्द के स्वप्नों
को निर्भय साकार करो।
सहमी सहमी मानवता है,
उस का तुम उपकार करो।

सैनिक हो तुम दयानन्द के
दनुज वृत्तियो से टकराओ।
तिमिरमयी यह रजनी काली
महिमण्डल से दूर भगाओ।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का—
गूजे वसुधा पर जयगान।
वैदिक धर्म धरा पर फैले—
भारत अपना बने महान।

सत्यधर्म फैलायगे हम,
आओ ! ल हम सब सकल्प।
मानवता की रक्षा का है,
बचा न काई अन्य विकल्प ।।

पत्र-साहित्य का प्रथम प्रणेता : ऋषि दयानन्द

—डॉ० कमल पुजाणी

ऋषि दयानन्द सरस्वती बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न महामानव थे। उनके बहुमुखी व्यक्तित्व का यथार्थ परिचय हमें उनके पत्र साहित्य के अध्ययन से प्राप्त होता है।

भारतीय पुनर्जागरण के आन्दोलन में धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्रों का नेतृत्व धारण करने के कारण ऋषि दयानन्द को देश के विशाल जन-समुदाय के सम्पर्क मे आना पड़ा। फलस्वरूप समाज के विभिन्न वर्गों से उनका पत्र व्यवहार उत्तरोत्तर बढ़ता गया। पहले वे संस्कृत मे पत्र लिखते थे किन्तु सन् १८७३ ई० के उत्तरार्द्ध से नियमित रूप से उनका हिन्दी पत्र व्यवहार प्रारम्भ हुआ और अन्त तक चलता रहा। यही विस्तृत पत्र व्यवहार उनके देहावसान के बाद शनै शनै पुस्तक के रूप मे प्रकाशित होने लगा। अब तक उपलब्ध उनके पत्र-साहित्य का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है —

क्रम	पुस्तक	सम्पादक	प्रकाशन वर्ष
१	ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार भाग-१	महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द)	१९१० ई०
२	ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन भाग-१	प० भगवद्दत्त	१९१८ ई०
३	,, ,, ,, भाग-२	,, ,,	१९१९ ई०
	,, ,, ,, भाग-३	,, ,,	१९२७ ई०
५	,, ,, ,, भाग-४	,, ,,	१९२७ ई०
६.	ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार भाग-२	प० चमूपति	१९३५ ई०

इन संग्रहों के पत्रों तथा विविध संस्थाओं एवं कार्यकलापों से प्राप्त नये पत्रों को एक बृहद् ग्रन्थ के अन्तर्गत संकलित कर प्रकाशित करने का श्रेय श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट को है। इस ट्रस्ट के द्वारा अब तक—'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन" शीर्षक पत्र-संग्रह के तीन भाग प्रकाशित हो चुके हैं और चौथा भाग प्रकाशित होने वाला है। इन पत्र-संग्रहो की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता प० युधिष्ठिर मीमांसक जी की माननीय भूमिका तथा सारगर्भित टिप्पणियां हैं। पत्रों के रसास्वादन में इनसे बहुत बड़ी सहायता मिलती है।

इस प्रकार इन पत्र संग्रहो के प्रकाशन से प० भगवद्दत्त जी का यह शुभ संकल्प कि 'ऋषि के लिखे एक एक शब्द का सुरक्षित करना आवश्यक है', साकार हो गया है।

जब हम ऋषि के पत्र-साहित्य के सम्बन्ध मे हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों की टिप्पणियों का अवलोकन करते हैं, तब हमें पता चलता है कि

बहुत से इतिहास लेखकों ने तो 'पत्र-साहित्य' नामक विधा का उल्लेख ही नहीं किया। जिन्होंने ऐसा उल्लेख किया भी है, उन्होंने ऋषि के पत्र-साहित्य के बारे में जानकारी नहीं दी और जिन्होंने जानकारी दी है, उसमें अनेक असंगतियां हैं। जैसे-

डा० हरवंश लाल शर्मा द्वारा सम्पादित "हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास चतुर्दश भाग" के खण्ड ६ में पत्र-साहित्य नामक एक अध्याय दिया गया है। इस अध्याय में पत्र-साहित्य के इतिहास को स्पष्ट करते हुए कहा गया है—

"जब हम पत्र-साहित्य के इतिहास पर दृष्टि-प्रक्षेप करते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि किसी पत्र-संग्रह को सर्वप्रथम प्रकाशित रूप में लाने का श्रेय स्व० मुंशीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्द) को है। स्वामी जी ने (आज से लगभग ८५ वर्ष पूर्व) सम्भवत सन् १९०४ में स्वामी दयानन्द सरस्वती सम्बन्धी पत्रों का एक संग्रह प्रकाशित कराया था।"

(हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास भाग-१४, पृष्ठ ५०९)

इसी प्रकार डा० नगेन्द्र सम्पादित "हिन्दी साहित्य का इतिहास में द्विवेदी युग के गद्य साहित्य की गौण विधाओं के विवेचन में ऋषि दयानन्द से सम्बन्धित पत्र-संग्रह के विषय में लिखा गया है—

"आलोच्य युग में पत्र-साहित्य विषयक दो महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित हुए। महात्मा मुंशीराम ने सन् १९०४ में स्वामी दयानन्द सरस्वती सम्बन्धी पत्रों का संकलन किया। यह आलोच्य युग का ही नहीं समूचे हिन्दी साहित्य में पहला प्रकाशित पत्र-संग्रह है।

(हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ५३०)

इन दोनों उद्धरणों को ध्यानपूर्वक पढ़ने से निम्नलिखित त्रुटियां दिखाई पड़ती हैं—

१ दोनों उद्धरणों में स्व० महात्मा मुंशीराम जी द्वारा सम्पादित स्वामी दयानन्द सरस्वती सम्बन्धी पत्रों के संग्रह का शीर्षक नहीं बताया गया।

२ दोनों उद्धरणों में पत्र-संग्रह के प्रकाशन वर्ष की निश्चित सूचना नहीं दी गई।

३ द्वितीय उद्धरण में प्रकाशन वर्ष से पूर्व सम्भवत शब्द नहीं है। किन्तु स्पष्ट है कि सन् १९०४ ई० में पत्र संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ था।

इस प्रकार इन तथ्यों से प्रकट होता है कि उपरिलिखित उद्धरण—लेखकों ने स्व० महात्मा मुंशीराम जी द्वारा सम्पादित पत्र संग्रह को देखे बिना ही उसके सम्बन्ध में अपना मन्तव्य व्यक्त कर दिया है।

इसी प्रकार पं० भगवद्दत्त जी द्वारा सम्पादित 'ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन भाग-१" के सम्बन्ध में भी उक्त इतिहास ग्रन्थों में असंगत और अपूर्ण सूचनाएं दी गयी हैं। यथा—

(१) कुछ समय बाद सम्भवत १९०९ ई० में पं० भगवद्दत्त ने अथक परिश्रम और खोजबीन करके स्वामी दयानन्द सरस्वती के पत्रों का एक विशाल संकलन 'ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार' शीर्षक से सद्धर्म प्रचार यन्त्रालय गुरुकुल कांगड़ी

ऋषि दयानन्द प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' जैसा दार्शनिक और समीक्षात्मक ग्रन्थ हिन्दी गद्य को दिया। ऋषि दयानन्द प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दी गद्य में प्रथम आत्मकथा लिखी। इसी प्रकार ऋषि दयानन्द प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने हिन्दी गद्य को प्रथम बार पत्र-साहित्य प्रदान किया। ऋषि दयानन्द को केवल समाज सुधारक के रूप में आंकने वाले क्या उनके इस साहित्यकार रूप का भी आकलन करेंगे।

से प्रकाशित किया।" (हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास भाग-१४ पृ० ५१०)

(२) "तदनन्तर प० भगवद्दत्त ने पर्याप्त परिश्रम तथा अनुसन्धान के बाद "ऋषि दयानन्द का पत्र-व्यवहार" (१९०९) शीर्षक "पत्र-सग्रह सम्पादित किया।" (हिन्दी साहित्य का इतिहास पृष्ठ सख्या ५३०) इन उद्धरणो मे निम्नोक्त असगतिया हैं —

१ प० भगवद्दत्त जी द्वारा सम्पादित पत्र सग्रह का शीर्षक वस्तुत "ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन हैं" जबकि यहा 'ऋषि दयानन्द का पत्र-व्यवहार" नाम बताया गया है। यह शीर्षक तो स्व० महात्मा मुशीराम द्वारा सम्पादित पत्रो के सग्रह का है।

२ पत्र सग्रह का सही प्रकाशन वर्ष सन् १९१८ ई० है, जब कि यहा १९०९ में उसे प्रकाशित हुआ दिखाया गया है।

३ प्रथम उद्धरण मे पत्र-सग्रह के आगे 'विशाल सकलन" विशेषण प्रयुक्त किया गया है, किन्तु वस्तुत उसमे कुल मिलाकर ८२ पत्र और विज्ञापन सकलित हैं।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि ऋषि दयानन्द के पत्र-साहित्य को हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रन्थों मे महत्त्वपूर्ण स्थान तो दिया गया है, परन्तु तत् सम्बन्धी उल्लेखों एव अभिप्रायों मे जो असगतिया परिलक्षित होती हैं, उनसे अध्येताओ एव अनुसधान कर्ताओ को कठिनाई होती है। उक्त और अन्य इतिहास ग्रन्थो मे प० भगवद्दत्त जी द्वारा सम्पादित "ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन' के भाग २, ३ और ४ का तो उल्लेख ही नही मिलता। इसी प्रकार प० चमूपति द्वारा सम्पादित 'ऋषि दयानन्द का पत्र-व्यवहार" भाग-२ तथा श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित बृहत् पत्र-सकलनो का भी सकेत नही मिलता। यह ठीक नहीं है।

जिस महान् विभूति ने हिन्दी को 'आर्यभाषा' घोषित कर उसके प्रचार-प्रसार के लिए अनवरत प्रयत्न किए, उसे "राजभाषा" पद पर प्रतिष्ठित करने के लिए हटर कमीशन के पास स्थान स्थान से पत्र भिजवाये, उस महापुरुष से सम्बन्धित पत्रों के सग्रह से हिन्दी मे पत्र साहित्य की विधा का सूत्रपात हुआ। यह हिन्दी साहित्य के लिए गौरव का विषय है। हिन्दी पत्र साहित्य के इतिहास पर दृष्टिपात करने से हमे पता चलता है कि सन् १९३५ ई० तक हिन्दी पत्र साहित्य के भण्डार मे ऋषि के पत्र-रत्न ही अपनी प्रभा बिकीर्ण कर रहे थे।

सक्षेप मे, इमारत मे जो स्थान नीव की ईट का होता है। वही स्थान हिन्दी पत्र-साहित्य मे ऋषि दयानन्द के पत्रो का है। ये पत्र ऋषि के जीवन-दर्शन एव जीवनादर्श से ओतप्रोत है तथा पत्र-प्रेमियो एव आर्यजन के लिए प्रेरणा का अजस्र स्रोत हैं।

व्याख्याता—हिन्दी विभाग,
श्री वी० एम० मेहता म्युनिसिपल कालेज,
जामनगर, (गुजरात) ३६१००१

मानवता के माथे पर ऋषि चन्दन और अबीर था

—सारस्वत मोहन मनीषी

वेद-सिन्धु का तीर था ।
सयम की जजीर था ।
मानवता के माथे पर ऋषि चन्दन और अबीर था ।

●

पिता तिवारी कषन जी औ पुण्य पुनीता माता ने ।
पुत्ररत्न को जन्म दिया रक्षक भेजा जग त्राता ने ।
टकारा गुजरात भूमि की कोख सुहागिन क्या कहना ।
नगर मौरवी की धरती पर भेजा दूत विधाता ने ।
पुष्प नही, मधुमास था ।
पृष्ठ नही, इतिहास था ।
अबर से उदार, सागर से भी गहरा-गभीर था ।
वेद-सिन्धु का तीर था, सयम की जजीर था ।

●

यौवन और किशोर अवस्था का सगम कुछ न्यारा है ।
जीवन लेता दिशा यही से अनुचित-उचित इशारा है ।
इसमे व्यक्ति बिगडता-बनता सशय की कुछ बात नही ।
निर्देशक हो कुशल, नाव को मिलता तुरत किनारा है ।
गुरुवर विरजानन्द थे ।
स्वय दया, आनन्द थे ।
देखा-सुना, हुआ न होगा अद्भुत एक फकीर था ।
वेद-सिन्धु का तीर था, सयम की जजीर था ।

●

गुरुवर के निर्देशन मे अतस्थ किया निगमागम को ।
वेद-सिन्धु पी लिया बिन्दु सम दुलराया हर शबनम को ।
होकर योगारूढ विश्व की दुखी आत्मा मे झाका,
सभी ऐषणाओ को त्यागा राग-द्वेष की सरगम को ।

दृश्यमान वह ज्ञान था ।
सस्कृति का सम्मान था ।
भारतीय उत्तमतम भावो की अक्षय जागीर था ।
वेद-सिन्धु का नीर था, सयम की जजीर था ।

●

निर्विकार सयम की ऋषि तो स्वय एक परिभाषा था ।
हर लावारिस आसू की खातिर वह तो एक दिलासा था ।
दया क्षमा मित्रता भाव की पावन पुण्य त्रिवेणी था ।
अधिक कहू क्या भारतीय गूगे भावो की भाषा था ।
वर्त, भविष्य, अतीत था ।
बिना शब्द का गीत था ।
सत्य, शिव, सुन्दर की जीवित अनुपम तस्वीर था ।
वेद-सिन्धु का तीर था, सयम की जजीर था ।

●

ओ३म् पताका ले कर मे पाखण्ड खण्डनी गाड चला ।
भ्रम के भूत असत भावो के भण्डे सभी उखाड चला ।
वेद सत्य विद्याओ का पुस्तक है, ऐसा घोष किया ।
पोगा पन्थ, पुराण प्रथाए, पकिल प्रश्न, पछाड चला ।
वैदिक विश्व विजेता था ।
सतयुग द्वापर त्रेता था ।
हसी बेच आसू खरीदता इतना बडा अमीर था ।
वेद-सिन्धु का तीर था, सयम की जजीर था ।

●

ऋषि जीवन की मर्यादाए अन्त समय तक सब पा ली ।
वीर प्रसविनी माटी मे कर गया देह-पिजरा खाली ।
श्रद्धावान सुभद्र 'मनीषी' आखे गगा बन उमडी ।
एक दीप बुझकर दे पाया हमको अनगिन दीवाली ।
सोम सिन्धु विक्रेता था ।
बिना कुर्सी का नेता था ।
ज्यो की त्यो धर चला चदरिया उतरा शुद्ध कबीर था ।
सच कहता हूँ देव दयानन्द दुनिया की तकदीर था ।

ऋषि-दर्शन

जितने सर्वहितकारार्थ प्रयत्न के प्रकार है उतने ही ऋषि दयानन्द के जीवन के पक्ष है। देशभक्त को दयानन्द देश-भक्ति का आदर्श प्रतीत होता है तो धर्म भक्त को धर्मभक्ति का सर्वांगसुन्दर उदाहरण। समाज सुधार और आचार सुधार एक साथ दयानन्द की दृष्टि के लक्ष्य थे। शिक्षा प्राप्त कैसे की जाए और दी कैसे जाए ? शरीर बनाया कैसे जाए और उसका उपयोग क्या हो ? सदाचार का सगठन कैसे हो और शिक्षण कैसे ? विद्या कौन-कौन सी और किस-किस ढग से उपलब्ध की जाए। इन सब समस्याओ का उत्तर ऋषि के ग्रन्थो मे भी मिलता है और जीवन मे भी। प्रत्येक ऐसे मनुष्य के लिए जो आत्मोन्नति का उत्सुक है, ऋषि जीवन का अध्ययन अत्यन्त लाभकारी होगा। ऋषि दर्शन उन सज्जनो के लिए लिखा गया है जिन्हे ऋषि के विस्तृत जीवन-चरित के अध्ययन का अवसर नही मिलता। सम्भव है इसी से ऋषि के चमत्कार की झलक उनके जीवन मे पड जाए।

—चमूपति

ऋषि दयानन्द की जन्मभूमि होने का गौरव गुजरात प्रान्त को है। पिता जन्म के ब्राह्मण थे, और भूमिहारी तथा जमीदारी का कार्य करते थे। शिव के बडे भक्त थे। शिवरात्रि के दिन बालक को मन्दिर में ले गए और उसे उपवास करा जागरण का आदेश दिया। जब बड-बड शिव-भक्त सो गए, यह भावी ऋषि प्रयत्नपूर्वक जागता रहा। गीता के कथनानुसार—

'या निशा सर्वभूताना तस्या जागर्ति सयमी।"

इनके हृदय में भक्ति का नया उदय हुआ था। यह इसी रात मे शिव को रिझा लेना चाहते थे। नीद आती पर यह पानी के छींटो से उसे दूर भगाते। इतने मे एक चूहे ने सचेत किया। उस क्षुद्र पशु को महान् पशुपति के आगे नृत्य करते होता देखकर विचार आया—हो न हो यह शिव नहीं। दूसरो का व्रतभग आलस्य ने किया था इनका तर्क ने। तर्क जीवन की भूमिका था, आलस्य मौत की। शिवरात्रि बीत गई, परन्तु शिवरात्रि की घटना हृदय में गड-सी गई।

मूलशंकर के बढ़ते यौवन को दूसरी चेतावनी अपने चाचे और भगिनी की मृत्यु से मिली। चाचे के लाडले थे, उनका वियोग सहा न जाता था, भगिनी को महामारी ने मारा। इन दो मौतों का प्रभाव एक-सा नहीं हुआ। प्रथम, मृत्यु पर आश्चर्य चकित रहे और पाषाण हृदय को उपाधि पाई, दूसरी पर बिलख-बिलख कर रोए।

शिक्षा और गृहत्याग

मूलशंकर की शिक्षा का प्रबन्ध इनके बाल्य-काल में किया गया था। इन्हें यजुर्वेद कण्ठस्थ था और भी बहुत कुछ पढ़ा-लिखा करते थे। पिता को पता लगा कि बालक पर वैराग्य का भूत सवार है। महात्मा बुद्ध के पिता की तरह इन्हें विवाह की डोरी में फांसने की ठानी। परन्तु ठीक विवाह की रात्रि को मूलशंकर घर से लुप्त हो गए।

वन यात्रा

मूलशंकर की वनयात्रा की कथा बहुत लम्बी है। पहले तो किसी ने ठग लिया। इन्हें शुद्ध चेतन नाम देकर नैष्ठिक ब्रह्मचारी बनाया। फिर यह सन्यासी हुए और दयानन्द नाम पाया। योगियों के पास योग साधन सीखते रहे। समाधि का आनन्द लाभ किया। गिरि-गुहाओं में घण्टों बिताए। पुस्तक खोजी और उनका अध्ययन किया। मदानों में सोए, वृक्षों की शाखाओं में विश्राम किया। मूलकन्द खाकर भूख मिटाई। सार यह कि पूर्ण वनचर का-सा जीवन व्यतीत किया।

गुरु विरजानन्द के चरणों में

३६ वर्ष से ऊपर के थे जब दण्डी विरजानन्द के द्वार पर विद्या-वित्त के भिक्षु हुए। वहां पहली भेंट यह धरनी पड़ी कि जो पुस्तक पढ़े हैं सब यमुना मय्या के अर्पण करो। हाथ लिखे पुस्तक बड़ी कठिनता से हाथ आए थे। पर गुरु-मुख का उपदेश भी तो सुलभ न था। जी कड़ा किया और गुरु की आज्ञा पालन की। आदर्श शिष्य आदर्श गुरु के चरणों में आदर्श शिक्षा प्राप्त कर रहा था। नित्य प्रति यमुना के जल से गुरु जी को स्नान कराते। कुटी में झाड़ू देते गुरु की सेवा सुश्रुषा करते। गुरु ने एक दिन डण्ड से ताड़ना की, यतिवर ने गुरु गौरव का प्रसाद मान स्वीकार की। अन्त में दीक्षान्त का समय आया। निर्धन ब्रह्मचारी गुरुदक्षिणार्थ लौंगों की भीख माग लाया। हा देव! स्वीकार न हुई। 'क्या भेंट धरूं।' जो तुम्हारे पास हो। 'मेरे पास मेरे अपने सिवा कुछ नहीं। 'तो अपना आप भेंट धरो।' भेंट धरी की। गुरु ने अंगीकार की। यही अपने आपकी भेंट मानो आर्यसमाज की स्थापना का प्रथम बीज थी। दयानन्द विरजानन्द का हुआ और विरजानन्द के हाथों सारे संसार का।'

पाखन्ड खण्डनी

अब पुष्कर के मेले में दयानन्द पहुंचता है, कुम्भ के महोत्सव में दयानन्द गरजता है। वेद से उलटे जाते वैदिकधर्मियों को वेद के पथ पर लाना चाहता है। एक ओर सारी भ्रान्त आर्य जाति है, दूसरी ओर अकेला दण्डधारी दयानन्द। 'पाखण्ड खण्डिनी पताका' के नीचे खड़ा कौपीनधारी ब्रह्मचारी आते जाते के लिए अचम्भा था। लोग कहते थे, गंगा के प्रवाह को रोकने का सामर्थ्य इसमें कहां? स्वयं भगीरथ आए तो न रोक सके।

तपस्या की पराकाष्ठा

ऋषि गरज गरज कर हार गए। गंगा बहती गई और उसके साथ हिन्दू जातियों का प्रवाह भी बहता गया। ऋषि ने डरा डण्डा उठाया और वनों की राह ली। पूर्ण वीतराग होने का व्रत किया कि कौपीन के अतिरिक्त कोई चीज पास न रखेंगे। महाभाष्य की एक प्रति पास थी, सो भी गुरुवर की सेवा में भेज दी। इसी कौपीन में

दयानन्द सोते, इसी में फिरते। नहाकर इसे सूखने को डालते और स्वय पदमासन लगाकर बैठ रहते। हिमाच्छन्न नालो म क्या और जलती रेतो पर क्या दयानन्द का यही पहरावा रहा।

शास्त्रार्थ

कोई दो वर्ष दयानन्द ने इसी प्रकार तितिक्षा में काटे। फिर प्रचार मे प्रवृत्त हुए। शास्त्राथ पर शास्त्रार्थ करते चले गए। हीरावल्लभ नाम के एक प्रौढ पण्डित ने सप्ताह भर सस्कृत म शास्त्रार्थ किया। उनका सकल्प था कि ऋषि से मूर्ति को भोग लगवा कर उठूगा। ऋषि का पक्ष सुना तो ठाकुर जी को उठाकर गगा में प्रवाहित किया और मुक्त कण्ठ से माना कि मूर्ति पूजा शास्त्र विरुद्ध है।

ऋषि के उपदेश म जादू था। कण्ठिया उतरवा नी, मूर्तिया फिकवा दी, तिलक छाप की रीति मिटा दी। गायत्री का प्रचार किया। सन्ध्या लिख-लिख कर बाटी। स्त्रियो को मन्त्र जाप का अधिकार दिया। जाटो, राजपूतो को यज्ञोपवीत पहनाए।

आर्य धर्म की जय

चान्दपुर के शास्त्रार्थ में ऋषि ने आर्य जाति के इतिहास में एक नये युग का बीजारोपण किया। आय-आर्य तो आपस में विवाद करते ही थे। मुसलमानों ईसाइयो से इनकी कभी न ठनी थी। इससे पूर्व प्रथा यह थी कि अहिन्द हिन्दुओ का खण्डन करे और हिन्दू चुप रहकर सहन करते जाए। आर्य धर्म आटे का दीया था। कच्चा तागा था, इस ने इस भ्रान्ति को मिटा दिया। तीन दिन शास्त्रार्थ होना था। जिसमें मोलवियो और पादरियों के विरुद्ध ऋषि ने आर्य धम का पक्ष लेना स्वीकार किया था। एक ही दिन में ऋषि ने आर्य धर्म की स्थापना ऐसी दृढता से की कि दूसरे दिन वहा प्रतिपक्षियो का चिह्नमात्र भी शेष न था। आर्य धर्म की यह विजय धर्म के इतिहास में स्वर्णाक्षरो मे लिखने योग्य है।

अन्य मत वालो पर कृपा

ऋषि ने ईसाइयो को निमन्त्रण दिया, मुसलमानो को निमन्त्रण दिया कि आर्य धर्म को परखो और स्वीकार करो। इस निमन्त्रण मे मोहिनी शक्ति थी। सब सैयद ऋषि के चरणो में आते। पादरी स्काट ऋषि के दर्शन करते। पादरी को ऋषि 'भक्त स्काट' कहते। भक्त की अनुपम उपाधि किसी आर्यसमाजी को न मिली, एक ईसाई ऋषि भक्ति का यह अपूर्व प्रसाद ले गया। मुहम्मद उमर जन्म का मुसलमान था। उसे ऋषि ने अपने हाथो आर्य बनाया और अलखधारी नाम रखा। सारे ससार के लिए आर्य धर्म का द्वार खोलने का श्रेय वतमान युग मे ऋषि दयानन्द ही को है। कर्नल अल्काट और मैडम ब्लवैटस्की अमेरिका से चलकर ऋषि दयानन्द के चरणो मे आए। अपने पत्रो में ऋषि को गुरुदेव कहकर सम्बोधित करते थे।

बन्धन काटने वाला

एक दिन एक ब्राह्मण ने पान का बीडा ला दिया। चबाने से प्रतीत हुआ कि इसमें विष है। ऋषि उठे, गगा पास थी, उस पर जाकर न्योली कर्म किया और विष निकाल दिया। सैयद मुहम्मद तहसीलदार था। उसने दोषी को पकड़वाया और दयानन्द के दरबार में ले गया। ऋषि से यह सहा न गया कि किसी को उनके कारण बन्धन मे डाला जाए। क्या दयापूर्ण उत्तर दिया। मेरा काम तो बन्धन काटना है, बन्धन बढाना नही।

बाल ब्रह्मचारी का बल

ऋषि जिस धम का प्रचार करना चाहते थे वह उनके जीवन में मूर्त्तरूप में विद्यमान था। दयानन्द का सब से बडा बल ब्रह्मचर्य बल था।

बाल ब्रह्मचारी को अधिकार था कि व्यभिचारियो को डाटे। विक्रमसिह ने ब्रह्मचर्य बल का प्रमाण चाहा तो उसकी दो घोडे की गाडी एक हाथ से पकडकर रोक दी। साईस बल लगाता है, घोड यत्न करते हैं, परन्तु गाडी हिलने मे नही आती। पीछे की ओर देखा ऋषिवर गाडी रोके खड हैं। शरीर स तेज बरसता है। मुख काति टकटकी लगाकर देखी नही जाती।

देवी पूजा

ब्रह्मचारी है और देवियो का आदर करता है। एक नन्ही लडकी बालको के साथ खेल रही है। ऋषि देखते ही सिर झुका देते हैं। देखने वालो को धोखा है कि सामने खडे वृक्ष को प्रणाम किया है, देवता निन्दक को देवता की परोक्ष शक्ति ने देवता-पूजक बनाया है। ऋषि के मुख से सुनना ही था कि वह देवी! वह नन्ही बालिका मूर्त मातृ शक्ति है। बस!' सभी के मुख से निकला धन्य! धन्य!!' देवियो के सत्कार स्वरूप बाल ब्रह्मचारी दयानन्द धन्य! इस एक घटना मे दयानन्द के देवियो के प्रति सम्पूर्ण भावो का मूर्त चित्र चित्रित है। देवियो की शिक्षा हो और शिक्षा के साथ पूजा हो—ये दो सूत्र ऋषि के देवी सम्बन्धी सिद्धान्त का सार हैं।

अछूत कोई नही

दयानन्द की दृष्टि मे कोई अछूत न था। उमेदा नाई खाना लाया तो भरी सभा मे स्वीकार किया। भक्त की भावना गेहू के आटे मे गथी थी, जो भक्त वत्सल की दृष्टि मे लाख जन्माभिमानो की अपेक्षा अधिक सम्मान के योग्य थी। कसाई (मजहबी सिख) को किसी ने व्याख्यान सभा से हटाया। कहा, 'नही! मेरा व्याख्यान कसाइयो के लिए भी है।'

क्या आप जानते हैं कि सबसे पहला मनकाना रुस्तमसिह किन शुभ कर कमलो द्वारा पुनीत यज्ञोपवीत से अलकृत हुआ था? ऋषि दयानन्द की दया व बल-बली भुजाओ ने उसे अस्पृश्यता की गहरी गुहा से उठाया और आर्यत्व के पुण्य शिखर पर बैठाया।

गोरक्षा

ऋषि का करुणाक्षत्र मनुष्य जाति तक परिमित नही था। प्राणिमात्र दयानन्द की दया के पात्र थे। ऋषि ने गोरक्षा के लिए भरसक प्रयत्न किया। एक निवेदन पत्र पर हिन्दू मुसलमान, ईसाई—सब के हस्ताक्षर कराए कि गो हत्या राज-नियम से बन्द की जाए। ऋषि ने अपने नाम को सार्थक किया जब दानापुर के बाहर सडक पर जाते हुए बैलगाडी कीचड मे धसी देखी गाडी-वान का और बस न चलता था। बैलो पर सोटों की वर्षा करता चला जाता था। बैलो ने बहुतेरा दम हिलाई बैलो पर बहुतेरा दबाव डाला, पर गाडी न निकली। गाडीवान हार कर रह गया। ऋषि को अधिक दया गाडीवान पर आई या बैलो पर—यह कहना कठिन है। दोनो के हृदय कृतज्ञता भार से आभारी थे जब राजो महाराजो के गुरु लोकमान्य दयानन्द ने स्वय कीचड मे उतर बैलो का जुआ अपनी गर्दन पर डाला और जो भार दो बैलो से न खींचा गया था, अकेले अपने भुजाबल से जोहड से बाहर कर दिया।

ऋषि की लीला बहुबली लीला है। जिस पक्ष पर दृष्टि डालो वही कहता है मैं सब से मीठा हू। वस्तुत गुड जहा से खाओ मीठा लगता है। इस लीला के अवसान मे भी वह महत्त्व है जो और मनुष्यो के जीवन मे नही।

प्रचार की धुन

ऋषि दयानन्द ने अन्तिम यात्रा जोधपुर को अरकी! इस समय तक ऋषि ने बसियो आर्य-समाजो की स्थापना कर ली थी। पजाब पश्चिमोत्तर (वर्तमान सयुक्त प्रान्त) राजपूताना—ये सब प्रदेश चरणो मे सिर झुका चुके थे। कितने राजपूत नरेश शिष्य बन चुके थे। जोधपुर मे भी

महाराज ने बुलाया था। चरण-सेवकों ने विनय की, "वहा के लोग क्रूर स्वभाव के पुरुष हैं, आप की शिक्षा का गौरव नहीं समझेंगे। सम्भव हैं, प्राणों के बैरी हो जाए।" दयावीर दयानन्द ने उत्तर दिया—"तभी तो जाता हूँ। बिगडो के सुधार की ओर अधिक आवश्यकता है। रही मेरे प्राण-घात की बात, सो तो यदि मेरी एक एक उगली से बत्ती का काम लिया जाए, और इसी से किसी को सीधा रास्ता सूझ जाए तो मेरे जीवन का प्रयोजन इसी बात में सिद्ध हो गया। कहने की आवश्यकता नहीं कि ऋषि के पहुचते ही राजा चरणो का भक्त हो गया, प्रजा अनुरागरक्त हो गई। प्रतिदिन आनन्द वर्षा होने लगी।

निर्भयता

एक दिन राजा ने महाराज को अपने डेरे पर निमन्त्रित किया। ऋषि बिना सूचना दिए जा पहुचे। राजा के दरबार में उसकी प्यारी वेश्या नन्ही जान आई हुई थी। राजा खिसियाने हुए। उसे पालकी में बैठाकर उठवा तो दिया परन्तु ऋषि से आखे चार न हो सकी। ऋषि यह कुत्सित दृश्य देखकर लाल हो गए। गरजकर कहा—"सिंहो की गोद में कुतियो का क्या काम ?"

दया आदर्श

यह निर्भयता ऋषि के लिए विष सिद्ध हुई। विरोधियो ने दल बना लिया। कुछ दिनो में ही जगन्नाथ रसोइए को घूस देकर वीतराग योगीराज को विष दिलवा दिया। ऋषि ने उस समय भी अपनी स्वाभाविक दया से काम लिया। जगन्नाथ ने स्वय माना, 'ऋषिवर ! यह अपराध मुझ से हुआ है।' ऋषि ने उसे धन दिया और आग्रहपूर्वक कहा कि शिघ्र आगन राज्य से बाहर हो जाओ जिससे तुम्हारे प्राणो पर सकट न आए।

विष का प्रभाव धीरे धीरे हुआ। दस्त आने लगे पेट का शूल बढता गया। बार-बार मूर्छा होने लगी। महीना भर यह क्लेश रहा। वद्य चकित थे कि इस वेदना मे ऋषि सतोषपूर्वक जी रहे हैं। यह ऋषि का चमत्कार था।

देहावसान

जोधपुर से आबू और आबू से अजमेर गए। दीवाली की सायकाल को, जहां घर-बार गली-बाजार मे दीपक जलाए गए, यह जाति-कुल-दीप, ससार समुद्र का ज्योति-स्तम्भ देखते-देखते जग-मगाती चकाचौंध से चुधियाती रात्रि में अन्तर्हित हो गया। देखने वालों ने देखा कि बुझने दीपक ने सभाल लिया। मृत्यु समय समीप आया देखकर ऋषि सचेत हुए। क्षौर कराया, शरीर पोंछवाया, चनो का रसा लिया, प्रभु का भजन, मन्त्रो का पाठ करते रहे। अन्त में 'परमेश्वर ! तेने अच्छी लीला की, तेरी इच्छा पूर्ण हो।' यह शब्द कहे और अत्यन्त आह्लादपूर्वक प्राण त्याग दिए।

देह छोड़ते समय दयानन्द के मुख पर एक विचित्र कान्ति थी। पूर्ण किए कर्त्तव्यो का सन्तोष छाती को उभारे हुए था। जगज्जनक की गोदी मे परम पिता का प्यारा पुत्र लालायित हृदय साथ लिये लौट रहा था। पिता की आज्ञा का पालन किया है, यह आह्लाद था, शान्ति थी, सन्तोष था।

दृष्टि रसायन

जीवन प्रचार के अर्पण हुआ था, मरण भी प्रचार का साधन हुआ। गुरुदत्त एम० ए० पजाब यूनिवर्सिटी मे प्रथम रहे थे, उनकी यह ऋषि से प्रथम भेंट थी। बातचीत नही हुई, शका-समाधान नहीं हुआ, प्रश्नोत्तर का अवसर नही मिला, परन्तु चचल, शका का अवतार, तर्क मूर्त्ति, गुरुदत्त ऋषि पर आसक्त है। उसे कोई सन्देह नही रहा, क्षण मात्र मे उसकी काया पलट हो गई है। एक दृष्टि ने कुछ का कुछ कर दिया।

ऋषि की दृष्टि रसायन है। आओ, उस दृष्टि के दर्शन करो। खोटा सिक्का है ? लाओ, खरा सोना हो जाएगा। ऋषि के जीवन के अध्ययन से

शिक्षा लाभ करो। उनके ग्रन्थो को पढो और उनके जीवन का मिलान उनके लेखो से करो। भर्तृहरि ने कहा है

मनस्येक वचस्येक कर्मण्येक महात्मनाम्।

यह वाक्य ऋषि दयानन्द के महत्त्व का सार है।

अमर दयानन्द

आज केवल भारत ही नही सारे धार्मिक सामाजिक राजनैतिक ससार पर दयानन्द का सिक्का है। मतो के प्रचारको ने अपने मन्तव्य बदल लिये है धम पुस्तको के अर्थो का सशोधन किया है, महापुरुषो की जीवनियो मे परिवतन किया है। ऋषि का जोवन इन जीवनियो मे बोलता है, ऋषि मरा नही करते, अपने भावो के रूप मे जीते है। दलितोद्धार का प्राण कौन है? पतित पावन दयानन्द। समाज सुधार की जान कौन है? आदर्श सुधारक दयानन्द। शिक्षा प्रचार की प्रेरणा कहा से आती है? गुरुवर दयानन्द के चरणो मे। वेद का जय-जयकार कौन पुकारता है? महर्षि दयानन्द। देवो सत्कार का माग कौन दिखाता है? देवीपूजक दयानन्द। ब्रह्मचर्य का आदर्श कौन है? बालब्रह्मचारी दयानन्द। गोरक्षा के मिष से प्राणिमात्र पर करुणा दिखाने का बीडा कौन उठाता है? करुणानिधि दयानन्द। आओ, हम अपने आपको ऋषि के रग मे रग। हमारा विचार ऋषि का विचार हो हमारा आचार ऋषि का आचार हो हमारा प्रचार ऋषि का प्रचार हो। हमारी प्रत्येक चेष्टा ऋषि की चेष्टा हो। नारी नारी से ध्वनि उठे —

ऋषि दयानन्द का जय!

आर्यसमाज शालीमार बाग के वार्षिकोत्सव पर—

संस्कृति-रक्षा के लिए संस्कारवान् होना अनिवार्य है

आर्यसमाज शालीमार ब ग बी० एन० पूर्वी का वार्षिकोत्सव १३ फरवरी से १८ फरवरी तक समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रतिदिन प्रात काल यजुर्वेदपारायण यज्ञ प० भोलानाथ शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। डा० महेश विद्यालकार ने अपने प्रवचनो से आर्य जनता को लाभान्वित कराया। शनिवार १८ फरवरी को महिला सम्मेलन का आयोजन श्रीमती प्रमशील महेन्द्र की अध्यक्षता मे किया गया। इसमे विदुषी महिलाओ—डा० उषा शास्त्री श्रीमती सुनीति आर्या, श्रीमती शकुन्तला दीक्षित, श्रीमती प्रकाश आर्या तथा श्रीमती कृष्णा रसवन्त ने आर्य महिलाओ का मार्ग दर्शन किया। प्रान्तीय आर्य महिला सभा की प्रधाना श्रीमती स ला मेहता ने अपने विशेष सदेश मे आर्यसमाज शालीमा बाग की महिलाओ के सत्प्रयास के लिए बधाई दी।

रविवार १९ फरवरी को पूर्णाहुति प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न की गई। ध्वजारोहण तथा सस्कृति रक्षा सम्मेलन को अध्यक्षता स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने की। स्वामी जी महाराज ने सस्कृति का स्वरूप स्पष्ट करते हुए इस बात पर बल दिया कि हमे नृत्य नाट्य, गायन, चलचित्र और दू दर्शन की सस्कृति की रक्षा नही करनी बल्कि हमे उस सस्कृति की रक्षा करनी है जो यम नियमो मे निरूपित है तथा जिसकी प्राप्ति के साधन हमारे सोलह सस्कार हैं, जो हमारी वर्णाश्रम व्यवस्था के पोषक हैं। इससे भिन्न जो भी सस्कृति है, वह तो रक्षणीय नही है, बल्कि उससे तो हम अपने को बचाना चाहते हैं। इस अवसर पर पण्डित पुरुषोत्तम एम० ए० ने अपने सस्कृति सम्बन्धी अनुभव बताते हुए इस बात पर बल दिया कि सभ्यता तो देश, काल परिस्थितियो के अनुसार बदलती रह सकती है, परन्तु सस्कृति सम्पूर्ण मानवमात्र के लिए एक ही होती है। उन्होने पृथ्वीसूक्त के वेदमन्त्र की व्याख्या करते हुए, मनुष्य के आचारवान बनने पर बल दिया। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान एव महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री महाशय धमपाल जी ने आर्यसमाज शालीमार बाग के उन दिनो को स्मरण किया जब वे पहली बार यहा आए थे तथा धूल मिट्टी मे बैठे थे। उन्होने स्थानीय अधिकारियो एव कार्यकर्त्ताओ को लगनशील एव निरन्तर बढते रहने की प्रेरणा दी। महाशय जी ने निर्माण कार्य का भी निरीक्षण किया तथा प्रशसा व्यक्त की। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने कहा कि सस्कृति रक्षा के लिए सस्कारवान् होना अनिवार्य है। उन्होने कहा कि हमे अपनी आने वाली पीढी को और ज्यादा प्रखर एवम् तेजस्वी बनाने का प्रयास करना चाहिए। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धमपाल ने सभी आगत महानुभावो का धन्यवाद किया तथा आशा व्यक्त की कि सभी आर्यजन मिलकर वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए समर्पित भाव से कार्य करेगे। सम्मेलन का सयोजन डा० महेश विद्यालकार ने किया। श्री वेदप्रकाश मेहता श्री ओ३मदत्त भारद्वाज, श्री देवराज कालरा, श्री भूदेव शर्मा श्रीमती शान्तिदेवी आर्या तथा श्रीमती भगवती ओबराय ने सम्पूर्ण व्यवस्था मे सहयोग दिया।

ऋषिलङ्गर के पश्चात् आर्य केन्द्रीय सभा की मासिक बैठक मे ऋषि बोधोत्सव के आयोजन पर विचार किया गया। □

आर्यसमाज दीवान हाल के वार्षिकोत्सव पर–

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वराज्य और स्वतन्त्रता की आवाज बुलन्द की थी

–हरिकृष्ण लाल भगत

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सर्वप्रथम स्वराज्य का उदघोष किया था तथा कहा था कि सुराज्य कितना भी अच्छा क्यो न हो स्वराज्य सर्वोपरि होता है। स्वाधीनता सग्राम मे आर्यसमाज के क्षेत्रो से आए तथा आर्यसमाज से प्रेरणा प्राप्त लोगो का योगदान सर्वाधिक था। श्री सीतारामि पट्टाभि रमैया ने काग्रस के इतिहास मे लिखा है कि ८० प्रतिशत काग्रस के लोगो की पृष्ठभूमि आर्यसमाज की थी। ये उदगार केन्द्रीय सूचना एव प्रसारण मन्त्री श्री हरि कृष्ण लाल भगत ने आर्यसमाज दीवानहाल के १०४ व वार्षिकोत्सव के अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर २६ फरवरी १९८९ को लाल किले के मैदान मे व्यक्त किए। श्री भगत ने गर्व पूर्वक कहा कि मैं स्वय भी आर्य शिक्षण सस्थाओ मे पढा हू। श्री भगत ने आर्यसमाज के द्वारा राष्ट्रोत्थान तथा देश की एकता एव अखण्डता के लिए किए जा रहे कार्यो के प्रेरणास्रोत श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए कहा कि उनके निश्छल व्यक्तित्व तथा कर्तव्य निष्ठा से मै बहुत अधिक प्रभावित हूँ।

आर्यसमाज दीवानहाल के वार्षिकोत्सव पर रविवार २६ फरवरी १९८९ को प्रात वेद सम्मेलन का आयोजन तपोपूत सन्यासी श्री स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे किया गया। इस सम्मेलन मे प० शिवकुमार शास्त्री, आचार्य सावित्री देवी वेदाचार्या, प० क्षितिश वेदालकार, प० राजगुरु शर्मा आदि विद्वानो के भाषण हुए। इस अवसर पर वेदो के अध्ययन अध्यापन एव प्रचार प्रसार के लिए आर्यसमाजो को प्रेरणा दी गयी, तथा प्रस्ताव पारित किया गया कि सभी आयजन प्रतिदिन वेदो का स्वाध्याय करे। सरकार से आग्रह किया गया कि वेदो मे जो उपदेश हैं वे प्राणीमात्र के लिए है, अत उनके प्रचार प्रसार मे भारत सरकार किसी भी प्रकार की कमजोरी न दिखाए।

(विस्तृत समाचार आगामी अक मे)

(पृष्ठ २ का शेष)

सुन्दर मनुष्य को देखता है एक पल के लिए ठहर जाता है परन्तु फौरन उसके मन मे विचार उठता है कि यह आकृति दस साल बाद बिल्कुल बदल जायेगी यदि कोई रोग लग जाये तो सम्भवत एक दिन मे जमीन-आसमान का अन्तर आ जाये। मननशील व्यक्ति अपने मन म सोचता है कि इसके अन्दर सुन्दरता कहाँ स आई ? क्योंकि यदि इसका यह स्वाभाविक गुण होता तो इसमें परिवर्तन न आता। फिर क्यो उस सौन्दर्य के स्रोत की ओर न चल कि इस तुच्छ पचभूतों के शरीर ने सुन्दरता प्राप्त की है। इस विचार ने पूर्णरूप धारण किया और बुद्धिमान् मनुष्य आगे चल देता है इस प्रकार उसने लक्ष्य को समझकर अपने कर्तव्य का सहारा ले लिया है। जिसने अपना लक्ष्य परमात्मा को बनाया है और उसे सारे विश्व की माता अनुभव किया है वह मासारिक विषयो के अन्दर कैसे फस सकता है ? हर सौन्दर्य के अन्दर वह माता का सौन्दर्य देखता है और प्रत्येक आकर्षक पदार्थ में उसे माता का प्रेम नजर आता है। न केवल यही बल्कि कष्ट और क्लेश मे भी उसे पिता के न्याय का हाथ दिखाई देता है। फिर उसके समीप न मोह आता है न शोक और वह आदर्श मनुष्य सीधा परमपद की ओर चल देता है।

प्रिय पाठकगण ! अपने कर्तव्य को समझो। वही तुम्हारा धर्म है। परमात्मा की भक्ति और उसकी पूजा तुम्हे जीवन उद्देश्य की ओर ले चलेगी। हम उसकी पूजा कैसे कर ? किस वस्तु मे वह व्यापक नही है ? और कौन सी वस्तु है जो उसकी नही है ? उसके लिए हम बाहर से भेट क्या लायगे ? इसीलिए तो वेद ने कहा है कि मन वचन और कर्म से किया हुआ सब कुछ परमात्मा के अर्पण करो। यहा तक कि 'आत्मा यज्ञेन कल्पताम्। यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्।' फिर परमधाम से तुम दूर न रहोगे, क्योंकि परधाम के लिये समय या दूरी कुछ रुकावट नही है। परमधाम तुम्हारे अन्दर मौजूद है और तुम बाहर भटक रहे हो। परमपिता के अमृतपुत्रो ! अपने परम अधिकार को समझो और उस तक पहुचने के अधिकारी बनो।

शब्दार्थ—हे अर्जुन ! (स्वे स्वे कर्मणि) अपने अपने कर्तव्य मे (अभिरत) दत्तचित्त होकर ही (नर) कर्मशील मनुष्य (संसिद्धि लभते) इच्छानुसार निज उद्देश्य को प्राप्त करता है। (स्वकर्मनिरत) अपने कर्तव्य मे निरत मनुष्य (यथा) जिस प्रकार से (सिद्धि विन्दति) सफलता को पाता है (तत् शृणु) वह उपाय सुनो।

हे अर्जुन (यत भूतानां प्रवृत्त) जिससे सकल ससार पैदा हुआ है और (येन) जिसने (सर्वमिदम्) इस विश्व को (ततम) अपने-अपने सामर्थ्य से व्याप्त किया हुआ है (तम) उस परमेश्वर को (स्वकर्मणा) अपने कर्तव्य से (अभ्यर्च्य) पूजा करके प्रसन्न करके (मानव) मनुष्य (सिद्धि विन्दति) यथार्थ सफलता को उद्देश्य को प्राप्त कर लेता है।

धन्य धन्य देवर्षि

—श्रीमती सावित्री रस्तोगी

धन्य धन्य देवर्षि, अतुल कर्मठ सेनानी।
जन जन की दुख दर्द कहानी तूने जानी ॥

सत्य अर्थ कर दिया प्रकाशित, निज लेखन से।
बधी प्रीति की डोर, जुड़ा मन शिव चेतन से ॥

किया उजागर सत्य, शक्ति वह अजर अमर है।
क्यो होगा अवतरित, देह जब यह नश्वर है ॥

जिसने सब कुछ दिया सिखाया उसका वन्दन।
मन में ही हो ध्यान, मनन अर्चन प्रभु चिन्तन ॥

चतुर्मुखी प्रतिभा से, सच्चा पथ निहारा।
दुखियो, दलितो पतितो का बन गया सहारा ॥

महातपस्वी सन्त वेद पथ का अनुगामी।
ले प्रकाश का दीप, बना हर दिल का स्वामी ॥

तूने जो कुछ किया, लिखा वह कैसे जाये।
वाणी मे वह शक्ति कहा, वर्णन कर पाये ॥

तेरे ज्योतिर्मय जीवन से नव पथ पाऊँ।
देश धर्म के लिए जियू नित बलि बलि जाऊँ ॥

॥ ओ३म् ॥

दानी भाई बहनों की सेवा में नम्र निवेदन

माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय

सी-१, जनकपुरी, नई दिल्ली-११००५८

के नवनिर्मित वार्डों के लिए निम्न सामान की आवश्यकता है—

१	५० पूर्ण बिस्तर	प्रति बिस्तर १५००/- रुपये
२	५० पखे छत के (५६ इंच)	६०० रुपये प्रति
३	वाटर कूलर तीन (बड़े)	लगभग १२,०००/- रुपये प्रति
४	दंत चिकित्सालय का सामान	५० हजार रुपये
५	एयर कन्डीशन ५	२० हजार रुपये प्रति
६	एक जनरेटर १०० कि० वा०	लगभग एक लाख रुपये
७	नेत्र रोग के आधुनिक उपकरण	लगभग ५ लाख रुपये

दानदाताओ के नाम दान की गई वस्तु पर अंकित किये जायेगे ।

दान की गई वस्तुएँ या उसके लिए दी गई धनराशि ।चैक/नकद/मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट निम्न नाम और पते पर भेजे—

माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय

आप द्वारा दी गयी दानराशि आयकर अधिनियम ८०-जी० के अन्तगत करमुक्त होगी ।

निवेदक

महाशय धर्मपाल
(प्रधान)

ओमप्रकाश आर्य
(मन्त्री)

इन्द्रप्रस्थ भारती

हिन्दी अकादमी की त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

संपादक : डा० नारायणदत्त पालीवाल

यदि आप चाहते हैं कि बेहतर पढवे को मिले तो आपकी इस जरूरत को

'इन्द्रप्रस्थ भारती'

हिन्दी अकादमी की साहित्यि त्रैमासिक पत्रिका पूरा करती है, जो महज एक पत्रिका नही पूरी किताब है।

जिसमे वर्ष भर मे छ सौ पृष्ठो की साहित्यिक सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी,

जिसमे देश के जिम्मेदार लेखक हिस्सेदारी करेगे।

यह पत्रिका समकालीन साहित्य का रचनात्मक मूल्याकन और गतिविधियो को प्रस्तुत करती है। एक सौ बावन से अधिक पृष्ठ की इस पत्रिका के एक अक मूल्य पाच रुपये, वार्षिक बीस रुपये। आपका सहयोग हम बेहतर सेवा के लिए और अधिक प्रोत्साहित करेगा।

वार्षिक शुल्क मनीआर्डर/बक ड्राफ्ट/पोस्टल आडर द्वारा इस पते पर भेजे —

सचिव,
हिन्दी अकादमी, दिल्ली
ग-२६/२७, सनलाइट इश्योरेस बिल्डिग
आसफ अली रोड, नई दिल्ली-११०००२

चाट मसाला

चाट मसाला और फलों को
अत्यन्त स्वादिष्ट बनाने के लिये
यह बेहतरीन मसाला है।

CHAT MASALA

Excellent for garnishing Chat Salads and fruit to provide delicious taste and flavour

अमचूर

अपनी स्वादिष्टी तथा शुद्धता के
कारण यह खाने में विशेष स्वाद
और लज्जत पैदा करता है।

AMCHOOR (Mango Powder)

It adds special tangy taste and flavour to your dishes with its quality and purity

वर्ष १२ अंक १८ | रविवार १२ मार्च १९८९ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८ | फाल्गुन २०४५ | दयानन्दाब्द—१६४
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० डालर ३० पौंड

महर्षि दयानन्द के आदर्शों पर चलने के संकल्पों के साथ

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली का १०४वां वार्षिकोत्सव

धूमधाम से सम्पन्न

आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली का १०४वा वार्षिकोत्सव लालकिला मैदान मैं बनाए गए विशाल पडाल मे दिनाक २४, २५, २६ फरवरी १९८९ को धूमधाम से मनाया गया।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

वार्षिकोत्सव के अवसर पर यजुर्वेद की पावन ऋचाओ से लाल किला मैदान स्थित यज्ञशाला मे यज्ञ सम्पन्न किया गया। २४ फरवरी को महू (मध्य प्रदेश) से पधारे प० राजगुरु शर्मा के ब्रह्मत्व मैं यज्ञ का शुभारम्भ हुआ। वेदपाठ का कार्य आचार्या सावित्री देवो वेदाचार्य (बरेली), महात्मा रामकिशोर वैद्य, प० महेन्द्र कुमार शास्त्री तथा प० यशपाल सुधाशु' तथा श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर, नई दिल्ली के ब्रह्मचारियो ने सम्पन्न किया। यज्ञ के पश्चात् वैदिक विद्वानो के धर्मोपदेश होते रहे जिनमें प० शिवकुमार शास्त्री (पूव सासद), प० राजगुरु शर्मा, आचार्या सावित्री देवी, महात्मा राम किशोर, प० यशपाल 'सुधाशु' आदि प्रमुख थे। इस अवसर पर भजनोपदेशक श्री गुलाबसिंह 'राघव' ने अपने मधुर सगीत और भजनो से आर्य-जनता को आर्यत्व का परिचय कराया।

प्रथम दिवस यज्ञ का प्रारम्भ श्री कुशानन्द भारतीय (कार्यकारी पाषद, दिल्ली) ने किया। अपने उद्बोधन मे आप ने कहा कि महर्षि दयानन्द युगद्रष्टा थे। उन्होने देश-वासियो को स्वधर्म और स्वदेश के प्रति समर्पित रहने की प्ररणा की था। महर्षि दयानन्द ने वेद प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तो के आधार पर राष्ट्रीय सस्कृति के पुनरुद्धार के लिए जो महान प्रयास किया वह भारतीय इतिहास का एक सुनहरा अध्याय बन चुका है। अन्तिम दिवस यज्ञ की पूर्णाहुति श्री हरिकिशन लाल भगत, केन्द्रीय सूचना एव प्रसारण मन्त्री द्वारा अपनी आहुति दिये जाने के साथ सम्पन्न हुई। इस अवसर पर श्री भगत ने कहा कि आर्यसमाज ने देश के स्वाधीनता सग्राम मैं न केवल अद्वितीय योगदान दिया है, अपितु अछूतोद्धार महिला कल्याण, शिक्षा के प्रचार-प्रसार आदि अनेकों क्षत्रो मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होने स्वीकार किया कि आर्यसमाज के विचार व सन्देशो को हमारे सविधान निर्माताओ ने सविधान मे शामिल किया है और सरकार भी उन्ही नीतियो व कार्यक्रमो पर चल रही है।

ध्वजारोहण

वार्षिकोत्सव का विधिवत प्रारभ यज्ञ के पश्चात ध्वजारोहण से हुआ। २४ फरवरी को प्रात काल यज्ञ के उपरान्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जो सरस्वती ने "ओ३म्" ध्वज का उत्तोलन कर आर्य जनता का आह्वान करते हुए कहा कि आर्य-समाज का कार्य आज पहले से बढ गया है। विदेशी षडयन्त्रकारी आज हिन्दू जाति को विभाजित करने मैं लगे हुए हैं। स्वामी जो ने आर्य

(शेष पृ० ५ पर)

आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा आयोजित ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर—

आर्यसमाज भारत का सजग प्रहरी है

—वीर बहादुर सिंह, केन्द्रीय संचार मत्री

आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान मे दिल्ली की सभी आर्यसमाजों एव शिक्षण सस्थाओ की ओर से फिरोजशाह कोटला के विशाल मैदान मैं शिवरात्रि के अवसर पर सोमवार ६ मार्च १९८९ को ऋषि बोधोत्सव एव लेखराम बलिदान दिवस सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की अध्यक्षता मे आयोजित किया गया। इस अवसर पर केन्द्रीय सचार मन्त्री श्री वीर बहादुर सिह ने कहा कि आर्य-समाज ने सामाजिक उत्थान के अनेक क्षेत्रों मैं प्रशसनीय कार्य किया है। उन्होने बताया कि अकेले उत्तर प्रदेश मे लगभग ३५० शिक्षण सस्थाएं आर्यसमाज द्वारा चलाई जा रही हैं। समाज मे जब जब कोई बुराई पनपती है, आर्यसमाज एकदम उठ खडा होता है। सासद श्री सीताराम केसरी ने कहा कि आर्य-समाज का योगदान देश को स्वाधीनता दिलाने मैं तो है ही, इसे गौरव दिलाने में भी है। दैनिक हिन्दुस्तान के प्रधान सम्पादक श्री हरनारायण निगम ने कहा कि आर्यसमाज और वैदिक धर्म का उन के ऊपर विशेष प्रभाव रहा है क्योंकि आर्यसमाज ने बेकार के रीतिरिवाजों का सदा ही विरोध किया है। प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु ने बाइबिल से उद्धरण देकर ऋषि दयानन्द की उत्कृष्टता को प्रमाणित किया। श्री बाल दिवाकर हस और प० यशपाल सुधाशु ने आर्यसमाज द्वारा किये जा रहे सराहनीय कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया।

इससे पहले आर्य युवक परिषद की ओर से भाषण प्रतियोगिता हुई। इस अवसर पर मन्त्रदौड, नियमदौड और कबड्डी आदि खेलों का आयोजन भी किया गया। आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश की ओर से व्यायाम प्रदर्शन किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने आर्य वीरों का अभिवादन स्वीकार किया।

प्रात काल प० यशपाल सुधाशु के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया गया। तत्पश्चात् दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर बोलते हुए उन्होने कहा कि हमे सगठन मे रह कर निष्ठापूर्वक आर्य-समाज के कार्य को आगे बढाना चाहिए। उन्होंने बताया कि यह ध्वज त्याग और बलिदान का प्रतीक है। ●

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त
प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

नहि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः ।
यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते ।।
अनिष्टमिष्टं मिश्रं च त्रिविधं कर्मणः फलम् ।
भवत्यत्यागिनां प्रेत्य न तु सन्यासिनां क्वचित् ।।

—गीता अ० १८, श्लोक ११-२१

कर्मों से कौन भाग सकता है ? किसी आश्रम में भी कर्म मनुष्य का पीछा नही छोडते । क्या सन्यासी कर्म से पृथक हो सकता है । भला जब मानसिक व्यवहार ही सारा रुक जावे तो सन्यासी क्या ? उसके कर्त्तव्य क्या ? सन्यासी का परम धर्म निडर होकर पक्षपात से रहित धर्म का आन्दोलन करके उसका सांसारिक मनुष्यों के हित के लिए प्रचार करना है । परन्तु जिसने वाणी के कर्म को रोक दिया, वह सत्य का प्रचार कैसे कर सकेगा ? इसलिए कर्म का त्याग करना असम्भव ही है । त्याग किसे कहते हैं ! फलों का त्याग ही सच्चा त्याग है । यह सुनकर सांसारिक पुरुष प्रश्न करेगे कि क्या दीर्घदर्शी अनुभवी मनुष्य, समय के प्रवाह को नही देख सकते ? क्या वे अपने देश की भलाई के कारण को जाने बिना ही और उसके परिणामों का पता लगाये बगैर ही अन्धाधुन्ध काम करेगे ? यह प्रश्न बडे आवश्यक हैं किन्तु साथ ही इनमें अविद्या का परिणाम है । क्या तुमने कभी देखा है कि जो काम किसी परिणाम से सोचा जाय वही प्राप्त होता है ? कदाचित् नहीं । हां, जब दूसरे प्रकार का अच्छा परिणाम निकल आता है तो काम करने वाले की दूरदर्शिता की प्रशंसा की जाती है । मनुष्य निर्बल है, मनुष्य की सब शक्तियां अल्प हैं, तब कैसे वह जान सकता है कि उसके विशेष काम का क्या परिणाम होगा ? हां, एक बात तो मूर्ख भी समझ सकता है । यदि उसको उसका कर्तव्य बतला दिया जाय तो परिणाम को बिना सोचे वह अपने कर्त्तव्य को पूरा कर सकता है । इसलिए कृष्ण भगवान् कहते हैं कि फलभोग की इच्छा इसलिए नहीं करनी चाहिए कि तुम निश्चय के साथ कह नही सकते कि जिस कार्य का तुमने एक विशेष परिणाम सोच रखा है, उसका वह निश्चित परिणाम होगा ही । तुम एक इष्ट कार्य को बडी रुचि से करते हो, इस विचार से कि उसका विशेष परिणाम तुम्हारी रुचि के अनुकूल होगा । तुम दूसरे कार्य को जिससे घृणा है बाधित होकर करते हो, परन्तु परिणाम तुम्हारी इच्छा के विपरीत निकलता है । एक काम को तुम दोनो भावों से करते हो, परिणाम एक तीसरे प्रकार का निकल आता है । तुम्हारी इच्छा चाहे कुछ हो क्यों न हो, परन्तु तुम्हारे कर्मों का फल मिला और उसके पश्चात् कुछ भी स्थिर नही रहा । हां, उन कर्मों के प्रबल सस्कार स्थिर रह जाते हैं जो भयानक रूप बनाए हुए तुम्हें सदैव दुःख से पीडित रखते हैं । जिस सन्यासी ने फल को त्याग दिया है वह दिन-रात कर्म करता हुआ भी उनके सस्कारो का दास नही बनता, इसलिए कि वह उनके अन्दर फंसता ही नही है । झूठे त्याग ने भारतवर्ष देश को रसातल तक पहुचा दिया है । ईश्वरीय नियम के विरुद्ध कर्म करते हुए मनुष्य समाज का कोई अंग स्थिर नही रह सकता । राज्य का प्रबन्ध करता हुआ राजा जनक क्यों विदेह, मुक्त प्रसिद्ध हुआ ? इसलिए कि एक तरफ जहां आग से एक जीव के जलने का उसे शोक न था वहां दूसरी ओर उत्तम से उत्तम भोगों का सुख उसे विचलित न होने देता था ।

इसलिए मेरे प्रिय पाठकगण ! इन कारणों से फल भोग की इच्छा को छोडकर सब काम करो । मैं जानता हूं यह कैसा कठिन मार्ग है ! इस मार्ग में चलते हुए मैंने अनेक ठोकरे खाई हैं । सम्भवत आप लोगो ने मुझ से अधिक ठोकरे न खायी होंगी । मेरा अनुभव मुझे बतलाता है कि यह मार्ग कठिन है । इसके अतिरिक्त जिधर जाओगे भटकते फिरोगे । इसलिए आओ, एक दूसरे को बल देते हुए हम सब इसी निष्काम मार्ग पर चलने का यत्न करे । हम सब निर्बल हैं, दीन हैं, परन्तु जिस परमात्मा ने अपनी अपार दया से अपने ज्ञान के भण्डार को हमारे लिए खोल दिया है, वह सर्वशक्तिमान् है । हमारा पिता सर्वज्ञ और सर्वोपरि विराजमान है । अगर हम उस का सहारा ढूंढे, यदि शुद्ध मन से उसके दरबार में याचक बनकर जावे तो हम में भी बल आ सकता है । परमात्मा ने स्वय हमें प्रार्थना की विधि बतलाई है । उन्होंने स्पष्ट आज्ञा दी है कि मुझे बल-भण्डार से बल मांगो । मन, वाणी और कर्म को शुद्ध करके तीनों के द्वारा प्रार्थना करो, तुम्हारी प्रार्थना निष्फल न होगी । हमारे अविश्वासी मन भटकते फिरते हैं, पिता हमारे रोम-रोम में रम रहे हैं । माता की गोद में बैठे हुए हम इस प्रकार अविश्वासी हों, हम से बढकर अधम कौन हो सकता है ? आज से ही प्रण करो कि हम शुद्ध भाव से प्रात और साय पिता की शरण मे शुद्ध हृदय लेकर उपस्थित हों । सारे अन्दर के भावों की भेंट उसके आगे चढाये । हम और क्या भेंट ले जा सकते हैं ! कौन-सी सांसारिक वस्तु है जिस पर हमारा अधिकार है ! अगर सारा ऐश्वर्य परम ईश्वर का है तो हमारे पास अपने आत्मा के अतिरिक्त और क्या है । इसलिए सिवाय इसके कि उसके सर्वभावों को ईश्वर की भेंट करे, और हम क्या कर सकते हैं ?

हे शान्ति निकेतन ! हमारे अशांत हृदय, ईर्ष्या और द्वेष से दग्ध हो रहे हैं । फल-भोग की इच्छा ने हमें कहीं का नही छोडा । आप कृपा करो दया करो इस अशान्त हृदय के अन्दर शान्त अमृत जल की वर्षा करो ताकि अपने हित-अहित को समझकर हम सब आपकी शरण में आवें और अपने कर्त्तव्य को ज्ञानपूर्वक पालन करते हुए आपके अनन्त धाम के अधिकारी बन सकें ।

शब्दार्थ—(देहभृता) कोई भी शरीरधारी (अशेषत कर्माणि) सम्पूर्ण कर्मों को (त्यक्तुम्) छोडने के लिए (नहि शक्यम) समर्थ नहीं है । इसलिए (यस्तु) जो भी व्यक्ति (कर्मफलत्यागी) कर्मों के फलों का त्याग करने वाला है यथार्थ मे (स) वह व्यक्ति ही (त्यागीत्यभिधीयते) त्यागी कहलाता है ।

(अत्यागिनाम्) त्याग-भाव से न काम करने वाले लोगो को (प्रेत्य) मृत्यु के बाद दूसरे जन्म मे (अनिष्ट इष्ट, मिश्र च) बुरा, भला या मिलवां यह (कर्मण) कर्मों का (त्रिविध फलम्) तीन प्रकार का फल (भवति) भोगना पडता है । (सन्यासिनां तु) किन्तु सन्यासियों को (क्वचित्) किसी प्रकार का भी कर्मफल (न भवति) नहीं भोगना पडता है । □

अथ मुक्तिविषयः संक्षेपतः

(महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका से)

द्वारा—पुष्करलाल आर्य, कलकत्ता-७

ओ३म् अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशा पञ्च क्लेशा ।।१।।

भावार्थ—इसी प्रकार परमेश्वर की उपासना करके, अविद्या आदि क्लेश तथा अधर्माचरण आदि दुष्ट गुणों का निवारण करके, शुद्ध विज्ञान और धर्मादि शुभ गुणों के आचरण से आत्मा की उन्नति करके, जीव मुक्ति को प्राप्त हो जाता है । अब इस विषय मे प्रथम योगशास्त्र का प्रमाण लिखते हैं । पूर्व लिखी हुई चित्त की पांच वृत्तियों को यथावत् रोकने और मोक्ष के साधन में सबदिन प्रवृत्त रहने से, नीचे लिखे हुए पांच क्लेश नष्ट हो जाते हैं । वे क्लेश ये हैं—

(अविद्या०) एक अविद्या, दूसरा अस्मिता, तीसरा राग, चौथा द्वेष, और पांचवां अभिनिवेश ।।१।।

(अविद्याक्षेत्र०) उनमे से अस्मितादि चार क्लेशों और मिथ्याभाषणादि दोषों की माता अविद्या है, जो कि मूढ जीवों को अन्धकार में फँसा के जन्ममरणादि दुःखसागर में सदा डुबाती है । परन्तु जब विद्वान् और धर्मात्मा उपासकों की सत्य विद्या से अविद्या विच्छिन्न अर्थात् छिन्न भिन्न होके प्रसुप्ततनुनष्ट हो जाती है, तब वे जीव मुक्ति को प्राप्त हो जाते हैं ।।२।।

अविद्या के लक्षण ये हैं—(अनित्या०) अनित्य अर्थात् कार्य (जो शरीर आदि स्थूल पदार्थ तथा लोकलोकान्तर) में नित्य बुद्धि तथा जो नित्य अर्थात् ईश्वर, जीव, जगत् का कारण, क्रिया क्रियावान् गुण गुणी और धर्म धर्मी हैं, इन नित्य पदार्थों का परस्पर सम्बन्ध है, इनमें अनित्य बुद्धि का होना, यह

(शेष पृष्ठ ७ पर)

ओ३म्
आर्य सन्देश

अमर शहीद पं० लेखराम

जिस सत्यता के लिए किसी महापुरुष को अपने प्राणों को बाजी लगानी पडती है, वह सत्यता उतनी ही व्यापक बन जाती है। यह बात धर्मवीर लेखराम के जीवन से स्पष्ट है। प० लेखराम के बलिदान ने वैदिक सिद्धान्त की व्यापकता में महान् काय किया है। आर्यसमाज के लिए जो कार्य धर्मवीर प० लेखराम के बलिदान के फलस्वरूप हुआ, वह स्वर्णाक्षरो में अकित किया जायेगा। धर्मवीर प० लेखराम का बलिदान ६ मार्च १८९७ को हुआ था। आओ, इस अवसर पर उस वीर बलिदानी के कर्तृत्व का स्मरण कर तथा उसके द्वारा स्थापित सन्मार्ग पर चलने का व्रत ल।

प० लेखराम का जन्म ग्राम सैयदपुर जिला जेहलम की चकवाल तहसील मे सवत् १९१५ मे चैत्र शुक्ला ८ को हुआ था। उनको प्रारभिक शिक्षा दीक्षा उर्दू फारसी मे हुई थी, २१ दिसम्बर १८७५ ई० को प० लेखराम पेशावर पुलिस मे नौकर हो गए। प० लेखराम के लिए यह नौकरी करना कठिन था। इसी कारण जसे तैसे ५ वर्ष बाद उन्हे यह नौकरी छोड देनी पडी। प० जी का मन तो सदा ईश्वर भक्ति मे लगा रहता था। एक सिख सिपाही नियमपूर्वक पाठ और भजन किया करता था। उसका प्रभाव आपके ऊपर बहुत गहरा पडा। उसी समय से लेखराम निरन्तर ईश्वर की उपासना करते रहते थे। आपको गीता स्वाध्याय का बहुत शौक था। परिणामस्वरूप कृष्ण भक्ति मे आपकी भारी श्रद्धा हो गयी। यहा तक कि वैराग्य की भावना भी विकसित हो गयी और आपके मन मे वृन्दावन जाने की भावना बलवती होने लगी। माता पिता ने आपका विवाह करना चाहा, परन्तु आप ने विवाह न किया। और धीरे धीरे आपका झुकाव वैदिक धम की ओर होने लगा। उस समय ऋषि दयानन्द के कार्यों का धूम मची हुई थी। आपको प्रेरणा हुई और आप ने ऋषि प्रणीत ग्रन्थों को पढा। यह समय आपके जीवन मे सक्रमण का समय था। सवत् १९३७ में आप ने पेशावर मे आर्यसमाज की स्थापना की।

प० लेखराम महर्षि के दर्शन करने अजमेर पहुचे। अब तक जिन समस्याओ का व समाधान न कर सके थे, उनका समाधान महर्षि ने ऐसा किया कि वह वीर लेखराम सदा सदा के लिए ऋषि का हो गया।

आप जानते थे कि किसी भी धर्म के प्रचार के लिए एक पत्र का होना आवश्यक है, और इसी कारण आप ने पेशावर आर्यसमाज की ओर से 'धर्मोपदेश नामक मासिक पत्र चलाना प्रारम्भ किया। यह काम बडे परिश्रम और उत्तरदायित्व का था। आपके लेखन के साथ-साथ व्याख्यान का कार्य भी निरन्तर चलता था। आप व्याख्यानों को तैयार करने में बहुत परिश्रम करते थे। व्याख्यान और लेखन के अतिरिक्त शास्त्रार्थ मे भी आपकी बहुत अधिक रुचि थी। एक बार आपका शास्त्रार्थ एक पुलिस इन्स्पेक्टर से भी हुआ था। आपकी दृढ इच्छा थी कि सम्पूर्ण विश्व में आर्यसमाज हो और वैदिक धर्म को ससार का शिरोमणि धर्म समझा जाये। पुलिस की नौकरी जैसा पहले भी लिख चुके हैं, उन्हे रास न आई और २४ दिसम्बर १८८४ को आप ने त्यागपत्र दे दिया।

लेखराम को पेशावर में ऋषि दयानन्द के दो पत्र मिले थे। एक में गोरक्षा-विषयक प्रार्थनापत्र पर हस्ताक्षर कराने का आदेश था और दूसरे में हिन्दी प्रचार के लिए शिक्षा कमीशन को निवेदन भेजने के सम्बन्ध में था। प० लेखराम तो उत्साह के पुञ्ज थे, फलस्वरूप ये दोनो कार्य उन्होने बड उत्साह से किए।

प० लेखराम ने कभी किसी व्यक्ति के वैदिक धर्म पर लगाये आक्षेप को सहन नहीं किया और उनका मुह तोड उत्तर दिया। उन्होने इस्लाम और ईसाई धर्मों की गलत मान्यताओ का सदा जमकर विरोध किया। ऋषि दयानन्द के निर्वाण के बाद उन्होने अपनी जिम्मेदारी और भी ज्यादा अनुभव की। और वे रात दिन आर्यसमाज के काम में जुट गये। उन्होने बड परिश्रम से ऋषि जीवनी लिखी। इसके लिए मनोयोग से सामग्री एकत्रित की। आप ने कुम्भ के मेले पर वैदिक धर्म का प्रचार किया। सिन्ध प्रान्त मे तो धर्म की रक्षा के लिए आप ने जो कार्य किया, उसके वर्णन के लिये तो अनेक पोथे लिखने पडगे। राजपूताना और काठियावाड मे जब वे ऋषि के जीवन-सम्बन्धी सूचनाए इकट्ठी करने के लिए गए, तो वे अपने प्रचार कार्य मे भी साथ ही लगे रहे।

आप ने मास भक्षण का सदैव विरोध किया और प्रबल तर्कों तथा युक्तियों से सिद्ध किया कि वेदों मे मास-भक्षण का कही पर भी विधान नही है।

मालेर कोटले मे आप ने जो १८९५ में शास्त्रार्थ पुनर्जन्म के सम्बन्ध मे किया था, उससे अनेक लोग इतने प्रभावित हुए थे कि वे आप की हर इच्छा पर बलिदान होने को तैयार थे।

प० लेखराम का जीवन सदाचार और सादगी का जीवन था। आप धार्मिक व्यक्ति थे तथा प्रतिदिन वेद, कुरान, बाइबिल आदि का स्वाध्याय किया करते थे। आप आर्य सस्कृति के महान् सरक्षक थे।

६ मार्च १८९७ को एक विश्वासघाती मुसलमान युवक के हाथो आपका बलिदान हुआ। प० लेखराम आज इस दुनिया मे नही हैं, पर उन के कार्य आज भी आर्यों में नवजीवन और ऊर्जा का सचार करते हैं। प० लेखराम आर्यसमाज के इतिहास में सदा अमर रहेगे।

दिवंगत आर्य श्रेष्ठी

मुनिवर पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

प० गुरुदत्त की मात्र २६ वर्ष की आयु मे १९ मार्च १८९० को मृत्यु हुई थी। पाश्चात्य ससार की आखो को वैदिक ज्योति से चुधिया देने वाला अद्वितीय व्याख्याता इस ससार से सदा के लिए उस दिन विदा हो गया था। सभी लोग विलाप करते रह गए। एक शून्य छा गया। यदि वे अभी भी होते तो उन्होने आर्यसमाज का कितना काम किया होता। महर्षि दयानन्द सरस्वती की मृत्यु के बाद वे केवल छ वर्ष ही तो जीवित रहे, पर आर्यसमाज आन्दोलन मे वे अमिट छाप छोड गए। उन्होने वैदिक साहित्य की बडी भारी सेवा की। आर्यसमाज का प्रचार किया। अपने शरीर तक की उन्होने परवाह न की।

प० गुरुदत्त २६ अप्रैल १८६४ को मुलतान नामक नगर में पैदा हुए थे। पजाब प्रान्त ने आर्यसमाज को अनेक महापुरुष दिए हैं। स्वामी विरजानन्द स्वामी श्रद्धानन्द प० लेखराम महात्मा हसराज आचार्य रामदेव यही पर जन्मे थे। प० गुरुदत्त २० जून १८८० को आर्यसमाज में प्रविष्ट हुए थे। उन दिनों प० रमलदास और लाला चेतनानन्द उनके परम मित्र थे। उन्हे आर्यसमाज लाहौर की ओर से १८८३ मे स्वामी दयानन्द सरस्वती की रुग्णावस्था में सेवा करने भेजा गया था। १९ वर्ष का गुरुदत्त। स्वामी जी महाराज की स्थिति एव वक्तव्य से बहुत प्रभावित हुआ। उन्होने देखा कि ईश्वर विश्वासी व्यक्ति कितनी शान्ति से मरता है। यह आस्तिकता की उनके ऊपर अमिट छाप थी। उनके अनेक लेख 'आर्य मैगजीन", 'दी रीजनेटर आफ आर्यावर्त" तथा "आर्य पत्रिका' मे छपे थे। उनकी पुस्तक "वैदिक सज्ञा विज्ञान तथा यूरोपीय विद्वान्', वाजसनेय सहितोपनिषत ईशोपनिषद' आदि प्रकाशित हुई। ऋग्वेद के मन्त्रों पर उन्होने वायुमण्डल' 'जलरचना' तथा 'गृहस्थ' नाम से लेख लिखे। उन्होने अनेक लेख अग्रजी, हिन्दी एवम् सस्कृत मे लिखे। हमारी प० गुरुदत्त के प्रति विनत श्रद्धाजलि।

ऋषि दयानन्द की दृष्टि, होती यज्ञ से वृष्टि !

—विवेकानन्द सरस्वती
प्रभात आश्रम, मेरठ

(१) 'आरोग्य और अधिक वर्षा होने के लिए एक वर्ष में १००००) दश हजार रुपये के घृतादि का जिस रीति से होम हुआ था, उसी रीति से प्रतिवर्ष होम कराइये। परन्तु उनमें से ५०००) पाच हजार के सुगन्धित घृत मोहन भोग का होम वर्षा ही में कि जिस दिन वर्षा का आर्द्रा नक्षत्र लगे उस दिन से लेके विजय दशमी तक चारो वेदो के ब्राह्मणो का वरण करा एक सुरक्षित धार्मिक पुरुष उन पर रख के होम कराइयेगा। सब से मेरा आशीर्वाद कहियेगा और इस लेख को यथावत सफल कोजियेगा। ऋ० द० प० वि० पत्र ४८६, पृ० ४४६

(२) 'इस देश मे वर्षा प्राय न्यून होती है। इसके लिए यदि मेरे कहे अनुसार एक एक वर्ष मे १००००) दस हजार रुपयो का घृतादि का नित्यप्रति और वर्षा काल में चार महीने तक अधिक होम करावगे वैसे प्रतिवर्ष होता रहे तो सम्भव है कि देश मे रोग न्यून और वर्षा अधिक हुआ कर।" पुस्तक वही पत्र ५०२, पृ० ४६३।

(३) होम हवन से वायु शुद्ध होकर सुवृष्टि होती है, उससे शरीर निरोग और बुद्धि विशद होती है। पूना प्रवचन।

(४) "इस प्रकार हवन को विशेष योजना के कारण विशेष उष्णता उत्पन्न होकर विशेष वृष्टि उत्पन्न होती है।" वही।

(५) 'सुवृष्टि और वायु शुद्धि होम-हवनादि से होती है, इसलिए होम हवनादि करना चाहिए।" वही।

(६) "यो होमेन सुगन्धयुक्त-द्रव्यपरमाणुयुक्त उपरिगतो वायुर्भवति स वृष्टिजल शुद्ध कृत्वा वृष्टयाधिक्यमपि करोति।" जो व यु सुगन्धयादि द्रव्य के परमाणुओ से युक्त होम द्वारा आकाश में चढ के वृष्टि जल शुद्ध कर देता और उससे वृष्टि भी अधिक होती है, क्योंकि होम करके नीचे गर्मी अधिक होने से जल भी ऊपर अधिक चढता है।' ऋ० भूमिका वेदविषयविचार।

(७) जो होम करने के द्रव्य अग्नि में डाले जाते हैं, उन से धुआ और भाप उत्पन्न होते हैं, क्योंकि अग्नि का यही स्वभाव है कि पदार्थों में प्रवेश करके उनको भिन्न-भिन्न कर देता है, फिर वे हल्के होके वायु के साथ ऊपर आकाश मे चढ जाते हैं, उन में जितना जल का अश है वह भाफ कहाता है और जो शुष्क है वह पृथ्वी का भाग है, उन दोनों के योग का नाम धूम है। जब वे परमाणु मेघ मण्डल मे वायु के आधार से रहते हैं, फिर वे परस्पर मिल के बादल होके उन से वृष्टि, वृष्टि से औषधि औषधियो से अन्न, अन्न से धातु।" वही।

(८) "स्त्री पुरुषो को चाहिए कि स्वयवर विवाह करके अति प्रेम के साथ आपस में प्राण के समान प्रियाचरण, शास्त्रो का सुनना और औषधि आदि का सेवन और यज्ञ के अनुष्ठान से वर्षा करावे।" यजु० १४।८।

(९) 'जैसे अच्छे प्रकार सेवन की हुई गौ दुग्धादि के दान से सब को प्रसन्न करती है, वैसे ही वेदी मे चयन की हुई ईंटें वर्षा की हेतु होके वर्षादि के द्वारा सबको सुखी करती हैं।" यजु० १७।२।

(१०) "वर्षा का हेतु जो यज्ञ है, उसका अनुष्ठान करके नाना प्रकार के सुखो को प्राप्त करो।" यजु० १।१४।

(११) अच्छी प्रकार के पदार्थों को इकट्ठा करके यज्ञ का अनुष्ठान करना चाहिए जो वृष्टि व बुद्धि का बढाने वाला है।" यजु० ११।६।

(१२) "अग्नि में जो हवन किया जाता है तथा जिसको सूर्य अपनी किरणो से खींचकर वायु के वेग से ऊपर मेघमण्डल में स्थापन करता है और फिर वह उसको वहा से मेघ द्वारा गिरा देता है।" यजु० २।८।

(१३) "मनुष्य लोगो को चाहिए कि जिस मेघ से सब का पालन होता है उसकी वृद्धि वृक्षो के लगाने, वनो की रक्षा करने और होम करने से सिद्ध करे, जिससे सब का पालन सुख से होवे।" ऋ० ५।८३।४

इन तेरह स्थलो के अध्ययन से ऋषि दयानन्द का मन्तव्य स्पष्ट हो जाता है कि वे वृष्टि यज्ञ के प्रबल-पोषक, समर्थक एव प्रचारक थे। उन्ही के विचारों का अनुसरण करने वाले आर्यसमाज के आचार्यों एव पुरोहितो को अन्धविश्वासी कहना दु साहस की पराकाष्ठा है। भविष्य में कोई भी दिग्भ्रान्त व्यक्ति ऋषि दयानन्द का नाम लेकर आर्य-जनता को भ्रान्त न कर सके, इसीलिए मैंने वृष्टि यज्ञ परक प्रत्येक स्थलो का एकत्र सकलन कर दिया है, जिससे जिज्ञासु जन लाभ उठायगे तथा वृष्टियज्ञ को अन्धविश्वास-मात्र कहने वालो को समुचित उत्तर देगे। □

शोक समाचार—

आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक

कुंवर वीरेन्द्रसिंह जी वीर 'धनुर्धर' दिवंगत

बडे शोक के साथ लिखना पड रहा है कि उत्तर भारत के पुराने यशस्वी भजनोपदेशक कुवर वीरेन्द्रसिंह जी वीर 'धनुर्धर' का ७७ वर्ष की आयु मे दिनाक ११ फरवरी को प्रात १० बजे, अपने जन्मस्थान ग्राम सम्भालका निकट शामली (उत्तर प्रदेश) में स्वर्गवास हो गया।

'वीर" जी जीवन-पर्यन्त वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार पूरे उत्तर भारत के नगर-नगर और गाव-गाव मे बडी श्रद्धा और लगन से करते रहे। आप ने अपने जीवनकाल मे आर्य जगत् को जहा लगभग दो दर्जन शिष्य (भजनोपदेशक) तयार करके दिये, वहाँ लगभग पाच दर्जन आर्य भजनों तथा गीतों की पुस्तक भी लिखीं। आप केवल गायक और कवि ही नहीं थे वरन आर्य जगत के कर्मठ कार्यकर्त्ता भी थे। आर्यसमाज के सभी आन्दोलनों मे आप ने बढ चढकर भाग लिया। हरियाणा, उत्तर प्रदेश तथा दिल्ली आपकी मुख्य कार्यस्थली रही। 'वीर' की ये पक्तिया बरबस याद आती हैं—

उस प्रभु की है कृपा बडी, याद कर ले घडी दो घडी।
घण्टी बज जाये कब कूच की मौत हरदम सिरहाने खडी॥

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्यसन्देश परिवार श्री 'वीर' जी के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से दिवगत आत्मा की सद्गति तथा उनके परिवारजनो, शिष्यो तथा श्रद्धालुओ को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

आर्यसमाज दीवान हाल का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

(पृष्ठ १ से आगे)

जाति को संगठित होकर अपने कर्तव्यपालन की प्रेरणा करते हुए धर्म जाति और राष्ट्रक्षा के लिए कटिबद्ध होने का आह्वान किया।

भाषण प्रतियोगिताएँ

२४ फरवरी को मध्याह्न पण्डाल में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल आर्य की अध्यक्षता में भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कॉलेज स्तर विद्यार्थियों का विषय "भारतीय राजनीति और नैतिकता" तथा स्कूल स्तर के विद्यार्थियों का विषय "राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दी भाव वयक" था। प्रतियोगिताओं के निर्णायक पद पर डा० वाचस्पति उपाध्याय, डा० कमलकिशोर गोयनका आचार्या सावित्री देवी तथा प्रि० चन्द्रदेव थे। प्रतियोगिताओं में दिल्ली के १८ कॉलेजों तथा २० स्कूलों के छात्र छात्राओं ने भाग लिया। विजयी छात्र-छात्राओं को लगभग तीन हजार रुपयों के नकद पुरस्कार तथा वैजयन्ती और सभी प्रतियोगियों को वैदिक साहित्य तथा मार्गव्यय दिया गया।

इसी अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित नैतिक शिक्षा परीक्षाओं के विजयी छात्र-छात्राओं को भी नकद पुरस्कार तथा प्रशस्ति-पत्र दिये गये।

कार्यकर्त्ता सम्मेलन

रात्रि में कार्यकर्त्ता सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें डॉ० धर्मपाल, श्री सूर्यदेव, श्री यशपाल 'सुधांशु', प० चितामणि आर्य, श्री महेन्द्रपाल वद्य तथा श्री नेतराम शर्मा ने अपने विचार रखे। इस सम्मेलन में दिल्ली की सभी आर्यसमाजों के प्रतिनिधि आर्यसमाज के वर्तमान स्वरूप तथा भावी कार्यक्रम पर विचार करने के लिए उपस्थित हुए थे। इस सम्मेलन में आर्यसमाज के संगठन को शक्तिशाली एवं सुदृढ बनाने के लिए तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार को और अधिक तेज करने का निर्णय किया गया। उन आर्यसमाज विरोधी तत्वों की भर्त्सना की गयी जो स्वार्थवश आर्यसमाज के नेतृत्व को बदनाम करने का कुत्सित अभियान चला रहे हैं। बलात् धर्मान्तरण को रोकने तथा शुद्धि के कार्यक्रम को आगे बढाने का भी निर्णय किया गया।

आर्य महिला सम्मेलन

समारोह के द्वितीय दिवस आर्य महिला सम्मेलन श्रीमती सरला महता की अध्यक्षता में आयोजित किया गया जिसमें डा० सावित्री देवी वेदाचार्य, डा० उषा शास्त्री, श्रीमती प्रकाश आर्या तथा श्रीमती शकुन्तला आर्या ने अपने विचार व्यक्त किए। इस सम्मेलन में श्रद्धेय स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने आर्य महिलाओं को सम्बोधित किया। इस सम्मेलन में अनेक प्रस्ताव पारित किये गये जिनका मूल स्वर था कि नारी-उत्पीडन, दहेज प्रथा, भ्रूणपरीक्षण नारीशोषण तथा सतीप्रथा को समाप्त करने में समाज तथा सरकार मिलकर काय कर।

राष्ट्ररक्षा सम्मेलन

रात्रि में राष्ट्ररक्षा सम्मेलन पूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रोफेसर शेरसिंह जी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में श्रीमती सावित्री देवी वेदाचार्य, डा० धर्मपाल आर्य, प० राजगुरु शर्मा और डा० वाचस्पति उपाध्याय के भाषण हुए।

इस सम्मेलन में पारित प्रस्तावों का स्वर था कि देश की एकता, गरिमा व संस्कृति की रक्षा के लिये जम्मू काश्मीर में धारा ३७० को तुरन्त समाप्त कर दिया जाये। अरुणाचल, मणिपुर, नागालैण्ड, त्रिपुरा एवं आसाम आदि पूर्वी प्रान्तों में विदेशी मिशनरियों द्वारा जो बलात् धर्मान्तरण कराया जा रहा है, सरकार उसमें हस्तक्षेप करके, उसे तुरन्त बन्द कराये। नई शिक्षा नीति में राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप संशोधन परिवर्द्धन कराये जाये। आकाशवाणी और दूरदर्शन द्वारा सम्प्रदाय विशेष की तुष्टीकरण की नीति समाप्त करके सभी के लिये समान नीति अपनाई जाये। स्वाधीनता, स्वाभिमान और स्वराज्य के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे महापुरुषों ने जो मिसाल कायम की है, उससे सम्बधित कार्यक्रम प्रदर्शित किये जायें। पंजाब के आतंकवाद, प्रान्तीय अलगाववाद, साम्प्रदायिक, जातीय व भाषायी संकीर्णताओं के विषधर को सख्ती से कुचला जाए ताकि राष्ट्र सशक्त एवं अविभक्त रहे।

वेद सम्मेलन

समारोह के अन्तिम दिवस २६ फरवरी को प्रात यजर्वेद पारायण यज्ञ का पूर्णाहुति के पश्चात, श्रद्धेय स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में "वेद सम्मेलन" का आयोजन हुआ। स्वामी जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बड़े मार्मिक शब्दों में कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के आदेशानुसार वेद का पढना-पढाना सुनना-सुनाना हम सबका परमधर्म होना चाहिए और हमें वेद के प्रचार व प्रसार में उद्यत रहना चाहिए।

आचार्या सावित्री वेदाचार्य ने अपने शोधपूर्ण व्याख्यान में कहा—वेद स्वत प्रमाण है। इसका ईश्वरीय ज्ञान समस्त संसार के लिए है। विश्व का कल्याण वेद के सन्देश को जीवन में अपनाने से ही हो सकता है।

प्रख्यात पत्रकार प० क्षितीश वेदालंकार ने अपने ओजस्वी भाषण में वेद पाठ के साथ-साथ उसके अर्थ जानने पर भी बल दिया।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा प० राजगुरु शर्मा ने अपनी ओजस्वी वाणी में विस्तारपूर्वक बताया कि चारों वेदों के मन्त्रों में कहीं भी विरोधाभास नहीं है।

आर्य सम्मेलन

आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव मध्याह्न में विशाल स्तर के ऋषिलंगर के पश्चात, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की अध्यक्षता में आयोजित "आर्य सम्मेलन" के साथ सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में श्रीमती सावित्री देवी वेदाचार्या, आचार्य रामकिशोर, प० राजगुरु शर्मा और डा० वाचस्पति उपाध्याय ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस समारोह में कार्यकारी पार्षद (शिक्षा) श्री कुलानन्द भारतीय ने कहा कि आज से कुछ शताब्दियों पूर्व तक भारतीय शासन व संस्कृति ईरान से लेकर जावा सुमात्रा तक फली हुई थी। हमारे प्राचीन ग्रन्थ वेदों में ज्ञान, विज्ञान संस्कृति व आस्था का अपूर्व भण्डार है। महर्षि दयानन्द ने वेद ज्ञान के आधार पर ही जाति, धर्म, संस्कृति परम्पराओं को जोडकर देशवासियों को साधना, व्यवहार और कर्म से उन पर आचरण करने का सन्देश दिया था। उन्होंने कहा कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान दिलाने तथा देश को स्वाधीन कराने में भी उन्होंने अपूर्व योगदान दिया था।

इससे पूर्व सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि आर्यसमाज के सिद्धान्त शास्त्रीय सिद्धान्त हैं। हमारे धर्मग्रंथों से यह सिद्ध होता है कि बुराई अन्याय व अत्याचार के विरुद्ध सदैव संघर्ष होता रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इन्हीं सिद्धान्तों की रक्षा के लिए आर्यसमाज की स्थापना की थी।

सम्मेलन में कई क्रियात्मक प्रस्ताव भी पारित किये गये। एक प्रस्ताव में कहा गया कि हम आर्यसमाज के संगठन के प्रति पूर्ण आस्था, निष्ठा एवं समर्पण भाव से कार्य करते हुए देश के दुश्मनों और विघटनकारी शक्तियों के विरुद्ध राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए प्राणपण से कार्य करेंगे।

दूसरे प्रस्ताव में संस्कृत को त्रिभाषा सूत्र में सम्मानजनक स्थान दिलाने के लिये सरकार से आग्रह किया गया है।

एक प्रस्ताव में संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करने तथा हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं को परीक्षाओं का माध्यम स्वीकार करने तथा एक अन्य प्रस्ताव में बलात् धर्मान्तरण को देश के लिये खतरा बताते हुए सरकार से उसे बन्द कराने का अनुरोध किया गया है।

इस अवसर पर लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान डा० वाचस्पति उपाध्याय का सम्मान भी किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, प० राजगुरु शर्मा, प० यशपाल सुधांशु, श्री ऊधोदास आर्य तथा श्री सूर्यदेव ने माल्यार्पण करके उनका स्वागत किया।

सम्मेलनों में देश के अनेक विद्वानों विदुषियों और कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। आर्यसमाज दीवान हाल के प्रधान श्री सूर्यदेव ने आभार व धन्यवाद करते हुए तीन दिवसीय कार्यक्रम के समापन की घोषणा की।

आर्य जगत के समाचार

संस्कृत रैली

२० फरवरी १९८९ को वोट क्लब पर एक विशाल संस्कृत रैली का आयोजन किया गया। अखिल भारतीय संस्कृत महासम्मेलन के अध्यक्ष प० विश्वदेव भारद्वाज, श्री अटलबिहारी वाजपेयी प्रोफेसर विजयकुमार मल्होत्रा, श्री मदनलाल खुराना, श्रीमती शकुन्तला आर्या, डा० धर्मपाल, डा० शिवकुमार शास्त्री, श्री रामनाथ सहगल, श्री तिलकराज गुप्त श्री बाल दिवाकर हंस, श्रीमती कमलारत्नम, डा० प्रशान्त कुमार वदालंकार तथा दिल्ली और निकटवर्ती क्षेत्रों की अनेक आर्यसमाजों तथा शिक्षा संस्थाओं के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं छात्रों ने इस रैली में उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस रैली का उद्देश्य नई शिक्षा नीति मे संस्कृत को समुचित स्थान दिलाना था।

आर्यसमाज कीर्ति नगर में राष्ट्ररक्षा सम्मेलन

रविवार ५ मार्च १९८९ को आर्यसमाज कीर्तिनगर मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल की अध्यक्षता मे 'राष्ट्ररक्षा सम्मेलन' का आयोजन किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री महाशय धर्मपाल और महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मनोहर लाल कुमार और सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान प० यशपाल सुधांशु तथा विदुषी श्रीमती सुनीति आर्या ने आर्य जनता को सम्बोधित किया। आर्यसमाज कीर्तिनगर की ओर से अनेक जनसेवा कार्य किए जा रहे हैं। अस्पताल लेबोरेटरी, वाचनालय आदि जिनमे प्रमुख हैं। सभा का सयोजन श्री सुभाष विद्यालंकार ने किया।

आधुनिक क्लीनिकल लेबोरेटरी का उद्घाटन

आर्यसमाज राजोरी गार्डन द्वारा सचालित खेमानन्द चुग आर्य धर्मार्थ औषधालय राजोरी गार्डन, नई दिल्ली मे श्री किशनदास दास रामरखी सेठी फाउण्डेशन के आर्थिक सहयोग से एक आधुनिक क्लीनिकल लेबोरेटरी का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, दिल्ली महानगर पार्षद श्री मदनलाल खुराना, श्री शांतिस्वरूप सेठी, श्री सुभाष आर्य, श्री ओ० पी० वधवा, श्री राजकुमार त्यागी, डा० धर्मपाल आर्य, श्री श्री सूर्यदेव, श्री मनोहरलाल कुमार, श्री जगज्योति जैन, श्री बी० एन० शर्मा, श्री बी० एल० भाटिया, श्री के० के० कुमार, श्री बी० एल० पसरीचा, श्री सोमनाथ ठकराल तथा श्री विनोद कुमार विरमानी ने शुभकामनाएं व्यक्त कीं। आर्यसमाज राजोरी गार्डन के अधिकारी जनसेवा के कार्यों मे सलग्न हैं।

आर्यसन्देश पढ़ें, पढ़ायें

आर्य जगत के समाचारों व उपयोगी लेखों, अध्यात्म विवेचनों से युक्त सामाजिक चेतावनियों से जूझने की प्रेरणा देने वाले साप्ताहिक-पत्र "आर्यसन्देश" के ग्राहक बनिये और दूसरों को बनाइये। साथ ही वर्ष में अनेकों संग्रहणीय विशेषांक निःशुल्क प्राप्त कीजिये।

वार्षिक शुल्क मात्र २५ रुपये तथा आजीवन शुल्क मात्र २५० रुपये।

आर्यसमाज तुगलकाबाद का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज तुगलकाबाद का वार्षिकोत्सव रविवार २६ फरवरी ८९ को आर्य सम्मेलन के रूप में मनाया गया। सम्मेलन से पूर्व यज्ञ, भजनोपदेश तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बच्चों द्वारा संगीत के कार्यक्रम हुए। बाद में ऋषि लगर का भी आयोजन किया गया। समारोह को सफल बनाने में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती प० सत्यदेव स्नातक, प० चुन्नीलाल आर्य तथा प० ज्योति प्रसाद विशेष रूप से पधारे।

स्मरणीय है कि यह समाज, आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली की शाखा के रूप में कार्य कर रही है। और इस अवसर पर समाज के सभी सदस्य भारी सख्या में उत्सव पर पधारे।

महाशय धर्मपाल पब्लिक स्कूल में ऋषि बोधोत्सव

रविवार ५ मार्च १९८९ को महाशय धर्मपाल पब्लिक स्कूल सुभाष नगर में ऋषि बोधोत्सव धूमधाम से मनाया गया। शिवरात्रि के पावन पर्व पर आयोजित राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री पूर्व सांसद श्री हरदयाल देवगुप्त, विद्यालय के प्रबन्धक श्री ओ३म्प्रकाश आर्य ने आर्यजनों को सम्बोधित किया। इस अवसर पर बच्चों ने अनेक मनोहारी कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

वार्षिकोत्सव—

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय नरेला, दिल्ली

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय नरेला (दिल्ली-४०) का वार्षिकोत्सव दिनांक २५ २६ मार्च १९८९ को समारोहपूर्वक मनाया जायेगा। इस अवसर पर वेद सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आदि विविध सम्मेलनों के साथ ब्रह्मचारिणियों द्वारा व्यायाम भी प्रदर्शित किये जायेंगे। आर्य जगत के विद्वान् मनीषी, आर्य नेता तथा शिक्षाविज्ञ उत्सव पर पधार रहे हैं।

वार्षिकोत्सव—

आर्यसमाज पालम गांव, नई दिल्ली

आर्यसमाज पालम गांव, नई दिल्ली-४५ का १६वां वार्षिकोत्सव रविवार १२ मार्च १९८९ को प्रात ७.३० बजे से मध्याह्न १ बजे तक समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्यजगत् के विद्वान्, संन्यासी, नेता, उपदेशक एवं भजनोपदेशक पधारेंगे।

स्वामी शक्तिवेश की हत्या !

आर्य जगत् में क्षोभ !

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के संचालक श्री स्वामी शक्तिवेश की असामाजिक तत्वों ने २० फरवरी १९८९ को बल्लभगढ (हरियाणा) के पास गोली मार कर हत्या कर दी। उन की अन्त्येष्टि वैदिक रीति से २२ फरवरी १९८९ को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में हुई। इस मौके पर देश के जाने-माने आर्यसमाजी सन्यासी, नेता और कार्यकर्ता मौजूद थे। गुरुकुल की प्रबन्ध समिति के प्रबन्धक डा॰ सत्यकेतु विद्यालंकार ने स्वामी जी की चिता को अग्नि दी।

बाद में शोकसभा हुई, जिस में सरकार से स्वामी जी की हत्या में शामिल लोगों को तुरन्त गिरफ्तार करने की माग की गई। शोक सभा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो॰ शेरसिंह, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा॰ धर्मपाल, प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल, स्वामी अग्निवेश प॰ सत्यदेव भारद्वाज, प॰ क्षितीश वेदालंकार आदि अनेक नेताओ ने भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

स्वामी शक्तिवेश के निधन पर दिल्ली की आर्यसमाजो तथा अनेक आर्य संस्थाओं ने शोक प्रस्ताव पारित करके भेजे हैं।

एक अन्य शोक-सभा आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली में रविवार २७ फरवरी १९८९ को डा॰ सत्यकेतु विद्यालंकार की अध्यक्षता में हुई जिसमे अनेक नेताओ ने स्वामी जी को श्रद्धांजलि दी।

☸

(पृष्ठ २ का शेष)

अथ मुक्तिविषयः

अविद्या का प्रथम भाग है।

तथा अशुचि मल मूत्र आदि के समुदाय दुर्गन्ध रूप मल से परिपूर्ण शरीर में पवित्र बुद्धि का करना, तथा तलाब, बावरी, कुण्ड, कुआ और नदी आदि मे तीर्थ और पाप छुडाने की बुद्धि करना, और उनका चरणामृत पीना, एकादशी आदि मिथ्या व्रतों मे भूख प्यास आदि दु:खों का सहना स्पर्श इन्द्रिय के भोग मे अत्यन्त प्रीति करना इत्यादि अशुद्ध पदार्थों को शुद्ध मानना और सत्यविद्या, सत्यभाषण, धर्म, सत्सग, परमेश्वर की उपासना, जितेन्द्रियता, सर्वोपकार करना, सब से प्रेमभाव से बर्तना आदि शुद्ध व्यवहार और पदार्थों मे अपवित्र बुद्धि करना, यह अविद्या का दूसरा भाग है।

इसी प्रकार अनात्मा मे आत्म बुद्धि अर्थात् जड में चेतन भाव और चेतन में जडभावना करना, अविद्या का चतुर्थ भाग है। यह चार प्रकार की अविद्या ससार के अज्ञानी जीवों को बन्धन का हेतु होके उनको सदा नचाती रहती है। परन्तु विद्या अर्थात् पूर्वोक्त अनित्य, अशुचि, दु:ख और अनात्मा मे अनित्य, अपवित्रता, दु:ख और अनात्मबुद्धि का होना तथा नित्य, शुचि, सुख और आत्मा मे नित्य, पवित्रता, सुख और आत्मबुद्धि करना यह चार प्रकार की विद्या है। जब विद्या से अविद्या की निवृत्ति होती है तब बन्धन से छूट के जीव मुक्ति को प्राप्त होता है ॥३॥

आर्यसन्देश--दि ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Post in N D P S O on 9 10 3 89 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३९

दयानन्द पब्लिक स्कूल मॉडल टाउन के वार्षिकोत्सव पर—

यदि भारत का कोई राजधर्म होगा तो वह वैदिक धर्म होगा

महापौर श्री महेन्द्रसिह साथी

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना करके इस देश को नई सचेतना एव ऊर्जा प्रदान की थी। आर्यसमाज के लोगो ने स्वाधीनता सग्राम में जो अनथक कार्य किया, वह सराहनीय है। सामाजिक कुरीतियो के उन्मूलन मे आर्यसमाज ने बहुत बडा योगदान किया। साथ ही जनसेवा के कार्यों मे यदि किसी सामाजिक एव धार्मिक सस्था ने ईसाइयो के बराबर कार्य किया तो वह आर्यसमाज ही है। मुझे यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि आर्यसमाज मोडल टाउन मे शिक्षणालय खोला गया है और यहा पर चिकित्सालय भी पहले से ही कार्य कर रहा है। मैं स्वय दीक्षित आर्यसमाजी तो नही हू परन्तु आर्यसमाज के कार्यो मे मेरी श्रद्धा है। यदि कभी भारत को कोई राजधर्म अपनाने की जरूरत पडी तो वह निश्चय ही, वैदिक धर्म होगा क्योकि यह धर्म इन्सान को इन्सान से जोडता है। मैं उसे धर्म नही मानता जिसके अनुयायी किसी का गला काटते हो अथवा आतक फैलाते हो। ये उद्गार महापौर श्री महेन्द्रसिह साथी ने रविवार २६।२।८९ को दयानन्द पब्लिक स्कूल मॉडल टाउन दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर व्यक्त किये। वार्षिकोत्सव एव पारितोषिक वितरण समारोह की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा धर्मपाल ने की। उन्होने शिक्षा के क्षत्र मे आर्यसमाज के योगदान का विवरण प्रस्तुत करते हुए आशा व्यक्त की कि इस विद्यालय के अधिकारी एव अध्यापिकाएँ छात्रो को जीवन मूल्यों के द्वारा सस्कारवान बनायेंगे। इस अवसर पर स्थानीय निगम पार्षद श्री चन्द्रभान बधवा ने भी आर्य जनता का मार्गदर्शन किया। विद्यालय तथा आर्यसमाज के प्रधान श्री महावीर प्रसाद अबोल ने आगन्तुको का स्वागत किया तथा विद्यालय की भावी योजनाओ को प्रस्तुत किया। विद्यालय के प्रबन्धक तथा आर्यसमाज के मन्त्री श्री श्रीकृष्ण चन्द्र शर्मा ने कार्यक्रम का सचालन किया तथा विद्यालय को मान्यता दिये जाने की प्रार्थना की जिसे महापौर श्री साथी ने तत्काल मान लिया और कहा कि वे मान्यता सम्बन्धी आवेदन भिजवा दे। विद्यालय की गतिविधियो से वे सन्तुष्ट हैं, अतः उसे मान्यता दिये जाने मे कोई कठिनाई न होगी। श्रीमती कान्ता खोसला प्रधानाचार्या ने सभी का धन्यवाद किया। इस अवसर पर अनेक शैक्षणिक तथा सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए तथा अनेक पारितोषिक भी वितरित किये गये।

'प्रकर'—बैशाख २०४६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस गली न०१७ कैलाशनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ : अंक २० | रविवार २६ मार्च १९८९ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८ | फाल्गुन २०४५ | दयानन्दाब्द—१६४
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० डालर, ३० पौंड

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार जाते हुए भीषण कार दुर्घटना

आर्यसमाज के बृहत् इतिहास लेखक

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार का निधन

डा० धर्मपाल आर्य, प्रो० शेरसिंह, डा० सुभाष विद्यालंकार घायल

कार चालक की मृत्यु

भारी शोक के साथ यह समाचार दिया जा रहा है कि आर्यजगत् के विख्यात मनीषी विद्वान, इतिहासकार, अनेकों ग्रन्थों के प्रणेता आर्यसमाज के बृहत् इतिहास के लेखक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलाधिपति डा० सत्यकेतु विद्यालंकार का १६ मार्च १९८९ को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय जाते हुए मार्ग में भीषण कार दुर्घटना में निधन हो गया है। आपके निधन से आर्यजगत् का एक जाज्वल्यमान नक्षत्र लुप्त हो गया है। जिसकी पूर्ति होना असम्भव है। आपके निधन का समाचार सुनते ही समस्त आर्यजगत् में शोक छा गया। सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा, प्रादेशिक सभा, आर्य केन्द्रीय सभा, आर्यसमाजों तथा शिक्षण संस्थाओं सभी के कार्यालय शोक में बन्द कर दिये गये।

प्राप्त सूचना के अनुसार दुर्घटनाग्रस्त कार में दिल्ली से डा० सत्यकेतु विद्यालंकार (पूर्व कुलाधिपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय) प्रो० शेरसिंह (पूर्व केन्द्रीय राज्य रक्षा मन्त्री तथा वर्तमान कुलाधिपति कांगड़ी विश्वविद्यालय), डा० धर्मपाल आर्य प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री सुभाष विद्यालंकार प्रात १० बजे के लगभग हरिद्वार के लिए रवाना हुए थे। हरिद्वार पहुंचने से पूर्व ही बहादराबाद के निकट अचानक कार दुर्घटनाग्रस्त हुई। दुर्घटना में डा० सत्यकेतु विद्यालंकार तथा कार-चालक गम्भीर रूप से तथा डा० धर्मपाल आर्य, प्रो० शेरसिंह व सुभाष विद्यालंकार को चोट आयीं। किसी प्रकार एक अन्य गाड़ी द्वारा सभी घायलों को हरिद्वार ले आया गया, जहां डा० सत्यकेतु जी व कार चालक को मृत घोषित कर दिया गया। शेष सभी घायल, आर्य नेताओं को स्वामी श्रद्धानन्द अस्पताल में दाखिल करा दिया गया।

दिल्ली में उक्त समाचार मिलते ही शोक छा गया। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती-प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तुरन्त कार द्वारा हरिद्वार पहुंचे। स्व० डा० सत्यकेतु जी प्रो० शेरसिंह जी, श्री सुभाष विद्यालंकार के परिवार तथा डा० महेश जी विद्यालंकार भी तुरन्त हरिद्वार पहुंचे।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

डा० सत्यकेतु का जीवन आर्यसमाज तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के लिए समर्पित था

वैदिक विद्वानों तथा नेताओं द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने अपने ८६ वर्ष के जीवन का अधिकांश समय आर्यसमाज के लिए साहित्य सृजन में तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की उन्नति एवं विकास के लिए समर्पित किए—ये उद्गार, रविवार दिनांक १९ मार्च १९८९ को आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली में आयोजित एक विशाल शोक-सभा में उपस्थित सभी आर्य संस्थाओं के अधिकारियों, वैदिक विद्वानों, नेताओं ने स्व० डा० साहब को अपनी अपनी भावभीनी श्रद्धांजलियां प्रकट करते हुए व्यक्त किए।

श्रद्धांजली अर्पित करने वालों में स्वामी रामेश्वरानन्द महाराज, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, प्रो० शेर सिंह (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा), प० शिवकुमार शास्त्री (भू०पू० सांसद), प० क्षितीश वेदालंकार (सम्पादक, आर्य जगत) श्री सत्यदेव भारद्वाज, श्री मनोहर विद्यालंकार, प्रो० वेदव्रत, श्रीमती प्रकाश आर्या (मन्त्राणी, प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली) प० यशपाल सुधांशु, श्री दत्तात्रय तिवारी, डा० शिवकुमार शास्त्री, श्री मांगे राम आर्य, ब्र० नन्दकिशोर आदि प्रमुख थे। प्रो० शेरसिंह जी ने जहां दुर्घटना का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया, वहां सभी वक्ताओं ने डा० सत्यकेतु के महान् जीवनवृत्त, व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर मार्मिक शब्दों में अपने-अपने भाव व्यक्त किये। शोक सभा के अध्यक्ष श्री सूर्यदेव (महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आर्यसमाज ने एक विलक्षण प्रतिभा का इतिहासकार, साहित्यकार तथा प्रशासक खो दिया है।

समस्त आर्य जगत् स्तब्ध तथा शोकमग्न

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त | प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

श्रेयान् स्वधर्मो विगुण परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वभावनियत कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्विषम् ॥

—गीता १८।४७

मनुष्य सृष्टि को ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य शूद्र चार वर्णों में ईश्वरीय नियमो ने ही विभक्त कर दिया है। गुण कर्म और स्वभाव तीनों के उचित विचार से मनुष्य को किसी वर्ण में प्रवेश करने का अधिकार है। जब इन कसौटियों ने वर्ण का निश्चय कर दिया तो बुद्धिमान् मनुष्य उन्हीं कर्त्तव्यो के पूरा करने में तत्पर रहता है जो कि गुण, कर्म, स्वभावानुसार उसके लिए निश्चित किए गए हैं। जिस तरह कि अपने वर्ण के कर्त्तव्या को पूरा करता हुआ शूद्र भी घृणा के योग्य नहीं। वेद में परमात्मा ने वर्णों के विभाग को एक मनुष्य की बनावट से प्रकट किया है। जिस तरह मनुष्य की बनावट में मुख, बाहु जंघा और पैर हैं और चारो भागो के समूह का नाम मनुष्य है इसी तरह मुख की अपेक्षा में ब्राह्मण, बाहु की अपेक्षा मे क्षत्रिय, जंघा की अपेक्षा में वैश्य और पैरों की अपेक्षा मे शूद्र, इन चारो के समूह का नाम मनुष्य-समाज है। अगर पैर को अपने काम में लगा होने के कारण से घृणा की दृष्टि से नही देखा जा सकता तो शूद्र को घृणा की दृष्टि से देखने वालो को हम मनुष्य कैसे कह सकते हैं? क्या यह तप नहीं है कि शूद्र अपने स्वामी की सेवा की लगन में अपनी बराबरी के दरजे की मनुष्यता को भूल जाता है? किसी वर्ण के कर्त्तव्यों को भी घृणा की दृष्टि से देखा नहीं जा सकता। कोई समय था इग्लैंड जैसे स्वतन्त्र देशों में भी व्यापारी लोगों को घृणा की दृष्टि से देखा जाता था। परन्तु आज उन देशो में व्यापारी, मनुष्यों के राजा समझे जाते हैं और अंग्रेज दुकानदारो की कौम होने का अभिमान करते हैं।

यह वदिक आचरण है, किंतु कितने शोक की बात है कि जिस स्थान से वैदिक धर्म सारे ससार में फैला जिस देश में उसने युवावस्था को प्राप्त किया, उस देश मे आज 'बनिया' शब्द घृणा से बोला जाता है और हर नीच मनुष्य तक दूसरे से लड़ना हुआ ताना देता है—'मुझे क्या कोई बनिया समझा है?'' वाह! कितना परिवर्तन है! अपना धर्म पालन करते हुए कोई भी दूषित नहीं हो सकता, किन्तु इसके विपरीत दूसरे का धर्म भी मनुष्य को उभार नही सकता। इसका अभिप्राय यह नही है कि मनुष्य को उच्च बनने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए। नहीं, अपने अन्दर जिस कर्त्तव्य के पूरा करने की शक्ति न हो उसको पूरा करने की चेष्टा न केवल दूसरों को हानि ही पहुचाती है बल्कि अपने आपको भी पाप के गढ़े में गिरा देती है। क्या वर्तमान अवस्था में पैर से सोचने का काम लिया जा सकता है और क्या सिर से चलने का काम पूर्णतया हो सकता है? माना कि प्राय नट सिर के बल चलते हैं परन्तु ऐसे चलने वालों का कोई भी सभ्य नहीं समझना और न ये लोग ससार का कुछ भला कर सकते हैं। जिस तरह भुजा का काम उरु से नही हो सकता, उसी तरह वैश्य में यह शक्ति नहीं है कि वह क्षत्रियो के कर्त्तव्य को पूरा कर सके। अगर एक वकील को चिकित्सालय में बठाकर हम उससे चिकित्सा कराना आरम्भ कर तो क्या वह सौ मे से नब्बे बीमारों को मार न देगा? जो जिस काम के लिए तैयार किया गया है उसी काम के करने मे उसकी शोभा है।

इसी प्रकार आश्रमो की व्यवस्था है। जिस मनुष्य ने मानसिक और आत्मिक शिक्षा भली प्रकार प्राप्त नहीं की है और उसका अनुभव करके परमात्मा की समीपता प्राप्त नही की है उसका सन्यास धारण करना जनता को खतरे में डालना है। भगेडी, चरसी, लम्पट व्यक्तियों का ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना व्यर्थ है जिस गृहस्थ आश्रम पर सारे आश्रमो के जीवन का निर्भर है उसके अन्दर कामी लोभी और दुराचारी मनुष्य का प्रवेश करना हानिकारक है। इसका स्पष्ट उदाहरण इस समय हम अपने गिरे हुए देश मे देख रहे हैं। कृष्ण भगवान के उपदेश को आज सब से बढ़कर कृष्णभक्त भूले हुए हैं।

प्रिय पाठकगण! परमात्मा ने तुम में से प्रत्येक को विशेष-विशेष शक्तियां दी हैं। अपने कर्मानुसार तुमने इन शक्तियो को निर्बल या बहुत प्रबल किया है, इसका प्रमाण तुम्हारा आचार है। उस आचार के अनुसार तुम अपने कर्तव्यो को करना आरम्भ कर दो। जिसे झाड़ू मिला है वह क्यों न जगह साफ करे? जिसे सूक्ष्म बुद्धि मिली है वह क्यो मौन साध कर उससे ससार को वंचित करे? क्यो न वह उसके बल से भूले-भटको को सीधे रास्ते पर लगाये? आज भारतवर्ष में सभी ब्राह्मण बनना चाहते हैं। हम मे क्षत्रिय बनने का साहस ही नही है और वैश्य बनने में प्रतिष्ठा कहा? केवल शूद्र बनना तो अलग रहा, शूद्र कहलाना भी कोई पसन्द नही करता।

प्रिय पाठकगण! शूद्रो की इस देश को ज्यादा आवश्यकता है। सेवकों के अभाव ने ही तो यह देश रसातल को पहुंचा दिया है। तुममें से कितने हैं जो शूद्र कहलाने से न घबराते हुए मनुष्यमात्र की सेवा का प्रण धारण करेंगे और वैदिक धर्म के चमत्कार से अन्धकार को दूर करने का यत्न करेंगे।

शब्दार्थ—(सु अनुष्ठितात्) भली भाति किये गए (परधर्मात्) दूसरे के धर्म से, कर्तव्य से (विगुण) छोटा तथा स्वल्प (स्वधर्म) निज का कर्तव्य (श्रेयान्) अधिक श्रेष्ठ है, उत्तम है। क्योंकि (स्वभावनियत) निज स्वभाव के अनुकूल (कर्म कुर्वन्) कर्तव्य का पालन करता हुआ मनुष्य (किल्विषम्) दोष को, पाप को, अनर्थ को (न आप्नोति) नहीं प्राप्त होता।

सम्पादक के नाम पाठकों के पत्र—

महान् साहित्यकार वैद्य गुरुदत्त सरकार द्वारा उपेक्षित क्यों?

भारतीय पुनर्जागरण के मार्ग-द्रष्टा, वर्तमान युग के ऋषि प्रख्यात उपन्यासकार वैद्य गुरुदत्त २५० से भी अधिक उपन्यास, धर्म व राजनीति विषयक पुस्तक लिखने के बावजूद अपने ही देश मे उपेक्षित हैं। हालांकि मास्को विश्वविद्यालय उनके साहित्य पर शोध कर रहा है। सोवियत संघ की हिन्दी विदुषी तथा सूर साहित्य की मर्मज्ञ डा० श्रीमती नतालिया मिखाइलोटना साजानोवा ने गत वर्ष एक भेटवार्ता मे पत्रकारों को बताया था कि मैंने कुछ वर्ष पूर्व भारत यात्रा के दौरान सर्वेक्षण में यह पाया था कि प्रसिद्ध उपन्यासकार वैद्य गुरुदत्त के पाठकों की संख्या बहुत अधिक है। अन्य रूसी विद्वानों ने भी यही निष्कर्ष निकाला था। अत उनके साहित्य पर मास्को विश्वविद्यालय ने शोध-कार्य आरम्भ किया।

लोकप्रियता की दृष्टि से जो मुन्शी प्रेमचन्द जी के समान ख्याति अर्जित है। समस्यामूलक उपन्यासों द्वारा भारतीय इतिहास की व्याख्या करने और वर्तमान राजनीतिक प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत करने में आप लाजवाब हैं। भारतीय संस्कृति व सभ्यता के विभिन्न पहलुओं पर तर्कसगत विश्लेषण करके उन्होंने प्रबुद्ध पाठकों में एक नई चेतना और परिपक्व चिन्तन देकर महान् कार्य किया है। यद्यपि दो विश्वविद्यालयों ने उन पर व उनके साहित्य पर शोध कार्य भी कराया है मगर उनके साहित्य का सही मूल्यांकन नहीं हो पाया। सरकार की तरफ से उनके साहित्य का सही मूल्यांकन नहीं हुआ। ९५ वर्ष का वह वयोवृद्ध साहित्यसेवी आखिर उपेक्षित क्यों रहा? क्या मात्र उनका यह दोष है कि उन्होंने बहुसंख्यक मानी जाने वाली विशाल हिन्दू जाति का सबल ढग से पक्ष प्रस्तुत किया है। लोकतन्त्र में अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का इस विलक्षण व्यक्तित्व ने सरकारी प्रलोभनों, सम्मानो उपाधियों की उपेक्षा करके पूरा पूरा उपयोग किया है। तभी इनके उपन्यास पाठको के अन्तस्तल को स्पर्श करते हैं उन्हें सचेत करते हैं। क्या इस साहित्य-सेवी के विपुल साहित्य को मद्देनजर रखकर सरकार "देर आए दुरुस्त आए" मानकर अपनी भूल सुधारते हुए उन्हें यथोचित सम्मान देगी? भावी पीढ़ी समय की कसौटी पर इनका चिन्तन सही उतरता देखकर अवश्य इनके प्रति आभार व श्रद्धा व्यक्त करेगी क्योंकि २१वीं शताब्दी वैद्य गुरुदत्त की है।

—नरेन्द्र अवस्थी
१ आर्यसमाज मार्केट, श्रीनिवासपुरी
नई दिल्ली-६५

ओ३म्
आर्य सन्देश

मूर्खों से दूर रहें

मूर्खस्तु परिहर्त्तव्यः प्रत्यक्षो द्विपदः पशुः ।
भिनत्ति वाक्यशल्येन अदृश्यः कण्टको यथा ।।

भावार्थ :

मूर्ख से दूर रहना चाहिए, उसे त्याग देना ही उचित है क्योंकि वह प्रत्यक्ष रूप में दो पैरों वाला पशु है। वह वचन रूपी बाणों से मनुष्य को ऐसे ही बींधता है, जैसे अदृष्ट कांटा शरीर में घुसकर शरीर को बींधता रहता है।

—'चाणक्य नीति'

आजकल कई संगठन विरोधी लोग अनर्गल बातें करते सुनाई देते हैं। उनसे बातचीत करने के बाद भी, यह देखा गया है कि वे सही रास्ते पर आने के लिए तैयार नहीं हैं। वे निरन्तर कोई न कोई अनुचित एवं अवांछित बात कहकर, कार्यकर्त्ताओं के उत्साह को क्षीण करते हैं, तथा उनका मनोबल गिराते हैं। आर्यजनों से विनम्र अनुरोध है कि वे ऐसे लोगों की बातों की कोई परवाह न करें।

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार

संक्षिप्त जीवन

जन्म तिथि

१६ सितम्बर, सन् १९०३।

जन्म स्थान

गांव आलमपुर, पो० आ० रामपुर, जिला सहारनपुर (उत्तर-प्रदेश)।

शिक्षा

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के स्नातक तथा इतिहास विषय में पेरिस यूनिवर्सिटी के डी० लिट०।

कार्य

चिरकाल तक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर रहे और फिर वहीं के कुलाधिपति नियुक्त हुए।

जीवन का अधिकांश समय साहित्य निर्माण में व्यतीत किया। उन द्वारा लिखित चालीस पुस्तकें अब तक प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनकी कुल पृष्ठ संख्या बीस हजार के लगभग है।

उनका प्रथम ग्रन्थ "मौर्य साम्राज्य का इतिहास" था, जिस पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने सन् १९२९ में 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' प्रदान किया था।

बाद में विभिन्न राज्य-सरकारों तथा बंगाल हिन्दी मण्डल कलकत्ता और नागरी प्रचारिणी सभा आदि अनेक साहित्यिक संस्थाओं ने पण्डित मोतीलाल नेहरू पुरस्कार' व 'पण्डित गोविन्द बल्लभ पन्त पुरस्कार' आदि कितने ही पारितोषिक उनकी पुस्तकों पर प्रदान किये।

इतिहास और राजनीतिशास्त्र के अनेक उच्च कोटि के मौलिक ग्रन्थों के अतिरिक्त डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने कतिपय उपन्यासों की भी रचना की, जिन्होंने साहित्यिक क्षेत्र में बहुत सम्मान प्राप्त किया है।

आर्यसमाज का इतिहास

पिछले आठ वर्षों में आपने सात-सात सौ पृष्ठों के सात भागों में आर्यसमाज के विस्तृत-इतिहास के लेखन, सम्पादन व प्रकाशन का महान् कार्य किया है।

सार्वजनिक जीवन

अनेक राजनीतिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक संस्थाओं के साथ डा० विद्यालंकार का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। वे सूबा कांग्रेस कमेटी (उत्तर-प्रदेश) के सदस्य और अखिल भारतीय दलितोद्धार सभा दिल्ली के संयुक्त मन्त्री रहे। सन् १९६२ में वे रुहेलखण्ड स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से उत्तर-प्रदेश की विधान परिषद के सदस्य चुने गये थे, और सन् १९५४ में उन्होंने एक शिष्ट मण्डल के सदस्य के रूप में चीन की यात्रा भी की थी।

विशेष यात्राएँ

डा० विद्यालंकार ने इटली, स्विटजरलैण्ड, बेल्जियम, ग्रेट ब्रिटेन, चीन, कीनिया आदि अनेक देशों की यात्राएँ की और दो वर्ष तक लंदन में [illegible] रहे।

निधन

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार जाते हुए कार-दुर्घटना में १६ मार्च १९८६ को निधन।

नैतिक मूल्यों का......

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के भूतपूर्व कुलाधिपति स्व० डा० सत्यकेतु विद्यालंकार की पुण्य स्मृति में आयोजित शान्ति-यज्ञ के समय उपस्थित अनेक आर्यजनों ने जब वर्तमान कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी का ध्यान दैनिक "जनसत्ता" तथा अन्य दैनिक समाचार पत्रों में वाइस चांसलर आदि के सम्बन्ध में सम्बन्ध में प्रकाशित टिप्पणियों की ओर आकृष्ट कराया, तो उन्होंने बताया कि दुर्घटना में डा० सत्यकेतु की मृत्यु तथा घायलों के अस्पताल में भर्ती होने की सूचना सर्वप्रथम विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर तथा विजिटर जो उस समय दिल्ली में थे, टेलीफून द्वारा दे दी गई थी। और उसके पश्चात् दुर्घटनाग्रस्त आर्यजनों के परिवार-जनों तथा प्रमुख व्यक्तियों को दी गयी थी।

प्रो० साहब ने दुखी हृदय से बताया कि दुर्घटना के शिकार आर्य-जनों के परिवार तथा दिल्ली के प्रमुख आर्यजन और नेता तो उसी दिन हरिद्वार पहुंच गये थे, परन्तु विश्वविद्यालय के जिम्मेवार अधिकारी वाईस चांसलर तथा विजिटर महोदय, अगले दिन स्व० डा० सत्यकेतु जी की अन्त्येष्टि सम्पन्न होने के पश्चात् पहुंचे। ऐसे वातावरण के समय शिक्षक वर्ग, छात्रों तथा जनमानस में रोष तथा तनाव उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। उन्होंने आर्यजनों से पूछा कि आप ही बतायें कि अधिकारियों के इस कृत्य को क्या कहें—नैतिक मूल्यों का...... ।

पं० सच्चिदानन्द शास्त्री दुर्घटनाग्रस्त

दिल्ली ११ मार्च। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री कल रात्रि लगभग १०-३० बजे जब दिल्ली गेट के पास राजघाट पर बस से उतर कर रिक्शे में बैठ कर सभा कार्यालय में आ रहे थे तो एक तेज कार ने रिक्शे पर टक्कर मारी और फरार हो गई। कुछ अज्ञात व्यक्ति शास्त्री जी को जयप्रकाशनारायण अस्पताल छोड़ गए। शास्त्री के सिर में कई टांके लगे हैं, काफी खून बहा है। हाथ की हड्डी टूट गयी है जिस पर प्लस्तर चढ़ाया गया है। शरीर के अन्य भागों में भी चोटें आयी हैं।

घटना की सूचना मिलते ही सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती तुरन्त अस्पताल गए और शास्त्री जी से मिले।

स्मरण रहे कि गत १५ फरवरी को भी लखनऊ में कुछ अज्ञात मोटर साइकिल सवार शास्त्री जी को टक्कर मार कर भाग गए थे। शास्त्री जी तब से आज ही दिल्ली लौट रहे थे। पुलिस में मामले की रिपोर्ट दर्ज करा दी गई है पुलिस जांच कर रही है।

शास्त्री जी ने बताया कि पिछले दिनों उन्हें धमकी भरे टेलीफोन तथा पत्र मिले थे।

"आर्यसन्देश" परिवार की कामना है कि आदरणीय शास्त्री जी शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करें।

लेखनी का धनी, इतिहासकार और वैदिक विद्वान्

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार का दुःखद निधन

—यशपाल सुधांशु

आर्यसमाज के प्रसिद्ध इतिहासकार, विख्यात साहित्यकार वैदिक विद्वान् और मनीषी डा० सत्यकेतु विद्यालंकार का १६ मार्च बृहस्पतिवार को सड़क-दुर्घटना मे निधन हो गया। वे ८६ वर्ष के थे। इस अवस्था मे भी उनकी कार्यकुशलता एव मनोबल श्लाघनीय था।

डा० सत्यकेतु चिरकाल तक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफसर रहे। उनके जीवन का अधिकांश समय साहित्य सृजन में बीता। उनके द्वारा लिखित अब तक ४५ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। जिनकी पृष्ठ संख्या २५ हजार के लगभग है। १९२९ मे हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के द्वारा उन्हें 'मंगला प्रसाद पारितोषिक" प्रदान किया गया था। विभिन्न राज्य सरकारों तथा बंगाल हिन्दी मण्डल कलकत्ता और नागरी प्रचारिणी सभा आदि अनेक साहित्यिक संस्थाओं से पण्डित मोतीलाल नेहरू पुरस्कार', व 'पण्डित गोविन्द-वल्लभ पन्त पुरस्कार" आदि अनेक पुरस्कार उन्हें प्रदान किये।

इतिहास और राजनीति शास्त्र के अनेक उच्च कोटि के अनेक मौलिक ग्रन्थों के अतिरिक्त डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने कतिपय साहित्यिक उपन्यासों की भी रचना की, जिन्होंने साहित्यिक क्षेत्र में बहुत सम्मान प्राप्त किया। ऐतिहासिक उपन्यास "आचार्य चाणक्य" के द्वारा उन्हें काफी लोकप्रियता मिली।

१९६२ में वह रुहेलखण्ड स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य चुने गये थे। डा० विद्यालंकार ने अनेक विदेश यात्राएं कीं जिनमें मुख्य हैं—इटली, स्विटजरलैण्ड, बेल्जियम, ग्रेट ब्रिटेन, चीन, केनिया आदि। फ्रांस मे भी वे २ वर्ष तक रहे।

डा० सत्यकेतु रशियन भाषा के भी विद्वान थे। वे रूस मे गये थे जहां पर उनके द्वारा लिखी लघु पुस्तिका रशियन भाषा में प्रकाशित हुई। यह लघु पुस्तिका, स्वामी दयानन्द का संक्षिप्त जीवन चरित" था।

उनका जन्म १९ सितम्बर १९०२ को ग्राम आलमपुर, पोस्ट रामपुर जि० सहारनपुर, उ० प्र० में हुआ था। स्वामी श्रद्धानन्द के काल मे गुरुकुल कांगड़ी में विद्यार्थी रहे। गुरुकुल के स्नातक होने के बाद उन्होंने पेरिस युनिवर्सिटी से इतिहास विषय में डी० लिट् की उपाधि प्राप्त की।

आर्यसमाज के क्षेत्र में उनका योगदान स्तुत्य है। आर्यसमाज के बृहद इतिहास लेखन के कार्य ने उनकी कीर्ति को अत्यधिक विस्तार दिया है।

महर्षि दयानन्द के बलिदान के पश्चात १८८३ में आर्यसमाजों की संख्या कुल ३६ थी। एक सदी के अन्तराल में उनकी संख्या ५५०० हो गयी। देश-विदेश में आर्यसमाज के विटप का वितान हुआ जिसकी सघन शीतल छाया में जन मानस आनन्दित हुआ। इस विराट वृक्ष को अनेक बलिदानियों ने सींचा। आर्यसमाज के गौरवमय इतिहास को लिखने का दायित्व सार्वदेशिक सभा द्वारा डा० सत्यकेतु के नेतृत्व में एक गवेषक विद्वान सम्पादक मण्डल का संगठन कर सौंपा गया। जिसमें डा० सत्यकेतु ने अनवरत अनथक परिश्रम किया जिसके परिणामस्वरूप आर्यसमाज के इतिहास के खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। जो एक महान उपलब्धि है।

इतिहास की सामग्री एकत्रित करने का कार्य अत्यन्त महत्त्व का कार्य है। विशेषतया विविध संग्रहालयों में विद्यमान उन रिकार्डों को ढूंढ निकालने का, जिनका सम्बन्ध आर्यसमाज से है। इस कार्य हेतु स्वामी आनन्द बोध जी के निर्देश पर डा० विद्यालंकार लन्दन गये। वहां ब्रिटिश म्युजियम लायब्रेरी, इण्डिया आफिस लायब्रेरी तथा पब्लिक रिकार्ड आफिस से ऐसी उपयोगी व महत्त्वपूर्ण सामग्री प्राप्त की, जिसके द्वारा १८५७ के स्वाधीनता संग्राम में साधु सन्यासियों के योगदान पर नया प्रकाश पड़ता है। आर्यसमाज के इतिहास में इसका महत्त्व इस कारण भी है क्योंकि १८५७ के संघर्ष में सक्रिय रूप से भाग लेने वाले प्रमुख सन्यासी स्वामी विरजानन्द भी थे और सम्भवत स्वामी दयानन्द भी उस अवसर पर तटस्थ नहीं रहे थे। महर्षि दयानन्द द्वारा स्वाधीनता के लिए किया गया कार्य तो इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ है।

इस प्रकार डा० सत्यकेतु ने अपने जीवन की यात्रा हरिद्वार से प्रारम्भ की थी। देश-विदेश में कीर्ति फैलाकर वे सदा के लिए फिर उसी हरिद्वार की मिट्टी में आकर समा गए। उनका अन्तिम संस्कार गंगा तट पर १७ मार्च को हुआ।

संस्कृत के प्रति उपेक्षा और उसको पाठ्यक्रम से निष्कासित करने के विरोध मे जनरोष

तुम रोक रहे 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' छन्द

संस्कृत के अव्याहृत गति को तुम रोक रहे।
जन मगन की चरमोन्नति को तुम रोक रहे।
तुम लोक और परलोक, सुगति को रोक रहे।
तुम मानव की उन्मुक्त प्रगति को रोक रहे।
तुम वेद ज्ञान के देव काव्य को रोक रहे।
तुम मानवता के सुख सौभाग्य को रोक रहे।
तुम "मा, निषाद" के प्रथम स्वर पर रहे मूक।
तमसा तट के करुणार्द्र छन्द मे जगी हूक।
"भिद्यते हृदयग्रन्थि के' स्वर हो रहे म्लान।
आलोक स्नात ऋषि आत्मा से प्रस्फुटित गान।
वह "गायत्री" का ज्ञान प्राण आनन्द कन्द।
तुम रोक रहे तमसो मा ज्योतिर्गमय' छन्द।
श्रुति स्मृति का मधु अमिय स्राव मकरन्द गन्ध।
तुम रोक रहे ऋचा नाद मलिमन्द अन्ध।
तुम 'सत्य वद, धर्म चर" के स्वर रोक रहे।
तुम 'सवदध्वं तुम 'संगच्छध्वं' को रहे।
तुम 'ईशावास्यमिद सर्वं' से कान मूंद रहे।
मानव जिजीविषा के छन्दों को खूंद खूंद।
जीवन जीने के महामन्त्र सब रूप रूप।
अमृत स्रोतों को सोख रहे तुम बूंद बूंद।
जो अमृत-पुत्र को सबोधन दे अमिय प्राण।
करती आयी जनजीवन को अमृत-प्रदान।
समता-ममता भरती प्राणों में जगा बोध।
उस सर्वमंगला वाणी से किसका विरोध।
'सर्वे भवन्तु सुखिन'की जो घोषणा लिए।
सब हो निरोग सब स्वस्थ प्राण घोषणा जिए।
सब देश भू पर भद्र किसी को शोक न हो।
सब का मंगल अपना मंगल हो रोक न हो।
उस अमर गिरा का तिरस्कार कर मूढमते।
तो खो जाओगे वहां-जहां के नहीं पते।
छीनो मत प्यासों से अमृत की घूंटों को।
क्यों और बढ़ा रहे हो लुटी हाट के लूटों को।
सुरवाणी का स्वर मूक असुरता छायेगी।
यह आंच हमीं पर नहीं, सभी पर आयेगी।
अपने स्वरूप को मूक कहां रह पाओगे।
उड़ते तिनकों से आंधी में उड़ जाओगे।
अनसुनी करोगे चीत्कार तो रोओगे।
कितना खोया है और भला क्या खोओगे।
तुष्टि की तुरुप चालों के झण्डे गाड़ रहे।
क्यों कल्पलता की फूली फली उजाड़ रहे।
पीढ़ियां प्राण का छंद नहीं गा पायेंगी।
गजलों कव्वालों के स्वर में बस झूमेगी।
मदमाती मद में मस्त धरा पर घूमेगी।
तब ऋषि मुनियों का रोष प्रलय को हेरेगा।
तब महाकाल का कोप नाश को टेरेगा।
इसीलिए ऋचा के स्वर में अमृत छन्द पढ़ें।
'तमसो मा ज्योतिर्गमय' मन्त्र सानन्द पढ़ें।

—श्री माखन सिंह भदौरिया
सोमिल, जोनपुरा, मैनपुरी

युग पुरुष स्वामी दयानन्द सरस्वती

—बलभद्र कुमार हूजा

ऋषि दयानन्द ने भारत में उस समय प्रकाशित किया जब यह देश पराधीनता के अज्ञान के निबिड़ अन्धकार में था। उस समय जन साधारण में स्वदेश, स्वभाषा, राष्ट्रीय संस्कृति, आर्य धर्म, शिक्षा नस्ल, नारी शिक्षा, राज दर्शन आदि विषयों पर स्पष्ट अथवा पर्याप्त चिन्तन का अभाव था। पिछड़े जीवन से सन्तप्त, दरिद्रता के आक्रोश में आकण्ठ डूबे हुए भारतवासी दासता मय जीवन में लिप्त थे। देसी रजवाड़े विलासिता और अंग्रेज शाही के विषैले जहर के शिकार थे। रूढ़िवादी धार्मिक परम्पराओं से ग्रसित देशवासी एक ओर तो मूर्तियों के सामने थर-थर कांपते थे दूसरी ओर मगरूर विदेशी आक्रान्ता के सामने अपने स्वाभिमान को तिलांजली दे बैठे थे। भारतीयों को जंगली एवम् असभ्य समझने वाले और वेदों को असभ्य गड़रियों के गाने सिद्ध करने वाले विदेशी विद्वानों को करारा उत्तर देते हुए ऋषि ने इन शब्दों के द्वारा देशवासियों के स्वाभिमान को फिर से जगाते हुए कहा, "यह निश्चय है कि जितनी विद्या और मत भूगोल में फैले हैं वे सब आर्यावर्त देश से ही प्रचारित हुए हैं।"

ऋषि दयानन्द १९वीं शताब्दी के सर्वप्रथम ऐसे भारतीय थे जिन्होंने स्वराज्य, स्वदेशी, स्वभाषा (आर्य भाषा) का महामन्त्र देशवासियों के सामने स्पष्टतः रखा। इस तथ्य को उदारता से स्वीकार करते हुए थियोसोफिकल सोसायटी की प्रसिद्ध नेत्री श्रीमती एनीबीसेण्ट ने कहा था, 'महर्षि दयानन्द ने ही सर्वप्रथम नारा लगाया था कि भारत भारतीयों का है।"

मानवतावादी दयानन्द

ऋषि दयानन्द ने आज से सौ वर्ष पूर्व आर्य अथवा आदर्श मानव का चित्र उपस्थित करते हुए लिखा, "मनुष्य उसी को कहना जो कि मननशील होकर स्वात्मवत् दूसरों के सुख दुःख और हानि लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं—कि चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुण रहित क्यों न हों—उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान और गुणवान भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचार सदा किया करें, अर्थात् जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही निकल जावें परन्तु इस मनुष्यपनरूप धर्म से पृथक् कभी न होवे।" मानव की इतनी सुन्दर परिभाषा शायद ही कहीं उपलब्ध हो।

आर्य से उनका तात्पर्य श्रेष्ठ और दस्यु से दुष्ट पुरुष का था। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के रूप में ऋषि दयानन्द ने दुनिया के लोगों को श्रेष्ठ मानव बनाने का जिहाद छेड़ा था। वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से निर्मित विश्व समाज का जो चित्र ऋषि ने प्रस्तुत किया, संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य देश अभी तक भी उस चित्र की कल्पना नहीं कर सके हैं। इदन्न मम' और 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' के आदर्श पर ही व्यक्ति और समाज के संघर्ष का समाधान हो सकता है, ऐसी उनकी मान्यता थी। विश्वयुद्ध के मंडराते बादलों को ऋषि दयानन्द के विश्ववादी विचारों से ही छिन्न-भिन्न किया जा सकता है।

महर्षि ने मानव जीवन को संकुचित फिरकाबन्दी के दायरे में नहीं देखा, बल्कि समग्र मनुष्य जाति के कल्याण के विशाल आदर्श को लेकर उन्होंने जन समाज के सम्मुख सबकी उन्नति और उपकार का लक्ष्य प्रस्तुत किया। ऋषि दयानन्द विश्व के वन्दनीय मानव हैं तथा उन के उत्तराधिकारी के रूप में उनके विचारों की पताका को प्रत्येक मानव समुदाय में फहराने की महान जिम्मेदारी आर्यसमाज पर है।

छुआछूत, संकीर्ण साम्प्रदायिकता, मत मतान्तरों आदि के व्यामोह में जकड़े भारतीयों को ऋषि दयानन्द ने उद्बोध दिया कि जन्म से कोई बड़ा छोटा, छूत-अछूत नहीं होता, अपितु अपने गुण, कर्म एवं स्वभाव से ही व्यक्ति बड़ा, छोटा, श्रेष्ठ अथवा दुष्ट बनता है।

ऋषि दयानन्द का राजनैतिक चिन्तन

ऋषि दयानन्द ने प्रखर राजनैतिक चिन्तन को उस समय जन मानस तथा देशी राजा महाराजाओं के सम्मुख रखा जब पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ भारतीय स्वदेशी, स्वतन्त्रता, राष्ट्रीयता आदि के संबंध में किंकर्तव्यविमूढ़ थे। देशवासियों को पराधीनता के कारणों का आभास कराते हुए उन्होंने कहा कि स्वायम्भुव, राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त आर्यों का चक्रवर्ती राज्य रहा। तत्पश्चात् वे आलस्य प्रमाद आपस के विरोध से नष्ट हो गये क्योंकि परमात्मा की इस सृष्टि में प्रमादी, अभिमानी अन्यायकारी अविद्वान् लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता।

स्वराज्य के बारे में दृढ़ता पूर्वक ऋषि दयानन्द ने कहा 'माता-पिता के समान कृपा न्याय और दया के साथ विदेशी राज्य अच्छा होते हुए भी स्वराज्य से अच्छा कदापि नहीं हो सकता।' ऋषि दयानन्द के राजनैतिक स्वप्न को पूरा करने हेतु श्याम जी कृष्ण वर्मा स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, वीर सावरकर, भगत सिंह सुखदेव, रामप्रसाद बिस्मिल आदि आर्यों ने स्वाधीनता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति दी।

विपिनचन्द्र पाल का यह कथन कितना सार्थक है 'यह दयानन्द ही था जिसने उस आंदोलन की आधार शिला रखी जो बाद में धार्मिक राष्ट्रीयता के नाम से जाना गया।' 'स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' का नारा देने वाले लोकमान्य तिलक ने यह स्वीकार किया कि 'ऋषि दयानन्द स्वराज्य के प्रथम सन्देशवाहक और मानवता के उपासक थे।

ऋषि दयानन्द के राजनैतिक विचार प्रजातान्त्रिक भावना से ओत-प्रोत थे। यजुर्वेद के एक मन्त्र पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा, "प्रजाजन यह देखें कि उनका देश अकेले व्यक्ति से नहीं अपितु सभाओं से प्रशासित हो।"

नारी जागरण

नारी जाति के उत्थान हेतु ऋषि दयानन्द ने क्रान्तिकारी दृष्टिकोण दिया। उनकी मान्यता थी कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्री-पुरुषों को समान अधिकार है। यजुर्वेद के आधार पर ऋषि दयानन्द ने प्रतिपादित किया, वेदों का प्रकाश ईश्वर ने सबके लिए किया है। अतः यह अनिवार्य हो जाता है कि लड़कों और लड़कियों को विद्वान् और विदुषी बनाने के लिए तन मन-धन से प्रयत्न किया जावे जिससे स्त्रियां भी वेदाभ्यास करके गार्गी, मैत्रेयी आदि विदुषियों की भांति विदुषी बन सकें और तेजस्वी व्यक्तित्व विकसित कर सकें।' ऋषि दयानन्द का कहना था कि विद्वान् पति और अनपढ़ अस कुल पत्नी गृहस्थी की गाड़ी को सुचारु रूप से कदापि नहीं खींच सकते। शिक्षित नारी को भी अपने अधिकारों के प्रति सचेत रहना चाहिए। इसलिए उन्होंने पुरुषों के समान स्त्रियों की शिक्षा पर बल दिया। इसी प्रकार नारी जाति पर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ ऋषि दयानन्द ने अपने व्याख्यानों, लेखों इत्यादि के द्वारा खुलकर आंदोलन किया। सती प्रथा, बाल-विवाह, बहुविवाह, अनमेल विवाह आदि कुप्रथाओं का ऋषि दयानन्द ने दृढ़ता से विरोध किया तथा मानव जाति के सम्मुख मनु का यह आदर्श रखा— यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।' स्वामी जी की कल्पना का समाज नारी को प्रतिष्ठा के सिंहासन पर पहुंचा देता है। उनके प्रगतिशील दृष्टिकोण में स्त्री पुरुष समान थे। उनकी गतिशील सामाजिक कल्पना में मातृ पूजा का आधार सर्वत्र विद्यमान है।

ऋषि दयानन्द का शिक्षा दर्शन

भारत की भाषा, संस्कृति, इतिहास, रहन सहन आदि के तौर तरीकों को बदलने हेतु लार्ड मैकाले की शिक्षा योजना के स्थान पर ऋषि दयानन्द ने भारतीयों के सम्मुख आर्य शिक्षा प्रणाली को प्रस्तुत किया। ऋषि दयानन्द के शिक्षा दर्शन के आधार पर छात्र छात्राओं में अपनी भाषा, संस्कृति, धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा भरने के लिए आर्यसमाज ने भारत के लगभग सभी प्रान्तों में गुरुकुलों, स्कूलों एवं

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य जगत के समाचार

आर्यसमाज सदर बाजार मे

आर्य विद्वानों का अभिनन्दन

आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली के शताब्दी वर्ष के अवसर पर स्व० श्री वैद्य प्रह्लाददत्त जी का ६५वा जन्मदिवस १९ मार्च को मनाया गया। इस अवसर पर तीन आर्य विद्वानो का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। जिसमे स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज, श्री पं० शिव कुमार जी शास्त्री तथा म० रामकिशोर 'वानप्रस्थ' का अभिनन्दन किया गया। स्वामी रामेश्वरानन्द जी एव प० शिवकुमार जी शास्त्री को ११००-११०० रुपए की राशि तथा शाल एव महात्मा राम किशोर जी को ५०१ रुपये व शाल भेंट किये गये। इस अभिनन्दन समारोह का सम्पूर्ण व्यय श्री वैद्य प्रह्लाद दत्त के सुपुत्र वैद्य इन्द्रदेव जी ने वहन किया।

उन्होने इस कार्य हेतु एक स्थिर निधि की स्थापना की है। श्री इन्द्र देव जी जो आर्यसमाज सदर बाजार के मन्त्री भी हैं ने घोषणा की कि इस समाज से प्रति वर्ष दो आर्य विद्वानो को सम्मानित किया जाएगा।

श्री इन्द्रदेव जी ने अपने स्व० पिता की स्मृति में दो और स्थिर निधियां स्थापित की हैं जिनके ब्याज से आर्य कन्या गुरुकुल नरेला की मेधाविनी छात्रा को तथा आर्य गुरुकुल एटा के मेधावी छात्र को छात्रवृत्तियां दी जायगी।

यह समारोह आर्यसमाज, सदर बाजार में प्रात काल यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर आर्यसमाज सदर बाजार के गत वर्षों के इतिहास एव कार्यों पर प्रकाश डाला गया तथा नये संकल्पो के साथ प्रचार कार्यों को आगे बढाने का दायित्व लिया गया।

रेल मन्त्रालय की परीक्षाओं में हिन्दी

निदेशक (राजभाषा) रेल मन्त्रालय ने अपने ८ दिसम्बर, १९८८ के पत्र संख्या हिन्दी ८७/रा० भा० ११।०।७ द्वारा सूचित किया है कि रेल मन्त्रालय तथा उसके सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयो द्वारा ली जाने वाली सभी विभागीय और भर्ती परीक्षाओ मे हिंदी माध्यम का विकल्प देने और प्रश्न पत्र द्विभाषिक रूप मे सुलभ कराने के आदेश दे दिए गए हैं, चले ही वे परीक्षाएं तकनीकी पदो को भरने के लिए ली जा रही हों।'

पाठकों से अनुरोध है कि उक्त सुविधा की जानकारी अधिक से अधिक व्यक्तियो को दी जाए जिससे कि वे हिन्दी माध्यम के विकल्प का लाभ उठा सकें।

जगन्नाथ
संयोजक राजभाषा कार्य
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्
एक्स०वाई० ६८, सरोजिनी नगर
नई दिल्ली-२३

आर्य नेता श्री देवीदास आर्य "विश्व महिला कल्याण रत्न" से पुरस्कृत

प्रख्यात महिला-उद्धारक आर्य नेता श्री देवीदास आर्य को उनके नारी सेवा के कार्यों से प्रभावित होकर विश्व उन्नयन संसद (वर्ल्ड डवलपमेंट पार्लियामेन्ट) ने नयी दिल्ली में आयोजित विश्व सम्मेलन के अवसर पर 'विश्व महिला कल्याण रत्न' एवम महापुरुष की उपाधि से सम्मानित किया है।

श्री आर्य इससे पहले राष्ट्रपति एवम् अन्य कई संस्थाओं द्वारा सम्मानित हो चुके हैं। श्री आर्य ने अपने पचास वर्षों के सेवा कार्य में तीन हजार से अधिक युवतियों को गुण्डो व वेश्यालयों से मुक्त कराया है तथा ५०० से अधिक कन्यादान किये हैं।

पीड़ित कन्याओं को गुरुकुल में प्रवेश

मातृमन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी ने बिहार के भूकम्प पीड़ितों की बालिकाओ को निःशुल्क शिक्षा दान करने का स्पृहणीय संकल्प किया है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के क्षत्रीय निरीक्षक श्री वीरेन्द्र सिंह जी आर्य ने अपनी दो सुपुत्रियों को मातृमन्दिर कन्या, गुरुकुल वाराणसी मे प्रविष्ट कराया तथा मुंगेर के प्रतिष्ठित आर्य श्री कपिलदेव की प्रार्थना पर बिहार के भूकम्प पीड़ित क्षेत्र की दो बच्चियों को भी मातृमन्दिर में प्रवेश दिलाया। इसके अतिरिक्त ईसाइयों से प्रभावित आदिवासी परिवारों की पांच बालिकाओं को भी इस गुरुकुल में प्रविष्ट कराने के लिए प्रार्थनापत्र प्राप्त हुए हैं। मातृमन्दिर आर्य कन्या गुरुकुल ईसाई मिशनरियो से आर्य बालिकाओं की रक्षा करने के लिए कृत संकल्प है।

अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ, नई दिल्ली

पंचम वेद संगोष्ठी

वेदो के अध्ययन, प्रचार एवम् अनुसंधान को प्रोत्साहन देने हेतु, अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ, नई दिल्ली द्वारा पंचम वेद संगोष्ठी का आयोजन काशी हिन्दु विश्वविद्यालय में आगामी ८ या ९ अप्रैल १९८९ को किया जा रहा है। संगोष्ठी का विचारणीय विषय, "वेद मानव जीवन के शाश्वत प्रेरणा स्रोत" रहेगा।

दिल्ली नगर निगम द्वारा—

स्वामी श्रद्धानन्द जन्मदिवस समारोह

☐ अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द को उनके जन्मदिवस २२ फरवरी को दिल्ली नगर निगम द्वारा आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

☐ दिल्ली के महापौर श्री महेन्द्रसिंह जी साथी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए नागरिकों से आग्रह किया कि वे इस महान् सन्यासी, जो महान् विद्वान्, समाज-सुधारक, स्वतन्त्रता सेनानी और नेता रहे हैं, के आदर्शों को अपने जीवन मे अपनाय। उन्होंने कहा कि स्वामी जी द्वारा स्वतन्त्रता आन्दोलन मे प्रदर्शित अद्भुत साहस एवम् समर्पण से अनेको नेताओं को प्रेरणा मिली थी।

☐ नगर निगम मे सदन के नेता श्री दीपचन्द बन्धु ने उस स्थान, जहां पर स्वामी जी की ... स्थापित है के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डाला।

☐ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री, श्री सूर्यदेव ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी जी ने सदैव साम्प्रदायिक सद्भाव तथा सभी मानव एक समान के आदर्शों को स्थापित करने के प्रयास किये, किन्तु आज साम्प्रदायिक घृणा फैलाने वाले तत्व अपना घातक फैलाये हुए हैं, जिसका मुकाबला जनता और सरकार को मिलकर करना होगा।

☐ दिल्ली नगर निगम के स्कूलों के छात्रों द्वारा प्रस्तुत देशभक्ति और स्वामी जी के आदर्शों पर आधारित सामूहिक गीतों का कार्यक्रम इस समारोह में मुख्य आकर्षण था।

शोक समाचार

श्री मनोहर लाल भाटिया

आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता तथा आर्यसमाज, गीता कालोनी, दिल्ली के प्रधान श्री मनोहरलाल जी भाटिया का देहावसान हो गया है।

श्री प्रह्लाद दत्त

आर्यसमाज दीवानहाल ... के वरिष्ठ सदस्य श्री प्रह्लाद दत्त जी का ... देहावसान हो गया है।

आप आर्यसमाज के पुराने कार्यकर्ता ... गोरक्षा आन्दोलन में कई बार जेल की यात्रा की।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दिल्ली के अनेक आर्यसमाजों तथा संस्थाओ ने इन दिवंगत आत्माओ की शान्ति के लिए शोक प्रगट किया है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा 'आर्यसन्देश' परिवार ईश्वर से दिवंगत आत्माओ की शान्ति तथा परिवारजनों को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना करते है।

(पृष्ठ ५ का शेष)

युग पुरुष स्वामी दयानन्द सरस्वती

कालेजों का जाल बिछा दिया। उन का शिक्षा दर्शन समग्र जीवन पर आधारित था। ऋषि दयानन्द ने अनिवार्य शिक्षा स्त्री शिक्षा नैतिक शिक्षा गुरुकुल शिक्षा पद्धति आचार्य शिष्य सम्बन्धों आदि विषयों पर गम्भीर विवेचना प्रस्तुत की जो शिक्षा मनीषियों के सामने एक प्रेरणा दीप है।

जब राष्ट्रपिता महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका में वहां की गोरी सरकार की रंगभेद नीति के विरुद्ध सत्याग्रह कर रहे थे तो भारतवर्ष से सर्वप्रथम गुरुकुल कांगड़ी के विद्यार्थियों ने अपने नित्य का घी, दूध, त्याग कर, मजदूरी करके धन जमा किया और गांधी जी की सहायतार्थ भेजा। इसलिए जब महात्मा गांधी भारत लौटे तो सर्वप्रथम गुरुकुल कांगड़ी के इन छात्रों को इन्होंने आशीर्वाद प्रदान किया।

हाल ही में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय वैदिक शिक्षा कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें वैदिक शिक्षा की मूल विशेषताओं के बारे में अनेक विश्वविद्यालयों के शिक्षा प्रतिनिधियों ने गहन चिन्तन किया तथा इस कार्यशाला के अन्तिम सत्र में सभी प्रतिनिधि इस बात पर सहमत थे कि ऋषि दयानन्द के शिक्षा सम्बन्धी विचारों के आधार पर पल्लवित शिक्षा प्रणाली से ही मानव समाज, राष्ट्र एवं विश्व का कल्याण हो सकता है।

महान वेद प्रचारक

पिछली अनेक शताब्दियों में शायद ऋषि दयानन्द ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने वेद में धर्म और विज्ञान की सत्यता को लोगों के सम्मुख रखा। महर्षि दयानन्द के वेद विषयक मन्तव्य का समर्थन करते हुए योगी अरविन्द लिखते हैं, वैदिक व्याख्या के विषय में मेरा विश्वास है कि वेदों की सम्पूर्ण अन्तिम व्याख्या कोई भी हो महर्षि दयानन्द का यथार्थ निर्देशों के प्रथम 'आविष्कारक के रूप में सदा मान किया जायेगा। पुराने अज्ञान और पुराने युग के मिथ्या ज्ञान के मध्य यह आप्त ऋषि दृष्टि थी जिसने सच्चाई को निकाल कर जन-जन के सामने रखा।' महर्षि ने अन्य वैदिक शास्त्रों को प्रामाणिक स्वीकार करते हुए भी वेद को ही परम प्रमाण माना। यह ऋषि दयानन्द ही का प्रभाव है कि वेदों का पठन पाठन आज भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी प्रचलित हो रहा है। महर्षि दयानन्द की वेदार्थ शैली वैज्ञानिक एवं यौगिक थी।

निस्सन्देह यह कहा जा सकता है कि ऋषि दयानन्द १९वीं शताब्दी के महानतम जाज्वल्यमान भारतीय थे जिन्होंने सर्वाङ्ग रूप से जीवन की सभी विधाओं की विवेचना की और देश को अज्ञान और अकर्मण्यता के दलदल से निकालने का भगीरथ पुरुषार्थ किया। ●

(पृष्ठ १ से आगे)

डा० सत्यकेतु...

डा० सत्यकेतु जी विद्यालंकार का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार १७ मार्च को मध्याह्न मे गुरुकुल भूमि के निकट गंगा तट पर कर दिया गया।

डा० धर्मपाल आर्य, प्रो० शेरसिंह व सुभाष विद्यालंकार आवश्यक उपचार के पश्चात् दिल्ली पहुंच गये हैं, तथा स्वास्थ्य-लाभ कर रहे हैं। ☼

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No. 32387/77 Post in N.D P.S O on 23 24-3 89 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७१६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३६

मार्मिक श्रद्धा-सुमनो के अर्पण के साथ

शान्ति यज्ञ सम्पन्न

नई दिल्ली, १९ मार्च।

आज सायकाल ४ बजे गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलाधिपति स्व० डा० सत्यकेतु जी विद्यालकार के निवास स्थान "आर्य स्वाध्याय केन्द्र" ए १/३२ सफदरजग एन्क्लेव, नई दिल्ली में स्व० डा० साहब की स्मृति में शाति यज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसमे आर्यसमाज तथा हिन्दी साहित्य जगत के विद्वान मनोषी विद्वानो ने उपस्थित होकर दिवगत आत्मा के प्रति श्रद्धाजलि प्रकट की।

प्रमुख वक्ताओ मे प्रो० शेरसिंह, डा० प्रशान्त वेदालकार, डा० वेद प्रताप 'वैदिक', प० क्षितीश वेदालकार, प० सत्यदेव भारद्वाज तथा श्री विष्णु प्रभाकर ने डा० सत्यकेतु द्वारा अनेक विधाओं में रचित साहित्य को आर्यसमाज तथा हिन्दी जगत को ऐसा उपहार बताया, जो एक ओर जहा डा० जी को सदैव स्मरणीय रखेगा वहां भावी-पीढी का प्रेरणा स्रोत बना रहेगा।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के

कुलपति निलम्बित

नई दिल्ली, १९ मार्च। भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री तथा हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी, जो गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलाधिपति भी हैं, ने बताया कि विश्वविद्यालय के कुलपति श्री आर० एस० शर्मा को निलम्बित कर दिया गया है, तथा विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक प्रो० रामप्रसाद जी वेदालकार ने कुलपति का कार्यभार सभाल लिया है।

'आर्यसन्देश' के
—स्वय ग्राहक बने।
—दूसरो को बनाये॥

'आर्यसमाज' के
—स्वय सदस्य बने।
—दूसरो को बनाये॥

सेवा में—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए वीरेन्द्र द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली न०१७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७१६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ : अंक २१ | रविवार २ अप्रैल १९८९ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८ | फाल्गुन २०४५ | दयानन्दाब्द—१६४

मूल्य : एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० डालर, ३० पौंड

केन्द्रीय सेवाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त कराने के लिए

आर्यसमाज आन्दोलन करेगा

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

नई दिल्ली, २७ मार्च।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आज कड़े शब्दों में घोषणा की कि यदि भारत सरकार ने संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित केन्द्रीय सेवाओं की परीक्षाओं से अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त कर सभी भारतीय भाषाओं में करने का निर्णय अगले एक महीने में नहीं लिया तो आर्यसमाज तीव्र आंदोलन करेगा। स्वामी जी आज संघ लोक सेवा आयोग, शाहजहाँ रोड, नई दिल्ली पर प्रदर्शन कर रहे आर्य-जनों को सम्बोधित कर रहे थे। यह प्रदर्शन अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त कर, हिन्दी और दूसरी भारतीय भाषाओं में परीक्षा कराने के विषय को लेकर किया गया था।

प्रदर्शनकारियों को सम्बोधित करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने कहा कि परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त होने से उन गरीब छात्रों का भला होगा, जो पब्लिक स्कूलों में पढ़ने की हैसियत नहीं रखते। स्वामी आनन्दबोध ने इस बात पर दुःख व्यक्त किया कि हमारी अपनी सरकार भी हमारी बात नहीं मानती। सरकार को केवल जोर-जबरदस्ती की आवाज सुनने की आदत पड़ गयी है। इसलिए आर्यसमाज के लोग भी आंदोलन करेंगे। वे जरूरत पड़ने पर सरकार का चक्का जाम करेंगे और गिरफ्तारियां भी देंगे। पिछले आठ महीनों से अखिल भारतीय भाषा संरक्षण संगठन के अनशनकारी नौजवानों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए स्वामी जी ने कहा कि आर्यसमाज हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के हितों की रक्षार्थ आपका पूरा साथ देगा। □

सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी डा० सत्यकेतु विद्यालंकार

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के लिये लगाया। उनकी शिक्षा दीक्षा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में ही हुई थी। वे वहीं पर अध्यापक, प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष और आगे चलकर कुलपति तथा कुलाधिपति नियुक्त हुए। जब भी उन से बैठकर बात करने का अवसर मिलता था तो उनका चिन्तन सदा इसी दिशा में रहता था कि वे किस प्रकार इस गुरुकुल को विश्व में गौरवशाली प्राच्यविद्या की संस्था के रूप में प्रस्तुत कर सकें। डा० सत्यकेतु विद्यालंकार पिछले कुछ समय से गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के विकास के लिए भी चिन्तित थे। डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने वैदिक ज्ञान और राष्ट्रीय चेतना को अपने शब्दों के माध्यम से देश-विदेश में सर्वत्र प्रसारित किया। उन्होंने पेरिस से डी० लिट की उपाधि प्राप्त की थी आज भी वहां के उन के सहपाठी उन की मेधा के लिये उन्हें याद रखते हैं। डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने श्रद्धानन्द शोध संस्थान की संकल्पना भी अपने मन में बसायी हुई थी। अब जहां कहीं भी वैदिक धर्म, आर्यसमाज और राष्ट्रीय इतिहास की बात चलेगी तो डा० सत्यकेतु विद्यालंकार को सदैव याद किया जायेगा। डा० साहब रचनात्मक साहित्य के भी धनी थे। उन्होंने इतिहास ग्रन्थों के अतिरिक्त उपन्यासों तथा ललित निबन्धों की भी रचना की।

ये विचार आर्य नेताओं, साहित्यकारों शिक्षा शास्त्रियों तथा इतिहासवेत्ताओं ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज मंदिर हनुमान रोड के सभागार में आयोजित एक शोक सभा में व्यक्त किये। श्रद्धांजलि देने वालों में स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, डा० सत्यकाम वर्मा, डा० प्रशान्त वेदालंकार, डा० निरूपण विद्यालंकार, प्रो० वेदव्रत डा० धर्मपाल आर्य, श्री सूर्यदेव, श्री अर्जुन देव, श्री सरदारीलाल वर्मा, श्रीमती प्रकाश आर्या, श्री मनोहर विद्यालंकार आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। शोकसभा में दिल्ली के पत्रकारों साहित्यकारों, राजनेताओं तथा गुरुकुल के स्नातकों के अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रों की आर्यसमाजों के प्रतिनिधि/अधिकारी तथा डा० साहब के परिवार के सदस्य तथा सम्बन्धी भी उपस्थित थे।

शोक सभा की अध्यक्षता आर्य जगत के सम्पादक, प्रसिद्ध पत्रकार प० क्षितीश कुमार वेदालंकार ने की तथा सभा का संयोजन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री मूलचंद गुप्त ने की। ●

चैत्र शुक्ला १ सम्वत् २०४६ विक्रमी, अर्थात् ६ अप्रैल को सम्पूर्ण आर्य जगत् समारोहपूर्वक आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाये

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

असक्तबुद्धि सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृह ।
नैष्कर्म्यसिद्धि परमा सन्यासेनाधिगच्छति ।।
—गीता १८।४९

धर्म के पालन में जो मनुष्य दृढ़ हैं, कर्तव्य के पूरा करने को ही जिन्होंने जीवन का उच्च आदर्श समझा हुआ है सच्चे त्याग को सिद्ध करना, उन्हीं के लिए सम्भव है। क्या केवल यह जान लेने से कि सांसारिक विषयों में नहीं फँसना चाहिए, मनुष्य विषयों की दासता से स्वतन्त्र हो सकता है ? और क्या केवल त्याग के गौरव को समझ लेने से ही मनुष्य त्यागी हो जाता है ? नहीं इन उच्च अवस्थाओं में पहुँचने के लिए बड़े साधनों की आवश्यकता है और इन साधनों में से सबसे प्रथम बुद्धि को स्वच्छ करने की आवश्यकता है। जब तक बुद्धि उस दर्पण के अनुसार स्वच्छ नहीं होती जिसमें प्रत्येक वस्तु का प्रतिबिम्ब ज्यों का त्यों दिखाई देता है, तब तक वह जिज्ञासु के लिए सच्चा मार्ग दिखाने का काम नहीं दे सकती। तब हम बुद्धि को कैसे स्वच्छ करें ? बुद्धि वास्तव में तो स्वच्छ ही है। क्योंकि जिस जीवात्मा का वह एक पुर्जा है वह जीवात्मा स्वरूप से स्वयं स्वच्छ है। हाँ, अविद्या का जंग उसे मलिन कर देता है और तब उसे वस्तुओं का असली स्वरूप दिखाई नहीं देता।

साधारण मनुष्य सांसारिक सुखों को ही जीवन का लक्ष्य समझ लेते हैं और उनकी प्राप्ति के लिए प्रयत्न करते हुए अपने अमर आत्मा का नाश कर लेते हैं। जिस मनुष्य को अधिक मिठाई खाने के बाद भारी कष्ट मिल चुका हो, उसे भी हम बार बार उसी मिठाई के इर्द-गिर्द भौंरे की तरह मँडराता हुआ देखते हैं। क्या इस मनुष्य को उन पतंगों से कुछ अधिक उच्च अवस्था है जो कि अपने भाइयों को हजारों की संख्या में दीपक के आसपास मरते हुए देखकर भी उसी पर न्योछावर होने के लिए जाते हैं ? मनुष्य को बुद्धि तिरोभाव की अवस्था में नहीं दी गई है। जहाँ वनस्पति और पशु-सृष्टि को बुद्धि से काम लेने का अधिकार नहीं है, वहाँ मनुष्य की बड़ाई ही यह समझी गई है कि वह बुद्धि से काम ले सकता है। इसलिए मनुष्य का सब से पहला कर्तव्य यह है कि बुद्धि को मांजना शुरू करे। इस पर जो जंग लग गया है उसको वह उतारने का परिश्रम करे। तब उसको सांसारिक सुख व दुःख की वास्तविकता दिखाई देगी। उस समय मालूम होगा कि जिसे उसने सुख समझा था वह वस्तुतः सुख न था, जिसे वह दुःख समझता था वह यथार्थ में दुःख न था फिर शारीरिक व्यायाम में दुःख न मालूम होगा और नर्म गद्दों पर लेटना सुखदायी न नजर आयगा। तब पता लगेगा कि भोग के अन्दर सुख नहीं है और कवि के कथन के साथ वह सहमत हो सकेगा।

'भोगा न भुक्ताः वयमेव भुक्ता।'

भोगों को हम नहीं भोग रहे अपितु भोग हम को भोग रहे हैं। कामी पुरुष समझता है कि वह भोग करता है, परन्तु सत्य यह है कि इन्द्रियों का काम उसे भोगता है। यदि आंख से देखने का काम लेने की जगह हम रूप के अन्दर उसको फंसा देते हैं तो कहा जा सकता है कि हम रूप को भोग रहे हैं लेकिन यथार्थ में रूप हमें भोग रहा होता है न कान और न नाक और न जिह्वा और न त्वचा, कोई भी इन्द्रिय अपने विषय को नहीं भोग रही परन्तु ये विषय न केवल हमारी इन्द्रियों को ही भोग रहे हैं बल्कि उनके द्वारा जीवात्मा को अपना दास बना रहे हैं। इसलिए सब से प्रथम बुद्धि को स्वच्छ बनाने के किसी साधन से काम लेना चाहिए।

वर्णाश्रम धर्म से बढ़ कर बुद्धि के स्वच्छ बनाने का कोई साधन नहीं है। जो मनुष्य अपने आश्रम और अपने वर्ण के कर्तव्य को धर्म समझकर पालन करता है उसकी बुद्धि उसी साधन से स्वच्छ हो जाती है। जो मनुष्य अपने कर्तव्य को समझने वाले हैं वे संसार की दृष्टि में गिरे से गिरे हुए काम को भी घृणा की दृष्टि से नहीं देखते। ऐसे आचरण से उनकी बुद्धि स्वच्छ हो जाती है। उन्हें ज्ञात होता है कि महत्ता काम करने में है, न कि कार्य की उधेड़-बुन करने में। काम है बिना सन्देह यहां अभिप्राय वैदिक नैक कामों से है, न कि अशुभ कार्यों से। जिसने धर्म की महानता को समझा, उसने निःसन्देह बुद्धि की सफाई की कुञ्जी को पा लिया है। तब अभिमान का लेश भी उसके मन में नहीं रह सकता। जब कर्म ही प्रधान है और उसका फल कोई चीज नहीं है, जब झाड़ू लगाना चौकी बिछाना और उस पर बैठकर न्याय करना सब के सब कर्म एक ही हैं, जब भेद है केवल कर्मों को बदनीति के बदल से तब इसमें अभिमान कहां रह सकता है ? ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र सब अपने-अपने कर्तव्य के पूरा करने में लगे हुए हैं। यदि सन्यासी सच्चे धर्म को समझकर उसका निष्कंटक प्रचार कर रहा है तो क्या ब्रह्मचारी वेदविद्या की प्राप्ति के लिए उत्साह से काम करता हुआ सन्यासी से कम प्रतिष्ठा के योग्य है ? और क्या गृहस्थ संसार की कठिनाई का मुकाबला करता हुआ, धर्मानुसार जीवन व्यतीत करते हुए कष्ट उठाने वाला क्या कुछ कम माननीय है ? नहीं। फिर अभिमान कहां ? जब अभिमान नष्ट हो गया तो फिर 'फँसावट' का मतलब ही क्या रहा ? उस समय सच्चा त्याग मनुष्य के अन्दर घर करता है और वह निष्काम भाव से प्रत्येक कार्य को करता हुआ कर्मों के बन्धन से स्वतन्त्र हो जाता है।

प्रिय पाठकगण ! इस निष्काम सिद्धि के लिए ही शास्त्रों ने सारे जप, तप यम नियम आदि नियत किये हैं। इसीलिए मारे संसार को मित्र की दृष्टि से देखने की वेद भगवान् ने आज्ञा दी है। आओ ! सच्चे दिल से परमात्मा से प्रार्थना करें कि वह सब को अविद्या रूपी अन्धकार से निकालकर प्रकाश के सीधे मार्ग में ले चले।

शब्दार्थ—(सर्वत्र असक्तबुद्धि) संसार के सब सुखभोग में जिसकी बुद्धि नहीं फँसी है ऐसा (विगतस्पृह) अभिमान से रहित (जितात्मा) जितेन्द्रिय पुरुष (सन्यासेन) सच्चे त्याग से (परमा) महती नैष्कर्म्यसिद्धिम्) निष्कामसिद्धि को (अधिगच्छति) प्राप्त करता है।

आर्यसमाज ! आर्यसमाज !!

—राष्ट्रकवि स्व० मैथिलीशरण गुप्त

आर्यसमाज !
आर्य भूमि पर अरुणोदय सा, उठा उदय तू सज कर साज।
आर्यसमाज ! आर्यसमाज !!

अन्धकार था चारों ओर देख लिया पर तू ने चोर,
घर में शोर मचाया घोर, सोते स्वजनों को है धिक्कार।
क्या दिया ठोकर तक मार कि हो प्राप्त भय का परिहार
अलस प्रमादी अवसादी, हम थे सोने के आदी।

जगा तू भैरव वादी लगे विवादी भी कुछ स्वर
पर हम चौंक उठे सत्वर, उतरा कुछ तो तन्द्रा ज्वर,
किया तू ने खण्डन मात्र स्वयं तथा मण्डन का पात्र,
गये गुरुकुल में वर्णी छात्र, हिन्दू मानस—महाराष्ट्र तू
धरे राष्ट्रभाषा की लाज, आर्यसमाज ! आर्यसमाज !!

शोक न कर, तू कर अभिमान, कर निज वेद विजय रसपान
किया वीर तू ने बलिदान विधर्मियों से त्रस्त को फूट
करा रही थी अपनी लूट तू सतर्क हो उठा अटूट !!
पर जो मुंह की खाते हैं मन ही मन चिढ़ जाते हैं
छिप कर घात लगाते हैं

सहा सभी तू ने प्यारे, छिद कर गये हत्यारे
निज अविजय मारे मारे मुंह न छिपाया भय को देख
लिखा निज शोणित से लेख

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, जयति कृतबुद्धिकार्यम्
बुद्धि वितान—तजे श्रद्धा का दान किया तूने द्विजराज
आर्यसमाज ! आर्यसमाज !!

ओ३म्

आर्य सन्देश

आर्यसमाज के साथ मिलकर चलो

जो उन्नति करना चाहो तो 'आर्यसमाज' के साथ मिलकर उस के उद्देश्य अनुसार आचरण स्वीकार कीजिये नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा, क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा 'आर्यसमाज' आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता।"

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्यसमाज स्थापना दिवस

आर्यसमाज का स्थापना दिवस प्रत्येक आर्य के लिए बड़े महत्त्व का दिवस है, जो पवित्र-प्रेरणाओं के साथ आता है। इस वर्ष यह दिवस ६ अप्रैल १९८९ को मनाया जायेगा।

इस दिवस की मुख्यतम प्रेरणा यह है कि हम सब आर्यसमाज के उद्देश्यों को पूरा करते हुए उसके यश और विस्तार का कारण बनें। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैदिक धर्म के चहुं ओर छाये हुए मूर्ति पूजा, अन्ध-विश्वास, अनार्ष साहित्य, अवैदिक मन्तव्यों एवं आचरणों के गहरे बादलों को छिन्न-भिन्न करके उसके विशुद्ध स्वरूप को दर्शाने और प्रसारित करने के महान् उद्देश्य से आर्यसमाज की स्थापना की थी। आर्यसमाज को इस कार्य में प्राण-पण से जुटे रहना चाहिए।

भोगवाद और उसके विविध अविद्याओं से संतप्त जगत् में नैतिकता और आस्तिकता का जो अभाव इस समय खाली होता जा रहा है उसकी पूर्ति की आर्यसमाज पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। आर्यसमाज के पास उस के लिए प्रचुर साधन हैं साथ साथ ही योग्यता भी है। आर्यसमाज की प्रवृत्ति त्याग-प्रधान है। अपने सिद्धान्तों का मृदु, सरल एवं स्पष्ट व्याख्या से, समाज सुधार से, धार्मिक शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ अध्यात्म पिपासा की सन्तुष्टि पर अधिकाधिक ध्यान और बल देने से यह कार्य सहज ही सम्पन्न हो सकता है। अपनी लेखनी और वाणी में प्रेरणा और बल लाने के निमित्त हमें एक महान् त्रुटि से अपने आप को मुक्त रखना होगा, और वह है आत्म-प्रवचना। अपने अतीत का और अपनी परम्पराओं का गुणगान करना और अपने आचरण से उसका परिचय न देना वह अभिशाप है जिस से बड़े बड़े कुल और जातियां नष्ट हो जाती हैं और हास्य की पात्र बन जाती हैं। आर्यसमाज का इतिहास बड़ा विशद है, उस की परम्पराएं बड़ी स्फूर्तिदायिनी हैं।

आर्यसमाज ने धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक स्वस्थ नेतृत्व के लिए प्रचुर मात्रा में साहित्य तैयार किया। विद्वान्, शास्त्रार्थ महारथी, उपदेशक, लेखक, पत्रकार और कार्यकर्त्ता पैदा किये। आर्यसमाज ने जितने शहीद दिये हैं, उतने अन्य किसी समाज ने नहीं दिये। आर्यसमाज के संगठन की दृढ़ता की बराबरी अन्य कोई संगठन नहीं कर सकता। उसका संगठन लोगों की प्रशंसा और स्पर्धा का विषय बना रहा है।

समय समय आर्यसमाज के अस्तित्व को मिटाने या उसको प्रभावहीन बनाने के लिए समय-समय पर अनेक राजकीय और अराजकीय स्तरों पर प्रयत्न हुए। वह इन परीक्षणों में से गुजरने के लिए विवश हुआ परन्तु सभी में विजयी रहा। पटियाला का केस, हैदराबाद का धर्मयुद्ध, सिन्ध-सत्याग्रह आदि इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं।

आर्यसमाज स्थापना दिवस के पुनीत अवसर पर हम सबको अपने सिद्धान्तों, अपनी अनुपम संगठित शक्ति और नेतृत्व की उदार परम्पराओं के प्रति सच्चा रहने और उनमें वृद्धि करने का व्रत लेना चाहिए। इस समय संसार बन्धनों को तोड़ उस धर्म की ओर आने के लिये छटपटा रहा है जो बुद्धि, ज्ञान और तर्क की भयंकर थपेड़ों में स्थिर रहकर बुद्धि को प्रकाश और हृदय को शान्ति दे सकता हो। वह धर्म सिवाय 'वैदिक धर्म' के अन्य कोई दूसरा धर्म नहीं हो सकता जिसमें बुद्धि, तर्क, दर्शन, विज्ञान, लोक और परलोक सभी प्रकार की समस्याओं का सुन्दर हल विद्यमान है। और जो बुद्धि की सन्तुष्टि और हृदय की शान्ति का अजस्र स्रोत है।

अस्थायी स्थगनादेश

शासन सरकार की नई शिक्षा नीति में संस्कृत का जो बहिष्कार किया गया था उससे भारत का जन मानस आन्दोलित हो उठा था। कारण! प्रथम अप्रैल १९८९ से कक्षा ९ में प्रवेश पाने वाले सभी छात्रों को हिन्दी अंग्रेजी अतिरिक्त संस्कृत के स्थान पर अन्य भारतीय भाषा जैसे उर्दू, तमिल, तेलगू आदि आदि में से एक भाषा जो उस विद्यालय द्वारा स्वीकार की जाये पढ़नी पड़ती। सर्वत्र एक प्रकार की हलचल सी छा गई थी। अनेक स्थानों पर, अनेक प्रकार से, अनेक लोगों द्वारा इस विषय में कुछ कर गुजरने के लिये आन्दोलन आरम्भ किये गये किन्तु कहीं से भी आशाजनक परिणाम निकलने की सम्भावना दृष्टिगोचर नहीं हुई।

क्योंकि संस्कृत न केवल सर्वगुण सम्पन्न भाषा है अपितु वह भारत की सांस्कृतिक धरोहर की संरक्षिका है। संस्कृत के बिना हमारी संस्कृति जीवित नहीं रह सकती, हमारे वेदादि सद्ग्रन्थों का पठन-पाठन संस्कृत के ज्ञान के बिना नितान्त असम्भव है और फिर शनैः शनैः आर्यों का अस्तित्व भी संकट में पड़ता जायेगा।

ऐसी स्थिति में हमारे सुयोग्य विधिवेत्ता प्रो० वेद व्यास एवं श्री डा० लक्ष्मी मल सिंघवी जैसे विद्वानों के परामर्श से प्रथम अप्रैल १९८९ से संस्कृत बहिष्कार परक नई शिक्षा नीति लागू न करने सम्बन्धी एक याचिका द्वारा सर्वोच्च न्यायालय से स्थगनादेश की प्रार्थना की गई, जिस पर पीठासीन न्यायमूर्ति ने अस्थायी स्थगनादेश की घोषणा कर दी।

संस्कृत भाषा को त्रिभाषा सूत्र में स्थान दिलाने के प्रयत्न में प्रथम पग के रूप में प्राप्त इस सफलता के लिये हमारे आर्य बन्धु बधाई के पात्र हैं।

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा विक्रमी सम्वत् २०४६

नव-वर्षाभिनन्दन

नव वर्ष की यह प्रथम आभा,
विश्व को नव-ज्योति दे।
सुख, शान्ति वैभव ज्ञान ज्योत्स्ना,
कीर्ति, प्रीति, सुशक्ति दे॥
धन धान्य, गरिमा, शील, सद्गुण,
धर्म कर्म-प्रवृत्ति दे।
सत्यनिष्ठा, आत्मसंयम,
दीर्घ जीवन भक्ति दे॥

स्नेह, सद्गुण, शान्ति, सुषमा,
सौरभ का सुविकास हो।
वेदधर्म-प्रवृत्ति हो,
सद्भाव का सुविकास हो॥
रोग-शोक विषाद-दुर्गुण-
दम्भ-द्वेष निवृत्ति हो।
प्रेम का पाथोधि फैले,
सत्वगुण की वृद्धि हो॥

—डा० कपिलदेव द्विवेदी
कुलपति, गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर

पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का

भगवानदेव को सत्परामर्श

३०, ३१ दिसम्बर ८८, १ जनवरी ८९ को अलवर मे राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा की शताब्दी बड़े समारोह से मनाई गई। वहां ऐसी बात सुनने में आयी कि आर्यसमाजी काम कोई नहीं करते किन्तु परस्पर लड़ते ही हैं। राजस्थान सभा के प्रधान श्री छोटूसिंह जी एडवोकेट ने कहा कि ये बातें दिल्ली जाकर कहनी चाहिए। दिल्ली जाकर गौतम नगर गुरुकुल से भगवान देव को फोन से कहा कि आप से कुछ बातें करनी हैं, यहां आने का कष्ट करें। दो जनवरी प्रातः १० बजे, आने पर उन से कहा कि यदि आप स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती को सार्वदेशिक सभा का प्रधान देखना नहीं चाहते तो सभा के सदस्यों से मिलें लिखें, उन्हें अपनी बात समझाएं किन्तु अपनी पत्रिका तथा विज्ञापनों में अपने झगड़े प्रकाशित न करें। क्योंकि ऐसा करने से आर्यसमाज की बहुत हानि होती है। जन साधारण में भी आर्यसमाज बदनाम होता है। भगवानदेव मेरी प्रार्थना को स्वीकार न करके स्वामी आनन्द बोध जी के विरुद्ध बहुत कुछ कहते रहे। स्वामी आनन्द बोध जी को हटाकर रहूंगे, प्रधान पद से, यह कहकर चले गये।

बात करते हुए भगवानदेव ने कहा आनन्दबोध नाम कैसा है। मैंने कहा यह उनका पसन्द नाम है बौद्धों जैसा। क्योंकि आनन्द शब्द को सुन कर मेरा ध्यान महात्मा बुद्ध के परम शिष्य आनन्द की ओर गया। इस लिए कहा कि नाम बौद्धों जैसा है। इस नाम के विषय में जो उन्होंने कुछ कहा, किन्तु नाम बहुत अच्छा है। उन की बातों से ऐसा प्रतीत होता था कि स्वामी आनन्दबोध जी में उन्हें कोई गुण दिखाई नहीं देता, अपितु गुण भी दोष के रूप में दीख पड़ते हैं।

अपनी पत्रिका योग मन्दिर में भगवान देव ने लिखा है कि देहली सर्वानन्द होटल पर रोटी खाकर (मैं) बीमार पड़ गया। यह उन्होंने असत्य लिखा है। उन से या किसी से भी भोजन के सम्बन्ध में कोई बात नहीं हुई। न कभी भोजन की कोई शिकायत बनी न रोगी हुए। भोजन विषय की यह बात उन की अपनी बनाई हुई है। इस से अनुमान है कि स्वामी आनन्दबोध जी के विषय में भी जो बहुत अनुचित, अशिष्ट शब्दों में वह लिखते हैं, उस में बहुत असत्य है।

अपनी पत्रिका योग मन्दिर मे भगवान देव ने यह भी लिखा है कि सर्वानन्द स्वामी आनन्दबोध जी से सन्यास वापस लेवें। यह बात कहने का अधिकार ऐसे किसी गृहस्थी को नहीं, क्योंकि ऋषि की संस्कार विधि में लिखे अनुसार गृहस्थ धर्म का पालन भी नहीं हो रहा, पंचयज्ञ नहीं करते, धर्मपूर्वक कमाई नहीं, दशांश दान नहीं, उचित ब्रह्मचर्य नहीं, इस के अनुसार कितने लोग गृहस्थ मे रहने योग्य हैं। कई बार लोगों से सुना पढ़ा कि सन्यासी ऐसे नहीं, वैसे नहीं। किन्तु कहने वाले अपनी ओर नहीं देखते कि हम कैसे गृहस्थ हैं। गृहस्थ यज्ञ का फल है—ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी, सन्यासी ये सब या संसार ठीक नहीं है का अर्थ है—गृहस्थ ठीक नहीं है। वेद में "अनास्वा पूताः पवतेन शुद्धाः" गृहस्थी को कहा है। निर्बल रोगी शरीर अपवित्र मन वाणी वाले मनुष्यों को वेद गृहस्थाश्रम के अधिकारी नहीं मानता। इस समय संसार में जो कुछ भी हो रहा है भला या बुरा उसका कारण है गृहस्थी। जो केवल मनुष्यों को उत्पन्न कर रहा है, किन्तु मनुष्य का निर्माण नहीं कर रहा है। प्रायः अयोग्य मनुष्यों से संसार को भर रहा है। इसलिए सभी आश्रमों के अच्छा बुरा होने के उत्तरदायित्व गृहस्थ पर ही हैं। जब गृहस्थी वेद शिक्षा अनुसार अपने धर्म का ठीक पालन करेगा तब सारे संसार का सुधार हो जायेगा। आजकल गृहस्थी अपने धर्म का पूर्णतया पालन नहीं करता है। इसलिए अन्य आश्रमों पर किया आक्षेप उसी पर आता है।

मनुष्य समाज मे रहने के प्रत्येक मनुष्य के लिए कुछ नियम हैं। उन नियमों का उल्लंघन करने वाला अपराधी माना जाता है। जिस की जो इच्छा हो, करे। जो इच्छा हो कहे, बोले, जिस से मनुष्यों में अशांति विघटन पैदा हो, ऐसी अवस्था मे दण्ड का विधान है, अन्यथा सभी मनुष्य मनमानी करने लगेंगे और मनुष्य समाज का सब ताना-बाना टूट जाएगा। महर्षि दयानन्द जी ने आर्यों मे इस प्रकार का कोई दोष न पाए, इसके लिए आर्यसमाज का दसवां नियम बनाया। सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए।

भगवान देव यदि इस नियम को मानते हैं तो अपने भद्दे, अशिष्ट शब्दों भरे लेखों को आर्यसमाज के हित मे तुरन्त बन्द कर दें। क्योंकि इन से आर्यसमाज का अपयश और बदनामी हो रही है। साथ ही ऐसे शब्दों के प्रयोग करने वाले की भी निन्दा होती है। लोग अच्छा नहीं समझते। आर्य शिष्ट व्यक्ति कभी शिष्टाचार का त्याग नहीं करते।

—सर्वानन्द

"सार्वदेशिक" साप्ताहिक १९।३।८९ से साभार

आर्यो !

कठोर हृदयों को हमें, प्रेम से जीतना है

"हम ने लोगों के कठोर हृदयों को कोमल बनाना है, दूर भागतों को आकर्षित करना है। यदि वे अत्याचार भी करें तो अपने उदात्त उद्देश्य को दृष्टि मे रखकर हमें तो उन से प्रेम ही करना चाहिए। धर्म के नाम से बदला लेने की भावना सर्वथा अभद्र है। हमारे उपदेश आज विरेचक औषधि की भांति घबराहट अवश्य लाते है। परन्तु हैं वे जातीय शरीर के शशोधक और आरोग्यप्रद, वर्तमान आर्य सतान चाहे जो हमें कहें।"

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

हिन्दी की सब छेड़ें तान

जीवन अपना हिन्दुस्तान, मातृभूमि पर है बलिदान।
हिन्दी की सब छेड़ें तान ॥

इसका नीर सुधा है सुरभित, धरती अम्बर मे सुविदित।
दुनिया भर मे गौरव-गान, हिन्दी की सब छेड़ें तान ॥
जीवन अपना ......

हिन्दी अपनी राग-रागिनी, आंगन मे उतरी है चांदनी।
हिन्दी का है भविष्य महान, हिन्दी की सब छेड़ें तान ॥
जीवन अपना ......

संस्कृत भाषा के सम्बन्ध में लोकसभाध्यक्ष को याचिका

[सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती के नेतृत्व में आर्य विद्वानों के एक शिष्टमण्डल ने १६ मार्च को लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ से उन के कार्यालय में मिलकर, उन्हें संस्कृत भाषा को नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत त्रिभाषा सूत्र में से निकाले जाने का विरोध करते हुए एक याचिका प्रस्तुत की। इस याचिका के साथ एक लघु पुस्तिका भी संलग्न थी जिसमें दी गई सूचना के अनुसार लन्दन के सेन्ट जेम्स स्कूल के विद्यार्थियों के लिए ५ वर्ष की आयु से ही संस्कृत शिक्षा का प्रावधान है। स्कूल के प्रविवरण के अनुसार संस्कृत स्वयं एक शुद्ध, परिपूर्ण और सुन्दर भाषा है और संसार की अन्य भाषाओं को पढ़ने, पढ़ाने के लिए इसका ज्ञान बहुत आवश्यक है।

श्री जाखड़ ने शिष्टमण्डल को आश्वासन दिया कि लोकसभा की याचिका समिति उन की प्रार्थना पर अवश्य विचार करेगी।

प्रबुद्ध पाठकों के अवलोकनार्थ याचिका अविकल रूप से प्रस्तुत की जा रही है।

—सम्पादक]

सेवा में,
माननीय श्री बलराम जी जाखड़
अध्यक्ष लोक सभा
नई दिल्ली

संस्कृत भाषा के सम्बन्ध में याचिका

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली द्वारा प्रस्तुत

निवेदन केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की शासी निकाय द्वारा संस्कृत भाषा के प्रति भेदभाव की नीति अपनाने के कारण प्रार्थी को बहुत मानसिक कष्ट पहुंचा है। शिक्षा बोर्ड ने अपने परिपत्र दिनांक १६-९-८८ के द्वारा समस्त सम्बद्ध माध्यमिक स्कूलों को नई शिक्षा योजना लागू करने के आदेश जारी किये हैं। इस योजना के अनुसार विद्यार्थियों को निम्नलिखित तीन भाषाओं को पढ़ना तथा उनकी परीक्षा देना अनिवार्य होगा :—

१ अंग्रेजी २. हिन्दी ३. असामिया, बंगला, कन्नड़, मराठी, कश्मीरी, मलयालम, तमिल, उर्दू, उड़िया, सिंधी और तेलगू में से कोई एक भाषा।

२ संस्कृत का स्थान इस प्रकार त्रिभाषा सूत्र के कार्यान्वयन में संस्कृत का बहिष्कार कर दिया गया है। जो अब केवल हिन्दी के साथ पाठ्यक्रम (क) के अन्तर्गत पढ़ाई जायेगी। जो विद्यार्थी हिन्दी को पाठ्यक्रम (ख) के द्वारा उच्च स्तर पर अध्ययन करना चाहेंगे, उन्हें हिन्दी (८० प्रतिशत अंक) के अतिरिक्त संस्कृत (२० प्रतिशत अंक) भी पढ़ना आवश्यक होगा। इस प्रकार उन्हें तीन भाषाओं के स्थान पर चार भाषाएं पढ़नी पड़ेंगी। इससे संस्कृत में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को उसे अतिरिक्त चौथी भाषा के रूप में पढ़ना होगा। अतिरिक्त भाषाओं में फ्रेंच, जर्मन, रूसी, स्पेनिश, फारसी तथा अरबी के साथ संस्कृत को भी जोड़ दिया गया है। मालूम होता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शासी निकाय में कोई विदेशी विभाग काम कर रहा है, जिस ने संस्कृत को एक भारतीय भाषा होते हुए भी विदेशी भाषाओं के साथ जोड़ा है। इसके विपरीत अंग्रेजी को एक विदेशी भाषा होते हुए भी पाठ्यक्रम में अनिवार्य भाषा के रूप में सम्मिलित किया गया है। यह सब उस स्थिति में हो रहा है, जब प्रधानमन्त्री स्वयं केन्द्रीय हिन्दी समिति के अध्यक्ष हैं। माननीय उपराष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा ने भी संस्कृत भाषा के प्रति उपेक्षापूर्ण नीति पर गहरा असन्तोष व्यक्त किया है।

उपसंहार—

(क) सन् १९८९ में तत्कालीन शिक्षा मन्त्री डा० त्रिगुणसेन की अध्यक्षता में शिक्षाविद् सांसदों की एक समिति ने सर्वसम्मति से अपनी रिपोर्ट में सिफारिश की थी कि समस्त भारतीय भाषाओं के अध्ययन के लिए प्रारम्भिक संस्कृत का अध्ययन आवश्यक होना चाहिए। यह रिपोर्ट उस समय दोनों सदनों द्वारा सर्वसम्मति से स्वीकार की गई थी। अतएव यदि संस्कृत को हिन्दी के साथ पढ़ाया जाये तो उसे सभी भारतीय भाषाओं के साथ पढ़ाना चाहिए।

(ख) संस्कृत को त्रिभाषा सूत्र के क्षेत्र से हटाना न केवल अधिकार बाह्य है, बल्कि भारतीय संविधान की अवमानना भी है, जिसमें संस्कृत को १५ भारतीय भाषाओं में से एक भाषा माना गया है।

(ग) त्रिभाषा सूत्र के क्षेत्र से संस्कृत का बहिष्कार सरकार की उस भाषा नीति का उल्लंघन भी है, जिसके बारे में प्रधानमन्त्री ने अपने दिनांक १६-९-८८ के भाषण में कहा था कि हिन्दी सहित भारत की समस्त पन्द्रहों भाषाओं को, जिसका उल्लेख संविधान में किया गया है, समान आदर तथा उन्नति के समान अवसर प्राप्त होंगे। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि ठीक उसी दिन केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष ने परिपत्र जारी करके उस भाषा नीति का खण्डन कर दिया।

(घ) संस्कृत के इस प्रकार निष्कासन से न केवल संस्कृत की हानि हुई है, बल्कि पठन-पाठन का समय कम होने से हिन्दी का भी नुकसान हुआ है।

(ङ) संस्कृत के हटाये जाने से संस्कृत तथा हिन्दी के बहुत से अध्यापकों का भी अतिरेक हो जायेगा और उन में से अधिकांश बेरोजगार हो जायगे, जैसा कि महाराष्ट्र प्रान्त में हुआ है। निकट भविष्य में हिन्दी तथा संस्कृत के नये अध्यापको की नियुक्ति का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

(च) संस्कृत के बहिष्कार से उन विद्यार्थियों की रुचि पर भी असर पड़ेगा जो संस्कृत भाषा का उच्चस्तरीय अध्ययन करना चाहते हैं। परोक्ष रूप में इस से हिन्दी के ऊपर भी विपरीत प्रभाव पड़ेगा, क्योंकि संस्कृत समस्त भारतीय भाषाओं तथा अनेक विदेशी भाषाओं की भी पोषक जननी है। इस तथ्य को पाश्चात्य शिक्षा विद्वानों ने भी स्वीकार किया है और अपने स्कूलों के पाठ्यक्रमों में उसे उचित स्थान भी दिया है।

संस्कृत के बिना हमारी प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर की क्या दशा होगी? इसके सोचने मात्र से कष्ट होता है। हमारे देश की पहचान, उस की मान्यता तथा उस की भारतीयता पूर्ण रूप से संस्कृत पर ही आधारित है। यही हमारी देशभक्ति, हमारे देश की एकता एवं अखण्डता का प्रेरणा स्रोत है। संस्कृत भाषा का ज्ञान हमारे देश के नागरिकों के लिए अत्यावश्यक है क्योंकि यह भाषा जितनी प्राचीन है उतनी ही अर्वाचीन भी है। शताब्दियों तक यह अपरिवर्तनशील रही है। इसका व्याकरण सब तरह से सम्पूर्ण है। उसमें कहीं भी त्रुटि नहीं है। इस का वाक्य विन्यास एवं उच्चारण सर्वथा शुद्ध, सुन्दर है और साहित्य महिमा मण्डित।

उपरोक्त सन्दर्भ में प्रार्थी एक भारतीय नागरिक होने के कारण संस्कृत भाषा के त्रिभाषा सूत्र से निष्कासन के कारण बहुत मर्माहत अनुभव कर रहा है।

संस्तुति—

आप से प्रार्थना है कि देश के वृहत्तर हित के लिए संस्कृत को नई शिक्षा नीति में उचित स्थान दिलाकर अनुगृहीत करें। इस कृपा के लिए प्रार्थी आप का सदा आभारी रहेगा।

प्रार्थी
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

मानवता का प्रचारक आर्यसमाज

—यशपाल आर्य बन्धु

उन्नीसवीं शताब्दी का सर्व-प्रमुख जन-आन्दोलन आर्यसमाज मूलतः मानवता प्रचारक महासंघ है। मानवता अथवा मानव-धर्म के प्रचार प्रसार के लिए ही उसका जन्म हुआ था। और गत एक शताब्दी से भी अधिक समय से वह मानवता का प्रचार कर रहा है। प्रश्न उठता है कि वह मानवता जिसका आर्यसमाज विगत शताब्दी से प्रचार करता आ रहा है अन्ततः है क्या चीज ?

मानवता क्या है ?

मानवता मानव की सुगन्धि है, सार-सर्वस्व है। मानव धर्म का ही दूसरा नाम मानवता है। मानवता क्या है ? इस रहस्य को जानने के लिए हमें मानव शब्द के निर्वचन पर विशेष ध्यान देना होगा। मानव, मानुष, मनुष्य तथा मनुज आदि शब्द पर्यायवाची हैं जो मूल धातु 'मनु ज्ञाने या 'मनु अवबोधने' से निष्पन्न हैं। इन सबका एक ही अर्थ निकलता है कि जिस व्यक्ति के कर्मों में ज्ञान अथवा विवेक समाविष्ट है उसी में मानवता का उदय माना जा सकता है। वैसे मानवता पशुता का प्रतिवाद है। जहां पशुता मिट जाती है समझ लो कि वहीं से मानवता का उदय होने लग जाता है। यदि गम्भीरतापूर्वक देखा जाए तो मानवता का अर्थ वासना पर विवेक की विजय है। विवेक पर वासना की विजय को तो पशुता ही कहा जाएगा। डा० रामचरण महेन्द्र के शब्दों में सदगुणों, सद्भावनाओं, सदाचरणों तथा सद्व्यवहारों से युक्त पुरुषत्व का नाम ही मानवता है। मानवता में वे सब शुभ सात्विक सत्सामर्थ्य केन्द्रित हैं जो हमें पशुत्व या असुरत्व से ऊँचा उठाते हैं और हमारी प्रवृत्ति को सदाचार, संयम, परमार्थ-सिद्धि, बुद्धि विवेक, सहिष्णुता की ओर रखते हैं।" (मानवता अमर है, पृष्ठ ४६) उपर्युक्त विवेचन से यही परिणाम निकलता है कि मानवता का वास्तविक अर्थ मानव धर्म है। और आर्यसमाज इसी का प्रचारक है। गत एक शताब्दी से आर्यसमाज विश्व के जनमानस के सम्मुख मानव धर्म के सही स्वरूप को उपस्थित करने में लगा है। यही मानवता का प्रचार है।

मानवता का एकमात्र प्रचारक—

"आर्यसमाज मानवता का एकमात्र प्रचारक है—हमें यह लिखने में कोई संकोच नहीं। आज हम संसार के विभिन्न मतमतान्तरों के प्रचारकों एवम् उनके कार्यक्रमों को देखते हैं तो पता चलता है कि इनमें से मानवता का प्रचारक कोई नहीं है। कोई हिन्दुत्व का प्रचारक है तो कोई इस्लाम का, कोई ईसाइयत का प्रचारक है तो कोई बौद्धधर्म का, कोई सिख धर्म का तो कोई जैन धर्म का पर मनुष्यत्व का, मानवता का अथवा मानव धर्म का प्रचारक आर्यसमाज को छोडकर कोई दिखाई नहीं देता। आज जो पुकार सुनाई देती है वह यही है कि—हजरत मुहम्मद साहब पर ईमान लाओ और मुसलमान बनो, अथवा हजरत ईसा मसीह पर ईमान लाओ और ईसाई बनो, अथवा महात्मा बुद्ध पर विश्वास रखो और और बौद्ध बनो अथवा महावीर तीर्थंकर पर विश्वास रखो और जैन बनो, अथवा सिख गुरुओं पर ईमान लाओ और सिख बनो अथवा हिन्दू देवी देवताओं पर विश्वास लाओ और हिन्दू बनो, पर दुख है कोई भी यह नहीं कहता कि विश्व-नियन्ता प्रभु पर विश्वास लाओ और इन्सान बनो। आर्यसमाज और उसके संस्थापक का सुस्पष्ट उद्घोष है कि एकमात्र ईश्वर ही हमारा उपास्य अथवा ईमान लाने योग्य है और उसी की यह भी घोषणा है कि 'आर्य' अर्थात् श्रेष्ठ मानव बनो। आर्यसमाज आर्यसमाजी अथवा दयानन्द मतावलम्बी बनाने की बात कहीं भी एवम् कभी भी नहीं कहता। वह तो वेद के ही उद्घोष 'कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्' और 'मनुर्भव' को भी सदैव दुहराता है।

श्रेष्ठ मानव बनो

आर्यसमाज ने 'कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्' का उद्घोष कर विश्व को आर्य अर्थात श्रेष्ठ मानव बनाने का पवित्रतम महाभियान छेडा है। वही वेद का 'मनुर्भव' का जयघोष गुंजरित करता है। वेद हमें इस उद्घोष के द्वारा मनुष्य बनने का आह्वान करता है। वेद का यह आह्वान पशु-पक्षियों के लिए तो है नहीं और न ही पशु पक्षी मनुष्य बन ही सकते हैं। तो फिर मनुष्य के लिए मनुष्य बनने का वेद का यह उपदेश कैसा? क्या मनुष्य का शरीर धारण करके भी हम मनुष्य नहीं ? बात तो कुछ ऐसी ही है। सत्य है—

'सभी मरदुम से गो सरजमी है
'वली' देखने को पर इन्सान नहीं है।'

अपनी इस विस्तृत वसुन्धरा पर मनुष्य के कोष्ठक में लिखे जाने वाले जनगणना के रजिस्टर में चार अरब से भी अधिक प्राणी होंगे, पर क्या सारे के सारे मनुष्य अथवा मानव हैं ? नहीं, सभी मनुष्य अथवा मानव नहीं। तभी तो वेद का यह उपदेश है। पर ऐसा क्यों ? उत्तर जिगर मुरादाबादी के शब्दों में इस प्रकार है—

"इस जमाने का इनकलाब न पूछ
रूह शैतान की शक्ल आदम की।"

हम शक्ल-सूरत से मनुष्य हैं पर गुण कर्म स्वभाव से मनुष्यता की सुगन्धि नहीं आती, हम कहने को ही मनुष्य हैं। महर्षि दयानन्द की सुस्पष्ट घोषणा है कि "जैसे पशु बलवान होकर निर्बलों को दुख देते और मार भी डालते हैं, जब मनुष्य शरीर पा के वैसा ही कर्म करते हैं तो मनुष्य स्वभावयुक्त नहीं, किन्तु पशुवत् हैं और जो बलवान होकर निर्बलों की रक्षा करता है, वही मनुष्य कहलाता है और जो स्वार्थवश पर हानि-मात्र करता है, वह जानो पशुओं का भी बड़ा भाई है।" ठीक ऐसी ही बात विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी कही है। यथा मनुष्य जब पशु बन जाता है तो उस समय वह पशु से भी बदतर हो जाता है।' यही कारण है कि आर्यसमाज मानवता का प्रचार करता है एवम मनुष्य बनने की बात कहता है।

मानव का निर्माण नही

दुख इस बात का है कि आज संसार में प्राय सभी कुछ हो रहा है पर यदि कुछ नहीं हो पा रहा तो मानव के निर्माण का कार्य नही हो रहा। फलों-फूलों और फसलों की किस्में सुधारने की तथा पशु-पक्षियों की नस्लें सुधारने की योजनाएं तो प्राय बनती रहती हैं एवं अब भी बन रही हैं, पर मानव निर्माण की कोई योजना (आर्यसमाज) को छोडकर कहीं बन-बना रही है ? कुमार बाराबंकवी की यह शिकायत सर्वथा उचित ही है कि—

'सभी कुछ हो रहा है
इस तरक्की के जमाने में।
मगर यह क्या गजब है,
आदमी इन्सान नहीं होता।'

आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान् प० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ठीक ही लिखते हैं कि हम बांध बांधते, नहरें खोदते, रेलें बिछाते हैं परन्तु कहां है वह मानव जिनके लिए हम यह सब कुछ करते हैं। अगर वह सच्चा न हो, ईमानदार न हो, दुराचारी हो, भ्रष्टाचारी हो तो यह सारा पार्थिव वैभव किस काम का ? जिस मानव की सुख सुविधा के लिए संसार के भोग ऐश्वर्य खडे किए जा रहे हैं, योजनाएं बनाई जा रही हैं उस मानव के निर्माण के लिए हमने क्या योजना बनाई है।" (सार्वदेशिक साप्ताहिक २२ मई, सन ७७) देखा आपने ! मानव बनाने की चिन्ता किस को है ? आर्यसमाज और उसके मान्य मनीषियों को। शरत बाबू ने कहा था कि 'मनुष्य का मरना मुझे उतनी चोट नहीं पहुंचाता जितनी कि मनुष्यत्व की मौत।' आर्यसमाज भी मनुष्यत्व की मौत से अत्यधिक उद्विग्न है, व्याकुल है परेशान है। पर वह हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठा, न बैठ ही सकता है। वह मानव निर्माण के कार्य में जुटकर मानवता को दुबारा जीवन दे रहा है।

आर्यसमाज की मानव-निर्माण योजना—

आर्यसमाज केवल मानव निर्माण की बात ही नहीं करता अथवा उसकी आवश्यकता पर केवल बल ही नहीं देता, अपितु मानव-निर्माण की व्यावहारिक योजना भी प्रस्तुत करता है। उसके उद्देश्य, (नियम) उनके सिद्धान्त उसके कार्यक्रम सभी मानव निर्माण के विभिन्न सोपान हैं। आर्यसमाज के दस नियम मानवता के आधार स्तम्भ हैं। इन नियमों में मानव की सर्वांगीण उन्नति की जो परिकल्पना की गई, वह अन्यत्र देखने सुनने को कहीं नहीं मिलती। शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति का जो मूलमन्त्र इन नियमों में है, उसकी कोई उपमा नहीं। आज शारीरिक उन्नति के

मानवता का प्रचारक—आर्यसमाज

बाद सामाजिक उन्नति की बात की जाती है। पर याद रखें ! आत्मिक उन्नति के बिना सामाजिक उन्नति तीन काल में भी सम्भव नहीं। आर्यसमाज के नियमों में जो क्रम है उसका अपना ही महत्त्व है। अर्थात पहले शारीरिक उन्नति, फिर आत्मिक और बाद में सामाजिक उन्नति। सामाजिक उन्नति का जो मूलमन्त्र आर्यसमाज के इन दस नियमों में है, उसका महत्त्व केवल इसी बात से आंका जा सकता है कि यह व्यक्ति को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहकर सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझने की बात कहते हैं। महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ठीक ही लिखते हैं कि 'आर्यसमाज के नियम यद्यपि गणना में केवल दस हैं, परन्तु उनके भीतर इतनी सामग्री मौजूद है जो व्यक्ति और समाज को अधिक से अधिक उन्नत बनाने के लिए पर्याप्त है।" (आर्यसमाज क्या है ? पृष्ठ २६) वस्तुत आर्यसमाज के नियम मानव-निर्माण के सूत्र हैं जिन पर चलकर कोई भी व्यक्ति मानव-पद प्राप्त कर सकता है। आर्यसमाज की मान्यता है कि वेद-प्रतिपादित पथ पर चले बिना श्रेष्ठ मानव का निर्माण कदापि नहीं हो सकता। अतः यदि मानव को मानव बनाना है तो वेद-पथ का अनुसरण अत्यन्त आवश्यक है। वेद जहां पूर्ण मानव बनने की शिक्षा देता है, वहां वह मानव का सर्वोच्च आदर्श भी उपस्थित करता है। यह श्रेय आर्यसमाज को ही जाता है कि उसने भूली-बिसरी वेद-विद्या की ओर संसार का ध्यान आकृष्ट किया। आर्यसमाज गत एक शताब्दी से वेद की शिक्षाओं का प्रचार प्रसार कर वस्तुत मानवता का ही प्रचार-प्रसार कर रहा है। वेद-प्रचार मानव-निर्माण आन्दोलन का ही दूसरा नाम है। मानवता के प्रचार हेतु ही आर्यसमाज यम-नियमों के पालन पर अधिक बल देता है। आर्यसमाज यम नियमों एवम् धर्म के दस लक्षणों को मानवता का आधार स्तम्भ मानता है।

वैदिक-संस्कार—

आर्यसमाज मानव-निर्माण एवं मानवता के प्रचार की जो योजना प्रस्तुत करता है संस्कार उसके प्रमुख अंग हैं। मानव निर्माण में संस्कारों का महत्त्व इसी बात से जाना जा सकता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती को इसके लिए एक अलग ग्रन्थ 'संस्कारविधि' के नाम से रचना पड़ा था। इस ग्रन्थ में मानव-निर्माण की शतवर्षीय अनुपम योजना है। महर्षि इस ग्रन्थ में सुस्पष्ट शब्दों में लिखते हैं कि—"जैसे सब पदार्थों को उत्कृष्ट करने की विद्या है, वैसे सन्तान को उत्कृष्ट करने की यही विद्या है" (गर्भाधान संस्कार) मानव जीवन की कोई भी अवस्था संस्कार शून्य नहीं है। गर्भ से ही मनुष्य संस्कारों में पलता है, शैशव से यौवन तक संस्कारों में ही पनपता है और प्रौढ़ावस्था से अन्तिम अवस्था तक इन्हीं में अन्तर्हित रहता है। मानवता सम्बन्धी सर्वोच्च गुणों को धारण करने के लिए हृदय में जिन सत्प्रेरणाओं सद्भावनाओं तथा सत्सकल्प की आवश्यकता पड़ती है, उन्हीं को मानव हृदय में वपन करने का नाम ही संस्कार है। यही कारण है कि आर्यसमाज संस्कारों के प्रचलन पर इतना बल देता है।

आर्यसमाज के सिद्धान्त, आर्य समाज की शिक्षा-प्रणाली आर्यसमाज की विचारधारा सभी कुछ मानवता के प्रचार में प्रबल सहायक हैं। मानवता का प्रचारक आर्यसमाज मानव का सर्वांगीण सम्पूर्ण विकास चाहता है एवम् कामना करता है कि धरती का प्रत्येक मानव अभ्युदय एवम् निःश्रेयस की सिद्धि प्राप्त करे। आर्यसमाज ऊंच-नीच के भेद-भाव को समाप्त कर समता का पाठ पढ़ाता है। यही मानवता का आदर्श है। आर्यसमाज ने अज्ञान, अन्याय और अभाव की समाप्ति का प्रबल अभियान छेड़ा है, वह चाहता है कि प्रत्येक मानवतावादी व्यक्ति जो अज्ञान, अन्याय और अभाव की परिसमाप्ति का इच्छुक है, आर्यसमाज के इस कार्यक्रम का सहयोगी बने ;

अन्तिम निवेदन—

मानव-मात्र से हमारा विनम्रता पूर्वक प्रबल निवेदन है कि यदि आर्यसमाज की उपर्युक्त चाहना को आप उचित समझते हैं और यदि सच्चे दिल से चाहते हैं कि मानव-मात्र की सर्वांगीण उन्नति हो और निर्माण हो शुद्ध मानव का तो महर्षि दयानन्द के कथनानुसार—'आर्य-समाज के साथ मिलकर उनके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा।" आर्यसमाज ही एक ऐसा बैंक है कि जहां चरित्रवान नीतिवान और सज्जन व्यक्तियों के निर्माण की पूंजी प्राप्त की जा सकती है। तो आइये ! विश्वनिर्माण करने की बातें सोचने से पहले हम मानव-निर्माण की बात सोचें और उन्हें क्रियान्वित करें। तभी मानवता का कल्याण है एवं विश्व का भी।

आर्यसमाज का अभ्युदय

★

इस के बल का किस ने कैसा फल पाया,
समझो समाज ने क्या क्या कर दिखलाया। टेक।

सब साधु बने परमेश्वर के अनुरागी,
जड़ता तम की जननी जड़ पूजा त्यागी ॥
बढ़ गई मेल की बेल एकता जागी,
फट गया फूट का पेट अविद्या भागी।
उपजा विवेक मिट गई मोह की माया
समझो समाज ने क्या क्या कर दिखलाया ॥१॥

निर्दोष धर्म वेदों के ज्ञान, जगाये,
मन्तव्य महापुरुषों के मान, मनाये।
खोले गुरुकुल, कालेज अनेक बनाये,
कुलहीन दीन अगणित अनाथ अपनाये ॥
प्रतिनिधि मण्डल का भाव बलों को भाया,
समझो समाज ने क्या क्या कर दिखलाया ॥२॥

शिशु ब्रह्मचर्य व्रत धार वेद पढ़ते हैं,
ज्ञानी बन बल गौरव विधि पर चढ़ते हैं।
बल वैदिक आत्मिक सामाजिक बढ़ते हैं,
शिक्षा-सागर से वेद-रत्न कढ़ते हैं।
यों पलट गई प्रतिकूल काल की काया,
समझो समाज ने क्या क्या कर दिखलाया ॥३॥

गुण, कर्म, स्वभावों से परखे जाते हैं,
नर नारि यथाविधि वर्ण वरण पाते हैं।
वेदों की शरण जब विधर्मी आते हैं,
वे भी अवगुण तज आरज कहलाते हैं।
वैदिक मत ने कब किसे न कण्ठ लगाया,
समझो समाज ने क्या क्या कर दिखलाया ॥४॥

फल खाते हैं लाखों पल खाने वाले,
पय पीते हैं वारुणी उड़ाने वाले।
बन गये जती चकलों में जाने वाले,
छूटे छल-बल से पाप कमाने वाले ॥
शुभ सदाचार का डंका निःशंक बजाया,
समझो समाज ने क्या-क्या कर दिखलाया ॥५॥

सब नियमों का जो एक नित्य नेता है,
वह निराकार अवतार कहां लेता है ?
मुरदा खाने पीने को कब चेता है,
कल्पित भूतों का दल क्या फल देता है।
यों पोल खोल पौराणिक-दम्भ दबाया,
समझो समाज ने क्या क्या कर दिखलाया ॥६॥

जड़ वेदों ने सब ग्रन्थ जगत् के जीते,
यज्ञों की अवनति के निशि-वासर बीते।
देखो नर-नारि सुकर्म—सुधा-रस पीते,
हो गये सुकवि 'शंकर' के मन के चीते ॥
सुख देती है मुनि दयानन्द की दया,
समझो समाज ने क्या क्या कर दिखलाया ॥७॥

—कवि शिरोमणि प० नाथूराम शर्मा "शंकर"
("शंकर सरोज से")

राष्ट्रनिर्माण में आर्यसमाज का यशस्वी योगदान

राष्ट्र निर्माण में जिन व्यक्तियों का प्रमुख योगदान रहा है उन में महर्षि दयानन्द सरस्वती अग्रणी है। विद्याध्ययन पूर्ण करके जब वह कार्य क्षेत्र में आए तब राष्ट्र की स्थिति अत्यन्त दयनीय एव भयानक थी। भारत अग्रेजी शासकों से पदाक्रान्त था; पारस्परिक वमनस्य के कारण स्थानीय राजा महाराजा फूट के रोग से ग्रस्त थे। उन्हें राष्ट्रीय हित की कोई चिन्ता नहीं थी। ईश्वर और धर्म के नाम पर मनुष्य पशुओ को मौत मर रहा था, ऊँच नीच छुआछूत का सवत्र बोलबाला था। नारी जाति को शूद्र कह कर शिक्षा से वचित रखा जाता था। बालविवाह, बहुविवाह, अनमेल विवाह, सती प्रथा आदि अनेक कुरीतियों के कारण राष्ट्र त्रस्त था।

१८५७ की क्रान्ति के असफल हो जाने के कारण अग्रेज शासन ने जहाँ पूरी तरह से इस देश में अधिकार किया हुआ था वहा सामाजिक दृष्टि से भी हमारा भारत पर्याप्त दुर्बल हो चुका था। ऐसी विकट परिस्थितियो में राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने के लिए महर्षि दयानन्द ने 'स्वराज्य सर्वोपरि है' का उद्घोष किया। राजा महाराजाओ को एकता के सूत्र में बाधकर धर्म और ईश्वर के नाम पर होने वाली विविध कुरीतियों को दूर किया। जन्मगत ऊँच-नीच को वेद विरुद्ध घोषित कर समाज में फैली भयकर कुरीतियो के विरोध में आवाज उठाई और उन्हें दूर किया। राष्ट्र के निर्माण में बाधक इन कुरीतियो को सदा-सदा के लिए समाप्त करने के उद्देश्य से सन १८७५ मे उन्होने बम्बई नगरी में सर्वप्रथम आर्यसमाज की स्थापना की। आज से १०५ वर्ष पूर्व सन १८८३ में दीपावली के दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण हुआ और उस के पश्चात् आर्यसमाज ने राष्ट्र निर्माण के हर क्षेत्र में अतुलनीय प्रयास किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्तों ने प्रेरणा पाकर श्याम जी कृष्ण वर्मा, लाला हरदयाल, भाई परमानन्द, स्वातन्त्र्य वीर सावरकर, मदनलाल ढींगरा आदि ने विदेशों में जाकर भारतीय स्वाधीनता के लिए सघर्ष किया एव जन जागृति पैदा की। पजाब केसरी लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, चौधरी रामभज दत्त, चन्द्र शेखर आजाद, सरदार भगतसिंह, रोशनसिंह ब्रह्मचारी रामप्रसाद बिस्मिल, सुखदेव आदि असख्य क्रान्तिकारियों ने आर्यसमाज से प्रेरणा लेकर राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया और शहीद हो गए।

शिक्षा के क्षेत्र में सरकार के बाद आर्यसमाज का स्थान ही सर्वोपरि रहा है। स्त्री शिक्षा, अन्तर्जातीय विधवा विवाहो की शुरुआत भी आर्यसमाज ने ही की, बहुविवाह, बालविवाह एव सतीप्रथा को रोक कर 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता.' का उद्घोष किया। भारत के स्वतन्त्र होने के पश्चात् आर्यसमाज का कोई भी कार्यक्रम शेष नहीं रहा जिसे भारतीय सविधान में स्वीकार न किया गया हो। अस्पृश्यता को आज अवैध माना गया है आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने १८७५ ईस्वी मे ही उस के विरुद्ध आवाज उठाई। अनेक अछूत (शूद्र) कहलाने वाले व्यक्तियों को आर्यसमाज ने विद्वान् और पण्डित बना कर उनका सम्मान किया और आज भी करता आ रहा है। □

वैदिक धर्म, वैदिक सस्कृति, वैदिक सभ्यता के पुनरुद्धारक,
आधुनिक भारत के युग-पुरुष,
मानव-समाज सेवियों के प्रेरणा स्रोत
आर्यसमाज के सस्थापक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

की कामना

"मेरी अन्त करण से यही कामना है कि
भारतवर्ष के एक अन्त से दूसरे अन्त तक
आर्यसमाज
स्थापित हों और देश में व्यापी हुई
कुरीतियाँ उन्मूलित हो जाय।"

आर्यसमाज

—स्व० श्री लालमन आर्य

कर सका सौ वर्ष में क्या क्या आर्यसमाज सुनो।
बतलाता हू तुम्हें बन्धुओ ध्यान लगाकर आज सुनो॥

सत्य सनातन वेद धर्म से हुए सभी थे अनजाने
मिथ्या ग्रन्थ पुराण भागवत सच्चे धर्म ग्रन्थ माने।
वेद ईश्वरी ज्ञान है, वैदिक धर्म महान् है,
कोने कोने में पहुचाई आवाज सुनो॥

कब्र ताजिये मियाँ मसानी पत्थर पूजा छुड़वाई,
निराकार घटघटवासी प्रभु की उपासना सिखलाई।
भूत प्रेत के भय मिटे विषाशूल सशय मिटे,
मृतक श्राद्ध इत्यादि सब तोड़ बुरे रिवाज सुनो॥

बच्चे खूसट बूढ़ो की भी जहा शादियाँ होती थीं,
बचपन में विधवा हो पत्नी रोकर जीवन खोती थी।
पुनर्व्याह उनके किये, दूर सकल दु ख कर दिये,
दुखिया से सुखिया बनो, सकल सवारे काज सुनो॥

पिछड़ी जाति और वनवासी हम से दूर हट रहे थे,
यवन ईसाई बन रहे थे यो दिन दिन हिन्दू घट रहे थे।
चक्र शुद्धि का चल गया, भीषण सकट टल गया,
विधर्मियों के दुर्ग पर विकट गिराई गाज सुनो॥

छुआछूत का आडम्बर भी घोर दृष्टि मे आता था,
मनुज मनुज से घोर घृणाकर कपड़े तक न छुआता था।
कोई नहीं अछूत अब, एक पिता के पूत सब,
आर्यों ने मेटो अधम छुआछूत की लाज सुनो॥

महिलाओं के साथ हुए थे क्या क्या अत्याचार नहीं,
वेदशास्त्र का क्या विद्या पढने का भी था अधिकार नहीं।
महिला आज पढ रही है, उन्नति शिखर चढ रही है,
मन्त्री न्यायाधीश बन, चला रही है राज सुनो॥

वस्त्र स्वदेशी वेष स्वदेशी और स्वदेशी हो भाषा,
स्वदेश की सभ्यता सस्कृति यह स्वदेश की परिभाषा।
आर्यों ने सकल्प धार, किया स्वदेशी का प्रचार,
कहा किसी के ना बनो दास और मोहताज सुनो॥

निजाम शासन में लोगो के सब अधिकार छिन रहे थे,
वे इतने व्याकुल मानो घड़ियाँ मृत्यु की गिन रहे थे।
आर्य सत्याग्रह छेड़ दिया, अत्याचार खदेड़ दिया,
पूर्ण विजय पाई झुका कुटिल निजामी राज सुनो॥

स्वतन्त्रता हित आर्यों ने दु ख सहे अनेकों जेल गये,
श्रद्धानन्द लाजपत बिस्मिल भगत जान पर खेल गये।
जागरूक जन - जन किया, सुधार आन्दोलन किया,
आर्यों के सहयोग से हम को मिला स्वराज्य सुनो॥

वैदिक शिक्षा प्रचारार्थ विद्यालय गुरुकुल खुलवाए,
वेद प्रचार हेतु उपदेशक देश विदेशों में भिजवाए।
उन में से ऐसा लगन, चतुर्वेदी करके जतन,
आर्य जाति की लालमन, रख सके जग में लाज सुनो॥

□

महर्षि दयानन्द की मान्यताएं एवं युग परिवर्तन

—डा० रवीदत्त शर्मा आचार्य
सबलपुर (मुरादाबाद)

महर्षि कालीन समाज कुरीतियों का पिटारा था। किसी भी क्षेत्र मे सन्तोषजनक स्थिति नहीं थी। व्यक्ति से लेकर समूचा राष्ट्र एक रोग से ग्रस्त था। अविद्या के अन्धकार में भटके हुए भारतीय अपने पतन को ही उत्थान मान बैठे थे। जन्म के आधार पर ही ब्राह्मण-क्षत्रिय आदि का निर्णय कर लिया जाता था और कर्म को गौण माना जाता था। जन्म से ब्राह्मण होते हुए निन्दित कर्म करने पर भी ब्राह्मण पर कोई आंच नहीं आती थी जन्म से शूद्र होने पर विद्या-प्राप्ति का अधिकार नहीं था। शूद्र, कुल मे जन्म लेने के कारण जीवन भर हेय समझा जाता था। नारी पर अत्याचारों की भरमार थी। संस्कारों का लोप हो चुका था। आर्षग्रन्थों का पठन-पाठन समाप्त हो चला था। कर्मकाण्ड एवम् यज्ञानुष्ठान पूर्ण अवैदिक थे और उनमें मन्त्रो के स्थान पर मनमाने स्वनिर्मित श्लोकों का प्रयोग किया जाता था। नामधारी ब्राह्मणों की वाणी ही वेदशास्त्र थी, कोई भी वाक्य बनाकर उसे वेद का नाम दे देते थे। जनसाधारण को इतना भ्रमित कर दिया गया था कि वेद का नाम ही भूल गए थे और ब्राह्मणों के द्वारा सम्भव असम्भव कुछ भी कह देने पर विरोध नहीं कर पाते थे। अपना काम चलाने के लिए जैसे ग्रन्थ बनाये गये थे। आज भी पुराणों के रूप में समाज में प्रचलित हैं। वैसे ही देवी-देवता तथा भगवान भी बना लिये गए। पाखण्डियों ने समाज एवम् धर्म को विकृत करने मे कोई कसर नहीं छोड़ी। जिससे स्वार्थ सिद्ध हो वही धर्म का नियम घोषित कर दिया गया। यदि सत्य कहा जाय तो लूट पाट ही धर्म था। धर्म के अधिकारी पण्डे और पुजारी थे जो भोली-भाली जनता पर मनमाने अत्याचार करते थे। अभी भी उस काल की छवि कहीं-कहीं देखने को मिल जाती है। वाराणसी मे विश्वनाथ मन्दिर की सुरग उस काल के भ्रष्टाचार की सूचना दे रही है, विवाह के उपरान्त आभूषणों से सुसज्जित वधू मन्दिर की परिक्रमा करती थी, तब सुरग का पटरा उठा दिया जाता था और वह सुरग में पहुंच जाती थी। इस प्रकार लाखों के गहने पण्डे उतार लेते थे और स्त्री को मार देते थे। यदि कोई उन से स्पष्टीकरण मागता तो उनके अत्याचारी, छिपे हुए गुण्डे उसकी भी हत्या कर देते थे। वर्तमान मे ऐसे सभी दर्शनीय स्थलों पर शासन द्वारा नियन्त्रण कर लिया गया है। ज्योतिषशास्त्र का जो घिनौना रूप आज देखने को मिलता है, उसी काल की देन है। कोई भी कार्य ब्राह्मण की स्वीकृति के बिना नहीं हो सकता था। क्रूर ग्रहों के प्रकोप के भय से आतंकित जन छोटे से छोटे कार्य को करने के लिए ब्राह्मणों का मुह ताकते रहते थे और पण्डित जी के द्वारा शुभ मुहूर्त बताने पर ही कार्य आरम्भ करते थे। आज की सत्यनारायण व्रत कथा, मरणोपरान्त ब्रह्मभोज, पिण्डदान, मृतकश्राद्ध, मूलनक्षत्र में जन्मे बच्चे का सूतक निवारण, नक्षत्र पचक मे मरने पर पचक दोष की निवृत्ति मृतक के हाथ से गोदान तथा विवाह के समय वर की दक्षिणा ब्राह्मण को देना आदि कुप्रथाओं से तत्कालीन ब्राह्मणों के आधिपत्य का पता चलता है।

महर्षि दयानन्द ने कुरीतियों को समाप्त करने के लिए भरसक प्रयत्न किया। उन्होंने अनुभव किया कि सभी बुराइयों का एकमात्र कारण है—वेदविद्या का लोप। ज्ञान के अभाव मे मनमाना आचरण ही होता है जैसा कि स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास की अनुभूमिका में लिखा है—"वेदों की अप्रवृत्ति होने के कारण महाभारत का युद्ध हुआ। इनकी अप्रवृत्ति से अविद्यान्धकार के भूगोल में विस्तृत होने से मनुष्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त होकर जिसके मन में जैसा आया वैसा मत चलाया।" प्रकाश के अभाव में अन्धकार स्वाभाविक है। महर्षि ने उस प्रकाश को फैलाने में अपना जीवन लगा दिया। गुरु विरजानन्द ने वेदों, दलितो एवम् नारियों का उद्धार करने का आदेश दिया था। स्वामी जी को भी यह निश्चय हो गया था कि वेद-विद्या का प्रचार होने पर सभी बुराइयां स्वतः दूर हो जाएंगी। सर्वप्रथम उन्होंने अन्धकार फैलाने वाले मानवकृत ग्रन्थों का उन्मूलन किया तथा मानवता को हानि पहुंचाने वाले मतमतान्तरों एवम् सम्प्रदायों का खण्डन किया। सन् १८६७ में कुम्भ के मेले में स्वामी जी ने हरिद्वार में अपना शिविर लगाया और पाखण्ड-खण्डिनी पताका को फहराया। फिर एक सगठन के रूप में १८७५ ई० में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज एक क्रांतिकारी सस्था के रूप मे उदीयमान हुई। इस सस्थान के दस नियम निर्धारित किये गए जिन में समाज-सुधार की भावना निहित थी। मनुष्य को सन्मार्ग पर लाने के लिये लक्ष्य निर्देशन किया। सत्यार्थप्रकाश उत्तरार्द्ध की अनुभूमिका में ही इसका सकेत मिलता है—'मनुष्य जन्म का होना सत्य-असत्य के निर्णय करने कराने के लिए है न कि वाद विवाद विरोध करने कराने के लिये।" धर्म का स्वरूप बताते हुए स्वामी जी ने आर्योद्देश्यरत्नमाला में स्पष्टीकरण किया है, 'जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपात रहित न्याय सर्वहित करना है।"

स्वामी जी ने "वेदोऽखिलो धर्ममूलम्" के आधार पर वेद को ही भौतिक एवम् आध्यात्मिक उन्नति का एकमात्र आधार स्वीकार किया वैदिक मान्यताओं को सर्वत्र प्रतिष्ठित किया। "यथा सूर्य प्रदीपस्य स्वप्रकाशेनैव प्रकाशितौ सन्तौ सर्वमूर्तद्रव्यप्रकाशकौ भवत तथैव वेदा स्वप्रकाशेनैव प्रकाशिता सन्त सर्वान्न्य विद्याप्रकाशम् प्रकाशयन्ति।" (ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका) वेद ही स्वप्रकाश एवम् स्वत प्रमाण वाले हैं ये ही सबको प्रकाशित तथा प्रमाणित करते हैं। सभी मान्यताओं को वेद पर आधारित स्वीकार करके वेद विरुद्ध मतो का खण्डन किया। पुराणोक्त मूर्ति-पूजा तथा अवतारवाद जैसी भ्रांति के उन्मूलन हेतु वेदोक्त त्रैतवाद को मान्यता दी। "द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया" के आधार पर ईश्वर, जीव और प्रकृति को अनादि सिद्ध किया। उपासना के सम्बन्ध में स्वामी जी ने स्पष्ट लिखा है, "जैसे ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं वैसे अपने करना, ईश्वर को सर्वव्यापक और अपने को व्याप्य जान के ईश्वर के समीप हम और हमारे समीप ईश्वर है ऐसा निश्चय योगाभ्यास से साक्षात् करना उपासना कहाती है, इसका फल ज्ञान की उन्नति आदि हैं।"

इस प्रकार जड की उपासना तथा मूर्तिपूजा का स्वतः खण्डन हो जाता है और ईश्वर के अनादित्व के कारण अवतारवाद की मान्यता भी समाप्त हो जाती है। वैदिक वर्णव्यवस्था की स्थापना करके स्वामी जी ने समाज को व्यवस्थित रूप दिया। ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य, शूद्र ये चार वर्ण हैं जो जन्म से नहीं, कर्म से बनते हैं। "जन्मना जायते शूद्र सस्कारात् द्विज उच्यते।" के अनुसार सस्कारविधि का निर्माण कर सबको द्विज बनने का अवसर दिया, जिसके सस्कार हो जाते हैं वही द्विज बन जाता है। कोई भी व्यक्ति किसी को द्विज बनने से नहीं रोक सकता। शिक्षा के लिए गुरुकुल पद्धति पर बल दिया। इस दिशा में आश्रम व्यवस्था को उपयोगी बताया एवम् २५ वर्षों में ब्रह्मचर्य का पालन कर विद्याध्ययन का आदेश दिया। सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय समुल्लास मे सकेत किया है कि बच्चे की शिक्षा माता, पिता तथा गुरु तीनों के द्वारा पूर्ण होती है, सदा इनका सम्मान करना चाहिये… " "मातृमान् पितृमान् आचार्यवान पुरुषो वेद"। शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार पुत्र तथा पुत्री को समान रूप से है। इन में भेदभाव करना अपनी सन्तान के साथ अन्याय करना है राष्ट्र की उन्नति के लिए स्त्री शिक्षा को अनिवार्य बताया तथा नारी को पुरुष के समान ही अधिकार एवम् सम्मान दिलाया। उत्तम सन्तान प्राप्त करने के लिए स्त्री का सम्मान करना अनिवार्य है, यदि उसकी उपेक्षा की गई तो सभी क्रियाएँ असफल हो जायेंगी, ऐसा मनु जी का मत है। बाल-विवाह, बहुविवाह, अनमेल विवाह तथा स्त्री को जीवित जलाने की प्रथा का विरोध कर विधवा-विवाह को मान्यता दी। वैदिक तथ्यों के आधार पर जिस स्त्री का पति मर चुका हो अथवा सर्वथा अक्षम हो तो उसे अपने अनुकूल दूसरा पति वरण करने का अधिकार है। अबला को सबला बनाना स्वामी जी का ही काम था। आज के कन्या विद्यालय अथवा महिला प्रशिक्षण केन्द्र उसी प्रयास का परिणाम है। आज सरकार ने महर्षि द्वारा सचालित सभी कार्यक्रमों को मूर्त रूप

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्य जगत के समाचार

ध्यान योग शिविर

योग धाम आर्य नगर, ज्वालापुर, हरिद्वार

गत वर्षों की भांति पातञ्जल योगधाम में ध्यानयोग शिविर का आयोजन २ अप्रैल रविवार से ९ अप्रैल रविवार तक किया जा रहा है। शिविर में स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती का सान्निध्य एवम् विद्यानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता रहेगी। इसके अतिरिक्त स्वामी श्री प्रकाशानन्द जो योगाचार्य एवम् स्वामी इन्द्रवेश जी पधार रहे हैं। ओ३म् प्रकाश वर्मा (यमुनानगर) के भक्ति संगीत भी होंगे।

शिविरार्थी मानसिक और आत्मिक लाभ प्राप्त करने के लिए समय पर पधार कर लाभ उठायें।

आर्यसमाज दरियागंज द्वारा वेदकथा का आयोजन

नई दिल्ली। आर्यसमाज दरियागंज २ अन्सारी रोड, नई दिल्ली ने प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी होली के पर्व पर वेद कथा का आयोजन १५ से २१ मार्च तक किया। इस अवसर पर नित्य प्रातः श्री पं० शिववीर शास्त्री के यज्ञ एवं शाम नित्य श्री प्रेमचन्द श्रीधर एम.ए. ने वेदकथा की। वेदकथा से पूर्व नित्य श्री सत्यदेव स्नातक एवं श्री ज्योति प्रसाद के मधुर भजन हुए।

२१ मार्च को बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया तथा नवनिर्वाचित प्रधान श्री धर्मपाल गुप्ता ने हार्दिक धन्यवाद करते हुए कहा कि आर्यसमाज के मन्त्री श्री ब्रह्मदत्त शर्मा को बधाई दी और बताया कि आयोजन में बहुत सहयोग दिया। अन्त में श्री ब्रह्मदत्त शर्मा मन्त्री ने सभी का धन्यवाद किया।

आर्यसमाज किरण गार्डन का दूसरा वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज किरण गार्डन का दूसरा वार्षिकोत्सव पश्चिमी दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के सहयोग से रविवार २३ अप्रेल १९८९ को प्रातः ८ बजे से दोपहर १.३० बजे तक बी ब्लाक के निकट, सनातन धर्म हनुमान मन्दिर के पास एक विशाल पार्क में आयोजित किया गया है। वार्षिकोत्सव के अन्तर्गत प्रातः ८ से १० बजे तक यज्ञ भजन, १० से १ बजे तक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन एवं १ से १.३० बजे तक आर्यसमाज की गतिविधियों की रिपोर्ट, धन्यवाद एवं शान्तिपाठ और उसके पश्चात् ऋषि लंगर का आयोजन किया गया है।

इस सारे कार्यक्रम को सफल बनाने तथा आर्यसमाज किरण गार्डन को दृढ़ बनाने के लिए आप से तन, मन, धन से सहयोग करने की हम अपेक्षा करते हैं।

आर्यसमाज किरण गार्डन के कार्यकर्ताओं की ओर से मेरी आप से सानुरोध प्रार्थना है कि आप इस समारोह में अपने, आर्यसमाज, परिवार एवं इष्टमित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में भाग लेवें और कृपा कर और आर्थिक सहयोग भी प्रदान करने की कृपा करें। आपका सहयोग, सद्भाव और आशीर्वाद ही हमारा सबल है।

'आर्यसन्देश' के
—स्वयं ग्राहक बनें।
—दूसरों को बनायें॥

'आर्यसमाज' के
—स्वयं सदस्य बनें।
—दूसरों को बनायें॥

वार्षिकोत्सव सम्पन्न—

आर्यसमाज कृष्णानगर, दिल्ली

आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१ का वार्षिकोत्सव ९ अप्रैल रविवार को प्रातःकाल मनाया जाएगा। इससे पूर्व ३ अप्रैल से ८ अप्रैल तक प्रतिदिन रात्रि में ८ बजे से श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय द्वारा वेदकथा का कार्यक्रम है।

आर्यसमाज नजफगढ़, नई दिल्ली

आर्यसमाज नजफगढ़, नई दिल्ली-४३ के अन्तर्गत वेद मन्दिर, गोपाल नगर कालोनी, नजफगढ़ का प्रथम वार्षिकोत्सव दिनांक ११ अप्रैल से १४ अप्रैल तक समारोहपूर्वक मनाया जाएगा।

आर्यसमाज, पालम गांव, दिल्ली

आर्यसमाज पालमगांव, दिल्ली का १६वाँ वार्षिकोत्सव रविवार दिनांक १२ मार्च को समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रातः यज्ञ, ध्वजारोहण तथा भजनोपदेश के पश्चात् स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में 'आर्य सम्मेलन" सम्पन्न हुआ। प० वेदपाल शास्त्री, आचार्या सुनीति आर्या, श्री रामलाल मलिक आदि ने आर्यसमाज के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार का आह्वान किया। समारोह में अनेक विद्वानों/कार्यकर्ताओं का अभिनन्दन किया गया।

आर्यसमाज दरियागंज का निर्वाचन

आर्यसमाज दरियागंज का वार्षिक निर्वाचन १९ मार्च को समाज परिसर में श्री चमनलाल जी के द्वारा सम्पन्न कराया गया। श्री धर्मपाल गुप्ता प्रधान निर्वाचित हुए। उन्होंने निम्न प्रकार मनोनयन किया—

प्रधान श्री धर्मपाल गुप्ता
उपप्रधान श्री० पी० वर्मा
" ज्ञानेश चौधरी
" श्री० पी० ढल्ला
मन्त्री ब्रह्मदत्त शर्मा
उपमन्त्री शिववीर शास्त्री
कोषाध्यक्ष : श्रीदयाल कृष्ण सेठ
प्रचारमन्त्री : शिवचरण सिंह
पुस्तकाध्यक्ष वेदप्रकाश अरोड़ा

शोक समाचार—

श्री भगवान दास आर्य

आर्यसमाज दीवान हाल के वरिष्ठ उपप्रधान ला० ऊधोदास आर्य के ज्येष्ठ भ्राता श्री भगवान दास आर्य का ६८ वर्ष की आयु में निधन हो गया है। आप कर्तव्यनिष्ठ आर्य पुरुष थे।

श्री सत्यपाल आर्य

आर्य वीर दल हरियाणा के अधिष्ठाता श्री सत्यपाल आर्य (बलवल निवासी) का हृदय गति रुक जाने से १६ मार्च को असमय में स्वर्गवास हो गया है। आप जीवन भर आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में लगे रहे।

दिल्ली, हरियाणा, मध्य प्रदेश की अनेक आर्यसमाजों तथा आर्य वीर दल संगठनों ने शोक सभाएं आयोजित कीं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा 'आर्यसन्देश' परिवार दिवंगत आत्माओं की सद्गति के लिए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता है।

(पृष्ठ ६ का शेष)

महर्षि दयानन्द की मान्यताएँ ...

देकर स्वामी जी को मान-प्रतिष्ठा प्रदान की है। एक युगप्रवर्तक के रूप में स्वामी जी को राष्ट्रीय सम्मान दिया गया है। संसद भवन में उन का चित्र लगा हुआ है। पानी के एक जहाज का नाम दयानन्दपोत रख दिया गया है जो सम्मान का द्योतक है।

सम्पूर्ण उपलब्धियों पर दृष्टिपात करते हुए कहा जा सकता है कि महर्षि दयानन्द एक क्रान्तिकारी समाजसुधारक थे, जिन के प्रयासों से जनमानस का सर्वांगीण विकास हुआ और नये युग का सूत्रपात हुआ। वास्तव में इसे युगनिर्माण या युग-परिवर्तन कहा जा सकता है। ऐसे महापुरुष जिन का मुख प्रसन्नता का घर हो, हृदय दया से भरपूर हो, वाणी से अमृत-वर्षा होती हो, कार्य जिन का मात्र परोपकार हो, वे किस के वन्दनीय नहीं होते अर्थात् सबके पूज्य होते हैं।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No. 32387/77 Post in N D P.S O on 30 31-3 89 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (डी०) ७५१ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३९

आर्यसमाज स्थापना दिवस (६ अप्रैल १९८९) से

सम्बन्धित कार्यक्रमों की सूचनाएँ

६ अप्रैल –

महर्षि दयानन्द सरस्वती की हिन्दी सेवा

हिन्दी अकादमी, दिल्ली

की ओर से विशेष संगोष्ठी

का आयोजन ६ अप्रैल बृहस्पतिवार को सायंकाल ६ बजे
स्थान—त्रिवेणी कला संगम सभागार
तानसेन मार्ग, निकट मण्डी हाउस, नई दिल्ली
अध्यक्षता—डा० विजयेन्द्र स्नातक
मुख्य अतिथि—श्री कुलानन्द भारतीय (कार्यकारी पार्षद)
वक्ता—प्रो० शेर सिंह डा० वेद प्रताप वैदिक
डा० धर्मपाल आर्य डा० वाचस्पति उपाध्याय
संयोजक—डा० नारायण दत्त पालीवाल सचिव हिन्दी अकादमी दिल्ली

७ अप्रैल—

आर्यसमाज, आर्यनगर, पहाड़गंज

आर्यसमाज मन्दिर आर्यनगर पहाड़गंज नई दिल्ली में ७ अप्रैल शुक्रवार को प्रातः ९.३० बजे श्री लाला इन्द्रनारायण की अध्यक्षता में आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया जायेगा। समारोह में स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, डा० धर्मपाल आर्य प० क्षितीश वेदालंकार, श्री रामचन्द्र विकल उद्बोधन देंगे।

८ अप्रैल—

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली

स्थान : सप्रू हाउस, बाराखम्बा रोड, नई दिल्ली

८ अप्रैल '८९, शनिवार, मध्याह्न २ बजे

अध्यक्ष—स्वामी रामेश्वरानन्द जी सरस्वती
प्रमुख वक्ता—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती
स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती
प० क्षितीश वेदालंकार
श्री रामचन्द्र 'विकल' सांसद
श्रीमती उषा शास्त्री
श्री प० चिन्तामणि
आप सपरिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

सेवा में—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस, गली न०१७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (डी०) ७५१

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ । अंक २२ | रविवार ९ अप्रैल १९८९ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८९ | चैत्र २०४६ | दयानन्दाब्द—१६४
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० डालर ३० पौंड

चैत्र शुक्ला १ सम्वत् २०४६, अर्थात् ६ अप्रैल को

समस्त आर्यजगत् में

नव संवत्सर एवम् आर्यसमाज स्थापना दिवस

समारोहपूर्वक मनाया गया

आर्य जनता द्वारा वेद प्रचार का संकल्प

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान्

पं० शिवकुमार शास्त्री भू०पू० सांसद का अभिनन्दन

आर्यसमाज के विख्यात विद्वान् प० शिव कुमार जी शास्त्री (भूतपूर्व ससद सदस्य) का सार्वजनिक अभिनन्दन रविवार दिनांक २ अप्रैल १९८९ को आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड, नई दिल्ली में किया गया। आर्यसमाज हनुमान रोड के प्रधान श्री राममूर्ति कला ने आदरणीय पण्डित जी को एक अभिनन्दन-पत्र तथा इक्यावन सौ रुपये की राशि कृतज्ञ भाव से भेंट की। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने माल्यार्पण द्वारा शास्त्री जी का स्वागत किया और शास्त्री जी द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु की गई सेवाओं की सराहना करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि वे शतायु हों और स्वस्थ तथा प्रसन्न रह कर आर्यसमाज की सेवा करते रहें।

प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल, प्रान्तीय आर्य महिला सभा की मन्त्राणी श्रीमती प्रकाश आर्या, श्रीमती सरला पाल, श्री देसराज बहल तथा दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों से आए हुए अनेक आर्य महानुभावों ने पण्डित जी का माल्यार्पण द्वारा अभिनन्दन किया तथा उनके जीवन से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालते हुए, उनके स्वास्थ्य एवं दीर्घ जीवन की कामनाएँ कीं।

श्रद्धेय शास्त्री जी वेद वेदाङ्गों का पूर्ण अध्ययन कर सन् १९३७ से १९४५ तक गुरुकुल झाम झम्मम (अब पाकिस्तान) में आचार्य रहे। उसके पश्चात् १९६१ तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में उपदेशक और वेद प्रचार अधिष्ठाता रहे। तदुपरान्त आप ने १९६६ तक गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में मुख्याधिष्ठातृत्व प्रदान कर वैदिक सिद्धान्तों का पुण्य ओजस्विनी वाक् से प्रचार प्रसार कर महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वप्नों को मूर्त रूप प्रदान किया। राजनीति क्षेत्र में भी आप ने अपना विशिष्ट स्थान बनाये रखा। चौथी एवं पांचवीं लोकसभा के सदस्य के रूप में आप देश की ज्वलन्त समस्याओं को समद पटल पर रखने और अपने अमूल्य सुझाव देने में अग्रणीय रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, धर्मार्य सभा हैदराबाद सत्याग्रह पेंशन समिति आदि अनेक संस्थाओं के महत्वपूर्ण पदों पर सुशोभित रह कर आप ने आर्यसमाज की कीर्ति को फैलाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

स्मरणीय है कि पिछले दिन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा तथा अन्य अनेक आर्यसमाज तथा आर्य संस्थाएँ प० शिवकुमार जी शास्त्री का अभिनन्दन कर चुकी हैं। हमारी परमात्मा से कामना है कि आर्य समाज के अधिकारियों के मन में विद्वानों के प्रति सम्मान की भावना को बनाये रखे।

चैत्र शुक्ला ९, अर्थात् १४ अप्रैल

मर्यादा पुरुषोत्तम राम

की पुण्य जन्मतिथि है। सम्पूर्ण आर्य जाति बड़ी श्रद्धा से मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम का पुण्य स्मरण करके, उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करती रही है।

प० रामचन्द्र देहलवी

आर्य जगत् के दिग्गज विद्वान्, तार्किक शिरोमणि, शास्त्रार्थ महारथी स्व० श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी के महान् पाण्डित्य का स्मरण कराती है।

सम्पादक—[illegible]

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव
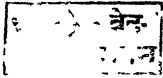
उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

इन्द्रियाणा प्रसगेन दोषमृच्छत्यसशयम् ।
सनियम्य तु तान्येव तत सिद्धि नियच्छति ॥

—मनु० २ ९३

आत्मा स्वभाव से दर्पण की तरह स्वच्छ है। जिस दर्पण को जितना अधिक स्वच्छ किया जाय उसी प्रकार अधिक सफाई के साथ उसमे वस्तुओ की शकल ठीक-ठीक दिखाई देगी, या जिस प्रकार मला-पन उन पर आ जावे उसी प्रकार वस्तुओ के रूप दिखाने के वह अयोग्य हो जाता है, इसी तरह आत्मा की अवस्था है। यदि नियम आदि साधनों से आत्मा को साफ किया जावे तो उसकी बुद्धि ऐसी उग्र अर्थात् सूक्ष्म हो जाती है कि वह ब्रह्मधाम तक जाने के योग्य बन जाता है। किन्तु अगर उस पर विषयो का मैल जम जावे तो उसमे वस्तुओ के यथार्थ रूपप्रकाश की शक्ति नही रहती। जीवात्मा का जीवन उद्देश्य क्या है? इसका विचार उसे हर समय चाहिए, तब वह विषयो की दासता से बडी सुगमता से स्वतन्त्र हो सकता है। विषयो मे फसने का परिणाम ही सब प्रकार के दोष हैं। यह इसलिए कि विषयो मे इन्द्रियों के द्वारा खिंचा हुआ पुरुष, विषयों को ही अपना आदर्श समझता है। यथार्थ मे न केवल विषय, बल्कि इन्द्रिया भी जीवात्मा को ज्ञान पहुचाने के लिए साधनमात्र का काम देती हैं। कल्पना करो कि एक बडे योग्य पदार्थवेत्ता को एक बडे रसक्रिया-भवन मे नियत किया गया है। इसके आधीन न केवल इस भवन के सम्बन्ध में बहुत से सहायक दिए गए हैं, बल्कि उसकी अपनी सेवा के लिए भी दस-बारह सेवकादि नियत हैं। क्या बिना बताये वह पदार्थज्ञानी यह नहीं समझ सकता कि उसको पदार्थों का तत्त्वज्ञान प्राप्त करके दूसरो पर प्रकाश करने की इच्छा से इस रसक्रिया भवन मे भेजा गया है? अगर फिर भी वह अपने वास्तविक लक्ष्य को भूलकर दिन भर सेवको से आनन्द लेने मे ही फसा रहे तो उसे कौन बुद्धिमान समझेगा?

मनुष्य रचना मे परमात्मा ने अपनी अपार दया से बुद्धि का एक विशेष पद रखा है। शरीर पच्चीस वर्ष की आयु तक बढता है और चालीस तक अपनी उन्नति को स्थिर रख सकता है, उसके पश्चात् ह्रास आरम्भ हो जाता है। यह अवस्था उन पुरुषो की है जो साधारणतः अच्छा जीवन व्यतीत करते हैं। ऐसे पुरुष अन्त में सौ बरस में चल बसते हैं। विशेष नेकी में पुरुषार्थ करने वाला पुरुष तीन सौ साल तक जीवित रह सकता है। इससे बढकर जीना मनुष्य की हिम्मत से बाहर है। परन्तु जो असाधारण रूप मे पाप का जीवन व्यतीत करते हैं उनका जीवन बहुत शीघ्र नष्ट हो जाता है और उनके लिए युवावस्था और बुढापे की आयु में कोई भेद नहीं रहता। चाहे कोई अवस्था हो, मनुष्य ने अवश्य नाश होना है। यह बनावट अनन्त समय तक स्थिर नहीं रह सकती। न शरीर, न इन्द्रियां रहने वाली हैं, हां, इन सबके नियम जीवात्मा के अन्दर उपस्थित रहते हैं। ये इन्द्रिया किसी नियत सीमा तक उन्नति कर सकती हैं, उसके बाद उन्हें नीचे गिरना पडता है। किन्तु बुद्धि है जिसकी उन्नति मरणपर्यन्त बन्द नहीं होती और फिर मरने के पश्चात् दूसरे जन्म मे भी स्थिर रह कर आगे चलती है, इसलिए बुद्धि को उन्नत करना ही मनुष्य का परम धर्म है। इन्द्रिया और विषय आदि इस परम उद्देश्य के अन्दर केवल साधन हैं, परन्तु मनुष्य कैसा मूर्ख है कि इन साधनो का दास बन जाता है। आंख हमे इसलिए दी गई हैं कि हम सारे ससार के रूप की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं को समझ सके और उनका ज्ञान प्राप्त करके उसको बुद्धि की उन्नति का साधन बनाव। परन्तु हम मे से कितने मनुष्य हैं जो रूप के दास नहीं बन रहे? इसको छिपाने के लिए हजारों पाप-कर्म किय जाते हैं। इसी तरह प्रत्येक इन्द्रिय जीवात्मा को दास बनाई गई है। परन्तु वही दास जीवात्मा को अपने वश में करके नाशवान् विषयों के दास उसे बना रहे हैं। इसी कारण मनुष्य को ससार में क्लेश दिखाई देते हैं।

परमात्मा ने स्वभाव से इस ससार को स्वर्गधाम बनाया था। मनुष्य को कर्म-योनि देकर उस स्वर्गधाम से पूरा लाभ लेने के योग्य बनाया था। हम मनुष्यों ने स्वयं इसे अपने कर्मों से नरकधाम बना रखा है। विषय सग से ही सारे दोष पैदा होते हैं। जिसके सेवक उसके वश में हैं वही सुखी है। जिसके सेवक उस के मालिक बने हुए हैं उससे बढकर कोई दु खी नहीं है। अत इन दोषों से छूटने के लिए मनुष्य को विषयों से स्वतन्त्रता प्राप्त करनी चाहिए। इस का अभिप्राय यह नहीं है कि इन्द्रियो का विषयों के साथ जो सम्बन्ध हो जाता है उसे मनुष्य छोड छोड सकता है और इसलिए वह उसे फौरन छोड देवे। अगर यह सम्बन्ध टूट जावे तो प्रत्यक्ष ज्ञान ही पैदा नही होता। प्रत्यक्ष ज्ञान के न होने से अनुमान इत्यादि की समाप्ति हो जाती है। तब जब प्रमाण ही स्थिर न रहे तो प्रमेय वस्तु कैसे जानी जा सकती है? इन्द्रियो का विषयो के साथ सम्बन्ध बराबर रहता है और इन्द्रियो के सम्बन्ध से जीवात्मा इस जीवन में जुदा नहीं हो सकता। परन्तु हां, वह सम्बन्ध मालिक और सेवक का होना चाहिए। ऐसा न हो कि सेवक स्वामी बन जाए और स्वामी सेवक बन जायें।

प्रिय पाठकगण! हम सब अपने परम उद्देश्य को भूले हुए हैं। विषयों की वास्तविकता को न जानते हुए उनके भोग ही में सुख मान बैठे हैं। इसलिए हमारे पीछे बीसों दोष लगे हुए हैं और हमको पीडित कर रहे हैं। विषयों से छुटकारा प्राप्त करने का यत्न आज से ही प्रारम्भ कर दो जिस से जिस समय जीवात्मा शरीर से पृथक होने लगे उस समय हमारी कोई भी वासना सांसारिक पदार्थों में बाकी न रहे, ताकि हम अपने परम उद्देश्य का ध्यान करते हुए ही प्राण त्यागकर मुक्ति के भागी बन सकें।

शब्दार्थ—(इन्द्रियाणां) इन्द्रियों के (प्रसगेन) विषयों के फसने से मनुष्य (असशयम्) निश्चय से (दोषम् ऋच्छति) दोष का भागी होता है। किन्तु (तानि एव तु) उन्हीं इन्द्रियों को (सनियम्य) सयम करके (ततः सिद्धि) बाद में सफलता को (नियच्छति) प्राप्त कर लेता है।

अनमोल छन्द

—नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक
ग्राम बहीन, जिला फरीदाबाद

(रोज करते हैं झगडे)

मत पूछो अय दोस्तो, राजनीति की बात।
नेताओ मे हो रही, है नित घूसे लात ॥
है नित घूसे लात, गए बन गन्दे नेता।
भूल गए कर्त्तव्य, रहे बन व्यर्थ विजेता ॥
लिए स्वार्थ ने घेर, रोज करते हैं झगडे।
माल मुफ्त के खाए, हुए हैं भारी तगडे।
पेट हुए फुटबाल, सास भी ना ले सकते।
निर्धन को ये दान, नहीं कौडी दे सकते ॥

(जनता है अति तग)

प्यारे भारत वर्ष की, जनता है अति तग।
पडी हुई है साथियो, यहां कुए में भग ॥
यहां कुएँ मे भग, पडी है निश्चय जानो।
नेताओ ने ढग, बिगाडा है सच मानो ॥
जाति पाति का खूब, लगाते नेता नारा।
झुलस रहा है आज, आग में भारत सारा ॥
बटवारों की मांग, जोर नित पकड रही है।
फूट पापिनी हाय, देश को जकड रही है ॥

अगर आर्यसमाज की, लोग मान लें बात,
बिगडे भारतवर्ष के, सुधरेंगे हालात।
बिन वैदिक पथ पर चले, होगा न कल्याण,
बात हमारी साथियो, आप लीजिए मान ॥

ओ३म्

आर्य सन्देश

आर्यसमाज

"जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा।"

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

नव सम्वतसर

भारत विभिन्नताओं का देश है। यहाँ पर नववर्ष भी विभिन्न महीनों में विभिन्न प्रकार से मनाया जाता है। यहाँ की जाति, भाषा, वेषभूषा सम्बन्धी विशेषतायें बड़ी स्पष्ट हैं। इसी प्रकार नववर्ष के आयोजन सम्बन्धी परम्परायें भी विभिन्न हैं। इनके साथ अनेक प्रकार की दन्त-कथायें पौराणिक-आख्यान, और गल्प भी जुड़ गए हैं। समान है तो केवल एक बात इस पर्व को सर्वत्र हर्ष और उल्लास से मनाया जाता है। संगीत और नृत्य की मस्ती इस पर्व के साथ जुड़ी है। बसन्त ऋतु के बसन्तोत्सव फाल्गुन के फाग और होली के हुड़दंग के पश्चात् चैत्र मास में सवत्सर उत्सव का आयोजन प्रसिद्ध चेटि के साथ होता है। इसमें एक विशिष्ट प्रकार की आम्रबौर की गन्ध सी मादकता मधुरिमा भरी होती है।

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा के दिन, मान्यता है कि परमात्मा ने सृष्टि का सृजन किया था। चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन परमात्मा ने जगत् की रचना की। ब्रह्म दिन, सृष्टि संवत्, वैवस्वत मन्वन्तर, सतयुग आदि के प्रारम्भ और विक्रमी संवत् ये सभी चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से प्रारम्भ होते हैं। भारत में इस पर्व को मनाने के प्रमाण प्राचीन काल से मिलते हैं। नववर्ष सम्य जातियों में मनाया जाता है। ईसाईयों में New Year और पारसियों में नौरोज के नाम से मनाया जाता है। विभिन्न जातियों में इस पर्व को आनन्दानुभव के साथ साथ अनुष्ठानों के साथ मनाया जाता है। यह मान्यता है कि सृष्टि के प्रारम्भ में चैत्र शुक्ला प्रतिपदा और सौर मेष संक्रान्ति एक साथ पड़ी थी। भारत में दो प्रकार के नववर्ष मान्य हैं। विक्रमी सम्वत् चन्द्रमा की कलाओं पर आधारित है। और शक सम्वत् सूर्य की दिशाओं पर। भारत में ऋतुओं की गणना सौर वर्ष के अनुसार होती है, इसीलिए भारत सरकार ने शक सम्वत् को ही मान्यता दी है। सिंधियों में इस पर्व को चेटि चांद के रूप में मनाया जाता है। आन्ध्र प्रदेश में इसे उगाडी के नाम से मनाया जाता है। महाराष्ट्र में इसे गुड़ी पड़वा कहते हैं। घरों के सामने रंगोली सजायी जाती है। प्रातः स्नान, चन्दनलेपन के बाद धार्मिक अनुष्ठान किये जाते हैं। लोग व्रत और उपवास भी रखते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसी दिन आर्यसमाज की स्थापना की थी। आर्य लोग इसे प्रसन्नता और उल्लास से मनाते हैं। पर्वों का आयोजन सांस्कृतिक एकता, धार्मिक एकता और राष्ट्रीय एकता का सन्देश देने वाले होते हैं। आओ हम भी इस दिन प्राणीमात्र के कल्याण की कामना करते हुए जीवन में दूसरों के सुख-दुःख के साथी बनें। और राष्ट्र की रक्षा, एकता और अखण्डता का व्रत लें।

बैशाखी

बैशाखी समरसता और एकरूपता का पर्व है। यह देशवासियों के अतीत के गौरव, वर्तमान का उत्साह और भविष्य की प्रेरणा का पर्व है। यह पर्व किसान को मिलने वाली खुशी का प्रतीक है। किसान लहलहाते खेतों को देखकर प्रसन्न हो उठता है। दक्षिण भारत में यह पर्व पोंगल के नाम से मनाया जाता है।

इस दिन के साथ अनेक ऐतिहासिक घटनायें भी जुड़ी हुई हैं। औरंगजेब के अत्याचारों और उसकी धार्मिक नीति के विरोध में सिखों के दसवें गुरु गोविन्द सिंह ने १३ अप्रैल, १६९९ को इसी दिन देश की एकता और अखण्डता बनाए रखने की प्रेरणा दी थी। १३ अप्रैल १७४९ को अहमदशाह अब्दाली ने पंजाब पर आक्रमण किया था तो जस्सासिंह अलुवालिया ने खालसा सेना बनाकर, मुस्लिम राज्य बनने से रोका था। महाराजा रणजीतसिंह का राजतिलक भी इसी दिन हुआ था। १३ अप्रैल, १९१९ को जलियांवाला बाग की घटना ने भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम के सेनानियों में एक नयी चेतना और स्फूर्ति डाल दी थी। जनरल डायर ने निहत्थे लोगों पर गोलियां चलवाई थीं। इस काण्ड में शहीद हुए लोगों के अमर बलिदान को आज भी याद किया जाता है। ऐतिहासिक महत्त्व के साथ साथ इस दिन का आर्थिक महत्त्व भी है। गेहूं की कटाई लोग इसी दिन से शुरू करते हैं। यह त्यौहार अन्य राष्ट्रीय त्यौहारों की तरह अपने में भारतीय-संस्कृति को संजोये है। इस दिन लोग आपस में एक-दूसरे से मिलते हैं। वास्तव में बैशाखी आदमी को आदमी से जोड़ने का अवसर प्रदान करती है। ●

दिवंगत आर्य श्रेष्ठी

जन्मदिवस पर—

पं० देवव्रत धर्मेन्दु

सहस्रों युवकों के प्रेरक और मार्गदर्शन तथा परहित के लिए जीवन समर्पण करने वाले आर्य विद्वान् स्व० पं० देवव्रत धर्मेन्दु आर्योपदेशक बैशाखी के पवित्र दिन दिनांक १३ अप्रैल, १९०४ ई० को पंजाब के जेहलम (अब पाकिस्तान में) जिले में स्थित जलालपुर कीकना नामक गांव में हुआ था। यद्यपि शैशवावस्था में ही आपको माता-पिता के स्नेह से वंचित होना पड़ा, फिर भी आप गिरते-पड़ते और मन्दिरों-गुरुद्वारों में धक्के खाते हुए अंत में सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव से आर्यसमाज में दीक्षित हुए। दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय लाहौर से शिक्षा-दीक्षा, प्राप्त कर, आप आर्यसमाज के प्रचारक के रूप में देश भर में आर्यसमाज के प्रचार कार्य तथा सुधार कर्मों में अग्रणीय रहे।

दिल्ली में स्थायी निवास कर आपने आर्यसमाज द्वारा संचालित सभी आन्दोलनों तथा आर्य महासम्मेलनों में बढ़ चढ़ कर कार्य किया। भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद तथा बाद में आर्य युवक परिषद् के माध्यम से जहां दिल्ली की आर्यसमाजों में युवकों को आगे लाये। वहां देशभर में युवक परिषद् की सत्यार्थप्रकाश परीक्षाओं द्वारा लाखों स्त्री पुरुषों को सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करवाया, उन्हें आर्यसमाज की ओर लाने की नींव डाली।

आर्य युवक परिषद्, आर्य अनाथालय, सार्वदेशिक प्रकाशन आदि अनेक संस्थायें उनके द्वारा की गई सेवाओं से आज भी अपनी अलग पहचान बनाये हुए हैं। "दैनिक यज्ञप्रकाश", जिसका संस्करण २० लाख को पार कर चुका है। पं० जी का कीर्तिस्तम्भ है। दिल्ली के आर्य-सामाजिक क्षेत्र में पं० जी कर्मठीन व्यक्ति, आदर्श प्रचारक, बाल हितैषी, कर्मयोगी, आदर्श समाज सेवी, दानी, उपदेशक, भाषण प्रतियोगिता-मन्त्री, आदि शब्दों से सम्बोधित किए जाते थे।

पं० जी का निधन दिनांक को लम्बी बीमारी के पश्चात् दिल्ली में हुआ।

स्व० पं० देवव्रत 'धर्मेन्दु' आर्योपदेशक के प्रति हमारी श्रद्धांजली।

महर्षि के तीन संकल्प और उनकी पूर्ति

—यशपाल आर्यबन्धु
आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद-२४४०३२

संसार के महापुरुषों के जीवनों के सूक्ष्म अध्ययन से हम इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि महापुरुषों के जीवनों के प्राय दो भाग हुआ करते हैं। एक भाग को हम संकल्प कह सकते हैं और दूसरे भाग को पुरुषार्थ। पं० लेखराम आर्य मुसाफिर के सहधर्मी लेखक पं० आत्माराम अमृतसरी महर्षि के जीवन चरित्र में इस तथ्य को स्वीकारते हुए लिखते हैं कि, "महापुरुषों के जीवन दो भागों में विभक्त होते हैं। पहले भाग वह जिसमें वे शुभ संकल्प धारण करते हैं और दूसरा वह जिसमें पुरुषार्थ द्वारा धारण किये संकल्प इच्छा की पूर्ति करके दिखाते हैं। या यों कहिए कि महान पुरुषों का जीवन 'इतीत' के रूप में होता है। साधारण पुरुषों के जीवन केवल इच्छाओं और प्रश्नों की ही समष्टि होते हैं परन्तु महापुरुषों के जीवन प्रश्न और उनके उत्तर, साथ-साथ लिये होते हैं। (महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र पृष्ठ ६ ७) महापुरुषों का महापुरुषत्व ही इसी में है कि वे प्रश्नों को न टाल कर उनका समुचित समाधान प्रस्तुत कर दिखाते हैं। पं० आत्माराम जी के शब्दों में, यदि इम्बोलट ने नदियों पर्वतों और प्राकृतिक दृश्यों की वास्तविकता जानने का प्रश्न उठाया तो उसका समाधान करने के लिए उसने दो बार संसार का चक्कर भी लगाया और इसी कारण उसकी महानता की प्रशंसा करने वाले उसको 'न्यूटन' से बढ़कर सम्मान देते हुए 'अरस्तू' से उसकी उपमा देते हैं।" (वही) तात्पर्य यह कि महापुरुष यदि कोई प्रश्न उठाता है तो उसका समाधान भी स्वयं ही प्रस्तुत करता है अथवा यों कहिए कि यदि वह कोई संकल्प करता है, तो पुरुषार्थ द्वारा अपने जीवन-काल में उसे पूरा भी कर दिखाता है।

आर्यसमाज के यशस्वी संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे ही महामानव थे कि जिन्होंने अपने जीवन काल में कुछ विशेष संकल्प लिये थे और फिर अपने पुरुषार्थ के द्वारा अपने जीवनकाल में ही उन्होंने उन्हें पूरा भी कर दिखाया। 'प्रश्न की महत्ता से उसके उत्तर देने वाले की महत्ता का पता लगता है। साधारण प्रश्न का समाधान करने वाले को संसार कोई सम्मान नहीं देता। कठिन से कठिन प्रश्न का उत्तर देने वाले को संसार ऊंचे से ऊंचा सम्मान देने को तैयार है।" (वही) अब देखना यह है कि महर्षि दयानन्द के सम्मुख कौन से और कैसे प्रश्न थे।

पं० आत्माराम जी के अनुसार, "जब हम प्रश्न की ओर ध्यान करते हैं जिसका समाधान करने के लिए स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन को लगाया, तो निस्सन्देह हमें स्वीकार करना पड़ता है कि वह प्रश्न बहुत ही जटिल है। उस प्रश्न को सुनकर ही वीरों के हृदय दहल जाते हैं, फिर उस प्रश्न का उत्तर देने और समाधान करने की तो बात ही क्या है। नैपोलियन के लिए सुगम था कि अपनी प्रबल इच्छा शक्ति के सहारे यूरोप के मुकुटधारियों को खिलौना बनाकर खेलता और एल्प्स की चोटियों पर डेरे लगा देता परन्तु वह अन्तिम समय में उस प्रश्न का समाधान करने के लिए स्वामी दयानन्द ने बीड़ा उठाया था सिकन्दर और महमूद सरीखे सम्राट संसार को तलवार के बल से जीतकर भी उस प्रश्न के आगे हाथ बांधे दास के रूप में खड़े हुए दिखाई दे रहे हैं। जिस पशु को कोई वीर छेड़ना नहीं चाहता उस पशु पर दयानन्द जान डालकर सवार होना चाहता है। जिस सिंह की गर्जना से संसार कांप उठता है उस विकराल सिंह को पालतू और आधीन बनाने के लिए वीर दयानन्द उद्यत होता है। उसकी बहन की मृत्यु ने उसके हृदय को ठोकर लगायी और मृत्यु से छुटकारा पाने का विचित्र कठिन प्रश्न समाधान करने के लिए उसको सौंप दिया। मृत्यु क्या है? उससे मनुष्य किस प्रकार बच सकता है, यह समस्या उसके मन में बस गई। उसका सारा पुरुषार्थ इस समस्या का समाधान करने और अपने उदाहरण से संसार को इस बात की जीवित-साक्षी देने के लिए था कि मनुष्य मृत्यु पर इस प्रकार विजय पाते हैं। "मृत्यु और उसका समाधान"—यह महर्षि के जीवन का सारांश है।" (वही)

वस्तुतः जिस समय मूलशंकर की बहन की मृत्यु हुई थी तो बालक मूलशंकर भयातिरेक के कारण अवसन्न होकर रह गया था। तब उसे रुलाई भी नहीं आ पाई थी। मूलशंकर की शुष्क आंखें देखकर घर के लोग उसे निष्ठुर और निर्मोही तक कहने लग पड़े थे। यहाँ तक कि उनकी माता जो उनसे सर्वाधिक प्यार करती थीं वे भी उन्हें दुतकारने लगीं। परन्तु मूलशंकर था कि कि इसी सोच में कि क्या मुझे भी एक दिन इसी प्रकार मरना होगा। क्या संसार में ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ मृत्यु से बचा जा सके अथवा ऐसा कोई उपाय नहीं जिससे मृत्यु से बचा जा सके। इसी चिन्ता में डूबे रहने के कारण उन्हें रोना तक नहीं आया और निष्ठुर कहलाये गए। पर लोग क्या जानें कि केवल आंसू ही दुःख को प्रकट करने की निशानी नहीं है। क्योंकि जैसा किसी कवि ने कहा है—

शक न कर मेरी शुष्क आंखों पर,
कभी ऐसे भी आंसू बहाये जाते हैं।"

कालान्तर में उनके चाचा का देहावसान हुआ। तब वे फूट फूटकर रोये और यह संकल्प लिया कि जैसे भी हो, मृत्यु पर विजय अवश्य हो पाऊंगा। और अन्ततः उस महामानव ने मृत्यु पर विजय पा कर ही दिखाई। पाठकवृन्द! महर्षि की मृत्यु पर विजय की एक अमर ही कहानी है।

इससे पूर्व भी महर्षि ने उस समय एक संकल्प लिया था, जब वे केवल चौदह वर्ष के ही थे। शिवरात्रि पर शिव के दर्शनों की लालसा में मूलशंकर रात भर जागते रहे और जब उन्होंने चूहे को शिव की पिण्डी पर उछल कूद मचाते देखा तो उनके मन में संशय हुआ कि यह कैसा शिव है जो चूहों से भी अपनी रक्षा नहीं कर सकता। उन्होंने अपनी शंका पिता जी को बताई तो उन्हें बताया गया कि यह तो शिव का प्रतीक मात्र है। सच्चे शिव तो कैलाश पर्वत पर रहते हैं। तब उन्होंने यह संकल्प लिया था कि जब तक सच्चे शिव के दर्शन नहीं कर लूंगा, मैं चैन से नहीं बैठूंगा। सच्चे शिव की पहचान क्या है? और उसके दर्शन कैसे हो सकते हैं? यह जो प्रश्न उठे और उनका समाधान भी तो मिलना ही चाहिए था। अन्ततः उन्होंने स्वयं ही इस प्रश्न को हल कर दिखाया। वर्षों वनों, पर्वतों की खाक छानने के बाद वह महामानव जहां जिसने बताया, उस-उसके पास गया, योग सीखा और सच्चे शिव के दर्शन करने में सफल हुए।

महर्षि के जीवन का तीसरा संकल्प था—संसार से पाखण्ड का विनाश करना और वेद विद्या का जग में प्रचार करना। महर्षि ने यह संकल्प तब लिया था जब वे गुरुवर विरजानन्द जी से दीक्षा लेकर विदा हो रहे थे। यह संकल्प भी कोई साधारण नहीं था। यदि यह कहा जाए कि वह सबसे कठिन था तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। महर्षि को इसका मूल्य भी बहुत चुकाना पड़ा था। कहीं ईंट, कहीं पत्थर कहीं गाली, कहीं गलौज यहां तक कि उन्हें सत्तरह बार विषपान भी करना पड़ा था। न उन्हें मान की चिन्ता थी, न अपमान की, बस उन्हें यदि कोई चिन्ता थी तो वेद-विद्या के प्रचार-प्रसार की ओर पाखण्ड के विनाश की। उनकी मान्यता थी कि—

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥

अर्थात् नीति निपुण लोग निंदा करें या स्तुति, लक्ष्मी आवे अथवा चली जावे, चाहे आज मरना हो या युगान्तर में, धीर पुरुष न्याय के पथ से कभी भी विचलित नहीं होते। गेटे ने ठीक ही कहा है कि, जिसका निश्चय दृढ़ और अटल है, वह दुनिया को अपने सांचे में ढाल सकता है। और महर्षि ने यह करके दिखाया। संसार में भूली-बिसरी वेद-विद्या के प्रचार-प्रसार का सम्पूर्ण श्रेय महर्षि दयानन्द को ही जाता है। महर्षि ने इस महान् कार्य के संपादन में कितनी यातनाएं सहीं, कितने कष्ट उठाये, इसका वर्णन करना भी कठिन है अतः सिद्ध है महान् प्रश्नों का समाधान करने वाला भी कोई महामानव ही होता है। महर्षि ने अपने जीवन में जो

(शेष पृष्ठ ७ पर)

रामनवमी पर विशेष—

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम

—स्व० पं० भवानी प्रसाद

भारतीय इतिवृत्त के इस निशा-काल के तिमिरावृत नभोमण्डल में कई ऐसी ज्योतियां जगमगा रही हैं, जो समार मरुस्थलों के मार्ग भ्रष्ट पथिकों को पथ-प्रदर्शन करके अपनी जीवनयात्रा को पूरी करने में सहायता देती रहती हैं परंतु उनमें इक्ष्वाकु कुल-कुमुदचन्द्र श्री रामचन्द्र जी का सर्वोत्कृष्ट-समुज्ज्वल प्रकाश ही इस कड़ी मंजिल को अन्त तक पहुंचाने या पूरी करने में सहायक और सब से बढ़कर पथ-प्रदर्शक है। यूं तो इन चमकती हुई तारावों की संख्या संख्यातीत है पर उनमें सर्वनयनाभिराम श्री रामचन्द्र जी का प्रकृष्ट प्रकाश ही सर्वातिशायी और सर्वव्यापी है। यदि इस घनघोर अन्धियारी रात्रि में जगद्वन्द्य श्री राम के आदर्श जीवन की जाज्वल्यमान शीतल किरणावली का प्रकाश प्रसार न पाता तो भारतीय यात्री का कहीं ठिकाना न था। इस सूचिभेद्य अन्धकार में उन को न जाने कहां से कहां भटकना पड़ता।

इस समय भारत के शृंखलाबद्ध इतिहास की अप्राप्यता में यदि भारतीय अपना मस्तक समुन्नत जातियों के समक्ष ऊंचा उठा कर चल सकते हैं, तो महात्मा राम के आदर्श चरित की विद्यमानता से। यदि प्राचीनतम ऐतिहासिक जाति होने का गौरव उनको प्राप्त है तो सूर्य कुल कमल-दिवाकर राम की अनुकरणीय पावनी जीवनी की प्रस्तुति से। यदि भारतीयजनों को धार्मिक सभ्यवक्ता सत्यसन्ध, सभ्य और दृढव्रत होने का अभिमान है तो प्राचीन भारत के धर्मप्राण तथा गौरवसर्वस्व श्री राम के पवित्र चरित्र की विराजमानता से।

यदि पूर्ण परिश्रम से संसार के समस्त स्मरणीय जनों की जीवनियां एकत्र की जाय तो हम को उन में से किसी एक जीवनी में वह सर्वगुणराशि एकत्र न मिल सकेगी, जिस से सर्वगुणागार श्रीराम का जीवन भरपूर है। आज हमारे पास भगवान् रामचन्द्र का ही एक ऐसा आदर्श चरित्र उपस्थित है जो अन्य महात्माओं के बचे बचाए उपलब्ध चरित्रों से सर्वश्रेष्ठ और सब से बढ़कर शिक्षाप्रद है। वस्तुतः श्रीराम का जीवन सर्वमर्यादाओं का ऐसा उत्तम आदर्श है कि मर्यादापुरुषोत्तम की उपाधि केवल उनके लिए रूढ हो गई है। अब किसी को सुराज्य का उदाहरण देना होता है तो "रामराज्य" का प्रयोग किया जाता है।

केवल लोकमर्यादा की अक्षुण्ण स्थिति बनाये रखने के लिए निष्काम कर्म करते रहने के वैदिक धर्म के सिद्धान्त का पूर्णरूप से पालन करके प्रातः स्मरणीय श्रीरामचन्द्र ने ही दिखलाया था।

आहूतस्याभिषेकाय
विसृष्टस्य वनाय च।
न मया लक्षितस्तस्य
स्वल्पोऽप्याकारविभ्रमः॥
(वाल्मीकिरामायण)

अर्थ— 'राज्याभिषेकार्थ बुलाये हुए और वन के लिए विदा किए हुए रामचन्द्र के मुख के आकार में मैंने कुछ भी अन्तर नहीं देखा।" आदिकवि वाल्मीकि का यह शब्द-चित्र निष्काम कर्मवीर श्रीरामचन्द्र जी का ही यथार्थ चित्र था। वास्तव में वह स्वकुलदीप मातृमोदवर्द्धक पितृनिर्देशपालक पुत्र, एकपत्नीव्रत-निरत प्राणप्रियाभार्यासखा, सुहृद्-दुःखविमोचक मित्र लोकसंग्राहक, प्रजापालक नरेश, सन्तानवत्सलपिता और संसार मर्यादाव्यवस्थापक, परोपकारक, पुरुषरत्न का एकत्र एकीकृत सन्निवेश सूर्यवंश प्रभाकर, कौशल्योल्लासकारक, दशरथानन्द-वर्धन, जानकी जीवन, सुग्रीवसुहृद, अखिलार्यनिषेवितपादपद्म, साकेताधीश्वर महाराजाधिराज भगवान् रामचन्द्र में ही पाया जाता है।

दक्षिणापथ के सुदूरवर्ती, अविद्यान्धकारपूर्ण महाकान्तार में वैदिक आर्य सभ्यता का प्रकाश प्राधान्येन सर्वप्रथम लोकदिग्विजयी श्रीराम ने ही पहुंचाया था। यद्यपि इससे पूर्व अगस्त्य ऋषि ने वैदिक सभ्यता के आलोक को दक्षिण में फैलाने का यत्न किया था परन्तु उसको उससे पूर्ण आलोकित सूर्य-कुल-रवि राम ने ही किया था। महाराज रामचन्द्र के दक्षिण विजय से पूर्व विन्ध्याचल पार का महाकान्तार इन्द्रियलोलुप, अनेक कदाचारदत्तचित्त, नररक्त-पिपासु राक्षसों का लीलानिकेतन बना हुआ था, उन में सर्वत्र उन्हीं का एकाधिपत्य वर्तमान था, वा यत्र-तत्र (कहीं-कहीं) वानर वंश के एक दो छोटे राज्य विद्यमान थे। इन्हीं वानरों का एक राज्य पम्पापुरी (वर्तमान मैसूर राज्य में उत्तरी पेनर नदी के उद्गम स्थान पर चन्द्रदुर्ग के निकट) में वानरराज बाली की अध्यक्षता में उपस्थित था। परन्तु उनके राज परिवार में धर्मपराङ्मुखता के कारण धन कलत्र को लक्ष्य करके गृहकलह मचा हुआ था और उसके फलस्वरूप वानरराज बाली का कनिष्ठ भ्राता सुग्रीव अपने मित्र हनुमान के साथ अपने ज्येष्ठ भ्राता से भयभीत होकर ऋष्यमूक (वर्तमान मैसूर राज्य में उत्तरीय पेनर नदी का उद्गम स्थान चन्द्रदुर्ग पर्वत) पर जा छिपा था। इन्हीं वानरों और राक्षसों को वाल्मीकि रामायण के अन्तिम आधुनिक संस्करण में अलौकिक योनि राक्षस तथा ऋक्ष (रीछ) बतलाया गया है और उन के आकारों को असाधारण और भयंकर चित्रित किया गया है।

श्री रामचन्द्र ने पितृ आज्ञा को शिर धरकर, अयोध्या के महासाम्राज्य को त्याग कर और इसी महाकान्तार दण्डकारण्य से निर्वासित होकर अपने प्रेम और सदुपदेश से उक्त वानर जाति को अपना मित्र बनाया और सुग्रीव से सौहार्द की स्थापना करके उसके धनकलत्रापहारी भ्राता बाली को मार कर इस का राज्य सुग्रीव को दिया था। अत्याचारी राक्षसों के दमन के लिए महावीर हनूमान् के सेनापतित्व में उन्हीं वानरों की अपनी संगठन शक्ति से प्रबल और सुशिक्षित सेना सन्नद्ध की। उसी सेना की सहायता से लंकाद्वीप के अतुल बलशाली तथा महापराक्रमी राक्षसजाति के साम्राज्य का उसके अधीश्वर प्रबल प्रतापी अनाचारी रावण सहित विध्वंस किया। किन्तु श्रीरामचन्द्र सदृश आर्य दिग्विजेता का विजय साम्राज्य-विस्तार वा सम्पत्तिसञ्चयार्थ नहीं था। उन्होंने विजित प्रदेश में धर्म की विजय वैजयन्ती उड़ाकर भूतपूर्व लंकेश्वर रावण के स्थान में उस के अनुज धर्मपरायण विभीषण को ही प्रजा पालनार्थ अभिषिक्त कर दिया। इस प्रकार दक्षिणापथ में आर्य सभ्यता का प्रसार करके अपनी वनवास यात्रा की अवधि पूर्ण होने पर श्री रामचन्द्र जी अपनी पैतृक राजधानी अयोध्या में लौट आये और स्वपितृपरम्परागत साकेत राज्य के सिंहासन पर अभिषिक्त होकर यावज्जीवन नृपति-धर्म का पालन करते रहे।

इस लघुनिबन्ध में पुण्यश्लोक विश्वविश्रुतकीर्ति लोकाभिराम श्री राम की पुण्य गाथा कहां तक बखान की जा सकती है। काव्य उन के यशोगान से भरे पड़े हैं। भारतीय कवियों ने अपनी उच्च कल्पना का पूरा परिचय देकर शब्दचित्र के जितने मनोरम और सुन्दर स्वरूप बनाए हैं देववाणी के सिद्ध सारस्वतों ने अपनी प्रखर प्रतिभा का जितना चमत्कार दिखलाया है उन में से अधिकांश में राम के पथप्रदर्शक पावन चरित्र का वर्णन पाया जाता है। भाषाकवियों की भी जिह्वा उन का यश वर्णन करने से नहीं थकती।

हमारे लिए इस से अधिक सौभाग्य और क्या हो सकता है कि हम ऐसे मर्यादा पुरुषोत्तम आदर्श चरित्र की सन्तान हैं। उन्हीं पवित्र नाम राम के जन्मदिन की शुभतिथि चैत्र सुदि नवमी है। हमारे पूर्वजों ने हम पर यह भी एक बड़ा उपकार किया है कि इस लोकाभ्युदयकारक के जन्म की तिथि इस चैत्र शुक्ला नवमी को हम तक अविच्छिन्न रूप से पहुंचा दिया है। परन्तु आजकल अज्ञानान्धकार में निमग्न आर्य सन्तान रामनवमी प्रभृति जन्मोत्सव को लाभप्रद रीति से नहीं मनाते और उनके वास्तविक उद्देश्यों को भूलकर अनशन आदि वृथा रूढियों में फंस गए हैं। शिक्षा से आलोकित हृदय सुधारकों और वैदिकधर्मावलम्बी आर्य महाशयों का कर्त्तव्य है कि लुप्त प्राय विशुद्ध वीर पूजा की प्रथा का पुनरुद्धार करें और अपने आदर्श

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य जगत के समाचार

महात्मा देवेश भिक्षु का सार्वजनिक अभिनन्दन

वेदोद्धारिणी प्रतिष्ठान के प्रधान श्री महात्मा देवेश भिक्षु जी द्वारा वेद एवं सत्यार्थप्रकाश के प्रचारार्थ अमेरिका यात्रा पर जाने के उपलक्ष्य मे दिल्ली की आर्यसमाजों की ओर से उनका सार्वजनिक अभिनन्दन तथा विदाई समारोह का आयोजन ६ अप्रैल सायकाल ३.३० बजे न्यायमूर्ति श्री हसराज खन्ना की अध्यक्षता में, आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड, नई दिल्ली में किया जा रहा है।

वैदिक वृद्ध संन्यास आश्रम, यमुना नगर का द्वितीय वेदप्रचार समारोह

वैदिक वृद्ध सन्यास आश्रम, अशोक नगर, रेलवे वर्कशाप रोड, यमुना नगर (हरियाणा) का द्वितीय विशाल वेदप्रचार समारोह आगामी १९ मई से २१ मई तक बडी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर 'वैदिक राष्ट्रोत्थान सम्मेलन', नारी उत्थान सम्मेलन' 'धर्मरक्षा सम्मेलन' कवि सम्मेलन' का आयोजन किया गया है।

इस अवसर पर आर्य जगत् के विख्यात सन्यासी, विद्वान्, नेता, उपदेशक, भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज गोवरी जनेरवा

आर्यसमाज गोवरी जनेरवा (पू० चम्पारण) का ८९वा वार्षिकोत्सव दिनाक ६ मार्च से ८ मार्च तक बडी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेक विद्वान्, उपदेशक, भजनोपदेशको ने पधार कर जनता को महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपकारो तथा आर्यसमाज द्वारा किए गए सुधार कार्यों का दिग्दर्शन कराया। प्रतिदिन प्रात चारो वेदो से चुने हुए सौ सौ मन्त्रो के साथ आहुति दी गयी।

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया (अलवर, राज०) का २७वा वार्षिकोत्सव दिनाक १८, १९ मार्च को बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। चतुर्वेद पारायण यज्ञ जो १४ जनवरी मकर सक्रान्ति से प्रारम्भ हुआ था १९ मार्च को पूर्णाहुति के साथ समाप्त हुआ।

१९ मार्च को आयोजित विशेष सम्मेलन मे श्री छोटूसिह एडवोकेट (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान) श्री महेन्द्र प्रताप शास्त्री (विधायक), श्री सुनील अरोडा (जिलाधिकारी), श्रीमती सुशीला (आचार्या, कन्या गुरुकुल नरेला, दिल्ली) ने अपने भाषणो मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपकारो तथा कन्या गुरुकुल के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशसा की।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज, पटेल नगर

आर्यसमाज पटेल नगर, नई दिल्ली का २६वां वार्षिकोत्सव आगामी १० अप्रैल से १७ अप्रैल तक बड समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर बृहद् यज्ञ, वेद कथा, वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

वार्षिकोत्सव पर डा० वाचस्पति उपाध्याय, प० यशपाल सुधाशु, प० शिवाकान्त उपाध्याय, डा० महेश विद्यालकार, आचार्य पुरुषोत्तम, प० प्रेमचन्द 'श्रीधर', स्वामी सत्य प्रकाशानन्द, श्रीमती शकुन्तला आर्या, श्रीमती प्रकाश आर्या, श्रीमती उषा शास्त्री आदि पधार रहे हैं।

आर्यसमाज जौनपुर

आर्यसमाज जौनपुर का ८९वा वार्षिकोत्सव दिनाक १३ अप्रैल से १६ अप्रैल तक समारोहपूर्वक मनाया जायेगा। वार्षिकोत्सव के अवसर पर अनेक वैदिक विद्वान् उपदेशक तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

आर्यसमाज, बाजार सीताराम, दिल्ली

आर्यसमाज बाजार सीताराम, दिल्ली का ६६वां वार्षिकोत्सव ३ अप्रैल से ९ अप्रैल १९८९ तक समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर वक्तावदी, हिन्दी, महिला, आर्य कुमार तथा राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

मुख्य समारोह रविवार दिनांक ९ अप्रैल १९८९ को प्रात "राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन" के रूप में होगा, जिस की अध्यक्षता स्वामी आनन्द बोध सरस्वती करेंगे। उत्सव पर अनेक आर्य सन्यासी वैदिक विद्वान्, उपदेशक, भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

आर्यसमाज, पंजाबी बाग

आर्यसमाज, पजाबी बाग (पश्चिम), आनन्द मार्ग, नई दिल्ली का २५वा वार्षिकोत्सव २ अप्रैल से ९ अप्रैल तक समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रतिदिन प्रात काल पारिवारिक सत्सगो का आयोजन किया गया है जिसमें यज्ञ तथा उपदेश प० यशपाल जी सुधाशु द्वारा होगा।

मुख्य समारोह रविवार ९ अप्रैल को मध्याह्न मे स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती तथा स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के उद्बोधन द्वारा होगा। इसी अवसर पर सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल के छात्रों द्वारा सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाएगा।

आर्यसन्देश पढ़ें, पढ़ायें

आर्य जगत के समाचारों व उपयोगी लेखों, अध्यात्म विवेचनो से युक्त, सामाजिक चेतावनियो से जूझने की प्रेरणा देने वाले साप्ताहिक-पत्र "आर्यसन्देश" के ग्राहक बनिये और दूसरों को बनाइये। साथ ही वर्ष में अनेको सग्रहणीय विशेषाक नि शुल्क प्राप्त कीजिये।

वार्षिक शुल्क मात्र २५ रुपये तथा आजीवन शुल्क मात्र २५० रुपये।

आर्यावर्त्त फिर से बनाना है

—राजेन्द्र 'नटखट'

जहाँ जिधर देखो, उधर
अन्धकार छाया है।
कहीं दण्ड चक्र पूजन
कहीं कुआँ पूजन
हो रहा है यहाँ
बिल्व बेल का पूजन।
गाँवों और शहरों में
माता के नाम पर
चौराहे तक पूजे जा रहे,
जन्म देने वाले
मात पिता कष्ट पा रहे।
तिराहे चौराहे पर
पोथी लिये बैठे ज्योतिषी
अन्धविश्वास फैला
अन्धकार बढ़ा रहे,
इसी सहारे खा रहे।
राष्ट्र के दिल पर
मता चढ़ रही है सूजन
ऐसा हो रहा है पूजन।
तुलसी, पीपल केले की
किसी रेले-मेले झमेले को
अच्छा है चर्चा न करो,
चर्चा बढ़ जाएगा।
दो टूक निष्कर्ष है
शिक्षा के अभाव में
हो रहा अपकर्ष है।
उसी का यह कुफल है
हर क्षेत्र में आज
अन्धकार छाया है,
अज्ञान के समर्थकों ने
अन्धकार के पोषकों ने
इसे मिल कर बढ़ाया है।
दयानन्द के सैनिको!
जागो!
उठो!!
कर्तव्य का पालन कर
कुफल को त्याग कर,
आर्यावर्त्त
फिर से बनाना है।

(पृष्ठ ४ का शेष)

महर्षि के तीन संकल्प...

सत्संकल्प लिये थे, उन्हें उन्होंने पूरा भी कर के दिखाया। यही उनके चरित्र की विशेषता है। प्राय लोग अपने जीवन में शुभसंकल्प लेते ही नहीं और यदि ले भी लेते हैं तो उन्हें पूरा नहीं करते। उन्हें पूरा तो कोई ऋषि सरीखा महामानव ही कर पाता है। महर्षि का सम्पूर्ण जीवन इस प्रकार का था कि जिसमें प्रश्न भी थे और उनके उत्तर भी। ऐसे महामानव संसार में कभी कभी ही आया करते हैं।

(पृष्ठ ५ से आगे)

भगवान् राम...

महापुरुषों की जन्मतिथियाँ और स्मारकों को शिक्षाप्रद प्रकारों से मनायें तथा सर्वसाधारण के लिए पथ प्रदर्शक बनें। आज के दिन मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र के चरित्र के अध्ययन वा स्वाध्याय के लिए रामायण की कथा को प्रचारित करना चाहिए। यज्ञ और दान का शुभानुष्ठान होना चाहिए और अपने पूर्वपुरुषों के पदचिह्नों पर चलते हुए धर्म के तीनों स्कन्ध, अध्ययन और दान के विशेष आचरण में ही ऐसे शुभ दिनों को बिताना चाहिए जिस से कि हम अपनी उन्नति करते हुए अन्यों के उद्धार के हेतु बन सकें।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Post in N D P S O on 6 7-4 89 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० सं० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३९

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम

एव

प० रामचन्द्र देहलवी शास्त्रार्थ महारथी

के जन्मदिवस पर

आर्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली

मे शुक्रवार दिनांक १४ अप्रैल १९८९ को प्रात ७ ३० बजे से विशेष यज्ञ भजनोपदेश, एव मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम तथा स्व० प० रामचन्द्र देहलवी शास्त्रार्थ महारथी के प्रेरणास्पद जीवन वृत्त पर विशेष व्याख्यान होंगे।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी०ए०वी० संस्थाओ की ओर से

महात्मा हंसराज दिवस

रविवार दिनांक १६ अप्रैल १९८९ को प्रात ९ बजे

तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम

नई दिल्ली में मनाया जायेगा।
समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध विधिवेत्ता

डा० एल० एम० सिघवी

करेंगे। इस अवसर पर केन्द्रीय मन्त्री, आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् सन्यासी एव नेतागण महात्मा हंसराज जी को श्रद्धा सुमन अर्पित करेंगे।

प्रवर —वैशाख २०४६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस, गली नं०१७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ५२ : अंक २२ | रविवार १६ अप्रैल १९८९ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८९ | चैत्र २०४६ | दयानन्दाब्द—१६४
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० डालर, ३० पौंड

हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वारा आयोजित

"स्वामी दयानन्द की हिन्दी सेवा" संगोष्ठी सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती की स्तुत्य हिन्दी सेवा

नई दिल्ली, ६ अप्रैल।

सुप्रसिद्ध समालोचक, साहित्यकार एवम् दिल्ली विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो० विजयेन्द्र स्नातक जो कि अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि महर्षि दयानन्द की मातृभाषा गुजराती थी और वे संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे परन्तु बंगाल के केशवचन्द्र सेन के परामर्श से उन्होंने जब हिन्दी सीखना आरम्भ किया तो उनकी आयु लगभग ४५ वर्ष की थी। स्वामी जी ने अनेक ग्रन्थ हिन्दी में लिखे हैं, जिनमें अमर ग्रंथ सत्यार्थ-प्रकाश प्रमुख है। स्वामी जी हिन्दी को राष्ट्रीय एकता का मूलाधार मानते थे। व्यवहार भानु स्वामी जी की लिखित पुस्तक के उदाहरण देते हुए प्रो० विजयेन्द्र स्नातक ने बताया कि स्वामी जी जनसम्पर्क व लोकभाषा हिन्दी के प्रचार व प्रसार के लिए सरल व सुबोध हिंदी का प्रयोग करते थे।

प्रो० विजयेन्द्र स्नातक ने आगे कहा कि इंगलैंड से पिंकाट महोदय ने एक पत्र में लिखा था कि स्वामी दयानन्द द्वारा प्रयोग में लाई गई हिन्दी को मैं हिन्दी भाषा का नमूना मानता हूं और उन्होंने स्वामी जी की बहुत प्रशंसा की थी। स्वामी जी ने हंटर कमिशन को अनेक ज्ञापन जनता से भिजवाये, जिसमें हिन्दी भाषा का प्रश्न उठाया गया था। प्रो० स्नातक जी ने महर्षि द्वारा लिखित हिन्दी में आत्मकथा के विषय में कहा कि वह हिन्दी भाषा में लिखा इस प्रकार का पहला ग्रंथ है। स्नातक जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने हिन्दी की जो सेवा की है, उसका हिन्दी इतिहासकारों ने पूरी तरह मूल्यांकन नहीं किया है और उन्हें वह स्थान नहीं मिला है जो मिलना चाहिए था।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि सन् १८७२ में श्री केशवचन्द्र की सलाह के बाद स्वामी जी ने सबसे पहले हिन्दी भाषा में भाषण दिया था, क्योंकि स्वामी जी सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने के नियम में पूरी तरह विश्वास करते थे। स्वामी दयानन्द हिन्दी को लोकभाषा मानते थे और वेदों के अनुसार अपने विचारों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए स्वामी दयानन्द ने भारत में जगह-जगह घूमकर हिन्दी भाषा की महत्त्वपूर्ण सेवा की है। स्वामी आनन्द बोध ने कहा कि महर्षि दयानन्द का कथन था कि मेरी आंखें वह दिन देखना चाहती हैं, जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक और अटक से कटक तक सारे भारत

(शेष पृष्ठ ५ पर)

भारतीय-संस्कृति के पोषक, वेदिक-विद्वान्, सुप्रसिद्ध उपन्यासकार

वैद्य गुरुदत्त का निधन

नई दिल्ली, ८ मार्च। हिन्दु-राष्ट्रवाद पर आधारित विचार-धारा के प्रवर्तक, भारतीय संस्कृति के प्रबल पोषक, वैदिक साहित्य के मर्मज्ञ, सुप्रसिद्ध उपन्यासकार और स्वतन्त्रता सेनानी वैद्य गुरुदत्त का आज मध्याह्न निधन हो गया।

श्री वैद्य गुरुदत्त ९५ वर्ष के थे। उनके परिवार में दो पुत्र और एक पुत्री हैं। श्री गुरुदत्त को परसों दिल का जबरदस्त दौरा पड़ा था और वे तभी से अचेत थे। घर पर ही उनका इलाज चल रहा था। आज दिन में करीब १२-३० बजे उन्हें कुछ देर के लिए होश आया और उन्होंने वेद-मंत्र के साथ अपनी अंतिम सांस ली—"हे प्रभु सभी को वह बुद्धि दे, जो हमारे महापुरुषों ने पाई थी।"

श्री गुरुदत्त का जन्म १८९४ में लाहौर के एक मध्यमवर्गीय आर्य-समाजी परिवार में हुआ था। उनकी शिक्षा डी० ए० वी० स्कूल लाहौर में हुई और गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से ही एम० एस० सी० पास की। बाद में लाहौर के डी० ए० वी० स्कूल में अध्यापक हो गये। उसी दौरान अमर शहीद सरदार भगत सिंह भी उनके छात्र रहे थे।

स्वतन्त्रता आन्दोलन और आर्य समाज में सक्रिय होने के कारण आपको नौकरी छोड़नी पड़ी। आप अमेठी के महाराज कुंवर रणञ्जय सिंह के निजी सचिव रहे। आप जनसंघ के संस्थापकों में से एक थे। दिल्ली प्रदेश जनसंघ के प्रथम अध्यक्ष रहे और स्व० डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी के प्रमुख सहयोगी रहे।

श्री गुरुदत्त को हिन्दी विश्व में सर्वाधिक पढ़े जाने वाले लेखकों में थे। उन्होंने लगभग २०० सामाजिक उपन्यासों की रचना की। आपकी लगभग ५० पुस्तकें वैदिक साहित्य तथा इतिहास विश्लेषण का मानदण्ड मानी जाती हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के सुधारवाद के वे आजीवन कट्टर-समर्थक रहे, यही कारण है कि उनके सभी उपन्यासों में कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में भारतीय संस्कृति का स्पर्श मिलता है।

उन्होंने अपने उपन्यासों में परिवार और समाज का, कुछ में राजनतिक कुचक्रों तो कुछ में सांस्कृतिक वैभव के पतन का सजीव चित्रण किया है। उपनिषद्, दर्शन, ब्रह्मसूत्र और गीता आदि विषयों पर भी उनकी अनेक रचनायें चर्चित रहीं।

मानवीय और राष्ट्रीय-मूल्यों के लिए समर्पित जीवन, जिसमें देश-भक्ति कूट कूट कर भरी हुई थी, की लेखन-यात्रा अपने अन्तिम दिनों में भी रुकी नहीं। आप इन दिनों अथर्ववेद पर लिख रहे थे। इतिहास पर लिखी गयी लगभग तीन हजार पृष्ठों की उनकी पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रही है।

श्रद्धांजलि—रविवार दिनांक ९ अप्रैल को आर्यसमाज दीवानहाल में आयोजित शोक सभा में श्री वैद्य गुरुदत्त के निधन को देश, समाज, हिन्दी साहित्य तथा सामाजिक-जीवन के लिए अपूरणीय क्षति बताया गया। श्री दत्त को वैदिक साहित्य का विख्यात विद्वान्, निर्भीक और सशक्त लेखक और विश्व का सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार बताया।

सम्पादक—सुखचन्द गुप्त

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव
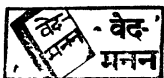
उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

न जातु काम काम कामानामुपभोगेन शाम्यति ।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते ॥

—मनु० २ ९४

इन्द्रियां नये बछेरों की भांति इधर उधर भागती हैं। उनको किसी वस्तु की इच्छा है। बछेरा पैदा होते ही इधर-उधर पैर मारने लगता है। घास और चारे को न पहचानता हुआ भी उनके भोग की इच्छा अपने अन्दर रखता है, किसी को बतलाने की आवश्यकता उसे नहीं होती। कुछ देर बाद वह स्वयमेव घास खाने लग जाता है। जिस प्रकार दूसरे घोड़ों को करते देखता है वैसे ही स्वयं करने लग जाता है, किन्तु क्या घास मिलने से और पेट भरकर खा लेने से उसको शान्ति होती है? एक खेत से दूसरे में, दूसरे से तीसरे में, इसी उधेड़-बुन में वह लगातार लगा रहता है। कारण क्या है? घास खाने या दूसरी खुराक पहुंचने से उसकी तृप्ति नहीं होती। परन्तु जहां भूख हो नहीं रहती, वहां इच्छा बहुत अधिक चमकती है और इसी प्रकार इधर-उधर फिरता हुआ बछेरा केवल चन्द दिनों तक मेहमान होता है। अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए पहाड़ और जंगल में वह कुछ भेद नहीं करता। कई बार ऐसा भी होता है कि वह बीहड़ रास्ते में ठोकरें खाकर मर जाता है। तब हम यह नहीं कह सकते हैं कि उसने कोई भले का काम किया। परन्तु इसके विपरीत यदि बछेरा किसी बुद्धिमान मनुष्य के वश में आ जाता है तो उसका स्वामी, जहां समय पर उसके लिए, केवल घास ही नहीं किन्तु दाने का भी प्रबन्ध कर देता है और उसके पीने के लिए स्वच्छ जल सामने रख देता है, वहां उसे काम योग्य बनाने का भी बड़ा प्रयत्न करता है और कुछ दिनों में उसे इस योग्य बना लेता है कि वह सवार को उसके इशारे पर हर जगह ले जा सके और संसार के कामों में एक उपयोगी भाग ले सके। यही अवस्था इन्द्रियों की है। विषयों का अनुभव करते हुए इन्द्रियां बेबस उनके अन्दर दौड़ती हैं। भाग रूप की ओर जाकर यदि उसी को अपना उद्देश्य समझ लेवें (और अविद्या के कारण होता भी ऐसा ही है) तो फिर उसका वहां से लौटना असम्भव है। आग पर जिस प्रकार घी छोड़ो, उसी प्रकार वह प्रज्वलित होती है। विषय-भोग भी घी आग में छोड़ने के तुल्य हैं। जितना मनुष्य विषयों को अधिक भोगेगा उतना ही उनके भोगने की इच्छा बढ़ती जाती है। मनुष्य अल्प है। जीवात्मा शरीर रूपी कारागार में कैद होने के कारण, अपनी शक्तियों को और अधिक सीमित कर बैठता है इसलिए उसके अन्दर भोग की शक्ति भी अनन्त नहीं हो सकती किन्तु भोग की इच्छा की कोई सीमा नहीं है। इस इच्छा का वश में रहना कठिन है। इच्छा को वश में करने के लिए उसे जड़ से काट देना ही आवश्यक है किन्तु यह कार्य बड़ा कठिन है।

विषय-भोग की यह इच्छा कैसे दूर हो? भोग से तो इच्छा दूर होती नहीं। फिर क्या मनुष्य भोग का सर्वथा त्याग कर दे? जो मनुष्य भोग से शान्ति की अभिलाषा करते हैं उनकी गणना इस समय संसार में अधिक है। सांसारिक उन्नति को ही जीवन का उद्देश्य समझने वाले इस समय अधिक हैं। सभ्यता का लक्षण ही यह किया जाता है कि जो आवश्यकताओं को बढ़ाकर उनके पूरा करने के लिए मनुष्यों में जद्दोजहद करावे। कहा जाता है कि इस संघर्ष का परिणाम ही इस समय की सभ्यता है। वृक्ष अपने फल से पहचाना जाता है। जिज्ञासु पूछता है कि क्या इस सभ्यता ने मनुष्यों के हृदय शान्त कर दिये हैं? क्या नरम से नरम गदेलों ने मनुष्यों के शरीरों को हर प्रकार के कष्ट सहन योग्य बना दिया है? क्या एक चुटकी से नगर के नगर नष्ट कर देने वाली भयानक पुड़िया और गुप्त से गुप्त समाचार पहुंचाने वाले बेतार के तार ने संसार के राजाओं को सुख की नींद का दान दे दिया है? अगर नहीं तो तुम्हारी सारी डींग व्यर्थ है।

सांसारिक उन्नति, जिस पहलू से अच्छी और आवश्यक है, उसी पहलू से उसे देखना चाहिए। विषय भोग के लिए कैसे ही आश्चर्य-जनक साधन क्यों न पैदा करो, उनसे इन्द्रियों को तृप्ति नहीं हो सकती। दूध के मक्खन को चाहे किसी रूप में बदलकर आग में डालो, आग कदाचित शान्त न होगी। क्या हलवे में मिलाकर, घी को आग में डालने से आग शान्त हो जाती है? आग को शान्त करने के लिए आवश्यक है कि घी का डालना बिल्कुल बन्द कर दिया जाए। किन्तु क्या घी डालना बिल्कुल बन्द कर देने से आग शान्त हो जायगी? हां, कुछ समय के लिए अवश्य शान्ति की ओर चलेगी। किन्तु यदि उसके क्षेत्र में शुष्क लकड़ियां आ जावेंगी तो वह फिर चमक उठेगी। इसी तरह भोगों से बिल्कुल पृथक हो जाने से भी चाहे कुछ समय के लिए इन्द्रियां शान्त-सी प्रतीत होगी हैं परन्तु वे सदा के लिए शान्त नहीं होतीं। जरा से सम्बन्ध से वह इच्छा फिर जाग उठती है और बेबस इन्द्रियों को उसके विषय के अन्दर फंसाकर जीवात्मा को फिर से अशान्त कर देती है। ऐसी अवस्था में यद्यपि इलाज अधूरा है तब भी मुकाबला रोग के अधिक कष्ट और अधूरे इलाज का है। इसलिए मनु जी महाराज यहां केवल इतना ही निश्चय करते हैं कि विषय-भोग के अन्दर फंसने की अपेक्षा, उनसे बचना श्रेष्ठ है क्योंकि भोग हमको दुःख के गढ़ में अधिक से अधिक नीचे की ओर ले जाता है। दूसरी बात यह है कि केवल त्याग को भयानक समझकर हमें वास्तविक शान्ति की खोज में जाना चाहिए। तो भी यह सिद्ध होता है कि भोग की अपेक्षा त्याग अधिक सुरक्षित है और मनुष्य को सीधे मार्ग पर ले चलने वाला है। साधन शून्य, साधारण मनुष्यों के लिए अच्छा है कि वे हर प्रकार के प्रलोभनों से पृथक् रहकर अनुभव शून्य कहाने का ताना बर्दाश्त करें, किन्तु बिना साधनों के इन्द्रियों के साथ जंग करने में तत्पर न हों।

प्रिय पाठकगण! जिन सरल हृदय बालकों और बालिकाओं ने अब तक इन्द्रियों की इच्छाओं के वेग की यथार्थता को नहीं समझा है जिनके हृदय अब तक सादगी की ओर केवल झुके ही हैं उनको परीक्षा में मत डालो। उनके कोमल मनों को हर प्रकार के विषयों की लुभावनी मूर्ति के दर्शनों से जुदा रखकर ऋषियों के कथनानुसार उन्हें साधन सम्पन्न बनाने का प्रयत्न करो ताकि वे इन्द्रियों को पूरे तौर पर काबू करके विषयों को अपना दास बनाने का बल प्राप्त करने के पश्चात संसार में प्रवृत्त होकर, न केवल आप ही ज्यादा बलिष्ठ बनें, बल्कि आजकल के गिरे हुए मित्रों को भी उठा सकें।

शब्दार्थ—(कामनामुपभोगेन) विषय-वासना की पूर्ति से (काम) इच्छा (जातु) कभी (न शाम्यति) शान्त नहीं होती अपितु वह इच्छा तो (हविषा) घी की आहुति से (कृष्णवर्त्मा इव) अग्नि की लपट की तरह (भूय एव) फिर फिर (अभिवर्धते) प्रबल हो जाती है।

संसद में प्रस्तुत बजट पर एक प्रतिक्रिया—

बजट

अब तो कम्प्यूटर लगाकर
पेश होता है बजट।
'घो' बहुत घाटा दिखाकर
पेश होता है बजट।
आज भी सबको बराबर
मानती सरकार है,
पर किसी के नाम पर अब
पेश होता है बजट।
कीमतें आगे बढ़ाकर
पेश होता है बजट।
पर बहुत राहत दिखाकर
पेश होता है बजट।
खोजने से भी गरीबों,
को मिलेगा कुछ नहीं,
पर मिटाने को गरीबी
पेश होता है बजट।
साल में एक बार केवल
पेश होता है बजट।
पर किसी का साल भर का
फेल होता है बजट।
आयकर, बोनस, बचत को,
है अभी सीमा नहीं,
इसलिए 'भूषण' का अब भी
फेल होता है बजट।

—ब्रजभूषण दुबे
३०, गोपालचन्द्र रोड,
कलकत्ता-७०००१४

ओ३म्
आर्य सन्देश

वैद्य गुरुदत्त

सुप्रसिद्ध उपन्यासकार वैद्य गुरुदत्त का ९५ वर्ष की आयु में शनिवार ८ अप्रैल १९८९ को निधन हो गया। उनका निधन सम्पूर्ण मानव जाति के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

वैद्य गुरुदत्त ने डी० ए० वी० स्कूल लाहौर से मैट्रिक पास करके, गवर्नमेण्ट कालेज लाहौर से बी० एस० सी० और बाद में एम० एस० सी० की परीक्षाएँ पास कीं। वे उसी कालेज में सहायक भी रहे। उसी कालेज में उन्होंने विज्ञान डिमान्स्ट्रेटर के पद पर कार्य किया। आर्यसमाज के वातावरण में पोषित वैद्य गुरुदत्त ज्यादा समय नौकरी न कर सके। जब भारत में असहयोग आन्दोलन चला तो वे भी नौकरी छोड़कर उसमें सम्मिलित हो गए। उन्होंने कुछ समय लाला लाजपत राय के नैशनल कालिज में प्रिंसिपल पद पर भी कार्य किया। यही समय था, जब वे लाला जी के सामीप्य में आते चले गए और देश में उस समय चल रही राष्ट्रीयता की लहर में वे कूद पड़े। साहसी निर्भीक गुरुदत्त सभी कठिनाइयों का सामना करते हुए स्वाधीनता प्राप्ति के संग्राम में आगे बढ़ते ही रहे।

वैद्य गुरुदत्त का जन्म १८९४ में लाहौर के एक मध्यम वर्गीय आर्यसमाजी परिवार में हुआ था। उनके पिता की इत्र की दुकान थी, जहाँ पर शरबत, अर्क और अन्य औषधियाँ बनती थीं। स्वामी दयानन्द के सुधारवाद के वे आजीवन समर्थक रहे। उन्होंने वेदों पर भी कार्य किया और वेदों के मन्त्रों के ऊपर आधारित उनके वक्तव्य समाज को एक नई दिशा प्रदान करने वाले हैं।

उन्होंने अपना पहला उपन्यास ४८ वर्ष की परिपक्व आयु में १९४२ में लिखा था—'स्वाधीनता के पथ पर।' यह उपन्यास ऐतिहासिक दस्तावेज के साथ साथ उस समय के स्वाधीनता सेनानियों के अन्तर्द्वन्द्व का बहुत ही सुन्दर चित्र प्रस्तुत करता है। उन्हें हिन्दी प्रेमी पाठकों का स्नेह मिला और कुछ उपन्यासों को जो लोकप्रियता मिली, वह किसी भी साहित्यकार के लिए ईर्ष्या का विषय हो सकती है। गुरुदत्त के सभी उपन्यासों में भारतीय धर्म और संस्कृति का विवेचन अवश्य ही मिलेगा। 'पूर्वाग्रह', 'वाम मार्ग', 'बनवासी', 'दो लौहपुरुष', 'बहती रेत' और 'जमाना बदल गया' जैसे उपन्यासों में उन्होंने भारतीय संस्कृति के विभिन्न आयामों को अपने कथित पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यासों में राजनैतिक कुचक्रों, पारिवारिक-सामाजिक सम्बन्धों एवं सांस्कृतिक वैभव के सजीव चित्र मिलते हैं। सामाजिक उपन्यासों में 'उन्मुक्त प्रेम', 'पाणिग्रहण', 'विकृत छाया', 'ममता', 'प्रवचना', 'पथभ्र' और 'स्नेह का मूल्य' प्रमुख हैं। संस्कृति से सम्बन्धित उपन्यासों में प्रमुख कृतियां हैं—'जमाना बदल गया', 'जीवन ज्वार', 'बात न पूछे कोय', 'स्खलन' आदि। गुरुदत्त ने ऐतिहासिक उपन्यास भी लिखे। इन उपन्यासों को लिखने का उनका एक ही उद्देश्य था कि भारतीय आर्य जाति को जो लम्बे समय तक दासता की शृंखलाओं में जकड़ी रही थी, उसे अपने प्राचीन गौरव एवं वैभव से परिचित कराया जा सके 'पुष्यमित्र', 'विक्रमादित्य सहसांक', 'सुमति पत्थर' 'पथ लता' और 'भग्न की बाधा' उनके प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास हैं।

उन्होंने जहाँ वेदों पर कार्य किया, वहाँ उन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता पर भी काम किया। गीता के ऊपर उनकी टीका राष्ट्र मानस को कर्म की ओर प्रेरित करके नव शक्ति, नव चेतना एवं नव ऊर्जा प्रदान करती है। यह भारतीयों में आत्म शक्ति के प्रति सचेत करती है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए उन्होंने श्री तीर्थराम आर्य और डा० धर्मपाल आर्य के अनुरोध पर एक पुस्तक लिखी थी 'धर्मवीर हकीकत राय'। इस पुस्तक के लिखने के बाद उनके चेहरे पर एक ऐसी आभा थी जिसका वर्णन सचमुच मुश्किल है। उत्सव समाप्त होने पर, संयोजक एवं कार्यकर्ता जैसी राहत महसूस करते हैं, बेटी विदा कर देने पर पिता जैसी शान्ति अनुभव करता है, दीक्षान्त के बाद आचार्य जैसे सन्तोष का अनुभव करता है, वर्षा के विघ्न से पहले किसान अपनी फसल को खलिहान से उठाकर घर में लाने पर जैसी शान्ति महसूस करता है, मुकद्दमा जीतने पर वकील और मुवक्किल के चेहरे पर जैसा संतोष होता है, वही संतोष गुरुदत्त जी के चेहरे पर उस दिन था। उनका कहना था कि लाहौर निवासी होने के कारण वीर हकीकत राय के ऊपर लिखकर मैं उऋण होना चाहता था पर पूरे जीवन की आपाधापी में इस श्रद्धा नमन से मैं सदैव भूला रहा। सामयिक विवशताएँ मुझे इस कार्य को स्थगित करने के लिए बाध्य करती रहीं। मैं अपनी इस अभिलाषा की अवहेलना पर लज्जित हूं। वह वीर हकीकत अपनी पुण्य पावन संस्कृति को जीवित रखने के लिए परम पुनीत बसन्त पंचमी के दिन मुगल शाही की तलवार से अपना सिर कटाकर संसार में एक आदर्श छोड़ गया। मैं प्रत्येक बसन्त पंचमी पर अपनी इस अभिलाषा का स्मरण करता था।

उन्हीं बाद के दिनों में कोई विशेष चाह नहीं थी। हमें उनके घर से अनुनय विनय के बाद ही प्रकाशनार्थ एक चित्र मिल सका था। हम प्रणाम करते हैं उस सामर्थ्यवान पुरुष 'वैद्य गुरुदत्त' को जिसने अपनी नूतन शैली में इतिहास को एक प्रेरणास्पद रूप में प्रस्तुत किया।

●

दिवंगत आर्य श्रेष्ठी

आर्यनेता गिरधर शर्मा 'सिद्ध'

पंडित गिरधर शर्मा सिद्ध' का विगत दिनों अलवर में निधन हो गया। सिद्ध जी एक महान समाज सुधारक के साथ-साथ राजस्थान में मुस्लिम लीग की राष्ट्रविरोधी गतिविधियों को असफल करने वाले तेजस्वी आर्य नेता थे। आर्यवीर दल तथा हिन्दू महासभा के नेता के रूप में उन्होंने अलगाववादी तत्वों का डटकर सामना कर राष्ट्रीय एकता का मार्ग प्रशस्त किया था। महर्षि दयानन्द, वीर सावरकर, भाई परमानन्द तथा महामना पंडित मदनमोहन मालवीय सिद्ध जी के प्रेरक रहे। वे जीवन के अन्तिम क्षणों तक अपने सिद्धान्तों पर अडिग रहे।

सिद्ध जी ने देखा कि स्वाधीनता से पूर्व अलवर में मेवों का बोलबाला है। अलवर में लगने वाले मेले में विधर्मी गुण्डों द्वारा महिलाओं के साथ छेड़छाड़ की घटना होती थी। सिद्ध जी ने आर्यवीर दल का गठन किया तथा उन्हें मेले में गुण्डों पर सतर्कता रखने का कार्य सौंपा, गुण्डे भागते नजर आए। तभी से सिद्ध जी की लोकप्रियता बढ़ती गयी। अलवर राज्य के प्रधानमन्त्री डा० नारायण भास्कर खरे हिन्दू महासभा के नेता थे। उन्होंने उपद्रवी मेवों की राजद्रोही गतिविधियों के उन्मूलन में सिद्ध जी की सहायता मांगी। वे सिद्ध जी के तेजस्वी व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित थे।

सिद्ध जी हिन्दू महासभा के राजस्थान प्रान्त के अध्यक्ष रहे। अ० भा० कार्यकारिणी के सदस्य रहे। वे वीर सावरकर जी तथा भाई परमानन्द जी के निकट सम्पर्क में आए। गोहत्या बन्दी, हिन्दी के प्रचार, हिन्दू संगठन जैसे कार्यों में वे आजीवन सक्रिय रहे।

महात्मा गांधी की हत्या के सिलसिले में उन्हें गिरफ्तार किया गया किन्तु वे अदालत से ससम्मान रिहा हो गये। बड़ी से बड़ी यातनाएं भी उन्हें अपने पथ से विचलित नहीं कर सकीं।

१० मई सन् १८५७ को दिल्ली में १८५७ के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की शताब्दी मनाई गई थी। क्रांतिकारियों के प्रेरणा स्रोत वीर

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सत्यार्थप्रकाश से—

अतिथि के लक्षण

—पुष्कर लाल आर्य
आर्य निवास, भिवानी (हरियाणा)

अतिथि उसको कहते हैं कि जिसकी कोई तिथि निश्चित न हो। अर्थात् अकस्मात् धार्मिक, तत्त्वोपदेशक, सब के उपकारार्थ सर्वत्र घूमने वाला पूर्ण विद्वान् परमयोगी, सन्यासी गृहस्थ के यहां आवे तो उसको प्रथम पाद्य अर्घ और आचमनीय तीन प्रकार का जल देकर पश्चात् आसन पर सत्कारपूर्वक बिठा कर खान-पान आदि उत्तमोत्तम पदार्थों से सेवा शुश्रूषा करके उनको प्रसन्न करे। पश्चात् सत्सग कर ज्ञान विज्ञान आदि जिनसे धर्म, अर्थ काम और मोक्ष प्राप्ति होवे ऐसे-ऐसे उपदेशों का श्रवण करे और अपनी चाल-चलन को भी उनके सदुपदेशानुसार रखे। समय पाके गृहस्थ और राजादि भी अतिथिवत् सत्कार करने योग्य हैं। परन्तु —

मनु (४।३०)

(पाखण्डी) अर्थात् वेदनिन्दक, वेद विरुद्ध आचरण करने हारा। (विकर्मस्थ) जो वेद विरुद्ध कर्म का कर्त्ता मिथ्याभाषणादि युक्त (वैडालवृत्ति) जैसे बिडाल छिप और स्थिर रह कर ताकता ताकता झपट से मूषे आदि प्राणियों को मार अपना पेट भरता है, ऐसे जनों का नाम वैडाल वृत्ति (शठ) अर्थात् हठी, दुराग्रही अभिमानी, आप जानें नहीं औरों का कहा मानें नहीं। (हैतुक) कुतर्की व्यर्थ बकने वाला जैसे कि आजकल के वेदान्ती कहते हैं। हम ब्रह्म और जगत् मिथ्या है। वेदादि शास्त्र और ईश्वर भी कल्पित हैं, इत्यादि गपोड़ा हांकने वाले (बकवृत्ति) जैसे बगुला एक पैर उठा ध्यानावस्थित के समान होकर झट मछली के प्राण हरके अपना स्वार्थ सिद्ध करता है वैसे आजकल के बैरागी और खाखी आदि हठी दुराग्रही वेद विरोधी हैं, ऐसों का सत्कार वाणीमात्र से भी न करना चाहिए। क्योंकि इनका सत्कार करने से ये वृद्धि को पाकर ससार का अधर्मयुक्त करते हैं। आप तो अवनति के काम करते ही हैं परन्तु साथ में सेवक को भी अविद्या रूपी महासागर में डुबा देते हैं।

इन पांच महायज्ञों का फल यह है कि ब्रह्मयज्ञ के करने से विद्या, शिक्षा, धर्म, सभ्यता आदि शुभ गुणों की वृद्धि।

अग्निहोत्र से वायु वृष्टि, जल की शुद्धि होकर वृष्टि द्वारा ससार को सुख प्राप्त होना अर्थात शुद्ध वायु का श्वासस्पर्श, खान-पान से आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ के धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का अनुष्ठान पूरा होना, इसीलिए इसको देवयज्ञ कहते हैं।

पितृयज्ञ से जब माता-पिता और ज्ञानी महात्माओं की सेवा करेगा, तब उसका ज्ञान बढ़ेगा। उससे तत्त्वातत्त्व का निर्णय कर तत्त्व को ग्रहण और अतत्त्व का त्याग करके सुखी रहेगा। दूसरा कृतज्ञता अर्थात् जैसी सेवा माता-पिता और आचार्य ने सन्तान और शिष्यों की हैं उसका बदला देना उचित ही है।

बलिवैश्वदेव का भी फल जो पूर्व कह आए वही है।

जब तक उत्तम अतिथि जगत् में नहीं होते तब तक उन्नति भी नहीं होती। उनके सब देशों में घूमने और तत्त्वोपदेश करने से पाखण्ड की वृद्धि नहीं होती और सर्वत्र गृहस्थों को सहज से तत्त्व विज्ञान की प्राप्ति होती रहती है और मनुष्यमात्र में एक ही धर्म स्थिर रहता है। बिना अतिथियों के सन्देहनिवृत्ति नहीं होती। सन्देहनिवृत्ति के बिना दृढ निश्चय भी नहीं होता। निश्चय के बिना सुख कहां।

मनु० (४।९२)

रात्रि के चौथे प्रहर अथवा चार घड़ी रात से उठे। आवश्यक कार्य करके धर्म और अर्थ, शरीर के रोगों का निदान और परमात्मा का ध्यान करे। कभी अधर्म का आचरण न करे। क्योंकि :—

(मनु० ४ १७२)

किया हुआ अधर्म निष्फल कभी नहीं होता परन्तु जिस समय अधर्म करता है, उसी समय फल भी नहीं होता, इसलिए अज्ञानी लोग अधर्म से नहीं डरते। तथापि निश्चय जानो कि अधर्माचरण धीरे-धीरे तुम्हारे सुख के मूलों को काटता चला जाता है। इस क्रम से —

मनु० (४।१७४)

जब अधर्मात्मा मनुष्य धर्म की मर्यादा छोड़ (जैसे तालाब के बांध को तोड जल चारों ओर फैल जाता है वैसे) मिथ्याभाषण, कपट, पाखण्ड अर्थात् रक्षा करने वाले वेदों का खण्डन और विश्वासघातादि कर्मों से पराए पदार्थों को लेकर प्रथम बढ़ता है। पश्चात धनादि ऐश्वर्य से खान-पान, वस्त्र, आभूषण, ऐश्वर्यादि स्थान, मान, प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है। अन्याय से शत्रुओं को भी जीतता है, पश्चात् शीघ्र नष्ट हो जाता है। जैसे जड़ काटा हुआ वृक्ष नष्ट हो जाता है वैसे अधर्मी नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। इसलिए —

मनु० (४।१७५)

वेदोक्त सत्य धर्म अर्थात् पक्षपातरहित होकर सत्य के ग्रहण और असत्य के परित्याग, न्यायरूप वेदोक्त धर्मादि, आर्य अर्थात् उत्तम पुरुषों के गुण कर्म स्वभाव और पवित्रता ही में सदा रमण करे। वाणी बाहु उदर आदि अंगों का सयम अर्थात् धर्म में चलाता हुआ धर्म से शिष्यों को शिक्षा किया करे।

मनु० (४।१७९-८९)

(ऋत्विक्) यज्ञ का करनेहारा (पुरोहित) सदा उत्तम चाल-चलन शिक्षा कारक (आचार्य) विद्या पढ़ानेहारा (मातुल) मामा (अतिथि) अर्थात् जिनकी कोई आने-जाने की निश्चित तिथि न हो। संश्रित अपने आश्रित (बाल) बालक, (वृद्ध) बुड्ढ (आतुर) पीड़ित (वैद्य) आयुर्वेद का ज्ञाता, स्वगोत्र वा स्ववर्गस्थ सम्बन्धी श्वशुर आदि (बान्धव) मित्र (१) (माता) माता (पिता) पिता (जामि) बहिन (भ्राता) भाई (पुत्र) पुत्र (भार्या) स्त्री (दुहिता) पुत्री और (दासवर्ग) सेवक लोगों से विवाद अर्थात् विरुद्ध बखेड़ा कभी न करे।

मनु० (४।१९०)

(क) अतपा (ब्रह्मचर्य) सत्य भाषणादि तपरहित, दूसरा (अनधीयान) बिना पढ़ा हुआ, तीसरा (प्रतिग्रहरुचि) अत्यन्त धर्मार्थ दूसरों से दान लेने वाला, ये तीनों पत्थर की नौका से समुद्र में तैरने के समान अपने दुष्ट कर्मों के साथ ही दुःखसागर में डूबते हैं। वे तो डूबते ही हैं परन्तु दाताओं को भी साथ डुबा लेते हैं।

मनु० (४-१९३)

जो धर्म से प्राप्त हुए धन को उक्त तीनों को देता है वह दान दाता का नाश परजन्म में करता है।

मनु० (४-१९४)

जैसे पत्थर की नौका में बैठकर के जल में तैरने वाला डूब जाता है जैसे अज्ञानी दाता और अधोगति अर्थात् दुःख को प्राप्त करते हैं।

मनु० (४।१९५-१९६)

(धर्मध्वजी) धर्म कुछ भी न करे परन्तु धर्म के नाम से लोगों को ठगे। (सदालुब्ध) सर्वदा लोभ से युक्त (छाद्मिक) कपटी (लोकदम्भक) ससारी मनुष्यों के सामने अपनी बड़ाई के गपोड़े मारा करे। (हिंस्र) प्राणियों के घातक, अन्य से वैर बुद्धि रखने वाला (सर्वाभिसन्धक) सब अच्छे और बुरों से भी मेल रखे उसको वैडालव्रतिक अर्थात् बिडाले के समान धूर्त और नीच समझो। (अधोदृष्टि) कीर्ति के लिए नीचे दृष्टि रखे (नैष्कृतिक) ईर्ष्यक किसी ने उसका पैसा भर अपराध किया हो तो उसका बदला प्राण तक लेने को तत्पर रहे। (स्वार्थसाधन तत्पर) चाहे कपट, अधर्म, विश्वासघात क्यों न हो अपना प्रयोजन साधने में चतुर (शठ) चाहे अपनी बात झूठी क्यों न हो परन्तु हठ कभी न छोड़े (मिथ्याविनीत) झूठ-मूठ ऊपर से शील सतोष और साधुता दिखलावे उसको (बकवृत्ति) बगुले के समान नीच समझो। ऐसे-ऐसे लक्षणों वाले पाखण्डी होते हैं, उनका विश्वास या सेवा कभी न करे।

मनु० (४।२३८-२४०)
मनु० (४।२४१)

स्त्री और पुरुष को चाहिए कि जैसे पुत्तिका अर्थात् दीमक वल्मीक अर्थात् बाँबी को बनाती है वैसे सब भूतों को पीड़ा न देकर परलोक अर्थात् परजन्म के सुखार्थ धीरे-धीरे धर्म का सचय करे। (१) क्योंकि परलोक में न माता, न पिता, न पुत्र, न स्त्री, न ज्ञाति सहाय कर सकते हैं किन्तु एक धर्म ही सहायक होता है। (२) देखिए। अकेला ही जीव जन्म और मरण को प्राप्त होता है एक ही धर्म का फल सुख और अधर्म का दुःखमय फल उसको भोगता है। (३) यह भी समझ लो कि कुटुम्ब में एक पुरुष पाप करके पदार्थ लाता है और महाजन अर्थात् सब कुटुम्ब उसको भोगता है, भोगने वाले दोषभागी नहीं होते किन्तु अधर्म का

(शेष पृष्ठ ५ पर)

(पृष्ठ १ का शेष)

स्वामी दयानन्द की हिन्दी सेवा

की एक भाषा केवल हिन्दी ही हो।

स्वामी आनन्द बोध ने आगे कहा कि यदि सरकार ने लोक सेवा संघ आयोग द्वारा संचालित परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त कर हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं को नहीं अपनाया तो आर्य समाज को विवश होकर हैदराबाद, हिन्दी सत्याग्रह जैसा आन्दोलन आरम्भ करना पड़ेगा।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पूर्व केन्द्रीय मन्त्री एवम आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती एक युगपुरुष थे, जिन्होंने उस युग की समस्याओं को गहराई से समझा और धार्मिक, सामाजिक व राजनीतिक ज्वलन्त प्रश्नों समस्याओं के समाधान के लिए क्रान्तिकारी उपाय सुझाए। महर्षि ने मानव की एकता की बात की और उन्होंने हिन्दी के उत्थान के लिए बिगुल बजाया। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के लिए प्रतिष्ठित कराने के लिए जिन निर्माताओं का नाम आदर से लिया जाता है, उनमें स्वामी दयानन्द का नाम प्रमुख है। प्रो० शेरसिंह ने आगे कहा कि स्वामी दयानन्द के अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम गणित विज्ञान जैसे जटिल विषयों में उच्च स्तर तक शिक्षा के लिए हिन्दी भाषा को माध्यम के रूप में सब से पहले अपनाया गया था। साथ ही स्वामी जी ने स्वदेशी स्वभाषा आदि के बारे में लोगों को जागरूक होने की भावना थी। लोगों के मन में निकाला था। भारतीय संविधान के हिन्दी अनुवाद में भी आर्यसमाज के नेताओं का प्रमुख योगदान रहा है।

प्रो० शेरसिंह ने कहा कि इस पवित्र दिन हम सभी को जो महर्षि दयानन्द को अपना गुरु मानते हैं, उनको यह संकल्प लेना चाहिए कि हिन्दी के प्रचार प्रसार, व्यवहार एवम् उत्थान के लिए अपनी पूरी शक्ति लगाकर हम कार्य करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल आर्य ने इस अवसर पर अपने उदगार व्यक्त करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती सब से पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने वेदों का हिन्दी में अनुवाद किया। हिन्दी साहित्य की पत्र साहित्यविधा में भी स्वामी दयानन्द ने अद्वितीय योगदान दिया है। हिन्दी साहित्य में स्वामी दयानन्द ने जितने भी पत्र लिखे हैं उनसे पूर्व और न ही उनके बाद में किसी भी विद्वान् ने आज तक इतने पत्र लिखे हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती को हिन्दी को राजभाषा घोषित कराने की चिन्ता १८८२ में हण्टर कमीशन के सम्मुख उन्होंने अनेक प्रान्तों से मेमोरण्डम भिजवाए। उन्होंने कई पत्रों में बड़े विह्वल हृदय से कहा था कि यदि अब चूक गए तो फिर कभी मौका नहीं मिलेगा। डा० धर्मपाल ने प० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के एक भावपूर्ण लेख से उद्धरण देकर यह बताया कि स्वामी जी महाराज उस समय काशी में धूम्रकेतु की तरह आए थे, तथा उनके काशी आगमन से सभी पण्डितों की बोलती सून्न गयी थी। व बगलें झांकने लगे थे। उनका प्रज्ञा समुद्र पद तक हिल गया था। वे 'खसूचि' आकाश की ओर देखने वाले बन गए थे। डा० धर्मपाल ने उनकी आत्मकथा के कुछ अंश पढ़कर सुनाए तथा कहा कि उनकी शैली प्रांजल, प्रवाहपूर्ण और नैसर्गिक है।

प्रख्यात पत्रकार श्री क्षितीश वेदालंकार ने इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि १८५७ की क्रान्ति के बाद अंग्रेज भारत में अंग्रेजी स्कूलों व कालेजों का जाल बिछाकर एवम अंग्रेजी वेशभूषा का प्रचार कर जब ईसाइयत का साम्राज्य स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे। तो उस समय महर्षि दयानन्द ने स्वभाषा हिन्दी, स्व-संस्कृति, स्व-देश आदि का मूल मन्त्र देकर भारतीयों के मन में आत्म गौरव की भावना जागृत की थी। स्वामी दयानन्द हिन्दी खड़ी बोली के सर्वप्रथम लेखक थे और उनकी व्यवहार भानु पुस्तक में से "अंधेर नगरी चौपट राजा" को पढ़ कर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने उसका अपने साहित्य में उल्लेख किया है। स्वामी दयानन्द हिन्दी को राष्ट्रीय चेतना व एकता का आधार मानते थे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ 'संगीतायन" द्वारा 'वर दे वीणा वादिनी वर दे" से हुआ। कलाकारों ने सारे जग में सबसे निराला, अपना हिन्दुस्तान रे", देशभक्ति का गीत भी प्रस्तुत किया।

हिन्दी अकादमी दिल्ली के सचिव डा० नारायण दत्त पालीवाल ने अपने उदगार व्यक्त करते हुए कहा कि आज नव वर्ष का बड़ा पवित्र दिन है और इसी दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। डा० पालीवाल ने इस पावन अवसर पर अकादमी की ओर से सभी का अभिनन्दन किया एवं शुभ कामनाएं दीं। उन्होंने आगे कहा कि भारत में ऐसे ऐसे सन्त हुए हैं जिन्होंने पूरे देश को अपने विचारों द्वारा एक सूत्र में बांधे रखा और महर्षि दयानन्द भी ऐसी ही दिव्य विभूति थे, जिन्होंने हिन्दी की अद्वितीय सेवा की है।

☼

(पृष्ठ ५ से आगे)

अतिथि के लक्षण

कर्त्ता ही दोष का भागी होता है। (४) जब कोई किसी का सम्बन्धी मर जाता है उसको लकड़े मट्टी के ढेले के समान भूमि में छोड़कर पीठ दे बन्धु वर्ग विमुख होकर चले जाते हैं कोई उसके साथ जाने वाला नहीं होता, किंतु एक धर्म ही उसका संगी होता है।

☼

जादू वो जो सर चढ़कर बोले

दिवंगत महात्मा अमर स्वामी जी महाराज की तपस्या सफल हुई

—राजेश कुमार गुप्ता

पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज द्वारा संगृहीत लगभग एक सौ वर्षों पुराने शास्त्रार्थों का संग्रह जो 'निर्णय के तट पर' नाम से 'अमर स्वामी प्रकाशन विभाग १०५८ विवेकानन्द नगर गाजियाबाद" द्वारा तीन खण्डों में प्रकाशित हुआ था इस संग्रह को पूज्य स्वामी जी महाराज एवं उनके सहयोगी 'श्री लाजपत राय अग्रवाल' जी ने घोर तपस्या से तयार किया था। मुझे आपको यह बताते हुए महान् हर्ष हो रहा है कि इस महान् उपयोगी ग्रन्थ को 'केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय (शिक्षा विभाग) भारत सरकार द्वारा तथा हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वारा चयन कर लिया गया है।" जिस कार्य को आर्यसमाज के इन गत सौ वर्षों में कोई भी सभा या सोसायटी नहीं कर पायी उसे पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज अकेले ही कर गये। यह हमारी अत्यन्त उपयोगी अप्राप्य सामग्री जो लुप्त हो गई थी, उसे 'श्री लाजपत राय जी अग्रवाल' के माध्यम से प्रकाश में लाने का यह प्रयास पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज का एक महान् प्रयास था। जिसकी उपयोगिता आज सरकार ने भी स्वीकार की है। अब अन्य शेष सरकारी व गैर सरकारी विभागों के लिए भी श्री लाजपत राय अग्रवाल जी प्रयासरत हैं कि इस ग्रन्थ को मान्यता सार्वजनिक रूप से हो जावे। इनका यह प्रयास भी कम सराहनीय नहीं है। क्योंकि इस प्रकाशन को यह किसी विशेष लाभ की दृष्टि से नहीं चला रहे हैं, अपितु पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज की प्रेरणा स्वरूप ही इसका संचालन यह सुचारु रूप से कर रहे हैं। इस पुण्य कार्य में हम सभी आर्य भाइयों को सहयोग देना चाहिए।

कोई विपक्षी किसी बात को मान्यता दे यह कम गौरव की बात नहीं है। इस अद्भुत ग्रन्थ का चौथा खण्ड भी छप रहा है, ये सभी खण्ड अपने आप में एक से बढ़कर एक हैं। प्रत्येक पुस्तकालय में इस ग्रन्थ का सेट होना अनिवार्य है। मेरे विचारों में भी परिवर्तन लाने वाला यही अद्भुत ग्रन्थ है। जिसकी मैं जितनी प्रशंसा करूं उतनी ही थोड़ी होगी। जबकि इस ग्रन्थ की प्रशंसा "दैनिक पंजाब केसरी" के २५ जनवरी वाले अंक में भी छपी है।

—१७, देहली गेट, गाजियाबाद

आर्य जगत के समाचार

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर

ग्रामीण आर्य महिला सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में आर्य कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर का वार्षिकोत्सव श्रीमती गायत्री देवी भारद्वाज की अध्यक्षता में धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। वार्षिकोत्सव के अवसर पर छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। विदुषी बहनों ने छात्राओं का मार्ग दर्शन किया तथा उन्हें अपना आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर दानी महानुभावों ने गुरुकुल को भरपूर दानराशि प्रदान की। श्रीमती भारद्वाज ने गुरुकुल की छात्राओं, आचार्या एवं अध्यापिकाओं का धन्यवाद किया और अपनी ओर से भरपूर दानराशि गुरुकुल को प्रदान की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने भी अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

बोधोत्सव एवं सीताष्टमी

ऋषि बोधोत्सव एवं सीताष्टमी का पुनीत पर्व स्त्री आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश भाग-२ के सौजन्य से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रातः यज्ञ का आयोजन बहन शान्ति देवी अग्निहोत्री, सुशीला आनन्द और कृष्णा चहेजा की ओर से किया गया। तत्पश्चात् ध्वजारोहण श्रीमती आशा बत्रा जी द्वारा किया गया। ध्वजगीत समाज की बहनों द्वारा गाया गया। इसके पश्चात 'महिला सम्मेलन' श्रीमती सुशीला सूरी की अध्यक्षता में रखा गया। इस अवसर पर श्रीमती उषा शास्त्री, डा० शशि प्रभा कुमार, शकुन्तला दीक्षित, प्रमशील और शकुन्तला आर्या ने महर्षि के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा सीताष्टमी पर्व का महत्त्व उपस्थित बहनों को बताया। वैदिक मिशनरी बहिनों का अभिनन्दन तथा साहित्य वितरण श्रीमती सरला मेहता, प्रधाना, प्रान्तीय आर्य महिला सभा के द्वारा हुआ। कार्यक्रम की समाप्ति पर महिला सभा की महामन्त्रिणी श्रीमती प्रकाश आर्या ने उपस्थित बहनों का सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

वार्षिक चुनाव सम्पन्न—

आर्यसमाज गोसपुरा नं० १

आर्यसमाज गोसपुरा नं० १, ग्वालियर का वार्षिक अधिवेशन दिनांक २३ मार्च १९८९ को सम्पन्न हुआ जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए—

प्रधान श्री जे०पी० गुप्ता
उपप्रधान मा० किशनसिंह चाहर
श्री हरिपाल सिंह आर्य
मन्त्री श्री दीपचन्द आर्य
उपमन्त्री : श्रीकृष्ण आर्य
अवध शंकर ओझा
कोषाध्यक्ष गोपाल सिंह वर्मा
पुस्तकालयाध्यक्ष रामनरेश कुशवाहा

आर्यसमाज सुभद्रा कालोनी

आर्यसमाज सुभद्रा कालोनी, सराय रोहिल्ला दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन दिनांक १९ मार्च १९८९ को सम्पन्न हुआ, जिस में निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए—

प्रधान श्री दसौन्धी राम
उपप्रधान सूर्य प्रकाश
उत्तम चन्द
मन्त्री सुशील कुमार
उपमन्त्री राजकुमार
पीताम्बर आर्य
कोषाध्यक्ष ज्ञानचन्द आर्य

आर्यसमाज गोविन्दपुरी

आर्यसमाज गोविन्दपुरी, नई दिल्ली-१९ का वार्षिक अधिवेशन दिनांक १९ मार्च ८९ को सम्पन्न हुआ, जिसमें निम्नलिखित अधिकारी निर्वाचित हुए—

प्रधान : श्री कृष्णलाल खन्ना
उपप्रधान राजकुमार सेठ
रामदुलारे मिश्र
मन्त्री धर्मपाल
कोषाध्यक्ष गंगा शरण शर्मा

आर्यसमाज धार (म०प्र०)

आगामी वर्ष के लिए, आर्यसमाज धार, म० प्र० का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान श्री शरदचन्द्र सुगन्धि
उपप्रधान : गजानन्द शर्मा
मन्त्री बालकृष्ण चतुर्वेदी

नवम वार्षिकोत्सव—

आर्यसमाज सी-ब्लाक जनकपुरी

आर्यसमाज सी-ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली-५८ अपना नवम वार्षिकोत्सव बड़े समारोह पूर्वक दिनांक ९ अप्रैल से १६ अप्रैल ८९ तक आयोजित कर रही है। समारोह में ऋग्वेद पारायण यज्ञ, वेद-प्रवचन खेल-प्रतियोगिताएँ भाषण-प्रतियोगिताएँ, आर्य बाल सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन, तथा धर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया है। सम्मेलनों में आर्य जगत् के विद्वान्, सन्यासी, नेता तथा कार्यकर्ता भाग लेंगे।

नवीन आर्यसमाजों का गठन

खण्डवा। आर्यसमाज खण्डवा के उत्साही कार्यकर्ताओं ने पिछले दिनों आर्यसमाज प्रचार अभियान समिति के नेतृत्व में ग्राम-ग्राम में घूमकर जहाँ ईसाई मिशनरियों के प्रचार कार्य को रोका, वहाँ अनेक ग्रामों में नवीन आर्यसमाजों की स्थापना कर आर्यसमाज के कार्य को स्थायी आधार प्रदान किया। निम्न स्थानों पर आर्यसमाज स्थापित कर पदाधिकारियों की नियुक्ति की—

ग्राम पटाजन मे आर्यसमाज

प्रधान श्री सूबेदार सिंह
मन्त्री शंकर लाल
कार्यकारिणी विजयसिंह, मनोहर लाल, अमृत लाल

ग्राम रोशनी मे आर्यसमाज

प्रधान श्री मोती राम पटेल
मन्त्री भागीरथ प्रसाद डोड
कार्यकारिणी : रामनारायण, सीताराम पटेल, गोंडा पटेल

ग्राम आवल्या मे आर्यसमाज

प्रधान श्री बाबू लाल व्यास
मन्त्री मदन लाल सेन
कार्यकारिणी श्यामलाल पटेल, काल्या पटेल, विश्राम भाई, मोती राम भाई

यजुर्वेद पारायण यज्ञ—

आर्यसमाज सदर बाजार, दिल्ली

आर्यसमाज सदर बाजार, दिल्ली अपनी शताब्दी समारोहों के सदर्भ में आगामी १६ अप्रैल से २१ अप्रैल १९८९ तक प्रतिदिन प्रातः ६-३० से ८-३० बजे "यजुर्वेद पारायण महायज्ञ" आयोजित कर रहा है।

यज्ञ का कार्य हीरा देवी धर्मशाला, डिप्टी गंज, सदर बाजार, दिल्ली में होगा। डा० प्रज्ञा देवी, आचार्या पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी यज्ञ की ब्रह्मा होंगी।

(पृष्ठ ३ का शेष)

आर्यनेता गिरधर शर्मा...

सावरकर जी उस समारोह में मुख्य अतिथि थे। उस समय मैं अपने पिता श्री स्व० भक्त रामशरण जी तथा श्री वि० म० विनोद (सम्पादक 'प्रभात' मेरठ) के साथ दिल्ली गया था। उस समय सावरकर जी ने हिन्दू महासभा के कार्यकर्ताओं को अपनी ओर से जलपान पर बुलाया था। उन्होंने जब हमारे सामने सिद्ध जी को "अलवर का सिंह कहा" तो हमें पता चला कि सावरकर जी जैसी विभूति भी उनसे कितना स्नेह करते थे।

सिद्ध जी महान् गो-भक्त स्वामी रामचन्द्र वीर महाराज तथा उनके उत्तराधिकारी आचार्य श्री धर्मेन्दु जी के प्रति भक्ति भावना रखते थे। सिद्ध जी ने मुझसे कहा था—"वीर जी महाराज ने हिन्दू जागरण के क्षेत्र में रचनात्मक कार्य किया है।

सिद्ध जी जैसे सिद्धान्त निष्ठ व्यक्ति विरले ही होते हैं। वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा के लिए सतत संघर्षशील इस व्यक्तित्व के अवसान पर हार्दिक श्रद्धांजलि।

—शिवकुमार गोयल

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on 13, 14-4-89 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७२१ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३९

जब तक मेरे शरीर में रक्त की एक बूंद भी शेष है, तब तक मैं आर्यसमाज की एक सेवक की भांति सेवा करता रहूंगा : स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

नई दिल्ली, ८ अप्रैल, दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में आर्यसमाज का ११५वां आर्यसमाज स्थापना दिवस आज सप्रू हाउस सभागार में समारोह पूर्वक मनाया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि चाहे हिन्दी का सवाल हो अथवा देश की आजादी का प्रश्न, या नारी उद्धार की बात हो, अथवा अछूतों के कल्याण की समस्या, आर्यसमाज ने सदैव आगे बढ़कर नि:स्वार्थ भाव से काम किया है। परन्तु खेद की बात है कि आज कुछ शक्तियां आर्यसमाज को तोड़ने के लिए प्रयासशील हैं। उन्होंने करतल ध्वनि के बीच घोषणा की कि जब तक मेरे शरीर में रक्त की एक बूंद भी शेष है तब तक मैं आर्यसमाज की एक सेवक की भांति सेवा करता रहूंगा। स्वामी जी ने आगे कहा कि यदि सरकार नई शिक्षा नीति में संस्कृत को उचित स्थान नहीं देती तो आर्यसमाज को विवश होकर इसके लिए संघर्ष करना पड़ेगा। स्वामी आनन्द बोध जी ने आर्यजनों को कहा कि आर्यसमाज की स्थापना के इस शुभ अवसर पर उन्हें आत्मचिन्तन करना चाहिए कि वे आर्यसमाज के काम को किस प्रकार आगे बढ़ा सकते हैं।

पूर्व सांसद स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि महर्षि दयानन्द ने सबसे पहले स्वराज्य का नारा दिया था और कहा था कि अपना राज्य सबसे उत्तम होता है और विदेशी राजा चाहे कितना भी अच्छा हो, उसे हटाने का सदा प्रयत्न करना चाहिए।

पश्चात [illegible] वेदालंकार ने [illegible] उद्गार व्यक्त [illegible] कि आर्यजनों में महर्षि [illegible] के मिशन को पूरा करने के लिए वैसी प्रकार की तड़प होनी चाहिए जैसी स्वामी श्रद्धानन्द, पं० लेखराम जैसे स्वामी दयानन्द के अनुयायियों में थी और आजादी से पूर्व थी। इस अवसर पर स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती एवं प० चिन्तामणि ने भी विचार व्यक्त किये। स्वामी जी ने उपस्थित आर्यजनों के सम्मुख आर्यसमाज के भावी कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की।

समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० [illegible] आर्य ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार, वैदिक साहित्य आदि प्रदान कर सम्मानित किया। स्वामी रामेश्वरानन्द जी ने प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव जी को निष्ठापूर्ण सेवाओं के लिए शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया। साथ ही समारोह में मारीशस से पधारे आर्य महानुभाव श्री रामदत्त राधाकृष्ण जी का पुष्पमालाओं द्वारा अभिनन्दन किया गया।

सेवा में—

श्री पुस्तकाध्यक्ष जी, अध्यक्ष,
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार-(३०४०)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, [illegible], दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७२१

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

वर्ष १२ । अंक २४ | रविवार २३ अप्रैल १९८९ | वैशाख कृ० २ सम्वत् २०४६ विक्रमी | दयानन्दाब्द—१६४ | सृष्टि संवत १९७२९४९०८९
मूल्य : एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश मे ५० पौंड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम का जीवन
जन-जन के लिए प्रेरणादायक

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

दिल्ली, १४ अप्रैल । मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम की पावन यशोगाथा हमारी राष्ट्रीय चेतना और भारतीय-संस्कृति निष्ठा की प्रेरणा का केन्द्र बनी हुई है। भगवान् राम जो स्वरूप से चन्द्रमा के समान शोभन हैं। बल वीर्य सम्पन्न, महातेजस्वी, सर्वसुलक्षण युक्त हैं, स्वभाव से सौम्य, सुसंस्कृत तथा महात्मा हैं। वह बड़े ही उदार, सहनशील, क्षमावान् आर्य हैं। भगवान् राम सन्ध्या, उपासना आदि नित्य कर्म बड़ी श्रद्धा से किया करते थे। और नित्य प्रातः गुरुजनों का सम्मान किया करते थे। माता-पिता के वचनों की पालना करने वाले विश्व के इतिहास में उनके सदृश कहीं नहीं मिलेगा। लोकरंजन के लिए वह बड़ से बड़ा त्याग करने को सदैव उद्यत रहते थे। वे सर्वसमर्थ सत्ताधारी होकर भी अप्रमादी, अहंकारी तथा स्वेच्छाचारी नहीं बने। वेदादि शास्त्रों के ज्ञान से परिपक्व, बुद्धि में चतुर, अत्यन्त प्रभावशाली, मेधावी, देशकाल विज्ञाता तथा सर्वशास्त्र ज्ञाता थे। जिस दृष्टि से भी देखा जाये, राम एक आदर्श नेता, आदर्श पुरुष और उच्चकोटि के महात्मा दिखलाई देते हैं। भगवान् राम का आदर्श जीवन न केवल कोटि-कोटि हिन्दुओं के लिए प्रेरणाप्रद है, वरन् मानवमात्र के लिए प्रेरणाप्रद है। ये उद्गार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली द्वारा रामनवमी पर्व पर आयोजित भगवान् राम तथा प० रामचन्द्र देहलवी के जन्मदिवस पर व्यक्त किये।

श्री स्वामी जी ने आर्यजगत् के दिग्गज विद्वान् तार्किक शिरोमणि, शास्त्रार्थ महारथी स्व० प० रामचन्द्र जी देहलवी के महान् पाण्डित्य का भी स्मरण करते हुए उनके जीवन की अनेक घटनाओं की विस्तृत चर्चा की, तथा आर्यों को उनके पदचिह्नों पर चलने की प्ररणा की।

इस समारोह में आर्य विद्वान् प० प्रकाशचन्द जी शास्त्री प० यशपाल जी सुधांशु, श्री सूर्यदेव जी आदि ने भगवान् राम के आदर्शों तथा प० रामचन्द्र देहलवी के जीवन प्रसंगों की चर्चा की।

त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज जन्मदिवस सम्पन्न

नई दिल्ली, १६ अप्रैल। युगपुरुष महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने प्राचीन भारतीय संस्कृति, अध्यात्मवाद और आत्मसम्मान के प्रति भारतीयों में सबसे पहले जागृति पैदा की थी। पुनर्जागरण के अग्रदूत स्वामी दयानन्द की विचारधारा ने देश में जो बुनियादी काम किया था, उसे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने आगे बढ़ाया और देश आजाद हुआ। —ये उद्गार केन्द्रीय रक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त ने आज तालकटोरा इन्डोर स्टैडियम में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा डी० ए० वी० संस्थाओं द्वारा आयोजित 'महात्मा हंसराज जन्मदिवस" समारोह के अवसर पर व्यक्त किए।

श्री पन्त ने महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त महात्मा हंसराज के त्यागपूर्ण-तपस्वी जीवन और उनके द्वारा शुरू किए गए डी० ए० वी० आन्दोलन द्वारा शिक्षा के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान की सराहना करते हुए कहा कि शिक्षा ही राष्ट्र की प्रगति का मूलाधार है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति को अन्य एक व्यक्ति को साक्षर बनाने का संकल्प लेना चाहिए अन्यथा २१वीं सदी के विश्व में सर्वाधिकार निरक्षर भारत में ही होंगे।

समारोह के अध्यक्ष विख्यात विधिवेत्ता डा० लक्ष्मीमल सिंघवी ने संस्कृत को राष्ट्रीय एकता, स्मिता व गौरव का प्रतीक बताते हुए कहा कि संस्कृत किसी जाति, धर्म व वर्ग की भाषा नहीं है। उन्होंने संस्कृत के राष्ट्रीय महत्त्व की विस्तृत व्याख्या करते हुए भारत सरकार से संस्कृत के पठन-पाठन को शिक्षा-प्रणाली मे समुचित स्थान देने की पुरजोर अपील की।

इस अवसर पर स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, श्री रामचन्द्र 'विकल' सांसद, प० क्षितीश वेदालंकार प्रो० रतनसिंह आदि अनेक आर्य विद्वानों ने जनसमूह को सम्बोधित किया।

इसी अवसर पर डा० सिंघवी ने 'आर्य जगत' के विशेषांक "महात्मा हंसराज" का विमोचन किया तथा उन्हें स्व० डा० सत्यकेतु विद्यालंकार कृत 'आर्यसमाज का इतिहास" के सातों भाग भेंट किये गये।

समारोह का मुख्य आकर्षण डी० ए० वी० मॉडल स्कूल, शालीमार बाग, नई दिल्ली के छात्रों द्वारा प्रस्तुत "सत्य की खोज" का मनोहारी मचन था।

संस्कृत सब भाषाओं की जननी है।

सम्पादक—सूबचन्द गुप्त
प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

यच्चैतान् प्राप्नुयात् सर्वान्यश्चैतान् केवलास्त्यजेत् ।
प्रापणात् सर्वकामाना परित्यागो विशिष्यते ॥
तथैतानि न शक्यन्ते सनियन्तुमसेवया ।
विषयेषु प्रजुष्टानि यथा ज्ञानेन नित्यश ॥

—मनु० २।९५।९६

अपने पहले कथन का परिणाम बतलाकर, मनु भगवान् आगे चलते हैं। विषयो मे दिन-रात फँसे रहने से, उनका सर्वथा त्याग श्रेष्ठ है। क्यों ? इसलिए कि जहां विषयो में फँसा हुआ पुरुष दिन-रात नीचे की ओर चलता रहता है, वहां त्यागी कम से कम अपनी साधारण अवस्था पर तो स्थित रहता है, यह माना कि दोनों अवस्थाएँ भयानक हैं। त्यागी और भोगी, दोनों के दोनो, हर समय गिर सकते हैं, किन्तु भोगी तो गिरा हुआ ही है, वह उससे अधिक क्या गिरेगा ! एक गेंद को एक बार नीचे की ओर धकेल दो, वह किसी न किसी समय सबसे निचले तल पर पहुच जायेगी। हा, बीच में अगर और धक्के मिलते जावें तो अधिक तेजी के साथ आ गिरेगी। लेकिन, त्यागी की यह अवस्था अब तक नहीं है। सम्भव है उचित साधन आरम्भ हो जावें और वह भयानक अवस्था से बच जावे, किन्तु ऐसी अवस्था में इन्द्रियों को ज्यादा देर तक रखना खतरनाक है, त्याग भी बिना नींव के स्थिर नहीं रह सकता। जो इन्द्रिया एक बार भोगो मे फँस चुकी हों (जैसे कि निन्नानवें प्रतिशतक मनुष्यो की अवस्था है) उनके लिए सर्वथा त्याग असम्भव नहीं तो बडा कठिन है। इसलिए त्याग की अवस्था को दृढ करने के लिए आवश्यक है कि ज्ञान मनुष्य का सहारा हो। ज्ञान द्वारा एक-एक इन्द्रिय की फँसावट की वास्तविकता को जानकर उसके अपने विशेष विषय की ओर झुकने के कारणो को मालूम करना चाहिए जिस समय विषयो की असारता और तुच्छता प्रतीत होती है, तब मनुष्य विषयों की ओर झुकता ही नहीं है।

ससार की प्रत्येक बुराई मनुष्य को अपनी ओर, उसी समय तक खींचती है जब तक उसके घृणित रूप पर बनावटी सभ्यता का खोल चढा हुआ रहता है। बुद्धि से इस खोल को उतारकर, हरेक विषय को उसके यथार्थ रूप में देखना ही बुद्धि का वास्तविक उद्देश्य है। इस लिए बुद्धि का सारा बल, विषयों की वास्तविकता के ढूढने में लगाना चाहिए। इसी काम के लिए हमें इन्द्रियां और उनके गोलक प्रदान किये गये हैं। किन्तु क्या बुद्धि द्वारा केवल विषयो की वास्तविकता को जान लेने से हम सब सुरक्षित हो सकते हैं ? यही मजिल बडी नाजुक है। विषयों के असली स्वरूप को जानकर भी मनुष्य उसकी दासता से नहीं निकल सकता। आवश्यक है कि दिन-रात, हर पल, हर घडी विषयों का वास्तविक स्वरूप हमारे सामने रहे। इसलिए मनु महाराज सावधान करते हैं कि इन्द्रियों को जीतने के लिए आवश्यक है कि विषयों के यथार्थ रूप का ज्ञान सदा सब समय बना रहे। वह ज्ञान बिना साधनों के असम्भव है। इस समय ससार का बहुत बडा भाग साधन-हीन हो रहा है। इसलिए हम बडे से बडे ज्ञानियों को विषयों का शिकार हुआ देखते हैं। यही कारण है कि ज्ञानियों के गिरने की सर्वसाधारण चर्चा हमें प्रतिदिन मनुष्य समाज मे सुनाई देती है। वरना जो ज्ञानी हैं वे गिर कैसे सकते हैं ? केवल ज्ञान से ही मनुष्य ज्ञानी नही हो सकता बल्कि उस जानी हुई वस्तु को अपना लेने से मनुष्य ज्ञानी हो सकता है। जान लेने से केवल विद्वान् मनुष्य बुराइयों का शिकार हो सकता है। विद्या 'विद् ज्ञाने' धातु से निकला है, इसलिए केवल विद्वान्, विषयो में लिप्त होकर बरबाद ही हो सकता है। किन्तु आचरणशील देव, इस कमजोरी से मुक्त हो जाता है।

प्रिय पाठकगण ! जब तक एक-एक विषय की घृणित शक्ल को सभ्यता के खोल से निकालकर आप देख नहीं सकते, तब तक आपके मन में कदाचित् घृणा उससे हो नहीं सकती। रूप को ऊपर के पर्दे में से निकालो तो बाकी क्या रहता है ? इसको मसाले से पृथक् करो तो उसके अन्दर फँसावट का सामान कौन-सा रह जाता है ? और फिर इन सब विषयों के भोग में फँसने का अन्तिम परिणाम क्या होता है ? विषयों की यथार्थता को केवल एक बार जान लेना पर्याप्त नहीं है। उनकी वास्तविकता का ज्ञान हर समय बना रहना चाहिए। ऐसा न ऐसा न हो कि तुम्हें बेखबर पाकर विषय फिर अपना काम कर जावें और तुम्हारी बरसों की कमाई का एक मिनट में नाश कर दें। शरीर में वह शक्ति नहीं है कि इनको वश में कर सके। यह शक्ति आत्मा के अन्दर ही है जिसका साधन बुद्धि है उसको दिन-रात मांजने का यत्न करो। बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध्यति—बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है, और फिर वह शुद्ध की हुई बुद्धि स्वय ज्ञान को शुद्ध अवस्था में जीवात्मा तक पहुचाती है। धन्य हैं वे पुरुष, जो यम-नियमादि साधनों से बुद्धि को मांजकर सत्य ज्ञान के अधिकारी बनते हैं और उसकी रक्षा में तत्पर, सांसारिक विषयों को जीतकर धर्म और परमार्थ के भागी बनते हैं। उनके लिए ससार में फिर कोई वस्तु अप्राप्य नहीं रहती। ससार उन्हें अपना दिखाई देता है और इसलिए वे तर्क-वितर्क और मोह के सागर से पार हो जाते हैं।

शब्दार्थ—(यत् च) जो (एतान् सर्वान्) इन सब विषयों को (प्राप्नुयात) प्राप्त करे, भोगे, (यत् च) और जो (एतान् केवलान्) केवल उन विषयों के (त्यजेत्) त्याग में प्रवृत्त रहे, इन दोनों में से (सर्वकामनां प्रापणात) सब इच्छाओं की पूर्ति से (परित्याग) कामनाओं का परित्याग ही (विशिष्यते) अधिक श्रेष्ठ है।

(एतानि प्रजुष्टानि) विषयों में फँसी हुई इन इन्द्रियों को (असेवया) विषय भोग से पृथक् रहकर (सनियन्तुम्) सयम में रखना (तथा न शक्यन्ते) इतना अधिक सम्भव नहीं है (यथा) जितना कि (नित्यशः ज्ञानेन) सतत ज्ञानपूर्वक सयम में रखने से।

●

आर्यसमाज बांकनेर, दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज बांकनेर, दिल्ली का ३८ वां वार्षिकोत्सव १ तथा २ अप्रैल ८१ को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

दोनों दिन प्रातः बृहद यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें सैकडों युवकों तथा ग्रामीणों ने उत्साह से भाग लिया। इस अवसर पर स्वामी अमृतानन्द सरस्वती तथा प० देवेन्द्र नाथ शास्त्री के आध्यात्मिक प्रवचन हुए।

इस अवसर पर "स्वामी दयानन्द सरस्वती" निबन्ध प्रतियोगिता, तथा "भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्यसमाज का योगदान"—भाषण-प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

खेलों के आयोजनों के लिए प्रसिद्ध इस समाज में, इस अवसर पर अनेक खेलों का आयोजन किया गया, जिनमें वालीबाल, कबड्डी तथा कुश्ती की प्रतियोगिताएं उल्लेखनीय रहीं। भारत केसरी पहलवान श्री सतपाल की अध्यक्षता में आयोजित "आर्य युवक सम्मेलन" में सभी विजेता खिलाडियों, विजयी छात्रों तथा बांकनेर के उदीयमान युवको को अनेकों पुरस्कारों तथा स्वर्णपदकों से सम्मानित किया गया।

इसी अवसर पर आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री मूलचन्द गौतम को उनकी अविस्मरणीय सेवाओं के लिए अभिनन्दित किया गया। आर्य विद्वान् डा० महावीर तथा मा० प्रभुदयाल (भूतपूर्व विधायक) ने आर्य समाज द्वारा किये गये समाज सुधारों की विस्तृत चर्चा करते हुए, आर्यजनों को और आगे बढ़कर कार्य करने की प्रेरणा दी।

●

ओ३म्
आर्य सन्देश

भगवान् राम की मर्यादा

आज यह प्रश्न उठता है कि क्या हम किसी मर्यादा में बंधे हैं, क्या हम शीलवान हैं, क्या हमारे अन्दर शक्ति है? उत्तर मिलता है कि कहीं कुछ गड़बड़ा गया है। फिर हम राम का स्मरण करते हैं। उस महापुरुष में मर्यादा थी, उसमें शील था, उसमें शक्ति थी। क्या हम उस राम जैसा बन सकते हैं? उस जैसा बनने के लिए उसका नाम तो लेना ही पड़ेगा और यदि हम उसका नाम लेते हैं, तो हम घोर साम्प्रदायिक बन जायेंगे। राम का नाम कैसा खतरनाक हो गया है। राम का नाम छोड़िए, हम धर्मनिरपेक्ष नहीं रहे। धर्मनिरपेक्ष रहने के लिए जरूरी है कि हम राम का नाम ही न लें, अयोध्या का नाम न लें, सरयू का नाम न लें, राम जन्मभूमि का नाम ही न लें।

पर क्या यह सम्भव है कि राम का नाम भुला दिया जाये। राम का नाम तो हर जगह छाया हुआ है। वास्तव में राम वही होता है जो हर जगह छाया रहे। राम का शाब्दिक अर्थ भी यही है—राम अर्थात् रमण करने वाला। जो सब जगह रमता है; वही राम है, जो सब में रमण करता है, वही राम है। जिसमें जीवन है वह राम है जिसमें जीवन नहीं है, वह 'मरा' हुआ है। 'मरा' से भी 'राम' तक पहुंचा जा सकता है। जीवन हीनता से भी जीवन्तता को पाया जा सकता है। जिसमें 'राम' नहीं है, वह भी 'राम' को पा सकता है। जिसमें 'राम' नहीं है अर्थात् मर्यादा, शील, शक्ति नहीं है, वे भी 'राम' को पा सकते हैं, अर्थात् मर्यादा, शील और शक्ति को पा सकते हैं।

राम का तो आज विरोध बहुत है। राम को अनेक महिला समितियाँ क्रूर तथा मानती हैं। वे उसे अपने युग का बर्बर पति मानती हैं। उसने सीता का त्याग किया था। वे चाहती हैं कि उस जीवों को फांसी दी जानी चाहिए थी। इसका अर्थ यह हुआ कि वे सामन्तीयता की पोषक हैं। पर अब कोई दूसरा अवसर आता है अर्थात् किसी दूसरे मत से सम्बन्ध होता है तो वही कहती हैं कि जनता ही सर्वोपरि शक्ति है। सामन्तीयता समाप्त होनी चाहिए। यहाँ पर वे धोबी के कहे अनुसार राम के काम को अच्छा मानने लगती हैं। शायद वे ही अपने विचारों में गड़बड़ा हो जाती हैं। उन्हें सती से भी चिढ़ है और सीता से भी।

प्रारम्भ से बात उठाई गई थी कि क्या आज राम की जरूरत है। यदि हम शक्ति, शील, मर्यादा चाहते हैं तो राम की जरूरत है और यदि नहीं चाहते तो हमें कोई जरूरत नहीं है। यदि हमें मानव बनना है तो 'राम' चाहिए, राम के गुण चाहिए, राम के अनुसार अपने आपको बनाने की भावना चाहिए। नवरात्रों में शक्ति की पूजा की जाती है। पर यदि हम शक्ति की साधना करें और राम को भूल जायें, तो सब गड़बड़ हो जायगा। शक्ति की साधना करते समय धर्म को सदा साथ रखें। हम अपने सार्वजनिक जीवन को मर्यादा में बांध दें, अपने जीवन को सात्विक उद्देश्यों से अनुप्राणित करें। निरंकुश शक्ति मिल गयी और धर्म छूट गया तो हमारा सब कुछ लुट गया।

इसलिए यही आवश्यक है कि उस महापुरुष राम के हम गुणों को धारण करें।

दिवंगत आर्य श्रेष्ठी

१९ अप्रैल जन्मदिवस पर—

महात्मा हंसराज

तपोनिष्ठ महात्मा हंसराज का जन्म १९ अप्रैल १८६४ को होशियारपुर के बैजवाड़ा नामक स्थान में हुआ था। छात्र जीवन में ही हंसराज ने स्कूल से घर तक प्रतिदिन नंगे पांव पैदल चलकर तप, त्याग व परिश्रम का अभ्यास कर लिया था। महात्मा हंसराज ने अपने बड़े भाई श्री मुलक राज द्वारा केवल चालीस रुपये प्रति मास की सहायता स्वीकार कर स्वयं माता, पत्नी, दो पुत्र व पुत्रियों के आठ सदस्यों के परिवार का सारी आयु आर्थिक विपन्नताओं में पालन पोषण कर सादगी व सफलता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। हंसराज जी ने डी० ए० वी० महाविद्यालय में २५ वर्षों तक अवैतनिक कार्य कर निःस्वार्थ सेवा की अद्वितीय मिसाल कायम की। वर्षों तक महाविद्यालय के प्रधान रहे और तत्पश्चात् आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान पद को सुशोभित किया।

आज भारत ही नहीं विदेशों में भी महात्मा हंसराज द्वारा स्थापित डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओं का जाल बिछा है जिन्होंने शहीदे आजम सरदार भगतसिंह सरीखी महान् विभूतियां पैदा की, जिन्होंने समाज, धर्म व जाति की अमूल्य सेवा की है। ऐसे महान् शिक्षा शास्त्री, त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज को आज भी समस्त आर्य जगत् में 'हंस-हंस के हंसराज ने तन, मन व धन लुटा दिया"—प्रेरक वचन के द्वारा बड़ी श्रद्धापूर्वक याद किया जाता है।

महात्मा हंसराज

—सत्यभूषण 'शान्त' वेदालंकार

हिमगिरि सम अति उज्ज्वल धवल और सागर सम गम्भीर।
पथ में सरसिज सम विचरे जग में निष्काम प्रवीर॥

हंसराज में हंस सदृश अति शुभ्र परम पावन जीवन।
ख्याति बढ़ी कण कण में छाया सुयश सभी के उर आंगन॥

तप पुंज अति दिव्य देह पाकर धरणी हो गई।
अद्भुत तेज अनुपम विद्या सेवाव्रती अग्रगण्या धन्य॥

सरल, सुभग अति सौम्य प्रकृति था अनुपमेय तव त्याग।
शिक्षा का था वरद हस्त, भारत के जागे भाग॥

जहां-जहां दुर्भिक्ष, दुःख दारुण छाया चहुं ओर।
वहाँ वहाँ अति सत्वर पहुंचे चपकर करुणा कोर॥

चकित रह गया विश्व तुम्हारा लखकर अनुपम त्याग।
ठोकर मारी धन वैभव को त्याग दिया सुख साज॥

डी० ए० वी० संस्था संचालक बिना शुल्क आचार्य।
दयानन्द के सच्चे अनुगामी पावन आचार्य॥

यश से सुरभित वसुधा - प्रांगण अति विश्रुत व्यक्तित्व।
"शान्त" महात्मा हंसराज ने, उन्नत किया भविष्य॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती की हिन्दी सेवा

—डा० धर्मपाल आर्य

[प्रस्तुत लेख आर्यसमाज स्थापना दिवस दिनांक ६ अप्रैल १९८९ को हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा आयोजित संगोष्ठी "स्वामी दयानन्द की हिन्दी सेवा" में डा० धर्मपाल आर्य द्वारा पढ़ गये निबन्ध का सार है—सम्पादक]

महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम केवल भारतवर्ष में ही नहीं, अपितु देश-देशान्तर में व्याप्त है। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में उन्होंने धार्मिक एवं सामाजिक सुधारों के साथ साथ राष्ट्रीय जागरण की शंख ध्वनि की थी। उन्होंने अपने युग की धारा को अच्छी तरह पहचाना था। वे जानते थे कि किसी भी देश की राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्रभाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। लार्ड मैकाले का दु:स्वप्न भारतवर्ष में पूर्ण हुआ। अब जो के पठन पाठन से शिक्षित भारत वासियों में एक बड़ी संख्या वेशभूषा और भाषा प्रयोग में अंग्रेज बन गई। इसमें सन्देह नहीं कि यदि स्वामी दयानन्द जैसा क्रान्तिकारी और मेधावी पुरुष, सामाजिक और धार्मिक अन्धविश्वासों में सुधार और समस्त देश में एक राष्ट्रभाषा के प्रचलन का आन्दोलन न करता तो देश की राष्ट्रीय जागृति न जाने कितना पिछड़ गयी होती। वास्तव में राष्ट्रभाषा हिन्दी के उत्थान में स्वामी दयानन्द का महत्त्वपूर्ण योगदान है। हिन्दी भाषा और साहित्य के उन्नयन के लिए महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायियों ने अथक परिश्रम एवं लगन और निष्ठा से कार्य किया है। इस लेख में केवल महर्षि दयानन्द सरस्वती के ही साहित्य और उनकी हिन्दी भाषा के प्रति व्यग्रता का विवरण दिया जा रहा है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित साहित्य सुविशाल एवं महत्त्वपूर्ण है। संस्कृत तथा हिन्दी (जिसे वे आर्य भाषा कहते थे)—दोनों भाषाओं को ही उन्होंने अपनी भावाभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। जिन ग्रन्थों को संस्कृत में लिखा, उन निहित विचारों को भी अधिकाधिक पाठकों तक पहुंचाने की दृष्टि से उनका हिन्दी भाषा में अनुवाद कराने की भी उन्होंने व्यवस्था की। उनका संस्कृत भाषा पर असाधारण असाधारण अधिकार था। संस्कृत में वे धारा प्रवाह बोलते और लिखते थे, परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं है कि स्वामी जी की वे रचनाएं जो मूलतः हिन्दी में लिखी गई उनमें किसी प्रकार की प्रभावोत्पादकता अथवा शैली की कोई कमी है। वास्तव में स्वामी जी का हिन्दी वाङ्मय भी विषय प्रतिपादन तथा शैली की दृष्टि से उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितने कि उनके संस्कृत ग्रन्थ।

अध्ययन सौकर्य की दृष्टि से महर्षि दयानन्द के साहित्य को हम पांच भागों में विभाजित कर सकते हैं।

१ बृहत् त्रयी—ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका
   सत्यार्थप्रकाश
   संस्कार विधि

२ ऋग्वेद तथा यजुर्वेद भाष्य

३ खण्डन मण्डन के ग्रन्थ—भागवत् खण्डनम् वेदविरुद्धमत खण्डन, शिक्षापत्री ध्वान्त निवारण, वेदान्ति ध्वान्त निवारण, चतुर्वेदविषय सूची, पंच महायज्ञविधि, भ्रमोच्छेदन, शास्त्रार्थ ग्रन्थ—काशी, हुगली, चांदपुर सत्यासत्य विवेक शास्त्रार्थ, बरेली कुछ अन्य शास्त्रार्थ विवरण।
   २४-९-१८७७ जालंधर में मौलवी अहमद हसन से शास्त्रार्थ

४ वेदाङ्ग प्रकाश तथा व्याकरण ग्रन्थ

५ स्फुट ग्रन्थ

अन्य ग्रन्थ—

वेदाङ्ग प्रकाश—संस्कृत व्याकरण का सरल, सुबोध, रीति से ज्ञान कराने की दृष्टि से स्वामी दयानन्द ने चौदह भागों में 'वेदाङ्ग प्रकाश' शीर्षक ग्रन्थमाला का प्रकाशन किया। इनमें प्रथम चार स्वामी जी ने स्वयं लिखे और बाद के दस प० युधिष्ठिर मीमांसक के अनुसार उन के निर्देशन में लिखे गए। सहवर्ती पंडित थे—भीमसेन, ज्वालादत्त तथा दिनेशराम।

संस्कृत वाक्य प्रबोध
   अष्टाध्यायी भाष्य
   आर्याभिविनय—भक्ति प्रतिपादक ग्रन्थ
   आर्योद्देश्यरत्नमाला
   व्यवहार भानु
   गोकरुणानिधि
   स्वामी दयानन्द की आत्मकथा
   उपदेशमंजरी

स्वामी दयानन्द के पत्र और विज्ञापन

स्वामी दयानन्द के अनुपलब्ध ग्रन्थ

१९२० वि०

□ सन्ध्या (आगरा प्रवासकाल)

□ अद्वैत मत खण्डन—
(काशी निवास काल)
१९२७ वि०

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने स्वसम्पादित 'कवि वचन सुधा' के दो अंकों में इस पुस्तक को प्रकाशित किया था।

□ गौतम-अहल्या की कथा
१९३७ वि०

(दयानन्द दिग्विजयार्क द्वितीय खण्ड के पृष्ठ पर छपे विज्ञापन से ज्ञात होता है कि यह पुस्तक विक्रयार्थ उपलब्ध थी)

भारतेन्दु काल पर स्वामी दयानन्द का प्रभाव—

साहित्य में अपने युग की मान्यताएं, आदर्श, आचार-विचार धारणाएं तथा प्रवृत्तियां परिलक्षित होती हैं। इन को प्रस्तुत करने वाले कवि, साहित्यकार व लेखक क्रान्तदर्शी, प्रगतिशील एवं मौलिक चिन्तन प्रस्तुत करने वाले, व्यक्ति होते हैं। इन्हीं के कारण साहित्य मानव समाज की उन्नति व सुख समृद्धि का साधन बनता है। भारतेन्दु युग का प्रारम्भ उन्नीसवीं सदी के चतुर्थ चरण के साथ हुआ था। उस काल के साहित्य पर नवजागरण काल की छाप स्पष्ट है। इस युग में अनेक लेखक, कवि, कथाकार नाटककार हुए जिन पर महर्षि दयानन्द का स्पष्ट प्रभाव था और उन में से अनेक आर्यसमाजी भी थे। स्वयं भारतेन्दु हरिश्चन्द्र धार्मिक दृष्टि से महर्षि दयानन्द से अलग विचारधारा रखते थे, परन्तु सामाजिक दृष्टि से वे स्वामी दयानन्द की विचारधारा के ही पोषक थे। देशभक्ति, लोकहित, समाजसुधार, मातृभाषा का उद्धार आदि का स्वर उस युग के साहित्य में मिलता है। 'तदीय सर्वस्व' नामक ग्रन्थ में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र लिखते हैं कि—'हम आर्य लोगों में धर्मतत्त्व के मूल ग्रन्थों का भाषा में प्रचार नहीं। यही कारण है कि भिन्नता स्थान-स्थान पर फैली हुई है।' निश्चय ही ये विचार स्वामी जी के विचारों से साम्य रखते हैं। स्पृश्यास्पृश्य के सम्बन्ध में दोनों के विचारों में साम्य था। मुन्शी केवल कृष्ण, बालमुकुन्द, कविकुमार शेरसिंह वर्मा, पंडित बलभद्र मिश्र, प० बाबूराम शर्मा, सेठ मांगीलाल नाथूराम शर्मा "शंकर" बद्रीदत्त शर्मा जोशी, प० नारायण प्रसाद बेताब, ठाकुर गदाधर सिंह, प० लोकनाथ तर्क वाचस्पति, श्री करण कवि, स्वामी आत्मानन्द सरस्वती, सरदार जसवन्तसिंह टोहानवी, प० हरिशंकर शर्मा, प० चमूपति, प० बुद्धदेव विद्यालंकार आदि अनेक कवि, साहित्यकार, वेदज्ञ विद्वान् हुए हैं। इनमें से पहले पांच-छः व्यक्ति महर्षि के समकालीन थे।

प० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी हिन्दी, अंग्रेजी, पाली, प्राकृत संस्कृत के अनन्य विद्वान् और प्रकाण्ड पंडित थे। उन्होंने व्याकरण भाषाविज्ञान, पुरातत्त्व, इतिहास, समालोचना, हिन्दी पत्रकारिता आदि के विषय में जो भी लिखा, वह आज भी मानक है। उन्होंने अपने समय की प्रसिद्ध पत्रिका 'मर्यादा' भाग ३, पृष्ठ १५२-१५६ में १९११ में प० सत्यव्रत सामश्रमी के निधन पर एक लेख लिखा था। उसमें महर्षि दयानन्द का जिक्र आया। यह अंश महर्षि के कर्तृत्व के सम्बन्ध में विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। वह अंश इस प्रकार है—

"जब सरकार ने संस्कृत शिक्षा के प्रचार के लिए क्वींस कालेज खोला, तब पादरियों ने शोर मचाया कि क्रस्तान सरकार हीदन (अधर्मी) हिन्दुओं के धर्म का प्रचार न करें। इसी से क्वींस कालेज में व्याकरण न्याय आदि के पाठ की व्यवस्था होने पर भी 'वेद' और 'मीमांसा' की गद्दियां स्थापित न की जा सकीं। काशी का अभाग्य ! और भारतवर्ष गवर्नमेण्ट का अभाग्य ! नहीं तो कोई बालशास्त्री या कोई बापूदेव वेदों का भी निकल आता और जो खोजें जर्मनी में हुई, वे काशी में होतीं और न वह ही समय आता जब एक वेदपाठी गुजराती सन्यासी काशी के पण्डितों को 'स सूचि' बना कर छोड़ जाता जैसा कि आगे लिखा जाएगा।"

यहां पर वेदपाठी गुजराती से तात्पर्य महर्षि दयानन्द सरस्वती से है और प्रसंग काशी शास्त्रार्थ का है। जब ऋषि काशीवासी पण्डितों से प्रश्न पूछते थे, तो वे आकाश की ओर देखने लगते थे (ससूचि) अथवा बगलें झांकने लगते थे। बालशास्त्री व्याकरण के पण्डित थे और बापूदेव

शास्त्री ज्योतिष के प्रसिद्ध पण्डित थे।

काशी-शास्त्रार्थ का विवरण देते हुए गुलेरी जी आगे लिखते हैं—

"इन्हीं दिनों स्वामी दयानन्द धूमकेतु की तरह काशी में आ पहुंचे और अक्षोभ्य समुद्र की सतह उनके आने से पेंदे तक हिल गयी। लोग विस्मय से आंख फाड़े रह गए कि स्वामी जी का वहां मन्त्रपाठ कंठस्थ करने वाले वैदिकों से मिलता है, वहां उन्हें अपने भाष्य व्यापी व्याकरण के ऊपर स्थित सर्वज्ञान से गूंगा कर देता है और जहां नव्य व्याकरण मिलते हैं, वहां वह 'घटोघट' का तुकबन्दन छोड़कर उन्हें सीधा व्याकरण की चक्की में गोते खिलाता है।"

यह विवरण गुलेरी जी ने १९११ ई० में लिखा था और इससे यह भी स्पष्ट है कि उस शास्त्रार्थ में महर्षि विजयी रहे थे। यहां पर इस का विस्तृत विवरण अपेक्षित नहीं है तथापि यह निश्चित है कि गुलेरी जी जैसे हिन्दी के विद्वान भी ऋषि से अत्यधिक प्रभावित थे।

प० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, जिन महापुरुषों द्वारा हिन्दी को बढ़ावा मिला और इसकी श्रीवृद्धि हुई, उनके गुणकथन में किसी भी प्रकार का सकोच नहीं करते। उन्होंने 'समालोचक' (जनवरी-अप्रैल, १९०५) पत्र में लिखा था—"आर्यसमाज के प्रचारक एक बड़े दूरदर्शी पुरुष थे, जिन्होंने अपने शिष्यों की वृद्धि और गौरव के लिए हिन्दी का आश्रय लिया। इस बात को कट्टर से कट्टर आर्यसमाजी भी मानेगा कि यदि स्वामी दयानन्द हिन्दी को अपनी धर्मभाषा न मानते, तो उनका यह जलवा नहीं होता।"

जब महर्षि दयानन्द सरस्वती का भारतीय सार्वजनिक रंगमंच पर पदार्पण हुआ तो भारत में राजनीति, एवं राष्ट्रीय एकता को बांधने वाला कोई सूत्र न था, तब उन्होंने साहस के साथ निर्णय लिया था कि प्रारम्भ में बोलचाल के लिए टूटी-फूटी हिन्दी ही चलेगी किन्तु देवनागरी में हिन्दी भारती (आर्यभाषा) में ही अपने ग्रन्थ लिखूंगा। हिन्दी के लिए स्वामी दयानन्द का सकल्प एक नींव का पत्थर सिद्ध हुआ है। विकृत विखण्डित समाज को एक दिशा सूत्र प्रदान करने में ऋषि दयानन्द अग्रगण्य हैं।

उन्होंने हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर विशेष बल दिया था। बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना के अवसर पर कहा था कि जहां आर्यसमाज की स्थापना हो, वहां पर एक पुस्तकालय अवश्य ही खोला जाए। लाहौर में जाकर तो उन्होंने हिन्दी सीखना, प्रत्येक आर्यसमाजी के लिए अनिवार्य कर दिया, जबकि दुर्दैव से उस समय पंजाब, फ्रन्टियर प्रान्त और सिन्ध में कोई विरला ही हिन्दी जानता था।

एक सज्जन ने जब हरिद्वार में यह सुझाव रखा कि वे अपने ग्रन्थों का अनुवाद फारसी में करायें तो उन्होंने कहा था कि ज्ञानवर्धन के लिए कोई भी भाषा सीखी जा सकती है। उसी प्रकार किसी भी भाषा में अनुवाद किया जा सकता है। किन्तु अनुवाद विदेशी लोगों के लिए होने चाहिए। अपने देशवासियों में स्वयं अपनी राष्ट्रीय भाषा के माध्यम से साहित्य सृजन होगा तो एकता एवं संगठन भी इसके सम्पर्क से निश्चय ही आएगा।

ऋषि दयानन्द ने अपने व्याख्यानों में यह उत्कृष्ट इच्छा प्रकट की थी कि मैं तो वह दिन देखना चाहता हूं जब हिमालय से लेकर सागर तक एवं सारे ब्रह्मावर्त्त, आर्यावर्त में देवनागरी लिपि में ही सभी आर्यभाषा को अपनायें।

हिन्दी साहित्य के विद्वानों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित आत्मकथा हिन्दी गद्य साहित्य की सर्वप्रथम आत्मकथा है। कुछ दिन पूर्व डा० रामप्रकाश आर्य ने एक गवेषणापूर्ण लेख लिखा था। उन्होंने लिखा है कि इस आत्मकथा में कवि, कथाकार और इतिहासकार के तत्त्व एक साथ उपलब्ध होते हैं। स्वामी जी महाराज धर्मोपदेशक थे, समाज-सुधारक थे परन्तु इस आत्मकथा को देखकर तो लगता है कि वे बहुत ही भाव प्रवण कवि थे, प्रकृति के कुशल चितेरे थे तथा साथ ही अपने भी आलोचक। उन्होंने आत्मविश्लेषण किया है तथा अपनी गलतियों को स्वीकार भी किया है। महर्षि की यह आत्मकथा एक उत्कृष्ट साहित्यिक कृति है। यह अलंकारविहीन होते हुए भी आकर्षक है। यह छंदोमय नहीं है तथापि इसमें एक विशिष्ट गति और लय है। यह दूसरे की कथा होते पर भी अपनी सी लगती है। इसमें भले ही रस-सिद्धान्त के आवश्यक अवयव न हों पर यह सरस है। इसमें संगीत के तत्त्व नहीं हैं पर यह मधुर है।

महर्षि के हम ने अनेक रूप देखे हैं। वे शास्त्रार्थ महारथी हैं। वे दार्शनिक हैं। वे धार्मिक विद्रोही हैं। वे धर्मोपदेष्टा हैं। वे बहुत ही खरे, और कड़वी बात कहने का साहस रखने वाले निर्भीक सन्यासी हैं। परन्तु हिन्दी साहित्य को जो उन्होंने योगदान दिया, उसकी ओर हमारी दृष्टि कम ही गई है। यह विस्मयकारी है कि एक अहिन्दी भाषी व्यक्ति ने हिन्दी में अपेक्षाकृत आधुनिक विधा—आत्मकथा लेखन में भी अपूर्व योगदान दिया।

हिन्दी साहित्य में अनेक जीवनियां लिखी गई थीं परन्तु आत्मकथाएँ नहीं। संस्कृत साहित्य तथा हिन्दी साहित्य के लेखक कवि आदि अपने विषय में बहुत ही कम लिखते थे और यही कारण है उनकी प्रामाणिक जीवनियां नहीं मिलतीं और जो मिलती हैं, उनमें साहित्यिकता अधिक होती है, श्रद्धा होती है परन्तु वास्तविकता बहुत कम होती है। आधुनिक युग के निर्माता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र भी अपने चरित नायकों के चित्रण में तटस्थ नहीं थे।

स्वामी जी की भी अनेक जीवनियां स्वभाषा में प्राप्य हैं जिनमें कुछ तो काफी विस्तृत तथा महत्त्वपूर्ण हैं परन्तु उन सब में वह सब नहीं जो स्वामी जी के अपने लिखे शब्दों में हमें मिलता है। स्वामी जी ने कर्नल स्कॉट के अनुरोध पर अप्रैल १८७९ में यह जीवनी लिखी थी। स्वामी जी की यह आत्मकथा—स्वरचित आत्मचरित्र बहुत ही सराहनीय है। अपने विशिष्ट साहित्यिक गुणों के कारण यह छोटी सी रचना साहित्य के अध्येताओं का ध्यान आकर्षित करती है।

इस रचना में इतिहासकार जैसा तथ्य निरूपण है और साथ ही आत्माभिव्यक्ति भी है—

'गुजरात देश में दूसरों की अपेक्षा मोहविशेष है। यदि मैं इष्ट मित्र, भाई-बन्धु की पहचान दूं या पत्र व्यवहार करूं तो मुझे बड़ी उपाधि होगी। जिन उपाधियों से मैं छूट गया हूं वही उपाधियां मेरे पीछे लग जायेंगी।' आप ही देखिए कितने सरल शब्दों में अपनी मनोदशा की अभिव्यक्ति की गई है। इतने ही सरल-सरस ढंग से तथ्यों का निरूपण किया गया है—'मैंने पांचवें वर्ष में देवनागरी अक्षर पढ़ना प्रारम्भ किया था। (ऋषि दयानन्द स्वरचित जन्म चरित्र पृष्ठ १ और ३)

महर्षि ने मूर्तिपूजा से विरक्ति के भाव का तथा आत्ममंथन के भाव का वर्णन मनोरम एवं अकृत्रिम शैली में किया है—

'अतः चूहे की यह लीला देख मेरी बाल बुद्धि को ऐसा प्रतीत हुआ कि जो शिव अपने पाशुपतास्त्र से बड़े बड़े प्रचण्ड दैत्यों को मारता है, क्या उसमें एक निर्बल चूहे को भगा देने की शक्ति नहीं?'

कदम कदम पर ऋषि अपनी उत्सुकता तथा हृदय की व्यग्रता का वर्णन करता है। ऐसा ही छोटी बहन और चचा की मृत्यु के वर्णन में और फिर अपनी मुक्ति के उपाय सोचना' आदि में मिलता है। भाषा सौष्ठव की ओर लेखक का ध्यान जाता ही नहीं, क्योंकि उसका हृदय भावविभोर है। Spontaneous overflow of powerful feelings (William Wordsworth)

संसार यात्रा के इस पथिक के हृदय में भोलापन और निश्छलता है—'जो मेरे पास थोड़े से रुपये, अंगूठी आदि आभूषण था वह सब पोपों ने ठग लिया कि तुम पक्के वैराग्यवान तब होगे जब अपने पास की चीज सब पुण्य कर दोगे। उनके कहने से मैंने सब दे दिया।'

यह वर्णन बहुत ही स्वाभाविक और सामान्य है। यह कल्पना का वर्णन नहीं है मन में किए गए चिन्तन का वर्णन है। इसमें ठगे जाने का भाव स्पष्ट है। कभी-कभी व्यक्ति जानता है कि वह ठगा जा रहा है, वह जानता है कि उस का शोषण हो रहा है फिर भी वह उसी राह पर चलता रहा है।

'कुछ दूर चलकर मेरा गमन एक ऐसे घने वन में हुआ, जहां के शैल खण्ड बन्द और नाले भी शुष्क और वहां से आगे को मार्ग भी न चलता था, पर चोटी की उच्चता और कठिनता के विचार से मैंने सोचा कि पर्वत की चोटी पर चढ़ना असम्भव है।" अगम्य पहाड़ियों, टीलों और जंगल के अतिरिक्त जिस में मनुष्य का गमन असम्भव था, अब कुछ दिखाई न पड़ा। बड़े बड़े कांटों से उलझकर वस्त्रों की धज्जियां उड़ गयीं और शरीर भी क्षत हो गया और पांव भी लंगड़ हो गए।

यह सारा वर्णन अभिधा में है पर इसका लक्ष्यार्थ भी हो सकता है—पूरा संसार घना वन है। बाधाओं के विशाल शैल खण्ड हैं। पथ प्रदर्शक नहीं है। मंजिल बहुत दूर है। विषाद, निराशा और दीनता साधक को कमजोर बनाती है।

ऐसे अनेक उदाहरण महर्षि की रचना में मिलेंगे। इस वर्णन को देखकर विश्वास ही नहीं होता कि ऋषि की मातृभाषा हिन्दी के अतिरिक्त कुछ और रही होगी। शैली की नैसर्गिकता एवं मनोरमता पाठकों को अभिभूत करती है।

आत्मकथा के लेखन के लिए आवश्यक है कि वह केवल आत्म-प्रकाशन ही न करे अपितु अपने

(शेष पृष्ठ ६ पर)

(पृष्ठ ५ का शेष)

महर्षि दयानन्द सरस्वती की हिन्दी सेवा

दोषों, दुर्बलताओं के बारे में भी बताए। अपनी मानवीय दुर्बलताओं के बारे में भी ऋषि ने संकोच नहीं किया—

मैंने उन से कह दिया कि यहाँ से हिलने का प्रयत्न करने की अपेक्षा मैं मर जाना उत्तम समझता हूं।' तथा 'दुर्भाग्यवश, यहां मुझे एक बड़ा दोष लग गया अर्थात् भांग पीने का स्वभाव हो गया। सो कई बार उस के प्रभाव से मैं बेसुध हो जाया करता था।'

यह ठीक है कि स्वामी जी की यह आत्मकथा अधूरी है, पर जितना उन्होंने लिखा, उतना अच्छा ही लिखा। इसमें जीवन के घात प्रतिघातों का समावेश, मानवीय दुर्बलताओं और कमियों का सच्चा चित्रण, शैली में मनोरमता, नैसर्गिकता तथा प्रभावोत्पादकता का सम्यक् सम्मिश्रण है। डॉ० चन्द्रभानु सीताराम सोनवणे ने हिन्दी गद्य साहित्य (२९६) पुस्तक में इसे हिन्दी गद्य की सर्वप्रथम आत्मकथा स्वीकार किया है।

यह बात पहले भी कही जा चुकी है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। महर्षि भारतीय पुनर्जागरण काल में हुए थे और उन्होंने धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में हुए आन्दोलनों को नेतृत्व भी प्रदान किया था। अतः यह स्वाभाविक ही था कि उनका विशाल जनसमुदाय से परिचय होता। वे अनेक लोगों के सम्पर्क में आए और उन से पत्र व्यवहार भी किया। उनका पत्र व्यवहार १८७० के उत्तरार्ध से तो नियमित रूप में और बहुत अधिक लोगों के साथ हुआ। सम्पूर्ण पत्र व्यवहार उपलब्ध भी नहीं है। यह आश्चर्य की बात है कि ऋषि कितना लिखते थे। कई कई कार्य वे एक साथ किया करते थे। उनका पत्र साहित्य उन की मृत्यु के उपरान्त प्रकाशित हुआ, जिसमें से मुख्य प्रकाशन निम्न प्रकार हैं—

१९१०—ऋषि दयानन्द का पत्र-व्यवहार भाग-१
स० महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द)

१९१८-१९२७—महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन भाग १ से ४
प० भगवद्दत्त

१९३५—ऋषि दयानन्द का पत्र-व्यवहार भाग २
प० चमूपति

१९६९—महर्षि पत्र व्यवहार विशेषांक (सार्वदेशिक)
रामगोपाल शालवाले

प० युधिष्ठिर मीमांसक की टिप्पणियों के साथ 'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन' रामलाल कपूर ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित किए गए हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र साहित्य का उल्लेख हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों ने सामान्यतः नहीं किया। यह भी सम्भव है कि उन्हें इसकी जानकारी न थी। कहीं-कहीं उनका विवरण मिलता भी है तो उसमें अनेक विसंगतियां हैं जिन की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए।

डॉ० हरवंशलाल शर्मा द्वारा सम्पादित 'हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास—चतुर्दश भाग' के खण्ड ६ में पत्र साहित्य के इतिहास को स्पष्ट करते हुए कहा गया है—

'जब हम पत्र साहित्य के इतिहास पर दृष्टि प्रक्षेप करते हैं, तो हमें ज्ञात होता है कि किसी पत्र संग्रह को सर्वप्रथम प्रकाशित रूप में लाने का श्रेय स्वर्गीय मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) को है। स्वामी जी ने सम्भवतः १९०४ में (आज से ८५ वर्ष पूर्व १९८९) स्वामी दयानन्द सरस्वती के पत्रों का संग्रह प्रकाशित कराया था। (पृ० ५०९)

इसी प्रकार डॉ० नगेन्द्र द्वारा सम्पादित 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में द्विवेदी युग के गद्य साहित्य की गौण विधाओं के विवेचन में ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्रों के संग्रह के विषय में लिखा गया है।

'आलोच्य युग में पत्र साहित्य विषयक दो महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित हुए। महात्मा मुन्शीराम ने सन १९०४ में स्वामी दयानन्द सरस्वती सम्बन्धी पत्रों का संकलन किया।' ऐसा लगता है कि दोनों महानुभावों ने पत्रसंग्रह को देखे बिना ही अपना मन्तव्य व्यक्त कर दिया।

डॉ० हरवंशलाल शर्मा के ही इतिहास में अन्यत्र लिखा गया है—

कुछ समय बाद सम्भवतः १९०९ ई० में प० भगवद्दत्त जी ने अनथक परिश्रम और खोज बीन करके स्वामी दयानन्द सरस्वती के पत्रों का एक विशाल संकलन 'ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार' शीर्षक से सद्धर्म प्रचार यन्त्रालय गुरुकुल कांगड़ी से प्रकाशित कराया। यह टिप्पणी भी बिना मूल ग्रन्थों को देखे ही कर दी गयी। प० भगवद्दत्त द्वारा सम्पादित पत्र संग्रह का शीर्षक 'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन' है। पत्र संग्रह का प्रकाशन वर्ष १९१८ ई० है। यह पत्र संकलन विशाल नहीं है। इसमें कुल मिलाकर ८२ पत्र हैं।

यह भी आश्चर्य है कि 'महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन' के भाग २ ३ ४ का कहीं उल्लेख ही नहीं मिलता, जबकि ये १९१९, १९२७ और १९२७ में प्रकाशित हुए थे। प० चमूपति द्वारा सम्पादित 'ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार' का भी कहीं इतिहास ग्रन्थों में उल्लेख नहीं है।

जिस महान् विभूति ने हिन्दी को 'आर्य भाषा' घोषित करके, उसके प्रचार प्रसार के लिए अनवरत प्रयत्न किए, उसे 'राजभाषा' पद पर प्रतिष्ठित कराने के लिए 'हन्टर कमीशन' के पास स्थान स्थान से ज्ञापन पत्र भिजवाए, जिस महापुरुष के पत्र संग्रह प्रकाशित होने के बाद हिन्दी में 'पत्र साहित्य' विधा का सूत्रपात हुआ, उसको इतिहासकारों ने सही स्थान नहीं दिया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस विधा के पल्लवन में 'नींव की ईंट' का काम किया है। महर्षि कितना अधिक व्यग्र थे हिन्दी को राजभाषा की मान्यता दिलाने के लिए, वह उनके पत्रों में स्पष्ट परिलक्षित है। ये पत्र महर्षि के जीवन दर्शन के परिचायक हैं और आर्य जनों के लिए प्रेरणा के सशक्त स्रोत हैं। उनके कुछ पत्रों से उद्धरण देना यहां पर प्रासंगिक होगा।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाया जाना आवश्यक है : स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का वार्षिकोत्सव १० अप्रैल १९८९ से १५ अप्रैल १९८९ तक गुरुकुल कांगड़ी परिसर में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। यजुर्वेद पारायण यज्ञ प० श्यामसुन्दर स्नातक के ब्रह्मत्व में १० अप्रैल को प्रारम्भ हुआ और यज्ञ की पूर्णाहुति १५ अप्रैल को हुई। यजुर्वेद पारायण यज्ञ का संयोजन डा० हरिप्रकाश आयुर्वेदालंकार ने किया। यज्ञ में डा० भारतभूषण विद्यालंकार डा० सत्यव्रत राजेश, डा० वेदप्रकाश एवम् डा० महावीर वेदपाठी थे। चारों महानुभाव वेदों के सुप्रसिद्ध विद्वान हैं।

११ अप्रैल को गुरुकुल कांगड़ी की पुण्य भूमि में गुरुकुल जन्मोत्सव मनाया गया। यह स्थान गंगा के पार कांगड़ी ग्राम के निकट है, जहां पर पहली बार स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज के शिक्षा सिद्धान्तों को रूपायित करने के लिए बिजनौर निवासी चौधरी अमीचन्द जी द्वारा दान में दी गयी भूमि पर १९०२ में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी। यही वह स्थान है जहां पर रेम्जे मकडॉनेल्ड, ब्रिटिश प्रधान मन्त्री हाथी की सवारी पर आए थे और उन्होंने कहा था कि यदि किसी को साक्षात् ईसा के दर्शन करने हों तो वह मानवता के पुजारी स्वामी श्रद्धानन्द को देख ले। यह समारोह आचार्य प्रियव्रत जी वेद वाचस्पति की अध्यक्षता में आयोजित किया गया तथा इस अवसर पर प्रिंसिपल श्री अर्जुनदेव, डा० निरुपण विद्यालंकार, डा० भारतभूषण वेदालंकार आदि महानुभावों ने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज तथा उनके कृतित्व के प्रति आभार व्यक्त किया।

१२ अप्रैल को प्रातः गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी ने ध्वजारोहण करते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए तत्पर होकर जुटने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि यह ध्वज वेद ज्ञान का प्रतीक है और हमें ऊर्ध्वरेता होने की प्रेरणा देता है। इसी दिन दोपहर में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी [illegible] सरस्वती की अध्यक्षता में आर्य-

(शेष पृष्ठ ७ पर)

(पृष्ठ ६ का शेष)

सम्मेलन का आयोजन किया गया। पूज्यपाद स्वामी जी महाराज ने कहा कि प्रत्येक आर्यजन का कर्त्तव्य है कि वह हिन्दी और संस्कृत भाषाओं को अध्ययन अध्यापन में समुचित स्थान दिलाने के लिए संकल्पवान होकर संघर्ष में कूद पड़े। भारत सरकार एक प्रकार से संस्कृत भाषा के ऊपर अत्याचार कर रही है। जिसका परिणाम यह होगा कि देश की सभी भाषाओं को शब्द भण्डार उपलब्ध कराने वाली भाषा समाप्त हो जाएगी और भाषायी एकता का सूत्र भी विच्छिन्न हो जाएगा। उन्होंने सभी आर्यजनों से आग्रह किया कि वे स्वयं संस्कृत पढ़ें तथा अपनी संतति को संस्कृत अवश्य पढ़ायें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा॰ धर्मपाल इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कहा कि संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त करने और सभी भारतीय भाषाओं के माध्यम से परीक्षा लिये जाने के लिए भारतीय भाषा संरक्षण परिषद के तत्वावधान में श्री पुष्पेन्द्र चौहान तथा उनके साथी पर्याप्त समय से आन्दोलन कर रहे हैं। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती महाराज के नेतृत्व में भी पिछले दिनों वहां पर एक प्रदर्शन किया गया था। यह आश्चर्य की बात है कि सरकार भारतीय भाषाओं के महत्त्व को स्वीकार करती है फिर भी इसे क्रियात्मक रूप देने में क्यों पीछे हट रही है। इस अवसर पर पूर्व केन्द्रीय मन्त्री तथा हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवम गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो॰ शेरसिंह ने अपने शिक्षा मंत्री कार्य काल की नीतियों की विस्तृत चर्चा करते हुए बताया कि हिन्दी और भारतीय भाषाओं को समुचित स्थान दिलाने का सदैव प्रयास किया गया परन्तु यह हमारा दुर्भाग्य ही रहा कि आज भी हम इन्हें वह स्थान नहीं दिला पाये जो इन्हें मिलना चाहिए था। आर्यसमाज के लोगों ने तो अंग्रेजी शासन काल में भी हिन्दी और संस्कृत के गुरुकुल चलाने प्रारम्भ कर दिये थे और आज मुझे यह कहते में गौरव है कि गुरुकुल कांगड़ी के अनेक स्नातक सरकार में तथा प्रशासनिक सेवाओं में, और शिक्षा तथा पत्रकारिता के क्षेत्रों में ऊंचे-ऊंचे स्थानों तक पहुंचे। इस अवसर पर प्रोफेसर रामप्रसाद वेदालंकार पं॰ सच्चिदानन्द शास्त्री एवम आचार्य कपिलदेव शास्त्री ने भी आर्य जनता को सम्बोधित किया। कुलाधिपति प्रोफेसर शेरसिंह जी की अध्यक्षता में शिक्षा-सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में डा॰ रामनाथ वेदालंकार, डा॰ धर्मपाल, डा॰ भाई महावीर, पं॰ सच्चिदानन्द शास्त्री आदि विद्वानों ने भारतीय शिक्षा नीति तथा इसमें सुधार की सम्भावनाओं के विषय में अपने विचार व्यक्त किए।

१३ अप्रैल १९८९ को राष्ट्रीय एकता सम्मेलन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा॰ धर्मपाल की अध्यक्षता में मनाया गया। मुख्य अतिथि प्रोफेसर शेरसिंह जी ने बताया कि भाषायी समस्याएं तो राष्ट्रीय एकता में बाधक हैं ही, परन्तु जातीयता एवम क्षेत्रीयता की समस्याएं भी इस दिशा में बहुत बड़ा अवरोध प्रस्तुत करती हैं। डा॰ धर्मपाल ने कहा कि बलात् और पैट्रोडॉलर के आधार पर अथवा मानवसेवा के नाम पर जो धर्मान्तरण भारत के अनेक प्रान्तों में किया जा रहा है, वह भी राष्ट्रीय एकता के लिए एक बहुत बड़ा खतरा है। धर्मान्तरण से मनुष्य की राष्ट्र के प्रति निष्ठा ही बदल जाती है और वे स्वायत्तता की मांग करने लगते हैं। उन्होंने कहा कि सभी को समान अधिकार मिलने चाहिए। अल्पसंख्यता के आधार पर यदि किसी को कोई विशेष सुविधाएं मिलती हैं तो उन्हें भी समाप्त कर देना चाहिए। इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने आह्वान किया कि हम वेदों पर आधारित धर्म का प्रचार-प्रसार करें।

डा॰ प्रशान्त वेदालंकार ने सुदूरवर्ती क्षेत्रों में जाकर कार्य करने की आवश्यकता को रेखांकित किया। रात्रि में संस्कृत रक्षा सम्मेलन श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में आयोजित

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O on 20, 21-4-89 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५९ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३९

(पृष्ठ ७ का शेष)

किया गया। इस अवसर पर डा० सुभाष वेदालंकार डा० कृष्ण-कुमार, डा० निरूपण विद्यालंकार और अन्य विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह का आयोजन शुक्रवार १८ अप्रैल १९८९ को विश्वविद्यालय भवन में आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी ने की और दीक्षान्त भाषण केन्द्रीय ऊर्जा एवम् पैट्रोलियम मन्त्री श्री ब्रह्मदत्त जी ने दिया। कुलपति प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की गतिविधियों एवम् उपलब्धियों का इस अवसर पर आचार्य रामनाथ वेदालंकार को विद्यामार्तण्ड की उपाधि से सम्मानित किया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय तथा आर्यसमाज के प्रति की गई सेवाओं के लिए डा० सत्यकेतु विद्यालंकार पूर्व कुलाधिपति का मरणोपरान्त सम्मानित किया गया। प्रशस्ति पत्र एवम् शाल उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला जी को कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह ने भेंट किया।

रात्रि में श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री, डा० निरूपण विद्यालंकार और भारतभूषण विद्यालंकार ने विशेष व्याख्यानों से आर्य जनता का मार्गदर्शन किया।

१५ अप्रैल को यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति हुई तथा श्री धर्मेन्द्र पाल शास्त्री के संयोजन में वेदारम्भ संस्कार किया गया। रात्रि में श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में व्यायाम सम्मेलन का आयोजन किया गया।

कुम्भ मेला में मद्य-निषेध सम्मेलन

देहरादून, ३ अप्रैल। यहां के प्रसिद्ध झण्डा-मेला में आर्य समाज देहरादून की ओर से चलाए जा रहे प्रचार-शिविर में मद्य-निषेध सम्मेलन का आयोजन किया गया।

मद्य-निषेध विभाग के उत्तराखण्ड क्षेत्र के अधिकारी श्री इन्द्रसिंह रौतेला ने इसमें सक्रिय सहयोग किया। विभाग द्वारा मद्य-निषेध की प्रेरणा देने वाले चित्रों और पोस्टरों से पण्डाल को सजाया गया था।

सम्मेलन के प्रारम्भ में आर्य समाज के भजनोपदेशकों ने संगीत के माध्यम से नशा सेवन की हानियों पर सम्यक् प्रकाश डाला।

सम्मेलन में श्री देवव्रत शास्त्री, श्री कैलाश चन्द्र, श्री रौतेला आदि विद्वानों ने शराब आदि दुर्व्यसनों से होने वाली हानियों का विस्तार से वर्णन कर सच्चे नागरिक बनने की प्रेरणा की।

सेवा में—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा

वर्ष १२ । अंक २५ | रविवार ३० अप्रैल १९८९ | वैशाख कृ० २ सम्वत् २०४६ विक्रमी | दयानन्दाब्द—१६५ | सृष्टि सवत् १९७२९४९०९०
मूल्य . एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश मे ५० पौंड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

आर्यसमाज सी ब्लाक जनकपुरी के वार्षिकोत्सव पर

राष्ट्रीय एकता के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द

—सूर्यदेव

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने राष्ट्रीय एकता के लिए आज से सौ साल से भी पहले सराहनीय प्रयास किया था। उन्होंने भारतवर्ष के विभिन्न धार्मिक नेताओं और समाज-सुधारकों को एकत्र करके राष्ट्रीय-एकता के सूत्र खोजने की कोशिश की थी। उनकी इच्छा थी कि भारत के लोगों का स्वधर्म, स्वभाषा, स्वभूषा तथा स्वराज्य हो। ये उद्गार आर्यसमाज जनकपुरी के वार्षिकोत्सव पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधिसभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने व्यक्त किए।

आर्यसमाज सी-ब्लाक जनकपुरी का वार्षिकोत्सव रविवार ९ अप्रैल, १९८९ से रविवार १६ अप्रैल १९८९ तक मनाया गया। इस अवसर पर ऋग्वेद पारायण यज्ञ वेद प्रवचन, भक्तिसगीत तथा खेल प्रतियोगिताए और मन्त्रपाठ प्रतियोगिताए आयोजित की गयीं। आर्यसमाज के अधिकारियों ने विद्वानों तथा कर्मठ कार्यकर्ताओं के सम्मान में अभिनन्दन समारोह आयोजित करके अपनी विशिष्ट सूझ बूझ का परिचय दिया। आर्य महिला सम्मेलन में आजादहिन्द फौज की रानी झांसी रेजीमेंट की सदस्या श्रीमती किरण प्रभाकर, गार्गी कॉलेज की डॉ० गार्गी, डा० उषा शास्त्री, श्रीमती विनोद तथा श्रीमती पुष्पा अरोडा आधुनिक युग में नारी के दायित्वों का लेखा आर्य महिलाओं के सम्मुख प्रस्तुत किया। प्रतियोगिताओं में विजेताओं को चौधरी भूपसिंह नगर निगम पार्षद के कर कमलों से पुरस्कार प्रदान किए गए। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव और महानगर पार्षद श्री जगदीश मुखी ने डा० बालकृष्ण अकिंचन पुस्तकालय के उद्घाटन समारोह के अवसर पर आर्यजनता का मार्गदर्शन किया। पुस्तकालय का उद्घाटन श्रीमती शारदा देवी अकिंचन ने किया। गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह मुख्य अतिथि थे। प० यशपाल सुधांशु, श्री ब्रह्मदत्त स्नातक और डा० राजेन्द्रसिंह वत्स ने भी आर्य जनता को सबोधित किया।

आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर विभिन्न धर्माधिकारियों को एक मच पर बुलाने का प्रशसनीय कार्य इस आर्यसमाज की ओर से किया गया। सनातन धर्म की ओर से प० नीलकण्ठ शास्त्री, इस्लाम धर्म की ओर से मौलाना वहीदुद्दीन खां, सिक्ख धर्म की ओर से प्रो० जोगेन्द्र सिंह निरकारी मिशन की ओर श्री ब्रह्म ऋषि वासदेव राय ने अपने विचार प्रस्तुत किए तथा वैदिक धर्म की मान्यताओं को दिल्ली आर्य प्रतिनिधिसभा के प्रधान डा० धर्मपाल आर्य महोपदेशक प्रो० रत्नसिंह आदि ने प्रस्तुत किया।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाज शालीमार बाग (बी०जे० पश्चिमी) का

प्रथम वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज शालीमार बाग बी० जे० पश्चिमी दिल्ली का वार्षिकोत्सव बृहस्पतिवार, १३ अप्रैल से १६ अप्रैल १९८९ तक धूमधाम से मनाया गया। प्रतिदिन प्रात काल प्रभात फेरी, यज्ञ, भजन एव उपदेश तथा रात्रि में वेदकथा का आयोजन किया गया। श्री प० श्यामवीर राघव ने मधुर भजनोपदेश किया। प० प्रेमचन्द 'श्रीधर', श्री ओ३म्वीर शास्त्री, श्री रामस्वरूप राणा और डा० महेश विद्यालकार के प्रभावशाली व्याख्यान हुए।

१५ अप्रैल को स्त्री आर्यसमाज के तत्वावधान में प्रान्तीय आर्य-महिला सभा की मन्त्रिणी श्रीमती प्रकाश आर्या की अध्यक्षता में 'नारी जागरण सम्मेलन'' का आयोजन किया गया जिसमें श्रीमती सरला मेहता, श्रीमती चन्द्रावली मेयर, श्रीमती सुनीता आर्या, श्रीमती प्रेमशील महेन्द्रू तथा श्रीमती शकुन्तला दीक्षित ने अपने विचार व्यक्त किए।

१६ अप्रैल १९८९ को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई तथा ध्वजारोहण दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने किया। सासद चौधरी भरतसिह, निगम पार्षद श्री राजेश यादव और श्री साहिब सिह वर्मा ने आर्य जनता को सम्बोधित किया।

आर्यसमाज बाजार सीताराम का

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज बाजार सीताराम दिल्ली का ६९वा वार्षिकोत्सव ३ अप्रैल १९८९ से ९ अप्रैल १९८९ तक आयोजित किया गया। प० यशपाल सुधांशु एव डा० महेश विद्यालकार ने वेदामृत की वर्षा की। शुक्रवार ७ अप्रैल को नशाबन्दी सम्मेलन मे श्री न्यादरमल गुप्ता, श्री सांवलदास गुप्ता, श्री वीरेश प्रताप चौधरी, श्री चिरजीलाल, श्री मामचन्द रिवाडिया ने आर्य जनता का मार्गदर्शन किया। इस अवसर पर नशाबन्दी प्रदर्शनी का उद्घाटन सांसद श्री हर्षसिह ने किया। ८ अप्रैल को महिला सम्मेलन मे श्रीमती सुनीति आर्या, श्रीमती शकुन्तला दीक्षित, श्रीमती प्रेमशील महेन्द्रू और आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर की छात्राओं ने स्त्री जाति के महत्त्व को रेखाकित किया। रात्रि में श्री स्वामी रामेश्वरानद जी महाराज की अध्यक्षता मे हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में डा० धर्मपाल, श्री सूर्यदेव, डा० महेश विद्यालकार, श्री प्रकाशचन्द्र शास्त्री, श्री सावलदास गुप्ता ने अपने विचार व्यक्त किए। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में श्री जयप्रकाश अग्रवाल, श्री क्षितीशकुमार वेदालकार, डा० महेश विद्यालकार, श्री यशपाल सुधांशु और श्री वैकुण्ठलाल शर्मा प्रभृति ने आर्य जनता का मार्गदर्शन किया।

सम्पादक—सूरचन्द गुप्त
प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव
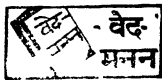
उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च भुक्त्वा घ्रात्वा च यो नर ।
न हृष्यति ग्लायति वा स विज्ञेयो जितेन्द्रिय ॥

—मनु० २।९८

जब विषयों मे फसना ही दु ख का कारण है और जोवात्मा को विषयों में फसावे के साधन इन्द्रिया ही हैं, तब नि सन्देह दु ख दूर नही हो सकता जब तक कि इन्द्रियो को वश में न किया जाय। तब इन्द्रियो पर विजय कैसे प्राप्त हो ? यह प्रश्न विचारने के योग्य है। इससे पहले कि इन्द्रियो को जीतने के साधन मालूम हो सकें, यह जानना अत्यन्त ही आवश्यक है कि इन्द्रियों को जीतने से अभिप्राय क्या है ? क्या इन्द्रियो को मार डालने वाला मनुष्य इन्द्रियजित् हो सकता है ? क्या जो मनुष्य अपने कानो से बहरा हो जावे, आखो से अन्धा हो, जिसकी जिह्वा मे स्वाद लेवे की शक्ति न रहे, जिसकी नाक के लिए सुगन्ध और दुर्गन्ध में भेद करना असम्भव हो जाय और जिसके शरीर मे छुरी चुभाने से कुछ अनुभव करने की शक्ति न रहे क्या ऐसा पुरुष जिसकी पाचो ज्ञानेन्द्रियो में काम करने की शक्ति का तिरोभाव हो जाय, जितेन्द्रिय कहलाने का अधिकारी हो सकता है ? ज्ञानेन्द्रिया तो दूर रहीं, (क्योकि प्रत्येक गति का आश्रय सीधा मन के साथ है) कर्मेन्द्रियो कर्मेन्द्रियो तक की शक्तियो को नष्ट करने की कोशिश से कभी वे इन्द्रिया वश में नही आती। कारण स्पष्ट है। बिना मन के साथ सम्बन्ध हुए, कोई भी इन्द्रिय काम नही करती। जब मन हरकत करने वाला मौजूद है तो इन्द्रिय के गोलक को टुकड टुकड कर डालने से भी उस इन्द्रिय का काम बन्द नही होता। मैंने एक साधु को देखा है जो काम से वशीभूत होकर, एक बार अपने मन को न रोक सका। उसे अपनी इस गिरी हुई अवस्था से ऐसी घृणा हुई कि उसने अपनी गिरावट के कारण इन्द्रिय के गोलक को काटकर अलग कर दिया। उसकी उस अवस्था को देख सहस्रो के मन जल गए। डाक्टर ने चिकित्सा की और वह साधु राजी हो गया। कुछ समय के बाद मैंने फिर देखा कि उसके आचरण बहुत ही गिर गए थे। इसका कारण क्या था ? इन्द्रियो को बुरे मार्ग पर ले जाने का कारण मन है। साथ ही उन्हें सीधे मार्ग पर चलाकर उन्हें ससार के उपकार का साधन बनाने का जरिया भी वही मन है। फिर क्या जितेन्द्रिय होने के लिए पाचो ज्ञानेन्द्रिय के गोलक काटकर फेंक देने की आवश्यकता है ? कदाचित् नहीं। ऐसी चेष्टा से इन्द्रियो का वश में आना कठिन है। क्योकि गोलक दूर होने से भी मन के द्वारा इन्द्रियों का काम होता ही रहता है, इसलिए जितेन्द्रिय होने के लिए इन्द्रियों से पृथक् होने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि इन्द्रियो को उनके कामो में ही लगाकर मन वश मे आ सकता है। जितेन्द्रिय पुरुष के काम बन्द नहीं हो जाते और न उनमे लोहे की गरम शलाका डालने की आवश्यकता है। उसकी अवस्था ऐसी हो जाती है कि मीठे स्वर से न उसको सुख होता है और कड़वा शब्द उसे दु खदायी प्रतीत होता है। उसकी त्वचा में स्पर्श की शक्ति बराबर स्थिर रहती है। किन्तु न उसे नरम गदेलो से आनन्द आता है और न ही सख्त लकडी व पत्थर पर सोने मे उसे कुछ दु ख प्रतीत होता है। उसकी दृष्टि बदसूरत और सुन्दर वस्तुओ पर एक जैसी पडती है। उसकी जिह्वा को स्वाद चीज की आवश्यकता नहीं होती और न उसे सुगन्धि से खुशी और न दुर्गन्धि में रञ्ज होता है। इन सब इन्द्रियो को केवल साधनमात्र समझता हुआ, ऐसा इन्द्रियजित पुरुष व्यसनो मे दूर रहकर अपने कर्त्तव्य कर्म को ठीक तौर पर पालन कर सकता है।

इन्द्रियों का विषय बन जाना, हमारा कोई उद्देश्य नहीं है। मनुष्य जीवन के परम उद्देश्य की प्राप्ति मे जैसे अन्य अनगिनत साधन हैं, उनमें से पाँच ज्ञानेन्द्रिय भी पाँच प्रकार के साधन मात्र हैं। इस सचाई को न जानते हुए सासारिक विषयो में लिप्त गृहस्थी पुरुष अपनी आयु को खराब कर बैठते हैं। मुझसे एक बड़े माननीय वकील दोस्त की बातचीत हुई। पहले वह मुझ से धर्म विषय पर वार्तालाप करने को तैयार न थे, फिर वह कहा कि आपके मन्तव्य शायद मेरे साथ न मिलें और साथ ही यह भी कहा कि वह बहस न करते हुए, केवल मेरे मन्तव्य सुन लें। इससे उन्हें क्या इन्कार हो सकता था ? मैंने अपने मन्तव्यो की व्याख्या करके जब सुनाई तो वे स्वय बोल उठे कि उनके भी वही मन्तव्य हैं। तब मैंने उनसे कहा कि मेरे साथ मिलकर इन कर्त्तव्यों के फैलाने में सम्मिलित हों। इसका जो उत्तर मेरे माननीय मित्र ने दिया वह मुझे कभी नही भूलेगा—'यह बात चौथे पद की हैं। इन पर अमल ससार के काम समाप्त करके किया जा सकता है।' वह ! कैसे खतरनाक शब्द हैं ! मेरे मित्र युवावस्था में ही हजारो रुपए कमाने और सासारिक प्रतिष्ठा के पीछे भागते हुए ही चल बसे और वह समय न आया जबकि वह ससार के कामों को समाप्त करके परमार्थ कामों मे लगें। कवि ने कैसा ठीक कहा है 'कारे दुनिया कसे तमाम न करद'—'किसी ने दुनिया के काम समाप्त नहीं किए।' दुनिया के काम ससार मे फंसे रहने से कब समाप्त हो सकते हैं ! आज करोड़ों मनुष्य अविद्या में बहे चले जा रहे हैं। वे नही समझते कि भोगो से इन्द्रियो को तृप्त करने के यत्न की आवश्यकता नही है क्योंकि इन्द्रिया कभी तृप्त नहीं हो सकती, विषय रूपी घृत की आहुति इन्द्रियों की इच्छारूपी अग्नि को अधिक से अधिक तेज करती है। इसलिए गृहस्थ ही में इन्द्रिया वश में आ सकती हैं। गृहस्थ आश्रम मे ही मनुष्य मन को जीत सकता है। यदि जगल में जाने से इन्द्रिया वश में आ सकतीं तो जगलियों की वह दशा न होती जो दिखलाई देती है।

इसलिए पाठकगण ! गृहस्थआश्रम के अन्दर ही इन्द्रियों के भोग में सुख और दु ख की भावना को छोडकर अपने मन को वश में करो। तब तुम्हारे जितेन्द्रिय होने में सन्देह न होगा और तब तुम मनुष्य जन्म के कर्त्तव्य कर्मो का पालन करते हुए सच्चे सन्यास के अधिकारी बन सकोगे। परमात्मा अपनी अपार दया से, हमें अपनी ओर खींचने के लिए साधन दर्शाते हैं। क्या हम सब ज्ञानचक्षु रखते हुए भी अन्धे ही बने रहेंगे ? भीतर से आवाज आती है 'नहीं, हमारे ज्ञान नेत्र अवश्य खुलेंगे।'

शब्दार्थ—(श्रुत्वा) सगीत सुनकर, (स्पृष्ट्वा च) सुन्दर पदार्थों को छूकर (दृष्ट्वा च) सुन्दर रूप को देखकर (भुक्त्वा) स्वादिष्ठ पदार्थों को खाकर (घ्रात्वा च) और सुगन्ध पाकर (यो नर) जो नि स्पृह व्यक्ति (न हृष्यति) न तो प्रसन्न होता है और (न ग्लायति) न विकृत पदार्थ पाकर दु ख मानता है (स) वह (जितेन्द्रिय) मनुष्य जितेन्द्रिय (विज्ञेय) समझा जाना चाहिए।

धन्य धन्य हे आर्यसमाज

धन्य-धन्य हे आर्यसमाज।
धन्य-धन्य हे आर्यसमाज॥
सदियो के बन्धन तोडे हैं,
पथ अवरुद्ध विकट मोडे हैं।
भग्न हृदय लाखों जोड हैं,
द्वार मुक्ता के खोले हैं।
तूने तोड अन्ध कपाट॥
धन्य-धन्य हे आर्यसमाज।
तू स्वदेश का सच्चा प्रहरी,
तेरी निष्ठा है अति गहरी।
अनिशय कठिन साधना तेरी,
मानव हित की है जो चेरी।
तू सचमुच स्वदेश सिरताज॥
धन्य-धन्य हे आर्यसमाज।
पद दलितों को गले लगाया,
मातृशक्ति का मान बढाया।
ऊँच-नीच का भेद मिटाया,
सब को श्रेय मार्ग दिखलाया।
'शान्त' किया स्वदेश आवाज॥
धन्य-धन्य हे आर्यसमाज॥

र०—सत्यभूषण "शान्त" वेदालंकार एम० ए०
१२, मुनिरका विहार, नई दिल्ली-६७

सामयिक चर्चा—

चुनाव केवल चुनाव के लिए क्यों ?

—बिशन स्वरूप गोयल

आगामी आम चुनाव की चर्चा आज पूरे देश में जोर-शोर से चल रही है। प्रत्येक राजनीतिक दल चुनाव की दृष्टि से खम ठोंक कर तैयारी में जुटा है। कुछ दल एक-दूसरे से गठजोड़ के प्रयास में हैं तो कोई कोई अकेला चलो रे के सिद्धांत के आधार पर अपनी रणनीति बना रहा है। बहरहाल हर दल के सामने चुनाव और उसमें अपनी विजय का स्वप्न है। इन पार्टियों के नेताओं के सामने एक ही लक्ष्य है कि वह प्रधानमन्त्री का पद कैसे पा सकते हैं? इन पार्टियों के पास कोई ऐसा कार्यक्रम नहीं है जिससे देश को कोई नयी दिशा मिल सके। अपवादों को छोड़ दें तो इन दलों के पास जनता को देने के लिए सत्तादल कांग्रेस से पृथक् या बेहतर अथवा नया कुछ नहीं है। आशय यह है कि सत्तादल कांग्रेस सहित प्रत्येक दल का एक ही राग चल रहा है। यह कहीं लगता ही नहीं कि आगे आगामी चुनाव किसी परिवर्तन या सुधार के लिए होगा, लगता है कि चुनाव महज चुनाव के लिए, औपचारिकता के लिए, खानापूरी के लिए होगा।

सवाल है कि ऐसा क्यों है? देश, समाज और लोकतन्त्र की यह कौन सी व कैसी सेवा है? देश की वास्तविक समस्याओं की तरफ किसी भी दल का ध्यान क्यों नहीं जा रहा? समस्याओं का उचित निदान इलाज करने की बात किसी भी दल को सूझ क्यों नहीं रही? इन सब को केवल कुर्सी क्यों नजर आ रही है? फर्जी और भ्रामक घोषणाओं से मतदाताओं को मूर्ख बनाने का सिलसिला अविराम क्यों चल रहा है? दलों व नेताओं को यह क्यों नहीं दीख रहा कि देश व समाज में टूटन, अलगाव, घृणा, रोटी-कपड़ा-मकान और रोजगार की समस्या दिनोंदिन बढ़ रही है, पिछड़ापन, कर्ज, भ्रष्टाचार बढ़ रहा है?

संविधान की अस्थायी धारा-३७० आज देश के सभी प्रदेशों के लिए अलगाववाद, आतंकवाद की प्रेरणा बन रही है। इसी की बदौलत कश्मीर एक नया, अघोषित पाकिस्तान बनता जा रहा है। हर समुदाय आज एक दूसरे से अधिकाधिक दूर होता जा रहा है क्योंकि देश में अखिल भारतीय नागरिक संहिता नहीं है, हर समुदाय को एक-दूसरे से पृथक् अधिकार हैं। इससे हम में एक राष्ट्र होने की भावना स्थान पा ही नहीं सकती। परिणामतः देश व राष्ट्र कमजोर हो रहा है। जातीय आरक्षण ने हिन्दू समाज में सामाजिक विषमता को और अधिक बढ़ा दिया है। अन्य समुदायों को अपने प्रति भेदभाव किए जाने का अहसास कराया है। इससे परस्पर ईर्ष्या बढ़ रही है। गलत भाषा नीति के कारण प्रदेशों में से इस बात की अनुभूति समाप्त हो रही है कि वे एक-देश, एक-राष्ट्र का हिस्सा हैं। उनमें वैर-विरोध बढ़-फैल रहे हैं। कोटा-परमिट-लाइसेंस-राशन प्रणाली तथा बिक्री कर रुपये के मूल्यानुसार आय कर की सीमा तय न किया जाना, काले धन पर आधारित चुनाव प्रणाली आदि अनेक प्रश्न हैं जिन पर राजनीतिक दलों के स्पष्ट रवैये वाले घोषणा-पत्र की आज महती आवश्यकता है। लेकिन यही वे मूल प्रश्न हैं जिन पर वे लगभग सभी दल मौन रहना जरूरी समझे हुए हैं। सब को अल्पमत के वोट की चिन्ता है। अल्पमत संगठित वोट बैंक बन कर इन्हें अराष्ट्रीय रवैया अपनाए रखने में सफल बना हुआ है। और देश का बहुमत हिन्दू समाज?

अत्यंत खेद का विषय है कि देश का बहुमत हिन्दू समाज राजनीतिक दृष्टि से काहिल सिद्ध हो रहा है। यह धर्म-भीरु और राजनीति से निरपेक्ष बन कर अपनी शक्ति को पहचानने से दूर रहता है। असल में इस बिखरी हुई सुप्त शक्ति-महाशक्ति को कमजोर करने के लिए घुट्टी में यह पिला दिया गया है कि राजनीति से दूर रहो, यह एक घिनौना कार्य है। उस पर तुर्रा यह है कि हिन्दू समाज समग्र एकीकृत कार्यक्रम पर एकल इकाई के तौर पर व्यवहार नहीं कर रहा, अनेक रूपों में बटा हुआ, पृथक्-पृथक् प्रश्नों को लेकर किंकर्तव्यविमूढ़ चिंता में रत है। आज इस समाज का हर व्यक्ति अलग-अलग सोच रहा है कि वोट दे तो किसे दें। इस तरह तो कोई भी लक्ष्य पाया नहीं जा सकता है। वोट और चुनाव तो वस्तुतः एक बहुत बड़े परिवर्तन का साधन व माध्यम बन सकते हैं। लेकिन इसके लिए कहीं कोई इच्छा, समझ या तैयारी दिखाई ही नहीं दे रही है।

कई और भी समस्याओं से हमारे लोकतन्त्र को पाला पड़ रहा है। जैसे कांग्रेस को छोड़कर कोई भी दल इतने व्यापक आधार वाला नहीं है। लोकतन्त्र को वास्तविक अर्थ तभी मिल सकता था अगर देश में मतदाता शिक्षित होते। लेकिन अफसोस की बात है कि इस तरफ सबसे कम ध्यान दिया गया है। देश में शिक्षित लोगों का आंकड़ा बहुत नीचा है। जो पढ़ लिखे हैं भी उनमें राजनीतिक चेतना का सर्वथा अभाव है। लोकतन्त्र के हित में इस तरफ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। कौन ध्यान देगा इस तरफ? क्या वे जो जनता को जागृति से दूर रख कर उसके वोट के बल पर उसे मूर्ख बनाने के सपने देखते रहते हैं? दूसरी तरफ देखिए अशिक्षित व राजनीतिक दृष्टि से चेतनाहीन नागरिकों के लिए मताधिकार की आयु यह कहते हुए घटा दी गई है कि इस आयु तक वे परिपक्व हो जाते हैं परन्तु साथ ही साथ विवाह की आयु को लगातार बढ़ाया जा रहा है यह कहकर कि वे कम आयु में परिपक्व नहीं होते। इसी से शासकों के इरादों का पता चल जाना चाहिए। उनकी नीयत साफ हो जानी चाहिए।

निष्कर्ष यह कि उपर्युक्त प्रकार की मौलिक समस्याओं की तरफ ध्यान दिए बिना चुनाव बेमानी होंगे और उनसे किसी भी सुधार की कोई आशा नहीं हो सकती। चुनाव केवल चुनाव के लिए नहीं होने चाहिए, देश और समाज का वर्तमान व भविष्य सुधारने के लिए होने चाहिए। इस दिशा में देश के बहुसंख्यक हिन्दू समाज की विशेष जिम्मेदारी बनती है। उसे सही सोच के साथ उठ खड़ा होना चाहिए।

—३३१४ बैंक स्ट्रीट करोल बाग
नई दिल्ली-११०००५

सम्पादक के नाम पाठकों के पत्र—

ऋषि-बोधांक

प्रिय भाई सूर्यदेव जी,

नमस्ते!

आशा है कुशल पूर्वक होंगे। मेरा पत्र मिला होगा। खाली पड़ा मैं 'आर्यसन्देश' का ऋषिबोधांक इस वर्ष का ध्यान से पढ़ गया तो बहुत प्रसन्नता हुई। इतना सुरुचिपूर्ण अंक निकालने पर आपके सहयोगियों को बधाई।

आचार्य द्विजेन्द्रलाल जी का श्लोक, नाथूराम शंकर की प्रसिद्ध कविता और सारस्वत मोहन जी की कविता बहुत अच्छी लगीं।

स्व० डा० सत्यकेतु जी की मार्मिक कथा, उनके लेख से प्रकट हो रही है—क्या इन लाइन्स पर कोई संगठन यह काम करायेगा?

प० भवानीलाल भारतीय जी का अत्यन्त नये अन्वेषणात्मक ढंग से लिखा, नगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय द्वारा लिखित स्वामी जी का जीवनचरित्र एक नई दिशा प्रदर्शित कर रहा है। बहुत ही अच्छा लगा। वैसे ही डा० धर्मपाल जी ने किया मदनगोपाल जी के लेख का अनुवाद बहुत अद्भुत लगा।

हिन्दी साहित्य में स्वामी जी की आत्मकथा और उनके द्वारा लिखे हजारों पत्रों पर जो दो समीक्षात्मक लेख छपे हैं—बिल्कुल नये विषयों को छू रहे हैं। स्व० आचार्य चमूपति जी का ऋषिदर्शन पर बरसों पहले पढ़ा था—आज भी पढ़ा है—अत्यन्त हृदयस्पर्शी है। इतने सुन्दर विशेषांक के लिए फिर एक बार बधाई।

शरीर कमजोर बहुत है—लिखने में भी कष्ट होता है—पर यह पत्र लिखे बगैर मैं रह नहीं सका। प्रभु आप को दीर्घायु और सुन्दर स्वास्थ्य प्रदान करें कि आप निरन्तर ऋषि के कार्य में उन्नति करते रहें।

शुभकामनाओं के साथ
आपका भाई
सत्यदेव विद्यालंकार
मकान नं० ३१, ग्रेटर कैलाश १
नई दिल्ली ११००४८

आर्यसमाज क्या है ?

□ श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष, वैदिक शोध संस्थान नजीबाबाद (उ० प्र०)

किसी संस्था को समझने के लिए उसके संस्थापक को समझना अत्यावश्यक है। यही बात आर्यसमाज के विषय में भी चरितार्थ होती है। आर्यसमाज को समझना हो तो पहले आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती को समझना पडेगा। महर्षि दयानन्द को समझे बिना आर्यसमाज को नहीं समझा जा सकता।

महर्षि दयानन्द को समझने के लिए आवश्यक है, उनके मन्तव्यों को समझना। किसी व्यक्ति को चाहे वह साधारण हो अथवा असाधारण तब तक नहीं समझा जा सकता, जब तक उसके मन्तव्यों को न समझ लिया जाय।

जिन महापुरुषों ने अपने पीछे अपना कुछ साहित्य छोडा है, उन्हें समझने के लिए उनके साहित्य का अध्ययन करना अत्यावश्यक है। उनके साहित्य में उनका दृष्टिकोण होता है, वह दृष्टिकोण उनके ग्रंथों के अध्ययन से अध्ययन करने वाले को प्राप्त होता है।

यदि किसी महापुरुष का साहित्य उपलब्ध न हो, उसने साहित्य-रचना की हो न हो तो उसका जीवन चरित्र भी उस महापुरुष के मन्तव्यों की जानकारी करा देता है। परन्तु तब, जब किसी निष्पक्ष लेखक के द्वारा वह लिखा गया हो। यदि किसी पक्षपाती तथा मतवादी स्वार्थी लेखक के द्वारा वह लिखा गया हो तो उसमें लेखक द्वारा स्वमान्यताओं का मिश्रण कर दिया गया होगा तथा स्व स्वार्थों की सिद्धि के लिए उसमें अनेक अनर्गल बात भर दी गयी होंगी। ऐसी स्थिति में कभी-कभी तो वास्तविकता का पता लगाना और तथ्य को जानना तथा समझ पाना अत्यन्त कठिन हो जाता है

महर्षि दयानन्द के जीवन-चरित्र के विषय में ऐसी बात नहीं है। एक तो उसका प्रारम्भिक कुछ अंश स्वयं महर्षि द्वारा वर्णित है। दूसरे जो महर्षि चरित्र के सर्वप्रथम लेखक थे, वह न तो कभी महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में आये थे और न उनके द्वारा संस्थापित आर्यसमाज से उनका कोई सम्बन्ध था। सम्बन्ध तो दूर रहा उनको महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के विषय में कोई जानकारी भी नहीं थी।

महर्षि दयानन्द के देह त्याग के के पश्चात् ब्राह्म समाज के नेता श्री केशवचन्द्र सेन बंगाली ने उन्हें महर्षि के विषय में तथा उनके कर्तव्य और व्यक्तित्व के विषय में कुछ बात बतायी थीं, जिन्हें सुनकर उन्हें ऋषि के विषय में विशद जानकारी प्राप्त करने की धुन सवार हुई थी। उस धुन में उस बंगाली युवक ने अपनी जीवन भर की अर्जित की हुई समस्त सम्पत्ति होम दी। जहां जहां ऋषि के जाने और जिस-जिस से भेंट व वार्ता करने का उसे पता चलता गया, वह युवक वहीं-वहीं गया और उन लोगों से मिला, जिनसे महर्षि से भेंट और वार्तालाप हुआ था। इस प्रकार उसने तथ्यों की जानकारी प्राप्त कर ऋषिवर की जीवन-गाथा का संकलन किया यद्यपि इस कार्य में उसके स्वास्थ्य का भी विनाश हो गया। जिस व्यक्ति ने अपना स्वास्थ्य और जीवन भर की कमायी इस कार्य के लिए होम दी, वह स्वार्थी तो हो नहीं सकता। ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से उसका सम्बन्ध तो क्या परिचय भी नहीं था, इसलिए पक्षपाती भी वह नहीं था। उस धुन के धनी युवक का नाम था देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय।

ऐसी स्थिति में, जब लेखक का न तो स्वार्थ हो और न उसमें पक्षपात हो, जीवन चरित्र में न तो वह अपनी मान्यताएं भर सकता है और न अनर्गल बातों का प्रवेश कर सकता है। वह तो सत्य की खोज करने वाला होता है। अतः सत्य का ही वर्णन करता है। हां कभी-२ किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा किसी बात को अपने स्वभाव के अनुसार बढा चढा कहने के कारण कुछ भ्रान्तियां हो जाना सम्भव हो सकता है किन्तु ऐसा सम्भावनाएँ कम ही होती हैं और कुछ हो भी जाय तो भी उन से तथ्य पर पर्दा नहीं पड सकता अपितु ध्यानपूर्वक आद्योपान्त पढने से तथ्य उजागर हो ही जाता है।

इतने पर भी ऋषि दयानन्द का विपुल साहित्य उपलब्ध है, जिसका अधिकांश भाग उनके जीवन काल में ही प्रकाशित हो चुका था। सहस्रश पृष्ठों और विविध विषयों के अनेक ग्रन्थों के रूप में लिखे गये उनके साहित्य के अध्ययन से उनके मन्तव्यों का पता लग जाता है।

उन मन्तव्यों के अनुसार ही आर्यसमाज का कार्यक्रम है, अभिप्राय यह है कि उन मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार के लिए ऋषिवर ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में आर्यसमाज की स्थापना की थी। इस प्रकार से आर्यसमाज अपने संस्थापक महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार का संस्थान है और इसे इसी रूप में समझा जाना चाहिए। जो लोग आर्यसमाज को इस रूप में नहीं समझते, वह भूल करते हैं, महती भूल ऐसी भूल जो न तो उनके स्वयं के लिए हितकारक है और न मानव समाज की हितसाधक।

यदि आर्यसमाज के सदस्य बन जाने वाले भी इस भूल में फंसे हैं तो और भी खेद जनक बात है और साथ ही भय यह है कि ऐसे लोगों की संख्या वृद्धि के साथ साथ आर्यसमाज पथ भ्रष्ट हो जायेगा। वर्तमान समय में ऐसा परिलक्षित भी होने लगा है और उसका कारण है उपर्युक्त प्रकार के सदस्यों की संख्या वृद्धि।

इस प्रकार के सदस्यों की संख्या वृद्धि हो जाने से समाजों की संख्या की वृद्धि भी हो जायेगी, किन्तु वह ऋषिवर दयानन्द की आर्यसमाजें न होंगी। वह या तो मतवादियों की साम्प्रदायिक दृष्टिकोण वालों की समाज होगी और या फिर ऐसे लोगों की समाज, जिन्हें कहीं न कहीं किसी न किसी प्रकार एकत्र होकर अपना समय बिताना था, और किसी नाम से न सही—आर्यसमाज के नाम से सही। एक क्षेत्र मिल गया, जन सहयोग भी मिला, नेतागिरी भी मिली और इस प्रकार व्यापक रूप से मन बहलाव होने लगा। न स्वयं के जीवन में सुधार आया और न स्व-परिवार में, समाज की तो बात ही क्या कहनी ?

आर्यसमाज क्लब नहीं है

ऐसे लोग कहीं भी जायें ? किसी भी संस्था में जायें ? किसी भी नाम से संगठित हों, मन-बहलाव के साधनों तक ही सीमित रहते हैं। खेल, नाटक, भोज इत्यादि उनका मिशन होता है उनके सामने न सिद्धान्त होता है न तथ्यान्वेषण। न वह तथ्य और सिद्धान्त को जानते हैं और न जानना चाहते हैं। भोज अर्थात् खाने-पीने के नाम पर धन भी बढ़-चढ़ कर देते हैं और इस कार्य के लिए परिश्रम भी करते हैं। तो फिर खाने-पीने में पीछे रहने का तो प्रश्न ही क्या ?

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के नाम पर समाज भवनों में नाटक और लडकियों के नृत्यों के आयोजन भी बहुत बढ-चढ कर करते और कराते हैं और आगे बढे तो किसी राजनीतिक नेता का स्वागत समारोह समाज भवन में करा दिया उसे मान-पत्र दे दिया और बस छुट्टी। यह सब कार्य क्लबों के हैं आर्यसमाज के नहीं। इनसे आर्यसमाज का दूर का भी सम्बन्ध नहीं। यह सब कार्य उन्हीं के द्वारा होते हैं, जिन्होंने न तो ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र पढा, न उनके ग्रन्थों का अध्ययन किया फलतः जिन्होंने ऋषिवर के मन्तव्यों को नहीं समझा। कहना यह चाहिये कि ऐसे लोग आर्यसमाज के सदस्य तो जिस किसी प्रकार बन भी गए। आर्यसमाज को केवल क्लब की भावना से ही स्वीकार किया है और इसी भावना से उस के मंच का उपयोग करते हैं।

आर्यसमाज सम्प्रदाय नहीं है

दूसरी प्रकार के लोग वह हैं, जो आर्यसमाज को एक सम्प्रदाय मात्र समझते हैं। इन्होंने भी न तो ऋषिवर दयानन्द का जीवन चरित्र पढा और न उनके द्वारा लिखे हुए किसी ग्रन्थ को ही पढा। पढना क्या ? ऋषि के ग्रंथ न देखे और न उनको यह पता कि उन्होंने कोई ग्रन्थ लिखा है। कुछ को ऋषि के लिखने की जानकारी तो है किन्तु उनके मुख्य ग्रंथों—संस्कारविधि और सत्यार्थप्रकाश के नाम तक ज्ञात नहीं।

ऐसे लोग आर्यसमाज को केवल हवन सम्प्रदाय समझते हैं। नयी दिल्ली में एक आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष महोदय कहने लगे 'स्वामी जी हम तो यज्ञ...।'' मैंने उनकी बात को मध्य में ही काटकर कहा, "आप तो यज्ञ क्या ? यज्ञ शब्द के अर्थ भी नहीं जानते। केवल घी सामग्री जला देने का नाम यज्ञ नहीं है।" भला जिसे यज्ञ शब्द के अर्थ नहीं आते, वह यज्ञ कैसे हो सकता है। "यजमानो वै यज्ञ" यजमान को

(शेष पृष्ठ ५ पर)

दयानन्दो मोक्षात्

रचनाकार—आचार्य विश्वश्रवा 'व्यास'
प्रस्तोता—कुमार पाल 'विद्यार्थी' साधु आश्रम, अलीगढ

दयानन्दो मोक्षात् वदति सकलानार्यप्रवरान्,
पिताऽमाता त्यक्तौ गृहमपि च त्यक्तं प्रियतमम् ।
सुहृद्भिर्यत्राहं विविध-बहु-क्रीडारतिपर,
न जाने कोऽकार्षीत् मृतकपरिदाहं मम पितुः ॥१॥

भावार्थ—स्वामी दयानन्द मोक्ष से सब प्रमुख आर्य भाइयों को सन्देश भेज रहे हैं कि मैंने माता-पिता भी छोडे, और अपना सब से प्यारा घर भी छोडा जहा मैं अपने मित्रों के साथ खेला करता था। पता नहीं कि मेरे पिता जी का अन्त्येष्टि संस्कार किसने किया होगा क्योंकि कोई भाई नहीं था। दो भाई मर चुके थे और मैं घर से निकल आया ॥ १ ॥

तपस्तप्तं घोरं हिमगिरि गुहायामचिरतम्,
बुभुक्षाया शान्ति प्रति-दिनमकार्षं हिमकणैः ।
प्रभुर्ध्याता सम्यग्गिरिशिखरतटे योगविधिना,
कृता विद्या प्राप्तुं गुरुचरणसेवाऽपि हि मया ॥२॥

भावार्थ—मैंने हिमालय की गुफा में बैठकर भयंकर तप किया। और अपनी भूख को बर्फ खा-खाकर मिटाया और पर्वत के तट पर बैठकर योगाभ्यास से भगवान का ध्यान भी किया और विद्या प्राप्त करने के लिए गुरुओं की चरण सेवा भी की ॥ २ ॥

विषं दत्तं घोरं तदपि न शान्तो मे रिपुगणः,
समाजाद् मे शिष्यान् कुटिलपुरुषा बाह्य दधुः ।
तथा यूयं सर्वे मम कथितकार्ये नहि रता,
रता यूयं सर्वे प्रकृत्युपकारे प्रतिदिनम् ॥३॥

भावार्थ—भयंकर विष देकर मार दिया तो भी दुश्मनों को शान्ति नही हुई। और मेरे बनाये आर्यसमाज से मेरे शिष्यों को बाहर निकाल दिया। प० भीमसेन शर्मा, प० अखिलानन्द शर्मा, भाई परमानन्द, लाला लाजपतराय, श्याम जी कृष्ण वर्मा तथा राजा लोग आर्यसमाज से पृथक् हो गये और तुम मेरे बताये मार्ग पर नहीं चल रहे हो, तुम सब परोपकार के काम में लग गये हो ॥ ३ ॥

चिकित्सा या पूर्वं स्वपरवशे देशे प्रकथिता,
सखण्डे स्वाधीने नहि किमपि भिन्ना मम मतम् ।
समी भाषाधर्मौ कुरुत निजदेशे पुनरपि,
उपायो नान्योऽस्ति त्यज च विषमां संस्कृतिमधो ॥ ४ ॥

भावार्थ—पराधीन विशाल भारत की आजादी के लिए जो इलाज मैंने तब बताया था। वही इलाज इस खण्डित स्वतन्त्र भारतवर्ष में है। वह यह है कि जो भी देश शेष रह गया है। इसमे एक भाषा, एक धर्म, एक संस्कृति, सभ्यता की स्थापना करो इसके अलावा कोई उपाय है ही नहीं ॥ ४ ॥

पराधीनो मोक्षे न मम जनिरामोक्षसमयम्,
कथं ब्रूयां युष्मान् मम कथित-मार्गादपगतान् ।
ममासीद्यं स्वप्नं मम सकलदेशं पुनरपि,
अपूर्वं साम्राज्यं भजतु विपरीतं समभवत् ॥ ५ ॥

भावार्थ—मैं मोक्ष मे पराधीन हू। जब तक मेरी मोक्षावधि समाप्त नहीं होती तब तक मेरा जन्म नहीं हो सकता इसलिए मेरे मार्ग से हटे हुए तुम लोगों को मैं कैसे कहू। मेरा जो स्वप्न था कि विशाल अखण्ड भारत चक्रवर्ति साम्राज्य को प्राप्त कर ले सो वह उल्टा हो गया ॥ ५ ॥

स्थितं मोक्षे जीव सकलमपि पश्यन्नवचनं,
वृथा प्राप्तो मोक्षं जननमिह लोके प्रियतरम् ।
प्रभुर्दद्यादाज्ञाममृतगतितो जन्म धरितुम्,
तदाहं नेतृत्वं सकलभुवि कुर्याम् पुनरपि ॥६॥

भावार्थ—मोक्ष में रहने वाला जीव किसी लोक में जा सकता है। किसी देश में जा सकता है और सब कुछ देख सकता है, पर बोल नहीं सकता मैं बेकार मोक्ष में आया, इस संसार में जन्म ही अच्छा था। परमात्मा से प्रार्थना है कि मुझे मोक्ष से छुडाकर जन्म धारण करने की आज्ञा दे दें तो फिर सारे संसार का नेतृत्व करके दिखला दू। उस समय तो तुमने मुझे जहर देकर मार डाला। अन्यथा मैं अकेला ही सब कुछ कर लेता ॥ ६ ॥

(पृष्ठ ४ से आगे)

यज्ञ होना ही चाहिये, किन्तु जो व्यक्ति यज्ञ शब्द के अर्थ नहीं जानता, वह यज्ञ (अग्निहोत्र) की प्रक्रियाओं की संगति नहीं लगा सकता, उन्हें समझने और उनकी संगति लगाने की योग्यता तो दूर है, वह यज्ञ कैसे हो जायेगा ? उसका जीवन यज्ञमय कदापि नही बन सकता। वह तो साम्प्रदायिक है, नितान्त साम्प्रदायिक। वह समझता है कि आर्यसमाज हवन करने करने वालों का संगठन है और किसी प्रकार उसके मस्तिष्क मे यह बात बैठ गयी है कि हवन करना धर्म है और इसके करने से मोक्ष या स्वर्ग अर्थात् परमात्मा मिल जाता है। बस वह हवन में श्रद्धा रखने लगा, वह श्रद्धा जो वास्तव मे श्रद्धा नही अपितु अन्ध विश्वास है।

हवन करना श्रेष्ठ कर्म है, महान् श्रेष्ठ कर्म है और तथ्य यह है कि हवन मानव मात्र के द्वारा किया जाना चाहिए। इससे सुगन्ध का प्रसारण और दुर्गन्ध का निवारण होकर न केवल मनुष्य जाति का अपितु प्राणि मात्र का लाभ और हित सिद्ध होता है। यह परोपकार का परमोत्कृष्ट साधन है, परन्तु सुगन्ध का प्रसारण तो अग्निहोत्र की क्रियाओं को बिना किये सुगन्धित द्रव्यों को जलाकर भी किया जा सकता है। जब सुगन्ध का प्रसारण होगा तो उसके परिणामस्वरूप दुर्गन्ध का निवारण भी हो जायेगा। परन्तु यज्ञ का एक अंश अर्थात् सुगन्धि फलाने का यज्ञ (शुभ कर्म) हो जायेगा, किन्तु यज्ञमय जीवन "यजमानो वै यज्ञ", जो यज्ञ का वास्तविक लाभ है वह नही हो पायगा। साम्प्रदायिक भावना व अभिरुचि की पूर्ति हो जायेगी, किन्तु धार्मिक जीवन नही बन पायगा।

पंजाब के जालन्धर नगर की एक समाज के प्रधान ने आर्यसमाज भवन मे दैनिक यज्ञ के प्रसंग मे कहा कि "यदि यहा आकर नित्य यज्ञ न करें तो आर्यसमाज बसाना ही व्यर्थ हुआ।" मैंने उन से निवेदन किया कि यह आर्यसमाज नहीं है। बिगडकर बोले, "मैं बाइस वर्ष पाकिस्तान में (पाकिस्तान बनने से पहले उस क्षेत्र मे जो पाकिस्तान में चला गया है) आर्यसमाज का प्रधान रहा हू। और छ वर्ष से यहां प्रधान हूं।" मैंने कहा, "मुझे यही तो आश्चर्य है कि अट्ठाइस वर्ष आर्यसमाज के प्रधान रहकर यह भी नहीं जान सके कि आर्यसमाज किसे कहते है ?"

जो व्यक्ति इतनी लम्बी अवधि आर्यसमाज के उत्तरदायी पद पर रह कर आर्यसमाज के अर्थ नहीं समझा और जिसे आर्यसमाज और आर्यसमाज मन्दिर का अन्तर तक ज्ञात नहीं, जो भवन को ही सच्चा समझता है, क्या वह आर्यसमाजी कहलाने का अधिकारी है ? नहीं, कदापि नहीं। वह तो साम्प्रदायिक है, नितान्त साम्प्रदायिक और आर्यसमाज भवन में साम्प्रदायिक भावना से ही आकर दैनिक अग्निहोत्र में सम्मिलित हो जाता है। आर्यसमाज के मन्तव्यों को समझने की योग्यता से रिक्त है। आर्यसमाज के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ऐसे व्यक्ति से कोई आशा करना दुराशा मात्र है।

मेरा अभिप्राय यह नही कि आर्य समाज मन्दिर में यज्ञ न किया जाए, किन्तु मैं यह कहना चाहता हूं कि आर्यसमाज मन्दिर आर्यसमाज का कार्यालय है, आर्यसमाजियों का सभा भवन है। घर में तो यज्ञ न किया जाय, जिसका स्वयं आर्यसमाज के संस्थापक ऋषिवर दयानन्द ने "पञ्च महायज्ञ विधि, संस्कारविधि, सत्यार्थप्रकाश और "ऋग्वेदादि-भाष्य भूमिका" में वर्णन व विधान किया है, आर्यसमाज मन्दिर मे आकर यज्ञ कर लिया जाय। क्या यह ऋषिवर दयानन्द के दृष्टिकोण (अन्धपरम्परा के खण्डन) के विरुद्ध उल्टा उस ऋषि के ही मिशन मे काबे में कुफ्र के समान अन्ध परम्परा चलाना नही है ? और क्या इस प्रकार की भावना, अभिरुचि और दृष्टिकोण रखने वाले लोग आर्यसमाजी कहलाने के अधिकारी हैं ?

वास्तविकता यह है कि आर्यसमाजी बनने वाले लोग पौराणिक घरों से ही आते हैं। उनके वही अन्धपरम्परा वाले अन्धविश्वासी संस्कार होते हैं। यदि आर्यसमाज में प्रवेश के समय ही उन्हे महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र अथवा वैचारिक क्रान्ति का स्रोत उनका सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश पढने को मिल जाता है या फिर जो सत्यार्थप्रकाश को पढकर ही आर्यसमाजी बनते हैं तो उनके अन्धविश्वासी संस्कार समाप्त हो जाते हैं और वह अन्धपरम्पराओं से सर्वथा मुक्त हो जाते हैं।

इसका कारण यह है कि वह महर्षि के दृष्टिकोण और आर्यसमाज को समझ गये होते हैं। ऐसे लोग कहीं भी जायें, किसी भी क्षेत्र मे रहें, वह न तो कभी अन्धविश्वासों में फसते हैं और न किसी के कहने से बहकते हैं। वास्तविक अर्थों में वही आर्यसमाजी कहलाने के अधिकारी होते हैं।

आर्य जगत के समाचार

डा० कपिलदेव द्विवेदी लन्दन विश्वविद्यालय द्वारा आमंत्रित

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान तथा गुरुकुल महाविद्यालय हरिद्वार के कुलपति एवं विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर के निदेशक डा० कपिलदेव द्विवेदी को लन्दन विश्वविद्यालय ने विशेष व्याख्यान देने हेतु आमन्त्रित किया है। आप २ मई को होने वाले इस विशेष समारोह में वेदों के अनुसार वायुप्रदूषण की समस्या का निराकरण" विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। इसी अवसर पर इग्लैंड के अन्य विश्वविद्यालयों, आर्यसमाजों तथा अन्य संस्थाओं ने भी आपको व्याख्यान देने हेतु आमन्त्रित किया है।

डा० द्विवेदी भारतीय संस्कृति के प्रचारार्थ प० जर्मनी एवं हालैंड भी भी जाएंगे जहां विभिन्न विषयों पर अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत करेंगे।

वेद संस्कृत साहित्य, संस्कृत-व्याकरण और भाषा-विज्ञान पर आपकी ७० से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा अनेक पुस्तकों पर आपको सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जा चुका है। आप संस्कृत साहित्य एवं वेदों के अन्तर्राष्ट्रीय विद्वानों में से एक हैं। डा० द्विवेदी के संस्कृत के श्लोक 'वाइस आफ जर्मनी' से कुछ महिनों से प्रसारित हो रहे हैं। आप आकाशवाणी के गणतन्त्र दिवस के कवि सम्मेलन में संस्कृत भाषा का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं, विभिन्न विषयों पर आपकी वार्ताएं प्रसारित होती रहती हैं।

डा० द्विवेदी तीन मास की यात्रा पर २४ अप्रैल को नई दिल्ली से इग्लण्ड, जर्मनी, हालैंड के लिए प्रस्थान कर रहे हैं। आपकी इस यात्रा से विदेशों में भारतीय संस्कृति का प्रचार होगा ऐसी कामना है।

डा० बालकृष्ण अकिंचन वैदिक पुस्तकालय का उद्घाटन

आर्यसमाज सी-ब्लाक, जनकपुरी ने अपने नवम वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनांक १६ अप्रैल को— डा० बालकृष्ण अकिंचन वैदिक पुस्तकालय' की स्थापना की है। इस निमित्त स्व० अकिंचन जी को पत्नी श्रीमती शारदा देवी व अकिंचन परिवार ने आर्यसमाज को— २१,०००/- रु० का दान दिया है। पुस्तकालय के उद्घाटन समारोह में श्री सतपाल आर्य ने अध्यक्षता की। डा० राजेन्द्रसिंह वत्स (प्रिंसिपल, मोतीलाल नेहरू कालेज) श्री सूर्यदेव (महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), श्री ब्रह्मदत्त स्नातक आदि ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

लगभग दस मास पूर्व (२० ६ ८८ को) स्वर्गीय 'अकिंचन" प्रात. नित्य नियमानुसार घूमने निकले थे। सड़क पर रात की आंधी से गिरा हुआ एक पेड़ देखा जिससे यातायात और आवागमन में बाधा पड़ रही थी। सेवा और उपकार की भावना से प्रेरित होकर वे उस पेड़ को हटाने का प्रयास कर रहे थे कि सामने से आती हुई एक बस की लपेट में आ गये। उन्हें अस्पताल पहुंचाया गया। वहां उनके प्राण पखेरू हो गये।

नम्रता की प्रतिमूर्ति "अकिंचन" जी दिल्ली के मोतीलाल नेहरू कालेज में वर्षों से हिन्दी का अध्यापन कर रहे थे। वे कुशल अध्यापक तो थे ही, किन्तु इससे अधिक उनका व्यक्तित्व मानवीयता और सहृदयता से परिपूर्ण था।

सुन्दर नगर (हि० प्र०) में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज सुन्दरनगर कालोनी हिमाचल में आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के तत्वावधान में २ से ९ अप्रैल तक एक आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। सभा प्रधान श्री कृष्ण लाल आर्य द्वारा ध्वजारोहण के साथ इस शिविर का शुभारम्भ हुआ तथा ९ अप्रैल को हिमाचल प्रदेश के समाज कल्याण मन्त्री श्री चौधरी पीरूराम जी समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे। प्रान्त के लगभग चालीस आर्यवीरों ने इस शिविर में भाग लिया।

युवकों के प्रदर्शन से समाज कल्याण मन्त्री बड़े प्रभावित हुए। उन्होंने चार हजार रुपये सहयोग के रूप में देने की घोषणा की तथा इस बात पर बल दिया कि ऐसे शिविर प्रत्येक गांव में ग्राम पंचायतों के सहयोग से लगाए जाने चाहिए। उन्होंने अपनी ओर से हर प्रकार के सहयोग देने का आश्वासन भी दिया। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज ही आज देश को चारित्रिक पतन से बचा सकता है।

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन में

वार्षिक साधना शिविर

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन देहरादून का वार्षिक सत्संग, साधना शिविर तथा बृहद् यज्ञ दिनांक २४ अप्रैल से ३० अप्रैल ८९ तक आयोजित किया जा रहा है।

इस अवसर पर स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, डा० रामप्रसाद वेदालंकार, प० पृथ्वीराज शास्त्री आदि विद्वान् पधार रहे हैं।

सरधना (मेरठ) में आर्य महासम्मेलन

देश में धर्म परिवर्तन की प्रवृत्ति की वृद्धि एवं राष्ट्रीय भावना के ह्रास को देखते हुए आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला मेरठ की ओर से दिनांक २१, २२ व २३ मई को सरधना (मेरठ) में आर्य महासम्मेलन आयोजित किया जा रहा है।

चुनाव सम्पन्न—

आर्यसमाज परमानन्द बस्ती (रथखाना)

आर्यसमाज परमानन्द बस्ती (रथखाना), बीकानेर के वार्षिक अधिवेशन में निम्नलिखित चुनाव सम्पन्न हुआ।

प्रधान डा० रवीन्द्र कुलश्रेष्ठ
उप-प्रधान डा० शिवनारायण आर्य
" डा० सत्यदेव
" श्रीमती पद्मावती
मन्त्री : डा० जयकृष्ण
उप-मन्त्री श्री सहदेव
" श्रीमती द्रौपदी देवी
कोषाध्यक्ष श्री छगनलाल आर्य
पुस्तकालयाध्यक्ष श्री सीताराम

आर्य प्रतिनिधि सभा (आ.प्र.)

आर्य प्रतिनिधि सभा, हैदराबाद का नय वार्षिक साधारण सभा के अधिवेशन में निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

प्रधान श्री रामचन्द्र राव कल्याणी
उप प्रधान श्री द्विजेन्द्र रेड्डी
" के० वी० रेड्डी
" डा० गोविन्द राव मोके
मन्त्री श्री विट्ठलराव
उप-मन्त्री श्री वेम्न धनैनी
" श्री विश्वास राव
" श्री वी० एस० गुप्ता
" श्री धर्मतेजा
कोषाध्यक्ष श्री नारायणराव पवार
पुस्तकाध्यक्ष श्री आर० रामचन्द्र कुमार

आर्यसमाज हौजखास

आर्यसमाज हौजखास, नई दिल्ली १६ का वार्षिक चुनाव दिनांक ९ अप्रैल ८९ को निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधान—श्री विद्यासागर
उपप्रधान—श्री प० नरेन्द्र विद्यावाचस्पति
उपप्रधान—श्रीमती शशी गुप्ता
मन्त्री—श्री धर्मवीर गुप्त
उपमन्त्री—श्रीमती पवित्रा देवी
कोषाध्यक्ष—डा० बनवारीलाल गुप्त

आर्यसमाज मानसरोवर पार्क

आर्यसमाज मानसरोवर पार्क, शाहदरा, दिल्ली का वार्षिक निर्वाचन निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री जगदीशप्रसाद शर्मा
उपप्रधान—श्री डा० वेदप्रकाश
उपप्रधान—श्री नारायणदासगुप्त
मन्त्री—श्री कमलसिंह
उपमन्त्री—श्री मोरध्वज शर्मा
कोषाध्यक्ष—श्री दीपचन्द गुप्त

'आर्यसन्देश' के
—स्वयं ग्राहक बनें।
—दूसरों को बनायें॥

'आर्यसमाज' के
—स्वयं सदस्य बनें।
—दूसरों को बनायें॥

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Post in N D P S O on 27 28-4 89 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३९

श्रीमती जावित्री देवी दिवंगत

सहस्रों नवयुवकों के प्रेरक और मार्गदर्शक तथा महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के मिशन के लिए जीवन समर्पित करने वाले आर्य-पुरुष स्व० प० देवव्रत धर्मेन्दु "आर्योपदेशक" की सहधर्मिणी श्रीमती जावित्री देवी का २१ अप्रैल ८९ को प्रातः ४ बजे देहावसान हो गया।

२१ अप्रैल को अन्त्येष्टि के समय, २२ अप्रैल को आर्य अनाथालय में शांति यज्ञ के समय तथा २३ अप्रैल को आर्यसमाज दीवानहाल में आयोजित शोक सभा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधिसभा, आर्यसमाज दीवानहाल, आर्य अनाथालय और सम्बन्धित संस्थाएँ, आर्य युवक परिषद तथा अन्य अनेक आर्य संस्थाओं के अधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं ने भावभीनी श्रद्धाजंली अर्पित की।

स्व० प० देवव्रत धर्मेन्दु जी और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जावित्री देवी जी दोनों ही सदैव युवकों में वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के कार्यों में लगे रहते थे। दोनों धार्मिक शिक्षक रहे आर्य प्रचारक रहे। निस्सन्तान होते हुए हजारों बालक-बालिकाओं को पुत्र पुत्री के समान प्यार देकर वैदिक धर्म की ओर अग्रसर करते रहे और अपनी सात्त्विक जमा पूंजी से सदैव खुले हाथों दान देते रहे, और अपनी अंतिम यात्रा से पूर्व 'अपना सब-कुछ' आर्य अनाथालय और उससे सम्बन्धित संस्थाओं को सौंप गये।

शालीनता विनम्रता और सहृदयता की साक्षात् मूर्ति श्रीमती जावित्री देवी के देहावसान पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्यसन्देश परिवार अपनी भाव-भीनी श्रद्धांजली प्रस्तुत करता है तथा परमात्मा से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

राष्ट्रीय एकता के प्रवर्त्तक...

(पृष्ठ १ से आगे)

समापन करते हुए डा० धर्मपाल ने कहा कि यदि जो जो अच्छी बात विद्वान् वक्ताओं ने बतायी हैं वे सही हैं तो कभी भी किसी प्रकार का वैमनस्य होना ही नहीं चाहिए, पर फिर भी साम्प्रदायिक झगड़े होते हैं। ये झगड़े वहां और भी ज्यादा होते हैं, जहां पर दो विभिन्न धर्मावलम्बियों की शक्ति, राजनैतिक और आर्थिक दृष्टि से सन्तुलन बनाए होती है। हमें प्रयास करना चाहिए कि हम 'धर्म' के मार्ग पर चलें और धर्म का मार्ग सदा एक ही होता है, उसका कोई विकल्प नहीं होता, वह सत्य पर आधारित होता है वह सबके लिए एक सा होता है और उस में संसार का कल्याण निहित होता है। □

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ . अक २६ रविवार ७ मई १९८९ वैशाख शु० २ सम्वत् २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द—१६५ सृष्टि सवत् १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश मे ५० पौंड, १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के वर्तमान स्वरूप को पंजाब के हिन्दू स्वीकार नहीं करेंगे

पंजाब प्रान्तीय आर्य सम्मेलन में

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की सिंह गर्जना

जालन्धर २३ अप्रैल। आज ठीक ९ बजे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के नव निर्मित भवन तथा यज्ञशाला का उदघाटन करने जालन्धर पहुचे।

स्वामी जी के वहा पधारने पर श्री वीरेन्द्र जी के नेतृत्व मे पजाब के वरिष्ठ आर्य बधुओ न स्वामी जी का भव्य स्वागत किया। स्वामी जी महाराज ने हाथ म जल कलश लेकर वेदमन्त्रो के उच्चारण के साथ यज्ञशाला का उदघाटन किया। इस अवसर पर पजाब के वरिष्ठ आर्य नेता अमृतसर जालन्धर, गुरुदासपुर लुधियाना होशियारपुर फगवाडा तथा मोगा आदि अनेक स्थानो से बडी सख्या मे पधारे हुए थे। इस सम्मेलन मे श्री स्वामी सुमेधानन्द जी ने अपने आशीर्वाद वचनो से आर्यसमाज के सगठन की एकता की कामना की। इसके उपरान्त श्री वीरेन्द्र जी ने निम्न प्रस्ताव प्रस्तुत किया जो सर्वसम्मति से पारित हुआ।

प्रस्ताव

पजाब इस समय अपने इतिहास के अत्यन्त चिन्ताजनक और विचलित युग मे से गुजर रहा है। कई विदेशी शक्तियो द्वारा आयोजित व प्रोत्साहित षडयन्त्र के अनुसार पजाब मे विघटनात्मक स्थिति पैदा करने और उत्तर भारत को और अधिक विभाजित करने का प्रयास हो रहा है। पजाब और जम्मू काश्मीर दोनो ही इस समय अत्यन्त व्याकुल व अशात स्थिति मे है।

यद्यपि प्रधानमन्त्री कई बार कह चुके हैं कि वह भारत के सविधान की सीमाओ मे रहकर पजाब की समस्या का समाधान ढूढने को तैयार हैं परन्तु अकालियो ने बार बार यही कहा है कि वह केवल आनन्दपुर साहिब के प्रस्ताव के आधार पर ही बात कर सकते हैं।

यह सम्मेलन पजाब की समस्या के शीघ्र से शीघ्र समाधान की कामना करता है। परन्तु इसी के साथ यह भी स्पष्ट कर देना चाहता है कि आनन्द साहिब का प्रस्ताव उसके वर्तमान स्वरूप मे पजाब के हिन्दुओ को किसी भी स्थिति म स्वीकार न होगा। हिन्दू अकालियो के साथ बात करने के विरुद्ध नही है वह तो यह भी चाहेगे कि सिक्खो की यदि कोई न्यायसगत माग है वह भी जहा तक सम्भव हो स्वीकार कर लेनी चाहिए। परन्तु किसी भी स्थिति म पजाब के हिन्दू आनन्दपुर साहिब के प्रस्ताव को अकालियो के साथ बातचीत का आधार मानने को तैयार न होगे। अकालियो की पहली मागो की तरह आनन्दपुर साहिब का प्रस्ताव भी पजाब के एक और विभाजन का आधार बन सकता है।

यदि अकाली ईमानदारी म पजाब का स्थायी समाधान चाहते है तो उन्हे पहले पजाब के हिन्दुओ के साथ इस विषय म बात करनी चाहिए। और पजाबियो की सयुक्त माग सरकार के सामने रखनी चाहिए। आनन्दपुर साहिब का प्रस्ताव पृथक्वादिता साम्प्रदायिकता और अकालियो की सकीर्णता का प्रतीक है पजाब के हिन्दुओ को यह किसी स्थिति म भी स्वीकार न होगा। हमे आशा है और विश्वास है कि प्रधानमत्री अकालियो के इस दबाव के आगे न झुकेगे और आनन्दपुर साहिब के प्रस्ताव के आधार पर अकालियो से कोई बात नही करेगे। पिछले ४० वर्ष का इतिहास साक्षी है कि सरकार हमेशा अकालियो के दबाव के आगे झुकी है और उसने हिन्दुओ की न्यायोचित माग भी स्वीकार नही की सरकार की इस आत्मनाशी नीति ने न केवल पजाब को एक अद्वितीय सकट म डाल दिया है बल्कि सारे देश पजाब का एक और विभाजन की सम्भावना म चिन्तित है। इसलिए यह सम्मेलन पजाब सरकार और भारत को चेतावनी देना चाहता है कि वह अकालियो के आगे घुटने टेक नीति को त्याग दे वरना तो इसका परिणाम अत्यन्त हानिकारक होगा। □

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव
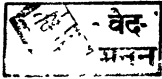
उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

इन्द्रियाणा तु सर्वेषा यद्येक क्षरतीन्द्रियम।
तेनास्य क्षरति प्रज्ञा दृते पात्रादिवोदकम् ॥

—मनु० २।९९

किसान अपने खेत को सींचने के लिए चरस मोल लेता है, चारों तरफ से देख-भालकर उसका सौदा करता है। अगर एक भी छेद चमड़े में हो तो उसे परे फेंक देता है, फिर अच्छा चरस लगाकर किस आनन्द से कुँआ चलाता है और अपने खेत को पानी देता है। परन्तु ज्यों ही उस चरस में एक छेद हो जाता है त्यों ही किसान निराश हो जाता है। एक छोटा सा सुराख यदि असावधानी से छोड़ दिया जाय तो कुछ समय के पश्चात सारे चरस में छेद-ही-छेद हो जाते हैं और अधिक समय नहीं व्यतीत होता कि दूसरे नये चरस की आवश्यकता होती है। लगभग यही अवस्था इन्द्रियों की है। एक इन्द्रिय के भी अन्दर यदि छेद हो जाय और उसका झुकाव अपने विषय की ओर हो तो दूसरी इन्द्रियां अपने विषय की ओर जाने से रुक नहीं सकतीं। उसका परिणाम अन्ततः यह होता है कि मनुष्य की सारी बुद्धि नष्ट हो जाती है। जड़ चरसा और मानवीय बुद्धि के अन्दर अन्य बातें तो मिल जाती हैं किन्तु एक अन्तर रहता है। जड़ चरसा यदि बिगड़ जाए तो दूसरा नया बाजार से मिल सकता है परन्तु इन्द्रिय एक बार खराब हो जाए तो फिर नहीं मिल सकती और न उनकी जगह नई इन्द्रियां मिल सकती हैं। यदि कभी नई इन्द्रियां चाहे जबरदस्ती से पैदा की जाएँ और उनके छिद्र चाहे बन्द भी कर दिए जाएँ फिर भी उनकी तुलना पवित्र शुद्ध इन्द्रियों की असली अवस्था के साथ नहीं हो सकती। तब सब इन्द्रियों को वश में रखना कैसा आवश्यक है यह जतलाने की आवश्यकता नहीं है।

संसार में होता क्या है? अटल सच्चाई की उपस्थिति में और उसको अनुभव करते हुए भी मनुष्य इस पर आचरण करने में अपने को असमर्थ पाते हैं। मैं एक जुडिशियल आफिसर को जानता था जो पंजाबभर में सच्चा और निधड़क प्रसिद्ध था। एक बार एक खास मुकद्दमा उसके न्यायालय में पेश था। एक पक्ष की ओर से उसके पिता महाशय ने सिफारिश की। जुडिशियल आफिसर ने पिता की सिफारिश की कुछ परवाह न करते हुए, मुकद्दमे का निर्णय अपनी बुद्धि के अनुसार न्यायपूर्वक किया। यह जुडिशियल आफिसर बहुत शराब पीने वाला भी था और साथ ही विलासी जीवन व्यतीत करने का आदी था। इन सब निर्बलताओं तथा दुर्गुणों के होते हुए भी उसकी प्रतिष्ठा मेरे दिल में उसके सत्यप्रिय होने के कारण से थी। अन्त में वह प्रतिष्ठा मुझे अपने दिल से दूर करनी पड़ी। एक बार उसका एक शराबी मित्र एक संगीन मुकद्दमे में पकड़ा गया। वही न्यायप्रिय जुडिशियल अफसर जिसने अपने पिता की सिफारिश की कुछ परवाह न की थी, अपने हमप्याला दोस्त को बचाने के लिए झूठी गवाही पैदा करते हुए मैंने देखा और उस कोशिश में उसने अपने मित्र को बचा भी लिया। परन्तु क्या उसके पश्चात् वह सचाई पर स्थिर भी रह सका? उसका जीवन जवाब देता है कि कदाचित नहीं। मैंने ऐसे जुडिशियल अफसर भी देखे हैं जो मुकद्दमा में अपने लिए तो रिश्वत नहीं लेते परन्तु जिन अच्छी संस्थाओं के साथ सहानुभूति हो उनके लिए धन देने-वालों के साथ खास रियायत करते हैं। क्या एक मनुष्य जो कामी है कभी भी सत्यवादी हो सकता है? और क्या एक पुरुष जिसे जिह्वा का व्यसन है कभी भी स्पर्श-दोष से मुक्त हो सकता है? एक इन्द्रिय की गिरावट शेष सब इन्द्रियों को ले डूबती है। कल्पना करो कि तुम्हारे दस नौकर हैं अगर उनमें से एक भी आज्ञाकारी न रहे तो क्या दूसरों पर तुम्हारा दबाव रह सकता है? किन्तु यदि इनमें से एक भी तुम्हारे वश में आ जावे तो उसका दृष्टान्त दूसरों को काबू में रखने में तुम्हें मदद देता है। एक इन्द्रिय के भी बेबस होने को साधारण बात न समझो क्योंकि एक के विचलने से सब विचल जाते हैं। आज मनुष्यों की दिमागी तरक्की को देखकर हम सब मोहित हो जाते हैं और यह समझ लेते हैं कि आला-दिमाग मनुष्यों की बदइखलाकियाँ ध्यान में लाने के योग्य नहीं है और इसलिए उनके अनुकरण में स्वयं आलादिमाग बनने का यत्न करते हैं। इस रीस ने संसार को नष्ट कर दिया है। अगर कोई पापी मनुष्य उच्च मानसिक शक्ति रखने वाला है तो यह मत समझो कि पाप मनुष्य को गिराता नहीं है, बल्कि यह समझो कि अगर वह मनुष्य पापी न होता तो उसका दिमाग और भी उच्च और साथ ही शुद्ध भी होता। उच्च-से-उच्च दिमाग संसार के नाश का कारण है यदि उसके साथ पवित्रता सम्मिलित नहीं है।

प्रिय पाठकगण! आज से तुम सब इन्द्रियों को एक साथ वशमें करनेका साधन करो तब तुम्हारी बुद्धि स्वच्छ रहेगी। वह स्वच्छ बुद्धि तुम्हें रास्ते के हरेक गढे में और प्रत्येक ठोकर से सावधान करेगी, ताकि तुम असावधान होकर कहीं विषयों के गुलाम बनकर इधर-उधर मारे-मारे न फिरो। तब संसार अपने असली स्वरूप में तुम्हारे सामने आयेगा और प्रलोभनों की यथार्थता दिखला सकेगा, जिनमें फसकर आज तक बहुत-से अमृतपुत्र नष्ट हो चुके हैं। परमात्मन्! हम मलिनहृदय अल्प हैं, हमारी शक्ति अल्प और हमारा ज्ञान भी अल्प है। आप ज्ञान के भण्डार हो, हम सबके अन्दर ऐसी प्रेरणा करो कि हम पाप-कर्मों से सच्ची घृणा का भाव अपने अन्दर पैदा करके धर्म, अर्थ और मोक्ष के भागी बनने के लिए सच्चा प्रयत्न करते रहा करें।

शब्दार्थ—(यदि) अगर (सर्वेषा) मनुष्य की सब (इन्द्रियाणा तु) इन्द्रियों में से तो (एकम इन्द्रियम) एक भी ज्ञानेन्द्रिय (क्षरति) विषय भोग में पड़कर पथ-भ्रष्ट हो जाती है (तेन) तो उसके प्रभाव से (अस्य) इस मनुष्य की (प्रज्ञा क्षरति) बुद्धि भी भ्रष्ट हो जाती है जैसे कि (दृते पात्रात) फटी हुई मशक से (उदकमिव) पानी बह जाता है।

वेदानुकूल कर्मशील होना ही जीवन है

—देवेन्द्र कुमार

तच्चक्षुर्देवहितम पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत। पश्येम शरद शत जीवेम शरद शत शृणुयाम शरद शतम प्रब्रवाम शरद शतम अदीना स्याम शरद शत भूयश्च शरद शतात।

अर्थ—(तत् चक्षु) उस परोक्ष अदृष्ट परन्तु दूरदर्शी चक्षु परमात्मा ने (पुरस्तात) पहले ही (देवहित) दिव्य शक्तियों को प्रेरित करनेवाली (शुक्रम) बीज शक्तियों को (उच्चरत) अंकुरित कर दिया है अर्थात जीवधारियों के स्वभाव में शक्तियों का बीज डाल दिया है। अतः हम मनुष्यों का कर्तव्य है कि (पश्येम शरद शतम) सौ वर्ष पर्यन्त ज्ञान शक्तियों का विकास करें। (जीवेम शरद शतम) सौ वर्ष तक जीवन को उस ज्ञान के अनुकूल विकसित करें। (शृणुयाम शरद शतम) सौ वर्ष तक वेद को सुनें। (प्रब्रवाम शरद शतम) सौ वर्ष तक वेदों का प्रचार करें। (अदीना स्याम शरद शतम) आयु भर किसी के पराधीन न रहें। (भूयश्च शरद शतात) इससे अधिक आयु में भी।

व्याख्या—मनुष्य जीवन का बहुत कुछ भाग उसे दाय रूप में प्राप्त हुआ है। हमारे शरीर के समस्त अंग मस्तिष्क, पाँच ज्ञानेन्द्रियां तथा पांच कर्मेन्द्रियां हमें जिस रूप में प्राप्त हुई हैं उनकी प्राप्ति में हमारा कुछ पुरुषार्थ नहीं है। जैसे कुम्हार घड़ा बनाता है तो वह मिट्टी का निर्माण नहीं करता हां मिट्टी से घड़ा बनाना उसके पुरुषार्थ की सीमा के अन्तर्गत है। इसी दृष्टान्त को हम अपने जीवन की प्रगतियों पर घटा सकते हैं किसी मनुष्य की आंख छोटी है नीली है या काले रंग की है, तो इसमें आपका कोई हस्तक्षेप नहीं परन्तु यदि आंखों को हम स्वच्छ नहीं करते उनका उचित प्रयोग नहीं करते तो दोष के भागी हम हैं। आपसे कौन पूछेगा कि अमावस्या की रात का चन्द्रमा क्यों नहीं निकला क्योंकि चन्द्रमा का निकलना आपके आधीन नहीं है परन्तु रात्रि में दीपक जलाना तो आपका कर्त्तव्य है। हमें ईश्वर ने जो शक्तियां प्रदान की हैं उनका पूरा-पूरा उपयोग करना ही हमारे व्यक्तित्व का विकास करना है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

ओ३म्
आर्य सन्देश

धर्म और राजनीति

पिछले काफी दिनो से यह चर्चा चलती आ रही है कि धर्म और राजनीति को अलग रखना चाहिए। इस पक्ष के दो पहलू हो सकते हैं। पहला पक्ष तो यह है कि धर्म और राजनीति का सन्तुलन बनाकर रखा जाए। इसको और स्पष्ट कर सकते हैं कि धर्मानुसार राजनीति की जाये। दूसरा पक्ष है कि धर्म मे राजनीति की जाए अर्थात राजनीतिक उपलब्धियो के लिए धर्म का सहारा लिया जाए। पाठक सुधी विद्वान् हैं। सभी पहले पक्ष को ही वरीयता देंगे। पिछले दिनो दिल्ली मे महावीर वनस्थली का उदघाटन करते हुए भारत के प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी ने कहा था कि साम्प्रदायिक ताकतो ने हमेशा देश को कमजोर करने की कोशिश की है, इसलिए यह आवश्यक हो गया है कि धर्म मे राजनीति का प्रवेश न होने दे। इस बात म सच्चाई है परन्तु कही न कही साम्प्रदायिकता और धर्म के अर्थो को सही रूप मे समझने मे भूल हो गई है। सम्प्रदायिकता निश्चित रूप से विद्वेष फैलाती है। यदि दो या अधिक सम्प्रदाय हैं तो वे आपस मे जरूर लडगे। और यदि वे नासमझ है तो और भी ज्यादा लडेगे परन्तु यदि वे दो या अधिक सम्प्रदाय धर्म के अर्थ को समझते है तो व नही लडगे। धम तो विद्वष नही फैलाता। धम तो एक प्रकार की शक्ति है धर्म तो अभ्युदय और नि श्रयस की प्राप्ति के लिए हमे प्रयत्नशील करता है—यतोऽभ्युदय नि श्रयससिद्धि स धर्म। वैशेषिक दर्शन का यह दूसरा सूत्र है और यही धर्म की असली परिभाषा है। मनु महाराज ने जो धर्म की परिभाषा दी है वह और भी ज्यादा व्यापक है—धृति क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रिय निग्रह। धीर्विद्या सत्यम-क्रोधो दशक धर्मलक्षणम। मनु महाराज ने दस धर्म के उपादान लक्षण गिनाए है। जो व्यक्ति इन लक्षणो को व्यवहार मे लाता है वह धार्मिक है और ऐसा आदमी निश्चय ही किसी भी प्रकार के ईर्ष्या, द्वेष और लडाई से दूर रहेगा। महर्षि दयानन्द ने पूना मे जो भाषण दिए थे उनमे से एक भाषण धर्म के लक्षणो पर भी दिया था। उन्होने इन लक्षणो मे एक और लक्षण जोड लिया था—अहिसा। अहिसा की सार्थकता से आप सभी भली भाँति परिचित हैं। विश्व शाति और भाई चारे के लिए लोगो के मन मे दया ममता करुणा सहनशीलता और पारस्परिक स्नेह का होना अनिवार्य है। ये सब बात धार्मिक मनुष्य मे अवश्य होती है। ये उस हर व्यक्ति मे होती है जो अहिसा मे विश्वास करता है।

इसलिए यह जरूरी है कि हम राजनैतिक न बन बल्कि धार्मिक बन। हमारा जो भी राजकार्य हो वह धर्म पर आधृत हो यदि धार्मिक सगठनो मे राजनीति आती है तो निश्चय हमारा नुकसान है। अहिसा का तात्पर्य यह भी नही है, कि हम अन्यायी के सामने झुक। हमे केवल सही बात को ही मानना चाहिए। □

वेदानुकूल कर्मशील होना

(पृष्ठ २ मे आगे)

जीवन म जितना अश हमे ईश्वर की ओर से प्राप्त है उसके लिए मन्त्र मे 'तच्चक्षु देवहितम पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत इतना अश है। जिसका अभिप्राय हैं कि ईश्वर ने कुछ योग्यताए बीजशक्तियो के रूप म हमारे इस भौतिक शरीर मे स्थापित की हैं। इन बीजशक्तियो का पाने के बाद आगे विकास करना मानव का धम है। आलसी मनुष्य बीज पाकर भी खती नही करता मूख किसान सुविज्ञ किसान की भाति अच्छी उपज नही कर सकता। अत मनुष्य को चाहिए कि वह ईश्वर प्रदत्त शक्तियो का आख खोलकर उपयोग करे। यही मानव जीवन की सफलता है।

मनुष्य के कर्त्तव्यो का विधान करते हुए कहा गया है कि 'पश्येम शरद शतम जीवेम शरद शतम श्रृणुयाम शरद शतम 'प्रब्रवाम शरद शतम अर्थात हमारे नेत्र सौ वर्षो तक दर्शनशक्ति से युक्त हो हमारी आयु सौ वर्ष हो, श्रवण शक्ति सौ वर्ष तक स्वस्थ रहे। वाणी की शक्ति सौ वर्ष पर्यन्त विद्यमान रहे अर्थात सौ वर्ष हमारा जीवन क्रियाशील बना रहे।

सौ वर्ष तक समस्त शरीर एव इन्द्रियो की स्वस्थता की कामना करके वेद ने लोक और परलोक मे हमारे शरीर का महत्त्व प्रतिपादन किया है। जैसा कि कालिदास का कथन है—'शरीर माद्यम खलु धर्मसाधनम शरीर ही धर्म प्राप्ति का प्रथम साधन है अत शरीर का महत्त्व वैदिक विचारावलि मे भी अपरिहाय है। भगवद प्राप्ति बिना स्वस्थ शरीर के सम्भव नही इसीलिए सम्पूर्ण वैदिक साहित्य म ब्रह्मचर्य एव व्यायाम तथा आसन आदि पर बल देकर शरीर को पुष्ट एव बलवान बनाने का निर्देश दिया गया है।

मध्यकाल मे भारत मे शरीर की उपेक्षा करके केवल आत्मा के विकास पर ही बल दिया गया था जो नितान्त एकागी होने क कारण हानिकारक सिद्ध हुआ। विदेशी आक्रान्ताओ ने भारत स्वाधीन कर लिया। इसी दृष्टिकोण के परिप्रेक्ष्य मे भारत मे ऐसे पन्थो एव मतो का उदय हुआ जिन्होंने प्रकृति को महत्त्वहीन समझकर ब्रह्म को ही समस्त महत्त्व दे डाला। परिणामत भारत वर्ष की भौतिक समृद्धि शून्य हो गई। वस्तुत यह वैदिक विचार नही था। वैदिक सिद्धान्त मे तो शरीर आत्मा के विकास का साधन है क्योकि शरीर आत्मा का यन्त्र है, प्रकृति ब्रह्म तक ले जाना वाला सोपान है। प्रकृति स विमुख होकर ब्रह्म का साक्षात्कार असम्भव है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने शारीरिक उन्नति क महत्त्व को स्वीकार करते हुए कहा है कि ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक आत्मिक एव सामाजिक उन्नति करना। सबसे पहला स्थान शारीरिक उन्नति को प्राप्त है। इहलोक परित्याग कर परलोक की कामना निरथक है। रामधारीसिंह क ामनद विषयक विचार निम्न हैं—

ईश्वरीय जग भिन्न नही
इस गोचर धरना से।
इसी अपावन मे अदृश्य
वह पावन रमा हुआ है॥

भ्रान्ति नही अनुभूति
जिसे ईश्वर हम सब कहन है
शत्रु प्रकृति का नही
न उसका प्रतियोगी प्रतिबल है।
किसने कहा तुम्हे परमेश्वर
और प्रकृति य दोनो
साथ नही रहते
जिसको भी ईश्वर तक जाना है।
उसे तोड लेने होग
सारे सम्बन्ध प्रकृति स
और प्रकृति के रस म
जिसका अन्तर रमा हुआ है
उसे और जो मिले किन्तु
परमेश्वर नही मिलेगा?
मध्यान्तर मे दह और
आत्मा के जो खाई है
अनुल्लघनीय वह नही
प्रभा के पुल म सयोजित है।

इन्द्रिया की स्वस्थता की कामना करके वेद ने मनुष्य का कर्मशील होने का सन्देश भी दिया है। सक्रियता ही तो जीवन का सन्देश है। चलना जीवन है ठहरना मृत्यु है। सृष्टि का प्रत्येक अवयव गति शील हो तो मानव ही गति शून्य क्यो रहे—

चरन व मधु विन्दति
चरन वै स्वादुमुम्बरम।
सूयस्य पश्य श्रमाण
यो न तन्द्रयते चरन॥

अदीना स्याम शरद शतम मन्त्राश हमे स्वाभिमानपूवक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देता है। मानव पवित्र एव शक्ति ना परमात्मा की सर्वोत्तम कृति है फिर दीन हीन रहे ना क्यो? प्रत्यक प्राणी का इस ससार म महत्त्व है तथा किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए ही वह पृथ्वी पर आया है ऐसी भावना करके हम जीवन जियेग तो कभी हीनता के भाव पैदा न होगे।

अन्तिम मन्त्राश भूयश्च शरद शतात स कामना की गई है यदि सौ वर्षो से भी अधिक आयु प्राप्त हो तो भी हम क्रियाशीलता का ही जीवन व्यतीत कर।

—आयसमाज रावतभाटा
वाया कोटा (राजस्थान)

आर्यसमाज सभी का हितैषी है

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

जो लोग आयसमाजी नही बने है वह आयसमाज को अपना विरोधी समझते हैं। चाहे वह हिन्दू हो अथवा मुसलमान ईसाई हो जैनी हो अथवा सिक्ख हो पारसी आदि कोई भी हो किन्तु इसमे नाम मात्र की भी सचाई नही है। सत्य तो यह है कि आयसमाज सभी लोगो का समस्त ससार का ही नही अपितु विश्व ब्रह्माण्ड और न केवल मनुष्य मात्र का अपितु प्राणि मात्र का हितैषी है।

आयसमाज के सस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के शब्दो मे ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

विज्ञ पाठक विचार कर कि ससार का उपकार करना जिस सस्था का मुख्य उद्देश्य हो वह ससार की हितैषी है अथवा नही और उससे बढकर सबका हितैषी और कौन हो सकता है ? और फिर ससार के उपकार की बात कहना एक अलग बात है किन्तु उपकार कैसे हो सकता है यह दूसरी बात। आयसमाज के स्वनाम धन्य सस्थापक ने तो ससार के उपकार का प्रकार अर्थात उसके सूत्र भी आयसमाज के उपयक्त नियम ही मे बता दिये है।

पहला सूत्र है शारीरिक उन्नति करना। शारीरिक से अभिप्राय है स्वास्थ्य सम्बन्धी। आयसमाज गुरुकुल शिक्षा पद्धति द्वारा बालको मे ब्रह्मचय का पालन कराके और जीवन मे सयमपूवक रहने के सस्कार डालकर शारीरिक उन्नति का सूत्र लागू करना चाहता है। इससे शारीरिक दृष्टि से हृष्ट पुष्ट मानवो का निर्माण होगा। स्वस्थ मानव सन्तानोत्पत्ति करने और वह भी स्वस्थ सन्तान की उत्पत्ति करने मे समर्थ होना है।

इस नियम का दूसरा सूत्र है आत्मिक उन्नति करना। गुरुकुलीय शिक्षा के द्वारा बालक बालिकाओ मे आध्यात्मिक भूख जागृत की जाती है। उन्हे ईश्वर का ध्यान अर्थात सन्ध्या करनी सिखायी जाती है और ईश्वर के वास्तविक स्वरूप की जानकारी कराया जाता है।

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के दूसरे नियम मे परमात्मा के स्वरूप की सक्षिप्त जानकारी करा दी है। वह नियम निम्नलिखित है—

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान न्यायकारी दयालु अजन्मा अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार सर्वेश्वर सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी अजर अमर, अभय नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।

विश्व मानवता परमात्मा के नाम पर भटक तथा बहक रही है। महर्षि दयानन्द ने उक्त नियम मे बताया है कि वह सत-चित-आनन्द स्वरूप है। सत वह सदा रहता है और उसमे कोई परिवर्तन नही होता तथा वह चित चेतन है ज्ञानी है और उसका स्वरूप आनन्द है। आनन्द देखने की नही अनुभूति की वस्तु है अतएव उसके दर्शन का नही अपितु उसके स्वरूप (आनन्द) के अनुभव का प्रयत्न करना चाहिए वह नेत्रो द्वारा नही अपितु मन से होगा। क्योकि आनन्द की अनुभूति मन का विषय है इन्द्रियो का नही।

दूसरी बात बताई है परमात्मा के निराकार होने की। निराकार अर्थात जिसका कोई आकार कोई डील डौल न हो और डील डौल न होना तब जब शरीर न होगा। इसका अर्थ है कि वह शरीरधारी नही है और जो शरीरधारी नही है उसकी मूर्ति नही बनाई जा सकती। इससे यह सिद्ध हुआ कि मूर्ति पूजा निरर्थक है। आगे कहा गया है वह सर्वशक्तिमान है अर्थात अपने कर्तव्य कर्मो मे किसी के सहयोग की उसे आवश्यकता नही और न किसी उपकरण की आवश्यकता है। वह न्यायकारी है अर्थात जैसा जो करता है वैसा ही भोगता है। वह न तो किसी को छल देता है और न अकारण दुख रूप दण्ड तथा सुख रूप पुरस्कार।

वह दयालु है उसके स्वभाव मे निर्दयता नही है। वह अजन्मा है अर्थात उसका न कभी जन्म हुआ और न होगा। कुछ लोग परमात्मा को अवतार लेने वाला अर्थात समय-समय पर जन्म धारण करने वाला कहते हैं। यह उनकी भ्रान्ति है। वह परमात्मा बिना जन्म लिये अशरीरी रहते हुए जड चेतनमय विश्व ब्रह्माण्ड को उत्पन्न कर इसकी व्यवस्था बनाये रखता है और जीवात्माओं द्वारा मानव शरीर धारण कर किये गए समस्त अच्छे-बुरे कर्मो की व्यवस्था रखकर उन्हे उसमे से प्रत्येक को स्व-स्व कर्मानुसार विविध योनियो और जन्म-जन्मान्तरो मे भेजकर यथायोग्य कर्मफल रूपी भोग प्रदान करता है, वह अपने ही उत्पन्न किये किसी व्यक्ति को मारने के लिए जन्म ल अर्थात बिना शरीर धारण किये उसे मार भी न सके यह नितान्त नासमझी की बात है। वह अजन्मा ही है अजन्मा ही रहेगा। न उसने कभी जन्म धारण किया है न भविष्य मे कभी जन्म लेगा।

वह अनन्त है अर्थात उसका कभी अन्त नही होगा। वह पहले भी था, सृष्टि की उत्पत्ति से पहले भी था अब भी है भविष्य मे भी रहेगा! अनन्त अर्थात असीम भी है कही उसका अन्त नही होता अर्थात सीमा समाप्त नही होती। निर्विकार है उसमे विकार विकृति अर्थात बिगाड नही होता। वह सदैव एक रस बना रहता है। प्रलय काल मे भी ऐसा ही था अब भी ऐसा ही है और भविष्य मे भी ऐसा ही—जैसा अब है—ज्यो का त्यो बना रहेगा।

वह अनादि है। उसका आदि अर्थात प्रारम्भ कभी नही था। इसी कारण से उसे अनादि तत्व कहा जाता है। उसकी उपमा का अर्थात उस जैसे गुण-कर्म-स्वभाव युक्त अन्य कोई तत्व नही है इसलिए वह अनुपम है वह सर्वाधार—सबका आधार सबका आश्रय सबका सहारा है और सबका धारण करने वाला है विश्व ब्रह्माण्ड को उसी ने धारण किया है। सर्वेश्वर= सबका ईश्वर सबका सबसे श्रेष्ठ शासक अर्थात न केवल मनुष्यो अपितु मनुष्यो मे जो शासकगण हैं उनका भी शासक है। मनुष्यो का ही शासक नही अपितु समस्त जड-चेतनादिको पर उन सबसे श्रेष्ठ शासक का शासन है।

वह सर्वव्यापक=सबके न केवल प्राणि मात्र के अपितु अप्राणि अर्थात जड पदार्थों के भीतर भी व्याप रहा है और समस्त जड-चेतनादिको से बाहर जो आकाश और जो अन्तरिक्ष है उसमे भी व्याप रहा है। इसी कारण समस्त जड-चेतन के भीतर की स्थिति को भी जानता है और इस समस्त जड चेतन के भीतर की स्थिति का जानने के कारण उसे सर्वान्तर्यामी कहते हैं।

वह अजर हैं, उसे कभी जरा, वृद्धावस्था नही सताती। वृद्धावस्था शरीर मे व्यापती है। परमात्मा क्योकि अशरीरी है, इसलिए उसे वृद्धावस्था प्राप्त होने का प्रश्न ही नही उपस्थित होता। जरा का अर्थ जीर्णता भी है। परमात्मा के अशरीरी होने से उसमे जीर्णता को अवसर ही नही है। जीर्णता अर्थात् निर्बलता भी शरीर के जीर्ण होने पर प्रकट होती है। वह अमर है अर्थात मरता कभी नही क्योकि शरीर नही है। अत जीर्णता नही आती और जब जीर्णता ही नही आती तो मृत्यु भी नही आ सकती। मृत्यु नाम भी जीव शरीर के सम्बन्ध विच्छेद होने का है। परमात्मा का शरीर ही नही तो विच्छेद किसका होगा ? अत वह अमर है। वह अभय भी है। भय होता है अपने से शक्तिशाली अथवा अपन समान से। परमात्मा से न कोई शक्तिशाली है और न कोई उसके समान एतदर्थ उसे भय नही होता।

वह नित्य अर्थात सदा और प्रत्येक समय रहने वाला है। ऐसा कोई समय नही बीता जब परमात्मा नही था। अब भी वह है और भविष्य मे भी वह सर्वदा रहेगा अतएव वह नित्य है। वह पवित्र है—इतना पवित्र कि कोई भी किसी भी प्रकार की अपवित्रता उसे नहीलगती। अपवित्रताये लगती हैं शरीर मे वह है शरीर रहित। अत उस पर अपवित्रताओ का लगाव नही होता इसीलिए उसे निर्लेप कहते हैं, वही सृष्टिकर्ता अर्थात सृष्टि का उत्पन्न करने वाला है अतएव उसी की उपासना करनी योग्य है—अन्य की नही! इस प्रकार परमात्मा के स्वरूप को समझ कर उपासना करने से ही आत्मिक उन्नति होती है अन्य प्रकार से नही। इस प्रकार से आत्मोन्नति किये हुए व्यक्तियो के द्वारा जो समाज बनेगा वह आचार-विचार से पवित्र होगा। दूसरे इस प्रकार से शारीरिक और आत्मिक उन्नति किये हुए व्यक्ति ही समाज को उन्नति की ओर अग्रसर कर सकते

आर्यसमाज का आठवा नियम है "अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। अविद्या का नाश होगा ही विद्या की वृद्धि से। विद्या की वृद्धि के प्रकार हैं—विद्यालय, पुस्तकालय, उपदेश आदि। आर्यसमाज अपनी स्थापना के समय से ही प्रत्येक प्रकार से विद्या की वृद्धि मे लगा है। उसने भारत और भारत से बाहर विदेशो मे भी सहस्रो की सख्या मे प्राथमिक विद्यालयो से लेकर महाविद्यालय तक खोले हुए है। लडको और लडकियो दोनो के लिए पृथक-पृथक लगभग १०० गुरुकुल खोले हुए हैं सहस्रों पुस्तकालय और वाचनालय आर्यसमाज मन्दिरो मे स्थापित किये हुए हैं। दर्जनो पत्र पत्रिकाये आर्य समाज की शिरोमणि सभाओ द्वारा तथा अनेक अन्य आर्यसमाजी विचार की सस्थाओ द्वारा प्रकाशित हो रहे है। जहा-जहा आर्यसमाज हैं वहा वहा वर्ष मे एक बार अथवा एक मे अधिक बार सत्सगों का आयोजन कर और विद्वानो का उस आयोजन मे आमन्त्रित कर प्रवचनो द्वारा सर्वसाधारण को विद्या (ज्ञान) दान किया जाता है। यह सभी आर्य समाज के सर्वहितैषी होने के प्रमाण है।

आर्यसमाज के नोवे नियम मे महर्षि ने यह विधान कर कि प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।' आर्यसमाज के सभी के हितैषी स्वरूप को नितान्त उज्ज्वल कर दिया है। आर्यसमाज के दसवें नियम में प्रत्येक हितकारी नियम में सबकी स्वतन्त्रता की चर्चा करके भी सर्व हितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहने का विधान किया है।

पाठकगण! यह सम्पूर्ण विवेचन यह सिद्ध करने को पर्याप्त है कि आर्यसमाज सर्व हितैषी सस्था है वह कोई सम्प्रदाय मत या पन्थ नही है।

आर्यसमाज—आर्यसमाज ही है

प्रिय पाठकगण! अपने पूर्व लेख म हमने यह चर्चा की है कि आर्यसमाज न तो क्लब है और न सम्प्रदाय है। ऊपर आर्यसमाज के सर्व-हितैषी रूप का भी सक्षिप्त वर्णन कर दिया है अब हम यह कहना चाहते हैं कि आर्यसमाज—आर्य समाज ही है।

आपने इससे पहले स्तम्भ म आर्यसमाज के सर्व हितैषी स्वरूप की थोडी सी चर्चा पढी है। सबका हित चिन्तन और सर्वहित कारक कार्यों को वही लोग करते है जो आर्य होते हैं। यह भी कहा जा सकता है कि आर्यत्व परहित-चिन्तन और परहित साधन मे ही निहित है। स्व-हित तो पशु-पक्षी तथा अनार्य मनुष्य सभी करते हैं। आर्य शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ। जो परहित चिन्तन और परहित साधन न करे वह आर्य कहलाने का अधिकारी नही हो सकता।

परहित-चिन्तको और परहित साधको से मिलकर बना हुआ समाज—आर्यसमाज कहलाता है। आर्यसमाज का छठा नियम इसकी स्पष्ट घोषणा कर रहा है— ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है न केवल उद्देश्य अपितु मुख्य उद्देश्य है। इसका अर्थ यह है कि आर्यसमाज की स्थापना महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ससार के उपकार के लिए ही की थी।

आर्य शब्द सस्कृत की ऋ गतौ धातु से बना है। जिसमे गति हो, जो आगे बढने के लिए उत्तरोत्तर प्रयत्नशील हो वह आर्य है अर्थात आर्य का अर्थ है प्रगतिशील। इस प्रकार आर्यसमाज का अर्थ हुआ प्रगतिशील उन्नतिशील लोगो का समाज। उन्नति दोनो प्रकार की होती हैं भौतिक और आध्यात्मिक भी। अतएव आर्यसमाज का अर्थ हुआ उत्तरोत्तर आध्यात्मिक और भौतिक दोनो प्रकार की उन्नति करने वालो का समाज। इसी प्रकार का समाज श्रेष्ठ व्यक्तियो का समाज कहलाता है।

आर्यसमाज के ९वे नियम मे यह कहकर कि प्रत्येक को अपनी ही उन्नति मे सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए। परहित साधन तथा परोपकार को प्राथमिकता तथा स्व-हित पर परहित को वरीयता प्रदान कर दी है। इस प्रकार आर्यसमाज ऐसे लोगो का समाज है कि जो स्वय तो आध्यात्मिक और भौतिक उन्नति करे ही इस लोक और परलोक साधन मे, इस लोक के साथ-साथ परलोक साधन मे भी परम पुरुषार्थ करे ही, किन्तु अन्यो के हित के लिए भी पूर्ण सामर्थ्य के साथ जुटे रहें।

फिर ऋषि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के तीसरे नियम मे 'वेद का पढना-पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म' बताया है, क्योकि वह वेद को सब सत्य विद्याओ का पुस्तक मानते हैं। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि ऋषिवर मानवमात्र की उन्नति का साधन वेद को मानते है। ऐसी स्थिति मे समस्त आर्य जनो और सामूहिक रूप से आर्यसमाजो का परम कर्त्तव्य हो जाता है कि वह यथासम्भव स्वशक्ति के अनुसार वेद के अध्ययन और उसके प्रचार-प्रसार मे जुट जाये। यही आर्यसमाज का वास्तविक कार्य है इसी म विश्व मानवता का भला होगा।

यही आर्यसमाज है और यही आर्यसमाज का वास्तविक स्वरूप है। इसीलिए हम यह कहते है कि आर्यसमाज—आर्यसमाज ही है न क्लब है और न सम्प्रदाय मत पन्थ आदि है।

आर्यसमाज के द्वारा किये जाने वाले अन्य समस्त सेवा कार्य तो सम सामयिक अल्पकालिक और वेद को जनमानस तक पहुचाने के लिए साधन तथा जनसम्पर्क के सेतु मात्र हैं।

अध्यक्ष—वैदिक सस्थान नजीबाबाद उ० प्र०।

नव उन्नति की परिभाषा में

—आचार्य डा० रविदत्त शर्मा

कुछ कहा नही जा सकता है मानव का इतिहास बने।
नव-उन्नति की परिभाषा मे सम्भव है पतन का ग्रास बने॥

जिह्वा का स्वाद बिगडने स मधु हुआ कटु मृदु भी कठोर।
दृष्टि भी शक्ति खो बैठी अधियारी रजनी लगे भोर।
आजीवन तृप्ति नही होती पानी ही जिसकी प्यास बने।
नव उन्नति की परिभाषा मे सम्भव है पतन का ग्रास बने।

कहना कुछ है करना कुछ है यह भी तो एक समस्या है।
धन्धा जितना आगे बढता, वह उतनी बडी तपस्या है।
ऐश्वर्य के बढते साधन ही सुख का मूल विनाश बने।
नव-उन्नति की परिभाषा मे सम्भव है पतन का ग्रास बने।

इस भौतिकता की चकमक ने चेतना को चकनाचूर किया।
निज आत्मा को ठुकराने को नर शिरोमणि मजबूर किया।
इन्द्रिय आराधना के साधन, सुख के बाधक और त्रास बने।
नव-उन्नति की परिभाषा मे सम्भव है पतन का ग्रास बने।

जो श्रेयमार्ग का साधक है, नही प्रेय उसे फुसला सकता।
हर श्वास प्रभु को अर्पित कर, आनन्द अलौकिक पा सकता।
जिसको जीवनधन पाना हो, 'रवि' क्यो भोगों का दास बने।
नव उन्नति की परिभाषा मे, सम्भव है पतन का ग्रास बने।

—सबलपुर, पो० टांडा अफजल (मुरादाबाद)

प्रवेश आरम्भ

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर जिला जालन्धर (गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार से स्थायी मान्यता प्राप्त) मे नये छात्रो का प्रवेश १० जून ८९ मे आरम्भ हो रहा है। सरकारी स्कूलो मे पढाये जाने वाले हिन्दी गणित अंग्रेजी, विज्ञान समाज शास्त्र आदि सभी विषयो के साथ सस्कृत तथा धर्म शिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढाई जाती है।

नि शुल्क शिक्षा, हिन्दी माध्यम योग्य परिश्रमी अध्यापक, स्वच्छ वातावरण सात्त्विक भोजन दूध व आवास की बिना किसी मासिक शुल्क के समुचित व्यवस्था शुद्ध दूध की उपलब्धि के लिए गुरुकुल की अपनी गऊशाला इस गुरुकुल की अपनी विशेषताए है।

प्रवेश के लिए छात्र का हिन्दी माध्यम से कक्षा पाच पास होना आवश्यक है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आस्था रखने वाले सज्जन आचार्य, गुरुकुल से मिल अथवा पत्राचार करे।

आर्य जगत के समाचार

योग शिविर—

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ तल्ला (नैनीताल) उ० प्र० मे योगशिविर का आयोजन १७ मई से २४ मई ८९ तक किया जा रहा है।

इस आश्रम की स्थापना महात्मा नारायण स्वामी जी ने १९२० मे की थी। यह स्थान हिमालय की पहाडियो के मध्य नदी के किनारे अति रमणीक स्थल पर स्थित है।

शिविर मे सम्मिलित होने वाले साधक पत्र द्वारा सूचना भेजे।

वेद प्रचार मण्डल दिल्ली देहात द्वारा प्रचार कार्य

वेद प्रचार मण्डल, दिल्ली देहात के तत्वावधान मे संस्था के अध्यक्ष प० उदय श्रेष्ठ के प्रयासो से दिल्ली के गावो मे वेद प्रचार का कार्य बडे शानदार ढग से चल रहा है। १ जनवरी १९८९ से अब तक पालम कालोनी नवीन रोशनपुरा नगर नजफगढ, नगली सकरावती नागलोई, हौजरानी महावीर एन्क्लेव पालम गाव, महरौली डेरा आर्य समाज महरौली मे विशेष यज्ञ तथा अनेको सम्मेलन आयोजित किए गये हैं। सभी कार्यक्रमो मे स्वामी स्वरूपानन्द जी डा० धर्मपाल आर्य, प० वेदपाल शास्त्री आचार्य सुनीति आर्या आचार्य विद्यारत्न श्रीमती सुषेष आर्य श्रीमती शकुन्तला आर्य श्री जय भगवान भारतीय, श्री श्यामसुन्दर गुप्ता, पं० क्षेत्रपाल आर्य आदि विद्वानो के भाषण प्रवचन व भजन होते रहे है।

वार्षिकोत्सव—

आर्यसमाज पंजाबी बाग (विस्तार)

आर्य समाज पजाबी बाग (विस्तार) नई दिल्ली २६ का वार्षिकोत्सव दिनाक २९ अप्रैल से ७ मई ८९ तक बड़े समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। प्रतिदिन प्रात काल प्रभात फेरी और यज्ञ तथा रात्री मे भजनोपदेश तथा स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती मनोहारी कथा कर रहे है।

रविवार ७ मई को प्रात यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात नवनिर्मित यज्ञशाला का उदघाटन किया जाएगा। समारोह की अध्यक्षता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती करगे। अनेक गणमान्य आर्य विद्वान् और नेता इस अवसर पर सम्बोधित करगे।

अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ का निर्वाचन

मारिशस के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री मोहनलाल जी मोहित व स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती के सान्निध्य मे अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर त्रैवार्षिक चुनाव निम्न प्रकार सम्पन्न हुए —

प्रधान प्रा० शेरसिह
उपप्रधान प्रा० वेदव्यास
श्री भगवतीप्रसादगुप्त
श्री गजानन्द आर्य
श्री कैप्टन देवरतन
महामंत्री श्री सत्यानन्द आर्य
मत्री श्री के० एल० भाटिया
कोषाध्यक्ष श्री रामशरणदासआहूजा
कार्यकारिणी के सदस्य—
स्वामी सत्यप्रकाश जी
श्री के० एल० राठी
श्री रामनाथ सहगल
श्री रामनाथ जीता (मोरिशस),
डा० वाचस्पति उपाध्याय,
श्री आनन्दप्रकाश
श्री दरबारी लाल,
श्री फूलचन्द आर्य

वार्षिकोत्सव सम्पन्न—

आर्यसमाज, हापुड़

आर्य समाज हापुड का ८० वा वार्षिकोत्सव दिनाक १२ से १५ अप्रैल ८९ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। उच्चकोटि के मनीषी चिन्तक, विद्वानो, महात्माओ तथा भजनोपदेशको ने अपने प्रवचनो तथा भजनो के माध्यम से जनता को जीवन-निर्माण का सन्देश प्रदान कर अत्यन्त प्रभावित किया।

इस अवसर पर आर्य कुमार सम्मेलन, आर्य सस्कृति सम्मेलन महिला सम्मेलन राष्ट्र भाषा सम्मेलन वेद सम्मेलन तथा राष्ट्रीय-एकता सम्मेलन आयोजित किये गये। आर्य विद्वानो ने सम्मेलन के सन्दर्भ मे विभिन्न समस्याएँ प्रस्तुत कर उनके समाधान का विशद विवेचन प्रस्तुत किया। प्रत्येक सम्मेलन अपने आयोजन के उद्देश्य मे पूर्ण सफल रहा।

स्वामी मुनीश्वरानन्द जी डा० सत्यव्रत राजेश डा० वेदपाल जी डा० ओमदत्त शर्मा, श्री यशपाल आर्यबन्धु, श्री धनकुमार आदि विख्यात विद्वानो ने अपने विचारो से जनता को अत्यन्त प्रभावित किया। श्री मोहनलाल पथिक श्री दिनेश दत्त तथा श्री आशाराम् जी ने संगीत तथा भजनों से जन-जन को मुग्ध कर दिया।

महिला सम्मेलन मे श्रीमती शकुन्तला दीक्षित (दिल्ली) और श्रीमती राजबाला जी (पलवल) ने अपने विचारो और सरस भजनों से सम्मेलन को गरिमामय बना दिया।

अन्तिम दिवस आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी ने राष्ट्रीय एकता सम्मेलन को अपने उद्बोधन द्वारा अत्यन्त प्रभावित किया।

वार्षिकोत्सव का प्रमुख आकर्षण विशाल शोभा यात्रा रही। विभिन्न झांकियो तथा ध्वजाओ से सुशोभित और गुरुकुल ततारपुर के ब्रह्मचारियो के द्वारा प्रदर्शित शारीरिक व्यायामो तथा अस्त्र-शस्त्र सचालन से अलकृत शोभा-यात्रा के गीतो भजनो नारो ने हापुड नगर को गुजायमान कर दिया। शोभा-यात्रा का नगर के निवासियो ने स्थान-स्थान पर खाद्य-पदार्थों द्वारा हार्दिक स्वागत किया।

आर्यसमाज मंगोलपुरी का दूसरा वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज मगोलपुरी का दूसरा वार्षिकोत्सव २१ मई से २८ मई १९८९ तक बडी धूमधाम के साथ आयोजित किया जा रहा है। वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रति दिन प्रात और साय ६ बजे से ८ बजे तक चतुर्वेद पारायण महायज्ञ होगा। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक प० चुन्नीलाल आर्य भजनोपदेशक तथा प०प्रकाश-चन्द्र शास्त्री वेद कथा करगे। मुख्य समारोह तथा पूर्णाहुति के समय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, श्री सूर्य देव महामन्त्री तथा कई गणमान्य नेताओ को आमन्त्रित किया गया है।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न—

आर्यसमाज, गोपाल नगर

आर्यसमाज वेदमन्दिर, गोपाल नगर, नन्दा एन्क्लेव, नजफगढ दिल्ली ४३ का वार्षिकोत्सव श्री स्वामी मनीषानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे १२ अप्रैल से १४ अप्रैल १९८९ तक धूमधाम से मनाया गया। इस समारोह मे चौ० रघुनाथसिंह, प० नरदेव जी स्नातक (भरतपुर), प० खेमसिंह (रोहतक) श्रीमती कौशल्या शास्त्री, नारनौल, श्री भरतलाल हासी, प० नारायण सिह जी ने आर्यजनता का मार्ग दर्शन किया। सभी ने सगठन की शक्ति तथा महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सगठित संस्था ही अपने उद्देश्य मे सफल हो सकती है। अत हम सभी को 'सगच्छध्व सवदध्व, स वो मनांसि जानताम्' की भावना को आत्मसात् करना चाहिए।

गुरुकुल प्रभात आश्रम
प्रवेश परीक्षा

विशुद्ध प्राचीन परम्परा का विशिष्ट शिक्षण केन्द्र गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला झाल मेरठ (उ०प्र०) की प्रवेश परीक्षा इस वष २१ जून १९८९ को होगी। परीक्षा दो चरणो मे प्रात ९ से ११ बजे तक लिखित एव अपराह्न २ मे ५ बज तक मौखिक रूप मे होगी। प्रत्येक अवस्था म परीक्षार्थी का ५० प्रनिशत अङ्क अनिवाय होगा। प्रवेशार्थी की आय १०/११ तथा पञ्चम श्रेणी उत्तीण होना आवश्यक है।

विशेष जानकारी हेतु ५०० रु० धनादेश द्वारा भेजकर नियमावली मगवा सकते हैं।

प्रवेश आरम्भ–
वेदोपदेशक विद्यालय

ब्रह्मकुमी वद मन्दिर वेदोपदेशक विद्यालय ब्रजघाट (गाजियाबाद) मे प्रवेश आरम्भ हृ। सौम्य शिष्ट अनुशासनप्रिय प्रतिभाशाली तथा आजीवन वैदिक धम प्रचार के इच्छुक कम से कम १०वा पास या इसके समकक्ष परीक्षा उत्तीण युवक तथा स्वाध्यायशील सदाचारी प्रचार करन म रुचि रखने वाले वानप्रस्थी प्रवश के लिए आमन्त्रित है।

क्या आप भारत मे सच्चा रामराज्य चाहते है ? तो आइए पढिए !

सत्यार्थप्रकाश

- जो इस युग का महान क्रान्तिकारी ग्रन्थ है।
- जिसमे भारत के साथ सारी मानव जाति के उत्थान का मूलमन्त्र निहित है।
- भारत की अनेक भाषाओं में यह उपलब्ध है।
- इसे पढकर आप भी वेद और शास्त्रों के ज्ञाता बन सकते हैं।
- यह किसी जाति या सम्प्रदाय का ग्रन्थ नहीं मानव जाति का है।
- विश्व भर से अज्ञान, अन्याय और अत्याचार को मिटाने के लिए कटिबद्ध हो जाइए। और इसके लिए पढ़िए—

सत्यार्थप्रकाश

आर्यसन्देश पढ़े, पढाये

आय जगत् के समाचारो व उपयोगी लेखो अध्यात्म विवचनो से युक्त सामयिक चेतावनियो से जूझने की प्रेरणा देने वाले साप्ताहिक-पत्र आर्य सन्देश के ग्राहक बनिये और दूसरो को बनाइये। साथ ही वष मे अनेको सग्रहणीय विशेषाक नि शुल्क प्राप्त कीजिये।

वार्षिक शुल्क मात्र २५ रुपये तथा आजीवन शुल्क मात्र २५० रुपये।

'आर्यसन्देश' के

—स्वय ग्राहक बने।

—दूसरो को बनाये॥

'आर्यसमाज' के

—स्वय सदस्य बने।

—दूसरो को बनाय॥

R N No 32387/77 Post in N D P S O on 4, 5-5-89 Licenced to post with... Licence No U
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५१ पूर्व भुगतान ... लाइसेंस न० यू १३९

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के ...

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश द्वारा शिविरों का आयोजन

गत वर्षों की भांति, आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के अन्तर्गत दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, द्वारा दिल्ली तथा निकटवर्ती क्षेत्रों के युवकों के चारित्रिक उत्थान तथा उनमें भारतीय-संस्कृति तथा राष्ट्रीय-एकता के भाव सुदृढ़ करने के उद्देश्य से निम्नलिखित स्थानों पर प्रशिक्षण-शिविरों का आयोजन किया जा रहा है —

स्थान— हरिनगर, दिल्ली

शिविर स्थल —महाशय चुन्नीलाल बालमन्दिर
एल-ब्लाक, हरिनगर, नई दिल्ली-६४
शिविर की तिथियां—रविवार १४ मई से रविवार २१ मई तक
उद्घाटन —सोमवार १५ मई, प्रात: ९ बजे।
उद्घाटनकर्ता —श्री महाशय धर्मपाल
प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

—डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल
राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, उ०प्र०
—बुधवार १७ मई से रविवार २८ मई तक
—बुधवार १७ मई प्रात: ९-३० बजे
—चौधरी लखीराम नागर
चेयरमैन, जिला परिषद् गाजियाबाद

सभी कार्यक्रमों में भारी संख्या में पहुंचकर कृतार्थ करें।

डा० धर्मपाल आर्य	सूर्यदेव	प्रियतमदास रसवंत	श्यामसुन्दर बिरमानी
प्रधान	महामन्त्री	अधिष्ठाता	महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली — **आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश**

सेवा में—

३३६७—श्री पुस्तकालयाध्यक्ष, पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार-(उ०प्र०)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली १ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस, गली न०१७ कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५१

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ . अक २७ रविवार १४ मई १९८९ वैशाख शु० सम्वत् २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द—१६५ सृष्टि सवत १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश मे ५० पौंड, १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

संस्कृत के सम्बन्ध में आर्यसमाज का शिष्टमण्डल मानव संसाधन विकासमंत्री श्री शिवशंकर से मिला

नई दिल्ली २९ अप्रैल। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व मे आर्यसमाज का एक शिष्टमण्डल, सस्कृत भाषा के सम्बन्ध म आज प्रात मानव ससाधन विकास मन्त्री श्री शिव शकर से उनके ससद भवन कार्यालय म मिला। शिष्टमण्डल मे प० वदेमातरम रामचन्द्रराव तथा श्री विमल बधावन एडवोकेट सम्मिलित थे।

शिष्टमण्डल ने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के दिनाक १६-९-८८ के परिपत्र पर उच्चतम न्यायालय द्वारा दिए गए रोधनादेश तथा सार्वदेशिक सभा द्वारा लोकसभा को दी गई याचिका के सदर्भ मे सस्कृत भाषा की स्थिति पर विचार विमर्श किया। मन्त्री महोदय ने आश्वासन दिया कि जब तक दोनो याचिकाओ का फैसला नही होता सम्पूर्ण देश मे सस्कृत की वही स्थिति मान्य होगी जो पुरानी शिक्षा नीति के अन्तर्गत सुनिश्चित थी। उन्होने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष को निर्देश दिया कि वे इस आशय की एक प्रेस विज्ञप्ति जारी करें।

शिष्टमण्डल ने मन्त्री महोदय को स्पष्ट किया कि आर्यसमाज सस्कृत भाषा के किसी भी प्रकार की अवमानना को सहन नही करेगा।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
प्रचार विभाग
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था है जो छुआछूत मिटाने, नारी जाति के उत्थान, संस्कृत की रक्षा के लिए आगे आकर कार्य कर सकती है : श्रीमती अंजना कंवर

रविवार ७ मई १९८९।

आर्यसमाज पजाबीबाग विस्तार की नवनिर्मित सुन्दर यज्ञशाला का उद्घाटन करते हुए दिल्ली की महापौर श्रीमती अजना कवर ने उपस्थित आर्य जनता को सबोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज ही एक ऐसी सस्था है जो छुआछूत मिटाने, नारी जाति के उत्थान सस्कृत की रक्षा के लिए आगे आकर कार्य कर सकती है। आपने कहा कि आज नारी जाति पर बहुत अत्याचार हो रहे है उन्हे दहेज के पीछे तरह-तरह की यातनाये दी जाती है और उन्हें जिन्दा जला दिया जाता है। आर्यसमाज ने अपने जन्मकाल से ही ऐसे कार्यों मे बढ-चढ कर अपनी भूमिका निभाई है और निभाती रहेगी।

इस अवसर पर पश्चिमी दिल्ली नगर निगम के अध्यक्ष श्री मोतीलाल बैरवा ने कहा कि आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सबसे पहले छुआछूत मिटाने के लिए कार्य किया। आर्यसमाज ने भारत को स्वतन्त्रता दिलाने मे जो कार्य किया है, उसे भुलाया नही जा सकता। आपने आर्यसमाज पजाबी बाग विस्तार के साथ लगे पार्क को महर्षि दयानन्द पार्क के नाम से रखने की भी घोषणा की।

दिल्ली प्रदेश काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तथा कार्यकारी पार्षद चौ० प्रेम सिह ने जन कल्याण कार्यक्रम चलाने के लिए भवन की आधार शिला रखते हुए कहा कि मुझे बडी प्रसन्नता है कि आर्यसमाज के उत्साही कार्यकर्ता राष्ट्र की एकता व अखण्डता के लिए दिनरात कार्यरत हैं। हम सबका सहयोग सदा आर्यसमाज के साथ रहेगा

चौ० भरतसिह ससद सदस्य क्षेत्रीय निगम पार्षद श्री रोशनलाल आहूजा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने भी उपस्थित जनता का मार्गदर्शन किया।

इससे पूर्व श्रीमती अजनाकवर चौ० भरत सिह चौ० प्रेमसिह श्री रोशनलाल आहूजा ने यज्ञ की पूर्णाहुति मे अपनी आहुति डाली। कार्यक्रम की अध्यक्षता, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान प्रो० शेरसिह ने की।

आर्यसमाज पजाबी बाग विस्तार द्वारा २९ तथा ३० अप्रैल व १ मई को प्रात प्रभातफेरी तथा १ मई से ७ मई तक प्रात यज्ञ तथा रात्रि भजनोपदेश और कथा का आयोजन किया गया। यज्ञ तथा कथा के कार्यक्रम स्वामी प्रेमानन्द जी सरस्वती स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती स्वामी धनिदेव भीष्म द्वारा सम्पन्न हुआ तथा प्रतिदिन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक प० चुन्नी लाल आर्य तथा ढोलकवादक प० ज्योति प्रसाद आर्य द्वारा भजनोपदेश किया गया।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

पूर्वां सन्ध्यां जपंस्तिष्ठन् नैशमेनो व्यपोहति।
पश्चिमां तु समासीनो मलं हन्ति दिवाकृतम्॥

—मनु० २।१०२

मनुष्य का परम उद्देश्य तीनों तापों की परमनिवृत्ति बताया गया है। मनुष्य का उद्देश्य यही है कि संसार के अन्दर जिन तीन प्रकार की वृत्तियों से दुःख मिलता है उनसे छुटकारा प्राप्त करे। इसी को मोक्ष कहते हैं। दुःख मनुष्य को क्यों सताते हैं? इसलिए कि उनके अन्दर अशुद्धता आ जाती है। इस लिए अशुद्धता से पृथक् होना ही अपने असल स्वरूप का स्वच्छता को प्राप्त करना है। मनुष्य पवित्र कैसे हो? अपवित्रता को अपने में कैसे दूर फेंक देवे? यह कठिन प्रश्न है जिसके उचित हल पर जीवन के असली उद्देश्य का हासिल करना निर्भर है। जब जीवात्मा स्वभाव से स्वच्छ है तो उसके साथ मलिनता का कैसे सम्बन्ध हुआ? यदि दर्पण को अंधेरे के अन्दर रख दें और साथ ही उसकी सुध न लें तो न केवल उसका स्वरूप ही आंखों से ओझल हो जावेगा बल्कि उसके साफ चेहरे पर जंग और मट्टी के धब्बे लग जावेंगे और तब यदि उसे प्रकाश के सामने किया जाय तो हम वह वस्तुओं को ठीक ठीक नहीं दिखला सकेगा। इसी तरह पर स्वच्छ जीवात्मा जब बाह्यजगत के बन्धनों के अन्दर फंस जाता है और उसके चारों ओर सांसारिक अंधेरा छा उसे घेरे रहता है उस समय उस पर राग द्वेष और अस्मिता आदि धब्बे लग जाते हैं जिनके कारण उसे अपना स्वरूप भी यथार्थ अवस्था में दिखाई नहीं देता। इस अपवित्रता से मनुष्य को बचाने के लिए वेद की आज्ञानुसार भगवान मनु ने प्रातः और सायं सन्ध्या का बन्धन नियत किया है।

इन प्रातः और सायं शब्दों में अभिप्राय क्या है? उपनिषत्कार ऋषि बतलाते हैं कि परमात्मा की उपासना जागृति के अन्त और स्वप्न के अन्त में करनी चाहिए। इसलिए सायं में अभिप्राय जागृत अवस्था का अन्त और प्रातः में अभिप्राय स्वप्न अवस्था का अन्त है। प्रातः से सांसारिक झगड़ों के अन्दर लगा हुआ मनुष्य इस योग्य नहीं होता कि आत्मा से सम्बन्ध रखने वाली शक्तियों की मलिनता को दूर करने का साहस कर सके। कर्मेन्द्रियां बड़ी तेजी से अपने कार्यों में लग रही हैं और ज्ञानेन्द्रियां अपने विषयों के अन्दर फंसी हुई हैं। अगर उस समय निर्बल मनुष्य उनको इस प्रवाह से रोकना चाहे तो उसके लिए कदाचित यह असम्भव नहीं होता। जिस प्रकार बलवान शरीर के बछेरे प्रारम्भ में बस में नहीं आ सकते परन्तु जब उन्हें चाबुकसवार कुछ समय तक गोल दायरे का चक्कर लगवाता है तो हंसकर बस में आ जाते हैं और तब उन्हें चलन की शिक्षा दी जाती है। इसी तरह पर जब दिन भर विषयों में घूमते घूमते इन्द्रियां थक जाती हैं और थक कर मन को छोड़ देती हैं और मन भी जीवात्मा को थक कर छोड़ देता है उस समय पापों से पापी जीवात्मा भी अन्तर्मुख हो परमात्मा के प्रकाश में सहारा लेकर अपनी नीच अवस्था का अनुभव कर सकता है। इसलिए परमात्मा से किया हुआ उस समय का सत्संग उसे रात भर सुख की नींद सोने के साधन पैदा कर देता है। फिर जब वह प्रातः इन्द्रियां और मन की थकावट को दूर करके उठता है तो वह ठीक समय है जबकि इन्द्रियों और मन के लिए नया बल धारण कर नये सिरे से संसाररूपी युद्ध क्षेत्र में काम क्रोध आदि शत्रुओं के मुकाबिले के लिए तैयार हो सकता है। यही कारण है कि ऋषियों ने वेदों की आज्ञा पर चलते हुए दोनों काल की सन्ध्या का बन्धन हर एक द्विजन्मा अर्थात आत्मिक साधन के जिज्ञासु पुरुष के लिए नियत किया है। सन्ध्या से अभिप्राय केवल विशेष मन्त्रों का बिना अर्थ जाप या केवल उनके अर्थ पर मानसिक विचार नहीं है बल्कि सन्ध्या का अभिप्राय इससे बहुत ऊंचा है। जीवात्मा की मलिनता को दूर करना इसका वास्तविक उद्देश्य है और इसलिए जो साधन आत्मा की मलिनता को दूर करने में सहायक हो सकें उनका सेवन सन्ध्या का मूल अंग है। यही कारण है कि ब्राह्ममुहूर्त में उठने की हरएक धर्म जिज्ञासु के लिए आज्ञा है क्योंकि उस समय कोलाहल के शान्त होने से मनुष्य का मन एक ओर लग सकता है। तब पता लगता है कि उसके अन्दर अपवित्रता ने कहाँ तक घर कर रक्खा है। जब अपवित्रता का ज्ञान हुआ तो स्वयमेव उस अपवित्रता को दूर करने का विचार मन में पैदा होता है। प्राचीन आर्य विद्वानों ने अच्छी प्रकार समझ लिया था कि शरीर मन और आत्मा का मनुष्य जन्म में बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसमें से एक भी अपवित्र रहे तो दूसरे में अपवित्रता पैदा किए बिना नहीं रहता। यही कारण है कि जिज्ञासु के लिए नित्य स्नान धर्म का एक अंग बताया गया है। मनु जी भी कहते हैं कि सवेरे सबसे पहले शरीर को स्वच्छ करने का आवश्यक परिणाम यह होता है कि इन्द्रियाँ शुद्धता की ओर प्रवृत्त होती हैं। आंखों में कुरूपता और सुन्दरता में भेद करने का बल पैदा होता है। तब दिखावे की सुन्दरता से उसे घृणा होती है। कानों की शक्ति अधिकतर सूक्ष्म होती है और इसी तरह दूसरी इन्द्रियां भी सूक्ष्मता की ओर प्रवृत्त होती हैं। तब ये इन्द्रियाँ मन को भी अपवित्र स्थानों में जाने से किसी कदर रोकने का कारण बनती हैं। इसका परिणाम यह होता है कि मन भी जीवात्मा को बाहरी फंसावट से छोड़ देने के लिए बाधित हो जाता है।

प्रिय पाठकगण! मानसिक पवित्रता के लिए प्रातः और सायं की सन्ध्या को कभी भी न छोड़ो। मन्त्रों के पाठ का नाम सन्ध्या नहीं है। उसके अर्थों के पाठ का नाम भी सन्ध्या नहीं है। क्या सन्ध्या मन की मलिनता को दूर करती है? क्या तुम्हारे मन्त्रपाठ से दिल से अशुभ विचार दूर हो गए? अगर नहीं तो समझो तुमने सन्ध्योपासना नहीं की। उपासना के अर्थ समीप होने के हैं। परमात्मा के समीप होना सन्ध्योपासना का अभिप्राय है किन्तु शुद्धस्वरूप परमात्मा के समीप अशुद्ध आत्मा कभी हो सकती है? कदाचित नहीं। इसलिए सन्ध्या का अभिप्राय ही केवल यह है कि मन वचन और कर्म द्वारा शुद्धि के लिए यत्न करना। इसलिए शरीर को शुद्ध करने के पश्चात् सत्य से मन को शुद्ध करो और विद्या और तप से आत्मा को शुद्ध करके ज्ञान द्वारा बुद्धि को दिन रात मांजते रहो। बन्धुगण! शुद्धस्वरूप परमात्मा हमारे अपने अन्दर प्रकाश कर रहे हैं। और हम लोग दीवानों की तरह बाहर जीवन उद्देश्य को ढूंढते फिरते हैं। बाहर अंधेरा ही अंधेरा है। प्रकाश अन्दर है। इसलिए बाहर की सब अपवित्रताओं से दूर होने का यत्न करो ताकि अन्दर घुसकर हम सब उस जीवन दाता ज्योति के दर्शन कर सकें जिससे प्रकाश पाकर फिर मनुष्य अंधेरे के अन्दर ठहर नहीं सकता। प्रातः और सायं आत्मा की मलिनता को दूर करने के लिए दृढ़ आसन पर बैठने का स्वभाव डालो ताकि शनैः-शनैः शरीर मन और आत्मा की शुद्धि होकर हम सब भाई एक दूसरे की सहायता से मुक्तिधाम के अधिकारी बन सकें।

शब्दार्थ—(पूर्वां सन्ध्यां) प्रातःकाल की सन्ध्या को (जपन्) जाप करता हुआ (तिष्ठन्) समाधिस्थ व्यक्ति (नैशम्) सारी रात्रि के (एनः) पाप को व्यपोहति (नष्ट कर देता है) (तु) और (पश्चिमां समासीनः) सायंकाल की सन्ध्या में प्रवृत्त हुआ व्यक्ति (दिवाकृतम्) दिन भर में की गयी (मलम्) मलिनता को (हन्ति) मार भगाता है।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न—आर्यसमाज शादीपुर खामपुर

आर्यसमाज शादीपुर खामपुर नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव से २३ अप्रैल १९८९ तक धूमधाम से मनाया गया। पं० यशपाल सुधांशु ने यज्ञ कराया तथा वेदोपदेश किया। महात्मा रामकिशोर वानप्रस्थ आचार्य शिवाकान्त उपाध्याय श्री खुशीराम शर्मा के प्रवचन हुए। आर्यसम्मेलन आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री महाशय धर्मपाल की अध्यक्षता में आयोजित किया गया जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल आर्य प्रादेशिक सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल श्री यशपाल सुधांशु श्री बाल दिवाकर हंस श्री डा० शिवकुमार शास्त्री, श्री रामलाल मलिक आदि महानुभावों ने आर्य जनता का मार्गदर्शन किया।

आर्य सन्देश

काश ! हम चाणक्य बने होते

स्वतन्त्रता शब्द सुनने मे बडा मधुर लगता है, और ठीक इसके विपरीत गुलामी, बंधन अथवा परतन्त्रता उतना ही कर्ण-कटु। रबड को अधिक खीचेगे तो उसके टूट जाने की आशका होती है। इसी प्रकार जब स्वतन्त्रता अपनी सीमा का अतिक्रमण करती है तो वह निरकुशता, उच्छृखलता अथवा उद्दण्डता का रूप धारण करने लगती है। नदी को यो ही खुला छोड दिया जाय तो वह विनाशकारी बाढ का रूप धारण करके प्रभूत मात्रा मे जन-धन की हानि करती है। यदि उसी नदी के प्राकृत रूप को थोडा सवार दिया जाय तो वही विनाशक, विध्वसक रूप सृजन और नि[illegible]ण का मसीहा बनकर खेतो मे सोना उपजाता है। आवश्यकता से अधिक स्वतन्त्रता और जरूरत से ज्यादा परतन्त्रता दोनो ही स्थितिया असामान्य प्रतिक्रिया का जन्म देती हैं।

तुलसीदास जी ने कहा है—

> वर्षा ऋतु चली फूट किआरी।
> जिमि स्वतन्त्र ह्वै बिगरै नारी।

सयोगवश 'राजनीति' शब्द भी स्त्रीलिंग है। नारी के लिए अधिक स्वतन्त्रता अच्छी नही है। और नारी ही क्यो पुरुष के लिए भी यही बात है।

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के दसवे नियम मे बडा ही स्पष्ट और सयत लिखा है कि सब मनुष्यो को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम मे सब स्वतन्त्र रहे।

विडम्बना यह रही कि हमने या तो ऋषि के मन्तव्यो को पूरा समझा नही और समझा भी तो उस पर आचरण नही किया यदि आचरण किया भी तो सगठित रूप मे नही। कुछ लोगो ने आर्यसमाज को केवल धार्मिक और सामाजिक मच मान लिया। राजनीति से बिल्कुल निरपेक्ष समझ लिया। जबकि ऋषि ने अपने अमर ग्रथ सत्यार्थप्रकाश मे तीन सभाओ धर्मार्य सभा विद्यार्य सभा, राजार्य सभा का स्पष्ट उल्लेख किया है। केवल सकेत मात्र ही नही राजधर्म प्रकरण मे राजा प्रजा के सम्बन्धो पर काफी विस्तृत विश्लेषण और विवेचन किया है।

कुछ वर्ष पहले एक विदेशी सज्जन ने भारतीय राजनीति की स्थिति को देखते हुए कहा था कि मेरा पहले ईश्वर पर विश्वास नही था परन्तु भारत की राजनीतिक स्थिति, उसके नेताओ की अकुशलता और अक्षमता देखकर मुझे ऐसा लगता है कि यहा का ढाचा नेताओ द्वारा नही अपितु ईश्वर द्वारा चलाया जा रहा है। कितनी सच्चाई है इन पक्तियो मे। नेताओं का कोई धर्म, ईमान सिद्धान्त, नियम नही। यदि यह कहा जाये कि आज राजनीति की युवती आवश्यकता से अधिक बिगड गई है तो भी अनुचित न होगा। वह और उसके चहेते केवल कुर्सी के लिए सब कुछ बेच देने को तैयार हैं। यहाँ तक कि अपनी माटी, अपना देश अपने पूर्वज अपनी माँ, अपना धर्म, अपना सस्कृति उनकी दृष्टि मे कुर्सी की तुलना मे बिल्कुल नगण्य है। किसी समय सुभाषचन्द्रबोस ने नारा लगाया था तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूगा। आज का तथाकथित बोस नारा लगाता है 'तुम मुझे वोट दो मैं तुम्हे झूठे आश्वासन गरीबी भुखमरी बेरोजगारी, गुडागर्दी, अराजकता और अशान्ति दूगा। तुम मुझे वोट दो मैं तुम्हे पाच साल तक मुह नही दिखाऊगा, तुम मुझे वोट दो मैं कुर्सी की रक्षा के लिए तुम्हारे विश्वास को ठेस पहुचाऊगा, तुम मुझे वोट दो मैं स्वार्थ सिद्धि के लिए सब कुछ बेच डालूगा। राजनीति के इस रूप को देख कर नीरज ने इसे वेश्या कह दिया तो कुछ। अनुचित नही किया —

> यह न तेरे न मेरे बस की है।
> कोई जान नही ये किस की है।
> [illegible] वेश्या है।
> आज इसका तो कल उसकी है।

आर्यसमाज एक क्रान्तिकारी आन्दोलन है। यदि वह राजनीति से निर्लेप रहता है तो उसमे अधूरापन ही आयेगा और कुछ नही। आवश्यक तो यह था कि हम आर्य वीरो की कुर्बानी को भुलाते नही। इतिहासकार लिखता है कि स्वतन्त्रता आन्दोलन मे ८० प्रतिशत आर्य वीरो ने कुर्बानिया दी हैं। वर्तमान नेता उस कुर्बानी को बेच रहे हैं और हम यह सब देख रहे है। क्या ही अच्छा होता कि ऐसे समय मे हम चाणक्य बनते और अनेक चन्द्रगुप्तो का निर्माण करके राजनीतिक वेश्यावृत्ति को समाप्त कर डालते। आज का यथार्थ तो यह है —

> हर तरफ अन्दर गर्दी छा रही है।
> सादगी अब शील अपना खो रही है।
> स्वप्न गाधी के कुआरे हैं अभी तक
> देशभक्तो की समाधि रो रही है।

परम पुरोहित

ओ३म् अग्निमीडे पुरोहित यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतार रत्नधातमम्॥ १॥

> व्यापक प्रकाश के नायक, यह गीत वन्दना तेरी।
> प्रभु अग्नि पुरोहित नेता, सुन गीत वन्दना मेरी॥
> पितु ईश्वर का उपदेश प्रथम
> प्रिय पुत्र करे पितु मान मगन
> यज्ञ कर्म आरम्भ पलो मे
> आ अग्नि ज्योति ईश्वर अनुपम।
> देव स्तुति अग्रगम्य की, यह गीत अर्चना मेरी।
> प्रभु अग्नि पुरोहित नेता, सुन गीत वन्दना मेरी॥
> तुम परम पुरोहित हित कारक
> कमनीय यज्ञ के निष्पादक
> इस सृष्टि यज्ञ के तुम कर्ता
> ऋतु-ऋतु नूतन सुख सम्पादक।
> शिल्प-कला-सघर्ष मध्य, सुन देव कामना मेरी।
> प्रभु अग्नि पुरोहित नेता, सुन गीत वन्दना मेरी॥
> हर योग क्षेम के तुम होता
> हर रत्न सम्पदा के स्रोता
> प्रभु अग्र, अनुगमन करती है
> यह सन्तान पिता स्तोता।
> मेरे पथ दर्शक नायक, यह गीत याचना तेरी।
> प्रभु अग्नि पुरोहित नेता, सुन गीत वन्दना मेरी॥

—देवनारायण भारद्वाज

शुभ कर्मों का परिणाम

—ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

> ये मन निर्मल बने निश्चय, प्रभु गुणगान के बदले।
> पाप कर्मों से छुटकारा मिले प्रभु ध्यान के बदले॥
> गरीबो पर दया करना, अनाथो का सहारा दे।
> वही जन स्वर्ग पाते हैं, यह शुभ दान के बदले॥
> पिता माता की आज्ञा का, जो पालन पुत्र करता है।
> वह सुख पायेगा जीवन मे, बडो के मान के बदले॥
> धर्म पर मर मिटे जो जन, नही परवाह तन की थी।
> उन्ही का नाम रोशन, है ये तन कुरबान के बदले॥
> गुलामी की कटी बेडी बहाया रक्त वीरो ने।
> हुआ आजाद यह भारत, वीर बलिदान के बदले॥
> देश हित दे गये जीवन, ऋषि दयानन्द उपकारी।
> पिला करके गये अमृत स्वय विष पान के बदले॥

धन-अन्न आयु दुःख दोष नहीं, सुख पोष करे

—देवनारायण भारद्वाज

इच्छित का होना सुख अनिच्छित का होना दुःख है। अनुकूलता की अनुभूति को सुख तथा प्रतिकूलता की प्रतीति को दुःख कहते हैं। दुःख के अभाव को सुख या सुख के अभाव को दुःख समझ लेना भ्रम है, क्योंकि अभाव में तो कुछ भाव बोध रहता ही नहीं है। पीडा के बाद आई निद्रा या मूर्छावस्था, जबकि अनुभव करने वाली आत्मा अचेत होती है—दुःख-सुख कुछ समझ नहीं सकती है। वास्तव में दुःख-सुख की अपनी पथक पृथक सत्ता है। इसी प्रकार दुःख एवं अशान्ति अथवा सुख एवं शान्ति में भी किंचित भेद है। सुख छूटने से अशान्ति और दुःख हटने से शान्ति होती है। आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक तीन प्रकार के दुःख हमें अनुभव होते हैं।

सुख—सु (सुन्दर) ख (इन्द्रियों को) अर्थात जो इन्द्रियों को भला लगे। दुःख—दु (बुरा) ख (इन्द्रियों को) अर्थात जो इन्द्रियों को बुरा लगे। रात्रि-दिवस की भांति सुख-दुःख जीवन के अपरिहार्य दो पक्ष हैं। यह दोनों स्थितियां स्थायी नहीं हैं। एक सीमा के बाद दोनों में परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन हमारे ही उन कर्मों के फल के कारण होता है जिन्हें हम वर्तमान या पूर्वजन्म में करते है। पर उनकी स्मृति हमें नहीं रहती है। आनन्द क्या है? इन्द्रियां का सुन्दर लगने वाले कार्यों का अन्तिम परिणाम है जो अस्थाई सुख की अपेक्षा अधिक स्थाई होता है जिसकी सीमा मोक्ष तक पहुंच जाता है। एक प्राणी को जिस कार्य में सुख मिलता है उसी कार्य में दूसरे का दुःख मिल सकता है। मांसाहारी जिस जीव के मांस को खा कर स्वयं को सुखी समझता है उस जीव को अपार यातना का सामना करके प्राण-त्याग करना पड़ता है। इन्द्रियों के स्वामी इन्द्र आत्मा का अपने सुख को आनन्द का स्तर देने के लिए ऐसे परपीडक कृत्यों से बचना होगा।

किसी मनीषी ने ठीक ही कहा है कि पहला सुख निरोगी काया दूसरा सुख घर में हो माया तीसरा सुख मृदुभाषी हो नारी और चौथा सुख सन्तति हो आज्ञाकारी। भौतिक रूप से इन सभी सुखों का समन्वय ही जीवन का चरमोत्कर्ष है। साईं इतना दीजिए जामे कुटुम्ब समाय, मैं भी भूखा न रहूं साधु न भूखा जाय। सन्तोषी गृहस्थ के लिए सुख की ये सीमा पर्याप्त है। आनन्दमय कोष तक पहुंचने के लिए हमें यात्रा अन्नमय कोष से ही आरम्भ करनी पड़ती है। कोई पर्व-उत्सव या संस्कार हो—आयोजन का प्रमुख भाग प्रीति भोज बन जाता है, यह भोजन एवं वह सम्पदा जिससे यह निर्मित होता है, हमें पवित्र एवं सशक्त करने वाला होना चाहिए। आइए एक मन्त्र पर विचार करें —

अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनां॥

ऋ० ६।६६।१९

पदार्थ—हे (अग्ने) प्रकाश स्वरूप परमात्मन्! आप (नः) हमारे (आयूंषि) आयुओं-जीवनों को (पवसे) पवित्र कर सो आप (ऊर्जम्) बल (च) और (इषम्) अन्नादि ऐश्वर्य को (आसुव) प्राप्त कराइए। हमारे (दुच्छुनाम्) दुष्ट कुत्तों के समान मनुष्यों के संग लगाइयों को (आरे बाधस्व) हम से दूर कर दीजिए।

आयु पवित्र कैसे हो? जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त सम्पूर्ण जीवन ही तो मनुष्य की आयु है। इसमें बाल, किशोर नवयुवा युवा, प्रौढ एवं वृद्धावस्था सभी सम्मिलित है। बालपन खेल में खोया, जवानी नींद भर सोया-फिर तो बुढापा देखकर रोया भी कहना पडेगा। धर्म की छाया में या माता-पिता-आचार्य आदि अग्रजों की गोद में सम्पूर्ण जीवन होना चाहिए। आपने किसी की आयु जाननी चाही उसने बताया मेरी आयु ४५ वर्ष है। उसके यह पैंतालीस वर्ष तो व्यतीत हो गए, जो पवित्र गए तब तो ठीक रहा—यदि नहीं, तो वह समाज की घृणा का पात्र व बुराइयों का ढेर था। वह वय पवित्र कैसे हो सकेगी, जो चली गई? हां, यदि वह ३० वर्ष और जीवित रहता है इस वयावधि को तो सुधार कर पवित्र कर सकता है। आगे के जीवन को सुधार लेने पर पीछे का जीवन भी उन्नत हो जाता है, जैसे सुन्दर भवन-निर्माण हेतु भूमि को समतल करने के लिए गड्ढों को कूडा कर्कट से पाट दिया जाता है। संसार आपके आकर्षक सुखदायक भवन को देखता है—उसे वह कूडा कर्कट नहीं दिखाई देता है। अन्त भला सो भला।

किसी अवांछित समाजद्रोही ने ज्योतिषी से पूछ ही तो लिया कि मेरा कितना जीवन शेष है। ज्योतिषी ने कहा बस सात दिन-इन्हीं में मृत्यु आ जायेगी। उसने भ्रष्टाचार से अपार सम्पत्ति व सुविधा-सामग्री का संग्रह कर रक्खा था। अब क्या करे वह इस सबका। उसने यज्ञानुष्ठान, धर्माचरण, वेद-श्रवण, प्रीतिभोज एवं दान के कार्य आरम्भ कर दिए। उसने अब तक जो भय, अपकीर्ति व घृणा पाई थी, सभी धुलकर कीर्ति-करुणा के प्रकाश में रूपायित होकर पुरातन कृत्यों पर छा गई। इस अल्पकालीन सात दिन के जीवन में उसे विशेष सुख मिला और जब नहीं मरा, तो ज्योतिषी ने पूछने पर बताया—कौन है जो सात दिन में नहीं मरता। आप भी इन्हीं सात रवि से शनि में मृत्यु को प्राप्त होंगे और हम भी। उस भ्रष्ट ने शिष्ट होकर अपने शेष जीवन को यज्ञमय बना दिया। महर्षि वाल्मीकि आदि न जाने कितने उदाहरण हैं जो अपने कलुषित जीवन को सुधार कर श्रेयशील यशस्वी हो गए। कर्म अकर्म विकर्म सुकर्म सभी का फल अवश्य मिलता है, पर कभी भी सन्मार्ग पर चल देने से जीवन में धैर्य व सन्तोष आ जाता है। इस मन्त्रानुसार कोई अपनी आयु या पूर्ण जीवन पवित्र कर लेता है।

हमारा जीवन पवित्र कब होगा, जब उसमें पर्याप्त ऊर्जा होगी। एक व्यक्ति कृशकाय है दूसरा स्थूल। कृशकाय यदि पहलवानी नहीं कर सकता, पर कम से कम अपने निजी कार्य तो करता रहता है। स्थूल व्यक्ति तो स्वयं शौच-स्नानादि में असमर्थ हो जाता है। फिर पवित्रता कहां। भारी शारीरिक भार के व्यक्तियों को चिकित्सक 'डाइटिंग' कम खाने का परामर्श देकर रोगग्रस्त होने से बचाने का यत्न करते हैं। घोर शीत लहर में अग्नि की ज्वाला अपनी ऊर्जा प्रदान कर हमें ऊष्णता प्रदान कर देती है। अग्नि की ज्वाला या ऊर्जा हमें कहां से मिली इंधन से। इसी प्रकार हमारे शरीर के भीतर यह ऊर्जा कैसे आयेगी? सन्तुलित आहार-अन्न से आयेगी। अन्न किससे मिलेगा-धन से धन-अन्न से। मन्त्र का इषम शब्द हमें धन और अन्न दोनों में सम्पन्न होने का संकेत करता है। यह धन या अन्न किसी को तभी पवित्र कर सकेगा जब वह स्वयं पवित्र होगा पवित्रता से कमाया गया होगा। पवित्रकारिणी गंगा को शुद्ध स्वच्छ करने में शासन अरबों रुपया का व्यय क्यों कर रहा है। इसीलिए—पहले गंगा का जल शुद्ध हो तभी तो वह प्राणियों को पवित्र कर सकेगा। मन्त्र ने केवल शरीर शुद्धि की बात नहीं कही है। आयु को पवित्र करने की बात कही है जिसके अन्तर्गत हमारा शरीर और जीवन, भीतर-बाहर सभी कुछ आ जाता है। जल-वायु जीवन के प्रकृति प्रदत्त आधारभूत तत्व है पर अन्न भी कम महत्व का नहीं है जिसे हम पुरुषार्थ से प्राप्त करना होता है।

लम्बे जीवन के लिए अन्न ही हमारा आधार है। एक-एक पल-घडी-दिन के जोड से जैसे जीवन बनता है वैसे ही एक-एक ग्रास खाकर हम अन्न का पाचन करते हैं, जिसमें हमें ऊर्जा या बल मिलता है। आहार में असावधानी से हम रुग्ण हो जाते है सन्तुलित नियोजित ढंग से किया गया भोजन हमें स्वास्थ्य व शक्ति प्रदान करता है। चरक ऋषि ने यह देखने के लिए कि लोग उनके नियम का ज्ञान रखते हैं या नहीं अनेक वैद्यों के यहां एक पक्षी भेजा जिसने 'कोऽरुक् कोऽरुक-कोरुक' कहकर प्रश्न किया—रोगी कौन नहीं? किसी वैद्य ने च्यवनप्राश किसी ने चन्द्रप्रभा वटी या अन्य किसी औषधि को रोग मुक्ति का माध्यम बताया, जिसे पक्षी ने अस्वीकार कर दिया। एक वाग्भट्ट आयुर्वेदाचार्य ने ही 'हितभुक्-मितभुक्-ऋतभुक्' अर्थात् हितकारी, सीमित व सात्विक भोजन करने वाला रोगी नहीं होता, उत्तर दिया।

स्वामी श्रद्धानन्द ने अपनी आत्मकथा में अपने पिता के अर्दली जोधू सिपाही की चर्चा की है—जिनके चूल्हे में आग लेने पर रसोई अपवित्र हो जाती थी, भले उस चूल्हे पर मांस की हांडी ही क्यों

न बनी हो। ऊर्जा की पवित्रता के लिए भक्ष्याभक्ष्य का ध्यान रखना आवश्यक है। बात छुआछूत की नहीं है। होकर पवित्र भोजन कोई भी प्रस्तुत कर सकता है। महर्षि दयानन्द एक बार भोजन कर रहे थे किसी ने कहा महात्मन आप नाई की रोटी खा रहे हैं तो उन्होंने प्रश्नकर्त्ता को यह कहकर अवाक कर दिया मैं नाई की नही गेहू की रोटी खा रहा हू। राजस्थान की रियासत खेतड़ी मे स्वामी विवेकानन्द को भी यही करना पड़ा जब सभी सम्पन्न श्रोता उनके उपदेश को सुनकर चले गए और तथाकथित एक अछूत ने उन्हे रोटी खिलाई।

यदि वह अशुद्ध है तो भोजन बनाने वाले के तन ही नही मन का प्रभाव भी न केवल निर्मित भोजन प्रत्युत खाने वाले के तन मन पर भी पड़ता है। स्वातन्त्र्य सेनानी को अपनी जेल कोठरी मे एक दिन ऐसे विचारों ने सताना आरम्भ कर दिया जिनमे वह अपनी मा को घसीट कर मार रहा है जबकि ऐसा कभी उसने सोचा भी नही था। खोज करने पर ज्ञात हुआ कि उस दिन का भोजन एक ऐसे कैदी ने बनाया था जो अपनी मा की हत्या के अपराध मे बन्द था। तन मन ही नही धन की पवित्रता का महत्व है। एक धनपति ने आश्रम मे भण्डारा किया। खाकर एक महात्मा रात्रि मे सोने से पूर्व ध्यान मे बैठे तो रहे प्रभु के स्थान पर ... मे एक युवती दिखाई दी। वे बड़े चिन्तित हुए विवेचन मे ज्ञात हुआ कि भण्डारा करने वाले धनपति ने अपनी युवती पुत्री का विवाह एक एक वृद्ध के साथ धन के प्रलोभन मे कर दिया था और इस पाप के प्रायश्चित्त हेतु यह भण्डारा किया था।

महाभारत में शय्या पर पड़े भीष्म पितामह युधिष्ठिर आदि को धर्मोपदेश कर रहे थे तभी द्रोपदी ने एक व्यग्यबाण छोड़ दिया। पूज्य पितामह आज का यह धर्मोपदेश तब कहा चला गया था जब भरी सभा मे दुर्योधन के आदेश से दुशासन द्वारा मेरा चीर खीचा जा रहा था। बेटी तुमने ठीक ही कहा—दुर्योधन का दूषित अन्न खाने से तब मेरी बुद्धि पर अधम का पट पड़ गया था अर्जुन के तीक्ष्ण बाण प्रहार से शरीर का वहदूषित रक्त बह गया है और अब मेरी बुद्धि मे धर्म का प्रकाश हो गया है। पितामह ने उत्तर दिया। कोई धनपति तीर्थभ्रमण क्रम मे प्राकृतिक वातावरण के मध्य मे पहुच गए। एक महात्मा धर्म कर्म और ध्यान मे व्यस्त दिखाई दिए। धनपति ने उनको अपने घर आने के लिए आमन्त्रित कर दिया। कुछ दिन बाद वे उनकी कोठी पर पहुच गए यहा की सुविधा व सुस्वाद भोजन ने उनके ध्यान मे न केवल बाधा डाल दी प्रत्युत एक दिन स्नानागार मे मूल्यवान स्वर्णहार रखा देखकर जो धनपति की पत्नी वहा भूल गई थी लेकर चपत हो गए। धनपति ने सन्त की खोज मे सेवक दौड़ाए पर न मिलने के कारण वे सभी निराश लौट आये। परन्तु कुछ दिन बाद स्वय सन्त ही लुढ़कते पुढ़कते चल आये और धनपति को वह हार वापस करने लगे। धनपति ने तब सन्त से पूछ ही लिया यदि आपको वापस ही करना था तो इसे चुरा कर ले क्यो गए थे। सन्त के उत्तर ने धनपति की आख खोल दी। तुम्हारा भ्रष्ट अन्न खाकर मेरा मन दूषित हुआ—मैंने चोरी की लौटते समय भूख लगने पर मार्ग के वृक्षो के फल खाने से मुझे दस्त लग गए। वह अन्न निकल गया—मैं क्षीण हो गया—मुझे चोरी से घृणा हुई और मैं यह हार वापस करने आ गया।

शुद्ध स्वादिष्ठ भोजन को परोसने वाले की भावनाएं कम प्रभावित नही करती है—तभी तो कविवर रहीम ने कहा है —

रहिमन रहिला की भली
जो परसे चितलाय।
परसत मन मैला करे
सो मैदा जरि जाय।

पाप करके पुण्य कर लेने से कोई सन्तुलन नही बनता है। दोनो का फल बराबर भुगतना पड़ता है। एक सज्जन रोगी होकर चिकित्सको के यहा भटकते रहे सभी ने औषधि के साथ परहेज भी बताया। इन्होने सभी का परामर्श ठुकरा दिया। अन्त मे एक चिकित्सक ने कहा—तुम सभी कुछ खा सकते हो—खट्टा मीठा मेरी औषधि के साथ—पर मूल्य अधिक देना पड़ेगा—समय भी लग सकता है। तुम्हें तीन और भी लाभ होगे।

१—चोर नही आयगे २—कुत्ते काट नही सकते ३—बुढ़ापा आ नही सकता।

रोगी ने पूछा वह कैसे? वैद्य ने कहा ऐसे—रात भर खासने से चोर नही आयगे कमजोर होने पर लाठी का सहारा लेकर चलोगे कुत्ते नही काटेंगे और जवानी मे ही मर जाने से बुढ़ापा क्या आयेगा।

भोजन सुस्वादु होना चाहिए पर स्वाद के लिए ही नहीं खाना चाहिए। दूरदर्शन पर रामायण दिखाई गई। राम की लोकप्रियता का अंश उसके पात्र को मिला उसके चित्र व्यक्तियो ने अपने घर मन्दिर मे सजा लिए। राम रावण पात्र नागपुर के होटल मे खाने की मेज पर बैठे तो सेवक ने होटल का सर्वाधिक शाकाहारी एव मासाहारी व्यजन उठा लिया और राम पात्र के सम्मुख शाकाहारी एव रावण पात्र के सम्मुख मासाहारी व्यजन परोस दिया। पर रावण पात्र निरामिष भोजी था और राम पात्र सामिष भोजी—दोनो को अपने भोजन पात्र बदलने पड़े। अस्तु नाटक की नही हमे जीवन की पात्रता चाहिए। खाने के लिए ही नही जीना चाहिए प्रत्युत जीने के लिए खाना चाहिए। किसी सुगन्धित खाद्य की आप कल्पना करें—कट पिट कर भले वह चूर्ण हो जाए फिर भी उसकी गध हर रूपान्तर के बाद बनी रहती है। डकार मे भी इसका आभास होता है। इसी प्रकार इसकी भावना का प्रभाव है जो मन की गहराई तक जाता है खाद्य वस्तु उसका स्रोत साधन पाक विधि प्रस्तुति श्रद्धा सभी तत्व मिलकर भावना की भूमि को भव्य करते है।

इस प्रसंग मे अन्न के साथ साथ धन भी है। कई ऐसे निधन दीन व्यक्ति देखने मे आये है जिनका एक समय की रोटी प्राप्त नही था सहारा मिला खाने पीने लगे—कुछ हो सचय कर पाये तो एठने लगे। इन्ही के लिए कहा गया है कि रोटी लग गई। निधन बालक महाशय जी के पास गया और बोला दो पैसे दे दीजिए मा की दवाई लानी है। महाशय जी ने कहा कि यदि एक आना या चार पैसे दे तो क्या करोगे उसने कहा २ पैसे की औषधि लाकर मा को दूगा और २ पैसे का कुछ खाकर भूख मिटा लूगा यदि एक रुपया दे तब क्या करोगे। आठ आने से मा का औषधि पथ्य और भोजन का प्रबन्ध करूगा और शेष आठ आने का गुड चना क्रय करके बसियारो को पानी पिलाकर कुछ कमाई कर लूगा। महाशय जी ने एक रुपया दे दिया और भूल गए वर्षो बाद महाशय जी बाजार से निकल रहे थे कि एक अच्छी दुकान से सुन्दर युवक उतर कर लगा उनके चरण स्पर्श करने। पूछने पर बताया कि मैं वही बालक हू जिसकी बचपन मे एक रुपये से आपने सहायता की थी। बात पुरानी है तब रुपये का कुछ मूल्य था

मन्त्र कहता है कि अन्न के व्यय हम बुराइयो की ओर न भागे। एक किशोर घर की गरीबी मे तग आकर ग्राम से महानगर पहुच गया। होटल के बर्तन साफ करते समय प्याले टूट जाने पर उसे बाहर निकाल दिया गया वह समुद्र के किनारे आ गया था कि जलयान से एक व्यक्ति ने छोटा सा पेटी देकर कहा इसे तुम अमुक स्थान तक पहुचा दो तुम्हें पचास रुपये मिलेगा। उसने ऐसा ही किया तस्करी के चक्कर मे पड़ कर अब वह स्वय तस्कर बन गया था अपार सम्पत्ति पाकर मद्यपान व परस्त्री गमन मे रत हो चुका था। पाप की कमाई पाप मे गवाई के अनुसार शासन भी उसकी ... कर रहा है जो हम देवता से राक्षस बनाकर छोड देता है धन की तीन गति दान भोग का समन्वय इस नाश से बचा लेता है—और हम भी विनाश से बच जाते हैं किसी कवि ने ठीक ही कहा है —

कनक कनक ते सौ गुन
मादकता अधिकाय।
या खाये बौराय है
या पाये बौराय॥

—आर्यसमाज आर्यमगढ़(आजमगढ़)
उ० प्र० ७६००१

आर्यसन्देश पढ़े, पढ़ाये

आर्य जगत के समाचार

राष्ट्ररक्षा सम्मेलन—

आर्यसमाज किरण गार्डन

हम अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए तथा अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए चरित्रवान मानव का निर्माण करना होगा। आज के इस भौतिक युग मे मनुष्यता के मूल्य विकृत हो गए है। उनका सुधारने का काम आर्यसमाज ही कर सकता है। आर्यसमाज सह-अस्तित्व ओर भ्रातृ भाव की शिक्षा देता है। यदि मानव का निर्माण हो जाता है तो राष्ट्र की रक्षा करने का रास्ता आसान हो जाएगा। वेद का आदेश है—मनुर्भव। ये उद्गार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने आर्यसमाज किरण गार्डन मे आयोजित राष्ट्र रक्षा सम्मेलन मे व्यक्त किए।

पश्चमी दिल्ली के अनेक आर्य समाजो के प्रतिनिधियो के बीच मे आर्यसमाज किरण गार्डन के प्रधान चौधरी अमरजीत सिंह ने अगले वर्ष तक आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण की घोषणा की। इस अवसर पर श्री नारायण सिंह, श्री अशोक कुमार श्री यशपाल, श्री नरेन्द्र जी के उपदेशो के अतिरिक्त पैराडाइज स्कूल के बच्चो के भी कार्यक्रम हुए।

प्रवेश सूचना

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्बद्ध एव दिल्ली प्रशासन शिक्षा विभाग द्वारा अनुदान सहित मान्यता प्राप्त है जिसकी प्रसिद्ध परीक्षा 'विद्यालंकार' (बी० ए०) तक पढाने का समुचित प्रबन्ध है।। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की शास्त्री परीक्षा मे सीधे बैठ सकता है। शिक्षा नि शुल्क है छात्रावास शुल्क १०० रु० प्रतिमास है। योग्य एव प्रशिक्षित अध्यापक मण्डल है। अभिभावक अपने बच्चो का यहा पर प्रवेश दिलाकर उज्ज्वल भविष्य बनावे।

—मन्त्री/प्रबन्धक
आर्य गुरुकुल स० महाविद्यालय
टटेसर ज्यौती दिल्ली-८१

आर्यसमाज न्यू मोती नगर का रजत जयन्ती समारोह

आर्यसमाज न्यू मोती नगर मे रजत जयन्ती समारोह एव अमरवीर हकीकतराय बलिदान दिवस २८ जनवरी १९९० विक्रमी सम्वत २०४६ से ४ फरवरी १९९० तक बड़े हर्षोल्लास एव धूम धाम से मनाया जा रहा है।

राष्ट्ररक्षा सम्मेलन युवा सम्मेलन मुसलमानो एव ईसाइयो का शुद्धि एव भव्य शोभायात्रा समारोह के मुख्य आकर्षण होगे।

समारोह मे उच्चकोटि के महात्माओ सगीताचार्यो एव वैदिक विद्वानो को आमन्त्रित किया गया है।

सभी आर्यबन्धुओ से प्रार्थना है कि इस कार्यक्रम मे तन मन धन से सहयोग करके पुण्य के भागी बने। सभी आर्यसमाजो से निवेदन है कि उक्त तिथियो मे अपना कोई कार्यक्रम न रखे।

—सयोजक — निवेदक
डा०शिवकुमार शास्त्री तीर्थराम आर्य

आर्यसमाज विवेक विहार, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज विवेक विहार, दिल्ली का २४ अप्रैल से ३० अप्रैल तक आयोजित वार्षिकोत्सव का कार्यक्रम धूमधाम के साथ सम्पन्न हो गया। २४ तथा २५ अप्रैल को प्रात ५ से ६ बजे तक दोनो दिन प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। २४ अप्रैल से २९ अप्रैल तक प्रतिदिन प्रात प० प्रकाश चन्द्र जी शास्त्री एम० ए० के ब्रह्मत्व मे यज्ञ एवम वेदोपदेश किया गया। प्रतिदिन रात्रि ८ बजे से ९ बजे तक श्री गुलाब सिंह राघव जी के भजन तथा रात्रि ९ बजे से १० बजे तक प्रो० उत्तम चन्द्र शरर द्वारा कथा की गयी।

रविवार ३० अप्रैल को यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात राष्ट्रोत्थान सम्मेलन का आयोजन किया गया। उपस्थित जनता को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि राष्ट्र की एकता व अखण्डता के लिए भारत के प्रत्येक नागरिक विशेषकर आर्य समाज के कार्यकर्ताओ को आगे आकर कार्य करना चाहिए। आर्य-समाज को जन जागरण के लिए ऐसे सम्मेलन सगोष्ठियो का आयोजन करना चाहिए। सम्मेलन मे बोलते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव जी ने कहा कि आज की युवा पीढी ही राष्ट्रोत्थान के लिए बढ चढकर कार्य कर सकती है हम उनका सही मार्गदर्शन और दिशा निर्देशन करना है। दिल्ली सभा युवा पीढी का सगठित करने उनमे देश की एकता व अखण्डता की भावना भरने के लिए गत कई वर्षो मे कार्य कर रही है। आर्य वीर दल की ओर से ऐसे शिविर आयोजित किये जा रहे है, जिनमे युवा पीढी को सगठित करने, उन्हे बौद्धिक ज्ञान शारीरिक योग शस्त्र विद्या का ज्ञान कराया जाता है। हम सबको इसमे तन मन धन से सहयोग करना चाहिए। इस अवसर पर प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम, श्री उत्तमचन्द शरर ने भी अपने उदगार व्यक्त किये।

आवश्यकता है

कुछ अध्यापिकाओ की जो आचार्य अथवा एम० ए० (संस्कृत) उत्तीर्ण हो तथा कुछ सरक्षिकाओ की जो कम से कम मैट्रिक पास हो भोजन आवास की सुन्दर व्यवस्था तथा दक्षिणा यथायोग्य। १५ मई तक आवेदन करे।

—आचार्या सुशीला आर्या
कन्या गुरुकुल महाविद्यालय
नरेला (दिल्ली ४०)

निर्वाचन सम्पन्न—

आर्यसमाज धरा का वार्षिक चुनाव दिनाक १६-४-८९ दिन रविवार को सपन्न हुआ।
महाशय लछमनदास जी प्रधान
श्री राधश्याम मोहिल मन्त्री
श्री सतीश पाल आर्य कोषाध्यक्ष

* * *

आर्यसमाज मन्दिर रावतभाटा की कार्यकारिणी का चुनाव २३-४-८९ को सम्पन्न हुआ।
प्रधान श्रीमती भागवन्ती मेहता
मन्त्री श्री देवेन्द्रसिंह लोधी
कोषाध्यक्ष देवेन्द्र कुमार

* * *

राम गली आर्यसमाज हरिनगर सी-१३ घन्टा घर नई दिल्ली का निर्वाचन कैप्टिन बोधराज दत्ता की अध्यक्षता मे २३-४-८९ को सर्व सम्मति से निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

१ प्रधान श्री ओमप्रकाश जी खन्ना
२ मन्त्री श्री ओमप्रकाश शर्मा सैलानी
३ कोषाध्यक्ष श्री रामशरण दास गुप्ता।

आर्यसमाज नीलोखेडी का वार्षिक चुनाव दिनाक ९ अप्रैल ८९ को निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।
प्रधान श्री केवलचन्द
मन्त्री श्री सुभाष चन्द्र सिंह
कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश

आर्यसमाज हौज खास नई दिल्ली के वर्ष १९८९-९० के लिए निम्नलिखित पदाधिकारी सर्व सम्मति से निर्वाचित हुए —
१ प्रधान श्री विद्यासागर जी
२ मन्त्री श्री धर्मवीर गुप्त
३ कोषाध्यक्ष श्री बनवारी लाल कपूर

'आर्यसन्देश' के
—स्वय ग्राहक बने।
—दूसरो को बनाये।।

'आर्यसमाज' के
—स्वय सदस्य बने।
—दूसरो को बनाये।।

चाट मसाला

CHAT MASALA

Excellent for garnishing Chat Salads and fruit to provide delicious taste and flavour

आर्यसमाज का इतिहास : लोकार्पण समारोह

डा० सत्यकेतु विद्यालकार द्वारा लिखित 'आर्यसमाज का इतिहास' के सातो खण्डो का लोकार्पण आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी० ए०वी० प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान प्रोफसर वेद व्यास के कर कमलो से मगलवार २५ अप्रैल १९८९ को आयसमाज मन्दिर मार्ग के सभागार म सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती श्री स्वामी सत्यप्रकाश, प्रोफेसर शेरसिंह श्री सोमनाथ मरवाह श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालकार, डा० धर्मपाल, श्री सत्यदेव भारद्वाज वेदालकार श्री रामनाथ सहगल, डा०शिवकुमार शास्त्री तथा अन्य अनेक आर्यजन उपस्थित थे। प्रो० वेदव्यास ने श्रीमती सुशीला देवी को इस अवसर पर ग्यारह हजार रुपये का चैक भी भट किया। प० क्षितीश वेदालकार ने इतिहास के सातो खण्डो का विवरण प्रस्तुत किया। श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि प्रत्येक आर्यसमाजी के घर तथा प्रत्येक आर्यसमाज मन्दिर मे और प्रत्येक शिक्षा-सस्था मे इस महान् ग्रथ को रखा जाना चाहिए। यह तो आर्यसमाज का विश्व कोश है। ❑

आर्यसमाज सदर बाजार में

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

आयसमाज सदर बाजार दिल्ली का शताब्दी समारोह मनाया जा रहा है। उसके पहले चरण मे आर्य विद्वानो को सम्मानित किया गया तथा वेद प्रचार के कार्यक्रम आयोजित किए गए। धर्मरक्षा महाभियान के अन्तर्गत भी सहयोग दिया गया। द्वितीय चरण मे पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी की आचार्या सुश्री डा० प्रज्ञादेवी के ब्रह्मत्व मे १६ अप्रैल से २१ अप्रैल ८९ तक तदनुसार चैत्र शुक्ला एकादशीसेपूर्णिमा २०४६ तक, हीरादेवी धर्मशाला डिप्टीगज सदर बाजार दिल्ली मे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ आयोजित किया गया। पूर्णाहुति के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध, सरस्वती गुरुकुल घरोण्डा के अध्यक्ष, पूज्य स्वामी रामेश्वरानन्द जी सरस्वती दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल और महामन्त्री श्री सूर्यदेव के अतिरिक्त अन्य विद्वानो ने आर्य जनता को सम्बोधित किया। आर्यसमाज के प्रधान श्री किशारीलाल ने सभी आगत महानुभावो का स्वागत किया तथा मन्त्री श्री इन्द्रदेव जी ने आर्यसमाज की गतिविधियो का परिचय दिया। ❑

सेवा में—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस गली न० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७१६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

वर्ष १२ अंक २८ रविवार २१ मई १९८९ वैशाख शु० सम्वत २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द—१६५ सृष्टि सम्वत १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश में ५० पौं १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

सारा देश २१ मई ८९ को पंजाब दिवस मनाये

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का समस्त आर्यसमाजों को निर्देश

समस्त आर्यसमाजों को निर्देश दिया जाता है कि आगामी २१ मई १९८९ को अखिल भारतीय स्तर पर पंजाब दिवस का आयोजन कर और अपने समाज की ओर से प्रस्ताव पारित करके प्रधानमन्त्री गृहमन्त्री (भारत सरकार) पंजाब के राज्यपाल और प्रतिलिपि इस सभा को भेज। प्रस्ताव में निम्न शर्ते होनी चाहिए—

१ अकाली दल आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव को छोड क्योकि यह देश के विघटन और पृथकतावाद को प्रोत्साहित करता है।

२ पंजाब समस्या के समाधान के लिए पंजाब के सिखो और हिन्दुओ का संयुक्त सम्मेलन बुलाया जाये क्योकि पंजाब में हिन्दू ४५ प्रतिशत है। पंजाब समस्या के सम्बन्ध मे उन्हे उपेक्षित नही किया जा सकता है।

राजनीतिक पार्टिया पंजाब समस्या के समाधान मे अब तक असफल रही है अत पंजाब के सभी धार्मिक पक्षों के नेताओ की साझा जिम्मेदारी से पंजाब समस्या का हल खोजा जाय।

अनशनकारी युवकों की जान बचाने के लिए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधानमन्त्री से मिले

दिल्ली १८ मई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आज प्रात प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी से भेट की और लोक सेवा आयोग के बाहर अनशन पर बैठे हुए श्री पुष्पेन्द्र और उनके तीन अन्य साथियों के जीवन को बचाने के लिए प्रधानमन्त्री जी से तुरन्त हस्तक्षेप करने की माग की।

श्री स्वामी जी ने प्रधानमन्त्री को बताया कि आयोग के कार्यालय के बाहर गत १५ दिनो से आमरण अनशन पर बैठे युवको की हालत दिन प्रतिदिन गम्भीर होती जा रही है। यदि किसी अनशनकारी को जीवन से हाथ धोना पडा तो सरकार के सामने एक गम्भीर समस्या उपस्थित हो जाएगी।

स्वामी जी ने कहा अनशनकारियो की माग केवल इतनी है कि संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओ में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करके भारतीय भाषाओ का भी परीक्षा माध्यम मे स्वीकार किया जाये। जैसा कि १९६७ मे ससद के दोनो सदनो ने इस सकल्प को स्वीकार किया हुआ है।

प्रधानमन्त्री ने श्री स्वामी जी को इस मामले मे आज ही अन्तिम निर्णय लेकर अनशनकारियो की जान बचाने का आश्वासन दिया।

दयानन्द महाविद्यालय अजमेर के लिए यू०जी०सी० द्वारा एक करोड़ की योजना स्वीकृत

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने नवीन शिक्षा नीति के अन्तर्गत अन्य त्रिवर्षीय पाठ्यक्रमो के समान खलकूद स्वास्थ्य तथा शारीरिक प्रशिक्षण के लिए भी एक त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम की योजना तैयार की है। इस योजना के अन्तर्गत प्रत्येक राज्य मे कम से कम एक महाविद्यालय को इस कार्य के लिए लगभग एक करोड रुपये की अनावर्तक तथा पाच वर्ष तक के लिए आवर्तक आर्थिक सहायता का प्रावधान है। राजस्थान मे अजमेर के स्नातकोत्तर दयानन्द महाविद्यालय का इस योजना के अन्तर्गत आगामी सत्र १९८९ ९० में ये पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने के लिए चुना गया है। यह जानकारी देते हुए महाविद्यालय के निदेशक श्री दत्तात्रय वाल्ले ने सूचित किया है कि इस योजना की क्रियान्विती के लिए आवश्यक भिन्न भिन्न खेलो के मैदान तरण ताल व्यायामशाला (जिमनेजियम) आदि सभी सुविधाए दयानन्द कालेज के विशाल परिसर मे उपलब्ध करादी है।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

नैत्यिके नास्त्यनध्यायो ब्रह्मसत्रं हि तत् स्मृतम्।
ब्रह्माहुतिहुतं पुण्यमनध्यायवषट्कृतम्॥
—मनु० २।१०६

मनुष्य के प्राकृतिक भाग का भूख लगती है उसकी निवृत्ति के लिए तरह-तरह के अच्छे-से-अच्छे फल और अन्न परमात्मा की ओर से दिए गए हैं। प्यास भी प्रकृति का एक भाग है उसकी निवृत्ति के लिए चारो ओर शीतल जल बह रहे हैं। क्या मनुष्य का कहना का आवश्यकता है कि भूख और प्यास के बुझाने में नागा मत करो? और जब कभी आलस्य या प्रमाद से इन दैनिक कर्तव्यो को पूरा करने मे मनुष्य ढील करता है तब ही मनुष्य के शरीर को हानि पहुचती है। बड़े से बड़ा बलवान शरीर और अच्छे से-अच्छा स्वास्थ्य रखने वाला मनुष्य भी इन दैनिक कर्तव्यो के पूरा करने मे अनियमितता करके उसके दण्ड से नही बच सकता। यही अवस्था मन और आत्मा की है। दैनिक अग्निहोत्र का आज्ञा जहा अपवित्र वायु को स्वच्छ करने के लिए है वहां मका उसमे यह विचार भी काम करता है कि मनुष्य वायु को जिस प्रकार अस्वच्छ करता है उसी प्रकार प्रयत्न से उस वायु की अपवित्रता का दूर करना भी उचित है। किन्तु साथ ही इसके यह दैनिक कर्तव्य उन अज्ञाना पापो का निवृत्ति के लिए भी है जो कि न जानने की अवस्था में प्रत्येक मनुष्य से प्रायः हो जाते हैं। इस कर्म से बुद्धि निर्मल होकर मन की अवस्था पवित्र हो जाती है।

वैदिक आज्ञा के अनुसार सबसे बढ़कर मनुष्य का नित्य कर्तव्य ब्रह्मयज्ञ है उसमें सहायक केवल इसके सहायक हैं मुख्य दैनिक कर्तव्य नही है कि जिस तरह मनुष्य के भौतिक शरीर का भूख लगती है। इस प्रकार आत्मिक शरीर को आत्मिक भूख लगती है। और उस दैनिक भूख को प्रतिदिन निवृत्त न किया जाय तो मनुष्य की आत्मिक अवस्था भी वैसे ही गिर जाती है जैसे कि भूख लगने पर भौतिक शरीर की अवस्था होती है। इस ब्रह्मयज्ञ अर्थात वेदरूपी ज्ञान की खुराक से आत्मा का तृप्ति नित्य करनी चाहिए। प्रत्येक काम में अनध्याय सम्भव है किन्तु क्या शरीर के दूसरे दैनिक कर्तव्यो मे भी कभी नागा हो सकती है? रोग की अवस्था मे सम्भव है कि बनावटी जीवन व्यतीत करने वाले हम मनुष्यो का खुराक बदलने की आवश्यकता हो परन्तु कोई भी योग्य वैद्य खुराक को बन्द नही कर सकता। योग्य वैद्य वही समझा जाता है जो कि रोगी के शारीरिक बल को स्थिर रखने के यत्न मे किसी तरह उसमे खुराक पहुचाता रहे। इसी तरह से आत्मिक रोग हो जाने पर ब्रह्मयज्ञ के कर्तव्य से मनुष्य किसी तरह मुक्त नही हो सकता। इस लिए प्रत्येक आस्तिक पुरुष का कर्तव्य है कि नित्यप्रति प्रातः और सायं परमात्मा की उपासना के लिए ब्रह्म के ज्ञान की आहुतियां से आत्मिक यज्ञ किया करे। जब शारीरिक रोग होने पर शरीर का खुराक पहुचाने से कोई भी मनुष्य नही रुकता तो आत्मिक रोग की अवस्था मे आत्मिक खुराक से दूर भागना क्या आश्चर्यजनक नही है किन्तु यह अवस्था इसलिए होती है कि हम सब अपना वास्तविक अवस्था को त्यागकर बनावटी जीवन बिता रहे है। एक बच्चा जब बीमार होता है तो इधर उधर भागने के स्थान पर माता की गोद की ओर हाथ पसारता है और जब माता उसे गोद में ले लेती है तो वह विश्वास के साथ अपने रोग को भूल जाता है। जगत-माता से बढ़कर हमारे साथ किस सांसारिक माता का प्रेम हो सकता है? जगत माता की गोद हमारे लिए हर समय खुली है। फिर शोक! हम शारीरिक रोग का बहाना करके उस प्रेमभरी गोद मे जाने से मकोच करते है और अपने लिए हजारो तरह के क्लेश मोल लेते हैं। जब शरीर रोगग्रस्त होता है तो योग्य वैद्य खुराक बन्द नही करता बल्कि बोझल भोजन को बन्द करके हल्का खुराक रोगी के लिए निश्चित करता है। किन्तु हम लोग कैसे मूर्ख हैं कि उस समय जबकि हल्की-से-हल्की खुराक की आवश्यकता होती है भोजन को बिल्कुल अलग ही कर बैठते हैं! जो रोगी नित्यप्रति शारीरिक आवश्यकताओ को पूरा करने के योग्य है उसका यह बहाना कि बीमारी के कारण से परमात्मा की उपासना नही कर सकता कैसा व्यर्थ है! मैंने हरिभक्ता के अन्तिम क्षण देखे और उनके विश्वास को देखकर अजब असर पैदा हुआ। ब्रह्मज्ञानी ऋषि कहते है कि—न शक्यते वर्णयितुं तदा गिरा स्वयं तदन्तःकरणेन गृह्यते उसका जिह्वा से वर्णन नही कर सकते वह केवल अन्तःकरण से ग्रहण करने के योग्य है। तब उस आनन्द के लिए निर्बल-से निर्बल शारीरिक अवस्था बाधक नही हो सकती। क्या हम नित्यप्रति नही देखते कि बरसो का कमाया हुआ शरीर दो दिन उचित खुराक न मिलने से गिर जाता है तब क्या सन्देह है कि बरसो का आत्मिक कमाई एक दिन की असावधानी से नष्ट हो सकती है! यही कारण है कि दोनो समय आत्मिक सत्संग के लिए आज्ञा की गई है और उसमे अनध्याय का कदाचित स्थान नही दिया गया है। जो मनुष्य परमात्मा की नित्य प्रति उपासना से (ज्यादा काम या रोग के बहाने पर) बचने का यत्न करते है वे अपने लिए विशेषतः बीमारी की सामग्री मोल लेते है।

प्रिय पाठकगण! संसार चक्र दिन रात चल रहा है उसके अन्दर ठहरने की गुञ्जाइश नही है। हर पल हमे नीचे या ऊपर जाने के लिए तैयार खड़े है। अगर हम ऊपर की ओर न चलेंगे तो निश्चय से नीचे गिरना होगा। नीचे चलने के लिए किसी परिश्रम की आवश्यकता नही होती। नीचे ले जाने के लिए हमारे चारो ओर सामग्री दिखाई देती है परन्तु ऊपर चढ़ने के लिए विशेष पुरुषार्थ की आवश्यकता है। पर्वत के नीचे आने के लिए सिवाय एक बार पैर नीचे की ओर डाल देने के क्या किसी और गति की आवश्यकता होती है? परन्तु पहाड़ पर चढ़ने के लिए बड़ी भारी हिम्मत की आवश्यकता है। हां जब किसी हद तक ऊपर चढ़ जाय और अभ्यास हो जावे तो फिर आप से आप पैर ऊपर की ओर उठता है। ज्यो-ज्यो अभ्यास से बल और उत्साह बढ़ते जाते हैं त्यों-त्यों ऊपर के सुन्दर दृश्य मनुष्य को अपना ओर खींचते हैं। परन्तु क्या ऊपर चलने हुए मनुष्य एक घण्टे के लिए भी रुक सकता है? एक बार ऊपर की ओर पग उठाओ जब तक पहाड़ की चोटी पर न पहुच जाओ तब तक निश्चिन्त नहीं बैठ सकते। इसी तरह आत्मिक पर्वत की यात्रा मे भी बीच मे रुकने का अर्थ मृत्यु है। इस प्रकार पर्वत के मार्ग मे रुकते ही और नीचे नजर करते ही चक्कर आता है और घबराया हुआ मनुष्य हजारो फुट नीचे गिरकर चकनाचूर हो जाता है इसी प्रकार आत्मिक उन्नति के शिखर पर चलते हुए जिज्ञासु की अवस्था होती है। प्यारे मित्रो! इस विकट तथापि आवश्यक मार्ग पर चलते हुए ठहरने के विचार को भुला दो जिससे कि बिना रोक टोक शिखर पर पहुचकर तुम अमर जीवन को पा सको।

शब्दार्थ—(नैत्यिके) दैनिक कर्तव्य की पूर्ति में (अनध्याय) छुट्टी मुआफी (नास्ति) नही है (हि) क्योंकि (तत्) उसे (ब्रह्मसत्रम्) ब्रह्मयज्ञ प्रथमयज्ञ (स्मृतम्) कहा है। (अनध्यायवषट्कृतम्) अनध्याय में भी स्वाहा किया हुआ और (ब्रह्माहुतिहुतम्) वेदमन्त्रो से उच्चारित आहुतियां से आहुत यह ब्रह्मयज्ञ (पुण्यम्) पुण्यप्रद होता है।

ओ३म्
आर्य सन्देश

सामाजिक कुरीतियाँ और आर्यसमाज

यह प्रकृति का शाश्वत नियम है कि अच्छाई के साथ बुराई होती है, फूल के साथ काटे होते हैं, देवो के साथ दानव होते हैं, मित्र होते हैं तो दुश्मन भी होते हैं। पुराने जमाने मे आदमी अकेला रहता था, बाद मे वह समुदाय मे रहने लगा। फिर समाज बना और उसके बाद राष्ट्र और राज्य की बात सामने आई। विश्वबन्धुत्व और चक्रवर्ती साम्राज्य अथवा सार्वभौम साम्राज्य की परिकल्पना, उसके बाद आई। जब मनुष्य ससार को एक मानने लगा, सबको अपना मानने लगा, तत्पश्चात् पुन अवनति प्रारभ हुई। यह ससार टुकडो मे बट गया, राज्यो मे बटा। मनुष्य और मनुष्य मे स्वार्थवश फूट पडी। भाई भाई लड पडे। कहना यह है कि ऐसा चक्र चलता रहता है।

हम बात कर रहे थे कि सामाजिक जीवन मे जहाँ अच्छाइयाँ हैं वहाँ बुराइया भी है। हमारे समाज मे अनेक रीतिरिवाज है जो हमे ऊंचाई की ओर ले जाते हैं। हमारे समाज म कुछ अन्धविश्वास भी हैं, सामाजिक कुरीतिया हैं सामाजिक रूढियाँ हैं। ये हमारी प्रगतिशीलता के मार्ग मे अवरोधक है। ये हमारे मार्ग की बाधाए हैं। ये ज्योतिष्मान मार्ग के कण्टक हैं। ये मनुष्यता के मार्ग के रोडे हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि इन अवैज्ञानिक और मूर्खतापूर्ण रूढियो से छुटकारा पाय। ये किसी भी तर्क पर ठीक नही उतरती। इन सामाजिक कुरीतियो को निम्न प्रकार परिगणित कर सकते हैं—बाल विवाह, स्त्री वर्ग को शूद्र समझना, दलितो का मान न करना, गोवध चलते रहना, पाषाण, नदी, वृक्ष, नक्षत्र, ताजिए मजार, पीर, पैगम्बर मे पूजा का भाव रखना, अयोग्य, हठी, ठग, पाखण्डी, दुराग्रही, पण्डे, पुजारी, ज्योतिषी, सिर हिलाना फकीर, मुस्टण्डे आदि का मान करना, जगत को मिथ्या और स्वप्नवत् मानना, मनुष्यकृत ग्रन्थो मे पूजा-भाव रखना, अनाथ बालको की रक्षा न करना, विधवाओ को सहारा न देना, वैदिक वर्ण व्यवस्था न मानना, वेदो के शुद्ध अर्थ का प्रचार न करना, मठ-मन्दिरो मे चढावा चढाना, दहेज-प्रथा, मृतक श्राद्ध, आर्य पर्वों को विकृत रूप मे मनाना अन्धविश्वास, छीक मे भय, कुत्ते के कान फडफडाने मे भय, बिल्ली के रास्ता काटने मे भय, भूत-प्रेतादि को मानना, मास-मदिरा और धूम्रपान का निषेध न करना, आर्य जाति को हिन्दू नाम देना, सस्कृत भाषा मे अरुचि होना, छुआछूत का भय होना, ऊँच-नीच की भावना, कुपात्र को दान।

ऊपर कुछ ही बुराइया गिनाई गई है। कुछ और भी सामाजिक कुरीतिया है जिनकी ओर हमारा ध्यान नही जाता। यह सामाजिक और मनीषी विद्वानो का कर्त्तव्य है कि वे इन सब बातो की ओर आर्यजनो का ध्यान कराय।

हमारे देश मे यह मान्यता रही है विशेष रूप से हिन्दू समाज मे कि यदि किसी ने एक बार मुसलमान-ईसाई के घर खा लिया तो वह अपवित्र हो गया। हम उसे पुन अपने धर्म मे मिलाने मे कतराते रहे हैं। आर्यसमाज न हमे यह बोध कराया कि हम अपने बिछुडे भाइयो को गले लगाय। स्वामी श्रद्धानन्द का शुद्धि-चक्र हमे शक्तिशाली बनाता है। हमारे परिवार को बडा बनाता है। हम आज भी यह कार्य कर रहे हैं। और यह कार्य मानवमात्र के कल्याण के लिए है। सार्वदेशिक सभा ने मीनाक्षीपुरम, रामनाथपुरम, कालीहाडो क्षत्र मे अनेक मुसलमानो-ईसाइयो को पुन वैदिक धर्म मे दीक्षित कराया और वे आज हमारे समाज के अग हैं। हमारी यह सामाजिक कुरीति कि एक बार जो विधर्मी हो गया, उसे वापस न लिया जाये, हमे समाप्त करनी होगी। यह कार्य आर्यसमाज ही कर सकता है और कर रहा है।

छुआछूत हिन्दू समाज का कलक है। आर्यसमाज ने इसे मिटाने के लिए पूरी शक्ति से कार्य किया। आर्यसमाज ने अनेक हरिजनो को पण्डित बनाया। आर्यसमाजो मे अनेक हरिजन कुलोत्पन्न पण्डित, पुरोहित विवाह, यज्ञोपवीत, हवन आदि कराते हैं। छुआछूत को दूर करने मे महात्मा गाधी को भी हम श्रेय देते हैं, पर उन्हे भी इस कार्य की प्रेरणा परोक्षत आर्यसमाज से मिली थी। इस सम्बन्ध मे उनका एक लेख २८-१२-१९३२ को हिन्दुस्तान टाइम्स मे प्रकाशित हुआ था। इस लेख मे उन्होने एक प्रश्न उठाया था—अछूत का इस जन्म मे उद्धार हो सकता है या नही। इस प्रश्न का उत्तर आर्यसमाज ने दिया है। जैसा हम ऊपर कह चुके हैं। अनेक व्यक्ति जो हरिजन कुल मे उत्पन्न हुए थे बाद मे देश के अग्रणी नेता बने।

आर्यसमाज न जन्मगत जाति व्यवस्था मे विश्वास करता है और न ही स्त्रियो की असमानता मे। आर्यसमाज स्त्रियो को शूद्र (सेवक) नही मानता। उन्हे बराबर का स्थान दिया गया है। आर्यसमाज गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार वर्ण व्यवस्था का समर्थक है। आर्यसमाज ने इस प्रकार जन्म के आधार पर जाति मानने की कुरीति का विरोध किया है।

आर्यसमाज ने विदेश यात्रा विधवा विवाह, अन्तर्जातीय विवाह पर लगे प्रतिबन्ध को भी समाप्त करने का सुष्ठु प्रयास किया है। आज हम विदेशो की यात्रा भी करते है। आर्यसमाज मन्दिरो मे विधवा विवाह और अन्तर्जातीय विवाह भी सम्पन्न कराये जाते है। सती प्रथा का आर्यसमाज ने विरोध किया है। सती प्रथा का आविर्भाव ही विधवाओ की दुर्दशा से हुआ। यदि विधवाओ की समस्या न रहे तो सती प्रथा ही न रहेगी। अभी दिवराला मे काण्ड हुआ आर्यसमाज ने अपनी सशक्त आवाज इसके विरोध मे उठाई। राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के अभियान को आर्यसमाज ने शक्ति दी।

वर्तमान हिन्दू कोड अन्तर्जातीय विवाह की मान्यता देता है। आर्यसमाज ने बहुत पहले से ही कार्य आरम्भ कर दिया था। १९३८ का आर्य मैरिज वैलिडेशन एक्ट, आर्यसमाज के नेता घनश्यामसिह गुप्त के श्रेष्ठ कार्य का परिचायक है। शारदा एक्ट भी आर्यसमाज के प्रयास का ही परिणाम है जिसके आधार पर बाल विवाह पर पाबन्दी लगाई गई।

आर्यसमाज का मूलाधार मूर्तिपूजा का विरोध है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश म लिखा है कि मूर्ति पूजा का प्रारम्भ जैनियो की मूर्खता के कारण हुआ था। मूर्ति पूजा अवैदिक है।

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद् यश।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मूर्ति पूजा कण्ठी, तिलक, नाम रटन आदि का सशक्त खण्डन किया है। पानी मे तीर्थ बुद्धि रखने वालो को उन्होने गधे के समान बताया है। हमारा कर्त्तव्य है कि इस कार्य को आगे बढाये।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गोवध समाप्त कराने के लिए बहुत बडा कार्य किया था। हम आज भी गोवध निषेध कानून बनवाने मे सफल नही हुए है। यह सामाजिक बुराई है। हम चाहिए कि हम इस कार्य म प्राणपण से जुट जाय।

ऊपर अन्य अनेक कुरीतियो का जिक्र किया है। आर्यसमाज ने सदैव अपनी आवाज इनके विरोध मे बुलन्द की है। हमे विश्वास है कि हम ऋषिवर दयानन्द के कार्य को अवश्य पूरा करेगे—

छूतछात त्याग का अठना उपदेश दिया,
भेदी भेद भावना के भूत को भगा गया।
वैर को विसार पुण्य प्रीति का पढाया पाठ
हृदय क प्रेम के पीयूष म पगा गया॥

झूठे देवी-देवो के प्रपञ्च स छुडाके,
एक ईश की उपासना म सबको लगा गया।
दशहित साध के दिवाली का सदा के लिए
आप सो गया प ऋषि जग को जगा गया॥

सब को पावन करता पुरोहित

—देवनारायण भारद्वाज

धन पाने की एक नई प्रणाली बन गई है लाटरी। शासन भी इसे प्रश्रय प्रदान करता है। यह अकर्मण्यता की जननी है। एक व्यक्ति लाटरी के टिकट क्रय करके लाखो के हिसाब मे खोया रहता था। इसी के बल पर कार-कोठी-कारखाने की कल्पना करता रहता था—पुरुषार्थ कुछ नही करता था सो दिन प्रतिदिन दु खी रहता था। उसकी पत्नी ने उसको पाठ पढाने का निश्चय किया और एक ज्योतिषी को बुलाकर उसका भविष्य बतलाया। ज्योतिषी ने मकान के आगन मे गडा हुआ धन बता दिया। उसने रात्रि भर आगन मे गड्ढा खोदा। वास्तव मे वहा एक मिट्टी का मटका मिला। उसमे खोलने पर रखा मिला एक लाटरी का टिकट वह भी पुरानी तिथि का। सज्जन को निराशा तो हुई पर रात्रि भर के श्रम ने उसकी आखे खोल दी और वे मन लगा कर अपना काम करने लगे। पत्नी सन्मार्ग दर्शन के अपने उद्देश्य मे सफल हुई। हम अकेले को खूब अन्न व धन मिलता हो—और हम बुराइयो से भी बचे रहे, पर आस-पास नगर-ग्राम राष्ट्र के अन्य व्यक्ति अपर्याप्त सुविधाओ के कारण असन्तुष्ट रहते तो तब हमारा सुखी रहना एक दिवा स्वप्न ही सिद्ध होगा। समाज मे किसी आवश्यक वस्तु के अभाव मे होने वाली लूट-पाट हम इस दिशा मे सचेत करती है। मन्त्र की मन्त्रणा देखिए —

अग्नि ऋषि पवमान पाञ्चजन्य पुरोहित । तमीमहे महागयम ।

ऋ० म० [illegible] ० [illegible] म० [illegible]०

पदार्थ—हे (अग्नि) प्रकाश स्वरूप प्रभु नेता और [illegible]पत। (पाञ्चजन्य) पाच जनो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र एवम अन्यज सबका के (पुरोहित) [illegible] पूर्व से ही हित करने वाले हे (महागयम) महती स्तुति वाले आपका (ईमहे) हम प्राप्त होते है।

उस ज्ञान प्रकाशक गुप्त रहस्यो के ज्ञाता प्रभु को हम अपना समझते है पर क्या वह अन्य का नही है। वह सभी का है। सूर्य का प्रकाश, चन्द्रमा की ज्योत्स्ना वायु का प्रवाह जल के स्रोत गगन की गूज, अग्नि का ताप [illegible] व भूमि की गोद किसके साथ पक्षपात करती है। ब्राह्मण से अन्त्यज-म्लेच्छ सभी को इनके लाभ मिलते हैं। वैसे ही परमात्मा परम पुरोहित की कृपा भी सभी के लिए है। कोई भी इसे प्राप्त कर अपना उद्धार कर सकता है। किसी ने प्रश्न किया कि चार वर्ण सर्वत्र सुने गए हैं—ये पाचवा कहा से आया। वास्तव मे ये पाचवा वर्ण नही है। ब्राह्मण अपने कर्त्तव्य से विमुख होकर अवनत हो क्षत्रिय नही हो सकता, न क्षत्रिय, वैश्य और न वैश्य शूद्र हो सकता है, क्योकि प्रत्येक के पृथक्-पृथक दायित्व व अधिकार हैं। हा, एक वर्ण का व्यक्ति किसी दूसरे वर्ण के कर्त्तव्य स्वीकार करके सम्बन्धित वर्ण का सदस्य बन सकता है तब तो शूद्र भी ब्राह्मण हो सकता है। जो अपने वर्ण के कर्त्तव्य की अवहेलना करता है वह उसमे पृथक होकर निकृष्ट कोटि मे आ जाता है और अन्त्यज हो जाता है। परमात्मा इसको भी अपना प्रकाश प्यार प्रदान कर ऊपर उठाने की प्रेरणा देता है।

जीव द्वारा ग्रहण किया जाने वाला खाद्य पृथ्वी जल अग्नि, वायु आकाश तत्वो मे मिलकर बनता है। यही तत्व आवाल-वृद्ध जीव मात्र मे जन्म से पूर्व ही विद्यमान रहते हैं। शरीर के भीतर या बाहर सर्वत्र इनकी पवित्रता आवश्यक है। इसी अभिप्राय से अग्निहोत्र आदि होते हैं। अन्न से मन की शक्ति बढती है और जल से प्राण की शक्ति बढती है। इसे प्राणायाम से अधिक तीव्र किया जाता है। प्राण अपान उदान-समान और व्यान यदि पवित्र नही होगे तो शरीर की क्रियाओ का कुशल सचालन कैसे होगा। यही अन्न व जल का सन्तुलन हमारे सम्पूर्ण शरीर को न केवल सबल बनायेगा, प्रत्युत ज्ञानेन्द्रियो को भी स्फूर्ति प्रदान करेगा। मुख नाक आख कान व त्वचा यदि सक्षम क्रियाशील रहेगे तभी तो हम सही ऊर्जा प्राप्त करके उसका उपभोग कर सकते है। यज्ञ और यज्ञ शेष के द्वारा हम सृष्टि या शरीर के किसी एक अग को ही सुदृढ नही करते हैं प्रत्युत सभी अगो को बलवान बनाते हैं। यह भी कहा जा सकता है कि जब सभी सशक्त होगे तभी हम या पूर्ण शरीर सशक्त है।

वेद का सन्देश है—मनुर्भव'—मानव बनो। शरीर-प्राण-इन्द्रियो से कोई जीव मनुष्य जैसा दिखाई दे तो आकृति से यह मनुष्य वर्ग मे माना जायेगा पर यदि वह पशुओ के सदृश व्यवहार करता है तो फिर वह मानव नही हो सकता है, पशु है। जब वह मन-बुद्धि-शरीर से धर्मानुसार आचरण करता है, तब वह सच्चा मनुष्य बनता है। केवलाघो भवति केवलादी—अकेला खाने वाला केवल पाप खाता है। निष्पाप व पुनीत होने के लिए अपना ही नही परिवार के पाचो सदस्यो का ध्यान रखना होगा—माता, पिता, आचार्य अतिथि एवम् दम्पती (पति के लिए पत्नी, पत्नी के लिए पति)। त्याग भाव हमे बाल्यकाल मे सिखाया जाता है। कोई सुरुचिपूर्ण पदार्थ आपने बालक को दिया और उससे कहा, इसमे से भाई को बहन को-अन्य शिशु को दो—फिर खाओ।

परिवार से बाहर निकल कर हम अधिक विस्तार पाते है तो वहा भी हमे पाच साथी मिलते है—वही जिनका प्रारम्भ मे वर्णन किया था—ब्राह्मण-क्षत्रिय वैश्य-शूद्र और इन मे पृथक हुए अन्त्यज या म्लेच्छ। जैसे वह प्रभु इन सबका है वैसे ही हमे भी इनके कल्याण का ध्यान रखना होगा अन्यथा हम अकेले या हमारा परिवार सुखी नही रह सकता है। लूट पाट मच जायेगी। आज समाज मे हो रहे सघर्ष इसी स्वार्थ का परिणाम हैं। उपरोक्त चार प्रकार के कार्य विभाजन के बिना कोई देश सगठन सचालित नही रह सकता है—शिक्षक, रक्षक, व्यापारी सेवक तथा कर्त्तव्यच्युत व्यक्ति कहा नही होते हैं। सबको कर्त्तव्य की ओर उन्मुख करना होगा।

शिष्यो ने अपने गुरु से पूछा—जीवन जीने की कला क्या है। महात्मा ने कहा कभी बतायगे। उन्होने कुछ लीला की। एक सेठ स्वादिष्ट मिठाई भेट मे लाया और महात्मा की सेवा मे श्रद्धा से प्रस्तुत कर दी। महात्मा ने उसे खाया और आगन्तुक से बिना एक शब्द बोले उठकर चल दिए। सेठ ने कहा ये तो बडे लालची निकले—मैंने तो इनकी बडी बडाई सुनी थी। दूसरे दिन प्रार्थना सभा मे फिर एक सेठ मिठाई लाये और महात्मा को भेट कर दी। उन्होने मिठाई को तो फेंक दिया, और सेठ से [illegible] करके चल दिए। सेठ ने कहा महात्मा बडे घमण्डी हैं—मैंने इनका जैसा नाम सुना था ये तो ठीक उससे विपरीत है। तीसरे दिन सत्सग मे एक अन्य सेठ मिठाई लाये और आदरपूर्वक महात्मा जी को भेट कर दी। महात्मा जी ने मिठाई का कुछ भाग सेठ को कुछ शिष्यो को कुछ अन्य भक्तो को दिया, फिर स्वय भी खाया। सेठ से परिवार का व्यापार का अन्य हाल चाल पूछा। प्रेम से वार्ता करके वे ध्यान के लिए उठ गए। सेठ ने महात्मा की खूब प्रशसा की और कहा महात्मा बडे ऊचे व सच्चे है, जैसा इनका यश सुना था—ये तो उससे भी अधिक महान् हैं। महात्मा ने अपने शिष्यो मे तीनो सेठो की प्रतिक्रिया पर चर्चा करके जीवन जीने की कला पर क्रियात्मक प्रकाश डाल दिया। तेन त्यक्तेन भुजीथा, मिल बाट कर खाओ, यही तो वेदोपदेश है।

मानव के शरीर मे जैसे सिर-ब्राह्मण, भुजाये-क्षत्रिय, उदर-वैश्य व चरण-शूद्र हैं वैसे ही ये समाज के अग है। उदर भोजन ग्रहण करता है पर वह सग्रह नही करता है—वितरण कर देता है, सभी अगो को। ऐसे ही समाज का वैश्य वर्ण भी भण्डारण-वितरण का समायोजन करके सभी वर्णों का पोषण करता है। सभी वे वर्ण समाज के लिए शिक्षा रक्षा-सेवा का सबल प्रदान करते है। इन सबसे मिलकर बनता है एक सामाजिक सगठन। पृथक्-पृथक सब कमजोर रहते हैं मिलकर सब बलवान हो जाते हैं।

यहा पर वह आख्यान स्मरणीय है, जिसमे साथ साथ रहे ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य शूद्र चार मित्रो ने किसान की अनुमति के बिना खेत से गन्ना तोड लिए। अकेला किसान सबसे कैसे लडता। उसने युक्ति से काम लिया। तीन को छोडकर पहले शूद्र को पकडा और कहा पण्डित जी को दान दक्षिणा देना मेरा काम है, ठाकुर साहब से बडी आशाए है, और सेठ जी समय पर काम आ जाते है, पर तू तो सेवक है, कैसे साहस किया गन्ने तोडने का, और लगा उसे पीटने। शूद्र पिट गया, तीनो देखते रहे। फिर पडित जी और ठाकुर साहब को छोडकर लाला जी को, और इस प्रकार चारो को किसान ने दण्डित कर

दिया।

अपनी-अपनी ढपली अपना अपना राग बेसुरा हो जाता है। हारमोनियम पर कोई स्वर वीणा पर कोई दूसरा राग ढोलक पर कोई तीसरी ताल और गायक की कोई अन्य ताल हो तब तो संगीत पाताल को चला जाता है। यदि मधुर संगीत की तरंग प्राप्त करनी है तो सभी संगीतकार कलाकारों की संगीत सहकारी होनी चाहिए विकारी नहीं। यदि परमात्मा महान स्तुतियों का स्वामी है और हमें उसकी महान स्तुति करनी है तो गाना होगा महागान—एकता का महागान एक राजा ने संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया। किसी कलाकार ने हारमोनियम किसी ने सितार वीणा सारंगी किसी ने ढोलक मृदंग पृथक पृथक बजाकर सुनाई। साधारण किन्तु सुन्दर दो लकडी लेकर एक व्यक्ति राजा के दरबार मे पहुच गया और उसने भी अपना बाजा सुनाने की अनुमति चाही। उसने अनुमति मिलने पर बताया कि मेरा सामिल बाजा सबके साथ बजता है। उस व्यक्ति ने सबके वाद्य यन्त्र चालू कराके उनके स्वर-ताल को मिलवाया फिर लगा अपनी दोनो लकडी घुमाने फिराने और नचाने। सभी वादनो के सुमधुर मनमोहक संगीत ने एक निराले वातावरण का सृजन कर दिया था सबको साथ लेकर चलने वाला वह साधारण लकडी लेकर आया व्यक्ति सम्मान का पात्र बन गया

कुछ दशाब्दियो पूर्व की ही बात तो है जब अपने घर परिवार मे ही नही चाचा ताऊ काका बाबा आदि के सम्बोधन हम समाज मे भी करते थे—और सभी निकट स्नेह सम्बन्धी बन जाते थे अब अंकल एवम भाई साहब दो सम्बोधन सर्व प्रचलित हो गए है जो वास्तव मे अपनापन खोकर मात्र औपचारिकता प्रकट करते है। जहा अंकल का प्रयोग होता है वहा विदेश मे वह चाचा मामा दोनो के लिए प्रयुक्त होता है। चाचा शब्द के अपनत्व का अंकल मे कोई तत्व दिखाई नहीं देता है। कोई नेत्रहीन मार्ग मे बैठा था। हिरन को पकडने के लिए सिपाही मन्त्री एवम राजा जंगल मे निकले। उसी मार्ग से हिरण भाग कर चला गया। सिपाही उसके पीछे पीछे दौडा और उसने नेत्रहीन से वे पूछा ओ अन्धे क्या इधर से हिरन गया है। उसने कह दिया हा सिपाही जी। मन्त्री जी भी सिपाही को खोजते वहा आ गए। उन्होने भी नेत्रहीन से हिरण के विषय में अरे सूरदास कह कर पूछा। उन्होने उनको मन्त्री जी कह कर हिरण सिपाही के जाने की बात कह दी। इसके बाद राजा भी इन सबको खोजता वहा आ गया और मान्य बाबा जी सम्बोधित कर उक्त जानकारी नेत्रहीन से से की। राजा जी का सम्बोधन कर उसन उसने हिरन सिपाही मन्त्री के विषय मे बता दिया। इस प्रकार सम्बोधन समाज मे स्नेह अपनत्व के स्तर का निर्धारण प्रकट करते है।

राजा जी उन सूरदास महात्मा को दूरदर्शी अन्तदर्शी समझकर अपने साथ ले आये और किसी बडी समस्या के आने पर उनसे मार्गदर्शन प्राप्त कर लेते थे। समस्या के अच्छे समाधान पर राजा सूरदास को पुरस्कार भी देते थे। वह क्या था कभी भोजन के साथ एक रोटी तो एक लड्डू बढा देते थे। एक दिन राजा को मनोरंजन करना था। उसने बाबा से पूछा बताओ मै पहले जन्म मे क्या था। उस बाबा ने कह दिया आप उस जन्म मे वैश्य थे। राजा ने कहा आप कैसे सिद्ध कर सकते हैं। आप राजा है इस जन्म मे अपार धन सम्पत्ति आपके भण्डार मे है पर समस्या के मेरे समाधान पर प्रसन्न होकर आप जो पुरस्कार प्रदान करते है उससे वैश्य के संस्कार ही प्रकट होते है—वह भी किसी आर्य वैश्य के नहीं—मामाय वैश्य के

दूरदर्शी सूरदास अपनी अन्तर्दृष्टि से जैसे गुप्त रहस्यो की बात जान सकते थे परमेश्वर तो सर्वान्तर्यामी भी है वह भी सबके अन्दर की बात जानता है। इसी लिए यहा उसे मन्त्र मे ऋषि कहा कहा गया है। एक बुढिया सर पर पर गठरी लाद कर जा रहा था थक चुकी थी तभी घोडे पर एक सिपाही निकला। बुढिया ने उससे कहा बेटा मेरी गठरी अपने साथ साथ ले चलो आगे पडाव पर रख रख लेना मैं आकर ले लूगी। सिपाही ने यह सोचकर कि बुढिया न जाने कितनी देर मे वहा पहुंचे उसे मना कर दिया। घोडा आगे निकल गया पर कुछ देर बाद सिपाही ने घोडे को वापस लाकर बुढिया से कहा लाओ अम्मा गठरी ले चलू। अब बुढिया ने मना कर दिया। तू जा बेटा मै ऐसे ही चली जाऊगी—जो तेरे कान मे कह गया वह मेरे कान मे भी कह गया है इतने ही अन्तराल मे सिपाही ने सोच लिया था कि यदि गठरी मे कोई मूल्यवान वस्तु होगी तो ले लूगा और इन्ही क्षणो मे बुढिया ने भी सोच लिया था कि सिपाही कही गठरी लेकर ही न चला जाये

उस परमात्मा या ऋषि की भाति यदि हम परस्पर एक दूसरे की अन्तर्भावनाओ का ध्यान रख कर व्यवहार करे तो समाज मे सहृदय संगठन सुस्थिर हो सकता है। योगिराज कृष्ण के गोप ग्वाला से लेकर महाराज युधिष्ठर व अर्जुन तक ने पूर्ण सम्मान को दिया सभी उन्हे अपना क्यो समझते थे? क्योकि उनके शख का नाम पाञ्चजन्य था। उनके मुख से निकले उद्घोष सभी के लिए कल्याणकारी होते थे यदि बाल सखा के रूप मे अत्याचारी राजा मामा कंस का वध कर सकते थे तो सम्राट द्वारिकाधीश होकर दीन ब्राह्मण सुदामा के चरणो को अपने नेत्र जल से व धो सकते थे। सबको साथ लेकर चलने वाला घोष हो विश्व शान्ति सूचक राष्ट्र हितैषी उदघोष है और वह पाञ्चजन्य शख से ही निकलता है

शख क्या है? शमन या शांति ख इन्द्रियो का या आकाश की जिस का उदघोष मनुष्य की इन्द्रियो को शमन कर विश्व आकाश मे शांति स्थापित करे वही शख है और वह सर्वदध्व संगठन का पाञ्चजन्य हो हो सकता है चन्द्रगुप्त राज्य त्याग कर मुक्ति मार्ग पर जाने लगे तो उन्होने अपने मार्गद्रष्टा कौटिल्य चाणक्य से भी साथ चलने को कहा पर उन्होने मना कर दिया और अपनी मुक्ति से पूर्व समाज की मुक्ति को युक्तियुक्त समझा। युगद्रष्टा दयानन्द ने अपने सुलभ मोक्ष के आनन्द से अधिक अधिकार ग्रसित पीडित मानव समुदाय की मुक्ति को वरीयता दी और वेदो के कृण्वन्तो विश्वमार्यम नारे को चरितार्थ कर वसुधैव कुटम्बकम की स्थापना का सतत प्रयास किया आज भी विश्व नागरिकता का नारा उठ रहा है जो ऋषिवर के बनाए मार्ग पर चलकर ही सम्भव हो सकती जिसे दूसरे की प्रतीक्षा के बिना हम स्वयं एक एक व्यक्ति चल चल कर पूरा कर सकते हैं।

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए अपितु सब की उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए। महर्षि दयानन्द ने अपने दस नियमो मे एक नियम यह रखा था—इसके पालन से व्यक्ति राष्ट्र व विश्व का कल्याण सुनिश्चित होता है। इस नियम मे महाभारत शान्ति पर्व मे वर्णित पंचशील का पूर्ण समावेश है जो इस प्रकार है (१) सब प्राणियो के प्रति मन वचन कर्म से अद्रोह बरतना (२) दूसरा पर अनुग्रह कृपा दया करना (३) यथाशक्ति पात्रानुसार दान देना (४) अपने जिस कर्म या श्रम से औरो का हित न हो या उसे करने मे स्वयं को लज्जा लगे या घृणा हो उसे कभी न करना (५) जिस कार्य या श्रम मे मानव समाज में प्रशंसा हो उसे करना चाहिए। इस पंचशील व्यवहार से परस्पर परिवार समाज के सभी मनुष्यो का ही हित नही होता है प्रत्युत प्राणिमात्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है ❐

जवानो, जवानी यूं ही न गंवाना !

—स्व० स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती

मूर्ख और बुद्धिमान में बड़ा अन्तर होता है। मूर्ख अच्छी बात का भी बुरा बना देता है और बुद्धिमान बुरी बात का भी अच्छा बना देता है। काजल का अगर सही प्रयोग किया जाय तो आंखों में डाला हुआ सुन्दरता को चार चांद लगा देता है। मगर गलत ढंग से प्रयोग किया हुआ वही काजल इधर उधर लग जाये तो अच्छी सूरत को भी भद्दा बना देता है। एक बुद्धिमान पुरुष ने आग पर चढ़ी हुई देगची का ढक्कन उछलते अनुभव किया कि वह पानी जो पहले चुपचाप था भाप बनकर कितना जबरदस्त बन गया है जिसने ढक्कन को धकेल कर पर फेंक दिया है बुद्धिमान ने उस शक्ति को सम्भाला और इन्जिन तैयार कर दिये। मूर्ख ने पानी आग के इकट्ठे किये और हुक्का बनाकर गुड़गुड़ करता रहा और अपना समय और स्वास्थ्य खराब करता रहा मनुष्य पर भी एक समय आता है जब उसके सामने अपनी शक्ति सम्भालने का अवसर आता है जवानी मस्ती में बनकर आती है जब वह चलता है तो कंधे मार कर चलता है पूछो तो कहेगा देखते नहीं जवानी आ रही है स्टीम पैदा हो रहा है समझदार ने इसे सम्भाला और लाखों लोगों को पीछे लगा लिया लेकिन मूर्ख यह कहता है—

हम दिल के टुकड़े हजार कर
कोई यहां गिरा कोई वहां गिरा

अपनी जवानी को नष्ट कर लेना है जवानी में ही सम्भलने का समय है लेकिन आज का नौजवान कान्मी लापरवाह है जिसका निमन्त्रण नहीं। एक बार मैंने एक जानकार नौजवान से जिसके शराब का लत लग गया था कहा कि क्या अपना नाश कर रहे हो कहने लगा परन्तु आप कभी पी हो नहीं— क्या जानें मय का मजा ... कहने लगा ... मैंने कहा ... कहने लगा कि ... ही नहीं मैंने कहा ... ठीक है क्या व कैसी होगी मनुष्य ... अपना होश ... तो तब है कि होश में ... था ।

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात।

(लेकिन नानक के पुजारी आज सबसे अधिक शराब पीते हैं।

अभिमन्यु की लाश पड़ी है सब रोते हैं। सुभद्रा का बुरा हाल है कृष्ण आते हैं। कहते हैं कि सुभद्रा क्या कर रही हो सुभद्रा रो पड़ती है कहती है कि भाई तुम मुझे यह कह रहे हो कि क्या कर रही हो मेरा जवान बेटा छिन गया है। मैं अधीर न होऊं तो क्या करूं ? कृष्ण कहते हैं कि सुभद्रा तू याद कर तू क्षत्रिय की पुत्री है और उस क्षत्रिय वीर की माता है। जो धर्म पर वीर गति को प्राप्त हुआ है। क्षत्रिय का सबसे बड़ा कर्त्तव्य धर्म और न्याय की रक्षा के लिए मर मिटना है। तेरा पुत्र तो अमर हो गया है और तू रो रही है। सुभद्रा को होश आ जाता है। उसका चेहरा दमक उठता है यह देव स्वरूप पुन सामने मरा पड़ा है और होश कायम रख जाते हैं। यह हालत तब आती है जब मनुष्य नाम का खुमारी में रंग जाये। ब्रह्मचारी बनो। ब्रह्मचारी का मतलब है जो ब्रह्म में निवास करे अपने मन को वीर्य को सम्भाल कर रखे यह वीर्य असली रसायन है इससे बढ़कर और कोई रसायन नहीं। आज तो लोग असली रसायन को खाकर फिर इन्जेक्शन लगवाने लगते हैं। मूर्खता और किस को कहोगे आज सुन्दरता के लिए सुर्खी और लिपस्टिक लगाये जाते हैं। होंठों और गालों पर सुर्खी और लाली लगाई जाती है। इस रहस्य को भुला दिया है कि असली खूबसूरती और लाली होठों और गालों पर कैसे आती है। आओ आपको इस बात का रहस्य भी बतला दें होंठ बहुत कोमल हिस्सा होते हैं वहां खून की लाली उभरती है शरीर में खून हो और उसका सार ठीक हो तो होठों पर लाली खुद ही आ जाती है शरीर में खून हो इस तरफ ध्यान नहीं दिया जाता नकली रंग का बाह्य प्रयोग किया जाता है अच्छा भला आदमी हो कुछ देर पानी में रहे तो खून का दौरा रुक कर होठ नीले पड़ जाते हैं। ये खून के करिश्मे हैं अरे अनमोल का वीर्य को कायम रख कर तो देखो कितना आनन्द आता है गंवाने में तो क्षणिक मजा और फिर पछतावा लगा रहता है लेकिन इसे कायम रख कर देखो कितना आनन्द आयेगा

आप कहेंगे पण्डित जी क्यों तरसा रहे हो। इसे कायम रखने के लिए कोई रास्ता तो बताओ। रास्ता सुन लो आप को ब्रह्मचारी बनना होगा और हमेशा प्रभु को याद रखनी होगी कहा जाता है कि प्रभु भजन और प्रभु भक्ति तो बुढ़ापे की चीज है। याद रखो अगर आप ने अभी से आदत न बनाई तो बुढ़ापे में कुछ न होगा।

सावन का महीना है। आमों का टोकरा सामने पड़ा है। मनुष्य आम चूस कर गुठलियां को एक थाली में सजा सजा कर रख रहा है मैंने पूछा ये क्यों सजा रहे हो कहने लगा भगवान को भेंट होंगे अरे मीठा रस तो गटागट के और गुठलियां भगवान के लिए जवानी सारी काम का न रहेगा खाक भगवान को याद करोगे जवानी बेकार खो दी तो बुढ़ापे में भगवान हाथ न आयेगा। एक यह भी सवाल किया जाता है कि प्रभु भजन क्या करें दिल नहीं लगता नहीं लगेगा पहले भूख पैदा करो। भोजन और भजन का एक ही कानून है। भोजन तब ही अच्छा लगता है जब भूख हो भूख में सूखे टुकड़े भी मजा देते हैं परमात्मा के भजन के लिए भी भूख की जरूरत है। गीता ने चार प्रकार के भक्त कहे हैं।

पहला भक्त वह होता है जो दुखी हो। आप कहेंगे क्या हम दुखी हो जाय हो आप कहोगे अच्छे उपदेश देने बैठे। माता पिता जीवित हैं घर में सब कुछ है किसी चीज की कमी नहीं खाने को खूब मिलता है दण्ड पेलते हैं। दुखी क्या हो इस पर भी दुखी हो जाओ। अपने लिए नहीं दूसरों के दुख को अपना दुख समझ लो। अगर तुम्हारे पास कोई भूखा आये तो पहले उसे खिलाओ। कोई दुखी है तो उसका दुख दूर करो। परोपकार करो। सब कुछ रखते हुए सेवा का व्रत धारण करो सबसे बड़ी ईश्वर की भक्ति यह है। किसी के काम आकर तो देखो कितना आनन्द आता है। दुनिया में जितने दुख और झगड़े हैं उनके तीन कारण हैं इनमें से एक तुम ले लो। आज शिक्षा के रहस्य को लोगों ने भुला दिया है। हमारे ऋषियों ने इसे खूब समझा था। वो विद्यार्थियों को दुनिया के इन तीन प्रकार के दुखों को दूर करने के लिए तैयार करते थे। हमारी वैदिक शिक्षा सच्चे वैश्य क्षत्रिय और सच्चे सच्चे ब्राह्मण पैदा करने के लिए होती थी जो तीन प्रकार के दुख दूर करने के लिए तैयार किये जाते थे।

पहला दुख अभाव से पैदा होता है। देश का काम है कि वह वस्तुओं का निर्माण करे और सब लोगों को दे लेकिन आज का देश तो ब्लैक मार्किटियों का हो रहा है। वो अपना स्टाक भर लेता है, वस्तुएं गायब हो जाती हैं न मिले तो सब दुखी। अगर देश अपने धर्म पर कायम है तो ब्लैक मार्कीट और अभाव तो आयेगा। बांट ठीक हो तो दुख न होगा।

दूसरा दुख का कारण अन्याय है। कुछ गुण्डे उठते हैं और दूसरा की वस्तु छीन कर घर में डाल लेते है। क्षत्रिय का काम है ऐसे लोगों से समाज को बचाये। कोई चोर न हो कोई किसी पर अन्याय न करे सब सुखी हो जाय। इस काम के लिए क्षत्रिय तैयार किये जाते थे जो न्याय को कायम रखने के लिए व्रत लेते थे और अन्याय को मिटाने के लिए जान पर भी खेल जाते थे।

तीसरा दुख अविद्या की वजह से होता है। अविद्या और अज्ञान को दूर करने का काम ब्राह्मण करता था। सारा संसार सुखी था। इन तीन प्रकार के दुनिया के दुखों को दूर करने के लिए ही शिक्षा दी जाती थी और यही प्रभु भक्ति है। जो प्रभु को याद रखता है और पर सेवा और परोपकार की जिन्दगी व्यतीत करता है वही प्रभु भक्त है।

ऐसा ब्रह्मचारी ब्रह्म में विचरता है और मृत्युञ्जय हो जाता है। नौजवानो दुनिया पर और अपने आप पर विजय पानी है तो ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करो। प्रभु भजन और सेवा का व्रत लो संसार तुम्हें सर पर उठायेगा।

आर्यसमाज करौलबाग का वार्षिकोत्सव समारोहपूर्वक सम्पन्न

नई दिल्ली आर्यसमाज करौल बाग का ५७वां वार्षिकोत्सव बड़े समारोहपूर्वक ३० अप्रैल से रविवार ७ मई तक आयोजित किया गया। इस समारोह का प्रारम्भ प्रभावशाली ध्वजारोहण के साथ ३० अप्रैल को प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने किया। पहली मई से प्रात वेद प्रवचन आचार्य पुरुषोत्तम जी एम०ए० द्वारा किए जाते रहे। सायं काल का समाज मन्दिर में ही पं० यशपाल जी सुधांशु के प्रवचन होते रहे। क्षेत्र के सैकड़ो लोगों ने इस समारोह में शामिल होकर लाभ उठाया। हरिद्वार से आये प्रसिद्ध सन्यासी श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती ने ध्यानयोग साधना शिविर का आयोजन किया। इस प्रभावशाली शिविर में बड़ी संख्या में महिलाओं और पुरुषों ने भी भाग लिया।

इस वार्षिकोत्सव का प्रमुख आकर्षण आर्य बुद्धिजीवी संगोष्ठी थी। इसका आयोजन प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में किया गया। मान्य अध्यक्ष ने बताया कि विश्व के सामने इस समय प्रदूषण तथा परमाणु अस्त्रों से विनाश का खतरा है। राष्ट्र में विघटनकारी प्रवृत्तियां बढ़ रही हैं। भौतिकवाद से जीवन मूल्यों का नाश हो रहा है। उन्होंने बताया कि आर्यसमाज के सिद्धान्तों के माध्यम से ही इस संकट की अवस्था को पार किया जा सकता है।

इस अवसर पर आयोजित यज्ञ के ब्रह्मा श्री पण्डित हरिदत्त जी ने व गुलाबसिंह राघव और सत्यदेव जी स्नातक ने अपने मधुर भजनों से लोगों को आह्लादित किया है।

इस अवसर पर महिला सम्मेलन और आर्य युवा सम्मेलन का भी आयोजन किया गया। समाज के प्रधान अजय कुमार भल्ला ने विशेष योगदान के लिए श्री कृष्ण लाल सहगल चैतन्य स्वरूप और ओमप्रकाश जी गुप्त व दयालचन्द जी का अभिनन्दन किया।

आर्यसमाज तिमारपुर, दिल्ली

वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि के निर्वाचन अधिकारी श्री राजसिंह भल्ला की अध्यक्षता में ४ मई ८९ को आर्यसमाज तिमारपुर के वार्षिक चुनाव में श्री भीमसिंह—प्रधान एवम श्री रामश्वर दास मन्त्री निर्वाचित हुए।

अन्य पदाधिकारी—

उपप्रधान श्री कलीराम शर्मा व श्री स्वदेश भूषण।
प्रचार मन्त्री श्री विमल कान्त शर्मा
उप मन्त्री एस० के० शर्मा
कोषाध्यक्ष श्री सुभाष सूद।
पुस्तकाध्यक्ष श्री वेद प्रकाश

'आर्यसन्देश' के
—स्वयं ग्राहक बनें।
—दूसरो को बनायें॥

'आर्यसमाज' के
—स्वयं सदस्य बनें।
—दूसरो को बनायें॥

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No 32387/77 Post in N D P S O on 19 19 5-89 Licenced to post without prepayment Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३६

साप्ताहिक २१ मई १९८९

नशाबन्दी सप्ताह के समापन पर श्री ओमप्रकाश आर्य का नागरिक अभिनन्दन

नई दिल्ली १७ मई। दिल्ली के सुप्रसिद्ध धार्मिक एव सामाजिक नेता तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री ओमप्रकाश आर्य के ५५वें जन्मोत्सव के अवसर पर आयोजित नशाबन्दी सप्ताह के अन्तिम दिन आर्यसमाज मन्दिर सुभाष नगर में साय ५ बजे उनका नागरिक अभिनन्दन किया गया। अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता श्री वासदेव मल्होत्रा सयोजक सुभाष नगर वलफयर एसोसियेशन ने की।

इस अवसर पर पश्चिमी दिल्ली नगर निगम के अध्यक्ष श्री मोतीलाल भैरवा भूतपूर्व सासद श्री हरदयाल देवगुण काग्रस के दक्षिणी दिल्ली के महामन्त्री श्री ओमप्रकाश वालिया भाजपा नेता महाशय वासदेव डा० वशिष्ठ कुमार जनता दल के नेता श्री हरशरण सिंह वत्सी रामगढिया समाज के महामन्त्री श्री सरदार जगजीत सिंह आर्य नेता श्री राम प्रकाश धाम और पश्चिमी दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो के प्रतिनिधि तथा कार्यकर्ताओं के [illegible] दल शिव सेना विश्व हिन्दू परिषद के कई कार्यकर्ता इस अवसर पर उपस्थित थे। सभा मे श्री आर्य जी द्वारा १९५२ से आज तक किए गए समस्त सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों की सराहना की गई। इस अवसर पर सैकडा युवको ने नशा त्यागने और दहेज न लेने देने की प्रतिज्ञा की। स्वागत समारोह मे उपस्थित जनता का धन्यवाद करते हुए श्री आर्य ने कहा कि वे अपना [illegible] जीवन सब वर्गों के लिए [illegible] और एक चिकित्सा व्यवस्था तथा [illegible] कार्यों के लिए लगायेगे। श्री [illegible] घोषणा की कि वह एक माह के अन्दर अन्दर युवको का एक सुदृढ सगठन बनाकर उनका एक बहुत बडा सम्मेलन आयोजित करेगे जिस मे हिन्दू समाज के समक्ष उपस्थित सकट पर गम्भीरता से विचार किया जायेगा। □

सेवा में—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस गली न०१७ कैलाशनगर दिल्ली ३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ : अंक २९ रविवार २८ मई १९८९ ज्येष्ठ सम्वत् २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द —१६५ सृष्टि सवत १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश मे ५० पौंड, १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

आर्य वीर ही भावी राष्ट्र के कर्णधार हैं

–पं० रामचन्द्र राव वन्देमातरम्

नई दिल्ली, २१ मई। दिल्ली प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान मे आर्य वीर दल दिल्ली का सातवा ग्रीष्मावकाशीय चरित्र निर्माण एव व्यायाम प्रशिक्षण शिविर दिनाक १४-५-८९ से २१-५-८९ तक चल रहे शिविर के समापन समारोह के अवसर पर पुराने स्वतन्त्रता सेनानी तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् ने आर्य वीरो को उद्बोधन देते हुए कहा कि आर्य वीर ही भावी राष्ट्र के कर्णधार हैं। प० जी ने आगे कहा कि इस अहम् कार्य मे आर्यसमाज के सभी सभासदो एवम् अन्य जो भी इस देश के शुभचिन्तक महानुभाव हैं, इन आर्यवीरो के चारित्रिक विकास मे भरपूर सहयोग देना चाहिए। इसी समारोह मे आर्य वीर दल के पुराने उत्साही कार्यकर्ता श्री देशराज बहल ने आर्य वीरो को आशीर्वाद देते हुए भविष्य मे भी आर्य वीर दल को तन, मन धन की आहुति देकर सुदृढ बनाने का वचन दिया। श्री देशराज बहल ने श्रेष्ठ आर्य वीरो को पुरस्कार प्रदान किये। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बालदिवाकर जी हस ने अपने जीवन के सस्मरण याद दिलाते हुए भविष्य मे आर्य वीरो को वैसी ही देशभक्ति का परिचय देने का आग्रह किया। आर्य जगत् के भामाशाह महाशय धर्मपाल ने, जिन्होने इस शिविर का उद्घाटन भी किया था, समारोह मे बोलते हुए आर्यसमाज की भावी पीढी के लिए हरसम्भव सहयोग देने का आश्वासन दिया। उन्होंने बताया कि समाज सेवा का कार्य एक कठिन तपस्या का कार्य है। इस कार्य को वे ही कर सकते हैं जिनकी आत्मा का परिष्कार हो चुका है। उन्होने पन्द्रह आर्य वीरो के लिए १०० रु० प्रतिमाह शैक्षिक छात्रवृत्ति देने तथा भविष्य मे आर्य वीर दल को तन, मन, धन से हर प्रकार के सहयोग की घोषणा की।

इस समारोह मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ० धर्मपाल ने गत वर्षों मे युवाशक्ति के निर्माण के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य वीर दल द्वारा किए गए कार्यों का सक्षिप्त विवरण दिया तथा दानी महानुभावो एव आर्यसमाजो के सहयोग के लिए उनका धन्यवाद किया।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव एवम आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री शिवकुमार शास्त्री ने भी अपने उदगार व्यक्त किए। आर्य महिला श्रीमती कृष्णा चड्ढा ने "बढता चल बढता चल, बढता चल, आर्य वीर दल कविता के बोलो से आगे बढने का सन्देश दिया। स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती ने भी 'हमे अब आगे बढना है' शीर्षक गीत बोलते हुए आर्य वीरो को ऋषि दयानन्द के कार्य को आगे बढाने का सन्देश दिया। बौद्धिक अध्यक्ष ओ३म वीर शास्त्री ने सभी आर्य सभासदो से अनुरोध किया कि चरित्र प्रदूषण एव सस्कार-प्रदूषण से बचाने के लिए अपने-अपने बच्चो को आर्य वीर दल की नियमित शाखाएँ लगाये।

इस शिविर मे ६५ आर्य वीरो ने नियमित रूप मे भाग लिया जिस मे व्यायाम प्रशिक्षण श्री कृष्णपाल जी प्रधान शिक्षक श्री दुर्गासिह जी आर्य, श्री धर्मवीर जी आर्य श्री सतीश कुमार श्री विनोद कुमार एव श्री रणपाल जी द्वारा दिया गया। बौद्धिक प्रशिक्षण श्री ओ३म् वीर शास्त्री जी ने दिया।

शिविर की व्यवस्था मे श्री प्रियतमदास रसवन्त अधिष्ठाता आर्य वीर दल, डा० दयानन्द जी सागर पुर, श्री ईशकुमार नारग आशा पार्क, श्री सुदर्शन कुमार मन्त्री आर्य वीर दल श्री श्रीकृष्ण जी ईसापुर ने पूरे उत्साह पूर्ण सहयोग दिया। आशा है सभी आर्य भाई बहिनो के सहयोग से भविष्य मे भी ऐसे शिविर दिल्ली के विभिन्न भागो मे आयोजित होते रहेगे जो इस युग की अहम आवश्यकता है।

इस अवसर पर दिल्ली के सभी कोनो से आई जनता ने पधार कर आर्य वीरो का उत्साहवर्धन किया।

❑

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द
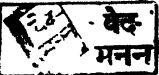
नापृष्ट कस्यचिद् ब्रूयात न चान्यायेन पृच्छत ।
जानन्नपि हि मेधावी जडवल्लोक आचरेत ॥

— मनु० २।११०

इस समय प्राय संसार को बहुत बोलने वाला ने वश मे कर रखा है । पश्चिमीय अनुकरण मे प्रत्येक शिक्षित भारतवासी सारे ससार को शिक्षा देना अपना कर्त्तव्य समझता है । और जो गरीब चुप रहने का स्वभाव रखते है उनको भी इसी प्रकार तंग किया जाता है कि वे बोलने के लिए बाधित हो जाते हैं । इस समय भारतवर्ष मे विशेषत उपदेशक ही उपदेशक दिखाई देते है । हर प्रकार के सुधार के लिए धाराप्रवाह वक्तृताए होती है । परन्तु शोक है कि इतने अधिक उपदेशको के होते हुए भी किसी प्रकार की भी दशा सुधरती दिखाई नही देती । इसका कारण क्या है ? वही मनु का निश्चित किया हुआ सिद्धान्त कि बिना पूछे नही बोलना चाहिए । जब तक किसी को यह अनुभव न हो कि परमात्मा की ओर से उसे किसी कार्य के लिए विशेष बल दिया गया है और जब तक उसने वैदिक साधनो से यह निश्चय न कर लिया हो कि उसका ऐसा विचार जोश के आधार पर नही है बल्कि उसके पूर्व कर्मो का ही परिणाम है तब तक उस मनुष्य को सुधार के लिए क्षेत्र मे कदाचित नही उतरना चाहिए । ऐसा मनुष्य जब कार्य आरम्भ करेगा तब अपने बल का सोच समझकर प्रयोग करेगा । आर्यावर्त के प्राचीन ऋषियो के इतिहास पर जाइए । आपको ज्ञात होगा कि वे अपने आश्रम मे बैठे हुए ही उपदेश किया करते थे और वहा भी उपदेश देने मे पहले जिज्ञासु की धारणा की पडताल करके ही, पात्र के अतिरिक्त किसी को सम्बोधन नही करते थे । ईसा ने भी अपने उपदेशो मे यही कहा था कि सूअर के आगे मोती नही बिखेरने चाहिए । परन्तु इस समय उनके अनुयायी स्टेज पर खडे होकर अच्छे बुरे को अपने जथे के अन्दर बुलाने का यत्न कर रहे हैं । इन ईसाइयो के अनुकरण मे आर्य सन्तान ने भी अपने काम करने का ढग बना छोडा है । आर्यसमाज के सभासदो को न्यून से न्यून मनु जी के ऊपर कहे हुए वाक्य का बडा मान करना चाहिए । ऋषि दयानन्द का अधिकार था कि वह प्रत्येक मनुष्य को अपनी प्रबल आकर्षण शक्ति से खीचने की कोशिश करते । परन्तु यहा प्रत्येक बुरा भला इसी अधिकार के साथ खडा होता है जो कि एक सच्चे सन्यासी की ही शोभा है । इसमे सन्देह नही कि उत्तम उपदेशको के अभाव से ही संसार के अन्दर अन्धकार फैलता है परन्तु इसमे भी सन्देह नही कि जब तक सच्ची श्रद्धा से सुनने वाले श्रोता नही होते तब तक सच्चे उपदेशक का यत्न भी बहुत कम फल लाता है । बुद्धिमान किसान भूमि मे बीज बोने से पहले खाद आदि डाल और हल चलाकर भूमि को इस योग्य बना लेता है, जिससे बीज बोने से पूरा लाभ हो सके । इसी तरह पर प्रत्येक उपदेशक के लिए आवश्यक है कि पहले इसके कि वह मनुष्यो को उपदेश देने के लिए उद्यत हो उनका क्रियात्मक जीवन ऐसा बना ले कि वे सुगमता से उसके उपदेश को ग्रहण कर सके । परन्तु जहा प्रत्येक मनुष्य अपने आपको उपदेश देने के योग्य समझता हो और उपदेश सुनने के लिए कोई भी तैयार न हो, वहा यदि बहुत ही दुर्दशा हो तो आश्चर्य नही समझना चाहिए । और भारतवर्ष मे प्रत्येक मनुष्य क्यो अपने आपको उपदेशक समझता है ? इसलिए कि उनके अन्दर क्रियात्मक जीवन बहुत कम देखा जाता है और जिनके अन्दर क्रियात्मक जीवन न हो वे सिवाय जिह्वा के और किस इन्द्रिय का प्रयोग कर सकते है ? हरेक मनुष्य को जबर्दस्ती सुनाकर उसे सीधे मार्ग पर लाने वाले ससार मे बहुत कम मनुष्य हैं । यही कारण है कि पूर्ण वैरागी के लिए सन्यास आश्रम मे प्रवेश करने की आज्ञा थी और उपदेश का अधिकार भी उसी को था, और वह इसलिए कि सन्यासी हर प्रकार के दिखावे से मुक्त हुआ करता है । न [illegible] के विरुद्ध हैं और न किसी के पक्षपात [illegible] विचार । वह हर समय सत्य के प्रचार मे [illegible] रहता है और इसलिए आवश्यकता के सबब [illegible] नही करता है । उपदेशक बडा दृढ हृदय होना चाहिए । इसलिए मनु जी की आज्ञा है कि जहा अन्याय से कुछ पूछा जाय, वहा भी कुछ उत्तर न देना चाहिए । भारतवर्ष के प्रतिष्ठित महानुभावो मे श्री बहराम जी मालाबारी पारसी की भी गणना है । यह पहले सज्जन हैं जिन्होंने गवर्नमेंट के खिताब मिलने पर [illegible] धार्मिक सिद्धान्तों के अनुसार उनके ग्रहण करने मे इन्कार कर दिया था । उनके विषय मे यह बात प्रसिद्ध है कि एक अंग्रेज साथी यात्री ने बडे अभिमान और घृणा के ढग पर उनका नाम पूछा तो उन्होंने उत्तर में मौन से काम लिया, अर्थात् जैसे को तैसा जवाब देना एक बुद्धिमान का ढग नही होना चाहिए और न ही दबकर बोलना एक धार्मिक मनुष्य का । यदि अन्याय से जबरदस्ती पूछा जाय तो जहा क्रोध को समीप न आने दे वहाँ नेक पुरुष के लिए यह भी आज्ञा है कि ऐसी अवस्था मे बिलकुल बोले ही नहीं, जिससे कि उसके वचनो पर किसी प्रकार का भी बाह्य प्रभाव न पड सके । [illegible] से दो मनुष्य भला पशु-पक्षियो का क्या मुकाबला कर सकेगा ! [illegible] भाविक ताज जो विशेष [illegible] को मिला है क्या उसके मुकाबले मे [illegible] क्या मोर की मस्तानी चाल का आज तक किसी मनुष्य ने मुकाबला किया है ? क्या कोयल की हृदयवेधक सुरीली आवाज का उत्तर कुछ भी मानवीय जगत मे उपस्थित है ?

प्रिय पाठकगण ! थोडी देर के लिए विचार करो कि हम सब किस गढे में गिरे चले जाते हैं ?

वेद भगवान ने बतलाया है कि सारे संसार का प्राण वाणी है । परमात्मा के दिए हुए ज्ञान के भण्डार वेद के प्रकाश करने का साधन वही वाणी (इमा वाचम) है । इसलिए उसकी रक्षा के लिए हर समय दृढता से सचेत रहना चाहिए । बहुमूल्य वस्तु को आवश्यकता के बिना बुद्धिमान मनुष्य खर्च नही करता । जिस पर संसार की भलाई और बुराई अधिक निर्भर हो उसके प्रयोग मे जितना सावधान रहे थोडा है । मनुष्य को एक-एक पल

(शेष पृष्ठ ५ पर)

सुन्दर उपाय

ओ३म् स न पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव ।
सचस्वा न स्वस्तये ॥

प्यारे प्यारे पिता हमारे, तुम सुनो हमारा विनय गान ।
हे पिता सुनो यह विनय गीत, कर दो हमको कल्याणवान ॥

हम सेवक पुत्र तुम्हारे है
करुणामय पिता हमारे है
सब साधन सुन्दर उपाय से
यह जगत, पिता विस्तारे है ।

प्रभु हमको उपाय बतला दो, हम सभी बने जग स्वस्तिवान ।
हे पिता सुनो यह विनय गीत, कर दो हमको कल्याणवान ॥

जो पिता जगत् मे कहलाता
निज पुत्र जन्म का जो दाता
जग पिता पुत्र पालन करता
यही हमारा शाश्वत नाता ।

हे पिता कृपा की किरणो से, दो सुखदायक विज्ञान दान ।
हे पिता सुनो यह विनय गीत, कर दो हमको कल्याणवान ॥

विज्ञान वेदविद पण्डित हैं
धन धान्य श्रेष्ठ से मण्डित हैं
हमको धन साधन रखा दो
प्रिय पिता परम बल वञ्छित हैं ।

सारे दुख दूर पिता कर दो, प्रिय कर दो हमको प्राणवान ।
हे पिता सुनो यह विनय गीत, कर दो हमको कल्याणवान ॥

—देवनारायण भारद्वाज

आर्य सन्देश

काश रुश्दी ने गीता पढ़ी होती !

—यतीन्द्र कुमार विद्यारत्न
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

जी हां यदि सुलमान रुश्दी ने वेद गीता इत्यादि आर्ष ग्रन्थ पढ़ होते तो वह कभी भी खुमैनी द्वारा दिये गये फांसी के फतवे स न डरता। यदि उसने कुरान के इस आदेश को कि— जन्म केवल एक बार होता है। दोबारा नहीं। नहीं माना होता और गीता का यह श्लोक पढ लिया होता—

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥

अर्थात यह आत्मा न कभी उत्पन्न होता है और न कभी मरता है अथवा न यह हो करके फिर होने वाला है। क्योकि यह अजन्मा नित्य शाश्वत और पुरातन है। शरीर के नाश होने पर भी इसका नाश नहीं होता है।

यदि रुश्दी इन विचारो को पढता तथा मनन करता तो वह मौत के डर से कभी भी मारा-मारा न फिरता। जिस प्रकार महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश लिखकर आर्य जाति का नव जागरण किया था। ठीक उसी तरह रुश्दी ने इस्लाम पर सैटेनिक वर्सेज का प्रहार किया है। यदि उसे पता होता कि 'भस्मान्तं शरीरम्' इस शरीर का अन्त केवल भस्म तक है तो वह खुमैनी द्वारा दिये गये फासी के फतवे से न डरता। तथा जगद गुरु महर्षि दयानन्द की तरह स्वतन्त्र साहित्य लेखन कर इस्लाम का मार्गदर्शन करता। सोलह बार विष पीकर ईट पत्थर खाकर भी तथा फाँसी का फन्दा चूमकर भी फाँसी के फतवे से न डरता अपितु शहीद अब्दुरहमान की तरह शरीर को आवरण मात्र समझता। गीता के अनुसार—

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥

अर्थात् जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रो का त्याग कर दूसरे वस्त्रो को ग्रहण करता है। वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीर को त्यागकर नये शरीर को प्राप्त होता है।

यह भी तो आत्मा का ही हनन है कि पहले सत्य का प्रचार कर देना फिर उसे असत्य मानकर जहां-तहां छिपते फिरना। ऐसे लोगो के लिए वेद भगवान का आदेश है—

अन्धन्तमः प्रविशन्ति ये के चात्महनो जनाः ।

अर्थात जो लोग आत्मा का हनन करते हैं वे घोर अन्धकार को प्राप्त होते है। हमारे साहित्यकार चाहे वह महर्षि दयानन्द हो या श्रद्धानन्द गुरुदत्त हो या लेखराम महात्मा गांधी हो या अन्य कोई सभी न न अवस्ये कदाचन को मानकर मौत को ललकारा। मृत्यु हमारा क्या कर सकती है। केवल शरीर को समाप्त कर सकती है आत्मा को तो नहीं। यह कहा हमारे साहित्यकारो ने।

माननीय पाठक वृन्द ! इस कथन का सार यह है कि यदि रुश्दी ने गीता पढ़ी होती तो वह कभी भी मृत्यु के भय से न डरता। अपितु जनता जनार्दन के सामने अपना साहित्य अमर कर देता। सुलेमान रुश्दी का इसी मे ही लाभ है कि वह मृत्यु से डरकर अपनी कृति को मिथ्या उपन्यास न माने। मृत्यु तो अवश्य आयेगी आज नहीं तो कल। यदि वह अपना ग्रन्थ अमर कर गया तो वह एक महान साहित्यकार कहलायेगा।

वैदिक समाज

अनेक इतिहासकारो ने वैदिक समाज के बारे मे तरह-तरह की अफवाहे फैलाने का प्रयास किया है। मैक्समूलर का नाम भी उन्ही लोगो में आता है। मैक्समूलर शायद जब आर्य लोगो को आक्रमणकारी कहते है तो वो यह भूल जाते हैं कि इन्डोजर्मनिक या इन्टोयूरोपियन आर्य लोगो के पर्यायी नहीं हैं। उनके विचार से ये लोग आक्रमणकारी थे। उन्होने अपने किसी ग्रन्थ मे आर्य शब्द को किसी नसल से न जोड़ने की हिदायत भी दी थी। परवर्ती लोगो ने आर्यों को ही हमलावर दिखला दिया, पर इनके करने से न कुछ हुआ है और न आगे होगा। वैदिक समाज के बारे मे कितने ही फतवे दिये जायें अथवा भ्रान्तियां फैलाई जाय फिर भी वैदिक समाज की जो परम्पराए हैं वे सभ्यता की कहानी ही बताती है। हमे पक्षपात रहित दृष्टि से देखना चाहिए और जब हम खुली आखो से देखते हैं तो यह बड़ा स्पष्ट हो जाता है कि वैदिक सभ्यता उन्नत थी और उस सभ्यता के लोगो ने ज्ञान विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रो मे कीर्तिमान स्थापित किये थे। उनकी उपलब्धियां तथा सफलताए चरम शिखर पर थी। वैदिक समाज प्राचीन काल मे कलाओ और शौर्य मे विलक्षणता प्रशासन मे योग्यता विधि निर्माण म विद्वत्ता तथा ज्ञान विज्ञान के क्षेत्रो मे प्रवीणता प्राप्त कर चुका है। वैदिक संस्कृति का गठन अद्भुत है। भाषा विज्ञान के विद्वान विलियम जोन्स ने माना है कि वैदिक सभ्यता का आदमी ग्रीक से अधिक निर्दोष और लैटिन से अधिक सक्षम था। यह संस्कृति किसी की भी तुलना मे अधिक परिमार्जित है। वैदिक समाज का कार्य विभाजन भी बहुत विशद है। अनेक मन्त्रो म कर्मार तन्तुवाय भिषक शिक्षक जैसे व्यवसायो का विस्तृत जिक्र है। वेद मे इनका उल्लेख बहुत अन्तरग और आत्मीय है। अनेक मन्त्रो मे कताई बुनाई के काम उपमा और रूपक बन कर आये है। वैदिक समाज की सम्पन्नता उनकी आवास व्यवस्था से भी झलकती है। वैदिक समाज ज्ञान विज्ञान मे कितना आगे था यह इसी से सिद्ध है कि पहिये का निर्माण करने वाली ज्यामिति से परिचित थे। वे ३६० अंश के वृत्त की भी कल्पना कर सकते थे। काल गणना पृथ्वी का गोलाकार होना और सूर्य का अस्त न होना आदि बातो से वे परिचित थे। बाईबिल तो बहुत बाद म लिखी गयी। बाइबिल को मानने वाले जिन बातो से परिचित नहीं थ वैदिक समाज के लोग उन सब बातो से भी परिचित थे। गणित के क्षेत्र मे शून्य से अनन्त तक पहुँचने की पद्धति दार्शनिकता को भी स्पष्ट करती है। आयुर्विज्ञान के क्षेत्र मे भी ये लोग पीछे नहीं थे। अश्विनीकुमार च्यवन परिधि आदि नाम इस क्षेत्र की उत्कृष्टता को बतलाते हैं। पर्वत समुद्र नदियां समुद्री विभाग ध्रुवतारा सप्तर्षि मण्डल जमीन की खोज खतरे की खबर कौओ और कबूतरो का उपयोग, अन्तरिक्ष विमान और रजत विमान का चित्र वैदिक समाज की उन्नतता का परिचायक है।

चतुर्वेद शतक महायज्ञ

समाज सेवा का कार्य एक कठिन तपस्या का कार्य है। और जब यह कार्य पुनर्वास कालोनियो तथा पिछड़ी बस्तियो मे किया जाए तो और भी कठिन हो जाता है। जन जागरण के लिए तथा धर्म मे आस्था पैदा करने के लिए लाला दामोदर प्रसाद आर्य ने खिचड़ी पुर में अपने निवास स्थान पर १८ मई से २० मई तक चतुर्वेद शतक यज्ञ का आयोजन किया। इस आयोजन मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा०धर्मपाल, प०प्रेम चन्द्र जी श्रीधर, प०सत्यदेव जी स्नातक, प०गुलाबसिंह राघव, प०श्याम वीर राघव ने विभिन्न अवसरो पर आर्यजनता को वैदिक धर्म की विचारधारा से परिचित कराया। स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज ने सभी को आशीर्वाद देते हुए आशा व्यक्त की कि इस कालोनी मे भी आर्यसमाज का काम ला० दामोदरप्रसाद जी आर्य तथा अन्य साथियो के सहयोग से आगे बढ़ेगा।

वेद से शिक्षा, सम्पत्ति और सुरक्षा

—देवनारायण भारद्वाज

जन्म के बाद नवजात शिशु का अस्तित्व मुख्य रूप से समाज को उस दिन पता चलता है जिस दिन उसका नामकरण संस्कार किया जाता है। इसी दिन बालक माता-पिता की गोद मे होता है और आचार्य भी आशीर्वाद के लिए उपस्थित होते है, और किसी अच्छे नाम से समाज उसे अपने सदस्य के रूप मे ग्रहण कर लेता है। कुछ ही वर्षो मे बडे होते-होते मातृदेवो भव पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव की भावना उसके जीवन मे भरने लगती है। माता अपना दुग्धपान कराके उसका पालन करती है, पिता उसका रक्षण करता है, और आचार्य धर्माचरण की ओर अग्रसर करते हैं। इन तीन देवताओ के संरक्षण के बिना एक उत्तम नागरिक का निर्माण सम्भव नही है। इस दिशा मे देखिये वेद का सन्देश कितना सामयिक व समग्र है —

अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्च सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषम ॥

ऋ० ३-६६-२१ यजु० ८ ३८

पदार्थ—हे (अग्ने) प्रकाशस्वरूप प्रभु (अस्मे) हम लोगो के लिए (स्वपा) उत्तम उत्तम काम, (वर्च) वेदाध्ययन (सुवीर्यम) उत्तम पराक्रम को (पवस्व) पवित्र कीजिए ओर (रयिम) धन, (मयि) निरतर रक्षा, (पोषम) पुष्टि को (दधत) धारण कीजिए। अर्थात हे ज्ञान स्वरूप परमात्मन हमारे उत्तम कार्य धर्माचरण और उत्तम पराक्रम या बल को पवित्र कीजिए जिस से हम मे धन सुरक्षा तथा पोषण की क्षमताए धारण हो सके।

स्पष्ट है कि इन तीन शक्तियो का आधार प्रत्येक व्यक्ति के लिए वाछित है। व्यक्तियो से मिलकर परिवार परिवारो से ग्राम नगर और इनके वृहत समूह को राष्ट्र कहते है। जो वाछाये व्यक्ति की है वही विशाल रूप मे एक राष्ट्र की होती हैं। स्वपा उत्तम उत्तम काम क्या हैं? शिल्प, कला, कृषि व्यापार सभी तो उत्तम काम है जो हमे विद्या से प्राप्त होते है। वर्च अर्थात वेदाध्ययन से हमे इन कामो मे कौशल के साथ-साथ धर्माचरण की शिक्षा भी मिलती है, सुवीर्यम अर्थात् पराक्रम ही नही श्रेष्ठ पराक्रम व बल से हम अपनी रक्षा कर सकते हैं। इन तीनो की पवित्रता से हमारे जीवन में विद्या से रयिम्—धन वर्च वेद धर्म से पोषण तथा उत्तम पराक्रम से निरन्तर रक्षा प्राप्त होती है।

कुल मे इनका ज्ञान माता-पिता के द्वारा बालक को मिलता है और जैसे ही वह कुछ समझदार—आठ वर्ष का हुआ वह निजकुल से गुरु कुल मे चला जाता है। एक लम्बे समय तक सामान्यतया पचीस वर्ष की आयु तक वह अपने आचार्यों से ज्ञान ग्रहण कर फिर अपने घर की ओर समावर्तन मे घर की ओर लौट आता है। ब्रह्मचारी या विद्यार्थी से गृहस्थ बन जाता है। विवाहोपरान्त-दम्पती के रूप मे प्राप्त ज्ञान को व्यवहार मे लाने लगता है। विद्या-धर्म-पराक्रम की शिक्षा मे वह कलाकौशल, सदाचरण एवम सुरक्षा को सुदृढ करता है।

धन-पोषण और रक्षण की आवश्यकता प्रत्येक नागरिक को है जो उसे विद्या, धर्म एवम् पराक्रम के स्रोत से प्राप्त हैं। एक व्यक्ति के लिए जहा इनकी व्यवस्था माता-पिता व आचार्य करते है, वही राष्ट्र को भी इनके विकास मे प्रयास करना पडता है। विद्या धर्मेण शोभते विद्या की शोभा धर्म से है। धर्मो रक्षति रक्षित जो धर्म का पालन करता है धर्म उसकी रक्षा करता है। वेदोऽखिलो धर्ममूलम् सम्पूर्ण धर्म का मूल वेद है। फिर वेद से बढकर कुछ नही है—इसी के निर्देश पर राष्ट्र अपनी तीन सभाओं के द्वारा विद्या-धर्म-रक्षा की व्यवस्था करता है। विद्यार्य सभा, धर्मार्य सभा और राजार्य सभा निरन्तर सजग रह कर इसी दिशा मे राष्ट्र का आत्मनिर्भर बनाती है।

यजुर्वेद मे इस मन्त्र का देवता राजादयो गृहपतयो है और महर्षि जी ने भी मन्त्र के 'अग्नि' को सभापति सम्बोधित किया है, जो गृह एव राज्य के प्रबन्ध का सचेतक है। मन्त्र का 'अस्मे' —एक का नही हम अनेक लोगो के समूह का परिचायक है। जैसे अग्निहोत्र मे अग्नि का आह्वान, स्थापन व उत्थान करने के बाद वह हमारा नेता बन जाता है, थोडा-थोडा हव्य जो आहुतियो के रूप मे उसे समर्पित किया जाता है, वह इस सारे हव्य को सूक्ष्म करके आकाश-अन्तरिक्ष-द्युलोक मे पहुँचा ही नही देता है, प्रत्युत पर्जन्य के रूप मे और अधिक मात्रा मे हमको फिर सुलभ करा देता है। वैसे ही हमारे राष्ट्र का सभापति या राष्ट्रपति जनता से थोडा-थोडा कराधान कर के बडी-बडी कल्याणकारी योजनाओं को सचालित करता है, जिनका लाभ जनता को ही मिलता है।

राष्ट्राध्यक्ष निरकुश होकर मनमानी न करने लगे इसीलिए उस पर उक्त तीनो सभाओ का नियन्त्रण होता है। इन तीनो सभाओ मे सतुलन व समन्वय होना भी आवश्यक है। विद्या-कला कौशल एव विज्ञान की प्रगति से महाबली रावण ने क्या कुछ उपलब्धिया प्राप्त नही कर ली थी। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, अन्तरिक्ष, चन्द्र, सूर्य के अनुसन्धान की ऐसी कौनसी प्रयोगशाला हो सकती है जो अपने राज्य मे उस ने निर्मित नहीं कर ली थी। अपार ऐश्वर्य एव सुविधाओ के सग्रह से उसकी राजधानी लका सोने की हो गई थी। इतना ही नही पराक्रम का क्रम भी कम नहीं था। रक्षा करते करते तो उसकी सस्कृति का नाम ही राक्षस पड गया था। इतने पर भी विचित्र दयनीय स्थिति में उसका नाश हो गया और लोकोक्ति बन गई - एक लाख पूत सवा लाख नाती। ता रावण घर दिया न बाती।

ऐसा क्यो हुआ? कला-कौशल विज्ञान की योजनाओ मे पवित्रता नही थी, साथ ही रक्षा करने वाला पराक्रम सुवीर्यम् अर्थात् श्रेष्ठ नही था। उसने वेद-धर्म के नियन्त्रण की उपेक्षा कर दी थी। चारो वेदो का भाष्य करने वाला रावण वेद के चमकते हुए ज्ञान-विज्ञान मे उलझ गया और धर्म के ध्यान को छोड दिया। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने गुरु गृह पढन गए रघुराई। अल्पकाल विद्या सब आई ॥ के अनुसार वेद के भाष्य को तो नही किया था, प्रत्युत वेद को ही ग्रहण कर लिया था। इसी लिये तो राम ने प्रथम धर्म का आश्रय लिया, तो धन-सम्पत्ति, सेना-विहीन वनवासी होकर – 'रावण रथी विरथ रघुबीरा' की स्थिति में आततायी रावण का अन्त कर दिया। धर्मानुयायी विभीषण को लंका के राज्य सिंहासन पर आसीन करके धर्म की जय-जयकार करा दी राम ने।

मन्त्र के प्रथम भाग में धन और वीर्य के बीच मे वेद बैठा है। इसका आशय यही है कि शिक्षण काल मे विद्यार्थी को वेद या धर्म का दृढता से परिचय हो जाये। गुरुकुल मे न तो [illegible] और छात्रावास या आश्रम की सीमाओ मे रक्षा का भी प्रश्न नही है। इन दोनो की शिक्षा तो प्राप्त करनी है पर धर्म को केन्द्र मे रखकर। पर विद्यार्थी का वास्तविक जीवन-व्यवहार कब आरम्भ होगा, जब वह आश्रम की सीमाओ से निकल कर समाज के खुले मैदान में आ जायेगा। मन्त्र के दूसरे भागमे विद्या, धर्म, वीर्य की शिक्षा के जो फल हमे मिलते हैं—उनका वर्णन है और यहा पर इनके क्रम मे परिवर्तन हो जाता है जो धन-रक्षा-पोषण के रूप मे प्रकट होते है। अब सुवीर्यम् का फल मयि या रक्षा केन्द्र मे और विद्याओ का फल धन तथा धर्म का फल पोषण दाहिने-बाय हो जाता है, क्योकि इन दोनो की रक्षा करने पर ही ये हमारे रक्षक होते हैं, अन्यथा ये ही विनाश के कारण बन जाते हैं।

आप अपने स्वागत कक्ष मे किसी महापुरुष राम-कृष्ण-राणा प्रताप-शिवाजी या दयानन्द जी या अन्य किसी आदर्श पुरुष का चित्र लगाना चाहते हैं, जिससे उसके दर्शन से आप प्रेरणा प्राप्त कर सके। ऐसी दशा मे आप उसके बाल्यकाल का नग-धडग या वृद्धावस्था का झुर्री भरी मुखाकृति का चित्र आप कम पसन्द करेगे। आप वही चित्र चयन करेंगे जो उसकी कार्य सक्षम आयु का होगा। इतना अन्तर अवश्य हो सकता है कि किसी महात्मा जैसे गान्धी जी का लाठी पकडे कृशकाय रूप मे चित्र बना हो, क्योकि यहा पर हम उनके शरीर का नही आत्मा को सबल दिखाना चाहते हैं, पर जहा शरीर आत्मा दोनो को ही सबल दिखाना है तो नेता जी सुभाष का चित्र सामने रखना होगा। किसी व्यक्ति के चित्र की पहचान उसके हाथ पैर पेट से नहीं मुख से ही होती है। तो शिक्षण प्रशिक्षण काल तक विद्या-वीर्य के कन्धो पर धर्म की मुखाकृति होती है और धर्म की धारणा हो जाने पर व्यावहारिक गृहस्थ जीवन में विद्या व ब्रह्मचर्य का ओज चेहरे पर एक कान्तिमय क्रान्ति सृजित कर देता है और अब विद्या व धर्म के कन्धों पर सुवीर्यम् की मुखाकृति आ बैठती है।

कानून की शिक्षा-प्राप्त कर एक अधिवक्ता कार्यक्षेत्र मे आकर प्रौढ होते होते पूर्ण-सम्पन्न हो गया, पर धर्म का ध्यान उसे नही था। विधि-शिक्षा प्राप्त कर एक नवयुवक अधिवक्ता बनकर काम करने लगा। एक दिन उस प्रौढ इस नवयुवा अधिवक्ता के मध्य विवाद इस बात पर हो गया कि १५ वर्ष की कैद का दण्ड १५ लाख रुपये प्राप्त करके भी असह्य व उत्पीडक है। नवयुवा ने कहा आप मुझे १५ लाख रुपये दे मै आपके यहा १५ वर्ष बन्द रह लूगा। कैद के अन्तिम दिन १५ लाख रुपय देने का वचन देकर प्रौढ ने नवयुवा को अपने यहा एक कमरे म बन्द कर दिया। उस नवयुवा के भोजन-शौच स्नान व पठन पाठन का प्रबन्ध कर दिया। प्रारम्भिक दिनो मे बन्दी को बडी पीडा व बेचैनी हुई पर स्वाध्याय मे वह सब सहन कर ले गया। प्रौढ अधिवक्ता चिन्ता म घलने लगे और इनकी सचित धन राशि भी घटने लगी। इन्होने कमरे के द्वार या कुण्डी सेवक से खुली इस लिए रखाई कि इसी प्रकार वह वह बाहर निकल जाये पर वह स्वय ही सेवक को बुलाकर बन्द करा दिया करता था। अपने पढने म मस्त रहता था। प्रौढ अधिवक्ता के पास धन कम हो गया था—फिर १५ लाख रुपये चुकाने का दिन निकट आ रहा था तो इन्होने योजना बनाई कि अन्तिम दिन उसस मिलने जायगे और उसकी हत्या कर के छुट्टी पायगे पर अन्तिम दिवस की पूर्व रात्रि मे ही एक पर्चा छोडकर कुण्डी खुली पाकर वह बाहर चला गया था। प्रौढ जी जब वहा हत्या के ध्येय से पहुचे तो उन्हें वह बन्द मुवा जो बन्द मुवा ही रह गया था—नही मिला। मिला मात्र वह पर्चा जिसमे लिखा था कि धर्म पुस्तक पढकर मेरी आख खुल गई है मुझे उसका क्या करना एक दिन पूर्व म यहा से इसलिए जा रहा हू कि आप उस शर्त से मुक्त हो सक व १५ लाख रुपये देने के दायित्व म भी मुक्त हो सक।

यह दृष्टान्त का दार्ष्टान्त यही है विद्या मे कानून सीख लिया—धन भी ग्रहण किया पर धर्म के अभाव मे वह व्यक्ति कुतर्क म फस गया और धन जाता देखकर दु खी हुआ और हत्या तक के लिए तैयार हो गया जबकि दूसरी ओर धर्म के बोध ने युवक की आख खोल दी और उसके धर्माचरण ने दोनो की सुरक्षित कर दिया। जहा सुमति तहा सम्पति नाना जहा कुमति तहा विपति निधाना। इसीलिए तो कहा गया है। राष्ट्राध्यक्ष का कार्य इसी सुमति सम्मति एव सहमति को बढाकर राष्ट्र की रक्षा करने का है। राजार्य सभा का अध्यक्ष ही सर्वोपरि होकर विद्यार्य सभा एव धर्मार्य सभा के परामर्श से ऐसी योजनाय चलाता है। साथ ही वह इन सभाओ को भी कुमार्ग पर जाने से रोकता है।

वर्तमान मे भी विधायिका न्यायपालिका और कार्यपालिका धर्मार्य सभा, विद्यार्य सभा एवं राजार्य सभा का ही रूप है। देश के विधि विधान का निर्माण-प्रसारण विधायिका का काय है विवादो से उत्पन्न सम्पत्ति—जर जोरू जमीन के विवादो का निबटारा करना न्यायपालिका का काय है। इन दोनो के नियन्त्रण के साथ साथ राष्ट्र की रक्षा करना कार्यपालिका का काय है जो एक राष्ट्रपति के आधीन होती है जो थल जल वायु तीनो सेनाओ का सर्वोच्च सेनापति भी होता है और अपने मनोनीत प्रधानमन्त्री के परामर्श से शासन सचालन करता है। राष्ट्र रक्षा क्या है— इडा सरस्वती मही तिस्रा देवीमयोभुव। अर्थात सुखदायिनी विद्या, भाषा और धरती माता (मातृभूमि) की रक्षा और इनके उपयोगकर्ता नागरिको की रक्षा करना ही शासनाध्यक्ष का कर्तव्य है।

निर्बल का बल राजा होता है। कवि ने ठीक ही कहा है—

शिवि-दधीचि हरिचन्द नरेश्
सहे धर्म हित कोटि कलश्।

अपने प्राणो को सकट मे डाल कर भी प्रजा की रक्षा करना राजपुत्र का कर्तव्य रहा है। द्रोणाचार्य पाण्डवो को अस्त्र शस्त्र के साथ-साथ शास्त्रो के तत्त्व का बोध भी कराते थे। वे बतलाते थे कि यह शस्त्रविद्या दीन-निबल की रक्षा कर न्याय स्थापना के लिए है अन्याय के उन्मूलन के लिए है। राजपुत्रो ने इस ज्ञान का सदैव आचरण का रूप प्रदान किया। दुर्योधन के षड्यन्त्र म कुन्ती सहित पाचो पाण्डव राज्य-निष्कासन की स्थिति मे किसी ग्राम म पहुच कर एक निबला ब्राह्मणी के अतिथि हुए। कोई राक्षस प्रति परिवार से एक पुत्र एव पकवान बारी-बारी मे मगा कर खा जाता था। ब्राह्मणी के घर मे भी खाद्यान्न पकवानो का सनो माल बनाया गया यह देखकर माता कुन्ती ने इसका कारण ज्ञात करना चाहा तो उस ब्राह्मणी ने रोकर बताया। आज मेरे घर की बारी है—एकमात्र पुत्र यह पकवान राक्षस की सेवा म ले जाएगा जिसे वह पुत्र सहित ही खा जाएगा। कुन्ती ने उसे सान्त्वना दी और उसके पुत्र के स्थान पर महाबली कुमार भीम को राक्षस के पास पकवान लेकर भेज दिया। इस अदला बदली मे भीम कुछ विलम्ब मे पहुचे और स्वयं पकवानो का आनन्द भी लेने लगे। यह दृश्य देख कर राक्षस क्रोधित हुआ और हाथा-पाई लडाई मे बदल गई और अन्त म भीम ने आततायी राक्षस का वध करके न केवल ब्राह्मण के परिवार या पुत्र को अपितु सम्पूर्ण ग्राम को ही आतक से मुक्त कर दिया। ऐसी ही उत्सर्ग की भावना स वैदिक राजा धर्म व संस्कृति की रक्षा मे सदैव समर्थ रहे है।

—आर्यसमाज आर्यमगढ(आजमगढ)
उ० प्र० २७६००१

(पृष्ठ ७ से आगे)

परमात्मा के समीप पहुचने के लिए दिया गया है। यह कर्मयोनि इस लिए दी गई कि मनुष्य अपने आदर्श की ओर चल सके। मार्ग विकट और दूर है। मानवीय आयु इस मार्ग की कठिनाइयो के अनुमान लगाकर निश्चित की गई है। ऐसे उत्तम समय को भी अगर हम व्यर्थ दिखावे और व्यर्थ प्रलाप म गवाव तो हम से बढकर मूर्ख कौन है? वाणी को जितना अधिक बखेरा जावे उतना ही उसका बल कम हो जाता है। जितनी उसकी रक्षा की जाय और जितना उसका बेमौका प्रयोग बन्द किया जाय उतना ही उसका बल बढता है। इसलिए भारतवर्ष के हरेक समाजसशोधक का कर्तव्य है कि वह अपनी वाणी का आवश्यकतानुसार ही प्रयोग करे और यह तब हो सकता है जबकि अभिमान, प्रतिष्ठा और दिखावे के विचारो को दिल से निकाल दिया जाय। दयासागर! हम सब भारत निवासी गुमराह हैं अपने कर्त्तव्य को भूल गए हैं। जल वायु अग्नि और पृथ्वी का अनन्त दान देने वाले आप ही समर्थ है कि हमारे मन्द कर्मो को दृष्टि म रखते हुए हम सबको ब्रह्मचर्य का सर्वोत्तम दान दे जिससे हम सब अपनी वाणी को वश म करते हुए आपकी आज्ञा पालन करने के योग्य होकर अपने और अपने भाइयो (सब प्राणधारियो) के कल्याण का साधन बन सके।

शब्दार्थ (अपृष्ट) मनुष्य बिना पूछे (कस्यचित न ब्रूयात) किसी से वार्तालाप न करे (न च) और न ही (अन्यायेन पृच्छत) अन्याय से पूछने वाले के साथ बात करे अपितु (मेधावी) बुद्धिमान मनुष्य (जानन्नपि) जानकार होकर भी इन लोगो के साथ (जडवत् आचरेत्) जड मूर्ख की तरह आचरण करे।

❀ कर्म फल ❀

पक्तार पक्व पुनरा विशाति। (अथर्व०)
(मनुष्य जैसा कर्म करता है वैसा ही फल पाता है।)

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

कर्म खोटे करे और सुख चहे वे भूल करते है।
मनुज मतिमन्द ही अनुकूल को प्रतिकूल करते है॥
बिछाकर सेज काँटो की चाहे आनन्द मखमल का।
निकाले दूध छलनी म कहे मम भाग्य है हलका॥
कि वे क्या आम खायेग जो बोया शूल करते है।
कर्म खोटे करे और सुख चहे वह भूल करते है॥१
न वे सुख शान्ति पाते जो बदी का काम करते है।
ये निश्चय जानिये वे ही विपद भव सिन्धु तरते है॥
कि जो निज आचरण सह धर्म के अनुकूल करते है।
कर्म खोटे करे और सुख चहे वह भूल करते है॥२
रहे यदि नाव पानी म किनारे पर लगायेगा।
रहे यदि नाव मे पानी तो अधवर मे डुबायेगी॥
वही फल फूल पाते जो सुरक्षित मूल करते है।
कर्म खोटे करे और सुख चहे यह भूल करते है॥३
भला करिये भला होगा बुरा करिये बुरा होगा।
जो तू काटा दिखायेगा तो बदले मे छुरा होगा॥
ये नर तन को 'स्वरूपानन्द' मूढ नर धूल करते हैं।
कर्म खोटे करे और सुख चहे वह भूल करते हैं॥४

आर्य जगत के समाचार

ईसाई युवती हिन्दू धर्म में दीक्षित

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश II व इन्क्लेव II मे श्री रघुनन्दन गुप्ता के प्र॰ – कुमारी आरलीन सु० एन० पीटर्स ५३ बी कालकाजी उम्र २ … का हिन्दू धर्म में दीक्षित करके उसका नाम कु० आरती रखा गया उसकी शादी २ ४ ८९ को आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश II में श्री … सिंह कालकाजी निवासी से किया गया

आचार्य कपिल देव द्विवेदी लन्दन में

… भारतीय … विद्वान एवं गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) के कुलपति डा० कपिलदेव द्विवेदी ने लन्दन विश्वविद्यालय … आयोजित विशेष कार्यक्रम में वेदों के द्वारा वायुप्रदूषण की समस्या का निराकरण विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि प्रदूषण से मानव जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है आपने मन्त्रध्वनि के प्रभाव हवन समिधा की वैज्ञानिकता और … यज्ञ … पर प्रकाश … आपने … की वैज्ञानिक पक्ष को नकारा नहीं जा सकता

… द्विवेदी ने कहा कि वैज्ञानिकों का यज्ञ के महत्व को समझना चाहिए तथा सब के प्रत्येक व्यक्ति को इसके वैज्ञानिक महत्व को समझते हुए घर घर में करने की आवश्यकता पर आपने बल दिया

… द्विवेदी ने वायुप्रदूषण … करने के लिए जो उपायों को अपनाने के … पेड लगाने जंगलों की सुरक्षा अग्निहोत्र (यज्ञ) … वायु को शुद्धि … सूर्य ऊर्जा का उपयोग … अग्नि … सीमित … का सन्तुलन ग्रीन हाउस का … आदि को … प्रदूषण के समस्या के निराकरण के लिए रखा

आपने … में प्रदूषण सर्वाधिक … करते हुए कहा कि … मानव के … में … बड़ा … है इस … के … प्रयोग वायुप्रदूषण … समस्या का … करने के लिए किया जाना चाहिए

अन्त में डा० द्विवेदी ने वेदों को विलक्षण साहित्य बताते हुए कहा कि सभी आर्य ग्रन्थ वेदों को अपौरुषेय मानते हैं तथा वेदों में वैदिक और लौकिक सभी विषयों का बीज विद्यमान है आपने कहा कि आवश्यकता इस बात की है कि अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों को आयोजित किया जाए जिसमें विभिन्न विषयों के वैज्ञानिक तथा वैदिक विद्वान मिलकर वेदों … का सार निकाल कर एकमत होकर मानव कल्याण के लिए प्रस्तुत करें। आपने कहा कि अकेले वैज्ञानिक इस समस्या का समाधान नहीं कर सकते जब तक वह वेदों के वैज्ञानिक स्वरूप का प्रयोग नहीं करते।

इस अवसर पर लन्दन विश्वविद्यालय के प्रमुख विद्वान अध्यापक अधिकारी एवं शोध छात्र उपस्थित थे। प्रारम्भ में विश्वविद्यालय के डा० … मेन्स्की ने डा० द्विवेदी का स्वागत किया तथा कार्यक्रम का संचालन किया।

डा० द्विवेदी ने … आर्यसमाज … कहा कि वर्तमान युग में वेदों का अत्यधिक महत्व … सामाजिक एवं धार्मिक … स्थान वेद … । लन्दन आर्यसमाज … श्री यज्ञमित्र … ने … द्विवेदी का स्वागत किया तथा कार्यक्रम संचालन श्री जगदीश शर्मा ने किया। डा० द्विवेदी ब्रिटेन में अनेक विश्वविद्यालयों तथा संस्थाओं में भी विचार प्रस्तुत करेंगे आप जर्मनी हालैण्ड भी जाएंगे जहां अनेक विश्वविद्यालयों … आमन्त्रित किये हैं। डा० द्विवेदी … जुलाई को भारत पहुंचेंगे

'आर्यसन्देश' के

—स्वयं ग्राहक बनें।

—दूसरों को बनायें॥

'आर्यसमाज' के

—स्वयं सदस्य बनें।

—दूसरों को बनायें॥

वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय

ब्रजघाट जिला गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने वैदिकधर्मी उपदेशकों पुरोहितों तथा धर्मशिक्षकों का निर्माण करने के लिए प० प्रकाशवीर शास्त्री स्मृति भवन ब्रजघाट (गाजियाबाद) में उक्त महाविद्यालय की स्थापना कर दी है जिसमें (क) पाठ्यक्रम अवधि दो वर्ष (ख) निःशुल्क प्रशिक्षण (ग) सफल (उत्तीर्ण) स्नातकों को उचित वेतन पर नियुक्ति तथा (घ) संख्या सीमित रहेगी।

प्रवेशार्थी (क) बी०ए० (संस्कृत सहित) अथवा उच्च मध्यमा एवं समकक्ष संस्कृत उपाधि प्राप्त (ख) अधिकतम २५ वर्षीय एवं अविवाहित तथा (ग) वैदिक धर्म प्रेमी हो।

महाविद्यालय (ब्रजघाट) एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश … मीराबाई मार्ग लखनऊ के कार्यालयों से नियमावली एवं प्रवेशपत्र प्राप्त कर दिनांक ३१ ५ ८९ तक विद्यालय में पहुंचायें। १५ जून मध्याह्न एक बजे विद्यालय में साक्षात्कार तथा एक जुलाई से शिक्षा आरम्भ हो जायेगी।

सम्पर्क सूत्र

स्वामी ओमानन्द सरस्वती
आचार्य
वै० ध० प्र० महाविद्यालय ब्रजघाट

डा० विजय भूषण आर्य
अधिष्ठाता (महाविद्यालय)
द्वारा आर्यसमाज हापुड

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन

आर्यसमाज रामा कृष्णा पुरम सैक्टर ५ में डा० ए० वी० स्कूल के प्रांगण में ? अप्रैल से ?० अप्रैल आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव आयोजित किया गया। इसमें प्रतिदिन प्रातः काल यज्ञ और रात्रि को वेद कथा हुई। रविवार ३० अप्रैल को राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने राष्ट्र रक्षा के लिये आवश्यक तत्वों तथा आर्यसमाज के द्वारा किये जाने वाले कार्यक्रमों की विस्तृत चर्चा की। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्य देव जी ने सभी आगन्तुकों का स्वागत होकर वैदिक धर्म का नाम … पर विद्यालय के बालक/बालिकाओं द्वारा वैदिक धर्म से अनुप्राणित कार्यक्रम प्रस्तुत किए जिनकी सभी दर्शकों ने भूरि भूरि प्रशंसा की। श्री बंसी लाल पाहूजा ने विजयी छात्र/छात्राओं को पुरस्कार प्रदान करके प्रोत्साहित किया। श्री हरबंस लाल जी पुरी के नेतृत्व में इस क्षेत्र का आर्य जनता के लिए आर्यसमाज एवं विद्यालय का कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न हो रहा है। पण्डित गंगानन्द जी शर्मा तथा अन्य सहयोगी वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में संलग्न हैं। प० चुन्नीलाल जी आर्य एवं प० ज्योति प्रसाद जी ने दिल्ली सभा की ओर से भजनोपदेश करके वेदप्रचार कार्य में सहयोग किया।

आर्यसमाज शकरपुर का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज शकरपुर दिल्ला ९२ का वार्षिकोत्सव अप्रैल को स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्य देव लाला जयप्रकाश आर्य श्री विशम्भर भाटिया श्री रतनसिंह शाडिल्य प० लक्ष्मी चन्द्र श्री चुन्ना लाल आर्य आदि ने आर्यजनता का मार्गदर्शन किया। लाला अविनाश चन्द्र गुप्ता के सहयोग से प्रीतिभोज का आयोजन किया गया। आर्य समाज के प्रधान श्री वेदप्रकाश आर्य ने अभ्यागतों का स्वागत किया तथा श्री पतराम त्यागी ने सभा का धन्यवाद किया।

वेद कथा का आयोजन

आर्यसमाज चूना मण्डी पहाड़गंज में १२ जून १९८९ से १८ जून १९८९ तक आर्य जगत के उच्चकोटि के महात्मा आर्य भिक्षु जी महाराज वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर के वेदप्रवचन होंगे। प्रतिदिन प्रातः ६ ३० से ७ ३० बजे तक यज्ञ एवं वेदोपदेश तथा रात्रि में ८ ०० बजे से भजनोपदेश के बाद महात्मा जी की पियूष वाणी का आर्यजन पान कर सकेंगे। श्री प्रियतमदास रसवन्त ने एक विज्ञप्ति के द्वारा सभी आर्य जनों को इसमें आमन्त्रित किया है।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No 32387/77 Post in N D P S O on 25 26-5-89 Licenced to post without prepayment Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३६

दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल के तत्त्वावधान में

आर्यसमाज स्थापना दिवस

आर्यजाति के रक्षक भारत की सुप्तात्मा के जगाने वाले युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सामाजिक कुरीतियो का उन्मूलन करने तथा समाज का उपकार करने के लिए ११४ वर्ष पूर्व बम्बई मे आर्यसमाज की स्थापना की थी। यह उद्गार आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति माननीय प्रो० शेर सिंह जी ने १४ मई १९८९ को आर्यसमाज मन्दिर साकेत मे दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्त्वावधान मे आयोजित आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह मे अपने अध्यक्षीय भाषण मे व्यक्त किये। इस अवसर पर पूर्व सांसद प० शिव कुमार शास्त्री सुप्रसिद्ध दार्शनिक प्रो० रत्न सिंह श्रीमती प्रभात शोभा पण्डिता श्री देवदत्त गौतम श्री यशपाल शास्त्री सत्यव्रताचार्य श्री पुष्किन आर्य तथा प० प्रकाशवीर व्याकुल ने आर्य जनता का मार्ग-दर्शन किया। इसी दिन आर्यसमाज साकेत का वार्षिकोत्सव भी आयोजित किया गया। दक्षिण दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजो के सदस्य एव प्रतिनिधि विशेष रूप से [illegible] इस समारोह मे सम्मिलित हुए। ऋषि लगर का भी आयोजन किया गया। दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल के प्रधान तथा आर्यसमाज साकेत के प्रधान श्री लखीराम कटारिया ने सभी आगन्तुको का स्वागत किया। दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल के महामन्त्री श्री रामशरण दास आर्य ने उपस्थित जनता का धन्यवाद करते हुए आशा व्यक्त की कि आर्यसमाज के प्रचार प्रसार मे सभी का सहयोग मिलेगा।

[illegible] वार्षिकोत्सव का शुभारम्भ

आर्यसमाज मंगोलपुरी मे २१ मई से २८ मई तक पण्डित विष्णु दत्त शास्त्री के [illegible] पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया है। प्रतिदिन रात्रि मे प० [illegible] शास्त्री की वेदकथा होगी। कथा से पूर्व [illegible] जी आर्य तथा प० ज्योति प्रसाद जी भजनोपदेश करेंगे। [illegible] मई को प्रात श्री स्वामी [illegible] जी महाराज ने ध्वजारोहण [illegible] की जनता को [illegible] धर्म की विचारधारा से तथा वैदिक [illegible] कराया। आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव का उद्घाटन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने किया। उन्होंने बताया कि आर्यसमाज मंगोलपुरी के लिए दिल्ली विकास प्राधिकरण से भूमि आवंटित कराने का प्रयास किया जा रहा है। इस समारोह का समापन रविवार २८ मई को होगा। जिसमे डा० धर्मपाल, श्री सूर्यदेव श्री सज्जन कुमार श्री० भरत सिंह आदि नेताओ को आमन्त्रित किया गया है।

सेवा में—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली १ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा [illegible] गली नं० १७ कैलाशनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

वर्ष १२ अंक ३० रविवार ४ जून १९८९ ज्येष्ठ सम्वत् २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द—१६५ सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ६० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश में ५० पौंड, १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

युवा आर्य वीर ही भविष्य में आर्यसमाज और वैदिक धर्म के काम को आगे बढ़ायेंगे

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

युवा शक्ति ही राष्ट्र की वह धरोहर होती है जो आगे चलकर देश, जाति व धर्म की रक्षा के लिए तैयार होकर मानव जाति का कल्याण करती है। हम अपना इतिहास उठाकर देखें इस युवा शक्ति ने सदा देश को उन्नति के शिखर पर ले जाने का सराहनीय कार्य किया है। युवा शक्ति से तात्पर्य उस शक्ति से है जो आलस्य और प्रमाद के वशीभूत नही होती अपितु समकालीन परिस्थितियो के प्रति सचेत रहती है तथा मार्ग मे आए सभी अवरोधों को दूर हटाती हुई अपने लक्ष्य की ओर बढती जाती है। मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य है, मनुष्य बनना। अर्थात् गुण दोष रहित होकर अपने आप को सही मार्ग पर ले जाना। यदि व्यक्ति कवल अपने तक सीमित है तो वह स्वार्थी रह जाएगा। इसके लिए यह जरूरी हो जाता है कि मनुष्य कवल अपने तक सीमित न रहकर दूसरे के कल्याण की बात भी सोचे। वह सामाजिक कार्यों मे परतन्त्र रहे। अपने साथियो की भावनाओ का भी विचार करे। वह ऐसे मार्ग का अनुसरण करे जो सबके लिए हितकारी हो। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा क अन्तर्गत कार्यरत आर्य वीर दल क अधिकारियो ने इन युवा छात्रो क लिए यह १२ दिन का प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया है। मुझे विश्वास है कि यह बच्चे आगे चल कर मनुष्यता के सभी गुणो को ग्रहण करेंगे तथा वैदिक धर्म और आर्यसमाज क मन्तव्यो का प्रचार प्रसार करेंगे। इसक साथ ही यह सच्चे देशभक्त बनकर अपने देश की रक्षा के लिए उसको समृद्ध बनाने के लिए राष्ट्र की एकता एव अखण्डता की स्थापना के लिए सामाजिक कुरीतियो के उन्मूलन क लिए दलितो के उद्धार के लिए तथा स्त्री जाति क कल्याण के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे। यह उदगार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा आयोजित प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह में व्यक्त किए। इस अवसर पर स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती श्री बालदिवाकर हस श्री प्रियतम दास रसवन्त प० शिव कुमार शास्त्री डा० ज्ञान प्रकाश आदि महानुभावो ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस शिविर का उदघाटन १७ मई १९८९ को गाजियाबाद जिला मण्डल के अध्यक्ष ने किया था। उदघाटन समारोह मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सचालक श्री बाल दिवाकर हस, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, आर्यसमाज रोहतास नगर के प्रधान प० रामलाल शास्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री मामे राम आर्य स्थानीय आर्य नेता श्री रूपचद नागर आदि महानुभावो ने आर्य वीरो का मार्गदर्शन किया था। इस १२ दिवसीय शिविर म ७० बच्चो को प्रशिक्षित किया गया है और हमे विश्वास है कि यह बच्चे आगे चलकर आर्यसमाज का सराहनीय कार्य करेंगे। आर्य वीर दल के अधिष्ठाता श्री प्रियतम दास रसवन्त ने उपस्थित आर्य जनता तथा दानी महानुभावो का धन्यवाद किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

प्रो० शेरसिंह पुनः सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन २१ मई १९८९ को दयानन्द मठ, रोहतक मे सम्पन्न हुआ। हरयाणा के सभी जिलो से आये प्रतिनिधियो ने भाग लिया। गत वर्ष में दिवंगत हुए आर्य नर-नारियो को श्रद्धाञ्जलि देने के पश्चात् गत वर्ष की सभा की कार्यवाही को सम्पुष्ट किया गया तथा आगामी वर्ष के लिए सभा के विभिन्न विभागो का १६७३७५०रु० सोलह लाख तिहत्तर हजार सात सौ सौ पचास रु०) आय-व्यय (बजट) स्वीकार किया गया।

सभा के लिए आगामी वर्ष के पदाधिकारियो का चुनाव का विषय प्रस्तुत होने पर श्री महेश्वरसिंह शास्त्री तथा श्री धर्मसिंह राठी ने प्रो० शेरसिंह जी का नाम प्रस्तुत किया। डा० बलदेवसिह, कुरुक्षेत्र, श्री धर्मसिंह लुहारु, आचार्य ऋषि पाल चरखी दादरी, प्रो० प्रकाशवीर विद्यालकार डा० रणजीतसिंह श्री रामगोपाल आर्य सोनीपत डा० लक्ष्मणसिंह सालवन ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया। प्रधान पद के लिए अन्य किसी का नाम प्रस्तुत न होने पर प्रो० शेरसिंह को सर्वसम्मति से प्रधान घोषित किया गया। सभी उपस्थित प्रतिनिधियो ने इस घोषणा का तालियाँ बजाकर स्वागत किया। सभी प्रतिनिधियो ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास करके सभा के अन्य पदाधिकारियो तथा अन्तरग सदस्यो आदि को मनोनीत करने का अधिकार भी प्रो० शेरसिह को दे दिया। उन्होने आगामी वर्ष के लिए निम्नलिखित पदाधिकारियो तथा अन्तरग सदस्यो को मनोनीत करके घोषणा की—

प्रधान प्रो० शेरसिंह
उपप्रधान म० भरतसिंह वानप्रस्थी

(शेष पृष्ठ ८ पर)

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी [illegible]ानन्द

वित्त बन्धुर्वय कर्म विद्या भवति पञ्चमी ।
एतानि मान्यस्थानानि गरीयो यद्यदुत्तरम ॥

—मनु० २।१३६

आजकल धन सारी दुनिया पर राज्य कर रहा है। अमेरिका के धनाढ्य हर प्रकार की ताकत को खरीदने के दावेदार हैं। फ्रांस के 'जैकोलियस लबाडी (Jacolius Labadi) ने धन के द्वारा अफ्रीका के मरुस्थल का एक हिस्सा मोल लिया और अपने आपको उस टुकड का राजा घोषित कर दिया। आखिर इस समय राज्य निर्भर भी तो धन पर ही है। आध्यात्मिक तौर पर दौलत को तुच्छ साबित करते हुए भी आज रुपये का भारी दुनिया मे राज्य नजर आता है। आजकल की जगो और मुहिमो का निर्भर भी रुपये पर ही है। जो जाति पर्याप्त धन नही रखती वह प्रचुर शस्त्र खरीद नही सकती। इसलिए लडाई के समय अपनी फौज को निश्चिन्तता के साथ आगे नही बढा सकती। जिधर देखो उधर रुपये का ही राज्य आज दिखाई देता है। यद्यपि पाप से कमाया हुआ धन, देने और लेने वाले दोनो को नष्ट कर देता है तो भी ईमान दारी से कमाया हुआ धन भी ता ससार म मौजूद है ओर उसका पूरी ताकत मान लेने मे कोई भी कठिनता नही है। इसलिए यदि ध्यान से देखा जाय तो मनु महाराज का कथन सत्य है कि सबमे प्रथम मान के योग्य बल धन है। जैकोलियस लबाडी ने धन के कारण अपने-आप शहशाह का पद लिया। परन्तु ससार के पुश्तैनी मुकुटधारियो के मुकाबिले मे उसकी क्या हस्ती है जिसके सम्बन्धी बहुत हैं और वे भी परस्पर इत्तफाक रखने वाले है उस मनुष्य के मुकाबिले मे धनवान की कुछ हैसियत नही है। धन कमाया जा सकता है परन्तु सम्बन्धी एकत्र नही हो सकते। धन को नष्ट होते देर नहो लगती पर सम्बन्धियो के खात्मे के लिए समय चाहिए। इस समय भी देखा जाता है कि धनवान की अपेक्षा खानदानी मनुष्यो का अधिक मान किया जाता है। योरुप के सभ्य राष्ट्रो मे अब तक खानदानी मनुष्यो को धनवानो से मुख्यता दी जाती है। इस मुख्यता के मूल्य की अगर [illegible] सम्बन्धियो की बुजुर्गी ही काम करती दिखाई देती है। इंगलिस्तान के पुराने खानदानी धनवानों की प्रतिष्ठा का कारण उनके जबर्दस्त रिश्तेदार ही थे। इसलिए धन-बल से बन्धु-बल की मुख्यताओ मे मनु जी ने बडे अधिक अनुभव से काम लिया है।

वैदिक कर्म धन और रिश्तेदारी दोनो के घमण्ड को तोडने वाले हैं। पवित्र कर्म मनुष्य को हर समाज मे बडा बना देते हैं। मैने ऐसे ईमानदार मनुष्य देखे हैं जिनका मान, धनाढ्यो और खानदानी मनुष्यो की अपेक्षा बहुत ज्यादा किया जाता है। नेक मनुष्यो के सामने बडे से बडे धनाढ्यो को स्वयमेव झुकना पडता है। भारतवर्ष के अन्दर प्राचीन समय मे भिखमगे ब्राह्मणो का निडर छत्रपति महाराज को उनके कर्मो के लिए डाट बताकर कम्पायमान करना इसी नियम का परिणाम था। आज भी बुरे स्वभाव के अमीर और खानदानी मनुष्य नेक काम करने वाले पुरुषो के आगे लज्जित हो जाते हैं। धन और बन्धुबल का केवल घमण्ड ही घमण्ड है, परन्तु अपने कर्मों पर प्रत्येक पुरुष पूरा भरोसा कर सकता है। कवि ने क्या अच्छा कहा है— काई नही जावे साथ, धर्म जावे साथ। इस लोक मे तो प्रत्यक्ष देखने मे आता है कि कर्म प्रधान है। गोसाइ तुलसीदास जी कहते है—

कर्मप्रधान विश्व रचि राखा।
जो जस करहि सो तस फल चाखा ॥

परन्तु परलोक मे भी कर्म सहायक होते हैं। अच्छे कर्म करने वाले मनुष्यो मे भी अनुभव का बडा पद है। पहले तीनो गुणो से बढकर आयु का मान होना चाहिए और आयु का हिसाब वर्षों की अपेक्षा न होकर अनुभव की अपेक्षा होना चाहिए। इसलिए मनु भगवान् ने कहा है कि बुजुर्ग वह है जो बुद्धिमान है वह नही जिसके कि बाल सफेद हो गए हो। परन्तु सबसे बढकर मान के योग्य विद्या है। कवि ने क्या अच्छा कहा है—

'स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान सर्वत्र पूज्यते।'

[illegible] का मान केवल [illegible] राज्य तक ही सीमित रहता है परन्तु आचरणशील विद्वान का मान हर जगह होता है।

प्रिय पाठकगण! धन की [illegible]दारी के साथ पैदा करने का अवश्य यत्न करो क्योंकि [illegible] शारीरिक मनुष्यो की आवश्यकताओं के दूर करने का कारण है। अपने बन्धुओ और इष्टमित्रो को भी प्रसन्न रखकर उनकी सहायता पर भरोसा रखो, क्योंकि कष्ट के समय वे तुम्हारे सहायक हो सकते हैं। अपने कर्मों को भी नेक बनाओ और सदैव पुरुषार्थी रहकर हर तरह से कामों को पूर्ण करो क्योकि बन्धुओ की अपेक्षा अपने शारीरिक, मानसिक और आत्मिक बल पर मनुष्य अधिक विश्वास कर सकता है। बडी आयु के अनुभवी मनुष्यो से न केवल आयु बढाने के गुर सीखने का यत्न करो, इन सबसे बढकर दिन-रात तत्त्वज्ञान की प्राप्ति मे यत्न करते रहो, क्योकि ऊपर कहे हुए प्रत्येक गुण की नीव उसी पर रखी गई है। बिना विद्या के दौलत, खानदान, नेक कर्म और अनुभव, बजाय तुम्हारे सहायक होने के उलटा तुम्हें दुखसागर मे डुबो देने वाले हो सकते है। यही कारण है कि महात्मा लोग सदैव अविद्या के नाश और विद्या के प्रकाश का उपदेश देते रहे। विद्या की खोज कहाँ कर? ससार मे बडे से बडे विद्वानो को [illegible] फिरते हुए [illegible] पर भरोसा कर। यह अविश्वास का नाश है। विद्या को जड जगत् में अन्दर खोजते हुए तुम कैसे प्राप्त कर सकते हो? विद्या की तलाश मे [illegible], ज्ञान के स्रोत, परमात्मा की शरण में जाने की आवश्यकता है। चेतन के लिए जड की शरण लेना बुद्धिमत्ता नही है। ज्ञानस्वरूप परमात्मा की शरण लेकर उसी से तत्त्वज्ञान की प्राप्ति की अभिलाषा करते हुए जब तुम तत्त्वज्ञानी बनोगे तब तुम्हारे लिए धन, खानदान, आचरण और आयु सब के सब सुखदायी होगे और तुम अपने चेतनस्वरूप को समझकर जड प्रकृति के अन्धकार से पृथक होने का यत्न करोगे। उस यत्न के आरम्भ मे तुम्हे ज्ञानस्वरूप के, प्रकाश के दर्शन होगे और इसी प्रकार तुम जन्म-मरण के दुःख से छुटकारा पा सकोगे।

शब्दार्थ—(वित्तम्) सचाई से कमाया हुआ धन (बन्धु) सम्बन्धी (वय) आयु (कर्म) उत्तम आचरण और (विद्या भवति पचमी) और पाचवी विद्या, ज्ञान (एतानि मान्यस्थानानि) ये पाच वस्तुएँ सम्मान के साधन हैं (यद यद् उत्तरम्) इनमे से हरएक मे उसके बाद का (गरीय) बडा है, अधिक महत्त्व रखता है और विद्या सर्वाधिक महत्त्व रखती है।

जब जगत् पिता कल्याण करें

ओ३म् स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भग स्वस्ति देव्यदितिरनर्वण ।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु न स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना ॥

जब जगदीश्वर कल्याण करे, जन-जगत सभी यह मान करे ।
यह जगत हमे गतिमान करे, जब जगत पिता कल्याण करे ॥

सब सूर्य चन्द्र ये चमकीले
ऐश्वर्य सकल भूषण शीले
ये सभी करे कल्याण अभी
नित नित लाये रग रसीले ।

ये सकल हमें सुख दान करें, मत कहीं हमे अपमान करें ।
यह जगत हमे गतिमान करे, जब जगत पिता कल्याण करे ॥

यह देवी दिव्य गुणो वाली
प्रिय पृथ्वी आलम्ब निराली
इसके निश्चल पर्वत ऊँचे
मेघ माल पोषक जल वाली ।

ये हम पर कृपा वितान करे, पल पल उत्तम उत्थान करें ।
यह जगत् हमे गतिमान करे, जब जगत् पिता कल्याण करे ॥

जो लोक प्रकाश प्रदायक हैं
या जो प्रकाश के दायक हैं
द्यौ से धरती तक लोक सभी
जीवन के सतत सहायक हैं ।

ये चेत शुभ्र विज्ञान वरें, हम सफल कार्य अभियान करें ।
यह जगत हमें गतिमान करे, जब जगत् पिता कल्याण करें ॥

—देवनारायण भारद्वाज

ओ३म्
आर्य सन्देश

रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा विश्व

हमें आज चारो ओर विश्वबन्धुत्व, सद्भाव एवं सहयोग तथा अन्य मानववादी विचारधाराओ को अनुप्राणित करने वाले नारे सुनाई पडते हैं, परन्तु दुःख की बात यह है कि जितना हम इनके विषय मे सोचते हैं या नारे लगाते हैं, उतना ही हम मानववादी विचारधारा से दूर जा पडते हैं। भारतीय मूल के लोगो के साथ दक्षिण अफ्रीका के या फिजी और अन्य अनेक देशो मे क्या हुआ ? हम सभी जानते हैं और जो ताजा घटनाए नेपाल तथा भूटान मे भारतीयो के साथ व्यवहार की जा रही हैं, वे भी आप सभी को आलोडित तो अवश्य करती होगी। पचशील, निर्गुट, सार्क, यू-एन-ओ जैसी सस्थाए ऐसा प्रतीत होता है कि अपना अस्तित्व खो रही हैं। इनका अस्तित्व शक्ति से नहीं स्थापित किया जा सकता। इसे भी सहिष्णुता से ही स्थापित किया जा सकता है। व्यक्ति के ऊपर धर्म ग्रथो का प्रभाव पडता है। उन पर भी पडता है जो किसी भी धर्म को नही मानते। धर्म त वही सिखाता है जो किसी एक का न हो बल्कि सब का हो। धर्म तो वही सिखाता है जो सत्य हो सनातन हो और किसी भी कसौटी पर खरा हो। जो बात एक सदर्भ में ठीक और दूसरे मे गलत हो वह धर्म नही है। जो कालातीत देशातीत तथा मानवातीत हो, वही सत्य है, सनातन है और धर्म है। सारे ससार को एक मानो। सारे ससार को श्रेष्ठ मानो। भाई भाई से द्वेष न करे। तुम मनुष्य बनो। अपनी सतान को श्रेष्ठ बनाओ। ये सर्व धर्म के उपदेश हैं। ये सब वेद के उपदेश हैं। ये सब ईश्वरीय उपदेश हैं, और यही है विश्वबन्धुत्व। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी विश्वसाम्राज्य की परिकल्पना हमें दी थी।

हम इन खाइयो को पाट नही पाए। अलग-अलग देश होते यह तो सभव नही हुआ। इसके विपरीत एक देश के ही अलग-अलग टुकडे करने की हम बात सोचने लगे, यह हमारा दुर्भाग्य है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के समय भारत पराधीन था। उस समय के नेता देश को आजाद कराना चाहते थे। वे पक्के राष्ट्रवादी थे। उन्हें टैगोर की अन्तर्राष्ट्रीय आस्था चुभती थी। पर वह तो सहृदय कवि था। वह सकरुण मानव था। उसके हृदय मे जो टीस और विह्वलता थी, वह एक के लिए या कुछ के लिए न हो सकती थी वह तो सबके लिए थी, मानवमात्र के लिए थी प्राणीमात्र के लिए थी। ससार का उपकार करना उसे अभीष्ट था। उसके अन्दर उत्सर्ग की भावना उद्दीप्त हो चुकी थी। दीपक प्रकाश देता है, अपने को होम करके। यदि वह अपनत्व का त्याग न करे तो वह दूसरो का भला नही कर सकता। यदि परोपकार करना है, तो अपने आप को होम करना ही होगा। वह प्रकाश कर सकता है, जो तिल तिल जलता है। वही दूसरो का भला कर सकता है जो अपनत्व का, अहं का त्याग कर कर देता है।

ऐसे ही महामानव रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म ८ मई को हुआ था। टैगोर के एक निष्ठावान मित्र थे सी० एफ० एण्ड्रूज। उन्होंने लिखा है कि वे एक बार टैगोर के साथ एक सरकारी किण्डर गार्टन स्कूल देखने गए। आपानी पोशाक मे नन्हे मुन्ने ड्रिल कर रहे थे। टैगोर ने उनसे पूछा ये बच्चे कैसे लग रहे हैं। एण्ड्रूज ने कहा—विनोद पूर्ण। टैगोर ने तिरस्कार पूर्वक कहा—विनोद पूर्ण ! मैं इसे विनोदपूर्ण नहीं कह सकता। तुम नहीं देख रहे हो कि मासूम बच्चे सैनिक वर्दी मे हैं। तुम नही देख रहे हो कि ये सैनिक ड्रिल कर रहे हैं, तुम इसे विनोद पूर्ण नहीं कह सकते। यह अस्पष्ट है। यह बुराई है। वह दुष्टता है और क्या तुम यह देखते हो कि ...से रजित मे बच्चे दीवारो पर अटक रहे हैं इतनी कम उम्र मे ही उन्हें लड़ने और मारने की शिक्षा दे रहे है। एण्ड्रूज ने लिखा है कि उस समय उनके चेहरे पर जो पीडा के भाव थे, मैं कभी भूल नही सकता।

टैगोर ने मानवता का सदेश दिया। मानवता का वह शाश्वत सदेश दिया जो उन्होने वेदो से ग्रहण किया था। टैगोर ने अपनी पुस्तक नेशनलिज्म' मे राष्ट्र की तुलना मे मानवता को अपेक्षाकृत महान कहा है। इस पुस्तक पर प्रतिबन्ध लगा था। विश्वयुद्ध के दिनो मे इसे मानसिक विष कहकर नामजूर कर दिया गया था। परन्तु यह पुस्तक गीताजलि से भी ज्यादा प्रसिद्ध हुई। रोम्या रोला, सिल्वियन लेवी बर्ट्रेण्ड रसेल और बर्गसन जैसे विद्वानो और दार्शनिको ने उनकी विचारधारा का स्वागत किया था। उन्होंने देश देश नगर-नगर यात्रा करते हुए विश्वबन्धुत्व का उपदेश दिया था। वे स्वय दृढ निश्चयी व्यक्ति थे तथा विश्व भर मे पुनर्जागरण लाने का प्रयास कर रहे थे। उन्होने एक बार कहा था – मैं रवि के अलावा कुछ नही हू। परन्तु मेरे छन्दो मे जो अनश्वरता का चिन्तन करने वाले एशिया के महान हृदय का प्रतिबिम्बन होने दीजिए-जो आवाज सदियो से मौन हो गयी थी उसे आज पुन निश्चय के स्वर मे मुखर होने दीजिए। क्योकि मैं आपको आश्वासन देता हू कि विश्व मे अपने भ्रमण के दौरान मैंने इसकी आवश्यकता महसूस की है।

मानव मे आस्था रखने वाले टैगोर का जन्म दिन बगाल मे नववर्ष के रूप मे मनाया जाता है। पश्चिमी सभ्यता मे उनका विश्वास अन्तिम दिनो मे पूर्ण रूप से धराशायी हो चुका था, परन्तु वे आशावादी थे, वे न न धैर्य खोते थे और न ही मनुष्य में अपनी आस्था। □

स्व० प० इन्द्र जी की जन्म शताब्दी के वर्ष पर आर्यसमाज की संस्थाएं कार्यक्रम आयोजित करें

दिल्ली स्नातक मण्डल की एक बैठक मे यह निर्णय लिया गया कि गुरुकुल कागडी के प्रथम स्नातक स्वर्गीय पडित इन्द्र जी विद्यावाचस्पति की जन्म शताब्दी वर्ष पर उनकी पवित्र स्मृति के रूप में कुछ समारोह आयोजित किए जाय। पूज्य पडित जी का आर्यसमाज –विशेष रूप से गुरुकुल कागडी के विकास म महान योगदान रहा है। उन्होने कांग्रेस के सदस्य एव नेता के रूप म स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद राज्य सभा क सदस्य रहकर राष्ट्र के विकास म महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। उनकी हिन्दी और सस्कृत मे अनेक कृतिया हैं। उनका अन्य भाषाओ के विकास मे भी योगदान रहा है। पत्रकारिता के क्षत्र मे उनका योगदान अविस्मरणीय है।

आर्यसमाज की विभिन्न सस्थाओ तथा प्रतिनिधि सभाओ द्वारा प० इन्द्र जी की जन्म शताब्दी के वर्ष मे हम विश्वास है उनके कार्यक्रम आयोजित किए जाएगे।

सम्पादक के नाम पाठकों के पत्र—

प्रिय बन्धु मूल चन्द जी

सादर नमस्ते।

यह हर्ष की बात है कि आप विभिन्न समाचार-पत्रो मे हिन्दी की उपेक्षा की ओर अधिकारियो, आदि का ध्यान आकर्षित करते रहते हैं। अनुरोध है कि आप दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजो क कार्यकर्ताओ को भी ऐसा ही करने की प्रेरणा द।

आर्यसमाज के कार्यकर्ता समाज के विभिन्न वर्गों से सम्बन्धित हैं तथा उनका समाज मे अच्छा प्रभाव है। यदि आर्यसमाज के कार्यकर्ता अपने-अपने कामो मे स्वय हिन्दी का प्रयोग आरम्भ कर तो उससे अन्य लोगो को भी प्रेरणा मिलेगी। एक समय था जब समाज मे जागृति लाने के कार्यों मे आर्यसमाज के बन्धु अग्रणी होते थे तथा अपने आदर्श व्यवहार से समाज मे परिवर्तन लाने का प्रयत्न करते थे। आज यदि अग्रजी का प्रभाव चारो ओर दिखाई देता है तो उससे निराश होने की आवश्यकता नही है। हम यदि सब मिल कर प्रयत्न करे और अपनी अपनी जगह स्वय हिन्दी का व्यवहार आरम्भ कर द तो स्थिति को बदलने मे दर नही लगेगी। आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली इस दिशा मे बहुत बडा काय कर सकती है। हिन्दी के पक्ष मे वातावरण बनाने के लिए यदि सभा की ओर से एक योजनाबद्ध कार्यक्रम चलाया जाए तो आपका बहुत प्रभाव हो सकता है।

आपका
हरिबाबू कसल (महामन्त्री)
हिन्दी व्यवहार सगठन

प्रजापति का तिरस्कार और पुरस्कार

—देवनारायण भारद्वाज

किसी प्रसिद्ध दुकान से स्वादिष्ट मिष्ठान्न मानो अमरती आप क्रय करके लाये, और सभी सत्सग मे आये व्यक्तियो मे वितरित कर दी, और वह आकर्षक रंगीन डिब्बा जिसमे अब तक अमरती थी आप ने झटके से दूर फेंक दिया। अब तक जिसे सभाले रखा था, उसे आप ने फक क्यो दिया, क्योकि अब उसमे अमरती नही रह गई थी। इसी प्रकार कोई मनुष्य अपने हृदय के अमर चरित्र को खो देता है तो वह भी ऐसे तिरस्कार का लक्ष्य बन जाता है। आप कह सकते हैं कि अमरती रखने से पूर्व डिब्बे दर्जनो की सख्या मे खाली रखे रहते हैं, केवल खाली हो जाने के कारण उन्हे फेक नही दिया जाता है। हा वे डिब्बे उन शिशुओ के समान है जिन्हे हम अभी गोद मे खिला रहे हैं, पर वे ही जब बडे होकर अनाचार करते हैं तो तिरस्कार के पात्र बन जाते हैं। पहले डिब्बे के स्थान पर दोने-पत्तलो मे मिठाइयाँ लाते थे। प्रयोग के बाद वे दोने-पत्तल भी फेंक दिए जाते थे। हम मिठाई को स्वीकार और पत्तल का प्रयोगोपरान्त तिरस्कार कर सकते हैं, पर कोई पशु आकर उन झूठी पत्तलो को भी खा सकता है। अस्तु आवश्यकताओ-इच्छाओ पर विजय पाकर हम बडी से बडी वस्तु को ठुकरा सकते हैं। आप को कितनी ही अमरती खिलाई जाय तृप्ति की सीमा के बाद आप उन्हे भी खाने से मना कर देते हैं तो जो तृप्त है वही ससार का तिरस्कार कर सकता है और उसी मे तृषित को पुरस्कार मिल सकता है। आइए देखिए मन्त्र का क्या सकेत है—

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो
विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु
वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥
ऋ० म० १० सू० १२१ म० १०

पदार्थ—हे (प्रजापते) सब प्रजा के पालक स्वामी परमात्मन (त्वत अन्य) आप से दूसरा कोई (एतानि ता-तानि) इन उन, पास-दूर, भूत वर्तमान और भविष्य के (विश्वा जातानि) सब उत्पन्न जड चेतन पदार्थों को (न परि बभूव) नही तिरस्कार पराभूत करना अथवा नही व्याप रहा अर्थात उन पर दूसरा कोई अध्यक्ष नही आप ही सर्वोपरि विराजमान हैं। (यत कामा) जिस जिस पदार्थ की कामना वाले हम (ते जुहुम) आप का आश्रय लेवे, (तत्) उस उस की कामना (न अस्तु) हमारी सिद्ध होवे, जिस से (वय) हम लोग (रयीणाम्) धनैश्वर्यों के (पतय) स्वामी और पालक (स्याम) होवे।

प्रजापति कौन है? जो प्रजाओ का पति हो। प्रजा कौन हैं? सन्ताने ही प्रजा हैं। परिवार के पुत्र-पुत्रियो को पालन करने वाला वह गृहपति एक छोटा प्रजापति ही है। राष्ट्र-सन्तान स्त्री-पुरुष नागरिको का रक्षक राष्ट्रपति एक मध्यम प्रजापति ही तो है। घर की सन्तान व स्वय गृहपति का, राष्ट्र के नागरिक व स्वय राष्ट्रपति का, तथा देश-देशान्तर भूमण्डल के समस्त जड-चेतन का सरक्षक ब्रह्माण्डपति सर्वोच्च प्रजापति है। गृह, राष्ट्र और विश्व मे ये तीनो प्रजापति हमारे पालक-रक्षक व पोषक हैं। अपनी अपनी सीमा मे यदि ये तीनो श्रेष्ठ हैं तभी हमारा कल्याण कर सकते हैं। विश्वपति प्रभु से सर्वोपरि श्रेष्ठ कौन हो सकता है, पर अल्प-शक्ति का स्वामी राजा व अत्यल्प शक्ति वाला पिता श्रेष्ठ होने पर ही हमारा पालक हो सकता है। 'यस्मान्न जात परोऽन्योऽस्ति' यजुर्वेद ८।३६ मे यही कहा गया है।

प्रस्तुत मन्त्र तीन खण्डो मे हमे अपना सन्देश देता है। प्रथम, हम अपने स्वामी की सर्वसत्ता को स्वीकार करे। द्वितीय, हम अपनी उचित माग लेकर उसकी शरण म जाय। तृतीय, उसके वरदान से हम धन, ऐश्वर्य के स्वामी बन जाय। जो वस्तु का अधिष्ठाता है, उसी के समीप जाकर वह वस्तु हम प्राप्त कर सकते है, और उसे प्राप्त कर हम स्वय भी आशिक रूप से उस वस्तु के अधिष्ठाता बन जाते है। वह जो मिठाई हम दोने मे हलवाई की दुकान से लाए थे उसके हम अधिष्ठाता हो गए थे तभी हम ने उसको वितरित कर दिया। भले ही हलवाई बडा अधिष्ठाता है, क्योकि उसके अधिकार मे तो मिठाइयो का अम्बार था। यदि हम उस थोडी मिठाई के स्वामी न होते, सेवक होते तो क्या करते। रोज झाड-पोछकर दोने को देखते रहते और एक दिन वह सड गल दुर्गन्ध कर नष्ट हो जाता। इसमे न हमारी भलाई और न मिठाई की। इस के सदुपयोग मे ही दोनो की अच्छाई है। यहाँ पर पालक-स्वामी का यही लक्षण है।

शक्ति-सम्पदा-सदाचरण मे जो सर्वोपरि होता है, वही अपने क्षेत्र मे आदर्श और अनुकरणीय होता है और वही अपनी प्रताडना द्वारा भटके को मार्ग दिखा सकता है। देव के पिता प्रभुदयालु से हलवाई की दुकान पर ग्राम के एक कुख्यात दुराचारी श्यामाचरण ने आकर कहा कि मुझे आज दूध पिला दो। प्रभुदयालु ने कहा 'तुम मान न मान मैं तेरा मेहमान' क्यो बन रहे हो। श्यामाचरण ने फिर कहा यदि तुम दूध नही पिलाओगे तो मैं तुम्हे अभी पटक दूंगा। प्रभुदयालु ने यह सुना तो भिड गए एकदम श्यामाचरण से और एक नही दो बार उन्हे पटक लगा दी। श्यामाचरण अपनी दुर्दशा देखकर चुपचाप जाने लगे, तो प्रभुदयालु ने उन्हे बुलाया और कहा अब मन भर के दूध पी लो। इस घटना से पूरे ग्राम मे प्रभुदयालु की धाक जम गई और उनका पुत्र देव भी अपने को पूर्ण रक्षित अनुभव करने लगा, क्योकि वह समझ गया था कि मेरे बलवान न्यायकारी पिता के सामने किसी अपराधी की दाल नही गल सकती है, और सज्जनो मे भी उनका सम्मान है।

धन सम्पदा को जमा करके कजूसी से एक व्यक्ति सेठ तो बन गए किन्तु श्रेष्ठ नही। दिखाने को एक पुरानी कार क्रय कर ली किन्तु चलाते इसलिए नही कि कहीं कोई मागने न आ जाए। नगर बस से यात्रा करके अपना काम चलाते थे। एक दिन प्रतीक्षा के बाद नगर बस आई, किन्तु अधिक भरी होने के कारण रुकी नही। सेठ जी बस के पीछे भागते भागते घर आ गए और अपनी पत्नी से प्रसन्न होकर बोले, आज एक रुपये को बचत हो गई। उसने पूछा तो बस के पीछे दौडने की बात बता दी। पत्नी ने कहा आप भी क्या हैं यदि आप किसी कार-टैक्सी के पीछे दौडते तो १० रुपये की बचत हो जाती। एक आर्य सभासद सेठ जी को समारोह मे ले गए और बडे धनपति के रूप मे उन का परिचय दिया, उनकी कंजूसी के स्थान पर सरलता-सादगी का वर्णन भी कर दिया। समारोह में भवन शाला निर्माण हेतु धन की अपील की गई और पत्थर पर नामाकन की बात भी कह दी गई। सभासद की प्रेरणा से सेठ जी ने उस दिन सर्वाधिक दान की घोषणा कर दी, तो उन्हें मंच पर बुलाकर माल्यार्पण से सम्मानित किया गया। लौटते समय, मार्ग मे सेठ ने मित्र सभासद से कहा 'यदि मैं कजूसी करके धन सचय न करता तो कौन मुझे धनपति या सेठ जी कहकर इस मच पर सम्मानित करता। धन ने मुझे मान दिलाया। सभासद ने उन्हे सचेत करते हुए कहा धन तो आपके पास कल तक था पर यह सम्मान कहा था। यह सम्मान तो आपको तभी मिला जब आपने दान की घोषणा से धन का इस अश मे त्याग किया।

प्रचलित-चर्चित महता अमीचन्द का प्रकरण किसे स्मरण नही होगा, जो महर्षि दयानन्द के सत्सग मे आते रहते थे और सुन्दर गीत गाकर अच्छे अच्छे प्रभु भक्ति के भजन सुनाते रहते थे, पर थे बडे शराबी व व्यभिचारी। अच्छे पद पर भी थे। स्वामी जी को यह सब ज्ञात हो चुका था। एक दिन महता जी ने मनोहर प्रभु के गुणगान का गीत गाया। स्वामी जी ने उसे सुनकर कहा—"अमीचन्द! हो तो हीरे, परन्तु कीचड मे पडे हो।' ऋषि का यह एक वाक्य महता का जीवन दीप बन गया और उन्हे उसने दुराचारी से सदाचारी बना दिया। प्रभु के गुणगान का सम्मान तभी है जब हम भी वैसे गुणवान बनने का प्रयत्न करें। इसीलिए कहा है—

कबिरा सगति साधु की,
नित प्रति कीजे जाय।
दुरमति दूर बहावती,
देती सुमति बताय॥

इस प्रकार बलवान, धनवान, गुणवान का उत्थान इसी मे है कि वह इनका प्रयोग परार्थ सत्कार्यों मे करे, और न करने या केवल स्वार्थ व प्रतिकूल करने से इन वस्तुओ से वह वंचित होने के साथ-साथ पितृ-राजा व परमपिता के तिरस्कार व दण्ड का भागी भी बन सकता है। इस तिरस्कार या दण्ड से वही व्यक्ति बच सकता है जो अपने पिता की आज्ञा, शासक के विधान और प्रभु के वेद-संविधान का पालन करके इन की दृष्टि मे अच्छा बना रहेगा। आप ने उस बालक को देखा होगा, जो कोई भूल करता है तो

भयवश पिता के सम्मुख जाता ही नहीं, यदि किसी वस्तु की इच्छा ने मांग भी की होगी, वारम्बार उसे लाने का आग्रह भी किया होगा किन्तु अब तो सामने भी पड़ना नहीं चाहता। कोई अपराध करके व्यक्ति भागते क्यो हैं, छिपते क्यो हैं पर आरक्षी दल कभी न कभी उसे पकड़ ही लेता है।

"बिन भय होत न प्रीत गुसाईं" का यही आशय है। अपने पिता-राजा या परमपिता का अनुशासन भय न हो जाए—इसी सावधानी का भय हमें सदाचारी बनाए रखता है और वे हम से व हम उन से प्रेम करते हैं। ऋषि ने सत्यार्थप्रकाश मे मनु के अनुसार निन्दा, धिक्कार अर्थ दण्ड एवं शारीरिक मृत्यु दण्ड तक बताए हैं। गुण कर्म स्वभाव से ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य, शूद्र प्रवृत्ति के चार साथी किसी चोरी के काण्ड मे पकड लिए गए। शूद्र को कारावास, वैश्य को अर्थ दण्ड, क्षत्रिय को शारीरिक यातना एवं ब्राह्मण को मात्र धिक् का दण्ड दिया गया। बाद मे इसके परिणाम का सर्वेक्षण किया गया तो पाया गया कि शूद्र कारावास के दिन बिताकर चोरी की नई याजना बना रहा था वैश्य अर्थहानि से दुखी होकर अब किसी बडे व्यवसायी का परिचर बन गया था, क्षत्रिय शारीरिक पीडा भोगकर निर्बलो क दुःख समझने लगा था और उनकी सहायता भी करने लगा था, और ब्राह्मण ने तो इस अपमान से दुःखी होकर ससार का ही त्याग कर दिया था।

"माता-पिता-आचार्य, सन्तान और शिष्यो की ताडना करते हैं वे मानो उनको अमृत पिला रहे हैं और जो लाडन करते हैं वे उन को विष पिला कर नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं। परन्तु माता-पिता अध्यापक लोग ईर्ष्या द्वेष से ताडन न करें किन्तु ऊपर से भय प्रदान और भीतर से कृपा दृष्टि रखें। यही ऋषि ने सत्यार्थप्रकाश में हमे सिखाया है। चाहे पिता-आचार्य मित्र-स्त्री, पुत्र-पुरोहित क्यो न हो जो स्वधर्म मे स्थित नहीं रहता वह राजा का अदण्डय नही होता। इस प्रकार हम अपने पिता परमपिता की शक्ति एवं सम्पन्नता को समझ कर उसकी शरण में जाते हैं। अपने दोषों को समझकर उन्हें दूर कर देते हैं, तो उनके निकट जाने मे सकोच नहीं रहता है। इसी दशा मे हम उनसे अपनी मांग प्रकट कर सकते हैं।

मनुष्य प्रजापति के गुणो का कीर्तन अपने ऊपर कृपा करने के लिए ही नहीं करता है, किन्तु इसलिए भी करता है कि वह स्वय भी इन गुणो को धारण कर ले। जो गुण उसके अनुगामी हो जाते हैं, उन्हे साथ लेकर ही वह वीर्य सचन करता है और उसकी सन्तान मे इन गुणो के आने की सम्भावना बढ जाती है तब वह स्वय प्रजापति बन जाता है। लोकप्रचलित धारणा यदि धन गया कुछ नही गया यदि स्वास्थ्य गया कुछ गया, यदि चरित्र गया तो सवस्व गया, तथ्य पूर्ण है। सद्गुण-सदाचार या सच्चरित्रता के आने पर शक्ति व सम्पत्ति स्वयमेव आने लगती है। जैसे बारात मे कारो की सख्या बढाने के लिए उन व्यक्तियो को विशेष निमन्त्रण दिए जाते हैं, जिनके पास कार होती है इस प्रकार कार का स्वामी, चालक व कार तीनो साथ हो जाते हैं। ऐसा न करते तो कार जड कोई निमन्त्रण समझ ही नही सकती चालक निमन्त्रण प्राप्त कर भी कार ले जा नही सकता। बात भारत विभाजन से पाकिस्तान के निर्माण काल की है। ललित श्याम को मुन्ना मिया अपनी दुकान दकर पाक चले गए। वे दोनो सम व्यवसायी व मित्र थे। शरणार्थी बनकर आए किसी व्यक्ति ने ललित श्याम पर दुकान के लिए अभियोग कर दिया पर निर्णय उन के पक्ष मे ता नही हुआ हा दुकान ललित श्याम से निकल गई उसे शरणार्थियो म नीलाम किया गया। सबसे बडी बाली बोलकर जिस शरणार्थी ने वह दुकान ली थी, उस ने उसे उसी मूल्य मे पुन ललित श्याम को दे दिया क्योकि उनकी सद भावना व सुयश से वह परिचित हो गया था। सदभावना हिन्दू मुस्लिम मे सेतु बन गई थी दुर्भावना हिन्दू-हिन्दू में खाई बन गई और अन्त मे वही सदभावना ही शक्ति बन गई।

अपने अपने क्षत्र मे स्वामी की आज्ञानुसार अच्छ अच्छ कार्य करके हम उसे प्रसन्न करते हैं, तब हम अपनी आवश्यकतानुसार न कवल उससे कामना करते हैं प्रत्युत वह स्वय भी हमे पुरस्कार प्रदान करता है। घोर शीत काल में धूप मे बैठ जाना या घोर ग्रीष्म ऋतु मे शीतल वायु के झोंको वाली छाया मे बैठ जाना मात्र कामना की पूर्ति बन जाता है वैसे ही प्रभु के सान्निध्य मे पहुँच जाना उसकी शरण प्राप्त हो जाना ही सबसे बडी सम्पत्ति पा जाना है। पात्रता से ही प्राप्ति है।

राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओ मे कीर्तिमान स्थापित करने वाले खिलाडियो को, साहित्य, विज्ञान, कला, कृषि व्यापार, श्रम, अध्यापन, सेना शान्ति आदि के क्षेत्रो म उत्तम उपलब्धियो वाले अग्रनायको को पुरस्कृत किया जाता है। छोटे से पदक या वैजयन्ती उन के सम्मान के सूत्र बन जाते हैं। कवि सम्मेलन मे वाह वाह के साथ बजी तालिया कवि का मान उत्साह बढा देती हैं और हाय हाय के साथ बजी तालियाँ कवि का उत्साह भग करने के साथ साथ उस की अवमानना कर देती है जबकि श्रोता वही तालिया वही व उनकी ध्वनि भी समान होती है।

जिस के दण्ड भय से हम आतंकित होते है उसी के द्वारा प्रदत्त पुरस्कार हमे प्रशस्य लगता है।

इसीलिए बडे बडे समारोह आयोजित करके राष्ट्रपति प्रधानमन्त्री आदि के करकमलो से पारितोषिक वितरण कराया जाता है। उल्लेखनीय कार्यों के सम्मानस्वरूप भारत रत्न, पद्मभूषण अर्जुन परमवीर चक्र, महावीर चक्र इत्यादि उपाधियां राष्ट्राध्यक्ष के हाथ से प्रदान की जाती हैं। मन्त्र की भावभूमि क अनुसार अपने सर्वोपरि प्रजापति की शरण म जाकर उसकी आज्ञापालन से गुण ग्रहण मे तत्पर रहकर हम उससे जो भी कामना करगे वह पूरी होगी और हम धन सम्पदा के स्वामी होगे, जिस मे सबसे बडी सम्पदा सुयश की होगी।

—आर्यसमाज आर्यमगढ(आजमगढ)
उ० प्र० २७६००१

भारतीय प्रजातन्त्र को सुदृढ़ बनाने के लिए हिन्दी अपनाइये।

क्योकि—

१ राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूगा है। कोई भी देश अपनी राष्ट्रीय भावनाओ को अपनी भाषा मे ही अच्छी तरह व्यक्त कर सकता है।

२ भारत मे अनेक उन्नत और साहित्यिक-समृद्ध भाषाएँ हैं। किन्तु हिन्दी सबसे अधिक क्षेत्र म सबसे अधिक लोगो द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा है।

३ हिन्दी केवल हिन्दी भाषियो की ही भाषा नही रही वह सम्पूर्ण भारतीय जनता की अभिव्यक्ति का माध्यम बन चुकी है।

४ सर्वोच्च सत्ता प्राप्त भारतीय ससद ने देवनागरी मे लिखी जाने वाली हिन्दी को राजभाषा स्वीकार किया है। यह भारत की समस्त जनता का निर्णय है।

५ ससार की सब भाषाओ मे चीनी और अग्रेजी के बाद हिन्दी ही विशाल जन-समूह की भाषा है।

६ प्रादेशिक भाषाएँ तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी दोनो एक दूसरे की पूरक हैं।

७ हिन्दी का प्रचार करना राष्ट्रीयता का प्रचार करना है। इसे प्रमपूर्वक अपनाना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है।

८ राष्ट्र की एकता के लिए जैसे एक राष्ट्रभाषा का होना आवश्यक है, उसी प्रकार एक लिपि का होना भी आवश्यक है। नागरी लिपि म वे सभी गुण मौजूद है जो किसी वैज्ञानिक लिपि मे होने चाहिए अत समस्त प्रादेशिक भाषाओ की एक ही नागरी लिपि हो।

९ अग्रेजी को बनाये रखना हमारी राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के खिलाफ है। वह हमारे देश म रहने वालो के बीच एक दीवार है। कौन कहता है कि यहा अग्रेजी बोलने वालो की सख्या ज्यादा है? यहाँ अग्रेजी जानने वालो से कई गुना सख्या हिन्दी जानने और समझने वालो की है।

मातृभाषा परित्यज्य येऽन्यभाषामुपासते।
तत्र यान्ति हि ते भाषा यत्र सूर्यो न भासते॥

जो अपनी मातृभाषा को त्याग कर अन्य भाषा का आश्रय लते हैं ऐसे देश या राष्ट्र का जीवन सदा के लिए के लिए अन्धकारमय हो जाता है और वहा कभी स्वतन्त्रता या ज्ञान का सूर्य प्रदीप्त नही होता।

आर्य जगत के समाचार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली तथा दिल्ली से बाहर प्रदेशों में वेदप्रचार की धूम

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य कार्य वेद का प्रचार तथा प्रसार करना है। सभा का प्रयत्न सदैव यही रहता है कि दिल्ली की आर्यसमाजो तथा भारतवर्ष के अन्य प्रान्तो मे आई माग को पूरा किया जाये और अधिक से अधिक वेद का सन्देश घर घर तक पहुचाया जाए। गत दिनो २४ से ३० अप्रैल तक सभा के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक प० चुन्नीलाल जी आर्य तथा ढोलक वादक प० ज्योति प्रसाद जी द्वारा आर्यसमाज आर०के० पुरम सक्टर ५ मे प्रचार कार्य किया, जिसमे हजारो की सख्या मे आर्य बहन भाइयो ने उनके उपदेश तथा भजन सुनकर धर्मलाभ उठाया। आर्यसमाज स्वार अफगान उत्तर प्रदेश की माग पर सभा की ओर से प० चुन्नीलाल जी आर्य १५ १६, १७ अप्रैल को वहा पहुचे और बहु संख्यक मुस्लिम क्षेत्र मे जमकर आर्यसमाज का प्रचार किया। श्रोताओ ने उनका उपदेश सुनकर उनका भव्य स्वागत तथा आतिथ्य सत्कार किया। ग्रामीण क्षेत्र गोपाल नगर नजफगढ दिल्ली की माग पर प० चुन्नीलाल जी १३-१४ अप्रैल को वहा पहुचे और हजारो सख्या म एकत्रित ग्रामीण बहन भाइयो म वेद का सन्देश दिया। आर्यसमाज पजाबी बाग विस्तार की माग पर प० चुन्नीलाल जी आर्य तथा ढोलक वादक प० ज्योति प्रसाद जी ने २९-३० अप्रैल तथा १ मई को प्रात ६ बजे सैकडो की सख्या म आर्य बहन भाइयो के साथ प्रभात फेरी मे भाग लिया और २ मई से ७ मई तक उपरोक्त आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव का कार्यक्रम सफलता के साथ सम्पन्न कराया। आर्यसमाज प्रताप नगर अन्धामुगल की माग पर १८ से २१ मई तक माननीय पण्डित जी वहा की स्थानीय जनता मे प्रचार कार्य कर रहे हैं।

आर्यसमाज बडा बाजार कलकत्ता की बेहद माग पर सभा की ओर से माननीय प० वेदव्यास जी आर्य ~ अप्रैल को कलकत्ता पहुचे और वहा पर हजारो की सख्या मे उपस्थित जनता मे प्रचार किया। आपका कार्यक्रम ३० अप्रैल तक वहा चला। वहा की स्थानीय जनता ने आपका भव्य स्वागत किया तथा पुन फिर कभी समय देने का निमन्त्रण दिया। कलकत्ता से लौटते ही आर्यसमाज इन्द्रानगर बगलौर के उत्साही कार्यकर्ताओ ने सभा को माननीय पण्डित जी को वहा भेजने का निमन्त्रण दिया, उसी दिन कलकत्ता से लौटते ही प० वेदव्यास जी बगलौर पहुचे। वहा उन्होने २ से ७ मई तक भजनोपदेश किया। आर्यसमाज लारेन्स राड, दिल्ली के उत्साही कार्यकर्ताओ ने प्रति शनिवार साय ६ बजे से वहा के स्थानीय पार्को सार्वजनिक स्थानो पर वेद प्रचार करने का निर्णय लिया है। उपरोक्त आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ की माग पर सभा की ओर से यज्ञ, भजनोपदेश तथा उपदेश के लिए सभा प्रचारक प० वेदव्यास जी तथा प० ज्योति प्रसाद जी १३ मई २० मई तथा २ मई को कार्यक्रम सम्पन्न करायगे। सभा का प्रयास यही है कि दिल्ली की प्रत्येक आर्यसमाज चाहे वह ग्रामीण क्षेत्र की हो या शहरी क्षेत्र की, सप्ताह मे कोई ऐसा दिन निश्चित करे जिसमे वह अपने क्षेत्र के पार्कों सार्वजनिक स्थानो पर सायकाल यज्ञ, भजनोपदेश तथा उपदेश के कार्यक्रम आयोजित कर जिसमे वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार अधिक से अधिक हो सके। सभा से आर्यसमाज जिस प्रकार का भी सहयोग चाहेगी उन्हे सहर्ष मिलेगा।

आर्यसमाज करौल बाग की माग पर सभा की ओर से माननीय प० सत्यदेव जी स्नातक ने १ मई से ७ मई १९८९ तक उपरोक्त आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर भजनोपदेश किया।

सभा वेदप्रचार कार्य मे आर्यसमाजो का सहयोग चाहती है। आर्यसमाजो को महर्षि के स्वप्न को पूरा करने के लिए, वेद का सन्देश तथा स्थानीय जनता मे वैदिक धर्म तथा उसके सिद्धान्तो का प्रचार प्रसार करने के लिए कथाओ उत्सवो सार्वजनिक समारोहो प्रभात फेरियो, पार्कों, सार्वजनिक स्थानो पिछडी तथा पुनर्वास बस्तियो मे ऐसे आयोजन अधिक से अधिक रखने चाहिए ताकि महर्षि के मिशन को आगे बढाने मे हमे और अधिक सफलता मिल सके। सभा के पास सुयोग्य विद्वानों, भजनोपदेशको, प्रचार कार्य के लिए वाहन, छोटे-छोटे ट्रैक्ट के रूप मे प्रकाशित वैदिक साहित्य पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। आर्यसमाजो के अधिकारियो से अनुरोध है कि वे अधिक से अधिक आयोजन रखें और सभा का भरपूर सहयोग लें।

डी०ए०वी० नैतिक शिक्षा संस्थान उन्नति के पथ पर

डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली के सगठन सचिव श्री दरबारी लाल ने एक वक्तव्य मे आज यहां कहा कि तीन वर्ष पूर्व डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान की स्थापना की गई थी। वह निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर है। आप ने बतलाया कि वर्तमान मे देश-विदेश मे चार सौ से ऊपर डी० ए० वी० शिक्षण सस्थाएँ कार्यरत हैं जिनमे अग्रेजी तथा हिन्दी माध्यम के लगभग २३० पब्लिक स्कूल हैं। इन सभी पब्लिक स्कूलो मे वैदिक धर्म शिक्षा एक अनिवार्य विषय के रूप मे पढाई जाती है। इस वर्ष से यह भी निर्णय लिया गया कि अन्य विषयो की भांति 'धर्म शिक्षा' परीक्षा में भी प्रत्येक छात्र के लिए उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

इस निर्णय से "धर्म शिक्षा विषय" का महत्व और अधिक बढ गया है। फलत स्कूलो मे धर्म-शिक्षको की और अधिक माग बढ गई है। इस मांग को ध्यान मे रखते हुए निर्णय लिया गया है कि 'डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा सस्थान' मे प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षणार्थियो की सख्या बढा दी जाए। इसलिए आगामी जुलाई से आरम्भ होने वाले नवीन सत्र में वर्तमान से दुगुनी सख्या मे प्रशिक्षणार्थियो को प्रविष्ट किया जाएगा।

निर्वाचन–

आर्यसमाज कलकत्ता

आर्यसमाज कलकत्ता की साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन रविवार ८ ५ ८९ को प्रात १० बजे आर्यसमाज मन्दिर १९ विधान सरणी कलकत्ता-६ मे श्री रलिया राम गुप्त की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ जिसमे आर्यसमाज कलकत्ता तथा सम्बन्धित विभागो का वार्षिक विवरण तथा आय व्यय का लेखा सुनाया गया। आगामी वर्ष के लिए निम्न पदाधिकारी व सदस्यो का निर्वाचन हुआ।

प्रधान श्री रलियाराम गुप्त
मन्त्री श्री राजेन्द्रप्रसाद जायसवाल
कोषाध्यक्ष श्रीनाथदास गुप्त

आर्यसमाज पश्चिम विहार

२१ मई १९८९ को आर्यसमाज पश्चिम विहार का निर्वाचन निर्विरोध सम्पन्न हुआ। इस मे निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित किए गए—

प्रधान श्री हीरालाल चावला
मन्त्री श्री मुन्शीराम गुलाटी
कोषाध्यक्ष श्री हरिचन्द जयरथ

आर्यसमाज अमरोहा

आर्यसमाज अमरोहा का वार्षिक निर्वाचन दिनाक ९-५-८९ को सर्वसम्मति मे निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य
मन्त्री प्रेम बिहारी आर्य
कोषाध्यक्ष धर्मेन्द्र कुमार जी
पुस्तकाध्यक्ष सीताराम बन्धु
अधि० नवयुवक सगठन वेदप्रकाश आर्य

आर्यसमाज किंग्जवे कैम्प

आर्यसमाज मन्दिर किंग्जवे कैंप हडसन लाइन्स दिल्ली का वार्षिक चुनाव १३-५ ८९ को सम्पन्न हुआ जिसमे निम्नलिखित अधिकारी चुने गए -

प्रधान डा० चमन लाल
मन्त्री गोपाल आर्य
कोषाध्यक्ष प्रदीप आर्य
सगठन मन्त्री डा० सत्यकाम वेदालकार
प्रचार मन्त्री पुरुषोत्तम देव

शहीद दिवस तथा हैदराबाद आर्य सत्याग्रह-५०वां वार्षिकोत्सव

देश को एकता और समग्रता को संभाले रखने की जिम्मेदारी आर्यसमाज पर है : कुमुद बेन जोशी

आज के भारत मे प्रान्तीयता मजहबियत आदी विघातक तत्त्व देश की एकता को छिन्न भिन्न कर रहे हैं'—राज्यपालिका आ० प्र० श्रीमती कुमुद बेन जोशी जी ने, जो आज की अमर वीरो की अर्ध शताब्दी स्मारक मे पधारी थी उन्हे श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा—देश की समग्रता और एकता को संभाले रखने की जिम्मेदारी ग्रहण कर कमर कस कर आगे बढते हुए आर्यसमाज को देश का मार्गदर्शन करना होगा।

राष्ट्र-संगठन और एकता को बनाए रखने मे आजादी से पूर्व से ही आर्यसमाज की प्रशसनीय सेवाएँ निरन्तर उपलब्ध रही।

छुआछूत की समाप्ति, महिला अभ्युदय, दहेज आदि विषयो को लेकर समाज-सुधार कार्यों मे आर्यसमाजी डटे रहे। इस दिशा मे उन के अत्यन्त मूल्यवान कार्य सिद्ध हुए। देश के भावी नागरिक युवा समाज को दिशा निर्देश कर सही रास्ते पर उन्हे चलाने की भारी जिम्मेदारी इन्ही के कन्धो पर है—उन्होने कहा। बहिन कुमुदनि जी ने अपने को आर्य-परिवार मे जन्म पाने को धन्य माना।

१९३८ मे निजाम हैदराबाद के राज्य मे चलाया गया सार्वदेशिक आर्य सत्याग्रह मे और तत्पश्चात उसकी मुक्ति आन्दोलन मे इस के चिरस्मरणीय योगदानो की प्रशसा उन्होने की। अधिकतर क्रान्तिकारी या तो आर्यसमाजी ही थे अथवा आर्यसमाज से प्रेरित थे। इस सदर्भ मे भगतसिह, हरदयाल, रामप्रसाद बिस्मिल चन्द्रशेखर आजाद, भाई परमानन्द, ला० लाजपतराय श्रद्धानन्द, हकीकत राम आदि का उन्होंने उल्लेख किया।

निजाम के रजाकारी दौर मे रजाकारो का डट कर जान जोखिम मे डाल कर जिन्होने मुकाबला किया था उनमे पाच हरिजनो को राज्यपाल कुमुदिनी देवी द्वारा सम्मानित किया गया।

शहीदी दिवस १५ और १६ मई ८९ को महबूब कालेज सिकदराबाद आवरण मे मनाया गया जिसका उदघाटन श्री स्वामी आनद बोध सरस्वती जी अध्यक्ष सार्वदशिक सभा ने किया। अपने उदघाटन भाषण मे १८५७-५८ की 'पहली जग आजादी मे स्वामी दयानन्द जी के पात्र का वर्णन करते उन्होने निम्न उदगार व्यक्त किया

कलनल आर्काट और माडम ब्लावास्टकी के आग्रह पर स्वामी दयानन्द जी ने अपनी सक्षिप्त आत्म कथा लिखी थी जिसमे १८५६-६० के उनकी जीवन की घटनाओ का कही जिकर नही पाया जाता। इस काल मे स्वामी जी ३५ वर्ष के रुद्र ब्रह्मचारी थे और अपने गुरु विरजानन्द जी की प्ररणा मे भारतीय प्रथम स्वतन्त्रता सग्राम के सेनानी श्री नाना साहब पेशवा झासी लक्ष्मी बाई तान्या टोपे को मार्गदर्शन करते रहे। तदनन्तर भी स्वामी दयानन्द जी के सैनिको ने आजादी की लडाई को जारी रखा और भारत को स्वतन्त्र करवाने मे अधिक योगदान उन का रहा।

१९३८-३९ मे आर्यों ने सत्याग्रह, निजाम हैदराबाद के खिलाफ चलाया था और उस के पश्चात् हैदराबाद का भारत मे विलय करने तक आत्मोत्सर्ग की भावना से सार्वदशिक सभा के वरिष्ठ नेता श्री प० वन्देमातरम रामचन्द्र राव जी द्वारा इस लडाई मे यश दिलाने मे उन के

(शेष पष्ठ ८ पर)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ : अंक ३१ रविवार ११ जून १९८९ ज्येष्ठ सम्वत २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द—१६५ सृष्टि सवत १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश मे ५० पौंड १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० वेदव्यास निर्वाचित

आय प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग नई दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन रविवार २८ मई १९८९ को प्रात १० ३० से आरम्भ हुआ। अधिवेशन मे पजाब, हरियाणा हिमाचल प्रदेश चण्डीगढ, बिहार, उडीसा मध्य प्रदेश दिल्ली तथा अन्य प्रदेशो से लगभग ४०० प्रतिनिधि शामिल हुए। सर्वप्रथम सभा मन्त्री ने गतवर्ष देहावसान हुए व्यक्तियो के नाम पढकर सुनाये और एक मिनट का मौन धारण करके उन्हे श्रद्धाजलि दी।

सभा मन्त्री ने लगभग २५० पृष्ठ की वार्षिक रिपोर्ट जो कि अलग से प्रकाशित की गई थी पढकर सुनाई। इस वर्ष लगभग ४० प्रतिनिधियो ने आर्यसमाज की प्रगति के बारे मे विचार रखे और भविष्य मे वेद प्रचार कैसे बढाया जाये सुझाव दिये।

इस वर्ष बिहार मे जो भूकम्प आया था और पजाब मे बाढ आई थी उस उपलक्ष्य मे सभा ने जो राहत केन्द्र खोले थे उसकी जानकारी सभा मन्त्री द्वारा दी गई जिसकी सभी ने भूरि भूरि प्रशसा की।

वर्ष १९८९ ९० के लिए प्रो० वेद व्यास जी को सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया और उन्हे अधिकार दिया कि वे सभा के अन्य अधिकारियो एव अन्तरग सदस्य को स्वय मनोनीत करे।

पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा का अधिवेशन एवं निर्वाचन

जालन्धर ८ मई आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का वार्षिक अधिवेशन रविवार ७ मई को जालन्धर में हुआ। इसमे १५८ प्रतिनिधियो ने जो सारे पजाब मे आए थे भाग लिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती विशेष तौर पर पजाब के आर्यसमाजियो का मार्ग दर्शन करने आए थे। इस सभा की वार्षिक रिपोर्ट बजट स्वीकार हो जाने के पश्चात पजाब की वर्तमान स्थिति देश के भिन्न-भिन्न प्रान्तो मे दहेज के प्रश्न पर लडकियों की हत्याओ और शराब के बढते हुए प्रयोग पर भी चिन्ता प्रकट की गई और भारत सरकार से अनुरोध किया गया कि वह पजाब समस्या का समाधान ढूढने के लिए तुरन्त कोई पग उठाए। श्री स्वामी आनन्द बोध जी ने पजाब के आर्यसमाजियो से अनुरोध किया कि वह वर्तमान परिस्थितियो को सामने रखते हुए अपने सगठन को शक्तिशाली बनाए ताकि कल को जो भी नए सकट हमारे सामने आए हम सगठित रूप से उनका मुकाबला कर सके। स्वामी जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के सदस्यो को परामर्श दिया कि वह अपना चुनाव सर्वसम्मति से करे। ताकि पजाब में आर्यसमाज एक सुदृढ सगठित और शक्तिशाली सस्था बन सके।

इस बार सभा के नए अधिकारियो का चुनाव किया गया। श्री स्वामी आनन्द बोध जी के परामर्श के अनुसार श्री योगेन्द्रपाल सेठ ने श्री वीरेन्द्र का नाम प्रधान पद के लिए पेश किया और श्री चौधरी ऋषिपाल सिह एडवोकेट ने इसका समर्थन किया और भी कई सदस्यो ने उसका समर्थन किया क्योकि और कोई नाम पेश न हुआ। इस लिए श्री वीरेन्द्र निर्विरोध ११वी बार आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान निर्वाचित हुए। एक प्रस्ताव के द्वारा श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती और श्री वीरेन्द्र को यह अधिकार दिया गया कि वह बाकी के अधिकारियो और अन्तरग सभा के सदस्यो को मनोनीत कर दे। इस पर लुधियाना के श्री रणवीर भाटिया जी को महामन्त्री और जालन्धर के श्री डा० के० के० पमरीचा को कोषाध्यक्ष निर्वाचित किया गया। बाकी के अधिकारियो और अन्तरग सभा के सदस्यो के नामो की भी घोषणा कर दी गई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती ने घोषणा की कि पजाब की स्थिति पर जो प्रस्ताव इस सभा मे पारित किया गया है इसका समर्थन २१ मई को पजाब दिवस मना कर सारे देश की आर्यसमाज करेगी और प्रधानमन्त्री एव भारत सरकार के दूसरे मन्त्रियो तक भी यह प्रस्ताव पहुचाया जाएगा।

प्रधान सम्पादक —सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

अहिंसयैव भूताना कार्य श्रेयोऽनुशासनम।
वाक चैव मधुरा श्लक्ष्णा प्रयोज्या धर्ममिच्छता ॥
यस्य वाङ्मनसी शुद्ध सम्यग्गुप्ते च सर्वदा।
स वै सर्वमवाप्नोति वेदान्तोपगत फलम ॥

—मनु० २।१५९ १ ०

जिन मनुष्यो के वाणी और मन पवित्र और उनके वश मे भी है उन्ही को वेदात का असल फल मिलता है। यथार्थ ज्ञान के लिए क्यो ऋषि और महात्मा हर समय और हर देश मे व्याकुल हो भटकते फिरते रहे है इसलिए कि ससार मे चारो ओर दुःख और हाहाकार फैला हुआ है। उसका दूर करने का रास्ता सच्चे ज्ञान की प्राप्ति से मिलता है। ऋषि कहते है ज्ञान ही मुक्ति का साधन है परन्तु उस ज्ञान तक पहुचने के लिए जिन साधनो की आवश्यकता है उन पर आचरण किए बिना मुक्ति की ओर एक पग उठाना भी असम्भव है वे साधन क्या हैं? उनक [illegible] मनु जी ने ऊपर श्लोक मे वर्णन कर दिया है प्रत्येक वासना का उत्पत्ति स्थान मन है। जब तक मन के अन्दर कोई वासना उत्पन्न नही होती तब तक उसके बाहर जाने का कोई मार्ग भी नही होता। मन ही सारी क्रिया का चलाता है इसलिए इन्द्रिया उसी रंग मे रंगी जाती हैं जिस से कि मन प्रभावित होता है। इसलिए सबसे प्रथम आवश्यक है कि मन को वश मे किया जाय। इस विषय पर आचरण करने हुए जिस न मनुष्य के [illegible] [illegible] रिक सामाजिक [illegible] प्राप्त किया है उसका स्पष्ट कारण यह है मन ही उस का प्रेरक हुआ दिखाई देता है। परन्तु केवल मन को वश मे करने से मनुष्य अपने असली उद्देश्य की ओर नही चल सकता। मन के वश मे होने का निश्चित कारण दुःख की निवृत्ति नही है और जब तक दुःख दूर न हो परमानन्द की प्राप्ति भी नही हो सकती। जिस तरह प्राकृतिक जगत मे देखने मे आता है कि जब तक अशुद्ध वायु के अग्नि के द्वारा बिलकुल निकाला नही जाता तब तक उसके स्थान मे शुद्ध वायु प्रवेश ही करती इसी तरह जब तक कि मन के अन्दर से दुर्वासनाओ को निकालने मे सफलता नही होती तब तक उनका स्थान शुद्ध सकल्प नही ले सकते। ससार का इतिहास दृष्टान्तो से भरा हुआ है जिन के पढने से पता लगता है कि मन पर काबू पाने वालो ने किसी समय विशेष मनुष्यो के समुदाय का नाश कर दिया है। जिन मनुष्यो ने अपने मन के विचारो को अपने समीप के अजीजो तक प्रकट नही होने दिया उनकी बाह्य सफलता ने जगत को अचम्भे मे डाल दिया है किन्तु उन को अपने अन्दर किस प्रकार असफलता हुई और अन्त मे न केवल दूसरे मनुष्यो के लिए ही बल्कि स्वय अपने लिए भी उन के कर्म किस प्रकार दुःखदायी सिद्ध हुए इसके बतलाने का पढ लिखा को आव श्यकता नही है तब आवश्यक है कि मन को वश मे करने के पश्चात एक मंजिल आगे चला जाये और उस वशीभूत मन को शुद्ध करने का प्रयत्न किया जाय। मन की शुद्धि से ही सदाचार [illegible] शुद्धि होता है जिन बुरी वासनाओ को पहले नीतिमान पुरुष अपनी शान्ति के बल से दबाकर अन्दर [illegible] करते थे ताकि उनका काम कहा रहे निदित न करे [illegible] [illegible] [illegible] मन मे [illegible] [illegible] हो [illegible] मन के अन्दर अशुद्ध वासनाए [illegible] [illegible] रहते जब मनुष्य अपने अन्दर शान्ति का राज्य कायम करने मे सफल होता है। किन्तु बाहर अशान्ति बनी ही रहे तो फिर आत्मा की शान्ति मे विघ्न पड़ने का डर है। इसलिए जिस प्रकार मन को वश मे किया था उसी प्रकार वाणी को वश मे करना चाहिए। मन के वश मे आ जाने पर भी जिस प्रकार उसको शुद्ध किए बिना आन्तरिक शान्ति नही होती उसी प्रकार वाणी के वश मे होने पर भी जब तक उसे शुद्ध न किया जाये तब तक बाह्य ससार के अन्दर शान्ति नही फैल सकती। वाणी के वश मे आ जाने से सम्भव है कि मनुष्य दूसरो को धोखा देकर कुछ समय के लिए उन को वश मे कर ले परन्तु जब बेबसी की अवस्था मे वाणी काम करेगी उस समय चारो ओर अपवित्र प्रभाव फैलाकर ससार को सख्त अशान्ति मे डालने का कारण होगे। इसलिए वाणी को वश मे करने के साथ ही उसकी शुद्धि का प्रयत्न भी करना चाहिए जिससे जब मनुष्य बोले निडर होकर अपने विचारो का प्रकाश कर सके। प्रश्न फिर भी यही बना रहता है कि मन को किस प्रकार वश मे करे और उसे किस प्रकार शुद्ध करे? दिन रात ससार के कल्याण की इच्छा मन मे उठाना मन की शुद्धि का साधन है और इसी से अन्त मे मन वश मे आ जाता है। शुद्ध मन बिना किसी प्रयत्न के स्वयमेव वश मे आ जाता है और यह शुद्धि अहिंसा व्रत पालने से प्राप्त होती है। फिर वाणी को कैसे वश मे करे? मनु जी बतलाते हैं कि शब्द का उच्चारण स्पष्ट करो। जिनका उच्चारण स्पष्ट नही उन्हें प्रत्येक अपवित्र शब्द के प्रयोग का स्वभाव शनै शनै हो जाता है। स्पष्ट उच्चारण करने वाला मनुष्य समझता है कि वह क्या बोल रहा है और इसलिए अपने उत्तरदायित्व को समझकर बोलता है तब उसकी वाणी स्वयमेव मीठी हो जाती है और इसका यही परिणाम वाणी की शुद्धि होती है।

प्रिय पाठकगण! तुम किसी भाषा के जानने वाले हो किन्तु उस का स्पष्ट उच्चारण करना सीखो। तुम्हारे शब्द सन्देहजनक और भ्रम मे डालने वाले न हो। तब स्वयमेव तुम्हारी वाणी मे शुद्धि प्रवेश करेगी परन्तु यह असम्भव है जब तक कि मन शुद्ध न हो। मन को शुद्ध करने वाले बड़े बड़े नीतिमानो! तुम्हारा मन काबू करना व्यर्थ है जब तक कि तुम उसे सत्य से मांजकर शुद्ध नही करते। मन सत्येन शुध्यति कैसा अभिप्रायपूर्ण वाक्य है! जब तक तुम्हारे विचार सत्य से मंजे हुए नही होते तब तक मन की शुद्धि कठिन है और मन की शुद्धि के बिना वाणी कैसे शुद्ध हो सकती है और बगैर शुद्धि के वाणी वश मे कैसे आ सकती है? इसलिए आओ! हम सब मिलकर वाणी की पवित्रता की नींव डाले और एक दूसरे के मन को शुद्ध होने के योग्य बनाते हुए आचार की नींव डाले ताकि चेतन जगत के अन्दर शान्ति का राज्य आ जाए जिस से जड़ जगत स्वयमेव शान्त होकर मुक्ति के मार्ग मे रुकावट सिद्ध न हो।

शब्दार्थ—(धर्ममिच्छता) धर्म के अभिलाषी पुरुष को (भूताना) जीवो का प्राणियो का (श्रेय अनु

(शेष पृष्ठ ५ पर)

जब जब हम ने आह्वान किया

अग्ने स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहे सोम स्वस्ति भुवनस्य यस्पति।
बृहस्पति सर्वगण स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु न ॥

[illegible] सुजान किया ना समझो सब अज्ञान किया।
जब जब हम ने आह्वान किया तब तब तुमने कल्याण किया।
वायु बुलाया हम ने तुम को
सोम सृजक शुभचन्द्र किरन को
ब्रह्माण्ड भुवन के प्रतिपालक
[illegible] प्यारे मनरञ्जन किरन को।
जिस गुण का गुणगान किया तब सद्गुण का प्रतिदान दिया।
जब जब हम ने आह्वान किया तब तब तुम ने कल्याण किया ॥
रवि वायु सोम की बाँह गही
इन की उपयोगी थाह गही
आचार्य बृहस्पति से सुन्दर
कुछ शिक्षा लेकर राह गही।
गुरु ने हम को विज्ञान दिया तब रवि ने भी सुखदान किया।
जब जब हम ने आह्वान किया तब तब तुम ने कल्याण किया ॥
प्रिय ज्ञान बान सब श्रेष्ठ मनुज
सब तप पूत आदित्य मनुज
अग्रज उपदेश सुना जाय
उत्तम सुपन्थ पा जाय अनुज।
जिस ने ब्रह्माण्ड महान किया उस का हम ने आह्वान किया।
जब जब हम ने आह्वान किया तब तब तुम ने कल्याण किया ॥

—देवनारायण भारद्वाज

ओ३म्
आर्य सन्देश

महिला संगठनों का कर्तव्य

इस लेख के शीर्षक से ऐसा लगता है कि कोई बात केवल महिला सगठनो को कही जा रही है। परन्तु मेरी बात महिला सगठनो के अतिरिक्त उन सभी सगठनो के लिए है जो स्त्री जाति का सम्मान चाहते हैं। आर्यसमाज विशेष रूप से —यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता का का उद्घोष करता आया है। आर्यसमाज के नेताओ ने कई आन्दोलन स्त्री जाति के सम्मान की रक्षा के लिए चलाये भी हैं। दहेज के लिए बहू को जला देना अथवा भ्रूण हत्या जैसे अत्याचारो के विरुद्ध भी आर्यसमाज ने आवाज उठाई। परन्तु पिछले दिनो पजाब की महिला आई० ए० एस० आफिसर रूपन दिओल बजाज ने पजाब पुलिस के महानिदेशक के० पी० एस० गिल के खिलाफ जो याचिका दी थी, उसे उच्च न्यायालय ने रद्द कर दिया है। श्रीमती बजाज के पति श्री भरतराज बजाज ने भी स्त्रियो के साथ छेड़खानी का एक मुकद्दमा दर्ज किया था, उसे भी रद्द कर दिया गया है। यह दोनो अधिकारी वरिष्ठ आई० ए० एस० अफसर हैं। यदि इन लोगो की शिकायत पर कोई कार्यवाही नही होती और माननीय न्यायाधीश यह कहते हैं कि महिलाओ के साथ छेड़खानी का मामला बहुत छोटा है तो इससे ऐसा लगता है कि यदि साधारण छेड़खानी रोज होती रहे। टी० टी० सी० की बसो मे रोज की छेड़खानी होनी रहे अथवा अन्य प्रकार की कोई छेड़खानी होती रहे तो न्यायालय कभी कोई कार्यवाही हो नही करेगा। माननीय न्यायाधीश महोदय ने यह भी कहा कि इस तरह के छोटे मुद्दे पर मुकद्दमा चलाना कानून के साथ खिलवाड होगा। यह एक बडी विडम्बना है। न्यायाधीश महोदय शायद चाहते हैं कि स्त्री जाति के खिलाफ कोई बडा कारगुजारी वाला मामला हो जाये तभी मुकद्दमा चलाया जा सकता है। नवम्बर १९८८ मे गृह सचिव के घर पर एक पार्टी थी जिसमे श्री गिल ने नशे मे धुत होकर श्रीमती बजाज को बारबार छडा था। वे उसके बार बार मना करने के बावजूद भी उसे बार-बार छेडते रहे थे। ऐसा लगता है कि सरकार शायद शराब पीना और औरतो के साथ छेडछाड करना पुलिस अफसरो के सरकारी कर्तव्यो का ही हिस्सा मानती है। इस मामले को छोटा समझा जाना नैतिकता की दृष्टि से बहुत बडी बात होगी। इस तरह तो लोगो को महिलाओ के साथ छेडछाड करने की छूट ही मिल जाएगी। जिस पार्टी मे यह गिल बजाज काण्ड हुआ था, उसमे शिष्ट समाज के बडे बडे लोग थे। वहा कानून व्यवस्था के लिए जिम्मेदार लोग थे। वहा समाज के पहरेदार पत्रकार भी मौजूद थे। और स्वयसेवी सगठनो के उच्च अधिकारी भी मौजूद थे। पर अचम्भा यह है कि श्रीमती बजाज के हक मे कोई गवाही देने के लिए तैयार नही हुआ। उन सबका मानना तो यही था कि पार्टियो मे तो यह सब चलता ही है। यह बडी अजीब बात है कि एक तरफ तो हम गिल को वीर पुरुष कहे, क्योकि वे आतकवादियो के खिलाफ लडाई लड रहे हैं और दूसरी ओर उन्हे स्त्रियो के साथ खिलवाड करने की इजाजत दे। क्या स्त्री जाति का अपमान वीरोचित कर्म है!

आर्यसमाज साकेत का १०वा स्थापना दिवस तथा आर्यसमाज का ११४वां स्थापना दिवस

१४ मई १९८९ को आर्यसमाज साकेत तथा दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्त्वावधान मे आर्यसमाज साकेत का दसवा स्थापना दिवस तथा आर्यसमाज का ११४ वा स्थापना दिवस ८-३० बजे से प्रात से १-३० बजे मध्याह्नोत्तर तक समारोह पूर्वक मनाया गया।

अपनी स्थापना के दस वर्ष अत्यन्त सफलता से पूर्ण करने के अवसर पर आर्यसमाज साकेत मे १२ मई से १४ मई तक दीपमाला रही तथा १४ मई को बहुत विशाल शामियाने में गरिमापूर्वक तथा उत्साही और बडी सख्या में उपस्थित श्रोताओ ने अपने नेताओ के प्रेरणादायक प्रवचनो को सुना।

८ ३० प्रात से १० ०० बजे तक आर्य समाज साकेत के साप्ताहिक सत्सग मे यथा पूर्व श्रद्धापूर्वक भाग लेने के पश्चात प्रोफसर शेर सिंह जी ने, जो उस दिन के समारोह के अध्यक्ष थे, आर्यसमाज साकेत के प्रागण मे ध्वजारोहण किया तथा अपने सक्षिप्त उद्बोधन मे 'ओ३म' ध्वज को मानवमात्र का ध्वज बताया।

इस अवसर पर आर्यसमाज साकेत की ओर से एक स्मारिका निकाली गई जिसका विमोचन प्रोफेसर शेर सिंह जी द्वारा किया गया। यह स्मारिका बडी आकर्षक है और इसमे आर्यसमाज साकेत का सघर्षपूर्ण इतिहास और वर्तमान गतिविधिया तथा अन्य विवरण दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित जानकारी से भरपूर लेखो का भी प्रकाशन किया है

१ भारत का सर्वांगीण विकास ऋषि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित मार्ग से ही —प० शिवकुमार शास्त्री
२ आर्यसमाज धर्म और विज्ञान का सगम राजेन्द्र पाल गुप्त
३ आर्यसमाज की उपलब्धिया —सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित पुस्तिका से साभार
४ इतना तो जाने —वेदकुमार वेदालकार
५ यज्ञमय जीवन की सफलता — श्रीमती लता बसल
६ पाप पुण्य मीमासा —प० हरिदेव महोपदेशक
७ Essence of Vegetarianism —L R Kataria
८ Ageing and Age care —Arjan Dev
९ Self motivation —K L Wahi
१० Dowry System is a curse —L R Kataria

इस स्मारिका का कुशल सम्पादन आर्यसमाज साकेत के उपप्रधान डा० पूर्णसिंह डबास द्वारा किया गया।

इस अवसर पर कार्यवाही के समापन के पश्चात सभी श्रोताओ ने प्रेमपूर्वक प्रीतिभोज मे भाग लिया। पुरा कार्यक्रम हर्षोल्लास के वातावरण मे सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर विद्वान वक्ताओ ने जो प्रवचन दिए उनका साराश इस प्रकार है।

प० शिवकुमार शास्त्री—आजकल देश मे विदेशी सस्कृति हावी होती जा रही है। इस का मुकाबला करने के लिए आर्य सभ्यता स्वदेश प्रेम और दृढ विश्वास की आवश्यकता है। यह काम केवल आर्यसमाज ही कर सकता है।

प्रोफेसर रत्न सिंह—आर्यसमाज सत्य पर आधारित सार्वभौम सस्था है। वैदिक सिद्धान्त सर्वोच्च तथा तर्क सम्मत हैं वेदो का प्रचार प्रयत्न पूर्वक और पूरे बल के साथ भौगोलिक सीमा का अनदेखा कर के किया जाना चाहिए।

श्रीमती प्रभात शोभा—आर्यसमाज सस्कारित व्यक्तित्वो की निर्माण शाला है इसे यह भूमिका शिक्षा के प्रसार तथा वेदज्ञान के प्रचार द्वारा सशक्त रूप से निभानी है।

प० यशपाल शास्त्री—पक्की आर्यसमाजो के साथ साथ पक्के आर्य समाजियो का भी निर्माण करके वैचारिक क्रान्ति लाएँ।

आचार्य रविदत्त गौतम—युवा शक्ति के निर्माण व्रतशील व्यक्तियों के सगठन तथा चरित्र निर्माण द्वारा ही सुख और शान्ति का प्रसार सम्भव है।

प्रो० शेर सिंह जी (अध्यक्षीय भाषण) महर्षि दयानन्द युगपुरुष थे। उन्होने विज्ञान पर आधारित धर्म की पुन स्थापना की। दूषित पर्यावरण तथा परमाणु अस्त्र आज की गम्भीरतम समस्याएँ हैं। समाज मे जन-कल्याण के कार्यक्रमो पर धन व्यय करने की चेतना जाग्रत की जानी चाहिए। देश मे साम्प्रदायिकता फैलाने के विदेशी षडयन्त्र का प्रतिरोध आर्यसमाज द्वारा ही सम्भव है।

अन्त मे आर्यसमाज साकेत के प्रधान श्री लखीराम कटारिया जो दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के भी प्रधान है ने सब वक्ताओ तथा श्रोताओ का हार्दिक धन्यवाद किया। उत्सव का सयोजन मण्डल के महामन्त्री श्री रामसरन दास आर्य ने किया।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आयोजित संगोष्ठी में समापन भाषण–

वेद मानव-जीवन के शाश्वत प्रेरणा स्रोत

प्रो० शेरसिह
अध्यक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ

'ज्ञान और कर्म' मानव जीवन के साथ जुडे दो अनिवार्य तत्त्व हैं। जन्म होने के थोडे समय बाद ही मनुष्य देहधर्म और आत्म तत्त्वो से समन्वित एक जटिल यात्रा की ओर बढने लगता है। यद्यपि वाणी जीवन की इस जटिलता को पूर्णरूपेण व्यक्त करने मे असमर्थ है, तथापि जीवित देह और मृत देह का यथार्थ एक ऐसा स्थूल सत्य है कि सामान्य बुद्धि का व्यक्ति भी देहातीत "चेतन' तत्त्व की सत्ता को स्वीकार करने के लिए बाध्य है। इसके साथ ही जुड जाता है सयोग और वियोगादि की अनुभूति मे आप्लावित भाव-लोक" जो 'चेतन' और जड जगत के बीच झूलते मनुष्य के जीवन की दुविधा को उजागर करता है। दु ख-सुख के घात प्रत्याघात के गर्भ मे ही जिज्ञासा जन्म लेती है। और 'विश्वास' नही तो सम्भावना कि इस जन्म-मरण के दुश्चक्र से मुक्त होकर अमृतत्व प्राप्त किया जा सकता है। इस सत्य का सर्वप्रथम उद्घोष किया वेदो ने। वेदो के अपौरुषेय ज्ञान-ग्रन्थ होने के विषय मे चाहे कितना भी विवाद हो, मनुष्य जाति के वे प्राचीनतम ग्रन्थ हैं, इस विषय मे कोई विवाद या सन्देह नही। वेद ने कहा—

कुर्वन्नेवेह कर्माणि
जिजीविषेच्छत समा।
एव त्वयि नान्यथेतोऽस्ति
न कर्म लिप्यते नरे॥

सृष्टि के रचयिता और नियन्ता ईश्वर ने मनुष्य को यह विकल्प दिया कि वह चाहे तो इहलौकिक आवागमन मे उलझा रहे और चाहे तो शाश्वत आत्मस्वरूप को पाकर मुक्त होकर आनन्द मे रहे। पुरुषार्थ की महत्ता इसी मे है। एक दुनिया सुखो की ओर भी है क्षणभगुर सुखो की। इन सुखो मे दोष यही है कि ये नित्य नही। और जब इनसे हमे वचित होना पडता है ये उतना ही दु ख भी देते हैं। परन्तु पुरुषार्थ कर्मठता के बिना ये भी प्राप्त नही होते। इसलिए वेद ने कहा कि मनुष्य चाहे क्षणिक सुखो की दुनिया मे खो जाना चाहे या परमानन्द की चाह से साधना करे, अकर्मण्यता के लिए जीवन मे कोई स्थान नही है। वेद मनुष्य की प्रेरणा का शाश्वत स्रोत हैं और रहेगे। मनुष्य की तीन मूल समस्याओ का निराकरण वेद ने ही किया—

१ कर्म करते हुए अलिप्त रह कर मोक्ष साधना सम्भव है।

२ जीवन की सफलता के लिए विज्ञान (इहलौकिक उपयोगी विद्याए) एव ज्ञान (पारलौकिक सिद्धिया) दोनो के समन्वय से जीना आवश्यक है। केवल इहलौकिक उपयोग ज्ञान मे सीमित रहकर जीवन चलाना अन्धेरे मे भटकना है, और केवल पारलौकिक ज्ञान तथा सम्पूर्ण त्याग के रास्ते पर चलना उससे भी अधिक अन्धेरे मे भटकना है। दोनो के समन्वय से जीना आवश्यक है। वेद के अनुसार 'विद्या और अविद्या' के समन्वय से।

३ यदि मनुष्य केवल वही कर्म करे जिससे उसके स्वार्थ की पूर्ति हो तो मानो वह अन्धेरे मे छलाग लगा रहा है और यदि वह अपनी पूरी शक्ति उन कार्यों मे ही लगाए जिस से समाज का तो हित होता है, परन्तु उसके स्वय के जीवन यापन के लिए वे लेशमात्र भी सहायक नही तो यह मनुष्य को और भी घने अन्धेरे मे धकेल देगा। 'सम्भूति' तथा असम्भूति समाज तथा व्यक्ति दोनो का ही समन्वित ढग से हित साधन हो तभी जीवन सफल कहा जाएगा।

वैदिक जीवन दर्शन मे 'विद्या' और अविद्या सम्भूति और असम्भूति के समन्वय को जीवन की सफलता के लिए अति आवश्यक बताया गया है। राष्ट्र समाज, व्यक्ति और प्रकृति के परस्पर सम्बन्धो मे लेकर भाषा विज्ञान, ज्यमिति और ज्योतिष, गणित, वास्तु शिल्प शल्य चिकित्सा, आयुर्विज्ञान, वमानिकी आदि सत्त्व, रज और तम इन तीन गुणो से समन्वित सृष्टि इन से प्रभावित मानव स्वभाव की वृत्ति विक्षेपता विवेक, स्वभाव और रुचि के आधार पर मानव समाज का वर्गीकरण सामूहिक हितो के लिए यज्ञ-भावना से अनुशासित होकर जीने के लिए व्रत निष्ठा आदि सभी विषयो की वेद ने बेबाक और तर्कसगत विवेचना की है।

परमात्मा द्वारा विरचित इस सृष्टि के दिव्य सन्देश लेना अहर्निश चरणशील सूर्य को पुरोहित की सज्ञा देना, शान्ति स्थापना के लिए अभय दीक्षा, विश्वमैत्री और विश्व देवताओ के शान्तिपूर्ण साहचर्य की कामना इत्यादि अनेक मानव जीवन के कल्याणकारी सन्देशो से वेद के सूक्त भरे पडे हैं। सभ्य समाज की अवधारणा सर्वप्रथम वेदो ने दी। राष्ट्र वन्दना के प्रसिद्ध मन्त्र "आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्" मे वेदो ने जब "सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्" कहा तो इस मे यह भी कह दिया कि उच्छृङ्खल और उद्दाम वासनाओ की अवस्था यौवन है। जिस समाज के युवक वीर भावना से ओत-प्रोत हृदय वाले होकर भी विनम्र और सभा के योग्य शिष्ट व्यवहार सम्पन्न होगे। वही समाज सुख-समृद्धि का सुपात्र अधिकारी होगा। वेद का एक-एक मन्त्र जीवन के सूत्र जैसा है।

वेदो की इसी महत्ता को हृदयगम करके महर्षि दयानन्द ने मानवजाति के कल्याण को लक्ष्य बनाकर वेदो के प्रचार का बीडा उठाया। वेद सब सत्यविद्याओ का पुस्तक है। अत वेद का पढना-पढाना, सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है। यह आदेश हमे गुरुवर महर्षि दयानन्द ने दिया। वेदो के प्रचार प्रसार मे प्रयत्नशील होने पर भी वेदो द्वारा दर्शाए मार्ग पर चलने मे कहा तक नही पहुच पाये। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद पश्चिम की भोगवादी सस्कृति का जो आक्रमण हुआ। हमे यह मानना चाहिए कि यह एक बार होना ही था। जब तक पात्र भरा न हो तब तक सही या गलत कुछ भी उसमे भरेगा ही। अपने पतन और पराधीनता के कारण हमारे जीवन मे जो रिक्तता आ गई थी उसको ठोस चारित्रिक मूल्यो से भरने की कोशिश महर्षि ने बहुत की, लेकिन हमारा ठोस भवन बनने से पहले ही भौतिक और औद्योगिक उन्नति की बाढ ने हमे घेर लिया, इस प्रवाह का वेग इतना प्रबल था और अब भी है कि बडे-बडे महारथी भी इस आक्रमण के सम्मुख सभल नही पाये। सौभाग्य हमारा यह है कि वैदिक सस्कृति के पुनर्निर्माण की जो नीव युग निर्माता महर्षि ने रखी थी और विश्व कल्याण के दिव्य नाटक का जो रग मच उन्होंने खडा किया था वह अब भी शेष है। ऋषिवर का मानस पुत्र होने के नाते हमारा यह दायित्व बनता है कि वैदिक मूल्यो के प्रचार प्रसार द्वारा मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त करे। प्राचीन ऋषियो द्वारा सचित ईश्वरीय ज्ञान रूपी दिव्य भोजन का रसास्वादन महर्षि ने हमे इसलिए कराया था ताकि उससे अपनी आत्मा को स्वस्थ और पुष्ट बनाकर हम सारे विश्व को सुख की राह पर ले चलें।

विश्व मे आज जैसी परिस्थिति व्याप्त है। उसे देखते हुए तो वैदिक मार्ग पर चलने की आवश्यकता और महत्व बढा ही है, घटा नही। नव-प्राप्त धन सम्पदा और तकनीकी प्रगति के मद मे सम्प्रदायवाद और कठमुल्लापन फिर से सिर उठा रहे हैं। लेकिन हम किसी भी हालत मे इस शुभ सकेत को नजरअदाज न करे कि हर सम्प्रदाय मे आज ऐसे उदार चरित महामना व्यक्तियो का अस्तित्व भी है जो अपने अपने सम्प्रदायों के धर्मवाक्यो का सकीर्णता से ऊपर उठकर नया अर्थ प्रतिपादित करने के लिए यत्नशील हैं। उत्साहवर्धक बात यह है कि जब भी ये नये अर्थ सामने आते हैं तो वैदिक सस्कृति के अनुवर्तक प्रतीत होते है। लगता है बिना दयानन्द और प्राचीन ऋषि-मुनियो का नाम लिये सब इधर ही बढे चले आ रहे हैं। उदारचरित महामना व्यक्तियो वैज्ञानिक चिन्तन करने वाले वैज्ञानिको तथा मनीषियो को इधर आना ही था वेदो से प्रेरित चिन्तन की निरन्तर बहती धारा मे शामिल होने पर उनका हार्दिक स्वागत। वेदो मे वर्णित मानवीय मूल्यो को अगीकार करते हुए, भूमि माता के सभी पुत्रो पुत्रियो को अज्ञान, अन्याय और अभाव से मुक्ति दिलाने तथा उन्हें गरिमा पूर्ण जीवन जीने के लिए सभी जागरूक विश्व मानुष मिलकर सुख और शान्ति के लिए वातावरण का निर्माण करे।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

४५००-७३०० रुपये के वेतनमान मे कुलसचिव पद हेतु साधारण कागज पर ६ प्रतियो मे नवीनतम पासपोर्ट साइज फोटो के साथ आवेदन-पत्र आमन्त्रित किये जाते हैं। आवेदन-पत्र के साथ न्यू बेंक आफ इण्डिया, गुरुकुल कागड़ी हरिद्वार का वित्त अधिकारी गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के नाम ३०/- रु० का बेंक ड्राफ्ट सलग्न होना चाहिए तथा आवेदन पत्र समस्त प्रमाणपत्रो एव सस्तुतियो सहित प्रो० बी० सी० सिन्हा, विभागाध्यक्ष प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के पास २० जुलाई १९८९ तक पहुच जाने चाहिए।

उक्त पद की योग्यताएँ निम्नवत हैं :

१ स्नातकोत्तर परीक्षा मे ५५% अक अथवा इसके समकक्ष।

२ कम से कम १५ वर्ष का प्रवक्ता/रीडर पद का अनुभव। जिसमे से ८ वर्ष रीडर पद एव शैक्षणिक सस्था का प्रशासनिक अनुभव।

या

किसी शोध सस्थान या उच्च शिक्षा अध्ययन केन्द्र मे तुलनात्मक अनुभव।

या

१५ वर्ष का प्रशासनिक अनुभव जिसमे से ८ वर्ष उप-कुलसचिव या इसके समकक्ष पद का कार्यानुभव।

टिप्पणी :-

१ महिलाए आवेदन न करे।

२ असाधारण अभ्यर्थी को योग्यता मे शिथिलता प्रदान की जा सकती है।

३ योग्य अभ्यर्थी को उच्चतर वेतन वृद्धिया दी जा सकती हैं।

४ अभ्यर्थियो को आवेदन पत्र मे दो ऐसे व्यक्तियो के नाम एव पते सकेत सूत्र के रूप में देने होगे जो उनसे सम्बन्धित न हो।

५. हिन्दी का ज्ञान आवश्यक है।

६. केवल शाकाहारी, धूम्रपान न करने वाला तथा नशीली एव मादक पदार्थों का बहिष्कार करने वाले ही आवेदन करे।

७. अभ्यर्थियो का आर्यसमाज के नियमो मे विश्वास होना चाहिए तथा गुरुकुल शिक्षा पद्धति का पालन करने वाला होना चाहिए।

—रामप्रसाद वेदालंकार
कुलपति

(पृष्ठ १ का शेष)

पंजाब सभा के नवनिर्वाचित अधिकारी

१ श्री वीरेन्द्र जी सभा प्रधान, दैनिक वीर प्रताप नेहरू गार्डन रोड जालन्धर
२ श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा—वरिष्ठ उपप्रधान, एफ २३२ रेलवे कालोनी—३, जालन्धर
३ श्री योगेन्द्रपाल सेठ उपप्रधान, १८ विक्रमपुरा, जालन्धर
४ श्री हरबस लाल जी शर्मा उपप्रधान, ४०६-एल माडल टाऊन, जालन्धर
५ श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न उपप्रधान, आजाद सर्जीकल भार्गव नगर, जालन्धर
६ श्री रणवीर जी भाटिया सभा महामन्त्री, लिल्ली सिलाई मशीन, लक्कड बाजार, लुधियाना
७ श्री चौधरी ऋषिपाल सिह जी एडवोकेट सभामन्त्री २—अकुश चौक, नई कचहरी, जालन्धर
८ श्री अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट सभामन्त्री, १—कूल रोड निकट रेडियो स्टेशन, जालन्धर
९ श्री ओम प्रकाश जी पासी सभामन्त्री, बी—II/६५९, माली गज, लुधियाना
१० डाक्टर के० के० पसरीचा सभा कोषाध्यक्ष, पसरीचा हस्पताल, आदर्श नगर जालन्धर
११ श्रीमती कमला आर्या वेद प्रचार अधिष्ठाता ३५० गली सती सूदा, लुधियाना
१२ श्री धर्मप्रकाश दत्त प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद आदर्श बाल विद्यालय बगा रोड नवाशहर दोआबा
१३ श्री बालमुकन्द जी, अधिष्ठाता आर्य वीर दल, डब्ल्यू० एम० ६६, बस्ती गुजा जालन्धर
१४ डाक्टर राम नाथ शर्मा अधिष्ठाता साहित्य विभाग, भण्डारी निवास मजीठा रोड अमृतसर

आर्यसमाज आर्यपुरा, सब्जी मण्डी, दिल्ली द्वारा वेदकथा का आयोजन

आर्यसमाज आर्यपुरा सब्जी मण्डी, दिल्ली-७ के ८९वे वार्षिकोत्सव पर मानव जागृति के लिए चार दिवसीय वेद कथा का आयोजन किया जा रहा है। जिस मे ८ जून ८९ गुरुवार से ११ जून ८९ तक रात्रि मे आर्य जगत के ओजस्वी वक्ता आचार्य रवीन्द्र रवि 'आत्रेय' के वेद प्रवचन होगे। प्रतिदिन प्रात ६.३० बजे से ७.३० बजे तक बृहद-यज्ञ एव वेदोपदेश श्री धर्मेन्द्र पाल शास्त्री एम० ए० एम० फिल० द्वारा कराया जाएगा।

रात्रि ७ ३० बजे से ८ ३० बजे तक भजन, तदुपरान्त आचार्य जी की पीयूष वाणी का आर्य जन पान कर सकेगे।

(पृष्ठ ७ का शेष)

शासनम्) कल्याणकारी शिक्षण (अहिंसयैव) अहिंसा के द्वारा ही, दयाभाव से (कार्यम) करना चाहिए। (चैव) और इस के लिए (मधुरा) मीठी और (श्लक्ष्णा) शुद्ध सुन्दर (वाक् प्रयोक्ष्या) वाणी का प्रयोग करना चाहिए। (यस्य) जिस धार्मिक पुरुष के (वाङ्मनसी) मन और वाणी (शुद्धे) शुद्ध-पवित्र विचार वाले हैं (सर्वदा च सम्यग्गुप्ते) और हमेशा सयम मे रहने वाले है (स वै) वह मनुष्य निश्चय से (सर्व वेदान्तोपगत फलम्) वेदान्त के सारे यथार्थ फल को, मोक्ष को (अवाप्नोति) प्राप्त करता है।

आर्यसन्देश पढ़ें, पढ़ाये

आर्य जगत् के समाचारो व उपयोगी लेखो, अध्यात्म विवेचनो से युक्त, सामयिक चेतावनियो मे जूझने की प्रेरणा देने वाले साप्ताहिक-पत्र "आर्यसन्देश" के ग्राहक बनिये और दूसरो को बनवाइये। साथ ही वर्ष मे अनेको सग्रहणीय विशेषाक नि शुल्क प्राप्त कीजिये।

वार्षिक शुल्क मात्र २५ रुपये, तथा आजीवन शुल्क मात्र २५० रुपये।

आर्य जगत के समाचार

श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में प्रवेश आरम्भ

देश का प्रसिद्ध शिक्षणालय आपका चिर परिचित श्री आर्ष गुरुकुल चित्तौडगढ अरावली की सुन्दर पहाडियो मे गभीरी नदी के तट पर एकात स्थल पर अवस्थित है। शिक्षा यहा सर्वथा नि शुल्क है। सभी प्रान्तो के बालक यहा बिना किसी भेदभाव के शिक्षा ग्रहण कर रहे है। आश्रम प्रणाली यहा की एक उल्लेखनीय एव अनुपम विशेषता लिये हुए है। यहा सुयोग्य एव विद्वान गुरुओ की देख रेख मे बालको का सर्वांगीण विकास मुखरित होता है। वेद, वेदाग, सस्कृत, साहित्य व्याकरण, दर्शन उपनिषद् आदि की पढाई को प्रमुखता दी जाती है।

पहली से आठवी तक यहा सस्कृत विशेष के साथ अर्वाचीन सभी विषय – इगलिश, गणित, विज्ञान सामाजिक ज्ञान हिन्दी आदि विषय पाठयक्रम मे समाहित हैं।

सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से आर्ष पद्धति पर आधारित प्राचीन व्याकरण व वेद निरुक्त प्रक्रिया स मध्यमा, शास्त्री व आचार्य कक्षा तक की पढाई व परीक्षा का समावेश है। विगत वर्षों से यहा का परीक्षा परिणाम अति उत्तम रह रहा है। सदाचारी, सुयोग्य व मेधावी छात्रो के लिए मध्यमा, शास्त्री व आचार्य कक्षा मे छात्रवत्ति का भी प्रावधान है। पढाई एक जुलाई से प्रारम्भ होती है। नवीन बालको का प्रवश २७ जून से आरम्भ होता है। प्रवेश सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए मुख्याधिष्ठाता—श्री गुरुकुल चित्तौडगढ, राजस्थान-३१२००१। इस पते से पत्र व्यवहार या सम्पर्क कर।

आर्यसमाज मंगोलपुरी वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज मगोलपुरी का वार्षिकोत्सव २१ मई से २८ मई १९८९ तक बडी धूमधाम से आयोजित किया गया। प० विष्णुदत्त शास्त्री यज्ञ के ब्रह्मा थे तथा प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री की वेद कथा हुई। प० चुन्नी लाल आर्य ने भजनोपदेश किया। स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने ध्वजारोहण किया तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने वार्षिकोत्सव का उद्घाटन किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव जी पूर्व सासद श्री सज्जन कुमार, सासद चौ० भरतसिह महानगर पार्षद डा० प्रेमचन्द कौशिक, निगम पार्षद चौ० ईश्वरसिह ने भी आर्य जनता का मार्गदर्शन किया। श्री वेदप्रकाश शर्मा तथा श्री चचल दास आर्य ने उत्साहपूर्वक सायोजन किया।

निर्वाचन

[illegible] स्त्री समाज सफदरजंग एन्क्लेव

आर्य स्त्री समाज सफदरजग एन्क्लेव का वार्षिक चुनाव श्रीमती आशा गुप्ता की अध्यक्षता मे १७ मई ८९ को निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधाना श्रीमती सुशीला गुप्ता
मन्त्राणी विमला खेर
कोषाध्यक्षा विद्यावती मैदान

आर्यसमाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार, लुधियाना

आर्यसमाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना का वार्षिक चुनाव गत रविवार को श्री हरबस लाल सेठी की अध्यक्षता मे हुआ। प्रधान डा० सत्यभूषण बागिया ने पजाब सभा के लिए ६ प्रतिनिधियो की घोषणा इस प्रकार की—

महामन्त्री मा० बी०आर० सहगल
कोषाध्यक्ष जगदीशचन्द्र आर्य

आर्यसमाज झिलमिल कालोनी, दिल्ली

दिनाक २१-५-८९ को आर्यसमाज झिलमिल कालोनी का वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ, जिसमे निम्न पदाधिकारी चुने गए—

प्रधान श्री सी० एल० कालडा
मन्त्री जोगिन्दर पाल घई
कोषाध्यक्ष बलदेव राज चावला
प्रधाना स्त्री समाज . कौशल्या देवी

प्रान्तीय आर्य महिला सभा

प्रान्तीय आर्य महिला सभा का निर्वाचन दिनाक २२-५-८९ को मान्या सुशीला जी आनन्द की अध्यक्षता मे शान्ति पूर्ण सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ। निर्वाचन के पूर्व श्रीमती सरला जी महता ने अपनी ओर से श्रीमती शान्ति देवी जी आचार्या को सत्यव्रत जी का प्रकाशित आर्यसमाज का इतिहास सात खण्डो से तथा प्रकाश जी बुग्गा को शाल द्वारा और शान्ति देवी जी अग्निहोत्री को पुष्प माला से सम्मानित किया।

नवनिर्वाचित पदाधिकारी बहिने

प्रधाना श्रीमती शकुन्तला जी आर्या
उपप्रधान . सरला जी महता
" प्रकाश जी आर्या
" सुशीला जी आनन्द
" शान्ति देवी जी मलिक
" प्रेमशील जी
मन्त्रिणी . कृष्णा चड्ढा
सह मन्त्रिणी . शकुन्तला जी दीक्षित
उप-मन्त्रिणी कृष्णा जी रसवन्त
" रामप्यारी देवी
कोषाध्यक्षा तारा जी वैद
सह-कोषाध्यक्षा . सरला जी वैद

आदर्श जन संस्थान

के तत्त्वावधान मे

तृतीय राष्ट्रीय एकता एवं योग साधना शिविर

३ जून से ११ जून १९८९

स्थान सत्यभामा आर्य कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल, करौल बाग

यह विशाल आयोजन आप सब महानुभावो के सतसहयोग से ही सफल हो सकता है। आप से अनुरोध है कि चरित्र निर्माण के इस कार्य क्रम मे यथाशक्ति साथ द।

केन्द्रीय आर्या युवती परिषद्, दिल्ली

प्रशिक्षण शिविर

आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली ५८ मे ४ जून से ११ जून १९८९ तक ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है।

कु० विभा आर्या (महासचिव)

विशाल आर्य युवक निर्माण शिविर व योग साधना शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली की ओर से आर्य युवको व योग साधको का विशाल शिविर ११ जून से १८ जून तक डी० ए० वी० माडल स्कूल पीतमपुरा दिल्ली-३४ मे आयोजित किया जा रहा है। प्रवेशार्थी युवको के लिए शुल्क ४० रुपये रहेगा। भाग लेने के इच्छुक सम्पर्क कर।

पता कार्यालय आर्यसमाज मन्दिर
कबीर बस्ती पुरानी सब्जी मण्डी
दिल्ली ७

'आर्यसन्देश' के

—स्वय ग्राहक बनें।
—दूसरों को बनायें।।

'आर्यसमाज' के

—स्वय सदस्य बने।
—दूसरो को बनाये।

सेवा में—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस गली न०१७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ अंक ३२ रविवार १८ जून १९८९ ज्येष्ठ सम्वत २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द १६५ सृष्टि संवत १९७२९४९०९६
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश में ५० पौंड १०० डालर दूरभाष २१ १५०

वेदों में आधुनिक समस्याओं का समाधान मौजूद

आर्य एवं अनार्य जातियों का भेद पाश्चात्य राजनीतिज्ञों की देन

उपराष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा के उद्गार

काचीपुरम २५ मई।

आज यहा एक सभा में बोलते हुए भारत के उपराष्ट्रपति श्री शकर दयाल शर्मा ने बताया कि वेदों मे आजकल की सभी मानवीय समस्याओ का निदान सन्निहित है।

यदि वेदो का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जाए तो यह स्वत स्पष्ट हो जाएगा कि वे ५००० वर्ष पुराने नही हैं, बल्कि ज्ञान-विज्ञान की दृष्टि से आधुनिक ही हैं। आजकल कम्प्यूटर प्रणाली मे भी वैदिक रीतियो की सहायता ली जा रही है। जर्मन तथा फ्रांसीसी वैज्ञानिको के अनुसार कम्प्यूटर मे प्रयोग के लिए संस्कृत ही अधिक उपयोगी भाषा है।

उप-राष्ट्रपति ने बल देते हुए कहा कि वेदो मे देश की वर्तमान सभी समस्याओं का चाहे वे साम्प्रदायिक हो राजनैतिक हो या किसी और प्रकार की हो निदान दिया हुआ है। जरूरत केवल इस बात की है कि हम मुक्त दिमाग से जो सर्वश्रेष्ठ विचार हैं वह कहीं से भी मिले, उन्हें ग्रहण करने की आदत डाले। हमारे वेद इसी शाश्वत सिद्धान्त के कारण सदियों से अक्षुण्ण बने हुए है इसकी उपयोगिता कभी कम नही हुई।

काची कामकोटि मठ द्वारा आयोजित शकर जयन्ती समारोह की अध्यक्षता करते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि आदि शकराचार्य ने एक चाण्डाल को अपना गुरु बनाकर दुनिया को यह दिखलाया था कि मनुष्य मनुष्य मे कोई भेद नही है। हमे दुख है कि हम अपनी इस विरासत को भूल गए है। इसी प्रकार आर्यों तथा अनार्यों (द्रविड जातियो) का भेद भी पाश्चात्य राजनीतिज्ञो की देन है जो हमारे अन्दर फूट डालना चाहते थे। हमारे दुश्मनो ने हमारे जीवन में यह विष घोल दिया है। हम इस विष को बाहर निकाल फेंकना होगा। आगे बोलते हुए डा० शर्मा ने कहा कि आदि शकराचार्य ने विज्ञान और दर्शन के भेद को कभी स्वीकार नही किया। उन के मतानुसार दोनो अविभाज्य है।

(इण्डियन एक्सप्रेस अहमदाबाद से साभार २५ मई ८९)

वैदिक सभ्यता के स्वरूप को गांव गांव तक पहुंचाकर ही हमारा राष्ट्र सुरक्षित रह सकेगा

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

यज्ञानुष्ठान से सुसंस्कृत श्री ब्रह्मप्रकाश लोहाटी परिवार

सुजानगढ ३० मई।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती और श्री प० बाल दिवाकर हस प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल को लेकर जोधपुर मेल ने ज्यो ही सुजानगढ स्टेशन की सीमा म प्रवेश किया, वैदिक धर्म की जय महर्षि दयानन्द की जय, स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की जय भारत माता की जय आदि अनेक जयकारो से स्टेशन का वातावरण गमक उठा, भारी भीड के मध्य श्री सत्यनारायण लोहाटी, ब्रह्मप्रकाश लोहाटी, आर्यसमाज सुजानगढ के कार्यकर्ताओ ने लाल गुलाब की मालाओ से अपने दोनो नेताओ का भव्य स्वागत किया। स्टेशन से गाडियो मे बैठाकर दोनो महानुभावो को श्री लोहाटी निवास पहुचाया गया। यथासमय स्नानादि के पश्चात सुसज्जित यज्ञानुष्ठान स्थान पर जब स्वामी जी और श्री हस पधारे तो जय-जयकारो से मण्डप गूज उठा। सात चौकियो पर अलग-अलग वेद पोथियां सम्हाले वेदज्ञ विद्वानों और याज्ञिक यजमानो से वेदी सुशोभित थी पुरोहित वरण, स्वस्तिवाचन, शान्तिपाठ, बृहद यज्ञानुष्ठान वेदमन्त्रो के स्वाहाकार से निनादित हो रहा था। यज्ञ के पश्चात श्री प० बालदिवाकर जी हस ने याज्ञिक परिवार का परिचय स्वामी जी को देते हुए कहा कि दम्पती रूप म श्री ब्रह्मप्रकाश लोहाटी वैदिक धर्मानुसार दैनिक यज्ञानुष्ठान विगत ५० वर्षों मे करते आ रहे हैं। इन्होने अनेक बार चारो वेदो से पारायण यज्ञ सम्पन्न किये हैं और आज पुन इस चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के समीप आपको अपने मध्य पाकर यह परिवार गौरवान्वित है।

श्री हस ने भी इस वैदिक धर्मावलम्बी अपने यजमान परिवार के प्रति भावभीनी शुभ कामनाए प्रकट की और कहा, यदि सच्चे आर्य परिवार के दर्शन करने हो तो श्री लोहाटी का परिवार उसका आदर्श नमूना है। जय जयकारो के मध्य श्री आनन्दबोध सरस्वती ने महर्षि दयानन्द को स्मरण करते हुए गदगद स्वर मे कहा, मैं श्री ब्रह्मप्रकाश सत्यनारायण लोहाटी परिवार के प्रत्येक सदस्य को स्वर सधान सहित मन्त्र पाठ करते देख कर आनन्दित हो उठा हू। उन्होने धर्म के लक्षणो का अनुसरण करने वाले सारे परिवार को शुभाशीर्वाद दिया और कहा आज सारा देश पाश्चात्य सभ्यता के अन्धे व्यामोह का शिकार है हमे इस परिवार का

(शेष पृष्ठ ७ पर)

प्रधान सम्पादक—सूर्य

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

ब्रह्मचाराष्णश्चरति रोदसो उभे तस्मिन देवा समनसो भवन्ति ।
स दाधार पथिवी दिवञ्च स आचार्यं तपसा पिपर्ति ॥

अथर्व० ११।३।५, १

ब्रह्म परमेश्वर को कहते हैं। उस अनाद्यनन्त की आदि विद्या 'वेद' भी ब्रह्म ही है क्योकि दोनों ही सर्वोपरि बडे हैं । चर धातु गति और भक्षण दो अर्थों मे प्रयुक्त होती है। पहले गति अर्थ मे चर को लेगे। वह गति शब्द भी तीन अर्थों मे लगता है अर्थात् ज्ञान, गमन और प्राप्ति। तब ब्रह्मचारी वह है जो परमेश्वर और उसकी पतित पावनी विद्या का पहले ज्ञान प्राप्त करे। वह निश्चयात्मक ज्ञान किस मुख्य साधन से प्राप्त होता है जिस अनिर्वचनीय को आख देख नही सकती, कान सुन नही सकते और अन्य इन्द्रियाँ भी जिसका प्रत्यक्ष ज्ञान नही दे सकनी, उस व्यापक पुरुष को कहा देख ? निस्सन्देह उसका ज्ञान वहाँ ही प्राप्त हो सकता है जहाँ वह विद्यमान है। ब्रह्माण्ड के प्रकाशमान और अप्रकाश्य, प्राण और रवि द्यौ और पृथिवी किस लोक मे वह मौजूद नही है। 'हर जगह मौजूद है पर वह नजर आता नहो। तब उसका ज्ञान द्यौ और पृथिवी इत्यादि द्वन्द्वो मे तत्त्व की दृष्टि डालने से ही मिलेगा, और इस दृष्टि के लिए आवश्यक है कि द्रष्टा मे बल हो। जमीन और आसमान के अन्दर जो छिपा हुआ राज (रहस्य) है उसको खोलना ब्रह्मचारी का उद्देश्य है, इसलिए वह जमीन और आसमान को हिलाता हुआ विचरना है। वह प्रकृति को मजबूर करता है कि अपने अन्दर के रहस्यो को उस (ब्रह्मचारी) के लिए खोल कर रख दे।

जब ब्रह्मचारी को ब्रह्म का ज्ञान हुआ तो वह उस मे गमन **करना** आरम्भ करता है। **ससार के** सब प्रकाशमान पदार्थ (**जो** उस प्रकाश्य स्वरूप की **ज्योति** के द्योतक होने मे देव हैं) सब मे उस ब्रह्मचारी के सहायक होते है। जहाँ पहले भिन्नता दिखाई देती थी वहा समानता दिखाई देती है। सब मे वह उसी प्रकाश स्वरूप की ज्योति को देखता है और अन्तत वह उसी मे स्थिरता को प्राप्त होता है। दर्शन तो किसी न किसी समय प्रत्येक व्यक्ति को होते हैं परन्तु ब्रह्मचारी को यह बल प्राप्त होता है कि जब एक बार उस परम ज्योति के दर्शन हो जायें तो वह उससे अलग नही होता। तभी तो वेद भगवान् ने कहा है कि ब्रह्मचारी द्यौ और पृथिवी को दृढता से धारण कर लेता है अर्थात् उन के तत्त्व को समझ कर फिर उसका हृदय डावाडोल नहीं होता।

बडे का ज्ञान करने, उस में गमन करने और फिर उस की प्राप्ति मे स्थिर होकर दृढव्रती होने का साधन क्या है ? वही साधन ब्रह्मचारी को आचार्य बतलाता है। बडे की प्राप्ति के लिए साधन भी बडा ही होना चाहिए। हाथी नशीनो से दोस्ती गाठने वालों को ऊचे दरवाजे रखने पडते हैं। सर्वोपरि परमात्मा और उसके वेद की प्राप्ति के लिए साधन भी ऊँचा चाहिए। वह बडा क्या है जिसके साधने से सब से बडे ब्रह्म का योग सध जाये ? तैत्तिरीयोपनिषत की भृगुवल्ली मे भृगु ने गुरु वरुण से ब्रह्म का पता पूछा है। वरुण ने उत्तर मे कहा 'अन्न, प्राण, चक्ष श्रोत्र मनो, वाचमिति' अन्न ब्रह्म है। तब ब्रह्मचारी कौन है ? इस प्रश्न के उत्तर के लिए 'चर' धातु के दूसरे अर्थ पर विचार करना चाहिए। 'चर भक्षण अर्थ मे भी आता है। जो अन्न को भक्षण करने की शक्ति रखता है वह ब्रह्मचारी है भक्षण किसे कहते हैं ? क्या खाद्य पदार्थ को पेट मे रख लेना ही भक्षण है ? वाचस्पत्य शब्द कोष के पृष्ठ ४६७० पर लिखा है—'भक्ष भावे ल्युट। कठिनद्रव्यस्य गलाध -करणव्यापारे। भक्षणप्रकार सुश्रुतोक्त । मनुष्य योनि मे यह मानवी शरीर, इन्द्रिय, मन और आत्मा युक्त बनावट ही ब्रह्म-प्राप्ति का साधन है। उन मे से शरीर मे रह कर ही इन्द्रिय मन और आत्मा का व्यापार चल रहा है, इसलिए शरीर के स्वास्थ्य पर ही अन्य सब का स्वास्थ्य निर्भर है परन्तु शरीर के परमाणु क्षण भर मे क्षीण होते रहते हैं। उन की स्थान-पूर्ति के लिए केवल खाने पीने की ही आवश्यकता नही, अपितु उस खाये को पचाने की भी आवश्यकता है। स्वादिष्ट और चटपटे भोजन के प्रलोभन मे न फसना और चबाते हुए उसे पीस डालकर अन्दर ले जाना यह तपस्वी का ही काम है। इसी तप की शिक्षा आचार्य ब्रह्मचारी को देता है और जब शिष्य आचार्य की शिक्षा के अनुकूल आचरण करता हुआ तपस्वी बनता है तभी आचार्य की आत्मा सन्तुष्ट होती है। इसी को लक्ष्य मे रखकर उपनिषद् मे अन्तेवासी के लिए उपदेश है कि आचार्य के प्रिय धन की भेंट उसके आगे रक्खे। धन्य हैं वे शिष्य वर्ग जो आचार्य की शिक्षा को शिरोधार्य समझ कर तप का जीवन व्यतीत करते हैं, क्योंकि उस अवस्था को प्राप्ति का जिस में आनन्द का ही राज्य है—वही एक साधन है।

शब्दार्थ—(ब्रह्मचारी) परमेश्वर और उसकी बडी विद्या वेद को प्राप्त करने में शील जिसका, वह ब्रह्मचारी (रोदसी उभे) द्यावा पृथिवी रूपी दोनो लोको को (इष्णन् चरति) हिलाता हुआ चलता है, (तस्मिन् देवा सम्मनस भवन्ति) उसमें ही सब देव समान मन वाले होते हैं। (स दाधार पृथिवीम दिवम् च) वह पृथिवी और द्यौ (जमीन और आसमान) को दृढता से धारण करता है। (स आचार्यम तपसा पिपर्ति) वह आचार्य को तप से पालता अर्थात् सन्तुष्ट करता है।

सब को रूपाकृति देते

ओ३म् विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्नि स्वस्तये।
देवा अवन्त्वृभव स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्र पात्वंहस ॥

विद्वान् देव जन आ जाओ, अपना उपदेश सुना जाओ।
ज्ञानी जन आज यहाँ आओ, आशीष सुमगल दे जाओ ॥
सम्पूर्ण विश्व के गुरु ज्ञानी
हम बने उन्ही के अनुगामी
उपदेश श्रवण करके उनका
बन जाये सभी हम उत्क्रामी।
हे अग्नि ईश तुम आ जाओ, निज शक्ति हमे कुछ दे जाओ।
ज्ञानी जन आज यहाँ आओ, आशीष सुमगल दे जाओ ॥
सबके शरीर को गति देते
सब को फिर रूप कृति देते
होकर वैश्वानर जठराग्नि
भोजन का पाचन कर देते।
शुभ देह-रूप-पाचन लाओ, मम तन मन स्वस्थ बना जाओ।
ज्ञानी जन आज यहाँ आओ, आशीष सुमगल दे जाओ ॥
सूर्य अग्नि या विद्युत ऊर्जा
हम को वरे सुमगल पूजा
शासक रुद्र रुलाये अरि को
हमे बचाये ले शस्त्र सूर्जा।
पाप कर्म से हमे बचाओ, आज रुद्र रक्षा को आओ।
ज्ञानी जन आज यहा आओ, आशीष सुमगल दे जाओ ॥

—देवनारायण भारद्वाज

गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी)

पो० भोला झाल, मेरठ

१३-६-८९ मगलवार को गुरुकुल प्रभाताश्रम की ओर से रैस्ट हाउस भोला झाल पर गंगा दशहरा मेले पर वेद प्रचार शिविर चलाया जा रहा है। इस अवसर पर विद्वान्, सन्यासी, उपदेशक, धर्मोपदेशक भी पधार रहे हैं। धर्म प्रेमी जनता से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक सख्या मे सम्मिलित होकर धर्म लाभ उठाये।

भवदीय

इन्द्रराज

मंत्री, गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी)

हैदराबाद आ०स० सत्याग्रह की स्वर्ण जयन्ती

—ब्रह्मदत्त स्नातक, भारतीय सूचना सेवा (रिटायर्ड)

कैसा अद्भुत संयोग है कि भारत को स्वाधीनता जिस १५ अगस्त को १९४७ मे मिली थी, उससे भी ९ साल पहले भूतपूर्व निजाम रियासत मे देशद्रोही अंग्रेजो के पिट्ठू घोर अत्याचारी व साम्प्रदायिकता के अलम्बरदार (जहा पाकिस्तान की रूपरेखा बनी) शासन को आर्यसमाज के राष्ट्रीय सत्याग्रह ने शिकस्त दी थी और १७ अगस्त को सारे सत्याग्रही जेलो से रिहा किए गए थे। स्टेट कांग्रेस तथा कांग्रेस के उच्च नेताओ और मुस्लिम लीगियो ने शुरू मे उसका विरोध किया था परन्तु विजय होने पर उन्ही नेताओ ने सत्याग्रहियो को बधाई दी और सफलता पर प्रसन्नता जाहिर की। सेवाग्राम (वर्धा) मे महात्मा गाधी ने जेल से हमारी वापसी पर फिजी, थाईलण्ड और सीमा प्रान्त के गुरुकुल वृन्दावन के अन्तर्राष्ट्रीय जत्थे को न केवल भरपूर शाबाशी दी थी, अपितु इन पक्तियो के लेखक को द्वितीय विश्व महायुद्ध के आसन्न घटाटोप पर पूरे मन से राष्ट्रीय आन्दोलन मे कूद पडने की प्रेरणा दी थी। मैं तब २० वर्ष का युवा था और गुरुकुल से पढ कर निकला था।

कुल मिलाकर १२००० से ज्यादा रियासत तथा बाहर के प्रान्तो एव विदेश के नौनिहालो ने इसमे भाग लिया था। सार्वदेशिक सभा, पजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, हैदराबाद, गुजरात को आर्य प्रतिनिधि सभाओ के प्रधानो ने सर्वप्रथम इस आन्दोलन का नेतृत्व किया था। इस प्रकार बलिदान एव तपस्या की उस अग्नि परीक्षा मे आर्यसमाज उत्तीर्ण हुआ। निजाम रियासत ने क्षतिपूर्ति के रूप मे समाज को तब २६ लाख रु० दिये थे। खेद है कि इस राशि का उपयोग बाद मे प्रचार कार्य एव आश्रयहीन अथवा दिवंगत सत्याग्रहियो की सहायता मे नही हुआ। कांग्रेस एव उसकी सरकार बाद मे इस आन्दोलन राष्ट्रीय न कहकर साम्प्रदायिक कहने लगी। अंग्रेज सरकार के भय से सत्याग्रह के रिकार्ड सार्वदेशिक सभा के कार्यालय से हटा दिए गए या नष्ट कर दिए गए। सभा ने प्रशस्ति पत्र जो जारी किए थे उन पर कोई क्रमाक नही था। हस्ताक्षर मूल रूप मे इन प्रमाण पत्रो पर नही दिए गए और आधारगत विवरण नही रखा गया।

केन्द्रीय सरकार मे नियुक्ति के बाद मैंने १९६३ मे पहली बार स्व० घनश्यामसिंह गुप्त श्री नरदेव स्नातक ठा० यशपाल सिह सासद आदि के प्रमाण-पत्रो के साथ सरकार द्वारा राजनैतिक पीडितो (स्वाधीनता सेनानी योजना बाद मे १९७२ व १९८० मे शुरू हुई) के लिए उद्दिष्ट रियासतो को पाने के लिए लिखा। उत्तर मिला कि आ० स० का हैदराबाद सत्याग्रह राष्ट्रीय स्वाधीनता का अग न होकर साम्प्रदायिक आन्दोलन था। स्मरण रहे कि सार्वदेशिक सभा मे कार्यालय सचिव के रूप मे आने पर सब से प्रथम १९७७ मे मैंने मन्त्री स्व० ओमप्रकाश त्यागी के हस्ताक्षरो से इस सत्याग्रह को राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन घोषित करने की सरकार से माग की थी। स्वय पत्रो मे हिंदी अंग्रेजी मे लेख लिख, सासदो व राज्य गृहमन्त्री से भेंट की। अन्य स्वतन्त्रता सेनानी सगठनो से सहयोग लिया और सरकारी रिकार्ड उद्धृत किए। परिणामस्वरूप १९८५ मे विधिवत् हैदराबाद के आ०स० सत्याग्रह को राष्ट्रीय मुक्ति आदोलन का अग घोषित कर दिया और एक गैर सरकारी जाच समिति गृह मन्त्रालय ने गठित कर दी। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनद बोध सरस्वती इसके अध्यक्ष तथा उनकी सस्तुति पर ७ अन्य सदस्य रखे गए। अच्छा होता कि सत्याग्रह मे भाग लेने, जेल जाने वालो मे से ३-४ व्यक्ति भी नामजद किए जाते। इससे न केवल उनको सम्मान व प्रतिनिधित्व मिलता, अपितु कार्य सचालन मे नियमानुकूलता व सुगमता होती, पर ऐसा नही हुआ। हा, सरकारी पूर्व अधिकारी मामलो से अभिज्ञ एव हैदराबाद आ०स० सत्याग्रही होने के कारण अवैतनिक सलाहकार के रूप मे उक्त समिति मे मैं आमन्त्रित किया जाता रहा।

समिति की सिफारिश पर २०० से अधिक सत्याग्रहियो को केन्द्र राज्य सरकारो ने सम्मान पेंशनें जारी कर दी हैं, परन्तु काश्मीर, पजाब, आजाद हिन्द फौज तथा अन्य आन्दोलनो के लिए गृह मन्त्रालय द्वारा गठित इसी प्रकार की सलाहकार समितियो की भाति आ०स० की उपसमिति मे सुधार की अत्यन्त आवश्यकता है। जिस प्रकार कांग्रेसी नेताओ की सिफारिश पर बहुत से जाली या अनधिकृत व्यक्ति आज भी सम्मान पेंशन पा रहे हैं और पात्र व्यक्ति उस सुविधा से वंचित हैं बहुत कुछ वैसी स्थिति वर्तमान समिति मे होने की पूरी सम्भावना व स्थिति है। यह अविलम्ब दूर होनी चाहिए।

अब से एक वर्ष पूर्व हैदराबाद आ०स० सत्याग्रह स्वाधीनता सेनानी समिति की ओर से हम ने इस ऐतिहासिक आन्दोलन की स्वर्ण जयन्ती अगस्त ८९ से जुलाई ९० तक क्रमबद्ध रूप मे अन्य स्वतन्त्रता सेनानी सगठनो के सहयोग से राष्ट्रीय स्तर पर मनाने के लिए सार्वदेशिक व प्रतिनिधि सभाओ व प्रमुख आर्य नेताओ को पत्र लिखे। सम्पर्क किए परन्तु उनकी नीद नही खुली है। हारे थके इन सत्याग्रही योद्धाओ मे आ०स० व राष्ट्र के प्रति बलिदान का उत्साह शायद क्षीण हो चुका है। सम्मान पेंशन पाकर तो और भी निष्क्रियता उनमे आ गई है और जिनको पात्र होने पर भी सम्मान पेंशन नही मिली है वे वैसे निराश हो गए हैं। मवाना (मेरठ उ०प्र०) के श्री नरेन्द्र कुमार शास्त्री ने एक पत्र लिख कर हमे इस स्वर्ण जयन्ती की तैयारी करने के लिए झकझोरा है और सर्वस्मना सहयोग के लिए प्रस्ताव भी भेजा है। १३००० रुपये दान सार्वदेशिक सभा को देने वाले अहमदाबाद के आ०स० सत्याग्रही जयन्ती भाई [illegible] उक्त समस्त प्राप्त होने वाली स्वाधीनता सेनानी पेंशन का भी साथियो के हित मे दान देने को उद्यत हैं पर उनका सहयोग गैर सरकारी [illegible] सरकारी मे [illegible] प्र० सभा के पूर्व [illegible] धर्मेन्द्र सिंह [illegible] सत्याग्रह करने के बाद [illegible] हुए जी रहे हैं। लगता है सभाओ समितियो व समाजो का कोई कर्तव्य शेष नही है।

इन समस्याओ को सुलझाने समान मे उन बचे हुए सत्याग्रहियो का सम्मान देकर उनके बलिदान व समर्पण करने की परम्परा पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है उनके नाम पर अपनी नई पीढी चमकाने मे आ०स० पुनः गौरव प्राप्त कर सकेगा।

हम आपकी प्रतिक्रिया और सहयोग के लिए आभारी होगे। स्वर्ण जयन्ती कार्यक्रम की सिलसिलेवार योजना आगे देंगे। अब ७० ही दिन शेष हैं।

सम्पादक के नाम पाठको के पत्र—

प्रमोद कुमार गुप्त
भारतीय खाद्य निगम
रेलवे आफिस बोरिवली (पूर्व)
बम्बई-४०००६०

माननीय सम्पादक जी,

आर्यसमाज काकडवाडी से समय-समय पर आर्यसन्देश के माध्यम मे आपके विचारोत्तेजक लेख पढने को मिलते रहते हैं। सामग्री काफी रुचिप्रद तथा बौद्धिक स्तर को ऊँचा उठाने वाली होती है।

वर्तमान मे आर्यसमाज में विद्वत् तथा स्वाध्यायशील सदस्य आर्य जनो के स्वाध्याय के अभाव मे अपने अर्जित गौरव को शनै शनै समाप्त करती जा रही है। आर्य जनो मे स्वाध्याय की भावना न पाये जाने के कारण आर्य जन आर्यसमाज के सार्वभौम सिद्धान्तो से अनभिज्ञ होते जा रहे हैं। इसीलिए आर्यगणो मे स्वाध्याय के प्रति रुचि जागृत करने हेतु हम डा० सोमदेव जी शास्त्री के सफल मार्ग दर्शन एव निर्देशन मे स्वाध्याय पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने जा रहे है। इसमे हम आपका आवश्यक सहयोग उचित मार्गदर्शन तथा सुझाव अपेक्षित है। स्वाध्याय पत्राचार पाठ्यक्रम की पूर्ण जानकारी सहित पत्र के साथ आपको इसकी विज्ञप्ति प्रेषित की जा रही है। अत आप से निवेदन है कि इस विज्ञप्ति के आवश्यक अग अथवा पूरी विज्ञप्ति अपनी पत्रिका आर्यसन्देश मे प्रकाशित करने की कृपा करें। आपके सुझाव हमे निम्न पते पर प्राप्त हो सकेगे तथा सुझावो की एक प्रति मुझे ऊपर लिखे गये पते पर भी प्राप्त हो सकेगी।

धन्यवाद।

भवदीय
प्रमोद कुमार गुप्त

डा० सोमदेव शास्त्री
३०४ सुमन एपार्टमेण्ट
यारी मार्ग, वरसोवा अंधेरी
बम्बई-४०००६१

हे युवकाः ! उत्तिष्ठत जाग्रत

—ज्ञानेश्वरार्य एम० ए०, दर्शनाचार्य

मानव समाज की स्थिति देख कर आप स्वय भी अनुभव करते होगे कि आज का मनुष्य अज्ञान से ग्रस्त होकर अपने नित्य चैतन्य स्वरूप को भूलकर स्वय को मात्र मामपिण्ड तथा इन्द्रियो का समुदाय मान कर दिन-रात क्षणिक ऐन्द्रियिक विषय भोगो को भोगने के लिए, भोग साधनो को एकत्रित करने हेतु ही चिन्तन कर रहा है उसी के लिए योजना बना रहा है, उसी के लिए दौड-धूप कर रहा है। इस भोग-लिप्सा की दौड मे इस अविवेकी मनुष्य ने जीवन और व्यवहार की समस्त नैतिकताओ को ताक पर रख दिया है ओर स्वय पशुत्व-श्रेणी की निम्न रेखा को भी लाघ रहा है।

मानव जीवन मे परस्पर प्रेम, श्रद्धा, विश्वास, धैर्य, सयम नष्टप्राय होता जा रहा है और इनके स्थान पर हिंसा, द्वेष, असत्य, छल, कपट, अन्यायादि से सम्बन्धित कुप्रवृत्तिया बढती ही जा रही हैं। परिणाम स्वरूप सभी मनुष्य एक दूसरे से भयभीत हैं, शकित हैं दुखी हैं। समाज मे आज न धन सुरक्षित है न तन और न ही चरित्र।

इस पर विडम्बना यह है कि देश की प्राचीन गरिमामयी सस्कृति सभ्यता, रीति-नीति, इतिहास तथा आदर्श परम्पराओ से अनभिज्ञ देश के कर्णधार व्यक्तिगत तुच्छ स्वार्थों की पूर्ति के लिए राष्ट्रीय व सामाजिक हितो को योजनाबद्ध रूप से नष्ट करते चले जा रहे है। भविष्य मे इन कार्यो के कितने ही दुष्परिणाम क्यो न निकले इस बात की इनको जरा भी चिन्ता नही है।

अगली बात जिस ओर मैं आप का ध्यान आकृष्ट करना चाहूगा वह है—विदेशियो के कुचक्र की। हजारो मील दूर से अपनी स्वग समान सुख सुविधाओ को छोडकर हमारे भारत देश मे आकर यहा की क्षेत्रीय भाषाओ को सीखकर, प्राणो की भी परवाह न करते हुए बीहड जगली प्रदेशो मे रहने वाले निर्धन निर्बल अशिक्षित, भोले-भाले हमारे भाइयो के बीच जाकर, सेवा-परोपकार-मानवता के नाम पर विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ प्रदान करके बदले मे उनकी आत्मा को मारकर उनको विधर्मी बनाते जा रहे हैं। हजारो की सख्या मे, दिन रात कार्य करने वाले ये विदेशी हमारी तरह ही युवक हैं।

इसके बाद मैं आपका ध्यान देश मे पलने वाले और नित नये उत्पन्न होने वाले मत, पन्थ, गुरु और सम्प्रदायो की ओर ले जा रहा हू, जो हजारो की सख्या मे है। ये मत पन्थादि, यथार्थ ईश्वर, धर्म, पूजा, भक्ति से दूर अपना ऐसा विकृत, भद्दा, अवैज्ञानिक स्वरूप अपनाए हुए हैं कि ज्यो-ज्यो ये अपना प्रचार कार्य बढाते जा रहे हैं त्यो त्यो बुद्धिजीवी समाज, विशेषकर देश की भावी पीढी युवाओ मे ईश्वर तथा धर्म मे सम्बन्धित मान्यताओ के प्रति श्रद्धा, रुचि, घटती ही चली जा रही है। बल्कि अधिकाश पठितवर्ग इनके कार्यों से घृणा करता है और कभी कभी तो खुलकर विरोध भी।

ऐसी विकट परिस्थितियो मे, जबकि मानव समाज मे पतन की चरम सीमा आ चुकी हो, पाश्चात्य भोगवादी सभ्यता एव नास्तिकता का ताण्डव नृत्य दिन दूनी रात चौगुनी गति से विस्तार कर रहा हो हम वैदिक धर्म से परिचित युवको के लिए क्या यह उचित है कि अपनी आँख बन्द कर लेव कानो पर हाथ रख ल और अपने घरो मे मूक बन कर बैठे रहे ?

हजारो वर्षो के पश्चात्, एक महान ऋषि ने सत्य सनातन ईश्वरीय वैदिक धर्म के आधार पर, मानव समाज के सर्वांगीण विकास के लिए एक योजनाबद्ध कार्यक्रम की रूपरेखा अपने ग्रन्थो मे प्रस्तुत की और अपने अनुयायियो मे यह आशा की कि वे मेरे कार्यों को पूरा करेगे। हम यह भी जानते है और विश्वास भी रखते है कि वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार मे ही परिवार, समाज राष्ट्र तथा विश्व मे स्थायी सुख और शान्ति की स्थापना हो सकती है। अन्य किसी मत, पन्थ या सम्प्रदाय से नही। क्योकि वैदिक धर्म ही ऐसा धर्म है जो सार्वभौमिक है और इसके सिद्धान्त तर्क युक्त प्रमाण से सिद्ध हैं विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरते हैं।

परन्तु एक बात ध्यान मे रखने की है कि सत्य की जीत अपने आप नही होती, बल्कि सत्य को पुरुषार्थ करके ही जिताना पडता है। विदेशो मे आए अन्य मतावलम्बी युवक, जो हजारो की सख्या मे हैं हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रो मे विद्यालय, शिविर सेमिनार प्रदर्शनी, उत्सवो, वाहनो, व्याख्यानो, पुस्तको, पत्र पत्रिकाओ के माध्यम से दिन रात एक करके अपना प्रचार कार्य कर रहे हैं। दूसरी तरफ हम ईश्वरीय वाणी वेद तथा ऋषिकृत आदर्श ग्रन्थो को अपने घर की या समाज की अल्मारी मे बन्द रखे हुए, उनका प्रचार-प्रसार करने हेतु सप्ताह, मास, वर्ष मे एक दिन भी न लगाते हुए, तन, मन, धन का त्याग किए बिना कैसे यह विश्वास कर बैठे हैं कि विश्व भर मे वैदिक धर्म का प्रचार हो जाएगा, घर घर मे यज्ञ की ज्योति जल उठेगी, वेद की ऋचाएँ गूज जायेगी, पाखण्ड, अन्धविश्वास, नास्तिकता का विनाश हो जाएगा अश्लीलता, मास, शराब, जुए का प्रचलन समाज से मिट जाएगा, सस्कृत भाषा, गुरुकुल प्रणाली, वर्णाश्रम व्यवस्था की स्थापना हो जाएगी और विश्व मे वैदिक चक्रवर्ती साम्राज्य का प्रादुर्भाव हो जाएगा।

ऐसा तो कदापि सम्भव नही है। बाजार मे वस्तु उसकी ही बिकती है जो ग्राहक के सामने वस्तु का प्रदर्शन करता है, उसके गुणो को बताते हुए उसकी श्रेष्ठता को सिद्ध करता है, प्रेमपूर्वक उससे बातचीत करके उसको विश्वास मे लाता है। इसके विपरीत, दूसरे व्यक्ति की वस्तु कितनी ही श्रेष्ठ क्यो न हो, वह दुकानदार नगर के अन्दर किसी गली मे दुकान लेकर, बिना ही बोर्ड लगाए, अस्तव्यस्त अवस्था मे वस्तु को कोने मे रख देव, और उसे वस्त्र मे पूरा ढक देवे, तब ऐसी अवस्था मे बिना विज्ञापन व प्रदर्शन के उस की वस्तु कैसे बिक सकती है। ठीक ऐसी ही अवस्था आज हम वैदिक धर्म के अनुयायियो की हो रही है।

यह भी स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि पूर्व निर्दिष्ट सामाजिक एव राष्ट्रीय मूल समस्याओ का समाधान अधिकाधिक डाक्टरो, वकीलों, इञ्जीनियरो आदि के निर्माण से नही होगा। इन समस्याओ का समाधान तो वेद-प्रतिपादित तथा ऋषि-निर्दिष्ट आध्यात्मिक शिक्षाओ के प्रचार-प्रसार से ही होगा। ऋषियो ने स्पष्ट घोषणा की है कि जिस देश के लोग सच्चे ईश्वर व धर्म को भुला देते हैं वह मनुष्य समुदाय व राष्ट्र, पतन को प्राप्त हो जाता है।

इस वस्तु-स्थिति को समझते हुए भी, आज हम सामाजिक व राष्ट्रीय हितो की रक्षा करने के अपने कर्त्तव्य से विमुख होकर पलायन करेगे या उपेक्षा वृत्ति अपनाए रहेगे, तो यह निश्चित है कि मानव कल्याण के सामाजिक कार्यों को न करने के अपराध मे, ईश्वर की दृष्टि मे अवश्य ही दोषी बनेगे और दण्ड के भागी बनेगे। आने वाली पीढी हमारी अकर्मण्यता को सुन जानकर हमे कोसेगी।

केवल मात्र अपने माता-पिता या सन्तति को २ रोटी खिला देने मे ही हमारे कर्त्तव्य की इतिश्री नही हो जाती, जबकि देश के लाखो करोडो मानव, जो हमारे ही भाई बहिन हैं, अज्ञान, अभाव अन्याय मे पिसते हुए, भूखी नगी अवस्था मे पशुओ से भी निकृष्ट जीवन व्यतीत कर रहे हो। यदि इनकी उन्नति के लिए हमारे हृदय मे आत्म-बलिदान की कोई भावना नही उठती, तो कैसे हम अपने आपको मानव कह सकते हैं ? 'आर्य' (श्रेष्ठ) कहलाने की तो बात बहुत दूर की है।

सैकडो-हजारों वर्षों से वेद तथा ऋषिप्रणीत-ग्रन्थ अपने अध्येताओ की प्रतीक्षा करते-करते जीर्ण-शीर्ण हो रहे हैं, क्या हम उनको नष्ट होने देगे ? समय-समय पर आत्मा मे स्फुरित होने वाले उच्चकोटि के आध्यात्मिक एव देशोद्धार के उत्कृष्ट विचारो को कब तक दबाते रहेगे और आत्महनन करते रहेगे ?

आओ, पारिवारिक तुच्छ स्वार्थ की भावनाओ से ऊपर उठ कर, प्रतिकूलताओ का सामना करके, विभिन्न कष्टो को तपस्या मानकर सहन करते हुए, मान-अपमान को जीतकर, ऋषियों के महान् आदर्शों को सम्पूर्ण सामर्थ्य के साथ जीवन मे उतारकर ईश्वरप्रदत्त तन-मन-धन, बल, विद्या आदि समस्त साधनो को, ईश्वर की ही आज्ञाओ की पूर्ति के लिए समर्पित करे। एक स्वर्णिम अवसर हमारे समक्ष है देश, धर्म, सस्कृति की रक्षा करने के लिए अब भी यदि नही जागेगे, नही कुछ करेगे, तो वृद्धावस्था मे तो पश्चात्ताप के सिवा और कुछ भी शेष नही रहेगा।

संस्कृत को हटाने वालों से कुछ प्रश्न

लेखिका प्रो० श्रीमती कमला रत्नम नई दिल्ली १६

जहा तक तथाकथित त्रिभाषा सूत्र से सस्कृत को माध्यमिक स्कूलो से हटाने का प्रश्न है उसके लिए माध्यमिक शिक्षा केन्द्रीय बोर्ड ने १६ ६ ८८ को सब स्कूलो को सकुलर भेजकर यह आदेश दिया था कि अग्रेजी हिंदी और एक आधुनिक भारतीय भाषा छात्रो को पढाई जाये। सन १९५६ मे सैकेण्डरी बोर्ड ने हिन्दी या अग्रेजी का जो विकल्प रखा था उसको एक झटके मे ही छोड दिया गया। हिन्दी या अग्रेजी मे से किसी एक को स्वीकार करने के बजाय अब हिन्दी और अग्रेजी दोनो को अनिवार्य कर दिया गया है और तृतीय भाषा के रूप मे सस्कृत को हटाकर आधुनिक भारतीय भाषाओ को स्थान दे दिया गया है। इन आधुनिक भारतीय भाषाओ मे भी उत्तर भारत के छात्रो के लिए दक्षिण भारत की भाषाओ को प्राथमिकता दी गई है। इस स्वेच्छाचारितापूर्ण आदेश से कुछ प्रश्न उपस्थित होते है जो इस प्रकार हैं —

१ यदि सविधान के अनुसार हिन्दी राजभाषा है और जब तक सब राज्य हिन्दी को स्वीकार न कर ले तब तक उसके स्थान पर अग्रेजी को अतिरिक्त भाषा के रूप मे स्वीकार किया जा सकता है तो फिर दोनो भाषाओ को पढाना अनिवार्य क्यो किया गया ? वह विकल्प बना रहने दीजिए और छात्र की इच्छा पर छोडिए कि वह जिस भाषा को अधिक उपयोगी समझे उसे सीखे सैन्ट्रल बोर्ड का आदेश इस बात का स्पष्ट सूचक है कि वह अग्रेजी पर अधिक जोर देना चाहता है।

२ यदि त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत प्रत्येक छात्र का प्रादेशिक भाषा या अपनी मातृ भाषा प्रथम भाषा के रूप मे पढनी ही है तो उसे आधुनिक भाषा की सूची मे से क्यो न हटा दिया जाये ? ऐसा लगता है कि यह केवल सस्कृत को हटाने के लिए किया गया है।

३ भारतीय सविधान के आठवे अनुच्छेद मे वर्णित १५ भाषाओ मे संस्कृत को जो स्थान दिया है उसे अर्ध-आधुनिक और प्राचीन (क्लासिकल) भाषा घोषित करने का परामर्श सैकेण्डरी बोर्ड को किसने दिया ? १९८६ ८७ तक जो भाषा [illegible] और आधुनिक तथा अध्ययन के योग्य मानी जाती थी, और १९६८ मे निर्धारित शिक्षानीति के अन्तर्गत इस बात पर जोर दिया गया था कि भारत के लिए सस्कृत का विशेष महत्त्व है इसलिए इसकी उन्नति के लिए विशेष प्रयत्न किये जाने चाहिए अब एक वर्ष मे कम समय मे ही उसी सारी स्थिति को क्यो उलट दिया गया है ?

४ किस आधार पर सस्कृत को जर्मन और रूसी जैसी विदेशी भाषाओ और अरबी तथा फारसी जैसी पुरानी (क्लासिकल) भाषाओ के समकक्ष रखा गया है ?

५ कई बुद्धिजीवी सस्कृत के प्रति अपनी अरुचि को छिपाने के लिए यह कहते हैं कि राष्ट्रपति को इस विषय मे दखल नही देना चाहिए। क्या राष्ट्रपति कोई ऐसी कठपुतली है जिसकी डोर खीचने वाला कही छिप कर बैठा है और उसी की मर्जी के अनुसार वह कठपुतली नाचने लगती है। क्या राष्ट्र के मामलो मे अपने विवेक से काम लेने का राष्ट्रपति को कोई अधिकार नही है ? या कोई रबड की एसी मोहर है जो इतने ऊँचे किन्तु मिथ्या पद पर बैठकर केवल सत्तापक्ष के सनक भरे निर्णयो पर ज्यो की त्यो छाप लगाने के काम आती है ? उसका यह कर्तव्य और उत्तरदायित्व नही है जैसा कि प्रत्येक स्वतन्त्र नागरिक का है कि वह भारत के लिए क्या लाभकारी और क्या हानिकारी है इसके सम्बन्ध मे अपनी बुद्धि का प्रयोग कर सके।

६ इसके अलावा शिक्षा सम्बन्धी राष्ट्रीय नीति और अमल मे आने वाले कार्यक्रम दोनो का ससद द्वारा सन १९८६ मे समर्थन किया जा चुका है। तब फिर भारत के भावी निर्माता अबोध शिशुओ पर इस प्रगति-विरोधी त्रिभाषा सूत्र को जबरदस्ती थोपने का क्या औचित्य है ? ससद अपने विवेक के अनुसार ५० से अधिक बार प्राय सविधान की आत्मा मे परिवर्तन करके भी सशोधन कर चुकी है। तब क्या अपनी सुविधा के लिए अपने निष्ठुर बहुमत के द्वारा सत्तासीन दल फिर वैसा ही करना चाहता है ?

७ सस्कृत को केवल हिन्दी माध्यम के स्कूलो मे हिन्दी के साथ २० और ८० के अनुपात मे रखना सन्तोषजनक नही है, क्योकि भारत के गौरवपूर्ण अतीत की राष्ट्रीय अस्मिता की भावना की और सस्कृत द्वारा प्रसृत स्वतन्त्र चिन्तन की अक्षुण्ण धारा को केवल २० प्रतिशत अक मे नही समेटा जा सकता। सस्कृत की सीधी हत्या करने के बजाय यह तो सस्कृत का शनै शनै भूखा मारने के समान है। सच तो यह है कि इससे हिन्दी और सस्कृत को ही नही बल्कि प्रत्येक भारतीय भाषा को भी हानि होगी। यह अत्यन्त लज्जा की बात है कि अग्रेजी का वर्चस्व कायम रखने के लिए बाटो और शासन करो का राजनैतिक फासला भारतीय भाषाओ के साथ भी लागू किया जा रहा है। असल मे तो अग्रेजी के समर्थक उस बन्दर का सा खेल खेल रहे हैं जो दो बिल्लियो का इन्साफ करने के बहाने पूरी रोटी स्वय खा जाता है।

८ खानपान रहन सहन और बोलचाल मे अनेक अनेक भेद होने के बावजूद समस्त राष्ट्र की एकता और दृढता की भावना सस्कृत के द्वारा ही सुरक्षित रही है। आदि शकराचार्य से लेकर विवेकानन्द और राधाकृष्णन तक सभी महापुरुषो ने यही बात कही है तथा महात्मा गाधी से लेकर जवाहरलाल नेहरू तक सब ने इसी दृष्टिकोण का समर्थन किया है।

९ इन्ही कारणो से तमिलनाड की देशभक्त और राष्ट्रवादी सस्थाओ ने भी केन्द्र के समक्ष विरोध प्रकट किया है। वे जानते हैं कि स्कूलो से सस्कृत को हटाने का अर्थ होगा शेष समस्त देश से भावनात्मक तथा अन्य सामाजिक सास्कृतिक और धार्मिक सम्बन्धो का भी विच्छेद। इससे राज्यो मे भी पृथकतावादी प्रवृत्तिया पैदा होगी। तमिलनाडु ने यदि हिन्दी का विरोध किया था तो उसके कारण राजनैतिक थे। वस्तुत दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की रिपोर्टों से पता लगता है कि वहा लाखो लोग हिन्दी सीख रहे है और उनकी सख्या लगातार बढती जा रही है। तमिलनाड के इस विरोध के कारण सरकार को अग्रेजी के बजाय हिन्दी को लागू करने की प्रक्रिया को रोकने का बहाना मिल गया। परन्तु अब तो तमिलनाड भी सस्कृत को चाहता है। क्या सरकार उन की माग को स्वीकार करेगा ? जनता स्वेच्छा से उस भाषा को सीखेगी जो उनके लिए हितकर हो, अग्रेजी के सम्बन्ध मे कोई मिथ्या धारणा नही बनानी चाहिए। जब तक अग्रेजी से रोजगार मिलता है या अन्य सामाजिक और आर्थिक लाभ मिलते है तब तक जनता उसे सीखेगी ही। जिस दिन भारतीय भाषाओ के माध्यम से ये लाभ मिलने लगेगे उस दिन अग्रेजी का लोग अपने आप छोड देगे

१० प्रधानमन्त्री ने हमारी शिक्षा प्रणाली की पूर्णतया विफलता पर खेद प्रकट किया है। किस प्रकार नैतिक मूल्यो का ह्रास हुआ है और भ्रष्टाचार पाव फैलाता जा रहा है यह सुविदित है। समयासमय पर प्रधानमन्त्री जनता मे देशभक्ति की कमी पर भी अफसोस प्रकट करते रहे हैं। किसानो के हित के लिए खर्च किए जाने वाले १ रुपयो मे से उन तक एक रुपया पहुच पाता है। सदाचारी और ईमानदारी नर-नारियो का एक ऐक्यबद्ध सुदृढ राष्ट्र बनाने के लिए हमे सस्कृत के अध्ययन का विस्तार करना होगा और उसे पुन जगाना होगा। यदि देश के बुद्धिजीवी आज सस्कृत को हटाने को सरकारी अक्लमन्दी पर शका प्रकट करते है तो वह गलत नही है। वे भी देश के हितैषी है देश के दुश्मन नही हैं हमे उनके कथन पर ध्यान देना ही चाहिए। ◻

आर्य जगत के समाचार

रतन देवी आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकण्डरी स्कूल

उपलब्धियाँ

इस विद्यालय की छात्राओं ने दौड़ प्रतियोगिता मे दिनाक १०।५।८९ को ट्राफियां पुन प्राप्त की जिसमे सीनियर दौड मे प्रथम द्वितीय और तृतीय जूनियर दौड मे भी प्रथम द्वितीय और तृतीय तथा उप जूनियर दौड मे प्रथम द्वितीय तृतीय और चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। यह प्रतियोगिता शिक्षा विभाग दिल्ली प्रशासन द्वारा कराई गई जिसमे सैकडो विद्यालयो की छात्राओं ने भाग लिया।

संस्कृत प्रचारक प्रशिक्षण शिविर

संस्कृत प्रचार समिति दिनाक १ जून से ३० जुलाई तक श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर नयी दिल्ली (निकट सफदरजंग अस्पताल) मे एक संस्कृत प्रशिक्षण शिविर का आयोजन कर रहा है। इस मे सभी संस्कृतज्ञ भाग ले सकगे जो संस्कृत को बोलचाल की भाषा बनाने हेतु प्रचारक का काम करने का सकल्प रखते हो। संस्कृत को बोलचाल की भाषा बनाने की विधि एक निश्चित पाठ्यक्रम रखती है यह पाठ्यक्रम कुल दस दिन तक चलेगा इस शिविर मे सभी शिविरार्थियो के लिए भोजन तथा आवास समिति द्वारा रहेगा।

प्रवेश सूचना

ब्रह्मकुटी वेदमन्दिर वेदोपदेशक विद्यालय मे प्रवेश आरम्भ है। सौम्य शिष्ट अनुशासनप्रिय प्रतिभाशाली तथा आजीवन वैदिक धर्म प्रचार के इच्छुक कम से कम १०वीं पास या इस के समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण युवक तथा स्वाध्यायशील सदाचारी प्रचार करने मे रुचि रखने वाले वानप्रस्थी भी प्रवेश के लिए आमन्त्रित हैं। निम्न पते पर शीघ्र पत्र व्यवहार करे—

श्री कुलाधिपति जी
ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति
ब्रह्म कुटी वेदमन्दिर वेदोपदेशक विद्यालय
ब्रजघाट ४५ ०५ जि० गाजियाबाद (उ प्र)

आवश्यकता है

आर्यसमाज बल्लबगढ (फरीदाबाद) हरियाणा को एक पुरोहित की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार। शीघ्र सम्पर्क करें।

मन्त्री आर्यसमाज बल्लबगढ

निर्वाचन

आर्यसमाज मस्जिद मोठ

आर्यसमाज मस्जिद मोठ नई दिल्ली का वार्षिक चुनाव दिनाक ११ ५ ८९ को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। वर्ष १९८९ ९० के लिए पदाधिकारी निम्न प्रकार चुने गए—
प्रधान श्री ईश्वरचन्द्र भारल
मन्त्री रोशनलाल प्रजापति
कोषाध्यक्ष जोगराज सिंह

आर्यसमाज पंजाबी बाग

आर्यसमाज पश्चिमी पजाबी बाग का वार्षिक चुनाव २३ अप्रैल १९८९ को हुआ जिस मे निम्न लिखित पदाधिकारी चुने गए—
प्रधान श्री ईश्वरचन्द्र आर्य
मन्त्री वासुदेव लाल धवन
कोषाध्यक्ष जी एल सरदाना

आर्यसमाज पंखा रोड

आर्यसमाज पखा रोड सी ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली का वार्षिक साधारण सभा का अधिवेशन रविवार २८ मई १९८९ को हुआ। पदाधिकारी सर्वसम्मति से इस प्रकार चुने गए
प्रधान श्री विद्यासागर मदान
मन्त्री रामकृष्ण सतीजा
कोषाध्यक्ष हरकिशनलाल गुलाटी

आर्यसमाज ब्रह्मपुरी

दिनाक २८ ५ ८९ को आर्य समाज ब्रह्मपुरी दिल्ली ५३ का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार से हुआ—
प्रधान श्री ओमप्रकाश मदान
मन्त्री श्रीकिशन आर्य
कोषाध्यक्ष ओमप्रकाश अत्री
पुस्तकाध्यक्ष ओमप्रकाश आर्य
प्रचारमन्त्री होमपाल सिंह
लेखा परीक्षक टूकी राम भारद्वाज

आर्यसमाज मंदिर जनकपुरी

आर्यसमाज मन्दिर बी-ब्लाक, जनकपुरी नई दिल्ली ५८ का नवम चुनाव ज्येष्ठ प्रतिपदा २०४६ रविवार १४ मई १९८९ को साप्ताहिक सत्सग मे प्रात ८ ३० बजे डा० राजकिशन पुरी जी की अध्यक्षता मे निर्वाचन कार्य सम्पन्न हुआ।
प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार खट्टर
उप प्रधान कृष्णचन्द्र वर्मा
मन्त्री भगवान दास जी
प्रचारमन्त्री योगेश्वरचन्द्र
कोषाध्यक्ष शान्तिस्वरूप कपूर
लेखानिरीक्षक सोमदत्त मित्तल

आर्यसमाज आनन्द विहार

आर्यसमाज आनन्द विहार एल ब्लाक की साधारण बैठक २१ ५ ८९ को साप्ताहिक सत्सग के बाद वार्षिक चुनाव के लिए हुई। यह निर्वाचन श्री बी पी भास्कर जी की देख रेख मे हुआ जिस मे सर्वसम्मति से निम्नलिखित अधिकारी निर्वाचित हुए—
प्रधान श्री कस्तूरीलाल मल्होत्रा
मन्त्री सुभाष शर्मा
कोषाध्यक्ष मदनलाल बिदानी
लेखा निरीक्षक राजेश टोटेजा

आर्यसमाज कृष्णा नगर

आर्यसमाज कृष्ण नगर का वार्षिक चुनाव १९८९ का श्रीमती ईश्वर देवी जी धवन प्रधाना क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उप सभा शाहदरा क्षेत्र की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।
प्रधान चौधरी खान चन्द जी
मन्त्री हरचरणसिंह सहगल
कोषाध्यक्ष जनकराज जी ऋषि

शोक समाचार

आर्यसमाज सुभाष नगर के पुराने कार्यकर्ता स्व० श्री रामनाथ जी की सुपुत्री एवं श्री ओमप्रकाश आनन्द की भतीजी श्रीमती सुषमा का दिनाक १ जून १९८९ को साय ७ बजे कूलर द्वारा करण्ट लगने से देहान्त हो गया। वे ग्रीष्मावकाश के दौरान अपने मायके आई हुई थी। श्रीमती सुषमा का अन्तिम संस्कार जो सुभाष नगर मे हुआ मे भारी सख्या मे लोग सम्मिलित हुए। क्षेत्रीय निगम पार्षद श्री ओ पी बधवा सुभाष नगर वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री वासदेव मल्होत्रा भी अन्तिम संस्कार के समय उपस्थित थे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी एवं कर्मचारी श्रीमती सुषमा के निधन पर गहरा दुख एवं शोक व्यक्त करते हैं तथा उनके परिवार एवम इष्टमित्रो के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हैं।

आर्यसन्देश पढ़े, पढ़ाये

आर्य जगत के समाचारो व उपयोगी लेखो अध्यात्म विवेचनो से युक्त सामयिक चेतावनियो से जूझने की प्रेरणा देने वाले साप्ताहिक-पत्र आर्यसन्देश के ग्राहक बनिये और दूसरो को बनवाइये। साथ ही वर्ष मे अनेको संग्रहणीय विशेषाक नि शुल्क प्राप्त कीजिये।

वार्षिक शुल्क मात्र २५ रुपये तथा आजीवन शुल्क मात्र २५० रुपये।

क्रांतिवीर सावरकर का स्मारक

२८ मई, १९८९ को महामहिम उपराष्ट्रपति डा० शकर दयाल शर्मा ने बम्बई मे महान क्रातिकारी 'स्वातन्त्र्य वीर सावरकर राष्ट्रीय स्मारक का विधिवत उदघाटन किया। डा० शर्मा न उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए वीर सावरकर को नेता जी सुभाष का प्रेरक बताया। लदन मे कर्जन वायली को गोली मारकर फासी चढने वाले अमर शहीद मदनलाल धीगरा को क्राति का गुरु मन्त्र वीर सावरकर ने दिया था। स्वय वीर सावरकर ने ब्रिटिश जहाज मोरिया के 'पोर्ट होल से अथाह सागर मे छलाग लगाकर अपने साहस की मिसाल कायम की थी। बम्बई उच्च न्यायालय के अग्रेज न्यायाधीश ने उन्हे

इश शासन का घोरतम शत्रु बताकर दोहरे आजीवन काले पानी की सजा दी थी। पोर्ट ब्लेयर म उन्हे काफी यातनाए दी गयी थी।

वीर सावरकर द्वारा लिखी पुस्तक 'सन् १८५७ का स्वाधीनता सग्राम भारत के बाहर छपते ही जब्त कर ली गयी। यह पुस्तक क्रातिकारियो की गीता समझी जाती थी। प० चन्द्रशेखर 'आजाद ने इस पुस्तक को पुन छपवाकर उसकी प्रतिया क्रातिकारी देशभक्तो मे वितरित की थो। वीर सावरकर को पोर्ट ब्लेयर के सेलूलर जेल मे ६ माह मे एक पत्र लिखने की अनुमति थी। श्रद्धेय भाभी के नाम लिखे उनक पत्रो को क्रातिकारी-चिटिठया नाम से मराठी तथा हिन्दी मे देशवासी सगृहीत कर चुके हैं। मराठी के महान लेखक तथा कवि होते हुए भी वे हिन्दी के प्रबल समर्थक थे और जेल के कैदियो को हिन्दी पढाते। पृथकतावादी जिन्ना केवल वीर सावरकर से भयभीत रहता था। अग्रेज उन्हे हिन्दुओ का सच्चा प्रतिनिधि मानते थे और अनेक निर्णायक बैठको मे उन्होंने हिन्दुओ का पक्ष रखा था।

जिला फीरोजपुर हुसैनीवाला मे क्रातिकारी शहीद सरदार भगतसिंह, सुखदेव तथा राजगुरु का एक दर्शनीय स्मारक बना है। मिर्जापुर, उ० प्र० के शहीद उद्यान मे अनेक क्रातिकारियों की प्रतिमाएँ हैं। कलकत्ता के डलहौजी-स्क्वायर को तीन क्रातिकारियो विनय बादल और दिनेश के नाम पर बी बी डी बाग बना दिया है। इलाहाबाद, वाराणसी झाबुआ, बदरका तथा ओरछा मे शहीद प० चद्रशेखर 'आजाद की प्रतिमाएँ स्थापित की गई हैं। अब क्रातिकारियो के पुरोधा वीर सावरकर की स्मृति मे ६० लाख रुपयो के व्यय मे राष्ट्रीय स्मारक बनाया गया है। कागज और कलम के अभाव मे उन्होंने जेल की दीवारो पर कविताएँ लिखी थी।

क्राति-वीर' विनायक दामोदर सावरकर का यह राष्ट्रीय स्मारक भारत की आने वाली पीढी को स्वाधीनता सग्राम मे क्रांतिकारियो के ऐतिहासिक तथा अविस्मरणीय योगदान का परिचय देता रहेगा। मातृभूमि की आजादी के लिए तिल-तिल कर अपना जीवन होमने वाले हे क्राति-वीर स्वाधीन भारत के कृतज्ञ देशवासी अब भी तुम्हे कोटिश नमन करते हैं।

—ब्रजभूषण दूबे
गोराचन्द रोड कलकत्ता

(पृष्ठ १ का शेष)

अनुकरण कर वैदिक सभ्यता के स्वरूप को गाव-गाव तक पहुचाने का प्रयास करना चाहिए तभी हम सुरक्षित रह सकगे। आप ने विदेशी षड्यन्त्रो की ओर इशारा करते हुए राष्ट्र के नेताओ को सावधान किया कि वे हमारे सास्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक मूल्यो की अवहेलना न करे अन्यथा हमारा विनाश हो जाएगा।

अगले दिन श्री ब्रह्मप्रकाश लोहाटी के पुत्र प्रिय ओमप्रकाश ने यज्ञोपवीत ग्रहण किया। श्री हस ने अपने शिष्य को देवऋण, ऋषि ऋण, मातृ-पितृ ऋण मे मुक्त होने का आत्मीयतापूर्ण उपदेश दिया और कहा, यज्ञोपवीत जिसे हम परम पवित्र कहते हैं उसे अपने शरीररूपी मन्दिर पर ध्वज के समान आजीवन लहराते रहने का दृढ सकल्प ले।

इस समारोह का समापन कराने हेतु महान् कर्मकाण्डी वेदज्ञ विद्वान श्री प० राजगुरु शर्मा इन्दौर पधार चुके हैं उनके वेदप्रवचन का जनता पर गहरा प्रभाव पडा। उनके ही आचार्यत्व मे १ जून को प्रात यज्ञानुष्ठान का समापन समारोह होगा। अपने दोनो नेताओ को स्टेशन पर आर्यों ने भावभीनी विदाई दी।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No 3238 /77 Post in N D P S O on 15 16 6 89 Licenced to post without prepayment Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसस न० यू १३६

नारी मुक्ति दिवस

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार दाल बाजार लुधियाना मे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आदेशानुसार २८ ५ ८९ रविवार को (नारी मुक्ति दिवस) मनाया गया इस समारोह की अध्यक्षता सभा के महामन्त्री मा त्र श्री रणवीर जी भाटिया ने की प्रातः तीन हवन कुण्डों मे विशेष यज्ञ किया गया। जिसे श्री सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री ने सम्पन्न कराया इस अवसर पर काफी सख्या मे आर्य जन यजमान बने। तत्पश्चात सभा के भजनोपदेशक श्री जगतसिंह जी वर्मा के मधुर भजनो ने मन को मन्त्रमुग्ध किया। श्री जगत सिंह जी २१ मई के ... तक प्रतिदिन आर्य समाज ... मे वेदप्रचार करते रहे। समारोह के मुख्य वक्ता डा० ... जी शास्त्री एम ए पी एच डी थे। उन्होने आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमारी भारतीय संस्कृति मे नारी का स्थान सबसे ऊचा है। नारी पुरुषो से सदैव ही आगे रही है। यही हमारा निर्माण करने वाली है। आज नारी पर जो अत्याचार हो रहे हैं उन्हे दूर करना होगा और जो शिक्षित माताएँ बहनें हैं वह इस कार्य मे आगे आयें। इसके पश्चात श्री बलवीर जी शास्त्री दिल्ली से पधारे हुए थे उन्होने भी समारोह को सम्बोधित किया और कहा कि महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने ही सर्वप्रथम नारी की श्रेष्ठता बताई और उन्हे स्वर्ग का द्वार बताया। धीरे धीरे आज सारा संसार ऋषि के बताए मार्ग पर आ रहा है। सभा के मा० महामन्त्री श्री रणवीर जी भाटिया ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि नारी के सहयोग के बिना हम किसी भी क्षेत्र मे उन्नति नही कर सकते। आज भी कई स्थानो पर नारियो के ऊपर भारी अत्याचार हो रहे हैं। कही दहेज के कारण तो कहीं अशिक्षा के कारण कही गरीबी के कारण। इन सभी सामाजिक व धार्मिक बुराइयो के प्रति एक व्यापक आन्दोलन आरम्भ करने की आवश्यकता है ताकि महिलाओं पर हो रहे अत्याचार बन्द हो। उन्होने बड़े जोरदार शब्दो मे कहा कि नारियों को अज्ञानता के कारण बुतपरस्ती कब्रो का पूजन व ऐसे अधर्मी साधु सन्तो के पीछे आंख मूंदकर चलकर अपने घरों का सत्यानाश कर रही हैं इससे उनकी मुक्ति कराने की आवश्यकता है। इस समारोह को सफल बनाने मे स्त्री आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार की बहनो का भी पूरा पूरा सहयोग रहा। बहन भारी संख्या मे आई हुई थी और इस विषय मे प्रस्ताव भी पास किया गया जो प्रधानमन्त्री भारत सरकार गृहमन्त्री भारत सरकार व राज्यपाल पंजाब सरकार को भेजा गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा ... प्रेस गली न०१७ कैलाशनगर दिल्ली ३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

वर्ष १२ : अंक ३३ | रविवार २५ जून १९८९ | आषाढ सम्वत् २०४६ विक्रमी | दयानन्दाब्द—१६५ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश मे ५० पौंड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

महान् उद्देश्यों के साथ अपने आप को जोड़ने वाले तथा उन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अपना उत्सर्ग कर देने वाले व्यक्तियों को सदैव स्मरण किया जाये

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने आर्यसमाज गाजियाबाद के प्रमुख कार्यकर्ता एडवोकेट श्री मनमोहन दास के आकस्मिक निधन पर शोक सभा मे अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि श्री मनमोहनदास केवल एक व्यक्ति नही थे, बल्कि वे तो एक जीती जागती सस्था थे। श्री मनमोहन दास को मैने पिछले ४० वर्षों मे अनेक बार आर्य वीर दल तथा आर्यसमाज के कार्यों को पूर्ण निष्ठा भावना से करते हुए देखा है। उनके नेतृत्व मे आर्यसमाज के कार्य को देख कर मैं सदा निश्चित हो जाया करता था और मैं ये जानता था कि वे अपने कार्य मे अवश्य ही सफल होगे। श्री मनमोहन दास आर्यसमाज के कार्य को पूर्ण निष्ठा से करते थे, इसके अतिरिक्त मोहल्ले के और नगर के जो भी समाज कल्याण के कार्य होते थे, उनमे वे कभी पीछे नही रहे। उन्होने रौटरी क्लब के माध्यम से भी जनता की सेवा की। वे एक कुशल वकील थे और आर्यसमाज सम्बन्धी गाजियाबाद के जितने भी मुकद्दमे थे, वे उन्ही को सौंपे जाते थे। यह हमारी खुशकिस्मती थी उनके रहते हमे किसी भी वाद मे हार नही मिली। उस व्यक्ति का जीवन सफल माना जाता है जिसके जन्म लेने से उस का वश और परिवार आगे बढे। और हमे इस बात की खुशी है कि श्री मनमोहन दास का परिवार फलफूल रहा है, उनकी सामाजिक एव धार्मिक कार्यों मे गहन रुचि है। इस शोक सभा मे आर्यसमाज कालका जी के श्री विजयेन्द्र कुमार सिंघल दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मह मन्त्री श्री सूर्य देव, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, बार ऐसोसिएशन मेरठ और गाजियाबाद के अनेक सुप्रसिद्ध वकील स्थानीय आर्यसमाजो के तथा अन्य सामाजिक सगठनो के अधिकारी एव कार्यकर्ता बहुत बडी सख्या मे सम्मिलित थे।

O

आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि हम लोग मिल करके कार्य करें : सूर्यदेव

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की सहयुक्त सदस्यो के निर्वाचन के लिए एक बैठक आर्यसमाज हनुमान रोड के सभागार में शनिवार १७ जून १९८९ को सायकाल सभा प्रधान महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। सभा की औपचारिक कार्यवाही के पश्चात दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री एव आर्य केन्द्रीय सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सूर्य देव ने प्रस्ताव रखा कि हम सब उपस्थित लोगो का एक ही उद्देश्य है कि हम आर्यसमाज का प्रचार प्रसार करे वैदिक धर्म को जन-जन तक पहुचाये। यह कार्य सुचारु रूप से तभी किया जा सकता है जब हम सब लोग सगठित होकर कार्य कर। परन्तु पिछले कुछ दिनो से कुछ ऐसे असामाजिक तत्त्व आर्यसमाज मे आ गये हैं, जो काम करते हुए लोगो के विरुद्ध कोई न कोई बहाना ढूढकर कीचड उछालने की कोशिश करते हैं और उस समय और भी अधिक दुख होता है जब ऐसे व्यक्तियों के विरोध मे अनर्गल प्रचार किया जाता है, जिन्होने अपना घर बार छोडकर आर्यसमाज के लिए अपना जीवन दान भी दिया हुआ है। ऐसे महानुभावों को भी नही छोडा जाता जो आर्यसमाज के कार्य मे हर प्रकार से आर्थिक सहयोग देते हैं। इन लोगो ने लाखो रुपया प्रतिवर्ष आर्यसमाज के काम को आगे बढान मे दान दिया है। विद्वान लोगो को भी नही बख्शा जाता। आर्यसमाज के कार्य को आगे बढाने के लिए विद्वानो का भी आगे आना आवश्यक है। परन्तु वे जब देखते हैं कि अधिकारियो एव कार्यकर्ताओ तथा सन्यासी और विद्वानो के ऊपर कीचड उछाली जा रही है, तो वे लोग पीछे हट जाते हैं। आर्यसमाज का कार्य सामूहिक दायित्व का कार्य है। इस कार्य को कोई अकेला व्यक्ति नही कर सकता। इस को करने के लिए हमे विद्वान् भी चाहिए दान-

(शेष पृष्ठ २ पर)

आर्य केन्द्रीय सभा का वार्षिक अधिवेशन

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि आर्य केन्द्रीय सभा का वार्षिक चुनाव २ जुलाई १९८९ को साय ४ बजे आर्यसमाज हनुमान रोड के सभागार मे होगा। सभी आर्यसमाजें अपने दो-दो प्रतिनिधि भेजकर अनुगृहीत करे। जिन आर्यसमाजो ने अभी तक वर्ष १९८८-८९ की पर्व-राशि और १९८९-९० का सम्बन्ध शुल्क तथा सदस्यता शुल्क ७० रु० नहीं भेजा है, कृपया अविलम्ब सभा कार्यालय में जमा करा दें अथवा २ जुलाई को साथ लेते आयें।

निवेदक
डा० शिवकुमार शास्त्री
महामन्त्री

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

ब्रह्मचारिण पितरो देवजना
पृथग् देवा अनुसयन्ति सर्वे।
गधर्वा एनमन्वायन् त्रयस्त्रिशत त्रिशता,
षटसहस्त्रा सर्वान्त्स देवास्तपसा पिपर्ति ॥

अथर्व० काण्ड ११, अ० ३, सूक्त ५,२।

देव कौन हैं? 'देवो दानाद्वा, दीपनाद्वा, द्योतनाद्वा, द्यु स्थानो भवतीति वा' दान देने से, प्रकाश करने मे, उपदेश देने मे (दूसरे के अन्दर चादना करने मे) और सब प्रकाशो की स्थिति का स्थान होने से देव कहाता है। पहले दान देने वाले देव दूसरे प्रकाश करने वाले सूर्यादि देव, तीसरे उपदेश से अन्दर चादना देने वाले माता-पिता और आचार्य देव और चौथे प्रकाशको की भी स्थिति का स्थान परमात्मा परम देव है। देव समूह मे अग्नि, पृथिवी, वायु, अन्तरिक्ष, आदित्य, द्यौ चन्द्रमा और नक्षत्र, आठ वसु कहलाते हैं क्योकि सब पदार्थ इन्ही मे निवास करते हैं। दस प्राण और ११वा जीवात्मा इसलिए रुद्र कहलाते हैं क्योकि जब ये शरीर से निकलते है तो मत के सम्बन्धियो को रुलाते है। मवत्सर के बारह महीने आदित्य कहलाते हैं क्योकि ये आयु को क्षाण करते चले जाते हैं। ३१ ये और व्यापक विद्युत तथा यज्ञ सब मिलाकर तैतीम देव समूह हैं। इन्ही का विस्तार ३३३ और ६३३३ तक पहुचता है। ये सब देव समूह और जुद-जुदे देव, सब ब्रह्मचारी के पीछे चलन है—अर्थात ब्रह्मचारी के स्वभावत अनुकूल ये शक्तिया हो जाती है। उसके मार्ग मे ये शक्तिया वाधक नही होती। और गन्धर्व भी उसके साथ चलने हैं, उसका रास्ता साफ करते हैं। ये गन्धर्व कौन हैं? गाम धारयन्ती त ये ते गन्धर्वा इन अर्थो मे जो अनगिनत सूर्य लोक ब्रह्माण्ड को प्रकाशित कर रहे हैं वे गन्धर्व है। फिर शतपथ मे लिखा है—'अहोरात्राणि वै गन्धर्वा दिन रात भी गन्धर्व हैं। यह दिन रात का चक्र सबको घुमाता है और बुद्धि को डावाडोल कर दता है। परन्तु ब्रह्मचारी को वह भी हिला नही सकता।

क्यो सब देव ब्रह्मचारी के पीछे-पीछे चलते हैं? इसका उत्तर माधारण व्यक्तियो के जीवन मे ढूंढिये। जिसका वीर्य सुरक्षित नही वह माथे की तेजमय अग्नि को मन्द कर देता है। जिसका शरीर तप से शुद्ध नही वह मल-मूत्र के अनुचित त्याग से पृथिवी को गन्दा कर देता है। जिसका मन वश मे नही वह वायु और अन्तरिक्ष को निर्बल करने की चेष्टा करता है और जो अविद्या का दास है उससे उठे हुए बादल सब प्रकाशमान पदार्थों को मन्द कर दते हैं।

अब्रह्मचारी से रुद्र पीडित और आदित्य दुखी रहते हैं। विद्युत और यज्ञ उसकी जान को रोते हैं। परन्तु ब्रह्मचारी अपने तप से इन सब को उत्तेजित करता है। ब्रह्मचारी का क्रियात्मक उपदेश इन सब देवो को शान्त कर के भरपूर कर दता है। दिन-रात, उलटे चलने के स्थान मे सीधे चलने लगते हैं। ब्रह्मचारी का जीवन जगत् की काया पलट देता है। ज्ञान गोष्ठी तो और भी महापुरुष करते थे परन्तु बुद्धदेव ने क्यो वाममार्ग के घोर बादलो को छिन्न-भिन्न कर के चिरस्थाई प्रभाव ससार पर छोडा। ईमा ने क्यो मसीह की पदवी पाई और उसके उपदेश ने क्यो सदियो तक करोडो को शान्ति का पाठ पढाया? इन सबमे बढ कर प्राचीन काल मे रामचन्द्र तथा सीता के जीवन ने क्यो ऐसा उच्च पद प्राप्त किया कि उन के जीवन की कथा के पाठमात्र मे अब तक स्त्री पुरुष पवित्र जीवन लाभ करते हैं? और इस समय ऋषि दयानन्द के जीवन का पाठ करके क्यो लाखो आत्मा सन्मार्ग मे चल कर शान्ति लाभ कर रहे हैं। उत्तर एक ही है कि ये सब महापुरुष ब्रह्मचारी थे।

(सर्वे पितर देवजना) सब पालक देव समूह और (पृथक देवा.) जुदे जुदे देव (ब्रह्मचारिणम् अनुसयन्ति) ब्रह्मचारी के पीछे पीछे चलते हैं। (गधर्वा एनम् अनु आयन्) गन्धर्व भी इसके साथ (अनुकूल) चल रहे हैं (त्रयस्त्रिशत् त्रिशता षट् सहस्रा, सर्वान् देवान् स तपसा पिपर्ति) सब—३३×३३३×६३३३—देवो को वह (ब्रह्मचारी) तप से पूर्ण करता है। □

सौर ऊर्जा

ओ३म् स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ॥

अदिति अखण्डित धरा बनाये, प्रभु अखण्ड व्रत मगल लाये।
ऐश्वर्य सकल लेकर आये, विद्याएँ सब सुख वर्षाये ॥
दैहिक प्राण अपान हमारे
ये लाये कल्याण-सहारे
गौएँ सजे इन्द्रियाँ सारी
पोषित होकर स्वस्ति प्रचारे।
जहा-जहा विचरण को जाये, वही रेवती बनकर आये।
ऐश्वय सकल लेकर आये, विद्याएँ सब सुख वर्षाये ॥
यह इन्द्र सूर्य का अग्नि रूप
यह सौर ऊर्जा का स्वरूप
आ जीवन मे निर्माण करे
देकर वैभव को धवल धूप।
विधि सौर ऊर्जा हम पाये, समझो इन्द्र कृपा कर जाये।
ऐश्वर्य सकल लेकर आय, विद्याएँ सब सुख वर्षाये ॥
अग्नि तुम्हारा विद्युत् स्वरूप
निर्माण रचाय विविध रूप
सब सुविधा शक्ति यही देती
देती जल पोषक दुग्ध कूप।
प्रिय भूमि कृपा दृढ विकसाये, कल्याण सुदृढ ईश्वर लाये।
ऐश्वर्य सकल लेकर आये, विद्याएँ सब सुख वर्षाये ॥

—देवनारायण भारद्वाज

(पृष्ठ १ का शेष)

दाता भी चाहिए और समर्पित एव निष्ठावान कार्यकर्ता भी चाहिए। मेरा सभी उपस्थित आर्य बन्धुओ से विनम्र निवेदन है कि किसी प्रकार की कीचड न उछाले तथा जो व्यक्ति ऐसा कार्य कर उन की भर्त्सना करे। श्री सूर्यदेव जी का यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ तथा सभी महानुभावो ने यह निर्णय किया हम सब लोग मिल करके आर्यसमाज का कार्य पूर्ण निष्ठा एव जिम्मेदारी से करेंगे। सभाप्रधान महाशय धर्मपाल जी ने अपने वक्तव्य मे कहा कि आर्यसमाज का काम पिछड रहा है क्योकि हम सब लोगो को समान अवसर नही देते। बहुत सारे हमारे दलित भाई मुसलमान, ईसाई अथवा सिख बन रहे हैं, क्योकि वे जानते हैं कि धर्मान्तरण करने से उन को सभी सुविधाएँ प्राप्त होगी, उन्हे ऊँचे पद मिलगे तथा समाज मे उन को सम्मान भी मिलेगा। प्रधान जी के इस वक्तव्य पर सभी सदस्यो ने इन परिस्थितियों के प्रति दुख व्यक्त किया तथा कहा कि हमे ऐसी कोशिश करनी चाहिए कि दलित भाई हम से बिछुडे नही। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने कहा कि पिछले दिनो ऐसी परिस्थितिया बुलन्द शहर, मेरठ तथा गाजियाबाद के अनेक ग्रामो मे हुई। श्री बाल दिवाकर हस ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचार वाहन मे इन स्थानो का दौरा किया तथा पाया कि वहा के उच्च वर्ग के लोगो ने वास्तव मे ही इन लोगो के प्रति ज्यादतिया की थी। १२ फरवरी १९८९ को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनद बोध सरस्वती, केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० शिव कुमार शास्त्री, सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बालदिवाकर हस चादपुर गए और उन्होने सैकडो लोगो को विधर्मी होने से बचाया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती रविवार १८ जून १९८९ को खुर्जा और हापुड की आर्यसमाजो मे गये तथा वहा पर आर्यजनो की उन गोष्ठियो को सम्बोधित किया, जो इन परिस्थितियो से निपटने के लिए आयोजित की गई थी। इन सभाओ मे उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प० इन्द्रराज भी सम्मिलित थे। धर्मान्तरण का यह विषधर सम्पूर्ण भारत के कोने-कोने मे फैला हुआ है। इसका फल हम सब लोग मिल कर ही कुचल सकते हैं। एक दूसरे पर दोषारोपण करके नही। आर्य केंद्रीय सभा की इस बैठक मे दिल्ली की लगभग २०० आर्यसमाजो के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। □

ओ३म्
आर्य सन्देश

तम्बाकू रहित दिवस

विश्व स्वास्थ्य सगठन की ओर से पिछले दिनो तम्बाकू रहित दिवस का आयोजन किया गया। उन्होने विषय रखा था कि औरतो का धूम्रपान ज्यादा खतरनाक है। इस मौके पर विश्व स्वास्थ्य सगठन ने विश्व भर के तम्बाकू सेवन करने वालो से अपील की थी कि वे कम से कम एक दिन तम्बाकू का सेवन न करे। सगठन के दक्षिण पूर्व एशिया के क्षेत्रीय निदेशक डा० यूकोको ने कहा कि तम्बाकू से पैदा होने वाली बीमारियाँ बहुत तेजी से बढ रही हैं। इसकी वजह से मृत्यु दर मे भी बढोतरी हुई है। सास की बीमारियाँ ऐसी हैं, जिन पर काबू पाया जा सकता है। उन्होने बताया कि एक सर्वेक्षण के आधार पर जो व्यक्ति निरन्तर तम्बाकू का सेवन करते थे, उनको सास की बीमारी बहुत अधिक थी। परन्तु जब उन्होने तम्बाकू का सेवन छोड दिया तो २२ प्रतिशत व्यक्ति पूर्णतया सास की बीमारी से मुक्त हो गये। तम्बाकू का सेवन करने से एशिया मे बीमार लोगो की सख्या कुछ सालो मे बहुत अधिक बढी है। फेफडो मे कैसर के लिए तो ६० प्रतिशत रोगियो मे धूम्रपान जिम्मेदार है। अकेले भारत मे ६ लाख ३० हजार मौत प्रतिवर्ष धूम्रपान के कारण होती हैं। गले का कैसर भी तम्बाकू खाने से हो होता है। भारतीय चिकित्सा अनुसन्धान परिषद ने जानकारी दी है कि तम्बाकू से पैदा होने वाली बीमारियो से मरने वालो की सख्या १० लाख तक पहुच गई है। १५ साल से ज्यादा पुरुषो मे ७० फीसदी लोग और महिलाओ मे २५ फीसदी तम्बाकू का सेवन करते हैं। भारतीय चिकित्सा अनुसन्धान परिषद् के मुताबिक धूम्रपान की वजह से ४० साल से कम उम्र के लोगों को दिल का दौरा पडने का ज्यादा खतरा है। जिन युवा लोगो को दिल का दौरा पडा है, उनमे ७६ फीसदो धूम्रपान करते रहे हैं। धूम्रपान से कैसर, मुह और गले की बीमारियाँ होती हैं। ज्यादा धूम्रपान करने वालो की कसरत करते समय या कसरत के फौरन बाद अचानक मृत्यु हो सकती है। यह निष्कर्ष हार्ट केयर फाउण्डेशन आफ इण्डिया की तरफ से किये गये अध्ययन से निकला है। फाउण्डेशन के अध्यक्ष श्री के०एल० चोपडा ने कहा कि रोज २ बार २० मिनट तक ध्यान लगाने से धूम्रपान की आदत से छुटकारा पाया जा सकता है। उन्होने सरकार से अपील को कि सभी सार्वजनिक स्थलो पर धूम्रपान पर प्रतिबन्ध लगा देना चाहिए। तम्बाकू सेवन के दुष्परिणाम को लेकर पिछले दिनो अनेक कार्यक्रम हुए। भारतीय लोगो को इन तथ्यो से सीख लेनी चाहिए तथा धूम्रपान जैसी बुरी आदत से दूर रहना चाहिए।

आर्यसमाज में युवा शक्ति के प्रवेश हेतु

आर्य वीर दलों के देशव्यापी स्थापना का आहवान

१८ जून १६८१ को खुर्जा के निकट जहागीरपुरी मे आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह पर आर्य वीरो, आर्य जनता और विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने सन्तोष व्यक्त किया कि पिछले वर्ष से देश के विभिन्न क्षेत्रो मे आर्य वीर दल के प्रशिक्षण शिविर तेजी के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हो रहे हैं। स्वामी जी ने युवा वर्ग को आर्यसमाज मे दीक्षित करने मे आर्य वीर दल की भूमिका की सराहना की और आर्य वीर दलो के देशव्यापी स्थापना का जोरदार आह्वान किया।

इससे पूर्व स्वामी जी ने प्रात आर्यसमाज खुर्जा के साप्ताहिक सत्सग मे आर्य जनो से आपस मे मिलकर काम करने की प्रेरणा करते हुए इस क्षेत्र के सभी आर्य बन्धुओ की प्रशसा की। उन्होने वैदिक धर्म के प्रचार के लिए वहा कार्य किया। खुर्जा मे स्वामी जी का जोरदार स्वागत किया गया और सारा नगर उनके सम्मान मे पूरी तरह सजाया गया था। स्वामी जी वहा से आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ के साथ १८ किलोमीटर दूर जहागीरपुरी मे आर्य वीर दल के दीक्षान्त समारोह मे भाग लेने पहुचे।

उत्तरप्रदेश में सिखीकरण की लहर ठण्डी

८४ में ७५ नये सिख पुनः हिन्दू बने

१८ जून १६८१ को आर्यसमाज हापुड मे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री इन्द्रराज जी की अध्यक्षता मे आयोजित सम्मेलन मे इस क्षेत्र के दूरस्थ ग्रामीण अचलो से भारी सख्या मे आर्यसमाज के अधिकारियो सनातन धर्म सभा के प्रमुख एव अनेक पत्रकारो व कार्यकर्ताओ ने भाग लिया था।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने हरिजनो को सिख बनाए जाने के आन्दोलन पर टिप्पणी करते हुए कहा कि पजाब आज भी उग्रवाद मे जल रहा है। यहा भी कुछ अलगावादी तत्त्व छद्मवेश मे सिखो और हिंदुओं मे अलगाव पैदा करने के निमित्त उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रो मे अमृत छकाने और नये गुरुद्वारे बनाने को आड मे पजाब से शरण लेने इधर आ रहे है और इन क्षेत्रो मे अपने गुप्त अड्डे व योजनाएँ बना रहे है। स्वामी जी ने कहा इस क्षेत्र के कुछ शरारती तत्त्व भी सक्रिय होकर उनका साथ दे रहे हैं। उन्होने सरकार से माग की कि वह जल्दी ही इस सुलगती आग को सख्ती से बुझाए।

सविता देव का भर्गः स्वरूप

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष वैदिक सस्थान नजीबाबाद (उ०प्र०)

ओ३म भूर्भुव स्व । तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो दवस्य धीमहि। धियो यो न प्रचोदयात ॥ —यजु० ३६।३

(भू) भू सत्तायाम परमात्मा की सत्ता है। चाहे वह दृष्टिगोचर न हो किन्तु उसकी सत्ता तो सवत्र विद्यमान है। दृष्टिगोचर तो ससार के अनेक पदाथ नही होते किन्तु उनकी सत्ता से इनकार नही किया जा सकता। गन्ध की आकृति किसी ने नही देखी किन्तु वह है और आकाश मे रहता है। आकाशवाणी (रेडियो) पर तो सहस्रो मील से आने वाले शब्द सुने ही जाते है वह किसी तार आदि के आश्रय से एक स्थान से दूसरे स्थान का नही भेजे जाते अपितु बिना तार के ही आकाश मे होकर आ रहे होते है किन्तु दृष्टिगोचर नही होते। यह तो दूर की बात हुई इसके विषय मे सम्भवत यह कहा जा सके कि दूरस्थ होने मे अनेक पदाथ नही दीखते शब्द का न दीखना भी उसी कोटि का है। दिन रात मानव परस्पर वार्तालाप करते हैं किसी भी बोलने वाले के मुह से सुनने वाले के कान तक कोई तार नही लगा होता परन्तु फिर भी शब्द दिखाई नही देता। इसका अथ यह नही कि शब्द है ही नही। यदि शब्द होता नहा तो सुनाई भी नही देता। किसी वस्तु के न दिखाइ देने से यह कल्पना कर लेना कि वह है ही नही होती तो दिखाई देती नितान्त भूल है। शब्द ही क्या? इसी प्रकार के अनेक पदाथ इस ससार म है कि जिन्ह हम नही देख पाते।

वायु ससार मे सवत्र गति कर रहा है। वायु के बिना हम एक क्षण भी जीवित नही रह सकते। वायु के होने से उसके अस्तित्व से इनकार का कोइ मनुष्य नकार नही सकता किन्तु वायु को हम देख नही सकते। सुगन्ध और दुगन्ध के अस्तित्व से भी नकार नहा किया जा सकता किन्तु दृष्टिगोचर यह भी नही होती। खट्टा मीठा आदि पट रसो के ही किसने दशन किये है किन्तु हैं यह भी। भूख प्यास सर्दी गर्मी सुख दुख कठोरता नरमी आदि भी इसी प्रकार की है जिनकी हम अहोरात्र तथा पग पग पे अनुभूति करते रहते हैं किन्तु चम चक्षु से इन्ह भी नही देख पाते। कोई इनके अस्तित्व से नकार करने का दुस्साहस नही कर सकता। जब इतने पदार्थों के दृष्टिगोचर न होने पर भी इनके अस्तित्वो से नकार नही किया जा सकता—तब उस परमपिता परमेश्वर के दृष्टिगोचर न होने मात्र से उसके अस्तित्व से नकार किस प्रकार किया जा सकता है?

भूरिति वै प्राण भू निश्चय पूवक प्राण है। वह प्रभु प्राण है प्राणस्वरूप है। न होता प्राण स्वरूप तो सृष्टि उत्पत्ति से पहले आनीद वात स्वधया तदकम (ऋग्वेद) आनीत अवात स्वधया तत एकम (अवात) बिना वायु (तत एकम) वह अकेला (स्वधया) स्वधारणा से स्व धारण शक्ति मे (आनीत) श्वास ले रहा था जीवित था बिना प्राण के जी रहा था प्राण नाम वायु का है—बिना वायु के ही जी रहा था। वायु था ही कहा तब जब सृष्टि नही तो वायु कहा से आया। वायु भी तो मजा ही गया है सज वत्तमाना नाम जब सजन नहा हुआ था तो वायु भी नहो था। तभी तो परमात्मा प्राण स्वरूप है। सत्य तो यह है कि इस वायु म भी शक्ति उसी प्राण स्वरूप प्रभु की कृपा से है। उस परम देव ने ही प्रकृति के परमाणओ को एकत्र करके इस वायु का निर्माण किया है जो प्राणि मात्र के जीवन का कारण है। परमात्मा इस भौतिक वायु को बना कर प्राणी मात्र का जीवन देने से जीवनो का भी जीवन प्राणो का भी प्राण है। इतना विवेचन यह परिणाम निकलने के लिए पर्याप्त हैं कि न केवल प्रभु है ही अपितु प्राण स्वरूप है और सार प्राणी जगत म भी जीवन का कारण अर्थात प्राणो का भी प्राण है।

(भुव) भुवरित्यपान य सव दुखमपानयति सोऽपान जा सब दुखो मे रहित तथा जिसके सग से जीव सब दुखो से छट जाते हैं इस लिए उस परमेश्वर का नाम भुव है। वह परमात्मा समस्त जीवो के दुखो को दूर करने वाला है किन्तु जीवो का काय है कि उन प्रभु का सग प्राप्त करे। जीव और परमात्मा के व्याप्य व्यापक सम्बन्ध के कारण सग तो अनायास ही बिना प्रयत्न किये हो प्राप्त है तब सग प्राप्त करने का क्या अथ? जिस प्रकार बिना विधिपूवक प्रयत्न किये वस्त्रो के ऊपर रखा हुआ भी साबुन वस्त्रो को स्वच्छ नहो कर सकता यद्यपि उसमे मैल को दूर कर वस्त्र को स्वच्छ करने की शक्ति है उसी प्रकार परमात्मा के जीवात्मा मे व्यापक होने मात्र मे जीव के दोष दूर नही हो सकते और दोषो का परिणाम दुख उसे यथा तथ्य रूपेण प्राप्त होता ही रहेगा। दुख नाश के लिए तो उसे परमात्मा की शक्ति और न्यायव्यवस्था को समझना ही होगा तभी दुख नाश का लाभ प्राप्त हो सकेगा।

(स्व) स्वरिति व्यान यो विविध जगद व्यानयति व्याप्नोति स व्यान जो नाना प्रकारेण जगत मे व्यापक होकर सब का धारण करना है इसलिए परमात्मा का नाम स्व है तथा स्व नाम सुख का है। परमात्मा स्वय सुख स्वरूप है उसमे दुख का नितान्त सवथा अभाव है। उसे कभी दुख नही सताते अत वह सुख स्वरूप सुख का भण्डार तथा सुख का हेतु है। ससार के सारे सुख तो वास्तव मे सुखाभास मात्र ही हैं। उनमे सुख का आभास मात्र ही है परिणाम नो उनका दुख ही है। जहा भोग तहा रोग वाली लोकोक्ति ठीक ही है। भोग से रोग उत्पन्न होते है रोगो से कष्ट होता है अत ज्ञात हुआ कि सासारिक सुखो के साथ दुख लगे ही रहते हैं। दुखो का जहा नितान्त अभाव हो—वह तो वही है—वही सुख स्वरूप परमात्मा अत उसी का सग प्राप्त करने का उपाय करना चाहिये यही चरम और यही परम लक्ष्य होना चाहिए। उसी की प्राप्ति मे मानव जीवन की सफलता है इतनी इतनी बड़ी सफलता जिसका विवेचन इस अल्पज्ञ की जीवात्मा की शक्ति के बाहर है। है भी तो भूभुव स्व प्राणो का प्राण अर्थात प्राणी मात्र के जीवन का कारण दुखो का नाशक तथा सुखो का भण्डार।

(तत) उस (सवितु) सर्वोत्पादक सब के उत्पन्न करने वाले य सुनोत्युत्पादयति सव जगत् स सविता तस्य जो सब जगत को उत्पन्न करने वाला है। है ही इसमे सन्देह को स्थान ही कहा है? कोई है ससार मे जो यह कह सके कि इस ससार को अमुक आदमी ने बनाया है। कोई भी जब नही था तब भी वह था हिरण्यगभ समवत्त ताग्रे भूतस्य जात पतिरेक आसीत। ऋ० १०।१२१।१ उत्पन्न हुए प्राणि मात्र का वह एक हिरण्यगभ स्वामो सृष्टि की उत्पत्ति से पहले था। उसी हिरण्यगभ परमदेव ने तञ्च सत्यञ्चाभीद्धातपसोऽध्यजायत ऋत यथाथ शाश्वत नियमो और सत्य स्वरूपा प्रकृति से स्व सामथ्य मे इस सृष्टि को उत्पन्न किया।

और किसमे था यह सामथ्य? कौन कर सकता था इतना बडा पुरुषाथ? यह तो सब उसी महाबली तपस्वी और पुरुषार्थी का महान तप और परम पुरुषाथ है। तो हम उसी महाबली तथा परम तपस्वी सब के उत्पन्न करने वाले (देवस्य) देव के दिव्य स्वरूप के यो दीव्यति दीव्यते वा स देव जो सब सुखो का सुख के साधनो का देने वाला प्रभु है वा देवो दानाद्वा दीपनाद्वा द्योतनाद्वा दान देने वाला दे रहा है वह महादानी है उसके भण्डार सदा खुले हैं। भूल यदि है तो लेने वालो की दने वाले की नही। दीपनाद्वा वह दीप्त हो रहा है प्रदीप्त हो रहा है दोष उसका नही हमारी दृष्टि का है। उर्दू के कवि के शब्दो मे वह तो पुकार पुकार कर कह रहा है—

रौशन हैं मेरे जलवे तो
हर शै मे लेकिन।
है नज़र कोर नही तेरी
क्या है कुसूर मेरा॥

द्योतनाद्वा वह द्योतन कर रहा है जहा स्वय प्रकाशित है वहा अन्यो को भी प्रकाश प्रदान कर रहा है। यदि कोई उसके प्रकाश से लाभ न उठाये तो दोष किसका? सूय तो बराबर आकाश से अपनी पूरी शक्ति के साथ अपनी रश्मियो को फैलाकर प्रकाश बखेर रहा है किन्तु उलूक उससे लाभ नही उठा पाता। इसमे सूर्य का क्या दोप? वह परमात्मा तो देव है उसी सर्वोत्पादक परम देव परमात्मा के (वरेण्यम) वर्त्तुं महम् स्वीकार करने वरण करने योग्य अत्यन्त श्रेष्ठ (भर्ग) शुद्ध स्वरूप [जो है उस] को (धीमहि) धरेमहि धारण करें।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्वाध्याय पत्राचार पाठ्यक्रम

स्वाध्याय के महत्त्व एवम् आवश्यकता को ध्यान मे रखते हुए तैतिरीयोपनिषद् मे लिखा हे कि "स्वाध्यायान्मा प्रमदितव्यम्" अर्थात् स्वाध्याय करने मे कभी भी आलस्य और प्रमाद नही करना चाहिए। वेदादि शास्त्रों के स्वाध्याय से मानसिक मलिनता दूर होती है, बौद्धिक विकास होता है तथा आध्यात्मिक प्रवृत्ति बने रहने से भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति को प्राप्त करने मे सफलता प्राप्त होती है। इसीलिए महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने आर्यसमाज के तृतीय नियम मे लिखा है कि वेद का पढना और पढाना सब आर्यों का परम धर्म है। स्वाध्याय के न करने से अनेक हानिया हुई है। जैसे—

१—धर्म के स्थान पर सम्प्रदायो का प्रारम्भ होना, जिससे मनुष्यो मे आपसी ईर्ष्या, द्वेष और वैमनस्य के कारण कलह व झगडे होते रहते हैं।

२—बुद्धि एवम तर्क का स्थान अन्धविश्वास ने ले लिया है, जिससे अनेक वैदिक परम्पराओ के विरुद्ध परम्पराए चल पडी हैं जैसे—

—ईश्वर की उपासना के स्थान पर जड पदार्थों की पूजा या मूर्ति पूजा,

—जीवित माता-पिता की सेवा के स्थान पर मतक पितरो का श्राद्ध,

—वर्ण व्यवस्था के स्थान पर जन्मगत जात पात, ऊच नीच, छुआछूत,

—नारी जाति को शिक्षा से वचित कर उसे पैरो की जूती या नरक द्वार समझना,

—समुद्र यात्रा को पाप मानकर विदेश आवागमन एवम व्यापार अवरुद्ध होने से देश का दरिद्र होते जाना।

३—विदेशी आक्रान्ताओ के द्वारा देश पर आक्रमण करने पर, अभी लडाई का मुहूर्त नही है, मन्दिर का झण्डा गिर गया है, देवी या भगवान् अप्रसन्न हैं इस प्रकार के अनेक अन्धविश्वासो ने वीर योद्धाओ को लडने से रोका परिणामस्वरूप देश परतन्त्र हो गया।

४—वर्णव्यवस्था तथा आश्रम प्रणाली प्राय समाप्त हो गई।

५—मानव निर्माण के सोलह सस्कार लुप्त प्राय हो गये।

६—कर्मफल व्यवस्था के स्थान पर क्षमावाद आ गया।

इस प्रकार की अनेक कुरीतियो को दूर करने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८७५ मे आर्यसमाज की स्थापना की तथा आर्यजनो के लिए स्वाध्याय की आवश्यकता बताते हुए आर्यसमाज के तृतीय नियम मे स्वाध्याय का निर्देश किया। ऋषिकृत ग्रन्थो के नियमित रूप से स्वाध्याय करने और तदनुकूल आचरण करने से अन्धविश्वास से मनुष्य दूर रहता है। ईश्वर, धर्म और सस्कृति का ठीक ठीक स्वरूप ज्ञात करता है। व्यक्ति को स्वय, परिवार, समाज एवम् राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्यो का बोध होता है।

आज से पचास वर्ष पहले आर्यो मे स्वाध्याय के प्रति प्रबल रुचि थी, जिसके कारण आर्यजनो मे जागरूकता रही, अनेक ग्रन्थ लिखे गए और प्रकाशित हुए। उत्तर प्रत्युत्तर एवम शास्त्रार्थ के क्रम चलते रहे। धीरे-धीरे यह प्रवृत्ति कम होती जा रही है। जिससे ऋषि-मुनियो के ग्रथो मे उपलब्ध ज्ञान से हम वचित होते जा रहे है तथा जीवन की गतिविधियो मे वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार मे दिन प्रतिदिन कमी आती जा रही है। स्वाध्याय की कमी के कारण उच्च कोटि के ग्रन्थ प्रकाशित नही हो रहे हैं या जो हो रहे हैं वे बिकते ही नही हैं। स्वाध्याय के अभाव मे वैदिक परम्पराओ के विरुद्ध आर्यसमाज के मञ्च से कोई बोल देता है तो पता नही लग पाता है। अत आज आवश्यकता है कि हम स्वाध्याय पर विशेष ध्यान दे।

यह सदैव स्मरण रखे कि अपने जीवन के व्यस्त क्षणो मे प्रतिदिन नियमित रूप से कुछ समय स्वाध्याय के लिए अवश्य निकाले।

स्वाध्याय के प्रति रुचि जागृत करने के लिए हम "स्वाध्याय पत्राचार पाठ्यक्रम' प्रारम्भ करने जा रहे हैं। जिसमे प्रतिमास ४ या ६ पृष्ठो का वैदिक विषय पर एक लेख होगा। लेख के अन्त में कुछ प्रश्न दिये जावेगे जिनका उत्तर उसी लेख मे से खोजकर लिखना होगा। वर्ष के अन्तर्गत सब से अधिक उत्तर जिसके समुचित एवम् उपयुक्त प्रकार से प्राप्त होगे उन्हें पुरस्कृत किया जावेगा तथा स्वाध्याय प्रमाण पत्र प्रदान किया जावेगा। पाठ्यक्रम के दो स्तर होगे जिसमे बालको व प्रौढो को पृथक्-पृथक् वर्ग मे रखा जायेगा। जिनमे बालको के लिए ईश्वर, धर्म, शास्त्र, वर्णाश्रम, पचमहायज्ञ, सस्कार, पुनर्जन्म, कर्मफल व्यवस्था इत्यादि विषयो पर तथा प्रौढो के लिए वेद, उपनिषद्, दर्शन, ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका, सत्यार्थप्रकाश सस्कारविधि आदि ग्रन्थो के सम्बन्ध मे विषय वर्णन कर प्रश्न किये जायेगे। बाल पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष तथा प्रौढ पाठ्यक्रम की अवधि तीन वर्ष रहेगी। सम्बन्धित विषयो की विस्तृत जानकारी के लिए महत्त्वपूर्ण ग्रन्थो की सन्दर्भ सूची भी रहेगी। प्रतिमास पत्रिका आप तक नियमित रूप से पहुचती रही जिसमे मासिक पाठ्यक्रम विवरण व प्रश्न होगे इस हेतु नाममात्र का वार्षिक शुल्क रखा जावेगा।

अत आपसे निवेदन है कि इस विषय मे आप अपनी स्वीकृति या आवश्यक सुझाव हो तो देने की कृपा करे ताकि इस दिशा मे महत्त्वपूर्ण कार्रवाई प्रारम्भ की जा सके।

डा० सोमदेव शास्त्री,
३०४, सुमन अपार्टमेण्ट, यारी मार्ग,
वरसोवा, अधेरी, बम्बई, ४०००६१

माफ कीजिए, हम अंग्रेजों के गुलाम नहो रहे

भारत सरकार ने मुझे यहा दिल्ली मे पढने के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की है। मुझ से कहा गया था कि भारत मे हिन्दी पढने के लिए उपयुक्त वातावरण मिलेगा। पर यहा हिन्दी भाषी लोग हैं जो मुझ से हिन्दी मे बात करने से इन्कार करते हैं। मै उनसे कहता हू कि मुझे अग्रेजी नही आती क्योकि मेरे देश पर अग्रेजो ने शासन नही किया है। वे आश्चर्यचकित होकर अग्रेजी मे जवाब देते है, लेकिन मैं अग्रेजी जानता हूँ, मै पढा-लिखा हू।

एक बार एक दुकानदार के बेटे ने मेरे हर प्रश्न पर केवल 'येस" कहा, मैने पूछा कि क्या तुम 'येस' के अलावा और कुछ बोल सकते हो ? उसने उत्तर दिया नो इगलिश मैने पूछा मै तो तुम से हिन्दी मे बोल रहा हू। तुम मुझ मे हिन्दी मे क्यो नही बोलते ?

पिछले दिनो केन्द्रीय हिन्दी सस्थान की रजत जयती के उद्घाटन-भाषण मे प्रधानमत्री राजीव गाधी ने कहा कि हिन्दी अहिन्दीभाषियो पर थोपना उचित नही है। क्या समस्त भारत की जनता पर एक विदेशी भाषा (अग्रेजी) थोपना उचित है ?

पूरे भारत मे हिन्दी सस्थान की स्थापना करने मे और विदेशो मे छात्र बुलाने मे हिन्दी को उन्नति नही होगी। हिन्दी को प्रादेशिक भाषाओ से नही बल्कि अग्रेजी मे सघर्ष करना चाहिए। हिन्दी प्रतिष्ठा की भाषा बनी तो हिन्दी स्वत पूरे देश मे फैलेगी। आश्चर्य की बात है कि बेंगलूर मे रहने वाले हिन्दी भाषियो को कन्नड नही आती।

लज्जा की बात है कि भारत के राष्ट्रपति और प्रधानमत्री को हिंदी नही आती।

मैं हालैड का निवासी हू। मेरी मातृभाषा डच है। मेरे देश मे सारी शिक्षा, प्राथमिक से विश्वविद्यालय स्तर तक मातृभाषा के माध्यम से होती है हालाकि डच भाषा कम देशो मे बोली जाती है और उसे बोलने वालो की सख्या अधिक नही है। हमारा विचार है कि एक बच्चे को पहले अपनी मातृभाषा अच्छी तरह सीखनी चाहिए। स्कूल मे १२ वर्ष तक के छोटे छोटे बच्चो पर कोई विदेशी भाषा थोपना मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अनुचित है।

केन्द्रीय हिन्दी सस्थान द्वारा आयोजित हिन्दी कम्प्यूटरो की प्रदर्शनी मे एक विदेशी हिन्दी छात्र ने एक हिन्दीभाषी कम्प्यूटर विक्रेता से हिन्दी मे एक सवाल पूछा। इस बेचारे हिन्दी छात्र को प्रश्न का उत्तर अग्रेजी भाषा मे मिला।

एक बार हालैंड के सिनेमागृहो मे एक अमेरिकी फिल्म दिखाई गई जो भारत के लिए अत्यन्त अपमानजनक थी। यह फिल्म देखकर मेरे मन को ठेस पहुँची। इस फिल्म का डच भाषा मे अनुवाद किया गया था। कुछ दिनो बाद रूस के राजदूत ने समाचार पत्र मे एक लेख प्रस्तुत किया। उस मे लिखा कि हम ने उस फिल्म की भर्त्सना की है क्योकि वह फिल्म हमारे मित्र-देश भारत के लिए अपमानजनक है। भारत का दूतावास मौन था।

आलफस वानवेल, केद्रीय हिन्दी सस्थान,
पुरुष छात्रावास, साकेत, नई दिल्ली

—नवभारत टाइम्स के १६ मार्च, १९८९ के अक से साभार।

आर्य जगत के समाचार

दो शिक्षित मुस्लिम युवतियां हिन्दू धर्म में दीक्षित

कानपुर—आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर मे दो शिक्षित मुस्लिम युवतियो को उनकी इच्छानुसार आर्यसमाजी नेता एव केद्रीय आर्यसमाज के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने एक शुद्धि समारोह मे हिंदू धर्म मे प्रवेश कराया। श्री आर्य ने २० एव २१ वर्षीय इन युवतियो जो स्नातक तक शिक्षित हैं, के फातमा अथर से रश्मि तथा अनवरी बेगम से कु० अजलि रखे।

शुद्धि के पश्चात् रश्मि का विवाह वैदिक रीति से श्री दिलशेर सिह से कराया गया। दोनो युवतियो ने समारोह मे श्री देवीदास आर्य के प्रति आभार प्रदर्शित किए और कहा कि हिन्दू धर्म मे हम को पुरुष के समान दर्जा हासिल होगा यह बात हमे पसन्द है।

डा० कपिलदेव द्विवेदी द्वारा विदेशों में प्रचार

लदन भारतीय प्रसिद्ध वैदिक एवम् सस्कृत विद्वान् एवम् गुरुकुल महाविद्यालय हरिद्वार के कुलपति तथा विश्वभारती अनुसधान परिषद् (वाराणसी) के निदेशक आचार्य डा० कपिलदेव द्विवेदी ने लन्दन आर्यसमाज मे "वेदो मे मनोविज्ञान' विषय पर अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इस मन को मानव हृदय मे रहने वाली अमर ज्योति और अपूर्व यक्ष अर्थात् आदरणीय तत्त्व माना गया है। आपने कहा कि मन आत्मा का प्रतिनिधि है, अत उसे अनुपम यक्ष कहा गया है। मन ही प्रेरणा का स्रोत है, इसकी प्रेरणा से सारे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष कार्य होते हैं। मन वर्तमान, भूत और भविष्य सभी को अपनी परिधि मे रखता है, अत वेदो मे इसकी अनन्न शक्ति का उल्लेख है।

डा० द्विवेदी ने कहा कि मन को पवित्रता, विचारो की शुद्धि और तपस्या मुक्ति का साधन माना गया है। मनोबल वह शक्ति है जिससे विश्व विजय किया जा सकता है। आपने कहा कि वेदो मे मनोबल विज्ञान पर विशद विवरण हमे प्राप्त होता है।

बर्मिघम आर्यसमाज मे वेदो की उपयोगिता एवम् महत्त्व पर प्रकाश डाला। बर्मिघम आर्यसमाज की तरफ से डा० द्विवेदी का स्वागत श्री अगिरादेव प्रिजा तथा श्रीकृष्ण चोपडा ने किया तथा आपने डा० द्विवेदी को वेदामृतम् ग्रथमाला के १२ भाग प्रकाशित करने के लिए धन्यवाद दिया।

डा० द्विवेदी ने आर्यसमाज नाटिघम, आर्यसमाज मिडिलसेक्स, आर्यसमाज नार्थ लदन, हिन्दू सेन्टर, हिन्दू कल्चरल सोसाइटी तथा गीता भवन लदन मे वेद एव भारतीय सस्कृति के विभिन्न विषयो पर अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए।

डा० कपिलदेव द्विवेदी का बी० बी० सी० लदन द्वारा साक्षात्कार लिया गया। यह साक्षात्कार बी० बी० सी० के "आप से मिलिए" के हिन्दी कार्यक्रम मे प्रसारित किया गया है। डा० द्विवेदी का साक्षात्कार बी० बी० सी० के श्री शिवाकात ने लिया तथा आप ने वेदो से सम्बन्धित, सस्कृत भाषा तथा भारतीय सस्कृति के विभिन्न प्रश्नो का उत्तर दिया।

डा० द्विवेदी ६ जून को ब्रिटेन से प० जर्मनी पहुच गए हैं, जहाँ ३० जून तक फेंकफर्ट, हैडिलबर्ग, डोसिलफोर्ट, हैम्बर्ग, बर्लिन, म्यूनिख मे अनेक विश्वविद्यालयो तथा सस्थाओ मे विभिन्न विषयो पर व्याख्यान देगे। आप इसके पश्चात् हालैण्ड जाएगे जहाँ विभिन्न सस्थाओ ने आपको आमन्त्रित किया है। डा० द्विवेदी तीन माह के विदेश कार्यक्रम के बाद २६ जुलाई को भारत पहुचेगे।

शिक्षा का लक्ष्य इन्सानियत हो

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र-प्रदेश के तत्त्वावधान मे "वैदिक विचार मच" द्वारा ४-६-१९८९ के दिन आयोजित की गई गोष्ठी मे "शिक्षा का स्वरूप और पद्धति" विषय पर श्री विठ्ठलराव आर्य ने बोलते हुए कहा कि शिक्षा का लक्ष्य इन्सानियत होना चाहिए। जिस शिक्षा से इन्सानियत नही पनपती वैसी शिक्षा अपार धन सम्पत्ति पैदा करने पर भी व्यर्थ है। शिक्षा का मतलब चरित्र निर्माण है। चरित्र मन और इन्द्रियो की पवित्रता व सयम से बनता है। अत पवित्र अन्त करण के निर्माण की जरूरत है। उन्होंने कहा कि बाह्य जगत् की अनुभूति इन्द्रियो के माध्यम से मन को और मन से आत्मा को होती है। आध्यात्म और भौतिक विषयो की जानकारी के लिए बहती नदी की तरह शिक्षा सहज और स्वाभाविक होनी चाहिए। निर्बन्धित शिक्षा दिमागी बोझ है। शिक्षा पद्धति पर बोलते हुए उन्होने कहा कि भौतिक और मानसिक पर्यावरण शुद्ध और निर्मल होना चाहिए। प्राचीन गुरुकुल पद्धति मे इसका विशेष स्थान था। शिक्षा पद्धति बालक को केन्द्र बिन्दु बनाकर दी जाती थी। आचारवान् व्यक्ति को ही आचार्य कहा जाता था। अत वह भी एक बिन्दु था। इन दो बिन्दुओ को जोडने वाली रेखा ही सदाचार है। उन्होंने कहा कि सस्कार शिक्षा का एक हिस्सा था। शिक्षा पद्धति अगर सदाचार व समता मूलक हो तो आज की समस्याओ का समाधान निकाला जा सकता है।

भौतिक विद्या उत्पादन उन्मुखी हो, हर आदमी उत्पादन मे भागीदार बने। और आध्यात्मिक विद्या उन्नत मन और आचार मूलक है। जो सदैव श्रेष्ठ कर्मों मे प्रेरित करती है।

इसी गोष्ठी मे उस्मानिया विश्वविद्यालय के कालेज आफ एज्युकेशन के अध्यक्ष प्रो० राममूर्ति जी ने कहा शिक्षा सम्बन्धी ससार के सभी विश्वविद्यालयो के प्रयोग धीरे-धीरे भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति को ही उचित मानने के लिए मजबूर हो रहे हैं। अनेको प्रयोगो के बाद अन्य विद्यालयो मे भारत एज्युकेशन लाया गया है। साथ ही साथ आदमी-आदमी के बीच प्रेम और मानवता कैसे बढाई जा सकती है, पर प्रयोग हो रहे हैं। उन्होने कहा यह भारतीय सस्कृति व शिक्षा पद्धति ही है। शिक्षा नौकरी पेशे के लिए ही न होकर आदमी-आदमी के बीच ममता व मानवता बढाने वाली होनी चाहिए।

वेद प्रचार मण्डल दिल्ली देहात

वेद प्रचार मण्डल दिल्ली देहात के तत्त्वावधान मे शनिवार दिनाक १०-६-१९८९ को साय ५ से ७ बजे तक श्री कृष्ण कुमार नागपाल के निवास स्थान डब्ल्यू जैड-६२८ गली महादेव हलवाई, राजनगर, पालम कालोनी में धर्मप्रचार दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत् के विद्वान महाशय हरीशचन्द्र जी, श्रीमती शकुन्तला आर्य, प० उदय श्रेष्ठ, श्री श्याम सुन्दर गुप्ता आदि महानुभावो ने पधार कर जनता का मार्गदर्शन किया।

(पृष्ठ ४ का शेष)

सविता देव...

(य) जो सविता देव है, सर्वोत्पादक, सब का उत्पन्न करने वाला दिव्य स्वरूप प्रभु है, वही (न) हमारी (धिय) बुद्धियों को (प्रचोदयात्) प्रेरयेत्, प्रेरणा करे। वह सबका उत्पन्न करने वाला दिव्य स्वरूप प्रभु हमारी बुद्धियो को सदैव प्रेरणा करे, सत्कर्मों की ओर प्रवृत्त करे।

जो सारे प्राणी जगत् के जीवन का कारण, दुखो का नाशक और सुख स्वरूप है, हम उस सर्वोत्पादक दिव्य स्वरूप प्रभु के वरण करने योग्य शुद्ध स्वरूप को धारण करे और वह (प्रभु) हमारी बुद्धियो को सदैव सत्कर्मों मे प्रेरित करता रहे।

चाट मसाला

चाट, सलाद और फलों को अत्यन्त स्वादिष्ट बनाने के लिये यह बेहतरीन मसाला है।

CHAT MASALA

Excellent for garnishing Chat, Salads and fruit to provide delicious taste and flavour

अमचूर

अपनी क्वालिटी तथा शुद्धता के कारण यह खाने मे विशेष स्वाद और लज्जत पदा करता है।

AMCHOOR (Mango Powder)

It adds special tangy taste and flavour to your dishes with its quality and purity

फुटकर सेल्स डिपो:— चमनलाल इण्टरप्राइजिज

२, बीडनपुरा, [illegible] रोड करोल बाग, नई दिल्ली-११०००५

फोन · ५८२०३६, ५७२१२२४

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Post in N D P S O on 22, 23-6-89 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३६

हिन्द समाचार पत्र समूह आतंकवाद एवं विघटनवाद के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक है : स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

पंजाब मे आतंकवादियो ने हिंद समाचार पत्र समूह को अपना निशाना बनाया हुआ है। वे आये दिन इस पत्र समूह के एजेण्टो और अखबार विक्रेताओ को अपनी गोलियो का निशाना बना रहे हैं। लाला जगत नारायण और उन के बाद उन के सुपुत्र श्री रमेश चन्द्र उग्रवादियो की गोलियो से ही शहीद हुए थे। यह समाचार पत्र राष्ट्रीय एकता का समर्थक है। परन्तु आतकवादियो की निरन्तर धमकियां इसे प्राप्त हो रही हैं। यह धमकियां इस पत्र समूह के लिए तो चुनौती हैं ही साथ ही यह भारत सरकार लोकतन्त्र तथा समूची प्रेस व्यवस्था के लिए एक चुनौती हैं। इस स्थिति को देखते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने भारत के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी एव गृहमन्त्री श्री बूटा सिंह को पत्र लिख कर माग की है कि आतकवाद एव विघटनवाद के विरुद्ध सघर्ष का बिगुल बजाने वाले हिंद समाचार समूह की रक्षा की जाये। उन्होने इस पत्र मे लिखा है कि आतकवादियो द्वारा पजाब केसरी, हिन्द समाचार और जगवाणी को बन्द करने की धमकी से सम्पूर्ण राष्ट्रवादी जनता मे चिन्ता हो रही है। हिन्द समाचार पत्र समूह के सचालको ने इस देश की एकता व अखण्डता के लिए बहुत बडा त्याग किया है। इन्होने पजाब के सिख और हिन्दू विधवाओ को करोडो रुपये का अनुदान दिया है। यह सम्भव है कि उक्त पत्र की विचारधारा से कुछ लोग सहमत न हो। परन्तु पत्रकारिता की स्वतन्त्रता के नाते इस पत्र समूह पर आक्षेप लगाना तथा इसके सचालको को मार देना किसी भी प्रकार उचित नही। यह पत्र राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के पक्ष मे ही राष्ट्रहित के समाचारो को प्रकाशित करता है। उन्होने केन्द्र सरकार से आग्रह किया कि जिस परिवार ने राष्ट्रीय हितो की रक्षा करते हुए महान बलिदान दिये हैं। उनकी स्मृति को सदैव ताजा रखते हुए इस पत्र समूह को बन्द करने की धमकी देने वाले लोगो के विरुद्ध तुरन्त कार्यवाही की जानी चाहिए तथा इस पत्र समूह की सुरक्षा व्यवस्था की जानी चाहिए।

सेवा में—

श्री पुस्तकाध्यक्ष महोदय,
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी-
विश्व विद्यालय, हरिद्वार (उ०प्र०)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस, गली न०१७ कैलाशनगर, दिल्ली ३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म्
आर्य सन्देश
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वर्ष १२ अक ३४ रविवार २ जुलाई १९८९ आषाढ कृष्ण सम्वत् २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द ५ सृष्टि सवत् १ ९६०८५३०९०
मूल्य एक प्रति ५० पसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश मे ५० पौं १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

मोगा में नरसंहार मानवता के नाम एक कलंक : पंजाब सेना के हवाले करो

–स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

रविवार २५ जून को दिन दहाडे आतकवादियो ने राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ की एक शाखा पर गोलियां चला कर २४ व्यक्तियो की हत्या कर दी। राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक सगठनो मे चारो ओर चिन्ता व्याप्त है कि इस देश की राष्ट्रीय एव भावनात्मक एकता की आवाज उठाने वाले कहा सोए पडे हैं। राष्ट्रीय नेताओ की इस भीषण नरसहार के बाद भी क्यों नीद नही खुलती। पुलिस के बडे अधिकारी मारे जाते हैं, जन सेवक मारे जाते हैं, राजनैतिक कार्यकर्त्ता मारे जाते हैं, राष्ट्रीय एकता एव अखण्डता के लिए आवाज उठाने वाले अखबारो को धमकियां दी जाती हैं, रेलवे स्टेशनो पर बमविस्फोट किए जाते हैं। अधिकारी जानते हैं कि इनके पीछे कौन है फिर भी कोई कार्यवाही नही की जाती। राष्ट्रपति शासन से भी पजाब समस्या को सुलझाने मे कोई सहायता नही मिली है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने माग की है कि पजाब को फौरन सेना के हवाले किया जाए। उन्होने याद दिलाया कि आर्यसमाज यह माग पिछले कई सालो से करता आ रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार मात्र विकल्प ढूढ रही है। उसका कोई स्थान नही ढूढ रही है। अनेक राजनैतिक पार्टियाँ भी वहा पर हैं पर किसी को कोई रास्ता नही मिल पा रहा है। अनेक देशभक्त लोग पजाब मे शहीद हो चुके हैं अनेक लोग विस्थापित हो गए हैं। सरकार को शीघ्र ही इसका समाधान खोजना चाहिए और इस प्रक्रिया मे धार्मिक एव सामाजिक सस्थाओ का भी सहयोग लिया जाना चाहिए। पजाब चण्डीगढ हिमाचल प्रदेश और जम्मू काश्मीर मे बन्द सफल रहा है। दिल्ली मे भी बन्द सफल रहा। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने भी आर्यजनो से अपील की थी कि वे इस बन्द को सफल करने मे सहयोग दे। यह एक राष्ट्रीय समस्या है जिसका समाधान जागृति मे है सुषप्ति मे नही।

वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए नई आर्यसमाजों की स्थापना तथा पुरानी आर्यसमाजों द्वारा उन्हें आर्थिक सहयोग आवश्यक है : डा० धर्मपाल

आर्यसमाज चूना मण्डी पहाड गज मे वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर के अध्यक्ष महात्मा आर्य भिक्षु की वेदकथा सोमवार ११ जून से १८ जून तक सम्पन्न हुई। समापन समारोह मे बोलते हुए महात्मा आर्य भिक्षु जी ने सभी आर्यजनो को प्रेरणा दी कि वे सर्वप्रथम अपने आपको देखे और यदि वे विश्वास के साथ कह सकते हैं कि वे सही अर्थों मे मनुष्य हैं तो मै कहूगा कि आर्यसमाज तथा समाज कल्याण के कार्य कभी नही रुकेगे। जब आदमी स्वार्थी और केवल अपना कल्याण चाहने वाला होता है तो समाज की अवनति तो होती ही है, साथ ही उस व्यक्ति विशेष की भी होती है। प० क्षितीश वेदालकार सम्पादक आर्य जगत ने पजाब की वर्तमान परिस्थितियो के विषय मे बोलते हुए कहा कि एक ओर तो हमे दुखी भाई बहनो की सहायता करनी है। उन्हें ढाढस बधाना है और दूसरी ओर हमे आतकवादियो का भी मुकाबला करना है। यह तो ठीक है कि आतकवादियो का मुकाबला करने के लिए हम सरकार से अपेक्षा करें। परन्तु साथ ही हम सब लोगो को स्वय भी इस आतंकवाद से जूझने के लिए तैयार रहना चाहिए। लोगो का हौसला बनाए रखने के लिए तथा राष्ट्रीय एकता के लिए कार्य करने वाली सस्थाओ को पूर्ण सहयोग देना चाहिए। श्री हरवश लाल कोहली ने अपने वक्तव्य मे कहा कि उन्होने आर्यसमाज रामकृष्ण पुरम सेक्टर ९ का भवन निर्माण करते समय अनेक लोगो से सम्पर्क किया तथा उनसे आर्थिक सहायता प्राप्त की। उन्होने इस बात पर सन्तोष व्यक्त किया कि आर्यसमाजो तथा दानी महानुभावो ने उन्हे निराश नही किया। इस अवसर पर आर्यसमाज चूना मण्डी के सौजन्य से आर्यसमाज बृज विहार को अधिक रिगो का १५ हजार १ सौ इक्यावन रुपये की धनराशि प्रदान की गयी। इस धन सग्रह मे श्री बलराज आहूजा श्री प्रियतम दास रसवन्त, श्री सतीश भाटिया तथा श्री श्याम-दास सचदेवा के अतिरिक्त आर्य समाज के अन्य सदस्यो तथा प्रमुख दानी महानुभावो ने भरपूर सहयोग दिया। आर्यसमाज बृज विहार के मन्त्री श्री अविनाश कुमार महाजन ने सभी लोगो का धन्यवाद किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने आर्यसमाज

(शेष पृष्ठ ७ पर)

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

आचाय उपनयमानो ब्रह्मचारिण कृणुते गर्भमन्त ।
न रात्रीस्तिस्र उदरे विभर्ति त जात द्रष्टुमनुसयन्ति देवा ॥

अथर्व० काण्ड ११, अ० ३, सूक्त ५ ३ ।

यहा रात्री तिस्र के भावार्थ को ही स्पष्ट करना है। रात अन्धकार का समय है। यद्यपि त रागण तथा अधमास तक चन्द्रमा भी प्रकाश देते है परन्तु वह प्रकाश सारे अन्धरे को दूर नही कर देना। सारा अन्धकार तब दूर हाता है जब आदित्य भगवान अपने यौवन समेत दशन देते है। यहा तीन रातो से साधारण तीन रात्रि मे तात्पर्य नही है प्रत्युत ब्रह्मचर्य के तीन दर्जों से मतलब मालम होत है। प्रथम २४ वर्ष तक का ब्रह्मचय व्रत वह है जिसे पूरा कर के ब्रह्मचारी वसु (अर्थात उत्तम गुणो को अपने अन्दर वास कराने वाला) बनता है। परन्तु यह निकृष्ट ब्रह्मचय है। जब वसु ब्रह्मचारी को घर जाने की आज्ञा आचार्य देता है तो श्रद्धादेवी उसे प्रेरित कर के उससे कहलाती है — 'भगवन्! अभी तो मै उत्तम गुणो का वास करने का पात्र नही बना हू। अभी प्रलोभन मुझे गिरा सकते है। मुझे विशेष साधन का समय दीजिए'। शिष्य का याचना को देखकर आचार्य फिर आज्ञा देते हैं। तब ३६ वर्ष की आयु तक तप पूर्वक विद्याभ्यास करने से ब्रह्मचारी रुद्र सज्ञा का अधिकारी बनता है। उसकी वह प्राथना स्वीकार होती है जो उसने आश्रम म प्रविष्ट होते ही आचार्य से की थी—मा तनु अश्मा भवतु मेरी बनावट (शरीर और मन) चट्टान की तरह दृढ हो जाये। तब वह इतना बलिष्ठ हो जाता है कि विषय और पाप उसकी तनु से टकरा टकरा कर छिन्न भिन्न हो जाते और रोते है। उन्हे रुलाने का हेतु होने से ब्रह्मचारी रुद्र बन जाता है।

फिर भी उनका पूर्ण प्रकाश नही हुआ। जब विषय और पाप समीप आते रहे ज्य अन्धेरा आस पास घूम सके तब भी गिरने का भय बना ही रहता है। इसीलिए ऐसे सुबोध ब्रह्मचारी को जब गुरु समावर्तन की आज्ञा देते हैं तब वह फिर हाथ जोड कर विनय करता है—'भगवन्! अभी अन्धकार ने मुझे घेरना नहीं छोडा। आत्मा निश्चिन्त नही हुआ, इस पवित्र आश्रम द्वारा सावित्री माता के गर्भ मे सुरक्षित होकर कुछ काल और निवास करने की आज्ञा मुझे प्रदान कीजिए।

गुरु की आज्ञा से शिष्य तीसरी रात (अन्धकार से घिरी हुई अवस्था) भी गर्भ मे बिताता है। तब उसके दृढ तप से अन्धेरा दूर हो जाता है और वह सावित्री के गर्भ से बाहर आकर आचार्य का प्रणाम करता है। तब आचार्य उस ब्रह्मचारी के मस्तिष्क को सूर्य की भाति देदीप्यमान देखकर आशीर्वाद देता है तू अब आदित्य है। तेरा प्रकाश स्थिर होगा। अन्धकार का हौसला ही न पडेगा कि तेरे समीप पहुच सके। बस तीसरी रात भी व्यतीत हो गई और ब्रह्मचारी का दिव्य तेज फैल गया और तब वह द्विज बन कर देव पुरुषो से सम्मानित होकर उनमे शामिल हो जाता है। इसी वेद मन्त्र की व्याख्या मे मनु भगवान ने कहा है—

मातुरग्रेऽधिजनन
द्वितीयमौञ्जी बन्धनम।
तृतीय यज्ञदीक्षाया
द्विजस्य श्रुतिचोदनात् ॥
तत्र यद ब्रह्मजन्मास्य
मौञ्जिबन्धनचिह्नितम।
तत्रास्य माता सावित्री
पिता त्वाचार्य उच्यत ॥

श्रुति की आज्ञा से द्विज के प्रथम माता से जन्म दूसरे उपनयन वा यज्ञोपवीत और तीसरे यज्ञ की दीक्षा मे ये तीन जन्म होते है। इन पूर्वोक्त तीनो जन्मो मे वेद ग्रहणार्थ उपनयन सस्कार रूप जो जन्म है उस जन्म से उस (ब्रह्मचारी) की माता सावित्री और पिता आचार्य कहाते हैं।

आपस्तम्ब धर्मसूत्र मे लिखा है, स हि विद्यातस्त जनयति। तच्छ्रेष्ठ जन्म। शरीरमेव मातापितरौ जनयत। इसी भाव को लक्ष्य मे रखकर वर्तमान मनुस्मृति के कर्त्ता ने लिखा है—

कामान्माता पिता चैन
यदुत्पादयतो मिथ ।
सम्भूति तस्य ता
विद्याद्या योनावभिजायते ॥
आचार्यस्त्वस्य या जाति
विधिवद्वेदपारग ।
उत्पादयति सावित्र्या
सा सत्या साजरामरा ॥

माता-पिता तो, जीवन विद्या के ज्ञान से अनभिज्ञ होने के कारण काम वश होकर भी सन्तान उत्पन्न करते है, परन्तु वह जन्म अजर और अमर है जो ब्रह्मचारी को विद्या के गर्भ मे रख कर आचार्य देता है। धन्य है वह देश और धन्य है वह जाति, जिसमे आदित्य आचार्य ब्रह्मचारियो को अमर जीवन का दान देते हैं।

आचार्य कौन हो सकता है? जो शिष्य को अमर जीवन प्रदान करने की शक्ति रखता हो। जिसने स्वयम अमर जीवन प्राप्त नही किया जो स्वयम इन्द्रियो का दास और कमजोरियों का शिकार है, उसे पवित्र आचार्य पद ग्रहण करने के लिए तैयार नही होना चाहिए। एक बडे विदेशी अनुभवी विद्वान् की उक्ति प्रसिद्ध है कि कवि की तरह अध्यापक भी घडे नही जा सकते, वे जन्म से ही शक्ति लेकर आते हैं। अनेक जन्मो के साधनो से बुरे संस्कार धुलते हैं, यह ऋषियों के आदेश का सार है। आत्माओं के कुसस्कारो को धोकर उन मे उत्तम सस्कारो के प्रवेश कराने के लिए उग्रतप की जरूरत है। तब कैसी गिरी हुई दशा उस देश और उस काल की समझी जाय जिसमे आचार्य का काम एक पेशा बना लिया जाता है। वेद का उपदेश यह है कि जो शरीर आत्मा और मन की शक्ति से शिष्य को सुरक्षित कर के उसे देव सभा का सभासद बना सके वही आचाय पद का अधिकारी है।

शब्दार्थ —

(आचार्य) आचार्य (उपनयमान) यज्ञोपवीत देते हुए (ब्रह्मचारिण) ब्रह्म की प्राप्ति की इच्छा करने वाले ब्रह्मचारी को (अन्त गर्भ कृणुते) (विद्याशरीरस्य मध्ये गर्भ करोति) विद्या रूपी माता के शरीर के अन्दर गर्भ रूप मे धारण करता है। (त तिस्र रात्रि उदरे विभर्ति) उस (गर्भस्थ ब्रह्मचारी को तीन रातो तक उसी (गुरुकुल रूपी) गर्भ मे रखता है। (जातम) तब उसके उत्पन्न होने पर त (द्रष्टु) उसको देखने के लिए (देवा अभिसयन्ति) विद्वान आते हैं।

स्वस्ति पथ

ओ३म स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता स गमेमहि ॥

सूर्य चन्द्र की भाति मनोरम हम स्वस्तिपन्थ अनुसरण कर।
कल्याण हमारा जिससे हो, हम उसी पन्थ को वरण करे ॥

प्रभु चलते रहे निरन्तर हम
रवि चन्द्र नही ज्यो जाते थम
प्रिय प्राण अपान जीव में ज्यो
चल जीवन को करते उत्तम।

हम ज्योति लुटाते हुए चले हर चरण शुभ्र आचरण करें।
कल्याण हमारा जिससे हो हम उसी पन्थ को वरण कर ॥

जो सुजन हमारे दाता हैं
अघ पीडा के जो त्राता हैं
प्यारे विद्वान महा मानव
जग विषयों के जो ज्ञाता है।

पाकर हम इनकी सगति को, सन्ताप सकल सतरण करें।
कल्याण हमारा जिससे हो हम उसी पन्थ को वरण करे ॥

यो नित्य हमारा चलन रहे
कल्याण ओर ही गमन रहे
गुणदाता त्राता ज्ञाता का
हर क्षण उन्नति-अकुरण रहे।

सब सन्त मनीषी जिनके सम, हम बार-बार अनुकरण करे।
कल्याण हमारा जिससे हो, हम उसी पन्थ को वरण करें ॥

—देवनारायण भारद्वाज

आर्यसमाजों के अधिकारियों की सेवा में

नम्र निवेदन

मान्यवर,

विनम्र निवेदन है कि सभा के साप्ताहिक पत्र "आर्यसन्देश' के १९ मार्च १९८९ के अक मे आर्यसमाजो के अधिकारियो के नाम प्रकाशित विज्ञप्ति मे अनुरोध किया गया था कि आर्यसमाजो का वित्तीय वर्ष ३१ मार्च ८९ को हो गया है। आप आगामी वर्ष के लिए वार्षिक साधारण सभा की बैठक विधानानुसार १५ जून १९८९ तक अवश्य आयोजित कर ल तथा आगामी वर्ष के लिए अधिकारियो, आर्य वीर दल के लिए अधिष्ठाता का तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए प्रतिनिधियो का निर्वाचन यदि गत वर्ष न किया हो, तो कर ले। आपकी आर्यसमाज की ओर से प्रथम दस सभासदो पर एक और प्रत्येक अतिरिक्त बीस सभासदो पर एक प्रतिनिधि निर्वाचित किया जा सकता है, जिसकी आयु २५ वर्ष से कम न हो और जो पिछले दो वर्षों से समाज का सभासद् रहा हो।

१५ मई १९८९ तक निम्नलिखित विवरण तथा धनराशि सभा कार्यालय मे भिजवाने की भी प्रार्थना की गयी थी।

१ १ अप्रैल १९८८ से ३१ मार्च १९८९ तक का वार्षिक विवरण
 (अ) यज्ञ, सस्कार, शुद्धियाँ, अन्तर्जातीय विवाह, दिन के समय साधारण रीति एव बिना दहेज कराये गये विवाहो का तथा समारोहो का विवरण।
 (आ) समाज के अधीन चल रही सस्थाओ, विद्यालयो, चिकित्सालय, पुस्तकालय, सेवा समिति, आर्य वीर दल आदि का विवरण।

२ १ अप्रैल १९८८ से ३१ मार्च १९८९ तक का आय-व्यय विवरण।

३ सदस्य सूची निम्नलिखित फार्म के अनुसार स्वय बना ले—

क्रम सख्या	सदस्य का नाम	पिता का नाम	पता	वर्ष भर मे प्राप्त सदस्यता शुल्क

४ सदस्यता शुल्क का दशाश, वेदप्रचार राशि और आर्यसन्देश का वार्षिक शुल्क २५/- रुपये।

सभा कार्यालय को बहुत ही कम आर्यसमाजो से उपरोक्त विवरण तथा देय राशिया प्राप्त हुई हैं। यदि आपकी आर्यसमाज ने अभी तक इस सम्बन्ध मे कार्यवाही न की हो तो अविलम्ब करके सभा को उपरोक्त विवरण तथा देय राशि भिजवाने की कृपा करे तथा सभा को अपना तथा अपनी आर्यसमाज का सक्रिय सहयोग प्रदान करे। धन्यवाद सहित।

भवदीय

सूर्यदेव

महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रवेश सूचना

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय सस्था है। १ म कक्षा से लेकर विद्यालकार (बी ए) तक शिक्षा देने का प्रबन्ध है। विद्यालकार मे प्रवेश के लिए रजिस्ट्रार गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से सम्पर्क स्थापित करे तथा शेष १२वी तक आचार्या कन्या गुरुकुल देहरादून से सम्पर्क करे।

उच्च प्रशिक्षित शिक्षिका वर्ग, पुस्तकालय, नैतिक शिक्षा, चित्रकला, साइस, सगीत, गृह विज्ञान, सास्कृतिक गतिविधि, सस्था की आधारभूत विशेषताएँ हैं। विस्तृत खेल के मैदान, आधुनिक सुविधाओ सहित बडे छात्रावास, तीसरी कक्षा से सस्कृत एव अग्रेजी प्रारम्भ। निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओ के लिए छात्रवृत्ति देने की भी सुविधा है। मैट्रिक एव इन्टर उत्तीर्ण कन्याएँ भी प्रथम तथा तृतीय वर्ष में दाखिल हो सकती हैं। शिक्षा नि.शुल्क दी जाती है। ८ जुलाई से नवीन कन्याओं का दाखिला शुरू। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव १०) भेजकर नियमावली मगा सकते हैं।

दमयन्ती कपूर आचार्या

प्रिंसिपल कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी, सभा महामन्त्री श्री रणवीर जी भाटिया, सभा कोषाध्यक्ष डा० के.के पसरीचा जी सम्मानित होंगे

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना की एक विशेष बैठक मे यह निर्णय लिया गया कि इस बार आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का निर्वाचन जिस सौहार्द सद्भावना एवम् एकतापूर्ण वातावरण मे हुआ है, इसे आर्य जगत् मे एक विशेष प्रसन्नता का विषय माना जा रहा है। ऐसा अनुभव किया जा रहा है कि अब आर्यसमाज का सगठन सुदृढ एवम् शक्तिशाली होगा। आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार को इस बात का भी गर्व है कि उनकी आर्यसमाज के एक कर्मठ एव प्रतिभाशाली कार्यकर्त्ता श्री रणवीर जी भाटिया को सभा के उच्च मुख्यतम महामन्त्री के पद पर नियुक्त किया गया है। अत आर्यसमाज अन्य प्रतिनिधि सभा के इन तीनो महान् नेताओ का एक बडे विशाल समारोह मे अभिनन्दन करेगी। यह स्वागत समारोह २।७।८ रविवार प्रात ११ बजे से एक बजे तक आर्यसमाज मे होगा। जिसमे पजाब भर की आर्यसमाजो के मुख्य अधिकारियो को आमन्त्रित किया जायेगा।

आर्यसमाज सरस्वती विहार का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज सरस्वती विहार, दिल्ली ३४ का वार्षिकोत्सव २६ जून से २ जुलाई १९८९ तक आयोजित किया गया है। इस अवसर पर वेदकथा के अतिरिक्त राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, राष्ट्रभाषा सम्मेलन और महिला सम्मेलन का भी आयोजन किया गया है। इसी समय स्वामी श्रद्धानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय का भी शुभारम्भ किया जाएगा।

दयानन्द बाल सदन, अजमेर

आचार्य की आवश्यकता

दयानन्द बाल सदन, अजमेर जिसमे १५० बालक-बालिकाए हैं उसके लिए एक निष्ठावान् अनुभवी आर्य विद्वान् आचार्य की आवश्यकता है। आयु ४५ से ५५ वर्ष प्रारम्भिक वेतन रु० १४४५/- वेतन शृखला ११२०-२०५० नि शुल्क आवास, बिजली पानी की सुविधा विवरण सहित आवेदन मन्त्री के नाम शीघ्र प्रस्तुत करे।

सम्पादक के नाम पाठकों के पत्र—

"लक्ष्मण वाटिका
७१२-एल माडल टाउन
पानीपत-१३२१०३

मान्यवर श्री सम्पादक जी महोदय,

सादर नमस्ते

आर्यसन्देश दिनाक १२।६।८९ प्राप्त हुआ इसके लिए धन्यवाद। इस मे दिये गए सुन्दर, मार्गदर्शक एवम् उत्साहवर्धक विचार पढकर प्रसन्नता हुई है।

आज आर्य सज्जन, विशेषतया आर्यसमाज का युवा वर्ग, स्वाध्याय के अभाव के कारण, अपनी सभ्यता, सस्कृति, तथा अपने सिद्धान्तो एवम् इतिहास से सर्वथा अनभिज्ञ हो रहा है और पश्चिमी सभ्यता के गर्त की ओर तीव्रता से बढता जा रहा है। युवकों तथा युवतियो के पथ-प्रदर्शन के के लिए 'आर्यसन्देश' मे दिये जा रहे विचार अवश्य लाभकारी सिद्ध होंगे।

स-धन्यवाद

भवदीय

रुद्रदत्त शर्मा

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार-२४९४०४
डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी

प्रवेश सूचना

सत्र १९८९-९०

निम्नांकित पाठ्यक्रमो मे प्रवेश हेतु निर्धारित फार्म पर प्रार्थना पत्र आमन्त्रित किये जाते है।

क्रम	पाठ्यक्रम	अवधि	प्रवेश योग्यता
१	विद्याविनोद (इण्टर) १०+२	२ वर्ष	सस्कृत तथा अग्रेजी सहित मैट्रिक या समकक्ष, अग्रेजी सहित पूर्व मध्यमा, विद्याधिकारी (गु० का० वि० वि०) विशारद (पजाब) विद्यारत्न, प्राज्ञ (महर्षि दयानन्द वि०वि०) रोहतक।
२	अलकार (बी ए) वेदालकार/विद्यालकार	३ वर्ष	सस्कृत तथा अग्रेजी सहित इण्टर या समकक्ष, अग्रेजी सहित उत्तर मध्यमा, विद्याविनोद (गु०का०वि० वि०) विशारद (पजाब/रोहतक)।
३	बी एस-सी (गणित तथा बायो० तथा कम्प्यूटर ग्रुप)	३ वर्ष	इण्टरमीडिएट विज्ञान सहित अथवा उसके समकक्ष परीक्षा (गणित तथा बायो० के लिए द्वितीय श्रेणी तथा कम्प्यूटर के लिए प्रथम श्रेणी)।
४	एम०ए० वेद सस्कृत, दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास सस्कृति एव पुरातत्व, हिन्दी अग्रेजी, मनोविज्ञान गणित	२ वर्ष	बी एस-सी, बी ए, बी काम, अलकार, विद्याभास्कर, शास्त्री, आचार्य, साहित्यरत्न (इलाहाबाद)
५	एम एस-सी (माइक्रो बायोलोजी गणित तथा मनोविज्ञान)	२ वर्ष	बी एस सी (बायो ग्रुप) न्यूनतम ५०% प्राप्ताक, बी एस-सी (गणित ग्रुप) द्वितीय श्रेणी, बी एस-सी (मनोविज्ञान के लिए)
६	पी-एच डी वेद, सस्कृत दर्शन हिन्दी, प्राचीन भारतीय इतिहास सस्कृति एव पुरातत्व, अग्रेजी मनोविज्ञान गणित वनस्पति विज्ञान तथा जीव विज्ञान।	४ वर्ष	सम्बन्धित विषय मे स्नातकोत्तर उपाधि मे ५५% अक तथा बी ए ५०% अक अथवा समकक्ष परीक्षा सस्कृत एव अग्रजी का सामान्य ज्ञान आवश्यक।
७	वैदिक यज्ञ विज्ञान (कर्मकाण्ड डिप्लोमा)	१ वर्ष	अलकार शास्त्री, बी ए अथवा समकक्ष परीक्षा।
८	स्नातकोत्तर डिप्लोमा (कर्मशियल मैथम्स अफ कमिकल एनॅलिसिस)	१ वर्ष	बी एस-सी (रसायन) ५०% प्राप्ताक
९	स्नातकोत्तर डिप्लोमा (कम्प्यूटर स [illegible] एप्लीकेशन्स)	१ वर्ष	एम ए एम एस सी/बी ई ५५% प्राप्ताक, स्नातक स्तर पर गणित अनिवार्य विषय के रूप मे पढा हो तथा हाई स्कूल से स्नातक तक न्यूनतम द्वितीय श्रेणी प्राप्त की हो।
१०	योग प्रमाण पत्र	१ वर्ष	इण्टरमीडिएट विद्या विनोद या समकक्ष।
११	अग्रेजी मे दक्षता प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम	३ मास	इण्टरमीडिएट (अग्रेजी) स्तर की लिखित परीक्षा के आधार पर।
१२	सस्कृत "प्रवेश प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम	१ वर्ष	हाई स्कूल अथवा समकक्ष परीक्षा
१३	सस्कृत "प्रवीण" प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम	१ वर्ष	हाई स्कूल (सस्कृत) अथवा समकक्ष परोक्षा।

सामान्य सूचना —

१—जूनियर रिसर्च फेलो के लिए जिन्होने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा उत्तीर्ण की है, अध्येतावृत्ति अनुदान आयोग के नियमानुसार दी जायेगी।

२—विद्या विनोद तथा अलकार पाठ्यक्रमो मे नि शुल्क शिक्षा तथा प्रत्येक छात्र को ६० रु० मासिक छात्रवृत्ति। एम०ए० (वैदिक साहित्य) मे सभी छात्रो को १०० रु० मासिक तथा एम०ए० (दर्शन, सस्कृत) के छात्रो को ४० रु० मासिक योग्यता छात्रवृत्ति दी जाती है।

३—अलकार पाठ्यक्रम मे प्रवेशार्थी छात्राए प्रिन्सिपल कन्या गुरुकुल महाविद्यालय ६०, राजपुर रोड, देहरादून (द्वितीय परिसर गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय) से सम्पर्क करे।

४—महिलाए, सैनिक, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय कर्मचारी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब द्वारा सचालित स्थानीय शिक्षा सस्थाओ के शिक्षक व्यक्तिगत रूप से एम० ए० तथा एम० एस-सी० (गणित) परीक्षा मे बैठ सकते हैं।

५—महिलाए व्यक्तिगत उम्मीदवार के रूप मे केवल (मनोविज्ञान को छोडकर सभी विषय) एम०एस०सी० (केवल गणित) तथा पी०एच-डी०) वनस्पति, जीव विज्ञान तथा मनोविज्ञान को छोडकर अन्य विषय) के लिए आवेदन कर सकती हैं। महिलाओ के लिए किसी पाठ्यक्रम मे नियमित प्रवेश की सुविधा नही है।

६—एम ए मे प्रवेशार्थी उन छात्र/छात्राओ को जिन्होंने स्नातक, स्तर पर अग्रेजी का अध्ययन नही किया, उन्हे अग्रेजी प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करना आवश्यक होगा।

७—एन सी सी, एन एस एस तथा खेल/क्रीडा की समुचित व्यवस्था है।

८—अनुसूचित जाति/जनजाति के छात्रो के लिए भारत सरकार के नियमानुसार आरक्षण।

प्रवेश प्रक्रिया—

१—पाठयक्रम क्रम सख्या ३ तथा ८ मे प्रवेश, योग्यता क्रम से किये जायेगे। पाठ्यक्रम क्रम सख्या ९ मे प्रवेश योग्यता क्रम तथा प्रवेश परीक्षा के आधार पर होगे। इन पाठ्यक्रमो मे इच्छुक प्रवेशार्थियो का साक्षात्कार भी लिया जायेगा।

२—पी-एच डी के अतिरिक्त अन्य पाठयक्रमो में प्रवेश हेतु विवरण पत्रिका तथा फार्म १० रु० नकद देकर अथवा १५ रु० पोस्टल आर्डर (कुल सचिव के पक्ष मे भेजकर आचार्य वेद/कला महाविद्यालय) कला विषयो के लिए (तथा प्राचार्य विज्ञान महाविद्यालय (विज्ञान विषयो के लिए) अथवा कुल सचिव कार्यालय से प्राप्त किये जा सकते हैं। पी-एच डी मे पजीकरण हेतु प्रवेश फार्म तथा नियमावली उपरोक्त प्रकार से धनराशि भेजकर कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त किये जा सकते हैं।

प्रवेश की अन्तिम तिथि —

पाठ क्रम क्रम सख्या	१,२,५,७,१०,११,१२,१३	७ अगस्त १९८९
पाठयक्रम क्रम सख्या	३,४,८,९	३१ जौलाई १९८९
पाठ्यक्रम क्रम सख्या	६	३१ अगस्त १९८९

(डा० वीरेन्द्र अरोडा)
कुल सचिव

आर्यसमाज सराय रोहिल्ला सुभद्रा कालोनी में नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन

आर्यसमाज मन्दिर सराय रोहिल्ला मे नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन समाज सेविका "बहन सत्या सेठी" ने अपने कर कमलों द्वारा १८-६-१९८९ को प्रात ९ बजे किया। समारोह की अध्यक्षता प्रधान दसौन्धी राम जी ने की। इस अवसर पर उपस्थित सभी वक्ताओ ने मधुर भजनो के उपदेश से जनसमूह का मन मोह लिया। वक्ताओं मे श्री गुलाबसिंह राघव, श्री इन्द्र देव जी, श्री मनोहर लाल जी प० रामप्रकाश वाजपेई जी मुख्य थे।

अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ सगोष्ठी

वेद मानव जीवन के शाश्वत प्रेरणा स्रोत

अन्तरराष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ नई दिल्ला के तत्त्वावधान मे काशा हिन्दू विश्वविद्यालय मे ८-९ मई १९८९ को एक भव्य वेद सगोष्ठी रखी गई। इसकी अध्यक्षता प्रो० रघुनाथ प्रसाद रस्तोगी, कुल पति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने की और इसका उदघाटन मुख्य अतिथि माननीय श्यामलाल यादव, कृषि राज्य मन्त्री, भारत सरकार ने किया। गोष्ठी मे आदरणीय स्वामी सत्यप्रकाश और प्रो० शेर-सिह कुलाधिपति गुरकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, अध्यक्ष दयानन्द वेद पीठ के निर्देशन मे हुआ। इसका स चालन और प्रबन्ध व्यवस्था डा० आनन्द प्रकाश और डा० वीरेन्द्र कुमार वर्मा, जो विश्व-विद्यालय के मुख्य प्राध्यापक हैं, और उनके अन्य सहयोगियो ने किया।

गोष्ठी मे बोलते हुए केन्द्रीय मन्त्री श्री यादव जी ने कहा हम भारतीय अपने सामाजिक और धार्मिक जीवन मे जो स्थान वेद को देते हैं अन्य किसी को नही देते। वेद सर्वकालिक और सार्वभौमिक हैं। इसमे सम्पूर्ण मानव मात्र के कल्याण और ज्ञान विज्ञान का उदात्त विचार है।

प्रख्यात वैज्ञानिक और वेद पीठ के स स्थापक स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से वेदो के अध्ययन और अनुसधान की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होने वेदो को विश्व का विलक्षण साहित्य बताते हुए कहा कि वेदो मे वैदिक और लौकिक सभी विषयो के बीज विद्यमान हैं। समस्त आर्ष ग्रन्थ वेदो को अपौरुषेय मानते हैं। सृष्टि की उत्पत्ति के समय जब कोई भाषा नही थी, मनुष्य को बोलने की प्रेरणा वेदो से मिली। वर्णमाला, गणित विज्ञान, समाज आदि विषय भी वेद से प्रेरणा पाकर विकसित हुए। वेद से प्रेरणा पाकर लौकिक स स्कृत और अन्य भाषाओ का निर्माण हुआ, वैदिक छन्दो से लौकिक छन्दो का विस्तार हुआ। इसी प्रकार वैदिक ज्योतिष से लौकिक ज्योतिष, वेदाग उपाग आदि बने, इन्होने ने वेद से प्रेरणा प्राप्त की। दुनिया के समस्त शास्त्रो का निर्माण वेदो की प्रेरणा से हुआ।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० रस्तोगी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे वेदो की वैज्ञानिकता पर प्रकाश डाला और उसे शाश्वत प्रेरणा का स्रोत बताया। गोष्ठी मे भाग लेने के लिए भिन्न-भिन्न प्रान्तो से विद्वान पधारे जिनमे विशेष तौर पर निम्न मह नुभावो ने भाग लिया —

(१) प्रो० रामप्रसाद वेदालकार, उप कुलपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार, (२) श्री ब्रह्म मित्र अवस्थी, इलाहाबाद (३) डा० प्रशस्यमित्र शास्त्री रायबरेली, (४) डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री। (५) प्रो० एल०एन० शर्मा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी (६) प्रो० ज्योतिर्मित्र (७) स्वामी आत्मानद (८) प्रो० एम०पी० वैद्य (९) डा० पी० वी० तिवारी, (१० डा० तेजोमित्र शास्त्री, दिल्ली (११) प्रो० प्रशान्त वेदालकार दिल्ली।

इन महानुभावो मे कुछ ने अपने अनुस धान पत्र पढकर सुनाए और कुछ ने मौलिक विचार रखे। उन्होने कहा कि वेद सारी मानव जाति के लिए मार्ग दर्शन करते है और जीवन को सक्रिय उद्देश्यपूर्ण और सफल बनाने के लिए सदा ही प्रेरणा देते रहते हैं। वेदो द्वारा हम विश्व की भिन्न-भिन्न जातियो और लोगो को एक सूत्र मे पिरो सकते हैं। वेद ही हमारी शान्ति व्यवस्था, शक्ति और मनोबल का साधन है। यदि हम वेदो की ऋचाओ और वेद मन्त्रो का नित्य प्रति अध्ययन करे, उनका मनन कर और उन पर कार्यान्वयन करते हुए अपने जीवन को सुचारु रूप से चलाये तो हमे किसी प्रकार की कठिनाई नही होगी। वक्ताओ ने वेदो के कई मन्त्रो का उच्चारण करके उनकी व्याख्या की और यह बताया कि वेद किस प्रकार सार्वभौमिक मानव जाति के सर्वांगणीय कल्याण का सन्देश देते हैं। इस स गोष्ठी मे इसी प्रकार प्रो० शेर-सिह ने विचार प्रकट किये।

अन्त मे वेद पीठ के स गठन मन्त्री श्री के० एल० भाटिया ने विश्वविद्यालय के कुलपति, प्राध्यापको और सहयोगियो एवम् आये हुए विद्वानो का धन्यवाद करते हुए कहा कि वेद पीठ का उद्देश्य वेदो के अध्ययन और अनुसन्धान को प्रोत्साहन करना है। और इसके लिए हम सस्थाओं और व्यक्तियो को हर प्रकार की सहायता देने को तैयार हैं। इस सस्थान की ओर से एक अनुसधान पत्रिका सस्कृत और अग्रेजी मे निकाली जाती है जिससे सभी विद्वानो को लाभ हुआ। इस सगोष्ठी का उद्देश्य यह कि विद्वान महानुभाव आज के सन्दर्भ मे वदो क महत्त्व का अधिकाधिक प्रचार और प्रसार कर। सर्व मानव जाति इस ईश्वरीय ज्ञान का लाभ उठाए जिससे मारे विश्व म शान्ति और आपसी भाई चारे की भावनाए उत्पन्न हो।

सगोष्ठी क समापन सत्र मे अपने उदगार व्यक्त करते हुए भारत सरकार के भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री और गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो० शेर-सिह ने कहा कि वेद मनुष्य को निष्काम कर्म करते हुए १०० वर्षो तक जीने का सन्देश देता है। अकर्मण्यता के लिए मनुष्य-जीवन मे कोई स्थान नही है। विद्या और अविद्या। (ज्ञान और कर्म) तथा लौकिक और पारलौकिक ज्ञान के समन्वय से ही मोक्ष सम्भव है।

प्रो० शेर सिह ने आगे कहा कि दुःख सुख के घात-प्रतिघात से जिज्ञासा जन्म लेती है तथा धर्म की जिज्ञासा रखने वालो के लिए श्रुति वेद ही परम प्रमाण है। वेद के सम्बन्ध मे चाहे जितने विवाद हो किन्तु इसमे कोई विवाद नही है कि मानव जीवन के प्रेरणा स्रोत के रूप मे वेद उत्कृष्टतम ग्रन्थ है।

समापन सत्र मे अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रख्यात वैज्ञानिक स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने कहा कि वेदो मे जन्मना वर्णभेद नही है। उसमे न तो सतीप्रथा का सन्दर्भ है न जाति प्रथा का। मध्य युग मे अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए कुछ लोगो ने वेद मन्त्रो की भ्रामक व्याख्या की। वैज्ञानिक दृष्टि से पूरे प्रमाण के साथ वेदो पर नये और निष्पक्ष ढग से अनुसधान की आवश्यकता है। अनुसधान और मन्थन मे ही सत्य का साक्षात्कार सम्भव है।

अन्त मे वेद पीठ के मन्त्री श्री के०एल० भाटिया ने विश्वविद्यालय के कुलपति और अधिकारियो का धन्यवाद किया। उन्होने कहा कि यह पहली वेद सगोष्ठी है और इसका उद्देश्य वैदिक सिद्धान्तो का प्रचार करना है। वेद की ऋचाओ मे जीवन उपयोगी सक्रिय और सफल बनाने के लिए एक सही मार्ग मिलता है आज के सन्दर्भ मे वेदो के अध्ययन और अनुसधान बहुत आवश्यक है। □

आर्य जगत के समाचार

आर्यसमाज द्वारा पजाब समस्या का समाधान शीघ्र करने की माग

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना मे पजाब दिवस के उपलक्ष्य मे एक समारोह का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के महामन्त्री श्री रणवीर भाटिया ने की।

समारोह को आरम्भ करते हुए आर्यसमाज के महामन्त्री एवम आर्य युवक सभा पजाब के प्रधान श्री रोशनलाल शर्मा ने सभी राजनैतिक सामाजिक सगठनो को अपील की कि वह अपने सभी निहित स्वार्थों को छोडकर एक जुट होकर पजाब समस्या को हल करने का प्रयास करे। श्री रणवीर भाटिया ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे सरकार से माग की कि हिन्दू और सिखो का एक सम्मेलन बुलाया जाए तथा पजाब समस्या को सभी पजाब वासियो की समस्या मान कर इस समस्या का समाधान किया जाए।

एक सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव मे कहा गया है कि आर्य समाज का यह निश्चित मत है कि पजाब समस्या का समाधान तब तक सम्भव नही जब तक अकाली आनन्दपुर साहिब के प्रस्ताव की उस दलदल से नही निकलते जिसमे उन्होने अपने आप को फसा लिया है। पजाब मे ४५ प्रतिशत हिन्दु भी रहते है उनकी मागो, आकाक्षाओ, परपराओ व आशाओ की अवहेलना नही की जा सकती। पजाब की समस्या का कोई समाधान हिन्दुओ को स्वीकार नही होगा जिसमे वह एक पक्ष न हो।

इस प्रस्ताव मे प्रधान मन्त्री से माग की गई कि पजाब की धार्मिक, सामाजिक सगठनो से सम्बन्ध रखने वाले सुप्रसिद्ध हिन्दुओ व सिखो को बातचीत के लिए बुलाया जाए तथा पजाब समस्या का समाधान शीघ्र किया जाए।

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर प्रगति एवं शिविरों में प्रशिक्षित आर्य वीरों की गणना

(१) आर्य वीर दल यमुना हिण्डन मध्य क्षेत्र के लगाए गए डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल के शिविर मे १२३ शिविरार्थियो ने भाग लेकर प्रशिक्षण प्राप्त किया। यह शिविर १७ मई से २८ मई १९८९ तक चला।

(२) दयानन्द उच्च विद्यालय पलवल मे लगे दिनाक २८ मई से ४ जून १९८९ ई० तक के शिविर मे ५० आर्य वीरो ने शिविर मे भाग लिया।

(३) इण्टर कॉलिज जहागीरपुर मे लगने वाले शिविर मे ७८ आर्य वीरो ने भाग लेकर प्रशिक्षण प्राप्त किया। इनमे १८ आर्य वीरो ने अपने अपने गावो मे शाखा लगाने का सकल्प लिया।

(४) इन शिविरो मे से निकल पर लगभग २५ अच्छे आर्य वीरो ने शिक्षक शिविर मे झज्जर भाग लिया।

युवतियो ! राष्ट्र निर्माण मे अग्रसर हो

दिल्ली। युवतिया अपने आपको शारीरिक आत्मिक मानसिक बौद्धिक रूप से सक्षम बनाए कि कोई उनका अपमान न कर सके। सन्ध्या स्वाध्याय व्यायाम साधना करके वे राष्ट्र को उन्नत शिखर पर पहुचा सकती है।

केन्द्रीय आर्य युवती परिषद दिल्ली के ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह मे आर्य नेता श्री रामनाथ सहगल डा० शिवकुमार शास्त्री श्री वीरेन्द्र खट्टर आनन्दमुनि वानप्रस्थ इत्यादि ने अपने उद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम की मुख्यातिथि श्रीमती चित्रा नाकरा थी। इस अवसर पर स्तूप, लाठी, जूडो योगासन के रोचक व्यायाम प्रदर्शन भी युवतियो ने दिखाये, जिन्हें जनता ने बहुत सराहा।

स्व आत्मप्रेरक समर्पण

श्रीमान गुरुमेश सिह [निवासी सिहौल (पलवल)] ने जो कि योगासन मे राष्ट्रीय स्वर्ण पदक विजेता है और योग शिक्षक हैं। पलवल शिविर के समापन के उपरात यज्ञ वेदी पर स्व आत्म प्रेरणा से सकल्प लिया कि मैं आर्य वीर दल के लिए तन मन धन से समर्पित हूं। अब मात्र और एकमात्र आर्य वीर दल की शाखा का ध्वज लगाकर सचालन करते हुए युवको को प्रशिक्षित करूगा।

उन्होने सन १९८२ १९८३ १९८४ १९८५ तक लगातार प्रतिक आसन मे राष्ट्रीय स्वर्णपदक जीत कर और सन १९८६ मे राष्ट्रपति द्वारा स्वर्णपदक के साथ योग रत्न की उपाधि से विभूषित होकर कीर्तिमान स्थापित किया।

धर्मान्तरण सम्बन्धी सभा सम्पन्न

हापुड आर्यसमाज मन्दिर मे धर्मान्तरण के सम्बन्ध मे एक सभा उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री इन्द्रराज जी की अध्यक्षता मे हुई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी थे। सभा का सचालन डा० विजय भूषण आर्य ने किया।

सर्वप्रथम श्री इन्द्रराज जी ने कहा कि अब समय की आवश्यकता को समझकर सवर्णों को छुआछूत त्याग कर तथा हरिजन बन्धुओ को प्यार देकर मुख्य धारा मे लाने का पूर्ण प्रयास करना चाहिए।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के प्रधान मत्री एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के उपमन्त्री श्री मामचन्द रिवारिया ने कहा कि जब तक हिन्दुओ की करनी कथनी मे अन्तर रहेगा, देश मे हरिजन धर्म परिवर्तन करने पर मजबूर होते रहेगे। वे जब सिख या मुसलमान बन जाते हैं तब हिन्दुओ मे हाय तौबा मच जाती है क्योकि उन्हे अल्पमत मे होने का भय होने लगता है। अत मैं सभी उपस्थित आर्यसमाजियो तथा सनातन धर्मियो से प्रार्थना करता हू कि वे स्वामी श्रद्धानन्द श्री गुरुदत्त विद्यार्थी एवम महात्मा हसराज जी के मार्ग को अपना कर हरिजनो के बीच मे काम करके उनके हृदयो मे अपनापन पैदा करके धर्म परिवर्तन करने की प्रवृत्ति बदलने का प्रयास करना चाहिये। उन्होने इस कार्य मे हर प्रकार का सहयोग देने का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर जनसत्ता, पजाब केसरी तथा दैनिक जागरण के सवाददाता भी उपस्थित थे। उन्होने हिन्दु नेताओ से पूछा कि हरिजनो ने जब धर्म परिवर्तन किया था तब आपने कार्यवाही क्यो नही की। इस पर डा० विजय भूषण आर्य ने कहा कि हम हरिजनो के परिवार वालो से निरन्तर सम्पर्क कर रहे थे जो सिख बन गये थे उनमे से ८५ मे से ६० व्यक्तियो ने पुन हिन्दु धर्म धारण कर लिया है।

अन्त मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती ने कहा कि मुझे लगता है कि अब आतकवादी पजाब छोडकर भाग रहे हैं और अब वह यू०पी० दिल्ली मे आकर गडबडी करना चाहते हैं। हापुड मे जो धर्मान्तरण हो रहा है यह भी आतकवादियो की ही कार्यवाही है। हम सब को मिलकर इस प्रकार की उनकी कार्यवाही को विफल करना चाहिये। हरिजन बस्तियो मे जाकर व्यक्तिगत रूप मे उनसे सम्पर्क स्थापित करना चाहिये। उनके यज्ञ, हवन आदि का कार्यक्रम करना चाहिए कि अब छुआछूत का जमाना लद गया और आप हमारे भाई हैं।

स्वामी जी ने भारत सरकार से भी माग की है कि वे अकालियो को धन लुटा कर हरिजनो का धर्म परिवर्तन करने की कार्यवाही को रोके वरना आर्य जगत उनकी देशद्रोही कार्यवाही को किसी कीमत पर सहन नही करेगा।

अन्त मे ११ व्यक्तियो की एक कमेटी बनाई गई जो हरिजनो के बीच जाकर प्रचार का कार्य करेगी। इस सभा मे २ प्रमुख हरिजन वाल्मीकि जो पुराने जमाने के आर्यसमाजी भी हैं सर्व श्री मगल सेन पार्चा तथा श्री कैलाशचन्द्र ने भी भाषण दिया। दोनो बुजुर्गों ने कहा कि अब हमारे बच्चे पढे लिखे हैं और अब वे सवर्णों द्वारा छुआछूत सहन नहीं कर सकते। अत अब उन्हें हमारी बराबरी का हक देना होगा वरना वे हिन्दुओं से ३-६ का नाता रखेंगे। इससे देश तथा जाति को अपार क्षति का सामना करना पड़ेगा।

ऋषिराज स्वामी दयानन्द

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

★

नभमण्डल मे सूर्य ज्यो, तारो के बीच चन्द ।
त्यो ऋषियों मे चमकता महर्षि दयानन्द ।।

जैसे पुस्तक वेद की, सर्वोत्तम महान ।
वैसे ही ऋषिराज का ऊँचा है स्थान ।।

शैलों में हिम शैल ज्यो, भारत मे कश्मीर ।
वैसे ही दयानन्द की, ओज भरी तस्वीर ।।

वृक्षो मे चन्दन बडा ज्यो नदियो मे गग ।
वैसे शुद्ध पवित्र हैं, दयानन्द का अग ।।

जैसे शिरोमणि सभा, सार्वदेशिक कहलाये ।
दयानन्द ऋषिवर भये ऊँची पदवी पाये ।।

कामधेनु जी का बडा, गउओ मे प्रिय नाम ।
वैसे ही दयानन्द को, जाने देश तमाम ।।

जैसे हाथियों मे बडा, ऐरावत गजराज ।
दयानन्द ऋषि हो गये, ऋषियो मे सरताज ।।

जैसे ऋतुओ में बडा, है ऋतुराज बसन्त ।
तैसे ऋषियो मे प्रमुख, ऋषि दयानन्द सन्त ।।

निर्वाचन

आर्यसमाज हनुमान रोड

नई दिल्ली रविवार १९६८८।

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली का चुनाव श्री राममूर्ति कैला की अध्यक्षता मे सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ—

प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा
उपप्रधान राममूर्ति कैला
रतनलाल सहदेव
डा० अमरजीवन
मन्त्री त्रिलोकीनारायण मिश्र
उपमन्त्री वीरेश बुग्गा
श्रीमती सुमेधा शर्मा
रिपदमन लाल
कोषाध्यक्ष ओमप्रकाश आहूजा
पुस्तकाध्यक्ष अरुण प्रकाश वर्मा
अधिष्ठाता आर्य वीर दल सुशील कुमार महाजन

आर्यसमाज बाजार सीताराम

आर्यसमाज बाजार सीताराम दिल्ली के वार्षिक निर्वाचन मे निम्नलिखित पदाधिकारी एवम अन्तरग सदस्य सर्वसम्मति से चुने गये।

श्री राम किशन जी अग्रवाल प्रधान
श्री बाबूराम आर्य—मन्त्री
श्री अरुण गुप्ता—कोषाध्यक्ष

वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार

(पृष्ठ १ का शेष)

के अधिकारियो का धन्यवाद करते हुए कहा कि यदि आर्यसमाज चूना मण्डी के इस सहयोग क कार्य का अन्य सम्पन्न आर्यसमाज अनुकरण कर तथा वे नई बनने वाली एक-एक आर्यसमाज का खडा करने मे यथाशक्ति सहयोग द तो अनक नई आर्यसमाजो की स्थापना हो सकगी। उनके भवनो का भी निर्माण हो सकगा तथा इससे वेद-प्रचार के कार्यों को गति मिलेगी। आर्यसमाज क पदाधिकारिया तथा प्रमुख आर्य सदस्यो की ओर से डा० धर्मपाल का स्वागत किया गया। कार्यवाही का सचालन श्री रामदास सचदेवा द्वारा किया गया।

R N No 3238/77 Post in N.D.P.S.O. on 29, 30 6-89 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५१ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३६

आर्यसमाजे श्रावणी तथा जन्माष्टमी पर्व पर वेदप्रचार सप्ताह धूमधाम से आयोजित करें

आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य "वेद का सदेश घर घर पहुचाना, सारे ससार को श्रेष्ठ बनाना समाज मे दिन प्रतिदिन फैल रही बुराइयो तथा कुरीतियो को दूर करना सभी प्राणियो को अपने वास्तविक धर्म का ज्ञान कराना युवा पीढी को संगठित करना अपने बिछुडे हुए भाइयो को गले लगाना है। आर्यसमाज ने समय समय पर विभिन्न आन्दोलनो मे यह सिद्ध करके भारत की जनता को यह दिखा दिया है कि आर्यसमाज ही एकमात्र ऐसी सस्था तथा शक्ति है जो भीषण परिस्थितियो का मुकाबला करते हुए देश को सही रास्ता दिखा सकती है तथा देश की एकता व अखण्डता के लिए कार्यरत है। सभा इस कार्य मे आर्यसमाजो का हर प्रकार से सहयोग करती है।

आज देश की वर्तमान परिस्थितियो मे फिर इसकी महती आवश्यकता है। हमे चाहिए कि समय समय पर विभिन्न पर्वो पर हम ऐसे आयोजन करे जिससे हमारे उपर्युक्त सभी उद्देश्य पूरे हो।

आगामी अगस्त मास मे श्रावणी तथा जन्माष्टमी पर्व हैं। हमे अभी से इनको मनाने की तैयारियां प्रारम्भ कर देनी चाहिए। इन अवसरो पर आर्यसमाजो के अधिकारियो से मेरा अनुरोध है कि वह एक सप्ताह के वेद प्रचार सप्ताहो कथाओ, उत्सवो, सम्मेलनो, प्रभातफेरियो साहित्य वितरण तथा जनसम्पर्क के आयोजन करें। सभा का इस कार्य मे पूरा सहयोग प्राप्त करे। सभा के [illegible] उपदेशको तथा भजनोपदेशको की सेवाए हर समय उपलब्ध हैं। [illegible] तिथियां निश्चित [illegible] सम्पर्क कर [illegible] उपदेशको [illegible] भजनोपदेशक [illegible] ल। सभा के अन्तर्गत [illegible] उपदेशको तथा मानद रूप मे सहयोग देने वाले उपदेशको की [illegible] प्रकार है—

सभा के अन्तर्गत अवैतनिक उपदेशक सर्वश्री [illegible] सरस्वती महात्मा [illegible] आचार्य हरिदेव सि० भूषण प० सत्यदेव स्नातक, प चून्नीलाल आर्य, प वेदव्यास आर्य, प ज्योति प्रसाद जी (ढोलकवादक) हैं।

सभा को मानद रूप से सहयोग देने वाले उपदेशक प शिव कुमार शास्त्री, (साकेत) डा शिव कुमार शास्त्री (विक्रमपुरी), डा महेश विद्यालंकार प रघुवीर वेदालंकार डा सुखदयाल भूटानी, डा धर्मदेव प कामेश्वर शास्त्री, [illegible] सुधांशु, आचार्य श्याम [illegible], श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, डा [illegible]दत्त, श्री रविन्द्र कुमार शास्त्री, श्री वीरेन्द्र कुमार शास्त्री प [illegible] शास्त्री प सोमदेव शास्त्री [illegible] नन्दलाल निर्भय डा महेश [illegible] प बलवीर शास्त्री, आचार्य राम निवास प योगेश्वर [illegible], प हरिश्चन्द्र शास्त्री, प [illegible] श्रेष्ठ, प० रवीन्द्रनाथ पाठक, प वेदप्रकाश आर्य प देव शर्मा शास्त्री, प मुनिदेव, श्री प्रेमप्रकाश शास्त्री, प सत्यपाल मधुर प हृदयनारायण शास्त्री, श्री श्यामवीर राघव प कृष्ण चन्द्र आर्य। □

सेवा मे —

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली न०१७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ मे मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५१

वर्ष १२ . अंक ३५ | रविवार ९ जुलाई १९८९ | आषाढ़ कृष्ण सम्वत् २०४६ विक्रमी | दयानन्दाब्द—१६५ | सृष्टि संवत १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश मे ५० पौ , १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

राष्ट्र की एकता एवं अखंडता की रक्षा के लिए आर्यसमाज ने अहं भूमिका निभायी है

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

राष्ट्र की एकता एवम अखण्डता की रक्षा के लिए आयसमाज द्वारा किए गए कार्य को सदा याद किया जाएगा । आर्यसमाज का अपना गौरवपूर्ण इतिहास है । भारत के स्वाधीनता सग्राम मे आर्यसमाज के द्वारा किए गए कार्य को सारा विश्व जानता है। इस दिशा मे हैदराबाद का सत्याग्रह अपना एक विशेष स्थान रखता है । यदि आर्य समाज के नौजवानो ने सही भूमिका तैयार न कर दी होती तो हैदरा बाद रियासत को भारत मे मिलाना कठिन हो जाता। आयसमाज के ही कारण निजाम हैदराबाद झुके थे । इसके लिए हमे नवयुवको को सही मार्ग दिखाना होगा । उन्हे प्रशिक्षित करना होगा । उनमे राष्ट्रीयता की भावना भरनी होगी । यह कार्य हम आर्य वीर दल के प्रशिक्षण शिविरो के माध्यम से कर रहे हैं। इन नौजवानो में अच्छी आदतें होना जरूरी है । आज ओलम्पिक्स मे छोटे छोटे देशो को बडे-बडे पुरस्कार मिलते हैं । हमारा देश मह लटका कर लौट आता है । इसका कारण है हमारे नौजवानो मे उत्साह वीरता एवम धैर्य की कमी। वे शराबी हो गए हैं। यह लत आदमी को तबाह कर देती है मुझे वडी प्रसन्नता है कि श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज और प्रोफेसर शेरसिंह जी इस दिशा मे सराहनीय काय कर रहे हैं। ये उद्गार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती ने महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर मे आयोजित आय वीर दल के प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह में व्यक्त किए ।

आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर ११ जून मे २५ जून तक आयोजित किया गया था । इस शिविर मे सम्पूर्ण भारत से लगभग १८० आर्य वीर सम्मिलित हुए। सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के सार्वदेशिक आर्य वीर दल के उपप्रधान सचालक डा देवव्रत आचार्य ने बहुत ही सुन्दर प्रशिक्षण इन आर्य वीरो को दिया। इस अवसर पर हरियाणा सरकार के खेल मन्त्री श्री सीताराम सिंगला ने गुरुकुल के अधिकारियो का धन्यवाद करते हुए युवा शक्ति को यथाशक्ति प्रोत्साहन देने का आश्वासन दिया ।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

महाशय धर्मपाल जी आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित

आर्यसमाज एवं संगठन के हित के लिए मिलजुल कर कार्य करें : डा० धर्मपाल आर्य

महाशय धर्मपाल जी

नई दिल्ली २ जुलाई ।

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का वर्ष १९८९ ९० का वार्षिक चुनाव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

इस मे महाशय धर्मपाल सर्व सम्मति से प्रधान निर्वाचित हुए। महाशय धर्मपाल जी का नाम श्री राजसिंह भल्ला व श्री बलदेवराज ने प्रस्तावित किया एव सर्वश्री लाजपत राय निझावन, के के सेठी, तिलकराज कोहली श्रीमती ईश्वर देवी धवन, चेतन स्वरूप कपूर, ओम वीर शास्त्री आदि अनेक महानुभावो ने उनके नाम का समर्थन किया ।

प्रधान पद के लिए दूसरा नाम श्री रतनलाल सहदेव ने श्री राम मूर्ति केला का प्रस्तावित किया। श्री प्राणनाथ धई ने उनका समर्थन किया । परन्तु श्री राममूर्ति केला ने महाशय धर्मपाल जी के समर्थन मे अपना नाम वापस ले लिया ।

निर्वाचन की कार्यवाही से पूर्व सामयिक प्रधान डा० धर्मपाल आर्य ने सभी आर्यसमाजो से पधारे आर्य महानुभावो से अपील की कि वे राष्ट्रीय एकता व अखण्डता एवम आर्यसमाज के हितो व सगठन को ध्यान मे रखते हुए सदभावना व सहयोग का परिचय देते हुए चुनाव पूर्ण कराये ।

आर्य प्रादेशिक सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल एव श्री लाजपतराय जी ने नवनिर्वाचित प्रधान महाशय धर्मपाल जी को आगामी वर्ष के लिए कार्यकारिणी के गठन अधिकार देने का प्रस्ताव
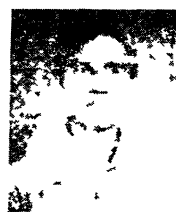
(शेष पृष्ठ ८ पर)

डा० शिवकुमार जी शास्त्री

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

इय समित पृथिवी द्यौर्द्वितीयोतान्तरिक्ष समिधा पृणाति।
ब्रह्मचारी समिधा मेखलया श्रमेण लोकास्तपसा पिपर्ति ।।

अथर्व० काण्ड ११ अ० ३ सूक्त ५।

ब्रह्मविद्या के जिज्ञासु को गुरु के पास हाथ मे समिधा लेकर जाना चाहिए। खाली हाथ जाना मना है। याचक को अभिमान दूर रख देना चाहिए। वेद मे कहा है कि श्रद्धा की समिधा लेकर प्रभु पूजा मे प्रवृत्त होना चाहिए। ब्रह्मचारी की सम्पत्ति समिधा ही है क्योकि ब्रह्मचय तप रूपी यज्ञ ही है। ब्रह्मचय का उद्दश्य वेद विद्या द्वारा ईश्वर प्राप्ति है वह प्राप्ति ही इस ब्रह्मयज्ञ का फल है।

ब्रह्मचारी तीन स्थूल समिधाओ को तो नित्य प्रदीप्त अग्नि मे डालता ही है परन्तु ज्ञानाग्नि को प्रदीप्त करने के लिए भी उसे तीन समिधाओ की ही आवश्यकता है। वह तीन समिधा कौन सी हैं? प्रथम पृथिवी द्वितीय द्यौ और तीसरी अन्तरिक्ष। इन्ही के ज्ञान मे सारा ज्ञान आ जाता है। तैत्तिरीयोपनिषद के शिक्षाध्याय मे पहले गुरु शिष्य को वर्ण स्वर मात्रा प्रयत्न उच्चारण और सन्धि का ज्ञान देकर उस शब्द शिक्षा के पश्चात अथशिक्षा प्रारम्भ करता है। अथशिक्षा मे पाच अधिकरण बतला कर उनमे पहला अधिलोक प्रकरण है। इस दृश्य कार्य जगत का नाम ही अधिलोक है। उस मे पृथिवी पूर्वरूप। द्यौरुत्तररूपम। आकाश सन्धि। वायु सन्धानम। इत्यधिलोकम ।। भूमि ही इस आत्मिक यज्ञ की कार्य सिद्धि मे आधार स्वरूप होने से मुख्य साधन है। उस सब इन्द्रियो से ग्राह्य पृथिवी और उसकी रचना से उठ कर सूर्यादि प्रकाशक लोको का ज्ञान सम्भव है। वहा बाह्य इन्द्रियो मे से केवल एक चक्षु इन्द्रिय की ही गम्यता है। यद्यपि वह प्रकाश गौण साधन है तथापि उस दूर स्थित प्रकाश के बिना निकटस्थ पृथिवी के प्रत्यक्ष दर्शन कठिन ही क्या असम्भव हैं। द्यौ इसलिए उत्तर रूप है। परन्तु पृथिवी और द्यौ—इन दो लोको का मेल कहा होता है? यदि अन्तरिक्ष न हो तो सूर्य का प्रकाश ब्रह्मचारी तक कौन पहुचावे? इसलिए अन्तरिक्ष ही उन दोनो के मेल का स्थान है। पृथिवी और द्युलोक की विद्या की प्राप्ति असम्भव है जब तक कि अतरिक्ष उन्हें परस्पर मिलाने वाला न हो। तब अन्तरिक्ष की विद्या से ही दोनो पहली विद्याओ का निश्चय होता है। ये तीनो इस शिक्षा रूपी आत्म यज्ञ की तीन समिधा हैं। इन्ही तीनो का ज्ञान नित्य प्राप्त करने से आत्म-यज्ञ की अग्नि प्रदीप्त रहती है। ये तीन समिधा हैं परन्तु इनको यज्ञ-कुण्ड मे डालने का हाथ रूपी मुख्य साधन वायु है—यह उपनिषद ने स्पष्टीकरण के लिए विशेष व्याख्या की है। प्रकाश भले ही अन्तरिक्ष मे रहे परन्तु उसकी किरणें वायु के बल से ही पृथिवी तक पहुचती हैं।

ससार के प्रलोभन ब्रह्मचारी को चारो ओर से घरते हैं। विषयो की प्रबल शक्तिया उस पर सारे बल से प्रहार करती हैं। उनका मुकाबला अल्प जीव कैसे करे? उनका मुकाबला नही हो सकता उन शक्तियो को तृप्त करने से ही वे ब्रह्मचारी का पीछा छोडती हैं? क्या भोग से उनकी तृप्ति होती है? मनुष्य अज्ञानवश समझता है कि वह विषयों को भोग रहा है उलटा विषय उसका भुगतान कर देते हैं। उनके चगुल से कैसे छूटे? इस बात का जिक्र करते हुए कि जो मनुष्य काम भोग नही करता और ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करता है उसमे वीर्य स्खलित होने का सर्वथा अभाव असम्भव है, अमेरिका के डाक्टर विलियम् जे राबिन्सन एम डी लिखते हैं—

There is only one exception to this statement, men engrossed in an all absorbing mental task may even while living continent life, go for months and years without an omission

अर्थात् इस कथन मे केवल एक ही अपवाद हो सकता है वह यह है कि जो लोग लगन से किसी मानसिक काम मे लगे हुए हैं वे ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करते हुए भी महीनो और वर्षों तक भी बिना वीर्य स्खलन के रह सकते हैं। डाक्टर राबिन्सन से बहुत पहले ऋषि दयानन्द ने इस विषय पर लिखा था— जिस पुरुष ने विषय के दोष और वीर्य रक्षण के गुण जाने हैं वह विषयासक्त कभी नही होता उसका वीर्य विचाराग्नि मे ईंधनवत् अर्थात उसी मे व्यय हो जाता है।

ब्रह्मचारी सासारिक विरोधी मे शक्तियो को कैसे तृप्त करता है? पृथिवी प्रकाश और अन्तरिक्ष से जो आक्रमण उस पर होते हैं उनको वह कैसे निवारण करता है? वह इन्ही तीनो को समिधा बनाता है और उन्हे ज्ञानाग्नि मे आहुति देकर भस्म कर देता है। भस्म का तात्पर्य यह नही कि उनका अत्यन्ताभाव हो जाता है प्रत्युत मतलब इतना ही है कि रूपान्तर मे आकर वे उस ब्रह्मचारी को अपने धर्म से विचलित नही कर सकते।

हा! इन तीन समिधाओ से आत्मयज्ञ प्रदीप्त कैसे किया जाय? उसके लिए श्रम की आवश्यकता है। उस श्रम रूपी बल की प्राप्ति के लिए मेखला ही एकमात्र साधन है। जननेन्द्रिय को स्वाद के प्रलोभन से बचाने के लिए ब्रह्मचारी मेखला धारण करता है। बिना समिधाधान के मेखलाधारण करने के योग्य (अर्थात लगोट का सच्चा, यति) नही हो सकता और बिना मेखला (तागडी) धारण किए अर्थात लगोट बन्द हुए श्रमी नही हो सकता और उस श्रम से ही अन्त मे तप की प्राप्ति होती है। तब सब लोको को तृप्त करने का साधन तप ही सिद्ध होता है।

उपनिषत की भाषा मे इसलिए कह सकते हैं कि समिधा पूर्वरूपम मेखला उत्तररूपम्। श्रम सन्धि। तप सन्धानम।। यदि ब्रह्मचारी तप द्वारा श्रमी बनकर वीर्य रक्षा द्वारा उस बल को दृढ कर ले और फिर अपनी सारी शक्तियो को पृथिवी लोक द्युलोक और अन्तरिक्षलोक की विद्या के प्राप्त करने मे एक चित्त होकर लगा दे तो फिर वह तप मे दृढता प्राप्त कर लेता है और तपस्वी बन कर सर्व बाह्य

(शेष पृष्ठ ६ पर)

राह दिखायें

ओ३म् ये देवाना यज्ञिया यज्ञियाना मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञा ।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूय पात स्वस्तिभि सदा न ।।

पथ भ्रष्ट कहीं हम हो जायें हम पुन राह पर आ जाय।
जो गीत देव गाते आये हम उन्हें प्रेम से सुन पायें।।

विद्वानो मे यशवान जो
यशवान् मे पूज्य प्राण जो
मनुज मात्र के श्रद्धा भाजन
विप्र मिले हों सत्यवान जो।

सन्तो से सगम हो जाये, सन्मार्ग हमे फिर मिल जाये।
जो गीत देव गाते आये हम उन्हें प्रेम से सुन पायें।।

अमर प्रतिष्ठित प्राणवान् जो
रखते हों शुभ सत्य ज्ञान जो
हमको ऐसा मार्ग दिखायें
हो जायें हम कीर्तिमान् जो।

विद्वान् प्रशसित जन आयें, हम को भी प्रशस्ति दे जायें।
जो गीत देव गाते आयें, हम उन्हें प्रेम से सुन पायें।।

विद्वानो का आह्वान किया
हम ने उनका गुणगान किया
निज रक्षा के लिए उन्हीं की
शुभ सम्मति का सम्मान किया।

आकर निज उपदेश सुनायें, प्रिय वचनो से हमें बचायें।
जो गीत देव गाते आयें, हम उन्हें प्रेम से सुन पायें।।

—देवनारायण भारद्वाज

ओ३म्
आर्य सन्देश

आर्यसमाज का साहित्य और गुरुकुल कांगड़ी का प्रह्लाद

अनेक मनीषी विद्वानो ने कई बार यह प्रश्न उठाया है कि आर्यसमाज के द्वारा साहित्य प्रकाशन के कार्य मे शिथिलता आई है। वस्तुस्थिति इसके विपरीत है। आजकल वैदिक साहित्य एवम् आर्यसमाज के साहित्य का प्रकाशन कई स्थानो की ओर से हो रहा है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य की सूची पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि इस शिरोमणि सभा ने इस क्षेत्र मे विशेष कार्य किया है। वहा से वेदो का प्रकाशन तथा उनके अनुवादो के प्रकाशन का कार्य तो हुआ ही है, साथ ही अनेक मौलिक ग्रथो एवम् अनुसधानपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन भी हुआ है। पुस्तकों का सचित्र प्रकाशन भी हुआ है। इसके लिए सभा के अधिकारी साधुवाद के पात्र हैं।

इसके अतिरिक्त प्रान्तीय सभाए भी अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार प्रकाशन कार्य कर रही हैं। पजाब, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा आदि की सभाओ के तो अपने स्वतन्त्र प्रकाशन हैं। कुछ ऐसे अनूठे ग्रथ भी इन सस्थाओ ने प्रकाशित किए हैं जो अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। प्रादेशिक सभा तथा डी ए वी मैनेजमेंट कमेटी के भी अपने प्रकाशन हैं। यहा से अनेक सुन्दर पुस्तक प्रकाशित हुई हैं।

अनेक आर्यसमाजों ने भी अपने स्तर पर वैदिक साहित्य का प्रकाशन किया है। कलकत्ता, बम्बई तथा दिल्ली की कुछ आर्यसमाजियो का इस दिशा मे विशेष योगदान है।

इनके अतिरिक्त हमारे गुरुकुलो तथा कालेजो की ओर से भी अनेक ग्रथो का प्रणयन एवम् प्रकाशन हुआ है। गुरुकुल झज्जर और गुरुकुल कागडी के नाम इस दिशा मे उल्लेखनीय हैं। इन सस्थानो से नियमित पत्रिकाए भी प्रकाशित होती रहती हैं। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से नियमित रूप से कई पत्रिकाए निकलती हैं। इनमे एक पत्रिका प्रह्लाद है। इस पत्रिका का प्रकाशन त्रैमासिक होता है तथा इसमे सामान्यत गुरुकुल कागडी की गतिविधियो के अतिरिक्त प्राच्य विद्याओ से सम्बन्धित शोध-पत्रो का सकलन भी किया जाता है। अभी पिछले दिनो इसका 'शिक्षाक' प्रकाशित हुआ है। इस अक में गुरुकुल कागडी के प्राध्यापको के लेख तो हैं ही। इसमे आर्यसमाज के विद्वानो के लेख भी हैं। प्राचीन भारत मे गुरुकुलीय परम्परा तथा वर्तमान भारत मे इनकी प्रासगिकता से सम्बन्धित सुन्दर लेख सकलित किए गए हैं। प्राचीन भारतीय ग्रथो मे सूक्ष्म जीव-विज्ञान तथा वनस्पति विज्ञान से सम्बन्धित सामग्री खोज कर विद्वान् लेखको ने स्तुत्य प्रयास किया है। इस पाश्चात्य मान्यता का इस बात से स्पष्ट खण्डन हो जाता है कि हमारे ग्रथों मे केवल, अध्यात्म अथवा दर्शन का ही भण्डार है। इन विद्वान् लेखकों को मै बधाई देना चाहता हूं। गाधी की दृष्टि मे गुरुकुल शिक्षा लेख तो हमारी आखें खोलने वाला है।

इस अक में सम्पादकों डा० विष्णुदत्त राकेश और डा० विनोद चन्द्र सिन्हा का साधुवाद करना मैं अपना पुनीत कर्त्तव्य मानता हू। किसी भी पत्रिका के सम्पादन में पूरी संस्था का ही योगदान हुआ करता है। अत गुरुकुल कांगडी के सभी अधिकारियों को इस सुन्दर अक के लिए बधाई। यह बात भी बहुत ही प्रासंगिक है कि इस अक में कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी का चित्र भी प्रकाशित हुआ है। प्रोफेसर साहब शिक्षाविद तो हैं ही, वे शिक्षा सम्बन्धी चिन्तन से लम्बे समय से जुड़े रहे हैं और उन्होंने भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक नया आयाम दिया है।

—डा० धर्मपाल

वर्ण-व्यवस्था

ऋग्वेदभाष्यभूमिका से

सबसे उत्तम विद्या और श्रेष्ठ कर्म करने वालो को ही ब्राह्मण वर्ण का अधिकार देना, उनसे विद्या का प्रचार कराना और उन लोगो को भी चाहिये कि विद्या के प्रचार मे ही सदा तत्पर रहे। (क्षत्र च) अर्थात सब कामो मे चतुरता, शूरवीरपन, धीरज, वीर पुरुषो से युक्त सेना का रखना दुष्टों को दण्ड देना और श्रेष्ठो का पालन करना, इत्यादि गुणो के बढाने वाले पुरुषो को क्षत्रिय वर्ण का अधिकार देना। (राष्ट्र च) श्रेष्ठ पुरुषो की सभा के अच्छे नियमो से राज्य को सब सुखो से युक्त करना, और उत्तम गुण सहित होके सब कामो को सदा सिद्ध करना चाहिये। (विशश्च) वैश्य आदि वर्णो को व्यापारादि व्यवहारो मे भूगोल के बीच मे जाने आने का प्रबन्ध करना और उनकी अच्छी रीति से रक्षा करनी अवश्य है जिससे धनादि पदार्थों की ससार मे बढती हो। (त्विषिश्च) सब मनुष्यो मे सब दिन सत्य गुणो ही का प्रकाश करना चाहिय। (यशश्च) उत्तम कामो से भूगोल मे श्रेष्ठ कीर्ति को बढाना उचित है। (वर्चश्च) सत्य विद्याओ के प्रचार के लिए अनेक पाठशालाओ मे पुत्र और कन्याओ का अच्छी रीति से पढने पढाने का प्रचार सदा बढाते जाना चाहिये। (द्रविण च) सब मनुष्यो को उचित है कि पूर्वोक्त धर्म से अप्राप्त पदार्थों की प्राप्ति की इच्छा से सदा पुरुषार्थ करना, अप्राप्त पदार्थों की प्राप्ति की इच्छा से सदा पुरुषार्थ करना, प्राप्त पदार्थों की रक्षा यथावत् करनी चाहिये, रक्षा किये पदार्थो की सदा बढती करना और सत्य विद्या के प्रचार आदि कामो मे बढ हुए धनादि पदार्थों का खरच यथावत करना चाहिये। इस चार प्रकार के पुरुषार्थ से धनधान्यादि को बढा के सुख को सदा बढाते जाओ ॥१२॥

(आयुश्च) वीर्य आदि धातुओ की शुद्धि और रक्षा करना, तथा युक्तिपूर्वक ही भोजन और वस्त्र आदि का जो धारण करना है, इन अच्छे नियमो से उमर को सदा बढाओ। (रूप च) अत्यन्त विषय-सेवा से पृथक् रह के और शुद्ध वस्त्र आदि धारण से शरीर का स्वरूप सदा उत्तम रखना। (नाम च) उत्तम कर्मों के आचरण से नाम की प्रसिद्धि करनी चाहिये, जिससे अन्य मनुष्यो का भी श्रेष्ठ मे उत्साह हो। (कीर्तिश्च) श्रेष्ठ गुणो के ग्रहण के लिए परमेश्वर के गुणो का श्रवण और उपदेश करते रहो, जिससे तुम्हारा भी यश बढे। (प्राणश्चापानश्च) जो वायु भीतर से बाहर जाता है उसको 'प्राण, और जो बाहर से भीतर जाता है उसको 'अपान कहते हैं। योगाभ्यास शुद्ध देश मे निवास आदि और भीतर से बल करके प्राण को बाहर निकाल के रोकने से शरीर के रोगो को छुडा के शुद्धि आदि को बढाओ। (चक्षुश्च श्रोत्र च) प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, सभव और अभाव, इन आठ प्रमाणो के विज्ञान से सत्य का नित्य शोधन कर के ग्रहण किया करो ॥१३॥

(पयश्च रसश्च) जो पय अर्थात् दूध, जल आदि और जो रस अर्थात् शक्कर, औषधि और घी आदि हैं, इनको वैद्यकशास्त्रो की रीति से यथावत् शोध के भोजन आदि करते रहो। (अन्न चान्नाद्य च) वैद्यकशास्त्र की रीति से चावल आदि अन्न का यथावत सस्कार कर के भोजन करना चाहये (ऋत च सत्य च) ऋत नाम जो ब्रह्म है, उसी की सदा उपासना करनी। जैसा हृदय मे ज्ञान हो सदा वैसा ही भाषण करना और सत्य को ही मानना चाहिये। (इष्ट च पूर्तं च) इष्ट जो ब्रह्म है उसी की उपासना और जो पूर्वोक्त यज्ञ सब ससार को सुख देने वाला है, उस इष्ट की सिद्धि करने की पूर्ति, और जिस-जिस उत्तम कामो के आरम्भ को यथावत् पूर्ण करने के लिए जो जो अवश्य हो सो-सो सामग्री पूर्ण करनी चाहिए (प्रजा च पशवश्च) सब मनुष्य लोग अपने सन्तान और राज्य को अच्छी शिक्षा दिया करे, और हस्ती तथा घोडो आदि पशुओ को भी अच्छी रीति से सुशिक्षित करना उचित है। इन मन्त्रो मे और भी अनेक प्रयोजन हैं कि सब मनुष्य लोग अन्य भी धर्म के शुभ लक्षणो का ग्रहण करे ॥१४॥)

व्यवस्थापक
पुष्करलाल आर्य
१२१, काटन स्ट्रीट
कलकत्ता-७

• (महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेद आदि भाष्य भूमिका, सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थो का स्वाध्याय कर करायें) यही धर्म और मोक्ष को प्राप्त कराने वाली सीढिया हैं।

मेरी उत्तराञ्चल प्रचार यात्रा

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष, वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ०प्र०)

राष्ट्र और धर्म रक्षा अभियाना न्तगत मेरी यात्रा ४ मई को प्रारम्भ हुई। उसी दिन सायंकाल ६ बजे मैं डाडा मण्डी (जनपद पौडी) पहुँचा। डाडा मण्डी मे श्री मास्टर सत्यपाल जी आर्य रहते हैं जिनका मुझे आतिथ्य ग्रहण करना था। मास्टर जी घर पर नहा थे उनकी धर्मपरायण पत्नी ने अभिवादन कर ठहराया। तब तक मास्टर जी आ गए। मास्टर जी ने कहा कि हम तो गुरु जी आशा और निराशा के मध्य मे झूल रहे थे परन्तु आप आ गये यह हमारे लिए सौभाग्य का विषय है। उन्होने बताया कि क्योंकि परीक्षाय आज ही समाप्त हुई हैं। अत विद्यार्थियो के आने की तो आशा नही की जा सकती थी अतएव कल ही पाच मई को विद्यार्थियो को उपस्थित होने के लिए आदेश प्रसारित कर दिया गया था।

१ किलोमीटर दूरी पर मटियाली ग्राम मे राजकीय इन्टर कालिज है। अगले दिन ५ मई को प्रात स्वल्पाहार के पश्चात हम लोग मटियाली कालिज मे पहुँचे। कार्यालय मे उपस्थित अध्यापक तथा प्रधानाचाय महोदय ने हमारा स्वागत किया। प्रधानाचार्य श्री रमेश चन्द्र जी मिश्र बहुत अच्छे स्वभाव के व्यक्ति है। मैंने उन्हें कुछ अपनी पुस्तक तथा ग्रन्थ की दो प्रतिया कालिज के लिए भेट की। जन्मजातीय ... छुआछूत विरोधी पोस्टर जो प्रधानाचार्य जी को भेट किए तो उन्होने प्रत्येक श्रेणी कक्ष मे लगा देने का आदेश किया और कहने लगे यह तो आप का राष्ट्रीय कार्यक्रम है। सरकार को जो काय करना चाहिए वह आप कर रहे हैं। हम इसमे पूरा सहयोग करेंगे।

विद्यार्थी विषय पर बोलते हुए विद्यार्थियो के लिए भी उपयोगी होने से मैंने रामायण महाभारत के टी० वी० पर आने वाले सीरियलो मे आर्य शब्द के प्रयोग की चर्चा करते हुए कहा कि उत्तराञ्चल मे आर्य का अर्थ डोम (शूद्र) लगाया जाता है। यदि आर्य डोम को कहते हैं तो सभी ऋषि मुनि और राम कृष्ण आदि महापुरुष डोम हुए और अब हमारे यह पूर्व पुरुष डोम हुए तो फिर तुम कहा को बच जायगे? मैंने कहा इसलिए मैं उत्तराखण्ड के अपने ठाकुर-ब्राह्मण बन्धुओ को कहना चाहता हू कि इस भ्रान्ति से बचो। आप सब आर्य हैं आप आर्यों की सन्तान हैं और आर्यावर्त्त देश आपका आदि देश है। चाहे तो इस प्रकार कहो कि आर्य ही यहा के मूल निवासी हैं। देखो इस देश का सबसे पहला नाम आर्यावर्त्त है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि यहा आर्यों से पहले कोई जाति नही रहती थी। यदि आर्यों से पहले कोई रहता होता तो आर्यावर्त्त से पहले भी इस देश का कोई अन्य नाम अवश्य होता।

मेरे भाषण के पश्चात जो अध्यापक (सम्भवत वह विद्यालय के उपाचार्य भी थे) धन्यवाद के लिए खडे हुए उन्होने कहा यह ध्रुव सत्य है कि इतिहास मे इस देश का आर्यावर्त्त से पहले कोई अन्य नाम नही था। वह बोले क्योंकि मैंने इतिहास मे भी एम० ए० किया है। अत मैं यह पूरे दायित्व के साथ कह रहा हू।

भाषण की समाप्ति पर चाय की व्यवस्था थी। इस अवसर पर ... वर्ण जन्म से नहीं गुण कर्म से तथा हिन्दू नही आर्य ... पुस्तक अध्यापको को भी भेट की गयी। ... जी ने एक सेट हमारी पुस्तको का अपने लिए मागा और बार बार हमारे वापिस जाने के आग्रह करने पर भी डाडा मण्डी तक हमारे साथ साथ आये। अनेक अध्यापक भी उनके साथ थे।

अपराह्न मे श्री मास्टर सत्यपाल जी के श्री गृह पर ही अनेक राजकीय अधिकारियो के साथ वैदिक सिद्धातो पर प्रश्नोत्तर रूप से शंका समाधान होता रहा।

६ मई को मास्टर जी से विदा होकर मैं सतपुली नगर के लिए चल पडा। मार्ग मे दुगड्डा नगर में बस बदलनी थी लगभग दो घंटे वहा लगे। उस समय का सदुपयोग साहित्य तथा पोस्टर वितरण मे किया गया। कुछ व्यक्तियो से संक्षिप्त परिचय भी हुआ जिनमे नरेश होटल वाले नरेशचन्द्र अग्रवाल प्रमुख हैं। होटल वालो ने पोस्टर अपने होटलों के बाहर लगवाने को लिये।

सतपुली निवासी श्री वैद्य राजाराम जी से पहले पत्र व्यवहार था किन्तु किसी आवश्यक कार्यवश उन्हे बाहर जाना पडा। जब सतपुली बस से उतर कर उनके श्री गृह पर पहुचा तो उनके पुत्र ने यथोचित सत्कार किया। भोजनोपरान्त विश्राम कर के अपराह्न पुस्तक वितरण तथा पोस्टर लगवाने का कार्य प्रारम्भ किया। कई दुकानदारो ने दुकानो के बाहर लगवाने को पोस्टर लिये। सतपुली पहुँचने तक विद्यालय बन्द हो चुका था अतएव सायकाल प्रधानाचाय महोदय के श्री गृह पर पहुँच कर विद्यालय के लिए सत्यार्थप्रकाश की दो प्रतिया अपनी लिखी पुस्तक तथा कुछ पोस्टर भेट किये।

७ मई को प्रात राजाराम जी वैद्य भी वापस आ गये तब उनमे सतपुली मे आर्यसमाज के प्रचार विषय पर विचार विनिमय करके पौडी नगर के लिए यात्रा प्रारम्भ की। मध्याह्न पौडी पहुँच कर स्नान भोजन से निवृत्त होकर विश्राम किया तथा अपराह्न श्री मदनलाल जी भूतपूर्व महाप्रबन्धक टेलीफोन के साथ नगर भ्रमण को निकला। उन्ही के श्री गृहपर मैं ठहरा था। बडी श्रद्धा से उन्होने आतिथ्य किया। श्री मदनलाल जी अत्यन्त सौम्य स्वभाव के व्यक्ति हैं और डी० ए० वी० स्कूल पौडी के विद्यार्थी रहे है तथा पौडी के ही निवासी हैं। आप के चार पुत्रो मे से एक वेनु राकेश कुमार एडवोकेट हैं और वही आर्य समाज के मन्त्री हैं। किन्तु दो-एक सदस्यो के बाहर चले जाने और एक वृद्ध के स्वर्गारोहण से आर्य समाज का कार्य शिथिल हो गया है। मन्त्री जी की माता जी के मन मे आर्यसमाज के कार्य के शिथिल होने की बडी टीस है किन्तु नेत्र ज्योति की हीनता के कारण कुछ करने मे असमर्थ हैं।

मेरा कार्यक्रम डी० ए० वी० कालिज के प्रधानाचार्य जी को भी भेजा जा चुका था किन्तु ७ मई को रविवार था तथा ८ मई को ईद हो जाने के कारण विद्यालय की छुट्टी हो गई अतएव भाषण नही हो सका। हाँ, ८ मई को पुस्तके वितरण और जनसम्पर्क का कार्य पूरे दिन किया गया। पोस्टर लगाने का कार्य स्वयं वेनु राकेश कुमार एडवोकेट ने अपने आप करने का वचन देकर पोस्टर ले लिये। पौडी नगर मे पुराना आर्यसमाज का भवन है और उसमे स्वामी श्रद्धानन्द सार्वजनिक पुस्तकालय चलता है।

९ मई को प्रात साढे आठ बजे पौडी से रुद्रप्रयाग के लिए प्रस्थान किया। श्री मदनलाल जी मुझे बस में बैठाकर विदा करने आये। फिर आने का आग्रह करते हुए इतने द्रवित हो गये कि उनका कण्ठ अवरुद्ध हो गया। रुद्रप्रयाग बहुत छोटी सी बस्ती है। मध्याह्न दो घण्टे का समय वहा लगाया। स्वास्थ्य तो यात्रा प्रारम्भ करने से पहले ही विकृत था किन्तु सब स्थानो को सूचना दी जा चुकी थी। अत यात्रा की। पौडी जाकर अधिक विकृति स्वास्थ्य मे आई। कारण यह कि पौडी का पानी बहुत भारी है। पूर्णतया अपच हो गया। अतिसार की स्थिति बन गई। रुद्रप्रयाग से अपराह्न ही श्रीनगर आकर राजकीय पर्यटक आवास केन्द्र मे कमरा लेकर कुछ देर विश्राम किया तथा तत्पश्चात पुस्तक वितरण तथा जनसम्पर्क के लिए चल दिया। उस दिन केवल गोला बाजार मे ही जनसम्पर्क हो सका। अगले दिन पूर्वाह्न तो स्वास्थ्य की सम्भाल मे ही लगा रहा। औषधोपचार निरन्तर चल ही रहा था। मध्याह्नोत्तर सर्राफा तथा ... बाजार मे जनसम्पर्क किया।

अलखनन्दा के तट पर श्रीनगर सुन्दर नगरी है। गढवाल विश्वविद्यालय इस नगर मे होने से इसका महत्त्व बढ गया है। यहा पर्यटक आवास केन्द्र मे रहकर ही उत्तराञ्चल के विस्तृत क्षेत्र मे प्रचार किया जा सकता है। एक तो विश्वविद्यालय होने से समस्त उत्तराञ्चल के विद्यार्थी यहा मिलते हैं। दूसरे यातायात की दृष्टि से यह नगर उत्तर के जोशीमठ बद्रीनाथ-केदारनाथ टिहरी, उत्तरकाशी, गंगोत्री से जुडा है तो इधर पौडी होकर कोटद्वार और देवप्रयाग होकर ऋषिकेश तथा हरिद्वार से जुडा है।

९ और १० मई को श्रीनगर मे विकृत स्वास्थ्य में भी जितना सम्भव था, जनसम्पर्क और पुस्तकें

(शेष पृष्ठ ६ पर)

बम्बई महानगरी की आर्यसमाजों द्वारा

पं० सत्यकाम विद्यालंकार का अभिनन्दन

५१ हजार की थैली भेंट

वेदों की ज्योति लोगों तक पहुँचाना ही मेरी पूजा
–विद्यालंकार

आर्य जगत के वैदिक विद्वानो के सम्मान की शृंखला के ६ जून १९८९ को बम्बई महानगर की समस्त आर्यसमाजो ने आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई एवम् अनेक साहित्यिक सस्थाओ ने विद्यामार्तण्ड वेद मनीषी, साहित्यकार प० सत्यकाम जी विद्यालंकार का सम्मान कर, एक और नई कड़ी जोड दी। इससे पूर्व आर्यसमाज सान्ताक्रूज द्वारा आदरणीय प० युधिष्ठिर जी मीमासक का ७५ हजार की थैली भेंट से एवम् आदरणीय प० उदयवीर जी शास्त्री, प० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड, आचार्य प्रियव्रत जी एवम् डा० रामनाथ जी वेदालकार का सम्मान २१ हजार की थैली से 'वेद वेदाग पुरस्कार' के अन्तर्गत तथा वेदोपदेशक पुरस्कार के अन्तर्गत शास्त्रार्थ महारथी प० शान्तिप्रकाश जी एवम् भजनोपदेशक प० पन्नालाल जी पीयूष का सम्मान ११ हजार की थैली से किया जा चुका है। योजना बना ... देशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री कैप्टिन देवरत्न आर्य ने और १५ दिन की अल्पावधि मे उसे कार्यान्वित भी कर दिया।

भारतीय विद्या भवन के हाल मे समारोह आयोजित किया गया। अध्यक्षता की प्रसिद्ध उद्योगपति एवम् दानवीर श्री सत्यप्रकाश जी आर्य ने। मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित थी श्रीमती सविता बन ... जी कालीदास मेहता एवम् आर्य नेता सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान माननीय सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास।

कैप्टिन देवरत्न आर्य ने अपने स्वागत भाषण मे कहा, कि पूर्व मे हमने श्री विद्यालकार जी का सम्मान २१ हजार की थैली से करने का निश्चय किया था। सूचना भेजने पर पण्डित जी की पुस्तको के प्रकाशको की ओर से हमे १८ हजार रुपये प्राप्त हो गये, अत पुन: विचार किया कि सम्मान ३१ हजार की थैली से किया जाए। लेकिन लोगो की प० सत्यकाम जी विद्यालकार के प्रति श्रद्धा के कारण ४३ हजार की राशि जमा हो गई अत अब हम उनका सम्मान ४३ हजार की थैली से करेगे। इस घोषणा के साथ ही सभागृह से आवाज आई इस सम्माने की निधि को ५१ हजार किया जाए और इसके पश्चात् उपस्थित लोगो ने सम्मान निधि देना शुरू कर दिया। इसी बीच श्री चन्द्र मोहन जी आर्य एवम् श्री महेन्द्र जी आर्य ने घोषणा की कि ५१ हजार मे जितना भी कमी होगी हम पूरी करेगे और क्षण भर मे यह सम्मान राशि ५२ हजार' से भी अधिक हो गई। श्री सत्यकाम जी का परिचय देते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के प्रधान श्री ओकारनाथ जी आर्य ने कहा कि विद्यालकार जी देश के उन मनीषियो मे से हैं जिन्होने ऋग्वेद की तीन ऋचाओ का श्रेष्ठतम अर्थ निकाला निकाला था। देश भर के विश्वविद्यालयो ने भी माना कि ऋचाओ का इससे अधिक सुन्दर एवम सही अर्थ निकाला जाना सम्भव नही है।

आर्य नेता श्री प्रताप सिह शूरजी वल्लभदास ने आदरणीय पण्डित जी के दो ग्रथ "विजडम आफ वेदाज" एवम "दी होली वेदाज" का विमोचन किया। उन्होंने उनकी रचनाओ को साहित्य की शाश्वत तथा अमूल्य निधि बताया। उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि सुश्री सविता बेन ने कहा कि वेदो की रचना करने के लिए ईश्वर ने चार ऋषियो को जन्म दिया और उनका अनुवाद करने के लिए पण्डित सत्यकाम विद्यालकार को।

अपने सम्मान के प्रत्युत्तर मे श्री विद्यालंकार जी ने कहा कि आपके प्रति मेरा स्नेह वस्तुत वेदो के प्रति स्नेह का प्रतीक है। वेदों की ऋचाएँ इतनी महान् हैं कि मै ८४ वर्ष की आयु में भी अपने

(शेष पृष्ठ ६ पर)

॥ ओ३म् ॥

वैदिक मोहन आश्रम

(पाखण्ड खण्डिनी पताका स्थल)

भूपनवाला, हरिद्वार

मे

स्वामी दयानन्द स्मारक स्तम्भ निर्माण कार्य अग्रसर

आर्थिक सहायता की अपील

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि स्वामी जी की आयु अनुसार सगमरमर का ५९ फुट ऊँचा यह स्मारक हरिद्वार मे आधुनिक कला का अद्भुत प्रतीक होगा, जिसके चारो ओर वेद मन्त्र, सत्यार्थप्रकाश के वाक्य तथा स्वामी जी के जीवनकाल की कुछ घटनाएँ भी अंकित होगी। मैसूर के वृन्दावन उद्यान की तरह वाद्यवृन्द फव्वारे (Musical Fountains) लगाने की भी योजना है। इन कार्यो पर लगभग १५ लाख रु० व्यय का अनुमान है। इस समय तक स्तम्भ निर्माण २० फुट ऊँचा जा चुका है और इस पर २ लाख रु० व्यय हो चुका है। दानी महानुभावो विशेषकर आर्यसमाजियो, सस्थाओ, ट्रस्टो से प्रार्थना है कि वह इस भारतवर्ष के महान स्मारक कार्य मे अपना अपना योगदान देने की कृपा करे।

राशि दान नकद मनीआर्डर, चैक एव बैक ड्राफ्ट द्वारा "वैदिक मोहन आश्रम के नाम केवल खाते मे अंकित करके "वैदिक मोहन आश्रम भूपनवाला, हरिद्वार २४९४१० के पते पर भेजने की कृपा करे। जो दानी दिल्ली मे दान देना चाहे वह आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग नई दिल्ली ११०००१ के पते पर दान भिजवाने की कृपा करे और कार्यालय से रसीद प्राप्त करे।

नोट :

१ वैदिक मोहन आश्रम मे दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के आधीन आयकर मुक्त है।

२ एक हजार रु० से अधिक दान देने वाले दानियो के नाम पटल पर लिखे जायेगे एव पाच हजार रु० से अधिक राशि देने वाले दानियो के नाम का विशेष पत्थर लगाया जायेगा।

निवेदक :

प्रो० वेद व्यास (प्रधान)

तिलक राज गुप्ता (मन्त्री)

खेमचन्द मेहता (कार्यकर्ता प्रधान)

ट्रस्टीगण वैदिक मोहन आश्रम, हरिद्वार

आर्य जगत के समाचार

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर अजमेर

ऋषि उद्यान अजमेर मे परोपकारिणी सभा के तत्त्वावधान मे आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर दिनाक २६।५।८९ को प्रात ३ बजे श्री ओम् प्रकाश जी झबर के कर कमलो द्वारा ध्वजारोहण के साथ बड़ हर्षोल्लास से प्रारम्भ हुआ। तत्पश्चात शिविराध्यक्ष श्री कमचन्द जी गुप्त ने प्रविष्ट आर्यवीरो को प्रोत्साहित किया कि वस्तुत वे इस शिविर मे अनुशासित होकर अपने भविष्य को उज्ज्वल कर सकगे।

प्रतिदिन शिविर का कार्यक्रम विधिवत चलता रहा जिसमे बौद्धिक शिक्षा आचार्य श्री धर्मवीर जी पाणिनिधाम तिलोरा पुष्कर द्वारा बहुत ही सुचारु रूप से दी गई जिससे शिविर के आर्य वीरो मे एक नयी चेतना का सचार हुआ। आर्य वीरो न तदनुरूप नियमो का पालन करते हुए क्षात्रधर्म का पालन करने का दृढ सकल्प लिया।

व्यायाम शिक्षक श्री अजयकुमार ब्र० यतीन्द्र शास्त्री एवम श्री कुलदीप मारवला ने आर्य वीरो को दिनचर्या के अनुसार प्रात एव सायकाल आसन, प्राणायाम दण्ड बैठक लाठी, भाला, लेजियम आदि का प्रशिक्षण बहुत ही सरल एवम आकर्षक ढग मे देकर आर्य वीरो को सुशिक्षित किया। चरित्र निर्माण की प्रेरणा देने हेतु श्रीमान् प्रो० धर्मवीर जी, प्रो० कृष्णपाल जी श्री सत्यवीर जी आर्य प्रधान सचालक आर्य वीर दल राजस्थान एवम प्रधानाचार्य श्री रामसिंह जी आदि विद्वानो के विचारो से आर्यवीरो को अवगत कराया गया।

समापन समारोह—

समारोह का प्रारम्भ करते हुए सयुक्त मन्त्री श्री कर्मचन्द जी गुप्त ने अभ्यागतो का स्वागत करते हुए अध्यक्ष एवम मुख्य अतिथि का माल्यार्पण कर अभिनन्दन किया। शिविर के समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए सस्कृत के विद्वान डा० ब्रह्मानन्द जी शर्मा ने कहा आज राष्ट्र व समाज के सुधार के लिए इस प्रकार के शिविरो की नितान्त आवश्यकता है क्योकि हमे अपना विकास करना होगा। हमारा अस्तित्व हमारी सस्कृति मे निहित है। सस्कृति के बिना किया गया विकास हमारा विकास न होकर किसी अन्य का विकास होगा। समारोह के मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए न्याय के प्रधान सम्पादक श्री विश्वदव शर्मा ने कहा यह कार्य परोपकारिणी सभा का रचनात्मक काय है। इस कार्य से सभी को प्रसन्नता का अनुभव होगा। शिविर मे भाग लेने वाले छात्रो ने शारीरिक एवम बौद्धिक दोनो ही प्रकार से अच्छा प्रदर्शन किया है। इसके लिए शिक्षक एवम छात्र बधाई के पात्र है।

प्रवेश सूचना

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि प्रकृति के सुरम्य वातावरण मे स्थित श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल सस्कृत महाविद्यालय खेडा खुर्द दिल्ली-८२ मे प्रथमा (छठी) से शास्त्री (बी०ए०) तक प्रवेश प्रारम्भ है। यह विद्यालय सम्पूर्णानन्द सस्कृत विद्यालय वाराणसी से सम्बद्ध तथा दिल्ली प्रशासन से सहायता एवम् मान्यता प्राप्त है। यहा सच्चरित्र-अधिष्ठाता एवम् योग्य आचार्यो की देख-रेख मे छात्रो को नि शुल्क शिक्षा तथा आवासीय सुविधा उपलब्ध है योग्य एव निधन छात्रो का नि शुल्क भोजन व छात्रवृत्ति आदि भी प्रदान की जाती है। शीघ्रातिशीघ्र छात्रो के उज्ज्वल भविष्य के लिए गुरुकुल मे प्रवेश दिलाय।

यहा आने के लिए रेलवे स्टेशन स १०७ एवम् मोरीगेट तथा आजादपुर टर्मिनल से १२८, १७९ नम्बर की बस खेडाखुर्द जाती हैं।

प्रकाशचन्द्र शास्त्री प्रबन्धक
श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल सस्कृत
महाविद्यालय, खेडाखुर्द, दिल्ली-८२

उत्तराञ्चल यात्रा

(पृष्ठ ४ का शेष)

वितरण का कार्य किया। छुट्टिया हो जाने से विद्यालयो मे भाषण नही हो सके। पर्यटक आवास केन्द्र मे भी विविध क्षेत्रो से आये पर्यटको को साहित्य भेट किया।

पर्यटक आवास केन्द्र के मुख्य प्रबन्धक महोदय को भी पुस्तके भेट की। वह युवक तो इतना प्रभावित हुआ कि एकदम घुल-मिलकर विविध विषयो पर वार्तालाप किया। सत्यार्थप्रकाश को प्राप्त कर कहने लगा कि इस बहुचर्चित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ को मुझे प्रदान कर आपने बडा उपकार किया है। पहले आपकी लघु पुस्तको को पढ़कर तब इसे प्रारम्भ करूँगा। कुछ पोस्टर भी उन्होने लगवाने को लिये।

स्वास्थ्य की बिगडती दशा के कारण टिहरी, उत्तर काशी, भट वाडी और गगोत्री के कार्यक्रम स्थगित कर ११ मई को मुझे लौट आना पडा। स्वास्थ्य लाभ तथा सस्थान के आवश्यक कार्यो से निवृत्त होकर शीघ्र ही यात्रा प्रारम्भ होगी। महर्षि दयानन्द द्वारा निर्देशित वैदिक विचारधारा से उस आर्थिक तथा वैज्ञानिक दृष्टि से पिछड क्षेत्र मे जितना जितना जनजागरण होगा उतना ही उतना ईसाइयत की अराष्ट्रीय गतिविधियो से भारत का यह सीमान्त क्षेत्र सुरक्षित होता जाएगा।

आर्यसमाज हनुमान रोड का वार्षिक निर्वाचन रद्द कर दिया गया है।

(पृष्ठ २ का शेष)

उपदेश

शक्तियों को ऐसा तृप्त कर देता है कि वे उसको गिराने का साहस करने के स्थान मे उसकी सहायक होती हैं।

शब्दार्थ—

(इयम पृथिवी समृद्‍त्) पृथिवी लोक पहली समिधा है (द्यौ द्वितीया) दूसरी प्रकाशमान द्युलोक और तीसरी (अन्तरिक्ष समिधा) अन्तरिक्ष समिधा है। इन तीनो से ब्रह्मचारी यज्ञ को पूर्ण करता है। (ब्रह्मचारी समिधा मेखलया श्रमेण तपसा लोकान् पिपर्ति) ब्रह्मचारी(१) समिधा से (२) मेखला से (३) श्रम से (४) और तप से लोको, विषयो की तृप्ति करता है।

सत्यकाम विद्यालंकार का अभिनन्दन

(पृष्ठ ५ का शेष)

आपको वृद्ध अनुभव नही करता। वेदो की ज्योति को लोगों के हृदय तक पहुचाना ही मै अपनी पूजा समझता हू। वेदो का राग प्रेम है जो यह बताता है कि मनुष्य आपस मे तथा भगवान से प्रेम करना सीखे। उन्होने कहा, ऐसा भव्य सम्मान मेरा जीवन मे पहली बार हुआ है। मै जब तक जीवित हू सिर्फ वेदो के ज्ञान का ही प्रसारण करता रहूगा।

अध्यक्ष पद से बोलते हुए श्री सत्यप्रकाश जी आर्य ने प० सत्यकाम जी की साहित्य और सस्कृति की अभिवृद्धि मे उनके योगदान की मुक्त कण्ठ से सराहना की। उन्होंने कहा आज श्री सत्यकाम जी के साथ बैठकर मै स्वय को धन्य समझता हू। उनके द्वारा लिखी पुस्तक "दो होली वेदाज' को मै अपने होटल के हर कमरे मे रखूगा ताकि लोगो का ध्यान वेदो की ओर भी जाए। उन्होने पण्डित जी की महान् साहित्य सेवा की चर्चा करते हुए साहित्यकारो एवम साहित्य प्रेमियो से उनकी अविरत साधना से प्रेरणा लेने के लिए कहा। □

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Post in N D P S.O. on 6, 7-7-89 Licenced to post without prepayment Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५१ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३९

(पृष्ठ १ का शेष)

राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता ... -

हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने आर्ययुवको का आह्वान किया कि वे विघटनकारी शक्तियो का जम कर विरोध करे तथा सामाजिक कुरीतियो के उन्मूलन मे पूर्ण सहयोग दे। गुरुकुल के आचार्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने आर्य वीरो को आर्य समाज के उद्देश्यो के अनुरूप कार्य करने के लिए जीवनदान करने की प्रेरणा दी। इससे उत्साहित होकर गुरुकुल ततारपुर के आचार्य श्री धर्मपाल ने प्रण किया कि वे आर्यसमाज के कार्य के लिए अपने आपको समर्पित करगे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने आर्य वीरो को सम्बोधित करते हुए आशा व्यक्त की कि वे वैदिक धर्म के लिए तथा आर्यसमाज के लिए और उससे भी ऊपर देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए उद्यत रहेगे।

इस अवसर पर श्री विजयपाल शास्त्री श्री प्रियतम दास रसवन्त, श्री वेदव्रत शास्त्री, श्री सत्यदेव शास्त्री तथा अन्य आर्यजनो ने आर्य वीरो को सम्बोधित किया।

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर की स्थापना १९१५ मे श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने की थी। अगले वर्ष इसे स्थापित हुए ७५ वर्ष हो जाएगे। हमे आशा है कि इस अवसर पर यहा इसकी गरिमा के अनुरूप भव्य कार्यक्रम भी आयोजित किया जाएगा। ●

(पृष्ठ १ का शेष)

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का निर्वाचन ...

रखा। जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

नवनिर्वाचित प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने सभी आर्यजनो के प्रति आभार व्यक्त करते हुए यह घोषणा की कि डा० शिवकुमार शास्त्री को महामन्त्री बनाया जाता है और शेष कार्यकारिणी के नामो की घोषणा बाद मे की जाएगी।

इससे पूर्व गत वर्ष की कार्यवाही सम्पुष्ट हुई। सामयिक प्रधान डा० धर्मपाल आर्य के प्रति धन्यवाद ज्ञापन एवं शान्तिपाठ के पश्चात् निर्वाचन की कार्यवाही सम्पन्न हुई। □

गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

चम्पारण जिला आर्य सभा के तत्त्वावधान मे आर्यसमाज मिगोइया द्वारा गायत्री महायज्ञ दिनाक ९ जून से १४ जून तक धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ मे युवा पीढी के प्रसिद्ध विद्वान् प्रो० ...कुमार शास्त्री प्रवक्ता राजा रणजय रणवीर स्नातकोत्तर महाविद्यालय अमेठी, नेपाल के प्रसिद्ध आर्यसमाज के प्रचारक श्री रामचन्द्रसिंह क्रान्तिकारी चम्पारण जिला आर्य सभा के प्रचारक प० ध्रुवप्रसाद जी एव भजनीक अमरदेव जी पधारे थे। प्रतिदिन गायत्री महायज्ञ में हजारों की सख्या मे स्त्री पुरुष भाग लेते थे एव विद्वानो के उपदेश सुनते थे। कार्यक्रम सुबह से रात्रि ११ बजे तक चलता था।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस गली न०१७ कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५१

साप्ताहिक ओ३म् आर्य सन्देश

वर्ष १२ अंक ३६ रविवार १६ जुलाई १९८९ आषाढ सम्वत २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द — १६५ सृष्टि सवत १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश मे ५० पौं० १०० डालर दूरभाष २१०१५०

आर्यसमाज न्यू मोतीनगर मे मोगा दिवस के अवसर पर

पूर्वाग्रहों को छोड़कर सभी स्वयं संस्थाएँ मिल कर कार्य करें तभी राष्ट्रहित सम्भव है

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

मोगा मे पिछले दिनो जो भयकर नरसहार हुआ था वह पिछले आठ वर्षों से हो रहे नरसहार की ही श्रृखला मे था। हम असहाय हो गए हैं क्योकि हम रक्षा के लिए सरकार का मुह ताकते हैं अथवा इस बात की उम्मीद करते है कि कोई आएगा और हमारी रक्षा कर देगा। इससे तो हम अपनी रक्षा नही कर सकगे। अपनी रक्षा करने के लिए हमारे अन्दर मनोबल होना चाहिए और साथ ही भुजबल भी होना चाहिए। जिन लोगो की असिधार कुण्ठित हो जाती है वे कभी भी अपनी रक्षा नहीं कर सकते। हमारी अनेक हिन्दूवादी सस्थाएँ हैं। उन सबके अपने अपने पूर्वाग्रह है। यदि हम चाहते हैं कि राष्ट्र का कल्याण हो हम उन्नति कर हमारे अन्दर भाई चारे की भावना बढ़ और हम दुश्मन को तथा आततायी को दण्डित कर सक तो इसके लिए आवश्यक होगा कि सभी अपने पूर्वाग्रहो को छोड कर एक जुट हो जाए। सगठन मे बहुत बडी शक्ति है। शक्तिशाली के सम्मुख सभी झुकते है इसलिए हमे शक्तिशाली बनना होगा तभी हम सफल हो सकगे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने ये उदगार आयसमाज न्यू मोती नगर नई दिल्ली मे मोगा पजाब मे मारे गए भाइयो के लिए आयो जित श्रद्धाञ्जलि सभा मे व्यक्त किए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान और सुप्रसिद्ध आर्य नेता एवम स्वतन्त्रता सेनानी प० रामचन्द्र वन्दे मातरम ने अपने सारगर्भित भाषण मे कहा कि हमारी सवैधानिक स्थिति भी प्रादेशिकता तथा क्षत्रीयता को बढावा दे रही है। इससे अलगाववाद की प्रवृत्ति को बढावा मिलता है। इसमे कोई दो राय नही हैं कि अत्याचारी जो कार्य कर रहे हैं वह जघन्य है। उसको हम सभी भर्त्सना करते है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने कहा कि हम अपने आर्ष ग्रन्थो के आदर्शो का परिपालन नही करत। वेद का आदेश है कि जो तेरे आदमियो को अथवा तेरे गाय आदि सहायक पशुओ को मारता है उसे तू शीशे की गोलियो से बीध दे। गीता का भी आदेश है कि दुष्टो का सहार करने के लिए उठ खड हाओ। यदि मर गए तो स्वर्ग प्राप्त करोगे और यदि जीत गए तो इस पृथ्वी का भोग करोगे। हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्ग जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम परन्तु समस्या यही है कि क्या हम यह सब कार्य कर रहे हैं। हम अकर्मण्य होकर बैठे है। हम सगठित भी नही है। वे लोग सफल होते हैं जो एक साथ होत हैं और जो एक के पीछे होत है जिनका नेतत्व एक के पास होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती को सन्यासी योद्धा कहा जाता है क्योकि उनके पास ब्रह्म तज के साथ, क्षात्र तेज भी था। आओ हम सब मिलकर स्वामी जी महाराज के पीछे चल कर देश, धर्म और जाति की रक्षा कर।

इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० शिव कुमार शास्त्री ने मनु के वचन उदधृत करके दुष्ट का दमन करने का आह्वान किया। दिल्ली सनातन धर्म के सभा के प्रधान श्री मनोहर लाल कुमार ने कहा कि हिन्दू जाति की रक्षा के लिए हम सभी को श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती महाराज के नेतृत्व मे एकत्रित हो जाना चाहिए। राष्ट्रीय हिन्दू मच के प्रधान श्री प्रेमनाथ जोशी ने आतकवादियो द्वारा की गई हत्याओ का विस्तृत विवरण दिया और कहा कि हमे अपने भुजदण्डो पर विश्वास रखना चाहिए। प्रो० भारत मित्र शास्त्री ने आर्यजनो को सगठित होने की प्रेरणा दी। सभा का सयोजन आर्यसमाज न्यू मोती नगर के प्रधान श्री तीर्थराम टण्डन ने किया तथा एक प्रस्ताव आर्यसमाज के मन्त्री श्री शिवकुमार आर्य ने प्रस्तुत किया जो सर्व सम्मति

(शेष पृष्ठ ८ पर)

मुस्लिम मत त्याग अपने घर वापस : सूर्यदेव

दिल्ली ७ जुलाई। आज देश मे हिन्दुओ के बडे पैमाने पर धर्म परिवर्तन के कुप्रयास किये जा रहे हैं। इसी प्रकार एक राजनैतिक षडयन्त्र के तहत हरिजनो को भी सिख बनाने की कोशिश की जा रही है। यह खुशी की बात है कि आर्य समाज सदैव की भाँति एक सजग प्रहरी के रूप मे इस दिशा मे सक्रिय कार्य कर रहा है। ये उद्गार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने कृष्ण नगर आर्यसमाज मे एक बिछुडे भाई को शुद्ध करके पुन वैदिक धर्म मे दीक्षित करने के अवसर पर व्यक्त किये। उल्लेखनीय है कि गुप्ता परिवार का एक युवक लगभग ३ वर्ष पूर्व मुसलमान बन गया था जिसे सपरिवार आज शुद्ध किया गया और उसका नाम श्री गगा प्रसाद रखा गया।

अपने पुत्र को पुन हिन्दू बनने पर उसके वृद्ध पिता की खुशी के मारे आँख भर आयी। इस अवसर पर उपस्थित सभी महानुभावो ने आर्यसमाज के इस कार्य की भूरि भूरि प्रशसा की।

इस पुनीत कार्य मे आर्यसमाज कृष्णनगर के प्रधान श्री खानचन्द, मन्त्री श्री हरचरणसिंह आर्योपदेशक श्री जगदीश आदि न सराहनीय कार्य किया। इस अवसर पर पूर्वी दिल्ली उपसभा की प्रधाना श्रीमती ईश्वरी देवी धवन ने भी नवदीक्षित परिवार को आशीर्वाद दिया। □

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

इमा जाता ब्रह्मणो ब्रह्मचारी घर्म वसानस्तपसोदतिष्ठत्।
तस्माज्जातं ब्राह्मणं ब्रह्म ज्येष्ठं देवाश्च सर्वे अमृतेन साकम्॥

अथर्व०, काण्ड ११, अ० ३, सूक्त ५, ५।

सृष्टि प्रवाह से अनादि है—यही सिद्धान्त सृष्टि उत्पत्ति की समस्या को हल करता है। और कोई भी कल्पना करो—शून्य मे सृष्टि हुई सदा मे कार्य जगत ऐसा ही है इत्यादि—वास्तव मे सृष्टि की समस्या हल नही होती। तब सृष्टि प्रवाह मे अनादि है, सूक्ष्म से सूक्ष्म स्थूल रूप धारण करती है और फिर अपने उपादान कारण मे लीन हो जाती है यही प्रवाह चल रहा है।

सृष्टि के आदि मे जहा परमात्मा ने भौतिक आखो को लाभदायक बनाने के लिए भौतिक सूर्य का प्रकाश किया वहा मनुष्य की बुद्धि रूपी अन्तरीय आखो को सुखदायक बनाने के लिए वेद ज्ञान का भी प्रकाश किया। जिस तप के प्रभाव से भौतिक सूर्य का उदय हुआ उसी तप के बल (तेभ्य तप्तेभ्यस्त्रयो वेदा अजायन्त) से तीनो (ज्ञान कर्म, उपासना रूपी) वेदो का प्रकाश हुआ। उस ब्रह्म विद्या का जिस द्वारा प्रकाश हुआ वही ब्रह्म वेद का जानने वाला और उसमे गति करने वाला ब्रह्मचारी ब्रह्मा कहलाता। ब्रह्म वेद की ओर चर (गति ज्ञान गमन प्राप्ति) गतिमान् होकर जिसने पहले उस मे गमन कर के उसको प्राप्त किया इसलिए ब्रह्मा प्रथम ब्रह्मचारी है। तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। तुम तेज स्वरूप हो मुझ मे भी तेज को धारण कराओ। इस प्रार्थना का ब्रह्मा ने ही साधक बनाया। तप द्वारा उस उग्रतेज को धारण कर के वह सब मे ऊँचा उठ कर मनुष्य सृष्टि का आदि गुरु बना। जब जब सृष्टि होती है, उसका उत्तर क्रम चढाने वाला आदि पुरुष भी उत्पन्न होता है। इसी भाव को लेकर श्वेताश्वतरोपनिषद् मे कहा है—'यो ब्रह्माण विदधाति पूर्व यो वै वेदाश्च प्रहिणोति तस्मै'। इसी भाव को प्रकट करते हुए उपरोक्त वेदमन्त्र का मानो एक प्रकार का भाष्य ही मुण्डकोपनिषद् मे किया है—

ब्रह्मा देवाना प्रथम सम्बभूव
विश्वस्य कर्ता भुवनस्य गोप्ता।
स ब्रह्मविद्या सर्वविद्याप्रतिष्ठामथर्वाय
ज्येष्ठपुत्राय प्राह॥

कल्प के आरम्भ से (वर्णाश्रम) धर्म का प्रचारक और (उस विद्या के प्रचार द्वारा) सब प्राणियो का रक्षक वेदवेत्ताओ मे पहला (अर्थात् समग्र वेद को जानने वाला) पुरुष अमैथुनी सृष्टि मे ब्रह्मा उत्पन्न हुआ। सब विविध विद्याओ मे निष्णात ब्रह्मा जी ने उस ब्रह्मविद्या को अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा को उपदेश किया।

अथर्वा ने अङ्गिरा को और उसने अपने शिष्यो को इसी प्रकार शिष्य प्रशिष्य परम्परा से ब्रह्मविद्या का प्रचार चला आता है। वेद के तीनो काण्डो का शंका समाधान होकर अथर्ववेद मे उनका पूर्ण ज्ञान होता है इसीलिए अथर्ववेद को ही वेद का अन्त कहना ठीक है। इसीलिए जिस समर्थ शिष्य को ब्रह्मा ने वेद ज्ञान दिया उसका नाम अथर्वा हुआ और उसी से वेदान्त के प्रचार की परम्परा चली।

ब्रह्मा पहला ब्रह्मचारी हुआ, उसी से ब्रह्म वेद के जानने वाले ब्राह्मण उत्पन्न हुए। ब्राह्मण कौन है? जन्म से तो सब शूद्र है - ब्रह्म को चीन्हने से ही ब्राह्मण बनता है।

जन्मना जायते शूद्र
संस्काराद् द्विज उच्यते।
वेदाभ्यासाद् भवेद्विप्रो
ब्रह्म जानाति ब्राह्मण॥

आदि सब से ऊँचे स्थित, ब्रह्मचारी ब्रह्मा ने ही संस्कार द्वारा दूसरा जन्म देकर अथर्वा को ब्राह्मण बनाया और फिर वही परम्परा चलती रही। सब विद्वान् ब्रह्मा की प्रथम शिक्षा को शिरोधार्य समझकर ही मोक्ष रूपी अमृत का पान करते हैं और अब भी यदि सच्चा आचार्य मिल जावे और वह ब्रह्मचारी को विद्या माता के गर्भ मे स्थित कराके, तीन रात्रि (४८ वर्षों की आयु) तक रख कर उस की पूर्ण रक्षा के पश्चात् दूसरा आत्मिक जन्म दे तो निस्सन्देह वह आदित्य ब्रह्मचारी अमर जीवन को साथ लेकर ही उत्पन्न हो। इसी भाव को कैसी उत्कृष्ट भाषा मे मनु भगवान् ने प्रकट किया है।

ब्राह्मणो जायमानो हि
पृथिव्यामधिजायते।
ईश्वर सर्वभूताना
धर्मकोशस्य गुप्तये॥

पृथिवी मे ब्राह्मण का जन्म होना ही श्रेष्ठ है क्योकि वही धर्म के खजाने का रक्षक है। ब्राह्मण सदा ब्रह्मचारी है क्योकि वह इन्द्रियो को वश मे रखता है और गृहस्थाश्रम के कर्त्तव्य पालन करता हुआ भी इन्द्रियो का गुलाम नही बनता। वह इतना ऊँचा उठता है कि उसे भाग नीचे नही खीच सकता। वह सारे जगत के पदार्थों को अपना ही समझता है इसलिए उसके वास्ते कोई भी वस्तु अप्राप्त नही रहती—

सर्वं स्व ब्राह्मणस्येद
यत्किञ्चिज्जगतीगतम्।
श्रैष्ठयेनाभिजनेनेद
सर्वं वै ब्राह्मणोऽर्हति॥

जो कुछ भी जगत् के पदार्थ हैं वे सब ब्राह्मण के हैं, ब्रह्मोत्पत्ति रूप श्रेष्ठता के कारण ब्राह्मण सम्पूर्ण को ग्रहण करने योग्य है। तब तो मनु महाराज का कहना ठीक ही है कि

स्वमेव ब्राह्मणो भुङ्क्ते
स्व वस्ते स्व ददाति च।
आनृशस्याद् ब्राह्मणस्य
भुञ्जते हीतरे जना॥

ब्राह्मण अपना ही खाता, अपना ही पहिरता और अपना ही दान देता है। इसमे सन्देह नही कि और लोग ब्राह्मण का दिया हुआ भोगते है। ससार के भोगो मे आप न फसकर जो ब्राह्मण अन्य सारी प्रजा को यथार्थ भोग के लिए कमाई करने का सीधा मार्ग सिखाता है—वही धन्य है।

अब भी यज्ञ मे ब्रह्मा का उच्चासन रहता है। यजमान और अन्य सब यज्ञ पुरुषो को विषय मे चलाना अब भी ब्रह्मा का ही अधिकार है। गिरते हुओ को वही टोक कर गिरने से बचाता है। मनु भगवान् ने धर्माधर्म का निर्णय करने के लिए दस विद्वानो की सभा और न्यून से न्यून तीन वेदो के जुदा-जुदा जानने वाले तीन धर्म सभा का जो विधान किया है उसमे जो व्यवस्था, एक चारो वेदो का ज्ञाता, तदनुकूल आचरण रखने वाला ब्रह्मचारी दे, उसको बडे से बडे बहुपक्ष पर भी प्रधानता दी है।

ससार मे जब तक ऐसी गुरु-शिष्य परम्परा स्थिर रहती है तब तक उसके अन्दर धर्म और शान्ति

(शेष पृष्ठ ७ पर)

पुत्र-पात्रता

येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पय पीयूष द्यौरदितिरद्रिबर्हा।
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ता आदित्याँ अनुमदा स्वस्तये॥

अपने आदित्य पुत्र गण को, माता पीयूष पिलाती है।
माता पीयूष पिलाती है, तब मानवता मुस्काती है॥
यह जननी धरती निर्माता
है मधुर दुग्ध रस की दाता
किसको रसपान कराती है
प्रिय पीयूष प्रदाता माता।
निज पुत्र पात्रता लख कर ही, मा दुग्ध वक्ष मे लाती है।
माता पीयूष पिलाती है, तब मानवता मुस्काती है॥
द्यौ लोक अखण्डित अन्तरिक्ष
भरपूर मेघ जो लिये वक्ष
ये बरसाते हैं सुख किसको
निज प्रभा पोष के कोष कक्ष।
प्रशसनीय वीर बालक को, यह प्रकृति पोष बिखराती है।
माता पीयूष पिलाती है, तब मानवता मुस्काती है॥
जो वृषभ भाति सुख भर्ता हैं
शुभ कर्मों के जो कर्ता हैं
वे ही जगजननी अखण्ड के
पीयूष पुण्य सधर्ता हैं।
इनके कल्याण-मोद को ही, सब लोकों की निधियां आती हैं।
माता पीयूष पिलाती है, तब मानवता मुस्काती है॥

—देवनारायण भारद्वाज

ओ३म्
आर्य सन्देश

आर्यसमाज का साहित्य

परिवर्तन, पतन से वतन को बचाइए, काले अंग्रेजो का शासन

गत अक मे भी हम ने लिखा था कि आयसमाज मे सम्बन्धित सस्थाएँ इस दिशा मे बहुत अच्छा प्रयास कर रही हैं। साहित्य का प्रकाशन अनेक स्थानो से होता है। सभी सस्थाएँ अपने अपने ढग से यह कार्य कर रही है। विडम्बना यह है कि कुछ सस्थाओ के अधिकारी इस कला से परिचित भी नही हैं। आज तकनीक और विज्ञापन कौशल का युग है। अनेक विश्वविद्यालयो द्वारा पत्रकारिता, सम्पादन तथा प्रकाशन सम्बन्धी पाठ्यक्रम भी चलाए जा रहे है। जो पुराने लोग हैं, उनमे अपेक्षा करना कि वे इन पाठ्यक्रमो मे अध्ययन करके उपाधि प्राप्त करेगे और फिर वैदिक साहित्य का प्रकाशन करेगे, नितान्त मूर्खता होगी। हमे इन्ही परिस्थितियो मे, और इन्ही व्यक्तियो के सहारे इस कार्य को करना होगा। हाँ, यह अपेक्षा अवश्य की जा सकती है कि अधिकारी समय सयय पर अपने कार्य का विश्लेषण करने रहा करे अथवा अपने साथियो और सस्थाओ मे सम्बद्ध विद्वानो की सम्मति ले लिया करे। इससे उन्हे भूल-सुधार मे सहायता मिलेगी। वे भविष्य मे अच्छा प्रकाशन कर सकगे। पुस्तक प्रकाशित करना सम्भवत इतना कठिन नही है, जितना कठिन उन पुस्तको को सही पाठको तक पहुँचाना। पुस्तके प्रकाशित तो हो जाती हैं क्योंकि दानदाताओ से धन मिल जाता है। कभी कभी दानदाता उसे भी दान दे देते हैं, जो पात्र नही होता। अब समस्या यह है कि इन पुस्तको को सही पाठक तक कैसे पहुँचाया जाए। ईसाई लोग छोटे ट्रैक्ट प्रकाशित करते है और सडक पर खडे होकर बाँटते हैं। इस परम्परा को 'हरे रामा हरे कृष्णा मिशन वालो ने भी अपनाया है, पर वे अपनी पुस्तक नि शुल्क नही बाटते। आर्यसमाजो की सस्थाएँ भी साहित्य प्रकाशित करती हैं, परन्तु ये कुछ पुस्तकें मुफ्त बाटती हैं और कुछ बेचती हैं। पुस्तक विक्रय से अगली पुस्तक के प्रकाशन के लिए धन आ जाता है। सम्भवत यह तकनीक अच्छी भी है। वैदिक साहित्य के प्रकाशन मे कुछ व्यापारिक प्रकाशन सस्थान भी लगे हैं और हम समझते हैं कि यह उनका वैदिक साहित्य के प्रति पारम्परिक तथा उत्तराधिकार मे मिला, प्रेम ही है जो इस काय को कर रह है क्योकि इससे उन्हे सम्भवत व्यापारिक उपलब्धि अधिक न होती होगी। ऐसे व्यापारी प्रकाशक सस्थान हमारी बधाई के पात्र है।

पिछले अक मे बताया था कि कुछ आयसमाजे भी इस सुन्दर कार्य को कर रही है। आर्यसमाज सान्ताक्रूज, बम्बई-४०००५४ की ओर से प्रकाशित परिवतन एक ऐसी ही अनूठी पत्रिका है। इसका आवरण मोहक, इसका कागज बढिया है और छपाई भी चाक्षुप तोष प्रदान करती है। कोई वस्तु देखने मे अच्छी लगे, तभी तो व्यक्ति उसकी ओर लपकेगा। दार्शनिक लोग इस वक्तव्य मे चार दोष निकाल सकते हैं, पर यह सासारिक दृष्टि से सत्य है कि सुन्दर वस्तु आकर्षक होती है। परिवर्तन के अप्रैल १९८९ के अक मे सम्पादको ने पठनीय सामग्री सकलित की है तथा उसे व्यवस्थित ढग से प्रस्तुत किया है। इस अक मे श्री आनन्दराव भगवन्तराव देशमुख का एक साक्षात्कार प्रकाशित हुआ है जिसके पढने से नई पीढी को आर्यसमाज के समरागण मे कूद पडने की प्रेरणा मिलेगी। श्री आनन्दराव भगवन्तराव ने अपने साक्षात्कार मे बतलाया है कि वे किस प्रकार श्री गणपतराय कतले के सेवाभाव एव देशप्रेम से प्रभावित हुए थे। वे ऊँचनीच के भेदभाव को मिटाने के लिए केवल भाषण ही नही देते थे, बल्कि वे इस भाव को अपने व्यवहार मे लाते थे।

हमारी आर्यसमाजो को चाहिए कि वे ऐसे सत्साहित्य के प्रकाशन के व्यवस्थित कार्य करे। सभी आर्यसमाज के सगठन मे विश्वास रखे। वे केवल आर्यसमाज के साहित्य के प्रकाशन करने तक सीमित न रहे, बल्कि दूर-दराज के क्षेत्रो मे आर्यसमाजो की स्थापना मे सहयोग दे। यदि आर्यसमाज के कार्य को गावो तक न पहुचाया गया, तो हम ऋषि के कार्य को पूरा न कर सकगे।

इन्ही दिनो एक और छोटी सी पुस्तिका प्राप्त हुई—पतन से वतन को बचाइए। यह पुस्तिका महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री दौलतराम जी चड्ढा के प्रवर्तन पर श्री श्रीराम वसिक आर्य ने लिखी है। यह छोटी सी पुस्तिका साहित्य साधना के उद्देश्य से नही लिखी गई। इसमे साहित्यिकता के कोई गुण है भी नही, पर यह पुस्तिका हृत-तन्त्री के तारो को झकृत करती है तथा सभी दिशाओ मे इस स्वर को गुजित करती है कि आर्यो जागो, आर्यसस्कृति, आर्यावर्त को पूर्वजो की भाति जगद् गुरु बनाओ। यह पुस्तिका सोई जाति के लिए उद्बोधन है। यह पुस्तिका पिछले कुछ वर्षों मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व मे आर्यसमाज द्वारा देश धर्म और जाति की रक्षा के लिए किए गए कार्यो का सक्षिप्त दस्तावेज है। इस पुस्तिका के पढने से प्रेरणा मिलती है कि मनुष्य वास्तव मे मनुष्य बने, वह धार्मिक बने उसमे सह-अस्तित्व एव भ्रातृत्व की भावना आए वह दगे-फिसाद न करे वह सबको अपना माने और यह भावना केवल कृण्वन्तो विश्वमार्यम् से आ सकती है। यही वैदिक सदेश दूर दूर तक पहुचाने के लिए आर्यसमाज के सस्थापक, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हमे जगाया था। हमे स्वराज्य मिल गया है, पर हमे सुराज्य चाहिए हमे समाजसुधार चाहिए। हमे राष्ट्ररक्षा की भावना से कार्य करना होगा। हमे अपने उत्तरदायित्व पहचानने होगे।

आर्यसमाजो को चाहिए कि जन जागृति के लिए अपने सगठन को मजबूत करने के लिए इस प्रकार का साहित्य प्रकाशित कर करके जन-जन तक पहुँचाय।

ऐसी ही एक पुस्तिका स्वामी इन्द्रदेव यति द्वारा लिखित 'काले अंग्रेजो का शासन, भयकर गुलामी १५ अगस्त १९४७ से प्रारम्भ प्राप्त हुई। इस पुस्तिका मे केवल तिथिया दी गयी ह, विवरण नहा दिए गए। घटनाएँ सत्य हैं और सभी को झकझोरती है।

आओ, आज सब मिलकर प्रन ल कि देश धर्म और जाति की रक्षा के लिए वैदिक धर्म का प्रचार करेगे तथा सत्साहित्य जन-जन तक पहुचायगे।

जीवनाधार ! सुन सत्वर पुकार, दो दुःख-निवार

—देवनारायण भारद्वाज

किसी धर्मासन न्यायकारी सम्राट के राजमहल के बाहर परिवादी का निमित्त न्याय सूत्र की के लिए घण्टा लगाए जाने के उदाहरण हमारे स्मरण हैं। आज भी कहीं कहीं विद्यालयों के आकस्मिक ... लगा पाया जाता है कि किसी आकस्मिक समस्या ... के ... करने पर घण्टा ... ही कि सम्बन्धित ... उसकी ... यदि ... सक को ... ही ... समय ... जा सकती था ... पर ... घण्टी का ... कि ... ने को ... कि ... की ... आ का ... कि किसी समस्या या आवश्यकता को लेकर पुकार लगाने ... का समाधान शीघ्र अतिशीघ्र व अत्यन्त शीघ्र होनी चाहिए जितनी अधिक गुरुतर समस्या हो उतनी ही अधिक शीघ्र सुनवाई होनी चाहिए अन्यथा फिर पुकार का उपाय ही समाप्त हो जाता है। सुनवाई केवल सुनने मात्र नहीं ... समाधान ... भी सम्मिलित है। प्रस्तुत मन्त्र हम ऐसी ही ... ।

म मे ... ण ...
हवमस्य ... म
व मवस्युरा चक
(ऋ० म० १ सू० ... म० ८)

(हे ...) प्रशंसनीय परमेश्वर ... (मे) मेरा ... पुकार को (अद्य) आज ... पुकार करने ही (श्रुधि) सुनो (च और) (मृडय) सुखी करो ... को दूर करो (अवस्यु) रक्षा ... चाहने ... मैं (...) आपको (...) भली भांति (चके) शुभ आचरणों के द्वारा प्रसन्न करता हूं। ... ही है कि हे वरुण ... मुझ जैसे जन के ... धनों से दुःखी का पुकार सुनो। पुकार सुनने ... मेरे ... दूर करके मुझे सुखी कर दो। अपना पीड़ाओं से रक्षा चाहने वाला मैं आपको अपने उत्तम आचरण एवं व्यवहार द्वारा प्रसन्न करता हूं।

हां पर वरुण शब्द का प्रयोग सम्पूर्ण समाज को अच्छे दिशा निर्देश देने वाले ... वरणीय प्रभु के ... की रक्षा करने वाले ... समाज के पथदर्शक विद्वान ... व्यक्तिगत रूप से किसी के ... किए गए चाहते ... चिन्तक के लिए हुआ है। मन्त्र ... अपनी बात स्पष्ट करता है प्रथम सहायता के लिए जब मैं पुकार लगाता उसे तुरत सुन ... तक ... मुझ सुखी कर दिया जाए और तृतीय पुकार लगाने का मन्त्र में ... है जिसके बाहर मैं ... स्तुति प्रशस ... परखदी की विकट ... प्रथम स्तर की है उनकी पुकार सुनी जाए पर रक्षक की भी कुछ मांग है जो मन्त्र के तृतीय स्तर में वर्णित है उत्तम आचरण युक्त प्रशंसा।

वर्तमान में अच्छे कर्म व सदाचरण करने वाले व्यक्ति भी अपने पूर्वकृत कर्मफल के वशीभूत होकर कभी भी कठिनाई में पड़ सकता है। पर यह उत्तम आचरण करने वाला आचरण हीन व्यक्ति की अपेक्षा निस्संकोच अपने रक्षक को बुला सकता है ... के ... संकट में हम सहायक होते हैं कम से कम हम अपने पूर्व ... कर्मों की ... करके ... करते ... को अच्छे साथी प्रदान कर देते हैं जो दुष्काल में और कुछ नहीं तो ढाढस ही बंधाते हैं। जब संकट आयगा तभी तो हम पुकार लगायेंगे उसी समय हम अपने रक्षक की प्रशंसा कर लगे तब हो गई हमारी सुनवाई। सांसारिक रक्षक तो हमारा स्वर भी ऐसी दशा में पहचान नहीं पायेगा। मिलावटी निम्न स्तर का माल बेचने वाला ग्लूकोज की औषधिक बोतलों में अपमिश्रण कर असहाय रोगियों को मौत के घाट उतारने वाला व्यक्ति पकड़ जाने पर अपने किसी मित्र रक्षक नायक के पास किस मुंह से जाने का साहस कर सकता है। हां उचित मूल्य पर उत्तम वस्तुएं आपूत करने वाला व्यापारी जो अपना सुयश समाज में बनाये रहता है किसी भूल वश पकड़ा जाता है तो बिना किसी लज्जा के अपने रक्षक मित्र के पास सहायता के लिए जा सकता है कभी कभी तो ऐसे सुपात्र की सहायता के लिए बिना बुलाये ही मित्र आ जाते हैं। प्यास लगने पर कुआ नहीं खोदा जाता है प्रत्युत खोद कर रखा जाता है जिससे प्यास लगने पर जल प्राप्त किया जा सके।

एक दिन सम्पन्न प्रतिष्ठित सज्जन हलके फुलकी साधारण वेशभूषा में प्रातः भ्रमण के लिए निकले नगर के बाहर स्थित मानसिक रोगियों के चिकित्सालय पागलखाने तक पहुंच गए उसका द्वार खुला देखकर आज उसके अन्दर के हरे भरे उद्यान में ही घूमने का विचार उन्होंने बना लिया और भीतर चलने चले गए। मनोरम प्राकृतिक दृश्यावलोकन के बाद जब वे भीतर से बाहर लौटने लगे तो फाटक पर कर्मचारी ने उन्हें रोक लिया। वह बोला अन्दर चलो—बाहर नहीं। सज्जन ने कहा मुझे निकलने दो—मैं पागल नहीं हूं कर्मचारी ने सहज भाव से कह दिया यहां जो आता है वह यही कहता है मैं पागल नहीं हूं। आप अन्दर चलें इतने में इन सज्जन को एक अन्य परिचित सुप्रतिष्ठित मित्र सड़क पर दिखाई दे गए जो इनके साथ प्रातः भ्रमण पर जाया करते थे उनको इन्होंने जोर से आवाज लगाई और निकट आने पर अपनी दयनीय दशा से उनको अवगत कराया। द्वार से बाहर खड़े इन महाशय ने कर्मचारी को समझाया तब कहीं उन श्रीमान की मुक्ति सम्भव हो सकी। बाहर वाले महाशय इन भीतर वाले सज्जन से यदि परिचित न होते और यह भी न जानते होते कि वे वास्तव में पागल नहीं हैं तो उन भटक गए श्रीमान का छुटकारा तुरन्त नहीं हो सकता था। अवश्य इसमें विलम्ब होता और तब तक वे कठिनाई में पड़े रहते।

मेरे सीधे हाथ की कनिष्ठा अंगुली में पड़ा चिह्न मुझे बाल्यकाल की उस घटना की याद दिलाता रहता है जिसमें अपने ग्राम के वयोवृद्ध दर्जी बाबा की अनुपस्थिति में एकान्त पाकर मैं उनकी सिलाई मशीन को चला कर खेल करने लगा। सुई के नीचे कनिष्ठा आ गई और खून की धार फूट पड़ी और सुई भी टूट गई। अपनी अंगुली की पीड़ा से अधिक मुझे मशीन के खराब होने का भय सताने लगा। कोई देखने वाला व्यक्ति था नहीं सो मैं अंगुली को दबाये दबाये चुपचाप वहां से खिसक लिया और कहीं दूर जाकर छिप गया। घर में नहीं गया—वहां जाता तो तुरन्त उपचार तो होता किन्तु इस सब का कारण पूछा जाता तो प्रताड़ना भी होती यद्यपि मेरे द्वारा मशीन का पहुंचाई गई हानि को देखने वाला कोई साक्षी नहीं था फिर भी बाल सुलभ भय के कारण मैं घर नहीं गया ढूंढे मुझे खोज कर ले जाया गया। यदि मेरे मन में यह भूल भय भावना न होती तो सीधे घर जाकर मैं मां को पुकार लगाता और अंगुली का उपचार हो जाता शायद वह चिह्न भी न रहता जो आज भी इस घटना का स्मारक बना हुआ है। इसलिए पुकार लगाने से पूर्व किसी को भी अपने आचरण की पवित्रता व पात्रता को सुनिश्चित कर लेना आवश्यक है।

स्नानोपरान्त गंगा के किनारे स्वच्छ कर सुखाने के लिए फैलाई गई चादर पर मैले पैर चलने वाले भाई को यदि बड़ी बहन पकड़कर प्रताड़ित करे और भाई बचाने के लिए मां को चिल्ला चिल्ला कर कर बुलाये तो क्या होगा? मां भी आकर बहन के कार्य का समर्थन करेगी और दण्ड ... वह ... जायेगी। हां बहन के दण्ड से छुटा येगी भी पर इस कृत्य के लिए सावधान भी कर देगी। यह कार्य तो बहन भी कर सकती थी यदि भाई अपनी भूल के लिए बहन से क्षमा मांग लेता और भविष्य के लिए उसके निदेश को अंगीकार कर लेता। ग्रामीण प्राथमिक पाठशाला की शिक्षा पूर्ण कर आगे की शिक्षा के लिए मैं निकटवर्ती उपनगर के अपने पैतृक आवास में रहने लगा। वहां कुछ चाचा लोग पहले से ही व्यवसायवश रहते थे। उन दिनों मां भी वहां थीं किन्तु पिता ग्राम में ही थे। एक दिन आयु बल शरीर में बड़े एक प्रिय जन ने विवाद में मेरे कान जोर से खींचने आरम्भ कर दिए। मैं निर्बल व छोटा था—तो क्या जब कुछ समझ में नहीं आया तो मैंने भी उनकी नाक पकड़ ली। उन्होंने मुझे छोड़ तो दिया पर सीधे पहुंच गए मेरी मां के पास शिकायत

लकर—मेरे झगडालू स्वभाव का न होना छोटे बड की तुलन को जानने के बाद भी प्रथम पुकार कर्त्ता की स तुष्टि के लिए रोष भर स्वर मे मा ने मुझ अपने पास बुलाया पर हुआ उल्टा मेरे लाल लाल कान देखकर उन्होने उन्ही प्रिय परिजन को ही डाट लगा दी। इस प्रकार स्वय भूल करके उसका परिमाजन न करना फिर पकड ज ने पर सुन वाई की आशा करना व्यथ है।

उल्टा चोर कोतवाल को डाटे की लोकोक्ति भी घटित होती रहती है। स्वय अपराध कर के व्यक्ति थाने या न्यायालय मे बचाव की पुकार लकर पहच जाते हैं पर सच्चे न्याय की दशा मे वे बचने नही पाते है और जि ह व फसाना चाहते है वे बच जाते है। यदि व फस भी जाते हैं तो इसमे भी उनकी भलाइ छिपी रहती है। बाल्यकाल की यह घटना आगे बढती है। मेरे इन वरिष्ठ परिजन की बात मा ने नही सुनी तो उन्होने मेरा प रवाद गम्भीर रूप म पिता के पास ग्राम मे पहुचाया। पिता ने आकर स्थिति की समीक्षा की और उनके समक्ष मुझ तगडी डाट लगाई पर सन्ध्या के बाद मुझ लेकर हलवाई की दूकान पर पहुच गए और समझाते हुए कहा कि मैने समझ लिया है कि इस घटना म तुम्हारी त्रुटि नही थी पर उन वरिष्ठ का मन रखने को उनके स म मुझ तुम्ह डाटना पडा। बुरा मन मानना मत लगा कर पढना और इस दुकान पर साय आकर दूध पी जाना मैने अग्रिम भुगतान कर दिया है इ घटना की यही मन्त्रणा है कि पात्र होने पर इस सम र के माता पिता जैसे हमारी पुक र—आ तरिक पुकार (भले ऊपर से कोई दोष ल कर हमारे विरोध म पुक रे) को तीव्र सुनते है और सकट का दूर कर सुख पहुचाते है वसे ही दाच रा सुपात्र होने पर परम पिता परम त्मा प्रभु भी हमारी पुकार सुनकर यथा समय रक्षा करते है।

सन्तोष के लिए भल ही देर है अन्धेर नही एक अच्छी कहावत है किन्तु बिलम्ब ... न्याय नही रहता भी कम सटीक लोकोक्ति नही है। आ क्या है सकट मे भुक्तभोगी कर्मचारी—सहअधिकारी—अधिकारी—उच्चाधिकारी तक दर-दर भटकते रहत ह पर उनके प्राथना पत्रो पर आवश्यक कार्यवाही निहित स्वार्थों के कारण अटकती रहती है और प्रार्थी तड पते रहते हैं। प्राचीन काल में ऐसा नही था। शासक न केवल गुप्तचरो के माध्यम से राज्य की स्थिति से अवगत रहते थे प्रत्युत स्वय भी वेश बदल कर गुप्त रूप से समाज की सुख शान्ति मे परिचित होते रहते थे और अनावश्यक कठिनाइयो से जनता को छुटकारा दे दिया करते थे। कही कोई चीत्कार अकुलाहट या कराहट की आहट उन्हे मिलती थी तो तुरन्त उसका निराकरण कर दिया जाता था। परमपिता परमे वर के म न सव प्रिय नियन्त्रण कर्ता राजा की दष्टि से भी कुछ छिपा नही रहता था। यदि हम ऊपर स प्रभु का स्तुति करते हैं और अ दर म उसके गुणो के विपरीत चलते है ता वह हमारी पुकार नहा सुन सकता है फिर तो वह नका पुकार सुनना जिसे हम अपने कुचक्र मे पीडा पहुचा रह है।

कोई व्यक्ति धप दीप नवद्य लकर म दिर मे नित्य सायकाल शुद्ध देशी घी का दीपक जलाना ह। जो ध्यावे फल पावे दुःख विनशे मन का सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तन का। मन्दिर से निकल कर आरती को याद नही रखता। देशी घी मे वनस्पति वनस्पति मे चर्बी मिलाकर शुद्ध घी—शुद्ध वनस्पति घी कहकर बेचता है। किस लिए उसके घर मे सुख सम्पत्ति आये और कष्ट मिट जाये। पर यह भी ध्यान है कि वह इस अपमिश्रण द्वारा दूसरो की सम्पत्ति का अप हरण कर रहा और उनके कष्ट को ... रहा है। ... आगे यह भी कहेगी—प रब्रह्म परमे वर तुम अन्तर्यामी तब तो वह प्रभु यथा योग्य व्यवहार करेगा। यदि आरती के शब्दो पर विश्वास हो तो कोई विपरीत काय क्यो करे।

पुकार की तत्परता मे ही शीघ्र सुनवाई की तीव्रता निहित है। महाभारत मे कहते है श्री कृष्ण की सहायता प्राप्त करने के लिए—उनसे अनुरोध करने दोनो पक्षो से अजुन व दुर्योधन पहुचे। श्री कृष्ण सो रहे थे सो दोनो उनके शयन कक्ष मे ही उपस्थित हो गए सम्बन्धी जो ठहरे। पर स्वभाव की नम्रता व उग्रता ने यहा भी साथ नही छोडा। अजुन कृष्ण के पताने व दुर्योधन उनके सिरहाने बैठ गए। सो कर उठने पर श्री कृष्ण की दृष्टि पहले अजुन पर पडी बाद मे दुर्योधन पर। पुकार की तत्परता को अर्जुन की विनम्रता ने प्रकट किया और श्री कृष्ण को अपना सारथी बना लिया। भरी सभा मे अनेकानेक योधाओ व भीष्म पितामह के रहते दुःशासन द्रौपदी का चीर खीचन लगा। दुर्यो न का भाई विकण ही था अकेला जिसने इस कुकृत्य का विरोध किया पर कुछ विशेष कर नही सका बहुत सम्भव है द्रौपदी की पुकार को विकण ने ही अपने वाक ट की बेतार दूर स ... मे श्री कृष्ण क पहुचाया हो उसी ब र ... से उत्तर मे त काल ... कृष्ण न दुर्योधन ... आदेश ... हो द्रौपदी क ... वटा दिया जाये। बढा देना ... काय को ... करन के लिए सम्म नाथ प्रयोग किय जाता है ... दीपक या ... के निमित्त दिय ... देना। ... क्रिया ... चीर ... म श्री कृष्ण न कह कर अ दष्ट किया होगा और दुःशासन ... उसका प तन करना पड गेगा। कहते हैं कि द्रौपदी ने भी कभी श्रीकृष्ण की कटी अगुली का उपचार करने मे तत्परता से अपने मूल्यवान वस्त्र को फाड कर पट्टी बाध दी थी। इसी आचरण की प्रशसा न श्री कृष्ण जैसे महारथी को सहायता के लिए कटिबद्ध कर दिया था।

ये दूरभाष ... सन्देश की आधुनिक वैज्ञानिक सुविधाए परस्पर शीघ्र सुनवाई के लिए नी हैं। प्रा... उच्चाधिकारी भ अपनी मेज पर घण्टो रखता है उसे बजने ही वह ... कि परिच ... उनकी सेवा मे तुरन्त ... इसी तत्प ता म वह प्रार्थी की पुकार भा सुन ... ग्राम से नगर नगर म राजधानी तक अपनी रक्षा की पुकार लकर भागती भीड का सरक्षण मिल जाये।

प्रधानमन्त्री द्वारा डी०ए०वी० शताब्दी डाक टिकट का विमोचन

नई दिल्ली २३ जन प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी द्वारा आज प्रात ९ बजे डी ए वी शताब्दी डाक टिकट का विमोचन किया गया। समारोह मे डी ए वी कालेज प्रब ध कर्त्री समिति के अधिकारी एव सदस्य ... के द्रीय सभा ... प्रातीय महिला सभा आर्य प्रतिनिधि सभा ... नर नारी उपस्थित थे प्रधान मन्त्री निवास की ओर से विशेष कुर्सी स्टेज लाउडस्पीकर का प्रबन्ध किया गया था।

प्रधान मन्त्री के आने पर सभी आय जनो ने प्रार्थना म त्र ब ल जिस मे प्रधान मन्त्री भी सम्मिलित हुए। प्रो० वदव्यास जी ने सवप्रथम पुष्पमाला से प्रधान मन्त्री का स्वागत किया। तत्पश्चात प्रि० किशन सिंह आय श्री एम एल सेखडी जस्टिस आर एन मित्तल श्री हरबस सिह खर श्री शान्ति प्रकाश बहल कु० विद्यावती आनद श्रीमती मोहिनी सूरजभान श्री अनिल आय डा० शिव कुमार शास्त्री श्री मामचन्द रिवारिया श्री अजय सहगल ने पुष्प मालाओ से प्रधान मन्त्री का स्वागत किया।

उसके पश्चात श्री वदव्यास जी ने प्रधान मन्त्री के स्वागत मे अभिनन्दन पत्र पढ कर सुनाया और उन्हे भेट किया। इस काय के सयोजक प्रि० किशन सिह आय ने डी ए वी के १०० वर्षो के काय का विवरण देते हुए कहा कि सन १८८३ मे स्वामी दयानन्द के निर्वाण के बाद लाहौर मे उनके भक्तो की एक मीटिंग हुई जिसम निश्चय हुआ कि स्वामी जी की स्मृति म डी०ए०वी विद्यालय स्थापित किया जाये। जन १८८६ म ... कालेज लाहौर की स्थापना की गई और आज सारे भारतवष म एव विदेश मे डी०ए०वी० की १५०० शिक्षण संस्थाए चल रही हैं।

उन्होने कहा कि हमारे विद्यालयो मे जहा अन्य विषय पढाये जाते है वहा देशभक्ति की प्रेरणा भी बच्चो मे भरी जाती है। जब भी देश पर कोई आपत्ति आई है सब डी ए वी सस्थाए देश सेवा मे जुट गई हैं।

प्रधान मन्त्री ने स्वामी दयानन्द द्वारा भारत की आजादी के आन्दोलन मे दी गई प्रेरणा को और महात्मा हसराज द्वारा डी०ए०वी० सस्था का काय प्रारम्भ किये जाने की भूरि भूरि प्रशसा की। उन्होने समारोह मे जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश इस समय बड सकट से गुजर रहा है और विदेशी ताकत देश म साप्रदायिकता

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य जगत के समाचार

आर्यसमाज सिलीगुडी का

रजत जयन्ती समारोह

२३ फरवरी १९८९ से २६ फरवरी १९८९ तक

आर्यसमाज सिलीगुडी आर्य समाज के २५व वर्ष पर रजत जयन्ती समारोह का महोत्सव लगातार चार दिनो का भव्य और दिव्य आयोजन- यजुर्वेद पारायण-वृहद यज्ञ बाहर से आये विद्वानो मे डा० सत्यप्रकाश सरस्वती डा० वागीश शर्मा प्रो० उमाकान्त उपाध्याय प० श्री प्रियदर्शन जी सिद्धान्त भूषण ब्र० श्री विश्वपाल जयन्त श्री वेंकटेश आर्य श्री दिनेश दत्त आर्य श्री महेश दत्त आर्य कुवर महिपाल सिंह कलकत्ता की प्रचारक मण्डली एवम स्थानीय विद्वत् जन।

विशिष्ट व्यक्तियो मे सम्माननीय श्री मातृका प्रसाद कोइराला पूर्व प्रधान मन्त्री (नेपाल सम्माननीय श्री नगेन्द्र प्रसाद रिजाल पूर्व प्रधान मन्त्री (नेपाल) श्री बलवार राम आई ए एस [illegible] एम श्री पा० वमिष्ठकार आई० ए० एस० (एस० डी० ओ०) श्री हरिसाधन घोष (नगर पालिका उपाध्यक्ष) ने अपना अमूल्य समय प्रदान कर समारोह को सफल बनाया।

चतुर्थ दिवस के व्यस्त कार्यक्रम मे प्रथम दिन शोभा यात्रा का विराट आयोजन जुलूस मे लगभग पाच हजार की जनसंख्या दो पक्तियो मे गतिशील और अनुशासन-बद्ध कई वर्गो की भिन्न भिन्न टोलिया सब अपने ढग के परिधान मे पारम्परिक वेशभूषा और गाजे बाजे के साथ मनोहर सुन्दर और रंगारंग झाकिया, हाथी घोडे, गाय, बैल और प्रज्वलित हवन कुण्ड शोभा यात्रा का विशेष आकर्षण था अनेकता मे एकता का दिग्दर्शन, जयघोष और नारो से नगर का वातावरण मुखरित हो उठा था।

प्रत्येक दिन हर बैठक के लिए सम्मेलनो का तारतम्य मसलन— विश्व शान्ति सम्मेलन, राष्ट्रीय एकता सम्मेलन, वैचारिक क्रान्ति सम्मेलन महिला सम्मेलन, सामाजिक क्रान्ति सम्मेलन एवम् युवा सम्मेलन, बौद्धिक, धार्मिक, सामाजिक एवम् राष्ट्रीय स्वरूप के सदर्भ मे विस्तृत विश्लेषण और समीक्षा वातावरण सर्वथा बोधमय, आकर्षक और सुन्दर सास्कृतिक कार्यक्रम के साथ ब्र० श्री विश्वपाल जयन्त का योग प्रदर्शन और शारीरिक कौशल समारोह का केन्द्र बिन्दु था। जनता की भारी भीड ने प्राय हर क्रमिक आयोजन की मुक्त कण्ठ से प्रशसा की निश्चित रूप से चार दिनो का यह ऐतिहासिक मेला राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक बन गया था।

समाज मे जुड़े सभी मुख्य कार्यकर्त्ताओ विद्वानो और नगर के विशिष्ट व्यक्तियो के लिए सम्मान समारोह का आयोजन एक अभूतपूर्व दृश्य था। समारोह की सफलता मे समाज के प्रधान श्री रविराम शर्मा एवम स्वागताध्यक्ष श्री मामनचन्द गुप्त की सक्रियता प्रशसनीय तथा सराहनीय है। सम्पूर्ण आयोजन का सफल सचालन समाज के मन्त्री सर्वेश्वर झा ने किया।

प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री में प्रवेश आरम्भ

कोई मासिक शुल्क नहीं

प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री श्रेणियो के लिए ३१ जुलाई १९८९ तक प्रवेश खुला है। भोजन, दूध, पुस्तक छात्रावास व मनोरजन की सर्वथा नि शुल्क सुविधा के साथ ही हिन्दी टाइपिंग तथा सगीत सिखाने का प्रबन्ध। प्रवेश योग्यता कम से कम मैट्रिक पास। विद्याधिकारी उत्तीर्ण छात्रो को शास्त्री कक्षा मे सीधा प्रवेश मिल सकेगा। स्थान सीमित है। प्रवेश लेने वाले शीघ्रता करे।

नरेश कुमार शास्त्री एम०ए०
आचार्य
श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय
[illegible]

छात्रवृत्तियां

(नव सत्र जुलाई १९८९ से अप्रैल १९९०)

श्री वजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट की ओर से नये सत्र के लिए गुरुकुलो, स्कूलो, महाविद्यालयो, व्यावसायिक प्रशिक्षणालयो के सुयोग्य और सुपात्र विद्यार्थियो/विद्यार्थिनियो को और स्नातकोत्तर व स्पर्धात्मक परीक्षाओ के परीक्षार्थियो/परीक्षार्थिनियो को छात्रवृत्तियां देने का कार्यक्रम शुरू हो गया है। इन छात्रवृत्तियो से लाभ उठाने के इच्छुको को चाहिए कि ट्रस्ट से नियत आवेदन फार्म को मगवा कर शीघ्र ही निम्नलिखित पते पर भेज दे।

नोट गत सत्र मे छात्रवृत्ति पाने वाले भी इस सत्र के लिए आवेदन पत्र दे सकते हैं।

सत्यदेव
आदरी सचिव
श्री वजीर चन्द धर्मार्थ ट्रस्ट
सी-३२ अमर कालोनी, नई दिल्ली-११००२४

दिल्ली नशाबन्दी समिति

स्व० डा० युद्धवीर सिह जी के ९२वे जन्मदिवस को नशाबन्दी पखवाड़ा के रूप में मनाया जाएगा

—सावलदास गुप्ता और मामचन्द रिवाडिया

दिल्ली नशाबन्दी समिति ने इस बार अपने सस्थापक स्व० डा० युद्धवीर सिह जी का जन्मदिवस ११ जुलाई १९८९ को नशाबन्दी पखवाडा के रूप मे मनाने का निश्चय किया है। यह कार्यक्रम ११ जुलाई से १८ जुलाई १९८९ तक चलेगा।

डा० युद्धवीर सिह ऐसे गाधीवादी थे जो बातो मे नही बल्कि अपने कार्य द्वारा गाधी जी की नीतियो का प्रचार प्रसार करते थे, जैसे चरखा सघ नशाबन्दी कुष्ठ निवारण तथा छुआछूत आदि।

इस अवसर पर समिति दिल्ली मे शराब की दुकानो पर पिकेटिंग तथा धरना देगी। दिल्ली के उपराज्यपाल को कहा जाएगा कि वे पुनर्वास तथा स्लम बस्तियो के पास से शराब की दुकानो को बन्द कराये अन्यथा उनके कार्यालय पर विशाल प्रदर्शन व धरना दिया जाएगा।

दिल्ली नशाबन्दी समिति पूर्ण रूप से यह मानती है कि शोषित पीडित सर्वहारा वर्ग की आर्थिक सामाजिक स्थिति यदि कभी ठीक होगी तो उसी अवस्था मे होगी जब वे शराब से किनारा करगे।

गुरुमेश सिह योगी

श्री गुरुमेश सिंह आर्य तहसील पलवल (फरीदाबाद) हरयाणा मे पटवारी पद पर कार्यरत हैं। योगासन मे १९८२, ८३, ८४, ८५ मे लगातार राष्ट्रीय स्वर्ण पदक विजेता और १९८६ मे स्वर्णपदक के साथ राष्ट्रपति द्वारा योगरत्न की उपाधि से विभूषित हैं।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज का निर्वाचन

आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई का वार्षिक निर्वाचन रविवार दिनाक १८-६-८९ को श्री जगदीशचन्द्र जी मल्होत्रा की अध्यक्षता मे बडे सौहार्द पूर्ण वातावरण मे सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ। जिसमे वर्ष १९८९-९० के लिए निम्न पदाधिकारी एव सदस्य चुने गए—

प्रधान श्री ओकार नाथ
महामन्त्री श्री विमल स्वरूप सूद
कोषाध्यक्ष श्री कस्तूरीलाल मदान

पदाधिकारियो का निर्वाचन होने के पश्चात् नवनिर्वाचित प्रधान श्री ओकारनाथ आर्य तथा श्री विमल स्वरूप सूद जी को अधिकार दिया गया कि वे अपनी इच्छानुसार अपने सहयोगी सदस्यो का चुनाव कर लें। उन्होंने अन्तरग सभा के लिए ८ सदस्यों का चुनाव किया जिसे साधारण सभा ने सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया।

(पृष्ठ २ का शेष)

उपदेश

का राज रहता है और जब उस परम्परा मे बाधा पडती है तब ही अधर्म और अशान्ति का दौरदौरा चलने लगता है। जब जब भी पहले ब्रह्मचारी का आदर्श सर्वसाधारण की आखो से ओझल होता है तब तब ही प्रजा का सम्मिलित आत्मा उसके लिए व्याकुल होकर कारना है। जब प्रजा के इस अनुताप मे स्वच्छ निर्मल, शुद्ध भाव प्रवेश करता है तब प्रजा के मालिक फिर से ब्रह्मचारी ब्रह्मा को ससार के उद्धार की आज्ञा देते हैं।

हे ससार की व्याकुल प्रजा! क्या लाखो के रक्त और करोडो की आत्महत्या ने तेरे हृदय को अब तक शुद्ध नही किया जिस से कि अब तक तेरे अन्दर ब्रह्मचारी ब्रह्मा का प्रादुर्भाव नही हुआ। तब प्रभु से प्रार्थना करो कि वह सच्ची शुद्धि प्रदान करे जिससे ससार का शीघ्र कल्याण हो।

शब्दार्थ

(ब्रह्मण) वेद ज्ञान (की प्राप्ति) से (पूर्वं जात ब्रह्मचारी) पहला प्रसिद्ध हुआ ब्रह्मचारी (घर्म वसान) दीप्त (प्रकाशमय) रूप को प्राप्त होकर (तपसा उत अतिष्ठत) तप से ऊँचा उठता है। (तस्मात) उस (पहले ब्रह्मचारी) से ज्येष्ठम+ब्रह्म ब्राह्मणम) सब से बड वेद द्वारा ब्राह्मण उत्पन्न होते हैं (च सर्वे देवा +अमृतेन साकम) और सब विद्वान अमृतत्व सहित (उत्पन्न होते हैं)।

सुरेन्द्रसिंह द्वारा वैदिक संस्कृति की रक्षा का संकल्प

श्री सुरेन्द्र सिंह आजाद ने सार्वदेशिक आर्य वीर दल शिक्षक से प्रभावित होकर संकल्प लिया है कि जहाँ पर रहूँगा वहीं पर प्रतिदिन आर्य वीर दल की शाखा लगाता रहूँगा तथा राष्ट्रोत्थान की भावना पैदा कर वैदिक सस्कृति की रक्षा का सकल्प परमात्मा को साक्षी मानकर लेता हू।

(पृष्ठ ५ का शेष)

डी० ए० वी० शताब्दी डाक टिकट...

की भावनाएँ फैलाने म लगी हुई हैं। इस को राकने मे आप लोगो को सक्रिय होना है। आप को अपनी शिक्षा सस्थाओ द्वारा सच्चे भारत के नागरिक बनाने हैं और डी ए वी को फिर से गुरु शिष्य की परम्परा वाला युग लाना है। हम ने भी नई शिक्षा नीति बनाई है पर हमे सफलता नही मिली। हम कोशिश कर रहे हैं। आशा है कि डी ए वी की सस्था हमे सहयोग देगी।

सभा के अध्यक्ष श्री गिरधर गोमानगो मन्त्री सचार विभाग ने कहा कि महात्मा हसराज जी द्वारा स्थापित डी ए वी सस्थाएँ प्रशसा की पात्र हैं। आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द ने देश के लिए जो कार्य किया है उसे देश कभी भुला नही सकता।

इसके बाद प्रधान मन्त्री ने डी ए वी शताब्दी डाक टिकट का विमोचन किया। अन्त मे इस कार्य-क्रम के सयोजक प्रि० किशन सिंह आर्य ने प्रधानमन्त्री और सचारमत्री तथा डाक तार विभाग के अधि-कारियो के प्रति आभार प्रकट किया।

समारोह का समस्त प्रबन्ध आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने किया। उनकी कार्य कुशलता से सरकारी अधिकारी भी प्रभावित हुए।

'आर्यसन्देश' के

—स्वय ग्राहक बनें।

—दूसरों को बनायें॥

'आर्यसमाज' के

—स्वय सदस्य बनें।

—दूसरो को बनायें॥

R N No 32387/77 Post in N D P S O on 13 14 7 89 Licenced to post w thout prepayment L cence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूव भुगतान बिना भेजने का लाइसस न० यू १३९

गुडगाव मे आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आय प लिक स्कल सक्टर ७ अवन एस्टेट गुडगाव मे ५ जन से २ जुलाई १९८९ तक ६० आय वीरो का प्रशिक्षण शिविर मे स्था नीय पुरुष व स्त्री आयसमाजो के सहयोग से प्रशिक्षित किया गया

बौद्धिक विकास सवश्री म न नीय प्रो० ओमकुमार आय महन्द्र शास्त्री चित्रोपाध्याय जी दिनेश शर्मा शास्त्री प्रा० उत्तमचन्द जी शरर वदप्रकाश आय महाम त्री हरियाणा आय वीर दल धमन्दु जी शास्त्री ने बौद्धिक ज्ञ न द्वारा आय वीरो को चरित्रवान मात पित व देशभक्त मानव सेवक तथा आदश वीर बनने की प्ररणा दी गई

शारीरिक विकास आय वीरो ने गुरुकुल जैसा सादा जीवन दिन चर्या जोवनचर्या को इन ८ दिनो मे तपाया। ऐसे प्रतीत होता था जसे वाल गोपाल कृष्ण व बलराम के नेन व मे किमी रगभूमि मे मल्ल युद्व एव योगाभ्यास कर रहे हो। हम व्यायाम शिक्षक कृष्णपाल जी विनोद जी आय अनिल कुमार आय के अति आभारी हैं।

धन्यवाद—इस शिविर को सफल करने मे सवश्री वेदप्रकाश आय सयोजक सोमनाथ आय भोजन व्यवस्थापक यज्ञदत्त कार्यालयाध्यक्ष जगदीश आय नगर नायक अनिल आय मन्त्री सुखदेव आय रामचन्द्र आय कन्हैयालाल आय शिवदत्त आय ओमप्रकाश चोरानी सोमदत्त आय महेश गुप्ता भारत भूषण आय रामचन्द्र वीर का सहयोग सराहनीय रहा। □

वेदों की कुन्जी

वेदो को समझने के लिए स्वामी दयानन्द की लिखी ऋग्वेदादि भाष्यभूमिक क पढन जरूरी है और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका को समझने के लिए स्वामी विद्यानन्द की लिखी भूमिकाभास्कर को पढना जरूरी है भू मकाभास्कर क्या है यह जानने के लिए वेदाथ भूमिका का पढ़िये मूल्य २ रुपये

१७ अगस्त तक आडर आर्य वीर श्रावणी के उपलक्ष्य मे मूल्य केवल १५ रुपये

इण्टरनेशनल आयन फाउण्डशन ३०२ कप्टन विल्ला मौंट मेरी रोड बादरा बम्बई ५०।

(पष्ठ १ का शेष)

पूर्वाग्रहो को छोडकर

से पारित हुआ।

प्रस्ताव

मोगा काण्ड तथा दिल्ली रेलवे स्टेशन पर विस्फोट के द्वारा उग्रवादियो के द्वारा जो ददनाक घटनाएँ घटी है वह समाज के लिए अभिशाप के रूप मे हैं। सवसम्मति से वीरगति पाने व ले वीरो को श्रद्धाजलि देत हुए यह निश्चय हुआ कि सरकार से भी अनुरोध किया जाए कि वह इस प्रकार की घटनाओं को शीघ्र न शीघ्र दमन करे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस गली न०१७ कैलाशनगर दिल्ली ३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ अंक ३७ रविवार २३ जुलाई १९८९ श्रावण सम्वत २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द—१६५ सृष्टि सम्वत १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश में ५० पौंड १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

देश और जाति के लिए बलिदान भावना जागृत करो

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

देश और राष्ट्र की विषम परिस्थितियो की विस्तार से चर्चा करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द प० लेखराम और लाला लाजपतराय का मात्र स्मरण कराते हुए युवको मे देश और जाति के लिए पुन बलिदान भावना को जागत करने का सदेश ही हमारे उज्ज्वल भविष्य का द्योतक है। यह शब्द सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्यपाद स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय ब्रजघाट जिला गाजियाबाद के सत्र उदघाटन समारोह मे मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए कहे। पूज्य स्वामी जी महाराज ने कहा कि सन्यास बहुत कठिन है मुक्ति के लिए मैने सन्यास नही लिया अपितु आर्यसमाज और आर्य जाति और भारत की सेवा के लिए ही मेरा पुण्य सकल्प है आज की इन परिस्थितियो मे सरकार से या अन्यो से किसी प्रकार की अपेक्षा न करके दयानन्द के सपूतो को अकेले ही आगे बढना है।

वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय ब्रजघाट के सत्र उदघाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान श्री प० वन्द्रराज जी ने गाजियाबाद मेरठ मुरादाबाद रामपुर और बिजनौर जनपदो से आये हुए सकडो प्रतिनिधियो की उपस्थिति मे विद्यालय की आवश्यकता और उपयोगिता जन साधारण के समक्ष रखते हुए सभी सहयोगियो का आभार व्यक्त किया। साथ ही धर्मान्तरण और धर्म परिवर्तन की इन चिन्तनीय परिस्थितियो मे वैदिक धर्म प्रचारको की आवश्यकता पर विशेष रूप से बल दिया।

विद्यालय के प्राचार्य स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती ने समस्त जन साधारण को आश्वासन दिया कि आप सभी मुझ से जो अपेक्षा (शेष पृष्ठ २ पर)

दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल का निर्वाचन

दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मडल का वार्षिक चुनाव २५।६।८९ को हुआ जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए।

श्री कृष्णलाल सूरी

प्रधान श्री कृष्णलाल सूरी
उपप्रधान लखीर म कटारिया
जे०पी० गुप्त
श्रीमती सरल पाल
महामन्त्री श्री रमन दत्त आर्य

श्री रमनदत्त आर्य

मन्त्री जयप्रकाश शास्त्री
सत्यपाल सैनी
कोषाध्यक्ष गणपतदास ग्रोवर
लेखा निरीक्षक देशराज जुनेजा

डा० बलदेव कौशल बाल ज्योति आर्य पब्लिक स्कूल का उद्घाटन

देश के स्वाधीनता संग्राम में आर्यसमाज का महान् योगदान

—महापौर श्री महेन्द्रसिह साथी

आज पश्चिम विहार के ए ४ ब्लाक मे डा० बलदेव कौशल बाल ज्योति आर्य पब्लिक स्कूल का उदघाटन दिल्ली के महापौर श्री महेन्द्र सिंह साथी ने दीप प्रज्वलित कर के किया। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनदबोध सरस्वती ने की। उन्होने विद्यालय भवन के निर्माण मे श्रीमती प्रकाश आर्या के परिश्रम की सराहना करते हुए कहा कि इस सस्था के माध्यम से वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार होगा। इस अवसर पर सासद चौ० भरत सिंह महानगर पार्षद श्री मोतीलाल शास्त्री तथा अन्य समाज सेवी सस्थाओ के कार्यकर्त्ताओ ने विद्यालय के शुभारम्भ पर अपनी शुभ कामनाए दी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल महामन्त्री श्री सूर्यदेव प्रान्तीय आर्य महिला सभा की प्रधाना श्रीमती शकुन्तला आर्या मन्त्रिणी श्रीमती कृष्णा चडढा श्रीमती तारा बद श्रीमती सरला महता श्रीमती विद्यावती मरवाहा श्री लखीराम कटारिया तथा अन्य अनेक अभ्यागत जनो ने अपनी शुभ कामनाए व्यक्त की। गुरुकुल कागडी के अध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाहा विद्यालय प्रबन्ध समिति की अध्यक्षा श्रीमती प्रकाश आर्या तथा प्रबन्धक श्री के एल वाही ने विस्तार से विद्यालय का गतिविधियो के विषय मे बताया। श्री साथी ने राष्ट्र निर्माण मे आर्यसमाज के योगदान को रेखांकित करते हुए एक लाख रुपये के अनुदान की घोषणा की।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

ईश्वर कहां रहता है

ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका से

अस्य सवस्य भापायामभिप्राय प्रकाशयिष्यते ।

भावार्थ—यह उपासना योग दुष्ट मनुष्य को सिद्ध नही होता, क्योकि (नाविरतो०) जब तक मनुष्य दुष्ट कामो मे अलग होकर, अपने मन को शान्त और आत्मा को पुरुषार्थी नही करना तथा भीतर के व्यवहारो को शुद्ध नहा करता, तब तक कितना ही पढे वा सुने, उसको परमेश्वर की प्राप्ति कभी नही हो सकती ।।१।।

तप श्रद्धे०) जो मनुष्य धर्माचरण से परमेश्वर और उसकी आज्ञा मे अत्यन्त प्रेम करके अरण्य अर्थात शुद्ध हृदय रूपी वन मे स्थिरता के साथ निवास करते है, व परमेश्वर के समीप वास करते है। जो लोग अधर्म के छोडने और धर्म के करने मे दृढ तथा वेदादि सत्य विद्याओ मे विद्वान् हैं जो भिक्षाचर्य्य आदि कर्म करके सन्यास वा किसी अन्य आश्रम मे है, इस प्रकार के गुण वाले मनुष्य (सूर्य्यद्वारेण०) प्राणद्वार से परमेश्वर के सत्य राज्य मे प्रवेश करके, (विरजा) अर्थात सब दोषो से छूट के, परमानन्द मोक्ष को प्राप्त होते हैं, जहा कि पूर्ण पुरुष, सब मे भरपूर, सब से सूक्ष्म, (अमृत) अर्थात् अविनाशी और जिसमे हानि-लाभ कभी नही होता, ऐसे परमेश्वर को प्राप्त होके, सदा आनन्द मे रहते हैं ।।२।।

जिस समय इन सब साधनो से परमेश्वर की उपासना करके उस मे प्रवेश किया चाहे, उस समय इस रीति से करे कि—(अथ यदिद०) कण्ठ के नीचे, दानो स्तनो के बीच मे, और उदर के ऊपर जो हृदयदेश है, जिसको ब्रह्मपुर अर्थात् परमेश्वर का नगर कहते हैं, उसके बीच मे जो गर्त है, उसमे कमल के आकार वेश्म अर्थात् अवकाश रूप एक स्थान है और उसके बीच मे जो सर्वशक्तिमान परमात्मा बाहर भीतर एक रस होकर भर रहा है, वह आनन्द स्वरूप परमेश्वर उसी प्रकाशित स्थान के बीच मे खोज करने से मिल जाता है। दूसरा उसके मिलने का कोई उत्तम स्थान वा मार्ग नही है ।।३।।

और कदाचित् कोई पूछे कि (त चेद् ब्रूयु०) अर्थात् उस हृदयाकाश मे क्या रखा है, जिसकी खोजना की जाय ?।।४।।

तो उसका उत्तर यह है कि - (स ब्रूयाद्०) हृदय देश मे जितना आकाश है, वह सब अन्तर्यामी परमेश्वर ही से भर रहा है, और उसी हृदयाकाश के बीच मे सूर्य आदि प्रकाश, तथा पृथिवी लोक, अग्नि, वायु सूर्य, चन्द्र, बिजुली और सब नक्षत्रलोक भी ठहर रहे हैं। जितने दीखने वाले और नही दीखने वाले पदार्थ है, वे सब उसी की सत्ता के बीच मे स्थिर हो रहे हैं ।।५।।

(त चेद् ब्रूयु०) इस मे कोई ऐसी शका करे कि जिस ब्रह्मपुर हृदयाकाश मे सब भूत और काम स्थिर होते है, उस हृदयदेश के वृद्धावस्था के उपरान्त नाश हो जाने पर उसके बीच मे क्या बाकी रह जाता है, कि जिसको तुम खोजने को कहते हो ? ।।६।।

तो इसका उत्तर यह है कि— (स ब्रूयात्०) सुनो भाई । उस ब्रह्मपुर मे जो परिपूर्ण परमेश्वर है, उसको न तो कभी वृद्धावस्था होती है, और न कभी नाश होता है। उसी का नाम सत्य ब्रह्मपुर है, कि जिस मे सब काम परिपूर्ण हो जाते हैं । वह (अपहतपाप्मा) अर्थात् सब पापो से रहित, शुद्धस्वभाव, (विजर) जरा अवस्थारहित, (विशोक) शोकरहित, (विजिघत्सोऽपि) जो खाने पीने की इच्छा कभी नही करता, (सत्यकाम) जिसके सब काम सत्य हैं, (सत्य सकल्प) जिसके सब सकल्प भी सत्य है। उसी आकाश मे प्रलय होने के समय सब प्रजा प्रवेश कर जाती हैं, और उसी के रचने से उत्पत्ति के समय फिर प्रकाशित होती हैं। इस पूर्वोक्त उपासना मे उपासक लोग जिस-जिस काम की, जिस-जिस देश को, जिस-जिस क्षेत्रभाग अर्थात् अवकाश की इच्छा करते हैं, उन सब को वे यथावत् प्राप्त होते हैं ।।७।।

—पुष्करलाल आर्य
१२१, कोटन स्ट्रीट
कलकत्ता-७

आर्य संस्कृति

अव सस्कृत करती नव सस्कार है ।
मानव का करती अतिशय उपकार है ।।
अमृतपुत्र सभी है उस भगवान् के ।
उनके बीच नही कोई दीवार है ।।

जो द्गोचि मम देह अस्थिया वार दे ।
गर न स्ठ सम तप मे कर उद्धार दे ।।
सत्य नरे औरो को भव से तार दे ।
दयानन्द सा विष दाता के प्यार दे ।।
सबके श्रेय अभ्युदय का व्रत धार ले ।
और पीडित की पीडा का भार ले ।।
वही आर्य सस्कृति का मूर्त स्वरूप है ।
उसकी विभा विलक्षण और अनूप है ।।

दुष्ट दलन करना जो धर्म सिखा रही ।
और सज्जनो की रक्षा बतला रही ।।
आत्मा अमर, देह नश्वर है गा रही ।
जिसकी अनुपम छवि है जग मे छा रही ।।
जागो आर्यो उस सस्कृति को मान दो ।
सोचो 'शान्त" नही उसका अपमान हो ।।

—ले० सत्यभूषण शान्त
वेदालकार, एम०ए०
२, मुनिरका विहार
नई दिल्ली-६७

वैदिक सोपान का विमोचन

दिल्ली आर्य प्रान्तीय महिला सभा की प्रधाना श्रीमती शकुन्तला आर्या द्वारा लिखित 'वैदिक सोपान' नामक पुस्तक का आर्यसमाज मन्दिर, लाजपत नगर-२ मे विमोचन किया गया। भारतीय जनता पार्टी की उपाध्यक्षा राजमाता विजय राजे सिन्धिया ने विमोचन करते हुए वैदिक सस्कृति के महत्त्व पर प्रकाश डाला और कहा कि यह उपयोगी पुस्तक लिखकर श्रीमती आर्या ने भारतीय नारी का गौरव बढाया है।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वेद किसी समुदाय विशेष का ग्रन्थ नही है अपितु यह सपूर्ण मानव जाति के लिए है और इसका सन्देश आज भी प्रासंगिक है । 'मनुर्भव' वेद का आदेश है और सच्चा मनुष्य वही है जो दूसरों की पीडा को समझकर उसको दूर करने का प्रयास करे। इसी सन्दर्भ मे 'वैदिक सोपान' पुस्तक की आज महती आवश्यकता है।

आर्य जगत के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालकार ने कहा कि आज महर्षि दयानन्द की कृपा से स्त्रिया न केवल शिक्षा प्राप्त कर रही है अपितु वेदाध्ययन भी कर रही हैं। उन्होने इस पुस्तक को पढकर इस पर आचरण करने की अपील की।

इस अवसर पर सर्व श्री मदनलाल खुराना, डा० प्रशान्त वेदालकार, डा० शिवकुमार शास्त्री, श्रीमती शकुन्तला दीक्षित आदि सभी वक्ताओ ने सरल व सुबोध भाषा मे लिखित इस पुस्तक को पढकर इसके विचार हृदयगम करने का अनुरोध किया।

विदुषी लेखिका श्रीमती शकुन्तला आर्या ने कहा कि वैदिक शिक्षाओ पर आचरण करते हुए एक-एक सीढी चढ कर हम लक्ष्य तक पहुच सकते हैं। उन्होने पुस्तक प्रकाशन में सभी महानुभावो, [illegible] अजय भल्ला के प्रति आभार व्यक्त किया।

ओ३म्
आर्य सन्देश

वैदिक साहित्य, संस्कृति और समाजदर्शन

आर्यसन्देश के पिछले अंको मे हम ने आर्यसमाजो, प्रतिनिधि सभाओ तथा शिक्षण संस्थाओ द्वारा वैदिक साहित्य के प्रकाशन, विक्रय एव वितरण मे किए गए उल्लेखनीय कार्यों का विवरण दिया था। इस दिशा मे गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार का कार्य विशेष रूप से प्रशसनीय है। वर्ष १९८७-८८ मे स्वामी श्रद्धानन्द अनुसधान प्रकाशन केन्द्र गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार की ओर से डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार के अभिनन्दन मे 'वैदिक साहित्य, सस्कृति और समाज दर्शन' नामक ग्रन्थ का प्रकाशन किया गया। इस ग्रन्थ के सम्पादन का उत्तरदायित्व हिन्दी विभाग के अध्यक्ष सुप्रसिद्ध समालोचक एव आर्य जगत के अग्रणी मनीषी डा० विष्णुदत्त राकेश को दिया गया जिसे उन्होने सुपरिचित कुशलता एव दक्षता के साथ वहन किया। इस महान कार्य की प्रेरणा तत्कालीन कुलपति प्रो० रामचन्द्र शर्मा ने दी तथा इस योजना को सरक्षण प्रदान किया स्वर्गीय डा० सत्यकेतु विद्यालकार तथा श्री सोमनाथ मरवाह ने।

इस ग्रन्थ के आधार डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार किसी प्रकार के परिचय की अपेक्षा नही रखते। वे तो ऐसे व्यक्तित्व है जिनके ऊपर यदि किसी ने लिखा तो वे धन्य तो हुए ही, प्रसिद्ध भी हुए। डा० सत्यव्रत और गुरुकुल कांगडी पचास से भी अधिक वर्षों तक एक दूसरे के पर्याय रहे हैं। उनके अथक प्रयासो से इस सस्था ने शिक्षा जगत मे और साथ ही औषधि निर्माण के व्यवसायिक जगत मे कीर्तिमान स्थापित किए हैं। स्वामी श्रद्धानन्द के प्रिय शिष्य तथा आगे चलकर उनके कार्यों को निरन्तर गति प्रदान करने वाले डा० सत्यव्रत जी प० इन्द्र विद्यावाचस्पति के भी अन्तरग सहयोगी रहे। इतिहास केवल उन्ही को याद करता है जो अपनत्व का भुला कर अपने उद्देश्य का ही एक अश बन जाते हैं। डा० सत्यव्रत जी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से विश्वविद्यालय स्तर के शिक्षा सस्थान की मान्यता मिल जाने के बाद, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के पहले कुलपति भी बने और बाद मे वे इसके विजिटर भी नियुक्त किए गए।

डा० सत्यव्रत जी इतने महत्वपूर्ण पदो पर रहते हुए भी अध्ययन और लेखन के लिए सदा समय निकालते रहे। आदरणीय डा० साहब को अनेक सस्थाओ ने समय समय पर अलकृत करके अपने को ही गौरवान्वित किया। इस महान ग्रन्थ मे उनकी प्रमुख पुस्तको से भी कुछ उद्धरण दिए गए हैं तथा उनका सामान्य परिचय दिया गया है। यद्यपि इस ग्रन्थ का कलेवर बहुत बडा है, परन्तु इसमे डा० साहब के महान व्यक्तित्व और कृतित्व को पूरी तरह समेट पाना सम्पादक महोदय के लिए असाध्य नही तो दु साध्य कार्य अवश्य था। इस ग्रन्थ को सात भागो मे विभाजित किया गया है—अर्चना के स्वर शुभकामनाएँ और स्नेहाञ्जलिया प्रज्ञालोक, जीवन यात्रा, ग्रन्थो का परिचय, लेखन परिदृश्य तथा आर्यसमाज साहित्यिक परिदृश्य।

प्रज्ञालोक के अन्तर्गत जिन महान विभूतियो ने माननीय डा० साहब के विषय मे लिखा है उनके नामो के परिगणन मात्र से यह स्पष्ट है कि डा० सत्यव्रत इस ससार मे किन ऊँचाइयो पर थे। वैदिक सस्कृति के उस अभिनव व्याख्याता का हमारा शत शत प्रणाम।

हमे विश्वास है कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय इस दिशा मे अनवरत प्रयत्नशील रहेगा और ऐसे महान ग्रन्थ आर्य जगत का भविष्य मे भी प्राप्त होते रहेगे। ऐसे ही भव्य ग्रन्थ की हम अपेक्षा करते हैं कि गुरुकुल कागडी के ही सुयोग्य स्नातक, प्रोफेसर कुलपति तथा कुलाधिपति आदि पदो पर लम्बे समय तक कार्य करने वाले साहित्य सर्जक तथा आर्यसमाज को उसका इतिहास उपलब्ध कराने वाले डा० सत्यकेतु विद्यालकार पर भी शीघ्र ही तैयार किया जाएगा।

एक बार पुन इस भव्य कार्य की योजना बनाने वाले तथा इसे क्रियान्वित करने वाले मनीषी विद्वानो का अभिनन्दन।

महाभारत का चीरहरण

—अशोक गुप्ता
सी-१५३ विवेक विहार,
दिल्ली-११००९५

महाभारत सस्कृत वाङ्मय की अमूल्य निधि है। इसे शास्त्रो मे पचम वेद के नाम से अभिहित किया गया है। यह भारत का सच्चा एव बृहत् इतिहास तो है ही, जैसा कि इसके नाम से ही व्यक्त होता है, साथ ही इसमें धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, योग, नीति, सदाचार, अध्यात्म आदि सभी विषयो का अत्यन्त विशद एव सारगर्भित विवेचन किया गया है। इसके रचयिता महर्षि कृष्णद्वैपायन वेदव्यास जी ने ही अपने श्रीमुख से कहा है —"यन्नेहास्ति न कुत्रचित्। जिस विषय की चर्चा इसमे नही की गई है उसकी चर्चा अन्यत्र कही भी उपलब्ध नही है।" श्रीमद्भगवद्गीता-जैसा अमूल्य रत्न भी इसी महासागर की देन है। इसीलिए यह न केवल महाइतिहास है वरन् हिन्दुओ का तो यह परम पूजनीय ग्रन्थ है।

इसमे कुल मिला कर एक लाख श्लोक हैं, इसी कारण इसे "शतसाहस्री संहिता" के नाम से पुकारा जाता है। यह एक लाख श्लोक आदि सभापर्वादि के नाम से १८ महाअध्यायो मे विभाजित है। कहा जाता है महाभारत पाँचवा वेद है। जिसमे सम्पूर्ण चार वेदो का सार निहित है।

मगर दिल्ली दूरदर्शन ने स्वय एक "अन्य महाभारत" का निर्माण करके (सुधार करके) स्वय वेदव्यास जी का भी सुधार किया है। यदि श्री वेदव्यास जी द्वारा रचित व स्वय श्री गणेश जी द्वारा लिखित महाभारत मे त्रुटिया न होती या वह सम्पूर्ण होता तो दिल्ली दूरदर्शन को हर स्थान पर इसमें सुधार न करना पडता। उदाहरण के लिए रविवार, १४ मई, १९८९ को आपने महाभारत के सीरियल को "दिल्ली दूरदर्शन द्वारा विरचित' महाभारत मे दिखाया गया कि—

(१) हिडिम्बा-भीम सवाद जिसमे भीम बताते हैं कि व क्यू घटोत्कच को अपने साथ नही ले जायगे।

(२) भीम के अनुज भ्राता, भीम से ठिठोली कर रहे है।

(३) बकासुर को मारने के लिए जाने के अधिकार का कारण भीम यह बताते है कि क्यकि वह सब भाइयो का आधा भोजन खुद खाते हैं इसलिए वह भाइयो के ऋणी हैं गोया उस समय भी राशन पद्धति चालू थी।

(४) राक्षस को मारने के लिए जब भीम जा रहे हैं तब नगर वासियो के सामने जाते दिखाया गया है।

(५) नगर वासियो के पूछने पर ब्राह्मण कहता है कि पाण्डव चले गए है। इत्यादि, इत्यादि।

अब देखिए (१) मगर महर्षि वेदव्यास जी द्वारा रचित महाभारत मे यह प्रसग आदिपर्व के एक सौ चौवनवे अध्याय के ३६वे श्लोक से शुरु होता है। आइए देखे कि वेदव्यास जी ने क्या लिखा है और दिल्ली दूरदर्शन तो वहाँ तक देख पाता है जहा तक वृद्ध वेदव्यास जी की दृष्टि नही जाती।

अमानुष मानुषज भीमवेग महाबलम।
य पिशाचानतीत्यान्यान बभूवानीव राक्षसान॥

यद्यपि उसका जन्म मनुष्य से हुआ था तथापि उसकी आकृति और शक्ति अमानुषिक थी। उसका वेग भयकर और बल महान था वह दूसरे पिशाचो तथा राक्षसो से बहुत अधिक शक्तिशाली था।

अगले श्लोक मे लिखा है अवस्था मे बालक होने पर भी वह मनुष्यो मे युवक सा प्रतीत होता था। जबकि दूरदर्शन को वह ग्लैक्सो बेबी सा प्रतीत हो रहा था। ३७वे श्लोक मे लिखा है—'उस महान धनुर्धर बालक

(शेष पृष्ठ ६ पर)

बन्धनों की मुक्ति में ही तृप्ति है

—देवनारायण भारद्वाज

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्योद्देश्यरत्नमाला में हमें यज्ञ की व्यापक परिभाषा दी है अग्नि होत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त जो शिल्प व्यवहार और जो पदार्थ विज्ञान है जो जगत के उपकार के लिए किया जाता है उसको यज्ञ कहते है यदि उपकार करने का सकल्प आप करते हैं चाहे वह छोटे से छोटा ही क्यो न हो—आप बन्धन मे आ जाते है। इन बन्धनो को खोलने के बाद ही आप उस उपकार को पूरा कर पाते हैं और स्वयं को मुक्त अनुभव कर सकते हैं कभी ... पोस्ट कार्ड पत्र पेटी में डालन का दिया ... कितना साधारण पत्र का मूल्य मात्र कुछ पैसे आप उसे ... पत्र पेटी में डाल दते। ... पत्र ... पेटी पर गए उसमे ... नहा और कहा गए ... चारो ओर कीचड है। आप कीचड में जाकर ... पत्र डाल भी द पर ... निकलने मे दर कर ... आपने ... लिए ... फ ... भी ... सकता था। ... छोड़ दिया ... प्रेरणा प्रदान करता है

ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः॥
कात्यायन श्रौत सूत्र ५।१।११

पदार्थ हे (वरुण) वरणीय श्रेष्ठतम प्रभो ! (ये) जो (ते) आपके इस ससार मे (यज्ञिया) सृष्टि सम्बन्धी (शतम्, सकडो (सहस्रम्) हजारो (पाशा) बन्धननियम (वितता) विस्तृत (महान्त) महान दुर्धर्ष हैं। (तेभि) उन पाशो नियमो की सहायता से (न) हमको (अद्य) आज (सविता) शुभ कर्मों मे प्रेरक विद्वान (उत) और (विष्णु) कर्मों मे व्याप्त शिल्पी जन (मरुत) मत रोओ ऐसा ढाढस बधाने वाले मित्रजन (स्वर्का) सुन्दर मन्त्र विचार उनमे तेजस्वी पराक्रमी जन (विश्वे) सब (मुञ्चन्तु) भव बन्धन से मुक्त करें।

धर्मशास्त्रो मे जगतस्थ प्राणियो के चौरासी लाख योनिया बताई गई है इनमे से एक मानव योनि को छोड़कर शेष सभी भोग योनिया है अपने कृत कर्म फलानुसार जीव जन्म लेता है। भोग योनियो मे जीव को कुछ अधिक सीखना नही पड़ता है वह जन्म से मृत्यु पर्यन्त अपना निर्धारित जीवन निर्वाह करता है। मानव योनि मे जीव भोग के साथ साथ कर्म करने मे भी स्वतन्त्र होता है। जन्म जन्मान्तरो के सचित संस्कारो का प्रभाव तो मानव जीवन पर पड़ता है पर इनको भी उत्प्रेरित करना होता है। बीज मे अकुरण की क्षमता है पर अकुरण के लिए अनुकूल नमी व तापक्रम का आवश्यकता है। ... की सफलता के लिए वाछनीय है कि उसे बाल्यकाल मे ... के उत्कृष्ट लक्ष्य का ज्ञान कराया जाये लक्ष्य प्राप्ति के ... निश्चित कार्य प्रणाली ... का अनुपालन ...

... मानव शिशु को ... जगल मे ... भेड़िये ... गई। उसने ... का अपने ... वह ... होने लगा। ... भेड़िया ... आकृति के ... मानव सुलभ ... लक्षण ... था। भेड़िया बालक ... वर्षों लखनऊ के एक बड़े चिकित्सालय मे उपचार करके मानवोचित गुण लाने का प्रयत्न किया गया। इस सृष्टि को यज्ञमय कल्याणमय बनाने का श्रेय यज्ञकर्ता शुभकर्म कर्ता मानव को ही है। इस कार्य मे साधन तो पशु एवम जड पदार्थ भी हो सकते हैं किन्तु साधक मनुष्य ही हो सकता है। यज्ञ शुभ कर्म की सफलता अनेक नियमो के पालन से सम्भव होगी। प्रकृति के सत रज तम गुण धर्म अर्थ काम मोक्ष पुरुषार्थ पच महायज्ञ सात स्वर अष्टाग योग धर्म के दस लक्षण और सोलह संस्कार सैकड़ो सहस्रो नियमो का पालन कर के एक शीर्षस्थ प्रतिभा सम्पन्न मानव निर्माण सम्भव है। जन्म लेते ही बालक के कान मे वेदोऽसि कह कर जातक संस्कार फिर नामकरण संस्कार किया गया। कुछ बड़ा हुआ तो शिक्षक रक्षक या वितरक लक्षणो के अनुसार उसका उपनयन वेदारम्भ संस्कार किया गया।

अब तो सूत के धागे का बन्धन शरीर पर स्पष्ट दिखाई देगा। यह यज्ञोपवीत शरीर के आकार के अनुसार ही बनाया जाता है। आचार्य बालक के कन्धे पर हाथ रख कर उसे अपने व्रत मे दृढता उदर पर हाथ रख कर नाभि सदृश निर्माण क्षमता और हृदय पर हाथ रख कर कल्याण चेतना का उपदेश प्रदान करेगा। दीर्घ या लघु शका के समय इस यज्ञोपवीत से कान को कसने का सकेत करेगा जिस से स्नायु ... स्वस्थता के साथ साथ बालक इनके दुरुपयोग के प्रति सचेत रहे। आचार्य अपनी अजलि का जल बालक की छोटी अजलि के थोड़े जल मे मिलाकर किसी पात्र मे इसलिए रखवाता है कि बालक के वृद्धि अकुरकण मे आचार्य अपनी ज्ञान राशि मिला कर उसे पुष्पित वृक्ष का रूप प्रदान कर के आशा करते हैं वह स्वार्थ नही परमार्थ मे प्रयोग हो। वेदारम्भ काल मे आचार्य बालक की कटि पर मेखला बधवा कर उसे ब्रह्मचर्य के दृढ बन्धन मे कस देता है। सिर की चोटी रखने का चूड़ा कर्म संस्कार ब्रह्मरन्ध्र की रक्षा का सकेत कर देता है। जैसे छोटी छोटी रस्सी मे परस्पर ग्रन्थिया लगा कर एक लम्बी रस्सी दूर तक ले जाई जाती है वैसे ही संस्कार के ये बन्धन मानव को ऊँचा और उत्कृष्ट बनाते हैं।

जितनी महानता या ऊँचाई पर चढ़ना है उतने ही अधिक व कठिन व्रत बन्धनो का पालन करना होगा उतनी अधिक सीढ़िया चढ़नी होंगी व थकावट सहन करनी पड़ेगी। आप कहेंगे कि हम तो लिफ्ट लगवा लेंगे तब तो आप और अधिक बन्धन पाल लेंगे। ऊँचाई के अनुसार सुदृढ़ तार व उपकरण के साथ साथ सुनिश्चित विद्युत व्यवस्था भी चाहिए और विद्युत अवरोध का सामना भी करना पड़ेगा। इसीलिए जहा लिफ्ट है वहा सीढ़िया भी होती हैं। वैज्ञानिको का निष्कर्ष है कि मानव मस्तिष्क मे असख्य कोषिका तन्तु होते हैं। अभी तक उनका अत्यल्प प्रतिशत ही मानव द्वारा प्रयुक्त हुआ है। जो जितने अधिक कोषिका तन्तु जागृत कर लेता है उतने ही अधिक उत्तम ज्ञान विज्ञान के अनुसन्धान आविष्कार कर सकता है। एक विद्वान वैज्ञानिक गणित के अनुसन्धान को समर्पित थे। प्रौढ होने लगे तो घर वालो ने उनका विवाह कर दिया। नव वधू इनके कक्ष मे पहुचती है इन्हे अनुसधान मे ध्यानावस्थित पाती है। सम्मुख बैठ जाती है। रात्रि मे भी यही क्रम चलता है। नववधू दीपक मे चुकने वाले तेल को बढ़ाती रहती है और वैज्ञानिक की लेखनी चलती रहती है। वर्षों मे कार्य पूर्ण होता है तो पुरुष अपनी पत्नी की ओर देखता है और कहता है—चलो अब अब हम दाम्पत्तिक जीवन आरम्भ करें। पत्नी ने कहा अब आप विषय सम्बन्ध की बात करते है जरा मेरे श्वेत केशो की ओर तो देखिये और अपनी ओर भी झाँकिए। इस वृद्धावस्था मे गणित की उपलब्धि बहुत कुछ है। पति ने पत्नी की सच्ची समर्पण भावना से प्रभावित होकर पुस्तक का नाम अपनी पत्नी के नाम पर लीलावती रख दिया। उस वैज्ञानिक ने लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग मे अपने विवाह बन्धन को बाधा नही विधायन का रूप प्रदान कर दिया।

यज्ञ क्या है—दान सगतीकरण व देव पूजा ही यज्ञ है। प्रभुभक्ति अग्नि होत्र माता पिता की सेवा अतिथियो का सत्कार और ससार के अन्य प्राणिमात्र का उपकार करना भी यज्ञ है। यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है—श्रेष्ठतम कर्म भी यज्ञ है। इनको पूरा करने के लिए बन्धनो को मानना और उन्हें खोलना होगा। समय शक्ति सम्पत्ति और व्यक्ति के रूप में कुछ न कुछ अश अपने स्वार्थ से निकाल कर परमार्थ में लगाना होगा। अपनी आय का शताश धार्मिक संस्थाओं पर व्यय करने का नियम है—इस बन्धन को

स्वीकारना होगा। समय न होना आर्थिक स्थिति सुदृढ न होना व्यक्तियो की अधिक सख्या न होना आदि-आदि बन्धन नही बाधाएँ हैं। जितना है उसे पुरुषार्थ से बढाना और उसी मे से एक अश निकाल कर यज्ञ परोपकार मे व्यय करना बन्धन और उसकी मुक्ति सभव कर सकता है। सब कुछ बडी मात्रा मे अपने पास होने हुए भी धर्म कार्य मे व्यय न करना अज्ञान व लोभ की ऐसी ग्रन्थि है जो आत्मा को भव बन्धन मे बाध देती है और एक दिन यही सम्पत्ति उसे चीत्कार करने पर विवश कर देती है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हमे वैदिक धर्म की सरल प्रवाहमयी जीवन प्रणाली दी है जो स्वयमेव एक-एक कर के बन्धनो को खोलती चली जाती है। वास्तव मे यह दूर से देखने वाला को दुरूह किन्तु प्रयोग करने वालो का सुगम हो जाती है। प्रात आख खुलते ही प्रभात प्रार्थना की प्रेरणा शौच स्नान योगासन प्राणायाम के बाद प्रभु से सधि सन्ध्या दैनिक अग्नि होत्र भोजन से पूर्व प्रभु कृतज्ञता ज्ञापन सायकालीन अग्निहोत्र सन्ध्या और निद्रा से पूर्व शिव सकल्प धारणा के कृत्य व्रत बन्धन भी हैं और मुक्ति के माध्यम भी हैं। यदि व्रत धर्म धारण न किए जाय धारण करके बीच मे ही छोड दिये जाय तो भी व्रत से छुटकारा मिल सकता है पर ऐसी दशा मे हम मानवोचित लक्ष्य मे भटक कर स्वाभाविक जीवन मे आ जायगे। कौन बीज बोये कब खाद पानी लगाये और कौन सिचाई कर यह सोचने वाला वृक्ष के सुस्वादु फल नही खा सकता है। आप कहेगे कि हम बाजार से क्रय करके खा लेगे। बाजार मे भी कहा से आयगे इन्ही वृक्षो से। वृक्ष उगाने वाला किसान यह सोच ले तो कहा से आयगे बाजार मे फिर वे रुपये भी तो कमाने ही पडगे जिससे बाजार मे इन्हे क्रय किया जा सके।

आर्ष वचन ने हमे इन व्रत बन्धनो मे उलझा कर छोड नही दिया है प्रत्युत हमे कुछ ऐसे मार्ग दर्शक या साथी सरक्षक प्रदान कर दिए हैं जो पग पग पर हमारा हाथ पकड कर ऊपर उठाते हैं और इन बधनो को खोलने मे सहायता करते हैं। वे हैं—सविता प्रेरक विष्णु पालक, मरुत—मत रोओ कह कर धैर्य ढाढस बंधाने वाले और स्वक्र्का—उत्तम तेजस्वी पराक्रमी जन जो समय-समय पर हमारे साथ हो जाते हैं। सृष्टि सम्बन्धी नियमो का ज्ञान कराके उनके पालन की प्रेरणा ब्राह्मणों मे सविता कोटि के व्यक्ति प्रदान करते हैं। इन नियमो की छाया मे पालित होने का वातावरण हमे वैश्यो मे विष्णु कोटि के व्यक्ति प्रदान करते है। भारी भरकम परिश्रम के कर्मों मे सहायता शूद्रो मे मरुत् गुण के व्यक्ति प्रदान करते है और प्रत्यक्ष सकट मे फँस जाने पर हमारी रक्षा के लिए क्षत्रियो मे स्वक्र्का या पराक्रमी कोटि के व्यक्ति आगे आ जाते हैं। परमपिता परमात्मा स्वय अकेले जो यह सभी कार्य हमारे लिए करता है वही जगत मे भी इतने सारे साथी हम प्रदान कर देता है। महानगरो मे बनने वाले बहु खण्डी गगन चुम्बी भवन के निर्माण का ज्ञान अभियन्ता प्रदान करता है धनपति उसकी प्रेरणा या मानचित्र को मूर्तरूप अपने धन ऐश्वर्य से देता है पर इतना ऊचा भवन श्रमिक जन के बल से ही बनता है और ऊपर आग या अन्य किसी आपत्ति मे फस जाने पर अग्निशमन सेवा के पराक्रमी व्यक्ति ही हमारी रक्षा करते है।

महाराणा प्रताप और उनके भाई शक्ति सिह मे मतभेद हो गया था तो उनके पुरोहित ने अपने प्राणो की बाजी लगा कर उनको सगठन सहयोग एवम सदभाव की प्रेरणा दी। वह पुरोहित सविता था। राजा तो अनेक थे किन्तु वे मातृ भूमि की गरिमा को छोड कर एक एक कर अकबर की शरण मे जा रहे थे वे महाराणा प्रताप ही तो थे जो मातृभूमि की रक्षा के लिए अरावली के जगलो मे भटकते रहे और बच्चे घास की रोटी खाने को विवश हो गए। यही तो क्षत्रियो मे स्वक्र्का तेजस्वी पराक्रमी थे। वैश्य तो बहुत रहे होगे किन्तु आर्थिक सहायता के लिए राणा के सम्मुख धन की थैली खोल देने वाले भामाशाह अमर हो गए। वे विष्णु व्रत पालक सिद्ध हुए। वह भील झाला पति भाला युद्ध मे फस गए राणा की प्राण रक्षा के लिए आगे बढा और राणा का मुकुट अपने सर पर रख लिया व प्राणो का उत्सर्ग कर कृत कृत्य हुआ। वही तो मरुत था। स्वक्र्का शब्द यहा पर दो प्रयोजन सिद्ध करता है, पराक्रमी के साथ-साथ विचारशील होना। ब्राह्मण क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र नामक चार वर्ण सामाजिक कार्य विभाजन है जातियो का जजाल नही। अज्ञान-अन्याय अभाव और सद्भाव के कर्तव्य निर्वाह करना इनका ध्येय है। ब्राह्मण व वैश्य की तुलना मे क्षत्रिय व शूद्र शारीरिक दृष्टि से अधिक सबल होने हैं पर इनमे भी अन्तर है। सत्कार्य मे क्षत्रिय का बल स्वत स्फूर्त होता है तो शूद्र का परत प्रेरित होता है।

एक सरिता के तट पर बहुत से आबाल वृद्ध पुरुष व नारिया स्नानार्थ व भ्रमणार्थ एकत्र थे। एक बच्चा नदी मे गिर गया। किनारे पर भीड जुट गई। सब एक दूसरे का मुख ताक रहे है। बच्चे को बचाने को कौन दौडे? बच्चे के मा बाप भी विलाप कर रहे हैं उन्हे तैरना नही आता। क्या हो? तभी धडाम के स्वर के साथ एक युवक नदी मे कूदता है और हाथ पैर चलाते हुए उस बच्चे को नदी मे से निकाल लाता है। मा बाप बच्चे को अपनी गोद मे उठा लेते है। भीड उस युवक की प्रशसा करना ही चाहता है कि वह स्वय ही चिल्लाते हुए पूछता है— ह कौन है जिसने मुझे धक्का देकर नदी मे गिराया था। यही अन्तर स्वत स्फूर्त व परत प्रेरित बल मे है। किसी परिवार के चार भाइयो मे कोई प्राध्यापक सैनिक अधिकारी व्यापारी या परिचर चपरासी हो सकता है पर घर मे आयु की वरिष्ठता का ध्यान मे रख कर सब एक दूसरे के सम्मान व स्नेह मे जुड रहते हैं। मा ... खेती व्यापार एवम राष्ट्र शासन मे बुद्धि श्रम धन एवम शक्ति का वरिष्ठता मान्य होता है पर समान कार्य क्षेत्र मे आयु यहा भी अमान्य नही होता है। इसलिए वर्ण भेद नही सम्मेल है। भारतीय धर्मोद्धारक पूज्य दशम गुरु गोविन्द सिह महाराज ने निरकुश विधर्मी सत्ता का सामना करने के लिए खालसा शुद्ध सगठन की स्थापना की थी उस मे उन्होने सारे वर्ग भेदो का दीवारो को ढहाते हुए तथाकथित ऊँची नीची जातियो मे से स्वक्र्का—विचारशील पराक्रमी केवल पाच व्यक्तियो का चयन किया था जो किसी एक प्रान्त नही भारत का समग्र भूमि के पुत्र थे—यही तो पच प्यारे हैं। माता जीजाबाई की सकल्पना व समर्थ गुरु रामदास की प्रेरणा ने एक अजेय योद्धा शिवा जी का निर्माण किया था जिन्होने विधर्मी अन्यायी शासक औरगजेब के दात खट्टे कर दिये थे। मातृभूमि की मान मर्यादा को शिवा जी जैसे विचारशील पराक्रमी पुरुष ही अक्षुण्ण रख पाते हैं।

महाभारतकालीन युधिष्ठिर व दुर्योधन चाचा ताऊ की सन्तान परस्पर भाई थे। एक ही गुरु द्रोणाचार्य उन्हे शिक्षा दे रहे थे किन्तु शकुनि की कुटिलता मे पड कर दूसरा दुर्योधन हो गया। पराक्रमी दोनो थे किन्तु स्वक्र्का कोई भी नही—एक विचारशील था—दूसरा विचारशून्य। परमात्मा यज्ञ के मार्ग मे आने वाले सैकडो सहस्रो बन्धनो को काटने के लिए सैकडो हजारो उपाय भी हम प्रदान करता है। देखिए वेद मन्त्र

शत ते राजन भिषज सहस्रमुर्वी
गभीरा सुमतिष्टे अस्तु।
बाधस्व दूरे निर्ऋतिं पराचैः
कृत चिदेन प्र मुमुग्ध्यस्मत।।
ऋ० । ४।६

अर्थात—हे प्रकाशमान प्रजाध्यक्ष—प्रजाजन व जिस सब रोग निवारक आपकी सैकडो हजारो असख्यात औषधिया उपाय गहरी विस्तारयुक्त भूमि है उस भूमि की आप उत्तम बुद्धिमान हो के रक्षा करो जो दुष्ट स्वभावयुक्त प्राणो के दुष्ट कर्मो को छुडा दे और जो धर्म से अलग होने वालो ने पाप किया है उसको हम लोगो से दूर रखिये और उन दुष्टो को उनके कर्म के अनुकूल फल देकर आप उनकी ताडना और हम लोगो के दुःख का निवारण किया कीजिए सभाध्यक्ष व प्रजा के उत्तम मनुष्य पाप और सब रोग निवारण पथ्या को आचरण करने अत्यन्त बुद्धि बल देकर दुष्टो को दण्ड दिलाने वाले होते हैं वे ही सेवा सम्मान के योग्य हैं। ऐसे स्वक्र्का सुवीरो का शत शत वन्दन।

आर्य जगत के समाचार

डा० कपिलदेव द्विवेदी जर्मनी में

फ्रैंकफर्ट (प० जर्मनी) भारतीय वैदिक विद्वान तथा गुरुकुल महाविद्यालय हरिद्वार के कुलपति एव विश्व भारती अनुसधान परिषद् ज्ञानपुर (वाराणसी) के निदेशक डा० कपिलदेव द्विवेदी ने फ्रेंकफर्ट विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित ८ जून को विशेष समारोह मे मेडिकल साइसेज इन द वेदाज (वेदो मे आयुर्विज्ञान) विषय पर बोलते हुए कहा कि वेदो मे हमे विभिन्न प्रकार की चिकित्सा सम्बन्धी विशद जानकारी प्राप्त होती है। आपने कहा कि वेदो मे विभिन्न प्रकार के रोगो के उपचार दिए गए हैं आज के वैज्ञानिक उन्ही रहस्यो का खोज रहे हैं, जिसका रहस्योदघाटन हजारो वर्षो पूर्व वेदो मे दिया जा चुका है। डा० द्विवेदी ने वेदो से चिकित्सा सम्बन्धी मन्त्रो को प्रस्तुत करते हुए इस पर विस्तार से प्रकाश डाला।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्रमुख विद्वान, अध्यापक, शोध छात्र व अधिकारी उपस्थित थे। फ्रेंकफर्ट विश्वविद्यालय की तरफ से डा० द्विवेदी का अभिनन्दन हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० डा० इन्दु प्रकाश पाण्डय ने किया।

विश्व हिन्दू परिषद फ्रेंकफर्ट द्वारा आयोजित समारोह मे डा० द्विवेदी ने वेद और विश्वशान्ति विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वेद हमारे प्रकाश स्तम्भ हैं और व हमे विश्वशान्ति का उपदेश देते है। समारोह के प्रारम्भ मे आपका स्वागत श्री एम० मेवा वाले ने किया। इस परिषद द्वारा आयोजित एक अन्य कार्यक्रम मे डा० द्विवेदी ने मानव मनोविज्ञान और धन समृद्धि विषय पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम का सचालन श्री एस० के० काई ने किया।

विश्व हिन्दू परिषद् फ्रेंकफर्ट द्वारा नवनिर्मित अतिथि गृह का उदघाटन डा० कपिल देव द्विवदी ने किया।

वैदिक सेन्टर म्यूनिख मे "परिवार सुखी कैसे हो इस विषय पर बोलते हुए डा० द्विवेदी ने कहा कि परिवार की समृद्धि के लिए सत्यनिष्ठा, सत्यव्यवहार और उचित साधनो को अपनाना आवश्यक है। प्रत्येक गृहस्थ का कर्त्तव्य है कि वह निर्धनो निराश्रितो को दान दे तथा परिवार के प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह राष्ट्र की सुरक्षा व समृद्धि मे पूरा योगदान करे। डा० द्विवेदी ने कहा कि परिवार को सुखी बनाने का एकमात्र उपाय यह है कि सभी व्यक्ति पुरुषार्थी हो तथा सद गुणो को अपनाय।

समारोह के प्रारम्भ मे वैदिक सेन्टर की तरफ से डा० द्विवेदी का अभिनन्दन श्री एस० लुगानी ने किया।

विश्व हिन्दू परिषद म्यूनिख मे डा० द्विवेदी ने गीता मे वर्णित आचार विचारो की मीमासा विषय पर अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए।

डा० द्विवेदी का जर्मनी कार्यक्रम ६ जून से ३० जून तक है, जहा एक दर्जन से अधिक सस्थाओ एव विश्वविद्यालयो मे कार्यक्रम है। आपका इसके पश्चात हालैण्ड मे कार्यक्रम है तथा २१ जुलाई को आप तीन मास के विदेश कार्यक्रम के पश्चात भारत पहुचगे।

निर्वाचन

आर्यसमाज नरेला

दिनाक २५।६।८९ रविवार को आयसमाज नरेला की साधारण सभा म सर्वसम्मति से चुनाव निम्न प्रकार हुआ। सभा की अध्यक्षता श्री लायकराम जी ने की।

प्रधान श्री लायक राम जी
मन्त्री मा० पूर्णसिह आर्य
कोषाध्यक्ष सूरज भान जी

प्रतिनिधि—श्री लायकराम जी प्रधान, मा० पूर्णसिह जी मन्त्री, देश राज, सूरज भान।

अन्तरग सदस्य—मलचद गौतम वैद्य कर्मवीर, मा० सत्यवीर, राज पाल आर्य, आनन्द कुमार, जयलाल, रामसिह, रामचन्द्र तथा भीमसिह।

आर्यसमाज वसंत विहार

प्रधान श्री धर्मवीर जी
मन्त्री ब्रिगेडियर बलदेव मसीन
कोषाध्यक्ष पी०सी० महता
पुस्तकाध्यक्ष आर०एन० गुप्ता

आर्यसमाज विवेक विहार

प्रधान श्री जगदीशचन्द्र शर्मा (प्राचार्य)
मन्त्री सुप्रेम लाल वर्मा (एडवोकेट)
कोषाध्यक्ष आशाराम पोपली

(पृष्ठ ३ का शेष)

महाभारत का चीरहरण

ने पैदा होते ही पिता और माता के चरणों मे प्रणाम किया। हम बलिहारी हैं इस दूरदर्शन के।

इसी प्रकार संक्षेप मे दिल्ली दूरदर्शन ने सारी घटनाओ को यू तोडा-मरोडा है वो भी बिना किसी डर के क्योकि दिल्ली दूरदर्शन से न तो इतिहासकार टक्कर लेने की हिम्मत रखते हैं और न ही धर्माधिकारी।

(२) महाभारत मे कोई ठिठोली का प्रसग नही है।

(४) बकासुर को मारने के लिए भीम का नाम कुन्ती की जबान पर स्वत ही इसलिए आया क्योकि भीम इस प्रकार के भीमकाय कार्य करने के लिए प्रसिद्ध था दूसरे उस दिन सयोगवश चारो भाई भिक्षा के लिए गए हुए थे व भीम घर पर ही थे। (श्लोक ८ अध्याय एक सौ सत्तावन)

(४) युधिष्ठिर ने कहा कि ब्राह्मण को इस विषय मे मौन के लिए कह देना चाहिए तदन्तर रात बीतने पर भीमसेन भोजन लेकर गए (श्लोक ५ अध्याय एक सौ बासठ)

(५) नगर वासियो के पूछने पर ब्राह्मण ने कहा कि जब मै अपने बधुजनो के साथ रो रहा था तब एक मन्त्रसिद्ध ब्राह्मण ने यह कार्य किया। इसके बाद पाडव लोग वही निवास करने लगे। (श्लोक १५ से २१ अध्याय एक सौ तिरसठ

इन मोटे-मोटे उदाहरणो के अलावा अब तक "जितना भी महाभारत दिखाया गया है उसमे न तो घटनाक्रम का ही ख्याल रखा गया है और न ही घटनाओ को ही सही ढग से ही पेश किया गया है और तो और मनचाहे छिछोरे सवाद व घटनाएँ घुमा कर महाभारत की पवित्रता को भग कर दिया गया है।

लेखक की अपील

इस लेख के द्वारा लेखक ने अपने समाज के लोगो को वस्तुस्थिति बताने का कर्तव्य पूरा किया है। भारतवर्ष व हिन्दू धर्म के पावन इतिहास को तोडने-मरोडने व विकृत करने के प्रयास की घोर निन्दा की जानी चाहिए व ऐसा करने वालो को माफी मागनी चाहिए। इस धर्म कार्य मे जो जन सहयोग देना चाहे वे आग आये या जहा भी वे है वहाँ ऐसी धृष्टता के खिलाफ जागृति पैदा कर।

हिन्दू धर्म की कोमल भावनाओ के साथ खिलवाड करने वालो को उनकी गलती व सबक सिखाने के लिए वकील बधुओ की भी आवश्यकता है जिससे इडिया की न्याय व्यवस्था के अनुसार भी कार्यवाही की जाये जिससे कोई फिर ऐसा दु साहस न करे। शान्त पाप।

२५वीं हिन्दीतर भाषी कर्मचारियों के लिए हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता

केन्द्रीय सरकार के हिन्दीतर भाषी कर्मचारियो के लिए केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, एक्स-वाई/६८ सरोजिनी नगर, नई दिल्ली ने १७ १८ जुलाई, १९८९ को देश के सभी प्रमुख नगरों मे हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन करने का निश्चय किया है। इस मे ऐसे सभी अहिन्दी भाषी सरकारी जिनका हिन्दी का ज्ञान बी०ए० स्तर से कम है, भाग ले सकगे उन्हे निम्नलिखित विषयो मे से किसी एक पर निबन्ध लिखना होगा—

(क) भर्ती परीक्षाओ मे हिन्दी के विकल्प की आवश्यकता,
(ख) मेरे सपनो का भारत,
(ग) राष्ट्रीय एकता मे भारतीय भाषाओ का योगदान।

अच्छे स्तर के निबन्धो पर अनेक पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र देने की व्यवस्था है। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य अहिन्दी भाषी सरकारी कर्मचारियो मे हिन्दी के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना है। यह परिषद् के विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमो मे एक महत्वपूर्ण कार्य है।

गुरु विरजानन्द दिवस

महर्षि विरजानन्द जी की पवित्र जन्मस्थली करतारपुर जिला जालधर पजाब मे मगलवार १८ जुलाई १९८९ को गुरुपूर्णिमा के अवसर पर गुरु विरजानन्द दिवस का आयोजन किया गया। इसमें महात्मा प्रेमप्रकाश जी पुरी, श्री सत्यानन्द जी मुञ्जाल तथा डा० अखिलेश्वर जी आचार्य, ऊधमपुर ने आर्य जनता को सम्बोधित किया।

पुस्तक समीक्षा

वैदिक सोपान

'वैदिक सोपान' लेखिका श्रीमती शकुन्तला आर्या प्रकाशक श्री कृष्ण लाल मिक्का जगपुर विस्तार नई दिल्ली- ...०० ४ मूल्य पक्की जिल्द ० रुपये साधारण जिल्द ५०

रुपये मुद्रक रायमीना प्रेस चमेलियन रोड दिल्ली ६ पृष्ठ संख्या १६०]

श्रीमती शकुन्तला आर्या ने यह लघु पुस्तिका लिखकर आर्यसमाज तथा इसके कार्यों मे रुचि लेने वालों के ऊपर महान उपकार किया है वेद का आदेश है मनुष्य बनो मनुष्य वही है जो उन्नत है विचारवान है सबका कल्याण करने वाला तथा जिसका अन्तिम लक्ष्य है ब्रह्म का साक्षात्कार एवम प्राप्ति।

मानव जीवन को उन्नत बनाने के लिए विदुषी लेखिका ने दस सीढ़िया बताई है और इन सीढ़ियों का आधार उन्होने वेदो से प्राप्त ज्ञान को बनाया है। पहले नौ सोपानों मे उन्होने प्रत्येक मे पाच गुणो को धारण करने की आवश्यकता पर बल दिया है। इन सीढ़ियो मे वैयक्तिक सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन मे आने वाली समस्याओं का समाधान किस प्रकार किया जाए यह बतलाया गया है। इस पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल एवम शैली प्रवाह पूर्ण है। पढते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि कोई अनुभवी पुरुष धीरे धीरे मनुष्य हृदय मे ज्ञान के दीप जला रहा है इस पुस्तक का आद्योपान्त अध्ययन निश्चय ही मनुष्य को मनुष्य बनाने मे सहायता प्रदान करेगा। —सम्पादक

देश और जाति के लिए

(पृष्ठ १ का शेष)

रखते है मैं मन पूर्ण करूगा यह विद्यालय वास्तव मे वैदिक धर्म की भावनाओ से ओतप्रोत एक आदर्श गुरुकुल का रूप ग्रहण करेगा इस विद्यालय के लिए श्रीयुत प० केशव देव जी शास्त्री महोपदेशक सभा को उप आचार्य नियुक्त किया गया है श्री जयप्रकाश जी यती अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य गाजियाबाद ने अपना सम्पूर्ण समय नि शुल्क रूप से इस विद्यालय के लिए प्रदान करने की घोषणा की

नि शुल्क शिक्षा आवास भोजन पुस्तक वस्त्र की व्यवस्था के अंतर्गत १० स्नातक ब्रह्मचारियों से यह विद्यालय प्रारम्भ हुआ सभी समागत जन समुदाय ने अन्न और धन की उन्मुक्त वर्षा कर दी। सभा अभ्यागतों को माननीय अध्यक्ष महोदय द्वारा धन्यवाद दिया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री प्रमुख ... सभा के वरिष्ठ उप प्रधान ... नारायण जी अरुण एवं विद्यार्य सभा उ० प्र० के मन्त्री श्रीयुत माधव सिंह जी भी उपस्थित थे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस गली न०१७ कलाननगर दिल्ली ११ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वष १२ अक ३ रविवार ३० जुलाई १९८९ श्रावण सम्वत २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द—१ ५ सृष्टि सवत १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश म ५० पौंड १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

हिन्द समाचार पत्र समूह को पूर्ण सहायता दी जाएगी —स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा की कानूनी सहायता समिति की बठक सभा कार्यालय मे श्री विमल वधावन एडवोकेट की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। बठक मे श्री रवीन्द्र कुमार गुप्ता और श्री अनुल बढरा ने भाग लिया।

बठक मे हिन्द समाचार समुदाय को आतकवादियो द्वारा दी गई धमकियो के बारे मे भी समिति के सदस्यो ने चिन्ता व्यक्त की और यह निणय किया कि समिति हर प्रकार का सहयोग इस राष्टवादी पत्र समुदाय को देने को तत्पर है।

इस बठक मे मानहानि के कानून पर विचार किया गया और सवसम्मति से निणय हुआ कि कानूनी सहायता समिति आयसमाज के उन सभी नताओ व सस्थाओ के हक मे आन्दोलन म परवा करेगी जिनके विरुद्ध सामाजिक कार्यो का अखबार व पत्र पत्रिकाओ म व्यक्तिगत उद्देश्य से निन्दा की जाती है जिसके कारण दशभक्त और सामाजिक नेताओ की मानहानि ही नही होती है अपितु वह हतोत्साहित भी होते है

जीवन उसी का सफल है जिसके जीवन से देश, जाति और धर्म की उन्नति होती है . डा० धर्मपाल

सोम देव आर्या

आय केन्द्रीय सभा के उपप्रधान श्री सत्यानद जी आय तथा परोपकारिणी सभा के मत्री श्री गजानद आय तथा श्री प्रकाशानद आर्या की पूज्या माता जी श्रीमती लक्ष्मीदवी आर्या का ११ जुलाई १९८९ को देहावसान हो गया। उनके लिए १२ जुलाई से १६ जुलाई तक कलकत्ता मे शाति यज्ञ का आयोजन हुआ और अतिम दिन एक श्रद्धाजलि सभा आयोजित की गई। दिल्ली मे भी श्री सत्यानन्द जी आय के निवास स्थान पर २३ जुलाई १९८९ को सायकाल ४ ३० बजे शाति यज्ञ एव श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया। इस श्रद्धाजलि सभा मे दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धम पाल ने माता जी द्वारा आयसमाज तथा परिवार का सेवाओ का उल्लख करते हुए परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की शाति के लिए प्राथना की। उन्होने विश्व स व्यक्त किया कि यह परिवार पूववत मानव सेवा म कायरत रहेगा और परमात्मा से उनके परिवार के सुख एव समद्धि की कामना करते हुए कहा कि श्री लालमन आय और माता लक्ष्मी दवी जी का जीवन सफल हुआ है कि उन्होने ऐसे पुत्र और पुत्रियो को जन्म दिया जो समाज सेवा के लिए समर्पित हैं। इस अवसर पर वदिक विद्वान प० यशपाल सुधाशु ने पूज्या माता जी के अन्तरग सस्मरण सुनाते हुए उन्हे श्रद्धाजलि अर्पित की। आय केन्द्रीय सभा के महामत्री डा० शिव कुमार शास्त्री ने श्री सत्यानन्द जी आय तथा परिवार के लिए सुख समद्धि की कामना की। प्रान्तीय महिला सभा की मन्त्रिणी श्रीमती कृष्णा चडढा श्री गुलाब सिह राघव श्री पन्नालाल पीयूष तथा सहदेव मल्होत्रा आय पब्लिक स्कूल की प्रिंसिपल श्रीमती बजबाला भल्ला ने अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की। स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने परिवार के साथ अपन सबधो का जिक्र करते हुए सभी को आशीर्वाद प्रदान किया।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय तथा सम्बन्धित सस्थाओं का निरीक्षण

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय तथा सबन्धित सस्थाओ के निरीक्षण के लिए वतमान परिस्थितियो के अध्ययन एव विश्लेषण के लिए तथा वहा की प्रबन्ध व्यवस्था मे आवश्यक सुधारो के लिए अपनी सस्तुति देने के लिए एक शिष्ट मण्डल गत सप्ताह गुरुकुल कागडी हरिद्वार मे गया। इस शिष्ट मण्डल मे आय प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र महामन्त्री श्री रणवीर सिह भाटिया तथा अन्य अधिकारी श्री योगेन्द्र पाल सेठ श्री ब्रह्मदत्त शर्मा श्री धमप्रकाश दत्त तथा दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धमपाल महामन्त्री श्री सूयदेव तथा अन्य अधिकारी श्री वेदव्रत शर्मा ओर आय प्रतिनिधि सभा हरियाणा की ओर स डा० हरिप्रकाश एव प्रो० प्रकाशवीर शास्त्री सम्मिलित हुए। इस शिष्ट मण्डल ने गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय गुरुकुल कागडी विद्यालय विभाग गुरुकुल कागडी फार्मेसी स्वामी श्रद्धानन्द चिकित्सालय तथा परिसर मे स्थित खेती की जमीनो और बागबगीचो का निरीक्षण किया। वहा की समस्याओ के ऊपर भी विचार विमर्श किया तथा सम्बन्धित अधिकारियो से बातचीत करके प्रबन्ध व्यवस्था मे आवश्यक

(शेष पष्ठ ८ पर)

प्रधान सम्पादक—सूयदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

ब्रह्मचारि [illegible] समिधा समिद्धः कार्ष्णं वसानो दीक्षितो दीर्घश्मश्रु ।
स सद्य एति पूर्वस्मादुत्तरं समुद्रं लोकान्त्संगृभ्य मुहुराचरिक्रत् ॥

अथर्व० काण्ड ११ अ० ३, सूक्त ५ ६ ।

ब्रह्मचारी को तीनों लोकों की विद्या प्राप्त करने में ऐसी लगन से जुट जाना चाहिये और उन लोकों की घटनाओं को इस प्रकार हस्तामलक कर लेना चाहिये कि वे उसके अन्तःकरण के लिए समिधावत् हो जायें। उनको वह ब्रह्मचारी ज्ञानाग्नि मे प्रदीप्त यज्ञ कुण्ड मे डालकर यज्ञ मण्डप की शोभा को चौगुना बढ़ा दे। उस प्रदीप्त ज्ञानाग्नि से उसका अपना हृदय रूपी मुख अत्यन्त प्रकाशित होगा। यह तेज जो ब्रह्मचारी के पवित्र मुख को प्रकाशित कर रहा है क्षणिक न रहेगा यह तेज स्थिर होगा।

यह सारा तैयारी का जमाना है—यह [illegible] काल है जिस मे मनुष्य सब तरह सम्पन्न बनता है। [illegible] मनुष्य [illegible] विषयों में प्रवृत्ति [illegible] मे स्वाभाविक [illegible] है। उस अवस्था [illegible] ब्रह्मचर्याश्रम का उद्देश है। प्रवृत्ति के स्थान मे निवृत्ति मार्ग का आश्रय लेकर ही विषयों की दासता को त्याग कर मनुष्य उनका स्वामी बनता है। परन्तु यह निवृत्ति मार्ग जहां जीवात्मा को अपनी [illegible] तथा तन्निर्दिष्ट [illegible] की गुलामी से आजाद कर देता है वहां [illegible] बड़ा बीहड़ रास्ता। इस दुर्गम पथ पर चलना तलवार की धार पर नृत्य करने के बराबर है। तब क्या यह मार्ग असाध्य कर्म है? साधन शून्य पुरुषों के लिए जहां यह असाध्य है वहां साधन सम्पन्न ब्रह्मचारी के आगे इसकी सब मंजिल अपने आप साफ हो जाती हैं और वह बेखटके उन में से गुजर जाता है। ब्रह्मचारी को न शारीरिक बनाव चुनाव की सुध है और न उसके सिंगार की सुध। वह तत्त्व के उच्चासन की ओर दृष्टि लगाए सांसारिक झमेलों से बेलाग जा रहा है।

ब्रह्मचारी जब अपने व्रत को पूर्ण करके विद्या व्रत स्नातक होकर समावर्तन के लिए तैयारी करता है तो उसका वेश क्या होता है?

काले मृग का चर्म तो उसका ओढ़ना है और दाढ़ी मूछ उसकी बहुत बढ़ी हुई हैं। अस्वाभाविक जीवन व्यतीत करते-करते जहां मनुष्यों को परमात्मा के दिये हुए श्रेष्ठ भोज्य पदार्थ पचाने के लिए गर्म मसालों और खटाई आदि की जरूरत होती है, वहां शौच के नियमों को भुलाकर मनुष्यों ने और भी अनावश्यक अवस्थाएँ उत्पन्न कर ली हैं। ब्रह्मचारी के लिए नापित की आवश्यकता नहीं और न सेफ्टीरेजर और मशीन या कैंचो की। उसके शरीर के बाल, स्वतन्त्रता मे बढ़कर, जहां उसके अन्दर की विद्युत् को उत्तेजित कर के उसकी रक्षा करते हैं वहां काले मृग का चर्म उसके शरीर को सर्दी गर्मी के बाह्य आक्रमणों से [illegible] के योग्य बनाता है। ब्रह्मचारी को एक धुन लगी है और वह धुन है—[illegible] के लिए वह संसार के [illegible] कर देता है और सब प्रकार के भोगों को त्याग देता है। और वह भोगों मैं फंसे भी कैसे? जब वह प्रत्येक अवस्था मे आनन्द ही आनन्द अनुभव करता है, जब अपने त्याग के आगे इन्द्रियों को और विषयों को सिर झुकाये देखता है—जब देखता है कि सचमुच इनका स्वामी वह बन रहा है तब वह भोगों का भोग्य पदार्थ कैसे बन सकता है।

काले मृग का चर्म धारण किए, बढ़ी हुई दाढ़ी-मूछ वाला ब्रह्मचारी ही भोगों मे भोगे जाने के स्थान मे उन्हें अपना आज्ञा पालक सेवक बनाता है। मनु भगवान् ने यज्ञ प्रधान देश मे ही ब्राह्मण को बसने की आज्ञा देते हुए यज्ञ प्रधान देश के जो विशेषण बतलाये हैं उन में एक विशेषण यह है कि उस प्रदेश मे काले मृग स्वतन्त्रता मे विचरते हों। इसलिए काले मृग का चर्म प्राप्त करने के लिए उनके घात करने को मनुस्मृति ने भी लक्ष्य मे नही रखा। जहा काले मृग स्वतन्त्रता से विचरते हैं वहा उनका चर्म, उनकी स्वाभाविक मृत्यु पर वनियों के लिए प्राप्त करना बहुत सुगम है।

जिस आश्रम निवासी ब्रह्मचारी ने आचार्य की दृष्टि से रक्षा पाते हुए सर्दी-गर्मी की ताडना से ऊँचे उठ कर ब्रह्म तेज को धारण कर लिया है वही दीक्षा का अधिकारी होता है 'व्रतेन दीक्षामाप्नोति।' चाहे विद्या की पाठविधि समाप्त भी कर चुका हो परन्तु ब्रह्मचारी दीक्षा का अधिकारी उसी समय होता है जब कि वह व्रत-स्नातक बनने की योग्यता प्राप्त कर ले, तब वह पहले समुद्र को नियमपूर्वक लाघ कर दूसरे समुद्र मे प्रवेश करता है। ब्रह्मचर्य पहला समुद्र है। जिसने इस पहले समुद्र मे गोते खाए हो, जिसने ब्रह्मचर्याश्रम मे रहते हुए उसके पवित्र नियमो को तोडा हो, जिसे पूर्वाश्रम मे ही विषयों ने भोग कर खोखला कर दिया हो वह गृहस्थाश्रम रूपी उत्तर समुद्र मे प्रवेश करने का साहस क्यो करता है? इसलिये कि अविद्या ने उसको अन्धा कर दिया है और उसमे देखने की शक्ति नही बची। गृहस्थ रूपी उत्तर समुद्र मे काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहकार रूपी बडे बडे मगरमच्छ मुह खोले फिर रहे हैं [illegible] भोग की लहरे उठ रही है—वहा इन्द्रिय दमन द्वारा सुदृढ रहना ब्रह्मचारी का ही काम है। ब्रह्मचर्य साधना का फल क्या है? वेद का उत्तर है 'लोक सग्रह।'

समुद्र अथाह है, आन्धी के थपेडे लहरो को बल्लियो ऊपर ले जा रहे हैं और उसके अन्दर मनुष्यो से भरी हुई किश्ती फँस गई है। सामने सामने की लहरो ने किश्ती को भवर मे फसा दिया है। उस किश्ती को कौन निकाले? किनारे पर हाहाकार मच रहा है, परन्तु किसी का साहस नही पडता कि हिल सके। किश्ती के यात्री लहरो की हलचल के मद मे उन्मत्त अपनी शोचनीय अवस्था को अनुभव नही करते। सिर मे चक्कर आ रहा है और ऐसा अन्धेरा छा गया है कि उन्हे अपनी हीन दशा का परिज्ञान ही नही। ऐसी दशा मे एक तेजस्वी महात्मा जगल मे चले आ रहे हैं। एक क्षण मे उन्होने सारी अवस्था को जाच लिया और एक दम मे समुद्र मे कूद पडे। देखते देखते यह गए! वह गए! किश्ती को जा पकडा और उछल कर ऊपर चढ गए। पतवार को भव के नशे मे चूर भोगी से छीन कर अपने हाथ मे लिया, और किश्ती सम्भल गई। वह लहरो की भँवर से निकली और किनारे पर लग गई।

ब्रह्म को प्राप्त, ब्राह्मण, ब्रह्मचारी किस लिए तैयारी करता है? क्या विषयो का दास बनने के लिए? यदि यही उद्देश्य होता तो भौतिक गृह से आत्मिक गर्भ मे पुन प्रवेश का क्या मतलब! ब्रह्मचारी सारी तैयारी इस लिए करता है कि स्वार्थ को भूल कर ससार की पीडित प्रजा के दुखहरण करने के लिए जनता का सच्चा मार्ग दर्शक बने। ऐसे ब्रह्मचारी उत्पन्न करने का अधिकार आर्यावर्त्त के गुरुकुलो का था। क्या वह समय फिर लाया जा सकता है? यदि नही, तो ससार के पुनरुद्धार की आशा छोड देनी चाहिए।

शब्दार्थ

(ब्रह्मचारी समिधा समिद्ध) जो ब्रह्मचारी समिधा (पृथिवी लोक, सूर्य लोक तथा अन्तरिक्ष लोक के विद्यारूपी यज्ञ) से प्रकाशित (कार्ष्णम् वसान) काले मृग का चर्म धारण किए (दीर्घश्मश्रु दीक्षित एति) बढी हुई दाढी मोछ वाला दीक्षित होकर चलता है। (स सद्य पूर्वस्मात उत्तरम् समुद्रम् एति) वह शीघ्र ही इस (ब्रह्मचर्य रूपी) पहले से ऊपर के 'गृहस्थ रूपी) समुद्र को प्राप्त होता है और (लोकान् सगृभ्य मुहु आचरिक्रत्) लोक सग्रह कर के वारम्बार अभिमुख (अर्थात् वश मे) करता है। □

ओ३म्

आर्य सन्देश

वैदिक साहित्य, संस्कृति और समाजदर्शन

आर्य सन्देश के पिछले अकों मे आर्यसमाज की सस्थाओ द्वारा प्रकाशित साहित्य के विषय में लिखा गया है, उसी शृखला मे आर्यसमाज सिंहापुर की हीरक जयन्ती के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका के सबध में पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। इन स्मारिकाओ के प्रकाशन से हम आर्यसमाज के द्वारा किए गए कार्यों का स्मरण करते हैं, यह महान् कार्य आर्यसमाज के कार्य को आगे बढाने मे प्रेरणा भी देते हैं। इस स्मारिका में आर्यसमाज के प्रवर्तक वैदिक धर्म पुनरुद्धारक आचार्यों के आचार्य परिव्राट सम्राट सकल शास्त्र निष्णात, अलौकिक एव अद्भुत तार्किक, मेधावी, सन्यासी योद्धा महर्षि दयानन्द सरस्वती के कृतित्व एव कर्तृत्व पर प्रकाश डाला गया है। सिंगापुर महानगर के बीच मे स्थित एक छोटा सा द्वीप है। परन्तु यह ससार के लोगो को सांस्कृतिक तथा व्यापारिक दृष्टि से जोडने का कार्य करता है। इस समृद्धशाली द्वीप पर हजारो सालो से भारतीय व्यापारी, धर्मोपदेशक यहा आते रहे हैं। इन्होने भारतीय सभ्यता और सस्कृति का सदेश यहा पर पहुँचाया है। आर्यसमाज सिंगापुर भी पिछले साठ वर्षों से ससार को वैदिक सस्कृति का सदेश दे रहा है। इस स्मारिका के माध्यम से भी इस आर्यसमाज ने आर्ष ग्रन्थो से उदाहरण देकर वैदिक मान्यताओ का ही प्रचार किया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओ को हिन्दी अथवा अग्रेजी माध्यम से पाठको तक पहुचाया है। आचार्य विजय मित्र शास्त्री गौड का लेख वेद विद्या क्या है, वेदो का काल कौन सा था तथा वेदो में कौन कौन सी विद्याए निहित हैं, अनुसधानपूर्ण लेख है। बाद मे कुछ लेख मनुष्य के आचरण एव व्यवहार को उन्नत करने के लिए इस स्मारिका मे सकलित किए गए हैं। स्मारिका का कलेवर भव्य एव गरिमापूर्ण है। इसके सपादक बधाई के पात्र है। अन्य आर्यसमाजो को भी वैदिक धर्म के प्रसार हेतु समय पर ऐसी पत्रिकायें प्रकाशित करनी चाहिए।

उपासकों द्वारा परमात्म प्राप्तिविधि

ओ३म् असावि देव गोऋजीकमन्धो न्यस्मिन्निन्द्रो जनुषेमुवोच।
बोधामसि त्वा हर्यश्व यज्ञैर्बोधा नः स्तोममन्धसो मदेषु॥
साम० ३१३, ऋक्० ७।२१।१

ऋषि=वसिष्ठ, मैत्रावरुणि देवता=इन्द्र छन्द=त्रिष्टुप्

गोऋजीकम्—हम साधक, उपासक, निज इद्रियो को सरल सीधे सत्य मार्ग पर चलाते हैं।
देवम्—दिव्य गुण धारण कर।
अन्ध—आध्यात्मिक अन्न=ज्ञान विवेक, वैराग्य, सौम्य भक्तिभाव।
असावि—उत्पन्न करते हैं, सजोते हैं।
यज्ञै—यज्ञ कर्मों से।
अन्धस—योग साधनो से आत्म समर्पित हो कर।
बोध—प्यारे प्रभु को ज्ञान पूर्वक जान कर, लक्ष्य कर।
स्तोमम—स्तुति, उपासना, प्रार्थना द्वारा।
इन्द्र—हे ऐश्वर्यवान् परमेश्वर।
त्वा—आपको।
बोधामसि—हृदय मे उद्बोध करते हैं।
अस्मिन्—इस साधना, उपासना, भक्ति द्वारा।
हर्यश्व—हे ऋग और साम, ज्ञान और उपासना से प्राप्त होने वाले सर्व-व्यापक, अविनाशी प्रभु।
जनुषा—अनादि काल से, निज दयालु स्वभाव से आप।
नि—निश्चय।
उवोच—सवेत सुसगत, सयुक्त, प्राप्त होते हैं और।
न—हमारी।
मदेषु—उत्कृष्ट, आनन्दमयी अवस्थाएँ बना हमे मुक्त अवस्था प्राप्त कराते हैं।

कविता मे

हम साधक निज इन्द्रियो को सत्य मार्ग पर सदा चलाते हैं।
दिव्य गुण धारण कर विवेक विराग से भक्तिभाव सजोते हैं॥
यज्ञ कर्मों, आत्म समर्पण, ज्ञान पूर्वक स्तुतियो से प्रभु को उद्बुद्ध करते हैं।
इस साधना उपासना द्वारा हे अविनाशी आप दया कर निश्चय प्राप्त होते हैं॥
और हमे उत्कृष्ट आनन्दमयी अवस्था मे भगवन आप ले जाते हैं।
तब इस प्रकार दर्शन दे, निज ब्रह्मधाम पहुँचाते हैं॥

—हरबसलाल सहगल 'साधक'

प्रशासक करें पालना

ओ३म् य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तव।
ते न कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवास पिपृता स्वस्तये॥

जगन्नियन्ता जगदीश्वर, सर्वोत्तम सत्ताधारी हैं।
मनुज प्रशासक जन गण पालक, ही सब सच्चे अधिकारी हैं॥
चेतना ज्ञान से पाते हैं
जग की सत्ता भी पाते है
जड चेतन के स्वामी होते
जो मननशील हो जाते हैं।
इस भुवन-भूमि के पति होकर, देते जगमग उजियारी हैं।
मनुज प्रशासक जन-गण-पालक, ही सब सच्चे अधिकारी हैं॥
यही मनीषी हमे बचाते
और सदा सन्मार्ग दिखाते
जो पाप किए या किए नही
सबके प्रति वे सजग बनाते।
अध्यात्म मार्ग पर ले जाते, देकर साधन ससारी हैं।
मनुज प्रशासक जन-गण पालक, ही सब सच्चे अधिकारी हैं॥
प्रभु आओ प्रभु पुत्रो आओ
सभी ओर से हमे जगाओ
हे परोपकारी विद्वानो
पाप मार्ग से हमे बचाओ।
कल्याण हेतु आह्वान किया, आप ही हर्ष हितकारी हैं।
मनुज प्रशासक जन गण पालक, ही सब सच्चे अधिकारी हैं॥

—देवनारायण भारद्वाज

गायत्री मन्त्र मे आर्य जाति की विशेष श्रद्धा है, वतमान काल मे ही नही अपितु प्राचीन काल से ही। मानव धर्म के व्याख्याता और प्रवक्ता महर्षि मनु ने भी मनुस्मृति मे इस मन्त्र के माध्यम से ब्राह्म मुहूर्त मे एकान्त मे बस्ती से जाकर किसी जलाशय के तट पर सावित्री (गायत्री) के जाप का विधान किया है।

कुछ काल से आर्य जाति इतनी अविद्याग्रस्त हुई कि इस सनातन वैदिक ईश्वरोपासना के मार्ग से भटक कर पौराणिक अन्धविश्वास मे फँस गई और उसके परिणाम-स्वरूप धर्मध्वजी किन्तु वास्तव मे धर्मतत्त्व से सर्वथा अपरिचित अथवा प्रपच कर धार्मिक प्रवृत्ति वाले अध्यात्म पिपासु जनो का धन अपहरण करने वाले लोभी प्रवृत्ति के व्यक्तियो ने स्व-स्व कल्पित मन्त्रो की दीक्षा और उपदेश देने प्रारम्भ कर दिये।

उन्नीसवी शताब्दी मे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार तथा उनके द्वारा आर्यसमाज को स्थापना से लोग अन्ध विश्वासो से निकलने प्रारम्भ हुए। वैदिक पद्धति से सन्ध्या वन्दन तथा गायत्री व प्रणव जाप पुन प्रारम्भ हुए किन्तु इसे काल की गति कहिये अथवा आर्य-जाति का दुर्भाग्य कि स्वय आर्य-समाज के मच पर भी कतिपय ऐसे लोगो का प्रादुर्भाव हुआ कि जिन्होने गायत्री-जाप और गायत्री यज्ञ के नाम पर घोर अन्धविश्वास को जन्म देकर अन्ध परम्पराएँ चला दी।

जब काबे से ही कुफ्र चले,
तो कैसे रहे मुसलमानी?

जब सुधारवादी मच से ही अन्ध-विश्वास फैलाया जाए, तब इसके अतिरिक्त और क्या होगा, जो आर्यसमाज मे हो रहा है। तथा-कथित गायत्री भक्त और वैदिक धर्मी आयसमाजी धर्म ध्वजी जनो ने एक ओर तो मच से उक्त अन्ध-विश्वासो का प्रचार किया तथा दूसरो ओर इस प्रकार की पुस्तक लिखी जिनमे गायत्री के नाम पर घोर अन्धविश्वास प्रचारक बुद्धि विरुद्ध अनर्गल बाते भरी पडी हैं।

इस भावना से कि जिज्ञासु साधक जनो को आध्यात्मिक लाभ भी पहुँचे और वह अन्धविश्वास से भी बचे रहें गायत्री सम्बन्धी भ्रान्त मान्यताओ का सक्षिप्त निराकरण करते हुए यह लेख लिखा

गायत्री

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष, वैदिक सस्थान नजीबाबाद (उ०प्र०)

गया है। यदि जिज्ञासु जनो की जिज्ञासा पूर्ति तथा साधको को साधना मे इससे कुछ भी सहायता प्राप्त हो जाये तो अच्छा है।

वेद मे गायत्री नाम का कोई मन्त्र नहीं है। गायत्री ही क्यो? किसी भी मन्त्र का कोई नाम नही है। हा, गायत्री एक छन्द का नाम है और उस छन्द मे अनेक मन्त्र आते हैं। गायत्री छद के भी निचृद् आदि भेद हैं। यह मन्त्र जो गायत्री के नाम से प्रसिद्ध है, निचृद् गायत्री है।

गायत्री—

गायत्री के तीन पाद होते हैं और उन मे से प्रत्येक मे ८ ८ अक्षर होते हैं किन्तु निचृद् गायत्री मे २३ अक्षर होते है और इसके प्रथम पाद मे सात अक्षर होते हैं तथा दूसरे और तीसरे पाद मे आठ-आठ अक्षर। इस गायत्री के नाम से प्रसिद्ध मन्त्र मे २३ अक्षर ही हैं। प्रसगवश हमने यहा यह चर्चा की है, वास्तविक उद्देश्य तो हमारा यह बताना था कि गायत्री नाम का कोई मन्त्र नही है गायत्री छन्द मे होने से ही यह मन्त्र गायत्री छन्द कहलाता है।

वेद माता—

इस मन्त्र को कुछ लोग वेद-माता कहते हैं, यह एक भ्रान्त धारणा है। कोई एक मन्त्र वेद की पुत्री या पुत्र तो हो सकता है। वेद की माता नही हो सकता। वेद के २० सहस्र मन्त्रो मे से कोई एक मन्त्र—जो वेद का एक अश मात्र है—वेद की माता अथवा पिता किस प्रकार हो सकता है? माता का अर्थ निर्माण करने वाली होता हैं "माता-निर्माता भवति।' कोई भी मन्त्र वेद निर्माता अर्थात वेद निर्माण करने वाला नही अपितु वेद का एक अश मात्र है। जो लोग गायत्री मन्त्र को वेद माता कहते हैं, वह इसके लिये प्रमाण स्वरूप जो मन्त्र प्रस्तुत करते हैं, वह यह है—

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्ता पावमानी द्विजानाम्। आयु प्राण प्रजा पशु कीर्ति द्रविण ब्रह्मवर्चसम। मह्य दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम। अथर्व० १६।७१।१

इस मन्त्र का देवता वेदमाता है और छन्द है अति जगती। न तो इसका देवता ही गायत्री है और न छन्द ही। परन्तु फिर भी कुछ लोगों का यह कहना है कि इस मन्त्र मे गायत्री मन्त्र को वेद माता कहा गया है। बलात् इस मन्त्र पर यह भ्रान्त मान्यता बाला निरर्थक दायित्व सौंपना सर्वथा अनुचित है और सर्व साधारण को—जिनकी वेद मे गति नही, भ्रान्ति मे डालना है।

वेद मे मन्त्र का देवता मन्त्र के विषय को कहा गया है। उपर्युक्त मन्त्र का विषय वेदमाता है। इस मन्त्र के विषय को वेदमाता कह कर यह बताया गया है कि वेदवाणी मानव-जीवन की माता अर्थात् निर्माण करने वाली है। मानव-जीवन-निर्माण के लिए वेद मे जिन साधनो, तत्त्वो और विद्या-विज्ञानो की चर्चा है इस मन्त्र मे सक्षिप्त रूप से उन्हे गिनाया गया है। परम-पिता परमात्मा का कथन है—

(मया) मेरे द्वारा (स्तुता) प्रस्तुता, स्तुत, प्रस्तुत की गई अथवा प्रशसा की गयी (वरदा) वर देने वाली (वेदमाता) मानव-जीवन-निर्माण का सागोपाग ज्ञान देने वाली वेद वाणी प्रचोदयन्ता द्विजा नाम) प्रेरणाशील प्रेरणा प्राप्त करने वाले ज्ञान को ग्रहण करने वाले, ज्ञान-ग्रहण को रुचि रखने वाले द्विजो अर्थात ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यो को ज्ञान देकर पवित्र करने वाली है। इस से (आयु) आयु (प्राण) प्राण (प्रजा) प्रजा (पशु) पशु (कीर्ति) कीर्ति (द्रविण) धन (ब्रह्मवर्चसम) ब्रह्मज्ञान प्राप्त होता है अर्थात इन समस्त विषयो का ज्ञान वेद मे वर्णित है। परन्तु इतना ध्यान रहे कि आप इनका उपयोग तो करो किन्तु इन सासारिक विषयो मे ही मत फसे रहना अपितु ब्रह्मवर्चसम्=ब्रह्म ज्ञान का लाभ प्राप्त करना और यह सब (मह्य) मुझको (दत्त्वा) देकर (ब्रह्मलोकम्) ब्रह्मलोक अर्थात मोक्ष को (व्रजत) प्राप्त करना।

पाठकगण! इस विवेचन से यह समझ लगे कि गायत्री मन्त्र को वेद-माता कहना भ्रान्त धारणा है। इस मन्त्र में कही भी गायत्री मन्त्र की चर्चा नही है।

सावित्री—

इस मन्त्र का एक नाम "सावित्री" भी है। धर्म-शास्त्र के निर्माता महर्षि मनु ने सावित्री जाप का विधान किया है। उनका कहना है—

अपा समीपे नियतो
नैत्यिक विधिमास्थित.।
सावित्रीमप्यधीयीत
गत्वारण्य समाहित ॥
(मनु २।१०४)

अर्थात् एकान्त स्थान (जगल) में किसी नदी अथवा अन्य जलाशय के तट पर नित्य कर्म को सावधान होकर विधि पूवक करता हुआ सावित्री का जाप करे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यप्रकाश मे सावित्री का अर्थ गायत्री किया है। महर्षि मनु के उपर्युक्त श्लोक को मनुस्मृति से उद्धृत करते हुए वह लिखते हैं—"सावित्री अर्थात् गायत्री मन्त्र का उच्चारण, अर्थ-ज्ञान और उसके अनुसार अपने चाल-चलन को करे।"

(सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास गुरु मन्त्र की व्याख्या प्रकरण)

सावित्री शब्द के ब्राह्मण ग्रन्थो मे अनेक अर्थ लिखे गए हैं। परन्तु प्रस्तुत विषय से उन अर्थों का कोई सम्बन्ध नहीं है अत उनका उल्लेख भी इस प्रसग में उपयुक्त नही। हा, एक पद एक पद "सावित्र" तै० ३।१०।११।७१ मे आता है, जिसका अर्थ "अग्नि" है। परमात्मा का भी एक नाम "अग्नि" है। "अग्नि" का अर्थ है तेज स्वरूप, प्रकाश स्वरूप, ज्ञान स्वरूप। प्रसिद्ध गायत्री मन्त्र मे परमात्मा के "भर्ग" स्वरूप को धारण करने की बात कही गई है और उसे वरण करने के योग्य बताया गया है। "भर्ग' का अर्थ भी तेज स्वरूप, प्रकाश स्वरूप, ज्ञान स्वरूप होता है। तेज, प्रकाश और ज्ञान को धारण करने की इच्छा मानव मे स्वाभाविक रूप से होती है। "सावित्र" का स्त्री लिंग का रूप "सावित्री" होता है और क्योकि गायत्री मन्त्र मे जिसकी उपासना, जिसके वरण करने की बात कही गई है, वह "भर्ग" पद "सावित्री" का समानार्थक है। इस-लिए यह कहना अनुचित न होगा कि इन दोनो के एकार्थवाची होने से ही महर्षि मनु ने गायत्री मन्त्र के लिये सावित्री पद का प्रयोग किया है।

गुरु मन्त्र—

गुरुकुल शिक्षा-पद्धति के अनुसार

(शेष पृष्ठ ६ पर)

डा० कपिलदेव द्विवेदी कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय हरिद्वार द्वारा

इंग्लैण्ड में आर्यसमाज का प्रचार

स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी, प्रख्यात सस्कृत विद्वान्, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार के कुलपति, विश्वभारती अनुसन्धान परिषद्, ज्ञानपुर (वाराणसी) के निदेशक डा कपिलदेव द्विवेदी ने आयसमाज, भारतीय सस्कृति और वेदो के प्रचारार्थ नई दिल्ली से २८ अप्रैल को लन्दन के लिए प्रस्थान किया था। इंग्लैण्ड की यात्रा पूरी कर आप अब प० जर्मनी की यात्रा पर हैं। इंग्लैण्ड मे दिये गए आपके भाषणों का विवरण इस प्रकार है

३०।४।८९—आर्यसमाज लन्दन मे आर्गिल रोड मे आर्यसमाज की ओर से अभिनन्दन किया गया। यहा के पुरोहित यज्ञमित्र आयगर ने तथा प्रो० भारद्वाज ने स्वागत किया। 'विचारो का जीवन पर प्रभाव' (Affects of thoughts on human life) विषय पर व्याख्यान हुआ। आर्यसमाज लन्दन का वार्षिक चुनाव भी था। श्री जगदीश राय शर्मा प्रधान चुने गए। राम मन्दिर मे भी आज व्याख्यान हुआ।

२।५।८९—लन्दन विश्वविद्यालय के स्कूल आफ ओरियण्टल एण्ड अफ्रिकन स्टजीज की ओर से अभिनन्दन किया गया। यहा पर (Solution to Air polution) वैदिक विज्ञान के अनुसार वायु प्रदूषण का समाधान विषय पर व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम के सयोजक डा० डब्लू० एफ मैन्स्की थे। यहा पर अधिकांश श्रोता प्रोफेसर तथा एडवोकेट थे। श्रोताओ मे चीफ जस्टिस अय्यर का शिष्य अब्राहम भी था। अब्राहम पर्यावरण पर शोध कर रहा है।

३।५।८९—बुधवार हैम्पटन मे कृष्ण मन्दिर मे अभिनन्दन श्री भूषण भारद्वाज ने किया। यहा पर Will power and sucess (इच्छा शक्ति और जीवन साधन, विषय पर व्याख्यान हुआ। श्रोताओ मे भारतीय और अग्रेज दोनो थे।

७।५।८९—आर्यसमाज बर्मिङ्घम की ओर से अभिनन्दन किया गया। यहा पर Human life and parseverence (मानवजीवन और पुरुषार्थ) विषय पर भाषण हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री गोपाल चन्द्र ने की।

गीता मन्दिर बर्मिङ्घम मे भी आज कार्यक्रम था। गीता मन्दिर के पुरोहित ने माल्यापण कर स्वागत किया। यहा 'कर्मयोग का व्यावहारिक रूप विषय पर व्याख्यान हुआ।

८।५।८९—डाक्टर्स एसोसिएशन बर्मिङ्घम की ओर से डा० अरोडा ने स्वागत किया। कार्यक्रम मे बर्मिङ्घम के लगभग ४० ५० डाक्टर उपस्थित थे। यहाँ पर व्याख्यान का विषय था Vedic thoughts on enviroment & halth problems

१०।५।८९—हिन्दू कल्चरल सेन्टर, बर्मिङ्घम मे Gems of vedic wisdom (वैदिक आदर्शों की मीमासा) विषय पर व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता उद्योगपति श्री धीरज भाई ने की।

११।५।८९—वैदिक लाइट एसोसिएशन बर्मिङ्घम मे प्रो० अरोडा की अध्यक्षता मे The problem of life and death (जीवन और मृत्यु) विषय पर व्याख्यान हुआ। बर्मिङ्घम मे प्रो० कृष्ण चोपडा और उनकी पत्नी डा० रक्षा चोपडा आर्यसमाज के प्रचार मे विशेष कार्य कर रहे हैं।

१३।५।८९—वैदिक इन्स्टीट्यूट, बर्मिघम की ओर से अभिनन्दन हुआ तथा श्री अगिरा देव प्रिजा की अध्यक्षता मे How to lead a happy life ? (जीवन को सुखी कैसे बनाएँ)

विषय पर व्याख्यान हुआ। श्री अगिरा देव प्रिजा आर्यसमाज और विश्व हिन्दू परिषद् दोनों का कार्य देखते हैं। बहुत ही मिलनसार और परिश्रमी व्यक्ति हैं। आर्यसमाज के प्रचार में प्रयत्नशील हैं।

१४।५।८९—आज ही बर्मिघम से प्रात. लन्दन वापस आया था। आज अत्यन्त व्यस्त कार्यक्रम था। आर्यसमाज मिडिल सेक्स लन्दन मे समाज की ओर से श्री एम आर सेठी ने अभिनन्दन किया। यहा पर life and health (जीवन और स्वास्थ्य) विषय पर व्याख्यान हुआ।

आर्यसमाज लन्दन, आर्गिल रोड में श्री जगदीश राय शर्मा की अध्यक्षता मे साप्ताहिक सत्सग मे Scientific data in the vedas विषय पर व्याख्यान हुआ।

आज का तीसरा कार्यक्रम हिन्दू टैम्पल इल्फोर्ड मे था। यहा पर विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष श्री वशिष्ठ जी ने स्वागत और अभिनन्दन किया। National unity (वैदिक सगठन सूक्त) पर व्याख्यान हुआ।

१९।५।८९—बी बी सी लन्दन वर्ल्ड सर्विस ने साक्षात्कार के लिए आमन्त्रित किया था। बी बी सी की ओर से श्री शिवाकान्त जी ने साक्षात्कार लिया जिस मे निम्न जानकारी चाही—आर्यसमाज की गतिविधि, समाज सुधार मे आर्यसमाज का योगदान, गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली और उनका वर्तमान रूप, कहा-कहा शिक्षा हुई और किन गुरुओ से आप प्रभावित हुए ? वर्तमान समय मे सस्कृत की उपयोगिता और उसका भविष्य, व्याकरण दर्शन का प्रमुख सिद्धान्त और वर्तमान समय मे उसका उपयोग, वायु प्रदूषण की समस्या के प्राचीन वैदिक साहित्य के अनुसार निराकरण के प्रकार। क्या आर्यसमाज वर्तमान समय मे देश को नई दिशा दे सकता है ?

यह साक्षात्कार २५ मिनट का था। इसे बी बी सी वर्ल्ड सर्विस ने २५।५।८९ को प्रसारित किया।

२०।५।८९—आर्यसमाज नार्थ लन्दन मे एक समारोह मे श्री आर पी चड्ढा ने अभिनन्दन किया। यहा पर How tok lead a ideal life ?

विषय पर व्याख्यान हुआ। यहा पर भारतीय और अग्रेज दोनो श्रोता थे। कुल मिलाकर १०० से अधिक व्यक्ति कार्यक्रम मे उपस्थित थे।

२१।५।८९—हिन्दू टम्पल, नौटिघम द्वारा आयोजित एक कायक्रम मे श्री सोमदत्त शर्मा की अध्यक्षता मे How to became a rich person ? धनवान कैसे बन ?) विषय पर भाषण हुआ। नौटिघम मे एक ही मन्दिर मे आर्यसमाज भी है और राम कृष्ण की मूर्ति भी, दोनो के पुरोहित का कार्य श्री प०सोमदत्त जी करते हैं। यहा कार्यक्रम मे २०० से अधिक व्यक्ति थे। सभी ने व्याख्यान बहुत पसन्द किया। यहा मेरा भाषण सुनने के लिए बर्मिघम से श्री कृष्ण चोपड़ा सपरिवार पहुचे थे।

२३।५।८९—हिन्दू टेम्पल नौटिघम मे Yoga and health (योग और स्वास्थ्य) विषय पर व्याख्यान हुआ। यहाँ श्रोताओ को कार्यक्रमो मे सख्या अच्छी रहती है। रुचि से कार्यक्रमो को सुनने आते हैं।

२६।५।८९—बी बी सी नौटिघम ने साक्षात्कार के लिए बुलाया था ? श्रीमती पुष्पा राव ने साक्षात्कार मे ग्रन्थो तथा किए गए कार्यो के विषय मे प्रश्न पूछे। वायु प्रदूषण के निराकरण के वैदिक उपायो पर विस्तृत प्रकाश डालने को कहा। साथ ही साक्षात्कार मे यह सूचना प्रसारित की कि इनके विस्तृत विचार जानने के लिए हिन्दू टेम्पल नौटिघम मे साय ६ बजे पहुचे।

२७।५।८९—श्री डाडे जी के निवास पर धर्म और जीवन विषय पर व्याख्यान हुआ। २५।३० व्यक्ति उपस्थित थे।

२८।५।८९ गीता मन्दिर लकबरो मे The philosophy of action in the (गीता मे कर्म योग मीमासा) विषय पर व्याख्यान हुआ।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य जगत के समाचार

महर्षि यज्ञशाला का नव निर्माण

विश्वकर्मा सुविचार समिति सैक्टर ३ खिचडीपुर दिल्ली ९१ मे दिनाक १६ जुलाई १९८९ को महर्षि यज्ञशाला की आधारशिला स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती द्वारा रखी गई। दोपहर १२ बजे से यज्ञ प्रारम्भ हुआ जिसके ब्रह्मा स्वामी स्वरूपानन्द जी थे। प० वेदव्यास जी ने यज्ञ सम्पन्न कराया जिसमे प० सत्यदेव स्नातक प० वेदव्यास जी और प० गुलाबसिंह राघव के मधुर भजन हुए। श्री राधा बिशन जी तबला वादक और जोती प्रसाद ढोलक व दक साथ रहे। ला० दामोदर प्रसाद आर्य ने पूर्ण सहयोग दिया। विश्वकर्मा सुविचार समिति के प्रधान श्री रामपाल जी आर्य एव अन्य महानुभावो ने यज्ञ मे परिवार सहित सम्मिलित होकर धर्म लाभ उठाया साथ ही ३० व्यक्तियो ने यज्ञोपवीत लिया। यज्ञशाला हेतु सभी ने ईंट, सीमेंट, लोहा, रेता, बजरी इत्यादि दान दिया। शान्ति पाठ के बाद वैदिक ध्वनि के साथ हर्षोल्लास से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग की भूरि भूरि प्रससा की गई।

मोगा में नरसंहार

दिल्ली प्रान्तीय आर्य महिला सभा ने एक प्रस्ताव पारित करके फरीदकोट जिला के मोगा शहर मे आतकवादियो द्वारा निर्दोष व्यक्तियो के भीषण नरसहार पर गहरा रोष एव शोक व्यक्त किया है। प्रस्ताव मे कहा गया है कि ऐसे देशभक्त लोगो को जिनका राजनीति से कोई सरोकार नही, जो सदैव देश की एकता और अखडता के लिए विघटनकारी शक्तियो के खिलाफ आवाज बुलन्द करते रहते हैं। जिन्होने राज्य मे शान्ति, एकता, भाईचारा और साम्प्रदायिक सौहार्द बनाये रखने के लिए भरसक प्रयास किया है, उन समाज सेवको को गोलियो से भून दिया जाना एक निंदनीय घटना है। देशभक्त लोगो के मनोबल को गिराने के लिए ही यह पैशाचिक कृत्य किया गया है। परन्तु देश भक्त लोगो का मनोबल कभी नहीं गिराया जा सकता।

प्रस्ताव मे अपराधी हत्यारो को कडी से कडी सजा देने की माग के साथ पजाब को तुरन्त सेना के सुपर्द करने पर भी जोर दिया गया।

आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

दयानन्द महाविद्यालय एव दयानन्द इण्टर कालेज के प्रागण मे दिनाक १८ जून से २५ जून, १९८९ तक (केराकत) जौनपुर के महात्मा आयमुनि की अध्यक्षता मे आजमगढ, मऊ, रानी की सराय, फूलपुर, बोक्षी, निजामबाद तथा गाजीपुर के ४६ आर्य युवको एव बालको का शिविर लगाया गया। शिविर का उदघाटन पूर्वी उत्तर प्रदेश आर्यवीर दल सचालक श्री अवधबिहारी खन्ना द्वारा ओम ध्वजारोहण से हुआ, सम्पूर्ण अवधि मे आर्य युवको मे शारीरिक, मानसिक और सामाजिक उत्थान सम्बन्धी व्यायाम, शस्त्रचालन सनिक शिक्षा के साथ साथ नैतिक जागर। प्रदान किया गया। कानपुर के श्री उमाशकर आर्य शिक्षक ने सफल शारीरिक प्रशिक्षण दिया तथा श्री देवनारायण भारद्वाज ने बौद्धिक के द्वारा बालको मे धर्म चेतना जागृत की।

शिविर का समापन २५-६ ८९ को युवको मे व्रतधारण यज्ञोपवीत सस्कार (जनेऊ सस्कार। महात्मा आर्य मुनि जी ने कराये और दीक्षान्त भाषण श्री देवनारायण भारद्वाज जी ने प्रदान करते हुए बालको को कार्य क्षेत्र मे सक्रिय होने की प्रेरणा दी। प्रमाण पत्र एव पुरस्कार वितरण के उपरान्त जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ब्रह्मदेव राय की उपस्थिति में आर्य समाज मऊ के प्रधान श्री रामचन्द्रसिंह द्वारा ध्वजा अवतरण के साथ शिविर का समापन हुआ। महात्मा अक्षय मुनि एवं श्री रामप्रसाद (प्रधान आर्य समाज आजमगढ) तथा ब्रह्मचारी नरेन्द्र लाल आर्य की सक्रिय कर्मठता से ही पूर्ण सफलता के साथ शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ।

पुस्तक समीक्षा

सामवेद सुभाषितावली

लेखक—डा० कपिलदेव द्विवेदी कुलपति
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार
प्रकाशक—विश्वभारती अनुसधान परिषद्
ज्ञानपुर (वाराणसी)
पृष्ठ सख्या १६०
मूल्य—प्रचार सस्करण १५ रु०, सजिल्द २५ रु०

वेद विश्व को ज्ञान देने वाले तथा प्रकाश देने वाले हैं। प्रस्तुत पुस्तक वेदामृतम् ग्रथमाला का दसवां भाग है। इससे पूर्व वेदामृतम् के ९ भाग—सुखी जीवन, सुखी गृहस्थ, सुखी परिवार, सुखी समाज, आचार शिक्षा, नीति शिक्षा, वेदो मे नारी, वैदिक मनोविज्ञान, यजुर्वेद सुभाषितावली ग्रथ छप चुके हैं। डा० द्विवेदी की वेदामृतम् ग्रथमाला के ४० भाग विषयानुसार प्रकाशित करने की योजना है तथा जनसाधारण तक सरल भाषा में वेदो का ज्ञान पहुँचाना है। प्रस्तुत सामवेद सुभाषितावली ग्रथ मे सामवेद के सभी सुभाषित दिए गए हैं तथा उसके पश्चात् उनका हिन्दी मे अर्थ दिया गया है। इसमे सामवेद के १७६८ सुभाषित दिए गए हैं। इनमे धार्मिक, यज्ञादि, देवता, आचार शिक्षा, नीति शिक्षा, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, विश्व कल्याण, दार्शनिक, आयुर्वेद विज्ञान आदि मे विषयानुसार अ-कारादि क्रम से सामवेद के सभी सुभाषित दिए गए हैं। अनेक सुभाषित कण्ठस्थ करने योग्य हैं।

पुस्तक का कागज, त्रुटिरहित छपाई को देखते हुए प्रकाश ने इसका मूल्य कम ही रखा है। यह पुस्तक प्रत्येक पुस्तकालयो व परिवारो मे सग्रह योग्य है।

—सूर्यदेव

निर्वाचन

आर्यसमाज नया बाजार लश्कर

आर्यसमाज, नया बाजार लश्कर का वर्ष १९८९ हेतु निर्वाचन सम्पन्न हुआ—

श्री भारत भूषण त्यागी प्रधान
श्री मदन मुरारी मन्त्री
श्री अभिमन्यु खुल्लर कोषाध्यक्ष

आर्य कुमार सभा

आर्य कुमार सभा गुरुकुल आम सेना कालाहाण्डी (उडीसा) का चतुर्थ वार्षिक चुनाव दिनाक १ ७ ८९ को पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ, जिसमे सर्वसम्मति से निम्नलिखित अधिकारी निर्वाचित हुए—

प्रधान ब्र कुञ्जदेव जी नैष्ठिक
उपप्रधान पीताम्बर प्रसाद जीआर्य
मन्त्री ब्र मोहन कुमार जी नैष्ठिक
उपमन्त्री ब्र शरत् चन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष ब्र राम बिहारी जीनैष्ठिक

(पृष्ठ ४ का शेष)

गायत्री

जब गुरुकुल मे बालक का वेदारम्भ सस्कार होता है, तब आचार्य इस मन्त्र का बालक को उपदेश करता है। क्योंकि आचार्य (गुरु) द्वारा यह मन्त्र ब्रह्मचारी (शिष्य) को प्रथम उपदेश के रूप मे दिया जाता है अत इसका नाम गुरु मन्त्र प्रचलित हो गया है।

गायत्री-उपासना विधि—

उपासना गायत्री द्वारा हो अथवा प्रणव (ओ३म्) के द्वारा, यह आवश्यक है कि स्थान एकान्त हो। नदी अथवा किसी अन्य शुद्ध जलयुक्त जलाशय का तट हो तो अधिक अच्छा है। नहीं तो स्व-गृह में ही कोई एकान्त स्थान इस कार्य के लिए निश्चित कर लिया जाय, नित्य हो स्थान परिवर्तन नहीं करते रहना चाहिए। ऋतु-अनुसार ही स्थान परिवर्तन करना उचित है। उपासना के लिए जो आसन प्रयुक्त हो, वह केवल ध्यान-उपासना मे ही काम मे लाया जाने वाला हो, भोजन खाने आदि कार्यों मे उसका प्रयोग न हो। ध्यान के उपरान्त उसे सम्भाल कर रख देना चाहिए। वह शुद्ध-पवित्र रहे और साथ ही इतना सुविधाजनक भी हो कि उस पर सुखपूर्वक बिना हिले-डुले यथोचित समय तक बैठा जा सके। उपासना के समय सुखासन, पद्मासन अथवा सिद्धासन मे जो भी अधिक अनुकूल पडे और जिसका अधिक अच्छा अभ्यास हो, उसी आसन से बैठे। उपासना के लिए कोई निश्चित आसन नहीं है अपितु "स्थिर-सुखमासनम्" जिस विधि से बिना हिले स्थिरता से और सुखपूर्वक बैठा जा सके, उसी का नाम आसन है। ☐

(पृष्ठ ५ का शेष)

इंग्लैण्ड में आर्यसमाज का प्रचार

८।५।८९—राम मन्दिर हिन्दू टेम्पल नौटिंघम मे एक विशेष कार्यक्रम मे How polution can be checked ? वायु प्रदूषण निराकरण के वेदोक्त प्रकार विषय पर भाषण था। इस कार्यक्रम की सूचना बी बी, सी नौटिंघम द्वारा भी प्रसारित की गई थी। अतः श्रोताओ की काफी भीड थी। लगभग ३०० श्रोता उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त मे श्रोताओ ने विषय से सम्बद्ध कुछ प्रश्न भी पूछे। हिन्दू टेम्पल की ओर से कार्यक्रम के आरम्भ मे अभिनन्दन किया गया।

४।६।८९—आर्यसमाज आर्गिल रोड लन्दन मे प्रधान श्री जगदीश राय शर्मा ने अभिनन्दन किया। आज यहा पर व्याख्यान का विषय था The vedas as founadtion head of all religion सभी धर्मों के आदि स्रोत। भाषण मे आर्यसमाज को सगठित रूप मे कार्य करने की आवश्यकता पर बल देते हुए व्याख्यान को समाप्त किया। इसके साथ ही इग्लण्ड की यात्रा पूरी हुई।

५।६।८९—इग्लैण्ड से प० जर्मनी के लिए प्रस्थान किया। साय ५ बजे फ्रैंकफर्ट पहुचा। एअरपोर्ट पर मिस्टर काई तथा विश्व हिन्दू परिषद के सदस्य स्वागतार्थ उपस्थित थे।

६।६।८९—प० जर्मनी मे आर्यसमाज नहीं हैं। यहा पर विश्व हिन्दू परिषत् का ही सगठन है। आर्यसमाजी व्यक्ति भी इन्ही के कार्यक्रमो मे भाग लेते हैं। यहा के विश्व हिन्दू परिषत् के कार्यकर्ता आर्यसमाज से पूर्णतया प्रभावित हैं। विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा आयोजित एक समारोह मे मिस्टर एम मेवावाला की अध्यक्षता मे The vedas and the word peace वेद और विश्व शान्ति विषय पर व्याख्यान हुआ। विश्व हिन्दू परिषद ने यहा पर एक गैस्ट हाऊस बनवाया है। इसका उद्घाटन मेरे द्वारा ही पूर्ण वैदिक रीति से करवाया गया। यह पूर्ण आधुनिक सुविधाओ से युक्त है।

७।८।८९—विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित कार्यक्रम के दूसरे दिन Human psychology & wealth पर मिस्टर एस के काई की अध्यक्षता मे व्याख्यान हुआ।

८।६।८९—फ्रैंकफर्ट यूनि० हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित एक विशेष कार्यक्रम मे डा० इन्दु प्रकाश पाण्डेय की अध्यक्षता मे अभिनन्दन किया गया तथा Medical sciences in the veda वेदो मे आयुर्विज्ञान विषय पर भाषण हुआ।

डा० द्विवेदी जी का प० जर्मनी मे ९ जून से १२ जून म्यूनिख मे १३ से १६ तक हैम्बर्ग, १७-१८ जून हिडिलबर्ग १९ से २२ हैम्बर्ग सिनीवाल, २३ से २५ जून हिडिलबर्ग २६ से २९ बर्लिन मे कार्यक्रम है। ३० जून को डा० द्विवेदी जी डेनहाग (हालैण्ड) जाएँगे वहा १७ जुलाई तक विभिन्न आर्यसमाजो आदि मे कार्यक्रम है। २० जुलाई को फ्रैंकफर्ट से चल कर २०-२१ जुलाई की रात्रि मे १ बजे लफ्तहसा से वापस लौटेंगे। जर्मनी से और विस्तृत विवरण प्राप्त होने पर प्रकाशनार्थ भेजा जाएगा।

डा० भारतेन्दु द्विवेदी
अध्यक्ष
विश्वभारती अनुसधान परिषद
ज्ञानपुर (वाराणसी)

पुस्तक समीक्षा

अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्ययन

लेखक—डा० कपिलदेव द्विवेदी कुलपति
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, हरिद्वार
प्रकाशक—विश्वभारती अनुसंधान परिषद्
ज्ञानपुर (वाराणसी)
साइज व पृष्ठ—डिमाई अठपेजी ५१२+१६ पृष्ठ
मूल्य—१२५ रुपये

वेद मानवमात्र के प्रकाश स्तम्भ हैं। वेदो का ज्ञान विश्व सस्कृति की आधारशिला है। वेदो के अध्ययन से अनन्त ज्ञान और विज्ञान का स्रोत ज्ञात होता है। प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में डा० द्विवेदी ने अथर्ववेद का सांगोपाग विवेचन व विश्लेषण किया है। प्रस्तुत पुस्तक मे अथर्ववेद मे वर्णित सभी विषयो को महत्वपूर्ण जानकारी दी गई है। इसमे वेदो का महत्व अथर्ववेद का महत्व, भौगोलिक स्थिति, सामाजिक जीवन, आर्थिक स्थिति, धर्म शिक्षा एव विविध विद्याएँ, अभिचार कर्म, दर्शन राजनीति और शासन प्रणाली ज्योतिष, आयुर्वेद, धर्म सस्कार, मनोविज्ञान आदि शीर्षको के अन्तर्गत समस्त सामग्री दे दी गई है। इस पुस्तक के लेखन मे डा० द्विवेदी ने काफी परिश्रम किया है तथा सर्वांगीण विवेचन के लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूं।

पुस्तक मे कागज, छपाई उत्तम है। यह पुस्तक प्रत्येक पुस्तकालय और आर्य परिवार के लिए सग्रहणीय है।

— सूर्यदेव

(पृष्ठ १ का शेष)

गुरुकुल कांगड़ी

कुमारो की प्रस्तुति भी की। भोजन व्यवस्था में सुधार के लिए तथा बच्चो को सही भोजन देने आदि के लिए सभी सदस्यो का बल इस पर था कि अन्न, सब्जी, दाल और दूध आदि का उत्पादन गुरुकुल कांगड़ी की भूमि पर ही किया जाना चाहिए। गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के सबध मे शिष्ट मण्डल के सदस्यो ने पाया कि वहाँ की प्रबन्ध व्यवस्था में भी सुधार की आवश्यकता है। सबंधित अधिकारियो को आवश्यक निर्देश भी दिए गए। फार्मेसी के निरीक्षण के कुछ दिन पहले ही तीन सदस्यों की एक समिति भी बनाई गई थी। इस बात की आवश्यकता अनुभव की गयी कि समिति के सुझावो का शीघ्र ही क्रियान्वयन किया जाना चाहिए। समय समय पर इस प्रकार के शिष्ट मण्डल गुरुकुल कांगड़ी तथा सम्बन्धित सस्थाओ के विकास मे सहायक हो सकते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस, गली न०१७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५१

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ : अंक ३१ | रविवार ६ अगस्त १९८९ | श्रावण सम्वत् २०४६ विक्रमी | दयानन्दाब्द—१६५ | सृष्टि संवत १९७२९४९०९०
मूल्य : एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश में ५० पौंड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह सम्मान पेंशन सम्बन्धी गैर सरकारी समिति की ५ दिवसीय बैठक सम्पन्न

भूमिगत सत्याग्रहियों के मामलों की भी सम्मान पेंशन हेतु सिफारिश

गृहमंत्रालय के अधिकारियों के साथ आर्यसमाज का शिष्टमण्डल २५ अगस्त को हैदराबाद जेलों के रिकार्ड की जांच हेतु जायेगा

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह १९३८-३९ के सत्याग्रहियों के सम्मान में पेंशन सम्बन्धी मामलों की जांच कर रही गैर सरकारी समिति की ५ दिवसीय बैठक गत २४ जुलाई से २८ जुलाई तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में सम्पन्न हुई। बैठक में कमेटी के चेयरमैन श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के अतिरिक्त प० वन्देमातरम् रामचन्द्र राव चौधरी रणवीर सिंह जी, प्रो० शेरसिंह, प० शिवकुमार शास्त्री, डा० सोमनाथ मरवाह तथा गृह मन्त्रालय के अवर सचिव श्री टी डी असाम् साहब तथा सम्बद्ध विभाग के अधिकारी श्री जे डी प्रसाद ने भाग लिया।

इस लम्बी बैठक में कई महानुभावों को अपने सम्मान पेंशन मामले की जांच हेतु बुलाया गया था। कई मामले कमेटी ने ठीक पाए और सम्मान पेंशन देने के लिए सिफारिश की है।

भूमिगत सत्याग्रहियों को सम्मान पेंशन देने के विषय में मामला बहुत समय से लम्बित था। गंभीर विचार विमर्श के पश्चात् कई भूमिगत सत्याग्रहियों को भी सम्मान पेंशन देने की कमेटी ने सिफारिश कर दी।

सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों की गृहमन्त्रालय के अधिकारियों के साथ हुई बातचीत के आधार पर यह निश्चय हुआ कि आगामी २५ अगस्त को आर्यसमाज के शिष्ट मण्डल के साथ गृहमन्त्रालय के अधिकारी हैदराबाद आदि जेलों के रिकार्ड की जांच करेंगे, ताकि जिन लोगों को जेल प्रमाणपत्र न मिल पाने अथवा जेल द्वारा प्रमाणपत्र भेजने में असमर्थता दिखाने के कारण पेंशन नहीं मिल रही है, उनके साथ भी न्याय किया जा सके।

गोहत्या बन्द करो—शराब के ठेके उठाओ—अंग्रेजी हटाओ

आर्यसमाज द्वारा तीन सूत्रीय महाभियान

श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की महत्त्वपूर्ण घोषणा

आर्यसमाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने देश में शाश्वत नैतिक जीवन मूल्यों के भारी ह्रास तथा भारतीय सभ्यता और संस्कृति के मान्य मानदण्डों की हो रही उपेक्षा पर घोर चिन्ता और क्षोभ प्रकट करते हुए कुछ विशेष मुद्दों को लेकर राष्ट्रव्यापी अभियान चलाने का निश्चय किया है। मद्यनिषेध, गोरक्षा तथा अंग्रेजी हटाओ—अभियान के मुख्य मुद्दे होंगे।

सार्वदेशिक सभा की गत २३ जुलाई १९८९ को हुई बैठक में हुए इस महत्वपूर्ण विचार विनिमय की चर्चा करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने पत्रकारों को बताया कि आर्यसमाज अपने इस अभियान के लिए हिन्दू समाज के सभी वर्गों, संगठनों और संस्थाओं का सहयोग प्राप्त करेगा। क्योंकि यह विषय देश की अस्मिता, गौरव और महत्ता के प्रतीक हैं। यदि इन विषयों को पुनः प्रतिष्ठित न किया गया तो हमारे देश की सभी विशेषताएँ नष्ट हो जायेंगी और हम जिन बातों पर

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसंदेश विशेषांक

१७ व २४ सितम्बर १९८९

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार स्मारिका

आकार $\frac{२० \times ३०}{८}$

कृपया अपने लेख, समीक्षाएँ तथा विज्ञापन शीघ्र भेजें।

— प्रधान सम्पादक

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

ब्रह्मचारी जनयन ब्रह्मापो लोक प्रजापति परमेष्ठिन विराजम् ।
गर्भो भूत्वामृतस्य योनाविन्द्रो ह भूत्वासुरास्ततर्ह ॥

अथर्व० काण्ड ११, अ० ३, सूक्त ५ ७ ।

ब्रह्मचर्य की आधारशिला वेदारम्भ संस्कार है। ब्रह्मचारी सब से पहले आचार्य से वेदमन्त्र (गायत्री) की दीक्षा लेता है। फिर से ही उसे प्राण विद्या का ज्ञान होता है। ज्ञान बिना अभ्यास के कुछ भी फल नही लाता। प्राण विद्या का ज्ञान इसलिए आवश्यक है कि उस से प्राणो को वश मे लाया जा सके। इसलिए वेदाभ्यास के साथ ही उसे तीन प्राणायाम नित्य करने की शिक्षा मिलती है। तप ब्रह्मचर्य का मूल है और मनु भगवान कहते हैं कि (प्राणायाम पर तप) प्राणायाम ही बड़ा तप है। प्राणो को वश मे करने से ही मन वश मे आता है और तब इन्द्रिया डावाडोल नही होती। मन की एकाग्रता से ही ससार का यथार्थ दर्शन होता है डावाडोल मन ससार के वास्तव्य को नही समझ सकता। ससार का वास्तविक स्वरूप देखने के लिए निश्चल मन की आवश्यकता है। जब लोक सग्रह ब्रह्मचारी का परम अधिकार है तो उस से पहले उसे लोक का यथार्थ स्वरूप मालूम होना चाहिए। वेद विद्या की प्राप्ति का फल प्राणविद्या मे प्रवेश और प्राण विद्या द्वारा प्राणो को वश मे करने का फल जगत के वास्तविक स्वरूप को जानना है।

लोक के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान किसलिए चाहिए? इसलिए कि उस लोक के ठीक (लोक-दर्शन) दर्शन हो सके। रूप से विमोहित होकर मनुष्य व्याकुल पागलो की भाति उसी की ओर टिकटिकी लगा देते हैं। परन्तु प्राणो को वश मे कर के ब्रह्मचारी विचार करता है—क्या अस्थी मज्जा और चर्मादि की यह चमक है जो सुन्दर मानवी चेहरे का दहका रही है? क्या जड प्राकृतिक जिह्व के अन्दर वह लालित्य है जो सहस्रो को मूर्छित कर देता है? क्या पत्थर पानी और पोल के अन्दर वह घटा छिपी हुई है जो हिमशिला की ओर स्वभावत मनुष्यो की बाहरी आखो को आकर्षित कर रही है? प्राण के विजेता ब्रह्मचारी की अन्दर की आख खुल जाती हैं और वह देखता है कि जड में सौन्दर्य नही है। जिस प्रकार चन्द्रादि लोक सूर्य से प्रकाश प्राप्त कर के ही प्रकाशित होते हैं, इसी प्रकार सारी प्रकृति सौन्दर्य को किसी अन्य उच्च शक्ति से धारण करती है। सारा सौन्दर्य उस प्रभु का है जो सब से ऊंचा स्थित सब में व्यापक होकर सब को प्रकाश दे रहा है जो सूर्य लोको का भी द्योतक प्रकाशक और महापुरुष आत्माओं के हृदयो का भी प्रकाशक है।

ऐसी निर्मल बुद्धि को लेकर ब्रह्मचारी दीक्षा से व्रत का अधिकारी बनता है तब उसे बाहर के प्रलोभन अपनी ओर नही खीच सकते। मोक्ष-स्वरूप परमात्मा के अन्दर जब आत्मा स्थित हो गया तब अडोल हो जाता है। यही उसका अपूर्व गर्भ है। जब इस गर्भ में स्थित हुआ तो बाहर की 'सुध-बुध' भूल जाता है। हर मुल्क और हर समय मे आदर्श विद्यार्थी उसी को माना जाता रहा है जिस का विद्या प्राप्ति की धुन मे बाहरी दुनिया के साथ कोई सम्बन्ध नही रहता। जिसने बालो की दासता, वस्त्रो की दासता चटोरी जबान की दासता, और गोष्ठी की दासता मे समय और शारीरिक बल को नष्ट किया है वह सावित्री माता के गर्भ मे कभी गया ही नहीं।

जिस प्रकार हाथ पैरादि अवयव बन जाने पर प्राकृतिक माता के गर्भ मे बालक हाथ पर मारने लगता है और बुद्धिमती माता उसे धार्मिक पिता की सहायता से शान्त कर देती है। इसी प्रकार जब सावित्री माता के गर्भ मे ब्रह्मचारी जल्दबाजी से कुछ व्याकुल होने लगता है तो आचार्य की सहायता से विद्यामाता उसे सावधान कर देती है। गर्भ का समय बडा नाजुक है विशेषत आरम्भ का समय। जब आरम्भ के पाच मास व्यतीत हो जाय तो फिर माता सन्तान की ओर निश्चिन्त हो जाती है। इसी प्रकार जब ब्रह्मचारी गुरुकुल निवास के पहले [illegible] के अन्दर से सही सलामत गुजर जाय तो जहां वेद विद्या पर उसका विश्वास हो जाता है, वहां आचार्य भी उसकी रक्षा से अपेक्षया निश्चिन्त हो जाता है। जब इस प्रकार सुरक्षित ब्रह्मचारी जन्म लेकर द्विजन्मा बनता है तब निस्सन्देह वह (इन्द्र) पद का अधिकारी होता है।

इन्द्र कौन है? मानवी बनावट के अन्दर ही देव और असुर दोनो हैं। ज्ञानेन्द्रिय देव हैं क्योंकि जीवात्मा जितना भी ज्ञान उपार्जन करता है वह इन्हीं के द्वारा अन्दर पहुँचता है। काम क्रोध, मद, मोह लोभादि असुर हैं और वे भी कही बाहर से नहीं आते। देवभाव के उलट जाने से अन्दर ही इनकी उत्पत्ति होती है। इन्द्रिय रूपी देवों को जब जीवात्मा वश में कर लेता है तब उसकी 'इन्द्र' संज्ञा होती है और [illegible] विरोचन (विशेष प्रकाश) काम क्रोधादि [illegible] उत्पन्न करके विषयों मे जीवात्मा को इन्द्रियों का दास बना लेता है तभी उसकी मनुष्य से भी नीचे राक्षस संज्ञा हो जाती है।

ब्रह्मचर्य का अन्तिम उद्देश्य यह है [illegible] तेज धारण करके संसार का कल्याण किया जाय और [illegible] नहीं हो सकता [illegible] को केवल भगा ही न दिया जाय, प्रत्युत उनको 'दग्धबीजवत्' नष्ट भी न कर दिया जाये।

ब्रह्मचर्य का आदर्श इस समय लोप हो रहा है, [illegible] और स्वार्थ के जाल में फंस रही है। इस फांस को काट कर जनता को मुक्त कराना इस समय का सब से बडा काम है। क्या माता के गर्भ मे कोई ऐसा बालक रक्षा पा रहा है। उत्तर की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

शब्दार्थ

(ब्रह्म) वेद विद्या (प्राण) प्राण विद्या (लोकम्, [illegible] जगत् और परमेष्ठिनम्, विराजम् प्रजापतिम्) सब से ऊँचे स्थित, सब के प्रकाशक प्रजा पालक (परमात्मा) को (जनयन्) प्रत्यक्ष करते हुए (ब्रह्मचारी) ब्रह्मचारी ने (अमृतस्य योनौ गर्भ भूत्वा) मोक्ष प्रदायिनी ब्रह्मविद्या (सावित्री) रूपी योनि मे गर्भ रूप होकर (ह इन्द्र भूत्वा) और निस्सन्देह इन्द्र होकर (असुरान् ततर्ह) असुरो को नष्ट किया है। ●

कविता

दयानन्द के आदर्शों को जो जग में फैलाता है।
वह नर और समाज धन्य है, कीर्ति, ख्याति अति पाता है॥
केवल स्वार्थ नहीं, परन्तु परमार्थ सतत अपनाता है।
शिक्षा का आदर्श केन्द्र डी० ए० वी० स्कूल कहाता है॥

तप पूत सस्थापक जिसके पर उपकारी शिक्षाविज्ञ।
हंसराज जी धवल हंस सम उनसे कौन कहो अनभिज्ञ॥
मन था श्वेत वस्त्र श्वेत थे, श्वेत भावना फल लाई।
धार गृहस्थ बने संन्यासी तभी उच्च पदवी पाई॥
ऐसा त्याग किया शिक्षा हित, जिसका न कोई सानी है।
सेवा की असीम जाति की, पावन उनकी वाणी है॥
अंकुर से हो विटप महा जन जन अब छाया पाता है।
शिक्षा का आदर्श केन्द्र डी० ए० वी० स्कूल कहाता है॥

विद्यार्थी गुरुदत्त जिन्होंने मरण काल मे ऋषिवर के।
काया कल्प किया अपना मृत्युजय से मानो वर ले॥
उनकी विश्रुत विद्या से ज्योतिर्मय संस्था हुई महान।
तभी लाजपत भी आए इसको उन्नत करने की ठान॥
भगतसिंह बिस्मिल जैसे तरुणो के भी विद्या पाई।
सूली पर चढ़ गए देश हित देशभक्ति की धुन छाई॥
अमर हुतात्माओ का ऐसा पावन तीर्थ सुहाता है।
शिक्षा का आदर्श केन्द्र डी० ए० वी० स्कूल कहाता है॥

सन्ध्या हवन मन्त्र से पूरित जिसका सुन्दर प्रांगण हो।
कलकल बाल विनोद करे सज्जन सुवास युत जीवन हो॥
शिष्य और गुरु का नाता नित भव्य भावना उपजाए।
साधु महात्मा के अवचन हों श्रुति मधुनाद सुना जाए॥
सरल सौम्य बटु का स्वभाव हो, सदुपदेश सरसा जाए।
'शान्त' बन्धुता भावना को, जो नित पाठ पढ़ाता है॥
शिक्षा का आदर्श केन्द्र डी० ए० वी० स्कूल कहाता है॥

ले० सत्यभूषण 'शान्त' वेदालंकार एम० ए०
१२, मुनिरका विहार, नई दिल्ली-६७

ओ३म्
आर्य सन्देश

आर्यसंदेश विशेषांक
डा० सत्यकेतु विद्यालंकार स्मारिका

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र आर्यसन्देश का भव्य विशेषांक, स्व० डा० सत्यकेतु विद्यालकार के आगामी जन्मोत्सव (१९।९।८९) पर निकालने को योजना बनाई गई है। भारतीय साहित्य और इतिहास के क्षेत्र मे आपका योगदान स्मरणीय है। आप को हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने सवत् १९८६ मे उस समय का सर्वोच्च मगलाप्रसाद पारितोषिक प्रदान किया था। आपके इतिहास सम्बन्धी खोजपूर्ण कार्यों की अपनी विशेषता है। डा० साहब ने साहित्य की सभी विधाओ मे उल्लेखनीय कार्य किया है। आर्यसमाज का बृहद् इतिहास भी उन्होने सात विशाल खण्डो मे लिखा और प्रकाशित कराया।

सभी लेखको और डा० साहब के आत्मीय जनो से निवेदन है कि वे उनके सम्बन्ध मे अपने सस्मरण तथा लेख आदि २० अगस्त तक सभा कार्यालय मे भेज दे। साहित्यकारो, समीक्षको तथा इतिहासकारो से निवेदन है कि वे उनकी कृतियो का आलोचनात्मक विश्लेषण यथासमय भिजवाये जिससे कि सभी को उनकी कृतियो से भी परिचित कराया जा सके। शोधपूर्ण लेखो के लिए पारिश्रमिक की भी व्यवस्था की जा रही है।

इस स्मारिका के सम्पादन मे प० क्षितीश वेदालकार, प० विद्यासागर विद्यालकार, प० नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, प० यशपाल सुधाशु, श्री मूलचन्द गुप्त, श्री अजय भल्ला, श्री वेदव्रत शर्मा आदि वैदिक विद्वानो एव पत्रकारो का भी सहयोग लिया जा रहा है।

विज्ञापनदाताओ तथा आर्यसमाजो के अधिकारियों से निवेदन है कि वे यथाशक्ति अपना आर्थिक सहयोग द एवम् इस स्मारिका को भव्य एव सग्रहणीय बनाने मे सहयोग प्रदान कर। इस स्मारिका का प्रकाशन अगस्त के अन्तिम सप्ताह मे प्रारम्भ किया जाएगा। अत सभी से पुन निवेदन है कि वे समयानुसार अपने लेख, समीक्षाएँ, विज्ञापन तथा आर्थिक सहयोग भेजकर हमारा उत्साहवर्धन करने की कृपा करे।

—सूर्यदेव

श्री ओ३म्वीर शास्त्री को मातृ-शोक

श्री ओ३म्वीर शास्त्री जी की पुण्या माता श्रीमती रामदेवी का निधन २८ जुलाई १९८९ को हो गया। शान्ति यज्ञ ८ अगस्त १९८९ को प्रात ९ बजे उनके पैतृक निवास पर ग्राम हामीदपुर, डा० सारोल, जिला अलीगढ उत्तर प्रदेश मे होगा। यह स्थान दिल्ली से अलीगढ, पलवल होकर जाने वाले मार्ग पर पडता है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए तथा शोकसन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिए परमात्मा से कामना करते हैं।

दुःख मोचन

ओ३म् भरेष्विन्द्र सुहव हवामहेऽहोमुच सुकृत दैव्य जनम।
अग्नि मित्र वरुण सातये भग द्यावापृथिवी मरुत स्वस्तये॥

यह कर्म क्षेत्र यह जगत् तुम्हारा, है पग पग पर सघर्ष बडा।
हम तुम को आज बुलाते हैं, यह पार करो सघर्ष बडा॥
हे इन्द्र बली विजयी प्यारे
दुख पापो के मोचन हारे
है तुम्हे बुलाना अधिक सरल
तुम करते कर्म सुकृत सारे।
परमेश ज्येष्ठ या पुरुष श्रेष्ठ, अरि दूर करो दुर्धर्ष बडा।
हम तुम को आज बुलाते हैं, यह पार करो सघर्ष बडा॥
तुम दिव्य श्रेष्ठ गुण वाले हो
प्रभु या जग पुरुष निराले हो
वरणीय मित्र तुम तेजवान
देते तुम सुभग उजाले हो
अपना पग-दर्शन देकर के, कर दो वैभव-उत्कर्ष बडा।
हम तुम को आज बुलाते है, यह पार करो सघर्ष बडा॥
अन्तरिक्ष-द्यौ-भूमि शक्तिया
आशामय कह सुपथ उक्तियाँ
प्रभु प्यारे या प्रभु गुण धारे
दे हमको सत्पुरुष युक्तिया।
प्रिय आओ कल्याण बढाओ, कर दो जीवन मे हर्ष बडा।
हम तुम को आज बुलाते हैं, पार करो सघर्ष बडा॥

—देवनारायण भारद्वाज

पुस्तक समीक्षा

हिन्दू धर्मशास्त्रों में छुआछूत

रुच नो धहि ब्राह्मणेषु रुच राजसु नस्कृधि।
रुच विश्वेषु शूद्रेषु मयि धहि रुचा रुचम्॥
(यजु० १८।४८)

हम लोगो के ब्राह्मणो, क्षत्रियो, वैश्यो एवम शूद्रो मे पारस्परिक प्रीति हो।

डा० कृष्ण वल्लभ पालीवाल ने इस शोध अध्ययन के द्वारा आर्य जाति का महान उपकार किया है। आज हिन्दू समाज मे जो छुआछूत, जात पात का भेदभाव दिखाई देता है उसका वेदो मे कही भी उल्लेख नही नही है। अस्पृश्यता एक मानसिकता है जिसे कानून मात्र से समाप्त नही किया जा सकता और न ही राजनैतिक अधिकारो को प्रदान करने से इसे मिटाया जा सकता है। इसके लए समूचे समाज को, मानववादी, समतावादी एव एकात्मवादी तत्त्व दर्शन पर आधारित व्यावहारिक धरातल पर उतारना होगा। डा० पालीवाल ने रामायण महाभारत, गीता, स्मृति एव वेदादि शास्त्रो एव सन्तो के वचनो के प्रमाण देकर इस ग्रन्थ को बहुत ही उपयोगी बना दिया है। उन्होने प्रामाणिक रूप से यह सिद्ध कर दिया है कि वेदादि शास्त्रो मे सब को समान तथा एक होने की प्रेरणा दी गयी है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसी दिशा मे महान कार्य किया। उन्होने कहा था, मेरा उद्देश्य इस प्रकार लोगो को मिलाना है। सकल समुदायो को एकता मे लाना है। मैं चाहता हू कि कोल भील से लेकर ब्राह्मण पर्यन्त, सब मे एक ही जातीय जीवन की जागृति हो। चारो वर्णों के लोग एक दूसरे को अग अगी समझे।'

अपने विषय को स्पष्ट करने के लिए डा० पालीवाल ने विनायक दामोदर सावरकर, महात्मा बुद्ध, मैक्समूलर, डा० हेडगेवार लाला लाजपत राय, डा० बालकृष्ण शास्त्री, स्वामी विवेकानन्द काका कालेलकर, स्वामी करपात्री जी तथा महात्मा गाधी के भी विचार सकलित किए हैं।

हमे विश्वास है कि इस ग्रन्थ के शोध पूर्ण विचारो से पाठक लाभान्वित होगे।

—सम्पादक

[हिन्दू धर्म शास्त्रो मे छुआछूत ? डा० कृष्ण वल्लभ पालीवाल, १२९-बी, डी-डी-ए० फ्लैट, राजोरी गार्डन, नई दिल्ली-२७ मूल्य-१० रुपये, पृष्ठ सख्या ११२]

गायत्री

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष, वैदिक सस्थान नजीबाबाद (उ०प्र०)

(गताक से आगे)

इतना ध्यान अवश्य रहे कि जाप अर्थ विचार पूर्वक होना चाहिए। योगदर्शन के शब्दो मे "तज्जपस्तदर्थभावनम' अर्थात जो जाप हो उसके अर्थ के अनुसार भावनाए बनायें। यदि अर्थ का पता नही होगा तो उसके अनुसार भावनाए बनगी ही नही। अर्थ का पता होगा उस पर विचार होगा तभी भावनाएँ बनगी। अर्थ को जाने विना विचार सम्भव नही और ऐसा किये बिना किया जाने वाला जाप तोतारटन्त ही बन कर रह जाता है। मन भी तब तक नही लगेगा जब तक अर्थ ज्ञात नही होगा और उस अर्थ का मन्त्र जाप के साथ स्मरण व विचार नही होगा। मन्त्र के साथ साथ अर्थ का चलना अनिवार्य है। यह प्रकार कुछ काल तक ही अपनाना पडता है। कुछ दिनो के बाद ऐसी स्थिति बन जाती है कि उपासना के लिए बैठकर ज्यो ही मन्त्र का जाप प्रारम्भ किया त्यो ही अर्थ भी ध्यान मे आने लगा। कुछ और समय बीतने पर इतना अभ्यास हो जाता है कि मन्त्रार्थ पूर्णतया हृदयङ्गम हो जाता है तथा मन्त्र के शब्दो मे से ही अर्थ प्रगट होता प्रतीत होने लगता है अथवा यह कहना चाहिए कि मन्त्र के शब्द ही अर्थ रूप दिखायी देने लगते है। इस से आगे की स्थिति तन्मयता की होती है जिसे ध्याता, ध्यान और ध्येय का एक हो जाना कहते है यही समाधि की अवस्था है। प्रारम्भ मे अवश्य अडचन आती है। अडचन है ध्यान के समय मन का इधर-उधर भागना मन मे विविध विचारो का आते रहना सामान्यतया ऐसा होता ही है। मन मे जो विचार घर किये हुए है साधक जिनका अभ्यस्त होता है वह तो एक के बाद एक आते ही ठहरे। रिक्त आसन पर प्रत्येक आकर बैठना चाहता है किन्तु जब आसन रिक्त न हो जब स्थान पहले से ही भरा हुआ हो तो वहा किसी के आने का प्रश्न ही नही। जब तक हृदयासन रिक्त रहेगा यही दशा रहेगी। परन्तु ज्यो ज्यो जगत पिता और जगत्पति की ओर प्रवृत्ति होती जायेगी त्यो त्यो उन विचारो का आना कम होता जायगा।

मन को स्थिर करने के लिए प्राणायाम अमोघ अस्त्र है। जब मन भागे तभी प्राणायाम का प्रयोग किया जाना चाहिए। ध्यान के लिए प्रारम्भ मे ही प्राणायाम का किया जाना आवश्यक है किन्तु मध्य मे भी जब मन इधर-उधर भगने लगे, तभी प्राणायाम किया जाना चाहिये। प्राणायाम का अच्छा अभ्यास है तो प्राणायाम करते ही मन स्थिर हो जायगा। ध्यान, उपासना बिना प्राणायाम के भी किये जा सकते है किन्तु उससे समाधि तक पहुचने की आशा नही करनी चाहिए।

ध्यान की प्रवृत्ति को दृढ बनाने, पुराने सासारिक विषयो के विचारो के निराकरण और परमात्मा की प्राप्ति की उत्कट अभिलाषा जगाने के लिए उपनिषदादि अध्यात्म ग्रथो का अध्ययन और चिन्तन भी अत्यन्त आवश्यक और परम सहायक है। जितना चिन्तन होगा, उतनी ही ध्यान मे एकाग्रता बढेगी और उतनी ही शीघ्र समाधि मे सफलता होगी। किसी किसी साधक को जीवन भर सफलता नही मिलती। परन्तु इस से उकता कर और निराश होकर ध्यान का अभ्यास ही छोड बैठना भूल है। मन न लगे, न सही—रुचि तो है, प्रवृत्ति तो बन रही है। यही प्रवृत्ति कारण होती है जब किसी को अल्पायु मे ही ध्यान की रुचि वैराग्य और समाधि की प्राप्ति होती है। इस कारण से अभ्यास और प्रयत्न छोड देना ठीक नही। यही तो जीवन नही है, कलेवर ही तो बदलना होता है। यही अभ्यास और यही प्रवृत्ति अगले जन्म मे आध्यात्मिक सफलता के आधार और भूमिका बनगे। एतदर्थ नैराश्य को निकट नही आने देना चाहिए। अपितु निरन्तर लगे रहना चाहिए।

ध्यान के लिए व्याहृति युक्त गायत्री का ही जाप होना चाहिये। तीन वेदो मे गायत्री मन्त्र चार स्थलो पर आया है। केवल यजुर्वेद के ३६वे अध्याय मे ही इसके साथ तीन व्याहृतिया लगी हुई है। जाप मे उनका विशेष महत्त्व है और गायत्री के अर्थो मे भी इन व्याहृतियो मे विशेषता आ जाती है। गायत्री छन्द तो 'तत्सवितुर्वरेण्यम् से प्रारम्भ होता है किन्तु व्याहृति सहित पूरा मन्त्र इस प्रकार है —

ओ३म भूर्भुव स्व । तत्सवितुर्वरेण्यम भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो न प्रचोदयात ॥

यजुर्वेद ३६।३।

अर्थ—(ओ३म्) सृष्टि का उत्पन्न, सचालन और प्रलय करने वाला परमात्मा समस्त प्राणी-अप्राणी जगत् का (भू.) जीवन आधार है (भुव) दुख विनाशक और (स्व) आनन्द स्वरूप है। हम (तत) उस (सवितु देवस्य) सर्वोत्पादक देव का (वरेण्यम) वरण करने योग्य (भर्ग) तेजस्वरूप (धीमहि) धारण करे। (य) जो (न) हमारी (धिय) बुद्धियो को (प्रचोदयात्) प्रेरणा करने वाला है।

गायत्री उपासना का लाभ—

गायत्री-उपासना का वास्तविक लाभ है परमपिता परमात्मा मे श्रद्धा की उत्पत्ति और उसकी प्राप्ति के लिए उत्कटता का उत्पन्न हो जाना है। इस मे साधक सासारिक विषय भोगो के बन्धनो से मुक्त होकर इन्हे केवल शारीरिक आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए भोगता है—स्वाद और सजावट के लिए नही। मानव जीवन का परम लक्ष्य और जीवन की परम गति मोक्ष प्राप्ति ही है और साधक गायत्री उपासना से नित्य निरन्तर उसी ओर प्रगति करता है।

एक समय वह भी आता है, जब वह साक्षात करता है अर्थात् उस परम देव की निटकता तन्मयता मे प्राप्त करता है। बस, यही समाधि है, जहा साधक 'स्व को भूल कर तथा यह विस्मृत हो जाने से कि वह ध्यान कर रहा है, अपने लक्ष्य अर्थात् उस परम पिता के तेजोमय (भर्ग) स्वरूप मे अवस्थित हो जाता है।

गायत्री जाप से पाप विमोचन—

गायत्री जाप से पाप विमोचन तो होता है किन्तु पाप के फलो का विमोचन नही होता। अभिप्राय यह है कि जीवन की आवश्यकता भर के लिए आवश्यक सासारिक साधनो का उपयोग करने वाले को पाप-कर्म की प्रवृत्ति रहती ही नही। उसकी प्रवृत्ति तो उस सर्वोत्पादक देव के तेज स्वरूप मे ही होती है और जिसको प्रवृत्ति परमात्मा के तेज स्वरूप मे, उसकी प्राप्ति मे हो जाती है उस से फिर पाप कर्म नही होता तो फिर आगे पापो के फल भोगने का प्रश्न ही उपस्थित नही होता। इस प्रकार पाप विमोचन हो जाने से पापो के फलो से भी छुटकारा हो जाता है। परन्तु उस परमदेव का साक्षात् करने तथा उस से पहले मनसा वाचा कर्मणा जब से वह गायत्री साधना मे लग चुका है उससे पहले जो पाप कर्म वह कर चुका है अथवा जो कोई पूर्व जन्म का भोग शेष है वह तो अवश्य ही भोगना पडेगा, उस मे कदापि छुटकारा नही हो सकता।

गायत्री जाप ही क्यो ?—

गायत्री जाप को अनिवार्यता नही है। हा, आवश्यकता है। जाप केवल प्रणव अर्थात् "ओ३म् का भी किया जा सकता है किन्तु प्रारम्भ मे केवल 'ओ३म के जाप मे मन लगना गायत्री जाप की अपेक्षा कठिन है। इसका कारण है 'ओ३म्' की अपेक्षा गायत्री की भाषा की अधिकता। फिर ओ३म् का विनियोग गायत्री जाप मे है ही।

एक ओर केवल ओ३म और दूसरी ओर ओ३म के साथ गायत्री भी। वैसे भी स्थूल और सूक्ष्म का भेद—गायत्री स्थूल और सूक्ष्म। जैसे प्रारम्भ मे बालक को स्थूल अक्षर पढाये जाते हैं बाद मे वह समाचार पत्रो के सूक्ष्माकार अक्षर भी पढने लगता है। इसी प्रकार प्रारम्भ मे गायत्री मन्त्र का जाप साधक के लिए सरल होने से अधिक उपयोगी है और गायत्री के जाप का कहो, गायत्री-उपासना का कहो अथवा गायत्री मन्त्र के द्वारा परमात्मा के ध्यान करने का कहो—यही महत्त्व है। वास्तविकता तो यह है कि गायत्री जाप की भी अन्तिम परिणति 'ओ३म' मे ही है।

ओ३म के १९ अर्थो मे एक अर्थ "द्युति ' भी है। गायत्री का "भर्ग ', ओ३म् का 'द्युति ही है। यही कारण है कि योगदर्शन मे 'प्रणव" का वर्णन है। प्रणव अर्थात् ओ३म। परन्तु ऐसे साधक अपवाद ही होते हैं, जो सीधे ओ३म के जाप मे सफलता प्राप्त कर ले अतएव कम से कम प्रारम्भ मे तो गायत्री का जाप ही उपयुक्त है।

वैदिक नारी का स्वरूप

सुशीला देवी विद्यालङ्कृता

(श्रीमती सुशीला देवी)

वैदिक नारी के स्वरूप पर कलम चलाते हुए हृदय गौरव से भर जाता है। कैसा स्वर्णिम युग था वह, जो वैदिक नारी गर्व के साथ कह सकती थी—

"अहं केतुर् अहं मूर्धा
अहम् उग्रा विवाचनी।'

अर्थात् मैं राष्ट्र की केतु हू। जैसे राष्ट्र मे ध्वजा का गौरव पूर्ण स्थान होता है, वैसे ही मैं हू मैं राष्ट्र की मूर्धा हू जैसे शरीर के सारे अग कट जाये तो भी आदमी जीवित रहता है परन्तु यदि सिर कट जाए तो निष्प्राण हो जाता है। जो स्थिति मनुष्य के शरीर मे सिर की है वही राष्ट्र के जीवन मे नारी की है। बिना नारी के राष्ट्र प्राणहीन हो जाता है। मै उग्रा हू, तेजस्विनी हू, अपनी वीरता से दुश्मनो के छक्के छुडा सकती हू। मैं असुरो का सहार कर सकती हू। मैं विशेष प्रकार के प्रवचन कर सकती हू। अपनी ओजस्वी वाणी के द्वारा प्रभाव पूर्ण ढग से विचारो का प्रचार करके जन जागरण कर सकती हू। सुन्दर वातावरण का निर्माण कर सकती हू। और इस से भी आगे बढकर वैदिक नारी घोषणा करती थी—

मम पुत्रा शत्रुहणा अथो मे दुहिता विराट्।

मेरे पुत्र भी असुरो का सहार करने वाले हैं। मेरी लडकी भी विशेष प्रकार के ज्ञान, शील, स्वभाव और सु दर सस्कारो से सुशोभित है।

(१) जरा याद कीजिए राजा जनक ने राजसभा मे घोषणा की थी कि एक हजार गौएँ जिनके सीग सोने से मढे हुए हैं उसे दान मे दी जायेगी जो यहाँ सब से अधिक विद्वान् है।

याज्ञवल्क्य ने यह घोषणा की कि इस सभा मे सब से ज्यादा विद्वान् मैं ही हू। यह गौएँ मैं ले जाऊगा। तब ब्रह्मवादिनी गार्गी ने ललकारा कि मुनिवर पहले मेरे प्रश्न का जवाब दीजिए, फिर आप इन गौवो को ले जा सकते हैं।

प्रश्न—कस्मिन्नु इमे लोका ओताश्च प्रोत श्च।

यह लोकलोकान्तर किसमे ओतप्रोत हैं।

याज्ञवल्क्य उत्तर देते हैं कि गार्गी मा अतिप्राक्षी गार्गी अति प्रश्न मत पूछ—

(२) ब्रह्मवादिनी मैत्रेयी के जीवन की घटना भी प्रसिद्ध है। याज्ञवल्क्य जब सन्यास लेने लगे तब अपनी पत्नी मैत्रेयी से कहा कि—मैं सन्याम ले रहा हू और यह सब धन दौलत तुम्हे सौप रहा हू। मैत्रेयी ने पूछा—"क्या इस सारे धन दौलत को प्राप्त करके मैं अमर हो सकूगी?' मुनि ने उत्तर दिया—

अमृतत्वस्य तु न आशा अस्ति वित्तेन।

(इस धन के द्वारा तुम अमर) नही हो सकोगी)

तब मैत्रेयी ने उत्तर दिया जो—"धन मुझे अमर नही कर सकता, उसे लेकर मैं क्या करूगी। यह सब धन दौलत तुम्हे ही मुबारक हो।"

ऐसी थी हमारी नारिया। वीरता का नमूना भी देखिए।

(३) वीरागना सुलभा भरी सभा मे घोषणा करती है कि –

यो मा जयति सग्रामे
यो मे दर्पं व्यपोहति
यो मे प्रतिबलो लोके
स मे भर्ता भविष्यति॥

इस भरी सभा मे जो कोई मुझे युद्ध में हरा देगा और जो कोई मेरे बल और वीरता मे समान होगा, उसे ही मे पति के रूप मे स्वीकार करती हू।

(४) एक गाँव के अन्दर एक आत्मज्ञानी साधु पढा रहे थे। उनके आत्मज्ञान की चर्चा बहुत दूर दूर तक फैली हुई थी। गार्गी ने भी उनकी प्रसिद्धि की चर्चा सुनी और उनके दर्शन के लिए उसके हृदय मे अभिलाषा जागृत हुई। तीन महीने तक पैदल चलते चलते उनके आश्रम मे पहुची। बाहर बैठे शिष्यो ने पूछा—"देवी, क्या चाहती हो?" गार्गी ने कहा कि 'मै आत्मज्ञानी सत के दर्शन करना चाहती हू।" शिष्यो ने गार्गी का सदेश साधु को दिया तो साधु ने जवाब दिया कि 'मैं किसी स्त्री को दर्शन नहो देता।'

उत्तर सुनते हो गार्गी वापस लौट पडी। गुरु ने शिष्यो से पूछा कि 'उसने मिलने का आग्रह नही किया? शिष्यो ने कहा कि "वह चली गई।' अब गुरु के हृदय मे उत्सुकता जागी और सोचा कि "जरूर यह देवी कोई उच्च कोटि की ब्रह्मवादिनी होगी। अब गुरु उसके पीछे दौडे और उससे पूछा कि "देवी, आप क्यो लौट आयी? गार्गी ने उपेक्षा से उत्तर दिया कि मैं यह समझकर इतनी दूर आई कि एक उच्चकोटि के आत्मज्ञानी के दर्शन होगे और मैं सत्सग करूगी। पर यहा आकर मुझे पता चला कि आप आत्मज्ञानी नही, चमार हैं। स्त्री, पुरुष के चमडी तक ही आपकी दृष्टि सीमित है। एक हो आत्मतत्व का ज्ञान नही।

सत ने गार्गी के चरण पकड लिये और कहने लगे "देवी, तुमने मेरी आखे खोल दी और सच्चे आत्म ज्ञान की झलक दिखा दी।'

और कहा तक सुनाऊ। यजुर्वेद मे तो स्त्री को ऊँचा स्थान दिया गया है। यजुरवेद मे स्त्री के लिए कहा गया है कि—

ओम् इळे हव्ये रन्ते चन्द्रे ज्योते सरस्वती मही विश्रुति।

एता ते अघ्न्ये नामानि देवेभ्य सुकृत ब्रूयात्।

"हे स्त्री, तू इडा है। स्तुति के योग्य है। हव्या है, पूजनीया है। तू रन्ता है, रमणीय है। चन्द्रा है। चन्द्रमा की तरह सब के मन को शीतलता प्रदान करने वाली है। ज्योति है ससार मे प्रकाश करने वाली है। साक्षात् सरस्वती है। मही है, महान् हैं विश्रुति है। तेरी कीर्ति दिग् दिगत मे फैल रही है, तू अघ्न्या है। तेरी कोई हिंसा नही कर सकता।"

परन्तु जमाने ने रग बदला और स्त्री की स्थिति बडी दयनीय हो गया। वह अन्धविश्वास और कुरीतियो मे फस कर घरो की चार दिवारी मे कैद कर दी गई। उससे वेद पढने और सुनने का अधिकार भी छीन लिया गया। उसे पाव की जती, नरक का द्वार, माल सामान की गठरी की तरह से समझा जाने लगा। ऐसे समय मे दयानन्द जी पधारे और उन्होने स्त्री को फिर से मातत्व के पद पर प्रतिष्ठित किया। जो हाथ पालना झुलाता है वही ससार पर शासन करता है यह बताकर फिर से नारी के पढने लिखने के बन्द दरवाजे खोल दिए।

जहा नारी की पूजा होगी वही देवताओ का निवास होगा। स्त्री को उसके भूले हुए स्वरूप को याद दिलाया कि वही राष्ट्रो की निर्मात्री है। यदि स्त्री सुशिक्षित होगी। तभी उसकी सन्तान भी शिक्षित और सस्कारवान् बन सकेगी। इसके लिए उन्हे जहर के प्याले तक पीने पडे। पर दयानन्द जी निश्चय से हटे नही। जनता के विरुद्ध होने पर भी उन्होने स्थान स्थान पर पुत्री पाठशाला, कन्या गुरुकुल, आर्य कन्या महाविद्यालय आदि खोलने की प्रेरणा की। जिस से नारियो मे एक जागरण फूक दिया गया।

आज तो स्त्रिया राजनेता है। प्रधान मन्त्री हैं। डाक्टर है और स्त्री शिक्षा का जोर शोर है। यह सब ऋषि दयानन्द की देन है। अत मे एक स्त्री नन्हीजान वेश्या के षड्यन्त्र के कारण ही उनके रसोइए जगन्नाथ के द्वारा उन्हे दूध मे जहर दिया गया, जिससे वे अपने उच्च कार्यों को अधूरा छोडकर हम से बिछुड गए इसके लिए सम्पूर्ण स्त्री समाज चिरकाल तक उस महान् ऋषि दयानन्द का ऋणी रहेगा।

इति शम

आर्य जगत के समाचार

अशान्ति, भ्रष्टाचार और उग्रवाद को मिटाने के लिए बृहद् यज्ञ

आयसमाज महर्षि दयानन्द बाजार 'दाल बाजार लुधियाना मे २।७।८९ को देश मे बढ रही अशान्ति भ्रष्टाचार व उग्रवाद को समाप्त करने के लिए एक बृहद् यज्ञ किया गया। तत्पश्चात मोगा काण्ड के विषय मे सर्वसम्मत प्रस्ताव पास किया गया।

२५ जून को मोगा मे आतक वादियो ने राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ की शाखा के कार्यक्रम के समय निर्दोष व्यक्तियो की जो निर्मम हत्या की है उसकी जितनी भी निंदा की जाय थोडी है। यह हत्याकाण्ड उस बीभत्म हिंसा की शृखला की एक और कडी है जो पिछले कई वर्षों से हम पजाब मे देख रहे हैं। यह एक अत्यन्त खेदजनक और शोचनीय स्थिति है कि पजाब मे हिसा का यह ताडव पिछले लगभग आठ वर्षों से चल रहा है। और न सरकार इसे दबाने मे सफल हुई है न जनमत इसके विरुद्ध सगठित हुआ है जिस प्रकार कि वह होना चाहिए था। यह स्थिति और भी अधिक चिन्तनीय है कि अकालियो का एक वग खुले तौर पर इन उग्रवादियो की उस प्रकार निन्दा नही करता जसे कि उन्हे करनी चाहिए। उनमे से कई प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप मे उन्हे प्रोत्साहन देते रहने है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब इस नरसहार मे मतप्त परिवारो को जो आघात पहुचा है उस मे उनके साथ अपनी पूरी सहानुभूति प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से दिवगत आत्माओ की शान्ति के लिए प्रार्थना करती है। यह सभा इन पीडित परिवारो की जो सहायता कर सके उसके लिए सदा तैयार रहेगी। विशेष कर पीडित परिवारो के बच्चो के विवाह करवाने, बूढे व रोगी व्यक्तियो की आर्थिक सहायता और उनके बच्चो की शिक्षा का प्रबन्ध करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब अपने अधीन सब आर्यसमाजो को यह आदेश देती है कि वह उग्रवाद पीडित परिवारो को हर सम्भव सहायता कर। और इस मे यदि किसी प्रकार आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के योगदान की आवश्यकता हो तो उसे भी सहायता दी जा सकती है। पजाब भर मे से आर्यसमाजो के बडे बडे अधिकारी इस सम्मेलन मे पहुचे हुए थे। विशाल समारोह का आयोजन किया गया था परन्तु मोगा काण्ड की अस्थिया लुधियाना मे पहुचने के कारण स्वागत समारोह स्थगित कर के साधारण रीति से नव निर्वाचित सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी मालिक प्रताप,वीर प्रताप सभा महामत्री श्री रणवीर जी भाटिया, मालिक लिल्ली सुईग मशीन लुधियाना तथा विख्यात डा० के के पसरीचा जालन्धर जी को मानपत्र भट किये गए।

आदश एवं अनुकरणीय विवाह

सामाजिक कार्यकर्त्री एव दयानन्द बाल मन्दिर अमरोहा की प्रबधक श्रीमती डा० उर्मिला अग्रवाल ने अपने पुत्र डा० विवेक अग्रवाल का विवाह डा० शैफाली सक्सेना के साथ बिना दहेज एव बिना आडम्बर के साथ करके अन्तर्जातीय विवाह का आदर्श स्थापित किया है। १९।७।८९ को विवाह सस्कार श्रीमान प० इन्द्रराज जी सभा प्रधान ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर सभा प्रधान एव आयसमाज अमरोहा के प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य न नव दम्पती को आशीर्वाद प्रदान किया।

सेवक की आवश्यकता

आर्यसमाज बी०एन० पूर्वी शालीमार बाग दिल्ली मे आर्य विचार धारा वाले शिक्षित एव प्रौढ पूर्णकालिक सेवक की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार दिया जाएगा।' सम्पर्क कर—

देवराज कालरा (मत्री)
ए/एम-१३६, शालीमार बाग, दिल्ली-५२
दूरभाष ७१२४६१४

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य

१	नैतिक शिक्षा (भाग प्रथम)		१ ५०
२	नैतिक शिक्षा (भाग द्वितीय)		१ ५०
३	नैतिक शिक्षा (भाग तृतीय)		२ ००
४	नैतिक शिक्षा (भाग चतुर्थ)		३ ००
५	नैतिक शिक्षा (भाग पचम)		३ ००
६	नैतिक शिक्षा (भाग षष्ठ)		३ ००
७	नैतिक शिक्षा (भाग सप्तम)		३ ००
८	नैतिक शिक्षा (भाग अष्टम)		३ ००
९	नैतिक शिक्षा (भाग नवम)		३ ००
१०	नैतिक शिक्षा (भाग दशम)		४ ००
११	नैतिक शिक्षा (भाग एकादश)		४ ००
१२	नैतिक शिक्षा (भाग द्वादश)		५ ००
१३	धर्मवीर हकीकतराय	वैद्य गुरुदत्त	३ ००
१४	फ्लश आफ ट्रुथ	डा० सत्यकाम वर्मा	२ ००
१५	सत्यार्थप्रकाश सन्देश	"	२ ००
१६	एनाटोमी आफ वेदान्त	स्वा० विद्यानन्द सरस्वती	५ ००
१७	आर्यों का आदि देश	" "	२ ००
१८	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	प० सच्चिदानन्द शास्त्री	४ ००
१९	प्रस्थान त्रयी और अद्वैतवाद	स्वामी विद्यानन्द सरस्वती	२५ ००
२०	दी ओरीजन होम आफ आर्यन्स	—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती	५ ००
२१	चत्वारो वै वैदा	" "	२ ००
२२	द्वैतसिद्धि	" "	५ ००
२३	आर्यसमाज आज के सदर्भ मे	—डा० धर्मपाल, डा० गोयनका	२० ००
२४	हसता चल, हसाता चल	स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती	६ ००
२५	दयानन्द एण्ड दा वेदाज (ट्रैक्ट)		५०/-रु० सैकडा
२६	पूजा किसकी ? (ट्रैक्ट)		५०/-रु० सैकडा
२७	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (ट्रैक्ट)		५०/-रु० सैकडा
२८	योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश (ट्रैक्ट)		५०/ रु० सैकडा
२९	आर्योद्देश्यरत्नमाला (सुगम व्याख्या)	डा० रघुवीर	५०/-रु० सैकडा
३०	महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी स्मारिका (सन् १९८३)		५ ००
३१	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्धशताब्दी स्मारिका १९८५		५ ००
३२	महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी स्मारिका १९८५		१० ००
३३	महर्षि दयानन्द निर्वाण विशेषाक		१० ००
३४	ऋषिबोधाक		१० ००
३५	योगीराज श्रीकृष्ण विशेषाक		१० ००

नोट—उपरोक्त सभी पुस्तको पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा पुस्तको की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक व्यय पृथक् नही लिया जाएगा। कृपया अपना पूरा पता एव नजदीक का रेलवे स्टेशन साफ साफ लिखें।

पुस्तक प्राप्तिस्थान—
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

निर्वाचन

स्त्री आर्यसमाज की स्थापना

आर्यसमाज प्रशात विहार के तत्त्वावधान मे स्त्री समाज' की दिनाक ९।६।८९ को स्थापना हो गई है जिस मे निम्नलिखित सदस्य चुने गए हैं—

प्रधाना श्रीमती प्रकाशवती
मत्राणी श्रीमती विद्यावती
कोषाध्यक्षा . श्रीमती वीना मल्होत्रा

आर्यसमाज गन्नौर शहर

प्रधान प० जयदेव जी जनोई वाले
मन्त्री श्रीमप्रकाश वर्मा
कोषाध्यक्ष मनोहरलाल हुडेजा

आर्यसमाज सब्जी मंडी

आर्यसमाज आर्यपुरा सब्जी मडी दिल्ली ७ का वार्षिक चुनाव ११ जून १९८९ रविवार को श्री प्रेमसागर गुप्त की अध्यक्षता मे सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ।

प्रधान श्री पुरुषोत्तम दास
मन्त्री रणबीर सिंह
कोषाध्यक्ष पुष्पराज

आयसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Post in N DPSO on 3 4 8 89 Licenced to post without prepayment Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७१६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३६

वार्षिकोत्सव सूचना

आयसमाज राजनगर पालम कालोनी नई दिल्ली ४५ का १६वा वार्षिकोत्सव मगलवार १५।८।८९ को साय ४ से ७ ३० बजे तक समारोह पूवक मनाया जाएगा जिसमे स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती डा० धमपाल आय प० उदय श्रेष्ठ प० विजेन्द्र कुमार शास्त्री श्री श्याम सुन्दर आय आदि विद्वान नेतागण पधारकर जनता का मागदशन करगे।

—भागमल सिंह (मन्त्री)

(पृष्ठ १ का शेष)

गोहत्या बन्द करो…

गव करते हैं वे सब अतीत की वस्तु बन जायगी।

स्वामी जी ने बताया कि भारत मे १५ अगस्त १९४७ को स्वतन्त्रता के समय जितनी शराब की खपत थी अब वह कई गुना अधिक हो गई है। सरकार स्वय सविधान के निर्देशक सिद्धान्तो की उपेक्षा कर शराब की दुकान खोल रही है। उस का मुख्य उद्देश्य जन स्वास्थ्य और नैतिक मूल्यो की उपेक्षा कर राजस्व कमाना हो गया है।

धम निरपेक्षता के बावजूद मुस्लिम भावना के लिए सरकार ने सविधान मे परिवतन किया है परतु हिन्दू भावना का आदर करने के लिए गोवध पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए कोई न कोई बहाना कर रही है। जिस कारण गोवध बढता जा रहा है और देश मे पशुधन का ह्रास हो रहा है।

वेद कथा

आर्यसमाज जी० टी० रोड फिरोजपुर छावनी मे २०।७।८९ से २६।७।८९ तक महात्मा आर्य भिक्षु (डो लिट) ज्वालापुर हरिद्वार वालों की वदप्रचार कथा हुई जिसमे प्रात सायकाल महात्मा जी की कथा हमारा अध्यात्म व हमारी मान्यताएँ विषय पर होती रही। उन्होंने बताया कि ईश्वर सदा सवदा सब को प्राप्त है किन्तु सदोष हृदय मे उस की प्रतीति नही होती। ईश्वर प्राप्ति का विषय नही है इसलिए हमारा प्रयास सदोष हृदय को निर्दोष हृदय मे परिवर्तित करने का होना चाहिए। क्योकि प्रतीति के बिना प्रीति और प्रीति के बिना अनुभूति हो नही सकती। साथ ही आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री प० सत्यपाल जो पथिक (अमृतसर) फिरोजपुर छावनी के नवोदित आर्य गायक श्री प० विजयानन्द जी एव श्री मनोज कुमार आय के सुमधुर भजन भी महात्मा जी के प्रवचन से पूर्व होते रहे।

इस कथा मे शहर के गण्यमान्य व्यक्तियो ने उपस्थित होकर धर्म लाभ उठाया। महात्मा जी ने 'वेदो की ओर लौटो' मे महर्षि दयानन्द का नाद याद दिलाया।

सेवा में—

उत्तम स्वास्थ्य के लिए
गुरुकुल कांगड़ी
फार्मेसी
हरिद्वार की औषधियां
सेवन करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली न०१७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७१६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ अंक ४० रविवार १३ अगस्त १९८९ श्रावण सम्वत् २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द — १६५ सृष्टि सवत १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश मे ५० पौंड १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

समस्त आर्यजगत् में १७ अगस्त १९८९, बृहस्पतिवार को

श्रावणी-उपाकर्म, सामूहिक-यज्ञोपवीत, संस्कृत रक्षादिवस तथा हैदराबाद-सत्याग्रह स्वर्ण जयन्ती समारोह सम्पन्न होंगे

• मुख्य समारोह आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली मे "हैदराबाद सत्याग्रही सम्मान समारोह" के रूप मे होगा ।

श्रावणी आर्यों के प्रसिद्ध पर्वों मे से एक महान पर्व है। यह पर्व वैदिक पर्व है। चूंकि इसका सीधा सम्बन्ध वेद के अध्ययन तथा अध्यापन करने वालो से है अत आर्यों को उचित है कि श्रावणी के दिन बृहद यज्ञ और विधिपूर्वक उपाकर्म करके वेद तथा वैदिक ग्रन्थो के विशेष स्वाध्याय का उपाकम कर तथा उसको यथाशक्ति नियमपूवक चलाते रहे।

प्रसन्नता का विषय है कि आर्य लोग इस पवित्र दिन को सस्कृत दिवस के रूप म भी मनाने लगे हैं। वर्तमान म जबकि सरकार सस्कृत की घोर उपेक्षा कर रही है आर्यों तथा आर्यसमाज का उत्तरदायित्व और अधिक बढ जाता है। इस अवसर पर हम सस्कृत रक्षा पर विचार करना है।

पचास वष पूर्व सन १९३९ म सावदेशिक अ य प्र न ा सभ द्वारा हैदराबाद राज्य म धार्मिक अधिकारो की रक्षा के लिए आ ठ म म चलाया जाने वाला शान्तिपूण धर्मयुद्ध आ यसमाज के इतिहास म अस ा रण महत्त्व रखता है। इस धर्मयुद्ध को जीतने के लिए जहा लगभग ४० आर्यवीरो ने अपना बलिदान दिया वहा १२५६९ स याग्रहियो ने भ ग लिया था।

आयसमाज दीवान हाल दिल्ली हैदराबाद धमयुद्ध का मुख्य सचालन केन्द्र रहा तथा प्रतिवर्ष श्रावणी के अवसर पर हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस का आयोजन करना है। पचास वष पूरे होने पर इस ब ग हैदराबाद सत्याग्रहियो के सम्मान का आयोजन कर रहा है।

स्वराज्य के लिए आर्यजनता ने भारी बलिदान दिये

अब स्वराज्य की रक्षा के लिए—आइये हम सब

- आर्य संस्कृति एवं आर्यभाषा के प्रसार की शपथ ले।
- विदेशी-तत्त्वों और विदेशीभाषा से राष्ट्र को बचाये।
- पुण्यभूमि भारत से गोहत्या और मद्यपान की लानत छुड़ाये।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा

गोहत्या, मद्यपान और अंग्रेजी के विरुद्ध प्रचंड आंदोलन का प्रस्ताव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने शीघ्र ही दिल्ली मे देशभर के प्रमुख आर्यजनो का एक विशेष अधिवेशन बुलाने का निश्चय किया है, जिसमें गोहत्या, मद्यपान और अंग्रेजी के विरुद्ध प्रस्तावित आन्दोलन की रूपरेखा को अन्तिम रूप दिया जाएगा। इसी अवसर पर देश की बिगड़ती हुई परिस्थितियो पर भी गभीरतापूवक किया जाएगा।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

आचार्यस्तन त नभसी उभे इमे उर्वी गम्भीरे पृथिवी दिवं च ।
ते रक्षति तपसा ब्रह्मचारी तस्मिन् देवाः स मनसो भवन्ति ॥

अथर्व० काण्ड ११ अ० ३ सूक्त ५ ८

स्वय प्रक शम न तथा प्रकाश मानो म प्रक शित दा नी प्रकार के शलाको मे जडित यह अ तरिक्षरूपी अथाह समुद्र है। य दोनो प्रक र के लोक एक ही नियम म परस्पर ग्रथित है जहा क सौर नक्षत्र के सब अग एक द र को अप । अ र खीच ल और एक सूत्र व गिद एक ही नि म म चक्कर लगान पर अपनी स्थिति थर रख सकते है वहा असख्य त सौर नक्षत्र एक न न त्र के गिद चक्कर लग न ए हा प्रा र अ न । की ा न ने रहते है। न म स हमारी पृथिवी अप्रकाशमान न त्र की प्रतिनिधि रूप म त्था हम र सूय क शमान लोको के प्रतिनिधि प म हा मारा भौतिक व के सौर है द ो व ि त ब्रह्मच ा क न अ च य । प्रक न करता है विस्तत फला है प यवा औ ग न । आ क लिए गम्भ र सूय नोक ि । की द्रष्ट म एक अचम्भ म दिख दे ते है व तक कि त य क उपर उसके नए उन क रह ो को वाल कर नही मुलझा न । आचाय (अर्थात् ब्रह्मचर्य पूर्ण ब्रह्मचारी का इच्छा करने वाला) हा सचमुच पृथिवी और सूय को ब्रह्मचारी के लिए अ त देने वाला है

आचाय ने द्यु व पृथिवी का थ ज्ञान ब्रह्मच रा को दे दिया परन्तु फिर भी क्या उस ज्ञान स ब्रह्मचारी स्थिर लाभ उठा सकता है बिजली चमक जाती है कुछ काल पाछ फिर चमक जाता है। पर तु क्या इस मे मनुष्य मात्र को कुछ भी लाभ मिला। अमेरिका मे बेंजमिन फ्रैंकलिन से पहले कितनी बार पहाडो पर और जगलो मे बिजली चमकी परन्तु सिवाय इसके कि वहा की बालबुद्धि प्रजा आश्चर्यित होकर मुह बाय दे उस का कुछ भी परिणाम न हुआ। परन्तु पर तु फ्रैंकलिन न उसी अ काश व्यापी विद्युत को पृथिवी पर जजीरो मे पकड लिया और आज बलवती विद्युत दिमाग रखने वाले निबल से निबल मनुष्य की भी दासी बनी हुई है। आकाश मे उतार कर पृथिवी तल पर बली विद्युत को बन्दी गृह मे फ्रैंकलिन ने किस शक्ति के आधार पर डाला। निस्सन्देह वह तप की ही उत्कृष्ट शक्ति थी। उस उस तप की शक्ति से आज तक प्रकृति के प्रबल से प्रबल चमत्कारो का क्रियावान विद्वान काबू करते रहे है। तप का शक्ति बडी है। आचार्य से मिली हुई शिक्षा को हटाना म व रण करने के लिए तप की ही आवश्यकता है।

एक ही प्रकार का बीज विभिन्न भूमियो म बोया जाता है। भिन्न स्थानो म एक सा ही उपज नही ा इसका कारण क्या है? इस का कारण यही है कि भिन्न भूमि मे शक्ति भेद है एक ही आचाय के पास बठ म विद्यार्थी शिक्षा पा रहे है परिणाम मे वहा भी बहुत बडा भेद पड जाता है जहा एक विद्यार्थी मू का मूढ रह जाता है वहा दूसरा मौलिक आविष्कार करने वाला सिद्ध होता है। यह भेद क्यो? यहा तप का अभाव व भाव ही मुख्य कारण है। विद्या रूपी बीज सब के लिए एक सा खुला है और एक ही प्रकार शिक्षा का हल चला कर उसे बुद्धिरूपी खेतो म बोया जा रहा है पर तु जहा तप नहीं वहा पहले तो बीज उगता ही नही और यदि उगता भी है तो ठीक उपज नहीं होती। आचाय का परिश्रम तभी फलीभूत होता है जबकि ब्रह्मचारी के अ दर तप का साधन जागतावस्था मे हो।

एक ही गुरुकुल मे एक ही आचार्य की सरक्षता में एक ही प्रकार के उपाध्यायो मे शिक्षा पाते हुए क्या कारण है कि कोई उत्तम ब्राह्मण बनता है कोई वीर प्रजा पालक क्षत्रिय बनता है कोई वैश्य बनता है और कोई शूद्र भी नही बन सकता। यहा भी तप ही असमानता का कारण है।

आचाय जो ज्ञान देता है ब्रह्मचारी तप मे उसकी रक्षा करता है। जिस वैदिक ज्ञान के ससार मे प्रसरण का कारण भी तप ही है उस के विस्तार की रक्षा का मूल साधक भी तप ही हो सकता है। ब्रह्मचय का भीषण व्रत भी तप के चट्टान पर ही स्थिर रह सकता है। तब आचाय के लिए उत्तम गुरु दक्षिणा यही है कि जो ज्ञान उसने शुद्ध हृदय से ब्रह्मचारी को दिया है उसकी रक्षा ब्रह्मचारी तप द्वारा करे। उस का फल क्या होगा? उस ब्रह्मचारी मे सब देवता एक मन होगे अर्थात उस के जीवन मे विघ्नकारी न होगे प्रत्युत सहायक होगे। आठ वसु ग्यारह रुद्र बारह आदित्य तथा इन्द्र और प्रजापति उस के वश मे होगे। आग और पानी हवा और सूय प्राण और मन विद्युत और यज्ञ सभी उस के वश मे होगे। उसके लिए लोक लोकान्तरो के पद उठ जायगे और वह प्रत्येक प्राकृतिक वस्तु के निज स्वरूप को देखता हुआ आत्मिक जगत मे भी राज्य करने के योग्य बन जायेगा

तप की कमी महिमा है? जो तप आह्लाद से भी ऊपर उठ कर परमानन्द शान्त अवस्था तक पहुचा सकता है जो तप दु खो के गध को भी समीप आने से रोक देता है जो तप अपने स्वरूप को पहचानने के योग्य बनाता है—उस तप से मुक्त होने को ही जो नराधम स्वर्ग का साधन समझते है वे ब्रह्मचय तथा विद्यार्थी जीवन के गौरव को समझ ही नही सकते।

सुखार्थिन कुतो विद्या विद्यार्थिन कुत सुखम।

विद्या तपस्वी के लिए है सुखी के लिए नही। स्वर्ग की कामना से जो यह करते हैं वे अनुभव के बाद स्वय तपस्वी हो जाते है। परम पिता ससार भर के विद्यार्थियो को तप के लिए प्ररित कर यह सन्यासी की हार्दिक प्रार्थना है।

शब्दार्थ—ब्रह्मचारी के लिए (उभे इमे नभसी) इन दोनो परस्पर बधे हुए (उर्वी गम्भीरे पृथिवीम दिवम च) विस्तृत तथा गहरे इन पृथिवी और सूर्य को (आचार्य ततक्ष) आचाय ही आकृति देते है। (ब्रह्मचारी तपसा ते रक्षति) उन दोनो की ब्रह्मचारी तप से रक्षा करता है। (तस्मिन देवा समनस भवन्ति) उस ब्रह्मचारी मे सब देवता एक मन होते है।

श्रावणी पर्व-यज्ञोपवीत

यज्ञादि शुभ श्रेष्ठतम धारण कर पटपीत ।
सभी आयजन बदलते पहने नव उपवीत ॥

पहने नव उपवीत वेद की कथा श्रवण कर।
रहे अग्रसर चढ उन्नति गाल शिखर पर ॥

वेद पाठ करते है प्रभु चिन्तन इत्यादि ।
सुदर सम्भाषण श्रेष्ठ कर्म होता यज्ञादि ॥

परम पुरातन वेद की वाणी से कल्याण ।
वेद ईश्वरीय ज्ञान है स्वत प्रमाण ॥

है स्वत प्रमाण वेद पथ को अपनाओ ।
वदिक धर्मी बन कर जीवन सफल बनाओ ॥

कहे स्वरूपानन्द वेद के सुनो प्रवचन ।
सत्य ज्ञान की ज्योति जगाये वेद पुरातन ॥

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

ओ३म्
आर्य सन्देश

'संस्कृत भाषा सारी भाषाओ का मूल है। इस भाषा सदृश मृदु, मधुर और व्यापक, सर्वभाषाओ की माता ऐसी दूसरी कौन सी भाषा है।"

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

भारतीय स्वाधीनता सग्राम में महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज का योगदान

आज यह आम धारणा है कि हमारे देश को स्वाधीनता दिलाने म काग्रेस का हाथ है। इस धारणा को झुठलाया भी नही जा सकता क्योकि जब भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई उस समय आदोलन की बागडोर काग्रेस के हाथ मे ही थी और जब स्वतन्त्रता मिल गई उसके बाद देश की बागडोर भी काग्रेस के नेताओ के ही हाथ मे ही आई। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या इस विचारधारा के प्रणेता काग्रेस के ही नेता थे अथवा उनसे पहले भी किसी ने स्वाधीनता के लिए कोई प्रयास किया था? भारतीय राष्ट्रीय महासभा (काग्रेस) ने सर्वप्रथम स्वराज्य प्राप्ति के लिए सघर्ष की घोषणा लाहौर म १६२६ म की थी। इससे पहले काग्रेस ने १६२७ म पूर्ण स्वराज्य को अपना ध्येय घोषित किया था। इससे पहले १६१६ मे लखनऊ काग्रेस मे लोकमान्य बाल गगाधर तिलक ने एक नारा दिया था—स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।' काग्रेस के मच से सबसे पहली बार स्वराज्य शब्द का उच्चारण दादा भाई नौरोजी ने किया था।

किन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती के मस्तिष्क म यह विचार बहुत पहले अकुरित हो चुका था। उन्होने १८७५ मे घोषणा की थी—अन्य देशवासी राजा हमारे देश में न रहे तथा हम पराधीन कभी न रहे। महर्षि ने भारतीयो को एक चेतावनी देते हुए कहा था—कोई कितना ही कहे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होना है वह सर्वोपरि सर्वोत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये के पक्षपात मे शून्य प्रजा पर माता पिता के समान कृपा न्याय और दया के साथ भी विदेशियो का राज्य पूर्ण सुखदायक नही हो सकता।'

महर्षि ने पूर्ण स्वराज्य का स्वप्न इससे भी पहले देखा था। यह अनुसन्धान का विषय है कि १८५७ के प्रथम स्वाधीनता सग्राम के दौरान स्वामी जी क्या कर रहे थे। जो तथ्य अभी तक प्रकाश मे आए है, वे स्पष्ट करते हैं कि स्वामी जी एक स्थान से दूसरे स्थान जाकर और घूम-घूमकर लोगो मे स्वाधीनता की अग्नि प्रज्वलित कर रहे थे।

वलेण्टाइन शिरोल ने 'इण्डियन अनरेस्ट' मे लिखा था कि जहा-जहां आर्यसमाज का दौर है, वहा वहा राजद्रोह प्रबल है। महात्मा गाधी भी बिना बुलाए स्वामी श्रद्धानन्द को मिलने गए थे। वह समय था जब आर्यसमाज और विद्रोह पर्यायवाची बन गए थे। काग्रेस का इतिहास लिखने वाले डा० पट्टाभि रमैया ने लिखा है कि असहयोग आन्दोलन मे भाग लेने वाले और जेल काटने वाले ८० प्रतिशत आर्यसमाजी थे।

निश्चय ही आर्यसमाज की भूमिका स्वाधीनता सग्राम मे अग्रणी रही है।

श्रावणी-उपाकर्म

वेद का पढना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। महर्षि ने बताया है कि यह परम धर्म है। एक धर्म होता है और दूसरा परम धर्म। इनका भेद स्पष्ट करने के लिए इतना ही पर्याप्त है—एक आत्मा है और दूसरा परमात्मा। परम शब्द मे बहुत बडी शक्ति है। एक धर्म है जो हमारा दायित्व है, जो हमे नित्य प्रतिदिन करना है। एक दुकानदार ईमानदारी से सही दाम बताता है, यह उसका धर्म है। वह अपने मुह मागे दाम लेता है, यह उसका धर्म है क्योकि वह वस्तु उसकी है। परन्तु जब वह ईमानदारी से तोलता है, ग्राहक को धोखा नही देता, वह कम नही तोलता उसका बुरा अपने मन म नही लाता यह परम धर्म है। डाक्टर रोगी का उपचार करता है अपनी फीस लेता है यह उनका धर्म है, पर जब वह उसके भविष्य के लिए भी कल्याण की कामना करते हुए ऐसे औषध देता है कि वह भविष्य मे बीमार न पडे यह उसका परम धर्म है। बस यही वेदो मे कहा गया है—तू मनुष्य बन अपना कल्याण कर अपने पडोसी का कल्याण कर अपने समुदाय का समाज का कल्याण कर देश का और सर्वोपरि विश्व का कल्याण कर। तू विश्व मानवता म विश्वास कर—बस यही परम धर्म है। इसी परम धर्म का ज्ञान हम वेद देते हैं। इस श्रावणी उपाकर्म के समय वेद सप्ताहो का आयोजन इसीलिए किया जाता है कि हम वेदो की वाणी को पढे पढाये सुने और सुनाये।

हमने कोई शास्त्रीय व्याख्या न करके सामान्य सी बात कही है। हम आशा करते हैं कि आर्य जन इस आयोजन को रस्म अदायगी तक सीमित न करके आचार और व्यवहार में भी लायेंगे। मनुस्मृति म तो कहा भी है—आचार परमो धर्म।

संस्कृत दिवस

प्रसन्नता है कि भारतीय जनमानस श्रावणी पर्व को सस्कृत दिवस के रूप मे भी मनाने लगा है। भारतवर्ष के लिए सस्कृत की उपादेयता स्वय सिद्ध है। सस्कृत भाषा, अस्माक जननी—जैसे माता बिना पुत्र नहीं हो सकता, उसी प्रकार सस्कृत के बिना भारत भारत नही रहेगा।

सस्कृत को पाठ्यक्रम से हटाने का सरकारी प्रयास वर्षों से चल रहा है। सस्कृत भारतीय सविधान मे परिगणित भाषा है शिक्षा शास्त्रियो ने भारतीय जीवन और सस्कृति मे इसका स्थान देखते हुए इसके पठन-पाठन पर विशेष ध्यान देने की सस्तुति बार-बार की है। उसी को माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम से हटाना देश को पूर्णरूप से आत्मविमुख-आत्मद्रोही आत्मघाती बनाने की दूरगामी दुरभिसन्धि है, जिसकी जडें वास्तव मे अन्तर्राष्ट्रीय लुटेरी-महत्वाकाक्षाओ से जुडी हैं। यद्यपि सस्कृत प्रेमियो द्वारा उच्चतम न्यायालय मे याचिका दायर करने पर माननीय न्यायाधीशो ने शिक्षा विभाग पर अपने दु सकल्प को लागू करने पर रोक लगा दी है परन्तु शिक्षा विभाग अभी भी अपनी सर्वनाशी अभियोजना पर दृढ सकल्प है और सस्कृत को २० प्रतिशत अक देकर, उसे भारतीय भाषाओ का अग बनाना चाहता है जो किसी स्वाभिमानी भारतीय को स्वीकार्य नही।

सरकार के अतिरिक्त हम सस्कृत-प्रेमियो को स्वय अपने हृदयो को टटोलना है कि हम सस्कृत-सवर्धन और उसकी सुरक्षा के लिए क्या कर रहे हैं। सस्कृत के बिना हमारी दैनिक स्तुति प्रार्थना उपासना और धार्मिक सस्कार कुछ भी नही हो सकते। हमारी आत्मा का विकास इसी देववाणी सस्कृत मे निहित है। अत आइये! आज हम सस्कृत दिवस पर सस्कृत पढने और अपने बच्चो को सस्कृत पढाने का सकल्प ले, तभी हम अपने को अपनी सस्कृति को समझ पाने योग्य बना पायेगे।

सत्यार्थप्रकाश परीक्षाओं में भाग लें

ऋषिवर दयानन्द ने मानव की सर्वाङ्गीण उन्नति के लिए अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की रचना की थी। इस ग्रन्थ के पठन पाठन से जहा धर्म का सच्चा स्वरूप विदित होता है और नाना मत-मतान्तरो की वेद विरुद्ध मान्यताओ का पता लगता है वहा अन्धविश्वासो से भी छूटने का सही रास्ता दृष्टिगोचर होता है।

आर्य युवक परिषद दिल्ली ने इस वर्ष भी २४ सितम्बर को अखिल भारतीय स्तर पर सत्यार्थप्रकाश सम्बन्धी चार परीक्षाओ का आयोजन पिछले २६ वर्षों की भाति किया है। ये परीक्षाएँ है—सत्यार्थ रत्न सत्यार्थभूषण सत्यार्थविशारद व सत्यार्थशास्त्री।

इन परीक्षाओ मे अधिक स अधिक सख्या म परीक्षार्थी को बैठाने की प्रेरणा देकर नई पीढी को राष्ट्र प्रेमी धर्मावलबी और देश के सुयोग्य नागरिक बनने का अवसर प्रदान करे।

परीक्षाओ के लिये सम्पर्क करे—

श्री चमनलाल परीक्षा मन्त्री आर्य युवक परिषद एच ६४ अशोक विहार दिल्ली ५२

श्रावणी उपाकर्म

अथवा

ऋषि-तर्पण

—आचार्य डा० सुरेन्द्रदेव स्नातक

सृष्टि के आदि से ही चलता चला आ रहा 'धर्म' "वैदिक धर्म" नाम से पुकारा जाता है। इस "वैदिक धर्म" मे स्वाध्याय की प्रमुखता तथा सर्वश्रेष्ठता का वर्णन हमे स्थान-स्थान पर उपलब्ध होता है। चारो वर्णों तथा चारो आश्रमो मे 'स्वाध्याय की प्रधानता का उल्लेख हमे धर्मशास्त्रो मे प्राप्त होता है।

वास्तविकता तो यह है कि स्वाध्याय ही एक ऐसी वस्तु है कि जिस के द्वारा मानव मानवता की चरम सीमा तक सरलतापूर्वक पहुच सकता है। फलस्वरूप वह पूर्ण मानव बन सकता है।

वर्णों मे सर्वश्रेष्ठ वर्ण है ब्राह्मण। इसकी सर्वश्रेष्ठता का कारण भी स्वाध्याय ही है। मनुस्मृति के निम्नलिखित श्लोक मे ब्राह्मण वर्ण के प्रमुख कर्तव्यो तथा कर्मों मे स्वाध्याय को ही प्रमुखता दी गई है—

अध्ययनमध्यापन
यजन याजन तथा।
दान प्रतिग्रह चैव
ब्राह्मणानामकल्पयत् ॥
मनु० १।८८

अर्थात् अध्ययन और अध्यापन करना (अथवा स्वाध्याय का किया जाना) यज्ञ करना और यज्ञ कराना आदि ब्राह्मणवर्ण के करणीय कर्म कहे गए हैं। इसके अतिरिक्त मनुस्मृति में ही ब्राह्मण तनन की परिभाषा भी दी गई है

स्वाध्यायेन व्रतैर्होमै-
स्त्रैविद्येनज्यया सुतैः।
महायज्ञैश्च यज्ञैश्च
ब्राह्मीय क्रियते तनु ॥
मनु० २।२८

अर्थात् सम्पूर्ण विद्याओ के अध्ययन अध्यापन आदि के द्वारा ही ब्राह्मण का शरीर ब्राह्मण अथवा ब्रह्मज्ञानी बना करता है। कहने का अभिप्राय यह है कि ब्राह्मण वर्ण के लिए नियमित रूप से स्वाध्याय का किया जाना अनिवार्य है।

मनुस्मृति मे तो यहा तक कहा गया है कि—

वेदोपकरणे चैव
स्वाध्याये चैव नैत्यिके।
नानुरोधोऽस्त्यनध्याये
होममन्त्रेषु चैव हि ॥
मनु० २।१०५

अर्थात् वेदो का अध्ययन करने आदि नित्यप्रति किए जाने वाले कर्मों मे कभी अनध्याय नही हुआ करता है।

इसी भाति चारो आश्रमो मे सर्वप्रथम आश्रम है—ब्रह्मचर्य-आश्रम। इस आश्रम की रचना तो केवल स्वाध्याय की दृष्टि से ही की गई है। अतएव इस अध्ययन काल सम्बन्धी आश्रम मे अनध्याय अर्थात् अवकाश के लिए कोई स्थान था ही नही जैसा कि उपर्युक्त श्लोक ने स्पष्ट किया ही है।

इस आश्रम मे नियमानुसार व्रत पूर्वक अध्ययन करने के उपरान्त समावर्त्तन-सस्कार के समय पर भी स्नातक को आचार्य द्वारा दिए गए उपदेश मे भी स्वाध्याय के सम्बन्ध मे यही कहा गया है कि स्वाध्याय का त्याग तो किसी भी दशा मे तथा किसी भी आश्रम की विद्यमानता मे नही करना चाहिए—

वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति। सत्य वद। धर्म चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। ...। स्वाध्याय-प्रवचनाभ्या न प्रमदितव्यम ॥
तैत्तिरीयोपनिषद् १।११

आचार्य अपने अन्तेवासी अर्थात अपने शिष्य और शिष्याओ को उपदेश देते हैं कि तुम सदा सत्य बोलो, धर्म का ही सदैव आचरण करो, प्रमाद (आलस्य) रहित होकर सदैव स्वाध्याय करते रहना। ... । अध्ययन करने तथा अध्यापन करने मे कभी भी प्रमाद अथवा आलस्य नही करना चाहिए।

स्नातक होने के अनन्तर गृहस्थ आश्रम को स्वीकार कर लेने पर भी स्वाध्याय बराबर करते रहना चाहिए। वानप्रस्थ आश्रम मे भी वानप्रस्थी का प्रमुख कर्तव्य स्वाध्याय ही है। इसी प्रकार सन्यास आश्रम मे भी सन्यासी का समय परम सत्ता के चिन्तन और उपदेश देने मे ही व्यतीत हुआ करता है। सन्यासी के लिए तो आदेश भी यही है कि वह सभी कर्मों का त्याग कर दे किन्तु केवल एक वेद के अध्ययन का कभी त्याग न करे—

सन्यस्येत्सर्वकर्माणि
वेदमेकन्न सन्यस्येत्।

कहने का तात्पर्य यह है कि प्रतिदिन स्वाध्याय का किया जाना मानवमात्र का नैत्यिक करणीय कर्तव्य है।

स्वाध्याय को अत्यधिक महत्त्व देने का उद्देश्य है मानव के मन का उन्नत होना। मानव के शरीर की स्थिति तो अन्न पर ही निर्भर रहा करती है किन्तु इस मानव-शरीर के अधिष्ठाता 'मन' का भी उत्कर्ष तथा शिक्षण स्वाध्याय के द्वारा ही हुआ करता है। यह तो सार्वभौम सिद्धात है कि मानव के मन की उन्नति के बिना आत्मिक-उन्नति का हो सकना सम्भव ही नही है। अतएव यह कहा जाना तो पूर्णतया सार्थक ही है कि स्वाध्याय हो आत्मिक उन्नति का प्रमुख साधन है।

यदि मानसिक तथा आत्मिक उन्नति की ओर ध्यान न देकर मात्र शारीरिक उन्नति को ही प्रश्रय दिया जाए तो यह शारीरिक उन्नति मानव को मानवता से गिराकर पशुत्व की ओर ही ले जाएगी जैसा कि कहा भी गया है—

येषा न विद्या न तपो न दान
ज्ञान न शील न गुणो न धर्म।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥

अर्थात् जिनके समीप न विद्या है, न तप है और न दान ही किया करते है तथा जिनके पास ज्ञान, शील गुण और धर्म आदि कुछ भी नही है वे मर्त्यलोक मे पृथ्वी पर भार के सदृश हैं और मानव के रूप को धारण किए हुए साक्षात् पशु के सदृश विचरण करते वाले हैं।

[प्रस्तुत श्लोक मे आए हुए 'मृगा' शब्द का अर्थ है 'पशु अथवा जानवर'। व्युत्पत्ति भी है—मृत्वा गच्छन्तीति मृगा। अर्थात् जो कूद-कूद कर चला करते हैं ऐसे पशु।]

अतएव मानव के लिए स्वाध्याय आवश्यक तथा अनिवार्य हैं।

स्वाध्याय ही एक ऐसा साधन है कि जिसके द्वारा मानव-मन 'शिव सकल्पयुक्त' होकर परब्रह्म परमात्मा का साक्षात्कार करने योग्य बन जाया करता है—

मे मन शिवसकल्पमस्तु।

ऋषियों का मन तो इस प्रकार का हुआ ही करता है। इसी मन रूपी साधन के द्वारा वे मन्त्र के विषय का साक्षात्कार कर लिया करते थे। इसी कारण वे मन्त्रद्रष्टा ऋषि' शब्द वाच्य होते थे। यास्क ने अपने निरुक्त मे ऋषि शब्द की व्याख्या करते हुए लिखा भी है—

ऋषयो मन्त्रद्रष्टार।

जो वस्तु जिसको अधिक प्रिय हुआ करती है उसी से उसकी पूजा अथवा तृप्ति अथवा तर्पण भी हुआ करता है। मन्त्रद्रष्टा अथवा मन्त्र मे वर्णित विषय का साक्षात्कार करने वाले ऋषियो को स्वाध्याय ही अतिप्रिय था। अत उन ऋषियो की पूजा अथवा तर्पण भी अर्पण भी इसी स्वाध्याय के द्वारा किया जाना उचित है। मनुस्मृति मे कहा भी गया है—

स्वाध्यायेनार्चयेतर्षीन् होमैर्देवान् यथाविधि। मनु० ३।८१

अर्थात् स्वाध्याय के द्वारा ऋषियो का तर्पण करें तथा होम के द्वारा देवताओ का यथाविधि अर्चन करें। अतएव स्वाध्याय के द्वारा ऋषियो का तथा दैवकर्म द्वारा देवताओ का अर्चन अथवा पूजन करना मानव का दैनिक कर्तव्य है।

किन्तु विशिष्ट अवसरो पर विशिष्ट स्वाध्याय द्वारा ऋषियो का तर्पण किए जाने का विधान है। वैदिक काल मे तो मानव नित्य ही वेद का पठन-पाठन करने मे सलग्न रहा करते थे किन्तु फिर भी वर्षा काल मे प्राय सभी जनो के अपने अपने कार्यों से निवृत्त हो जाने पर वेद के विशिष्ट पारायण का आयोजन किया जाया करता था।

यह तो सर्वविदित ही है कि भारतवर्ष कृषि प्रधान देश है तथा कृषकजन अधिकाश मे ग्रामो के निवासी हैं। यहाँ दो फसले हुआ करती हैं (१) रबी (२) खरीफ। खरीफ की फसल की जुताई और बुवाई आषाढ मास से प्रारम्भ होकर श्रावण मास के अन्त तक समाप्त हो जाया करती है। श्रावण मास की पूर्णिमा के अवसर पर कृषक जन कृषि कार्यों सम्बन्धी कार्यों से निवृत्ति पाकर आगे होने वाली फसल सम्बन्धी अन्न की प्राप्ति की आशा मे लगे हुए होकर मन की शान्ति का अनुभव किया करते हैं। अन्य

(शेष पृष्ठ ७ पर)

स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर हैदराबाद-धर्मयुद्ध

जनवरी, १९३९ में आर्यसमाज ने हैदराबाद में धार्मिक अधिकारो की प्राप्ति के लिए जो सत्याग्रह-संग्राम शुरू किया था, उसकी बड़ी लम्बी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। आर्यसमाज को विवश होकर आत्मरक्षा और वैदिक धर्म के प्रचार पर हैदराबाद की मुस्लिम सरकार द्वारा लगायी गयी अनेक पाबन्दियों और प्रतिबन्धो का निराकरण करने के लिए एव मुसलमानो द्वारा किये जाने वाले प्रचार और धर्मान्तरण के प्रयासो को रोकने के लिए यह सत्याग्रह करना आवश्यक हो गया था। पहले हैदराबाद के आर्यसमाजो ने तथा उसके बाद सार्वदेशिक सभा ने कानूनी एव शान्तिपूर्ण उपायो से आर्यसमाज पर लगाये गये प्रतिबन्धो को हटाने का प्रयास किया। इसमे सफलता न मिलने पर ही विवशतावश सत्याग्रह के उपाय का अवलम्बन किया। शान्तिपूर्ण उपायो से सघर्ष टालने के प्रयास सन् १९३२-३३ से आरम्भ हुए और अगले छह वर्ष तक चलते रहे। आर्यसमाज को अपना प्रचार-कार्य मुस्लिम प्रचारको के दूषित हिन्दू-विरोधी प्रचार का प्रतिवाद करने के लिए करना पड़ा। अन्ततोगत्वा आर्यसमाज की विजय हुई।

सार्वदेशिक सभा द्वारा हैदराबाद राज्य मे धार्मिक अधिकारो की प्राप्ति के लिए आठ मास तक चलाया जाने वाला शान्तिपूर्ण सत्याग्रह अपनी कई विशेषताओ के कारण आर्यसमाज के इतिहास मे असाधारण महत्त्व रखता है। इसकी पहली विशेषता यह थी कि अब तक आर्यसमाज ने इतने बड पैमाने पर शासन-सत्ता के साथ कोई सघर्ष नही किया था। पटियाला मे सन् १९०९ मे तथा धौलपुर मे सन १९१८ मे भी आर्यसमाज को स्थानीय शासको के साथ सघर्ष करने पडे थे किन्तु वे इनकी तुलना मे बहुत छोटे थे। यह सघर्ष उस समय भारत की सबसे बडी मुसलिम रियासत के साथ किया गया था और जब यह शुरू किया गया था, तो इसकी सफलता की बहुत ही कम सम्भावना समझी जाती थी। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री घनश्यामसिह गुप्त जब शिमला मे इस सत्याग्रह के बारे मे २०।७।३९ को ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि सर वट्रेण्ड ग्लेन्स से मिले थे तो उसने श्री गुप्त को कहा था— आप विश्व के सबसे बडे मुस्लिम राज्य के साथ लड रहे हैं। आप इसमे किस प्रकार सफलता की आशा कर सकते हैं?" आर्यसमाज ने धार्मिक अधिकारो के लिए निजाम जैसी कट्टर मुस्लिम शासन सत्ता से लोहा लिया। दस हजार से अधिक व्यक्तियो को सत्याग्रह मे जेल मे भेजकर एक नवीन कीर्तिमान स्थापित किया। इससे पहले वर्तमान भारत मे इतने बडे पैमाने पर धार्मिक अधिकारो के लिए कोई सघर्ष नही किया गया था।

दूसरी विशेषता इस धर्मयुद्ध के क्षेत्र की विशालता थी। यद्यपि इसे आर्यसमाज ने शुरू किया था, किन्तु इसमे भारत के सभी सम्प्रदायो और वर्गों तथा प्रान्तो ने सहयोग दिया। इसमे भाग लेने वाले न केवल आर्यसमाजी थे अपितु सारा हिन्दू समाज इसे सहायता दे रहा था। जैन सिख सनातनी, निष्पक्ष धर्मप्रेमी मुसलमान और ईसाई तक भी इस सत्याग्रह-सग्राम मे आर्यसमाज के साथ थे और उन्होने इस सत्याग्रह म भाग भी लिया था। इस सत्याग्रह मे भाग लेने वाले व्यक्ति न केवल भारत के सभी प्रान्तो स आए थे अपितु समुद्र-पार के सुदूर अफ्रीका महाद्वीप और बर्मा के भारतीयो ने भी इसम भाग लिया था।

तीसरी विशेषता बलिदानो की है। इस अहिंसक सत्याग्रह म जेल मे बलिदान होने वाले आर्यवीरो की सख्या तीस से भी अधिक है। अनेक आर्यवीर जेल के बन्दी-जीवन की यातनाओ के कारण इतने अधिक सशक्त और रोगजर्जर हो गए थे कि जेल से मुक्त होने के बाद शीघ्र ही उनका स्वर्गवास हो गया। यदि इनकी भी सत्याग्रही हुतात्मा वीरो म गणना की जाए तो शहीदो की सख्या ४० से अधिक होगी। इस सत्याग्रह के सचालन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा किया जाने वाला व्यय ८ लाख रुपये से अधिक था, और इतना ही व्यय सम्भवत अन्य व्यक्तियों तथा सस्थाओ द्वारा किया गया था। इस दृष्टि से यह सत्याग्रह न केवल आर्यसमाज के इतिहास में अपितु आधुनिक भारतीय इतिहास मे अद्वितीय स्थान रखता है।

सत्याग्रहियों की सख्या

हैदराबाद के धर्म-युद्ध की सफलता का बहुत बडा कारण विभिन्न प्रान्तो की आर्य जनता का इसमें पूरा सहयोग देना था। भारत के सभी प्रान्तो ने इसमें सत्याग्रही भेजे। निम्नलिखित तालिका में यह बताया गया है कि किस प्रदेश से कितने व्यक्ति सत्याग्रह करके जेल गए। यह सूची सत्याग्रह-केन्द्रो से प्राप्त सूचना के आधार पर सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित की गई है।

क्र० सं०	प्रान्त	सख्या
१	पजाब सीमा प्रान्त, कश्मीर तथा दिल्ली	३ १५७
२	सयुक्त प्रान्त	२ ०८५
३	राजस्थान मालवा	४४७
४	बिहार	३३१
५	बगाल	२०२
६	मध्य प्रान्त तथा बरार	५७५
७	बम्बई प्रान्त	२४१
८	सिन्ध	१९४
९	मद्रास	६६
१०	बर्मा	१५
११	असम	७
१२	निजाम राज्य	३ २४९
		१० ५६९

इससे यह स्पष्ट है कि सबसे अधिक सत्याग्रही हैदराबाद राज्य और इसके बाद पजाब सीमा प्रान्त दिल्ली तथा कश्मीर से आए थे। इन दोनो की सख्या आधे से अधिक थी। बर्मा तथा असम जैसे सुदूरवर्ती प्रान्तो ने भी सत्याग्रही भेजे थे। जिस समय सत्याग्रह की समाप्ति की घोषणा की गई थी उस समय ८।८।३९ से पहले २००० सत्याग्रही विभिन्न केन्द्रो में केन्द्रीय-समिति द्वारा सत्याग्रह के आदेशो की प्रतीक्षा मे थे। इस प्रकार इस धर्मयुद्ध म भाग लेने वालो की कुल सख्या १२ ५६९ थी।

हैदराबाद-धर्मयुद्ध मे शहीद हुए आर्यवीरो की नामावली

श्यामलाल जी महादेव जी रामा जी श्री परमानन्द।
माधवराव विष्णु भगवन्ता श्री स्वामी कल्याणानन्द।
स्वामी सत्यानन्द महाशय मलखाना श्री वेदप्रकाश।
धर्म प्रकाश रामनाथ जी पाडुरग श्री शान्तिप्रकाश।
पुरुषोत्तम जी ज्ञानी लक्ष्मणराव सुनहारा वेकटराव।
भक्त अरूडा मतुराम जी नन्हूसिह श्री गोविदराव॥
बदनसिह जी रतिराम मान्य सदाशिव ताराचन्द।
श्रीयुत छोटेलाल अशर्फीलाल तथा श्री फकीरचन्द।
माणिकचन्द भीमराव जी, महादेव जी अर्जनसिह।
सत्यनारायण बैजनाथ ब्रह्मचारी दयानन्द नरसिह।
राधाकृष्ण सरीखे निर्भय अमर हुए इन वीरो का।
स्मरण करे विजयोत्सव के दिन सब ही धीरो वीरो का॥

आर्य जगत के समाचार

आर्य वीर दल, यमुनापार दिल्ली

प्रगति पथ पर

आर्य वीर दल यमुना पार दिल्ली की विज्ञप्ति के अनुसार निम्न-लिखित शाखाएँ नियमित रूप से चल रही हैं—

☐ आर्य वीर दल घौण्डा की शाखा मे दस आर्य वीर श्री ललित-कुमार आय के सरक्षण मे उपस्थित हो रहे हैं।

☐ आर्य वीर दल ब्रह्मपुरी की शाखा मे ग्यारह आर्य वीर श्री० धर्मपाल आय के सरक्षण मे भाग ले रहे है।

☐ मौजपुर मे सायकाल की शाखा मे बारह आर्य वीर श्री ऋषि कपूर के सरक्षण म भाग ले रह है।

☐ मण्डावली की शाखा म बीस आर्य वीर श्री अतुल कुमार आर्य के सरक्षण म सम्मिलित हो रहे ह।

☐ बाबरपुर की सायकालीन शाखा मे दस आर्य वीर श्री रमेश कुमार आय के सरक्षण मे उपस्थित हो रहे है।

☐ रोहताश नगर (शिवाजी पाक) की शाखा मे दस आर्य वीर श्री अश्विनी कुमार आय के सरक्षण मे कार्य कर रहे है।

☐ अथला गाव की शाखा म ६० आय वीर श्री सुरेन्द्र सिह आय के सरक्षण मे भाग ल रह है।

आर्यनेता देवीदास आर्य को हत्या की धमकियाँ

आर्यसमाज गोविन्द नगर, कानपुर के मन्त्री जी से प्राप्त समाचार के अनुसार प्रसिद्ध महिला-उद्धारक आर्य नेता श्री देवीदास आर्य को एक बार पुन हत्या करने की धमकी भरा पत्र आतकवादियो द्वारा भेजा गया है। पत्र मे १५ अगस्त तक हत्या कर देने की धमकी दी गई है।

स्मरणीय है कि श्री आर्य को इस से पूर्व भी पाच धमकी भरे पत्र मिल चुके हैं। श्री आर्य का जीवन सदैव ही आतक के दौर से गुजरा है। आपने अभूत पूर्व साहस एव वीरता के साथ हजारो हिन्दु कन्याओ को विधर्मियो के चगुल से मुक्त कराया है।

आशा है, सरकार उनके अमूल्य जीवन की सुरक्षा में कोई कसर नही उठा रखगी।

आर्यसमाज अमर कालोनी में वेद सम्मेलन

दक्षिण दिल्ली आर्य महिला मण्डल के तत्त्वावधान मे आर्यसमाज अमर कालोनी नई दिल्ली मे श्रीमती प्रकाश सूद की अध्यक्षता म वेद सम्मेलन का आयोजन किया गया।

सम्मेलन मे आर्य विदुषी शकुन्तला आर्या शकुन्तला दीक्षित, सुशीला वेदप्रिया, कृष्णा चड्ढा आदि ने जीवन को वेदानुकूल बनाने का आह्वान किया।

इसी अवसर पर प्रान्तीय आय महिला सभा की नवनिर्वाचित पदाधिकारी बहनो का स्वागत किया गया।

निर्वाचन

आर्यसमाज विनय नगर नई दिल्ली

आर्यसमाज विनय नगर, वाई-ब्लाक सरोजिनी नगर नई दिल्ली २३ का वार्षिक निर्वाचन २३ जुलाई को निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधान डा० विजयकुमार सहगल
मन्त्री श्री सत्य स्वरूप
कोषाध्यक्ष मुलखराज कपूर

आर्यसमाज सैक्टर २२-ए चण्डीगढ़

के सन १९८९-९० के लिए वार्षिक चुनाव म श्री डा० इन्द्रराज शर्मा को सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित करके उन्हे ही अपनी समाज की अन्तरग सभा के गठन का अधिकार दिया गया।

आर्यसमाज सरस्वती विहार दिल्ली

का वार्षिक निर्वाचन डा० सत्यकाम वर्मा की अध्यक्षता म सम्पन्न हुआ जिसम निम्नलिखित अधिकारी चुने गए—

प्रधान श्री सोमराज पाहूजा
मन्त्री कृष्णदेव
कोषाध्यक्ष रामचरण सिंह

(पष्ठ ४ से आगे)

श्रावणी उपाकर्म

भी अपने अपने कार्यो म सलग्न होने पर भी वर्षा के कारण शीतलता आदि के अनुभव से एक अनिवचनीय आनन्द का अनुभूति किया करते हैं। एसे समय पर हम सभी जनो का यह कतव्य हो जाता है कि हम भी पूवकाल की ही भाँति एकत्रित कर वेदो के स्वाध्याय की अपनी प्राचीन परिपाटी का अनुसरण यदि पूर्ण रूप से न कर सके तो किसी न किसी अश म श्रावणी उपाकम अथवा ऋषि तपण के काय को अवश्य कर।

पहले जिस दिन से यह विशिष्ट वेद पारायण का कायक्रम प्रारम्भ किया जाया करता था तो उस समय इस कायक्रम को उपाकम नाम से व्यवहृत किया जाता था। इस का प्रारम्भ श्रावण मास की श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को हुआ करता था।

अब आगामी अगस्त मास की १७।८।८९ को श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा पडगी। उस ही दिन हम श्रावणी उपाकर्म को करेंगे। उस दिन से हम सभी जितने दिन भी वद का स्वध्याय एव सत्सग कर सक अवश्य कर।

वेद के स्वाध्याय के किए जाने से ऋषियो का भी तपण होगा। अत हमारा ऋषि तपण सम्बन्धी कायक्रम भी साथ ही साथ चलता रहेगा। इसी कारण उपाकम को ऋषि तपण का भी नाम दे दिया गया जो कि अपने शाब्दिक अथ म पूण हैं।

श्रावणी उपाकर्म की क पद्धति है जो कि हम अ य पत्र पद्धति अथवा वैदिक पव पद्धति नामक पुस्तक म देखने को उपलब्ध हो सकती है। हम सभी आय बन्धु उस विशिष्ट विधि के अनुसार उपाकम की विधि को पूण कर और साथ ही ऋषि तपण सम्बन्धी अपने लक्ष्य की पूर्ति भी कर।

मुझे आशा है कि आयबन्धु मेरे उपयुक्त अनुरोध को स्वीकार कर श्रावणी उपाकर्म को अवश्य करग तथा कुछ नही तो कम से कम वेद प्रचार सप्ताह पर्यन्त वेद के मन्त्रो का पारायण कर ऋषि तर्पण की भी पूर्ति अवश्य करेंगे। ●

श्रीमती सोनादेवी दिवगत

सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के भूतपूव म त्री आयसमाज चावडी बाजार (वतमान आयसमाज दीवान हाल दिल्ली) के भूतपूव प्रधान स्वतन्त्रता सेनानी तथा प्रख्यात पत्रकार स्वर्गीय ला० देशबन्धु जी गुप्त की धमपत्नी श्रीमती सोनादेवी जी का देहान्त रविवार दिनाक ६ अगस्त की प्रात को हो गया।

८६ वर्षीय श्रीमती सोनादेवी जी कट्टर वैदिक विचारो मे ओत प्रोत धमपरायणा देवी थी। स्वतन्त्रता आन्दोलन मे भी आपने अपने पति का अनुसरण करते हुए सक्रिय भाग लिया था तथा अनेक बार आन्दोलन करते हुए जेल गयी।

आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री विश्व बन्धु गुप्त समद सदस्य आयसमाज हनुमान रोड के वरिष्ठ सदस्य तथा प्रख्यात पत्रकार है।

श्रीमती सोना देवी जी के निधन का समाचार सुनते ही आयसमाज दीवान हाल मे शोकसभा हुई जिसमे स्वर्गीय देवी के व्यक्तित्व एव कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए भावभीनी श्रद्धाजली दी गयी।

मध्याह्न मे स्व० माता जी का निगम बोध घाट पर वैदिक रीत्यानुसार अतिम सस्कार किया गया जिसमे अनेक केन्द्रीय मन्त्रियो राजनतिक नेताओ के अतिरिक्त स्वामी आनन्द बोध सरस्वती (प्रधान सावदेशिक सभा) डा० धमपाल आर्य (प्रधान दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा) श्री सूयदेव (प्रधान—आयसमाज दीवान हाल) स्वामी स्वरूपानद सरस्वती आदि ने उपस्थित होकर अपनी मूक श्रद्धाजली प्रस्तुत की। ●

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Post in N D P S O on 10, 11-8-89 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५१ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३६

वेदप्रचार सप्ताह बृहद् यज्ञों से सुवासित करें

समस्त आर्य जगत् से वेद प्रवचनों के आयोजनों की सूचनाएँ

आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली में वेदप्रचार सप्ताह पर विशेष कार्यक्रम :

१७ अगस्त से २४ अगस्त तक
प्रतिदिन प्रात ७ ३० बजे से यजुर्वेद पारायण यज्ञ तथा भजनोपदेश
यज्ञ के ब्रह्मा — प० यशपाल सुधांशु
प्रथम दिवस दिनाक १७ अगस्त
यज्ञ तथा सामूहिक यज्ञोपवीत के पश्चात श्रावणी उपाकर्म
संस्कृत दिवस पर विशेष व्याख्यान।

- हैदराबाद बलिदानियों के प्रति श्रद्धाजलि
- हैदराबाद-सत्याग्रहियों का सम्मान

अध्यक्षता **स्वामी आनन्दबोध सरस्वती** (प्रधान सार्वदेशिक सभा)
प्रमुख वक्ता प० सच्चिदानन्द शास्त्री
प० क्षितीश वेदालकार
प० ब्रह्मदत्त स्नातक

वेद-कथा

दिनाक १८ अगस्त से २३ अगस्त तक प्रतिदिन रात्रि म ८ बजे से ९ बजे तक वैदिक विद्वान तथा प्रख्यात पत्रकार।

प० क्षितीश वेदालकार वेद प्रवचन करेगे। प्रवचन से आधा घण्टा पूर्व श्री जगदीशचन्द्र सगीत शास्त्री भजनोपदेश करेगे।

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

दिनाक २४ अगस्त को प्रात यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प० शिवकुमार शास्त्री (भू०पू० ससद सदस्य) डा० वाचस्पति उपाध्याय डा० धर्मपाल आर्य योगिराज श्रीकृष्ण के जीवन चरित पर विशेष व्याख्यान देगे। □

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस, गली न०१७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५१

वर्ष १२ अंक ४१ | रविवार २० अगस्त १९८९ | श्रावण सम्वत २०४६ विक्रमी | दयानन्दाब्द १६५ | सृष्टि सम्वत १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश में ५० पौंड १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

२४ अगस्त १९८९ को योगिराज श्रीकृष्ण जन्मोत्सव पर

समस्त आर्य मंदिरों में यज्ञ एवं विशेष कार्यक्रम

मुख्य समारोह आर्यसमाज दीवान हाल मे

सूचना प्रसारण एव संसदीय कार्य मन्त्री श्री हरिकिशन लाल भगत मुख्य अतिथि होंगे।

महाभारत के अध्ययन से हमे योगिराज श्रीकृष्ण के चरित्र मे आर्य जीवन का सर्वांगीण विकास दृष्टिगोचर होता है। जीवन का ऐसा कोई भी क्षेत्र नही जहां उन्हे सफलता न प्राप्त हुई हो। वे एक आदर्श विद्यार्थी हैं एक आदर्श गृहस्थ हैं एक आदर्श राजनीतिज्ञ हैं एक आदर्श राजा हैं एक आदर्श योद्धा हैं एक आदर्श मित्र हैं एक आदर्श योगी है। वह कौन सा सद्गुण है जो कोटि कोटि भारतीय-जनो के नायक महाभारत के श्री कृष्ण मे दृष्टिगोचर नही होता।

आज एक बार फिर भारतवर्ष को महाभारत के कृष्ण की आवश्यकता है पुराणो के कृष्ण की नही। ऐसे कृष्ण की जो चक्रधर हो गदाधर हो असिधर हो मुरलीधर नही। उस कृष्ण की जो व्यामोह मे पडे अर्जुन को उसके कर्त्तव्यो की याद दिला सके। वह कृष्ण जो जागृति का शख फूक सके और दे सके एक नया उदबोधन इस सोये हुए राष्ट्र को।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश भर की आर्यसमाजो को निर्देश दिया है आगामी २४ अगस्त १९८९ को योगिराज श्री कृष्ण जन्मोत्सव के पर्व पर देश के प्रत्येक नगर और गाव के आर्य समाज मदिरो मे बृहद यज्ञो का आयोजन किया जाय। इस अवसर पर श्रीकृष्ण के पावन चरित्र से सम्बन्धित विशेष व्याख्यानो का आयोजन किया जाय जिससे जन साधारण मे व्याप्त भ्रातिया दूर हो सके।

स्वामी जी ने इस अवसर पर विशेष रूप से हरिजनो तथा दलितो को आमन्त्रित कर उन्हे सामूहिक यज्ञोपवीत देने और यजमान बनाने की प्रेरणा की है। □

बृहस्पतिवार, दिनाक २४ अगस्त, १९८९ को

आर्यसमाज मंदिर दीवानहाल में

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

वेदप्रचार सप्ताह के अन्तर्गत चल रहे बृहद यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात प्रात १० बजे योगिराज श्रीकृष्ण जन्मोत्सव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

की अध्यक्षता मे बडे समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। इस अवसर पर केन्द्रीय सूचना प्रसारण तथा ससदीय कार्य मन्त्री

श्री हरिकिशन लाल भगत

मुख्य अतिथि होगे। प्रमुख वक्ताओ मे प० शिवकुमार शास्त्री (भू०पू० ससद सदस्य), डा० वाचस्पति उपाध्याय डा० धर्मपाल आर्य (प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि) होगे।

भारी सख्या मे पधारे।

बने सुराज्य, स्वराज्य हमारा

अमर शहीदो की आशाए ऋषि मुनियो की अभिलाषाये।
हो परिपूर्ण त्वरित गति से अतिलुठित हो तमपूर्ण निशायें।।
खिले नवल आशा की कलिका सुरभित हो उद्यान हमारा।
बने सुराज्य स्वराज्य हमारा।।

वेदो का पथ हम अपनाए दानवता की वृत्ति भगाए।
मातृभूमि हो समृद्धिशाली शुभ्रकीर्ति मे सम्पूर्ण दिशाए।।
मानवता पूरित हो जन जन बढ प्रगति पथ पर राष्ट्र हमारा।
बने सुराज्य स्वराज्य हमारा।।

राजनीति से स्वार्थ हटाए देशभक्ति का स्रोत बहाए।
स्वतन्त्रता-सन्देश विश्व को देकर ओ३म ध्वजा लहराए।।
धरती का फिर गुरु कहाए प्यारा भारतवर्ष हमारा।
बने सुराज्य स्वराज्य हमारा।।

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

इमां भूमिं पृथिवीं ब्रह्मचारी भिक्षामाजभार प्रथमो दिवं च।
ते कृत्वा समिधावुपास्ते तयोरार्पिता भुवनानि विश्वा॥

अथर्व० काण्ड ११ सूक्त ५ मन्त्र ९।

सब दानो में ब्रह्मविद्या का दान ही श्रेष्ठ है। कपड़े तड़ागादि वस्त्र भोजन दि सब दानो मे ब्रह्मदान ही उत्तम है। मनुस्मृति मे कहा है—

सर्वेषामेव दानाना
ब्रह्मदान विशिष्यते।
वार्यन्नगो मही वास
स्तिलकाञ्चन सर्पिषाम्॥

जल अन्न गौ भूमि वस्त्र तिल सुवर्ण घृत दानो मे ब्रह्म ज्ञान [illegible] अधिक विशिष्ट है [illegible] वेद का पढ़ाना मे [illegible] के [illegible] फल [illegible] होता [illegible] की ही [illegible] ब्रह्मविद्या [illegible] और उस ब्रह्मविद्या का शोधा [illegible] सकते है [illegible] के [illegible] आचार्य [illegible] के लिए पहले स्वाभाविक गुण यह होना [illegible] निष्कामता की परा [illegible] पर पहुच जाय धन कमाने [illegible] आचार्य नही बन [illegible] भी आचार्य [illegible] सकते [illegible] शूद्र का ताक [illegible] है। आचार्य बनने के लिए ब्राह्मण का [illegible] अधिकार है। और ब्राह्मण को वेद मे शरीर के मुख भाग से उपमा दी है। उस भाग मे प्राण है जो सारे शरीर को अपने दान से पुष्ट रखता है। प्राण की महिमा इसी लिए बहुत अधिक की गई है। उपनिषदो से आगे बढकर अथर्ववेद तक मे प्राण की बड़ी प्रशंसा है। यहाँ तक कहा है कि सारे ब्रह्माण्ड का आधार प्राण ही है—

प्राणस्येद वशे सर्व
त्रिदिवे यत्प्रतिष्ठितम्।
मातेव पुत्रान् रक्षस्व
श्रीश्च प्रज्ञां च विधेहि न इति॥

माता जैसे सन्तान की रक्षा करती है वैसे ही प्राण शरीर के सब अंगो तथा प्रत्यंगो की रक्षा करता है। इसी प्रकार मनुष्य समाज रूपी पुरुष का बनावट मे ब्राह्मण ही सब का आधार है। ब्राह्मण ही आचार्य हो सकता है। ब्राह्मण यद्यपि दूसरो की कमाई का अन्न जल ग्रहण कर के पलता है। तथापि मनुस्मृति में सब कुछ (जो भी संसार मे है) ब्राह्मण का ही बतलाया है सर्वस्व ब्राह्मणस्येदं यत्किञ्चिज्जगतीगतम् और फिर कहा है

स्वमेव ब्राह्मणो भुङ्क्ते
स्व वस्ते स्व ददाति च।
आनृशंस्याद् ब्राह्मणस्य
भुञ्जते हीतरे जनाः॥

ब्राह्मण भोजन करे पहिरे वा [illegible] अपना [illegible] है। दूसरे लोग [illegible] जनादि करते है [illegible] केवल ब्राह्मण की कृपा है।

सारा संसार ब्राह्मण के दान मे [illegible] पलता है। उस दानशील श्रेष्ठ [illegible] आचार्य मे ब्रह्मचारी पहला [illegible] विस्तृत भूमि का ज्ञान उपलब्ध करता है। [illegible] मे लेकर पृथिवीपर्यन्त का ज्ञान आचार्य से ले लेता है। [illegible] एक समिधा हुई। परन्तु एक हाथ से ताली नही बजती। [illegible] की पूर्ति नही होती। पृथिवी प्रथम है इन्द्रिय ग्राह्य है [illegible] उसके अन्दर के [illegible] प्रकाश के समझ मे नही आते। तब आचार्य ब्रह्मचारी को परोक्ष ज्ञान देता है। पृथिवी से उसको द्युलोक मे ले जाता है। भौतिक सूर्य से लेकर आत्मा तक को प्रकाश देने वाला प्रकाश स्वरूप तक ले जाता हुआ आचार्य शिष्य के लिए भिक्षा पूरी कर देता है। इस परिशिष्ट दान को प्राप्त कर के ब्रह्मचारी समित्पाणि होकर गुरु के दरबार की ओर चलता है क्योकि आचार्य से मिली भिक्षा भी निन्दनीय नही—वह भी सराहनीय है कल्याणकारी है। परन्तु स पूर्वेषामपि गुरु कालेनानवच्छेदात उस गुरुओ के भी गुरु पूर्व आचार्यो के भी आचार्य जिसके लिए भूत और भविष्यत कोई अस्तित्व नही रखता—उस परम गुरु से भिक्षा प्राप्त किए बिना ब्रह्मचारी अपने परम उद्देश्य को प्राप्त नही होता। आचार्य से प्राप्त किया हुआ दान उसे अगले दान का अधिकारी मात्र बनाता है। पृथिवी और द्यौ के ज्ञान रूपी दो समिधाओ का श्रद्धा जली रूपी दोनो हाथो मे लेकर ब्रह्मचारी उस परम तत्व के समीप पहुँचता है। इन्ही दोनो समिधाओ पर सब लोक आश्रित हैं। वहा पर पहुच कर ब्रह्मचारी सब देवो प्रकाशको ब्रह्माण्ड के चलाने वाली शक्तियो को एक ही वीणा की तार बनी हुई एक ही स्वर मे अलापते सुनता है। वहा पहुच कर द्वन्द्व मे मुक्त होता है और अपने आचार्य के लिए सच्चे धन्यवाद का भाव उसके हृदय मे उत्पन्न होता है।

संसार सच्चे आचार्यो के बिना पीड़ित हो रहा है। उसके अशान्त हृदय सच्चे पथदर्शको के बिना व्याकुल हो रहा है परन्तु उधर से आनन्दजनक शब्द भी सुनाई देना है। शिकायत यह है कि अच्छे शिष्य नहीं मिलते। किन्तु शिकायत करने वाले यह भूल जाते हैं कि सच्चे आचार्य दुर्लभ हो गए है। जिस वेद के उपदेश ऊपर दिया गया है। उस वेद के प्रचार [illegible] जिस देश मे [illegible] और जिस के आचार्यो के चरणो में बैठ कर सदाचार की शिक्षा लेने अन्य देशो के लोग आते थे उसी देश मे जब आचार्यो का अभाव है तो और किसी स्थान से क्या आशा हो सकती है। नवीन ट्रेनिंग कालेज ऐसे आचार्य उत्पन्न करने में अशक्त हैं। जहा दिन रात आचार्यों के वेतन बढ़ाने का प्रश्न उठ कर बनिया का सौदा किया जाता है उन शिक्षणालयो से आशा रखना व्यर्थ है। हे परम गुरो! तुम्ही अपने शिक्षणालय के अन्दर इस देव निर्मित भूमि के विद्वानो को खींच लो जिस से वे सांसारिक कामनाओ पर विजय प्राप्त कर और ब्रह्मविद्या का दान दने की शक्ति धारण कर के विस्तृत भूमि और प्रकाश की शक्तियो की समिधा ब्रह्मचारियो के हाथो मे देकर उन्हे विविध शक्तियो के एकत्र करने के लिए केन्द्र बना सके।

शब्दार्थ

(ब्रह्मचारी प्रथम) ब्रह्मचारी पहले (इमाम पथिवी भूमि भिक्षाम आजभार) इस विस्तृत भूमि को शिक्षा मे आहरण करता है (दिव च) फिर द्युलोक को। और (समिधौ कृत्वा उपासने) उन दानो को समिधा बना कर उपासना करता है। (तयो विश्वा भुवनानि अर्पिता) उन दानो में सब लोक आश्रित है। ☐

आत्म निरीक्षण

आ त्म नच त्मा अनिमिष ना अहृणा बृहद देवासो अमृतत्वमानशु।
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवा वर्ष्माणं वसते स्वस्तये।

निशि वासर कर्मशील रहकर जो नहा समय का खोते हैं।
जो अपलक आत्म निरीक्षक है जन वही प्रतिष्ठित होते हैं॥
वे नही प्रतीक्षा करते हैं
निज स्वयं समीक्षा करते है
जो आत्म निरीक्षण के द्वारा
निज कर्म परीक्षा करते है।
हर क्षण रहते जो सावधान जो नही प्रमादी होते है।
जो अपलक आत्म निरीक्षक हैं जन वही प्रतिष्ठित होते है॥
विद्वान वही बन जाते है
उत्कर्ष महत्ता पाते है
अमरत्व प्राप्त कर के मानव
जो ज्योति रथी बन जाते हैं।
पग पग प्रकाश अपना कर के निज धवल ध्येय को धोते हैं।
जो अपलक आत्म निरीक्षक हैं जन वही प्रतिष्ठित होते हैं॥
ज्योतिष्मान रम्य रथ पाकर
अपने सारे पाप हटा कर
अविनाशी प्रज्ञा के द्वारा
बसते दिव्य लोक में जाकर।
नित्य कर के कल्याण हमारा कमनीय यही प्रिय होते हैं।
जो अपलक आत्म निरीक्षक हैं जन वही प्रतिष्ठित होते हैं।

—देवनारायण भारद्वाज

ओ३म्
आर्य सन्देश

योगीराज श्रीकृष्ण

देखो ! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है । उन का गुण कर्म-स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषो के सदृश है । जिस मे कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण-पर्यन्त बुरा कुछ भी किया हो ऐसा नही लिखा और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं। दूध दही, मक्खन आदि की चोरी लगाई और कुब्जा दासी से समागम, पर स्त्रियो से रास मंडल क्रीडा आदि मिथ्या दोष श्री कृष्ण जी मे लगाए है । इस को पढ-पढा सुन-सुना के अन्य मत वाले श्रीकृष्ण जी की बहुत-सी निन्दा करते हैं । जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्ण जी सदृश महात्माओ की झूठी निन्दा क्योकर होती ?"

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

योगीराज श्रीकृष्ण

योगीराज कृष्ण एक ऐतिहासिक महापुरुष थे परन्तु उनके जीवन के साथ इतने पौराणिक आख्यान जुड गए है कि यह जान पाना कठिन हो गया है कि उनके जीवन व चरित्र से सबधित किन उपादानो को सत्य माना जाए । हम उन्हे वीर योद्धा, कूट-राजनीतिज्ञ और योगीराज माने अथवा चोर जार शिखामणि । तथापि जो तथ्य उनके जीवन से सम्बन्धित प्राप्त है उनके आधार पर उस महापुरुष के चरित्र का सही अर्थो मे आकलन कठिन न होगा ।

बचपन मे श्रीकृष्ण आदर्श बलवान् थे । उस समय उन्होने केवल शरीर बल से ही हिसक जन्तुओ से वृन्दावन की रक्षा की थी और कस के मल्लादि को भी मार गिराया था । गौ चराने के समय ग्वालो के साथ खेल कूद और कसरत कर उन्होने अपने शारीरिक बल की वृद्धि कर ली थी ।

अस्त्र शस्त्र की शिक्षा मिलने पर वह क्षत्रिय समाज मे सर्वश्रेष्ठ वीर थे । उन्हे कभी कोई परास्त न कर सका । कस जरासघ शिशुपाल आदि तत्कालीन प्रधान योद्धाओ से तथा काशी कलिंग, गाधार आदि राजाओ से वे लडे और सब को उन्होने हराया । सात्यकि और अभिमन्यु उनके शिष्य थे । वे दोनो भी सहज हारने वाले न थे । स्वयम् अर्जुन ने भी युद्ध की बारीकिया उन से सीखी थी ।

केवल शारीरिक बल और शिक्षा पर जो रण-पटुता निर्भर है, वह सामान्य सैनिक मे भी हो सकती है । सेनापतित्व ही योद्धा का वास्तविक गुण है । महाभारत मे श्रीकृष्ण के अतिरिक्त एक भी अच्छे सेनापति का पता नही लगता । श्रीकृष्ण के सेनापतित्व का विशेष परिचय जरासघ युद्ध मे मिलता है । उन्होने अपनी मुट्ठी भर यादव सेना से जरासघ का सामना करना असाध्य समझ कर मथुरा छोडना, नया नगर बसाने के लिए द्वारिका द्वीप का चुनना और उस के सामने की रैवतक पर्वत माला मे दुर्भेद्य-दुर्ग निर्माण करना जिस रण नीति का परिचायक है, वह उस समय के और किसी क्षत्रिय मे नही देखी जाती है ।

कृष्ण की ज्ञानार्जनी वृत्तिया सब ही विकास की पराकाष्ठा को पहुची हुई थी । वे अद्वितीय वेदज्ञ थे । भीष्म ने उन्हे अर्घ प्रदान करने का एक कारण यह भी बताया था ।

कृष्ण ने वेद प्रतिपादित उन्नत, सर्वलोक हितकारी सब लोगो के आचरण योग्य धर्म का प्रसार किया । गीता कृष्ण की अनुपम देन है ।

श्रीकृष्ण,मन से श्रेष्ठ और माननीय राजनीतिज्ञ थे । इसी से युधिष्ठिर ने वेद व्यास के कहने पर भी श्रीकृष्ण से परामर्श बिना राजसूय यज्ञ मे हाथ नही लगाया । स्वेच्छाचारी यादव और कृष्ण की आज्ञा मे चलने वाले पाण्डव दोनो ही उन से पूछे बिना कुछ नही करते थे । जरासघ को मार कर उस की कैद से राजाओ का छुडाना उन्नत राजनीति का अति सुन्दर उदाहरण है । यह साम्राज्य स्थापना का बडा सहज और परमोचित उपाय है । धर्म राज्य स्थापना के पश्चात् उस के शासन के हेतु भीष्म से राज्य व्यवस्था ठीक कराना राजनीतिज्ञता का दूसरा बडा प्रशसनीय उदाहरण है ।

कृष्ण की सब कार्यकारिणी वृत्तिया चरम सीमा तक विकसित हुई थी । उन का साहस उन की फुर्ती और तत्परता अलौकिक थी । उन का धर्म तथा सत्यता अचल थी । स्थान स्थान पर उन के शौर्य दयालुता और प्रीति का वर्णन मिलता है । वे शान्ति के लिए दृढता के साथ प्रयत्न करते थे और इस के लिए वे दृढ-प्रतिज्ञ थे । वे सब के हितैषी थे । केवल मनुष्यो पर ही नही गोवत्सादि जीव जन्तुओ पर भी वह दया करते थे । वे स्वजन प्रिय थे । परलोक हित के लिए दुष्टाचारी स्वजनो का विनाश करने मे कुठित नही होते थे । कस उन का मामा था । शिशुपाल उन की फूफी का बेटा था । उन्होने मामा और भाई का लिहाज न कर दोनो को ही दण्ड दिया । जब यादव लोग सुरापायी हो उद्दण्ड हो गए थे । उन्होने उन को भी अछूता न छोडा ।

श्रीकृष्ण अपराजेय अपराजित, विशुद्ध पुण्यमय, प्रेममय, दयामय दृढकर्मी धर्मात्मा वेदज्ञ, नीतिज्ञ, धर्मज्ञ, लोकहितैषी न्यायशील क्षमाशील निर्भय निरहकार योगी और तपस्वी थे । वे मानुषी शक्ति से काम करते थे परन्तु उन मे देवत्व अधिक था ।

●

श्रावणी-उपाकर्म

श्रावण पूर्णिमा शुक्ला को है पर्व आता श्रावणी
वेद के स्वाध्याय का है पर्व अनुपम श्रावणी ।
आर्य पर्वो मे प्रथम मूर्धन्य इसका स्थान है,
क्योकि श्रुति के श्रवण से ही मनुज का कल्याण है ।

वेद का पढना पढाना श्रवण श्रावण धर्म है,
इस नियम पालन मे ही होता सफल सत्कर्म है ।
काल वर्षा का समझ ऋषियो की ऐसी रीति थी,
अभ्युदय हो लोक मगल विश्व का यो प्रीति थी ।

प्रवचनो से उनके गृह गृह अति मधुर गजित हुआ,
मन का सयम दूर होकर कलुष सब खडित हुआ ।
यज्ञ प्रभु आराधना मे वायु मडल शुद्ध हो
श्रुति मधुर मन्त्रो से जल थल और नभ पूरित हुआ ।

मत्र सावित्री का पढ आचार्य ने शिष्यो को निज
यज्ञ सूत्र कराया धारण भावना पावन सहित ।
इस तरह भारत हमारा विश्व का सिर मौर था
देश ऐसा भूमि पर कोई न जग मे और था ।

आज भी ऐसी प्रथा फिर पुण्य वसुधा पर चले
"शात' इस शुभ कर्म से सब आपदा सकट टले ।
शुद्ध परिपाटी गुरुकुलो की सदा चलती रहे
जिससे आर्यावर्त की भू फूलती फलती रहे ।

—सत्यभूषण शान्त
वेदालकार, एम०ए०

घृणा-द्वेषरहित दायित्व वहन में तेजस्विता

—देवनारायण भारद्वाज

कक्षा मे जितने छात्र शिक्षा पाते हैं, उन मे से कुछ ही होने हैं, जिन्हे अनुत्तीर्ण होकर मित्रो की घृणा का पात्र बनना पडता है, इन से भी कम उन छात्रो की सख्या होती है, जो प्रथम श्रेणी विशेष योग्यता या स्वर्णपदक प्राप्त कर उत्तीर्ण होते हैं। बडी सख्या उन छात्रो की होती है, जो द्वितीय तृतीय श्रेणी मे सही - उत्तीर्ण हो जाते हैं। ये अधिक प्रशसा नही पाते तो घृणा के पात्र भी नही बनते हैं और कार्य क्षेत्र मे उनरकर सफल भी हो जाते हैं। ये मध्यम श्रेणी के छात्र अनुत्तीण सहपाठियो से सावधानी और प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण मित्रो से आदर्श ग्रहण कर सकते हैं।

समाज म ऐसे व्यक्ति भी होने हैं, जो अपने कार्य क्षेत्र मे बिना पुरुषार्थ किए भ्रष्ट विधियो से धन एकत्र कर लेते है कोठी बगले, कार-सेवक सब रख लेते हैं, और अपना ऊँचा स्थान बना लेते हैं, और न्याय के दण्ड मे बचे रहते हैं। पर वे सामान्य जन की घृणा से नही बच सकते हैं और प्रभु न्याय का दण्ड प्रहार जब होगा तब तो दण्ड भी भोगना पडेगा, अपराध की तो स्मृति तक न होगी। प्रस्तुत मन्त्र इस दिशा मे हमे सचेत करता है—

त्व नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्
देवस्य हेतोऽवयासिसीष्ठा ।
यजिष्ठो वह्नितम शोशुचानो
विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत ॥
ऋ म ४ सू १ म ४

पदार्थ—हे (अग्ने) प्रकाश स्वरूप प्रभो ! (त्व) आप (न) हमारे (वरुणस्य) श्रेष्ठ पुरुषो के (विद्वान) विद्यायुक्त या जानने वालो के (देवस्य) दिव्य गुण वालो के (हेत) घृणा-अप्रसन्नता-क्रोध को (अवयासिसीष्ठा) दूर करो। (यजिष्ठ) मैं यज्ञ या शुभ कर्म करने वालो मे श्रेष्ठ (वह्नितम) कार्यभार को वहन करते मे समर्थ हवि आदि उपयोगी पदार्थों को पहुँचाने मे सक्षम (शोशुचान) अत्यन्त तेजस्वी होऊँ। (अस्मत) हम से (विश्वा) सम्पूर्ण द्वेषासि) द्वेष दुर्गुणो को (प्र) भलीभाति (मुमुग्धि) मुक्त करो—परे हटाओ।

मन्त्र मे अग्नि प्रभु से प्रार्थना की गई है, जो अन्दर ही अन्दर व्याप्त रह कर हमारी सभो अच्छाई बुराई को जानता है, और वही है जो कार्य वहन मे तेजस्वी है। हम यज्ञ मे हवि अर्पित करते, उसे अग्नि ही सूक्ष्म गुणाग्र कर के वायुमण्डल मे दूर दूर तक पहुँचाता है। पोषक पदार्थों की शक्ति बढा देता है और यही अग्नि दूषित पदार्थों को भस्म कर के विनष्ट कर देता है। मन्त्र त्रिविध कार्यक्रम प्रस्तुत करता है। प्रथम—हम अपने श्रेष्ठ विद्वान् देव-जनो के अनादर से बचे, द्वितीय, इस अनादर से बचने का एकमात्र मार्ग है कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्तियो के पदचिह्नो पर चल कर अपने दायित्व वहन मे तेजस्विता लाये, और तृतीय, यह तेजस्विता भी सतुलित हो जिस से हम किसी के द्वेष के कारण न बन जाय।

मन्त्र मे वरुण, विद्वान् व देव इन तीनो शब्दो का अन्तर्निहित भाव समान होते हुए भी यहा पर पृथक् पृथक प्रयोजन प्रकट होता है। वरुण वे व्यक्ति हैं जिन्हे हम किन्ही गुणो के कारण श्रेष्ठ व अनुकरणीय मानते हैं, जैसे किसी कवि, लेखक, खिलाडी या अभिनेता के हम फैन प्रशमक बन जाये या ऐसे ही समाज के अन्य श्रेष्ठ पुरुष जन-नायक अध्यापक या शासक आदि। विद्वान् वे सज्जन जो हमे साधारण रूप से पडोसी, सहपाठी, सहकर्मी, नगर निवासी या अन्य किसी स्थिति मे जानते हैं और देव पुरुष वे जो हमारे माता पिता गुरु आदि सम्बन्ध कोटि मे आते है। हम को पूरी सतर्कता से काम लकर इनके अनादर-घृणा से बचना चाहिए। हम ऐसा कार्य न कर। जिस से ये हम से घृणा करने लग या हम इनका अनादर करने लग।

सीधी सी बात है, यदि हम अपने वरुण या श्रष्ठ पुरुष को घृणा से बचना और उसके प्यार को पाना चाहते है तो उसके नियम नियन्त्रण को मान कर अपने कार्य का निर्वाह करना होगा। अच्छे मनोरम उद्यान मे हम घूमने जाते हैं, उसकी गन्ध भरी सुहानी वायु के स्पर्श के साथ-साथ हम फूल तोडने लगते हैं तो उस उद्यानपति ही क्या माली की घृणा के पात्र बन जाते हैं। राजा जनक के दरबार में आठ स्थानो से टेढे अष्टावक्र गए तो अधिकाश दरबारी उन्हे देखकर हँसने लगे, क्योकि उनका शरीर ही ऐसा कुछ विचित्र था। जब सब की हँसी थम गई तो अष्टावक्र स्वय जोर से हसने लगे और जनक को बाद मे उसका कारण भी बता दिया कि आप लोग केवल शरीर के चमडे को देखने भर क्षमता रखते हैं—विद्वान् होकर आत्मा मे झाकने की दक्षता नही है।

साधारण जानने वाले व्यक्तियो के अनादर से भी हमे बचना पडता है। उच्च मान्य व्यक्ति जैसे अधिकारी, अध्यापक, नेता, सन्त जिन्हे अधिकाश लोग जानते हैं - भले वे सबको न जानते हो, ऐसे कार्यों से बचते है जिन से कोई उनकी ओर अगुली उठा सके। बाजार के ठेले पर खडे होकर चाट खाने मे भी इन को सकोच होगा। जब कि किसी महानगर के अपरिचित क्षेत्रो मे वे खुले आम चाट खा सकते हैं। अमेरिका के दार्शनिक धनपति फोर्ड को किसी समारोह मे मुख्य अतिथि बनाये जाने का निमन्त्रण मिला। उनके सचिव ने याद दिलाया कृपया इस फटे कोट के स्थान पर एक नया कोट सिलवा ले आपको समारोह मे मुख्य अतिथि का स्थान ग्रहण करना है। उन्होने कह दिया फटे कोट से क्या अन्तर पडना है वहा तो सब जानते है कि मैं फोर्ड हूँ। कुछ दिन बाद उन्हे अपने अपने उद्योग सम्बन्धी कार्य से विदेश जाना था, तो फिर सचिव ने स्मरण दिलाया आपको विदेश जाना है अब तो कोट बदलवा ले तो उन्होने कह दिया - वहा कौन जानेगा कि मैं फोर्ड हू— फटे कोट से क्या अन्तर पडना।

सिद्धपुर के मेले मे बालक मूल शकर का वैरागी के वेश मे उनके पिता के परिचित ग्राम निवासी ने पहचान लिया और पिता को जाकर बता दिया परिणामस्वरूप वे पकडे गए। ये तो मूलशकर का साहस था जो दुबारा यत्न कर के भाग लिए और दयानन्द बन कर जगत्-उद्धार के माध्यम बने। अपने परिजन सम्बन्धी माता-पिता शिक्षक आदि के अनादर से हम उसी समय बच सकते है, जब हम उनकी आज्ञा इच्छा के अनुरूप ऊँचा उठने मे सफल हो जायें। स्वामी श्रद्धानन्द के पिता घोर पौराणिक भक्त थे और मूर्ति पूजा न करने के कारण मुन्शीराम (स्वा० श्रद्धानन्द) को नास्तिक समझते थे। एक दिन श्रद्धानन्द की पुस्तको मे से एक पुस्तक, सत्यार्थप्रकाश, पच महायज्ञ-[illegible]-कर वे श्रद्धानन्द के समर्थक बन गए और सच्चे ईश्वर की सत्ता समझकर सन्तुष्ट हो गए।

एक निर्धन पिता ने पुत्र को बडी कठिनाई से पढा कर उसे योग्य बनाया और एक अच्छी नौकरी उसे मिल गई। कुछ दिन बाद डिब्बे मे घी लेकर पिता अपने पुत्र के कार्यालय मे ही उस से मिलने चला गया, सोचा वही उसे घी दे आयेंगे। पिता ने अपने पुत्र का नाम लेकर उसके बैठने का ठिकाना किसी से पूछा—उसने उनको वहा पहुँचा दिया। पुत्र अपने मित्रो को घेरे बठे बातें कर रहे थे। पिता को देखकर सकपका गए और मित्रो को अपना पिता बताने के स्थान पर एक ग्राम निवासी बता दिया। ऐसे पुत्र जो अपने पूर्वज अग्रज का अनादर करते हैं वे अवश्य उनकी घृणा का पात्र बनेंगे।

हम अपने अग्रजो का आदर कर के तथा उनके द्वारा सौपे गए दायित्व को वहन करके उनकी घृणा को दूर कर सकते हैं और उनके स्नेह का वरद हस्त प्राप्त कर सकते हैं। काम कोई भी हो, उस मे रुचि और दक्षता हमे दक्षिणा का अधिकारी बना देती है। कार्यालय के बडे-बडे अधिकारी दुर्व्यवहार दुराचार के कारण कर्मचारियो की घृणा के केन्द्र बन जाते हैं, जब कि चपरासी अपने सद व्यवहार से आदर के पात्र बन जाते हैं। पद चाहे चतुर्थ श्रेणी का हो या प्रथम श्रेणी का, महत्त्वपूर्ण यह है कि उसका कार्य व्यवहार किस श्रेणी का है—प्रथम या चतुर्थ श्रेणी का। ग्राम के एक आवारा युवक से सब घृणा करते थे, क्योकि वह सब को तग करता रहता था। विकास अधिकारी ने एक ऊसर भूमि का खेत उसे दे दिया और कुछ सरकारी सहायता उपलब्ध करा दी। उस युवक का ध्यान अब काम मे लग गया। अपने परिश्रम से दूसरे ही वर्ष खेत मे धान की फसल लहलहाने लगी, तो उस ऊसर सुधार कार्य को देखने जिलाधीश सहित कुछ अधिकारी आये। किसी ने कहा कि भगवान् की कृपा से खेत में फसल सुहानी है। प्रधान जी ने कहा केवल भगवान् की कृपा पर इस खेत को देखना था, तब तो यह वर्षों से बजर पडा था, यह तो इस युवक का पुरुषार्थ है जिसने इसे ऊसर से उवर बना दिया। यह कर्त्तव्य पालन की कर्मठता ही है

जो किसी को भी आदर का पात्र बना देती है।

कार्य मे दक्ष होकर व्यक्ति अपने क्षेत्र मे विशेष नाम-गौरव प्राप्त कर लेते हैं और उनका सुयश उन्हें दूर तक पहुचा देता है। किसी योग्य डाक्टर, वैद्य, वकील तथा कारीगर लोग स्वय को इतना उच्च उठा लेते हैं कि दूर-दूर से चल कर लोग मार्ग दर्शन के लिए उनके पास आते हैं। अभ्यास के द्वारा कार्य मे उत्पन्न सुदक्षता ही सच्ची तेजस्विता है।

धृतराष्ट्र के दरबार मे निर्णय होना था कि युवराज पाण्डु ज्येष्ठ पुत्र युधिष्ठिर को बनाया जाये या धृतराष्ट्र के ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन को, उसके मामा शकुनि निरतर इस षड्यन्त्र मे निमग्न थे कि यह पद दुर्योधन को ही मिले। दरबार मे यह विचार-विमर्श चल ही रहा था कि चार कैदी लाये गये, जो एक हत्याकाण्ड मे पकडे गए थे। विदुर ने परामर्श दिया कि युवराज बनाने से पूर्व दोनो कुमारो की न्याय कला का परिचय ले लिया जाये। दुर्योधन ने सीधा सा निर्णय सुना दिया, हत्या का दण्ड फासी, किन्तु युधिष्ठिर ने पहले चारो का वर्ण पूछा फिर अज्ञानी शूद्र को चार वर्ष, ज्ञानी वैश्य को आठ वर्ष, रक्षक होकर हत्या करने वाले क्षत्रिय को सोलह वर्ष एव सुज्ञानी ब्राह्मण को राजगुरु कृपाचार्य के दण्ड पर छोड कर जो निर्णय सुनाया, उस से उनकी जय-जयकार हो उठी और वे युवराज भी घोषित हो गए।

ऋषि दयानन्द आर्ष ज्ञान-क्रम मे गुरु विरजानन्द से रोज नये-नये सूत्र सीख रहे थे। एक दिन बताया गया सूत्र उनके ध्यान से उतर गया। उन्होंने गुरुवर से पुन बताने की प्रार्थना की, किन्तु गुरु ने यह कहकर दुबारा बताने से मना कर दिया, कि मै तुमको एक सूत्र एक ही बार बता सकता हू भले ही तुम पढाई छोड कर चले ही क्यो न जाओ, जब कि अन्य शिष्यो को वे दुबारा भी बतला दिया करते थे। स्वामी दयानन्द गुरु कुटिया से वास्तव मे चले गए और यमुना के किनारे जाकर ध्यानावस्थित हो गए। कई दिन बाद जब उनको वह सूत्र स्वय ही स्मरण हो गया, तभी वे लौटे और गुरुवर को उसे सुना दिया। गुरु विरजानन्द ने प्रसन्न होकर उन्हें अपने हृदय से लगा लिया। शिक्षा समाप्त कर जब स्वामी दयानन्द चले गए और बहुत दिनो बाद किसी सहपाठी ने गुरु जी से आकर बताया कि दयानन्द तो प्रचलित धर्माडम्बर, मूर्ति पूजा, कण्ठी माला आदि का विरोध कर रहे हैं। आलोचना की दृष्टि से कहे गए इन शब्दो ने गुरु के हृदय मे हर्षोल्लास की वृष्टि कर दी। उन्होने उस से कहा कि मैं यही सुनने को तो प्रतीक्षा कर रहा था। विद्याध्ययन काल की इस शिक्षण-प्रशिक्षण की दक्षता ने दयानन्द मे कार्यक्षेत्र की तेजस्विता का सृजन कर के उन्हे अमरत्व प्रदान कर दिया।

यजिष्ठ या कार्यक्षेत्र मे पूर्व से स्थापित यशस्वी आदर्श पुरुषो को सामने रख कर हम अपने कार्य मे विशेष चमक उत्पन्न कर सकते हैं, इस प्रकार ससार के लाग हम को भी जानने लगते हैं और वे हम से जुड कर स्वय को गौरवान्वित अनुभव करते है। अध्यापक कहते हैं हम ने ही तो इनको पढाया था। मास्टर ही नही टेलर मास्टर, दर्जी भी कहता है कि इनके कपडे तो मैं ही यहा सिला करता था। एक ही कार्यक्षेत्र मे आगे बढने की होड कई व्यक्ति लगा सकते है, लगभग समान उच्चता प्राप्त कर लेते हैं तो प्राय द्वेष भावना उनको घेर लेती है। यदि प्रेम-नम्रता, शालीनता का दामन छोड देते हैं तो यही द्वेष शत्रुता का रूप धारण कर लेता है। समान कार्य व्यवसायी दो पडोसी व्यक्ति इसी भावना का शिकार थे। एक को वरदान मिला कि तुम चाहोगे, वही मिल जायेगा, किन्तु पडोसी को उस से दो गुना मिलेगा, क्यो कि उसकी तपस्या तुम से दुगुनी है। उसने क्या मागा मेरी एक आख फूट जाये मेरी एक टाग टूट जाये और द्वार पर एक कुआ खुद जाये। परिणामत पडोसी की दोनो आखे दोनो टागे जा चुकी थी और द्वार पर ही खुद गए दो कूप इस प्रकार उसके डूब मरने का उपक्रम बन गया। अकारण ही इस द्वेष ने उन मे शत्रुता प्रकट कर दी थी। सुनम्र सदाचरण ही इसे उत्पन्न होने से रोक सकता है।

अतिथि सत्कार के लिए प्रसिद्ध सेठ जी के यहा पहले एक साधु पहुँचे, कुछ ही समय बाद दूसरे एक और सन्त पहुँच गए। सेठ ने दोनो के निवास की उचित व्यवस्था कर दी। एक जब स्नान करने गया, तो सेठ ने दूसरे से उनकी प्रशसा करते हुए कहा कि ये साधु जो तो बडे सुयोग्य लगते हैं, उसने तुरन्त ही कह दिया, सेठ जी, आप किस के चक्कर में है वह तो निरा बैल है। अब बारी आई इन सन्त के स्नान की। पहले वाले साधु जी जब स्नान से उठे तो सेठ जी ने उन सन्त के विषय मे कहा कि ये महात्मा तो उच्च कोटि के विद्वान् लगते हैं। सेठ जी आप किस की बात करते हैं वह तो पूरा गधा है। अब दोनो को भोजन कक्ष मे सुसज्जित आसनो पर बुलाया गया और दोनो के सामने सुन्दर चादी की थालियो मे रेशम के वस्त्र से ढकी भोजन थालिया चौकी पर रख दी गईं और उनसे भोजन ग्रहण करने की प्रार्थना की गई। मार्ग की थकान से लगी तेज भूख की दशा मे दोनों ने थालियो के ऊपर से कपडा हटाया तो उनके क्रोध की सीमा नही रही। एक थाली मे भूसा और दूसरी मे घास रखी हुई थी। दोनो ने कहा सेठ जी—यह क्या ? तो उन्होने कहा आप लोगो ने ही एक दूसरे का परिचय बैल व गधे के रूप मे दिया था।

विशाल सभा मे दो प्रख्यात गायक बुलाये गए। पहले ने अपने गायन से सभा को खूब मोहित किया। अब बारी आई दूसरे गायक की, उसने भी वैसा ही समा बाधकर सभा को मुग्ध कर लिया। पहले वाले गायक के द्वेष भाव ने उसे उतावला कर दिया और वह सयोजक के समीप जाकर बोला—इनका कार्यक्रम रोक दो नहो तो सभा उखड जायेगी, पर वास्तव मे सभा ने पूर्ण सयत व सौम्यता के साथ सगीत का आनन्द लिया। पढ-लिख कर कोई काम न मिलने की स्थिति मे एक निर्धन व्यक्ति ने नगर सेठ के यहा झाडू लगाना स्वीकार कर लिया और अपना निर्वाह करना आरम्भ कर दिया। उसके सुलेख को देख कर सेठ ने उसे पत्राचार का कार्य दे दिया। उसकी गणितीय निपुणता को देख कर उसे लेखा का काम दे दिया और उसकी ईमानदारी से प्रसन्न होकर उसे अपना मुख्य सहायक बना लिया। उसकी इस प्रगति से नीचे के कार्मिक उस से द्वेष करने लगे और उसके विरुद्ध सेठ के कान भरने लगे। उन लोगो को एक आधार मिल गया कि मुख्य सहायक अपना एक कक्ष ताला लगा कर बन्द रखते हैं, उस मे किसी को झाकने नही देते है। स्वय एक बार खोल कर उस मे धन रखते रहते हैं। उनके उस कक्ष मे घुसने पर सेठ ने उसे खोलने और दिखाने का आदेश दिया। मुख्य सहायक के बारम्बार मना करने पर सेठ की शका और बलवती हो गई। किवाड तोडने की धमकी सुन कर उन्होने दरवाजा खोल दिया पर अब उस बक्स पर जाकर बैठ गए और उसे खोलने से मना कर दिया। सेठ के मन मे मुख्य सहायक के इस व्यवहार से शका ने चिन्ता का रूप धारण कर लिया और उनको हटा कर सब के सामने वह बक्सा खोल दिया। बक्से मे जो धन निकला उसे देख कर सेठ की आखे खुली को खुली रह गई। बक्से मे थे फटे पुराने किन्तु स्वच्छ एक जोडी जूते व वस्त्र, जिन्हे पहन कर प्रथम बार वह सेठ की सेवा मे उपस्थित हुआ था, सेवक बन कर। सेठ ने अपने मुख्य सहायक से इस बात का रहस्य जानना चाहा तो उसने बताया कि यह पुरानी फटी पुरानी वस्त्र व जूतो की जोडी मेरी स्मारिका है। जब मैं काम पर जाता हूँ तो कमरे का ताला खोल कर नित्य इन्हे देख कर ही जाता हूँ, जिस से मुझे अपनी वास्तविकता का ध्यान रहे और अभिमान व बेईमानी की कोई भावना मेरे मन मे घर न करने पाये। इस घटना ने उस मुख्य सहायक के सहयोगियो के छिपे द्वेष का अनावरण तो कर ही दिया था, साथ ही तथ्य को भी उजागर कर दिया है कि चाहे व्यक्ति हो या राष्ट्र उन्नति की दिशा मे वह अपने सर को भले आकाश तक मे ऊँचा उठा ले जाये, पर उसके पैर भी धरती मे उखड नही जाने चाहिए, अन्यथा धराशायी होन मे देर नहीं होगी।

—आयसमाज आर्यमगढ
आजमगढ (उ०प्र०)

आर्य जगत के समाचार

गायत्री महायज्ञ

पर्वंना के अञ्चल म पवित्र रावी नदी के सुरम्य तट पर स्थित 'दयानन्द मठ चम्वा (हिमालन प्रदेश) की नवनिर्मित यज्ञशाला मे वैशाम्वी १३ अप्रैल मे अभूतपूर्व गायत्री महायज्ञ श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के मान्निध्य मे चल रहा है जिसका समापन समारोह ८, ६ व १० मिनम्बर को होगा। इम अवसर पर चम्बा नगर म भव्य शोभा यात्रा निकाली जाएगी। तीनो दिन ऋषि लगर का आयाजन होगा। बाहर से पधारने वालो के लिए भोजन तथा आवाम की समुचिन व्यवस्था मठ की ओर मे रहेगी।

वेदकथा

आयसमाज शालीमार वाग बी० एन० पूर्वी मे सोमवार ७ अगस्त १६८६ मे शनिवार १२ अगम्न नक प्रात ६ से ७ ३० तक प० जैमिनी शास्त्री के ब्रह्मत्व में विजय याग का आयाजन किया गया। रात्रि मे प्रतिदिन ८ स १० नक प० मत्यदेव स्नातक और प० ज्योति प्रमाद के भजन नथा प० जैमिनी जी शास्त्री की वेद कथा हुई। पूर्णाहुति रविवार १३ अगस्त का प्रात ६ मे १२ तक हुई।

पुस्तक समीक्षा

रक्त साक्षी प० लेखराम

प० लखराम आर्यसमाज के निर्माताओ मे से एक अदभुन व्यक्तित्व के धनी थे। प्रोफेसर राजेन्द्र जिज्ञासु ने यह अदभुन ग्रन्थ लिखकर स्वय को प० लेखराम की ही पक्ति म स्थापित कर लिया है। जितनी शोधपूर्ण मामग्री तथा उसका व्यवस्थित विवचन इस ग्रन्थ मे उपलब्ध है उतना अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। रक्त साक्षी शब्द अपने आप मे अनुपम है। किसी वात के कहने का ऐसा अनूठा ढग प्रोफमर जिज्ञासु की अपनी विशेपता है। कुछ बात तो उन्हाने कही ही नही पर वे पाठक नक पहुच गई एमा मवृत्ति दक्षता इस ग्रथ म अनेक स्थानो पर मिलेगी। इस ग्रथ को पढते समय वीर लेखराम का स्वरूप तो पाठको के मम्मुख आना ही है लेखक का ओजस्व व्यक्तित्व भी आखो के मम्मुख आ खडा होना है। उनको कलम का यह शक्ति है कि प० लेखराम के जीवन की अनेक घटनाए हमारे मामने साकार हा उठी हैं। आयसमाज भारतीय जन जागरण सास्कृतिक व राजनैतिक उत्थान का पर्याय रहा है ओर इस मे योगदान है प० लेखराम सरीखे उद्भट विद्वानो तथा नताओ का। प० लेखराम का यह जीवन चरित्र धर्मप्रेमियो की रगो मे उष्ण रक्त का सचार करेगा ऐसा हमारा विश्वास है

इस महान ग्रथ का प्रकाशन आर्य प्रकाशन दिल्ली के स्वत्वाधिकारी श्री तिलकराज आर्य ने किया है। आर्यसमाज के साहित्य का प्रकाशन, विक्रय एवम् वितरण कोई सरल कार्य नही है। श्री तिलकराज के हृदय मे वैदिक सिद्धान्ता के प्रचार प्रसार की पीडा है। उनका यह कार्य प्रशसनीय है।

प्रोफेमर जिज्ञासु ने इम महान् ग्रथ को सात खण्डो मे विभाजित किया है। हम विश्वास है कि पाठक इस ग्रथ स लाभ उठाएगे।

(रक्त साक्षी प० लेखराम, लेखक प्रोफेमर राजेन्द्र जिज्ञासु, प्रकाशक आर्य प्रकाशन, ८१४ कुण्डेवालान अजमेरी गेट दिल्ली ६, पष्ठ सख्या ४१४, मूल्य ६०-००)

निर्वाचन

आर्यसमाज लल्लापुरा, वाराणसी

का वार्षिक निर्वाचन श्री कमला कान्त की अध्यक्षता मे १६ जुलाई को निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधान श्री कमला कान्त
मन्त्री रामगोपाल आर्य
कोषाध्यक्ष बुद्धदेव आर्य

प्रो० बापू जी तलपदे का जीवनवृत्त चाहिए

आर्यसमाज एव स्वाधीनता आन्दोलन का शोधपूर्ण ग्रन्थ लिखने के सन्दर्भ में मुझे प्रो० बापू जी तलपदे का जीवनवृत्त चाहिए, जिन्होने महर्षि दयानन्द सरस्वती के पूना-प्रवचनो से प्रेरणा लेकर एव ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका के आधार पर मरुत सखा नामक विमान की सफल उडान पूना के चीफ जस्टिस श्री महादेव गोविद राणाडे तथा बडौदा के नरेश सयाजीराव की अध्यक्षता मे किया था।

इस सम्बन्ध मे कोई भी पुस्तक, पत्रिका एव समाचार पत्रो मे प्रकाशित सामग्री की फोटो प्रति चाहिए। सामग्री भेजने वाले सज्जन का नाम यथास्थान पुस्तक मे साभार प्रकाशित किया जायगा।

—डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी
मु० पा० मुसाढी, जिला—नालन्दा (बिहार) - ८०१३०४

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य

क्र०	पुस्तक	लेखक	मूल्य
१	नैतिक शिक्षा (भाग प्रथम)		१ ५०
२	नैतिक शिक्षा (भाग द्वितीय)		१ ५०
३	नैतिक शिक्षा (भाग तृतीय)		२ ००
४	नैतिक शिक्षा (भाग चतुर्थ)		३ ००
५	नैतिक शिक्षा (भाग पचम)		३ ००
६	नैतिक शिक्षा (भाग षष्ठ)		३ ००
७	नैतिक शिक्षा (भाग सप्तम)		३ ००
८	नैतिक शिक्षा (भाग अष्टम)		३ ००
९	नैतिक शिक्षा (भाग नवम)		३ ००
१०	नैतिक शिक्षा (भाग दशम)		४ ००
११	नैतिक शिक्षा (भाग एकादश)		४ ००
१२	नैतिक शिक्षा (भाग द्वादश)		५ ००
१३	धर्मवीर हकीकतराय	वैद्य गुरुदत्त	५ ००
१४	फ्लैश आफ ट्रथ	डा० सत्यकाम वर्मा	२ ००
१५	सत्यार्थप्रकाश सन्देश	,,	२ ००
१६	एनाटोमी आफ वेदान्त	स्वा० विद्यानन्द सरस्वती	५ ००
१७	आर्यो का आदि देश	,, ,,	२ ००
१८	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	प० सच्चिदानन्द शास्त्री	५ ००
१९	प्रस्थान त्रयी और अद्वैतवाद	स्वामी विद्यानन्द सरस्वती	२५ ००
२०	दी ओरीजन होम आफ आर्यन्स	स्वामी विद्यानन्द सरस्वती	५ ००
२१	चत्वारो वै वेदा	, ,,	२ ००
२२	द्वैतसिद्धि	,, ,,	५ ००
२३	आर्यसमाज आज के सदर्भ मे	डा० धर्मपाल, डा० गोयनका	२० ००
२४	हम्ता चल हमाता चल	स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती	६ ००
२५	दयानन्द एण्ड दा वेदाज (ट्रैक्ट)		५०/-रु० सैकडा
२६	पूजा किसकी ? (ट्रैक्ट)		५०/-रु० सैकडा
२७	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (ट्रैक्ट)		५०/-रु० सैकडा
२८	योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश (ट्रैक्ट)		५०/ रु० सैकडा
२९	आर्योद्देश्यरत्नमाला (सुगम व्याख्या)	डा० रघुवीर	५०/ रु० सैकडा
३०	महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी स्मारिका (सन् १६८३)		५.००
३१	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्धशताब्दी स्मारिका १६८५		५ ००
३२	महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी स्मारिका १६८५		१० ००
३३	महर्षि दयानन्द निर्वाण विशेषाक		१० ००
३४	ऋषिबोधाक		१० ००
३५	योगीराज श्रीकृष्ण विशेषाक		१० ००

नोट—उपरोक्त सभी पुस्तको पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा। पुस्तको की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक-व्यय पृथक् नही लिया जाएगा। कृपया अपना पूरा पता एव नजदीक का रेलवे स्टेशन साफ साफ लिखे।

पुस्तक प्राप्तिस्थान—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Post in N D P S O on 17, 18-8-89 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५१ पूर्व भुगतान बिना भेजने की अनुमति प्राप्त लाइसेंस न० यू १३९

समस्त आर्य जगत् में

स्वतन्त्रतादिवस, श्रावणी-पर्व, हैदराबाद-सत्याग्रह स्वर्ण जयन्ती, वेदप्रचार-सप्ताह तथा श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के आयोजनों की धूम

आर्यसमाज अशोक विहार-१

श्री रामनाथ सहगल महामन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा दिल्ली की अध्यक्षता मे स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर योग प्रदर्शन तथा कुलाची हंसराज स्कूल की छात्राओ ने राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर १८ से २४ अगस्त तक महात्मा आर्यभिक्षु जी वेद प्रवचन कर रहे हैं।

आर्यसमाज सान्ताक्रूज, बम्बई

वेद प्रचार सप्ताह दिनाक १७ अगस्त से २४ अगस्त तक बड समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। प्रतिदिन प्रात यजुर्वेद महायज्ञ तथा रात्रि में वेद-प्रवचन डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री (जम्मू) द्वारा सम्पन्न हो रहा है।

२४ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्मोत्सव राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप मे मनाया जाएगा जिसकी अध्यक्षता श्री प्रताप सिंह शूर जी वल्लभदास (भू०पू० प्रधान सार्वदेशिक सभा) करेगे। अनेक वैदिक विद्वान् समारोह मे पधार रहे हैं।

आर्यसमाज अमरोहा

वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर २० अगस्त से २८ अगस्त तक स्वामी सत्यानन्द जी परिव्राजक (आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर) द्वारा वेद प्रवचन का कार्यक्रम चलेगा।

यज्ञ भवन, जवाहर नगर, दिल्ली

वेद प्रचार सप्ताह के उपलक्ष्य मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ का कार्यक्रम दिनाक २३ अगस्त से ३ सितम्बर तक श्री प० लक्ष्मपति जी शास्त्री के सान्निध्य मे मनाया जाएगा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली न०१७ कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५१

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ : अंक ४२ | रविवार २७ अगस्त १९८९ | भाद्रपद सम्वत् २०४६ विक्रमी | दयानन्दाब्द—१६५ | सृष्टि संवत १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक १५ रुपये | आजीवन सदस्य १५० रुपये | विदेश मे ५० पौंड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह स्वर्ण जयन्ती समारोह

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह (१९३९) का ही यह सुफल है कि आज हैदराबाद की वह रियासत अखण्ड भारत का अग है

आर्य सत्याग्रहियों का भव्य स्वागत

दिल्ली। १७ अगस्त १९८९। आर्यसमाज दीवानहाल के ऐतिहासिक भवन मे आज हैदराबाद आर्य सत्याग्रह सन् १९३९ के पचास वर्ष पूर्ण होने पर बलिदानी आर्यवीरो को पूर्ण श्रद्धा के साथ याद किया गया तथा उनके बलिदानो से प्राप्त प्रेरणा को हृदयगम करने का सकल्प लिया गया। स्मरणीय है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देश पर आर्यसमाज ने जनवरी सन १९३९ मे एक प्रचण्ड अहिंसक धर्मयुद्ध हैदराबाद रियासत के विरुद्ध छेडा था जो आठ मास तक चला जिस मे लगभग चालीस आर्यवीर शहीद हुए थे। तथा हजारो आर्य सत्याग्रहियों, जिन में सभी धर्मों वर्गों प्रान्तों के अतिरिक्त विदेशी भी थे, ने निजाम हैदराबाद की जेलो मे घोर यातनाएँ सही थीं।

अन्तत आज से ठीक ५० वर्ष पूर्व १७ अगस्त १९३९ को निजाम को विवश होकर सभी सत्याग्रहियो को ससम्मान छोडना पडा तथा आर्यसमाज की सभी मागो को स्वीकार भी करना पडा था। इसी ऐतिहासिक दिवस के अवसर पर, आर्यसमाज दीवान हाल की ओर से दिल्ली निवासियो ने उन सभी सत्याग्रहियो का भावभीना स्वागत किया। प्रात यजुर्वेद पारायण यज्ञ तथा श्रावणी उपाकर्म के पश्चात् स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे सम्मान-समारोह आयोजित हुआ। समारोह मे दिल्ली के एक सौ पाच सत्याग्रहियो के अतिरिक्त राजस्थान, हरियाणा तथा हिमाचल प्रदेश से भी सत्याग्रही उपस्थित हुए थे। सभी उपस्थित सत्याग्रहियो को माल्यार्पण के पश्चात् स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने शाल तथा प्रशस्ति पत्र भेंट किये। श्री स्वामी जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हैदराबाद-सत्याग्रह की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन आर्य वीर बलिदानियो के बलिदान का ही यह फल है कि आज हैदराबाद रियासत अखण्ड भारतवर्ष का अविच्छिन्न भाग है अन्यथा वह भी एक और पाकिस्तान होता।

इस अवसर पर हैदराबाद धर्म युद्ध के सत्याग्रही वैदिक विद्वान तथा प्रसिद्ध पत्रकार प० क्षितीश वेदालकार ने जहा तत्कालीन विषम परिस्थितियो और उन से लडने के लिए आर्यसमाजियो के दृढ-साहस और बलिदान की भावनाओं की विशद व्याख्या की। वहा आर्यसमाज को भविष्य मे और भी सजग और दृढ बने रहने का आह्वान किया। उन्होंने पचास वर्ष पूरे होने पर स्वर्ण जयन्ती मनाने और सत्याग्रहियों का अभिनन्दन करने के लिए आर्यसमाज दीवान हाल का विशेष धन्यवाद किया।

विख्यात पत्रकार तथा हैदराबाद धर्मयुद्ध के सत्याग्रही प० ब्रह्मदत्त स्नातक ने अपने भाषण मे स्वर्ण जयन्ती मनाने और सत्याग्रहियो के सम्मान करने को अभिनिन्दनीय कृत्य बताया।

समारोह के केन्द्र बिन्दु थे अजमेर (राजस्थान) से आये अन्य आर्यसत्याग्रहियो के साथ श्री सैयद फैय्याज अली जिन्होने हैदराबाद निजाम के विरुद्ध आर्य सत्याग्रह मे भाग लेकर धार्मिक-स्वतन्त्रता का उदघोष किया था।

सम्मान समारोह मे अनेक दिवगत आर्यसत्याग्रहियो के परिवार जन भी उपस्थित थे जिन मे मुख्य थे स्व० प० प्रकाशवीर शास्त्री का परिवार।

इस अवसर पर आर्य सत्याग्रहियों को भेंट किया गया प्रशस्ति पत्र पृष्ठ ४ पर देखें।

□

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव
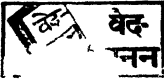
उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

अर्वागन्यः परो अन्यो दिवस्पृष्ठाद् गुहा निधी निहितौ ब्राह्मणस्य।
तौ रक्षति तपसा ब्रह्मचारी तत् केवलं कृणुते ब्रह्म विद्वान्।

अथर्व० काण्ड ११ अ० ३ सूक्त ५ १०।

ब्रह्मचारी किस से भिक्षा ग्रहण करते है? इस पर लिखते हुए पीछे कह आ चुके है कि वह विद्या का दान ही सब दानों मे श्रेष्ठ है और वह आचार्य ही दे सकते हैं इस लिए ब्रह्मचारी को आचार्य से ही भिक्षा लेनी चाहिए। इस पहली द्यौ और पृथिवी (स्वप्रकाशमान तथा दूसरों से प्रकाशित) लोकों की विद्या रूपी भिक्षा प्राप्त कर के ही ब्रह्मचारी को सन्तुष्ट न हो जाना चाहिए क्योंकि ये सब तो परम द्रव्य का प्राप्ति के केवल धन मात्र है आचार्य की हृदयरूपी गुफा मे केवल एक ही खजाना नही है उस गुफा के अन्दर एक और कोष भी है जिस का पता ब्रह्मचारी को तब ही लग सकता है जब कि वह पहली भिक्षा को पवित्र ता से ग्रहण कर जावे। तप पूर्वक गुरुकुल मे निवास करता हुआ ब्रह्मचारी द्यौ और पृथिवी दोनो लोको की विद्या प्राप्त कर लेता है। लोक दर्शने प्रत्यक्ष होने से ही ता ये सब लोक कहलाते हैं। परन्तु इन प्रत्यक्ष लोकों से परे इन से भी ऊंचा एक पद है जिस की प्राप्ति ही जीवन का परमोद्देश्य है। भौतिक पृथिवी का भौतिक सूर्य प्रकाशित करता है परन्तु हृदय मन्दिर को प्रकाशित करने का अधिकार आत्मिक सूर्य का ही है। जो कि जीवात्मा को भी मन्दिर बना कर उसे प्रकाशित करता है और भौतिक इन्द्रियो से अगम्य है। इसी भाव की व्याख्या उपनिषद मे की है—

य आत्मनि तिष्ठन्नात्मनोऽन्तरो यमात्मा न वेद यस्यात्मा शरीरम्। आत्मनोऽन्तरो यमयति स त आत्माऽन्तर्याम्यमृत ॥

जो परमात्मा जीवात्मा मे स्थित और जीवात्मा से भिन्न है जिस को जीवात्मा नही जानता कि वह मुझ मे व्यापक है जिस परमात्मा का जीवात्मा शरीर है जो उसे नियम मे रखता है वही अविनाशी स्वरूप तेरा भी आत्मा है उस को तू जान।

पृथिवी और द्यौ की प्रत्यक्ष विद्या आचार्य की हृदय रूपी गुफा मे एक कोष है परन्तु इन से भी परे परोक्ष दूसरा खजाना है। यदि ब्रह्मचारी देवमण्डल मे शामिल होना चाहता है अर्थात वह यह चाहता है कि विद्याव्रत स्नातक बन कर जब वह गुरुकुल से लौटे तो देवगण उसका अगवानी करें ता उसे प्रत्यक्ष से परे परोक्ष विद्या के लिए आतुर होना चाहिए परोक्षप्रिया हि देवा। जब प्रत्यक्ष विद्या के लिए तप का आवश्यकता है तो परोक्ष ब्रह्मज्ञान के लिए उस से भी बढ कर तप की आवश्यकता है। मानसिक तप बडा कठिन है परन्तु उतना ही अधिक बल देने वाला भी है। पृथिवी और द्यौ की अपरा विद्या साधन मात्र होने से गौण है उस से ऊपर परा विद्या मुख्य है क्योंकि वह परमादृश्य तक पहुंचा देती है। उस मुख्य विद्या की रक्षा ब्रह्मचारी तप से करता है।

तब वह ब्रह्म को जानता हुआ केवल उसी का ही रहता है। यही कैवल्य है। प्रसिद्ध लोकोक्ति अब तक चली आती है गुरु बिनु ज्ञान न पावे भोला चेला गुरु के बिना ज्ञान नही और ज्ञान से ज्ञानात् मुक्ति —और ज्ञान के बिना अविद्या के बन्धनो से छूटना नही होता। है इसलिए गुरु की आवश्यकता है। वह हमारे अन्दर है बाहर उस से सारा ब्रह्माण्ड आच्छादित है परन्तु जब तक हृदय के अन्दर उसे देख न लें तब तक समीप होते हुए भी हम सब उस से दूर हैं। इन्ही दर्शनो के लिए गुरु की जरूरत है। उस प्रकाश स्वरूप की झलक तो बिजली की चमक की तरह कभी न कभी मूढ पुरुष भी देखता है परन्तु उस झलक के ओझल होने पर फिर से भूल जाता है। उस के दर्शन आचार्य की कृपा के बिना नही होते। परन्तु जब एक बार सचमुच दर्शन हो जावें और जीवात्मा अपने प्रभु को चीन्ह लेवे तब वह उसी का ही रहता है। फिर आचार्य की सहायता की आवश्यकता नही रहती। प्रधान आचार्य की सरक्षता मे आकर साधारण आचार्य की क्या जरूरत है? प्राणी तब उसी का हो रहता है।

उसी का ही रहने का मतलब क्या है? क्या प्राणी की क्रिया बन्द हो जाती हैं? क्या वह कर्म छोड देता है? कर्म तो किसी अवस्था मे भी छूट नही सकते हां कर्मफल को वह त्याग देता है। जिस का हो रहा है सब कर्म उसी के अर्पण करता है। वह इसलिए कर्म नही करता कि उसे कर्म का फल मिलेगा। वह यह नही देखता कि उसके शरीर तथा उसकी इन्द्रियो को उस कर्म से क्या लाभ होगा कर्म करने के लिए उस के पास एक ही कसौटी है क्या उस कर्म से वह इस से दूर न हो जाएगा? जिस का वह हो रहा है निस्सदेह जो कुछ भी उस के गुण कर्म स्वभाव के अनुकूल है वही कर्त्तव्य है जो उसके प्रतिकूल है वही अकर्त्तव्य है। इसीलिए तो अपने शिष्य अर्जुन को कृष्ण भगवान ने उपदेश दिया था

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं
बोद्धव्यं च विकर्मणः।
अकर्मणश्च बोद्धव्यं
गहना कर्मणो गतिः॥

कर्म क्या है? विपरीत कर्म क्या है? और कर्म न करना क्या है? यह जानना चाहिए क्योंकि कर्म की गति गहन है। बिना कर्म एक क्षण भी प्राणी जी नही सकता और मुक्ति का आनन्द और परमात्मा की समीपता को भी बिना प्रयत्न के स्थिर नही रखा जा सकता। तब कर्म का सर्वथा त्याग तो हो ही नही सकता। फिर बचाव इसी मे है कि वह उस का हो रहे जिसका स्वरूप ही पथदर्शक है और जिस की समीपता मनुष्य को अकर्म और विकर्म के दुःखदायी मार्ग से अलग कर के कर्त्तव्य कर्मों का बोध सदा कराती रहे। ससार को ऐसे आचार्यों की आवश्यकता है जो स्वयं नित्य उस के सहवास मे रहते हुए अपने शिष्यों को उसी का दर्शन दें। इस पद के जो अधिकारी हैं उन के लिए ही ब्रह्मचारी

(शेष पृष्ठ ७ पर)

नित नमन हमारा

ओ३म् सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम्।
तां आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्यां अदितिं स्वस्तये॥

सब श्रेष्ठ जनो को नमस्कार उनको सम्मान हमारा है।
जो रत रहते शुभ कर्मों मे उनको नित नमन हमारा है॥
भली भांति जो राज्य प्रभा का
करे प्रकाशित विश्व सभा का
जो स्वयं हो गए ज्योतिमान
बिखराय जो प्रेम विभा का।
जो अपनी भी उन्नति करते करते उत्थान हमारा है।
जो रत रहते शुभ कर्मों मे उनको नित नमन हमारा है॥
अपने शुभ कर्मों के द्वारा
जिसने अपना यश विस्तारा
छल कपट कुटिलता को छोडा
दिव्य उच्च पद पाया प्यारा।
ऐसे सत्पुरुषों को सम्यक् उर अभिवादन की धारा है।
जो रत रहते शुभ कर्मों मे उनको नित नमन हमारा है॥
आदित्य पुत्र महनीय सभी
कल्याण करें कमनीय सभी
या पिता रूप माता स्वरूप
द आशिष स्तवनीय अभी।
प्रभु पुत्र और प्रभु व्यापक का अब हमने लिया सहारा है।
जो रत रहते शुभ कर्मों मे, उनको नित नमन हमारा है॥

—देवनारायण भारद्वाज

ओ३म्
आर्य सन्देश

प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन

पिछले दिनो भारत सरकार ने पचायती राज विधेयक पारित करके शासन सत्ता मे स्थानीय लोगो को भागीदार बनाया है। यह विचारणा कोई नई नही है। इस विचारणा के सूत्र प्राचीन भारतीय शासन परम्परा मे उपलब्ध है। इसी विषय को लेकर गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे प्राचीन भारतीय इतिहास सस्कृति और पुरातत्त्व विभाग के तत्त्वावधान मे ११, १२, १३, और १४ अक्तूबर १९८७ को एक राष्ट्रीय सगोष्ठी का आयोजन किया गया था। इस सगोष्ठी मे देश के विभिन्न विश्वविद्यालयो के विद्वानो ने भाग लिया और अपने महत्त्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए। इस सगोष्ठी मे जो प्रबन्ध पढे गए उनका सकलन गुरुकुल पत्रिका के सम्पादक प्रो० जयदेव वेदालकार ने मासिक शोध पत्रिका के दो अको वर्ष ३९ और ४० मे पाठको के लाभार्थ प्रस्तुत किया है।

इस सकलन मे वैदिक युग मे ग्राम स्वशासन पर गोरखपुर विश्वविद्यालय के डा० विजय बहादुर राव का लेख सकलित है जिसमे उन्होने ग्राम, ग्रामणी, ग्राम्य वादिन सभा, समाचार, सभासद आदि शब्दो के आधार पर और प्राप्य तथ्यो के आधार पर ग्राम्य स्वशासन की सकल्पना को मूर्त्त आधार प्रदान किया है। उनकी स्थापना है कि वैदिक ग्रामो का स्वरूप प्राय आत्म निर्भर आर्थिक एव प्रशासनिक इकाई का था। इन्ही शब्दो के उल्लेख एव अभिप्रेतार्थ का विवेचन परवर्ती कालो के परिप्रेक्ष्य मे भी उन्होने सम्यक्रूपेण प्रस्तुत किया है।

इसके अतिरिक्त हडप्पा सस्कृति मे स्वशासन व्यवस्था, मौर्यकालीन ग्राम्य शासन व्यवस्था वानर स्वशासन मे धर्म, आचार एव सगठन आदि महत्त्वपूर्ण विषयो को भी स्थान दिया है। उस समय भी शासन व्यवस्था धर्मानुकूल थी यह बात बार बार दुहराई गई है। जम्मू काशमीर विश्व विद्यालय के डा० वाई० बी० सिह ने अपने आलेख का केन्द्र बिन्दु पुरोहित सघ को बनाया है। उनकी विचारणा का मूलाधार भी यही है कि स्थानीय निकायो मे पुरोहितो एव धर्माचार्यों का विशेष स्थान था।

इसी पत्रिका के दूसरे खण्ड मे प्राचीन भारत मे न्याय व्यवस्था और अन्य आलेखो को सम्मिलित किया गया है। गढवाल विश्वविद्यालय के प्रो० मृगेन्द्र कुमार सिंह ने ब्राह्मण दार्शनिको के जीवन दर्शन को व्याख्यायित करके उन्हे मूर्धन्य स्थान प्रदान किया है। उन्होने ब्राह्मणो को दार्शनिक माना है। डा० राकेशकुमार शर्मा ने एक शोधपूर्ण लेख मे वर्ण परपरा मे गुप्त लोगों का स्थान निर्धारण करने का सफल प्रयास किया है। गुप्त वैश्य थे, गुप्त ब्राह्मण थे गुप्त शूद्र थे, गुप्त क्षत्रिय थे—इन चारो मान्यताओ के पोषक उपादानो की उन्होने तार्किक विवेचना की है। उन्होने यह निष्कर्ष दिया है कि गुप्त क्षत्रिय थे।

यह सनातन नियम है कि आज सदैव अतीत से प्रेरणा लेता है। आज जो नवीन है उसके बीज अतीत मे सदैव प्राप्य हैं। ये बीज ही पल्लवित, पुष्पित एव फलित होते हैं और पुन बीज मे परिवर्तित हो जाते हैं। यही बात ज्ञान विज्ञान के विषय मे भी उतनी ही सही है। वह था वह है और वह होगा। तत् सत्। जो इस अभिप्रेत को जान लेता है वही ऋषि है, वही आज की भाषा मे वैज्ञानिक अथवा अनुसन्धाता है, वह नवविचारो का सवाहक है। स्थानीय स्वशासन सम्बन्धी ये सभी धारणाए पुरातन युगीन हैं। इनका आधुनिक सस्कार प्राचीन परम्परा मे है। वह परम्परा सभी आर्ष ग्रथो मे आप्यायित है।

दिवंगत आर्य श्रेष्ठी

राजर्षि रणञ्जय सिंह

स्वनाम धन्य राजर्षि रणञ्जय सिंह जी का ८७ वर्ष की आयु मे ४ अगस्त ८८ की अर्द्धरात्रि के उपरान्त उनके अमेठी राजमहल में देहावसान हुआ। राजर्षि रणञ्जय सिंह जी मनुष्य रूप मे देवता थे। ८७ वर्ष की आयु मे भी राजा साहब मे नवयुवको से अधिक कार्यक्षमता थी और देश तथा आर्यसमाज का कार्य करने की उद्दाम लालसा भी।

वे १९२६ मे केन्द्रीय धारा सभा के लिए चुने गए थे और तब से अनेको वार लोक सभा व विधान सभा के सदस्य रहे लेकिन आधुनिक नेताओ के कार्य एव व्यवहार शैली से बिलकुल अलग। उन्होने सदैव सत्य तथ्य व यथार्थ को प्राथमिकता दी। गोरक्षा, राष्ट्रभाषा हिन्दी आदि विषयो पर वे सत्ता पक्ष मे रहते हुए भी निर्भीक होकर बोलते थे और सदैव सत्य का ही पक्ष लेते थे। उनका जीवन एक सन्त तपस्वी मनीषी, समर्पित आर्य कार्यकर्त्ता के ही रूप में बीता। वे आर्यसमाज जैसे राष्ट्रवादी आन्दोलन के अपने बचपन से ही कार्यकर्त्ता बन गए और अपने इस रूप को मृत्युपर्यन्त बनाए रखा। वे कहा करते थे कि पहले मैं आर्य हू उसके बाद और कुछ ! वे दो बार आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान भी रहे। इस दौरान सारे प्रदेश का दौरा कर के आर्यसमाज के आन्दोलन को गति प्रदान की। इस आयु मे अस्वस्थ रहते हुए भी वे निरन्तर आर्यसमाज के कार्यक्रम मे भाग लेते रहे।

राजा साहब एक उच्च कोटि के कवि, लेखक समाज सुधारक व राज नेता थे उन्हे देख कर लगता था कि यह महामानव प्रागैतिहासिक काल का ऋषि है जिसकी नैतिकता, सच्चरित्रता सेवा भावना सदाशयता स्पष्ट वक्तृता, धर्मनिष्ठा सत्यप्रेम व मानवीयता असदिग्ध है। शिक्षा के प्रसार मे उनका योगदान कभी भी भुलाया नही जा सकेगा। प्राथमिक से लकर स्नातकोत्तर महाविद्यालय की स्थापना करने व उनके भवन निर्माण तथा अन्य विकास के कार्यक्रमो मे जिस सदाशयता से उन्होने अपने खजाने का मुह खोल दिया वह अनुपमेय है। ऐसे आर्य श्रेष्ठी को शत-शत प्रणाम।

महात्मा भगत फूलसिंह

हरयाणा प्रदेश की पवित्र भूमि ने अनेक महापुरुष उत्पन्न किए है। उन मे महात्मा भगत फूलसिह का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

भगत जी का जन्म जिला सोनीपत के ग्राम माहरा म २४ फरवरी १८८५ को एक साधारण किसान श्री बाबर सिंह के घर मे हुआ।

सन १९०८ मे आप इसराना जिला करनाल मे पटवारी बने। यहा आपका श्री प्रीतसिह पटवारी से सम्पर्क हो गया। ये आर्यसमाज के विचारो के थे। इनके साथ श्री फूलसिह जी पानीपत के आर्यसमाज मन्दिर मे रवि वार के सत्सग मे सम्मिलित होने लगे।

समाज सुधार तथा आर्यसमाज के कार्य को पूरा समय देने के लिए आपने पटवारी पद से त्याग पत्र दे दिया।

आपने अपने ग्राम मे अपनी ५० बीघे भूमि ऋषि दयानन्द के उद्देश्य को पूरा करने के लिए आर्यसमाज को दान कर दी। आप अपने ग्राम मे गुरुकुल खोलना चाहते थे परन्तु उन्हे ग्राम भैसवाल के पास जगल मे गुरुकुल खोलने के लिए उचित स्थान मिल गया। और ग्राम वालो ने उनकी प्रेरणा पर १३० बीघे भूमि गुरुकुल के लिए दान मे दे दी। अपने ग्राम की भूमि की आय से गुरुकुल सचालन का निश्चय किया और इस के उद्घाटन के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी को भैसवाल आमन्त्रित किया। स्वामी जी ने हजारो नरनारियो की उपस्थिति मे सन् १९१९ मे गुरुकुल की आधारशिला रखी।

गुरुकुल सचालन हेतु एक लाख रुपये सग्रह करना—

गुरुकुल का सारा खर्च दान से चलता था और छात्रो से किसी प्रकार का शुल्क तथा भोजनादि व्यय नही लिया जाता था। इस प्रकार गुरुकुल पर कर्ज हो गया। कर्ज को उतारने तथा स्थायी कोष बनाने के लिए भगत जी ने एक लाख रुपया दान सग्रह करने का व्रत लिया और घोषणा कर दी कि जब तक यह राशि मे सग्रह न होगी तब तक मैं सूर्योदय से सूर्यास्त तक खडा रहूँगा बैठूगा नही। केवल एक समय पाव भर जौ के आटे का भोजन करूगा। भगत जी तथा उनके साथी ग्रामो मे

(शेष पृष्ठ ६ पर)

* ओ३म् *

आर्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह स्वर्ण जयन्ती

प्रशस्ति पत्र

सेवा मे,

श्री ____________________

हे स्वतन्त्रता सेनानी !

अब से ५० वर्ष पूर्व हैदराबाद रियासत मे, भारत में इस्लामी राज्य का स्वप्न देखने वाले नवाब उस्मान अली ने अपनी ८८ प्रतिशत हिन्दू जनता पर जो अत्याचार किये थे, तत्कालीन इतिहास मे उसका उदाहरण मिलना कठिन है। शिक्षणालय, गुरुकुल, धर्मशाला अनाथालय, यज्ञशाला कन्या पाठशाला आर्यसमाज मन्दिर आदि खोलने पर प्रतिबन्ध था। व्याख्यानो और धर्म-प्रचार पर प्रतिबन्ध था। मन्दिरो मे शख बज ने पर प्रतिबन्ध था। धर्मोपदेशको को रियासत से निष्कासित कर दिया जाता था। प्रजा के समस्त नागरिक मानवाधिकार छीन लिये गये थे। सामाजिक गतिविधियाँ प्रतिबन्धित थी। गरीब हिन्दुओ के धर्मान्तरण की खुली छूट थी। मुसलमान जिहाद को अपना धार्मिक कृत्य बना कर हिन्दुओ को काफिर बताते हुए उन्हे सब प्रकार से यातनाएँ देना अपना अधिकार समझते थे। हिन्दू स्त्रियो का अपहरण हो रहा था और इन सब अत्याचारो से प्रजा पीडित थी।

उस समय उस चुनौती का जवाब देने के लिए सार्वदेशिक सभा के सरक्षण मे आर्यसमाज ने जो सत्याग्रह का बिगुल बजाया उसमे अपनी आहुति देकर आप ने निजाम की जेलो म भयकर यातना सही। आप की उस तपस्या साधना और सतत सघर्ष की अदम्य भावना का ही यह परिणाम हुआ कि सत्याग्रह की भट्टी म आर्यसमाज कुन्दन बनकर निकला। निजाम को विवश होकर आर्यसमाज की सब माग माननी पडी क्योकि व न्याय पर आधारित थी। १७ अगस्त १९३९ के दिन ही समस्त सत्याग्रही विजयी होकर जेलो से छूटे। इस सत्याग्रह में आप के योगदान को आयजनता कभी विस्मृत नही कर सकती। आर्यसमाज की बलिदानी भावना को चिरजीवी बनाया।

आपके उस बलिदान का ही यह सुफल है कि आज हैदराबाद की वह रियासत अखण्ड भारत का अविच्छिन्न भाग है अन्यथा वह भी एक और पाकिस्तान होता।

हे स्वतन्त्रता सेनानी ! हम आपका समस्त आर्य जनता और राष्ट्रभक्त देशवासियो की ओर से अभिनन्दन करते हैं। आपका बलिदान भावी पीढियो को वैदिक धर्म और भारतीय राष्ट्र पर आने वाले किसी भी प्रकार के सकट के निवारण के लिए आत्माहुति का सम्बल प्रदान करेगा और आप का उदाहरण उनके लिए चिरन्तन प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

उस आर्य सत्याग्रह म दिल्ली के सर्वप्रसिद्ध आर्यसमाज दीवान हाल ने जो प्रमुख भूमिका निभाई थी, वह भी भुलाई नही जा सकती। हम आर्यसमाज दीवान हाल के सदस्य गण अपना यह नैतिक कर्तव्य समझते हैं कि उस सत्याग्रह की स्वर्ण-जयन्ती की पावन वेला पर आप जैसे बलिदानी आर्यबन्धुओ का सम्मान करके अपने आपको गौरवान्वित करें।

हम है, आपके आर्यबन्धु

आर्यसमाज दीवान हाल के सदस्यगण

१७ अगस्त, १९८९

शोक समाचार

पं० रविन्द्र आत्रे दिवंगत

होनहार युवा वैदिक विद्वान् प० रविन्द्र आत्रे का अल्पायु में, दिनाक १६ अगस्त को निधन हो गया।

प० रविन्द्र आत्रे ३४ वष के थे। आप अनेक वर्षों से आर्यसमाज सदर बाजार, दिल्ली के पुरोहित पद पर थे। यही रहकर आप ने एम० ए० और बी० एड० किया तथा पिछले दिनो ही आप डी० ए० वी० स्कूल शालीमार बाग मे नैतिक शिक्षा पढाने के लिए शिक्षक नियुक्त हुए थे। आप बडे मिलनसार, स्वाध्यायी प्रवृत्ति के युवा विद्वान् थे। आप अपने पीछे पत्नी तथा तीन छोटे-छोटे बच्चे छोड गए हैं।

प० रविन्द्र का अन्तिम सस्कार श्रावणी के दिन १७ अगस्त को निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार किया गया, जिसमे भारी सख्या मे आर्य नर-नारी उपस्थित थे। डा० धर्मपाल आर्य प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी अन्तिम सस्कार के समय उपस्थित होकर अपनी श्रद्धाजंलि अर्पित की।

सहायता स्थिरनिधि की स्थापना

प० रविन्द्र आत्रे की स्मृति मे, रविवार दिनाक २० अगस्त को आर्यसमाज सदर बाजार मे, स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे एक श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमे दिल्ली की आर्यसमाजो के हजारो गण्यमान्य व्यक्ति सम्मिलित हुए। इस अवसर पर डा० वाचस्पति उपाध्याय डा० भवानीलाल भारतीय, श्री सूर्यदेव आदि ने भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अपील पर आर्यसमाज सदर बाजार के कर्मठ अधिकारियो ने तुरत पचास हजार रुपयो की एक स्थिर निधि कायम करने की घोषणा की, जिसके ब्याज से प्राप्त होने वाली राशि दिवगत श्री आत्रे के बच्चो के लालन पालन और शिक्षा पर व्यय होगी।

आर्यसमाज दीवान हाल की ओर से भी उक्त स्थिरनिधि के लिए पाच हजार रुपयों की सहायता की घोषणा की गयी।

आर्यसमाज का तीसरा नियम—

वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है

—प्रो० भवानीलाल भारतीय

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के नियमो का निर्धारण करते समय प्रथम दो नियमो मे ईश्वर के स्वरूप एव लक्षणो को स्पष्ट किया। तत-पश्चात उन्होने आर्यों के सर्वोपरि प्रमाण ग्रन्थ वेदो के बारे में लिखते हुए उसे सब सत्य विद्याओ का ग्रथ घोषित किया तथा वेदो के अध्ययन, अध्यापन, पठन पाठन श्रवण, श्रावण तथा चिन्तन-मनन को आर्य मात्र का परम पवित्र तथा अनिवार्य कर्त्तव्य घोषित किया। उनकी दृष्टि से वेद ससार की समस्त आध्यात्मिक और भौतिक विद्याओ के उत्स हैं। उनके कथन का अभि-प्राय यही है कि वेद जहा एक ओर पारलौकिक कर्त्तव्यो का विधान करते हैं, वही उन मे भौतिक और प्राकृतिक विज्ञान भी बीज रूप मे मिलता है। महर्षि के द्वारा प्रति पादित इस सिद्धान्त में यो तो कोई नवीनता नही है क्योकि बहुत पहले ही मनु जैसे धर्मशास्त्रकार ने वेदो को सर्व ज्ञान से युक्त तथा सेना-पतित्व राज्यव्यवस्था दण्डनीति आदि लौकिक व्यवस्थाओ का मूला धार घोषित किया था तथापि महर्षि ने स्वरचित ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका मे ऐसे अनेक प्रकरण लिख हैं जिन से वेदो का सर्वविद्यामयत्व सिद्ध होता है।

भूमिका मे स्वामी जी ने वेद विषयक अपना धारणाओ को सुस्पष्ट करने के पश्चात वेदो मे विभिन्न विद्याओ की सत्ता को सिद्ध करने के लिए अनेक प्रकरण लिखे। सर्वप्रथम उन्होने वेदो मे परमार्थ का विवेचन करो वाली ब्रह्मविद्या का अस्तित्व सिद्ध किया। इस प्रक रण का आरम्भ करते हुए वे लिखते हैं—

वेदेषु सर्वा विद्या सन्त्याहो-स्विन्नेति।

उत्तर में वे कहते हैं अत्रोच्यते। सर्वा सन्ति मूलोद्देशत इसके पश्चात् ब्रह्मविद्या प्रतिपादक तमीशान 'तद्विष्णो परम पद' 'परीत्य भूतानि', 'महद्यक्ष भुवनस्य मध्ये आदि वेद मन्त्रो को अर्थ सहित उद्धृत कर वेद मूलक ब्रह्मविद्या को स्पष्ट किया। इसी क्रम मे वेदोक्त धर्मों का प्रति-पादन करते हुए वे बताते हैं कि ऋग्वेद के सज्ञानसूक्त, तथा यजुर्वेद के 'अग्ने व्रतपते', 'दृते दृ हमा' तथा 'व्रतेन दीक्षामाप्नोति जैसे मन्त्रो मे मनुष्य के लिए उपयोगी व्यवहारो का निरूपण मिलता है।

तदनन्तर वे वेदो मे उपदिष्ट सृष्टि रचना विद्या को स्पष्ट करने के लिए ऋग्वेद के दशम मण्डला न्तर्गत नासदीय सूक्त तथा यजुर्वेदो-क्त सूत्र की विस्तृत व्याख्या लिखते हैं। किन्तु प्राकृतिक और भौतिक विद्याओ की वेदमूलकता सिद्ध करने के लिए उन्होने कुछ और प्रकरण भी लिखे हैं। यथा पृथिव्यादि लोक भ्रमण विषय। आधुनिक विचारको की धारणा है कि प्राचीन आर्यों को भूगोल और खगोल से सम्बन्धित कोई अधिक जानकारी नही थी। वे तो यही मानते रहे है कि गैले लियो ने ही सर्वप्रथम पृथ्वी के सूर्य के चारो ओर घमने के सिद्धान्त का प्रवर्तन किया और न्यूटन ने गुरुत्वा कर्षण के सिद्धान्त को खोजा। इसके विपरीत महर्षि दयानन्द यजुर्वेद के आय गौ पृश्निरक्रमीद०' (३।६ आदि मन्त्रो से सिद्ध करते हैं कि वेदो मे पृथ्वी के सूर्य के चारो तरफ तथा अपनी कक्षा पर भी निरन्तर घूमने की बात आई है यास्क कृत निघण्टु के प्रमाण से उन्होने यह भी सिद्ध किया कि वेदो मे गौ नाम पृथ्वी के अर्थ मे भी आया है। निरुक्तकार स्पष्ट कहता है— गौरिति पृथिव्या नामधेयम। इस ब्रह्माण्ड में सचरणशील सभी ग्रह तारे आदि एक दूसरे के आकर्षण एव अनुकर्षण के वशवर्ती होकर स्व स्व कक्षा में भ्रमण करते हैं इस वैज्ञानिक तथ्य को श्री महाराज ने आकृष्णेन रजसा वर्तमानो (यजु० ३३।४३) जैसे मन्त्रो से सिद्ध किया है। इस मे आकर्षण विद्या का उल्लेख है और स्पष्ट कहा है कि सविता-सूर्य अपने आकर्षण गुण से अन्य ग्रहो को सचालित करते हैं।

आकाशीय पिण्डो के प्रकाशमान और ज्योतिष्मान होने को भी स्वामी जी ने वेद मन्त्रो के आधार पर सम्यक सिद्ध किया है। वस्तुत द्यौ लोक में चमकने वाले ग्रहादि ज्योतिर्मय पिण्ड परमात्मा की धारणा शक्ति से ही स्व-स्व स्थान पर गति करते हैं। इनके प्रकाश को पृथ्वी आदि ग्रहो तक आने म भी करोडो वर्ष लग जाते हैं। यजुर्वेद के 'सूर्य एकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुन' (२३।१०) आदि मन्त्रो में सूर्य और चन्द्रमा की इन्ही विशेषताओ को वर्णित किया गया है। गणित विद्या के मूल की वेद में स्वीकार करने म कोई विप्रतिपत्ति ही नही है। महर्षि न इस प्रकरण के आरम्भ में स्पष्ट लिख दिया है कि वेद मन्त्रो के द्वारा ही परमात्मा ने अक, रेखा और बीजगणित की त्रिविध विद्याओ का निरूपण किया है। 'एका च म तिस्रश्च म आदि मन्त्रो मे जहा सख्या विज्ञान का मूल दिखाई देता है वहा इय वेदि परोऽन्त पृथिव्या (यजु० २३।६२) तथा कासीत प्रमा (ऋग्वेद) जैसे मन्त्रो मे रेखागणित का बीज दृष्टि गोचर होता है। कालान्तर मे यज्ञ विद्या म सहायक जिन शुल्व सूत्रो की रचना हुई वे भी वैदिक रेखा विज्ञान के ही निरूपक हैं।

जिस समय स्वामी दयानन्द ने वेदो मे नौकानयन तथा विमान सचालन जैसी बातो के अस्तित्व की चर्चा की तो अनेक लोगो ने शका करते हए महर्षि को अतिवादी बताया। सायणाचार्य की वेद भाष्य भूमिकाओ के प्राक्कथन मे प० बलदेव उपाध्याय ने स्वामी जी की एतदविषयक धारणाओ का उपहास करते हुए कहा कि एषोऽपि सिद्धातो नैव विद्वज्जनमनोरम। अर्थात दयानन्द का वेदो मे विज्ञान की सत्ता सिद्ध करने का यह मतव्य विद्वानो को अच्छा नही लगता। किन्तु दयानन्द के विचारो की टीका करने वाले प० बलदेव उपाध्याय सायण के भाष्य के आधार पर स्वय ही स्वीकार करते हैं कि अथर्व वेद मे राजनीति कृषि विद्या भैषज्य विद्या आदि विविध विद्याये वर्णित हुई हैं। पुन दयानन्द पर आक्षप करने का क्या औचित्य है। निश्चय ही वेदो मे सुत्रामाण पृथिवी आदि मत्रो मे दिव्य नौकाओ का वर्णन आया है तो द्वादश प्रधयश्चक्रमेक आदि मत्रो से विमानो की सत्ता भी स्पष्ट होती है। दयानन्द की इस विवेचन की पुष्टि मे योगी अरविंद ने ठीक ही लिखा है कि वेदो को समस्त धर्मों तथा विज्ञानो का मूल ठहरा कर स्वामी दयानन्द ने कोई आश्चर्यजनक बात नही कही है। वे स्वय भी इस मत से सहमत हैं तथा एक कदम आगे बढ कर यहाँ तक कह देते हैं कि वेदो मे कुछ ऐसे भी वैज्ञानिक सत्य उपलब्ध होते हैं, जिन तक आज का विज्ञान पहुच ही नही सका है।

वेदो मे औषधि विज्ञान कीटाणु विज्ञान, धातु विज्ञान चिकित्सा विज्ञान मनोविज्ञान तथा इन्ही के समकक्ष अन्य विज्ञानो से सम्बद्ध अनेक मत्र पाये जाते हैं। अथर्ववेद तो ऐसे ज्ञान विज्ञान प्रतिपादक मत्रो का भाण्डागार ही है। स्वामी ब्रह्म मुनि ने वैदिक चिकित्सा विज्ञान तथा वैदिक मनोविज्ञान पर गभीर शोध कार्य किया था। प० भगवद्दत्त वेदालकार ने वैदिक स्वप्न विज्ञान पर अपना लघु शोध निबध लिखा था। वैदिक सृष्टि विद्या का निरू-पण करते हुए प० भगवद्दत्त तथा बम्बई के प० विजयशकर ने विराट ग्रथ लिख है।

हम पुन वेदो मे निरूपित अध्यात्म विद्याओ की ओर उन्मुख होते हैं। वेद के पश्चिमी तथा आधु-निक भारतीय विद्वानो ने यह धारणा प्रकट की है कि पुनर्जन्म का सिद्धात वेदो मे उपलब्ध नही होता। किन्तु महर्षि दयानन्द असुनीते पुनरस्मासु आदि ऋग्वेदीय मत्रो से पुनर्जन्म की वेद-मूलकता प्रतिपादित करते हैं। यजुर्वेद मे भी पुनमन पुनरायु०' आदि मत्र पुनर्जन्म के ही सूचक हैं। आत्मा की मुक्ति का विषय भी वेदो मे वर्णित है।

महर्षि दयानन्द के वेद विषयक विचारो की एक अन्य विशेषता यह भी है कि वे मनुष्य के सामाजिक जीवन को नियन्त्रित एव अनुशासित करने वाले सूत्रो का मूल उत्स भी श्रुति वाङमय को ही मानते है। फलत वर्णाश्रम विधान विवाह सस्कार नियोग जैसे आपद्धर्म तथा राज प्रजा धर्म प्रतिपादक मत्रो के आधार पर मनुष्य जाति के सामा जिक विधान के मूल सूत्रो की तलाश भी उन्होने यही पर की है। उपर्युक्त सामाजिक प्रसगो को उल्लिखित और निरूपित करने वाले मत्रो के उदाहरणो से निबध के कलेवर का विस्तार होने की ही आशका है। निष्कर्षत हम कह सकते हैं कि स्वामी दयानद ने वेदो को समस्त सत्यविद्याओ का ग्रथ ठहरा कर न तो कोई अतिशयोक्ति ही की है और न न्यूनोक्ति ही। ●

मन्त्रद्रष्टा ऋषियों का परम उपदेश

ओ३म यदा कदा च मीढुषे स्तोता जरेत मर्त्य ।
आदिद् वन्देत वरुण विपा गिरा धर्त्तारं विव्रतानाम् ॥

साम० २८८

ऋषि=वामदेव गौतम देवता=वरुण छन्द=बृहती

स्तोता—हे परमेश्वर की स्तुति उपासना प्रार्थना वन्दना करने वाले स्तोता उपासक ।

मर्त्य—मानव साधक ।

यदा कदा—जब भी कभी समय मिले, सुख मे दु ख मे संपत्ति या विपत्ति मे, किसी भी हाल काल मे हो ।

मीढुषे—सपूर्ण सुख, शान्ति, आनन्दमयी कामनाओ के वर्षक, धर्म-अर्थ काम-मोक्ष सिद्ध करने वाले परमेश्वर की ।

जरेत—स्तुति कीर्तन गुणगान किया करे ।

च—और ।

आत इत—इसके साथ ही ।

विव्रतानाम—विविध कर्मों, नियमो के विधाता सृष्टि उत्पत्ति सचालक, सब के कर्म फल दाता, पालन पोषण, रक्षण अदभुत कार्य करने वाले ।

धर्तारम—अखिल ब्रह्माण्डो अनेक लोक लोकान्तरो, सूर्य मण्डलो, ग्रह नक्षत्रो के धारण कर्ता की ।

विपा—बुद्धिमत्ता से जानने हारी, प्रभु के गुण ज्ञान प्रकाशक दु ख विनाशक, सुखकारी परम कल्याणी ज्ञान कर्म उपासना मे प्रेरित करने वाली मोक्षदायिनी ।

गिरा—वेद वाणियो का स्वाध्याय करो, तदनुसार आचरण करते हुए ।

वरुणम्—वरणीय पाप निवारक, सर्व श्रेष्ठ परमात्मदेव का ।

वन्देत—वदन पूजन, आराधन, नमन, उपासना, धारणा ध्यान द्वारा भक्ति करो जिससे प्रभु दर्शन कर मुक्त अवस्था पाओ ।

कविता मे

जब भी कभी मिल तुम्हे अवसर प्रिय उपासको।
आनन्द वर्षक प्रभु की स्तुतिया तभी गाया करो साधको ॥
कर्म फल दाता ब्रह्माण्ड निर्माता की अदभुत वेद वाणी भी पढो ।
तदनुसार आचरण कर श्रद्धा प्रेम से सदा उनकी ओर बढो ॥
वह वरण योग्य पाप निवारक सर्वश्रेष्ठ हैं पिता हमारे ।
उनका वदन पूजन नमन करो दर्शन पा, मुक्त हो जाओ प्यारे ॥

—हरबस लाल सहगल (साधक)
ग-६३ अशोक विहार फेज २, दिल्ली-५२

आवश्यकता

एक कर्मठ प्रौढ आर्य सिद्धान्ती सुशिक्षित गुरुकुलीय पद्धति से परिचित छात्रावास-सरक्षक पद हेतु व्यक्ति की आवश्यकता है । दक्षिणा (वेतन) योग्यतानुसार । अविलम्ब आवेदन कर ।

मन्त्री
आर्ष गुरुकुल टटेसर जौती
दिल्ली-११००८१

(पृष्ठ ३ का शेष)

घूमे और एक लाख रुपया सग्रह कर के गुरुकुल के कोष में जमा करवा दिया । उनके इस तपस्या तथा लगन का सारे क्षेत्र मे बहुत प्रभाव पडा और गुरुकुल अपने पैरो पर खडा हो गया । यह १६२८ की घटना है ।

आपने जहा लोहारू मे आर्यसमाज के सत्याग्रह तथा हैदराबाद धर्मयुद्ध के लिए महान कार्य किया वहा हरियाणा क्षेत्र में दलितोद्धार तथा मूले जाटो की शुद्धि के लिए अनशन तक किया ।

श्रावण बदी द्वितीया सम्वत् १६६२ तदनुसार १४ अगस्त १६४६ को महात्मा भगत, फूलसिंह जी कोकन्या गुरुकुल खानपुर मे चार मुसलमानो ने गोलियो से शहीद कर दिया ।

महात्मा फूलसिंह के बलिदान के प्रभाव से आज कन्या गुरुकुल हरयाणा प्रदेश मे महिलाओ की सब से बडी सस्था बन कर उनको कीर्ति-पताका फहरा रही है उनकी पुण्य आत्मा को शत शत नमन । □

पुस्तक समीक्षा

आर्य अनुपम भजनावली

आर्य अनुपम भजनावली मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सुयोग्य भजनोपदेशक प० चुन्नीलाल आर्य द्वारा सगृहीत भजनो का सकलन है। इसम प्रभुभक्ति के ४४ गीत सम्मिलित किए हैं। इन गीतो को विभिन्न अवसरो पर तथा सस्कारो के समय गाया जा सकता है। इन लघु पुस्तिका मे उन्होने मोह गम जल क ड के लिए वर्षो मुकदमा ... हिन्दुओ को अ क र दिलवाने वाले मह नाय गिरध ील ... के ति भी अपने भ वसुम व्यक्त क है। इसमे महात्मा उत्थान मुनि को भी ससम्मान स्मरण किया गया है।

[आर्य अनुपम भजनावली भाग २, प० चुन्नीलाल आर्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा—१५ हनुमान रोड नई दिल्ली पृष्ठ सख्या—३६ मूल्य २ रुपये]

गीताञ्जलि

प्रभुभक्ति के भजनो का अनुपम सग्रह गीताञ्जलि रवीन्द्रनाथ टगोर की कृति गीताञ्जलि की याद दिलाता है। इसमे नाम साम्य मात्र ही नही है अपितु भावप्रवणता भी वैसी ही है। इन गीतो की रचना सकलन सम्पादन एव प्रकाशन का समुचित दायित्व यशस्वी वदिक विद्वान प० यशपाल सुधाशु ने स्वय वहन किया है। इस लघु पुस्तिका का इतने कम समय मे यह चौथा सस्करण इसकी लोकप्रियता का परिच यक है। लेखक ने अपनी प्रस्तावना मे इस पुस्तिका के प्रणयन के सम्बन्ध मे अपने उद्देश्य को स्पष्ट कर दिया है कि चिन्तन की वला मे एकाग्र होकर सदग्रन्थो और महापुरुषो के वचनो का पठन और मनन अवश्य करना चाहिए। उन्होने प्रभु से प्रार्थना भी की है कि हम धर्म देश और जाति की रक्षा करने मे सर्वदा अग्रसर रहे और माया के बन्धन से छूटकर आपका साक्षात्कार कर।

[गीताञ्जलि—प० यशपाल सुधाशु आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली ६। पृष्ठ ८०। मूल्य छ रुपये]

उपदेश...

(पृष्ठ ? का शेष)

कहलाना शोभा देता है और जब ऐस ब्रह्मचारियो की सख्या ससार मे बढती है तभी ससार का कल्याण होता है।

शब्दार्थ

(अर्वाक् अन्य) एक समीपवर्ती (दिव पृष्ठात् पर अन्य) द्युलोक के उपरले भाग से परे दूसरा (ब्राह्मणस्य निधी गुहा निहितौ) ब्रह्मज्ञान के दो कोश (आचार्य के हृदयरूपी) गुफा मे सगृहीत है। (तौ ब्रह्मचारी तपसा रक्षति) उन दोनो की ब्रह्मचारी तप से रक्षा करता है और ब्रह्म विद्वान तत केवल कृणुत) ब्रह्म को जानता हुआ उसकी केवल आराधना करता है।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Post in N D P S O on 24, 25-8-89 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३६

आराधना के स्वर

दिल्ली प्रशासन की हिन्दी अकादमी तथा हरियाणा साहित्य एकादमी के सयुक्त तत्त्वावधान मे एक राष्ट्रीय कवि सम्मेलन 'आराधना के स्वर' का बहुत सुदर आयोजन किया गया। सम्मेलन मे देश के विभिन्न प्रान्तों से लगभग ३० विख्यात वरिष्ठ तथा युवा कवियो ने राष्ट्र की आराधना के गीत प्रस्तुत किये।

महाकवि तुलसी जयन्ती नेहरू शताब्दी तथा स्वतन्त्रता दिवस को समर्पित इस कवि सम्मेलन मे देशभक्ति राष्ट्रीय एकता, चरित्र-निर्माण मे पारस्परिक सद्भाव के गीत प्रस्तुत किये गये, जिन मे जहा देश की युवा पीढी के नाम राष्ट्र-प्रेम, भाई-चारे और मानवता की सेवा का सन्देश निहित था वहा वर्तमान सरकार की दब्बू नीतियो पर करारे व्यग्य भी थे।

कवि सम्मेलन का संचालन सुप्रसिद्ध कवि सोम ठाकुर ने किया। सम्मेलन मे जहा श्री रमानाथ अवस्थी, श्री कन्हैयालाल नेन्दन, श्री कुवर बेचैन, सुश्री अर्चना ठाकुर, डा० पुष्पलता ठाकुर, श्री रमेश जाखू, श्री सत्यानन्द बसल आदि की कविताए सराही गई, वहा युवा आर्य कवि श्री सारस्वत मोहन 'मनीषी' की कविताओं की पक्तियों ने एक अलग ही समा बाध दिया। वीररस की उनकी कविता पर श्रोताओं के साथ साथ सभापति महोदय को भी बार बार सराहना करनी पडी।

कवि सम्मेलन मे पूर्व आयोजित एक विशेष गोष्ठी में हिन्दी के प्रख्यात साहित्यकार उपस्थित हुए जिन्होने महाकवि तुलसी की काव्य-रचना, उनकी लोकमगल की भावना और रामराज्य की कल्पना को आज के सन्दर्भ में भी प्रासगिक बताते हुए तुलसी की रचनाओ को हिन्दी साहित्य की अनुपम धरोहर की सज्ञा दी। □

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ, गदपुरी

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी, जि० फरीदाबाद (हरियाणा) का निर्वाचन सम्पन्न हुआ :

प्रधान डा० धर्मदेव शर्मा
मन्त्री श्री रामगोपाल शास्त्री
कोषाध्यक्ष . श्री मगलसिंह शास्त्री

विद्यापीठ के प्रधान तथा मुख्याधिष्ठाता के अनुसार स्वामी विद्यानन्द (पूर्व मुख्याधिष्ठाता) का इस संस्था से कोई सम्बन्ध नहीं है, अत इन्हे सस्था के नाम से कोई दान आदि न दिया जाए। □

शाखा कार्यालय: ६३, गली राजा केदारनाथ
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

सेवा में—

उत्तम स्वास्थ्य के लिए
गुरुकुल कांगड़ी
फार्मेसी
हरिद्वार की औषधियां
सेवन करें।

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६ फोन : २६१८७१

आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस गली न०१७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

ओ३म्

साप्ताहिक **आर्य सन्देश** कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वर्ष १२ . अंक ४३ | रविवार ३ सितम्बर १९८९ | भाद्रपद सम्वत् २०४६ विक्रमी | दयानन्दाब्द—१६५ | सृष्टि सवत १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश मे ५० पौं० १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

मनुष्य वही है जो स्वहित की अपेक्षा परहित को महत्त्व देता है

—लोकसभाध्यक्ष, डा० बलराम जाखड़

इस बात का कोई महत्त्व नही है कि ससार में आकर किस व्यक्ति ने कितन भौतिक मसाधन जुटाए है महत्त्व इस बात का है कि उसने अपनी आत्मा के उत्थान के लिए क्या किया है तथा अपने सम्पक म आने वालो के लिए क्या किया है जनसामान्य के लिए क्या किया है। आप इतिहास पर दृष्टि डालिए कोई व्यक्ति इसलिए याद नही किया जाता कि उसने कितने कितने महल खड किए वह इसलिए याद किया जाता है कि उसने कितनो को सहाग दिया कितनो को मैत्री भाव दिया उसने क्या विचारणा दी उससे आने वाली पीढिया किनना लाभान्वित हुइ। महाराजा मनु का नाम जगत प्रसिद्ध है। कहते हैं कि चौदह मनु हुए हैं। मनु आदि सृष्टि म था मनु जीवन यापन के नियम बनाने वाला था। वह विधि दाता था। आज मनु के नाम पर अनेक भद्दी बात जोड दी गई हैं। अस्पृश्यता सतीप्रथा महिलाओं का अपमान आदि आदि। उनके लिए ऐसी दण्ड व्यवस्थाए की गई हैं कि यदि उनकी परछाइ ब्राह्मण पर पड जाए तो उसके हाथ पैर काट दिए जाए। ऐसी बात कोई समझदार मनु नही कर सकता। वह मनु नही कर सकता जो वण व्यवस्था गुण कर्म स्वभाव के आधार पर मानता है वह मनु नही कर सकता जो यह कहता हो कि पतित भी अच्छे कर्मों द्वारा उच्च वर्ण को प्राप्त कर मकता है।

शूद्रो ब्राह्मणतामेति
ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु
विद्याद्वैश्यात्तथैव च ॥
मनु (१० ६५)

सहा आदमी वही है जो स्वहित की अपेक्षा परहित की बात कहे। आरक्षण की नीति भी विचित्र है। जब एक बार मौका मिल गया वह ऊचा उठ गया तो यह सुविधा उसके अतिरिक्त दूसरो को मिलनी चाहिए ताकि सभी का भला हो सके। सर्वे भवन्तु सुखिन मर्वे सन्तु निरामया।

श्री बलराम जाखड ने कहा कि हम आज महर्षि दयानन्द स्वामी विवकानन्द और महात्मा गाधी को इसीलिए याद करते है कि उन्होंने परहित मे काय किए। श्री जाखड ने उक्त विचार हिन्दी जगत के प्रख्यात कवि डा० श्यामसिंह शशि द्वारा रचित अग्निसागर महाकाव्य के लोकापण समारोह के अवसर पर कहे।

डा० शशि ने अग्निसागर महाकाव्य को मनु द्वारा प्रवर्तित धम के दस लक्षणो के आधार पर दस दिशाओं म बाटा है। ९५ पुस्तको के रचयिता डा० शशि को इस महा

(शेष पृष्ठ ५ पर)

वैदिक भारत विश्वगुरु रहा है और अब विश्व की सब से बड़ी ताकत बनेगा

—श्री हरिकिशन लाल भगत

भगवान् श्री कृष्ण के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में समस्त आर्यजगत म जन्माष्टमी पर्व समारोह पूवक मनाया गया। दिनाक २४ अगस्त को आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली में यजुर्वेद पारायणयज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता म आयोजित समारोह में श्री हरि किशन लाल भगत केन्द्रीय सूचना प्रसारण एव ससदीय कार्य मन्त्री ने कहा कि यह देश वेदो के अनुयायियो का देश है। यह देश मर्यादा पुरुषोत्तम राम योगिराज श्री कृष्ण स्वामी विवेकानन्द महर्षि दयानन्द सरस्वती की धरोहर है इसे खण्डित करने की साजिश रच रही ताकतो को मुहतोड उत्तर दिया जाएगा। श्री भगत ने कहा कि भारत वैदिक सस्कृति के कारण विश्व का गुरु रहा है परन्तु अब यह हमारा देश विश्व की एक सब से बडी शक्ति बन कर मामने आ रहा है। यद्यपि भारत सभी देशो के साथ मैत्री भाव रखने के पक्ष म रहा है फिर भी यदि किसी ने भारत पर आक्रमण करने की जुरत की तो उसे भारी कीमत चुकानी होगी।

उन्होने आयसमाज को राष्ट्रीय आन्दोलन बताते हुए कहा कि हमारा देश हमेशा से क्राति से जुडा रहा है तथा राम और कृष्ण के महान् आदर्शों ने देश की वैदिक सस्कृति को न केवल जीवित ही रखा अपितु समस्त विश्व में इसका प्रचार प्रसार भी हुआ।

इस अवसर पर अध्यक्ष पद से स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने घोषणा की कि राष्ट्र पर आने वाली किसी भी विपत्ति के समय आर्यसमाज सर्वस्व बलिदान को तैयार है। स्वामी जी ने कहा कि श्री कृष्ण ने खण्ड खण्ड भारत को पुन अखण्ड करके जो आदश एवम एकता स्थापित की थी वह आज भी उतनी ही जरूरी है।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

अ ग्निन्‍ इतो अ पथिव्या अग्नी समेतो नभसी अन्तरेमे ।
न श्र न्ते रश्म यि दढास्ताना तिष्ठन्ति तपमा ब्रह्मचारी ॥

थव काण्ड ११ अ० ३ सूक्त ५ ११।

दा तेज हैं जो एक दूसरे से सम्बद्ध हैं। एक पृथिवी की ओर जाता है और दूसरा उससे परे। एक प्रत्यक्ष प्राकृतिक जगत पर प्रकाश डालता है और दूसरा परोक्ष आत्मिक जगत पर। ये दानो तेज बीच मे ही एक दूसरे से मिल जाते हैं। इनको मध्य म मिल ने वाला कौन है ?— यतोऽभ्युदयनि श्रेयस सिद्धि स धर्म । जि से इस लोक तथा परलोक के सुख की सिद्धि होती है वह धर्म है। इसी धर्म ने दोनो तेजो का एकीभूत किया है। जिससे अभ्युदय सिद्ध होता है वही नि श्रेयस को भी प्राप्त करता है। ये दोनो धम मे ही दढ होते है। जिसने इस लोक के पदार्थों को यथावत स्वरूप दि। तृण से लेकर पथिवी तक और पथिवी से लेकर द्युलोक पर्यन्त के दर्शन करा के मनुष्य का उनमे उपयोग लने के योग्य बना दिया वह पहली ज्योति ज्ञान है। परन्तु अकेले इस ज्ञान से काम न चलेगा यह ज्ञान तो मनुष्य को कर्म का मार्ग दिखल ने वला है। उपनिषद ने कह है कि मनुष्य क्रियाशील है। जैस कम वह इस जन्म मे करता है वैसी ही स्थिति उसे आगामी जन्म मे मिलती है। ज्ञान की आवश्यकता कर्म के लिए है और ज्यो ज्यो मनुष्य कमशील होता जाता है त्यो त्यो उसका ज्ञ न निश्च यात्मक होता जाता है। यही अव स्था है जब ज्ञाता ज्ञय पदाथ के विषय मे रहस्य की बातें जानन लगता है अर्थात उसके समीप पहु चता है।

वही ज्ञान मज कर विज्ञ न की शक्ल मे दूसरी ओर चलता है। उसके आगे परलोक है वहा ज्ञान नही पहुच सकता। उस उच्च पद की ओर द ष्ट उठ कर ज्ञ न की पगडी गिर जाती है। तब मजा हुआ ज्ञान अति सूक्ष्म होकर अ गे चलता है आत्मिक दशन उन्ही के द्वार होते हैं। अ मदश ह ने ही सामन्य पदार्थों पर भी न्या प्रक श पडना है। जो जो प्राकृतिक वस्तुए केवल अपना बाह्य स्वरूप ही द्रष्टा को दिखलाती थी वे अपने अन्त रीय रहस्य भी उसके सामने खोल कर रख देती हैं उसी समय दोनो ज्यो तियो—ज्ञान और विज्ञान—का मल होता है उस मल का नाम है धर्म है और उसी से जो सिद्धि होती है वह इस लोक और परलोक दोनो को अपने अन्दर समेट लेती है। उन दोनो का प्रकाश स्थिरता से दढ हो जाता है। इस प्रकाश मे बुद्धि डगवाडोल नही होती। परन्तु उस प्रकाश को एकरस दृढ रखना तप का काम है। ज्ञान और विज्ञ न की किरणो का चक्र साधारण मनुष्य के हृदय पर भी अंकित हो जाता है। पर तु वहा उसकी स्थिति बिना तप के नही हो सकती। इस तप का धारण करके ज्ञान और विज्ञान को उसके अन्दर स्थित करने की शक्ति ब्रह्मचारी मे ही होती है। उन दोनो से ऊपर स्थित होना ब्रह्मचर्य व्रत और साधन की पराकाष्ठा है।

ज्ञान और विज्ञान दोनो की स्थिति का स्थान ब्रह्मचारी का विशाल और दृढहृदय है। वह ज्ञान स र्थक नही उलटा व्यक्तियो और जातियो को डुबाने वाला है जिसका आधार ब्रह्मचय नही है। इसी वेदमन्त्र की आज्ञा को लक्ष्य मे रखकर आचार्य उपाध्याय और अध्यापक क ब्रह्मचारी होना आव श्यक बतलाया गया है। मानसिक शिक्षा चाहे कितनी भी ऊची हा ससार का कल्याण करने वाली नही होती यदि उसका फैलाने वाला ब्रह्मचारी नही। जिस देश और जिस समय मे अब्रह्मचारी शिक्षक प्रधान हुए उस समय देश और उस समय मे शिक्षा मनुष्यो के लिए हानिकारक सिद्ध हुई। यूनान और रोम जिस समय रसातल को पहुच उस समय सासारिक विद्या की उनमे कमी न थी। स्पार्टा ३०० योद्धा सहस्रों का मह मोड देने की शक्ति उसी समय मे रखते थे जबकि उस नगर मे बालक और बालि काए ब्रह्मचर्य का कठिन व्रत धारण किया करती थी। राम के समय अयोध्या का जो वर्णन है वह तभी सम्भव था जबकि राम लक्ष्मण से राजपूत वसिष्ठ के आश्रम से ब्रह्म चर्य के नियम पालन की शिक्षा लेकर निकलते थे। दशरथ के समय की अयोध्या का वर्णन करते समय आदि कवि वाल्मीकि लिखते है

तस्मिन पुरे वरे हृष्टा
धर्मात्मानो बहुश्रुता
नरास्तुष्टा धनै स्वै
स्वैरलुब्धा सत्यवादिन
कामी वा न कदर्यो वा
नृशस पुरुष क्वचित् ।
द्रष्टु शक्यमयोध्याया
नाविद्वान्‍ न च नास्तिक ॥

इस श्रेष्ठ पुरी मे सब लोग हृष्टपुष्ट बहुश्रुत रोगरहित सत्य व दो और अपनी ही कमाई से सतु ष्ट थे। कामी कन्जूस खुशामदी अविद्वान वा नास्तिक कोई भी एसा पुरुष अयोध्या मे दिखाई न देता था। रामायण के इस वर्णन का भले ही कोई पुरुष अत्युक्ति कह परन्तु जो चित्र राम सीता और लक्ष्मण के ब्रह्मचर्य व्रत का कवि ने खींचा है उसका परिणाम इसी प्रकार की जनता हो सकती है। धन्य है वह देश जहां ज्ञान और विज्ञान के ऊपर पग धर कर अपने बल से तपस्वी ब्रह्मचारी उनको सस र के कल्य ण के लिए दृढ रख सकता है।

शब्दार्थ

(अग्नि इमे नभसी अन्तरा समेत) दो अग्नि इन दोनो एक दूसरे से मिले हुओ के अध प्रदेश मे मिलती हैं— अन्य अर्वाक्) एक समीपवर्ती है। (अन्य इत पृथि व्या) और दूसरी इस पृथिवी से दूर है (तया रश्मय दृढा अधिश्रयन्ते) उन दोनो की किरणें दृढ होकर अधिकारपूर्वक ठहरती हैं—(ब्रह्मचारी तपसा तान आतिष्ठत) ब्रह्मचारी तप से उनके ऊपर बैठता है।

गा रहा मधुर ये गीत कौन

★

ओ३म को व स्तोम राधति य जुजोषय विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन ।
को वोऽध्वर तुविजाना अर करद्यो न पथदरयह स्वस्तये ॥

ये स्तवन गीत बुन रहा कौन सुन सिद्ध कर रहा गीत कौन ।
गा रहा मधुर ये गीत कौन, सुन रहा गीत वह मीत कौन ॥

किसने ये ऋचा बनाई हैं
जो भाव भंगिमा लाई हैं
इनको परिपक्व किया किसने
किसने सस्तुतिया गाई हैं।

यह छोड रहा सगीत कौन लग रहा किन्तु वह मीत मौन।
गा रहा मधुर ये गीत कौन सुन रहा गीत वह मीत कौन ॥

ज्ञानी अग्रज या अनुज सभी
जग मननशील ये मनुज सभी
इनके शुभ कर्म पूर्ण करता
कौन हटाता अघ दनुज सभी।

हिंसा पर करता जीत कौन दे रहा अहिंसा रीत कौन।
गा रहा मधुर ये गीत कौन सुन रहा गीत वह मीत कौन ॥

क्या तुमने कुछ अनुमान किया
हो भले अपरिमित ज्ञान किया
प्यारे उस परमपिता ने ही
वरदान पूर्ण यह गान किया।

यह छेड रहा सगीत कौन, यह मुखर किन्तु वह मीत मौन।
गा रहा मधुर ये गीत कौन सुन रहा गीत वह मीत कौन ॥

—देवनारायण भारद्वाज

ओ३म्
आर्य सन्देश

धर्मान्तरण एवं शादी

हमारे समाज के सम्मुख धर्मान्तरण की समस्या मुह बाए खडी है। धर्मान्तरण के कई उद्देश्य होते है, सामाजिक समानता प्राप्त करना धर्मान्तरण का एक मुख्य उद्देश्य है। कहा जाता है कि ईसाई मुसलिम अथवा बौद्ध धर्म में कोई बडा छोटा नही होता। वहा पर सभी लोग एक समान होते है। उनके समान अधिकार होते है। सामाजिक कार्यों में सभी की समान भागीदारी होती है। शादी-विवाह मे अथवा त्योहारो मे कोई बडा छोटा नही होता। सवर्ण हिन्दुओ के अत्याचारो से तग आकर हरिजन अपना धर्म बदल लेते है। आदिवासी भी अपना धर्म बदल लेते हैं। उनके पास अच्छा जीवन जीने का एक ऐसा इन्द्रजाल मौलवियो अथवा पादरियो द्वारा बिछाया जाता है कि वे सम्मोहित हो जाते हैं।

परन्तु पिछले दिनो एक नई बात सामने आई है कि एक व्यक्ति केवल शादी करने के लिए धर्म बदल लेता है। क्या किसी व्यक्ति को यह अधिकार मिलना चाहिए कि वह केवल शादी करने के लिए इस्लाम धर्म को कबूल कर ले। दिल्ली की एक अदालत के सामने ऐसा ही मामला आया। एडीशनल सेशन जज जे डी कपूर ने कहा कि ऐसे मामले में परिस्थितियाँ और उद्देश्य एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इसमें यह बात जरूर ध्यान में रखी जानी चाहिए कि कही व्यक्ति केवल दूसरी शादी करने के लिए ही तो धर्म परिवर्तन नही कर रहा है। जो व्यक्ति सही मन से धर्म परिवर्तन करता है, उसका मन साफ और विश्वास अडिग होता है, परन्तु जो किसी लोभ अथवा कामासक्ति के कारण ऐसा करता है, उसका मन साफ नही होता। मौलवियो और पादरियो को धर्म परिवर्तन कराते समय यह बात ध्यान मे रखनी चाहिए।

जावेद खा की पत्नी पूजा खन्ना ने शिकायत दर्ज की थी कि उसके पति ने बिना उससे तलाक लिए दूसरी शादी कर ली है। जावेद खा ने पुनरीक्षण याचिका दायर की और कहा कि उसे उसके धर्म के अनुसार चार शादिया करने का अधिकार है। जावेद खा का पहला नाम जय शर्मा था। उसकी और पूजा खन्ना की शादी अप्रैल १९८३ में हिन्दू रीति से हुई थी। शादी के एक वर्ष बाद सम्बन्ध टूट गए। उसने इस्लाम धर्म अपना लिया और अपना नाम बदल कर जावेद खान रख लिया। आगे चल कर उसने एक लडकी रजनी आहूजा से शादी कर ली। रजनी आहूजा ने भी इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया और अपना नाम सईदा रख लिया। पूजा खन्ना का तर्क यह है कि जय शर्मा ने बिना उससे तलाक लिए केवल रजनी से शादी करने के लिए धर्म परिवर्तन किया है। न्यायमूर्ति ने इस मामले पर गभीरता पूर्वक विचार करके जावेद खान की पुनरीक्षण याचिका निरस्त कर दी और पूजा खन्ना की याचिका पर अभी विचार किया जाना है।

यह विषय मानव-शास्त्रियो, समाज शास्त्रियो तथा धर्माध्यक्षो के लिए विशेष ध्यान की अपेक्षा करता है। जहा पर मात्र उद्देश्य विवाह हो, क्या वहाँ पर धर्मान्तरण किया जाना चाहिए। सम्बन्धित लोगो को इस पर गभीरता पूर्वक विचार करना चाहिए।

—डा० धर्मपाल

पुस्तक समीक्षा

गौरवगीत

श्री ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति ने गौरवगीत' लिखकर आर्य जाति के ऊपर महान उपकार किया है। उनकी ये कविताए धर्म, त्याग और बलिदान की भावनाओ से ओतप्रोत होने के कारण छोटे बडे सभी के मनो को उत्तम भावो से भरने वाली हैं। श्री शास्त्री ने अपने अन्तरतम की गहराइयो को काव्यात्मक शैली मे उभारने का सत्प्रयास किया है।

इस पुस्तिका का विमोचन गत वर्ष रामलीला मैदान मे श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने किया था। इस पुस्तक की उपयोगिता इस बात मे नही है कि इसमे कविताए हैं बल्कि इसकी उपयोगिता इस बात मे है कि इसमे ऐतिहासिक वीरो की गाथाए हैं, इसमे धर्मवीरो की गाथाए है और इसमे हमारी धर्म पुस्तको के सार हैं तथा साथ ही हमे कर्त्तव्य बोध कराया गया है।

इस पुस्तिका का प्रकाशन ज्ञान बुक डिपो, नई सडक, दिल्ली-6 ने किया है।

— डा० धर्मपाल

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज पालम कालोनी

आर्यसमाज पालम कालोनी नई दिल्ली मे १५ अगस्त, १९८९ को वार्षिकोत्सव के अवसर पर 'भारत रक्षा सम्मेलन" आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि डा० धर्मपाल आर्य, (प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) ने कहा कि भारत रक्षा के लिए आवश्यक है कि हम अपनी रक्षा करे तथा अपने धर्म की रक्षा करे। जहा-जहा धर्मान्तरण हुआ है, वही वही पर देश की रक्षा को आघात पहुचा है और वही से विघटन की लहर चली है। ये स्थान पजाब, कश्मीर, मिजोराम अथवा नागालैंड कोई भी हो सकते हैं। अत भारतीय धर्म एव सस्कृति की रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य होना चाहिए। इस अवसर पर श्री वेदपाल शास्त्री वैद्य रामगोपाल गोष्ठवाल श्री उदय श्रेष्ठ श्री रामकृष्ण सतीजा तथा श्री योगेश्वर जी ने भी अपने विचार रखे। श्री विजयपाल सिह ने समारोह की अध्यक्षता की।

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार अंक स्मृति

आर्यसदेश का डा० सत्यकेतु विद्यालकार विशेषाक १०, १७ २४ सितम्बर के अको के स्थान पर सयुक्त रूप मे निकाला जा रहा है। पाठको से विनम्र निवेदन है कि हमारा सहयोग करे।

—सम्पादक—

प्रवर पथ प्रदर्शक की सहज सन्निकटता

—देवनारायण भारद्वाज

हमारे मन मे छिपी ईर्ष्या-द्वेष की भावनाएँ हमारे शत्रुओ को सबल बना देती हैं और इनके स्थान पर प्रशसा-प्रेम की भावनाएँ शत्रुता को हटाकर मित्रता करा देती हैं। दूसरे की प्रगति देखकर मन ही मन कुढना कि ऐसी उपलब्धि हमारे पास भी होती तो कितना अच्छा होता। ईर्ष्या इसी सीमा तक तीर चलाती है। यह प्रगति हमारे वश मे हो, न हो, पर दूसरे को यह उपलब्धि कदापि नही होनी चाहिए। उल्टे उसकी हानि होनी चाहिए। द्वेष-भावना अधिक दूर तक तीर चलाकर गहरा घाव करती है। इन्ही भावनाओ से सगे सम्बन्धियों मे परस्पर दूरी बढ जाती है। उन्नति करने पर हम ईर्ष्या द्वेष स्वय से सम्बन्धित व्यक्तियो से ही करते है जबकि उसी नगर मे पहले से ही उच्च समुन्नत व्यक्ति बडी सख्या मे होते है—हम उनसे नही करते क्योकि उनमे हमारा सम्बन्ध क्या पहचान तक नही है। दो भाई व्यवसाय-धन सुविधा वृद्धि के कारण परस्पर ईर्ष्या द्वेष मे फस सकते हैं नगर के बड सेठ से उन्हे क्या लेना देना। कक्षा मे साथ पढने वाले सहपाठियो मे किसी को अधिक आगे बढता देखकर ईर्ष्या द्वेष का भूत सवार हो सकता है पर अध्यापक के प्रति नही होता है भले ही वह पहले से ही बहुत आगे बढा हुआ है। इस प्रकार ईर्ष्या द्वेष से उत्पन्न शत्रुता हमे अरक्षित करती है और प्रशसा प्रेम से सृजित मित्रता हर क्षण हमारी रक्षा करती है। देखिये प्रस्तुत वेद मत्र हमे इस दिशा मे किस प्रकार प्रेरित करता है—

स त्व नो अग्नेऽवमो भवोती
नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ।
अव यक्ष्व नो वरुण रराणो
वीहि मृळीक सुहवो न एधि॥
ऋ० म० ४। सू० ४। म० ५

पदार्थ—(स) वह (त्व) आप (अग्ने) प्रकाश स्वरूप प्रभो (ऊती) अपने रक्षक कर्म-आगमन से (न) हमारे (अवम्) रक्षक (भव) हो। (अस्या) इस (उषस) उषाकाल के (व्युष्टौ) अग्निहोत्र सदृश विशेष दाह जनित प्रकाश मे (नेदिष्ठ) अत्यन्त निकट हो। (रराण) बुलाये जाने योग्य फलप्रद (न) हमारे हम लोगो को (वरुणम्) श्रेष्ठ अध्यापक उपदेशक व मार्गदर्शक (अवयक्ष्व) प्राप्त हों। (न) हमारे लिए (सुहव) सुगमता से पुकारे जाने वाले (एधि) होओ (मृडीकम्) सुख को (वीहि) प्राप्त कराओ।

सदर्भानुसार मन्त्रार्थ पर दृष्टिपात करने से (स) वह एव (त्व) आप शब्द विशेष ध्यान चाहते हैं। त्व-आप कहकर हम अग्नि ज्ञान रूप परमेश्वर को सम्बोधित करते हैं, स—वह पूर्वमंत्र के वरुण, विद्वान् व देव जनो से सम्बन्धित है। इस प्रकार हम सर्वशक्तिमान अन्तर्यामी प्रभु साथ-साथ अपने सम्पर्क के शासक माता पिता-आचार्य एव सभी परिचित जनो से प्रार्थना करते हैं कि सभी हमारे रक्षक बने रहें। इस उषाकाल मे जो शुभ कार्य हम करने जा रहे हैं, उनमे वे प्रारम्भ से ही साथ रहे, और जब वे साथ न चल पाय तो कोई न कोई अन्य प्रतिनिधि मार्गदर्शक ही साथ कर दें, जिसे सरलता से अपनी रक्षा के के लिए बुला सकें और सुख प्राप्त कर सकें।

ब्रह्मचारी विद्यार्थी का जीवन ठीक वैसा ही होता है जैसा ब्राह्म मुहूर्त मे जागने वाले साधक का होता है। इस अवधि मे सारा वातावरण शान्त एकान्त ध्यान योग्य होता है। गृहस्थ, वानप्रस्थ सन्यासियो के लिए भी सर्वाधिक उपयोगी उपासना योग्य यही कालावधि होती है। उषाकाल मे सूर्य की प्रथम किरण के प्रस्फुटित होते ही सभी अपने कार्यक्षेत्र मे उतरने लगते हैं। कोई यज्ञ-अग्निहोत्र, वेद पाठ या अन्य किसी शुभ कर्म से अपना दिनारम्भ करता है तो कोई इस वेला को नींद मे पडे पडे यो ही चले जाने देता है। प्रातःकाल मे किसी ने अपने मित्र के लिए टेलीफोन किया, वह कहीं और निकल गया। किसी महिला का मधुर स्वर आया 'राग नम्बर' गलत नम्बर है-खीज भरी आवाज मे उसने टेलीफोन रख दिया। थोडे अन्तराल के बाद उन्होने फिर टेलीफोन किया तो वही गलत नम्बर मिल गया। उन्ही देवी जी का स्वर सुनाई दिया, तो इन सज्जन ने उनसे क्षमा मागी। पर महिला ने कहा इसमे क्षमा मागने की कोई बात नही है मैं तो आपको धन्यवाद देना चाहती हू कि आपने मुझे इस उषा में जगा दिया। यह सुन्दर सुहाना दृश्य-प्रकृति का सुखद स्पर्श, रवि अरुणोदय का दर्शन मैं कहा कर पाती थी। सब नींद मे ही निकल जाता था।

उषाकाल सब के लिए मनोरम होता है। प्रकृति की हरियाली, पुष्पो की शोभा व सुगन्ध पक्षियों का कलरव न अधिक शीत न अधिक ताप के अभिनव क्षणो मे हम सुखमय दिन की योजना बनाते हैं। हम जहा जहा जाते है अपनी रक्षा के लिए एक साथी साथ लेकर चलते हैं-वह है 'अग्नि' परमेश्वर। वह अति सूक्ष्म होने से हमारे अन्दर ही अन्दर रमा रहता है और अति विराट होने मे हमारे बाहर ही बाहर घूमा-जमा व थमा रहता है। हमारी भावनाओ को क्रियात्मक भूमि पर लाना उसका काम है। स्नेह-सहयोग की भावना होगी तो मित्र बनकर आ जायेगा और ईर्ष्या-द्वेष की भावना होगी तो वही शत्रु बनकर खडा हो जायेगा। पहले वह रक्षा कर सकता था अब तो वह दण्ड-प्रहार कर देगा। तब तो उषा काल मे ही हमे प्रातरग्निम् प्रातरिन्द्र हवामहे उस अग्नि को इन्द्र बनाकर अपनी समृद्धि के लिए साथ कर लेना है।

सत्य ही धर्म है आचार्य ने हमे सिखा दिया पर कोई अनुभवी मार्गदर्शक ही हमे यह सिखा सकता है कि हमे सत्य को मधुरता के साथ प्रयुक्त करना चाहिए, तभी हम रक्षित होगे अन्यथा अरक्षित हो जायेंगे। किसी की मृत्यु पर शोक प्रकट करने के लिए बडे भाई ने छोटे भाई का भेज दिया। वह जब मृतक के घर पहुचा तो बाहर गली मे हो उसने कुछ व्यक्तियो की चर्चा सुन ली—मृतक बडा भ्रष्ट-दुष्ट और हिंसक था—अन्दर पहुचकर उसने मृतक के सम्बन्धियो से कह दिया, आप लोग क्यो दुखी होते हैं वह तो बहुत बुरा आदमी था, मर गया अच्छा हो हुआ। बात आई गई हो गई। एक दिन मृतक के सम्बन्धी की भेंट शोक प्रकटकर्ता के बडे भाई से हो गई तो उसने भाई से परिवाद किया कि आपके छोटे भाई ने कैसा कटु व्यवहार किया था शोक के समय, तो बडे भाई ने खेद प्रकट किया किन्तु कह दिया 'क्षमा करें, अगली बार आपके यहा किसी के मरने पर मैं स्वय ही आऊगा।' सिद्धान्त को व्यवहार के अनुकूलन की आवश्यकता होती है। दो व्यक्ति यात्रा मे रात्रि हो जाने पर एक ग्राम मे रुक गये। सतुआ में नमक मिलाना था। एक ने दूसरे व्यक्ति से कहा जाओ, देखो वह महिला तुम्हारी माता के समान है उससे जाकर थोडा नमक माग लाओ, वह गया और बोला 'ओ मेरे पिता की लुगाई थोडा नमक दीजिए।' सुनते ही वह डडा लेकर उस की ओर दौड पडी। व्यक्ति ने स्थिति से अपने साथी को अवगत कराया। थोडी देर बाद दूसरा व्यक्ति आ गया और उस महिला से जाकर बोला—माता जी नमस्ते हम यात्री हैं सतुआ खाने के लिए थोडा नमक चाहिए, और वह उसे मिल गया। इस प्रकार ये शब्द हैं ही जो हमारे अन्तर्भाव को प्रकट करके हमारे मित्र या शत्रुओ की सख्या बढा देते हैं या कम कर देते हैं। भूल सुधार कर लेने से त्रुटि नही होने पाती।

जगल में से होकर जाने वाले मार्ग के किनारे बनो मठिया के पास बैठकर भिक्षा मागने वाले अन्धे एव लगडे दो भिक्षुक इसलिए लडते रहते थे, क्योकि अन्धे को भीख कुछ अधिक मिल जाती थी, लगडे को कुछ कम। लगडे के मन मे यही द्वेष का कारण था। जगल मे आग लग गई, दोनो के प्राण खतरे में हो गए। अग्नि की ज्वाला में द्वेष को जलाकर वे सचेष्ट हो गए। अन्धे ने लगडे को कन्धो पर चढाकर उसे अपनी टागें दे दी तो लगडे ने अपनी आखें दे दी और उस अग्नि से दोनो बच गए। सद्गुण हमारे वे साथी हैं जो जन्म काल से हमारी रक्षा करते हैं। सन्तान की लालसा से मा असह्य प्रसव-पीडा भविष्य की सुखमय आशा के भरोसे सहन कर लेती है। वही उसकी प्रथम शिक्षिका या गुरु होती है। शिक्षा में आने वाली बुराइयो को रोकना और अच्छाइयो को बढाना उसका काय होता है। पेंसिल-कलम-पुस्तक चुराकर लाने पर बालक को प्रताडित न करके प्रोत्साहित किया तो वह आगे चोर डाकू बन जायेगा। ऐसे ही वातावरण से पला युवक डाकू बनकर हत्या के अपराध में पकडा गया और फांसी के तख्ते पर पहुंच गया।

(क्रमश...)

आर्य जगत के समाचार

वेदप्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज सुन्दरनगर (हि०प्र०)

आर्यसमाज सुन्दर नगर, जिला मण्डी, (हिमाचल प्रदेश) मे १७ से २४ अगस्त तक वेद सप्ताह (श्रवाणी पर्व) समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर हैदराबाद सत्याग्रह की अर्धशताब्दी के उपलक्ष्य में आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के महामन्त्री श्री भगवान देव चैतन्य ने बलिदानी आर्यवीरो को श्रद्धाजली अर्पित की तथा सत्याग्रह की पृष्ठभूमि तथा इसकी सफलता की चर्चा की। अन्तिम दिन योगिराज श्रीकृष्ण के जीवन पर विशेष व्याख्यान हुए। इसी अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा घोषित त्रिसूत्रीय कार्यक्रम का दृढता से अनुमोदन किया गया तथा पूर्णरूप से सफल बनाने का सकल्प लिया गया।

आर्यसमाज धार

आर्यसमाज धार (मध्य प्रदेश) मे वेदप्रचार सप्ताह १० से १६ अगस्त तक बडे समारोहपूर्वक मनाया गया। प्रतिदिन प्रात यज्ञ तथा रात्री में वेद प्रवचन का कार्यक्रम चलता रहा। १७ अगस्त की प्रात श्रावणी उपाकर्म का आयोजन किया गया।

आर्यसमाज रेलवे कालोनी

आर्यसमाज रेलवे कालोनी वेद मदिर बिस्मिल चौक गोरखपुर (उ०प्र०) ने वेद प्रचार सप्ताह दिनाक १७ अगस्त से २४ अगस्त तक, क्षेत्र के विभिन्न स्थानो में प्रात तथा सायकाल यज्ञ, भजन प्रवचन एवम् वैदिक साहित्य के वितरण के साथ बडे समारोहपूर्वक मनाया। २४ अगस्त को योगिराज श्रीकृष्ण जन्मोत्सव भी मनाया गया।

नवीन आर्यसमाजों की स्थापना

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बुलन्दशहर द्वारा जिले के प्रसिद्ध मेले (भोला महादेव) भाईपुर-ब्राह्मनान एव रबूपुरा मे २८, २९ व ३० जौलाई को आर्यसमाज के प्रचार का आयोजन किया गया, जिसके फलस्वरूप दो नवीन आर्यसमाजो की स्थापना हुई।

आर्यसमाज रबूपुरा

प्रधान डा० धर्मपाल गुप्त
मन्त्री श्री अशोक कुमार
कोषाध्यक्ष नरेन्द्र कुमार

आर्यसमाज भाईपुर ब्राह्मनान

प्रधान [illegible] तेजराम शर्मा
मन्त्री प० दीपचन्द शर्मा
कोषाध्यक्ष हरिश्चन्द्र शर्मा

वेद और कर्मकाण्डीय विनियोग पर

वेदगोष्ठी का आयोजन

इस वर्ष ४, ५, ६ नवम्बर को अजमेर मे सम्पन्न होने वाले ऋषि मेले के अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ की ओर से परोपकारिणी सभा के तत्वावधान मे "वेद और कर्मकाण्डीय विनियोग" विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया है। वेद एवं वैदिक-साहित्य के विद्वानो तथा जिज्ञासुओं को अपने शोध-पत्र संयोजक, वेदगोष्ठी, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर (राजस्थान) को भिजवाने चाहिए।

निर्वाचन

आर्यसमाज चूनामण्डी, पहाड़गंज

आर्यसमाज चूनामडी पहाड गज, नई दिल्ली ५५ का वार्षिक निर्वाचन ६ अगस्त को प० हरिदेव जी अध्यक्षता म सम्पन्न हुआ।

प्रधान श्री बलराज आहूजा
मन्त्री शामदास सचदेव
कोषाध्यक्ष रोशनलाल मलिक

आर्ययुवक सभा फिरोजपुर छावनी

आर्य युवक सभा फिरोजपुर छावनी का वार्षिक निर्वाचन १४ अगस्त को सम्पन्न हुआ।

प्रधान श्री विजय आनन्द
मन्त्री राकेश गुप्त
कोषाध्यक्ष दीपक सलूजा

आर्यसमाज सेक्टर २२-ए, चण्डीगढ़

आर्यसमाज सेक्टर २२-ए चण्डीगढ का वार्षिक निर्वाचन दिनाक १६ जौलाई को सम्पन्न हुआ।

प्रधान श्री डा० इन्द्रराज शर्मा
मन्त्री प्रेमचन्द मनचन्दा
कोषाध्यक्ष गुलशन कालडा

आर्यसमाज सफदरजंग एन्क्लेव

आर्यसमाज सफदरजग एन्क्लेव नई दिल्ली का वार्षिक चुनाव दिनाक २३ जौलाई को श्री एच० एल० कोहली की अध्यक्षता म निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

प्रधान डा० जे०एल० आजाद
मन्त्री श्री सूरज प्रकाश मलिक
कोषाध्यक्ष श्री एन० के० प्रसाद

(पृष्ठ १ से आगे)

वैदिक भारत...

समारोह में पूर्व सासद प० शिवकुमार शास्त्री तथा प० यशपाल सुधाशु ने जहा कृष्ण के जीवन से सम्बन्धित विभिन्न पक्षो का विस्तृत परिचय दिया वहा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने जोर देकर कहा कि हमें भागवत के मुरली मनोहर कृष्ण नहीं बल्कि गीता के रचियता और महाभारत के सुदर्शन चक्रधारी कृष्ण की आवश्यकता है तभी यह राष्ट्र एक बार पुन विश्वगुरु की कोटि में पहुंच सकता है।

आर्यसमाज साकेत

आर्यसमाज साकेत नई दिल्ली का वार्षिक चुनाव दिनाक २३ जौलाई को निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

प्रधान डा० पूर्णसिंह डबास
मन्त्री श्री राजेन्द्र पाल गुप्त
कोषाध्यक्ष श्री मनमोहन आहूजा

पश्चिम दिल्ली वेदप्रकाश मण्डल

प्रधान प्रो० भारतमित्र शास्त्री
महामन्त्री श्री रामचन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष सुरेन्द्र कुमार बुद्धिराजा

आर्यसमाज बड़ा बाजार

कलकत्ता-६ वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनाक १३ अगस्त को सम्पन्न हुआ जिसमे सर्वसम्मत चुनाव हुआ—

प्रधान श्री चान्दरतन दम्माणी
मन्त्री खुशहालचन्द आर्य
कोषाध्यक्ष दीनदयाल गुप्त

आर्यसमाज करौलबाग

आर्यसमाज करौल बाग, नई दिल्ली का वार्षिक निर्वाचन दिनाक २३ जुलाई ८९ को सम्पन्न हुआ।

प्रधान श्री अजयकुमार भल्ला
मन्त्री चेतन स्वरूप कपूर
कोषाध्यक्ष ओम प्रकाश गुप्त

(पृष्ठ १ का शेष)

स्वहित की अपेक्षा...

काव्य की रचना करने मे सात वर्षों का समय लगा।

समारोह की अध्यक्षता श्री हरीकिशन लाल भगत केन्द्रीय सूचना-प्रसारण तथा ससदीय कार्य मन्त्री ने की। प्रसिद्ध साहित्यकार प्रो० विजयेन्द्र स्नातक डा० वेद प्रताप वैदिक डा० गगाप्रसाद विमल डा० रवीन्द्र कुमार सेठ, श्री राजेन्द्र अवस्थी ने महर्षि मनु के धर्म के दस लक्षणो की विशद व्याख्या करते हुए आदि मनु को विश्व समाज का अध्यक्ष तथा उनकी महान कृति मनुस्मृति को सविधान की सज्ञा दी।

कार्यक्रम के सफल आयोजन म डा० धर्मपाल आर्य प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने महत्त्वपूर्ण योगदान किया।

आयसमाज दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No 32387/77 Post in N D P S O on 31 1 9 89 Licenced to post without prepayment Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५१ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसस न० यू १३९

महर्षि दयानन्द सरस्वती की विशेषताए

स्वनामधन्य महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने महर्षि दयानन्द की विशेषताए नामक एक छोटी सी पुस्तिका लिखकर आयसमाज के ऊपर बहुत बडा उपकार किया था। यह पुस्तिका आज भी आय जनो के लिए एक प्रकाश स्तम्भ है जिससे दूरागत लोग तथा भ्रमित लोग प्रकाश ग्रहण करते हैं महर्षि की परिचायिका यह पुस्तिका भाषा और शैली की दृष्टि से भी अनुपम है। यह विद्वानो एव सामान्य जनो का एक समान मार्गदर्शन करती है। दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा ने इस पुस्तिका को महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर बीस सहस्र प्रकाशित कराकर नि शुल्क वितरित किया था। इस पुस्तिका के परिशिष्ट रूप मे आयसमाज की मान्यताए लघु पुस्तिका भी सकलित की थी। दानी महानुभावो एवम अन्य सस्थाओ से मेरा साग्रह अनुरोध है कि वैदिक धर्म ... के प्रचार प्रसार हेतु इस पुस्तिका की सकडो हजारो प्रतियाँ प्रकाशित करायें तथा जन जन तक पहुचायें। मेरी इस पुनीत काय मे हार्दिक शुभकामनाए।

(डा० धर्मपाल)
प्रधान दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज गोविन्दपुरी

आयसमाज गोविन्दपुरी मे वेद प्रचार सप्ताह १४ अगस्त से २० अगस्त १९८९ तक आयोजित किया गया। प० प्रमचद श्रीधर ने वेदकथा की। पूर्णाहुति के दिन प० शिवकुमार शास्त्री प० यशपाल शास्त्री और डा० धमपाल ने आय जनता को सम्बोधित किया। स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने आशीर्वाद दिया।

आर्यसन्देश पढ़े, पढ़ाये

आय जगत के समाचारो व उपयोगी लेखों, ... युक्त सामयिक चेतावनियो से जूझने की प्रेरणा देने ... आयसन्देश के ग्राहक बनिये और दूसरों को ... नि शुल्क ...

वार्षिक शुल्क मात्र २५ रुपये तथा आजीवन शुल्क मात्र २५० रुपये।

सेवा में—

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा
वदिक प्रस गली न०१७ कैलाशनगर दिल्ली ३१ मे मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५१

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ अंक ४४ रविवार १० सितम्बर १९८९ भाद्रपद सम्वत् २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द—१६५ सृष्टि सवत १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश में ५० पौंड १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

अजातशत्रु पं० शिवकुमार हमारे बीच नहीं रहे

यह वाक्य कितना हृदय विदारक हो सकता है पाठक सहज ही अनुमान लगा सकते हैं। दिल्ली के पाठक ही नहीं, सम्पूर्ण भारत के पाठक अन्य देशो के वे लोग जो आर्यसमाज मे रुचि रखते हैं, प० शिवकुमार शास्त्री के नाम से परिचित हैं। प० जी की भाषण कला अपने आप मे अनूठी थी। वे अपने विषय का प्रतिपादन सरस शैली मे किया करते थे। वे अद्वितीय विद्वान् थे। वेदो के अनुपम व्याख्याता थे आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे दिल्ली मे ही नही सर्वत्र आर्यसमाजो के मचो की शोभा थे। उनकी डायरी मे महीनो पहले प्रविष्टि हो जाया करती थी, पर फिर भी वे स्वभावत विनोद और सरल थे। 'श्रुति सौरभ' उनकी अमर कृति है। उसके प्राक्कथन में उन्होने लिखा था—मैं कभी न प्रवर वक्ता समझा गया हू और न गम्भीर विद्वान्। ऐसे विनम्र थे हमारे प० शिवकुमार जी शास्त्री। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा तालकटोरा मे आयोजित महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह मे उन्हें कहा गया कि जब तक मुख्य अतिथि महामहिम राष्ट्रपति जी आये, तब तक उन्हें ही अपना भाषण जारी रखना है और वह उद्भट सहृद इस कठिन कार्य का निर्वाह, अपनी सुपरिचित सरस, सरल एव प्रवाहपूर्ण शैली मे करता रहा। उन की वक्तृता को हजारो लोग म त्रमुग्ध हो सुनते रहे। ऐसा विद्वत्ता और वाग्मिता का अपूर्व सम्मिश्रण उनके व्यक्तित्व में आप्लावित था। औदार्य सहृदयता, अनुशासनप्रियता व्यवहार शुचिता आदि गुणों से विभूषित शास्त्री जी स्पृहणीय मानव थे। उनके सम्पर्क म जो भी आया वेह उनका ही हो गया। इस वर्ष हमारे एक समारोह मैं उपराष्ट्रपति प० शंकर दयाल शर्मा जीए। वे उनकी वे उनकी वक्तृता से इतने प्रभावित हुए कि उन्होने अस्वस्थ होते भी हम सभी कार्यकर्ताओं को उन्हें लाने के लिए अपनी बधाई भेजी।

प० शिवकुमार शास्त्री का जन्म १५ अक्तूबर १९१५ को ग्राम आर्यनगर पो० आ० शाहपुर जि० अलीगढ मे हुआ था। आठ वर्ष की आयु मे प० पुरेन्द्र शास्त्री ने उनका उपनयन कराया और वे सर्वदानन्द साधु आश्रम मे प्रविष्ट हुए। बाद मैं वे गुरुकुल महाविद्यालय सूर्यकुण्ड बदायूं मे प्रविष्ट हुए। १९३४ में वहीं से विद्याभूषण की उपाधि लेकर स्नातक हुए। इसके बाद उन्होंने विरजानन्द वेदविद्यालय वाराणसी, और क्वीस कालेज वाराणसी में अध्ययन किया और 'शास्त्री', 'काव्यतीर्थ' तथा 'व्याकरणतीर्थ' की उपाधियाँ प्राप्त कीं।

सन १९३७ से ४४ तक वे गुरुकुल ग्राम जेहलम पजाब मे आचार्य रहे। १९४५ से आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब मे महोपदेशक रहे। सन् १९५० से १९६३ तक उन्होने पजाब सभा की ओर से दिल्ला मे वेदप्रचार अधिष्ठाता का दक्षतापूर्वक दायित्व निभाया। १९६४ से १९६७ तक वे गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मे मुख्याधिष्ठाता रहे। १९६७ से १९७६ तक वे चौथी और पाचवीं लोकसभा के सदस्य भी रहे। १९७० से ७४ तक वे गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के कुलपति भी रहे। सार्वदेशिक सभा के अन्तरग सदस्य वे लम्बे समय से रहे हैं। वे धर्मार्य सभा तथा दयानन्द पुरस्कार समिति के भी सदस्य रहे हैं। वे १९७४ ७५ मे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान रहे।

उनकी विद्वत्ता के फलस्वरूप उन्हे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा तथा हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा ने समय-समय पर सम्मानित किया। आर्यसमाज दीवान हाल लाजपत नगर सदर बाजार तथा हनुमान रोड मे भी उन्हे सम्मानित किया गया।

वह अजातशत्रु विद्वान रविवार ३ सितम्बर १९८९ को अपने पार्थिव शरीर को छोडकर अनन्त मे विलीन हो गए।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

शोक सभा

दिल्ली की सभाओ, आर्यसमाजो, स्त्री आर्यसमाजो, गुरुकुलो तथा अन्य सस्थाओ की ओर से वैदिक विद्वान् प० शिव कुमार शास्त्री की स्मृति मे शोकसभा का आयोजन रविवार १० सितम्बर १९८९ को प्रातः १०.३० बजे आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल दिल्ली में किया गया है।

सभी आर्य जनो से विनम्र अनुरोध है कि व सम्मिलित होकर प० जी को अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें।

मूलचन्द गुप्त
(सयोजक)

प्रखर पथ प्रदर्शक की सहज सन्निकटता

—देवनारायण भारद्वाज

(गताक से आगे)

लटकाये जाने से पूर्व जब उस से अन्तिम इच्छा की जानकारी की गई, तो उसने अपनी मा से मिलने की चाह प्रकट की और माँ के समीप आते ही उसने अपनी मा की नाक अपने दातो म दबा ली। छुडाये जाने पर उसने बताया यही मा मेरी जन्मदायिनो है और आज यही मुझ मृत्यु की गोद में भेजने वाली है। बचपन मे की गई पेंसिल आदि की चोरी पर इसने मुझे बढावा न देकर रोक लिया होता तो आज यह दशा न होती।

उषा काल जीवन का प्रारम्भ बाल्यकाल, जब हमें अक्षर ज्ञान व सख्या ज्ञान कराया जाता है—कितनी कठिनाई से कठाग्र होता है। पहले अधिकाश व्यक्ति इसे प्रारम्भिक दशा मे कठिन समझ कर छोड देते थे और निरक्षर रह जाते थे। अब तो पढे लिखे पिता विद्यालय जाने से पूर्व ही "अ-आ-इ-ई १-२ ३-४" शिशु को स्मरण कराने लगते हैं—फिर अध्यापक इस ज्ञान को बढाने लगते हैं। विद्याध्ययन के बाद कार्य क्षेत्र मे चले जाने पर सदैव माता-पिता आचार्य साथ नही रह सकते हैं पर तब भी हमे साथ चाहिए उस मार्गदर्शक का जा इस क्षेत्र मे अग्रणी हो। कार्य क्षत्र मे उत्पन्न कठिनाइयो का वही समाधान कर सकता है। इसी उद्देश्य से पाठ्यक्रम-अभिनवीकरण- रिफ्रेसर कोर्स के कार्यक्रम चलाए जाते हैं। जिनमे यही अनुभव प्राप्त व्यक्ति आकर हमारा मार्ग दशन करते हैं। एक नवयुवक विश्वविद्यालय से उपाधि प्राप्त कर एक अच्छे पद पर नियुक्त हुआ, वहा देखा कि उसी पद पर लम्बी प्र न्नति से आए एक प्रौढ सज्जन भी विराजमान हैं। प्रौढ मे अपने अनुभव तथ, युवक मे अपनी उपाधि का अभिमान परस्पर द्वेष का कारण बना हुआ था। पर एक सूत्र निकला, युवक लिखना-पढना खूब जानता था किन्तु उसे क्रियात्मक ज्ञान नही था। प्रौढ को क्रियात्मक ज्ञान खूब था किन्तु वे बिना सहायता लिखने पढने मे असमर्थ थे। साथ ही प्रौढ सज्जन चाट के शौकीन थे। युवक ने उन्हे समय-समय पर चाट के लिए निमन्त्रित करके एव उनके लिखने के कार्य मे सहयोग करके उनके द्वेष को स्नेह मे बदल दिया तथा उनके अनुभव का लाभ भी उठा लिया।

जीवन के प्रभात बाल्यकाल मे यदि हम पूर्ण पाठ पढने से वचित रह जाये, तो 'जागो तभी सवेरा' की लोकोक्ति को अपना लेना चाहिए। सन्मार्ग पर जब भी चलना आरम्भ कर दिया जाए कल्याणकारी ही होता है। कोई व्यक्ति मार्ग भूल गया, बहुत आगे बढने के बाद पूछने पर उसे वास्तविकता का पता चला। अब क्या करे वह, उसी भूले मार्ग पर बढता जाये, या वापस घर चला जाए—इससे लक्ष्य मिलना असम्भव है। जब उसे सही मार्ग का पता चला तब से उस पर उसे चल देना चाहिए। लक्ष्य पर देर-सवेर अवश्य पहुच जाएगा, फिर मनुष्य तो ८४ लाख योनियो की दूरी पार करके लक्ष्य के निकट ही आ चुका है—थोडे मे ही उत्थान है—नही तो पतन है।

चरित्र रूपी अग्नि हमारा ऐसा साथी है जो हमारी रक्षा का स्थायी साधन है। ट्रैन के डिब्बे मे कुछ युवक यात्रा कर रहे थे, कि एक स्टेशन पर एक सुन्दर युवती आ गई। युवकों ने उसके साथ दुर्व्यवहार व अश्लील क्रियाएँ करना आरम्भ ही किया था कि एक अन्य तरुण ने उठकर इन दुश्चरित्र युवको से सघर्ष किया। इन लोगो ने उसे रेल-डिब्बे से नीचे फेंक दिया। फलस्वरूप उसकी दोनो टाँगें कट गई पर उस युवती की रक्षा करने मे वह सफल हो गया। पैर कटने के बाद भी उसके साहस मे, कमी नहीं आई। स्वय अपनी जीविका से बच्चो को पालन करने के साथ ही साथ उसने विकलाग लोगो की भरपूर सहायता करना आरम्भ कर दिया। वह जान गया था कि अगहीन होने का क्या दुख होता है। उस युवक का दूरदर्शन पर साक्षात्कार कराया गया, जबकि वे युवक चरित्रहीनता के अन्धकार मे कहा खो गए या बन्दी होकर मृत्यु के शिकार हो गए कौन जानता है।

एक बडी धन राशि लेकर एक युवक किसी कार्य से स्टेशन पर उतरा। कार्य अपूर्ण रहा—रात्रि होने लगी थी वह ग्रामीण स्टेशन धीरे-धीरे जन विहीन होने लगा—पर गाडी जा चुकी थी। युवक वही रुकने को वाध्य था। उसे धन ही नही-धन के कारण अपनी जान जाने का भय लगा, तो स्टेशन मास्टर के पास जाकर अपनी स्थिति बता दी। अपने सुरक्षित ठहराये जाने का अनुरोध किया। स्टेशन मास्टर उसे अपने घर पर रख लेने को सहमत हो गए। थोडी देर बाद उन्हें युवक के धन का लोभ सताने लगा। वे लगे उस युवक की हत्या करके उसका धन हडपने की योजना बनाने। किसी काम मे स्टेशन के कक्ष में आये कुली को उनकी योजना का पता चला तो गया वह उस युवक को सतर्क करने। इतनी रात्रि मे वह जाये भी कहा। युवक ने भोजन करके स्टेशन मास्टर के घर के बाहर पडी चारपाई पर निद्रा का नाटक किया, और आधी रात मे चारपाई से उठकर एक पेड पर चढ गया। स्टेशन मास्टर का लडका सिनेमा देखकर आया और उसी खाली चारपाई पर चादर तान कर सो गया। योजना के अनुसार उसने अपने पुत्र की हत्या कर दी, जबकि यात्री बच गया। अशिक्षित कुली की मानवता शिक्षित मास्टर की दानवता पर विजय पाने मे समर्थ हो गई। प्रभु ने अपना साथ निभा दिया।

जिस साथी मार्ग दर्शक को बुलाकर हम अपनी रक्षा कराना चाहते हैं और उससे सुख प्राप्त करना चाहते हैं तो वह हमारे अधिकाधिक निकट हो—इतना निकट तो होना हो चाहिए कि आसानी से हमारी पुकार को सुन सके। ऐसा न हो हम पुकारते रहे और वह सुने ही नही। एक रक्षक ने किसी व्यक्ति से कह दिया—जब मेरी आवश्यकता हो, यह घटी बजा देना, मैं आ जाऊगा। व्यक्ति ने सोचा चलो घटी बजा कर परीक्षण कर लिया जाये। उसने घंटी बजाई रक्षक तुरन्त आ गये। कई बार ऐसा करने पर वे आते रहे फिर उन्होंने सोचा ये तो झूठों के साथ खिलवाड करते हैं—तो अब नही चलना चाहिए। अगली बार वास्तव मे भेडिया आ गया—घंटी बजाई गई पर इसे हास्य समझ कर वे नही आये। इसी प्रकार रक्षक प्रभु हमारी ऊपरी नही भीतरी आवाज को सुनता है और न्याय पूर्वक रक्षा करता है। वर्तमान मे हमार आरक्षी के रक्षक क्या करते हैं—दुघटना की प्रथम सूचना अकित नही करते यदि करते हैं तो इतनी देर से पहुचते हैं स्थल पर कि कोई लाभ नही होता।

हम अपनी समस्या लेकर किसी उच्चाधिकारी के पास जाते है पर हर समय उससे मिल नही सकते क्योकि उससे भेट का समय निश्चित है। साथ ही उसके कार्य कक्ष के बाहर बैठा चपरासी आपको अन्दर जाने नही देता है। व्यवस्था की दृष्टि से यह उचित हो सकता है किन्तु चपरासी सुविधा शुल्क लेकर ही अधिकारी को अनुमति लाये और आप उससे मिल पाए तो समस्या के समाधान मे यह एक बाधा है। एक जहाँगीर भी शासक था जिसने अपने द्वार पर घटा लटका रखा था। पीडित व्यक्ति कभी भी उसे बजा कर अपनी पुकार कर सकता था। हमारे अन्दर बैठे अग्नि-प्रभु का प्रकाश हमार आत्म विश्वास का सबल है, जिसे हम सदैव साथ रख कर अपना रक्षक सिद्ध कर सकते हैं, जीवन के प्रभात मे जिसने इसे प्राप्त कर लिया वह धन्य है। जो सवेरे उठकर अपना बिस्तर ठीक नही करता, वह दिन मे अपने विस्तार की आशा कैसे कर सकता है।

—आर्यसमाज आयमगढ
आजमगढ (उ०प्र०)

पृष्ठ १ का शेष)

अजातशत्रु पं० शिवकुमार शास्त्री

साकेत मे उनके निवास स्थान से उनका पार्थिव शरीर लाकर आर्यसमाज दीवानहाल मे आर्य जनता के दर्शनो हेतु रखा गया। तत्पश्चात निगम बोध घाट पर उनकी अन्त्येष्टि की गई। उन की अन्तिम यात्रा मे दिल्ली और निकटवर्ती प्रान्तो से अनेक आर्य-समाजो व सभाओ के अधिकारी, विद्वान्, सन्यासी गण, छात्र आए थे। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, महामन्त्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, महामन्त्री श्री सूर्यदेव, मन्त्री श्री मूलचन्द गुप्त, श्री वेदव्रत शर्मा श्री रामशरणदास आर्य श्री मामेराम आर्य, आर्य प्रादेशिक सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान प्रोफेसर शेरसिंह, प्रान्तीय आर्य महिला सभा की प्रधाना श्रीमती शकुन्तला आर्या मन्त्रिणी, श्रीमती कृष्णा चड्ढा, गुरुकुल गौतम नगर के आचार्य हरिदेव जी तथा अनेक शिष्यगण, मूर्धन्य सन्यासी स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, प० क्षितीश वेदालंकार (सम्पादक आर्य जगत), वैदिक विद्वान, पुरोहित, आर्यसमाजो के कर्मठ कार्यकर्ता भारी सख्या में सम्मिलित हुए।

आर्यसन्देश परिवार की ओर से उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना तथा परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति की कामना।

पं० सत्यकेतु विद्यालंकार स्मृति अंक

लोकार्पण समारोह

आर्यसमाज के बृहद् इतिहास के लेखक विख्यात वैदिक विद्वान् इतिहासकार स्वर्गीय प० सत्यकेतु जी विद्यालंकार के जन्मदिवस के अवसर पर दिनांक १९ सितम्बर १९८९ को साय काल ५.०० बजे आर्यसमाज मन्दिर, हनुमान् रोड, नई दिल्ली के समारोह में प० सत्यकेतु विद्यालंकार स्मृति अंक का विमोचन किया जाएगा।

सभी आर्यसमाजों से विनम्र निवेदन है कि इस समारोह मे सम्मिलित होकर अनुगृहीत करें।

मूलचन्द गुप्त
(संयोजक)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली-१

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

R N No 32387/77 Post in N D.P.S.O on 7, 8-9-89 Licenced to post without prepayment Licence No. U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस

आर्य बाल गृह राजकीय प्रथम पुरस्कार से सम्मानित

दिनाक २८ ८।१९८९ भारत सरकार द्वारा १९७४ में घोषित बाल नीति के सन्दर्भ में समाज कल्याण निदेशालय दिल्ली प्रशासन द्वारा बाल कल्याण के क्षेत्र में सर्वोत्तम कार्य करने वाली संस्थाओं में आर्य बाल गृह १४८८ पटौदी हाउस दरियागंज नई दिल्ली २ को एक विशेष समारोह में संस्था के प्रधान श्री रामकुमार जी गुप्ता को मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री जगप्रवेश चन्द्र जी ने ५०,००० का चैक व प्रथम पुरस्कार प्रमाणपत्र पुराना सचिवालय में आयोजित समारोह में प्रदान किया इस अवसर पर कार्यकारी पार्षद (स्वास्थ्य) श्री कमालाल जी चौहान ने इस समारोह की अध्यक्षता करते हुए विशेष रूप से आर्य बाल गृह के संचालकों का योगदान की सराहना की।

इस अवसर पर आर्य अनाथालय के प्रधान ला० इन्द्र नारायण जी बाल गृह के उपप्रधान श्री धर्मपाल जी गुप्ता सचिव श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री, आर्य कन्या गुरुकुल की आचार्या श्रीमती प्रेमा मल्होत्रा जी, कोषाध्यक्ष श्रीमती [illegible] व प्रबन्धक समिति के अन्य सदस्य व कर्मचारी उपस्थित थे।

संस्था के अधिष्ठाता श्री हमीर सिंह रघुवंशी जी ने बताया कि उपरोक्त व्यक्तियों के अलावा संस्था के मुख्य अधिष्ठाता श्री धीरेन्द्र प्रताप चौधरी जी की लगन परिश्रम व निष्ठा से ही आज हम दिल्ली की समस्त सामाजिक संस्थाओं में हमारी संस्था को राजकीय प्रथम पुरस्कार प्राप्त कराने में सक्षम हो सके हैं।

सेवा में—

श्रीयुत ... पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय, हरिद्वार (उ०प्र०)।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस [illegible] से मुद्रित।

❀ आर्यसन्देश ❀

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार स्मृति अंक

१७ व २४ सितम्बर १९८९

●

वर्ष १२
अंक ४५ व ४६

दयानन्दाब्द . १६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

●

प्रकाशक
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१
दूरभाष ३१०१५०

● परामर्श
डा० धर्मपाल

● सम्पादन सहयोग
पं० क्षितीश वेदालंकार
पं० नरेन्द्र विद्यावाचस्पति
श्री विद्यासागर विद्यालंकार
श्री सुभाष विद्यालंकार
श्री अजय भल्ला
श्री वेदव्रत शर्मा
पं० यशपाल 'सुधांशु'

● प्रधान सम्पादक
सूर्यदेव

● प्रबन्ध सम्पादक
मूलचन्द गुप्त

"आर्यसन्देश" साप्ताहिक
१५, हनुमान् रोड, नई दिल्ली-१

वार्षिक मूल्य २५ रुपये
इस अंक का मूल्य २० रुपये

मुद्रक :
वैदिक प्रेस
गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-११००३१

श्रेष्ठ विद्वानों

के प्रति

हमारा कर्त्तव्य

"मनुष्य को चाहिए कि जो इस जगत् में श्रेष्ठ विद्वान् हैं, उनके प्रति सदैव प्रिय वचन कहें, और अनुकूल आचरण करें और उनके गुण कर्म स्वभावों को अपने में ग्रहण करें।"

—*महर्षि दयानन्द सरस्वती*

अनुक्रम्

आर्यसमाज का इतिहास—सामान्य परिचय एवं मूल्यांकन

साहित्य—चिन्तन

सुप्रसिद्ध इतिहासकार, लेखनी के धनी, वैदिक विद्वान् डा० सत्यकेतु विद्यालंकार

भारतीय पुनर्जागरण मे आर्यसमाज का योगदान अद्वितीय है। आर्यसमाज ने उसे एक विशिष्ट सबल एव प्रबल प्रवाह प्रदान किया। समाज सुधार एव जन जागरण करने में इस आन्दोलन का स्थान सदैव स्मरणीय रहेगा, क्योकि यह आदोलन क्रांति का तो है, पर यह अपनी परम्पराओ से सुसम्पृक्त है। इसकी विचारधारा मे वैदिक विचारणा तथा सास्कृतिक मनीषा अनुस्यूत है। प्राचीन वैदिक ज्ञान को पुन प्रचलित करने मे इसने विशेष कार्य किया और इसका साक्षात् प्रमाण एव अभिनव रूप गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय है। इस सस्था मे वेद के पारंगत विद्वानो को तो सरक्षण मिला ही, आयुर्वेद एवं अन्यान्य वैदिक विद्याओ एव उनके स्वरूपो को भी संरक्षित करने का तथा सरचित करने का श्लाघ्य प्रयास यहाँ हुआ है। इसी परम्परा के सवाहक डा० सत्यकेतु विद्यालकार थे। वे स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के समय मे ही गुरुकुल में प्रविष्ट हुए थे। यह संयोग ही है कि जहा से इस मनीषी विचारक ने अपनी जीवन यात्रा प्रारम्भ की थी, वही पर उनकी ऐहिक जीवन लीला समाप्त भी हुई।

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध इतिहासकार, वैदिक विद्वान् एव विख्यात साहित्यकार डा० सत्यकेतु जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे गुरुकुल कांगडी मे छात्र रहे, प्राध्यापक रहे, विभागाध्यक्ष रहे, कुलपति रहे तथा सस्था के सर्वोच्च अधिकारी कुलाधिपति भी रहे। गुरुकुल के विषय मे उनका अपना एक स्वप्न था कि यह सस्था प्राच्यविद्याओ के शोधसस्थान के रूप मे उच्चतम स्थान प्राप्त करे। वे

आजीवन इसके लिए प्रयत्नशील रहे।

डा० सत्यकेतु का जन्म 19 सितम्बर 1903 को गाँव आलमपुर, पोस्ट आफिस रामपुर, जिला सहारनपुर, उत्तर प्रदेश मे हुआ था। वे गुरुकुल कागडी से स्नातक तथा पेरिस से डी० लिट थे। उनका निधन १६ मार्च १९८६ को गुरुकुल कागडी जाते समय सडक दुर्घटना मे हुआ। उनके सुदीर्घ जीवन की अनेक झाकिया, मनोरम पृष्ठ इस विशेषाक में सगृहीत हैं। अधिकारी विद्वानो ने उनके जीवन, व्यक्तित्व, कर्तृत्व एव कृतित्व के विषय मे लेख लिखे हैं कुछ लेख देर से मिले जिन्हें हम इस अक मे सम्मिलित नही कर पाए। कुछ लेख अत्यधिक लबे थे, जिन्हे सम्पादित करके छोटा करना पडा। कुछ लेखको के संस्मरणो मे पुनरावृत्तिया थी उनको हटा दिया गया। उसी मनीषी के लिए, आत्मीयो द्वारा लिखी किसी भी पक्ति को छोडना हमारे लिए दुष्कर कार्य था।

इस स्मृति अक को हमने चार भागो मे बाटा है—(१) श्रद्धासुमन और सस्मरण, (२) जीवन वृत्त, (३) आर्यसमाज का इतिहास सात खडो मे लिखे उनके इतिहास का सामान्य परिचय एव मूल्याकन, (४) इतिहास, राजनीति, धर्म, दर्शन तथा साहित्य सबधी उनकी कृतियो पर आधृत शोधलेख। हम उन सभी विद्वानो का धन्यवाद करना अपना पुनीत कर्त्तव्य मानते हैं, जिन्होने अपने लेखादि भेजकर हमे सहयोग दिया है।

डा० सत्यकेतु विद्यालकार को अनेक सस्थाओ की ओर से सम्मानित किया गया था। मगलाप्रसाद पारितोषिक, प० मोतीलाल नेहरू पुरस्कार प० गोविन्द वल्लभ पन्त पुरस्कार, हिन्दी अकादमी दिल्ली पुरस्कार, आर्यसमाजो व शिक्षा-सस्थाओ द्वारा प्रदत्त अनेक पुरस्कार, उन्हे प्राप्त हुए थे। हमारी हार्दिक इच्छा थी कि इन पुरस्कारो के समय के चित्रो तथा अभिनन्दन पत्रो को हम अविकल रूप से प्रकाशित करें, परतु यह सम्भव न हो सका। उनके ये चित्र और सभी अवसरो के प्रशस्ति पत्र हमे मिल न सके। अधूरी बातें लिखना हमे अच्छा नही लगा। गुरुकुल कागडी मे कुछ विवरण एव चित्र उपलब्ध हैं जो उनके व्यक्तित्व एव कृतित्व को आभावान् बनाते हैं। हमारा प्रयास रहेगा कि भविष्य मे उनके विषय मे अधिक खोज किए जाएँ और उन्हे प्रकाशित तथा प्रचारित किया जाए।

डा० साहब के जीवन के कुछ आयामो को इस विशेषाक मे सम्मिलित नही किया जा सका। वे उत्तर प्रदेश विधान परिषत् के सदस्य थे। उन्होने कुछ कृतियो के अनुवाद किए थे। वे कुछ समय पत्रकार भी रहे थे। उन्होने अनेक यात्राए की थी। उन्होने यायावर साहित्य का सृजन किया था। ये उनके जीवन

के ऐसे उज्ज्वल पक्ष थे, जिसके विषय में शोधसामग्री देना हमारा कर्त्तव्य था। तथापि हमने अपनी ओर से उस महान् व्यक्ति की स्मृति में श्रद्धा और अर्चना के साथ इस अंक का प्रकाशन किया है। इस अंक का प्रकाशन करके हम स्वयं को गौरवान्वित भी महसूस करते हैं। हमें इस बात की प्रसन्नता है कि डा० सत्यकेतु जैसे देदीप्यमान नक्षत्र का नाम हमारे पत्र के साथ जुड़ा है।

उस आर्य मनीषी, गवेषक, इतिहासकार, साहित्यकार अनथक कार्यकर्त्ता एवं सफल प्रशासक को हमारे श्रद्धासुमन अर्पित हैं।

डा० सत्यकेतु आर्यसमाज की महान् विभूति थे

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार आर्यसमाज की उन विभूतियों में से एक थे, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों के प्रचार और वेद के पवित्र संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया। उन्होंने भारत के इतिहास का पुनर्लेखन तथा आर्यसमाज के बृहद् इतिहास को ७ खंडों में लिख कर जो कीर्तिमान स्थापित किया उसके लिए सारा आर्य जगत् उनका ऋणी रहेगा। इस ग्रन्थ के माध्यम से वह स्वयं भी इतिहास पुरुष बन गए हैं।

डा० सत्यकेतु जी ने गुरुकुल कांगड़ी का स्नातक होने के अनन्तर अनेक देशों का भ्रमण किया। जहाँ भी गए वहाँ वह महर्षि दयानन्द, वेद तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहे।

डा० साहब गुरुकुल कांगड़ी में कई वर्षों तक प्राध्यापक भी रहे। उसके पश्चात् उपकुलपति तथा बाद में कुलाधिपति नियुक्त हुए।

उनका सारा जीवन आर्यसमाज की सेवा करते हुए कुलभूमि के गौरव की पुनः स्थापना में समर्पित रहा। यही कारण है कि गुरुकुल कांगड़ी की पुण्य भूमि में अपनी स्मृति को वह सदैव के लिए छोड़ गए और वहीं दिवंगत होकर गुरुकुल कांगड़ी के साथ अपने नाम को भी सदा के लिए अमर कर गए उस महान् विभूति के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

अमृतवर्षी डा० सत्यकेतु

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान्, प्रख्यात साहित्यकार, गवेषक इतिहासकार, मनीषी डा० सत्यकेतु विद्यालंकार के आकस्मिक निधन से हम सभी हतप्रभ रह गए। डा० सत्यकेतु का सम्पूर्ण जीवन अनवरत साधना एवं संघर्षों का जीवन था। उन्होंने अपनी प्रतिभा एवं प्रज्ञा के बल पर गुरुकुल कांगड़ी के गौरव में वृद्धि की थी। उन्हें पेरिस से डी० लिट की उपाधि मिली थी और वह भी गुरुकुल कांगड़ी में प्राप्त पूर्व योग्यताओं के आधार पर। यह सभी के लिए गौरव की बात है।

डा० सत्यकेतु ने जहां भारतीय इतिहास को हिन्दी माध्यम में लिखकर उसे नये आयाम दिये, वहां आर्यसमाज के साहित्य को लिखकर भी आने वाली पीढ़ियों के लिए इस गौरवशाली अध्याय को सुरक्षित कर दिया। देश विदेश में आच्छादित आर्यसमाज के विटप-वितान का जिसकी छाया में सम्पूर्ण विश्व का जनमानस आह्लादित होता है, उन्होंने सुन्दर सरस एवं सम्यक् विवरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन के १८५७ के समय को भी रेखांकित किया है, जब भारत में स्वाधीनता का पहला संग्राम हुआ था। इससे सम्बन्धित अभिलेखों की खोज उन्होंने ब्रिटिश म्यूजियम लाइब्रेरी तथा इण्डिया आफिस लाइब्रेरी और पब्लिक रिकार्ड आफिस लन्दन में अनथक प्रयास के बाद की थी।

वह मनीषी आज हमारे बीच नहीं है, परन्तु उनके विचार उनका कर्तृत्व आज भी हमारा मार्गदर्शक है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों का मैं साधुवाद करता हूं कि उन्होंने उस महापुरुष के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित कराने का उल्लेखनीय कार्य किया है।

—प्रो० शेर सिंह
कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
एम–१४ साकेत
नई दिल्ली–१७

आर्यसमाज का प्रमुख पत्र 'आर्यसन्देश'' "डा० सत्यकेतु विद्यालंकार स्मृति अंक" प्रकाशित कर रहा है यह बड़े हर्ष का विषय है। मेरा यह सौभाग्य है कि ऐसे त्यागी, तपस्वी, विद्वान् नेता के सम्मान मे, मैं दो शब्द लिखूं। दिनांक-३०, ३१ दिसम्बर, ८८ एवं १ जनवरी' ८९ को आर्य महासम्मेलन अजमेर के अवसर पर देश-विदेश के हजारो आर्य नर-नारियो के बीच उनका सार्वजनिक-अभिनन्दन किया गया था तथा लोकसभा अध्यक्ष माननीय श्री बलराम जाखड़ के कर कमलो द्वारा उनके अमर ग्रन्थ "आर्यसमाज का इतिहास" के सातो भागो का विमोचन किया गया था। श्री बलराम जाखड़ ने अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा था कि डा० सत्यकेतु जी ने अपने जीवन मे लेखनी के द्वारा आर्यसमाज की जो सेवा की है, उसे कभी भी इतिहास भुला नही पायेगा। वे सदैव याद किए जावेंगे। उस अवसर पर डा० साहब ने घोषणा की थी कि उनका संकल्प है कि आर्यसमाज के इतिहास को भिन्न-भिन्न भाषाओ मे प्रकाशित करेंगे। आज वह हमारे बीच नही है। काश ! भगवान् उन्हे कुछ दिन और जीवन प्रदान करते !

छोटूसिंह एडवोकेट
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

डा० सत्यकेत विद्यालंकार

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार सुप्रसिद्ध इतिहासकार, साहित्यकार तो थे ही, वे व्यावहारिक एव सांसारिक प्राणी भी थे उन्होंने साहित्य साधना के साथ-साथ आर्य-समाज के कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। उनका जीवन भारतीय अर्वाचीन शैली के अनुरूप शुद्ध एव सात्विक था। वैदिक धर्म एव संस्कृति के उन्नयन के लिए वे सर्वत्र चिन्तनशील तथा कर्मशील रहे। कुलपति और कुलाधिपति के रूप मे गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के इतिहास मे उनका योगदान सदैव स्मरण किया जायेगा।

मुझे वे क्षण स्मरण हैं जब वे मेरे पास आर्यसमाज के इतिहास के प्रकाशन से पूर्व आए थे और उन्होंने अपनी सरस तथा सरल शैली मे, सौम्य मुद्रा मे अपनी योजना प्रस्तुत की थी। मैं उनके व्यक्तित्व से अभिभूत रहा हूँ। वे आर्य केन्द्रीय सभा के उत्सवो मे अनेक बार वक्ता तथा अध्यक्ष के रूप मे सम्मिलित हुए। उस महामानव की स्मृति मे आज भी हमारा हृदय भर आता है। उनकी स्मृति मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने "आर्यसदेश" का 'डा० सत्यकेतु स्मृति अक" के प्रकाशन का स्तुत्य कार्य किया है।

उस महामानव के प्रति मेरे श्रद्धा सुमन अर्पित हैं।

महाशय धर्मपाल

प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख पत्र "आर्यसन्देश" का १७-२४ सितम्बर ८६ का सयुक्ताक "डा० सत्यकेतु विद्यालकार स्मृति के अंक के रूप मे प्रकाशित किया जा रहा है।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के सुयोग्य स्नातक, इतिहास के ख्यातिप्राप्त विद्वान्, मगला प्रसाद पारितोषक विजेता, उत्तर प्रदेश एव मध्य प्रदेश सरकार द्वारा सम्मानित तथा पुरस्कृत, इतिहास के विषय से अतिरिक्त राजनीति, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र आदि के ही नही अपितु ऐतिहासिक उपन्यासो के भी लेखक प्रो० सत्यकेतु जी विद्यालकार जी का समस्त आर्यजगत् ऋणी है।

सत्यकेतु जी वर्षों गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुलपति एव कुलाधिपति रहे। प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के, विधान परिषद, उत्तर प्रदेश के सदस्य रहे। दलितोद्धार सभा के मन्त्री पद को सुशोभित किया। अन्तिम क्षण मे "आयसमाज का इतिहास" सात खण्डो मे प्रकाशित कर आर्यसमाज तथा स्वय को अमर कर गये।

रामनाथ सहगल
मन्त्री
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

आर्यसमाज में अनेक विद्वान् साहित्यकार हुए—कुछ आज भी हैं। उन्होंने आर्यसमाज और वैदिक धर्म की जो सेवा की उसे भुलाया नहीं जा सकता। किन्तु जिन्हें अपने साहित्य के बल पर आर्यसमाजेतर क्षेत्रों में मान्यता मिली, वे अधिक नहीं हैं। दिवंगत विद्वानों में पं० भगवद्दत्त, पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, और पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय तथा वर्तमान में आचार्य उदयवीर शास्त्री, पं० युधिष्ठिर मीमांसक, स्वामी सत्यप्रकाश तथा श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार जैसे विद्वानों की सूची बहुत लम्बी नहीं है। डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ऐसे ही विद्वानों में एक थे।

साहित्य साधना प्रायः एकान्त में बैठ कर होती है। इस कारण वे आर्यसमाज के मंच पर बहुत अधिक दिखाई नहीं देते थे। परन्तु जिन्हें उन्हें सुनने का अवसर मिला है वे जानते हैं कि जैसी सशक्त उनकी लेखनी थी, वैसी ही प्रखर उनकी वाणी भी थी।

नेताओं के स्मारक बनते हैं, विद्वानों के नहीं। उनकी कालजयी कृतियां ही उनका स्मारक होती हैं, जो ईंट-पत्थरों से बनने वाले स्मारकों की तुलना में कहीं अधिक स्थायी होती हैं। डा० सत्यकेतु जी जाते-जाते अपना स्मृति चिह्न आर्यसमाज को दे गये हैं—स्वलिखित, स्वसंपादित तथा स्वप्रकाशित आर्यसमाज का विशालकाय इतिहास। वही उनका कीर्ति-स्तम्भ है।

—विद्यानन्द सरस्वती
डी०-१४/१६ माडल टाउन, दिल्ली

डा० सत्यकेतु एक बहुत महान शिक्षा विशेषज्ञ एवं प्रगाढ पंडित थे और उन्होने अपनी विशेष प्रतिभा से जो "आर्यसमाज का इतिहास" लिखा है, वह वस्तुत एक महान् कार्य संसार भर मे माना जायेगा।

उनकी स्मृति मे आर्यसन्देश के विशेषांक का प्रकाशन अत्यन्त सराहनीय है।

भवदीय,
दरबारी लाल
संगठन सचिव
डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति
नई दिल्ली

यह बडे हर्ष का विषय है कि 'आर्यसंदेश' डा० सत्यकेतु विद्यालंकार विशेषांक प्रकाशित कर रहा है।

डा० सत्यकेतु विद्यालकार के व्यक्तित्व एव कृतित्व से हम सभी परिचित हैं। जहा वे ख्याति प्राप्त इतिहासकार थे, वही एक मूर्धन्य वैदिक विद्वान् के रूप मे उनका योगदान भुलाया नही जा सकता। उनके विचारो से नई पीढी को सदैव प्रेरणा मिलेगी। हिन्दी के प्रचार और प्रसार की दिशा मे भी उन्होने अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सेवा की। उनके साहित्य मे जहाँ लोक-मगल की भावना है वही मानवीय सवेदनाओ से जुडी हुई अभिव्यक्ति हमे एक ऐसे धरातल पर पहुचा देती है जहाँ अपने-पराये या छोटे बडे का अन्तर नही रह जाता। यह उनकी बहुत बडी विशेषता कही जा सकती है।

यह विशेषाक उनके प्रति एक सच्ची श्रद्धाजलि के रूप मे सामने आयेगा और इसमे प्रकाशित सामग्री उनके जीवन और लेखन से सबधित सभी पहलुओ को जन-जन तक पहुचाने मे सहायक सिद्ध होगी। इस प्रकार का प्रयास स्तुत्य है। इन शब्दो के साथ मे उन्हे अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करता हूँ और इस विशेषाक की सफलता की कामना करता हूँ।

डा० नारायणदत्त पालीवाल
सचिव
हिन्दी अकादमी दिल्ली

जीवनवृत्त

जीवन पथ पर

रामजी दास

•

प्रद्युम्न

•

सत्यकेतु

●

कोटि प्रणाम

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

हे प्रबुद्ध इतिहास सुलेखक !
पावन वेदो के विद्वान् !
उच्चकोटि के लेख तुम्हारे !
करते स्थापित प्रतिमान ।।

रहे समर्पित ऋषि चरणो मे,
किया आर्ष ग्रन्थो का प्रणयन ।
मूर्धन्य विद्वत्ता तुम्हारी !
करती सत् साहित्य उन्नयन ।।

मेधा प्रखर तुम्हारी शुचितम–
देती रही नवल सन्देश ।
लौह लेखनी चली अभय हो–
देती मानवता उपदेश ।

तुमने निर्मित किया नवल पथ
"सत्यकेतु विद्यालकार ।"
तुम ने दिया जगत् को पावन–
सच्चे साहित्य का अभिसार ।

जीवन सदा रहा सादा ही–
सत्य-शिवम्, सुन्दर ललाम ।
वैदिक पथ के अहे प्रणेता !
आज तुम्हे है कोटि प्रणाम ।।

●

जीवन-पथ पर

उत्तर प्रदेश की पश्चिमी सीमा जहाँ हरियाणा से मिलती है वहाँ जिला सहारनपुर स्थित है। यहाँ की भूमि बहुत उपजाऊ है तथा यहाँ के फलो मे अपूर्व मिठास होता है। सहारनपुर से चकरोता जाने वाली सडक पर बीस मील दूर बडेबर गाँव है जहाँ यमुना की नहर बह रही है। इस गाँव से नहर के किनारे-किनारे तीन-चार मील दूर आलमपुर गाँव है। यहाँ सडक के दोनो ओर आम और पाकड के खूब घने बाग हैं। यहाँ से कुछ दूरी पर शिवालिक पर्वतमाला की चोटिया सिर उठाये खडी हैं। सडक के साथ-साथ ही नहर जाती है। इस मनोरम परिवेश मे बसे गाँव आलमपुर मे डा० सत्यकेतु जी विद्यालकार का जन्म आश्विन मास मे १६ सितम्बर १६०३ को हुआ था। उनके पिता ला० आशाराम जी एक कर्मठ सहृदय किसान थे। उनके पास २०० बीघा जमीन मे खेती होती थी। इनके यहाँ कई पुत्रो ने जन्म लिया पर दैवयोग से ये बाल्यावस्था मे काल-कवलित हो गये। १८६६ मे एक सुमुखि पुत्री ने जन्म लिया, उसके चार वर्ष बाद बालक रामजीदास अवतरित हुए। जो आगे चलकर "सत्यकेतु" नाम से प्रसिद्ध हुए। यद्यपि वे जन्म समय पूर्ण स्वस्थ थे फिर भी चोट खाये माता-पिता का हृदय सदा सशकित रहता था। यह गाँव भी अन्य गाँवो के समान चिकित्सा के साधनो से शून्य था। चिकित्सा के नाम पर मस्जिद के मौलवी ही आमन्त्रित जल फूका हुआ पानी-और तावीज दे देते थे। उस युग मे बच्चो की शिक्षा भी मस्जिद मे ही हुआ करती थी। बालक रामजीदास ने मस्जिद मे हिन्दी वर्णमाला और गिनती सीखी। उन दिनो स्वामी श्रद्धानन्द ने कागडी गाँव मे गुरुकुल की स्थापना की थी। बडे ऊँचे आदर्शों और उद्देश्यो मे यह सस्था खोली गई थी। आर्य जनता को बडी-बडी आशाएँ थी कि गुरुकुल से स्नातक निकलकर एक नये आर्य ससार की रचना करेगे। उन दिनो अनेक आर्य उपदेशक गाँव-गाव मे गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली के गीत गाते घूमते थे। ऐसे ही एक उपदेशक आलमपुर गाँव भी पहुँचे। ला० आशाराम जी ने जब उपदेशक जी का व्याख्यान सुना तो अपने लाडले बेटे को गुरुकुल भेजने का निश्चय किया। एक दिन वे सपरिवार कागडी के लिए प्रस्थान कर गये। उन दिनों गुरुकुल मे प्रवेश आसान न था। उस वर्ष प्रथम श्रेणी में केवल पच्चीस विद्यार्थी लिये जाने थे और प्रवेश के लिए आये हुए विद्यार्थियों की सख्या एक सौ पच्चीस थी। पजाब और दिल्ली के सम्भ्रान्त परिवार बच्चो

को दाखिल कराने आए थे। उनके बच्चे खूब सजे-धजे तथा हृष्ट पुष्ट थे। इस भीड को देखकर लाला जी का दिल परेशान होने लगा पर वे हार मानने वाले न थे। जो व्यक्ति अपने बच्चे के लिए पूरे चौदह वर्ष की फीस का रुपया अग्रिम जमा करा दे उसके बच्चे को प्रवेश अवश्य मिल सकता था। लाला जी ने इस राशि का भी प्रबन्ध कर लिया। अब बच्चो की परीक्षा शुरू हुई। बालक रामजी-दास ने हिन्दी टेस्ट मे कोई शब्द छोटी 'इ' से लिखा। परीक्षक के चेहरे पर उसे देखकर एक असतोष का सा भाव आया। सात साल का छोटा बच्चा उस भाव को समझ गया। वह बडे आत्मविश्वास से बोला, "कोई को छोटी और बडी दोनो 'ई' से लिख सकते हैं, मैंने ठीक लिखा है।" परीक्षक महोदय छोटे से बच्चे की तीक्ष्ण बुद्धि से बहुत प्रभावित हुए और रामजीदास सन् १६१० के मार्च मास मे गुरुकुल के ब्रह्मचारी बन गये।

अब उनका तपस्यामय जीवन प्रारम्भ हुआ। उस समय मिट्टी की कच्ची दीवारो पर फूस के छप्पर डालकर ब्रह्मचारियों के निवास के लिए लम्बे-लम्बे कमरे बना दिये गये थे। मिट्टी की दीवारो मे तख्ते लगाकर अलमारिया लगा दी गई थी। लकडी का एक तख्त सोने के लिए, अलमारी का एक खाना किताबें तथा कापियाँ रखने के लिए और भोजन के लिए एक लोटा व कटोरा। वेशभूषा के लिए कुरते और धोतियाँ मिलती थी। पैर मे लकडी की चट्टी—जिसका अब चलन प्राय नहीं रहा है। इन ब्रह्मचारियो को प्रात चार बजे जगा दिया जाता था। चाहे कडाके की सर्दी हो या तूफानी वर्षा अथवा गर्मी। छोटे छोटे बच्चे हाथ मे लोटा लेकर जगल मे शौच के लिए जाते थे। बहुत से बच्चे तो नीद मे इतने बेसुध होते थे कि उन्हे शौच तो क्या आती झोपडे के पिछवाडे घास मे एक नींद ले लेते थे। शौच से लौटने पर उन्हे स्नानागार ले आया जाता। स्नानागार में पैंतीस फुट लम्बी चार फुट चौडी और चार फुट गहरी हौदी बनी थी, जो ठण्डे पानी से भर दी जाती थी। पास मे एक कुआ था, उसमे चरस लगा था। इस हौदी को भर दिया जाता था। स्नानागार चारो ओर से बन्द होता था। ऊपर टीन की छत थी। दीवारो मे कपडे रखने की खूँटिया लगी थी। मंजन या ब्रुश के स्थान पर उन्हे नीम बबूल की दातुन मिलती थी। जिसे उल्टा सीधा चबाकर मुख शुद्धि की जाती थी। फिर हौदों के चारों ओर कतार मे खडे होकर ब्रह्मचारी लोटे भरकर स्नान करते थे। खुरदरे कपडे के टुकडे से - जिसे गुरुकुल मे उपन्ना कहते थे—शरीर पोछकर नया सूखा लगोट पहनकर कपडे पहन लेते थे। एक अधिष्ठाता बच्चो की देखभाल करता था। उसका कार्य प्रात बच्चो का जगाना, स्नानादि नित्यकर्म कराना था। स्नान के बाद सन्ध्या-हवन, अवकाश की पढाई भी वही कराता था। बच्चो को मन्त्र व श्लोक याद कराना आदि

कार्य भी अधिष्ठाता को ही कराने होते थे। साधारणतया ये अधिष्ठाता कम पढ़े लिखे होते थे और कम वेतन पर रखे जाते थे। इनमे कुछ का व्यवहार बहुत कठोर होता था। एक बार बालक रामजीदास ने किसी दूसरे लडके का लगोट गलती से पहन लिया। हर बच्चे के कपडे पहचान के लिए विशेष चिह्न से चिह्नित होते थे। निर्दय अधिष्ठाता ने उनके सिर पर लोटे से प्रहार करते हुए वह लगोट उतारकर उनको अपना लगोट पहनने की आज्ञा दी। बालको के प्रारम्भिक दो तीन वर्ष काफी कष्ट से बीतते थे। फिर उन्हे उसी जीवन मे रस आने लग जाता था। फिर उस युग मे लोग "लालनाश्रयिणो दोषा" के सिद्धान्त पर भी विश्वास करते थे।

इस तपस्यामय दिनचर्या के साथ ब्रह्मचारियो को भोजन सादा पौष्टिक एव सतुलित मिलता था। प्रत्येक को साढे सात सौ ग्राम दूध पचास ग्राम शुद्ध घी साठ ग्राम दाल पाँच सौ ग्राम आटा, ढाई सौ ग्राम सब्जी और मौसमी फल मिलते थे। भोजन पूर्ण शाकाहारी और मिर्च मसालो से रहित होता था। दो समय भोजन और दो समय नाश्ता दिया जाता था। गणित, भूगोल, इतिहास, रसायन, भौतिक विज्ञान, हिन्दी आदि सभी विषय पढाये जाते थे। सस्कृत की पढाई पर विशेष जोर था। व्यायाम के लिए प्राणायाम, योगासन, हाकी, फुटबाल, तैरना आदि अनिवार्य थे। कुछ समय के लिए दो-तीन घोडे भी रखे गये थे। कई अधिष्ठाता उनको अच्छी अच्छी बाते सुनाते थे।

रामजीदास से प्रद्युम्न

चौथी कक्षा के बाद से ब्रह्मचारी रामजीदास—अब उनका नाम प्रद्युम्न रख दिया गया था। वे अपनी कक्षा मे प्रथम आने लगे। और इनका नाम आश्चर्यजनक में उन्नति पड गया, उनको पढने तैरने और सैर का शौक था। वैसे तो वे सब विषयो मे रुचि लेते थे, पर लेखन और भाषण उनके प्रिय विषय थे। आठवी कक्षा में पहुचने पर वे वाग्वर्धिनी सभा मे बडे ओजस्वी और सारगर्भित भाषण दिया करते थे। कई विद्यार्थी मिलकर हस्तलिखित पत्रिका भी निकालते थे। जिसमे लेखो कविताओ और कहानियो तथा रेखाचित्रो के साथ उसका मुख्यपृष्ठ रग बिरगी बेलो द्वारा हाथ से बनाया जाता था, तथा एक या दो चित्र भी तूलिका से बनाये जाते थे। गुरुकुल कागडी के उस वन मे शेर, भालू, हाथी आदि जगली जानवर निवास करते थे। यद्यपि जगली जानवरो को ब्रह्मचारी दूर से देख लेते थे पर उन्होने उस वन मे कभी किसी गुरुकुल निवासी पर हमला नही किया। हाँ—भालू आदि द्वारा चोट खाये हुए गाँवो के वासी कई बार गुरुकुल के अस्पताल में इलाज करवाने पहुच जाते थे। गुरुकुल मे अपना पूरा समय नि शुल्क देने वाले

एक डाक्टर और कम्पाउण्डर रहते थे।

तिलक स्वराज्य फण्ड

जब १६१६ में महात्मा गांधी अफ्रीका से भारत आये तो वे अपना कार्य-क्षेत्र भारत को ही बनाना चाहते थे। वे यहाँ दक्षिण अफ्रीका के फानिक्स आश्रम जैसा एक आश्रम स्थापित करना चाहते थे।। उन दिनो गुरुकुल कागड़ी की बडी धूम थी। अत एक दिन सवेरे गाधी जी गुरुकुल पहुच गये। कुछ दिन वहाँ रहकर वहाँ के वातावरण से वे बहुत प्रभावित हुए। वहाँ का तपस्यामय सादा जीवन और वातावरण उनको बहुत भाया। देवदास गाधी समेत उनके कई पुत्र वहाँ अतिथि छात्र के रूप मे रहे। सवेदनशील ब्र० प्रद्युम्न के मन पर इस काल मे गाधीवादी विचार-धारा का बहुत प्रभाव पडा। वे गाधी जी के पत्र यग इण्डिया और नव जीवन के नियमित पाठक बन गये। कुछ समय बाद गाधी जी ने तिलक स्वराज्य फण्ड के लिए एक लाख रुपयो की अपील की। इतनी राशि तो गांधी जी का भक्त कोई भी धनपति अकेला ही दे सकता था। लेकिन गाधीजी स्वराज्य की अलख देश के घर घर मे जगाना चाहते थे। उन्होने कहा कि वे दो पैसे से अधिक एक व्यक्ति से नही लेगे। किशोर वय ब्र० प्रद्युम्न ने अपने सहपाठियो की एक टोली बनाई और गुरुकुल के उत्तर मे बसे गावो श्यामपुर, कागडी और गाजीवाला के प्रत्येक घर से दो-दो पैसे लेकर कई सौ रुपये जमा किये, पर उनका सकल्प गाधी जी को एक हजार रुपयो की राशि भेजने का था। उन दिनो हरिद्वार मे गग नहर निकाली जा रही थी। उस पर दूधिया बध बन रहा था। अवकाश के समय उन्होने अपने साथियो के साथ उस बाध पर काम करके दो आना रोज मजदूरी कर कुछ रुपया इकट्ठा किया। इसी वर्ष उन्होने दसवी की परीक्षा पास की। उन्हे दसवी मे सभी विषयो पर स्वर्ण तथा रजत पदक मिले। एक हजार की राशि मे जो कमी रह गई थी वह उन्होने अपने सारे पदक बेचकर पूरी की। तब गाधी जी ने नवजीवन मे लिखा था—'**तिलक स्वराज्य फण्ड के लिए मझे बहुत सा धन मिला है। पर गुरुकुल कांगड़ी के एक ब्रह्मचारी प्रद्युम्न ने अपने साथियों के साथ गाँव गाँव घूमकर गग नहर पर मेहनत मजदूरी कर और अन्त में अपने पदक बेचकर जो धन-राशि मुझे भेजी है वह सबसे अधिक सात्विक और कीमती है।**'

ग्यारहवी कक्षा मे पहुँचते-पहुँचते ब्रह्मचारी प्रद्युम्न की लेखनी खूब चलने लगी थी। 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात'। उन्ही दिनो सरकार की ओर से छात्रो की अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित हुई। उसमे तीन सौ, दो सौ व एक सौ रुपयो के तीन पुरस्कार थे। ब्र० प्रद्युम्न ने सतरह वर्ष की अल्प आयु में इस प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार पाया। अब उनकी लेखनी और

भाषण शैली की धाक जमती गई और वे गुरुकुल के सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों में गिने जाने लगे।

प्रद्युम्न से सत्यकेतु

उन्नीस सौ चौबीस के वर्ष मे ब्र० प्रद्युम्न स्नातक बने। बौद्ध ग्रन्थो में भगवान बुद्ध के अनेक नामो मे एक नाम सत्यकेतु भी है। ब्र० प्रद्युम्न ने इसी नाम को ग्रहण किया और उनके स्नातक प्रमाण-पत्र पर यही नाम लिखा गया। अब तक गुरुकुल के स्नातको को रेशम के चोले मिलते थे। सत्यकेतु जी ने माग रखी कि वे स्नातक की विद्यालकार उपाधि खद्दर का चोला पहन कर ग्रहण करेंगे। अधिकारियो को उनकी माग पर झुकना पड़ा और तब से कागड़ी मे स्नातको को खद्दर के चोले मे उपाधि दी जाने लगी।

विद्यालकार जी की उच्च योग्यता और प्रतिभा को दृष्टि मे रखकर उन्हे गुरुकुल के कालेज विभाग मे सहायक अध्यापक के पद पर नियुक्त किया गया। उन्होने कुछ समय तक इस पद पर योग्यता पूर्वक कार्य किया, पर उनकी तबियत मे बेचैनी थी और वे गुरुकुल की दुनिया से बाहर भी विचरण करना चाहते थे। अत उन्होने दिल्ली से प्रकाशित समाचार पत्र अर्जुन मे सहायक सम्पादक का कार्य भार सभाला।

सरदार भगतसिंह का सान्निध्य

उन दिनो का वृत्तान्त सुनाते हुए वे कहा करते थे कि वर्तमान श्रद्धानन्द मार्ग पर पुलिस चौकी के पीछे अपने परिचितो का एक साबुन का कारखाना था, वही छत पर उन्हे एक कोठरी पाँच रुपया महीना किराये पर मिल गई। भोजन बाजार से होता था। एक दिन जब वे अपने समाचार-पत्र कार्यालय मे बैठे थे तो एक लम्बे सुदर्शन युवक ने उनके गुरु प्रो० जयचन्द्र विद्यालकार का पत्र लाकर उनसे मिलना चाहा। उसमे लिखा था—कि पत्र लाने वाले सरदार भगतसिंह हैं। उनके रहने और भोजन की व्यवस्था कर दी जाय। उन्हे नाम के लिए नौकरी का प्रबन्ध भी कर दिया जाये, शेष अपने आने का प्रयोजन वे स्वय बतायेंगे। सत्यकेतु जी अपने गुरु का आदेश कैसे टालते। उस छोटी सी कोठरी से चारपाई उठाकर बाहर रख दी गई और नीचे फर्श पर बिस्तरे लग गये। फिर वे अर्जुन के मालिक प्रो० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति के पास पहुचे और सरदार भगतसिंह के लिए नौकरी की माग की। पडित जी ने कहा कि उनका पत्र घाटे मे चल रहा है और उसमे उनकी आवश्यकता के लिए काफी स्टाफ है, पर भगतसिंह को तो एक आवरण मात्र की आवश्यकता थी जिससे वे पुलिस की निगाह मे बेकार न समझे जाये।

अत पच्चीस रुपये माहवार पर वह भी केवल कागजो पर वहा काम करने लगे। एक दिन बातचीत के दौरान भगतसिंह ने सत्यकेतु जी को बताया कि वे क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी का कार्यालय स्थापित करने दिल्ली आए हैं। उनके पास बडा सा लोहे का ट्रक था जिसे खोलकर उन्होने सत्यकेतु जी को दिखाया। वह इस पार्टी के परचो से भरा था। इसमे कुछ रिवाल्वर व कारतूस भी थे। श्री भगतसिंह सत्यकेतु जी के साथ परिस्थिति का जायजा लेते रहे, फिर एक दिन उन्होने सत्यकेतु व जयदेव जी को लेकर लालकिले से उन परचो को बाटना शुरू किया और लाहौरी दरवाजे तक बाटते गए। कुछ बडे सरकारी अफसरो व असेम्बली के मेम्बरों के नाम और पते लिफाफो पर लिखे गए। इन लिफाफो मे ये परचे डाल-कर पोस्ट कर दिए। लिफाफो पर लिखे पते उलटे हाथ से लिखे गए थे ताकि लेख पहचाना न जा सके। अगले दिन सुबह अर्जुन' के कार्यालय मे पुलिस आ धमकी। दरोगा ने पते लिखे वे लिफाफे सारे स्टाफ के सामने रख दिए और उनके लेख को मिलाने लगा। पर लेख इतना बिगाडकर लिखा गया था कि वह पकड नही पाया। यद्यपि उसे सन्देह तो हो गया था। अब उसने सत्यकेतु जी से कहा कि हम तुम्हारे निवास स्थान की तलाशी लेंगे तुम हमारे साथ चलो। भगतसिंह इस बीच साइकिल पर गये और उन्होने कोठरी का ताला खोलकर बक्सा और सारा सामान पीछे कारखाने मे छिपा दिया और ताला बन्द कर फिर आफिस आ गये। उन दिनो पुलिस घोडे तांगे से आती जाती थी। नाले से जाने मे जितना समय लगा उतने मे भगतसिंह ने अपना सारा काम कर दिया था। कोठरी मे पुलिस के हाथ कोई आपत्तिजनक वस्तु न आई। वह मन मसोस कर रह गई। उसने इन लोगो को चेतावनी दी कि तुम पुलिस को सूचना दिए बिना दिल्ली से बाहर कही नहीं जाओगे।

श्री भगतसिंह को अपने क्रांतिकारी मिशन के लिए फण्ड की आवश्यकता प्रतीत होने लगी थी। इसके लिए दान मिलने का तो प्रश्न ही नही उठता था। हथेली पर सिर लिये अत्यन्त उत्साही नौजवानो की यह टोली थी। अत रुपये जुटाने के लिए डाका डालने की योजना बनने लगी और इसी योजना बनने लगी और इसी योजना के अन्तर्गत चिर प्रसिद्ध काकोरी काड मे ट्रेन को लूटा गया। जिसमे श्री रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्लाह आदि कितने ही क्रांतिकारी पकडे गये और फासी पर चढ़े।

अमेरिकन प्रेसीडेन्ट जेम्स गारफील्ड ने एक बार अपने भाषण मे कहा था कि "लाइट हाउस की छत से वर्षा की एक बूंद गिरती है तो कौन कह सकता है कि वायु का झोका उस बूंद को एटलाटिक सागर मे पहुचायेगा या प्रशात महासागर में।" मनुष्य जीवन भी पानी की उस बूंद की तरह ही है। परिस्थितियां किसी को कहीं और किसी

को कही ले जाती हैं। सत्यकेतु जी भी श्री भगतसिंह के साथ क्रांतिकारी गतिविधियो मे और अधिक भाग लेते जाते, तो क्या यह प्रतिभा जेल के सीखचो मे बन्द होकर नष्ट न हो जाती पर माँ सरस्वती को अपने इस पुत्र से साहित्य-साधना करानी थी। उनकी कलम अत्यन्त उच्चकोटि की रचनाएँ करती थी। अत भगतसिंह और उनके रास्ते अलग-अलग हो गये। भगतसिंह को लाहौर से बुलावा आ गया और फिर उन दोनो की मुलाकात कभी नही हुई। यहा एक घटना का उल्लेख अवश्य करना है। पडित सत्यकेतु जी भी भगतसिंह को दिल्ली स्टेशन पर लाहौर की गाडी मे बैठाने गए। उस दिन उस गाडी मे भारी भीड थी, सारे स्टेशन के कई चक्कर लगाए। कहीं तिल धरने की भी जगह न थी। एक डिब्बा मिलिटरी के जवानो ने घेर रखा था। उस पर सैनिको के लिए आरक्षण की पट्टी न लगी थी। इस डिब्बे मे अपेक्षाकृत कम भीड थी, पर सीमा रेखा के लम्बे चौडे, बालो के लम्बे-लम्बे पट्टे रखाए सिपाहियो को देखकर किसी की हिम्मत उस डिब्बे मे चढने की नही होती थी। भगतसिंह ने कहा "आइए पडित जी इस डिब्बे मे चढते हैं। पडित जी उस पर चढते हुए झिझके, पर वह बाका जवान बेधडक अन्दर घुस गया। उसे देखकर फ्रण्टियर का एक सिपाही मा बहन की गाली देकर बोला—"ओए सरदार किधर घुस रहा है, देखता नही यह डिब्बा मिलिटरी के लिए सुरक्षित है।" गाली सुननी थी कि—भगतसिंह ने अपने पैर की जूती निकाली और सिपाही के सर पर बरसानी शुरू कर दी और बोले—"मा बहन की गाली देता है।" डिब्बे के सारे लोग स्तब्ध रह गये और बोले—"आओ सरदार जी आप यहा बैठो।" भगतसिंह आराम से बैठ गये। पडित जी ने कहा भी कि कही रास्ते मे ये लोग आपको परेशान न करने लग जाये पर भगतसिंह बोले—' अब ये मुझे कुछ न कहेगे आप आराम से जाये।" उस दिन के बाद भगतसिंह फिर उनके जीवन मे कभी न आये। कुछ समय बाद जब असेम्बली पर बम फेंका गया, तब पडित जी यह याद कर रोमाञ्चित हो उठे कि इसी वीर पुरुष ने उनकी छोटी सी कोठरी मे कुछ महीने बिताये थे।

गुरुकुल कांगडी में अध्यापन

अब पडित जी का मन भी दिल्ली से उचट गया। गुरुकुल कागडी के खुले वातावरण मे रहने वाले को दिल्ली की गलिया रास नहीं आई। उनका स्वास्थ्य भी कुछ गिर गया था। वे कुछ दिनो के लिए गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ चले गए। वहा शुद्ध घी दूध और सात्त्विक भोजन कर उन्होने स्वास्थ्य लाभ किया। गुरुकुल कागडी मे लाहौर वाले पं० विश्वम्भरनाथ जी इन दिनों मुख्याधिष्ठाता थे। उनकी प० सत्यकेतु पर बहुत कृपा थी। वे उनकी अगाध विद्वत्ता, भाषण कला और लेखन शैली पर मुग्ध थे। उन्होने पडित जी को कागडी मे इतिहास के प्रोफेसर का पद

प्रस्तुत किया। जिसे पडित जी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। इन दिनो गुरुकुल मे उनकी छात्र और मित्र मडली खूब जुड गई। श्री अमरनाथ विद्यालकार, चन्द्रगुप्त विद्यालकार, प० धमदेव वेद वाचस्पति, प० प्रियव्रत जो आदि उनकी मित्र मण्डली थी। गुजरात के प० शकरदेव, पत्रकार अवनीन्द्रकुमार विद्यालकार आदि कितने ही सुयोग्य शिष्य थे। ये शिष्यगण आयु मे उनके प्राय समवयस्क थे। एकाध वर्ष का अन्तर था।

मौर्य साम्राज्य का इतिहास और मंगलाप्रसाद पुरस्कार

अध्ययन अध्यापन के अतिरिक्त, पडित जी ने इन दिनो अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'मौर्य साम्राज्य का इतिहास' की रचना भी प्रारम्भ कर दी। गुरुकुल की पुरानी पुण्य भूमि मे बहुत से भवन तो गिर गए हैं। पर पुस्तकालय भवन अभी भी बचा है। उसकी छत पर एक कोठरी मे पडित जी का निवास था। इस कोठरी मे चारो ओर खिडकिया होने से वह खूब खुली थी। लेकिन गर्मियो मे दोपहर के समय यह कमरा तप जाता था। लिखते-लिखते पडित जी के हाथ से पसीना बहने लगता था। पसीने से कागज गीला न हो जाये इसलिए वे अपनी कलाई पर तौलिया बाध लेते थे। उन्ही दिनो श्री नारायण चतुर्वेदी गुरुकुल मे पधारे। वे पडित जी के कमरे मे आए तो बोले—तुम लिखने के साथ-साथ पञ्चाग्नि तपस्या भी करते हो, यह यहा आकर ही पता लगा।

पडित जी की मोर्य साम्राज्य की पाण्डुलिपि तैयार हो गई थी। अब प्रश्न था कि उसे छपवाया कहा जाये। उन दिनो इलाहाबाद 'हिन्दी पुस्तक प्रकाशन' का बडा केन्द्र था। इलाहाबाद मे इडियन प्रेस की अपनी लब्ध-प्रतिष्ठ प्रकाशन सस्था भी थी। पडित जी ने मौर्य साम्राज्य का इतिहास' की पाण्डुलिपि इडियन प्रेस को प्रकाशनार्थ भेज दी। हिन्दी मे इतनी उच्चकोटि की पुस्तके कम ही लिखी जाती थी। अत इडियन प्रेस ने पुस्तक को सहर्ष छापना स्वीकार कर लिया। कुछ वर्ष बाद बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मे प्राचीन भारत विषय पर एम० ए० के पाठ्यक्रम मे निर्धारित हुई। सन् 1929 मे इस पुस्तक पर "मगला प्रसाद पारितोषिक' मिला। यह पारितोषिक प्राप्त करने वालो मे उनकी आयु सबसे कम थी। इस पुरस्कार को प्रसिद्ध सपादक प्रवर श्री गणेश शकर जी विद्यार्थी के कर कमलो द्वारा प्रदान किया गया था। इसके बाद तो पडित जी की लेखनी अबाध गति से चलनी गयी। मनुष्य विज्ञान के पथ पर कैसे अग्रसर हुआ यह प्रदर्शित करने के लिए उन्होने कुछ कहानिया लिखी थी। इस पुस्तक का नाम था 'जब दुनिया पर पत्थरो का राज्य था'। ये कहानिया बहुत पसन्द की गई थी।

विवाह

अब पंडित जी की आयु विवाह-योग्य हो गई थी। उनके गुरुजनो ने कहना आरम्भ किया—"कालोऽह्यय सक्रमितु द्वितीय सर्वलोकोपकारक्षम आश्रम ते"। गुरुकुल कागडी उन दिनो अलौकिक सस्था मानी जाती थी। विवाह योग्य कन्याओ के माता पिताओ की हार्दिक अभिलाषा होती थी कि वे अपनी कन्या का हाथ गुरुकुल के किसी योग्य स्नातक के हाथ मे सौंप दे। स्नातको की स्वस्थ देह-यष्टि, सरलता और योग्यता उन्हे बहुत प्रभावित करती थी। यद्यपि वे जानते थे कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को सरकारी मान्यता न होने के कारण जीवन के संग्राम मे स्नातक कुछ घाटे मे ही रहेगे पर उनमे मानवीय गुणो का अभाव न था। यह बात उनको विवाह के लिए बहुत वाञ्छनीय बना देती थी। हल्दौर, जि० बिजनौर निवासी प० भवानीप्रसाद जी अपने जिले के सुप्रतिष्ठित जमीदार थे। घर मे धन-धान्य की कमी न थी। वे युवावस्था से ही आर्यसमाज की विचारधारा से बहुत प्रभावित थे। गुरुकुल कागडी उनके लिए किसी तीर्थ स कम न था। अपनी मानसिक और आत्मिक शाति के लिए वहा जाने का कोई भी अवसर हाथ स न जाने देते थे वे प्राय सपरिवार वहा जाकर रहा करते थे। अपने दो पुत्रो को भी उन्होने गुरुकुल मे प्रवेश दिलाया और पूरे चौदह वर्ष शिक्षा दिलाई। उनके बडे पुत्र श्री मदनमोहन ने नजीबाबाद के निकट खादर की निकम्मी समझी जाने वाली जमीन पर सफल कृषि फार्म स्थापित किया और उस जमीन पर उनके अध्यवसाय से ही लोग बसने के लिए प्रेरित हुए। अब तो यह स्थान खूब बस गया है। उनके द्वितीय पुत्र प० रामगोपाल विद्यालकार हिन्दी पत्रकारिता के जनको मे से थे। उन्होने नागपुर के 'प्रणवीर' दिल्ली के 'अर्जुन' और 'नवभारत टाइम्स' आदि अनेक पत्रो का सफलता पूर्वक सपादन किया तथा हिन्दी पत्रकारिता को उच्च-कोटि की शैली प्रदान की।

भवानीप्रसाद जी ने गुरुकुल और आर्यसमाज के प्रभाव से हिन्दी और सस्कृत मे अच्छी गति प्राप्त की थी। गुरुकुल के विद्यालय विभाग मे उनके द्वारा सकलित 'आर्य भाषा-पाठावली' बहुत दिनो तक पढाई जाती रही। महाविद्यालय मे सस्कृत विभाग की पाठविधि के लिए उन्होने साहित्य सुधा सग्रह का सकलन किया था। जिसमे सस्कृत साहित्य के भडार से सूक्ति सुधा के रत्न चयन किए गए। 1925 मे श्रीमद्दयानन्द जन्म शताब्दी के अवसर पर श्री नारायण स्वामी जी की प्रेरणा से उन्होने 'आर्य पर्वपद्धति' की रचना की थी। आर्य जनता इसी पुस्तक मे निर्देशित पद्धति पर आज भी अपने पर्व मनाती है। इन्ही पडित जी के घर एक कन्या ने जन्म लिया। बडी होने पर उन्होने लडकी को बडे चाव और प्यार से उच्च शिक्षा दिलाई। उन दिनो स्त्री शिक्षा का इतना प्रचार न था।

लडकियो की शिक्षा सस्थाए बहुत कम थीं। आर्यजन भी कन्याओ को घर से बाहर भेजते हुए कतराते थे। प० भवानीप्रसाद जी ने स्वयम् अपनी कन्या को पढाया। पहले बनारस की व्याकरण शास्त्री कराई फिर पजाब की शास्त्री परीक्षा दिलाई। उन्हे अपनी पुत्री के लिए प० सत्यकेतु जी से उचित वर नही जचा। धन के प्राचुर्य के खोखलेपन से वे अवगत थे। वे स्वय विद्याव्यसनी थे, उन्होने विद्याव्यसनी जामाता ढूढ लिया। उन दिनो गाधीवादी विचारधारा का बहुत प्रचार था। हर युवक-युवती गांधीजी के आह्वान पर देश के लिए अपना जीवन उत्सर्ग करने को तैयार रहता था। प० भवानीप्रसाद की पुत्री भी मातृभूमि के उद्धार के लिए जीवन दान का स्वप्न लिया करती थी। जब ब्याह की बात चली तो कच्ची आयु और अपरिपक्व बुद्धि की बालिका सोच मे पड गई कि अब उसके मानव-सेवा के स्वप्नो का क्या होगा ? उसका मन बहुत बेचन था। एक ओर पिता की आज्ञा और आशाएँ, दूसरी ओर मातृभूमि के लिए जीवन उत्सर्ग की आकाक्षा। उसने प० सत्यकेतु जी की विद्वत्ता और महानता की कीर्ति सुन रखी थी। विवाह से पहले उसने अपने पिता जी के सम्मुख सत्यकेतु जी से मिलने का प्रस्ताव रखा। आज से साठ वर्ष पूर्व किसी कन्या का इस प्रकार विवाह से पूर्व भावी पति से बात करना उचित नहीं माना जाता था। किन्तु भवानीप्रसाद जी ने अपनी लाडली कन्या की इस माग को भी मान लिया और वे सत्यकेतु जी को बुला लाये। कन्या ने प्रश्न किया कि वह अभी अपना अध्ययन जारी रखना चाहती है। विवाह इस मार्ग मे बाधा तो न होगा ? सत्यकेतु जी को इस पर कोई आपत्ति न थी। कन्या ने दूसरा प्रश्न किया कि—वह अपना जीवन देश सेवा के मार्ग पर अर्पित करने के स्वप्न देखती है। विवाह बन्धन मे बधकर उसके स्वप्नो का क्या होगा ? पडित सत्यकेतु जी का उत्तर था—"श्री शकराचार्य, भगवान् बुद्ध और स्वामी दयानन्द आदि अनेक महान् आत्माओ ने मानव जाति की सेवा मे अपना उत्सर्ग किया, पर वे महान् व्यक्ति सारे जगत् को अपना परिवार मानते थे। वे इतना ऊँचा उठ गए थे कि समग्र मानव जाति उनकी अपनी थी। हम लोग महानता मे उनकी गणना मे अभी बहुत पीछे हैं। हम लोग ब्याह कर अपना छोटा परिवार बनाते है और उस परिवार के श्रेय एव उन्नति के लिए अपना जीवन दान देते हैं। पडित जी की युक्ति कन्या के मन मे बैठ गई। विवाह के बाद उसने अपने महान् पति के ध्येय और आकाक्षाओ के लिए जीना सीखा। उच्चकोटि के लेखक अपने पति के लिए सुख और सुविधा जुटाकर ही उसने मातृभूमि की सेवा के स्वप्न को साकार किया। अब प० सत्यकेतु जी गुरुकुल कागडी में इतिहास विभाग के अध्यक्ष हो गए थे। वे वहा के अवैतनिक रजिस्ट्रार भी रहे। उनके विद्यार्थी उन्हें बहुत आदर और आत्मीयता की दृष्टि से देखते थे। उनके व्यक्तित्व और रोचक पाठन शैली से प्रभावित होकर विद्यार्थी अच्छी सख्या मे इतिहास विषय लेने लगे थे।

प्रथम विदेशयात्रा

प० सत्यकेतु जी की इच्छा उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाने की थी। विदेश यात्रा के लिए समस्या पैसे की थी। यद्यपि प्रथम विश्वयुद्ध के बाद यूरोप मे काफी सस्ता था। फिर भी एक कच्चे गृहस्थ का साहस अभी अपने बूते पर विदेश यात्रा का न था। उन दिनो बम्बई की एक सस्था 'अग्रवाल जातीय कोष' थी। उसके सदस्यो की इच्छा थी कि उनकी जाति के प्राचीन इतिहास की खोज की जाये। इसके लिए वे किसी योग्य व्यक्ति को इग्लैण्ड-फास के जाने माने विश्वविद्यालयो मे भेजकर खर्चा देने को तैयार थे। वर्धा के सेठ जमनालाल बजाज प्राय गुरुकुल आते रहते थे और प० सत्यकेतु जी से मिलते रहते थे। वे भी इस योजना से सम्बद्ध थे। उन्हे इस कार्य के लिए पडित जी से अधिक योग्य व्यक्ति नही जचा। फलत इनकी सिफारिश पर पडित जी को जातीय कोष से छात्रवृत्ति मिली और उनका चिर-पोषित स्वप्न पूरा हुआ। सत्यकेतु दम्पती अपने दोनो बच्चो साढे पाँच वर्ष के पुत्र और आठ महीने की कन्या को लेकर ससार सागर में कूद पडे।

कहा गुरुकुल कागडी का दुनिया की चकाचौंध से दूर सरल जीवन और अब इस जीवन के बाद फैशन की राजधानी पेरिस मे प्रवास कैसा। अद्भुत अनुभव था। समुद्र यात्रा का भी अपना अलग ही अनुभव था, और पैंतीस दिनो मे सात समुद्र पार करके यूरोप की धरती पर पैर रखा।

पेरिस यूनिवर्सिटी मे गुरुकुल कागडी की विद्यालकार उपाधि को मान्यता प्राप्त न थी। पडित जी विश्वविद्यालय जाकर प्राचीन पूर्वी इतिहास के अध्यक्ष श्री फुशे से मिले। उन्होने गुरुकुल की मान्यता के कानूनी पहलू की परवाह न कर पडित जी से खूब ज्ञान-चर्चा की और उन्हे अपने यहाँ की डाक्टरेट कक्षा मे प्रवेश के सर्वथा योग्य पाया। इसके बाद तो गुरुकुल के कई स्नातको ने पेरिस से डाक्ट-रेट की उपाधि प्राप्त कीं। प्रो० फुशे की आयु उन दिनो अस्सी वर्ष से ऊपर थी, परन्तु वे रिटायर नही हुए थे। वे उन दिनो 'हिस्ट्री आफ गान्धार' फ्रेन्च मे कई खण्डो मे लिख रहे थे। अत यूनिवर्सिटी से अवकाश पर थे। पडित जी प्रो० लुई रेनु के निर्देशन मे अपना शोध लिखने लगे। इसके लिए फ्रेन्च का अच्छा ज्ञान अत्यावश्यक था, इसमे भी समय लगा। फ्रेन्च और सस्कृत मे व्याकरण सम्बन्धी बहुत समता है। एक बात और भी फ्रेन्च और इगलिश भाषा मे पचहत्तर प्रति-शत शब्द समान हैं, केवल उच्चारण का अन्तर होता है। एक बार उच्चारण का अन्तर समझ लेने पर काम आसान हो जाता है। यहाँ पर एक उदाहरण देना ही पर्याप्त होगा। इगलिश शब्द—अटेन्शन, फ्रेन्च मे अतासियो बन जाता है। अर्थ वही सावधान है। स्पेलिंग भी वही, सिर्फ-उच्चारण मे भेद है। वहाँ अपने फ्रेन्च मित्र हसकर कहते थे कि केतु-दम्पती तो बिना जाने ही फ्रेन्च बोलते हैं।

पंडित जी बहुत व्यवहार कुशल थे। वहाँ बेकरी मे ब्राउन ब्रेड मिलते थे, अत उन्होंने बेकर से पूछा कि इसके लिए बिना छना मोटा आटा कहाँ मिलता है। उसने अपने उस स्टोर का पता दिया जहाँ बिना छना मोटा आटा मिलता था। वह आटा ठीक भारत जैसा था और केतु परिवार मजे से उस पेरिस नगरी में पूर्ण भारतीय भोजन करने लगा। वहाँ जो बेसन मिलता था, उससे पकौडी नही बन सकती थी। अत बिना पकौडी सब्जी डालकर कढी बनाते थे। बेसन के लड्डू तो बढिया बन जाते थे। एक दिन डा० केसकर सत्यकेतु-गृह पधारे। वे भी वहाँ डाक्टरेट कर रहे थे। इतने दिनो के बाद बेसन के लड्डू खाकर वे तृप्त हो गये और बोले शायद आज ही भारत से पार्सल आया है। स्वर्गीय डा० केसकर और लक्ष्मी मेनन ये दोनो नेहरू जी के मन्त्रिमण्डल के सदस्य बने थे। डा० केसकर सत्यकेतु जी से कहा करते थे कि श्री जवाहरलाल नेहरू प्राय पेरिस आते रहते हैं। तुम उन्हें प्रभावित करो। वे एक दिन भारत के प्रधानमन्त्री बनेंगे। परन्तु सन् १९३७ के उस युग मे यह कल्पना बडी दूर की लगती थी कि भारत को हमारे जीवन काल मे स्वराज्य मिल जाएगा।

पंडित जी ने अपना शोध-प्रबन्ध केवल नौ मास मे ही लिखकर समाप्त कर दिया, पर उसे फ्रेञ्च भाषा मे लिखना था। यद्यपि उन्हें फ्रेञ्च भाषा का ज्ञान हो गया था, पर इतना नही कि स्वतन्त्र रूप से उस भाषा मे अपना शोध लिख सके। अत अनुवादक की सहायता ली गई।

अब पंडित जी का थीसिस पूरा होकर प्रोफेसरो के सामने पेश हो गया और परीक्षण व आलोचना के लिए दिन नियत कर दिया गया। तीन प्रोफेसर मंच पर बैठ गए तथा सारा कमरा दर्शनार्थियो से भर गया। प्रोफेसरो ने उनके शोध पर अनेक प्रश्न किए। जिनका उत्तर डा० साहब ने बखूबी से दिया। यह सिलसिला दो घण्टे तक चला। सारा वाद-विवाद फ्रेञ्च भाषा मे हुआ। उन्होने डा० साहब के शोध-प्रबन्ध को उच्चकोटि का और पूर्णतया मौलिक पाया। वे उनसे बहुत प्रसन्न तथा सन्तुष्ट हुए। उन्हे डाक्टरेट की उपाधि सम्मान सहित प्रदान की। डाक्टरेट की सम्मान सहित उपाधि बहुत कम दी जाती है। आम तौर पर लोग डाक्टरेट ही ले आते है। पेरिस यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर डा० सत्यकेतु के संस्कृत ज्ञान की गंभीरता से भी बहुत प्रभावित थे। एक बार सत्यकेतु जी यूनीवर्सिटी के क्लास रूम के बाहर बरामदे से जा रहे थे, अन्दर कमरे मे क्लास लगी थी। प्रोफेसर ने उन्हे जाते देखा तो वह क्लास से बाहर आया। उसे संस्कृत व्याकरण पढ़ाते हुए एक फक्किका—(संस्कृत व्याकरण की जटिल पहेली) का अर्थ समझ में नहीं आया था और उसने भरी क्लास के सामने उसका अर्थ डा० सत्यकेतु जी से पूछ लिया।

भारत वापस

जब वे पेरिस यूनिवर्सिटी मे डाक्टर बन गये तो उन्हे महाभाष्य=(संस्कृत व्याकरण का अप्रतिम ग्रन्थ) फ्रेञ्च अनुवाद के लिए उन्होने वहाँ के सबसे ऊँचे वेतनमान पर दस वर्ष के लिए अनुबन्धित करना चाहा। परन्तु डा० साहब सस्कृत के नीरस व्याकरण के अध्ययन मे अपना समय नही लगाना चाहते थे। क्योकि उनका प्रिय विषय इतिहास था। अत उन्होने उस पद को स्वीकार नही किया, और मई मास १९३८ मे यात्री जहाज से बम्बई लौट आये। उन्होने इस प्रवास मे चार देशो की यात्रा की थी। फ्रान्स, इग्लैण्ड, स्विटजरलैण्ड और इटली। फ्रान्स सस्कृति और कला की दृष्टि से बहुत उन्नत था। वहाँ के खानपान और पहनावे आदि सभी का अपना आकर्षण था। फ्रेञ्च रसोई तो उस युग मे जगत प्रसिद्ध थी। लियो का फ्रेञ्च सिल्क बेजोड था। इग्लैण्ड का साम्राज्य उन दिनो सारे ससार मे फैला था। अत लन्दन के वैभव का क्या कहना, पर पेरिस वाली सफाई सुथराई और कलात्मकता का दूर दूर तक पता न था। इटली उन देशो की तुलना मे गरीब था। वहाँ ट्रेन के डब्बो मे थर्ड क्लास मे लकडी की सीटें थी। वहाँ लोगो को नगे पैर भी चलते देखा। रेस्तराँ मे बेयरा को अपना खाना बिना प्लेट मेज पर रखकर खाते देखा। यूरोप के अन्य साम्राज्यवादी देशो की देखादेखी उन दिनो इटली अबीसीनिया पर अपना पैर जमाने की फिक्र मे था और उसने अबीसीनिया पर हमला कर दिया था। —स्विटजरलैण्ड झीलो और पहाडियो का देश है। वह प्राकृतिक सौन्दर्य मे कश्मीर से अधिक नही है, पर उसे मनुष्य ने अपने हाथो से बहुत सवारा है। वहाँ जगह-जगह फूलों का प्राचुर्य है और सफाई बहुत है। जबकि कश्मीर मे मनुष्य गदगी फैलाने मे कोई कसर नही छोडते। अपना देश भी कभी इन पाश्चात्य देशो से अधिक उन्नत बनेगा यह स्वप्न सजाये सत्यकेतु परिवार बम्बई पहुच गया। बन्दरगाह पर डा० साहब का स्वागत करने प० शकरदेव आदि उनकी शिष्य मण्डली उपस्थित थी। उनके सात वर्षीय पुत्र विश्वरजन को इतने दिन बाहर रहकर भारतीय करेंसी देखने का बहुत चाव था। उसने बन्दरगाह पर ही बैंक से पौण्ड भुनाकर रुपये ले लिये थे। उसने अपने पिता जी के हाथ से बटुआ लेकर रुपयो को देखा और एक बैग मे रख दिया। किसी की उस पर निगाह थी। उसने बटुआ झट अपनी जेब के हवाले किया। जब कुली को पैसे देने का सवाल आया तो, बटुआ खोजा। लेकिन बटुआ होता तो मिलता। जो सज्जन अपने स्वागतार्थ आये थे, उनसे उधार माँगकर कुली को पैसे दिए। मातृभूमि पर पैर रखते ही इस कटु अनुभव से मन को बहुत ठेस लगी। यूरोप के साफ सुथरे शहरों के बाद बम्बई की गन्दी सडको से जी घबराने लगा। कालबा देवी रोड पर 'आर्य निवास' के एक कमरे मे वह पहली रात करवटे बदलते बीती। ऐसा प्रतीत होता था कि मछली पानी से निकाल जमीन पर रख दी

गई है, पर अब पासा फेंका जा चुका था, अब इस देश के निवास के अतिरिक्त कोई चारा न था। मन मे धैर्य बँधाया और सकल्प लिया कि यदि अपने देश को उन्नत देशो के समकक्ष न ला खड़ा किया तो हमारे शिक्षित होने का क्या लाभ ? अगले दिन रेलगाड़ी पर सवार होकर गुरुकुल के लिए प्रस्थान किया, पर वहाँ के अधिकारी डा० सत्यकेतु को रखने के लिए तैयार न थे। अत वह परिवार सहित मसूरी चले गये। वहाँ अपने परिचितों ने उनका हृदय से स्वागत किया। अब सर्विस की चिन्ता थी, पर दैवयोग से जो भी नौकरी आई वह सस्कृत की थी। वाराणसेय विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार का पद भी प्रस्तुत हुआ पर उनको उसमे रुचि नही हुई। वे दिल्ली चले आये और किराये के मकान मे रहने लगे। उन्होने एक पाक्षिक-पत्रिका 'देश-विदेश' निकाली। उसमे देश और विदेश की राजनीतिक चर्चा यात्रा, कहानी आदि मनोरजक सामग्री होती थी। उन्होने अपने निवास स्थान पर ही निचली मजिल का फ्लैट किराये पर ले लिया। और एक स्कूल इण्डियन पब्लिक स्कूल के नाम से खोला। स्कूल पहली श्रेणी से दसवी तक था। बाहर से आने वाले विद्यार्थियो के लिए निवास और भोजन का भी प्रबन्ध था। डेस्कालर विद्यार्थी अच्छी सख्या मे आ गये, पर जो बच्चे बाहर से आकर रह रहे थे उनके खेलने और पढाई के अतिरिक्त व्यस्त रखने की समस्या थी। तभी माल रोड के पास कई बीघे मे फैली विशालकाय कोठी मिल गई। हितचिन्तको ने सुझाया जैसे माल रोड से बच्चे आपके यहाँ सवारी से आते हैं वैसे कनाट प्लेस आदि से भी आ जायेगे। फिर दिमाग मे अन्तर्निहित इच्छा तो थी कि एक ऐसा गुरुकुल बनाये जिसमे हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सब अपना धार्मिक भेदभाव भूलकर केवल भारतीय सस्कृति के वातावरण मे पलेगे व पढेगे। डा० साहब को इस मिशन मे सफलता भी मिली। उन्हे चालीस विद्यार्थी मिल गये। उनमे हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी थे। स्कूल का वातावरण बहुत सौहार्दपूर्ण था, उसके आदर्श ऊँचे थे। परन्तु १९४० मे जैसे ही जर्मनी ने पेरिस पर कब्जा किया और जापान बर्मा की ओर बढने लगा तो माता पिताओ ने अपने बच्चो को घर के बाहर दिल्ली मे रखना सुरक्षित नही समझा। उन्हे भय था जाने कब दिल्ली पर हवाई हमला हो जाये। जिस दिन पेरिस पर कब्जा हुआ विद्यार्थी सख्या घटकर बीस रह गई। परन्तु डा० साहब भी हार मानने वाले न थे। उन्होने मसूरी मे एक कोठी किराये पर ली और ग्रीष्म ऋतु मे बच्चो को मसूरी ले आये। परन्तु सख्या को धक्का तो लग ही गया था। सर्दियो मे दिल्ली लौटने पर माता-पिता ने शेष बच्चो को भी अपने साथ रखना मुनासिब समझा और स्कूल बन्द करना पड़ा। यदि दिन का स्कूल चलाते तो अच्छी सफलता मिल सकती थी पर मन मे तो ऊँचे आदर्श थे। एक आधुनिक गुरुकुल चलाने का पावन-स्वप्न अधूरा रह गया। वे सर्दियो मे

फरवरी मास मे मसूरी की माल रोड पर घूम रहे थे कि लक्स माउण्ट कोठी के नीचे से गुजरे। ऊपर कोठी के केयर टेकर प० हरनारायण बाहर धूप मे बैठे थे। उन्होने आवाज दी कि डा० साहब कहाँ घूम रहे हो ? हमारे पास भी तो आओ। ऊपर जाने पर पूछा कि आप किस सिलसिले मे घूम रहे हैं। यह जानकर कि मकान की तलाश है। उन्हे लक्स माउण्ट कोठी छत्तीस सौ रुपया सालाना पर आफर की, और २३ मार्च १९४२ मे सत्यकेतु परिवार लक्स माउण्ट मसूरी आ गया। उन दिनो लोग मार्च मे मसूरी आ जाते थे और अक्टूबर तक रहते थे। अब तो लोग सप्ताह या दस दिन के लिए मसूरी आते हैं। गर्मी से बचने नही केवल वातावरण परिवर्तन के लिए। डा० साहब का गेस्ट हाउस एक सप्ताह मे सजकर तैयार हो गया। जिस फर्नीचर की कमी थी वह किराये पर आ गया। इस प्रकार इकत्तीस मार्च से लोग होटल आने लगे। डा० साहब की ईमानदारी और व्यवहार कुशलता से वे लोग बहुत प्रभावित थे। मसूरी की बड़ी बड़ी-बड़ी कोठियों के स्वामी डा० साहब को अपने कोठी बिकवाने के लिए ठीक ग्राहक से मिलाने का आग्रह करते थे। उधर खरीददार भी उनके आगे-पीछे घूमते थे कि हमे अच्छी जायदाद ठीक कीमत पर दिलवाये। अगले दो-तीन वर्षों मे सत्यकेतु जी ने जायदाद की खरीद फरोख्त से भी अच्छा नाम पैदा किया। कलसिया की महारानी और लखनऊ के मशहूर इत्र फरोश इस्तीफारखान ने अपनी कोठियाँ उनके सहयोग से बेची। नेपाल के राणा, मोदी परिवार, दिल्ली के बड़े व्यापारियो आदि सभी के सलाहकार डॉ० सत्यकेतु जी थे।

कुछ समय बाद पर्वत की रानी नैनीताल का मैट्रोपोल होटल भी सत्यकेतु जी ने ले लिया। होटल मे विशाल बगीचा था और ऊचे ऊचे देवदार व बाँझ के पेड थे। कई टेनिस कोर्ट थे। उस युग के अनुसार होटल सभी आधुनिक सामानो से सुसज्जित था। नैनीताल के जो लोग कल तक डा० सत्यकेतु को हेय दृष्टि से देखते थे, अब उनकी निगाहे बदल गई थी। सब उनकी ओर दोस्ती का हाथ बढा रहे थे। कहते थे कि यह पेरिस का शिक्षित डाक्टर तो हम सब से बाजी मार ले गया। धीरे-धीरे यात्री आने लगे और सारा होटल गुलजार हो गया। बम्बई, कलकत्ता, कानपुर के चोटी के उद्योगपति, राजे-महाराजे और राजनीतिक नेता सभी मैट्रोपाल मे ठहरते थे। रुपये और प्रतिष्ठा किसी की कमी नही थी, पर डा० साहब के मन मे कचोट थी कि मैं क्या कर रहा हूँ। केवल वे स्वय ही नही बल्कि एक बार श्री घनश्याम दास बिड़ला ने भी सदेश भिजवाया कि हिन्दी और इतिहास के उच्च-कोटि के विद्वान् इस प्रकार के कार्य कर रहे है, यह उनको उचित प्रतीत नही होता। यदि बिड़ला जी उनके किसी और कार्य करने के लिए सहायक सिद्ध हो सके तो उन्हें हार्दिक प्रसन्नता होगी। डा० सत्यकेतु ने उत्तर दिया कि यह मेरे

जीवन की अस्थायी स्थिति है। मैं हमेशा इसमे नही उलझा रहूँगा और शीघ्र ही कोई न कोई रास्ता स्वय निकाल लूंगा। श्री बिड़ला जी को उनकी शुभ-कामनाओ के लिए धन्यवाद दिया।

सरस्वती की आराधना

'यूरोप के आधुनिक इतिहास' की पाण्डुलिपि कई वर्षों से बक्स मे बन्द पडी थी। सर्दियो मे पहाडी होटल बन्द हो जाते हैं। इसलिए नवम्बर मे उस पाण्डुलिपि को लेकर इलाहाबाद इडियन प्रेस पहुचे। जहा दो हजार पृष्ठो का वह विशाल ग्रथ छपने को दे दिया, तब हिन्दी प्रकाशन इतना उन्नत न था। उच्च शिक्षा अग्रेजी के माध्यम से होती थी। हिन्दी के ग्रथ लोग शौकिया पढते थे। डा० साहब ने बीस हजार रुपया लगाकर दो खण्डो का यह विशाल ग्रथ छपवा तो लिया पर चिन्ता हुई कि इतनी महगी और विशाल पुस्तक कौन खरीदेगा, उस समय उसका मूल्य बीस रुपये था। फरवरी १६४६ मे पुस्तक छपकर तैयार हो हो गई। पत्र पत्रिकाओ मे विज्ञापन दिया। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि तब स कोई दिन ऐसा न बीता जिस दिन उस पुस्तक को खरीदने का आर्डर न आया हो। गर्मिया बीतते बीतते डेढ दो सौ पुस्तक खरीदने के आदेश तार से मिले इस प्रकार सरस्वती के इस वरद पुत्र को अपना मन चाहा काम मिल गया और होटल और हाउस एजेन्सी के कामो से विदा ली। सत्यकेतु जी ने अब नैनीताल भी छोड दिया और मसूरी मे लक्स माउण्ट को अपना स्थायी निवास बना लिया। अब तो एक के बाद एक नये ग्रथ प्रकाशित होते गए। 'एशिया का आधुनिक इतिहास' प्राचीन भारत का इतिहास, राजनीति शास्त्र आदि उनके अत्यन्त प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं और इतने वर्ष बीत जाने पर भी आज भी उनकी लोकप्रियता मे कोई अन्तर नही आया है। यद्यपि इन विषयो पर अन्य लेखको ने भी अपनी कलम उठाई है, पर डा० साहब की विषय की पकड और लेखन शैली तक कोई नही पहुच पाया है। जब वे मसूरी आकर रहने लगे तो प्रसिद्ध लेखक श्री राहुल साकृत्यायन भी उनसे मिलने आये उनको मसूरी का शान्त वातावरण और स्वास्थ्य प्रद जलवायु बहुत भाया और उन्होने मसूरी मे ही कोठी खरीदने की इच्छा प्रकट की। डा० साहब ने उन्हे कोठी दिलवा दी और वे भी मसूरीवासी हो गए। वे प्राय डा० साहब से मिलते थे और डा० साहब का भी उनके यहा आना जाना बहुत था। परन्तु राहुल जी इतने उच्च-कोटि के साहित्यकार और बुद्धिजीवी होते हुए भी कट्टर बौद्ध थे। उनके यहा वैदिक-सस्कृति और ब्राह्मणवाद का मजाक उडाया जाता था। एक दिन राहुल जी के साथ और दो तीन पण्डित बठे हुए थे। वैदिक-सस्कृति पर छींटाकशी की जा रही थी। डा० सत्यकेतु जी चुपचाप बठे सुन रहे थे कि एक पडित जी बोले—डा० साहब आप कुछ भी नही बोल रहे कुछ तो कहिए—वे बोले "मैं मूर्ख पडितो की

बाते सुन रहा हूँ।" उस दिन की बात उनको लग गई और घर जाकर उन्होंने 'आचार्य चाणक्य' उपन्यास की रूपरेखा बना डाली तथा शीघ्र ही उस उपन्यास को मूर्त रूप दे दिया। उस महान् विद्वान् की प्रशसा करनी पडेगी, उस पुस्तक को पढकर राहुल जी का सिर झूम उठा। वे बोले—तुमने इस पुस्तक को लिखने मे बहुत मेहनत की है। डा० साहब ने उत्तर दिया मुझे इसे लिखने मे कोई मेहनत नही पडी। मैंने तो इसे केवल एक महीने मे बडे आराम से लिख दिया। तब राहुल जी ने कहा कि आपका ज्ञान बहुत गभीर है। आपने विद्यार्थी अवस्था मे ज्ञानार्जन के लिए बहुत परिश्रम किया है। आपकी नीव बहुत ठोस है। डा० साहब उन दिनो सर्दियो मे दिल्ली आ जाते थे और कनाटप्लेस मे ठहरते। प्रसिद्ध हिन्दी पत्रकार श्री अवनीन्द्र जी विद्यालकार भी वही रहते थे अत हिन्दुस्तान के सपादको का आना जाना लगा रहता था। हिन्दुस्तान साप्ताहिक के सपादक धारावाहिक उपन्यास प्रकाशित करना चाहते थे, वे डा० साहब से चाणक्य उपन्यास मागने लगे, पर उन्होने कहा कि मै आपके लिए नया धारावाहिक लिख देता हूँ। इतने दिनो मसूरी और नैनीताल मे चलाए होटल-जीवन के आधार पर लिखा, 'मैंने होटल चलाया' इस धारावाहिक हिन्दुस्तान साप्ताहिक की ग्राहक सख्या बहुत बढी। जब वह धारावाहिक समाप्त हुआ तो पाठकगण कहने लगे कि—अब हम क्या पढेंगे। इसके बाद उन्होने एक धारावाहिक "मैंने कम्पनी बनाई" लिखा था। वह भी बहुत लोकप्रिय हो रहा था, पर अखबार के मालिको ने उनका प्रकाशन बन्द कर दिया। यह कहकर कि यह तो हमी पर चोट है।

चीन यात्रा

१९५४ मे सत्यकेतु जी ने चीन यात्रा की। यद्यपि उस देश ने सास्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक सभी क्षेत्रो मे अत्यधिक उन्नति कर ली थी पर वातावरण दम घोटू था। सब कुछ इतना नियन्त्रित था कि वहाँ से बाहर निकलकर उन्होंने कहा था कि हम बहुत बडे जेलखाने से निकल आये हैं।

राजनीति में

सन् १९६३ मे उन्होने बरेली रुहेलखण्ड ग्रेजुएट्स विधान सभा क्षेत्र से विधान परिषद का चुनाव लडा और सफल हुए। लोगो ने पूछा कि डा० साहब इस प्रदेश के लोग आपको कैसे जानते हैं तो बोले—मैं तो इस क्षेत्र की सडके भी नही पहचानता, मेरी पहचान मेरी पुस्तकें हैं। उनकी पुस्तकें अब इतनी प्रसिद्ध हो गयी थी कि हर पढा लिखा व्यक्ति उनसे परिचित था और उनकी कलम का सिक्का मानता था। उनकी प्रकाशन सस्था "सरस्वती सदन" का बहुत नाम था और नये-नये लेखक अपनी पुस्तकें वहा से प्रकाशित करवाना अपना सौभाग्य मानते थे।

इस व्यापार को उनके पुत्र ने सभाल लिया और सफलतापूर्वक चलाया। डा० साहब मे विलक्षण व्यापार बुद्धि थी, पर व्यापार मे उनकी रुचि नही थी। शीघ्र ही उनका मन व्यापार से ऊबने लग जाता था। वे सच्चे अर्थो मे सरस्वती के बरद पुत्र थे। उनकी कलम और जिह्वा दोनो पर मा सरस्वती का निवास था। उनके सारगर्भित भाषण सुनकर जनता झूम उठती थी। जन समुदाय की मनोवृत्ति को भी वे खूब समझते थे। यहा एक पुरानी बात की चर्चा करना अप्रासगिक न होगा। जब सन् १९४७ मे भारत के स्वराज्य की घोषणा हो गई तो जनता मे अत्यधिक उत्साह था, पर हिन्दू मुस्लिम की आपसी भावनाये भी बहुत विद्वेषपूर्ण थी। मसूरी की जनता इस अवसर पर एक विशाल सभा करना चाहती थी। लेकिन प्रशासन को डर था कि वक्ता कही एक दूसरे के भावो पर चोट न कर दे। यदि सभा मे उपद्रव उठ खडा हुआ तो क्या होगा। तब मसूरी शहर का कोतवाल डा० साहब के पास आया और बोला—यदि आप इस सभा के सभापति बने और इस सभा को चलाने की जिम्मेदारी लें तो मैं इसकी इजाजत दे सकता हूँ। यही हुआ, वह विशाल सभा उनके सभापतित्व मे हुई। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान सभी ने भाषण दिये। कोई भी अप्रिय घटना नही हुई। जब मसूरी आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव होना था तो लोग पूछते थे कि डा० साहब का भाषण किस दिन होगा। उनके भाषण उच्च कोटि के विद्वान् और सर्व साधारण जनता मे एक जैसे प्रिय थे और ग्राह्य थे। वे नैनीताल दो साल रहे थे। वहा भी उन्होने अपने भाषण आर्य-समाज के मच से दिये। जिनका जनता पर व्यापक असर हुआ। उन दिनो पत जी यू० पी० के मुख्यमत्री थे। नैनीताल निवासियो को अपने इन सुयोग्य नेता पर बडा गर्व था और वे अपने को यू०पी० के शेष निवासियो से उत्कृष्ट समझते थे, पर धीरे-धीरे डा० साहब ने वहाँ के लोगो मे भी अपनी धाक जमा ली थी। उनकी मसूरी मे बहुत दिनो से म्युनिसिपल चुनाव नही हुए थे। सन् ३९ मे द्वितीय विश्व युद्ध छिड गया था। इस आपातकालीन स्थिति मे एक केयर टेकर आफिसर वहा का प्रबन्धक होता था। सन् १९५२ मे यह स्थिति बदली और चुनाव हुए। डा० साहब ने अपने थोडे से प्रयत्न से ही अपनी पत्नी को म्यूनिसिपैलिटि का सदस्य चुनवा दिया। जब डा० साहब जीवन मे किसी हार का सामना कर लेते थे तब उनकी कलम दुगुने जोर स चल पडती थी। इन्ही दिनो उन्होने 'सेनानी पुष्यमित्र'' नामक उपन्यास की रचना की। 'मौर्य साम्राज्य का इतिहास' पच्चीस वर्ष की अवस्था मे लिखा गया था, उन्हे उसकी शैली अब उतनी परिपक्व तथा परिमार्जित प्रतीत नही होती थी अत उसे दुबारा लिखा। उनके द्वितीय पुत्र अमिताभ रजन इञ्जिनियर बनकर सन् ७० मे आये थे, पर उन्होने नौकरी के बजाय प्रकाशन का कार्य करना ही उचित समझा और मौर्य साम्राज्य के प्रकाशन के साथ 'श्री सरस्वती सदन' सस्था का जन्म हुआ। इस सस्था ने दक्षिण पूर्वी एशिया का इतिहास आदि सत्यकेतु जी की

कई नई-नई पुस्तके प्रकाशित की। उनकी इतनी अधिक साहित्य रचना का जनता ने मुक्त हृदय से स्वागत भी किया।

पुन गुरुकुल में

डा० साहब के अन्तर्मन मे गुरुकुल कागडी के लिए प्रेम और आत्मीयता का बीज विद्यमान था। यद्यपि कुल माता की ओर दृष्टि कभी-कभी ही उठाते थे, पर उस भूमि से आत्मीयता तो थी ही। स्वतन्त्रता के बाद से गुरुकुल परेशानी के दौर से गुजर रहा था। जब तक स्वराज्य न था गुरुकुल की अपनी पाठविधि थी जिसे सरकारी मान्यता न थी, पर अब अपनी सरकार थी अत गुरुकुल की उपाधियो को भी मान्यता प्राप्त हो गई थी, कुछ लोग गुरुकुल को पृथक् विश्वविद्यालय बनाने की योजना बना रहे थे। गुरुकुल का अध्ययन करने एक कमीशन आया। डा० सुनीति कुमार चटर्जी भी उसके सदस्य थे। इस कमीशन के सामने अपने पक्ष की बात कहने के लिए सचालको ने डा० साहब को बुलाया और वे आये। डा० सुनीति कुमार पेरिस यूनिवर्सिटी के डी० लिट् थे। वे डा० साहब से मिलकर बहुत प्रभावित हुए और जब उन्हे मालूम हुआ कि डा० साहब पेरिस यूनिवर्सिटी के योग्य और प्रसिद्ध भाषा शास्त्री डा० जूलियन ब्लाक के शिष्य हैं तो उन्होने कहा कि आप तो मेरे गुरु भाई हुए। जब मेरे गुरु जी ने गुरुकुल के स्नातक को पेरिस मे डाक्टरेट करने योग्य समझा तो मेरे लिए गुरुकुल के विद्यार्थियो की योग्यता मे सन्देह का प्रश्न ही नही रह जाता। मैं गुरुकुल को विश्वविद्यालय की मान्यता प्रदान करने का अनुमोदन करता हूँ। डा० सुनीति कुमार के इस कथन के बाद कमीशन के अन्य सदस्यो ने भी इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया और सन् १९६४ से गुरुकुल की विश्वविद्यालय की मान्यता मिल गई। सन् १९७३ मे उनका नाम वाइस चासलर के लिए प्रस्तुत हुआ और स्वीकृत हो गया। वाइस चासलर का कार्यकाल तीन वर्ष का होता था, पर डा० साहब को वहा की राजनीति रास न आई और वे डेढ साल बाद ही त्यागपत्र देकर चले आये। जो उनके स्वप्न का गुरुकुल था वतमान गुरुकुल अब उससे कोसो दूर हट चुका था। वह प्राचीन शिक्षा पद्धति जिसमे गुरु-शिष्य का पिता-पुत्र का सम्बन्ध होता था। जहा गुरु जी के गभीर ज्ञान की गंगा मे स्नान कर शिष्य निखरता था। उसका अब दूर-दूर तक भी पता न था। इससे उनको बहुत बेचैनी होती थी और वे गुरुकुल को उसी प्राचीन आदर्श पर लाना चाहते थे, पर सफलता का कही पता न था। यद्यपि वे वहाँ से चले आये पर मन मे गुरुकुल के लिए कुछ करने की लगन लगी रही। वहां से लौटकर उन्होंने अनेक नये ग्रन्थो की रचना की। सन् १९७९ मे वे गभीर रूप से अस्वस्थ हो गये। उनको मसूरी से लाकर दिल्ली के 'होली फैमिली' मे दाखिल कराया गया। डाक्टरो ने अथक परिश्रम और उचित उपचार कर उन्हे नवजीवन

प्रदान किया। तब अस्पताल मे पलग पर पडे-पडे ही उन्होने सकल्प लिया कि अब यदि मुझे स्वास्थ्य लाभ होगा तो मैं आर्यसमाज का इतिहास' विस्तृत रूप से लिखूगा। उन्होने जगन्माता से इस इतिहास को सात खण्ड मे लिखने के लिए जीवन की भिक्षा मागी। उनकी यह पुकार स्वीकार हुई और अगले दस वर्षों मे उन्होने अपने ही भरोसे पर यह भीष्म कार्य कर दिखाया। सात सौ बीस पृष्ठो का एक खण्ड, कुल मिलाकर पाच हजार पृष्ठ, इस बृहत्काय कार्य के लिए सामग्री जुटाना, लिखना, कागज और छपाई का प्रबन्ध तथा इस सब के लिए धन भी इकट्ठा करना कोई आसान काम न था। उन्हे किसी भी सस्था का सहारा न था। कोई युवक इतना कार्य करते हिचकता, पर उन्होने अस्सी वर्ष की परिपक्व अवस्था मे पूरे दृढ सकल्प के साथ इस कार्य को लिया और पूरी सफलता प्राप्त की। 'आर्यसमाज का इतिहास' के ये सात खण्ड उनकी आर्यसमाज को अनुपम देन है। यह कार्य न 'भूतो न भविष्यति' ही कहा जायेगा। आर्यसमाज का सौ वर्षो का इतिहास भारत के पुनर्जागरण का इतिहास है। यदि वे 'भारत के पुनर्जागरण' के नाम से यह ग्रन्थ लिखते तो इस का आम जनता मे बहुत आदर होता। परन्तु कि उन्हे अपने ध्येय मे सफलता मिली डा० सत्यकेतु का उद्देश्य आर्यसमाज का मस्तक ऊँचा करना था। हमे विश्वास है है। अब आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द का नाम अधिक आदर के साथ लिया जाने लगा है।

१६ मार्च १९८९

सोलह मार्च १९८९ का दिन डा० सत्यकेतु विद्यालकार के जीवन का अंतिम दिन था। उस दिन डा० सत्यकेतु विद्यालकार, प्रोफेसर शेरसिंह और श्री सुभाष विद्यालकार गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय जाने के लिए तैयार हुए थे कि उन्हे सूचना मिली कि पहले किसी आवश्यक कार्य से हरियाणा भवन जाना है। वे तीनों वहा पर पहुचे और वहा का कार्य पूरा करके सार्वदेशिक सभा कार्यालय पहुचे। सार्वदेशिक सभा की ओर से उस दिन एक ज्ञापन पत्र लोकसभा अध्यक्ष डा० बलराम जाखड को सस्कृत भाषा को भारतीय शिक्षा मे समुचित स्थान देने के लिए, दिया जाना था। स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती ने कहा कि वे दोपहर को उनके साथ ही जाखड के कार्यालय मे चलें और दोपहर बाद हरिद्वार चले जाएं, परन्तु डा० साहब ने कहा कि उन्हे रास्ते मे भी कुछ लोगों से मिलना है और उनके साथ समय भी पहले से निश्चित है। अत स्वामी जी हमे अब जाने की अनुमति दे दीजिए। स्वामी जी की स्वीकृति लेकर, तीनो महानुभाव चल पडे। आई० टी० ओ० के पुल पर उनकी प्रतीक्षा डा०धर्मपाल कर रहे थे। वे भी गाडी मे बैठ लिये। डा० रणजीत सिंह को भी वही आना था, परन्तु वे वहा आकर चले गए क्योंकि गाडी का वहा पहुचने का समय आठ बजे था और ये लोग वहाँ दस बजे पहुचे। डा० रणजीत सिंह बस से ही हरिद्वार के लिए चल पडे। रास्ते मे डा० साहब

गाजियाबाद और मेरठ थोडी देर के लिए रुके । "शीतल" विश्राम स्थल पार करने पर उन्होने भोजन करने की इच्छा व्यक्त की । मुजफ्फर नगर से कुछ पहले एक भोजनालय मे डा० सत्यकेतु जी, प्रोफेसर शेरसिंह, डा० धर्मपाल, श्री सुभाष विद्यालकार और श्री राजकुमार शर्मा ड्राइवर भोजन करके आगे की यात्रा पर चल पडे ।

हरिद्वार के लिए जाने वाला राजमार्ग काफी चौडा है । वहा यातायात अधिक होने पर भी किसी प्रकार की बाधा नही होती । प्रोफेसर साहब ने ड्राइवर को एक बार प्यार से समझाया कि वह रास्ता देते समय अथवा किसी गाडी से आगे जाते समय (ओवरटेक करते समय) थोडा फासला ज्यादा रखा करे । ड्राइवर ने हसकर बताया कि साहब, मेरी गाडी आज तक किसी से टच भी नही हुई है । सभी आश्वस्त थे । डाइवर सचेत था । वह नौजवान था । रुडकी पार करने पर उसकी गाडी आगे की किमा गाडी से टच हुई और उसकी गाडी की बायी लाइट टूट गयी । गाडी रोकी गयी । डा० सत्यकेतु ने कहा कि अब हम चार बजे तक हरिद्वार नही पहुच सकेंगे । डा० धर्मपाल ने कहा कि अभी तो ३ १५ ही हुए है । हम आराम से पहुचगे । डा० साहब ने इच्छा व्यक्त की कि यदि श्री सुभाष जी पीछे की सीट पर आ जाए तो आराम रहेगा और इस प्रकार डा० धर्मपाल आगे की डाइवर के साथ वाली सीट पर चले गए । श्री सुभाष जी पीछे आ गए । ड्राइवर के ठीक पीछे डा० सत्यकेतु जी थे बीच मे प्रो० शेरसिंह और बायी ओर श्री सुभाष जी । रुडकी के बाद का बैराज पार ही किया था कि सामने से आने वाली रोडवेज की बस सामने से राक्षस की भाति आती दिखाई दी । कार ड्राइवर ने गाडी बचाने की कोशिश की पर बस की टक्कर कार के ठीक बीचो बीच हुई । पता नही कार न कितने चक्कर खाए । वह खड्ड मे गिरी मिला । डा० धर्मपाल सडक पर पडे थे । उनकी बद घडी मे समय था ३ २५

यात्रियो की सहायता से हताहतो को निकाला गया । एक यात्री ने डा० धर्मपाल को डाटा भी कि सिर से खून बह रहा है, फिर भी गाडी के दरवाजे तोडने की कोशिश कर रहे है । उसने डाँटकर मिट्टी लपेटी तथा अपना चद्दर बाध दिया । सभी घायलो को निकालकर पीछे से आने वाली कार मे बिठाया गया और वे हरिद्वार की ओर चले । कार मे तीन के लिए ही स्थान था । अत डा० धर्मपाल अन्य वाहन की प्रतीक्षा मे पीछे रह गए । प्रो० शेरसिंह डा० साहब को गोद मे लिटाकर पीछे की सीट पर बैठ गए । श्री सुभाष जी होश मे थे, पर वे खडे न हो सकते ~~थे डा० साहब ने गुरुकुल की भूमि पर पहुचते ही अपनी अन्तिम श्वास ली~~ । स्वामी श्रद्धानन्द चिकित्सालय के योग्य चिकित्सको ने अपनी भरपूर कोशिश की, परन्तु हार कर उन्हे साय चार बजे मृत घोषित करना पडा ।

चारो ओर हा-हाकार मच गया । लखनऊ से मुख्य मत्री, दिल्ली से लोक

सभा अध्यक्ष के वायर लैस पहुच गए कि तीमारदारी ठीक प्रकार से हो। सभी के परिवार के लोग रात मे वहा पहुच गए।

अगले दिन ११.०० बजे डा० साहब की शवयात्रा सिंह द्वार से चली। सारा हरिद्वार उनके पीछे चल रहा था। उनके पुत्रो ने डा० साहब को मुखाग्नि दी।

इस प्रकार वह सरस्वती-पुत्र अपनी कर्म स्थली मे ही हम सभी को बिलखता छोड गया।

शूर वीर कौन ?

जो मनुष्य वेदादि शास्त्रो के पढने मे शूरवीर, जो दुष्टो के दलन और श्रेष्ठो के पालन मे शूरवीर अर्थात् दृढोत्साही उद्योगी जो निष्कपट परोपकारक अध्यापको की सेवा करके, जो अपने जनक पिता की सेवा करके शूरवीर, जो माता की परि-चर्या से शूर, जो सन्यासाश्रम से युक्त अति विरक्त होकर सर्वत्र भ्रमण करके तरोपकार करने मे शूर, जो वानप्रस्थाश्रम के कर्म और गृहाश्रम के व्यवहार में शूर होते है, वे ही सब सुखो के लाभ करने कराने में अत्युत्तम हो के धन्यवाद के पात्र होते हैं कि जो अपना तन, मन, धन, विद्या और धर्मादि शुभ गुण ग्रहण करने में सदा उपयुक्त करते हैं।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

व्यक्तित्व

●

संस्मरण

●

श्रद्धाञ्जलि

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार

●

आर्यसमाज के रत्न अनुपम, सत्यकेतु विद्यालकार।
छोड चले वह जन समाज का करते करते अति उपकार ।।
भारतीय इतिहासविज्ञ थे सचमुच वह उद्भट विद्वान्।
लिखे बृहदाकार ग्रन्थ, जिन से जग भर मे उनका मान ।।

राजनीति शास्त्र के वेत्ता, आर्य सस्कृति के थे स्रोत।
मेधावी सुयोग्य स्नातक चिन्तन, मनन से ओत प्रोत ।।
लेखन कला पारखी ऐसे, लिखा आर्यसमाज का इतिहास।
सप्त खण्ड हैं जिसके विश्रुत, विद्वत्ता का विपुल प्रयास ।।

मुख मण्डल था अति तेजस्वी सिद्धान्तो पर अडिग रहे।
गुरुकुल के कुलपति कहलाए, अन्तिम क्षण तक सजग रहे ।।
किन्तु विधाता के प्रहार ने उनको हम से छीन लिया।
खेद यही है आर्य जगत को, विद्या सूर्य विलीन हुआ ।।

"शान्त" अमर है उनका जीवन, अमर हुई उनकी गाथा।
तप श्रद्धा युत थे महान् वह, नत मस्तक जग गुण गाता ।।

—सत्यभूषण 'शान्त' वेदालंकार (एम०ए०)
१२, मुनिरका विहार, नई दिल्ली-६७

डा० सत्यकेतु : प्राच्य विद्याओं के विलक्षण पंडित

—प्रो० रामप्रसाद वेदालकार

डा० सत्यकेतु विद्यालकार गुरुकुल के उन विद्यामा य वरिष्ठ स्नातको मे कीर्ति स्तम्भ थे जि होने प्राच्य विद्याओ के अध्ययन अनुसधान के क्षत्र मे अपनी असाधारण प्रतिभा से कीर्तिमान स्थापित किया था। पराधीन भारत मे राष्टिय शिक्षा आ दोलन का के द्र होने से जब गुरुकुल की उपाधियों को सरकारी मान्यता प्राप्त नहीं थी तब पेरिस जाकर अपनी योग्यता और विद्वत्ता से पेरिस विश्व विद्यालय के शिक्षाधिकारियो को प्रभावित कर न स्वय डी० लिट० की सर्वोच्च उपाधि अर्जित की अपितु विद्यालकार तथा वेदालकार उपाधियो को उच्च शोध काय के लिए मा यता भी प्रदान करवाई। गुरुकुल के यश को देश विदेशो मे फैलाने वाले पण्डित जी के ऋण से हम कभी उऋण नही हो सकते।

प्राचीन भारतीय इतिहास सस्कृति एव पुरातत्व के वह सवमा य विद्वान थ। सस्कृत प्राकृत पालि अपभ्रश हि दी अग्रजी एव फ्रच भाषाओ पर उनका पूरा अधिकार था। प्राचीन भारतीय इतिहास पर उ होंने हि दी मे तब मौलिक ग्रथो की रचना का जब हि दी मे लिखना हास्यास्पद समझा जाता था। इतिहास लेखन क क्षत्र मे पाश्चात्य इतिहास लेखको की दुराग्रहपूण दृष्टि का विरोध और शुद्ध भारतीय दृष्टि से इतिहास लेखन का काय सवप्रथम गुरुकुल म ही प्रारम्भ हुआ। आचाय रामदेव पण्डित जयच द्र पण्डित च द्रगुप्त तथा डा० सत्यकेतु इस अभियान के सफल पुरोधा सिद्ध हुए। स्नातक होने पर पण्डित जी गुरुकुल के इतिहास विभाग मे प्राध्यापक नियुक्त हुए। यहा रह कर उन्होने मौय साम्राज्य का इतिहास तथा पाटलीपुत्र की कहानी पुस्तको की रचना की। मौय साम्राज्य का इतिहास पर उन्हे हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने अपना सर्वोच्च पुरस्कार मगलाप्रसाद पारितोषिक प्रदान किया। यह कम गौरव की बात नही है कि जो पुरस्कार आचाय पद्मसिह शर्मा एव वियोगी हरि को प्राप्त हुआ था वह कम आयु मे ही डा० सत्यकेतु जी को प्राप्त हुआ। श्री वियोगी हरि के बाद छठा पुरस्कार उ हें

मिला। पण्डित जयचन्द्र जी तथा पण्डित सत्यव्रत जी को यह सम्मान सत्यकेतु जी के बाद मिला। "शिष्यादिच्छेत् पराजयम्।"

पण्डित जी ने स्वतन्त्र साहित्य लेखन द्वारा जीवन यापन किया। भारतीय तथा पाश्चात्य इतिहास, संस्कृति, दर्शन, संविधान राजनीतिक चिन्तन और सामाजिक विचारधाराओं के वह गंभीर और प्रौढ अध्येता थे। इन विषयो पर उनकी अनेक पुस्तकें विश्वविद्यालयो मे पढाई जाती हैं। सुदूर एशिया और बृहत्तर भारत के क्षेत्रो मे उपलब्ध भारतीय संस्कृति का भी उन्होंने प्रामाणिक अध्ययन प्रस्तुत किया। चीन, यूरोप तथा भारतीय उप द्वीपो की यात्राएँ की। लन्दन गए तो आर्य समाज के स्वतन्त्रता आन्दोलन से सम्बन्धित गौरवपूर्ण इतिहास के रोचक और ज्ञानवर्धक तथ्य ढूंढ लाए। आर्यसमाज की राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, साहित्यिक और सामाजिक उपलब्धियो का ७ खण्डो मे विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत करते हुए उन्होंने आर्यसमाज का बृहत् इतिहास प्रस्तुत किया। यह कार्य एक व्यक्ति और एक संस्था का प्रतीक है। आर्यसमाज की उपलब्धियो पर शोध स्तरीय ऐसा मूल्यांकन ग्रन्थ किसी भारतीय भाषा मे नही है।

पण्डित जी गुरुकुल के कुलपति और कुलाधिपति भी रहे। प्रशासनिक कार्यों मे व्यस्त रह कर भी उनकी साहित्य साधना कभी मन्द नही हुई। वह गुरुकुल एक दिन के लिए भी आते तो पुस्तकालय मे अवश्य जाते। गुरुकुल के शैक्षिक सुधार और समुन्नति की उन्हे सर्वाधिक चिन्ता थी। विदेशी छात्र छात्राओ को गुरुकुल मे प्रवेश दिलाने मे वह रुचि लेते थे। प्रशासक होते हुए भी अपने अधीनस्थ कर्मचारियो के प्रति उनके मन मे ममता थी, निश्छल स्नेह था। गुरुकुल की गतिविधियो को देखकर वह उत्साहित होते थे। नये युग की आवश्यकताओ और प्राचीन परिपाटी मे तालमेल न देखकर उन्हे क्षोभ भी होता था। गुरुकुल के उत्थान और ह्रास की भूमिका का उन्होने निकट से निरीक्षण किया था। गुरुकुल की भावी शोध योजनाओ का प्रारूप प्रस्तुत करते हुए उन्होने कहा था —"गुरुकुल परा विद्याओ मे अग्रणी भूमिका निभाने के लिए स्थापित हुआ था। उसे इस क्षेत्र मे उल्लेखनीय कार्य करना चाहिए।" हम चाहते हैं कि गुरुकुल मे इन योजनाओ के क्रियान्वयन का प्रयत्न हो। हमारे अध्यापक और विद्यार्थी पण्डित जी के अधूरे कार्य को पूरा करने का व्रत ले।

आज श्रद्धेय पण्डित जी हमारे मध्य नही हैं। उन्होंने अपना सारा जीवन इस मातृ संस्था के लिए लगाया और अन्त मे अपने प्राणो की आहुति भी इसी के हित संवर्धन के लिए दी। उन्हें यह संस्था कभी भुला नही सकती। उनका जीवन हमारे लिए प्रेरणाप्रद रहा है और रहेगा।

मैं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की ओर से पण्डित जी की स्मृति मे सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और आशा करता हूँ कि उनका महिम व्यक्तित्व एक विराट लक्ष्य की ओर सतत बढ़ते रहने का सकेत देता हुआ स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के सकल्पो को चरितार्थ करने का सदेश प्रदान करता रहेगा। गुरुकुल और माननीय प० सत्यकेतु जी अभिन्न हैं और अभिन्न रहेंगे।

—प्रो० रामप्रसाद वेदालकार
कुलपति गुरुकुल विश्वविद्यालय हरिद्वार

दयानन्द वचनामृत

मेरा उद्देश्य इस प्रकार लोगो को मिलाना है, सकल समुदायो को एकता मे लाना है। मैं चाहता हू कि कोल भील से लेकर ब्राह्मण पर्यन्त सब मे एक ही जातीय जीवन की जागृति हो। चारो वर्णं के लोग एक-दूसरे को अग-अगी समझे।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

※ ● ※

वैदिक भक्तिमार्ग की सब से बडी सुन्दरता यही है कि वह पुरुषार्थ से आरम्भ होता है। केवल भारत मे ही नही, प्राय अन्य देशो मे भी भक्ति पुरुषार्थ का नाश करती रही हैं। —स्वामी समर्पणानन्द

वे मेरे शिष्य ही नही, मेरे गुरु भी थे

—सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

जब मै गुरुकुल मे दयानन्द-सेवा-सदन' का आजीवन सदस्य होकर कोल्हापुर, बैंगलौर, मद्रास आदि स्थानो पर वैदिक धर्म और वैदिक संस्कृति का प्रचार कर गुरुकुल कागडी मे नियुक्त हुआ, तब सत्यकेतु जी तथा उनके मित्र अंगिरा, (जो पीछे जाकर अमरनाथ विद्यालंकार के नाम से प्रसिद्ध हुए) गुरुकुल के आश्रम मे विद्यार्थी समरूप रहते थे और मैं उनका आश्रमाध्यक्ष था। विद्यार्थी अवस्था मे नींद तो काफी आती ही है, परन्तु गुरुकुल मे ४ बजे प्रात उठ जाने का नियम था। मैं ३ ३० बजे उठकर और हाथ मे डंडा लेकर सब सोते हुओ के तख्त पर डंडा बजाता हुआ उन्हे उठा देता था। सत्यकेतु जी तथा अंगिरा जी भी उन्ही सोते हुओ मे थे और मेरी इस आदत का स्वीकार नहीं करते थे और मुझसे झगडते थे। आश्रमाध्यक्ष के तौर पर मेरी उनसे कई बार झपट होती थी परन्तु उनकी बुद्धि इतनी तीव्र थी कि मैं एक तरफ उनसे झगडता और दूसरी तरफ हर जगह उनकी बुद्धि की तारीफ करता। झगडने का अर्थ तू तू, मैं मैं नही झगडने का मतलब मैं गुरु-शिष्य मे युक्ति-प्रत्युक्ति करना झगडना समझता था, जो मेरी गलती थी। मैंने आश्रमाध्यक्ष के तौर पर यह देखा था कि मैं ही नही मेरे आश्रम के वे विद्यार्थी जो बहुत पढाऊ माने जाते थे, वे सभी सत्यकेतु जी के सहयोगी होने पर भी उनको अपना गुरु समान मानते थे और हर काम मे उन्ही से प्रेरणा लेते थे। जिनमे से अंगिरा, चन्द्रगुप्त, कृष्णचन्द्र आदि मुख्य थे। इस दृष्टि से मैं कह सकता हूँ कि प० सत्यकेतु जन्मजात उच्चकोटि के विद्वान् थे, तभी उनकी कक्षा के विद्यार्थी भी अपने विषय का खुलासा उन्ही से पूछते रहते थे। वे सब उनको अपना गुरु समान मानते थे। उक्त कारणो से गुरुकुल के सभी विद्यार्थी मेरे शिष्य थ, परन्तु श्री सत्यकेतु मेरे शिष्य होने पर भी मेरे गुरु थे। मै तो समझता हूँ कि वे जीनियस थे, अत्यन्त प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। उन्हें गुरुकुल ही मे नहीं खोया, भारत ने खोया, क्योकि अपने भावी जीवन मे उन्होंने देश की राजनीति को भी नही छोडा था।

मै श्री सत्यकेतु को अपना शिष्य होने पर भी अपना गुरु मानता हूँ इसका एक विशेष कारण है। यह कारण क्या है ? मुझे सन् याद नही, मैं गुरुकुल की सेवा

से निवृत्त हो चुका था, गुरुकुल उत्सव पर आया था। तब तक डा० सत्यकेतु जी मसूरी पहाड़ पर मकान बनाकर बस गये थे। उत्सव पर वे भी पधारे थे। हम दोनो एक ही जगह ठहरे थे। उस समय उन्होने इतिहास सम्बन्धी एक पुस्तक मुझे भेंट की और कहने लगे कि मैं अब इसी दिशा मे साहित्यिक कार्य करूंगा। उनकी पुस्तक को देखकर मुझे प्रेरणा मिली कि यह भी जीवन की एक दिशा है। वे पुस्तक लेखन के कार्य की दिशा मे लगातार बढते गए और मैं उनकी साहित्यिक-उन्नति देखता रहा। वे इस दिशा मे बढते ही जा रहे थे, मैं सिर्फ पढाने के क्षेत्र मे ही सीमित था। जब मैने देखा कि साहित्यिक क्षेत्र भी जीवन का एक विस्तृत क्षेत्र है तब मैंने उन्हे गुरु मानकर उन्ही का दर्शाया मार्ग पकड लिया और आज ९३ वर्ष की आयु मे भी मैं उन्ही के दर्शाये मार्ग का अनुसरण कर रहा हू और ५० के लगभग पुस्तके लिख चुका हूं। अगर वे अपनी इतिहास की पुस्तक उस दिन मुझे न दिखाते तो मैं कह नही सकता कि मेरे जीवन का मार्ग क्या होता। यद्यपि हम दोनो साहित्य के क्षेत्र मे जुटे रहे—क्षेत्र हम दोनो का अलग अलग रहा।

सालो बीत गए। मैं दिल्ली मे आ बसा। वे भी दिल्ली मे रहने लगे। एक दिन उन्होने मेरे पास "आर्यसमाज का इतिहास" लिखने की रूपरेखा भेजी और कहा कि मैं इसे पूर्ण करना चाहता हूं। सालो का प्रोग्राम था। मैं अचम्भे मे था कि इतने लम्बे काम को जो सौ बरस मे भी पूरा नही हो सकता था वे कैसे एक जन्म मे पूर्ण कर लेगे। मैंने उन्हे लिखा कि अगर यह कार्य पूर्ण हो सकता है तो आपके सिवा आर्यसमाज मे कोई ऐसा व्यक्ति नही जो इसे पूर्ण कर सके। यह तो एनसाइक्लोपीडिया जैसा कार्य है। मैं देखता रहा, और यह असम्भव कार्य दो-तीन साल मे पूरा हो गया। पुस्तक की गुरुकुल-विषय सम्बन्धी एक प्रति उन्होने मेरे घर आकर मुझे भेंट की।

अब जबकि मैं सत्यकेतु जी के विषय मे लिखने बैठा हूं, मुझे उनके सम्बन्ध मे दो चार बाते याद आ रही हैं। उनके विवाहोत्सव पर हम लोगो का गुरुकुल-मण्डल बिजनौरान्तर्गत हल्दौर गया था, जहा उस समय रेलगाडी नही आती थी, या आती थी तो ठहरती नहीं थी। बिजनौर मे मेरा भी श्वसुरालय था इसलिए बिजनौर की बातें मुझे बहुत याद आ रही हैं। मेरे विवाह के समय बिजनौर जाने के लिए रेलगाडी की सुविधा नही थी। बरसो बाद देहरादून दिल्ली गाडी की सुविधा प्राप्त हुई तो गाडी बिजनौर तथा हल्दौर ठहरने लगी। बहुत दिनो की बात है मैं अपनी पत्नी से मजाकतन कहा करता था कि बिजनौर के लोग यह नही जानते कि गाडी से कैसे उतरा जाता है। वे खिडकी से अन्दर कूद आते हैं और बाहर निकलने के लिए खिडकी से बाहर कूदते हैं। परन्तु यह हसी-मजाक की बात थी। मेरी पत्नी ने कहा—आपको बिजनौर मे खिडकी से बाहर कूदने वाले ही

दीखे या उसमे कुछ गुण भी दिखा। तब मैंने उन्हें प्रसन्न करने के लिए बिजनौर की गुण-गाथा बखानना शुरू किया। अंग्रेजो ने बिजनौर जैसे छोटे से गाव को सारे जिले का हैडक्वार्टर बना दिया। बिजनौर बडे-बडे महापुरुषो का स्थान रहा है। सर तेजबहादुर सप्रू बिजनौर के थे। राजा ज्वालाप्रसाद बिजनौर के थे। जनता पार्टी के श्री शशिभूषण, जो विधिमन्त्री रहे और विधि शास्त्र के विख्यात विधि-विद रहे—बिजनौर के हैं, और श्री सत्यकेतु विद्यालकार का वैवाहिक सम्बन्ध भी बिजनौर जिले मे हुआ। मेरी इतनी लम्बी चौडी गाथा सुनकर मेरी पत्नी उप-हास मे कहा करती थी कि जनाब अपना नाम मिलाना क्या भूल गए। मैं उत्तर मे कहा करता था कि अपना नाम लू या आपका नाम लू, मैं यह निश्चय नही कर पा रहा हूं इसलिए दोनो का नाम छोड रहा हूं ताकि आपसी नोक-झोक न हो।

श्री सत्यकेतु जी के श्वसुर श्री भवानीप्रसाद जी थे, जो नैचुरोपैथी तथा जल-चिकित्सा के निष्णात व्यक्ति थे। मैंने जब गुरुकुल का कार्यभार समाला तब गुरुकुल के आयुर्वेद विभाग मे नैचुरोपैथी को एक विषय बना दिया और उसका अध्यक्ष सत्यकेतु जी के श्वसुर को बनाया क्योकि हल्दौर मे मैं देख आया था कि इस विषय मे उनकी कितनी तीव्र अगाध गति है। यह तो साधारण सी बात है, परन्तु इससे गहरी यह बात है कि एक बार मैं इलाहाबाद किसी काम से जा रहा था। मुझे प्रसिद्ध कवि प० श्रीधर पाठक से मिलना था। प० सत्यकेतु जी ने एक पुस्तक लिखी थी। शायद 'मौर्यकाल का इतिहास' था। वे चाहते थे कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मगलाप्रसाद पारितोषिक के लिए इसे प्रस्तुत किया जाए। वे यह सुनकर कि मै इलाहाबाद जा रहा हूं मेरे पास आए और कहने लगे कि इस पुस्तक को आप ले जाये। मैंने कहा इसे डाक से भेज दीजिए। वे कतराए, तो मैंने कहा पैसा तो मुझे भी आने जाने मे, तागा आदि के व्यय मे लगेगा, वह आप को देना होगा। इस घटना से पाठक समझ सकते हैं कि उस समय हम लोगो की आर्थिक स्थिति क्या थी। मैंने कहा—पाच रुपया दे दीजिये, तो मैं आपका सब काम कर दूंगा। उन्होने मुझे पाच रुपये दे दिये और मैंने इलाहाबाद मे पुस्तक यथास्थान पहुचा दी। इस पुस्तक पर उन्हे १२००/- रुपय का मगलाप्रसाद पारि-तोषिक मिला। इसके मिलने पर मुझे आत्मग्लानि हुई कि ऐसे ग्रन्थ के लिए मैं ५ रुपये ले पडा। इस आत्मग्लानि का प्रतिशोध करने के लिये मैंने १४ रुपये के सैंडो के कम्बल खरीद कर उन्हे भेंट के रूप मे दे दिये, और वे प्रसन्न हुए, मैं भी ऋण मुक्त हुआ।

जब मैं पहली बार गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता पद से निवृत्त हुआ तब प० इन्द्र जी मेरे स्थान पर आये। वे लगभग १०-१५ वर्ष तक मुख्याधिष्ठाता रहे। इसके

बाद सभा ने फिर मुझे याद किया। मैं दोबारा छः वर्ष तक मुख्याधिष्ठाता रहा। जब छः वर्ष पूरे हो गये तब मैंने सभा को लिखा कि मैं अब मुक्त होना चाहता हूँ। मेरे चले आने के बाद गुरुकुल का मुख्याधिष्ठाता पद झगड़े में पड़ गया। इस झगड़े में मैंने सत्यकेतु जी को सर्वथा इस पद के योग्य होने के कारण आन्दोलन उठाया। परिणामस्वरूप वे मुख्याधिष्ठाता बने। परन्तु झगड़ों से दूर रहने के कारण उन्होंने त्यागपत्र दे दिया।

बातें तो बहुत हैं, पुस्तक पर लिख सकता हू, परन्तु इस आयु मे हाथ भी उतना नही चलता, इसलिए यही यह कह कर विराम करता हूँ।

शिष्ये गुरुत्वभावनाय सत्यव्रतस्य नमस्कार स्वीकुर्वन्तु सत्यकेतु महाभागा।

—सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार
W-77 A, ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली-110048

पद से तुम्हारी नही, बल्कि तुम्हारे से पद की शोभा होनी चाहिए। यह तभी होगा जब तुम्हारे काम महान् और अच्छे हो।

* * *

जिन पितर जनो ने हमारे बचपन की तुतली व अर्थहीन बातो को बड़े प्रेम से सुना और हमारी जिज्ञासा शान्त की थी, अब उन बूढ़े पितरो की श्रद्धा से बातें सुनकर उन्हें क्यो न सम्मान दें।

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार

—मनोहर विद्यालकार

डाक्टर सत्यकेतु विद्यालकार का जन्म आर्थिक और सामाजिक दोनो ही दृष्टियों से एक साधारण परिवार मे हुआ था।

शिक्षा काल में ही उनकी प्रतिभा दृष्टिगोचर होने लगी थी। प्रत्येक कक्षा मे प्रथम श्रेणी मे प्रथम रहते हुए उन्होने अपनी परीक्षाएं उत्तीर्ण की थी। अपने विद्यार्थी जीवन मे ही वे 'मौर्य साम्राज्य का इतिहास का लेखन पूरा कर चुके थे। इसी पुस्तक पर स्नातक होने के बाद उन्हें मगलाप्रसाद पुरस्कार' से अलकृत किया गया था। उस समय हिन्दी भाषा का यह सर्वोच्च पुरस्कार था। इस प्रकार प्रारम्भ से ही अपनी योग्यता का सिक्का जमाते हुए वे अपनी योग्यता और परिश्रम के बल पर आर्यसमाज में स्पृहणीय उच्चतम पदो पर पहुचे। समय समय पर गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति, कुलाधिपति और परिद्रष्टा तीनों पदों पर आसीन हुए। अपनी लेखनी की योग्यता के आधार पर ही स्नातक निर्वाचन क्षेत्र की सुरक्षित सीट से निर्वाचित होकर वे उत्तरप्रदेश की विधानसभा के सदस्य बने थे।

कृतज्ञता से भरपूर

साधारण स्थिति से उच्च पद पर पहुचे व्यक्ति मे प्राय अहकार पैदा हो जाता है। अपनी सफलता को वह अपने परिश्रम और भाग्य का परिणाम मानने लगता है। अपने पर कृपा करने वाले वृद्धजनो की उपेक्षा कर देता है, अपने सहयोगियो और अनुगामी कार्यकर्ताओं का अनादर कर देता है। किन्तु डाक्टर साहब में, इस क विपरीत कृतज्ञता कूट-कूट कर भरी थी। आत्मीय जनो में बैठकर बातचीत करते हुए, प्रसग उपस्थित होने पर वे प्राय कहा करते थे कि महात्मा मुन्शीराम, बाद मे विख्यात अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द की मुझ पर कृपा न हुई होती, तो स्वतन्त्रता के सपने को साकार करने की भावना को प्रेरित करने वाली भारतीयता ओतप्रोत सस्था गुरुकुल कागडी मे शिक्षा प्राप्त करने का मुझे अवसर न प्राप्त होता और सम्भवत आज भी मैं अपने गाव में घुटनो तक अगोछा लपेटे किसी खेत मे काम कर रहा होता।

सरलता की मूर्ति

अपने दोषों को प्रत्येक व्यक्ति छुपाने का प्रयत्न करता है। लेकिन जब किसी को उच्च पद देने की पेशकश की जा रही हो, उस समय अपने दोषों और कमियों को उजागर करने वाले लोग विरले ही होते हैं। सन् ६६ में पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति के सेवानिवृत्त होने का निश्चय प्रकट करने के बाद, डा० सत्यकेतु को भी गुरुकुल कांगड़ी का कुलपति बनाने की पेशकश हुई। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि "मेरे सम्बन्ध में सिगरेट पीने की अफवाह है, मेरी वेशभूषा विदेशी है, मैंने आर्यसमाजों में न काम किया है, न उपदेश दिये हैं, इसलिए आर्य जगत् में मुझे बहुत कम लोग जानते हैं।

"गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय आर्यसमाज की संस्था है। इसलिए इस संस्था के सर्वोच्च पद पर किसी ऐसे व्यक्ति को रखना चाहिए, जिसने आर्य जगत् की किसी न किसी रूप में सेवा की हो, और आर्य जगत् उससे सुपरिचित हो। ऐसा ही व्यक्ति गुरुकुल के लिए लाभकर होगा, और वही इस की उन्नति कर सकेगा।"

"मैं अपने को गुरुकुल माता का पुत्र होने से सदा उसका ऋणी अनुभव करता हूं। मुझे जब भी गुरुकुल के अधिकारी याद करेंगे, अवश्य उपस्थित होऊंगा, और अपनी योग्यता और शक्ति के अनुसार जितना सम्भव होगा, उतना सहयोग अवश्य प्रदान करूंगा।" इस प्रकार उस समय डाक्टर विद्यालंकार ने अपना नाम पेश नहीं करने दिया।

अटल परमेश्वर विश्वास

आर्यसमाज के नेता डाक्टर सत्यकेतु को साम्यवादी और नास्तिक समझते थे। उनके विचार से वे भारतीय संस्कृति की अपेक्षा यूरोपीय संस्कृति के अधिक हिमायती थे। मेरा विचार तो यह है कि गुरुकुल कांगड़ी से निकले स्नातकों में से वेद के विद्वानों ने गुरुकुल के यश को जितना फैलाया है, उन सब के सम्मिलित प्रयत्न से कहीं अधिक अकेले डाक्टर सत्यकेतु ने गुरुकुल की कीर्तिपताका दूर दूर तक फहरायी है।

अपनी आयु के सातवें दशक में वे गम्भीर रूप से बीमार हुए थे। वे स्वयं सुनाया करते थे कि—तब मैंने चिकित्सालय में पड़े हुए परमात्मा से प्रार्थना की थी कि मैं अपने को आर्यसमाज का ऋणी अनुभव करता हूं। यदि इस बार ठीक हो गया तो उस ऋण को उतार दूंगा। परमेश्वर की कृपा से मैं अब ठीक हो गया हूं और अपने उस वचन को निभाऊंगा। 'आर्यसमाज का इतिहास' लेखन ही अब मेरे

जीवन का एकमात्र लक्ष्य होगा।

देखिये! कितना विचित्र संयोग है कि आर्यसमाज के सौभाग्य से ज्यों ही उन्होंने अपना प्रण पूर्ण किया। बड़े आकार के लगभग छः हजार पृष्ठों में ७ जिल्दों में इतिहास प्रकाशित हुआ—उसके कुछ ही समय बाद एक कार दुर्घटना में उन की जीवनलीला समाप्त हो गई।

ऐसा लगता है कि मानो सातवें दशक की बीमारी उनकी मृत्यु का सन्देश लेकर आई थी। उन्होंने सच्चे हृदय से परमात्मा से जीवन की प्रार्थना की थी, जिसे परमात्मा ने स्वीकार कर लिया था। उनका व्रत पूरा हुआ, और परमात्मा ने उन्हे अपने पास बुला लिया।

वे व्यक्ति नहीं, एक संस्था थे

आर्यसमाज का इतना विस्तृत इतिहास लिखना, सरल काम नहीं था। इसे लिखने के लिए अनुभव विद्वत्ता और ख्याति तीनों की जरूरत थी। वे अन्त-राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त, इतिहास के विद्वान् थे। लेखन और प्रकाशन का उन्हे अथाह अनुभव था। इसलिए उन्होने इसे बहुत अल्पसमय मे, ४-५ सहयोगियो की सहायता से पूर्ण किया, और साथ ही साथ प्रकाशित भी करा दिया।

इस इतिहास लिखने के साथ साथ, इसे प्रकाशित करने के लिए आवश्यक धन भी उन्होंने स्वय एकत्रित किया। इतना विस्तृत लेखन, इसे प्रकाशित करने के लिए धन-सग्रह, और इसे प्रकाशित करना—ये तीनो काम इतने विशाल हैं, कि सामान्यतया एक एक सस्था, इन मे स एक एक काम का उत्तरदायित्व लेने मे भी कतराएगी। लेकिन उस अकेले व्यक्ति ने परमेश्वर के सम्मुख किए हुए प्रण को पूरा करने के लिए तीनो कार्यों को बडी शालीनता से पूर्ण किया। स्पष्ट है कि वे व्यक्ति नही सस्था थे। आर्यसमाज की शिरोमणि सस्थाओ को, उनसे प्रेरणा लेकर ईश्वर मे पूर्ण आस्था के साथ इस तरह के दूसरे काम पूरे करने चाहिए।

आर्य जगत् मे डाक्टर सत्यकेतु के अतिरिक्त एक ही ऐसा और व्यक्ति हुआ है—वह है स्वनामधन्य ब्रह्मर्षि श्री श्रीपाद दामोदर सातवलेकर—जो इनके गुरु भी थे और जिनके आगे सभी सस्थाएं और विद्वान् अपने को पराजित अनुभव करते थे।

कुलमाता के यशस्वी पुत्र

२०वीं सदी के प्रारम्भ मे, राष्ट्र प्रेम से प्रेरित होकर, विदेशी शासन से मुक्ति दिलाने वाले नागरिको को उत्पन्न करने के लिए महात्मा मुन्शीराम ने गुरु-

कुल कांगड़ी की स्थापना की थी। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य, देशवासियों में 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' की भावना को दृढ़ मूल करना था।

इस संस्था के निर्माण द्वारा महात्मा मुन्शीराम देश को दिखाना चाहते थे कि हमारी अपनी मातृभाषा, अंग्रेजी से किसी तरह हीन नहीं है। इस भाषा द्वारा विश्व में उपलब्ध ऊंचे से ऊंचा ज्ञान—वह चाहे जितना पुराना हो, और नये आविष्कृत रूप में कितना ही आधुनिक क्यों न हो—बड़ी आसानी से, और गहराई से विद्यार्थियों को दिया जा सकता है।

गुरुकुल कांगड़ी में शिक्षा पाये स्नातकों ने अपनी योग्यता, और लेखन से इस धारणा को सम्पुष्ट किया है। वहां से निकले शताधिक स्नातकों ने राष्ट्रभाषा में ज्ञान विज्ञान में अपने लेखन और कर्तृत्व से अपनी मातृ संस्था की यशोगाथा गाई। डा० सत्यकेतु विद्यालंकार भी उन्हीं सुयोग्य स्नातकों में से अन्यतम हैं, जिन्होंने अपनी शिक्षण संस्था, समाज तथा देश का गौरव बढ़ाया है।

मैं ऐसे स्वनामधन्य गुरुवर डाक्टर सत्यकेतु विद्यालंकार की स्मृति में अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूं।

—मनोहर विद्यालंकार
ईश्वरी भवन, खारी बावली, दिल्ली-६

हमेशा डरते रहने से अच्छा है कि खतरे का एक बार सामना कर लिया जाये।

* * *

बन्दरगाह में खड़ा जहाज सुरक्षित होता है, लेकिन जहाज क्या इसीलिए बनाये जाते हैं।

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार—सांस्कृतिक इतिहास के प्रहरी

—डा० अमरसिंह सेंगर

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार भारतीय इतिहास के पोषक थे। उनकी लेखनी ऐतिहासिक ग्रन्थों की लिखते समय ऐसे थिरकती थी—मानो लेखनी कम्प्यूटराज्ड हो। उनके मन से भाव उठते थे और लेखनी चलती रहती थी। उनके लगभग समस्त ऐतिहासिक ग्रन्थो को मुझे पढने का सौभाग्य मिला। उन्होंने ग्रन्थ लेखन के समय कोई भी ऐतिहासिक स्रोत नही छोडा। अक्सर ऐतिहासिक ग्रन्थो मे यह देखा जाता है कि यदि साहित्य साक्ष्य लिये तो पुरातत्वीय साक्ष्य छूट जाते हैं।—पर डा० साहब के ग्रन्थो मे साहित्यिक साक्ष्यो मे वेद, वेदाग, ब्राह्मण ग्रन्थ, महाभारत, रामायण, स्मृतिया, पुराण, कौटिल्य अर्थशास्त्र, जैन-बौद्ध साहित्य के अतिरिक्त तत्कालीन ग्रन्थो—यथा कालिदास द्वारा रचित साहित्य, पाणिनि का अष्टाध्यायी, मालवाकाग्निमित्रम्, देवी चन्द्रगुप्तनाटकम् आदि ऐतिहासिक साक्ष्यो को अपनी रचनाओ मे दर्शाया। इसके साथ-साथ पुरातत्वीय साक्ष्यो को भी उन्होने अपनी रचनाओ मे स्थान दिया। उन्होने अभिलेखो—(शिलापट, स्तम्भ, ताम्रपत्र) सिक्को स्मारकों की विशद व्याख्या की एव तदनुसार ऐतिहासिक सामग्री के रूप मे अपने ग्रन्थो मे लिखा। चूकि डा० साहब एक मेधावी छात्र रहे—उन्हे हिन्दी, अग्रेजी, सस्कृत, फ्रेंच आदि भाषाओ का ज्ञान था तथा ब्राह्मी एव खरोष्ठी लिपि भी जानते थे, अतएव डा० साहब के ग्रन्थो मे मौलिकता स्पष्टतया दृष्टिगोचर होती है।

मुझे डा० साहब की पाण्डुलिपि भी देखने को मिली, जिसमे धारा प्रवाह है, मौलिकता है। उनकी सर्वश्रेष्ठ रचनाओ मे :—

१ प्राचीन भारत (प्रारम्भ से १२०० ई० तक)।
२ भारतीय सस्कृति का विकास।
३. मौर्य साम्राज्य का इतिहास।
४ दक्षिणी पूर्वी और दक्षिणी एशिया में भारतीय संस्कृति।
५ मध्य एशिया तथा चीन मे भारतीय सस्कृति।

६ प्राचीन भारतीय इतिहास का वैदिक युग।
७ भारतीय इतिहास का पूर्व मध्य युग (६०० से १२०० ई० तक)।
८ प्राचीन भारत की शासन संस्थाएँ और राजनीतिक विचार।
९ प्राचीन भारत का धार्मिक सामाजिक और आर्थिक जीवन।
१० योरोप का आधुनिक इतिहास (सम्पूर्ण)।
११ योरोप का आधुनिक इतिहास (१७८९ से १८७१ तक)।
१२ योरोप का आधुनिक इतिहास (१८७१ से १९३९ तक)।
१३ एशिया का आधुनिक इतिहास (सम्पूर्ण)।
१४ पूर्वी और दक्षिणी पूर्वी एशिया का आधुनिक इतिहास—प्रमुख हैं।

इनके अतिरिक्त आर्यसमाज का इतिहास ७ खण्डो मे लिखकर उन्होने आर्य जगत को स्थायी धरोहर दी। डा० साहब ने ऐतिहासिक उपन्यास यथा—आचार्य चाणक्य, सेनानी पुष्यमित्र आदि द्वारा जन सामान्य को भी परिचित कराया।

मुझे डा० साहब की एक भूमिका याद आ रही है। माननीय जैलसिंह पजाब के मुख्यमन्त्री थे। उनके युग मे हाई स्कूल की इतिहास की पुस्तक पजाब बोर्ड द्वारा प्रकाशित की गयी—उसम लिखा था आर्य लोग मास खाते थे शराब पीते थे आदि आदि। आर्य नेता—स्व० पृथ्वीसिंह आजाद लाला रामगोपाल जी शालवाले, स्वामी ओमानन्द जी आदि ने इस पुस्तक पर आपत्ति की और सघष छेडा—जुलूस हडताल मुख्य मन्त्री निवास पर की गयी। परिणाम स्वरूप उस पुस्तक के दो अध्यायो को लिखने का कार्य डा० साहब को पजाब सरकार ने सौंपा। जब वह दो अध्याय लिखने जा रहे थे—मुझ से कहा कि हम सभी स्रोतो का गहन अध्ययन कर इसका संशोधित रूप दे। उसमे डा० साहब ने आर्यों के आचार-विचार आदि तथ्यात्मक रूप म प्रदर्शित कर पजाब सरकार को वह पुस्तक पुन प्रकाशन हेतु सौंप दी। डा० साहब से एक प्रश्न पूछा गया—डा० साहब आचार्य रामदेव जी द्वारा रचित-भारत का इतिहास भी है। आप उसको आधार क्यो नही मानते। डा० साहब का यह मत रहा कि साहित्यिक एव पुरातत्वीय स्रोत इतिहास की रचना मे सहायक होते हैं। भावनाओ के आधार पर सही इतिहास की रचना संभव नहीं है। यही कारण रहा कि डा० साहब की रचनाओ को भारत के सभी विद्वान् मान्यता देते रहे हैं एव विश्वविद्यालयो के पाठ्यक्रम में प्रमुख स्थान रहा।

डा० साहब के समकालीन लेखकों में प्रो० के०पी० जायसवाल, डा० के०डी० बाजपेयी, डा० बी०एन० पुरी, डा० बी०आर० शर्मा, डा० जी०सी० पाण्डेय, डा० कृष्णदेव आदि हैं। जब कभी गोष्ठियो, वर्कशाप आदि में डा० साहब इन विद्वानो

से मिलते थे—तो वे हमेशा ऐतिहासिक समस्याओं पर ही बात करते थे। मुझे स्मरण है—एक बार महाभारत, रामायण काल पर डा० सकालिया (फादर आफ इण्डियन आर्कियोलोजी) ने एक विवाद खड़ा कर दिया। राष्ट्रीय प्रमुख अखबारों में छपा कि महाभारत काल्पनिक है। डा०साहब ने कहा कि क्या पुरातत्त्व का काम पूरा हो गया है। अभी तो खुदाई बाकी है फिर काल के कराल में क्या पता, वह नगर डूब गया हो। देवी चन्द्रगुप्तम् को भी काल्पनिक नाटक कहा जाता रहा, पर १९६९ में डा० गेई द्वारा खुदाई में प्राप्त मूर्तियों के अभिलेखों ने उसकी पुष्टि कर दी। ऐसा ही महाभारत में होगा—विश्वास रखें। यह थी डा० साहब की धर्म, संस्कृति के प्रति निष्ठा। एक बार में आर्कियोलोजी की गोष्ठी से लौटा। मैंने डा० साहब से कहा—डा० साहब, पुरातत्त्व विभाग ने सिन्धु सभ्यता को प्रि हरप्पन प्रोटो हरप्पन हरप्पन एवं लेट हरप्पन के काम को १००० ६०० ई० पू० रख दिया। फिर हम वैदिक युग को किस काल में ले जायेंगे। डा० साहब ने कहा कि पुरातत्त्व वाले तो पोटरी में ही लगे रहेंगे। अरे भाई साहित्यिक साक्ष्य भी तो हैं। हरप्पन काल यदि बढ़ता है तो अन्धकार युग (१५०० ई० पू० से पहले) तक बढ़ेगा। मैंने देखा कि सागर विश्वविद्यालय के प्रो० के०डी० बाजपेयी इनके मत को काफी आदर देते थे।

पुरातत्त्व संग्रहालय के निर्माण में भी डा० साहब के सुझाव मूल्यवान रहे। हालाँकि इन्हीं के शिष्य एवं मेरे पूज्य गुरुदेव प्रो० हरिदत्त जी ने इस संग्रहालय को एक रूप दिया था। इनके सुझावानुसार स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर चित्र, पत्र आदि सामग्री प्रदर्शित की गयी। उनकी इच्छा रही कि सहारनपुर जिले के टीलों का सर्वेक्षण किया जाये एवं खुदाई की जावे। इस योजना को हम लोगों ने साकार रूप देने का संकल्प लिया हुआ है। इसी प्रकार स्वतन्त्रता आन्दोलन में गुरुकुल का योगदान पर शोधकार्य कराकर ग्रंथ का प्रकाशन हो—यह भी उनकी तीव्र इच्छा थी—ईश्वर की कृपा रही तो हम लोग उनकी यह भी कामना पूरी करेंगे।

डाक्टर साहब की रचनाओं ने गोविन्द वल्लभ पुरस्कार, मोतीलाल नेहरू पुरस्कार एवं मंगलाप्रसाद पारितोषक आदि पुरस्कार प्राप्त कर गुरुकुल का नाम ऊँचा किया। गुरुकुल एवम् आर्यजगत् को सम्मान दिलाया।

विद्वान् काशीप्रसाद जायसवाल जिन्होंने हिन्दू पोलिटी आदि पुस्तकें लिखी—ने डा० सत्यकेतु के विषय में लिखा है :—

"पुराने हिन्दु पुराविदों की तरह और नये ऐतिहासिकों की तरह ग्रंथकार ने शिलालेख, प्राचीन पुस्तकों तथा अन्य ऐतिहासिक साधनों से मौर्य राज्य का इतिवृत्त संकलित किया है। मैंने ठोक बजा कर देख लिया, यह माल खरा है।..."

"ऐसे महानुभावो का चरित आजकल की भाषा बद्ध करना एक धर्मकार्य ही, साहित्य में समझना चाहिये। प० सत्यकेतु जी इस पूर्त की पूर्ति कर चिर-यश के भागी हुए। उनको देश की ओर से बधाई है।" ये विचार है—उन की पुस्तक मौर्य साम्राज्य के इतिहास पर।

आज डा० सत्यकेतु विद्यालंकार की रचनाओ के आधार पर अनेक शोध विषय शोध-छात्रो के लिए खुल गये हैं। ऐतिहासिक क्षेत्र में उनके ग्रन्थानुसार दक्षिणी पूर्वी एशिया में अनेक शोध विषय हैं—यथा स्वर्णभूमि, जावा-सुमात्रा में भारतीयता आदि आदि। डाक्टर साहब पर सरस्वती की विशेष अनुकम्पा थी, जिससे वे अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना कर सस्कृति को सजोकर अमरत्व को प्राप्त हो गये हैं एव हम लोगो को मार्ग बता गये है—उसी पर बढते चले—यही सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

—डा० जबरसिंह सेंगर
निदेशक पुरातत्व सग्रहालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार-२४९४०१

उत्तमता गुणो से आती है। ऊचे आसन पर बैठ जाने से नही।

* * *

सामने आई अत्यन्त उलझी और भयकर परिस्थिति को भी यदि शान्ति और धैर्य से सुलझाओ तो सुलझ जाती है।

इतिहासज्ञ श्री डा० सत्यकेतु जी विद्यालंकार

—डा० प्रभात शास्त्री, डी० लिट्

भारतीय पुनर्जागरण को जो सबल और प्रबल प्रवाह का रूप आर्यसमाज के आंदोलन ने दिया है, उसका मूल्यांकन कर पाना सम्भव नही है। वैदिकधारा से संपृक्त भारतीय मनीषा के मन्तव्यो के सहारे समाजसुधार और आर्षचेतना का उद्घोष करने मे इस आंदोलन का महनीय योगदान चिरस्मरणीय रहेगा। भारतीय राष्ट्रीयता के साथ इसका संबंध प्रारम्भ से ही रहा। प्राचीन वैदिकज्ञान एवं यज्ञ-याग की विधि के पुन प्रचलन के इसके प्रयास का एक उज्ज्वल पक्ष है। इसी के साथ वैदिक पद्धति का अभिनव रूप गुरुकुल कांगडी जैसे शिक्षण केन्द्र है। इन संस्थाओ ने न केवल वेद के पारंगत विद्वानो को संरक्षण एवं प्रश्रय दिया, वरन् इसने प्राचीन आयुर्वेद एवम् अन्यान्य वैदिक विद्याओ और उनके स्वरूपो को संरक्षित करने का प्रयास किया है। ऐसी परम्परा के प्रतिनिधि के रूप मे सत्यकेतु विद्यालंकार का व्यक्तित्व हमारे लिए प्रेरक एवम् अभिनन्दनीय है।

१६ सितम्बर १६०३ मे जनपद सहारनपुर मे जन्मे श्री सत्यकेतु जी ऐसे विरले विद्वान् हैं जिनका वैदिक ज्ञान अपरिमित है। पेरिस विश्वविद्यालय से डी० लिट्० की उच्च उपाधि प्राप्त करके आपने साहित्य और इतिहास के क्षेत्र मे कार्य प्रारम्भ किया। फलत आपके विशद अध्ययन एवं लोकनिरीक्षण के परिणामस्वरूप अनेक ऐसे मानक ग्रंथो का प्रणयन हुआ जिनसे हिन्दी समृद्ध हुई। विशेष रूप से भारतीय इतिहास के क्षेत्र मे आपके अवदान को हिन्दी जगत् ने महत्त्वपूर्ण माना और संवत् १९८६ मे आपको "मौर्य साम्राज्य का इतिहास" पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उस समय का सर्वोच्च पुरस्कार मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्रदान किया। एक सफल इतिहासकार के रूप मे सत्यकेतु जी ने अपना विशेष स्थान बनाया है। आपके इतिहास संबंधी शोधपूर्ण कार्यों की अपनी विशेषता है। ऐतिहासिक तथ्यो की संगति के साथ प्रवहमान भारतीय संस्कृति की मूलचेतना से पाठक को संपृक्त करते हुए आप युगसंदर्भ के साथ अतीत का स्वस्थ सामंजस्य प्रस्तुत करते

है। यह इतिहासदृष्टि प्राय· पश्चिम विद्वानो मे न थी। श्री जयचन्द्र विद्यालकार, महापंडित राहुल साकृत्यायन, श्री काशीप्रसाद जायसवाल, श्री हेमचन्द्र जोशी, डा० रघुवीर, डा० सम्पूर्णानन्द और आचार्य नरेन्द्रदेव जैसे मनीषियो एवम् इतिहासज्ञो की पंक्ति मे सत्यकेतु विद्यालकार जी की इतिहासदृष्टि पर विचार करना समीचीन रहेगा। बौद्धकाल का राजनीतिक इतिहास, भारत का इतिहास, अपने देश की कथा, भारत का प्राचीन इतिहास, भारत का राष्ट्रीय आदोलन और नया सविधान, भारत का सास्कृतिक इतिहास आदि ऐतिहासिक ग्रथो के माध्यम से आपने भारतीय इतिहास के उत्थान-पतन की गाथा को सुश्रृखलित किया है।

जैसा प्रारम्भ मे कहा गया है आपका अनुभव वैश्विक है। आपने एशिया और यूरोप के देशो का भ्रमण करके प्रचुर अनुभव प्राप्त किया और इसी आधार पर अपने देश और विश्व के राजनीतिक दर्शन, सविधान और वहा के जनजीवन का परिचय प्रस्तुत किया है। फ्रान्स की राज्यक्रान्ति ने कालचक्र को प्रभावित किया था। आपने इस विषय पर हिन्दी मे उत्कृष्ट ग्रथो का प्रणयन करके जहा राष्ट्रभाषा के भण्डार को समृद्ध किया है, वही भारतीय राष्ट्रीयता के सघर्ष को भी प्रेरणा से अनुप्राणित किया था।

श्री विद्यालकार जी सफल उपन्यासकार भी हैं। आचार्य चाणक्य, पतन और उत्थान, अन्तर्दाह, कपनी का मैनेजिंग डायरेक्टर, होटल मार्डन आदि आपकी औपन्यासिक कृतियाँ उल्लेखनीय हैं। फ्रासीसी साहित्य के आधुनिक रचनाकार मोपासा की कहानियो का अनुवाद भी आपने किया है।

उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के सम्मानित सदस्य तथा अनेक सस्थाओ के पदाधिकारी के रूप मे आपने अनेक जनोपयोगी एव ज्ञानवर्द्धक कार्यों का निष्पादन किया है। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय को सप्राण बनाने मे आपका योगदान चिरस्मरणीय रहेगा।

श्री सत्यकेतु विद्यालकार जी एक जागरूक इतिहासज्ञ, राजनीतिक एव सवैधानिक विषयो के व्याख्याता एव प्रवक्ता के रूप मे समादृत हैं। उनके वैदुष्य का सम्मान करके हम अपने को ही गौरवान्वित करेंगे।

—डा० प्रभात शास्त्री, डी० लिट्
प्रधानमन्त्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

वह इतिहास का दीपक बुझ गया

—डा० जयदेव वेदालंकार

कर्मों की विचित्र गति को आज तक कोई भी मनीषी नही जान सका। विद्वज्जन कहते हैं कर्मगति कभी नहीं टलती। निखिल शास्त्र निष्णात विभिन्न मौलिक ग्रन्थो के निर्माता योगभाष्यकार महर्षि व्यास ने "कर्मगतिश्चित्रा" और 'गहना कर्मणो गति" कहकर इसी चिन्तन शक्ति की ओर इंगित किया है कि कौन सा कर्म किस समय फलोन्मुख हो जाये, इस रहस्य को योगीजन भी नही जान सके। कर्मगति की यह विचित्रता उस समय और भी दुरूह हो गयी जब सोलह मार्च ८६ को यह कर्णभेदी समाचार कर्णशष्कुलि मे प्रविष्ट हुआ कि आर्य जगत के प्रख्यात विद्वान् और अप्रतिम इतिहासकार गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलाधिपति डा० सत्यकेतु विद्यालंकार का कार दुर्घटना मे निधन हो गया।

यह दुःखद वृत्तान्त तीर की गति से समस्त आर्य जगत् मे प्रसृत हुआ। जिसने भी यह सुना, सहसा विश्वास न कर सका, किंतु नियति के क्रूर हाथ क्या किसी के रोकने से रुके हैं ? विस्तीर्ण समाचार मिलने पर ज्ञात हुआ कि डा० सत्यकेतु विद्यालंकार गुरुकुल कागडी के वार्षिक उत्सव की व्यवस्था के लिए परामर्श हेतु डा० शेरसिंह (भूतपूर्व केन्द्रीय राज्य मन्त्री तथा वर्तमान कुलाधिपति, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय) डा० धर्मपाल आर्य (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली) तथा श्री सुभाष विद्यालंकार के साथ सोलह मार्च को प्रात १० बजे दिल्ली से हरिद्वार कार द्वारा आ रहे थे। हरिद्वार पहुचने से पूर्व ही बहादराबाद के निकट कार दुर्घटना-ग्रस्त हो गयी। डा० सत्यकेतु तथा कार ड्राइवर गम्भीर रूप से घायल हुए तथा अस्पताल जाते जाते परलोक वासी हो गए। प्रो० शेरसिंह जी डा० धर्मपाल और श्री सुभाष जी को चोटे आयीं।

दुर्दैव के इस क्रूर खिलवाड पर भला हम क्या टिप्पणी करें। कालचक्र किसी की अनुनय-विनय को नही सुनता। उसके विकराल पंजे दूरस्थ और व्यवहित प्राणियों के भी प्राणो को निर्धारित अवधि के पूर्ण होते ही जकड लेते हैं। डा० सत्यकेतु के इस असामयिक निधन पर एक पुरानी घटना बलात् स्मृति पटल पर आरूढ़ हो गई है। डा० सत्यकेतु वर्ष १९८१ मे असाधारण रूप मे अस्वस्थ हो गए थे।

योग्यतम चिकित्सकों की भी चिकित्सा निष्फल होती जा रही थी। डा० साहब को कुछ ऐसा आभास होने लगा था कि सम्भवतया अब यह भौतिक काया बिछुड़ने ही वाली है। उन्हे मृत्यु का तो भय ही नही था। चिन्ता केवल इस बात की थी कि आर्यसमाज का जो एक दुष्कर काय शेष रह गया था, वह नही हो पायेगा। उन्हें आर्यसमाज का बृहत इतिहास लिखना था जो उन जैसा अप्रतिम वैदुष्य पूर्ण व्यक्ति ही कर सकता था। उन्होने सच्चे हृदय से प्रभु से प्रार्थना की कि हे प्रभु! यदि आप मुझ इस बार स्वस्थ कर दे और जीवन के कुछ वष और बढा दें तो मैं आर्यसमाज का इतिहास लिखूगा। कहते हैं भगवान् तो निमल हृदय मे ही रहते हैं और आराधक की सद्भावना को स्वीकार करते हैं। डाक्टर साहब की प्रार्थना स्वीकृत हो गई वे स्वस्थ हो गए। अपने सकल्प के अनुसार उन्होने "आर्यसमाज का बृहद् इतिहास" लिख कर आर्य जगत् को अनमोल ग्रथ-रत्न प्रदान किया।

तदनन्तर गुरुकुल के अधिकारियो ने डाक्टर साहब से यह आग्रह किया था कि वे गुरुकुल के अठासी वर्ष का इतिहास भी लिखे जिससे गुरुकुल का प्राचीन गौरव जनमानस पर अकित हो। इस प्रार्थना पर डा० सत्यकेतु जी ने गुरुकुल का इतिहास लिखने का मन बना लिया था। किन्तु कर्मगति कुछ और ही थी। वे शायद उस अपनी प्राथना को भूल गए थे। जीवन के ये आठ वर्ष शायद उन्हे आर्य-समाज का इतिहास लिखने के लिए ही मिले थे। आर्यसमाज का यह इतिहास सात-सात सौ पृष्ठो के सात खडो मे निबद्ध है। अन्तिम खड की पूणता होने के कुछ काल पश्चात् ही उन की इहलीला सम्पन्न हुई।

डा० सत्यकेतु विद्यालकार के इस अकाल महाप्रयाण को जानकर ऐसा लगा जैसे नियति के क्रूर झझावात ने किसी जाज्वल्यमान प्रकाश स्तम्भ को उखाडकर फेक दिया हो। मानो कोई विशाल छाया छत्र वात्याचक्र के द्वारा उडा दिया गया हो और लाखो आर्यजनो के सिर पर सकट की कठिन आपद् आ पडी हो।

डाक्टर साहब जब तक जीवित रहे तब तक आर्यसमाज और गुरुकुल कागडी की ही सेवा करते रहे। यद्यपि उनका शास्त्र चिन्तन और ज्ञान का क्षेत्र बहु आयामी था किन्तु उन्होने यश की लिप्सा से दूर रहकर निस्स्वार्थ भाव से आर्य-जगत् की ही तन मन और धन से सेवा की।

डा० सत्यकेतु के जीवन-वृत्त पर यदि दृष्टिपात करे तो हम यह पायेगे कि उनकी समस्त आयु परहित और जनकल्याण मे ही व्यतीत हुई।

उनका जन्म १९ सितम्बर १९०३ को जिला सहारनपुर के अन्तगत आलमपुर ग्राम मे हुआ था। उनकी समस्त शिक्षा दीक्षा गुरुकुल कागडी विश्व-विद्यालय मे स्वामी श्रद्धानन्द के जीवनकाल मे हुई। शिक्षा के क्षेत्र मे स्वामी

श्रद्धानन्द के कार्य को ही आगे बढाते हुए उनका जीवन पूर्ण हुआ। शिक्षा के अनन्तर वे बहुत समय तक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय मे इतिहास के प्राध्यापक रहे। बाद मे वे वही के कुलपति रहे। उनके कुलाधिपतित्व मे गुरुकुल ने पर्याप्त ख्याति अर्जित की।

डाक्टर साहब मूलत एक शिक्षाविद् साहित्यकार थे। साहित्य रचना मे ही उनका अधिक समय व्यतीत हुआ। उनकी लगभग चालीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमे इतिहास राजनीति और उपन्यास सम्मिलित हैं "मौर्य साम्राज्य का इतिहास" नामक ग्रन्थ पर २६ वर्ष की आयु मे १६२६ मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने उन्हे मगलाप्रसाद पारितोषिक से विभूषित किया। इसके अतिरिक्त पडित मोतीलाल नेहरू पुरस्कार और पडित गोविन्द वल्लभ पन्त पुरस्कार भी उनकी अन्यान्य पुस्तको पर दिए गए।

आयु के अन्तिम मास मे उन्होने "आर्यसमाज का बृहत् इतिहास" नामक विपुलकाय ग्रन्थ लिखा जो उनकी परिपक्व मेधा, अन्वेषण प्रतिभा और अदम्य उत्साह का अक्षय कीर्तिस्तम्भ है।

डा० सत्यकेतु विद्यालकार की साहित्य रचना-चातुरी का सर्वाङ्गीण मूल्याकन सम्भव नहीं है। ऐसे मनीषी सरक्षक प्रवर के अभाव से समस्त कुलवासी आश्रय-हीन सा अनुभव करते हैं। भवितव्यता के हाथो विवशता का अनुभव करते हुए हम इतना ही कह सकते हैं कि उनकी क्षति अपूरणीय है। गुरुकुल पत्रिका परिवार की ओर से परम प्रभु से प्रार्थना है कि वह उनको उस सत्यलोक की प्राप्ति कराए जो महान् पुण्यशालियो को प्राप्त होती है।

—डा० जयदेव वेदालकार
सम्पादक "गुरुकुल पत्रिका"
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

भाई डा० सत्यकेतु जी : मानवीय पक्ष

—डा० रघुराज गुप्त

मेरे बाबा जादोराय जिला सहारपुर के मशहूर गाव रायपुर के एक साधारण जमीदार और महाजन थे। सिर्फ उर्दू पढे थे। युवावस्था मे इसी सती के प्रारम्भ मे वे आर्यसमाज के प्रभाव मे आये और हरिद्वार कुंभ मे गुरुकुल कागडी के स्थापना की कोशिश मे लगे महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) से उनका परिचय और प्रेम हुआ। तभी उन्होने सकल्प किया कि वे अपने पुत्र और भाइयो की सतानो को सात साल का होने पर गुरुकुल पढने भेजेंगे। अत उन्होने अपने पुत्र धनराज को १९०७ मे और तीन साल बाद सत्यकेतु और अत्रिदेव को गुरुकुल कागडी मे शिक्षा ग्रहण करने भेजा। तीनो गुरुकुल के स्नातक बने। इनमे सत्यकेतु सर्वाधिक प्रसिद्ध और सम्मानित हुए।

सन् १९०७ १० ई० के बीच एक ग्रामीण वणिक् अग्रवाल जाति के ये तीन बालक पुराने गुरुकुल अरण्य मे स्वामी श्रद्धानन्द जैसे त्यागी, प्रबुद्ध शिक्षक और देशभक्त के सुपुर्द कर दिए गये थे।

इसे विचित्र योगायोग या दैव दुर्विपाक कहा जायेगा कि ये तीनो ग्रामीण वणिक्-सुत जिनमें से किसी के माता-पिता खास पढे-लिखे न थे, अपनी-अपनी कक्षा मे सर्वोच्च और मेधावी छात्र सिद्ध हुए और विशिष्ट विषयों मे इन्होने अपनी-अपनी धाक जमाई। सत्यकेतु जी ने इतिहास मे अत्रिदेव ने आयुर्वेद मे और धनराज जी ने दर्शनशास्त्र मे ख्याति पाई।

सत्यकेतु जी ने स्नातक बनते ही अपने पाडित्य का परिचय दिया। वे शीघ्र ही वहा पर इतिहास के प्राध्यापक नियुक्त हुए। और दो-तीन वर्षों के गंभीर अध्ययन और शोध के बाद उन्होंने कदाचित् पच्चीस साल की उम्र मे ही "मौर्य साम्राज्य का इतिहास" जैसा प्रौढ ग्रन्थ प्रकाशित किया जिसकी भूमिका भारतीय इतिहास के तत्कालीन मूर्धन्य विद्वान् डा० काशीप्रसाद जायसवाल ने लिखी मौर्य साम्राज्य पर सत्यकेतु जी का यह एक अत्यन्त मौलिक और विशद ग्रन्थ मंगलाप्रसाद पारितोषिक से भी पुरस्कृत हुआ। इस प्रकार युवावस्था मे ही सत्य-

केतु जी ने अपनी गम्भीर विद्वत्ता का परिचय दिया।

सत्यकेतु जी मात्र इतिहासकार ही न थे। देश मे हो रहे परिवर्तनो मे भी उनकी गहरी दिलचस्पी थी। इसलिए वे विद्या विलास के अलावा कांग्रेस के राजनैतिक और समाज सेवा के रचनात्मक कार्यों मे भी सक्रिय हुए।

१९३३ के लगभग वे रामकृष्ण डालमिया द्वारा प्रदत्त एक छात्रवृत्ति पर पेरिस विश्वविद्यालय से डी० लिट् का उपाधि के लिए कार्य करने गये और वहा उन्होने "अग्रवाल जाति के इतिहास" पर शोध प्रबन्ध प्रस्तुत कर डी०लिट् की उपाधि प्राप्त की। वही पर फ्रेंच संस्कृत प्रो० लूई रेनू से जो उनके मार्गदर्शक थे, उनका घनिष्ठ सम्पर्क हुआ। प्रोफेसर रेनू सत्यकेतु जी के संस्कृत भाषा एव साहित्य के ज्ञान और धारा प्रवाह संस्कृत संभाषण के उनके अभ्यास से चमत्कृत हुए। पेरिस मे डा० धीरेन्द्र वर्मा और डा० केसकर उनके साथ शोध कर रहे थे।

पेरिस से लौटने के बाद डा० सत्यकेतु की इच्छा किसी विख्यात विश्वविद्यालय मे कार्य करने की थी। परन्तु डाक्टर साहब को कोई उपयुक्त अध्यापन कार्य न मिल सका। उन्होने दिल्ली से एक गम्भीर मासिक पत्रिका 'देश-विदेश" निकालनी प्रारम्भ की, परन्तु साल भर मे ही "देश-विदेश" ठप्प हो गयी।

इसी बीच एक नया विचार उपजा कि क्यो न एक पब्लिक-स्कूल खोला जाये जिसमे गुरुकुल प्रणाली और पाश्चात्य शिक्षा पद्धति का सतुलित समन्वय हो। दिल्ली मे स्कूल स्थापित किया। अपने परिचितो के कुछ बच्चे उसमे दाखिल हुए, कुछ युवा स्नातक अध्यापक के रूप मे आये। स्वय डाक्टर साहब और उनकी पत्नी ने अध्यापन, प्रशासन, परिवेक्षण संभाला। बाद मे डाक्टर साहब इस स्कूल को मसूरी ले गये। कुछ दिन चलकर यह भी विद्यार्थियो और वित्तीय साधनो के अभाव मे बन्द हो गया। फिर गर्दिशो दौरा मे आ गये।

उन्हे पता चला कि मसूरी मे "लक्समाउण्ट" नाम की एक कोठी बिकाऊ है। परन्तु पैसा पास मे न था। अन्त मे मित्रो के सहयोग से डा० साहब लक्समाउण्ट के मालिक बन गये।

महायुद्ध चल रहा था। मसूरी मे गोरे अंग्रेज-अमरीकी सैनिको की आवाजाही जारी रही थी। ऐसे समय डाक्टर साहब ने "लक्समाउण्ट" को एक होटल में परिवर्तित किया। उनकी सहधर्मिणी श्रीमती सुशीला शास्त्री ने उनका हाथ बटाया। दोनो विद्वान् एक इतिहासकार और दूसरी संस्कृत पंडिता—होटल मालिक और मैनेजर बन गये।

सालो के संघर्ष के बाद पहली बार आर्थिक सफलता मिली, समुचित सुरक्षा

और कुछ चैन। साहित्य सृजन का पुराना शौक जागा। डाक्टर साहब ने "यूरोप का इतिहास" नामक पोथा लिख मारा। हिन्दी भाषा मे यह इस विषय की पहली, प्रामाणिक, अद्यतन और रोचक रचना थी। डाक्टर साहब ने स्वय ही "सरस्वती सदन" नाम की एक प्रकाशन सस्था बनाकर उसके माध्यम से उसे प्रकाशित किया। उनका "यूरोप का इतिहास" खूब कामयाब हुआ। इससे उन्हें बड़ा प्रोत्साहन मिला। फिर तो लिखने का अनवरत क्रम चालू हुआ। भारतीय इतिहास, राजनीति के अनेक ग्रन्थ लिखे, जो अत्यन्त प्रसिद्ध और प्रशसनीय हुए।

इसी बीच डाक्टर साहब के मन मे विचार उठा, कि क्यो न गुरुकुल, डाबर, झडू की तरह एक आयुर्वेदिक औषधिया बनाने-बेचने की फार्मेसी खोली जाये। मसूरी मे ही वह शीघ्र खुल गयी। कुछ चली, कुछ न चली और बाद मे ताला पड़ गया।

इधर १९४७ में आजादी आई और नैनीताल में अग्रेजो का होटल 'मैट्रापोल" बिकाऊ था। डाक्टर साहब ने उसका सौदा किया और कुछ साल उसे चलाया।

डाक्टर साहब के हाथ में अब कुछ रुपया आ गया था, पर वे कुछ ऐसा धन्धा करना चाहते थे जिसमे बड़ी और स्थायी कमायी हो। मसूरी मे रहते जमीन जायदाद खरीदने-बेचने का धधा भी किया। उससे भी तबियत भर गयी।

डाक्टर साहब ने चन्दौसी मे एक सरसो के तेल का कारखाना खरीद लिया। पर साल भर बाद वह भी हाथ से निकल गया।

शायद इसी समय डाक्टर साहब को उमग उठी कि 'रजन फिल्म' के नाम से एक फिल्म कम्पनी बनाई जाये जिसकी पहली फिल्म "स्वामी दयानन्द पर बने। आर्यसमाज के दायरे में डाक्टर साहब की पर्याप्त पहुच और प्रसिद्धि थी। अतः उनकी फिल्म कम्पनी के शेयर भी प्राय उन्हीं ने खरीदे। पर पर्याप्त जमा पूँजी और अनुभव के अभाव में डाक्टर साहब की यह "हवाई किला योजना" भी कालकवलित हो गई।

अन्ततोगत्वा डाक्टर साहब ने यह महसूस किया कि कलम ही उनका सबसे कीमती और माकूल हथियार है। इधर उनके द्वारा प्रेरित और स्थापित प्रकाशन गृह "सरस्वती सदन' उनके सुपुत्र के श्रम और लगन से अच्छा चल पड़ा था। उन्हे किसी विश्वस्त प्रकाशन को ढूढने की समस्या न थी। अत वे पूरे जोश से लेखन कार्य में लग गये। मसूरी की स्वच्छ जलवायु और 'लक्समाउन्ट' का आवास इसके लिए आदर्श स्थान था। वे बारह महीने जाड़े-गर्मी वहा रहते थे। गर्मी में टूरिस्ट सीजन में वहां सब प्रकार के लोग लेखक-विद्वान् भी पहुचते, डा० साहब से भी मिलते और वे उनसे घटों गप्प लड़ाते और चाय पीते।

इसी दौरान १९५२ में महापंडित राहुल साकृत्यायन ने एक युवा मारवाड़ी से अपनी किताबो का अनुबन्धन कर उन्हे एक बगला मसूरी मे मुहैय्या कराया और वे भी वहा की हैपी वैली मे आ बसे। मसूरी के पहाड पर हिन्दी के ये दोनो दिग्गज जम गये। वे पहले से एक दूसरे से परिचित थे। पर निरन्तर प्रवास और स्थायी आवास ने इन दोनो को अत्यन्त निकट ला दिया। डा० सत्यकेतु नियमित घूमने के शौकीन थे। मसूरी मध्य स्थित 'लक्समाउण्ड' से राहुल जी का बगला ३ ४ मील होगा। वे रोज वहा तक जाते और गपशप लगाते।

यही पर एकात से ऊबे, शिथिल पर सक्रिय, सृजनशील राहुल को अपनी टाइपिस्ट कुमारी कमला जो उनकी सेवा मे थी, सामाजिक लोकाचार की रक्षा के लिए पत्नी रूप मे ग्रहण का विचार बना। इस पुण्य कार्य मे डा० सत्यकेतु उनके विश्वस्त सहायक बने। एक शुभ दिन डा० सत्यकेतु ने पुरोहित बन महापडित राहुल साकृत्यायन और कुमारी कमला का विवाह सस्कार सम्पन्न कराया। राहुल ने अपनी ' जीवन यात्रा मे इसका विवरण दिया है।

मसूरी प्रवास का छठा दशक कदाचित् डाक्टर साहब के जीवन का सर्वाधिक सृजनात्मक और सुखी काल रहा। इसी बीच १९५२ मे श्रीमती विजय लक्ष्मी पडित क नेतृत्व मे सदभावना मिशन के सदस्य के रूप म आचार्य नरेन्द्रदेव क साथ चीन गये।

वे इस समय भारतीय विश्वविद्यालयो की उच्च कक्षाओ के लिए इतिहास और राजनीति पर सुआधार मौलिक और श्रेष्ठतम पाठ्य-पुस्तके लिख रहे थे, जिन्हे बडी ख्याति और प्रतिष्ठा मिली। पर उन्होने अनुभव किया कि बिना अच्छा उपन्यासकार बने साहित्य मे स्थायी स्थान प्राप्त नही किया जा सकता। अत उन्होने सब से पहले एक ऐतिहासिक उपन्यास मे हाथ लगाया। वह था "आचार्य चाणक्य"। मौर्यकालीन इतिहास के वे जाने-माने अधिकारी विद्वान् थे। कौटिल्य के अर्थशास्त्र की बारीकिया उन्हे हस्तामलक थी। उस समय की भाषा और सस्कृति मे वे डुबकिया लगा चुके थे। अत चाणक्य पर उनका यह उपन्यास बहुत सफल और चर्चित हुआ, पर वे इससे सतुष्ट न हुए। उन्हे समकालीन आधुनिक जीवन की पृष्ठभूमि मे कुछ लिखने की ललक थी। अत उन्होने अपने प्रत्यक्ष जीवन, अनुभव और अवलोकन पर आधारित 'अन्तर्दाह' उपन्यास लिखा।

डाक्टर साहब को राजनीति मे गहरी दिलचस्पी थी। वैसे तो मसूरी प्रवास मे कदाचित् राहुल जी के सान्निध्य के प्रभाव में उनका झुकाव वामपंथी साम्यवादी विचारधारा की ओर हुआ, पर हिन्दी को लेकर राहुल जी की भाँति उनका भी कम्युनिस्टो से प्रबल मतभेद था। वे भारतीय संस्कृति के ज्ञाता और

मौलिकता

अनुरागी थे।

१६५७ मे जनसघ के टिकट पर वे रामपुर से लोकसभा के लिए चुनाव मे खड़े हुए और हारे। कुछ साल बाद १६६५ के लगभग उन्हे पुन विधान परिषद् मे घुसन की इच्छा बलवती हुई और वे बरेली क्षेत्र से स्नातको के लिए सुरक्षित सीट पर काग्रेसी उम्मीदवार से भिड गये। उन्हे एक मत ज्यादा मिला था, फिर काग्रेसी उम्मीदवार सफल घोषित कर दिया गया। डाक्टर साहब ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय मे इलेक्शन पिटीशन किया। वहा से हारकर सुप्रीम कोर्ट गये, और वहा से जीतकर वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के सदस्य बने।

आठवे दशक मे उन्होने एक स्थायी महत्व का स्मरणीय कार्य किया, वह था सात खण्डो मे "**आर्यसमाज का बृहत् इतिहास**" जो उन्होने, अपने समकक्ष शिष्य और परम विद्वान् प्रोफेसर हरिदत्त वेदालकार तथा अन्य वैदिक विद्वानो क सहयोग से पूरा किया।

अपनी शिक्षास्थली गुरुकुल विश्वविद्यालय से डाक्टर साहब को विशेष लगाव था। स्वतन्त्रताप्राप्ति के पिछले चार दशको मे इस राष्ट्रीय शिक्षा सस्थान, जिसे कभी गोपाल कृष्ण गोखले, महात्मा गाधी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सी०एफ० ऐड्यूज जैसे महानुभावो ने सराहा था, की बडी दुर्दशा हुई। यह अग्रणी विश्व-विद्यालय दलगत राजनीति, विनिहित स्वार्थों और अध्यापको और विद्यार्थियो की राजनीति का अड्डा बन गया। इसकी विपुल भूमि और सम्पत्ति विशेष आकर्षण रह गयी। इस काल मे अर्धशिक्षित, शराबी, पिस्तौलधारी, स्वार्थी तत्त्वो ने इस शिक्षण सस्थान को नष्ट करने मे कोई कसर नही छोडी। ऐसे समय मे डा० सत्यकेतु को गुरुकुल विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया गया।

इससे आशा बधी कि कदाचित् गुरुकुल विश्वविद्यालय का पुनरुद्धार हो सकेगा। डा० सत्यकेतु स्थापित स्वार्थों के सामने सफल न हुए। पिछले पन्द्रह सालो मे विश्वविद्यालय प्रबन्ध को हथियाने के लिए खीचतान चलती रही। इसे शिक्षा का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि मार्च १६८६ मे डाक्टर सत्यकेतु गुरुकुल विश्व-विद्यालय के कार्य सचालन के सिलसिले मे प्रबन्धकारिणी के कुछ सदस्यो के साथ दिल्ली से गुरुकुल आते हुए मोटर दुर्घटनाग्रस्त हुए। गुरुकुल को सुधारने की मुहिम मे ही उन्हे अपने प्राणो की आहुति देनी पडी।

जीवन के अन्तिम क्षण मे यू तो डाक्टर सत्यकेतु जी को सरस्वती और लक्ष्मी दोनो का ही वरदहस्त मिला यश और धन भी। पर जिस कारण मैं विशेष रूप से याद करता हूँ, वह थी उनकी मानवीयता, अनन्त, जिज्ञासा ज्ञानपिपासा, साहस, सघर्षमय जीवन और जिदादिली।

—डा० रघुराज गुप्त
ए-२, बालदा कालनी, लखनऊ-७

प्रेरक व्यक्तित्व और कृतित्व के धनी डा० सत्यकेतु विद्यालंकार

—डा० महेश विद्यालंकार

'जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु' जो संसार में आया है वह एक दिन निश्चय ही संसार से जायेगा। इस अटल नियम में सभी आबद्ध हैं। अधिकांश लोग जगत् में आए, खाया पीया, भोग विलास किया, धन-वैभव, सुख-साधन, जोड़ा और चल दिए। न कोई आने का प्रयोजन, न जाने का ध्येय, इसी क्रम में संसार भटक रहा है। कुछ काल के बाद यह बोध भी समाप्त हो जाता है कि कौन, कहां, कब आया और गया था। समय की तेज धारा में सब कुछ विलीन हो जाता है।

कुछ व्यक्ति ऐसे कालजयी इतिहास पुरुष हो जाते हैं, जो अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से ऐसे कर्म-चिह्न, प्रेरणा एवं आदर्श छोड़ जाते हैं। जिससे राष्ट्र, समाज, परिवार, व्यक्ति, संगठन एवं संस्थाएं समय समय पर पथ-प्रदर्शन लेते हैं। जिनके तप-त्याग-तपस्या, बलिदान तथा सेवा की गाथाएं राष्ट्र की धरोहर बन जाती हैं। जो व्यक्ति न रहकर एक विचार व प्रेरणा बन जाते हैं। समष्टि का रूप धारण कर लेते हैं। जिनकी तप एवं सेवा का कृतज्ञ राष्ट्र जन्म-दिन, शताब्दी, प्रेरणा दिवस आदि के रूप में स्मरण करता है। जिनके महत्त्व और योगदान पर लोग, पुस्तकें, स्मारिकाएं, शोध-प्रबन्ध, लेख आदि लिखते और पढ़ते हैं। ऐसे ही स्वनाम धन्य डा० सत्यकेतु का व्यक्तित्व है, कृतित्व है। जो इतिहास, संस्कृति तथा आर्यसमाज के श्रद्धेय, स्मरणीय व गौरवास्पद रहेंगे। जिन्होंने अपना जीवन कृषक कुटीर से आरम्भ कर राष्ट्र के महान् सपूतों, सेवकों एवं लेखकों में अग्रगण्य बनाया। यह उनके सतत पुरुषार्थ, योग्यता एवं लग्न का परिचायक है। वे गुरुकुल के ख्याति प्राप्त सुयोग्य स्नातक थे। उन्होंने अपनी लेखनी और विद्वत्ता से गुरुकुल कांगड़ी को यश और सम्मान दिलाया। गुरुकुलत्व के प्रति लोगों के मन में श्रद्धा भाव जागृत कराया। यदि किसी के सामने गुरुकुल के प्रसिद्ध व्यक्ति का नाम प्रस्तुत करना चाहे तो उस पंक्ति में डा० सत्यकेतु जी का प्रथम स्थान होगा। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व में प्राचीनता और नवीनता का भौतिकता और आध्या-

रिकता का अद्भुत समन्वय था। वे प्राचीन इतिहास, संस्कृति, दर्शन आदि को आज के जीवन जगत् तथा लोक व्यवहार से जोड़ने के पक्षधर थे।

मेरी प्रथम भेंट डा० सत्यकेतु जी से १९७१ में मसूरी में हुई। गुरुकुल में उनके नाम की चर्चा सुनी थी। एकाकी भ्रमणार्थ मसूरी जाना हुआ। आर्यसमाज मन्दिर में ठहरा। एक दिन मिलने उनकी कोठी पर पहुँच गया। बड़े सहज-सरल, स्वाभाविक एवं आत्मीयता से काफी देर तक बातचीत, गुरुकुल का हाल-चाल पूछते रहे। चलते समय कहा, 'मैं नित्य सायंकाल कम्पनी बाग की ओर लम्बी सैर पर जाता हूँ। आप जब तक इधर ठहरे हैं, आ जाया करें, बातचीत में अच्छा समय मिलेगा। मैं नित्य उनके साथ जब तक वहां रहा सैर पर जाता रहा। उनसे संस्कृति, इतिहास, आर्यसमाज, भारतीय-चिन्तन आदि पर जिज्ञासुभाव से पूछता था। वे इतने सुन्दर, सरल तर्कपूर्ण उत्तर रखते थे, जो सहज ही बुद्धिग्राह्य हो जाते थे।

सादा जीवन उच्च विचार उनके व्यक्तित्व में पूरी तरह से उतरा था। वे खान-पान, रहन सहन, बोल-चाल, व्यवहार आदि में बड़े सरल, सौम्य रहे। यद्यपि विदेशों में रहे, किन्तु अपनी भारतीय अस्मिता को नहीं छोड़ा। मूल वैदिक जीवनादर्शों और संस्कारों को जीवन से अलग नहीं होने दिया। सर्वथा दुर्गुणों और दुर्व्यसनों से दूर रहे। ज्ञान, योग्यता, सम्मान आदि की दृष्टि से इतने बड़े होने पर भी इतना कोई नम्र, विनीत हो सकता है। इसके वे प्रत्यक्ष प्रमाण थे। अहंकार आडम्बर व प्रदर्शन से अपने को पृथक् रखा। गुरुकुल कांगड़ी के उपकुलपति व कुलाधिपति रहते हुए कभी, कोई किसी समय उनसे मिल, सकता था। यथासंभव सभी की सहायता, सहयोग की भावना उनमें बलवती रही। उनके व्यक्तित्व की एक उदात्त-भावना यह भी रही, कि वे किसी को अपने से छोटा नहीं होने देते थे। साधारण व्यक्ति भी बात करता तो उसे यह महसूस नहीं होने देते थे कि वह किसी दृष्टि से छोटा है। ऐसा भाव बहुत कम व्यक्तियों में मिलता है।

डा० सत्यकेतु जी ने कृतित्व के माध्यम से जो विचार चिन्तन, दृष्टि, मूल्य आदि दिए हैं। वे चिरकाल तक स्मरणीय, पठनीय और वन्दनीय रहेंगे। उन्होंने भारतीय संस्कृति, इतिहास, राजनीति, समाज शास्त्र आदि पर अधिकार पूर्वक, गवेषणापूर्ण और मौलिकता भरा साहित्य लिखा। जो भी लिखा अद्भुत, अनूठा, एवम् अनुपम है। वे लेखन-कला के मर्मज्ञ एवं सिद्धहस्त थे। अपनी प्रस्तुति में सरलता, रोचकता व प्रवाहमयता का आद्यन्त ध्यान रखते थे। इसी कारण उनके आरम्भिक उपन्यास बहुचर्चित हुए। आर्यसमाज का इतिहास उनकी अन्तिम महत्वपूर्ण कृति है। वह ऐसा मानक खोजपूर्ण तथा श्रमसाध्य योगदान है, जो चिर स्मरणीय रहेगा। यद्यपि इतिहास लेखन शुष्क, दुरूह, जटिल व कष्टपूर्ण कार्य होता है।

डा० सत्यकेतु जी ने इस कार्य को बड़ा सरल-सुबोध शैली मे आम आदमी तक पहुंचा दिया। यह उल्लेखनीय उपलब्धि है। जिसे आने वाली पीढ़िया श्रद्धावनत होकर स्मरण करेगी।

ऐसे महान् एव प्रेरक व्यक्तित्व और कृतित्व के धनी डा० सत्यकेतु विद्यालकार इतिहास, गुरुकुल और आर्यसमाज के लिए चिरस्मरणीय रहेंगे। उनका योगदान राष्ट्र के लिए वन्दनीय है। ऐसे प्रेरणापूर्ण पुरुष के लिए श्रद्धा, आदर व सम्मान के साथ अनेकश स्मरण एव श्रद्धाजलि।

—डा० महेश विद्यालकार
प्रवक्ता, मोतीलाल नेहरू कालेज, नई दिल्ली

जितनी सत्यनिष्ठ और सुधारक सस्था आर्य-समाज है, उतनी और कोई नही।

* * *

सस्थाओ मे अब भी इतना अन्धविश्वास भरा पडा है, जिस मे देश का असख्य धन एवम् अमूल्य समय बुरी तरह बरबाद हो रहा है।

स्व० डा० सत्यकेतु के प्रति मेरे श्रद्धासुमन

—डा० रामनाथ वेदालंकार

डा० सत्यकेतु विद्यालकार के व्यक्तित्व का मूल्याकन कई दृष्टियो से किया जा सकता है । प्रथम, वे एक सुयोग्य शिक्षक थे । अनेक वर्षों तक कागडी विश्वविद्यालय मे इतिहास के शिक्षक रहे । वे कक्षा मे पढाते हुए केवल पाठ्यक्रम तक ही सीमित नही रहते थे किन्तु बाह्य विविध विषयो का ज्ञान भी करा देते थे । छात्र विभिन्न सामयिक विषयो पर अपनी सभाओ मे उनके व्याख्यान भी कराते थे। वाक्प्रतियोगिताओं एव लेखन प्रतियोगिताओ के लिए वे छात्रो को विषय सामग्री भी देते थे। उनके निर्देशन में महाविद्यालय के छात्र कई बार मॉक पार्लियामेण्ट भी करते थे।

उनकी साहित्यिक गतिविधि का क्षेत्र बहुत व्यापक था। सस्कृत काव्यशास्त्रियो ने अतिशयोक्ति अलकार का एक भेद माना है, जिसमे कारण से पूर्व ही कार्योत्पत्ति का वर्णन किया जाता है। डा० सत्यकेतु के ग्रन्थ इतनी शीघ्रता से तैयार होते थे कि उक्त अलकार का आश्रय लेकर हम कह सकते हैं कि वे ग्रन्थ की योजना बाद मे बनाते थे, ग्रन्थ पहले तैयार हो जाते थे। इतिहास, राजनीतिशास्त्र के तो वे धुरन्धर विद्वान् थे ही, अत इन विषयों पर उनकी लेखनी ने अनेक ग्रन्थ-रत्न प्रसूत किये, इसमे कोई आश्चर्य की बात नही समझी जायेगी। किन्तु उन्होने आचार्य चाणक्य आदि कई उत्कृष्ट कोटि के उपन्यास भी लिखे, जिससे इस दिशा मे भी उनकी कीर्ति को चार चाद लगे।

अपनी आयु के अन्तिम दशक मे उन्होने आर्यसमाज का साहित्य लिखने की योजना बनायी और बृहदाकार सात खण्डो मे 'आर्यसमाज का इतिहास' लिखकर एव प्रकाशित कर अभूतपूर्व कार्य कर दिखाया। इस महान् ग्रन्थ को आर्यसमाज का 'इन्साइक्लोपिडिया' कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। गुरुकुल की शिष्ट परिषद् के आग्रह पर उन्होने गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय का बृहद् इतिहास लिखना भी स्वीकार कर लिया था, परन्तु हमारा दुर्भाग्य है कि उसके लेखन से पूर्व ही वे

कालकवलित हो गये ।

जब वे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति बने, तब मैं संस्कृत-विभाग का अध्यक्ष होने के साथ-साथ आचार्य एवं उपकुलपति का कार्य कर रहा था। मुझ पर उनका इतना विश्वास रहा कि बहुधा कुलपति का भी सब कार्य मुझ पर छोड़कर निश्चिन्तता के साथ वे गुरुकुल की बाह्य गतिविधियों के लिए प्राय बाहर चले जाते थे। उनका कुलपतित्व कई दृष्टियों से गुरुकुल के जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण रहा।

गुरुकुल विश्वविद्यालय में तो विभिन्न विषयों पर उनके भाषण होते ही थे, अन्य विश्वविद्यालय भी उन्हें भाषणों के लिए निमन्त्रित करते थे। शान्तिनिकेतन, हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी आदि में ससम्मान उन्हें आमन्त्रित करके उनके अनेक व्याख्यान कराये जाते रहे। जब उन्होंने महाप्रयाण किया तब वे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति थे। शिक्षा के विषय में उनके कुछ महत्त्वपूर्ण विचार थे, जो प्राचीन एवं पाश्चात्य साहित्य के अध्ययन और देश विदेश के विभिन्न शिक्षणालयों के अवलोकन से परिपक्व हुए थे। उन्हें वे गुरुकुल में क्रियान्वित करना चाहते थे।

मैं और वे एक-दूसरे के प्रशंसक रहे। वैदिक-साहित्य के लेखन में मुझे उन से परामर्श एवं प्रोत्साहन प्राप्त होता रहता था। जब भी गुरुकुल आते थे, तब सपत्नीक मेरे पास आना नहीं भूलते थे। मुझे उनका अभाव कई दृष्टियों से अनुभव होता है। वे मेरे बड़े भाई थे, गुरु के तुल्य थे, दिशा-निर्देशक थे, प्रोत्साहक थे और अब उनके आर्य सामाजिक साहित्य के लेखन के क्षेत्र में अवतीर्ण हो जाने पर तो हम दोनों एक ही मार्ग के सहयात्री थे। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला जी का भी मेरे प्रति सदा स्नेह भाव रहा है। डा० सत्यकेतु का अभाव जहाँ इतिहास, राजनीति, काव्य, आर्यसमाज एवं गुरुकुल के लिए एक महती क्षति है, वहां मैं व्यक्तिगत रूप से भी उनके अभाव को दु खद रूप से अनुभव करता हूं। उन्हें मेरे श्रद्धा-सुमन अर्पित हैं।

—डा० रामनाथ वेदालंकार

इतिहासवेत्ता सत्यकेतु जी

—क्षेमचन्द्र सुमन

यह हमारे लिए बड़े सन्ताप का विषय है कि हमारे बीच प्रख्यात इतिहासवेत्ता श्री सत्यकेतु विद्यालंकार नहीं रहे। सत्यकेतु जी अपने छात्र-जीवन से ही अत्यन्त प्रतिभाशाली थे। यही कारण है कि गुरुकुल से स्नातक होते ही उन्होंने थोड़े से ही समय में अपनी योग्यता तथा अध्ययनशीलता से हिन्दी-साहित्य में अत्यन्त उल्लेखनीय स्थान बना लिया था।

उन्होंने जहां पेरिस विश्वविद्यालय से 'अग्रवाल जाति का इतिहास' नामक अपने शोधपूर्ण ग्रंथ पर डी० लिट् की सम्मानोपाधि प्राप्त की थी वहीं उन्हें उनकी 'मौर्य साम्राज्य का इतिहास' नामक महत्त्वपूर्ण कृति पर अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलन ने अपना सर्वोच्च 'मंगला प्रसाद' पारितोषिक प्रदान किया था।

गुरुकुल कांगड़ी में इतिहास के प्राध्यापक के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने इतिहास-क्षेत्र में स्व० चन्द्रगुप्त वेदालंकार तथा हरिदत्त वेदालंकार जैसे गम्भीर इतिहास-गवेषक प्रदान करने के साथ-साथ अन्य बहुत से शोध-ग्रंथ भी लिखे थे। गुरुकुल की सेवा से मुक्ति प्राप्त करने के उपरान्त आपने अपने साहित्यिक परिवेश को और भी व्यापक बनाया तथा कई महत्त्वपूर्ण उपन्यास एवं राजनीति-शास्त्र के गम्भीर ग्रन्थ लिखकर हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाने में अपना महत्त्वपूर्ण योग-दान दिया।

उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में भी जो कार्य किया था उससे उनकी संकल्पप्रवणता का परिचय मिलता है। उन्होंने दिल्ली में एक ऐसे 'पब्लिक स्कूल' की स्थापना की थी जिसमें बालकों को आर्य संस्कृति के आधार पर आधुनिक शिक्षा दी जाती थी। दुर्भाग्यवश जब उन्हें इस शिक्षा में सफलता नहीं मिली तो उन्होंने मसूरी जाकर एक 'होटल' भी चलाया। इसके मनोरंजक संस्मरण उन्होंने अपनी 'मैंने होटल चलाया' नामक कृति में अंकित किए हैं। वहां पर रहते हुए ही आपने 'सरस्वती सदन' नामक संस्था की स्थापना करके लेखक तथा प्रकाशन का कार्य किया। यह प्रकाशन अब भी उनके पुत्र विश्वरंजन तथा पुत्रवधू द्वारा भली-भांति

सञ्चालित हो रहा है उनकी अनेक पुस्तके उच्च कक्षाओ के पाठ्यक्रमो मे भी निर्धारित हैं।

अपने जीवन के अन्तिम दो दशको मे वे कई वर्ष तक 'गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय' के कुलपति रहे वहा अन्तिम दिनो वे उसके-'परिद्रष्टा' थे और इसी प्रसग मे गुरुकुल जाते हुए उनका एक सडक दुर्घटना मे आकस्मिक अन्त हो गया। उन्होने अपनी साहित्य-यात्रा में 'आर्यसमाज' के ऋण को उतारने की दिशा मे जो महत्त्वपूर्ण कार्य किया, उसी के परिणाम स्वरूप वे 'आर्यसमाज का इतिहास' के सात खड प्रकाशित कर सके। उनकी यह कृति आर्यसमाज के गौरवपूर्ण अतीत और उसके उज्ज्वल उत्कर्ष की स्वर्ण गाथा है।

यह दुर्भाग्य का विषय है कि विधाता ने उन्हे हम से इस प्रकार छीन लिया। यदि वे जीवित रहते तो अभी हिन्दी साहित्य को अपनी लेखनी से और भी महत्त्वपूर्ण अवदान देते फिर भी उन्होने जितना भी और जो कुछ भी लिखा है वह हमारे साहित्य और सस्कृति की अद्वितीय धरोहर है। मैं उनकी जीवन्त स्मृति को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करता हूँ।

—क्षेमचन्द्र 'सुमन'
अजय निवास, बी-१० दिलशाद कालोनी,
शाहदरा दिल्ली-११००३२

मूर्खों के पास युक्तिया नही होती, युक्तियो का उत्तर वे हठ से देते हैं।

* * *

आत्मा की हत्या करके अगर स्वर्ग भी मिले तो वह नरक है।

स्वर्गीय डा० सत्यकेतु विद्यालंकार

—कमला सांकृत्यायन

श्रद्धेय डाक्टर सत्यकेतु विद्यालंकार से मेरा परिचय महापंडित राहुल सांकृत्यायन जी के माध्यम से हुआ था। डाक्टर साहब तथा महापंडित जी की भेंट १९४८-४९ ई० मे दिल्ली मे हुई थी। उसके बाद दोनो के बीच पत्र-व्यवहार चल रहा था। राहुल जी उन दिनो किसी पहाड़ी स्थान मे एक स्थायी निवास बनाने की सोच रहे थे। इस सबंध मे उन्होने डा० सत्यकेतु जी को पत्र लिखा जो उन दिनो नैनीताल मे एक विशाल 'होटल मेट्रोपोल' के सचालक थे। डाक्टर साहब के निमन्त्रण पर राहुल जी नैनीताल गये, मैं उनके साथ थी।

उसी वर्ष गर्मियो मे नैनीताल छोड़कर डाक्टर साहब सपरिवार मसूरी चले गए। उनके चले जाने के बाद फिर महापंडित जी का नैनीताल मे मन नहीं लगा। दोनो की रुचिया एक समान थी, दोनो समानधर्मा एव दोनो ही अपने-अपने विषय के पडित। दोनो ही एक दूसरे के प्रशसक भी रहे। मसूरी मे डाक्टर साहब का पहले से ही निवास रहा था। वहा भी उनका 'होटल लक्समाउट' था जो होटल की बजाय विद्वानो साहित्यकारो का तीर्थ एव मिलन-स्थल रहा। पहाड़ के अति सुन्दर स्थान पर उनका यह 'लक्समाउट' भवन अवस्थित था, जहा से दूनघाटी का सुन्दर दृश्य दिखाई देता था। रात्रि समय दीपमालिकाओ से सुसज्जित दूनघाटी कोई नई-नवेली साज-शृगार से युक्त दुल्हन-सी लगती थी। इतने सुन्दर स्थान मे रहकर डाक्टर साहब जैसे साहित्यकार को प्रकृति की ओर से साहित्य-सृजन की प्रेरणा क्यो न मिलती फलस्वरूप व्यावसायिक कार्यों की देखभाल सुशीला बहन जी करती और स्वय डाक्टर साहब साहित्य एव इतिहास-लेखन मे लगे रहते थे।

हम लोग नैनीताल मे सिर्फ चार महीने रहे। अब महापंडित जी का मन मसूरी की ओर लग गया था। डाक्टर साहब को पत्र लिखकर उन्होने यह इच्छा प्रकट कर दी कि वे भी मसूरी आना चाहते हैं, इसलिए एक मकान ठीक कर दे। डाक्टर साहब ने सचमुच ही शहर से दूर प्राकृतिक सुषमा से सुशोभित सुरम्य स्थली मे एक मकान ले दिया था जहा हम लोग १९५० के जुलाई महीने में आ

आए। मकान का नाम 'हर्न क्लिफ' था जो मसूरी के 'हैप्पी वेली' इलाके में है। इस प्रकार डाक्टर साहब के सौहार्द पूर्ण व्यवहार के कारण महापंडित जी और मैं मसूरी की ओर खिचे चले आए और १० वर्ष तक एक परिवार के सदस्य जैसे बनकर रहे।

हमारे विवाह का अनुष्ठान भी डाक्टर साहब के पौरोहित्य मे ही सम्पन्न हुआ था। दोनो परिवार एक-दूसरे के सुख-दु ख हर्ष-विषाद के साथी रहे। राहुल जी के साथ मैं भी प्राय उनके घर आती-जाती थी। दोनो विद्वान् मिलने पर आपस में साहित्य, इतिहास एव राजनीति की बाते करते थे और मैं श्रोता बनकर उन लोगो की विद्वत्ता पूर्ण बाते सुना करती। डाक्टर साहब वैदिक शास्त्र एवम् इतिहास के धुरन्धर विद्वान् थे, इस कारण राहुल जी उनका बडा सम्मान करते थे। जब भी वे शहर आते, 'लक्समाउट' जाकर डाक्टर साहब एव सुशीला बहन जी से अवश्य मिलते थे। वहा वे उन लोगो के साथ लम्बे समय तक बैठ कर अनेक विषयो मे विचार विमर्श किया करते थे। बहन सुशीला जी ने मुझे गृहस्थी चलाने की शिक्षा दी थी।

डाक्टर साहब और बहन जी सुबह-शाम दूर दूर तक टहलने जाते थे। प्राय हर रविवार को वे अपने बच्चो को लेकर 'हर्न क्लिफ' आया करते और दिन भर दोनो लेखक अपनी अपनी बातो में व्यस्त रहते, क्या कुछ लिखे जा रहे हैं, इस बारे में चर्चा करते थे। कितना सौहार्दपूर्ण सबध था उन दोनो महानुभावो के बीच। आज इस तरह का सबध कहाँ देखने को मिलता है ? हमने तो देखा है—आज के साहित्यकारो में बडप्पन की भावना तो है ही, साथ-साथ दूसरो की आलोचना करने में भी वे अपना गौरव समझते हैं। परतु मैंने डाक्टर सत्यकेतु जी मे ऐसी कोई बात नहीं देखी। वे किसी की छोटी से छोटी सफलता पर भी प्रसन्न हो जाते थे। जब मैं एक के बाद एक परीक्षा मे उत्तीर्ण होती गयी तो राहुल जी के साथ-साथ डाक्टर साहब भी अतीव प्रसन्न हो जाते थे और मुझे आगे बढने के लिए बहुत प्रोत्साहन दिया करते थे। उनका घर मेरे लिए मायके के समान था।

यद्यपि उनका घर कहने को 'होटल लक्समाउट' था परन्तु वहा सीजन के समय में साहित्यकारो का जमघट लगा रहता था। लक्समाउट' मे बडे-बडे कमरे थे। गर्मियो मे भारत के हर कोने से लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् मसूरी आया करते और लक्समाउट मैं प्राय विद्वानो का सम्मेलन हुआ करता था। मैंने अपने मसूरी-प्रवास मे ही लक्समाउट में आयोजित कई लेखक-गोष्ठियों, कवि-सम्मेलनो तथा महिला लेखिकाओ, शिक्षिकाओं की सभा सगोष्ठी को नजदीक से देखा था। इन आयोजनो मे महापंडित जी को तो उपस्थित रहना ही पडता था। डाक्टर साहब के घर में

जिन बड़े-बड़े लोगो का आगमन होता था, उनमे से डाक्टर सुधीताराम जी, पंडित अमरनाथ विद्यालंकार जी, पंडित अवनीन्द्रनाथ विद्यालंकार जी, श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार जी, श्री सत्यव्रत वेदालंकार जी, पण्डित किशोरीदास वाजपेयी जी, श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति जी,श्री विष्णु प्रभाकर जी से तो मैं अच्छी तरह से परिचित रही। इसके अतिरिक्त सुशिक्षिता, सुसंस्कृता एवं उच्च घराने की अनेक महिलाओं के साथ भी लक्समाउंट मे ही मेरी भेंट हुई थी। कहने का तात्पर्य यह कि डाक्टर साहब एवं बहिन सुशीला जी प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक परम्परा का पूर्णत पालन करते आ रहे थे। समय-समय पर विद्वद्मण्डली को एक ही स्थान मे एकत्र करके वे लोग इतिहास तथा साहित्य एवं राजनीति के प्रबुद्ध पाठको का भी विद्वानो से निकट परिचय कराने का काम करते थे। 'लक्समाउंट' मे ही हम ने हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार श्री उपेन्द्रनाथ अश्क जी से भेंट की थी। ऐसे कितने ही महानुभाव लक्समाउंट मे मिले थे जिनका नाम मुझे याद नही रहा।

डाक्टर साहब का समय अत्यन्त मूल्यवान् रहा। उनका भी एक-एक मिनट का हिसाब रहता था, जैसा कि महापंडित राहुल जी का रहता। मसूरी में हमारे देखते-देखते ही डाक्टर साहब ने इतिहास सम्बन्धी अनेक ग्रंथ लिखे। कई ऐतिहासिक उपन्यास भी लिखे, उनमे से एक बहुचर्चित उपन्यास "आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य" है। हर्ष की बात तो यह है कि उनकी लगभग सभी कृतियो को उच्च कोटि के पुरस्कार मिले हैं। ऐसे साहित्यकार इतिहासकार हिन्दी मे शायद ही कोई दूसरे होंगे जिन को यह गौरव प्राप्त हुआ है।

डाक्टर साहब विनोदी स्वभाव के भी थे। उनका यह स्वरूप तब दिखाई देता था जब हम लोग किसी दावत मे गए होते। राहुल जी तो विनोदी थे ही। दोनो महानुभावो के बीच परिष्कृत परिहास होते थे, उनसे हम लोग भी बहुत आनन्द लेते थे। डाक्टर साहब को मैंने कभी अशान्त या विक्षुब्ध मनस्थिति मे नही देखा। वे बड़े शान्त स्वभाव के थे और इसी वजह से उनके घर में शान्ति का वातावरण सदैव बना रहा। उन्हे पत्नी भी अत्यन्त शान्तिप्रिया, सुसंस्कृता एवं मधुरभाषिणी मिली जो सही अर्थों मे पति की सहगामिनी रही। दोनो ही एक दूसरे का आदर करने वाले और दोनो ही बड़े उच्च एवं सुलझे विचार वाले। ऐसे दम्पती तो मैंने बहुत कम देखे हैं।

हमारे मसूरी प्रवास के समय ही डाक्टर साहब अन्य टोली के साथ चीन-भ्रमण पर गए थे। यह शायद १९५६-५७ की बात होगी। वे वहां कई महीनो तक रहे थे। स्वदेश लौटने पर उनका भव्य स्वागत हुआ, समारोह हुए। चीन-भ्रमण सम्बन्धी डाक्टर साहब के अनेक स्थानो में अनेक भाषण भी हुए। राहुल जी और मैंने उन्हीं के मुह से नवीन जनवादी चीन गणराज्य के बारे मे विवरण सुने।

"इतिहासवेत्ता डाक्टर साहब के श्रीमुख से चीन राष्ट्र के ऐतिहासिक विवरण सुनकर हमें बहुत ज्ञान की बातें मालूम हुई। डाक्टर साहब की शिक्षा-दीक्षा गुरुकुल मे हुई, फिर वे यूरोप में भी रहे। इसी कारण उनके विचारो मे रूढिवादिता, आडम्बर एव पोंगापथीपन का कोई चिह्न नही था। वे आधुनिक विचारो को प्रश्रय देते थे, फिर भी भारत की प्राचीन सस्कृति, दार्शनिक विचार, ऐतिहासिक परम्पराओं तथा गौरवशाली मर्यादाओ को प्रमुख स्थान देते थे। इसीलिए यूरोप मे रहकर भी वे नहीं बदले उनका हृदय सदैव भारतीय ही रहा। उनके बच्चो पर भी माता-पिता की इन सास्कृतिक मान्यताओ एव गरिमा का प्रभाव पडा है।

डाक्टर साहब से मेरी आखिरी भेट १६८७ के फरवरी मे दिल्ली मे हुई, जब मैं अपनी बेटी के पास गई हुई थी। मैं उस समय कई बार उनके निवासस्थान पर गयी। डाक्टर साहब अपनी वृद्धावस्था मे भी बडे कर्मठ एव प्रसन्नचित्त दिखाई दिए। बातो ही बातो मे मुझे पता चला कि उनके द्वारा लिखित "आर्यसमाज का इतिहास' ग्रन्थमाला क सभी खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। डाक्टर साहब के जीवन की यह महत्त्वपूर्ण एवम् अमूल्य कृति प्रमाणित हुई है। इन्ही मुलाकातो के दौरान एक दिन मेरी बेटी जया और मुझ को अपने सामने बिठाकर उन्होने भारत के महान् क्रातिकारी सरदार भगतसिंह सुखदेव, चन्द्रशेखर आजाद, यशपाल जी आदि के बारे मे सुनाया। उस क्राति के दौर मे डाक्टर साहब भी किसी न किसी रूप मे सबधित रहे थे, इतिहास की यह जानकारी हमे प्रथम बार उन्होने ही दी थी। उस क्रातिकारी ऐतिहासिक युग को उन्होने बातो ही बाता मे पूरी तरह से हमे सुनाते हुए सजीव कर दिया था। तभी हमे लगा था कि डाक्टर साहब केवल इतिहास-लेखक ही नही बल्कि ऐतिहासिक ज्ञान के पूण विश्वकोश है। जीवन के शेष वर्षो मे वे गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के सम्मानित पद पर प्रतिष्ठित थे।

मेरी बेटी जया ने बचपन मे ही अपने पिता को खो दिया था। वह डाक्टर साहब मे अपने पिता के प्रतिरूप को देखती थी, इसलिए उसके मन मे भी डाक्टर साहब के प्रति अगाध श्रद्धा रही। उन्होने अपनी पुत्री ऊषा जी के लिए एक सास्कृतिक पत्रिका "गरिमा" का पहला अक प्रकाशित करवाया जिसकी सम्पादिका ऊषा जी के साथ-साथ मेरी बेटी जया को भी सह-सम्पादिका का स्थान प्रदान किया था। इतना ही नही जया द्वारा हिन्दी मे लिखित दो लेखो को उस पत्रिका मे छापकर उन्होने उस नवोदित लेखिका का उत्साह बढ़ाया था।

इस वर्ष मार्च महीने की १८ तारीख को जब मेरी बेटी ने टेलीफोन से डाक्टर साहब के अत्यन्त दु खद स्थिति मे महाप्रस्थान का हृदयविदारक समाचार मुझे दिया तो मुझे विश्वास ही न हुआ। क्योकि मैंने इनको स्वस्थ अवस्था मे देखा

था। किन्तु होनी को कौन टाल सकता है। मृत्यु पर किसी का कोई वश नही है। कभी कभी मेरे मन मे कुछ विद्रोह की भावनाए उठने लगती हैं कि जिस व्यक्ति ने जीवन भर किसी का भी नही दुखाया किसी का बुरा नही चाहा, सबके साथ अपने स्नेह प्रेम बाटते रहे। जिसने अपने जीवन मे सत्य का ही पक्ष लिया जिसने अपने कठिन परिश्रम द्वारा अर्जित धन से जीवन यापन किया जिसने कभी किसी की चापलूसी नही की जिसने अपनी विद्वत्तापूर्ण लेखनी द्वारा भारतवासियो के लिए इतनी बड़ी ऐतिहासिक सास्कृतिक अमर विरासत प्रदान की जिस व्यक्ति ने दुखियो को सहारा दिया सामान्य प्रतिभा का भी जिसने हौसला बढाया उन्ही महापुरुष के जीवन का अन्त इतना कारुणिक और दु खद स्थिति मे क्यो हुआ ?

आज डाक्टर साहब इस दुनिया मे नही हैं किन्तु अपनी यश काया अमर रहेगी। अपनी महान कृतियो के द्वारा वे सदैव हमारे बीच रहेगे। उनकी स्मृतियो को अमर बनाने के लिए "दिल्ली की आर्य प्रतिनिधि सभा' जो प्रयत्न कर रही है—वह स्तुत्य कार्य है।

—कमला सांकृत्यायन
राहुल निवास, २१-कचहरी रोड,
दार्जिलिंग ७३४१०१

यदि पाण्डित्य प्राप्त करना चाहते हो तो विनम्र बनो और यदि पाण्डित्य प्राप्त कर चुके हो तो और अधिक विनम्र बनो।

---

* * *

डा० सत्यकेतु

—डा० (श्रीमती) कमला प्रधान

डा० सत्यकेतु की आत्मा बडी बलवती थी। उन्होने 'आर्यसमाज का इतिहास' भारत से प्रारम्भ कर लन्दन, योरोप, अरब, टर्की, अमरीका, एशिया, अफ्रीका आदि पृथ्वी के सभी देशो के विद्वानो से सम्पर्क करके आर्यसमाज के कार्यकलापो का, कठिनाइयो का, मतभेदो का उपयुक्त उपचार करके आर्य विचारधारा का भिन्न-भिन्न रूप धारण करने पर भी एकरूपता लाने का यथासम्भव प्रयास किया और अस्वस्थ होने पर भी काम पूरा करके ही रहे।

स्वभाव से मृदु होते हुए भी सदाचार-प्रचार की बडी अभिलाषा व शक्ति थी। तभी तो लोकोक्ति "वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि" उन पर ठीक घटित होती है। दक्षिण पूर्वी एशिया की सांस्कृतिक यात्रा मे उनका यह रूप निकटता से देखने को मिला। वे चुपचाप सभी का अध्ययन कर रहे थे। अनाचार से वे समझौता नही कर सकते थे। द० पूर्वी एशिया के यात्रा के प्रोग्राम में 'हागकाग' ले चलने के लिए हम लोगो ने आग्रह किया। उन्होने उत्तर दिया उस दुराचार पूर्ण स्थान पर न जाना ही ठीक है। हमें आशा है वह दृढ बलवती आत्मा अभी भी अपनी यात्रा कर रही है और फिर हमारे बीच आकर अपना काम पूरा करेगी।

एक बडा भारी काम उन्होने और प्रारम्भ किया था। आर्यसमाज की शिक्षा का केन्द्र "गुरुकुल कागडी" का शुद्ध आचार का रूप पुन स्थापित करना। गुरुकुल की आचारशैली मे जो दुष्परिवर्तन आ गया है उस को भुक्त भोगी ही समझ सकता है। हमारे ही परिवार के व्यक्ति डा० ओमप्रकाश सिन्हा मुख्याचार्य, विज्ञान विभाग, गुरुकुल कागडी की किसी बहके हुए विद्यार्थी ने गोली मार कर हत्या कर दी। ऐसे ही न जाने कितने निर्दोष व्यक्ति आततायियो से कष्ट पा रहे होगे। इस पीडा से दु खित डा० सत्यकेतु जी ने गुरुकुल कागडी की व्यवस्था सुधारने का बीडा उठाया था।

आशा एव विश्वास है कि उनके द्वारा प्रारम्भ किया कार्य उनके सहयोगी आर्यजन और आर्य नेतागण गुरुकुल विश्वविद्यालय की स्थिति को श्रेष्ठतम करने मे समर्थ होवे।

—डा० कमला प्रधान
एम ए, एच एम डी., सी.एच पी
सि० शास्त्री, वेदरत्न (द्वय)
स्वस्तिका, नया हैदराबाद, लखनऊ

मूर्धन्य वेदों का विद्वान् : बूढ़ा बालक

—लता गुप्ता

इसी वर्ष अप्रैल मे बम्बई से मसूरी पहुचने पर एक हृदय विदारक समाचार मेरे बेटे ने सकुचाते हुए सुनाया, "मा ! मैंने कुछ लोगो के मुख से डा० सत्यकेतु जी के कार एक्सीडेंट के बारे मे सुना है कि वे गुरुकुल कागडी के वार्षिक उत्सव पर हरिद्वार जा रहे थे, अस्तु।

मैं समाचार सुनकर स्तब्ध रह गयी। विश्वास ही नही हो रहा है कि वे हमारे बीच नही रहे।

चलचित्र की भांति रीलें आती गयी, निकलती गयी। तुरन्त उनकी विदुषी पत्नी सुशीला जी पर ध्यान गया, जो डाक्टर साहब की छाया के समान सर्वव उनके साथ रहा करती थी। ओह ! शरीर के बिना उस छाया की क्या दशा हो रही होगी···

किसी प्रकार उन्हे सवेदना-पत्र लिखा। हृदय में करुण क्रन्दन चल रहा था कि 'डा० साहब ! आप कहा चले गये हैं ? मेरी नयी पाण्डुलिपि को कौन देखेगा ? मेरे लेखन को आपसे सम्बल मिलता था। साहित्य-दिशा में कौन मेरा मार्गदर्शन करेगा ? आप दोनो के बिना मसूरी श्री विहीन हो गयी है। आप युगल के पैर स्पर्श करने के लिए कैमल्स बैक रोड रो रहा है। वहा के फूल-पौधे सहम गये हैं। आपकी विद्वत्तापूर्ण बातो के बिना वहा सन्नाटा छा गया है, कि तभी डा० साहब का बाल सुलभ मुस्कान लिये मुख दिखाई दिया।

उनकी बाते जितनी अधिक सार गर्भित होती थी उतनी अधिक उनकी हँसी निश्छल होती थी। प्राचीन साहित्य के प्रति मेरा लगाव उन्हीं की निकटता की देन है। वे जहा भी मिलते जब भी मिलते देश की प्राचीन भारतीय सस्कृति, सभ्यता का अमृत अवश्य ही पिलाते।

लेखन कार्य में मेरा उत्साह वर्धन करते। "वाह ! लता जी इस विषय पर आप जैसी देवी नहीं लिखेंगी तो कौन लिखेगा ? लेखक कभी बनाया नहीं जाता इसे कभी न भूलियेगा।" एक दिन कुछ झिझकते हुए मैंने, उन्हें अपने बनाये

रेखांकित चित्र दिखाये। देखकर बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे कि "इन चित्रो को देखकर मुझे कुछ श्लोक स्मरण हो आये हैं।" मैंने कहा कृपया लिख दीजिये।" कागज देखने लगे, मैंने कहा "इन चित्रो पर ही लिख दीजिएगा।" तब कहा जानती थी कि ये चित्र इस प्रकार मेरी अमूल्य निधि बन जायेंगे। कई बार देख चुकी हूँ इन चित्रो को मैं, अकस्मात् आखो से आँसू झलक आते हैं।

किसी की भी प्रशसा वे मुक्तमन-मुस्करा कर किया करते थे। एक प्रसिद्ध छायाकार स्वामी सुन्दरानन्द जी मसूरी हमारे घर ठहरे हुए थे। प्रात भ्रमण के लिए कैमलबैक रोड पर घूमने गये थे। डा० साहब की चर्चा चली। देखा! कि वे सुशीला जी सहित किसी गम्भीर विषय पर बोलते हुए चले जा रहे हैं। मैंने प्रसन्न होते हुए उन्हें नमस्ते की और सुन्दरानन्द जी से उनका परिचय कराया, वैसे तो वे दोनो ही एक दूसरे को जानते थे, परन्तु साक्षात्कार अभी कर रहे थे।

उस समय दोनो विद्वानो की प्रसन्नता देखते ही बनती थी। डा० साहब ने अपनी सदा बहार-मुस्कान सहित कहा—

"धन्या क्रिया कामदुघ क्रतूना, सत्याशिष सम्प्रति भूमिदेवा।

(यज्ञादि शुभकर्मों के अभिवाञ्छित-फल मुझे प्राप्त हो गये और विद्वानो द्वारा जो आशीर्वाद प्रदान किये गये थे। वे आज सत्य हो गये—जो आज आपके दर्शन हो गये)। उनके व्यक्तित्व की छवि निराली और विद्वत्तापूर्ण थी। जिनकी तुलना नही हो सकती। वैसी ही उनकी विदुषी पत्नी अपने पति को पूर्णत समर्पित थी। अपने पति के साहित्य कर्म मे सदा सहयोगी रही जिसके कारण डा० साहब की निरन्तर साहित्य सेवा चलती रही।

बहन सुशीला जी अच्छी लेखिका हैं। फ्रेन्च, अग्रेजी, हिन्दी व सस्कृत भाषाओ पर उनका भी पूर्ण अधिकार है, मेरे जिज्ञासा करने पर उन्होंने प्रत्युत्तर देते हुए कहा था— 'लता जी! मैं भी लिखती रहती तब क्या डा० साहब इस प्रकार एकाग्रता के साथ लिख सकते थे। यही सोचते हुए मैंने लिखना बन्द कर दिया था। मुझे इसी मे परिवार की भलाई दिखाई दी।"

मसूरी उन्हें कभी भुला नहीं सकती।

—लता गुप्ता
निट क्राफ्ट, कुलरी, मसूरी-२४८१७९

डा० सत्यकेतु

—श्रीमती शान्ता "अमरनाथ"

मेरे पति स्व० श्री अमरनाथ विद्यालंकार पूरी तरह राजनीति मे थे, और उनके परम मित्र डा० सत्यकेतु जी भी राजनीति मे पूरी दिलचस्पी रखते थे। देश की बिगडती दशा पर, और क्या-क्या सुधार होने चाहिए, दोनो खुल कर बाते किया करते थे। सत्यकेतु जी को मिलने जाना है, यह हम दोनो की प्रेरणा बन गयी थी, सत्यकेतु जी भी हमे मिल कर खिल उठते थे। घटो लगातार लिखने के बाद हम से मिल कर राहत महसूस करते थे। उन्होने कितना लिखा था या वह कितने बडे लेखक हैं इस को परे रख कर, हम उन्हे एक सुलझे दिमाग वाला परम मित्र समझते थे। सुलझे दिमाग वाले आदमी से बाते करके एक अवर्णनीय सतुष्टि होती है। सत्यकेतु जी की धर्म पत्नी सुशीला जी भी एक विदुषी आर्य महिला हैं और निर्मल जल का स्रोत है। मैं हमेशा कहती थी कि यदि सत्यकेतु जी की ऐसी पत्नी न होती तो वह इतने बडे लेखक नही बन सकते थे। वह समझती थी कि उनके पति एक चमकते सितारे हैं और वह उन्हे हमेशा चमकता सितारा ही देखना चाहती थी। वह सितारा अब भी चमक रहा है और हमेशा चमकता ही रहेगा। आने वाली पीढी जब उनका साहित्य पढेगी तो नम्र होकर प्रणाम करेगी।

विधि का कैसा नियम है मनुष्य कब और कैसे मौत के मुंह मे चला जाता है। उस की चतुराई कुछ काम नही आती, कितना विवश हो जाता है मनुष्य, लेकिन मनुष्य के दृढ निश्चय मे भी एक अलौकिक शक्ति होती है जो सत्यकेतु जी मे थी। उन्होने आर्यसमाज का इतिहास के पूरे सात खड लिखे। वह इरादे के इतने पक्के थे कि उनके इरादे के सामने मौत भी ठहर गयी थी। जब सत्यकेतु जो पूरे खड लिख चुके थे तो उनके अन्दर एक ऐसी आत्म सतुष्टि झलकती थी कि जैसे वह अपने अपने सारे काम पूरे कर चुके हो। अब जब मैं सत्यकेतु जी के घर जाती हूँ तो सत्यकेतु जी अपनी भव्य मुस्कान से मेरा स्वागत करते हैं "आइये भाभी जी" यह क्या ! यह तो मेरे कानो का भ्रम है या मेरी आखो का ! उसी समय आखो के के सामने आता है। बहन सुशीला जी का बिखरा हुआ चेहरा और मैं मन ही मन उनके दु ख को अनुभव कर रही हूँ।

—श्रीमती शान्ता अमरनाथ

जी-२७-निजामुद्दीन वेस्ट, नई दिल्ली

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार :
जो मरकर भी अमर हैं

—डा० प्रशान्त वेदालकार

डा० सत्यकेतु विद्यालकार के नाम से मैं गुरुकुल कागडी मे पढ़ते हुए पाचवी कक्षा से ही परिचित हो गया था। इनकी पाचवी कक्षा के लिए लिखी भारतवर्ष का इतिहास पुस्तक सचमुच अद्भुत थी, जिसका स्मरण मुझे आज तक है। वेदो से लेकर आज तक के महापुरुषों की सक्षेप मे जानकारी दी गई थी उस पुस्तक मे। छोटे आकार मे छपी उस पुस्तक के एक ही पृष्ठ मे एक राजा या महा-पुरुष का परिचय दे दिया गया था। राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसन्धान व प्रशिक्षण परिषद् छोटी कक्षाओ मे इतिहास किस प्रकार पढाया जाए, इस बात के लिए परेशान रहती है। डा० सत्यकेतु की उक्त पुस्तक उनका भी दिशा निर्देश कर सकती है। बच्चो को इतिहास टुकडो मे नही उसकी समग्रता मे पढाया जाए—इसका सुन्दर निर्देशन डा० साहब की उक्त पुस्तक मे है।

बाद मे उच्च कक्षाओ मे इतिहास व राजनीति की उनकी अनेक पुस्तकें पढी। उनकी विषय प्रतिपादन की अद्भुत शैली थी। इतिहास व राजनीति के लेखको के लिए दो गुण अपेक्षित हैं—सभी मतो का प्रस्थापन तथा उनमे से तर्क सगत व वाछनीय मत का निष्पक्ष प्रतिपादन। ये दोनो ही गुण डा० सत्यकेतु के इतिहास व राजनीति की पुस्तको मे उपलब्ध हो जाते हैं।

डा० सत्यकेतु विद्यालकार हिन्दी, सस्कृत, इगलिश व फ्रेन्च भाषाओ पर पूरा अधिकार रखते थे। इन भाषाओ में उनके विषय की कोई भी पुस्तक या पत्र-पत्रिका हो—वह उनकी दृष्टि से बच नही पाती थी। यही कारण था कि उनके लेखन मे सघनता थी। विपुल सामग्री को अपनी भाषा मे वे मौलिक रूप से प्रस्तुत कर देते थे। सामग्री के जगल मे से उपयुक्त का चयन उनकी विशेषता थी।

वे गुरुकुल कागडी के स्नातक थे। वहा वैदिक व लौकिक सस्कृत की सभी पुस्तको का उन्होने अच्छी प्रकार मन्थन किया था। अत प्राचीन इतिहास व भारतीय सस्कृति पर जो कुछ उन्होंने लिखा वह अन्य इतिहास व राजनीति के

लेखकों से भिन्न है। अधिक प्रामाणिक है।

उन्होंने अपने ग्रन्थ हिन्दी मे लिखकर राष्ट्रभाषा का गौरव बढाया है। उनके लेखन से इस भ्रान्त धारणा का निराकरण हुआ है कि हिन्दी मे स्तर की पुस्तकें नहीं लिखी गयी या नहीं लिखी जा सकती। हिन्दी माध्यम के छात्रो के लिए उनकी पुस्तकें पूरी सामग्री जुटाती हैं। उनकी शैली मे प्रसाद गुण है। प्रवाहमयी भाषा होने के कारण उसको पढने मे पाठक को आनन्द आता है। उसमे रोचकता भी है। राजनीति व इतिहास के हिन्दी लेखकों के लिए उनकी पुस्तकें आदर्श हैं। वे उनकी शैली का अनुकरण करके राष्ट्रभाषा मे और अधिक साहित्य लिख सकते हैं।

जब मैं नवम कक्षा मे था तो साप्ताहिक हिन्दुस्तान मे धारावाहिक रूप से प्रकाशित उनके उपन्यास—"मैंने होटल चलाया" का मैं नियमित पाठक था। तभी मुझे पता चला कि उन्होंने मसूरी मे सचमुच होटल चलाया था। वहा आए सतरंगी अनुभव को उन्होंने उपन्यास का रूप दे दिया था। उनका चाणक्य उपन्यास भी मैंने पढ़ा था। इस प्रकार वे रचनात्मक साहित्यकार भी थे। जिसके परिणामस्वरूप उनके उपन्यासो मे इतिहास व इतिहास मे कल्पना का सहज समावेश हुआ है।

गुरुकुल कांगडी के स्नातक व वहीं के प्राध्यापक होकर भी उन्होंने फ्रांस मे जाकर शोधकार्य किया—उनके जीवन की यह घटना अपने आप मे एक इतिहास है। बाद मे उन्होंने अफ्रीका व यूरोप विशेषकर इंगलैण्ड की अन्य यात्राएं भी की। इसी प्रकार पूर्वी एशिया की उनकी यात्राएं भी उल्लेखनीय हैं। वे जहा भी गये वहा उपलब्ध अपने विषय की सामग्री का उन्होंने पूर्ण मनोयोग से अनुसन्धान किया और वहा की भरी भारतीय संस्कृति व सभ्यता के प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष चिह्न भी खोज निकालते थे।

उनका व्यक्तित्व बहुमुखी था। उन्होंने होटल चलाया स्कूल चलाया। अध्यापक वे थे ही। अपनी अधिकांश पुस्तकों का प्रकाशन और वितरण भी उन्होंने स्वय किया। अन्तिम दिनो मे उन्होंने गरिमा गरुड पत्रिका का सम्पादन प्रारम्भ किया।

मेरी उनसे घनिष्ठता मसूरी मे उनके घर पर हुई थी। मैं अपनी धर्मपत्नी डा० सरोज दीक्षाकार के साथ वहां भ्रमण के लिए गया था। तब तक मेरा उनसे विशेष परिचय व घनिष्ठता नहीं थी, पर गुरुकुल कांगडी का स्नातक होने के कारण वहा जाकर उनसे न मिलना व्यावहारिक भूल होती। उनसे जैसे ही मिला उन्होंने मुझे तथा मेरी धर्मपत्नी को अपना अतिथि बना लिया। वहीं

मेरी उनसे, भाभी जी से, बहन उषा व उसकी पुत्री से घनिष्ठता हुई। उसके बाद सदा मुझे उनके घर आकर अपनापन ही प्रतीत होता रहा।

मैंने देखा कि उनका खान-पान व रहन-सहन अत्यन्त सादा किन्तु भव्य है। विदेशो मे रहने के कारण उनके विषय मे अनेक प्रकार की भ्रान्तिया थी, पर उनके घर का सात्विक वातावरण सब भ्रान्तियो का सहज उत्तर था। सात्विकता के साथ उनके जीवन मे नियमितता व कर्मठता भी अद्भुत थी। उनका जीवन ही अनुपम था। उसमे सिद्धान्त और व्यवहार एक हो गये थे। मैं उनसे बहुत छोटा था पर उन्होने सदा मुझ से मित्र का सा व्यवहार किया।

अपने जीवन के अन्तिम वर्षों मे उन्होने अपनी कुलभूमि गुरुकुल कागडी की आराधना व अपनी मातृ संस्था आर्यसमाज की सेवा को अपना लक्ष्य बनाया। उनके सात भागो मे प्रकाशित 'आर्यसमाज का इतिहास' ग्रन्थो के कारण केवल वे अमर नही हुए, इसमे उन्होने आर्यसमाज को भी अमर कर दिया।

गुरुकुल कागडी को स्थिरता प्रदान करने के लिए उनकी दौड धूप ८४ वर्ष की आयु मे भी बनी रही। यह विधाता का विचित्र ही विधान था कि गुरुकुल कागडी जाते हुए ही वे दुर्घटनाग्रस्त हुए, पर अपने प्राणो का त्याग कुलभूमि मे पहुचकर ही किया। यह उनकी मृत्यु नही थी वरन् महान् बलिदान था।

उनका पवित्र स्मरण करते हुए यह युक्ति कि प्रत्येक महापुरुष की उपलब्धियो के पीछे उसकी पत्नी का महान् हाथ रहता है, उन पर सत्य सिद्ध होता है। किसी ने कभी उनको भाभी जी से अलग नही देखा। भाभी जी विदुषी हैं। व्यावहारिक हैं, मृदु और मिलनसार हैं। इससे जहा उनके जीवन मे पूर्णता रहती थी वहा उनके परामर्शो व सेवावृत्ति से ही डा० सत्यकेतु जी विद्यालकार को बल प्राप्त होता था।

आज डा० सत्यकेतु विद्यालकार हमारे मध्य नहीं हैं पर उनका यह अभाव शारीरिक है। उनकी आत्मा, उनकी पुस्तकें, उनके कार्य आज भी जीवित हैं। वह किसी के लिए भी प्रेरणादायक हो सकते हैं।

आइये ! उन्हे उनके ८६ वें जन्मदिन पर स्मरण करें, श्रद्धाजलि दें, उनके जीवन मे जीने का पाठ पढें।

—डा० प्रशान्त वेदालकार
७/२, रूपनगर, दिल्ली
पिन-११०००७

पं० सत्यकेतु जी विद्यालंकार

—श्याम सुन्दर स्नातक

आर्यसमाज का इतिहास लिख कर पं० सत्यकेतु जी अमर हो गये हैं। पीढ़ियां उन को याद करेंगी। उनको श्रद्धा सुमन अर्पित करने का एक सरल उपाय यह है कि उनकी तपस्या को—आर्यसमाज के इतिहास को हम देश और विदेश में पहुंचा दें। भारतीयों तक ही नहीं—अपितु सब देशों की राजधानियों में। उनके प्रसिद्ध पुस्तकालयों में। अब एक ज्वलन्त प्रश्न है कि क्या इस उत्तम, पाण्डित्य पूर्ण, तथ्यों से ओत-प्रोत रचना का इंगलिश में अनुवाद नहीं होना चाहिए ? प्रश्न जटिल है—असम्भव नहीं।

आर्य साहित्य का यह अमर कार्य करके उन्होंने सारी आर्यजाति को ऋणी बना दिया है।

—श्याम सुन्दर स्नातक
आचार्य, गुरुकुल कांगड़ी, जिला हरिद्वार

संस्कृत भाषा सारी भाषाओं का मूल है। इस भाषा के सदृश मृदु, मधुर और व्यापक सर्व भाषाओं की माता—ऐसी कौन सी भाषा है ?

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

इतिहासकार इतिहास बनकर न रह जाये

—सूर्य मोहन

वह आयु मे मुझ से लगभग अड़तालीस वर्ष बड़े थे, किन्तु पारिवारिक सम्बन्ध के अनुसार मेरे भाई लगते थे। गुरुकुल मे मेरे स्वर्गीय पूज्य पिता जी श्री सुभाषचन्द्र वेदालकार के अध्यापक थे और इस नाते से मैं अपने को उनका पौत्र समझता था। वस्तुत मेरी माता जी उन्हे भाई कहती थी, अत हम भाई-बहन उन को मामा जी कहा करते थे और उनसे मिलकर जिस सम्बन्ध का अनुभव हुआ, वह मित्र-भाव का था।

वह एक महान् लेखक विद्वान् व समाजशास्त्री थे, यह सभी को ज्ञात है। मुझे सबसे अधिक प्रभावित करने वाला था उनके वृद्ध शरीर मे उलाचे लेता उनका जवान हृदय। उनमे जिस उत्साह व जिन्दादिली का दर्शन मैंने किया था, वह आज के नवयुवक मे भी देखना दुर्लभ है। प्रात चार बजे उठ जाना 7-8 कि०मी० का प्रात भ्रमण, आसन व्यायाम और फिर 10 12 घटे का दैनिक लेखन। इसके अतिरिक्त अनेक सामाजिक सस्थाओ का विभिन्न प्रकार का दायित्व ! गुरुकुल कागडी, हरिद्वार की उन्नति के लिए जिस उत्साह, सत्यनिष्ठा व दृढता के साथ उन्होने कार्य किया, वह सर्व विदित है। और, लेखन की अति यह थी कि लेखनी से स्पर्श होने वाले अगुलियो के स्थान पर गिल्टी जैसी कठोर त्वचा हो गयी थी। उनके शब्दों मे जिन्दादिली मानो फूट पड़ती थी। आज जबकि समाज मे नैराश्य के बादल छाये हुए हैं उनके हृदय मे आर्य सस्कृति को पुन गौरव पद पर आसीन करने का अदम्य उत्साह भरा हुआ था। वह निराश नहीं थे, समाज मैं फैले भ्रष्टाचार की कालिमा हटाकर स्वर्णिम भारत का स्वप्न वह इस आयु मे भी विश्वास पूर्वक देखते थे, उनका यह उत्साह मेरे लिए प्रेरणा का स्रोत रहा है।

एक बार उन्होने मुझे अपने साथ गुरुकुल व मसूरी चलने का आमन्त्रण दिया। मैंने अपने को सौभाग्यशाली समझा। उस समय उनको और नजदीक से देखने का मौका मिला। मैंने देखा, दोनो स्थानो पर उनका सभी ने बहुत स्वागत किया। दोनो स्थानो पर उनका बहुत मान था। मान शायद उन्हें जीवन-भर बहुत मिला। लेकिन आध्यात्मिक साधना की पराकाष्ठा थी कि विनम्रता

उनमे कूट-कूट कर भरी थी। मह मानो छू भी नही गया था। जो महोदय उनसे मिले हैं, उन्होंने अवश्य अनुभव किया होगा कि वे कितने मृदुभाषी थे। छोटे-बड़े सब के लिए कितना स्नेह भरा था उनके हृदय मे। अपने बड़प्पन का वह भाव छोडकर सामने वाले के स्तर पर स्वयं को लाकर अति मृदु भाव से बातचीत करना, यह उनका स्वभाव था।

वह केवल गुरुकुल के नही थे, केवल आर्यसमाज के नही थे, वरन् समस्त देश के थे। हमे उनसे बहुत कुछ सीखकर अपने जीवन मे उतारना है। वह महान् इतिहासकार इतिहास बनकर न रह जाये। डा० सत्यकेतु स्थूल भाव से हमारे बीच नहीं रहे। उनका सार हमारे साथ सदैव है। सच्ची श्रद्धाञ्जलि के रूप मे क्या हम उसे अपने जीवन मे उतार पायेंगे ?

—सूर्य मोहन
18-बी० M I G। फ्लैट, पाकेट A-3
पश्चिम विहार, नई दिल्ली-62

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार

—एस० एन० गुप्त

"स जात येन जातेन याति वंश समुन्नतिम्"—स्व० डा०सत्यकेतु जी विद्यालंकार ने आर्यसमाज, भारतीय इतिहास, संस्कृति, हिन्दी-भाषा, हिन्दी साहित्य व भारतीय दर्शन को ही सदा अपना कुटुम्ब माना और ज्यो-ज्यो वे अपने कार्य क्षेत्र मे आगे बढते रहे इन सब का विकास व उन्नति होती रही। इन सब विषयो पर लिखी उनकी मूल्यवान् पुस्तके युगो तक अन्वेषको व जनमानस का पथ प्रदर्शन करती रहेंगी। उनकी लेखनी के चमत्कार ने जो ख्याति देश विदेश मे उनको दी वह उनकी संतति के लिए सदा एक अनुपम धरोहर रहेगी। उन्होने धर्म, इतिहास और साहित्य के क्षेत्र मे इतनी बडी सामग्री इकट्ठा कर के छोडी है कि शताब्दियो तक उनकी कृतियो पर शोध किया जा सकता है।

उनका जीवन सहज, सरल, नियमित व बहुत संयमित था और यही कारण था कि उनको स्वयं व दूसरो को कभी भी उनकी वृद्धावस्था का बोध नही हुआ और 85-86 वर्ष की आयु मे भी उनकी लेखनी उसी प्रकार अनवरत चलती रही जैसे कि युवावस्था मे चलती थी।

उनके अकस्मात् उठ जाने से आर्य जगत्, हिन्दू समाज व इस देश को जो हानि हुई है उसका पूरा होना कठिन है।

वैसे तो गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय ने इस देश को बहुत से रत्न विभिन्न कार्य क्षेत्रो मे दिए हैं किन्तु डा० सत्यकेतु का नाम उनमे अग्रगण्य रहेगा।

—एस० एन० गुप्त,
17—सिविल लाईन्स, मुरादाबाद—244001

विचारशील लेखक

—शशि शेखर

विद्यालंकार जी से मेरा प्रथम साक्षात्कार २७ वर्ष पूर्व हुआ था। मैंने उन्हे महान् विद्वान् सच्चे मित्र एवं परम आत्मीय के रूप मे देखा है। प्रथम साक्षात्कार से ही उनके विशाल व्यक्तित्व की अमिट छाप मेरे अन्तस्तल पर ऐसी अंकित हुई है जिसको कभी भी विस्मृत नही किया जा सकता। वे ऐसे मानव थे जिनके हृदय के भीतर देवता छिपा था। उनके महान् साहित्य के अनुरूप ही उनका महान् व्यक्तित्व था जो अमर प्रेरणादायक तत्त्वो से निर्मित हुआ था। उनके देदीप्यमान मुखमण्डल से अपूर्व शोभा, अद्भुत कान्ति झरती रहती थी। उनके नेत्रो से अनवरत स्नेह धारा प्रवाहित होती रहती थी। वास्तव मे उनका हृदय औदार्य, गहनता और प्रेम का सगम था। मैं उनके सान्निध्य का विधाता का वरदान ही मानता हू।

विद्यालकार जी आत्मीयता की सहज प्रतिमा थे। कोई भी आगन्तुक उनके व्यक्तित्व से तत्काल प्रभावित होता था। वे प्रत्येक व्यक्ति को आदर-स्नेह प्रदान करते थे। उनकी आत्मीयता सभी के लिए समान थी। वे सभी का सहज भाव से स्वागत करते थे। उनका प्रत्येक कार्य, भोजन, वस्त्र और व्यवहार उनकी उत्तम रुचि का परिचायक था। प्रत्येक कार्य में उनके स्वभाव की प्रेरणा थी। सहज विनय और सरल-स्नेह उनके व्यवहार के अनिवार्य अग थे। स्वाभिमान, विनय तथा औदार्य अनेक अलकार थे। उनका आदर्श चरित्र उनकी सर्वप्रियता का रहस्य था।

आज विद्यालकार जी का पार्थिव शरीर हमारे मध्य नही है, किन्तु उनका यश-रूपी शरीर सम्पूर्ण मानव जाति को आध्यात्म ज्ञान और वैदिक सस्कृति का अमर सन्देश देता रहेगा। उनके द्वारा रचित 'आर्यसमाज का इतिहास' ज्ञान का वह प्रचण्ड-मार्तण्ड है जिसकी शुभ्र रश्मियो की अलौकिक ज्योति मानव का अज्ञानान्धकार दूर करती रहेगी। वह अमर ग्रथ वैदिक-सस्कृति का सच्चा उद्गीथ है। विद्यालकार जी सच्चे अर्थों मे महान् सन्त थे। उन्होने आर्यों को बृहद् इतिहास के माध्यम से दिव्य आलोक दिखाया जो अनन्तकाल तक जन-जन के मार्ग को आलोकित करता रहेगा।

—शशि शेखर
इन्दौर, म०प्र०

डा० सत्यकेतु जी का व्यक्तित्व और उनके स्वप्न

—सुशीला देवी

डा० सत्यकेतु जी बहुत गम्भीर विद्वान् थे। उनकी विषय की पकड बहुत गहरी थी। क्या दर्शनशास्त्र, क्या राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र आदि सभी विषयो मे अबाध गति थी। परन्तु प्राचीन भारतीय इतिहास उनका प्रिय विषय था। आज से हजारो वर्ष पुरानी घटनाओ का सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक चित्रण वह इस प्रकार प्रस्तुत करते थे, जैसे सब कुछ उनके सामने चलचित्र की भांति घट रहा है। यह सब कुछ इतना ज्वलन्त और सजीव होता था कि मन सुनते-सुनते ऊबता न था। प्राचीन इतिहास का ज्ञान हस्तामलकवत् था। उनकी पुस्तको की लोकप्रियता का यही कारण है। उनके प्राय सभी विशाल ग्रन्थो के सस्करण प्रति दूसरे वर्ष प्रकाशित करने पडते हैं। ये पुस्तके इतनी सरल और हृदयग्राही ढग से लिखी गई हैं कि इतिहास जैसे शुष्क विषय को पढते हुए उपन्यास का सा आनन्द आता है, और पुस्तक एक बार प्रारम्भ कर छोडने को जी नहीं चाहता। ये पुस्तकें किशोर वय पाठको से लेकर प्रौढ व्यक्तियो तक मे पसद की गई हैं। उनकी वक्तृत्व शक्ति भी उतनी ही विलक्षण थी। वे अपने श्रोताओ को बाधे रखने की अपूर्व क्षमता रखते थे। विशाल समुदाय गम्भीर विद्वता के होते हुए भी उनके स्वभाव मे बालसुलभ सरलता थी उनका स्वभाव बहुत मधुर था, वे क्रोध और शिकायत करना तो जानते ही न थे। अभिमान और अहकार छू तक नहीं गया था। जो भी व्यक्ति उनके सम्पर्क मे आता था, उसे कभी यह नही अनुभव होने दिया कि वह अपने से अत्यधिक ऊंचे विद्वान् के पास बैठा है। उसे कभी हीनता का आभास नहीं होने दिया। दूसरो का मन मोह लेने की अप्रतिम शक्ति थी। पर अपना काम निकालने के लिए प्रभावशील व्यक्तियों के पीछे भागने या उन पर अपना प्रभाव जमाने की प्रवृत्ति का उनमे अत्यन्त अभाव था। वे सबसे निरपेक्ष भाव से मिलते थे जो भी काम हाथ मे लिया, उसे पूरा किया। कभी किसी एक ही व्यवसाय से नही चिपटे रहे। कहते थे कि मैं कोल्हू के बैल की तरह एक ही काम का होकर नही रह सकता। नई नई स्कीमे बनाईं, सफल हुए तो दूसरो

को सौंप दी। परन्तु लेखनी से कभी विराम नही लिया, वह अबाध गति से चलती रही। उनके मुख पर सदैव शान्ति और प्रसन्नता विराजती थी। कभी किसी को अपनी ओर से निराश नही किया। वे शिव भगवान् के समान अवढर दानी थे। स्वय न खाकर दूसरो को खिलाना, स्वय न पहनकर दूसरो को पहनाना यह उनको अतिप्रिय था। वे प्राचीन इतिहास के अद्भुत ज्ञाता थे। प्राय सभी प्राचीनतम सभ्यताए यथा ईजिप्टोलोजी, बैबिलोनियन, सीरीयन, रोमन आदि ससार से विदा ले चुकी हैं, अब उनका जीवित चिह्न कही शेष नही है। पर वैदिक सभ्यता और सस्कृति उतनी ही प्राचीन होते हुए आज भी जीवित है। डाक्टर साहब इस सस्कृति को उसके अत्यन्त उज्ज्वल रूप मे देखना चाहते थे। इसी कारण उनका गुरुकुल कागडी के प्रति इतना मोह था। वे चाहते थे कि हमारे बच्चे आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के उच्चकोटि के विद्वान् होने के साथ-साथ हमारी सभ्यता के आधारभूत उच्च सिद्धान्तो को भी अपने जीवन मे क्रियात्मक रूप दे सके। आज के युग मे भौतिकवादी सभ्यता के पीछे भागता हुआ मानव, मानवता को भूलता जा रहा है। यो तो अर्थ का दास मनुष्य सदा ही रहा है, पर आज तो उसकी अति ही हो गई है। पैसा अवश्य कमाओ पर उसमे लिप्त न रहो—"तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा" मनुष्य का सुमनुष्यो के प्रति सहानुभूति और प्रेम का भाव हो। आदि गुणो के विकसित करने वाले गुरुकुल का वह स्वप्न लेते थे। और जब तक जीवित रहे यह ध्येय रहा कि एक आदर्श भारतीय सस्कृति का विद्यालय बच्चो के लिए हो जहाँ जाति, धर्म और संकीर्णता से दूर विशुद्ध भारतीय वातावरण मे शिक्षा दी जा सके। खेद ! यह स्वप्न पूरा न हुआ और इसी स्वप्न के साथ उनका जीवन समाप्त हुआ।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का गुरुकुल इन्ही स्वप्नो के अनुसार था, परन्तु समय के साथ वह अपने आदर्शों से दूर हट गया था। वे फिर उसी प्राचीन परम्परा पर उसे स्थापित करना चाहते थे। परिस्थितिवश उन्हे अनेक प्रकार के कार्य करने पड़े, पर जीवन भर मन मे उसी आदर्श की लगन रही जो उनके हाथो पूर्ण करना शायद नियति को अभीष्ट न था। शायद कभी कोई भविष्य मे इस कार्य को करे। आर्यसमाज सस्था के कार्यकलाप ससार को उसकी देन और उसके आदर्शों को वह बहुत ऊची दृष्टि से देखते थे। और उसे यथोचित स्थान दिलाना समग्र विश्व को उसके स्वरूप और उसके कर्त्तृत्व से परिचित कराना उनकी आकाक्षा थी और इसी ध्येय की पूर्ति के लिए उन्होंने आर्यसमाज का इतिहास लिखा।

अपने पेरिस निवास के समय उन्होने सत्यार्थप्रकाश का फ्रेन्च अनुवाद प्रकाशित कराया था। उस अनुवाद की भूमिका लिखते हुए उन्होंने आर्यसमाज के कार्यकलाप का परिचय दिया था। यथा आर्यसमाज ने शिक्षा के क्षेत्र मे कितना

प्रोत्साहन दिया, बाल विवाह की कुरीति दूर की, विधवा-विवाह का प्रचलन कराया। कितने अनाथाश्रम, शिक्षणालय, चिकित्सालय स्थापित किए। अन्ध-विश्वास, मूर्तिपूजा, जातिगत ऊंच-नीच का भेदभाव दूर कर कितने ही सुधार किए। किस प्रकार समग्र भारत मे जन जागरण का मन्त्र फूका, यह पढकर अनुवादिका महोदया और मुद्रक महाशय बोले – आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द का नाम तो हमने कभी नही सुना था। हमने तो केवल विवेकानन्द और राजा राममोहनराय का नाम सुना है। इस बात से उन्हे बहुत चोट पहुची थी, और तभी आर्यसमाज का इतिहास, विस्तृत रूप से लिखने का सकल्प किया था। जो ईश कृपा से सम्पन्न हुआ। परन्तु महर्षि दयानन्द के विचारो का गुरुकुल बनाने का गुरुकुल स्वप्न लिये ही चले गये।

'कालो ह्ययम् निरवधि विपुला च पृथ्वी"।

शायद कभी सब को समान अवसर और एक से वातावरण मे ज्ञान-विज्ञान, साइन्स, शास्त्रो आदि सभी के समुचित पठन-पाठन का अवसर मिलेगा। और सब को समुचित उन्नति का अवसर मिलेगा। ऐसी सस्था के स्नातक, कुशल चिकित्सक, योग्य इजीनियर व अच्छे प्रशासक, व्यवसायी, कृषक होगे। वे समाज की सर्वाङ्गीण उन्नति मे सहायक होगे। उनके आचार-विचार वैदिक सस्कृति के अनुकूल होगे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इसी स्वप्न को साकार करने के लिए गुरुकुल कागडी की स्थापना की थी, और अपने जीवन के प्रारम्भिक तीस-चालीस वर्ष गुरुकुल का स्वर्णिम युग था। उस समय देश-विदेश सभी ओर उसकी चर्चा थी। इगलैण्ड के *तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री रामसे मैक्डानल्ड, प्रसिद्ध मानवतावादी श्री सी० एफ०* एण्ड्रूज, महात्मा गाधी जैसी महान् हस्तिया गुरुकुल पधार कर शान्ति और प्रेरणा प्राप्त करती थी। उसी युग के ये गुरुकुल मे डा० प्राणनाथ जैसे ओरियण्टालिस्ट, वैद्य धर्मदत्त जी जैसे योग्य चिकित्सक, पं० बुद्धदेव जी जैसे वैदिक धर्म के प्रचारक डा० सत्यकेतु जैसे हिस्टोरियन और श्री रामगोपाल पत्रकार निकले। श्री रमेश वेदी जैसे वन्य जन्तु विशेषज्ञ हैं। समय के साथ गुरुकुल मे ह्रास आता गया। डा० सत्य-केतु उसको उसी प्राचीन गौरव की ओर ले जाना चाहते थे। आशा है कि उनका स्वप्न पूरा अवश्य होगा।

वे गुरुकुल को ओरियन्टल अध्ययन का अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र भी बनाना चाहते थे। जहा ससार के कोने-कोने से विद्यार्थी आकर वेद वेदाङ्गो और योग की शिक्षा प्राप्त करें। आजकल इस प्रकार की सस्था की बहुत आवश्यकता है। यूरोप, अफ्रीका अमेरिका और जापान आदि सभी देशो के विद्वान् भारतीय प्राचीन ज्ञान की ओर आकृष्ट होकर भारत आना चाहते हैं। पर खेद है कि ऐसी कोई सस्था नहीं है, जो इस प्रकार का ज्ञान और समुचित वातारण को दे सके।

उनकी इच्छा गुरुकुल में इसी कमी को पूरा करने वाली सस्था खोलने की थी।

—सुशीला देवी
धर्मपत्नी स्वर्गीय डा० सत्यकेतु विद्यालकार

पुत्र की कलम से

—विश्व रजन

पूज्य पिता श्री सत्यकेतु विद्यालकार की मेरी स्मृतिया १६३६ से प्रारम्भ होती हैं, जब वे पेरिस विश्वविद्यालय से इतिहास मे डी० लिट् पास करके वापिस भारत आए थे। उस समय मेरी आयु मात्र ८ वर्ष की थी। पेरिस अध्ययनार्थ जाने से पूर्व पिता जी गुरुकुल कागडी मे इतिहास के प्रोफेसर थे और पेरिस विश्व-विद्यालय मे उन्होने विश्व-प्रसिद्ध विद्वान् प्रो० रेनू के निर्देशन मे लगभग २ वर्ष अनुसधान किया। इस बीच शायद गुरुकुल मे इतिहास उपाध्याय के स्थान की पूर्ति कर ली गई थी और पेरिस से लौटने पर पिता जी को गुरुकुल मे स्थान नही मिला था।

गुरुकुल मे स्थान न मिलने पर परिवार के दिन सघर्ष, अभाव व अर्थ-सकट मे गुजरे। पिता श्री का जन्म उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के एक बहुत ही छोटे व गरीब किसान परिवार मे हुआ था। हमारे दादा जी बहुत ही सज्जन, नेक व सीधे इन्सान थे। ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज मे उनकी घोर आस्था थी, पिता श्री उनके एक मात्र पुत्र थे। जैसे तैसे करके उन्होने ५ वर्ष की स्वल्प आयु मे ही पिता श्री को गुरुकुल कागडी पढने भेज दिया, पर अर्थाभाव के कारण वे वहाँ की फीस अधिक दिन नही दे पाये। पिताजी की प्रतिभा व लगन को देख कर परम पूजनीय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने बिना फीस ही उन्हे गुरुकुल म पढने दिया। गुरुकुल और आर्यसमाज के इस उपकार को पिता श्री सारी जिदगी नही भूले। अध्ययन हेतु पेरिस भी पिताश्री स्कालरशिप पर ही गए थे।

पिता श्री मे कार्य करने की अपार क्षमता थी। १६४२ से १६५० के काल मे होटल के साथ-साथ उन्होने अन्य भी अनेक व्यवसाय व उद्योग स्थापित करने के प्रयास किये। इनमे मसूरी मे एक आयुर्वेदिक फार्मेसी व चन्दौसी मे एक तेल मिल प्रमुख थे। पिता जी के पास पूँजी का हमेशा ही अभाव रहा, इस कारण पूजी लगाने के लिए उन्हें सदा ही कोई पूंजी-पति भागीदार ढू ढने पडते थे। पिता जी बडे कुशल प्रबन्धक व आयोजक थे, उनकी दृष्टि बडी पैनी थी। इसी कारण ये उद्योग भी काफी बडे पैमाने पर चल निकले, पर साझीदारो ने सदैव पिता जी को धोखा दिया, और काम चलने पर वे पिता जी को निकाल स्वय एक मात्र स्वामी बन बैठे। यदि पिता जी के पास थोडी भी पूजी व क्रियात्मक व्यावसायिक बुद्धि होती, तो इस

बात मे जरा भी सन्देह नही कि वे अपनी अपार कार्य-क्षमता व योग्यता के कारण भारत के प्रमुख उद्योगपतियो व पूंजीपतियो मे से एक होते।

यद्यपि अर्थाभाव के कारण, विवशतावश पिता जी ने १९४२ से १९५० तक के काल मे होटल व अन्य व्यवसाय किये पर उनका मन व्यापार मे कभी नही रहा। एक वैश्य परिवार मे जन्मे होने के बावजूद भी वे पूर्णतया ब्राह्मण प्रकृति के व्यक्ति थे। गुरुकुल मे अध्यापन के समय ही पिता जी ने मौर्य साम्राज्य के अतिरिक्त फ्रास की राज्य-क्रान्ति पर भी एक ग्रन्थ लिखा था। १९४७ मे भारत के स्वतन्त्र होने के बाद, उत्तर भारत के विश्वविद्यालयो ने हिन्दी को उच्च शिक्षा के माध्यम के रूप मे स्वीकार किया, अत विविध विषयो पर हिन्दी मे उच्च कोटि के ग्रन्थो की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी। तभी १९५० मे ही पिताजी ने "फ्रास की राज्य क्रान्ति" से आगे "यूरोप का आधुनिक इतिहास' लिख कर दो बड़े खण्डो मे प्रकाशित किया। उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश आदि के इतिहास के प्राध्यापको ने इस पुस्तक का बडा स्वागत किया और इसकी मुक्त कठ से सराहना की। व्यावसायिक दृष्टि से भी इस पुस्तक ने अपार सफलता प्राप्त की। इसकी सफलता से उत्साहित होकर पिताश्री ने अपने होटल व अन्य सभी व्यापारिक कार्य-कलाप बन्द कर दिए तथा वे पूर्णतया लेखन में ही लग गए। अगले ३ दशको मे उन्होंने ५० ग्रन्थ लिखे, जिनकी मुद्रित पृष्ठ सख्या २५,००० से भी अधिक है।

पिता जी की लेखन प्रतिभा बहुमुखी थी। उनके ग्रन्थ मुख्यतया इतिहास, राजनीति शास्त्र, समाजशास्त्र, साहित्य (उपन्यास) आदि क्षेत्रो मे हैं। उन्होने एक फ्रेंच स्वय-शिक्षक भी लिखा है, जिसे पढ कर हिन्दी भाषा-भाषी स्वय फ्रेन्च भाषा को भी सीख सकते हैं। इसके अतिरिक्त उनके सैकडो लेख और धारावाहिक हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स, धर्मयुग आदि पत्र पत्रिकाओ मे छपे हैं। उनके ग्रन्थो को भारत के प्राय सभी विश्वविद्यालयो ने अपने पाठयक्रम मे स्थान दिया है तथा हिन्दी माध्यम से अध्ययन करने वाले सभी छात्रो के लिए ये ग्रन्थ वरदान सिद्ध हुए हैं। विविध साहित्यिक सस्थाओ, राज्य व केन्द्र सरकारो ने इन पुस्तको को उच्च-तम पुरस्कारो द्वारा सम्मानित व पुरस्कृत किया है।

१९५० के बाद मसूरी मे हमारा घर साहित्यकारो व शिक्षाविदो का अड्डा सा बन गया। ग्रीष्म अवकाश में अनेक जाने माने लोग मसूरी आते थे उनमें से अनेक पिता जी से मिलते थे, और अक्सर शाम को गोष्ठियाँ जमती थी। महापण्डित राहुल साकृत्यायन तो पिता जी के सम्पर्क में आकर अपना घुमक्कड़ जीवन त्याग कर मसूरी में ही बस गए थे।

मसूरी के आर्यसमाज व शिक्षा जगत् के लोग भी अक्सर पिताजी से सलाह मशविरे व मार्ग-दर्शन के लिए आते रहते थे। हमारे परिवार का मसूरी में बहुत

सम्मान होने से पिता जी प्राय सभी सरकारी व गैर सरकारी सावजनिक समारोहो म बुलाये जाते थे इनमें आम तौर पर वे प्रमुख वक्ता होत थे या सभा का सभापतित्व करते थे। १९५२ मे मसूरी नगरपालिका के चुनाव हुए माता जी ने उसम भाग लिया और भारी बहुमत से विजयी हुई।

१९५० के बाद पिता जी निर नर साहित्य साधना म लगे रहे। इस समय म ही उ होने अपने इतिहास विषयक ग्र थ जसे—यूरोप का आधुनिक इतिहास एशिया का आधुनिक इतिहास भारत का प्राचीन इतिहास भारतीय सस्कृति और उसका इतिहास पाटलीपुत्र की कथा राजनीतिशास्त्र विषयक ग्र थ जसे राजनीति शास्त्र (राज्य और राज्य शासन) विदेशी राज्यो की शासन विधि भारत का राष्ट्रीय आ दोलन व नया सविधान प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था व राज शास्त्र साहित्य विषयक ग्रन्थ जसे—आचाय चाणक्य (ऐतिहासिक उप यास) म तर्हि (सामाजिक उप यास) समाजशास्त्र विषयक ग्रथ जैसे—समाजशास्त्र आदि लिख। ये ग्र थ बहुत लोकप्रिय हुए और इन सभी के अनेक सस्करण प्रकाशित हुए हिन्दी साहित्य को पिता जी के यह ग्र थ अमूल्य देन हैं।

पिता जी अदभुत प्रतिभा सम्प न व्यक्ति थे। उनम काम करने की अपार क्षमता थी और वे बड परिश्रमी थे। उनम अपार ज्ञान था हि दी सस्कृत अग्रजी व फ्रच भाषा पर उनका पूरा अधिकार था। लिखने म तो उन ी सानी था ही नही बोलने म भी वे अद्वितीय थे। एक साधारण किसान परिवार म ज म होन क कारण अथवा गुरुकुल की शिक्षा दीक्षा के कारण पिता जी स्वभाव म सरलता सौम्यता और सर्वहित सजोये हुए थे। इतना काय करने पर भी उनम आत्म प्रचार की जरा भी इच्छा नही थी। पुरस्कारो के लिए विचाराथ कभी हमने उनकी पुस्तक भेज दी तो भज दी उन्होने कभी इस ओर ध्यान नही दिया।

वास्तव म वे एक युग पुरुष थे।

—विश्व रजन
सी ५/१३ सफदरजग डवलपमेण्ट एरिया,
हौज खास नई दिल्ली–११००१६

श्रद्धा सुमन समर्पण

जो साहित्य क्षितिज के भास्वर,
सत्यकेतु विद्यालंकार।
श्रद्धा सुमन समर्पित उसको,
यश सौरभ का जो आगार।
जो जीवन पर्यन्त अग्नि पथी साधक,
गति से अविराम।
सवंधित कर सका भारती माँ का जो,
गौरव अविराम।
निगम पथ गामी जिसने,
आर्यत्व भाव का किया प्रसार।
जो इतिहास बनाने वाला,
स्वर्णिम शिल्पी, अमर प्रकाम।
वैदिक नाद सुनाकर जिसने,
किया विश्व का है उद्धार।
मणि दीपक झंझावातो में,
सागर में जो कूल समान।
पर्वत मालाओ मे जिसने,
पाया शिखरो का स्थान।
किया सफल मातृत्व सुगुरु बन,
स्वर्णाक्षर में जिसका नाम।
अर्जित दिव्यात्मा के द्वारा,
बना अमर है जो युग गान।
सरस्वती भी चिर बिछोह में,
लगता, करती हा हा कार।
"सत्यकेतु" का संवाहक जो,
विद्या का निरुपम श्रृंगार।
'सत्यकेतु' सज्ञा के द्वारा,
सार्थक किया निजी संसार।
सभी भूमिकाओ का जिसने,
किया सफलता से निर्वाह।
मन्दाकिनी बने जिसको,
पथ में अगारो के अम्बार।
गूँज रहे हैं अब भी स्वर वे,
रहे प्रेरणा के भंडार।

—डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी

आर्यसमाज का इतिहास

•

सामान्य परिचय

एवं

मूल्यांकन

सत्यकेतु की प्रेरणा का मंत्रगीत

—देवनारायण भारद्वाज

श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्त ऋते श्रिता ॥
अथर्व का० १२ सू० ५ म० १

चले चलो तुम चले चलो, धर्म ध्येय पर चले चलो।
बढे चलो तुम बढे चलो, कर्म क्षेत्र में बढे चलो ॥

श्रम की महिमा को पहिचानो
तुम श्रेय स्रोत श्रम को जानो
तप ताप शीत सब कष्ट आदि
कर सहन लक्ष्य को सन्धानो।

श्रम-तप पाथेय साथ ले, वेद मार्ग पर बढे चलो।
बढे चलो तुम बढे चलो कर्मक्षेत्र मे बढे चलो ॥

आधार प्रकृति या प्राणी का
वर वेद ब्रह्मणा वाणी का
पुरुषार्थ तपस्या के द्वारा
हो ज्ञान गिरा कल्याणी का।

श्रम-तप के वेदमार्ग से, सुधन हेतु तुम बढे चलो।
बढे चलो तुम बढे चलो, कर्म क्षेत्र मे बढे चलो ॥

हो दक्ष वेद विद्वान् बनो
पा वित्त विपुल धनवान् बनो
ऋत-न्याय किन्तु मत तज देना
चाहे जितना बलवान बनो।

सृष्टि सेतु ले सत्यकेतु, आर्य पथ पर चढे चलो।
बढे चलो तुम बढे चलो, कर्म क्षेत्र में बढे चलो ॥

जगन्नाथ निवास रैदोपुर नई बस्ती, आजमगढ, उ० प्र०

आर्यसमाज का बृहत् इतिहास पांच हजार पृष्ठों में—क्या, क्यों, कैसे ?

—क्षितीश वेदालंकार

सदियो की मोहनिद्रा के पश्चात् उन्नीसवी सदी मे जितने भी राष्ट्रीय पुनर्जागरण के आन्दोलन प्रारम्भ हुए उनमे सब से महत्त्वपूर्ण आर्यसमाज का आन्दोलन है। गत एक सौ वर्षो मे देशवासियो के धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक विचारों मे जितनी क्रांति इस आन्दोलन के माध्यम से हुई, उतनी अन्य किसी सस्था या आन्दोलन के द्वारा नही। जितनी सर्वग्राही और व्यापक पकड जनमानस पर आज भी इस आन्दोलन की है, उतनी अन्य किसी की नही। यही कारण है कि देश की सीमाओ के बाहर भी यह आन्दोलन अपनी जड जमा चुका है।

परन्तु इस आन्दोलन का इतिहास तैयार करने की ओर आर्य जनता ने विशेष ध्यान नही दिया। सबसे पहले इस न्यूनता की ओर स्वामी श्रद्धानन्द जी का ध्यान गया। वे स्वय एक कुशल पत्रकार भी थे। उन्होने इतिहास सम्बन्धी सामग्री तैयार करनी प्रारम्भ की। परन्तु अपनी अन्य सामाजिक और राजनीतिक व्यस्तताओ के कारण वे इस कार्य को नही कर पाए। उस अमर हुतात्मा के बलिदान के पश्चात् उनके सुपुत्र श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति ने इस कार्य का दायित्व सभाला और दो खण्डो मे—लगभग ५०० पृष्ठो मे—आर्यसमाज का इतिहास लिखा जिसे सार्वदेशिक सभा ने प्रकाशित किया पर वह इतिहास भी विषयवस्तु की दृष्टि से लगभग आधी सदी पुराना पड गया। श्री नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ द्वारा लिखा इतिहास भी उतना ही कालातीत हो गया। तब से यह दिशा किसी महारथी के अभाव मे सूनी पडी थी।

योजना कैसे बनी

अकस्मात् प्रसिद्ध इतिहासज्ञ, अनेक सर्वमान्य इतिहास ग्रन्थो के प्रणेता और लेखनी के धनी श्री सत्यकेतु विद्यालंकार का इस कमी की ओर ध्यान गया। ध्यान आने की यह घटना भी कम रोमाचकारी नही है। जीवन के ७५ वर्ष पूरे करने

के बाद वे अचानक भयंकर रूप से बीमार पड़े। उन दिनों वे मसूरी रहते थे। मसूरी के डाक्टरों ने उन्हें तुरन्त दिल्ली ले जाने का परामर्श दिया। दिल्ली लाकर होली फैमिली अस्पताल में उन्हें रखा गया। उस रुग्णावस्था में ही एक दिन उन्हें ध्यान आया कि मैंने पूर्वी एशिया, पश्चिमी एशिया, यूरोप और चीन तथा भारत के विभिन्न कालों का इतिहास लिखा, अन्य अनेक ग्रन्थ लिखे, पर आज तक मैंने आर्यसमाज का इतिहास नहीं लिखा। यह ऋण मुझे चुकाना है। उन्होंने मन में निश्चय किया कि अब यदि मैं जीवित रहा तो इसी काम को पूरा करूंगा। उन्होंने केवल अपने मन में ही निश्चय नहीं किया, बल्कि कागज पर लिख कर इस निश्चय से अपने परिवार वालों को भी अवगत कर दिया। ईश्वर का चमत्कार देखिए—अगले दिन से उनके रोग में और स्वास्थ्य में तेजी से सुधार होने लगा। उनको लगा कि शेष जीवन परमात्मा ने मुझे आर्यसमाज का इतिहास लिखने के लिए ही प्रदान किया है। यह इतनी विशाल योजना थी कि किसी एक व्यक्ति के लिए उसे पूरा करना असम्भव ही समझा जाएगा। केवल लेखनी ही नहीं, सारे देश में और देश के बाहर भी, जहां भी आर्यसमाज की यत्किञ्चित् ज्योति दिखाई देती है वहां पहुंचकर इतिहास की सामग्री एकत्रित करना, फिर प्रभूत व्यय-साध्य इस योजना के लिए धन की व्यवस्था करना, तदनन्तर उसके प्रकाशन का प्रबन्ध करना। योजना के ये इतने विभाग हैं कि एक-एक विभाग में कई-कई उत्साही व्यक्ति जुटते और तब सब का समन्वित परिश्रम अभीष्ट फल प्रदान कर सकता है। इसके लिए कोई विश्वविद्यालय या कोई समर्थ सभा आगे आती और बीड़ा उठाती, पर उसके आसार कहीं दिखते नहीं थे। तब श्री सत्य-केतु विद्यालंकार ने अकेले ही सहस्रबाहु बन कर इस महान् योजना को पूरा करने में लग गए। किसी महारथी के अभाव में जो दिशा सूनी दिखाई देती थी, अब वह सनाथ होने लगी।

उन्होंने "आर्यस्वाध्याय केन्द्र" की स्थापना की। सन् १९८० में उदयपुर में हुई सार्वदेशिक की अन्तरंग सभा ने इस केन्द्र को स्वायत्त संस्था के रूप में मान्यता दी और आर्थिक समस्या हल करने के लिए निम्नलिखित वर्गों के सदस्य बनाने का अधिकार दिया—(१) संरक्षक सदस्य—पांच हजार रु० या अधिक राशि देने वाले, (२) प्रतिष्ठित सदस्य—एक हजार रु० या अधिक धनराशि देने वाले, (३) सहायक सदस्य—आर्यसमाज के इतिहास के सब खण्डों का रियायती अग्रिम मूल्य देने वाले, (४) सम्माननीय सदस्य—विद्या, ज्ञान और सेवा के आधार पर मनोनीत व्यक्ति, (५) प्रतिनिधि सदस्य—विविध आर्यसंगठनों, सभाओं, आर्य शिक्षणालयों और अन्य आर्यसंस्थाओं द्वारा मनोनीत प्रतिनिधि, (६) साधारण सदस्य—दस रु० देकर केन्द्र की सदस्यता स्वीकार करने वाले।

इस योजना की रूपरेखा जब आर्यजनता के सामने आई तब जिन व्यक्तियों के मन मे इसके लिए सर्वप्रथम उत्साह पैदा हुआ, वे सदस्य बनने प्रारम्भ हो गए। योजना की विशालता को और अनुकूल साधनो के अभाव को देखकर कइयो के मन मे इस योजना की पूर्ति मे सन्देह भी स्वाभाविक था। इससे प्रारम्भ मे सदस्य बनाने मे कठिनाई का अनुमान लगाया जा सकता है, पर प० सत्यकेतु जी के दृढ सकल्प के आगे सब बाधाएं एक-एक कर पार होती गईं और काम आगे बढ़ता गया।

आर्यसमाज के प्रारम्भिक इतिहास की सामग्री एकत्र करना बहुत दुष्कर काम था। एक सौ से भी अधिक वर्ष पुरानी सामग्री कहाँ मिलती। वे व्यक्ति नही रहे। इतनी पुरानी पत्र-पत्रिकाओ की फाइले भी अब कहाँ। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश के मानचित्र म जो परिवर्तन आया उसके कारण भी बहुत सी सामग्री लुप्त हो गई। जिस पजाब मे आर्यसमाज का सब से अधिक कार्य था वह पाकिस्तान मे चला गया। आर्यसमाज के भवन, शिक्षणालय तथा अन्य गतिविधियों के सब केन्द्र ध्वस्त हो गए या इस प्रयोजन के नही रहे। आर्यसमाज के पुस्तकालय भी अग्नि की भेंट हो गए। इस प्रकार प्रारम्भिक इतिहास की सामग्री का प्रमुख आधार नष्ट हो गया। केवल एक ही आधार बचा—भारत स्थित ब्रिटिशकालीन प्राचीन अभिलेखागार और लन्दन स्थित ब्रिटिश म्युजियम, पब्लिक रिकार्ड आफिस और इण्डिया आफिस लाइब्रेरी। अग्रेजो ने अपने समय के उनकी दृष्टि से आवश्यक रिकार्ड वहाँ सुरक्षित रखे थे। दिल्ली स्थित नेशनल आरकाइव्स की छानबीन कर वहा से आवश्यक सामग्री और रिकार्ड प्राप्त कर उनकी प्रतिलिपियां या फोटो कापी तैयार करने का भार प० जी ने श्री पृथ्वीसिंह मेहता विद्यालकार को सौपा और लन्दन स्थित सामग्री की जाच पड़ताल के लिए स्वय लन्दन की यात्रा की। विशेष रूप से सन १८५७ के स्वाधीनता सग्राम मे ऋषि दयानन्द की भूमिका के सम्बन्ध मे तथा अन्य राजनैतिक आन्दोलनो मे आर्यसमाजियो के भाग लेने के सम्बन्ध मे महत्त्वपूर्ण सामग्री इन अभिलेखागारो मे ही सुरक्षित मिल सकती थी। प० जी ने लगभग दो मास तक लन्दन मे रहकर महत्त्वपूर्ण सामग्री एकत्रित की और वहाँ से लौटकर आर्यसमाज के इतिहास के लेखन मे लग गए। सौभाग्य से प० जी के प्रबुद्ध शिष्य प्रो० हरिदत्त वेदालकार का सहयोग भी उनको मिल गया। अब यद्यपि हरिदत्त वेदालकार भी दिवगत हो चुके हैं, परन्तु आर्यसमाज के इस सप्तखण्डीय बृहत् इतिहास मे इनका योगदान स्मरणीय रहेगा। प्रत्येक खण्ड मे उनके द्वारा कई अध्याय लिखे गए हैं। इसी प्रकार पाचवे खण्ड मे डा० भवानी लाल भारतीय का और सातवें खण्ड में श्री दत्तात्रेय तिवारी का सहयोग भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसी प्रकार विभिन्न स्थानो पर जाकर सम्बन्धित सामग्री

जाने मे ब० नन्दकिशोर विद्यावाचस्पति का उपयोग भी अनुपेक्षणीय है।

इस इतिहास के प्रत्येक खंड मे लगभग आठ सौ पृष्ठ हैं और प्रत्येक खंड मे औसतन तीस अध्याय हैं। एक-एक अध्याय एक-एक पुस्तिका के समकक्ष हैं। यो समझिये कि सौ-सौ पृष्ठों की सामान्य आकार की लगभग दो सौ पुस्तकें इन सातो खण्डों मे समाहित हैं।

प० सत्यकेतु जी अपने जीवनकाल मे ही ये सातो खण्ड प्रकाशित कर गए। सातवाँ खण्ड प्रकाशित होने के कुछ मास बाद ही एक भयकर कार दुर्घटना मे उनका प्राणान्त हो गया। मेरी आस्तिक बुद्धि कहती है कि परम प्रभु ने उनकी भयकर रुग्णावस्था मे इस इतिहास-यज्ञ की पूर्ति के निमित्त ही उनके जीवन की डोर बढ़ाई थी। तभी तो यज्ञ पूर्ण होने पर दुर्घटना के ब्याज से डोर टूट गई। भले ही डोर टूट जाए, परन्तु श्री प० सत्यकेतु विद्यालकार को—यद्यपि उन्होंने और अनेक चिरस्मरणीय ग्रन्थ लिखे हैं जिन पर उन्हे देशव्यापी ख्याति मिली है और अनेक स्पृहणीय पुरस्कार भी प्राप्त हुए—अमर करने के लिए यह आर्यसमाज का बृहद् इतिहास ही पर्याप्त है।

समय, स्थान, ग्रन्थ का कलेवर और अपनी शक्ति की सीमा को देखते हुए इन सातो खण्डो का संक्षिप्त परिचय देने का प्रयत्न करूगा।

प्रथम खण्ड (प्रारम्भ से लेकर सन् १८८३ तक)

इस खण्ड मे २३ अध्याय हैं जिनमे से २० अध्याय डा० सत्यकेतु जी ने लिखे हैं और तीन अध्याय प्रो० हरिदत्त ने। इनकी रूपरेखा इस प्रकार है।

प्रथम अध्याय

आर्य शब्द से ऋषि दयानन्द का क्या अभिप्राय था, इस विवेचन से ग्रन्थ प्रारम्भ होता है। ऋषि दयानन्द मानते थे कि मनुष्य जाति एक ही है और उसके आर्य तथा दस्यु दो भेद हैं। जो श्रेष्ठ गुण कर्म स्वभाव के लोग हैं वे आर्य हैं और आर्यावर्त में सदा से रहते आए हैं। आर्य नाम की कोई जाति या नस्ल नहीं है, जैसा कि पाश्चात्य विद्वान् मानते हैं। त्रिविष्टप (तिब्बत मे आदि सृष्टि हुई और वहाँ से आकर आर्यों ने ही इस देश को आबाद किया, इसको आर्यावर्त नाम दिया, इसकी नदियो, पर्वतो और स्थानो का नामकरण किया। आर्यों से पहले इस देश मे कोई आदिवासी जातियाँ रहती थी, या आर्य लोग किसी अन्य देश से आकर इस देश मे बसे, ऋषि इसका खण्डन करते हैं, क्योंकि समस्त ससार मे प्राचीनतम साहित्य आर्यों का ही है, और उस सारे साहित्य मे इस प्रकार का कोई सकेत नहीं है। हाँ, आर्यों के बाहर जाने के सकेत तो हैं।

इसी प्रकार भाषाओ के आधार पर भी पाश्चात्य विद्वानो ने मनुष्यो को अनेक जातियो मे विभक्त किया है। पर ऋषि का मन्तव्य है कि ससार की सब भाषाओ की जननी वैदिक भाषा है जिसे प्राचीन ऋषियो ने 'दैवी वाक्' कहा, और मनुष्यो की भाषा को मानुषी वाक्' कहा। मानव जाति की भाषाओ मे व्याकरण, छन्द, लय, अभिव्यक्ति आदि की जो समानता पाई जाती है उससे यही पता लगता है कि समस्त मानव जाति के पूर्वज एक ही परिवार के लोग थे, एक ही भाषा बोलते थे। फिर प्रदेश, जलवायु, पर्यावरण और उच्चारण-भेद के कारण भाषाओ मे विविधता पैदा हो गई।

ऋषि दयानन्द यह भी मानते थे कि प्राचीन आर्यावर्त अत्यन्त उन्नत था, सर्वत्र उनका सार्वभौम शासन था और अन्य देशो के राजा उनके अधीन माण्डलिक राजाओ की तरह थे। मनुस्मृति मे महाभारत मे, उपनिषदो मे और पुराणो मे इसके अनेक प्रमाण हैं। प्राचीन साहित्य मे आर्य राज्यो के सम्बन्ध मे स्पष्ट परिचय मिलता है। भारत की प्राचीन अनुश्रुति के अनुसार स्वायम्भव मनु ने— जो सृष्टि के प्रथम मानव माने जाते हैं, पृथ्वी को सात द्वीपो मे विभक्त किया था। जो इस प्रकार थे —जम्बु द्वीप, प्लक्ष द्वीप शाल्मलि द्वीप कुश द्वीप क्रौंच द्वीप, शाक द्वीप और पुष्कर द्वीप। प्राचीन साहित्य मे सप्तद्वीपा वसुमती शब्द का बारम्बार उल्लेख आया है। भारतवर्ष भी जम्बुद्वीप का ही भाग था। सम्भवत इसे आधुनिक एशिया महाद्वीप कह सकते है। मनु की सन्तान ही (मानव मात्र विभिन्न देशो मे पहुच कर आर्य मर्यादा पालन न करने के कारण असुर दस्यु म्लेच्छ आदि कहलाए। महाभारत मे जिन अनेक जनपदो का उल्लेख हुआ है। उनमे से कुछ ऐसे है जो भारतवर्ष के क्षेत्र के अन्तगत नही आते। जैसे—यवन, गाधार, चीन, तुषार, शक, पह्लव हारहूण, कम्बोज, दरद, बर्बर, लम्पाक, दर्धरक, तगण, बाह्लीक आदि। इनमे से अनेक राज्यो की सेनाए महाभारत के युद्ध मे कौरवो या पाण्डवो का पक्ष लेकर लडी थी। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ मे भी कई विदेशी राजा उपस्थित हुए थे।

इसी प्रकार प्राचीन ससार के विविध देशो मे कभी आर्य सभ्यता रही है। वहा आर्यों के ही धर्म और मर्यादाओ का पालन होता था। ज्यो-ज्यो इतिहास और पुरातत्त्व की नई-नई खोजें होती जा रही हैं, त्यों-त्यो इस बात की पुष्टि होती जा रही हैं। ईरान, ईराक, (सुमेरिया), मिस्र आदि जिन देशो की सभ्यता प्राचीनतम मानी जाती है, उन देशों में आर्यों की सस्कृति के और वैदिक देवताओ के उल्लेख मिले हैं। मिस्र के प्राचीन मन्दिरो मे और मूर्तियो मे वैदिक सस्कृति की छाप इतनी है कि इतिहासज्ञ इस समानता को देखकर चकित हुए बिना नही रहते। जिसे अब हम इस समय अफ्रीका महाद्वीप

कहते हैं उसे ही सम्भवत पुराणो मे कुशद्वीप कहा गया है। इस द्वीप के पुराण-वर्णित वर्णन को आधार बनाकर ही कैप्टेन स्पीक ने युगाण्डा के पास नील नदी के उद्गम की खोज की थी। मध्य अमेरिका (मैक्सिको) दक्षिणी अमेरिका और उत्तरी अमेरिका मे भी आर्य सस्कृति के अवशेष मिले हैं। अमरीका के मूल निवासी आज भी रेड इंडियन्स कहलाते है, यह क्या उनके भारतीय सस्कृति से अपरिचित न होने का प्रमाण नही है? आयुर्वेद के प्रवर्तक महर्षि धन्वन्तरि की ताजिकिस्तान, चीन, जापान, तिब्बत सोवियत सघ और पूर्वी एशिया के अनेक देशों मे आज भी विभिन्न रूपो मे पूजा और प्रतिष्ठा होने के प्रमाण मिले हैं। वाल्मीकि रामायण मे यह उल्लेख भी मिलता है कि लका का सालकटकट पाताल देश गया था। मय, इन्का और एजटेक सदृश प्राचीन अमेरिकन सभ्यताओ पर आधुनिक विद्वानो ने एशियाई सभ्यता का जो प्रभाव स्वीकार किया है, उसका कारण सम्भवत साल-कटकट के वशज ही रहे होगे।

महर्षि दयानन्द ने जिस चक्रवर्ती आर्य राज्य की कल्पना की है उसका अभिप्राय भी सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास मे स्पष्ट कर दिया है। आर्यों के चक्रवर्ती राज्य का यह अर्थ नही कि किसी अन्य राज्य की की सत्ता ही न रहे। वे सत्ता की इकाई 'ग्राम को मानते थे। सब ग्रामो को वे स्वायत्त और *स्वशासित देखना चाहते थे। ग्राम के ऊपर दस बीस सौ हजार ग्रामो के* सगठन हो और उन सब में राज्य कार्य चलाने के लिए राजसभाए हो। इसी प्रकार सम्पूर्ण ससार के लिए जो शासन सस्था हो, उसकी भी एक राजसभा रहे जिसे महर्षि ने सार्वभौम चक्रवर्ती महाराज सभा' नाम दिया है। यह एक तरह से आधुनिक सयुक्त राष्ट्र सघ जैसी चीज है। ऋषि वशानुगत राजा के बजाय निर्वाचित सभापति को ही राजा कहते थे। इस प्रकार वे सम्पूर्ण मानव समाज को 'आर्य' अर्थात श्रेष्ठ बनाना चाहते थे। किसी सम्प्रदाय विशेष के अनुयायियो के लिए उन्होने आर्य शब्द का प्रयोग नही किया। 'सारे ससार का उपकार करने' के लिए ही उन्होने आर्यसमाज की स्थापना की थी। वे भारत को पारस मणि कहते थे जिसके स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है। उनका विश्वास था कि जिस प्रकार इस देश ने कभी अतीत मे सारे ससार का अपने गुणो के कारण नेतृत्व किया था उसी प्रकार भविष्य मे भी करेगा। इसी कल्पना को साकार करने के लिए उन्होने आर्यसमाज की स्थापना की थी। यह थी वह वैचारिक पृष्ठभूमि जिसके आधार पर ऋषि ने आर्यसमाज की स्थापना का निश्चय किया।

इस विषय प्रवेश के साथ प्रथम अध्याय समाप्त होता है।

द्वितीय अध्याय

दूसरे अध्याय मे बताया गया है कि श्रीकृष्ण द्वारा महाभारत के माध्यम

से समस्त भारतवर्ष को एक सुदृढ केन्द्रीय सत्ता के अधीन करने से आगे लगभग ढाई हजार वर्ष तक किसी विदेशी आक्रमणकारी की इस देश पर हमला करने की हिम्मत नही हुई। परन्तु जब विलासिता और आपसी फूट बढ गई और केन्द्रीय राजशक्ति क्षीण हो गई तब विदेशियो के आक्रमण प्रारम्भ हो गए। मिस्र के इतिहास से पता लगता है कि वहाँ के राजा ओसिरिस ने महाभारत के लगभग ढाई हजार वर्ष बाद पूर्व दिशा मे अपने राज्य का विस्तार करने के लिए भारत पर आक्रमण किया। उसके बाद असीरिया की साम्राज्ञी ने आक्रमण किया। ईरान के के राजा हखामनी ने बाख्त्री (बैक्ट्रिया) और शकस्थान (सीस्तान) पर विजय प्राप्त कर हिन्दुकुश पर्वतमाला तक का प्रदेश हस्तगत कर लिया। लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व ईरान के हखामनी वश मे हो प्रतापी राजा दारयवहु या डेरियस दारा हुआ जिसने कम्बोज, पश्चिमी गाधार और सिन्ध पर भी विजय प्राप्त कर ली। ये सब प्रदेश भारत के ही अन्तर्गत थे। पहले कभी बाख्त्री और सीस्तान भी भारत के ही अग थे। सम्भवत यह पहला अवसर था जब आर्यावर्त के निवासियो को ईरान सम्राट् को अपना अधिपति स्वीकार करना पडा। उसके बाद ईसवी पूर्व चौथी सदी मे सिकन्दर का भारत पर जबर्दस्त आक्रमण हुआ और वह भारत के अन्दर पजाब की व्यास नदी तक आ गया। यद्यपि वह भारत के किसी भी स्थान पर अपना स्थायी शासन स्थापित नही कर सका, पर यह उस युग की केन्द्रीय राजशक्ति के क्षीण होते जाने का पर्याप्त प्रमाण है।

इस राजशक्ति के ह्रास के साथ और विदेशी आचार-विचार से सम्पर्क के कारण इस देश की धार्मिक और सामाजिक मर्यादाओ मे भी परिवर्तन आने लगा। यज्ञो मे पशुबलि की प्रथा चल पडी। एक ईश्वर के स्थान पर अनेक देवी-देवताओ की पूजा की परम्परा प्रारम्भ हुई। प्राचीन वर्ण-व्यवस्था यदि गुण कर्मानुसार थी, तो अब जन्म का महत्त्व बढने लगा। सम्भवत विदेशियो को अपनी सामाजिक आचार परम्परा से अलग रखने की भावना इसके मूल मे रही हो। पर इससे समाज मे ऊच नीच की भावना विकसित हुई तथा स्त्रियो और शूद्रो को विद्या पढने के अधिकार से वचित किया गया। तत्र-मत्र और जादू-टोना तथा अन्य अनेक अन्धविश्वास भी महाभारत के बाद आर्य सस्कृति मे प्रविष्ट होते गए।

तब धर्म मे आई इस विकृति को दूर करने के लिए प्रयत्न प्रारम्भ हुए। यज्ञो के जटिल कर्मकाण्ड, उनमे निरीह और मूक पशुओ की बलि और जन्मना ऊच-नीच की प्रवृत्ति के विरुद्ध एक ओर उपनिषदो के ऋषियो ने आवाज बुलन्द की, तो दूसरी ओर उपनिषत्काल के बाद उस प्रवृत्ति के विरुद्ध सगठित रूप से आदोलन करने वाले बौद्ध और जैन सम्प्रदाय अवतरित हुए। इन दोनो सम्प्रदायो

ने पशुबलि रूप मे हिंसा के ताण्डव का विरोध करने के लिए ही अहिंसा को परम धर्म स्वीकार किया और वेदो के नाम पर यज्ञीय कर्मकाण्ड और पशुबलि का समर्थन करने वालो के वेदो को प्रमाण मानने से इन्कार कर दिया। इन दोनो मतो ने ब्राह्मणो के एकाधिकार को तोड़ने के लिए अब्राह्मणो को अपना अनुयायी बनाया और जीवन की पवित्रता पर अधिक बल दिया। इन वेद विरोधी आदोलनो को जन समर्थन भी खूब मिला। जिसका परिणाम यह हुआ कि समाज और धर्म का नेतृत्व मनुष्यमात्र के हित की कामना करने वाले अब्राह्मणो के हाथ मे आ गया। इसी युग मे कई ऐसे सम्प्रदायों का भी जन्म हुआ जिन्होने अध्यात्मवाद नैतिकता आस्तिकता और वेदानुगामिता का खुल्लमखुल्ला विरोध कर भौतिकवाद और शरीरिक सुख को ही अपना जीवन दर्शन बनाया। ऐसे सम्प्रदायो मे वाममार्ग और चार्वाक के नाम गिनाए जा सकते है।

इन नए मतो मे नवीनता का और जनता को आकर्षित करने का उत्साह उत्साह था। इसीलिए वे भारत के बाहर भी लोकप्रिय हुए। जैन मत यद्यपि भारत के बाहर नही फैला पर बौद्ध मत ने योजनाबद्ध रूप से हिमालय और समुद्र के पार पहुंचकर भी अपने जीवन की पवित्रता तथा त्याग-तपस्या से उन देशो मे अपनी जड़ जमाई। धीरे धीरे इन दोनो मतो ने भारत की राजनीति मे भी दखल देना प्रारम्भ किया और राजशक्ति की सहायता से उन्हे अपने प्रसार मे सफलता भी मिली। इन मतो के आचार्यों ने जिस विचारधारा का प्रसार किया वह कुछ मान्यताओमे भिन्न होने पर भी मूलत आर्य विचारधारा ही थी। उन्होने सस्कृत के स्थान पर लोकसभाओ को और स्थापत्य मूर्ति निर्माण, सगीत और चित्रकला आदि भारतीय कलाओ का भी खूब प्रसार किया। परिणाम स्वरूप एशिया के बहुत बड़े भाग पर जो भारतीय सस्कृति की विजय पताका फहराई उसे एक तरफ से आर्य सस्कृति की ही विजय कहा जा सकता है। यह सास्कृतिक साम्राज्य सैकडो वर्ष बीत जाने पर आज भी विद्यमान है।

पर इन मतो की विचारधारा एकागी थी। व केवल भिक्षु और श्रमण बनने पर जोर देकर जीवन से पलायन कर निवृत्ति मार्ग का ससार की असारता का और उसके दु खमय होने का ही उपदेश करते थे। जिसके फलस्वरूप चातुर्वण्य व्यवस्था मे समाज के विभिन्न वर्णो क लिए जो कर्म विधान था वह क्षीण हो गया भिक्षु बन जाने पर खती कौन करता व्यापार कौन करता और देश की रक्षा के लिए सैनिक कौन बनता। निवृत्त मार्ग के उपासक की सासारिक प्रवृत्तियो स विरक्ति स्वाभाविक थी। धर्म विजय को धुन में सैन्य शक्ति की उपेक्षा हो गई और विदेशी आक्रमणकारियो के समक्ष हमारी राजशक्ति नहीं टिक सकी। भौतिक सुख के सब साधन उपलब्ध होने पर भिक्षु और श्रमण भी विलासी बन गए।

तब उसके भी प्रतिक्रिया आरम्भ हुई और मौर्य राज्य मे तथा शुगकाल मे

वदिक धम के पुनरु थान का आ दोलन चला इस युग मे जिस वदिक धम का पुनरु थान हुआ वह अनेक अशो मे प्राचीन वदिक धम से भि न था। तब तक विदेशियो के सम्पक मे और जन तथ बौद्ध विचारधारा के प्रभाव से प्राचीन वदिक धा ा मे काफी मिलावट हो गई थी इन दोनो मतो के अनुकरण मे ही उन महापुरुषो की पूजा प्रारम्भ हुई जिनमे लोकोत्तर गुण थ। निराकार प्रभु क स्थान पर प्रभु को साकार रूप दिया जाने लगा यज्ञो का कमकाण्ड खण्डित हो ही चका था उनका स्थान मूर्तिपूजा ने ले लिया और म दिरो का नया कमकाण्ड प्रारम्भ हुआ। विद्या के प्रभाव मे इस म दिर परम्परा को और अधिक बल मिला क्योंकि इसमे ज्ञान और कम के बजाय केवल भक्ति पर ही बल दिया गया जिससे शिक्षित अशिक्षित सभी आकर्षित हुए

इस नये वदिक धम की दो प्रधान शाखाए थी—भागवत और शव। भ गवत सम्प्रदाय के उपास्य देवता श्रीकृष्ण बने और शवो के शिव—जो एक तरह से बौद्ध और जन मत के प्रवतको के ही प्रतीक थे आगे जाकर इस भागवत धम के और शव धम के अनेक अव तर सम्प्रदाय भी बन गए भागवत धम के ही अ तगत विष्ण के अवतार के रूप मे कृष्ण के साथ राम की पूजा भी जुड गई और शिव के साथ भरव अ दि अ य रौद्र रूप देवताओ की कल्पना करके उनकी उपासना प्रारम्भ हो गई आचाय चाणक्य और महर्षि पतजलि जसे ि ग्गज विद्वान इसी युग मे हुए और उ होने वदिक मर्यादाओ की पुन स्थापना का भरसक प्रयत्न किया

तीसरा अध्याय

आय धम के इस पुन उत्कष का वणन करने के लिए एक अलग तीसरा अध्याय लिखा गया जिसमे उन राजाओ का उ लेख है जि होने अश्वमेध यज्ञ करके अपने साम्राज्य का विस्तार किया। इनमे शुग वश के पश्चात सातवाहन भार शिव और वाकाटक वश हुए जि होने भारत के बहुत बड भाग पर शासन किया। ये सब राजा आय सस्कृति को मानने वाले थे और वदशास्त्रा मे इनकी आस्था थी। इन राजाओं अ च द्रगुप्त समुद्रगुप्त कुमार गुप्त पुष्यमित्र विक्रमादित्य जसे अनेक प्रतापी राजा हुए जि होने शको कुषाणो पह्लवो और यवनो के आक्रमणो को निरस्त किया। पर आधुनिक इतिहास ग्र थो मे इन राजाओ की विजयो का बहुत कम उल्लेख मिलता है। इ ही आय राजाओ ने पूर्वी एशिया के अनेक देशो मे अपने राज्य स्थापित किए। सस्कृत का भी पुन प्रचार हुआ। जिन देशो मे ये आय उपनिवश बने उनके नाम इस प्रकार गिनाए जा सकते हैं—कम्बुज—वतम न कम्पूचिया कम्बोडिया, चम्पा—वतमान वियतनाम स्याम—वतमान थाइलण्ड मलाया—वतमान मलयेशिया स्वर्णद्वीप—वर्तमान बर्मा (सुम त्रा) यवद्वीप–वतमान

जावा—इण्डोनेशिया के अन्तर्गत। बोर्नियो मलयेशिया के अन्तर्गत। बाली—इण्डोनेशिया के अन्तर्गत, जिसे आज भी 'मन्दिरो का शहर' कहा जाता है। फिलिप्पीन और सेलेबस—दक्षिण पूर्व एशिया मे बोर्नियो के निकट। उपरला हिन्द—जिसमे अफगानिस्तान, मध्य एशिया, तिब्बत तथा उसके उत्तर मे स्थित मगोलिया चीनी तुर्किस्तान, खोतान आदि इन सब प्रदेशो मे उस समय के आर्य धर्म की छाप के अवशेष आज भी विद्यमान हैं।

इन विदेशो मे आर्य राज्य के विस्तार के अलावा विदेशी व विधर्मी जातियो को भी आर्य सस्कृति ने कम प्रभावित नही किया। किस प्रकार शक, हूण, यवन और पह्लव (पार्थियन) आदि इस देश की प्रचलित विचारधारा को अपनाकर भारतीय समाज के अग बनते गए और इस देश ने उन्हे पूरी तरह आत्मसात कर लिया यह भारत के गौरवशाली इतिहास का अग है जिसका प्राय अन्य इतिहासकार उल्लेख नही करते। इस समाजीकरण और पूण विलीनीकरण का प्रमाण यह है कि आज उन विदेशी जातियो का नाम तक यहा नही मिलता, यद्यपि उनकी सख्या नगण्य नही रही होगी। यह आर्यों की शक्ति और धर्म का चरम उत्कर्ष था जब केवल भारत मे ही नही प्रत्युत पूर्वी एशिया और पश्चिमी एशिया क अधिकाश देशो मे आर्यों के राजनीतिक प्रभुत्व की स्थापना हुई। बीच मे बौद्ध और जैन धर्म के प्रचार से आर्यधर्म को धक्का तो लगा, पर वह पुन नई जिजीविषा के साथ उठ खडा हुआ। जिन देशो का ऊपर उल्लेख हुआ है वे वद प्रामाण्य को स्वीकार करते थे, शास्त्रमर्यादा का पालन करते थे और याज्ञिक कर्मकाण्ड मे विश्वास रखते थे।

तभी सातवी सदी मे अरब मे इस्लाम के नाम से एक नई शक्ति का उदय हुआ। हजरत मुहम्मद साहब ने अपने अनुयायियो मे ऐसी जीवन शक्ति का सचार किया कि वे भी महत्वाकाक्षी बनकर अपनी शक्ति का उपयोग साम्राज्य विस्तार मे करने लगे। देखते ही देखते चन्द वर्षों मे उन्होने मिस्र और सीरिया को जीत लिया। अफ्रीका महाद्वीप के उत्तरी प्रदेशो पर आधिपत्य स्थापित कर लिया। फारस उनके कब्जे मे चला गया और उत्तर मे वक्षु नदी और पूर्व मे हिन्दुकुश पर्वतमाला तक वे छा गए। पूर्वी रोमन साम्राज्य की राजधानी कुस्तुनतुनिया और अफगानिस्तान भी उनका पादाक्रान्त होने से नहीं बचा। तब उन्होंने जलमार्ग से सिन्ध पर आक्रमण का प्रयत्न किया, पर उन्हे सफलता नही मिली। लगभग आधी सदी तक वे सिन्ध पर आधिपत्य का प्रयत्न करते रहे, पर विफल रहे। जब सिन्ध पर उनका अधिकार हो भी गया, तब भी चौथाई सदी तक अनेक आक्रमण करके भी सिन्ध से आगे नही बढ सके। गुजरात के प्रतिहार और चालुक्य नरेशों ने उन्हें आगे नही बढने दिया। धीरे-धीरे सिन्ध से भी उनका शासन समाप्त हो गया। उसके बाद पूर्व और उत्तर दोनों दिशाओं से उन्होंने आगे बढने का प्रयत्न किया,

पर कन्नौज नरेश यशोवर्मा ने और कश्मीर नरेश ललितादित्य ने उन्हे दोनो दिशाओ मे आगे बढने से रोक दिया। इन आर्य राजाओ ने क्षात्रशक्ति को उचित महत्त्व दिया और भारत की राजशक्ति को इतना सबल बना दिया कि विश्वविजयिनी अरब सेना को दो सदी तक उन्होने इस देश की धरती पर पाव नही जमाने दिया।

इस प्रकार इस प्रथम खण्ड के द्वितीय और तृतीय अध्याय मे जितनी अधिक सामग्री है वह श्री सत्यकेतु विद्यालकार जसे अनेक देशो के इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान् की कलम से ही सम्भव थी।

चतुर्थ अध्याय

चतुर्थ अध्याय मे उन विकृतियो का वर्णन है जिनके कारण आर्यधर्म धीरे-धीरे ह्रास की ओर चलता गया। बौद्ध धर्म भी आगे चल कर हीनयान, महायान, वज्रयान, तन्त्रयान और सहजयान मे परिवर्तित होता गया। जैनियो के भी दिगम्बर श्वेताम्बर, क्षुल्लक, तेरापथ और आमाणक आदि भेद बनते गए। इन सब मे गुह्य साधनाओ का महत्त्व बढता गया। गुरुमत्र की दीक्षा प्रारम्भ हुई। अन्तत भैरवी चक्र के रूप मे एक ऐसा सम्प्रदाय सामने आया जिसमे उचित-अनुचित, खाद्य-अखाद्य और गम्य-अगम्य का कोई भेद नही रहा। आध्यात्मिक साधना के रूप मे जिन गुह्यो और क्रियाओ को मान्यता मिली उनके उदाहरण खजुराहो और जगन्नाथ पुरी के मन्दिरो मे अकित अश्लील मूर्तिया मे मिल सकते हैं। जब काम-कला के विस्तार को ही अध्यात्म और साधना का अग मान लिया जाए, तब सामाजिक शक्ति मे, सत्य सनातन वैदिक धर्म मे, और राजकीय शक्ति मे ह्रास होगा ही। परिणामस्वरूप १२ वी सदी के अन्तिम चरण मे भारत पर तुर्कों और अफगानो का आधिपत्य प्रारम्भ हो गया।

तुर्क हूणो की ही एक शाखा के वशज थे। भारतीयो के प्रभाव से अफगानो और तुर्कों ने बौद्ध धर्म को अपना लिया था, पर हूणो ने यूरोप मे रोमन साम्राज्य को और भारत मे गुप्त साम्राज्य को छिन्न-भिन्न कर दिया था। दसवीं सदी के आसपास बौद्ध धर्मानुयायी तुर्कों ने अरब साम्राज्य पर हमले शुरू किए। अरब उनके सामने नही टिक सके, पर इस्लाम की जीवनी शक्ति के आगे धार्मिक दृष्टि से तुर्क पराजित हो गए—विजेता होकर भी उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया। उस समय गजनी का राज्य भी तुर्क साम्राज्य के अन्तर्गत ही था। गजनी के राजा सुबुक्तगीन ने अपने राज्य का विस्तार करने के लिए भारत पर आक्रमण किया। उसका मुकाबला करने के लिए राजा जयपाल ने भारी तैयारी की, पर सुबुक्तगीन को परास्त नही कर सका, तब पेशावर तक के प्रदेश पर तुर्कों का अधिकार हो

गया। प्राचीन समय मे यही गान्धार देश कहलाता था जो भारतीय संस्कृति का महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। सुबुक्तगीन के बाद उसके पुत्र महमूद गजनी ने भारत पर दूर दूर तक आक्रमण किए और वह अपनी विजय यात्रा मे थानेसर, कन्नौज, ग्वालियर सोमनाथ तक चढ आया। इन सबको विजय करने पर भी वह सीमावर्ती गान्धार प्रदेश के सिवाय भारत के किसी अन्य प्रदेश को गजनी साम्राज्य का अग नही बना सका। महमूद के बाद उसका पुत्र मसूद और मसूद के बाद उसके अन्य उत्तराधिकारी भी भारत पर बारम्बार आक्रमण करते रहे, परन्तु किसी को सफलता नही मिली। जब गजनी पर तुर्क साम्राज्य क्षीण हो गया, तब अफगानो न भारत पर हमलो का सिलसिला प्रारम्भ किया। इन्ही अफगानो मे शहाबुद्दीन गोरी बहुत महत्वाकाक्षी था। उसने दिल्ली के चौहानो तथा कन्नौज के राजाओ से युद्ध किया और उत्तरी भारत के एक बडे भाग पर कब्जा कर लिया। शहाबुद्दीन गोरी ने अपने सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक को अपने विजित भारतीय प्रदश का शासन करने के लिए भेजा। उसने गोरी की मृत्यु के पश्चात् स्वतन्त्र रूप से दिल्ली को राजधानी बना कर शासन किया। लगभग तीन सदी तक तुर्क अफगानो का शासन रहा। इनके उत्तराधिकारी अलाउद्दीन ने दक्षिणापथ तक अपनी विजय-यात्राए की, पर वह दक्षिणी भारत को स्थायी रूप से अपने शासन मे नही ला सका। उसने मेवाड और चित्तौड को भी हथियाना चाहा, पर इनकी स्वतन्त्र सत्ता कायम रही। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसकी अधानता मे आए प्रदेशो के अफगान शासको ने अपने आपको स्वतन्त्र घोषित कर दिया।

ये मुसलमान बादशाह साम, दाम, दण्ड, भेद से भारतीय जनता को इस्लाम की ओर आकर्षित करने का निरन्तर प्रयत्न करते रहे। जातिभेद के शिकार कुछ पिछले तबके के लोग मुसलमान बने भी, परन्तु सर्वभक्षी इस्लाम को विशेष सफलता नही मिली। उसके तीन कारण थे—(१) लगातार हमलो पर हमले झेलते हुए भी राजपूत राजाओ की शक्ति सर्वथा क्षीण नही हुई थी। वे अपने-अपने क्षेत्र मे इस्लाम से संघर्ष करते रहे। (२) वैदिक धर्म मे अनेक विकृतियां आ जाने पर भी मुसलमान बादशाह भारतीय जनता की अपने धर्म के प्रति आस्था नही डिगा सके। जिन देशो पर इस्लाम ने अब तक विजय प्राप्त की थी उनके निवासियो मे अपने धर्म के प्रति वैसी आस्था नही थी। (३) उस युग मे ऐसे अनेक सन्त और धर्माचार्य पैदा हुए जिन्होने जनता का मनोबल बनाए रखा। इन सन्तो ने जहा जाति-पाति पर करारी चोट की, वहाँ वैष्णवकालीन भक्ति का ऐसा स्रोत प्रवाहित किया कि उसमे सवर्ण-अवर्ण सभी बह गए। मध्ययुग मे इन सन्तो ने आर्य जाति की रक्षा के लिए जो कार्य किया, उसे भुलाया नहीं जा सकता। ये सन्त भी किसी एक प्रान्त मे नही, प्रत्युत भारत के लगभग सभी प्रान्तो मे हुए—इसे देखकर लगता है कि देश के अन्त करण मे सचमुच ही सांस्कृतिक एकता की एक अन्त सलिला चिरकाल

से प्रवाहित थी जो शुष्क नही हुई थी।

तभी सोलहवी सदी मे बाबर ने ताशकन्द से आकर भारत पर हमला किया। उसने तुर्क-अफगानो का शासन समाप्त कर मुगलो के आधिपत्य की परम्परा चलाई। उसके समय मुगलो का आधिपत्य पूर्व मे बगाल की खाड़ी तक और उत्तर में हिमालय से मालवा तक स्थापित हो चुका था, पर उसका उत्तराधिकारी हुमायू निर्बल निकला। अफगानो ने और राजपूतो ने फिर अपने-अपने स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिये। तब अकबर आया, जिसने भारत मे सचमुच मुगल शासन की जड जमाई। उसे तुर्क-अफगानो और राजपूतो की राजशक्तियों से एक साथ लोहा लेना था। यह कठिन था। इसलिए उसने राजपूत राजाओ का सहयोग लेने का प्रयत्न किया, जिसमे उसे सफलता मिली। अकबर ने अपने राज्य मे राजपूतो को ऊचे पद दिये और उन्ही की सैन्यशक्ति से उसने तुर्क-अफगानो पर विजय प्राप्त की, पर मेवाड नरेश महाराणा प्रताप ने उसकी अधीनता स्वीकार नही की, वे अन्तिम दम तक सघर्ष करते रहे। तुर्क अफगान शासन मे भी मुस्लिम वर्ग का ही शासन था, पर उन्होंने राजपूत राजाओ या अन्य हिन्दुओ को कभी ऊचा स्थान नही दिया। अकबर की सफलता का रहस्य हिन्दू राजाओ के सहयोग पर ही निर्भर था। उसने राजा टोडरमल को दीवान या अर्थ सचिव बनाया। राजा मानसिंह को अफगानिस्तान जैसे मुस्लिम देश का शासक बनाया और महाराजा जयसिंह को सेनापति बनाया। इस तरह अकबर के शासन को पूर्णत मुस्लिम शासन कहना कठिन है।

अकबर के बाद जहागीर और शाहजहा ने भी हिन्दुओ के प्रति प्राय वही नीति अपनाई, पर औरगजेब ने उस नीति का परित्याग कर भारत को इस्लामी राज्य बनाने का प्रयत्न किया। उसने हिन्दुओ पर जजिया टैक्स लगाया, विश्वनाथ सोमनाथ और मथुरा के प्रसिद्ध हिन्दू मन्दिर तोडे, और हिन्दुओ के धार्मिक क्रिया-कलाप पर भी प्रतिबन्ध लगाये। हिन्दुओ को उच्च पदो से हटाकर मुसलमानो को उनके स्थान पर नियुक्त किया। उसकी इस कट्टरता के विरुद्ध स्थान स्थान पर विद्रोह हुए। दक्षिण मे छत्रपति शिवाजी, राजस्थान मे राणा राजसिंह और दुर्गादास राठौर तथा पजाब मे सिखो ने उसके विरुद्ध हथियार उठाए। उसकी हिन्दू विरोधी नीति ने विशाल मुगल साम्राज्य को खण्ड-खण्ड कर दिया। जाटों ने मथुरा, आगरा, भरतपुर मे, मराठो ने दक्षिण पथ के अलावा अटक से कटक तक और पजाब मे सिखो ने उसकी सैन्यशक्ति को मात दी और मुगल साम्राज्य को खोखला कर दिया। नादिरशाह के आक्रमण से मुगलो की रही सही शक्ति भी नष्ट हो गई। तब दिल्ली का बादशाह मराठो के हाथ की कठपुतली मात्र रह गया। आर्यों की इस शक्ति के पुनरुत्थान मे समर्थ गुरु रामदास और गोस्वामी तुलसीदास

तथा गुरु नानक जैसे सन्तो के योगदान को अस्वीकार नही किया जा सकता।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि बारहवीं सदी से इस देश मे जो मुस्लिम शासन स्थापित हुआ था, वह अठारहवी सदी आते आते लड़खड़ा गया। भारत की राजशक्ति मुख्यत हिन्दुओ के हाथ मे आ गई पर उनके हाथ मे भी यह शक्ति देर तक स्थिर नही रह सकी। तब एक विदेशी विधर्मी जाति ने भारत मे अपनी शक्ति का विस्तार प्रारम्भ कर दिया। इससे पहले सब हमले हिन्दुकुश पर्वतमाला को पार करके होते रहे थे पर यह हमला समुद्री मार्ग से हुआ था। अग्रेज जाति ईसाई मत को मानने वाली थी। धीरे धीरे उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्ध तक इस जाति ने प्राय सम्पूर्ण भारत मे अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

पांचवा अध्याय

पाचवा अध्याय ब्रिटिश शासन के सूत्रपात से ही प्रारम्भ होता है। पन्द्रहवी सदी तक यूरोप के लोगो का बाहरी दुनिया से परिचय नहीं था। उस युग मे दिग्दर्शक यन्त्र के अभाव मे चप्पुओ से खेकर नावो द्वारा समुद्रो मे दूर दूर तक आना-जाना सम्भव नही था। इसलिए यूरोप के लोगो के लिए एशिया या अफ्रीका मे अपन सामाज्यो का विस्नार सम्भव नही हो सका पर पन्द्रहवी सदी मे स्थिति मे परिवर्तन आया। इससे पहले यूरोप और एशिया के मध्य व्यापार इटली, सिकन्दरिया और बेरूत के माध्यम से होता था। यूरोप मे भारत के मसालो चन्दन हीरे-मोती और कपड़ो का भारी माग थी। इस सारे व्यापार पर अरब व्यापारियो का एकाधिकार था। तब तक स्वेज नहर नही बनी थी। सब से पहले पुर्तगालियो ने कल्पना की कि अफ्रीका का चक्कर काटकर भारत पहुचा जा सकता है। उन्होने अभियान प्रारम्भ किया। अन्त मे वास्कोडिगामा को भारत पहुचने मे सफलता मिल गई। इस प्रकार जब एशिया और यूरोप के मध्य व्यापार के लिए समुद्री मार्ग खुल गया, तब यूरोप के अन्य देश भी इस दिशा मे आगे बढे। हालैण्ड, फ्रास, ब्रिटेन आदि देशो में इस पूर्वी व्यापार को हस्तगत करने के लिए व्यापारिक कम्पनिया बनी। उन्होने भारत और अन्य एशियाई देशो मे अपनी व्यापारिक कोठिया स्थापित की। सोलहवी और सतरहवी सदी में इस व्यापार मे होड़, लग गई। पहले पुर्तगालियो ने भारत मे राजशक्ति स्थापित करने का प्रयत्न किया। मुगलों के साथ उनका सघर्ष हुआ, पर दक्षिण में मराठो के उत्कर्ष के कारण उन्हें सफलता नहीं मिली। फिर हालैण्ड ने एशिया में अपने पांव जमाने का प्रयत्न किया। उसे इण्डोनेशिया में सफलता मिल गई। तब अठारहवी सदी में नैपोलियन के उदय के साथ फ्रासीसी इस क्षेत्र में आगे बढे पर वे भी भारत मे पांडीचेरी और चन्द्रनगर मे ही अपना शासन स्थापित कर सके। पुर्तगालियो को गोवा, दमन और दीव टापुओ पर ही

सन्तोष करना पड़ा। भारत मे मुगलशक्ति ज्यो-ज्यो क्षीण होती गई, त्यो-त्यो अंग्रेज अपने कूटनीतिक कौशल से राजशक्ति हथियाते गए।

यूरोपीय शक्तियो के एशियायी देशो मे हावी होने का कारण यह नही कि वे सास्कृतिक दृष्टि से या अन्य किसी दृष्टि से अधिक उन्नत थे। उनका आर्थिक और औद्योगिक जीवन एशियाई देशो से अधिक उन्नत नही था। पर जिन कारणो से यूरोप की स्थिति मे परिवर्तन आया उन्हे तीन भागो मे विभक्त किया जा सकता है— (१) ऐसे यान्त्रिक आविष्कार जिनसे मानवीय श्रम की बचत हो। (२) जल, कोयला और बिजली से यन्त्र चलाने की शक्ति का ज्ञान। (३) रसायनशास्त्र और विज्ञान की नई विधियो का आविष्कार। इस औद्योगिक क्राति से और नये वैज्ञानिक आविष्कारो स पश्चिमी यूरोप के देशो के हाथ मे ऐसी शक्ति आ गई जिसका उपयोग कर वे अन्य देशो पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर सकते थे। तभी वे एशिया, अफ्रीका और अमरीका मे अपने उपनिवेश स्थापित करने मे सफल हो सके।

इस औद्योगिक क्राति के साथ वहा राज्यक्रान्तियो का सिलसिला भी प्रारम्भ हुआ जिससे वहा क लोगो मे सैन्य सगठन, युद्धनीति और शासन व्यवस्था सम्बन्धी विचारो मे भी परिवर्तन आ गया। इससे उन्हें पिछड़े हुए देशो पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना सरल हो गया। अठारहवी सदी मे यूरोप मे जब यह राजनीतिक सामाजिक और औद्योगिक तथा वैचारिक क्रान्ति हो रही थी, तब भारत मे मुगल शक्ति के क्षीण हो जाने के कारण ऐसा केन्द्रीय सुदृढ शासन नही रहा था जो भारत का राजनीतिक एकता की ओर प्रेरित कर सके। मराठो, जाटो, राजपूतो और सिखो के रूप मे जिस आर्यशक्ति का उदय हुआ था, उसमे भी हिन्दुत्व या आर्यत्व के नाम पर समग्र देश को एक सूत्र मे बाधने की कल्पना का अभाव था। उस समय सामन्तवादी शासन व्यवस्था के कारण परस्पर वैमनस्य ही अधिक था, सौमनस्य कम। इसलिए न तो दृढ केन्द्र स्थापित हो सकता था और न ही न्याय और समता पर आधारित सुदृढ सामाजिक सगठन। इसलिए अ ग्रेजो के आधिपत्य और ईसाई धर्म के प्रचार के कारण भारतीय आर्यों के धर्म और सस्कृति पर जो आक्रमण हुआ, वह अत्यन्त शक्तिशाली सिद्ध हुआ। उसके पीछे राजशक्ति तो थी ही, ज्ञान-विज्ञान की उत्कृष्टता, यान्त्रिक शक्ति और नये विचारो का बल भी था। इन्ही तीनो चीजो का लाभ ईसाई धर्म प्रचारको को भी मिला। वे भारतीयो को सुगमता से अपने धर्म का अनुयायी बनाने लगे। जो भारतीय इससे पहले प्रबल विदेशी आक्रमणों के सामने विचलित नही हुए थे और अपने धर्म और सस्कृति के प्रति दृढ आस्थावान् रहे थे, अब उनकी वह आस्था चलायमान होने लगी। अंग्रेजों की सुदृढ शासन और कानून की व्यवस्था देखकर

उस समय के बहुत से शिक्षित और प्रबुद्ध भारतीय तो अंग्रेजों के शासन को भारत के लिए वरदान तक समझने लगे।

तब जैसे यूरोप में वैचारिक नवयुग आया, वैसे ही भारत मे भी। अंग्रेजों ने भारत मे सुव्यवस्थित शासन के साथ रेल, डाक, तार आदि के माध्यम से राजनीतिक एकता भी स्थापित की और जिस तरह लोकतन्त्र, समाजवाद और राष्ट्रीय एकता की लहर यूरोप मे चली, वैसी ही लहर भारत मे भी चली। अंग्रेजी के पठन-पाठन से इस लहर को बल मिला। अंग्रेजी भाषा के कारण भारत का अन्य देशो से भी घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित होने लगा।

नवयुग के इन नये विचारो की लहर दो रूपों मे चली। पहले शिक्षा के केन्द्र मदरसे व पाठशालाएं हुआ करती थी जिनका सचालन धार्मिक सस्थाओ द्वारा किया जाता था। शुरू मे अंग्रेज शासक भी इसी मन्तव्य के थे कि भारतीयो को अरबी, फारसी और सस्कृत की ही शिक्षा दी जाए उन्हे अंग्रेजी पढाने की जरूरत नही। पहले आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयो मे भी लैटिन और ग्रीक की शिक्षा को ही अधिक महत्त्व दिया जाता था। इसीलिए वारेन हेस्टिंग्स ने सन् १७८१ मे कलकत्ते मे एक मदरसे की स्थापना की जिसमे अरबी, फारसी के उच्चतम अध्ययन की व्यवस्था थी। सन् १७८४ मे सर विलियम जोन्स ने एशियाटिक सोसायटी आफ बगाल की स्थापना की जिसका उद्देश्य भारत के प्राचीन ज्ञान का अनुशीलन था। काशी मे सन् १७९२ मे सस्कृत कालेज की स्थापना हुई जिसके प्रिंसिपल सस्कृतभक्त अंग्रेज बने।

ईसाई मिशनरियो का विचार था कि भारत मे ईसाइयत के प्रचार के लिए अंग्रेजी की शिक्षा बहुत सहायक सिद्ध हो सकती है। इसीलिए उन्होंने अपने प्रभुत्व वाले बगाल और मद्रास प्रान्त मे ऐसे शिक्षणालय प्रारम्भ किए जहाँ अंग्रेजी के साथ इतिहास, भूगोल, गणित और भौतिक विज्ञानो की शिक्षा की भी समुचित व्यवस्था थी। इसी समय पादरियो ने भारत की विभिन्न भाषाओ मे बाइबिल का अनुवाद करवाना भी प्रारम्भ किया। इससे भारतीय भाषाओ के गद्य साहित्य के विकास मे बहुत सहायता मिली। इन विद्यालयो की ओर अनेक विचारशील लोग भी आकृष्ट हुए। राजा राममोहन राय और उनके साथियो ने हिन्दू कालेज की स्थापना की, जो बाद मे प्रेजिडेन्सी कालेज के नाम से विख्यात हुआ। अंग्रेजी शासन के विस्तार के साथ ऐसे शिक्षणालयो का भी विस्तार होता गया। इनमे शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा ही रखी गई। भारतीयो ने परायो से ज्ञान-विज्ञान को ग्रहण करने मे कभी सकोच नही किया। इसीलिए यदि इन शिक्षणालयो मे आधुनिक ज्ञान-विज्ञान सीखने का माध्यम भी अंग्रेजी के बजाय भारतीय भाषाओं

को रखा जाता तो, अधिक अच्छा होता। आखिर फ्रान्स, जर्मनी, सोवियत सब और जापान आदि देशो ने बिना अग्रेजी के भी ज्ञान-विज्ञान की दिशा मे कम प्रगति नही की। परन्तु अग्रेजी को माध्यम बनाने के पीछे अग्रेजो का विशेष उद्देश्य भी था जो बाद मे मैकाले के द्वारा स्पष्ट रूप से फलीभूत हुआ। वह था भारतीयो को मानसिक दृष्टि से गुलाम बनाना। अग्रजी की शिक्षा अग्रेजो ने किसी भी उद्देश्य से प्रारम्भ की हो, पर उसका यह लाभ भी हुआ कि उस युग मे यूरोप मे, और स्वय ब्रिटेन मे भी, जिस बुद्धि-स्वातन्त्र्य, मानवाधिकार, राष्ट्रीयता, लोकतन्त्रवाद और सब के प्रति न्याय की भावना प्रतिपादित की जा रही थी, उन प्रगतिशील विचारो की ओर शिक्षित भारतीयो का भी रुझान होने लगा।

इसी नवीन शिक्षा ने अनेक देशभक्त भारतीयो का ध्यान अपने देश के प्राचीन लुप्त गौरव की ओर खीचा। परिणाम स्वरूप सरकार द्वारा अपने शिक्षणालयो मे भी सस्कृत और प्राचीन भारतीय वाडमय के वैज्ञानिक ढग से अध्ययन की परम्परा चली। पहले केवल पुराने ढग के पडित ही सस्कृत के अध्ययन मे प्रवृत्त होते थे, अब नवीन यूनिवर्सिटियो मे उसके अध्ययन से नवशिक्षित भारतीयो मे भी अपने प्राचीन साहित्य के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई और वे भारतीय सस्कृति के उन आदर्शों को पुनरुज्जीवित करने के लिए उद्यत हुए। उसी युग में यूरोप के अनेक देशो का सस्कृत से प्रथम परिचय हुआ तो यूरोप के लोग उसके साहित्य की गरिमा और सौन्दर्य से चमत्कृत हो उठे। तब तो जैसे वहा भी सस्कृत मे निहित ज्ञान-विज्ञान को अधिक से अधिक मात्रा मे ग्रहण करने की लालसा बढ गई। वे यह भी समझ गए कि भारतीय बेशक अग्रेजो के गुलाम बन गए, पर धर्म सस्कृति अध्यात्म, दर्शन तथा अन्य अनेक विषयो मे वे आज भी ससार का नेतृत्व कर सकते हैं। इधर भारतवासी अग्रजी के माध्यम स मानसिक दासता के शिकार होते जाते थे, उधर विदेशो मे उसके प्राचीन साहित्य की ओर, और वेदो की ओर, रुचि बढती जाती थी।

इस नवयुग प्रवतन ने भारतीय भाषाओ क साहित्य के विकास मे भी बहुत योग दिया। कागज और प्रेस के आविष्कार से पुस्तके छापने मे और उनका अधिक से अधिक प्रचार करने मे सहायता मिली। नई नई पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाए सामने आने लगी जिससे सर्व साधारण को भी अपने ज्ञान मे वृद्धि करना सुगम हो गया। भारत के प्राचीन साहित्यकार प्राय पद्य मे ही रचना किया करत थे। गणित, ज्योतिष और आयुर्वेद के ग्रन्थ भी पद्यमय ही होते थे। छापाखाना आ जाने पर गद्य ग्रन्थो को लिखना और उनको प्रचारित करना सरल हो गया। भारतीय भाषाओं मे गद्य लिखने की प्रवृत्ति तेजी से बढ चली। इस साहित्य ने नव जागरण में भी सहायता पहुचाई। सर्व प्रथम बगाल मे ब्रिटिश शासन आने के कारण बगला भाषा में ही न केवल अनेक अग्रेजी पुस्तको का अनुवाद हुआ, बल्कि अनेक

मौलिक ग्रन्थ लिखे गए। बंगला भाषा मे नई शैली के काव्य, नाटक और उपन्यास भी लिखे जाने लगे। इन लेखकों मे अधिकांश जहां अंग्रेजी भाषा के ज्ञाता थे, वहां पाश्चात्य साहित्य से भी परिचित थे। इसी युग मे बंकिमचन्द्र का 'आनन्द मठ' नामक उपन्यास लिखा गया जिसने बंगाल मे राष्ट्रीयता और स्वाधीनता की भावना भर दी। उसमे निहित 'वन्दे मातरम्' गीत तो क्रांतिकारियों का गुरुमंत्र ही बन गया। कितने ही क्रांतिकारी 'वन्देमातरम्' का नारा लगाते हुए फांसी के फन्दे पर झूल गए। हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं मे भी इसी प्रकार मत का विस्फोट हुआ। रेलों, सड़कों और नहरों के निर्माण ने तथा ज्ञान विज्ञान की शिक्षा देने वाले स्कूलों कालेजों ने, कल-कारखानों ने, पत्र पत्रिकाओं ने और प्रगतिशील साहित्य की रचना ने भारत मे उसी नवयुग का श्रीगणेश कर दिया जिस प्रकार का नवयुग यूरोप के देशों मे अठारहवीं सदी मे प्रारम्भ हुआ था।

भारतीय इतिहास मे एक बात विशेष ध्यान देने की है। वह यह कि आर्य (हिन्दू) धर्म को तीन प्रबल शक्तियों से लोहा लेना पड़ा और उसमे उसे सफलता मिली। सब से पहले बौद्ध धर्म से लोहा लिया, फिर इस्लाम से लोहा लिया फिर ईसाइयत से लोहा लिया। इन तीनों मतों के पीछे राजशक्तियां थी उनके अनुयायियों मे अपने धर्म के प्रचार के लिए धन बल की भी कमी नहीं थी पर इन तीनों से विजय पाने मे आर्यों को सफलता मिली। अंग्रेजों के समय आर्य धर्म और आर्य संस्कृति पर जिस प्रच्छन्न और मनोवैज्ञानिक ढंग से आक्रमण प्रारम्भ हुआ, वह सब से जबर्दस्त था। ईसाई प्रचारकों को राजशक्ति के साथ ज्ञान विज्ञान और औद्योगिक क्रांति का बल भी प्राप्त था। इसके अतिरिक्त भारत मे ईसाईयत के प्रचार में केवल ब्रिटेन की ही नहीं, प्रत्युत यूरोप के सभी देशों की रुचि थी, क्योंकि वे सभी ईसाई मतानुयायी थे। इसलिए इस आक्रमण की धार कहीं अधिक पैनी थी।

ऐसे समय आर्य धर्म और आर्य संस्कृति की रक्षा के लिए इस देश मे अनेक सुधारक महापुरुष हुए, पर उनमे सब से विलक्षण और सब से मुख्य हैं— ऋषि दयानन्द। महर्षि दयानन्द सरस्वती अंग्रेजी नहीं जानते थे, न ही उन्हें तथाकथित प्रगतिशील पाश्चात्य साहित्य को पढ़ने का अवसर मिला था। वे संस्कृत के पंडित थे और वेदादि शास्त्रों का गहन अध्ययन करके इस परिणाम पर पहुंचे थे कि उनके समय का हिन्दू समाज सत्य सनातन वैदिक धर्म से भटक चुका है। उन्होंने यह भी कहा कि पाश्चात्य जगत् ने ज्ञान विज्ञान में जो उन्नति की है, उससे कहीं अधिक उन्नति प्राचीन आर्य कर चुके थे। भारत कभी संसार का शिरोमणि था। उसे शिरोमणि बनना है। इसी भावना को लेकर विदेशी संस्कृति और विधर्मियों के सभी प्रकार के आक्रमणों को विफल करते हुए भारत को पुन वेद मार्ग पर

प्रतिष्ठित कर प्राचीन गौरवपूर्ण पद तक पहुचाने के लिए प्रबल आदोलन के रूप में उन्होने आर्यसमाज की स्थापना की। इस नये आदोलन ने आर्य जाति मे नये प्राणो का सचार किया और आर्य धर्म पर सभी प्रकार के आक्रमणो का सामना करने मे उसे समर्थ बनाया। इस वक्तव्य के साथ पाचवा अध्याय समाप्त होता है।

छठा अध्याय

छठे अध्याय मे, ऋषि दयानन्द के कार्य क्षेत्र मे अवतीर्ण होने से पहले देश की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक दशा कैसी थी, यह बताया गया है। क्योकि उन्नीसवी सदी के मध्य भाग मे भारत की उन परिस्थितियो को बिना समझे ऋषि दयानन्द के कर्तव्य का सही मूल्याकन नही किया जा सकता। इस विषय मे सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि सन् १७५७ मे प्लासी के युद्ध के बाद भारत मे अग्रेजी राज का सूत्रपात हुआ। यह भी सही है कि इसके बाद प्राय हर दस वर्ष बाद अग्रेजी शासन के विरुद्ध कोई न कोई जबर्दस्त आदोलन चलता रहा। पर चमत्कार की बात यह है कि उन आदोलनो के बावजूद एक सदी से भी कम समय मे अग्रेजो ने समस्त भारत पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। इससे पूर्व कभी किसी अन्य विदेशी आक्रमणकारी न भारत के इतने बडे भूभाग पर अपनी विजय पताका फहराई हो, इतिहास मे इसका प्रमाण नही मिलता। यह पहला अवसर था जब भारत की राजशक्ति व क्षात्रबल पूर्णत पराजित हो गए थे। कश्मीर से कन्याकुमारी तक और सिन्ध बिलोचिस्तान से लेकर असम तक सर्वत्र अग्रेजो का अखण्ड शासन था, और भारत के समस्त राजकुल, राजनेता तथा विचारशील व्यक्ति अपने देश की इस दुर्दशा से स्तब्ध और किंकर्तव्यविमूढ थे। देश मे पहली बार ऐसा शासन स्थापित हुआ था जो पूर्णत विदेशी था और जिसका प्रयोजन इस देश का शोषण करना था। यह राजनीतिक दुर्दशा की पराकाष्ठा थी।

मुगलो के शासनकाल मे भी ग्रामो की स्वायत्तता और ग्राम पचायते अक्षुण्ण थी, परन्तु अग्रेजो ने उन्हे समाप्त कर दिया। मालगुजारी वसूल करने का काम उन व्यक्तियो को सौंपा गया जो अधिक से अधिक मालगुजारी वसूल कर सके। इसके लिए नीलामी की प्रथा जारी की गई। जो सब से ऊची बोली बोलता, उसी को यह अधिकार दे दिया जाता। इस तरह जागीरदारो की एक नई श्रेणी का का विकास हुआ और ग्राम पचायतें क्षीण हो गईं। वशक्रमानुगत एकतन्त्र राजाओं के स्वेच्छाचारी शासन मे भी ग्रामों की स्वायत्तता नष्ट नही हुई थी। पर अब एक ऐसा विदेशी शासन स्थापित हुआ जो सर्वथा निरकुश था। इस निरकुश शासन के विरुद्ध आन्दोलन भी हुए, पर वे सफल नहीं हो सके। इन आन्दोलनो मे सब से जबर्दस्त आन्दोलन सन् १८५७ में हुआ। उस समय ऋषि दयानन्द की आयु ३३

घर्ष की थी। इसलिए ऐसा नहीं लगता कि इतनी बड़ी राज्यक्रान्ति से वे अप्रभावित रहे हो और उन्होने उसमे कोई सक्रिय भाग न लिया हो। पर ऋषि ने स्वय अपनी आंखो के सामने उस राज्यक्रान्ति को विफल होते तो देखा ही। उन्होने यह भी देखा कि विभिन्न राजकुलो के राजा हिन्दू होते हुए भी परस्पर एकता अनुभव नही करते। अवध, बगाल और हैदराबाद के नवाबो ने मुस्लिम होते हुए भी उस राज्यक्रान्ति मे सहयोग नही दिया। कुछ राजाओ ने तो अ ग्रेजो का ही साथ दिया। अर्थात् देश म एक राष्ट्र की भावना का अभाव था और उसके लिए ऐक्यबद्ध होकर सघर्ष करने करने की भावना विकसित नही हुई थी।

सतरहवी सदी मे भारत आर्थिक दृष्टि से पाश्चात्य देशो से पीछे नही था। पर अ ग्रेजो ने किसानो और मजदूरो का शोषण करके उन्हे विपन्न बना दिया। ग्रामीण उद्योग धन्धे समाप्त कर दिए। कल-कारखाने खोलकर लोगो को बेकार कर दिया। यूरोप मे औद्योगिक क्रान्ति होने पर भी अग्रेजो ने इस देश मे नये-नये उद्योगो का विस्तार नही होने दिया। बढिया कपडा तैयार करने वाले जुलाहो के अ गूठे कटवा दिये और यहा के वस्त्र-उद्योग को समाप्त कर मानचेस्टर और लकाशायर की कपडा मिलो मे बना कपडा यहा बेचना प्रारम्भ किया। यहाँ से कच्चा माल कौडियो के दाम ले जाकर उससे फिनिश्ड माल तैयार कर खुब महगे दामो पर यहा बेचते। भारत से आयात किए जाने वाले माल पर ६० से ८० प्रतिशत तक कर लगा दिया और ब्रिटिश माल के निर्यात को खुली छूट दी कुछ प्रकार के वस्त्रो पर तो आयात कर मे १००० प्रतिशत तक वृद्धि कर दी गई। आयात-निर्यात की इस भेदभावपूर्ण नीति से भारत का आर्थिक असन्तुलन बढता गया और उसे ठीक करने के लिए भारत की बहुमूल्य सम्पत्ति बडी मात्रा मे ब्रिटेन भेजी जाती रही।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी को भारत के विविध राज्यो को विजय करने और उन पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने मे जो कुछ भी खर्च करना पडा, वह सब भारत पर लाद दिया गया। अफगानिस्तान, बर्मा, चीन, ईरान, मिश्र आदि देशो पर ब्रिटिश आधिपत्य की स्थापना के लिए भारतीय सेनाओ का प्रयोग किया गया और उन पर जो जो खर्च हुआ, वह सब भारत के खाते मे लिखा गया। इस प्रकार भारत पर ऋण की राशि बढती रही और उसे 'राष्ट्रीय ऋण' कहा गया। यह खर्च किया अग्रेजो ने, अपनी साम्राज्यवादी लिप्सा पूरी करने के लिए, उसका दण्ड भुगता भारत ने। भारत मे जो अग्रेज अफसर थे उनके वेतन, पेंशन आदि सब भारत से ही वसूल किए जाते। नमक पर ३०० प्रतिशत कर लगाया गया जिससे प्रत्येक व्यक्ति के दैनिक उपयोग मे आने वाली वह चीज बहुत महगी हो गई। उस समय ब्रिटेन मे नमक का मूल्य ३० शिलिंग प्रति टन था, जबकि भारत मे २१

पौण्ड प्रति टन। इगलैण्ड की तुलना में भारत में उत्पन्न नमक भारत मे ही १४ गुना महगा कर दिया गया और इंगलैण्ड से नमक लाकर यहाँ बेचा जाने लगा। इस व्यापार का सारा मुनाफा अग्रेज व्यापारियो को प्राप्त होता था। इसी धाधली को देखकर महात्मा गाधी ने इस कानून को तोडने के लिए नमक सत्याग्रह प्रारम्भ किया था। परन्तु महात्मा गाधी से भी ५० साल पहले ऋषि दयानन्द ने 'सत्यार्थप्रकाश' के प्रथम सस्करण में नमक कर हटाने का आग्रह किया था। पटसन, नील और चाय की खेती पर अग्रेज व्यापारियो का एकाधिकार था ही।

उसी काल मे, जिन गरीब खेतिहर मजदूरो और निचले तबके के लोगो ने सन १८५७ मे विद्रोहियो का साथ दिया था उनको प्रयत्नपूर्वक बेकार और बेरोजगार बना दिया गया। फिर उन्हे गिरमिटिया कुली बनाकर बडी सख्या मे फीजी, मारीशस, त्रिनीदाद, गुयाना, जमैका, सुरीनाम आदि ब्रिटिश उपनिवेशो मे ले जाया गया और वहाँ उनसे पशुओ मजदूरो की तरह काम लिया गया। इन सब उपनिवेशो मे गोरो के विशाल खेत थे और उन पर उनका एकाधिकार था। इन मजदूरो को ५ साल के बाद वापस स्वदेश भेजने के समझौते पर हस्ताक्षर करवा के ले जाया गया, पर वे ५ साल कभी पूरे नही हुए। इन मजदूरो पर जैसे अत्याचार किए गए उसकी कथा बडी कारुणिक है।

ऋषि दयानन्द के कार्यक्षेत्र मे आने से पूर्व इस देश की जो धार्मिक और सामाजिक दशा थी, उसका उल्लेख प्राय लेखो और मचो पर होता रहता है। उसका उल्लेख करने की आवश्यकता नही।

सातवां अध्याय

इसके बाद सातवे अध्याय मे उन धार्मिक आन्दोलनो की चर्चा है जो सुधार की दृष्टि से उस युग मे चलाए गए। इन आन्दोलनो मे ब्राह्म समाज, प्रार्थना समाज, पारसी और मुस्लिम सुधार आन्दोलन तथा थियोसोफी मुख्य हैं। रामकृष्ण परमहस और स्वामी विवेकानन्द भी उसी युग की देन हैं। इन सभी आन्दोलनो की गुण-दोषात्मक आलोचना करने के बाद इस अध्याय मे यह भी बताया गया है कि किन कमियो के कारण ये आन्दोलन जनता पर अपनी पकड खोते गए और आर्यसमाज का आन्दोलन लोकप्रियता प्राप्त करता गया। आर्यसमाज की सब से बडी विशेषता यह थी कि उसने शुरू से ही अपने दो आधार बनाए—(१) वेद, और (२) राष्ट्र। यही आर्यसमाज की दो भुजाए हैं। अन्य सुधार आन्दोलन न तो वेद को आधारशिला बना पाये, न राष्ट्र को। इसलिए उन्हें विधर्मियों के सामने निरुत्तर होना पडता था। राष्ट्र को आधार बनाए बिना वे विदेशी शासन के प्रति

जनता का उचित आक्रोश भी नहीं जगा सके। ब्राह्मसमाज आर्यसमाज से ५० वर्ष पहले प्रचलित हुआ, उसने देश बुद्धिजीवियों को प्रभावित भी किया, पर सन् १८३० से १९०१ तक के ७० वर्षों में उसके अनुयायियों की संख्या केवल ४०५० थी, जबकि सन १८७५ से १९०१ तक के केवल २५ वर्षों मे आर्यसमाजियों की संख्या ६,६० २३३ तक पहुंच गई थी (भारत सरकार की जनगणना रिपोर्ट १९३१, भाग २, पृष्ठ ५१५)।

उस समय तक ईसाई या मुसलमान तो हिन्दुओं के धर्म की आलोचना करते रहते थे और उनके अवतारों की खिल्ली उड़ाते रहते थे, पर उनका जवाब देने का कोई साहस नहीं करता था। सबसे पहले आर्यसमाज ने ही इन विधर्मियों के आक्षेपों का न केवल उत्तर दिया, प्रत्युत उनके धर्मग्रन्थों की तर्क-विरुद्ध तथा सृष्टि नियम विरुद्ध बातों का सप्रमाण खण्डन किया। इस से जहां ईसाइयों और मुसलमानों का मनोबल शिथिल पड़ा, वहां हिन्दुओं को अपने धर्म पर गर्व की अनुभूति हुई। प्रसिद्ध राष्ट्रीय राजनेता श्री विपिन चन्द्रपाल ने आर्यसमाज के इस रोल की प्रशंसा करते हुए लिखा था—"पहले हिन्दू ईसाई और मुस्लिम धर्म प्रचारकों द्वारा किए जाने वाले हमलों में अपने को बिल्कुल असहाय अनुभव करते थे। अब वे उठ कर उनका मुकाबला करने लगे।'

अष्टम अध्याय

आठवें अध्याय मे महर्षि दयानन्द की जीवनी के सम्बन्ध मे उपलब्ध साहित्य के विवेचन के पश्चात् उनके बाल्यकाल, प्रचारकार्य और नव-जागरण के आन्दोलनों से सम्पर्क का उल्लेख है और ऋषि के द्वारा संस्थापित पाठशालाओं का वर्णन है। इतिहास ग्रन्थ के लिए आवश्यक होने पर भी यहां उसकी चर्चा करना अनावश्यक है।

प्रथम खण्ड के पृष्ठ २०६ पर ऋषि द्वारा सन् १८६९ के जुलाई मास मे छपाए गए एक संस्कृत के विज्ञापन का हवाला है जिसमे आठ गप्पों और आठ सत्यों का वर्णन है। इसमे पता लगता है कि आर्यसमाज की स्थापना से भी पहले वे किन बातों का प्रचार करते थे। उन गप्पों का त्याग ही श्रेयस्कर है। वे आठ गप्पे ये हैं— ब्रह्मवैवर्त आदि सब पुराण, मूर्तिपूजा शैव, शाक्त, वैष्णव आदि सब सम्प्रदाय, वाम मार्ग, भाग आदि मादक द्रव्यों का सेवन परस्त्रीगमन, चोरी, कपट, छल, अभिमान और असत्य भाषण। इन्हीं आठ बातों का वे अपने व्याख्यानों मे खण्डन किया करते थे। इसी प्रकार जिन आठ सत्यों का वे प्रतिपादन किया करते थे, वे इस प्रकार हैं—(१) परमेश्वर तथा ऋषियों द्वारा प्रदत्त ऋग्वेद आदि इक्कीस शास्त्र, (२) ब्रह्मचर्याश्रम मे ब्रह्मचर्य पूर्वक विद्याध्ययन, गुरु सेवा, वेदाध्ययन और

स्वधर्मानुष्ठान, (३) वेद प्रतिपादित वर्णाश्रम का पालन, सन्ध्या अग्निहोत्र आदि का अनुष्ठान, (४) गृहस्थाश्रम मे धर्मानुकूल विवाह, पच यज्ञो का अनुष्ठान, ऋतु-काल मे पत्नी समागम, श्रुति-स्मृति द्वारा प्रतिपादित आचार का अनुष्ठान, (५) वानप्रस्थ आश्रम मे शम, दम तपश्चरण, यम-नियमो का सेवन, उपासना व सत्संग करते हुए वानप्रस्थ आश्रम के नियमो का पालन, (६) विचार, विवेक, वैराग्य और पराविद्या का अभ्यास कर सन्यास का ग्रहण (७) जन्म, मरण, शोक, काम, क्रोध, लोभ, मोह, सगदोष आदि का ज्ञान-विज्ञान द्वारा परित्याग, (८) अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष आदि क्लेशो से निवृत्ति और उस मोक्षस्वरूप स्वराज्य की प्राप्ति, जो पच महाभूतो से अतीत है, अर्थात् जिससे भौतिक सत्ताओ का कोई सम्पर्क नही है, जो सर्वांश मे आत्मरूप हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से इस विज्ञापन का महत्त्व है, क्योकि इससे पहले कहीं इसका उल्लेख नही हुआ। ऊपर आठ सत्यो मे जिन २१ ग्रन्थो का सकेत है विज्ञापन मे उनका भी वर्णन है। स्वामी जी उन्हे सन् १८६६ तक प्रमाण मानते थे, पर बाद मे और अधिक मनन-चिन्तन के बाद उन्होने केवल चारो वेदो को ही स्वत प्रमाण माना अन्य ग्रन्थो को नही।

उसके बाद फरूखाबाद, कासगज, मिर्जापुर और जलेसर मे स्वामी जी द्वारा स्थापित पाठशालाओ का वर्णन है। ये पाठशालाए वेदज्ञ विद्वान् तैयार करने के उद्देश्य से खोली गई थी, परन्तु योग्य अध्यापको के न मिलने से पाठशालाए ५-७ साल से अधिक नही चल पाईं।

नवम अध्याय

दिसम्बर १८७२ मे ऋषि कलकत्ता गए। वहा लगभग चार मास तक रह कर उन्होने उस समय के बगाल के बुद्धिजीवियो से और विशेष रूप से ब्राह्मसमाज के नेताओ से सम्पर्क किया। इस काल मे वे मुख्यरूप से कलकत्ता, बर्धमान और हुगली मे रहे। उनके जीवन मे तथा आर्यसमाज की स्थापना मे इस कलकत्ता प्रवास का विशेष महत्त्व है, क्योकि उस समय भारत मे जो नया युग करवट ले रहा था, उसके प्रमुख सूत्रधार बगाल के ही बुद्धिजीवी थे। बगाल के अग्रेजी शिक्षित सुधारवादी लोगो पर ब्रह्मसमाज का बहुत प्रभाव था। काशी के शास्त्रार्थ के कारण बगाल के पडितो तक भी ऋषि दयानन्द की ख्याति पहुच चुकी थी। कलकत्ता के सुशिक्षित व्यक्ति उनके दर्शन करने को लालायित थे। उस समय के प्रसिद्ध अग्रेजी अखबार 'इण्डियन मिरर' मे ऋषि के कलकत्ता आगमन का विस्तृत समाचार छपा। उसके बाद ऋषि ने सस्कृत, हिन्दी, बगला और अग्रेजी मे एक विज्ञापन भी निकाला जिसमे जिज्ञासुओ को धार्मिक विषयों पर विचार-विमर्श के लिए

आमन्त्रित किया गया था। इससे उनके दर्शनार्थियों में वे सभी प्रकार के लोग आने लगे जो संस्कृत और शास्त्रों के पण्डित थे सुधारवादी थे और सम्भ्रान्त वर्ग के लोग थे। ब्राह्मसमाज के अनेक प्रचारक और नेता भी उनसे मिलने आते रहे। चर्चा का मुख्य विषय वर्णव्यवस्था और मूर्तिपूजा हुआ करता था। कुछ विद्वान् तो स्वामी जी की विद्या और पाण्डित्य से बहुत प्रभावित हुए। हेमचन्द्र चक्रवर्ती जैसे विद्वान् तो स्वामी जी के साथ ही रहने लगे और स्वामी जी जिज्ञासुओं से जो वार्तालाप करते, उसे वे अपनी डायरी में नोट कर लेते।

तब तक ब्राह्म समाज में भी मतभेद प्रारम्भ हो गए थे। देवेन्द्रनाथ ठाकुर—रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पिता, वेदों में आस्था रखते थे, पर कुछ ब्राह्म समाजी नेता वेदों की प्रामाणिकता में सन्देह प्रकट करते और पाश्चात्य विचारों के आधार पर ही सुधार के पक्ष में थे। केशवचन्द्र सेन के ब्राह्मसमाज में सम्मिलित होने से उसे बहुत बल मिला, पर देवेन्द्रनाथ ठाकुर के साथ उनके मतभेद बढ़ जाने से ब्राह्मसमाज भी दो भागों में बंट गया। देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने आदि ब्राह्म समाज बनाया। केशवचन्द्र सेन के नेतृत्व में ब्राह्मसमाजी हिन्दू समाज से दूरतर होते चले गए और धीरे-धीरे वे पाश्चात्य विचारों के साथ-साथ ईसाइयत की ओर झुकने लगे। देवेन्द्रनाथ ठाकुर और उनके साथियों के विचार ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों से बहुत मिलते थे। उन्होंने अपने निवास स्थान पर हुए माघोत्सव में ऋषि दयानन्द को व्याख्यान देने के लिए भी बुलाया था।

कलकत्ता प्रवास का एक उल्लेखनीय पहलू यह भी है कि तब तक ऋषि दयानन्द सरल संस्कृत में ही भाषण दिया करते थे, और केवल कौपीन धारण कर अवधूत वेश में रहते थे। श्री केशवचन्द्र सेन के परामर्श से ऋषि दयानन्द ने भविष्य में हिन्दी में भाषण देने और वस्त्र पहनने का निश्चय किया। यह उनके जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन था। ब्राह्मसमाज के नेताओं और उनकी कार्य पद्धति को उन्होंने निकट से देखा। सम्भवतः आर्यसमाज की स्थापना का विचार भी उनके मन में उसी समय आया। आर्यसमाज ने बाद में जिस प्रकार जन-आन्दोलन का रूप ग्रहण किया उसका सूत्रपात भी कलकत्ता में ही हुआ। स्वामी जी की इस बंगाल यात्रा को उस समय के बंगाली समाचार-पत्रों ने 'दिग्विजय' की संज्ञा दी। इस कलकत्ता प्रवास का परिणाम यह भी हुआ कि हिन्दी में भाषण देने के कारण ऋषि की पहुंच आम जनता तक हो गई। उनकी प्रचार-पद्धति में भी परिवर्तन हो हो गया। वे भाषण के अलावा पुस्तक प्रकाशन की ओर भी प्रवृत्त हुए। काशी में एक आर्य विद्यालय खोला। छहों दर्शन, दस उपनिषद्, मनुस्मृति, गृह्यसूत्र, चारों वेद चारों उपवेद और कल्प ग्रन्थों के पठन-पाठन की व्यवस्था की। इस विद्यालय में शूद्रों को भी प्रविष्ट किया गया। यह उस युग में क्रान्तिकारी कदम

ा पर यह विद्यालय भी योग्य अध्यापकों के अभाव में अधिक समय नहीं चल पाया। ऋषि ने आर्यप्रकाश नामक एक मासिक पत्र प्रकाशित करने की भी योजना बनाई। अपने मन्तव्यों के प्रचार के लिए पुस्तक और पत्रिका प्रकाशन का महत्त्व उन्होंने अच्छी तरह हृदयंगम कर लिया

सन १८७४ के अक्तूबर मास में ऋषि दयानन्द बम्बई गए। नासिक में पौराणिक पण्डितों से उनका शास्त्रार्थ भी हुआ। बम्बई में उनके प्रचार से प्रभावित होकर अनेक लोगों ने मूर्तिपूजा छोड दी। यहां भी वे प्रार्थना समाज के अनेक नेताओं के सम्पर्क में आए पर इन नेताओं को हिन्दू धर्म में सुधार की कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं हुई। वे केवल सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के पक्ष पाती थे। प्रार्थना समाज के नेताओं में जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे ऋषि के विशेष प्रशंसक बने। जब ऋषि ने बम्बई में वल्लभाचार्य के मत का खण्डन प्रारम्भ किया तो तहलका सा मच गया क्योंकि अनेक प्रतिष्ठित लोग इस मत के अनुयायी थे। इन प्रतिष्ठित लोगों में से कइयों ने ऋषि के तर्कों और पाण्डित्य से प्रभावित होकर एक वेद धर्म सभा स्थापित की। कलकत्ता की तरह यहां भी चार भाषाओं में विज्ञापन छपवाकर ऋषि ने जिज्ञासुओं को शंका समाधान के लिए आमन्त्रित किया। इसके प्रकाशित होते ही शहर में धूम मच गई। पर वल्लभ सम्प्रदाय के अनेक अनुयायी उनके विरोधी भी हो गए और उनके विरुद्ध मिथ्या अपवाद फैलाने लगे वे उन्हें प्रच्छन्न ईसाई और १८५७ की राज्य क्रान्ति के नेता नाना साहिब का साथी कहने लगे। इससे यह ध्वनि निकलती है कि उस समय भी लोगों को ऋषि दयानन्द के मन १८५७ की राज्यक्रान्ति में शामिल होने की भनक थी।

इसके बाद सन १८७५ के प्रारम्भ में वे जब अहमदाबाद गए तभी उन्होंने आर्यसमाज के नाम से एक नया संगठन बनाने का विचार प्रकट किया पर अहमदाबाद में उन्हें परिस्थिति अधिक अनुकूल प्रतीत नहीं हुई। तब राजकोट में उन्होंने अपने विचार को कार्यान्वित किया। उससे दो साल पहले वहां प्रार्थना समाज की स्थापना हो चुकी थी। स्वामी जी ने प्रस्ताव किया कि प्रार्थना समाज को ही आर्यसमाज में रूपान्तरित कर दिया जाए। प्रार्थना समाज के सब सदस्य इस प्रस्ताव से सहमत हो गए। इस प्रकार प्रथम आर्यसमाज की स्थापना राजकोट में हो गई। उसके तीस सदस्य बने प्रधान और मन्त्री भी निर्वाचित हो गए। आर्य समाज के नियम भी बने और वे छप भी गए पर छह मास होने से पूर्व ही इस आर्यसमाज का अन्त हो गया। इस विफलता का कारण यह रहा—उस समय अंग्रेजों द्वारा बडौदा नरेश को सिंहासनच्युत करने के विरुद्ध गुजरात में प्रबल आन्दोलन चल रहा था। गट्टूलाल नामक एक संस्कृत कवि ने आर्यसमाज के अधिवेशन में अपने श्लोकों में ब्रिटिश सरकार के रवैये पर टिप्पणी कर दी।

अखबारो मे उसका विवरण छपने पर काठियावाड का पोलिटिकल एजेण्ट नाराज हो गया। उस समय आर्यसमाज के अनेक सदस्य और अधिकारी सरकारी सर्विस मे थे। पोलिटिकल एजेण्ट ने एक सरकारी वकील का वकालत करने का अधिकार छीन लिया। इससे आयसमाज के अन्य सब अधिकारी भी भयभीत हो गए और उन्होने आर्यसमाज से सम्बन्ध तोड लिया।

उसके बाद जब स्वामी जी दुबारा बम्बई आए, तब गिरगाव मे १७ फरवरी, १८७५ को एक सभा बुलाई गई जिसमे अनेक प्रतिष्ठित लोग शामिल हुए। उसमे राजकृष्ण महाराज नामक एक प्रतिष्ठित व्यक्ति ने यह सुझाव रखा कि आर्यसमाज के नियमो मे जीव और ब्रह्म का एकता का सिद्धान्त शामिल कर लिया जाए तो इसके कारण अनेक बुद्धिजीवी आर्यसमाज की ओर आकृष्ट हो जाएगे। पर स्वामी जी इस असत्य सिद्धान्त पर आर्यसमाज की नीव रखने को तैयार नही हुए। इस कारण राजकृष्ण महाराज नाराज हो गए और स्वामी जी के विरुद्ध अनर्गल प्रचार करने लगे। उसके बाद स्वामी जी के भक्तो ने १० अप्रैल १८७५ को (चैत्र शुक्ला ५ शनिवार, सवत् १९३२ को) सभा बुलाई और उसी दिन आर्यसमाज की विधिवत् स्थापना हो गई। उस दिन स्वामी जी ने आर्यसमाज रूपी जिस पौधे का आरोपण किया था, वह बाद मे एक सदी से भी कम समय मे एक विशाल वट वृक्ष का रूप धारण कर गया और उसकी हजारो शाखा प्रशाखाए ससार भर मे फैल गई।

बम्बई मे आर्यसमाज की स्थापना के साथ जो २८ नियम बनाए गए थे वे इसी अध्याय के परिशिष्ट (१) मे दिए गए है। परिशिष्ट (२) मे उन सौ व्यक्तियो की सूची है जो आर्यसमाज की स्थापना के समय उसके सदस्य बने थे। परिशिष्ट (३) मे आर्यसमाज की स्थापना तिथि सम्बन्धी विवाद का विश्लेषण है। ये २८ नियम सब आर्यसमाजो मे दो वर्ष तक मान्य रहे। पर बाद मे सन १८७७ मे १० नियम बनाए गए जो वर्तमान समय मे भी प्रचलित हैं। बम्बई मे निर्मित २८ नियमो की विशेषता यह है कि वे लोकतन्त्र पर आधारित है और ऋषि द्वारा किसी भी प्रकार के गुरुडम के विचार के विरुद्ध हैं। वे आर्यसमाज को एक सम्प्रदाय नही बनने देना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना हो जाने पर हरिश्चन्द्र चिन्तामणि के आग्रह पर उन्होने अपनी फोटो लेने की अनुमति तो दे दी, पर साथ ही यह आदेश भी दे दिया कि मेरी फोटो आर्यसमाज मन्दिर मे न लगाई जाए।

दशम और एकादश अध्याय

इन दोनो अध्यायो में उत्तर प्रदेश और पंजाब मे आर्यसमाजों की स्थापना

का और पंजाब मे उसकी सर्वाधिक सफलता का विस्तार से उल्लेख है। फिर भी इन दोनो अध्यायो मे वर्णित एक-दो विशेष प्रसगो का उल्लेख आवश्यक है।

दसवे अध्याय मे ही सन् १८७७ मे दिल्ली दरबार मे स्वामी जी के कर्तृत्व का उल्लेख है। वे दिल्ली मे शेरमल के अनारबाग मे ठहरे थे जो अजमेरी गेट के दक्षिण-पश्चिम मे कुतुब रोड पर स्थित था। इस अवसर पर स्वामी जी ने एक विज्ञापन बटवा कर आग्रह किया था कि राजा-महाराजा और पण्डित लोग एक सभा मे मिलकर शास्त्र चर्चा द्वारा सत्य धर्म का निर्णय करे और फिर सारे देश मे उसका प्रचार करे जिससे धर्म के नाम पर आपसी मतभेद मिट सके। स्वामी विरजानन्द ने भी सन् १८६१ मे इस प्रकार की एक सभा बुलाई थी। महाराजा जयसिंह ने इस प्रकार की एक सभा का सब खर्च उठाने का दायित्व लिया, परन्तु केवल इन्दौर नरेश स्वामी जी से मिले। महाराजा कश्मीर भी मिलने के इच्छुक थे, पर पौराणिक पडितो ने उन्हे नही मिलने दिया। राजा महाराजाओ को स्वामी जी इसलिए सम्मिलित करना चाहते थे कि यदि उनके मन मे देशोन्नति और स्वतन्त्रता की भावना पैदा हो जाए तो वे अपनी प्रजा को भी उस दिशा मे प्रेरित कर सकते हैं। सर्व साधारण पर पण्डितो का प्रभाव था ही, इसलिए उनके अन्दर भी वह भावना भरना आवश्यक था। स्वामी जी के निमत्रण को स्वीकार कर निम्न व्यक्ति उनके डेरे पर उपस्थित हुए—बाबू केशवचन्द्र सेन (ब्राह्म समाज, कलकत्ता) बाबू नवीनचन्द्र राय (ब्राह्म समाज लाहौर), श्री सैयद अहमद खा (अलीगढ) मुशी अलखधारी (पजाब), बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि (आर्यसमाज बम्बई) मुन्शी इन्द्रमणि (मुरादाबाद) और स्वय स्वामी जी। विभिन्न धार्मिक नेताओ का यह सम्मेलन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था। स्वामी जी ने सब से कहा कि हम पृथक पृथक् धर्मोपदेश न करके एकता के साथ करे तो अधिक फल होगा। स्वामी जी चाहते थे कि सब लोग वेदो की प्रामाणिकता स्वीकार कर ले और तदनुसार सुधार-कार्य मे प्रवृत्त हो। यह बडा व्यावहारिक आपसी मतभेद मिटाने वाला सुझाव था। इसके पीछे यह भावना भी थी कि वेद सबसे प्राचीन हैं इसलिए उनको मूलाधार स्वीकार करने मे किसी को आपत्ति नही होनी चाहिए। पर सर सैयद और ब्राह्म समाज के नेता वेदो की प्रामाणिकता मानने को तैयार नही हुए। इस लिए देश की धार्मिक एकता का यह दुर्लभ प्रयास विफल हो गया।

तब स्वामी जी ने वेदो की महत्ता प्रकट करने के लिए वेदभाष्य की ओर ध्यान दिया। सब से पहले उन्होंने 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' लिखी। अपने वेदभाष्य का नमूना उन्होने सब पण्डितो के पास भेजा। उनका वेदभाष्य उस समय तक प्रचलित सायण, महीधर और उव्वट आदि भाष्यकारो के सर्वथा विपरीत था। वे वेद के शब्दो को 'यौगिक' मानते थे। जिन अंग्रेजो ने वेदभाष्य किया उसके पीछे

उनका मशा ईसाई पादरियो को ईसाइयत के प्रचार मे सहायता करना और वेदों का ऐसा अर्थ सुशिक्षित जन समुदाय के समक्ष रखना था कि उनकी वेदो के प्रति आस्था समाप्त हो जाए। उनकी दृष्टि मे अग्रेजी शासन को सुदृढ करने के लिए यह बहुत आवश्यक था।

स्वामी जी के वेदभाष्य से विद्वानो मे खलबली मचना स्वाभाविक था—भारतीय विद्वानो मे भी और पाश्चात्य विद्वानो मे भी। आश्चर्य की बात है कि बाद मे सन् १८८५ मे काग्रेस को जन्म देने वाले सर ए० ओ० ह्यूम ने भी इस वेदभाष्य के विरुद्ध थियोसोफिस्ट' मे एक लेख लिखा जिसमे स्वामी जी के अर्थ के निर्भ्रान्त होने मे शका प्रकट की और कहा कि भ्रान्ति-रहित तो केवल परमात्मा ही हो सकता है, और स्वामी जी क्योंकि परमात्मा नही हैं, इसलिए वे भ्रान्तिरहित नही हो सकते। इसके उत्तर मे स्वामी जी ने लिखा कि मैं ईश्वर नही, किन्तु ईश्वर का उपासक हूँ और नि स्वार्थ भाव से सब मनुष्यो के कल्याण के लिए वेद का अर्थ प्रकाशित करता हूँ। यदि किसी मन्त्र के अर्थ मे आपको भ्रान्ति प्रतीत हो तो मैं उसका समाधान करने को तैयार हूँ।

वेदभाष्य के सिलसिले मे इस बात का उल्लेख कर देना भी आवश्यक है कि स्वामी जी ने लाहौर मे रहते हुए आर्यसमाज के अधिकारियो की मार्फत यह प्रयत्न भी किया कि पजाब सरकार से उसके लिए अनुदान मिल जाए और कालिजो मे सस्कृत के पाठ्यक्रम मे अन्य भाष्यो के साथ यह भाष्य भी पढाया जाए। इसके लिए स्वामी जी अनेक सरकारी अधिकारियो से मिले। लेफ्टिनेट गवर्नर से भी भेंट की और अपने वेदभाष्य का एक नमूना भी उन्हे दिया, परन्तु बनारस सस्कृत कालिज के प्रिंसिपल आर० ग्रिफिथ और कलकत्ता प्रेजिडेंसी कालिज के प्रिंसिपल सी० एच० टौनी के विरोध के कारण उन्हे सफलता नहीं मिली। पाश्चात्य विद्वानो ने स्वामी जी के भाष्य पर जो आक्षेप किये उनका भी उन्होने विस्तृत और युक्तियुक्त उत्तर दिया, पर सरकार ने किसी भी प्रकार की सहायता देने से इन्कार कर दिया। पजाब मे वैदिक धर्म का प्रचार करने में स्वामी जी को सब से अधिक पौराणिक पडितो के विरोध का ही सामना करना पडा। फिर भी अपनी विशेष परिस्थितियो के कारण पजाब मे ही स्वामी जी को सब से अधिक सफलता मिली। इसी समय लाहौर मे आर्यसमाज के नये नियम और उपनियम बने जो आज तक सर्वमान्य हैं।

एकादश और द्वादश अध्याय

ग्याहरवे अध्याय मे जहा उत्तर प्रदेश और राजस्थान मे आर्यसमाजो की स्थापना का विवरण है, वहां आगरा मे 'गोकरुणानिधि' लिखने और गोरक्षा के लिए हस्ताक्षर अभियान चलाने की चर्चा है। स्वामी जी चाहते थे कि दो करोड

लोगो के हस्ताक्षर कराके वायसराय को भेजे जाए और उनसे गोहत्या बन्द करने की अपील की जाए। उत्तर प्रदेश के बाद उन्होने राजस्थान की ओर प्रयाण किया, अनेक रियासतो के राजाओ से सम्पर्क किया और उनमे स्वातन्त्र्य चेतना जगाने का प्रयत्न किया। उदयपुर मे उन्होने अपना वसीयतनामा भी पञ्जीकृत कराया और परोपकारिणी सभा की भी स्थापना की और उसी को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। राजस्थान मे प्रचार करते करते ही जोधपुर मे उन्हे विष दिया गया और अजमेर मे सन् १८८३ मे अक्तूबर मास मे दीपावली के अवसर पर उनका देहावसान हो गया।

इसी अध्याय मे स्वामी जी के कुछ प्रसिद्ध शास्त्रार्थों का और उनके लिए स्वामी जी द्वारा निर्धारित नियमो का उल्लेख है।

बारहवे अध्याय मे स्वामी जी के थियोसोफिकल सोसायटी के नेताओ से सम्बन्ध का उल्लेख है जिसमे कर्नल अल्काट और मैडम ब्लेवेट्स्की के छद्म का पर्दाफाश होने पर उनके साथ स्वामी जी को किस प्रकार सम्बन्ध विच्छेद करना पडा, इसका विस्तृत वर्णन है।

त्रयोदश से सप्तदश अध्याय तक

तेरहवे अध्याय मे ऋषि की धर्म तथा दर्शन सम्बन्धी मान्यताओ का उल्लेख है। इस विषय पर इसी ग्रन्थ मे एक अन्य लेख दिया जा रहा है, इसलिए यहा उसे दुहराना अनावश्यक है। चौदहवे अध्याय मे स्वामी जी की राजनैतिक मान्यताओ का वर्णन है जिसमे उनकी दृष्टि मे स्वराज्य के स्वरूप, चक्रवर्ती राज्य के आदर्श, शासन कानून और न्याय व्यवस्था सबधी मान्यताओ का वर्णन है जो राजनीति मे रुचि रखने वाले प्रत्येक भारतीय के लिए पठनीय और मननीय हैं। पन्द्रहवे अध्याय मे सामाजिक सगठन और आर्थिक व्यवस्था समानता पर आधारित समाज व्यवस्था स्त्रियो की स्थिति और भौतिकवाद तथा अध्यात्मवाद समन्वय के सबध मे स्वामी जी के प्रगतिशील विचारो का विशद उल्लेख है। सोलहवे अध्याय मे शिक्षा प्रणाली और पठन पाठन विधि के सबध मे और भौतिक विज्ञान के सबध मे स्वामी जी के विचार है। सत्तरहवे अध्याय मे बाल विवाह अनमेल विवाह विधवा विवाह बहु विवाह नियोग, विदेशयात्रा और भक्ष्य अभक्ष्य सबधी कुरीतियो के निवारण के सबध मे स्वामी जी के विचार है।

अष्टादश अध्याय

अठारहवे अध्याय मे उस युग मे स्वामी जी के सम्पर्क मे आए उनके सहयोगी व्यक्तियो का सक्षिप्त जीवन परिचय है। जिनमे प्रमुख हैं—श्याम जी कृष्ण वर्मा, गोपाल राव हरि देशमुख, महादेव गोविन्द रानाडे, महात्मा ज्योतिबा फूले, केशवचन्द्र

सेन रमाबाई पंडिता हरिश्च द्र चिन्तामणि प० भीमसेन शर्मा, देवेन्द्रनाथ ठाकुर, मुंशी समर्थदान और प० ज्वालादत्त शामिल हैं।

उन्नीसवाँ अध्याय

उन्नीसवें अध्याय मे उत्तर प्रदेश पजाब राजस्थान हरियाणा हिमाचल बिहार और अन्य प्रदेशो मे सन १८८३ तक स्थापित आर्यसमाजो का विवरण है। जिन प्रारम्भिक आर्यसमाजो के सर्वप्रथम बने सदस्यो की सूची उपलब्ध हुई वह भी दे दी गई है। इसी अध्याय मे स्वामी जी द्वारा देहरादून मे एक मुसलमान को अपने कर कमलो से शुद्ध करने का वर्णन है जिसका नाम था — मोहम्मद उमर वल्द ख्वाजा हुसैन। उसे शुद्ध करके स्वामी जी ने अलखधारी नाम दिया जो बाद मे आर्यसमाज का एक अत्यन्त उत्साही कार्यकर्ता बना और उसने वैदिक धर्म के प्रचार के लिए अपनी समस्त शक्ति लगा दी। अध्याय के अन्त मे परिशिष्ट (१) मे सन १८८३ तक विभिन्न प्रा तो मे स्थापित आर्यसमाजो का सूची परोपकारिणी सभा के रिकार्ड से लेकर दी गई है। इन आर्यसमाजो की कुल सख्या ७९ है। उस समय तक स्थापित दस अन्य समाजो का भी उल्लेख है जो परोपकारिणी की सूची मे आने से रह गए।

परिशिष्ट (२) मे बम्बई आर्यसमाज क नियमो मे सशोधन की चर्चा है और परिशिष्ट (३) मे १४ अगस्त १८७९ के स्टेट्समैन मे सम्पादक क नाम छपा वह पत्र अकित है जिसमे लाहौर आर्यसमाज के सदस्यो को स्वामी जी ने विदेशी वस्त्रो का उपयोग न करने का परामर्श दिया है।

इसके बाद ऋषि दयान द के समकालीन ३९ व्यक्तियो के दुर्लभ चित्र हैं जिनमे राजा महाराजा और आर्यसमाज के प्रारम्भिक विशिष्ट कार्यकर्ता तथा जोधपुर के दीवान फैजुल्ला खा और नन्ही भगतन भी शामिल हैं। अन्तिम दो ने ऋषि को विष देने के षडयत्र मे प्रमुख रूप से भाग लिया था।

बीसवाँ अध्याय

बीसवें अध्याय मे ऋषि दयानन्द द्वारा शुद्धि (वैदिक धर्म मे प्रत्यावर्तन) आदोलन के श्रीगणेश का वर्णन है पर उसकी पृष्ठभूमि के रूप मे अनेक स्मृतियो और पुराणो के उदाहरण भी दिए हैं जिनसे इस आदोलन को शास्त्रीय आधार तो मिलता ही है हिन्दू समाज की शुद्धि विरोधी मान्यताओ का खण्डन भी होता ही है। इस दृष्टि से यह अध्याय शुद्धि आदोलन के लिए काम करने वालो के लिए अवश्य पठनीय है। प्राचीन काल मे मुगल काल मे और आधुनिक काल में इन उदाहरणो के प्रचार से आर्यधर्म मे पुन उस शक्ति का सचार हुआ जिसके अभाव

मे उसे पराजय का मुह देखना पडा। ऋषि दयानन्द केवल मायधम से विचलित होकर विधर्मी बने लोगो को ही शुद्ध करने के पक्ष मे नही थे बल्कि वे उन लोगो की भी शुद्धि के पक्ष मे था थे जिनका सीधा सबध प्ररब तुक तथा यूरोपियन दशा से था। ऐतिहासिक दष्टि से इस प्रादोलन का बहुत महत्त्व है क्योकि पौराणिक हिन्दू समाज की एतत्सम्बन्धी मूढ मान्यताओ का इससे खण्डन होता है। बाद मे चलकर स्वामी श्रद्धान द प० लेखराम महात्मा हसराज और लाला लाजपत राय आदि श्राय नेताओ ने इस प्रादोलन को व्यापक रूप दिया।

इक्कीसवा अध्याय

इस अध्याय म प्रायसमाज के सगठन और प्रचार पद्धति का निरूपण किया गया है परन्तु इस निरूपण से पूव बौद्ध जन ईसाई और मुसलमान आदि के सगठनो और प्रचार पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन उपस्थित किया गया है जिससे अपनी प्रचार पद्धति मे परिवतन करते समय प्राय जनता प्ररणा ग्रहण कर सकती है। आयसमाज का मुख्य आधार उसके साधु स यासी उपदेशक भजनोपदेशक और अन्य ढग के प्रचारक तो हैं ही उसके वार्षिकोत्सवो शिक्षणालयो और पत्र पत्रिकाओं से भी आयसमाज के प्रचार मे बहुत सहयोग मिलता है। पर आयसमाज को अपने प्रचार के लिए लेखनी और वाणी के साथ साथ आधुनिक वज्ञानिक आविष्कारो का भी जिनमे वीडियो कैसेट फिल्मे और नाटक आदि के साथ साथ दूरदशन और आकाशवाणी भी है प्रयोग करने मे सकोच नही करना चाहिए।

बाईसवां अध्याय

इस अ याय मे महर्षि द्वारा विरचित ग्रन्थो तथा पुस्तिकाओ का विवेचन है। ऋषि को आयसमाज की स्थापना के बाद केवल आठ वष ही काय करने का अवसर मिला। पर न आठ वर्षो मे जितना साहित्य उ होने तैयार किया है वह लगभग बीस हजार पृष्ठो मे समाएगा। इन ग्र थो मे ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सत्याथ प्रकाश और वेदभाष्य जैसे गम्भीर ग्रथ भी हैं और अन्य कई छोटे बड ग्रन्थ भी है। लेखक ने ऋषि के ग्र थो का इस प्रकार वर्गीकरण किया है—(१) वेदभाष्य तथा उससे सम्बद्ध ग्र थ। (२) सत्याथप्रकाश का प्रथम सस्करण। सत्याथप्रकाश का सशोधित द्वितीय सस्करण जो सवथा नये ढग से लिखा गया और जिसकी मूल हस्तलिखित प्रति अभी तक सुरक्षित है। (४) नैत्यिक और नमित्तिक धर्मानुष्ठान के के ग्र थ। (५) वद विरुद्ध मत मता तरो के खण्डन से सम्बन्धित ग्रथ। (६) सस्कृत भाषा तथा व्याकरण से सम्बन्धित ग्रथ। (७) आष ग्रथो के अध्ययन एव शोध मे सहायक ग्रन्थ (८) अ य मत मतान्तरो के अध्ययन एव शोध के लिए उपयोगी ग्रन्थ। (९) शास्त्राथ और व्याख्यान। (१०) विविध रचनाएँ।

इन वर्गों मे से प्रत्येक वग की पुस्तको के विस्तृत विवचन के पश्चात्

विविध रचनाओ मे आर्योद्देश्यरत्नमाला, गोकरुणानिधि, व्यवहारभानु और आत्म-चरित्र तथा गोतम-अहिल्या कथा और गर्दभतापनी उपनिषत् का उल्लेख है। अन्तिम कृति ऋषि की सस्कृत काव्य की प्रतिभा को व्यक्त करती है, पर वह अभी तक अप्रकाशित है।

तेईसवां अध्याय

इस खण्ड मे तेईसवा अध्याय विशेष महत्त्वपूर्ण है। एक तो यह कि सन् १८५७ के सग्राम मे ऋषि दयानन्द ने कोई सक्रिय भाग लिया या नही—इस सम्बन्ध मे लेखक ने अपनी राय दी है। इस विषय मे आर्य विद्वानो मे परस्पर मत-भेद रहा है, इसलिए श्री सत्यकेतु विद्यालकार जैसे मर्मज्ञ इतिहासकार की राय का विशेष महत्त्व है। दूसरा कारण यह कि प० जी ने लन्दन की यात्रा करके वहा के अभिलेखागारो से जो विशिष्ट सामग्री प्राप्त की थी, उसका उपयोग इस अध्याय मे हुआ है। इस खण्ड का यह सब से लम्बा अध्याय है।

ऋषि के जीवन वृत्त का जैसा क्रमिक वर्णन उपलब्ध है उसमे सन् १८५६-५७ ५८ का सर्वथा उल्लेख न होना इस कल्पना को जन्म देता है कि यह चुप्पी अकारण नही है। यह मौन ही मुखर होकर बोलता है। यह उल्लेख अवश्य मिलता है कि इन वर्षों मे वे उसी प्रदेश मे भ्रमण कर रहे थे जो सैन्य विद्रोह का केन्द्र था। इसके अतिरिक्त सत्यार्थप्रकाश के समुल्लास मे ऋषि ने श्रीकृष्ण का वर्णन करते हुए संवत १९१४ की द्वारका मे घटी एक घटना का भी उल्लेख किया है जो किसी अन्य इतिहासकार ने नही किया। सवत् १९१४ से अभिप्राय सन् १८५७ से ही है। इस घटना के उल्लेख से इतना तो प्रमाणित है कि वे १८५७ के सग्राम से सुपरिचित थे।

कलकत्ता के श्री दीनबन्धु वेदशास्त्री ने लगभग ४० साल के परिश्रम के पश्चात् 'ऋषि की अज्ञात जीवनी' नाम से एक लेखमाला लिखी थी, जो बाद मे 'योगी के आत्मचरित्र' नाम से श्री स्वामी सच्चिदानन्द 'योगी' ने पुस्तक रूप मे प्रकाशित की। इस पुस्तक का आधार यह था—सन् १८७२ के दिसम्बर मास मे ऋषि कलकत्ता पहुचे थे और वहा चार मास रहे थे। इसी प्रवास मे वे बगाल के बुद्धिजीवियो और ब्राह्मसमाज के नेताओ के सम्पर्क मे आए। उन लोगो ने जब ऋषि के जीवनवृत्त के सम्बन्ध मे जिज्ञासा की तब उन्होने सस्कृत मे अपना जीवन-वृत्त सुनाया जिसका उसी समय बगला भाषा मे अनुवाद कर लिया गया। यह अनुवाद उन बगाली विद्वानो के घरो मे चिरकाल तक पडा रहा। श्री दीनबन्धु ने जिन १२ घरो से उक्त सामग्री प्राप्त की थी उसका पूरा विवरण उन्होने प्रकाशित कर दिया था। इस जीवनी से कई नई बाते पता लगती हैं जिनसे ऋषि

दयानन्द के सन् १८५७ के विद्रोह के नेताओ से निकट सम्पर्क का और आपसी परामर्श का पता लगता है। इस जीवनी के अनुसार सन् १९५५ मे हरिद्वार मे कुम्भ के अवसर पर ही नाना साहब धुन्धूपन्त, अजीमुल्ला खा बाला साहब, तात्या टोपे, बाबू कुवरसिंह, झासी की रानी लक्ष्मीबाई और बगाल के श्री गोविन्दनाथ राय स्वामी जी से उनके डेरे पर मिले थे। उस विद्रोह मे कमल और रोटी का जो प्रतीक चना गया था, उसका सुझाव स्वामी जी ने ही दिया था। विद्रोह के समर्थन मे साधुओ के सगठन का दायित्व स्वामी जी ने सभाला था। साधुओ के ऐसे सशस्त्र सगठन उस समय मौजूद थे, उसके प्रमाण अन्य ग्रथो से भी मिलते हैं।

परन्तु डा० भवानीलाल भारतीय, पण्डित श्रीराम शर्मा आस्ट्रेलिया के प्रोफेसर ऋषि दयानन्द की जीवनी के लेखक अग्रेज डा० जोर्डन्स और उनके शिष्य आर० ध्वाएातस तथा कुछ अन्य विद्वान् इस अज्ञात जीवनी को प्रामाणिक नही मानते। प० सत्यकेतु जी ने पुष्कल प्रमाणो के आधार पर यह सिद्ध किया है कि १८५७ का युद्ध केवल सिपाही विद्रोह नही था, प्रत्युत स्वाधीनता सग्राम था और उसकी राष्ट्रव्यापी योजना तैयार की गई थी जिसमे कई उच्च सैनिक अधिकारी भी शामिल थे। परन्तु इस सग्राम मे साधुओ के योगदान के सम्बन्ध मे सबसे महत्त्वपूर्ण गवाही बाबा सीताराम की है जो मैसूर के समीप गिरफ्तार किया गया था। यह गवाही बाबा सीताराम ने मेजर एच० बी० देवरा और कैप्टिन जे० एल० पीयर्स के सैनिक कमीशन के समक्ष दी थी और १८ जून से २५ जून, १८५८ तक चली थी। यह सारा विवरण पडित जी को ब्रिटिश अभिलेखागार से प्राप्त हुआ था। इसकी बहुत कुछ पुष्टि सन् १८९६ मे फ्रेंच भाषा में लिखे गए एक उपन्यास से भी होती है जिसका अनुवाद अग्रेजी भाषा में 'मरियम—१८५७ के भारतीय गदर की कहानी' (Marium—A story of the Indian Muting of 1857) नाम से हुआ।

सीताराम बाबा की गवाही बहुत लम्बी है। अग्रेजी के लिखित ५८ पृष्ठो मे पूरी होती है। सैनिक कमीशन द्वारा यन्त्रणा दिए जाने के पश्चात् बाबा ने कहा कि इस विद्रोह का सचालन नाना साहब के "गुरु दस्सा बाबा" द्वारा किया जा रहा है जो १२५ वर्ष की आयु के हैं और कागडा से परे कालीधार की तरफ रहते है। उनका एक शिष्य दीनदयाल है जो दक्षिण भारत मे काम कर रहा है। उसने दक्षिण भारत के अनेक राजाओ को और तिरुपति के शिवराम बाबा को पत्र लिखकर इस विद्रोह मे शामिल होने के लिए प्रेरित किया है। सीताराम बाबा ने यह भी बताया कि सिन्धिया नरेश की दादी बैजीबाई इस विद्रोह के लिए कई साल से योजना बना रही थी। इधर नानासाहब भी ऐसे ही प्रयत्न मे लगे थे।

दस्सा बाबा के परामर्श से दोनो सहयोग करने को तैयार हो गए और आगामी योजनाएं उनके सहयोग से ही तैयार हुई। सीताराम बाबा की गवाही से यह भी पता लगा कि दीनदयाल नामक जो साधु दक्षिण भारत मे काम कर रहा था, वह अकेला नही था, उसके साथ बीस साधु और थे। ये साधु मालाए और बाजूबन्द तथा जटाजूट धारण करते रहते थे और उन्ही मे पत्र आदि छिपाकर रखा करते थे। दीनदयाल उस गवाही के अनुसार आगामी दस दिन मे बगलौर पहुचने वाले थे।

श्री सत्यकेतु जी का अनुमान है कि दस्सा बाबा और दीनदयाल ये दोनो नाम एकदम सही नही हैं और सीताराम बाबा ने असली नाम गोपनीय रखने के लिए ही उक्त नाम दिए हैं। प० जी के कथनानुसार दस्सा बाबा से अभिप्राय दशनामी साधु से हो सकता है। शकराचार्य ने साधुओ के जो दस सगठन बनाए थे, वे दसनामी कहे जाते हैं। वे है—सरस्वती, पुरी, गिरि, सागर, अरण्य, पर्वत, वन, आश्रम, तीर्थ और भारती। ये दशनामी साधु शस्त्र भी धारण करते थे और उनकी सेनाए युद्ध मे भी भाग लिया करती थीं। अग्रेजों से भी उनकी कई लड़ाइयाँ हुई थीं, इसीलिए इतिहास मे उसे 'सन्यासी विद्रोह' नाम दिया गया है। नाना साहब और रानी झासी के पक्ष मे दशनामी साधुओ के महानिर्वाणी अखाड़े ने रणक्षेत्र मे शस्त्र लेकर सघर्ष किया था। सोरम गाँव की सर्वखाप पचायत के रिकार्ड मे उन साधुओ के स्वामी पूर्णानन्द और स्वामी ओमानन्द नाम दिए गए है। सन् १८५७ मे स्वामी पूर्णानन्द की आयु ११० वर्ष और स्वामी ओमानन्द की आयु १६० वर्ष थी। सन् १८५६ मे स्वामी विरजानन्द ने मथुरा मे एक पचायत बुलाई थी और हिन्दू-मुसलमान दोनो उसमे शामिल हुए थे। इस पचायत मे 'एक नाबीना (अन्धे) हिन्दू दरवेश' को पालकी मे बिठाकर लाया गया था। उस साधु ने जो भाषण वहा दिया था वह सोरम के रिकार्ड मे सुरक्षित है। पुस्तक मे वह भाषण दिया गया गया है। पचायत के रिकार्ड के नोट मे उस साधु का नाम विरजानन्द बताया गया है। स्वामी विरजानन्द ने अपने भाषण मे लोगो से अग्रेजो हकूमत के विरुद्ध उठ खडे होने का आह्वान किया था। इसी सभा मे 'एक गोल मुख वाले दयानन्द' के नाम का उल्लेख भी हुआ है। हालाकि स्वामी विरजानन्द और स्वामी दयानन्द दोनों दसनामी साधु थे, पर दस्सा बाबा से अभिप्राय इन दोनो से नहीं लगता, क्योकि सीताराम बाबा ने दस्सा बाबा की आयु १२५ वर्ष बताई थी। सम्भावना यह है कि इन्ही स्वामी पूर्णानन्द को सीताराम ने 'दस्सा बाबा' कहा होगा, जिनकी आयु पचायत के रिकार्ड में ११० वर्ष बताई गई है। हो सकता है सीताराम ने आयु के सम्बन्ध में अतिशयोक्ति की हो।

स्वामी पूर्णानन्द कनखल में रहते थे। अपने समय के इस प्रसिद्ध विद्वान्

सन्त को पूर्णदास सन्त भी कहते थे। स्वामी विरजानन्द उन्हे अपना गुरु मानते थे। स्वामी पूर्णानन्द ने ही स्वामी दयानन्द को विरजानन्द के पास विद्या पढने भेजा था। सन् १८५६ मे और उसके बाद वैसी कई सभाए हुई, उनमे भी दयानन्द की उपस्थिति का उल्लेख है। स्वामी विरजानन्द ने पजाब का निवासी होकर भी मथुरा को जान बूझकर अपनी गतिविधियो का केन्द्र बनाया था। स्वामी पूर्णानन्द और स्वामी ओमानन्द ने विद्रोह की जो योजना बनाई थी उसे पूरा करने के लिए स्वामी विरजानन्द ने तीन साल तक तैयारी की। उनके शिष्यो ने सर्व-साधारण मे यह प्रचार किया कि इस अवधि मे मथुरा की यात्रा करने वालो के सब पाप नष्ट हो जाएगे और भगवान् श्रीकृष्ण ने गोसाई जी को स्वप्न मे दर्शन देकर कहा है कि इस वर्ष हमारे जन्मस्थान आकर जो तीर्थ करेगा उसकी सात पीढिया तर जाएगी। मुसलमान फकीरो ने यह फतवा दिया कि शादी के शुरू मे जो आठ रोज तक मसजिदो मे नमाज पढेगा, उसको बडा सवाब मिलेगा। इस प्रचार का परिणाम यह हुआ कि १८५७ के पहले तीन वर्षों मे हिन्दू और मुसलमान भारी सख्या मे मथुरा आते रहे। इसके अलावा उत्तर और दक्षिण भारत के मध्य व्यापार तथा यातायात के सब मुख्य मार्ग मथुरा से होकर ही गुजरते थे। हिन्दुओ का तो वह प्रसिद्ध तीर्थ था ही। आगरा, फतहपुर सीकरी और अजमेर शरीफ आदि मुस्लिम धर्मस्थलो की यात्रा करने वाले लोग भी मथुरा होकर ही जाते थे।

अब रहा प्रश्न यह कि सीताराम बाबा ने अपनी गवाही मे जिस दीनदयाल साधु का उल्लेख किया है, वह कौन था। प० सत्यकेतु जी का कहना है कि वह साधु ऋषि दयानन्द हो सकते हैं। दीनदयाल नाम भी सीताराम बाबा ने गोपनीयता बनाए रखने के लिए ही लिया लगता है। ऋषि दयानन्द उस समय दक्षिण भारत की ओर भ्रमण कर रहे थे, यह अन्य सदर्भों से विदित होता है। प० सत्यकेतु श्री सीताराम बाबा की गवाही को और पचायत के रिकार्ड को निराधार तथा अप्रामाणिक नही मानते। उनका कहना है कि यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि जब किसी असली नाम को छिपाने के लिए दूसरे नाम का प्रयोग किया जाता है, तो दूसरा नकली नाम असली नाम की छाया अवश्य लिये रहता है। सम्भवत यही बात दयानन्द और दीनदयाल के सम्बन्ध मे भी हुई है।

श्री विद्यालकार ने अन्य अनेक विसगतियो का भी उचित समाधान किया है और अध्याय के अन्त मे डा० एच० डी० ग्रिसवोल्ड के सन् १८९२ मे 'इण्डियन एवेंजलिक रिव्यू' नामक ग्रन्थ के इस वक्तव्य को उद्धृत किया है—"प० दयानन्द के उद्बोध के सम्बन्ध मे कहा जा सकता है कि वे चाहते थे कि भारत मे भारतीयो का अपना धर्म रहे और भारत की प्रभुसत्ता भी भारतीयो के हाथ मे रहे। वे यह मानते थे कि वेदो की विशुद्ध शिक्षा से भारतीय कोम धीरे-धीरे इस योग्य हो

जाएंगे कि अपना शासन स्वयं कर सकें, और इस प्रकार अन्ततः उन्हें पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त हो जाए।" ब्लिसबोल्ड ने यह शब्द ऋषि दयानन्द के देहावसान के केवल ६ वर्ष बाद ही कहे थे।

इसके बाद परिशिष्ट में पंजाब में आर्यसमाज की अनुपम सफलता के कारणों का विवेचन हुआ है। फिर सहायक ग्रन्थ सूची (हिन्दी अंग्रेजी और गुजराती के कुल मिलाकर लगभग १५० ग्रन्थ), आर्य स्वाध्याय केन्द्र के सहायक सदस्यों की सूची और शब्दानुक्रमणिका के साथ यह खण्ड समाप्त होता है। अकेले इस प्रथम खण्ड से ही आर्यसमाज के सभी अंगों का संक्षिप्त परिचय मिल जाता है। अगले खण्डों में एक-एक अंग को लेकर विस्तृत विवेचन किया गया है।

द्वितीय खण्ड (१८८३ से १९४७ तक आर्यसमाज का प्रचार)

इस खण्ड में २० अध्याय पं० सत्यकेतु जी ने, ९ अध्याय प्रो० हरिदत्त ने और एक अध्याय डा० भवानीलाल भारतीय ने लिखा है।

इस खण्ड के तीस अध्यायों में संसार के धर्मसाम्राज्यों के साथ आर्यसमाज की प्रगति के तुलनात्मक विवेचन से प्रारम्भ करके ऋषि दयानन्द के देहावसान के पश्चात हुए आर्यसमाजों की क्रमिक स्थापना का वर्णन है। आर्यसमाज के आन्दोलन का और कार्य का स्वरूप क्या था, अन्य धार्मिक सम्प्रदायों से उसकी मान्यताओं में क्या अन्तर था, किस प्रकार पौराणिकों तथा अन्य मतावलम्बियों से उसका संघर्ष चलता रहा किस प्रकार विभिन्न प्रान्तों में अनेक आर्यसमाजों की स्थापना के पश्चात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं की स्थापना हुई, किस प्रकार आर्यसमाज ने दलितोद्धार शुद्धि, समाज सेवा और शिक्षा प्रसार के आन्दोलनों को सबल बनाया इस सब का अलग-अलग अध्यायों में वर्णन करते हुए देश-विभाजन तक विभिन्न क्षेत्रों में हुई प्रगति का विस्तृत विवेचन है।

उत्तर भारत के बाद दक्षिण भारत, पूर्वी भारत और पश्चिम भारत में आर्यसमाज के कार्य की प्रगति का विवेचन है। फिर आर्यसमाज के सार्वभौम संगठन के रूप में सार्वदेशिक सभा का गठन और उसकी ओर से विभिन्न अवसरों पर आयोजित आर्यमहासम्मेलनों का वर्णन है। मथुरा और टंकारा में ऋषि जन्म-शताब्दी और शुद्धि आन्दोलन तथा हिन्दू संगठन के कारण हुए स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान का वर्णन है।

तदनन्तर हैदराबाद की निजाम रियासत में सन् १९३८-३९ में हुए धर्मयुद्ध की पृष्ठभूमि, आतंक का राज्य, शोलापुर में आर्य महासम्मेलन के पश्चात् सत्याग्रह का बिगुल, सत्याग्रह की संपूर्ण सफलता, आर्यसमाज की विजय और सत्याग्रह में

शहीद हुए नर-पुगवो का उल्लेख है। फिर सिन्ध मे सत्यार्थप्रकाश पर लगे प्रतिबन्ध के निवारण के लिए आर्यसमाज की विजय का वर्णन है।

इस प्रकार भारत मे आर्यसमाज की प्रगति का वर्णन करने के पश्चात् मारीशस, फीजी, दक्षिणी और पूर्वी अफ्रीका गुयाना त्रिनीदाद सुरीनाम कनाडा और अमरीका मे आर्यसमाज के प्रचार का वर्णन है। यूरोप मे इगलैण्ड मे और विशेष रूप से लन्दन मे आर्यसमाज की गतिविधियो के वर्णन के साथ सन १९८१ मे वहा हुए सार्वभौम आर्य महासम्मेलन का वर्णन भी है। इसके साथ ही पूर्वी एशिया, पश्चिमी एशिया और मध्य एशिया मे आर्यसमाज के प्रवेश के साथ बर्मा, थाइलैण्ड सिंगापुर, मलयेशिया ईरान, ईराक अदन और अरब देशो मे आर्यसमाज के प्रचार के वर्णन के साथ यह खण्ड समाप्त होता है। इस खण्ड मे १०० चित्र भी हैं।

तृतीय खण्ड (शिक्षाक्षेत्र मे आर्यसमाज का कार्यकलाप)

इस खण्ड मे २६ अध्याय हैं जिनमे से सात अध्याय के लेखक प्रो० हरिदत्त वेदालकार तथा शेष सबके लेखक डा० सत्यकेतु विद्यालकार हैं।

प्राचीन भारत की शिक्षापद्धति क्या थी और शिक्षण केन्द्र कैसे थे। बौद्ध युग के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय नालन्दा तक्षशिला आदि की क्या स्थिति थी। हिन्दू मन्दिरो और मठो मे पाठशालाए कैसे चलती थी। मिथिला नदिया और वाराणसी जैसे विद्या-केन्द्र कैसे कार्य करते थे। स्त्रियो शूद्रो और शिल्पियो की शिक्षा की क्या व्यवस्था थी ? बृहत्तर भारत मे आश्रमो की कैसी परम्परा थी और इन शिक्षण-सस्थाओ का कैसे ह्रास हुआ—इसका प्रथम अध्याय मे वर्णन है। दूसरे अध्याय मे अग्रेजी शिक्षण सस्थाओ के श्रीगणेश से लेकर ईस्ट इडिया कम्पनी और मिशनरियो द्वारा शिक्षा के क्षेत्र पर वर्चस्व का वर्णन है। तीसरे अध्याय मे महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित शिक्षा पद्धति और शिक्षा क्षेत्र मे आर्यसमाज के प्रवेश का उल्लेख है।

चौथे अध्याय मे ऋषि की मृत्यु के पश्चात उनके स्मारक के रूप मे दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूल और कालिज की स्थापना के प्रयासो में सफलता और डी० ए० वी० शिक्षण सस्थाओ की शिक्षा नीति के सम्बन्ध मे मतभेदो से प्रारभ करके इस विषय का विस्तार दसवे अध्याय मे किया गया है। परिशिष्ट मे डी ए वी की प्रथम नियमावली भी दी गई है।

पाचवें, ग्यारहवें, बारहवें और तेरहवे अध्याय मे गुरुकुल की स्थापना की पूर्व पीठिका, प्रथम नियमावली, प्राचीन और नवीन प्रवृत्तियो के सघर्ष, सरकार के

गुरुकुल पर कोप और गुरुकुल कांगड़ी के विस्तार के साथ उसके मुलतान, कुरुक्षेत्र, इन्द्रप्रस्थ, मटिण्डू आदि शाखा गुरुकुलों का वर्णन करते हुए सन्यास लेने के बाद स्वामी श्रद्धानन्द की गुरुकुल से विदाई का वर्णन है। आठवें और नौवें अध्याय में स्वामी दर्शनानन्द जी द्वारा स्थापित महाविद्यालय ज्वालापुर, गुरुकुल वृन्दावन और गुरुकुल सिकन्दराबाद आदि का वर्णन है। नौवें अध्याय में महाविद्यालय ज्वालापुर की प्रगति और उसके स्नातकों द्वारा शिक्षा, साहित्य, विद्वत्ता और आर्यसमाज के क्षेत्र में कार्यकलाप और उसका मूल्यांकन विशेष रूप से किया गया है।

इससे पूर्व छठे और सातवें अध्याय में स्त्री शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उन्नीसवीं सदी में स्थिति और ऋषि दयानन्द के स्त्री शिक्षा विषयक दृष्टिकोण का वर्णन है। सातवें अध्याय में जालन्धर में कन्या महाविद्यालय की स्थापना और उसके विकास से सम्बन्धित घटनाचक्र का, कन्या महाविद्यालय की स्नातिकाओं द्वारा किए गए कार्य का मूल्यांकन है।

चौदहवें अध्याय में आर्ष गुरुकुल परम्परा का उल्लेख है जिसमें गुरुकुल चित्तौड़गढ़ गुरुकुल झज्झर गुरुकुल एटा, गुरुकुल आमसेना (उड़ीसा), गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर, गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास (उड़ीसा), गुरुकुल गदपुरी तथा आर्ष पद्धति की अन्य शिक्षण संस्थाओं का उल्लेख है। साथ ही उपदेशक विद्यालय यमुनानगर, संस्कृत विद्यालय दयानन्द मठ दीनानगर और पाणिनि महाविद्यालय बहालगढ़ का वर्णन है।

पन्द्रहवें अध्याय में कन्या गुरुकुल देहरादून, कन्या गुरुकुल हाथरस और कन्या गुरुकुल कनखल का और सतरहवें अध्याय में कन्या गुरुकुल खानपुर कलां, कन्या गुरुकुल नरेला, कन्या गुरुकुल लोवाकलां, कन्या गुरुकुल मोरमाजरा (करनाल), कन्या गुरुकुल खरड़ (जींद) तथा अन्य कन्या गुरुकुलों का वर्णन है। आर्यसमाज के नेताओं ने कन्या गुरुकुलों का यह सिलसिला केवल उत्तर भारत में ही नहीं, बल्कि गुजरात में भी चलाया। गुजरात में तीन कन्या गुरुकुल अपनी सुव्यवस्था के लिए प्रसिद्ध हैं। वे हैं—कन्या गुरुकुल बड़ौदा, कन्या गुरुकुल पोरबन्दर और कन्या गुरुकुल जामनगर। इन गुजरात के गुरुकुलों में अफ्रीका, यूरोप तथा अमरीका में बसे गुजरातियों की कन्याएं भी शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छी संख्या में आती हैं

अठारहवें अध्याय में देश-विभाजन के बाद डी० ए० वी० संस्थाओं तथा अन्य आर्य शिक्षण संस्थाओं को हुई अपार क्षति के बावजूद स्वतन्त्र भारत में उनके पुनः पुष्पित और पल्लवित होने का उल्लेख है। इसी अध्याय में डी ए वी द्वारा व्यावसायिक व प्राविधिक संस्थाएं तथा आयुर्वेदिक कालिज का और हिसार

मे दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय खोले जाने का वर्णन है। साथ ही उन्नीसवे अध्याय मे उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, उडीसा तथा अन्य प्रदेशो मे डी ए वी. शिक्षण सस्थाओ के खोले जाने और उनकी प्रगति का वर्णन है।

बीसवे अध्याय मे बिहार, उत्तर प्रदेश आन्ध्र प्रदेश, बगाल तथा कर्नाटक, गुजरात, हरयाणा तथा दिल्ली सघ क्षेत्र के गुरुकुलो का वर्णन है। इक्कीसवे अध्याय मे गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन की प्रगति, आयुर्वेद महाविद्यालय की स्थापना, उसके स्नातको द्वारा समाज सेवा के अनेक क्षेत्रो मे किए गए कार्य का मूल्याकन तथा उसकी वर्तमान दशा का वर्णन है। इसी प्रकार तेईसवे अध्याय मे यूनिवर्सिटी की अस्थायी मान्यता मिलने के बाद गुरुकुल कागडी मे घटित घटना-चक्र, अव्यवस्था तथा अराजकता से लेकर वर्तमान दशा तथा उसके मूल्याकन और भविष्य की सम्भावनाओ का वर्णन है। बाईसवे अध्याय मे विभिन्न प्रान्तो मे गुरुकुलेतर अन्य कन्या शिक्षणालयो का वर्णन है।

चौबीसवे अध्याय मे डी ए वी से भिन्न, विभिन्न प्रान्तो मे खुले आर्य स्कूलो और कालेजो तथा अन्य आर्यशिक्षण सस्थाओ का उल्लेख है।

पच्चीसवे अध्याय मे डी ए वी स्कूलो, कालिजो की समस्याओ का विवेचन है और इस प्रश्न पर विस्तार से विचार किया गया है कि क्या आर्यसमाज को अपने आपको अल्पसख्यक वर्ग घोषित कर अपनी शिक्षण सस्थाओ के लिए अल्पसख्यको को मिलने वाले विशेषाधिकारो का लाभ उठाना चाहिए।

छब्बीसवे अध्याय मे विदेशो मे बसे भारतीय मूल के लोगो की स्थिति का विवेचन करते हुए वहा स्थापित आर्य शिक्षण सस्थाओ का वर्णन है। इन में मारीशस, पूर्वी अफ्रीका, दक्षिणी अफ्रीका, फीजी तथा अन्य देश शामिल हैं। अन्त मे भारत मे आर्य शिक्षण सस्थाओ के भविष्य की समस्याओ के विवेचन के साथ यह खण्ड समाप्त होता है।

इस खण्ड की पृष्ठ सख्या ७२० है, चित्रो के ५० पृष्ठ अलग हैं।

चतुर्थ खण्ड (आर्यसमाज और राजनीति सन् १८७५ से १९२६ तक)

इस खण्ड मे ७ अध्याय डा० सत्यकेतु जी ने, १ अध्याय डा० भवानीलाल भारतीय ने और इक्कीस अध्याय प्रो० हरिदत्त ने लिखे हैं। कुल २९ अध्याय हैं। इसी अध्याय मे ब्रिटिश सरकार और स्वातन्त्र्योत्तर भारत सरकार के गृह मन्त्रालय के गुप्तचर विभाग द्वारा तैयार रिपोर्टों और अभिलेखागारो से प्राप्त सामग्री का विशेष रूप से उपयोग किया गया है।

महर्षि दयानन्द ने जिस व्यापक व सर्वांगीण रूप से धर्म का प्रतिपादन किया था, राजधर्म भी उसका आवश्यक अ ग है। सत्यार्थप्रकाश में पूरा एक अध्याय (छठा राजधर्म पर ही है। परन्तु अभी तक 'आर्यसमाज और राजनीति' विषय पर पर्याप्त प्रकाश नहो डाला गया। स्वाधीनता से पूर्व सरकारी गोपनीय रिपोर्टों तक आर्यसमाज के शोधार्थियो की पहुच सम्भव नही थी पर स्वतत्र भारत की सरकार ने शोधार्थियो के लिए वह सामग्री सुलभ कर दी। वर्तमान खण्ड मुख्य रूप से उसी सामग्री पर आधारित है। इसलिए इस विषय मे रुचि रखने वालो के लिए अकेला यह खण्ड ही पूरे शोध-ग्रन्थ का काम देगा।

यह सुविदित ही है कि शुरू से ब्रिटिश सरकार आर्यसमाज को सन्देह की दृष्टि से देखती थी। इसलिए आर्यसमाज के पमुख प्रचारको के पीछे गुप्तचर छाया की तरह लगे रहते थे। उनके भाषणो की पूरी रिपोर्ट सरकार के गुप्तचर विभाग के मुख्य कार्यालय मे रखी जाती थी। इस खण्ड की प्रस्तावना मे उत्तर प्रदेश (जिसे उस समय सयुक्त प्रान्त कहते थे) के उन आर्य प्रचारको और कार्यकर्ताओ की पूरी नामावली दी गई है जिनकी बाकायदा अलग-अलग रिपोर्ट रखी जाती थी। गुप्त चर विभाग के नियमानुसार २५ ३० वर्ष की नियत अवधि के पश्चात वे फाइले नष्ट कर दी जाती हैं। यदि ये फाइले आज भी उपलब्ध होती ता आर्यसमाज क राजनीति विषयक कार्यकलाप पर और अधिक तथा अतिरोचक सामग्री प्राप्त होतो। सौभाग्यवश उन गुप्तचर रिपोर्टों के आधार पर तत्कालीन उप-अधीक्षक अ ग्रेज सी० ई०डब्ल्यू० सैण्ड्स द्वारा तैयार की रिपोर्ट अभी तक सुरक्षित मिल गई। इसलिए इस खण्ड मे दी गई अधिकाश सामग्री सर्वथा नई है। वह सामग्री इतनी अधिक है कि इस खण्ड मे केवल सन् ’९२६ तक की अवधि नियत करके तब तक की ही सामग्रो दी गई है। शेष सामग्री उपयोग सातवे खण्ड मे किया गया है।

महर्षि दयानन्द की प्रेरणा से कितने ही आयसमाजी क्रातिकारी आन्दोलनो मे केवल सम्मिलित ही नही हुए, बल्कि उनका उन्होने नेतृत्व भी किया। ब्रिटिश सरकार यह मानती थी कि कोई भी आर्यसमाजी पूर्णत राजभक्त नही हो सकता। इस अ श तक यह बात ठीक है कि ऋषि की शिक्षाओ से प्रभावित कोई व्यक्ति विदेशी शासन का समर्थक नही हो सकता। परन्तु कुछ आर्यनेता नीति के रूप मे राजभक्त भी रहे हैं और उन्होने आर्यसमाज को राजनीति मे भाग लेने से सदा रोकने का प्रयत्न किया है, यह सत्य भी स्वीकार किया जाना चाहिए। इसका एक कारण यह भी है कि ब्रिटिश शासन में आर्यसमाज को वैदिक धर्म प्रचार करने को स्वतन्त्रता थी। कांग्रेस के कई पुराने नेताओ के समान कुछ आर्यसमाजी भी ब्रिटिश शासन को भारत के लिए वरदान मानते थे। उन्हे भी आर्यसस्कृति और आर्यावर्त से प्रेम था और वे अपने ढग से देश की उन्नति का प्रयत्न करते रहते थे।

इस खण्ड के पहले अध्याय मे ससार भर मे राज्यो और धार्मिक समुदायो मे सघष से प्रारम्भ करके धार्मिक समुदायो द्वारा राजनीति मे हस्तक्षेप के कारण राज्य और धम मे पैदा हुए विरोध का और स्वराज्य प्राप्ति के लिए ऋषि के पथ प्रदशन का उल्लेख है। द्वितीय अध्याय मे मुख्य रूप से १८५७ के सग्राम तथा अ य सशस्त्र सघर्षो की विफलता के बाद आयसमाज के उदय का और तीसरे अध्याय मे स्वाधानता की भावना के बीजारोपण के साथ चौथे अध्याय मे आयसमाज की राजनीति के मौलिक मन्तव्यो का उल्लेख है। आयसमाज की राज नीति का मुख्य आधार है—स्वदेशी स्वराज्य स्वभाषा लोकतन्त्र सामाजिक न्याय धर्मानुप्राणित राजनीति और मानसिक पराधीनता का निवारण कर सही राष्ट्रीयता का विकास।

पाचव और छठे अध्याय मे आयसमाज की राजनीति क प्रारम्भिक युग (१८८३ स १९१८ तक) का और आयसमाज द्वारा स्वाधीनता के लिए किए गए जना दालन स्वदेशी आन्दोलन राष्ट्रीय शिक्षा के प्रसार तथा क्रान्तिकारी आन्दोलन मे सक्रिय योगदान का वणन है। उस युग मे यदि कुछ आय नेताओ ने राजभक्ति का परिचय दिया तो उसके कारणो और परिणामो का उल्लेख है। सातव अध्याय मे पजाब और उत्तर प्रदेश मे आयसमाज द्वारा कांग्रेस के विकास मे विशेष योग दान का तथा बाद मे काग्रस से विरोध का भी वणन है। आठव अध्याय मे आय समाज पर सरकारी प्रकोप का गोरक्षा आन्दोलन का और आय विद्वानो से शास्त्रार्थों मे पराजित होकर किरानी कुरानी पुराणी द्वारा सगठित होकर ब्रिटिश सरकार के आयसमाज के विरुद्ध काम मरने का उल्लेख है। ईसाई प्रचारको और मुस्लिम प्रचारको ने भी आयसमाज के विरुद्ध विष वमन मे कसर नही छोडी जिस से भारत के अनेक बड नगरो मे साम्प्रदायिक दगे हुए। राष्ट्रीय ऐक्य को तोडने के लिए अग्रजो ने भी तब साम्प्रदायिक तत्त्वो को खब प्रोत्साहन दिया।

उस युग मे आयसमाज के साथ गुरुकुल कागडी पर भी सरकारी कोप की काली घटा छा गई। गुप्तचर विभाग द्वारा गुरुकुल के विरोध मे रिपोर्टें दी गई। प्राध्या पक वदमूर्ति श्रीपाद दामोदर सातवलेकर को गुरुकुल मे ही गिरफ्तारी हुई। गुरु कुल की बारम्बार इस सूचना पर तलाशी ली गई कि वहा ब्रह्मचारियो को बम बनाना सिखाया जाता है और जगल के एकान्त मे घुडसवारी तथा धनुर्विद्या का तथा अन्य शस्त्रास्त्रो को चलाने का अभ्यास कराया जाता है। उस समय दीनबन्धु सी०एफ० एण्ड्रूज ने बड अग्रज अधिकारियो से मिलकर उनके समक्ष गुरुकुल के केवल धार्मिक और राष्ट्रीय शिक्षणालय के रूप को उभार कर मध्यस्थता की। तभी इगलैण्ड के भावी प्रधानमत्री सर रैम्जे मैकडानल्ड वायसराय लाड चेम्सफोड और उत्तर प्रदेश के गवनर सर जम्स मेस्टन ने स्वय गुरुकुल की यात्रा

की। इससे छात्रो की राष्ट्रीय भावना तो नष्ट नही हुई, पर देश-विदेश के पत्रो मे सर्वोच्च अ ग्रेज अधिकारियो की इस यात्रा की चर्चा के कारण सरकार के कोप के कारण सम्भावित अवाछनीय स्थिति से गुरुकुल बच गया। इस सब घटना चक्र का विवरण नौवे और दसवे अध्याय मे है।

ग्यारहवे अध्याय मे आर्यसमाज की देशभक्ति की भावना और ईसाइयत के विरोध को जोडकर अ ग्रेजी शासन को हटाने की भूमिका मानने का और सत्यार्थ-प्रकाश के राजद्रोहात्मक अ शो के उद्धरण देकर सैण्डस की रिपोर्ट के आधार पर आर्यसमाज के विरुद्ध सरकार की कार्यवाही का वर्णन है। सैण्डस की रिपोर्ट सन् १९१० के मार्च मास मे प्रकाशित हुई थी। उसके आधार पर भारत सरकार के गुप्तचर विभाग के निदेशक सी०आर० क्लीवलैंड ने आर्यसमाज के सम्बन्ध मे अपनी राय इन शब्दो मे दी थी — 'भारत मे यह सबसे भयकर ब्रिटिश सरककार विरोधी आन्दोलन है। यह सुनिश्चित सामाजिक धार्मिक और राजनीतिक विश्वास पर आक्षेप करता है बेचैनी और असन्तोष को विद्रोह मे परिणत करता है और विभिन्न वर्गों को एक राष्ट्रीय तथा स्पष्ट रूप से ब्रिटिश विरोधी आधार पर एक सूत्र मे आबद्ध करता है।'

क्लीवलैण्ड की उक्त टिप्पणी पर भारत सरकार के गृह विभाग के उच्च अधिकारियो ने गम्भीरता से विचार किया। श्री ए० अर्ली ने सुझाव दिया कि समस्त आर्यसमाज के विरुद्ध कार्यवाही करना मुझे अव्यावहारिक प्रतीत होता है। इसलिए वैधानिक आन्दोलनो की सीमा का अतिक्रमण करने वालो के विरुद्ध तो हमे सख्ती बरतना चाहिए पर समूचे आर्यसमाज के प्रति नही। इस प्रकार दो विरोधी दृष्टिकोणो को देखते हुए गृह विभाग के जे०एम०जे० एनकिन्स ने सुझाव दिया कि बेशक आर्यसमाज के कुछ सिद्धान्त ब्रिटिश शासन के प्रति निष्ठा से मेल नही खाते और अनेक राजद्रोहात्मक कार्यो मे भी आर्यसमाजी लगे हुए है किन्तु आमतौर पर मनुष्यो के काय सदा अपने सिद्धान्तो के अनुरूप नही होते। आर्यसमाज अन्य धर्मों के प्रति जो विरोध प्रकट करता है, उससे अन्य धर्मों वाले भी उसके प्रभाव और विस्तार को सीमित कर देते हैं। दूसरी ओर इस बात को भी नजरन्दाज नही करना चाहिए कि ज्यो ज्यो आर्यसमाज का प्रभाव बढ़ेगा त्यो-त्यो मुसलमान ब्रिटिश शासन की शरण मे चले जाएगे। इस प्रकार आर्यसमाज के प्रचार से ब्रिटिश साम्राज्य को सुरक्षा भी प्राप्त होती है।

इस टिप्पणी से जहा यह पता लगता है कि भारत सरकार आर्यसमाज के विरुद्ध सामूहिक कार्यवाई को उचित नही मानती थी, वहा आर्यसमाज और मुसलमानो मे मतभेद बढाकर मुसलमानो को ब्रिटिश राज्य का प्रबल पृष्ठ पोषक भी बनाना चाहती थी और 'फूट डालो, राज्य करो' की नीति अपना रही थी।

इसी टिप्पणी मे गवर्नरो की भूमिका के बारे मे भी एक नवीन सुझाव दिया गया था। वह यह था कि गवर्नर आर्यसमाज के नेताओ पर अपना प्रभाव और दबाव डालकर उन्हे इस बात के लिए बाधित करे कि वे आर्यसमाज को राजद्रोह के पथ पर जाने से रोके। आर्यसमाज के नेताओ के वशीकरण का यह मत्र असाधारण महत्त्व का था। तभी उत्तर प्रदेश के गवर्नर तथा अन्य उच्च सरकारी अधिकारी बार-बार गुरुकुल कागडी तथा गुरुकुल वृन्दावन एव आर्यसमाज की अन्य सस्थाओ मे जाने लगे। इन सस्थाओ के प्रति आयजनता की जैसी श्रद्धा थी उसके कारण जनता पर भी इस दाव का अच्छा असर पडा। उसके बाद जब वाय-सराय लार्ड चेम्सफार्ड गुरुकुल कागडी गए तब से आर्यसमाज के प्रति उसे राज-द्रोही सस्था समझे जाने की प्रवृत्ति मे परिवर्तन आने लगा।

उपरोक्त घटनाचक्र के कारण आर्यसमाज के विरुद्ध सामूहिक कार्रवाई तो रुक गई, पर सेना मे आर्यसमाजियो को भर्ती करने के प्रश्न पर विवाद प्रारम्भ हो गया। जिन इलाको से सैनिक अधिक सख्या मे भर्ती होते थे इनमे आर्यसमाज का काफी प्रभाव था। बनारस छावनी मे तथा कुछ अन्य छावनियो में सवथा धार्मिक क्रिया कलाप के लिए आर्यसमाजो की स्थापना हुई। सेना मे विभिन्न धर्मों के मानने वाले लोग भर्ती होते थे और उन सब को अपने विश्वास के अनुसार अपने धर्म के पालन की पूरी स्वतन्त्रता थी। इसीलिए आर्यसमाजियो को भी यह स्वतन्त्रता मिलनी ही चाहिए थी, पर जब प्रधान सेनापतियो को हिन्दी के ऐसे अनेक गुम-नाम पत्र मिले जिनके शुरू मे 'ओ३म्' लिखा होता था—'क्योकि आर्यसमाजी इसे परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ नाम मानते है—तब सेनापति के कान खडे हो गए। उसे 'ओ३म्' मे भी विद्रोह की ध्वनि सुनाई दी। कानपुर की एक रेजिमेण्ट ने जब अपने साप्ताहिक सत्सग लगाना शुरू किया तब उसे आपत्तिजनक समझा गया और सत्सग मे जाना निषिद्ध कर दिया गया। एक सिपाही को इस काम के लिए दण्डित भी किया गया। जाट रेजिमेण्ट के कुछ सैनिक 'जाट समाचार' जाट हितकारी' और 'केसरी' जैसे पत्र मगाते थे, उन पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया गया। इस रेजि-मेण्ट की गतिविधियो पर अकुश के लिए लेफ्टि० कर्नल प्रसी को दूसरी रेजिमेण्ट मे भेज दिया गया।

यह ध्यान देने की बात है कि उस युग मे बग भग के बाद सारे देश मे स्वदेशी आन्दोलन उत्साह से चलाया जा रहा था। पजाब के लगभग सभी शहरो कस्बो मे 'स्वदेशी वस्तु प्रचारिणी' सभाए स्थापित की गई थी और लाला लाजपत-राय के नेतृत्व मे पजाब के आर्यसमाजी इस आन्दोलन मे गहरी दिलचस्पी ले रहे थे। हरियाणा भी उन दिनो पजाब का ही भाग था। जो सैनिक छुट्टी पर आते वे इस स्वदेशी आन्दोलन से अप्रभावित कैसे रहते। गुप्तचर विभाग ने भी प्रति-

अयोक्तिपूर्ण रिपोर्ट दी। फलत सैनिको के शहरी जनता से सम्पर्क पर भी रोक लगा दी गई और सैनिको की सारी डाक भी सीधी कमांडेंट के घर जाने लगी, जिससे वे उसका भलीभांति निरीक्षण कर सके। उन्ही दिनो दसवी रेजिमेन्ट से कई सिपाहियो को आर्यसमाजी साहित्य रखने और आर्यसमाजी गतिविधियो मे भाग लेने के आरोप मे सेना से निष्कासित भी किया गया। इस रेजिमेन्ट मे जाटो की सख्या काफी थी। कोहाट, बगलौर और बडौदा मे कुछ सिपाहियो ने आयसमाज के साप्ताहिक सत्सगो मे भाग लिया तो भविष्य मे उन्हे ऐसा न करने की चेतावनी दी गई। कुछ जाट सैनिको पर राजद्रोह का अभियोग भी चलाया गया। प्रधान सेना कार्यालय ने यह विज्ञप्ति भी निकाली कि हिन्दू और सिख अपनी धार्मिक सभाओ मे अपने कमांडिंग अफसर की अनुमति लेकर जा सकते है, किन्तु आर्यसमाज के सत्सगो और सभाओ मे किसी के जाने की छूट नही होगी। दसवी रेजिमेण्ट मे भर्ती होने के लिए इच्छुक लोगो से पूछा जाता था कि 'तुम आर्य हो' उसके हा कहने पर उसे अयोग्य घोषित कर दिया जाता था। सैन्य अधिकारियो ने यह भी कहा कि यदि आर्यसमाजियो को सेना मे भर्ती होने से रोक दिया जाए तो वह कठोर कार्यवाही नहीं मानी जाएगी।

अन्त मे प्रधान सेनापति ने स्वय निणय किया कि एक ही मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है और सेना की राजभक्ति सदा निष्कलक होनी चाहिए, इसलिए भविष्य मे कोई आयसमाजी सेना मे भर्ती नहीं किया जाएगा।

प्रधान सेनापति न यह स्वीकार किया कि अनेक राजभक्त और माननीय सदस्य आर्यसमाज के भी सदस्य हैं और ईडर के मेजर जनरल सर प्रतापसिंह आर्यसमाजी होते हुए भी वायसराय की कौसिल के सदस्य है, पर उनका मत यही रहा कि आर्यसमाज एक धार्मिक सस्था के रूप मे भले ही शुरू हुआ, पर अब वह अधिकाश मे राजनीतिक सस्था बन गया है। इसलिए सेना पर इसका प्रभाव बढने देना बडा खतरनाक होगा। फिर भी आयसमाजियो पर सेना मे भर्ती होने के लिए सर्वथा प्रतिबन्ध लगान के सम्बन्ध मे भारत सरकार से स्वीकृति ली जानी चाहिए।

जब प्रधान सेनापति का नोट गृह विभाग के पास पहुंचा तो उसने आर्यसमाजियो के भर्ती होने पर पूर्ण प्रतिबन्ध की अनुमति नही दी, क्योकि उसे भय था कि इस प्रश्न को ब्रिटिश पार्लियामेट तक मे उठाया जाएगा और तब सरकार को अपने कदम का बचाव करना मुश्किल हो जाएगा। पजाब और उत्तर प्रदेश की सरकारो ने भी व्यक्तिगत कार्रवाई का तो समर्थन किया, किन्तु सामूहिक कार्यवाही का नही, क्योकि इससे उन्हे ज्वाला के और प्रचण्ड रूप ग्रहण करने की आशका थी। निष्कर्ष के रूप मे यह कहा जा सकता है कि उस समय भारत सरकार

सैन्य विभाग तो आर्यसमाजियो के विरुद्ध कठोर कार्यवाही करने को कटिबद्ध था, पर गृह विभाग इसके लिए तैयार नहीं हुआ। उसे अनुमान था कि आर्यसमाजियो की योद्धावृत्ति के कारण इस आन्दोलन को शक्ति के जोर से दबाना आसान नही होगा। इसमे कोई सन्देह नही कि यदि गृह-विभाग इस विषय मे सैन्य विभाग का समुचित पथप्रदर्शन और नियन्त्रण न करता, और वायसराय आर्यसमाज के के अनुकूल निर्णय न लेते। आर्यसमाज पर सामूहिक रूप से प्रतिबन्ध लगाने का निर्णय किया जाता तो अवश्य ही एक नया आन्दोलन उठ खडा होता। इस विवरण के साथ बारहवा अध्याय समाप्त होता है।

उसके बाद तेरहवे अध्याय मे आर्यसमाजियो के राजनीतिक उत्पीडन का वर्णन है। सब से पहले लाला लाजपतराय उसके शिकार हुए। उन्हे बिना कोई मुकदमा चलाए देश-निर्वासन का दण्ड दिया गया, पर पजाब सरकार पूरा प्रयत्न करके भी उनके विरुद्ध कोई प्रमाण नही जुटा सकी जिससे उन पर अभियोग लगा लगाकर दण्डित किया जा सकता। अत उन्हे अपनी सफाई का मौका दिए बिना ही निर्वासित कर दिया गया। अन्य अनेक सैकडो निर्दोष आर्यसमाजियो को दण्डित किया गया। सरकार की इस वक्रदृष्टि से भयभीत होकर कुछ लोगो ने आर्यसमाज से अपना सम्बन्धविच्छेद भी कर लिया। इससे उन्हे वेतनवृद्धि आदि का लाभ भी मिला। इसी अध्याय मे कुछ ऐसी घटनाओ का उल्लेख है जो सरकार के उत्पीडन का ज्वलन्त प्रमाण हैं तो साथ ही आर्यसमाजियो के दृढ चरित्रबल का भी। ऐसे अनेक आर्यपुरुष निकले जिन्होने सहर्ष सरकारी सर्विस छोड दी, पर आर्यसमाज को नही छोडा। कई अग्रेज अफसरो ने गाँव वालो को प्रेरित किया कि वे अपने गाव से आर्यसमाजियो को निकाल दे। कई स्थानो पर यज्ञोपवीत पहनने पर प्रतिबन्ध लगाया गया, तब आर्यसमाजियो ने उसका खुलकर विरोध किया। सैनिको को आदेश दिया गया कि जो सिपाही अपनी नौकरी बनाए रखना चाहते हैं उन्हे अपने जनेऊ को तिलाजलि दे देनी चाहिए। भविष्य मे जनेऊ पहनने वालो को बागी समझा जाएगा। परन्तु आर्यसमाजियो की दृढता के आगे अधिकारियो को अपना आदेश वापस लेना पडा। इसके साथ तेरहवा अध्याय समाप्त होता है।

उस समय के पूरे वातावरण को समझने के लिए ग्यारहवा बारहवा और तेरहवा अध्याय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है इसलिए हमने कुछ विस्तार से उनकी चर्चा की है।

पटियाला केस

१४, १५, १६ और १७ वे अध्याय मे पटियाला अभियोग का विस्तृत वर्णन है—कि किस प्रकार ब्रिटिश भक्त पटियाला नरेश ने ११९ आर्यसमाजियो को गिर-

फ्तार किया था जिनमें से केवल ४० को जमानत पर छोड़ा गया। इस केस का आर्यसमाज के इतिहास मे विशेष महत्व इसलिए भी है कि इसी केस मे सरकारी वकील ने सार्वजनिक रूप से आर्यसमाज को राजद्रोही सस्था सिद्ध करने का प्रयत्न किया था। इससे पहले केवल गुप्तचरो की रिपोर्ट मे ही वर्णन होने से आम जनता तक वे आरोप नही पहुचे थे। महात्मा मुशीराम जिज्ञासु (बाद मे स्वामी श्रद्धानन्द) और आचार्य रामदेव ने 'आर्यसमाज एण्ड इट्स डिट्रैक्टर्स' नामक पुस्तक मे इस केस का विस्तृत वर्णन किया है। इस केस मे आर्यसमाज पटियाला के प्रधान से लेकर चपरासी तक सब को गिरफ्तार कर लिया गया था। उनके घरो की बुरी तरह तलाशी ली गई थी। इस तलाशी मे गाडिया भर कर जो कागजात और पुस्तके एकत्र की गयी, उनमे सत्यार्थप्रकाश तथा ऋषि दयानन्द के अन्य ग्रन्थ और आर्य नेताओ के चित्र भी थे। पटियाला नरेश ने इस केस की सुनवाई के लिए विशेष अदालत बनाई थी और उसे चीफ कोर्ट के अधिकार दिए गए थे। गिरफ्तार व्यक्तियो को कोई चार्जशीट भी नही दी गई थी। ये गिरफ्तारिया ११ अक्टूबर, १६०६ को हुई और मुकदमा २२ नवम्बर से शुरू हुआ। पटियाला नरेश ने यह प्रतिबन्ध भी लगा दिया कि अभियुक्त अपनी पैरवी के लिए पटियाला के बाहर का कोई वकील नही रख सकते। सरकारी वकील ने आर्यसमाज को और आर्य प्रतिनिधि सभा को राजनैतिक सस्था बताते हुए यह भी कहा था कि महाराजा अपने पितामह के समय अग्रेजो के साथ एक सधि मे बध हैं, इसलिए अग्रेजा हकूमत को हटाने या उलटने का प्रयत्न करना ऐसा अपराध है जिसके लिए दण्डित करने का महाराज को पूरा अधिकार है।

सरकारी वकील ग्रे ने कहा कि यदि आर्यसमाज केवल धार्मिक सस्था होती तो उसके सस्थापक को सेना, राज्यव्यवस्था और आदर्श राज्य आदि का वर्णन करने की क्या आवश्यकता थी। 'आर्याभिविनय' मे विदेशी हम पर शासन न करें'—यह प्रार्थना करने की क्या आवश्यकता थी, श्याम जी कृष्ण वर्मा जैसे प्रसिद्ध क्रान्तिकारी को अपना शिष्य बनाने की और उसे परोपकारिणी सभा का सदस्य बनाने की क्या आवश्यकता थी ? इसके अलावा लाला लाजपतराय द्वारा लिखित कई पुस्तको का उल्लेख किया गया, जिनमे मेजिनी, गैरीबाल्डी, शिवाजी और स्वामी दयानन्द की जीवनिया शामिल हैं। इसी प्रसग मे गुरुकुल कागडी और उसकी सरकार-विरोधी शिक्षा पद्धति की भी चर्चा की गई। इस केस मे महात्मा मुशीराम भी वकील के रूप मे पेश हुए थे। उन दिनो पटियाला मे आर्य-कुमार सभा और विद्यार्थी आचार सुधारिणी सभा भी स्थापित थी, सर छोटूराम उसके मन्त्री थे और इस सभा मे प्राय स्वराज्य प्राप्त करने के उपायो पर भी विचार होने का हवाला दिया गया। कई आर्यसमाजियो द्वारा स्वदेशी वस्तुओ की दुकान खोलने को और ट्रिब्यून, केसरी, पजाबी, प्रकाश, वन्देमातरम्, भारतभगिनी

और स्वराज्य आदि अखबारों के पढ़ने पढ़ाने को भी राजद्रोह माना गया। एक दुकान मे बेचने के लिए मगाए गए तिलक अजीतसिंह अरविन्द घोष और १८५७ सैन्य विद्रोह के नेता नाना साहब रानी झासी टीपू सुलतान तथा खुदीराम बोस के चित्रो को भी आपत्तिजनक माना गया।

अन्त मे १८ जनवरी १९१० को अभियुक्तो की ओर से एक बिना शर्त माफीनामा पेश किया गया, जिस पर महाराजा ने मुकदमा तो उठा लिया पर जो लोग सदियो से पटियाला मे रहते आए थे और जिनकी हजारो लाखो की सम्पत्ति थी उन सब को एक सप्ताह के अन्दर रियासत छोडकर चले आने का और फिर कभी पटियाला मे प्रवेश न करने का आदेश दिया। माफीनामा तो इस आश्वासन पर दिया गया कि अभियुक्तो को पूरी तरह माफ कर दिया जाएगा पर महाराजा ने उस आश्वासन को तो भग किया ही अभियुक्तो का जो सामान जब्त किया गया था वह भी नही लौटाया गया। पटियाला नरेश ने अग्रजो के प्रति अपनी वफादारी सिद्ध करने के लिए ही यह सब किया था।

इस पटियाला केस मे आयसमाज को कडी अग्नि परीक्षा म से गुजरना पडा पर तु उसक विरुद्ध राजद्रोह का अभियोग सिद्ध नही हुआ। समस्त राजसी-शक्ति धुरन्धर वकील और राज्य की पुलिस दो वर्ष तक इन राजद्रोहियो के विरुद्ध प्रमाण खोजते रहे ताकि उन्हे न्यायालय द्वारा दण्डित किया जा सके पर उन्हे सफलता नही मिली। दूसरी उपलब्धि इस केस की यह मानी जा सकती है कि उस समय आयसमाज के जो दो दल बन गए थे—घास पार्टी और मास पार्टी—वे कुछ समय के लिए एक हो गए। यह अभियोग आयसमाज के सगठन और अस्तित्व दानो के लिए महान सकट था जिसने दोनो दलो को उस सकट का सामना करने के लिए सयुक्त कर दिया।

उसक बाद आयसमाज की ओर से सरकार के स देहो को दूर करने के लिए चार प्रकार के प्रयास किए गए (१) उच्चतम सरकारा अधिकारियो से मिलकर उनका भ्रम निवारण (२) व्याख्यान और प्रचार (३) पुस्तक पुस्तिकाओ का प्रकाशन और (४) व्यक्तिगत सम्पक। इस बहुमुखी नीति के द्वारा आयसमाज के धार्मिक सस्था होने का खूब ढोल पीटा गया जिसक प रिणाम स्वरूप अ ग्रज अधिकारियो के रवैये मे भी परिवतन आया। परन्तु इस बीच ईसाई मिशनरी तथा मुस्लिम मौलवी आयसमाज को राजद्रोही और स्वय को राजभक्त सिद्ध करने मे निरन्तर लगे रहे। लाला लाजपतराय के निर्वासन के साथ आयसमाज पर जो कालीघटा छाई थी उसका निवारण करने में स्वामी श्रद्धानन्द ने जिस निर्भीकता से और समझदारी से आयसमाज का नेतृत्व किया उसी का फल यह हुआ कि आयसमाजियो का मनोबल घटने के बजाय और बढ गया। १७ व अध्याय मे

लाला लाजपतराय के विचारो और कृतित्व का विस्तृत उल्लेख है जिनकी गिर-फ्तारी से आर्यसमाज के प्रति सरकारी कोप प्रारम्भ हुआ था। अठारहवे अध्याय मे विदेशो मे क्रान्तकारी सगठन के पुरोधा श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा के कृतित्व का विशेष वणन है।

इसके बाद १६ २०, २१, २२ और २३व अध्याय म क्रमश वेदो के क्राति कारी व्याख्याकार श्री सातवलेकर स्वामी अभयदेव और अन्य आय विद्वानो द्वारा स्वराज्य और लोकतत्र की भावना का प्रचार फिर भाई परमानन्द लाला हरदयाल प० परमानन्द फासी वाले हार्डिग बमकाण्ड से सम्बन्धित मा० अमीरचन्द्र, भाई बालमुकुन्द और शाहपुरा (राजस्थान) के बारहठ परिवार और उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध क्रातिकारी गदालाल दीक्षित और पजाब के प्रसिद्ध क्रातिकारी सरदार भगतसिंह का अलग अलग पर्याप्त विस्तार से उल्लेख है। सरदार भगतसिंह के समस्त परिवार के आयसमाज के सम्पक मे आने का एक सुपरिणाम यह भी हुआ कि सिक्खो और हिन्दुओ मे सौमनस्य की स्थापना हुई और अनेक सिक्खो न भी भी स्वराज्य प्राप्ति के निमित्त क्रातिकारी आदोलन मे बढ चढ कर भाग लिया। आज कल के सिक्ख जब स्वराज्य प्राप्ति के लिए सिक्खो क बलिदानो की चर्चा करते है तब वे उन्ही बलिदानी सिक्खो के पक्ष को अपने खाते म डालते है जबकि असलियत यह है कि अग्रेजो के पिट्ठू अधिकाश सिक्ख उन बलिदानियो का सदा विरोध ही करते रहे थे।

चौबीसवे अध्याय मे स्वामी श्रद्धानन्द के राजनीति मे प्रवेश दिल्ला के राष्टीय जागरण मे उनकी प्रमुख भूमिका रौलट एक्ट के विरद्ध आदोलन अमृतसर मे काग्र स के स्वागताध्यक्ष के रूप मे उनके काग्रेसी मच से दिए गए प्रथम हिन्दी भाषण और प्रथम बार काग्रसी मच से दलितो की समस्या के उल्लेख का वणन है। २५वा अध्याय प० रामप्रसाद बिस्मिल के कृतित्व को समर्पित है। २६व अध्याय मे राजस्थान मे महर्षि के आगमन से लेकर अब तक हुए राजनतिक आदोलनो मे और रियासतो के प्रजा मडलो मे आयसमाज के कतृत्व का उल्लेख है। सत्ताइसव अध्याय मे काग्रस के नेतृत्व मे चल असहयोग आदोलन और स्वराज्य प्राप्ति आदोलन के प्रति आयनताओ क मिले जुल रुख का परन्तु आय जनता द्वारा उसमे भारी सख्या मे शामिल होने का उल्लख है। २८व अध्याय मे महात्मा गाधी और काग्रस की मुस्लिम तुष्टिकरण नीति के विरोध मे हिन्दू सगठन पर और शुद्धि आदोलन पर जोर दने का सविस्तर उल्लेख है। उनतीसव अध्याय म राजनाति मे भाग लेने के सम्बन्ध मे आय नेताओ के परस्पर विरोधी विचार, स्वराज्य सम्मेलन और राजाय सभा के निर्माण का और सन १६२६ के बाद सन् १६४७ तक देश की राजनीतिक गति विधियो को परोक्षरूप से प्रभावित करने के उल्लेख के साथ यह

खण्ड समाप्त होता है।

अन्त मे इस खण्ड मे जिन मूल स्रोतो से सहायता ली गई है उनकी लबी सूची और शब्दानुक्रमणिका है। पृष्ठ सख्या ७१५ और चित्रो के ६६ पृष्ठ अलग हैं जिनमे सौ से ऊपर व्यक्तियो का सचित्र विवरण है।

पाचवा खण्ड (साहित्य के क्षेत्र मे आर्यसमाज का कार्यकलाप)

इस खण्ड मे २१ अध्याय डा० भवानीलाल भारतीय ने और ४ अध्याय प्रो० हरिदत्त वेदालकार ने लिखे है। इस प्रकार कुल २५ अध्याय, ६८८ पृष्ठ और चित्रो के ७५ पृष्ठ हैं।

आर्यसमाज के आदोलन को व्यापक और सबल बनाने मे उसके साहित्य का भारी महत्त्व है। यह साहित्य केवल हिन्दी मे नही बल्कि अनेक विदेशी भाषाओ मे और भारत की प्राय सभी प्रादेशिक भाषाओ मे फैला हुआ है। प्रिंटिग प्रेस और कागज आदि के आविष्कार के बाद इस साहित्य को जनता तक पहुचाना भी सुगम हो गया। ऋषि दयानन्द के बाद उनके शिष्यो-प्रशिष्यो द्वारा तथा आर्य-समाज के खण्डन-मण्डन आदि से सम्बद्ध बहुत साहित्य तैयार हुआ है। हजारो की सख्या मे छोटी-बडी पुस्तके, ट्रैक्ट और पत्र पत्रिकाए आज भी प्रकाशित हो रही हैं। जिस प्रकार आर्यसमाज ने समाज सुधार, पाखण्ड खडन और कुरीतियो के निवारण तथा सामाजिक न्याय की स्थापना मे महान कार्य किया है, वैसा ही महान् कार्य उसने साहित्य निर्माण के क्षेत्र मे भी किया है। इस भाग मे आर्यसमाज के उसी विशाल साहित्य का दिग्दर्शन है। डा० भवानीलाल भारतीय ने अनेक वर्षों के परिश्रम के पश्चात् 'डाक्टरेट' की डिग्री के लिए यही विषय चुना था। उनका वह शोध प्रबन्ध इस खंड को तैयार करने मे सब से अधिक सहायक हुआ है। अपनी जीवन व्यापी खोज के पश्चात् उन्होने आर्य साहित्य की जो विशाल सूची तैयार की है, वह भी इसमे सहायक हुई है। इस साहित्य मे केवल गम्भीर दार्शनिक, शास्त्रीय और धार्मिक साहित्य ही नही, कथा-कहानी-काव्य आदि ललित साहित्य भी शामिल है जो गद्य-पद्य दोनो मे है।

आर्य जाति का जो शास्त्रीय साहित्य समझा जाता है उसमे वैदिक सहिताओ से लेकर ब्राह्मण ग्रन्थ उपनिषद्, आरण्यक और वेदाग तथा उपाग तो शामिल हैं ही इतिहास पुराण और महाकाव्य के अतिरिक्त नव-जागरण सबधी साहित्य भी शामिल है। ऋषि दयानन्द के द्वारा प्रणीत साहित्य को और ऋषि के अनुपलब्ध ग्रथो को पृथक अध्याय देकर तत्पश्चात् वेदादि शास्त्रीय साहित्य के लिए एक एक अलग अध्याय लिखा गया है। तीसरे अध्याय मे आर्यसमाज के वैदिक

साहित्य, चतुर्थ मे उपनिषद् विषयक साहित्य, पञ्चम मे दर्शनविषयक साहित्य छठे मे स्मृति और नीतिशास्त्र सम्बन्धी साहित्य का विवरण है।

सातवें अध्याय मे आर्य सिद्धान्तो के समर्थन में लिखे गए ग्रंथो का, शुद्धिविषयक, तुलनात्मक धर्मविषयक तथा अन्य फुटकर विषयो से सम्बद्ध ग्रंथो का विवरण है। आठवें अध्याय मे कर्मकाण्ड और १६ संस्कारो से संबंधित और नौवें अध्याय मे खंडनात्मक साहित्य का विवरण है। इसमे पौराणिक मतो, इस्लाम और ईसाइयत, अवतारवाद, मूर्तिपूजा, श्राद्ध, तीर्थ, फलित ज्योतिष तथा मध्यकालीन और अर्वाचीन मतो के खंडन मे लिखे गए ग्रंथो का विवरण है। यह विवरण केवल नीरस तालिका-समन्वित नही, प्रत्युत पूर्वापर पृष्ठभूमि और अमुक अमुक ग्रंथो की विषय वस्तु के दिग्दर्शन से भी युक्त होने के कारण बहुत काम का है। विषय वैविध्य के साथ परिमाण मे भी यह कम नही है।

दसवें अध्याय मे स्वामी जी के जीवन-चरित्र और उनके व्यक्तित्व के संबंध में लिखे गए ग्रंथो का और ग्यारहवें अध्याय में आर्यसमाज के संबंध में लिखे गए साहित्य का विवरण है जिसमे आर्यसमाज के विधि-विधान और शिक्षा संबंधी साहित्य से लेकर हैदराबाद आर्य सत्याग्रह और गोरक्षा तथा हिन्दी रक्षा आंदोलन संबंधी साहित्य भी समाविष्ट है।

बारहवें अध्याय मे आर्यसमाज के संस्कृत साहित्य का और आर्य लेखको द्वारा लिखे गए संस्कृत ग्रंथो का विवरण है। तेरहवें अध्याय में आर्यसमाज के हिन्दी साहित्य पर अच्छा प्रकाश डाला गया है जिसमे भारतेन्दु काल से लेकर आधुनिक काल तक कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक आदि भी शामिल हैं। चौदहवें अध्याय मे आर्यसमाज के जीवनी साहित्य का वर्णन है—जिसमें आर्य महापुरुषो के, प्रमुख आर्य सन्यासियो के, विद्वानो, नेताओ, उपदेशकों तथा अन्य बलिदानी वीरो के तथा रामायण-महाभारत पर आधारित जीवन चरित्रो का वर्णन तो है ही, आर्यसमाज के आत्मकथा साहित्य पर भी प्रकाश डाला गया है। पंद्रहवें अध्याय मे आर्यसमाज के ऐसे फुटकर साहित्य का विवेचन है, जिसमे अभिनन्दन ग्रन्थ, स्मारिकाए, यात्रा-साहित्य, नारी-शिक्षा विषयक साहित्य, इतिहास विषयक और सामयिक राजनीति विषयक साहित्य, स्वास्थ्य रक्षा विषयक और विभिन्न धर्म ग्रंथो के अनुवाद और टीका संबंधी साहित्य शामिल है। सोलहवें अध्याय मे आर्यसमाज के भजन-साहित्य का और बीसवीं सदी के भजनोपदेशको और उनकी रचनाओ का वर्णन है—जिनका आर्यसमाज की ओर जनता को आकर्षित करने मे विशेष योगदान रहा है।

सत्रहवें अध्याय में आर्यसमाज के पत्रों और पत्रकारिता का, पत्रो के अन्तरंग और बहिरंग का, आर्य पत्रकारिता के विविध युगो का और हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओ मे निकलने वाली पत्र-पत्रिकाओ का वर्णन है। अठारहवें

अध्याय मे आर्यसमाज के अन्तर्गत विविध विद्वानों द्वारा लिखे गए शोधग्रन्थ, ऋषि दयानन्द के जीवन और कृतित्व सम्बन्धी शोधकार्य और सस्थागत शोधकार्यों का परिचय है उन्नीसवें अध्याय मे अन्य भारतीय भाषाओ मे और अग्रेजी मे लिखे गए आय साहित्य का परिचय दिया गया है। बीसवे अध्याय मे आर्य साहित्य के प्रकाशन से सम्बद्ध आर्यसमाज के प्रयासो का और आर्य साहित्य के प्रकाशको का अकारादि क्रम से वर्णन है। पाठको को यह जानकर आश्चय होगा कि इन आर्य प्रकाशको की सख्या ७८ तक पहुंच गई है, जिनमे कुछ देश-विभाजन से पूर्व पजाब और सिन्ध से भी सम्बन्धित हैं। इक्कीसवे अध्याय मे आर्यसमाज के विरोध मे लिखे गए साहित्य का भी उल्लेख है। हमे यह स्वीकार करना चाहिए कि आर्यसमाज के प्रचार मे इन विरोधी ग्रन्थो का भी महत्त्व है, क्योकि तब आर्यसमाजी विद्वानो को उनका उत्तर देने के लिए अपने सिद्धान्तो का और अधिक गम्भीर मथन करने का अवसर मिला।

बाईसवे से लेकर पच्चीसवे अध्याय तक हिन्दी गद्य के उन्नायक के रूप मे ऋषि के हिन्दी गद्य लेखन पर प्रभाव का और ऋषि की विभिन्न गद्य शैलियों का विवरण है। आर्यसमाज के उपन्यासकारो, कथाकारो, नाटककारो और निबन्धकारो तथा गद्य काव्य प्रणेताओ का सक्षिप्त परिचय है, हिन्दी काव्यधारा मे द्विवेदी युग से लेकर आधुनिक युग तक आर्यसमाज के योगदान का परिचय है और अन्त मे आय विद्वानो द्वारा इतिहास, राजनीति शास्त्र, समाज-विज्ञान, भाषा विज्ञान, अन्य वैज्ञानिक साहित्य, जीवनी साहित्य, यात्रा साहित्य, वन्यजीवन सम्बन्धी साहित्य तथा आयुर्वेद सम्बन्धी ग्रन्थो का परिचय है।

परिशिष्ट (१) मे आर्यसमाज के ४४ विद्वानो के वेदशास्त्र सम्बन्धी कार्यों का सक्षिप्त परिचय है। परिशिष्ट (२) मे बगाल के आर्य साहित्य के प्रणेताओं का और उनके लिखे ग्रन्थो का परिचय है। परिशिष्ट (३) मे उडिया भाषा के आर्यसाहित्य का परिचय है। परन्तु भारत की अन्य प्रादेशिक भाषाओ मे लिखे गए साहित्य का और उसके प्रणेताओ के वर्णन का अभाव खटकता है। परिशिष्ट (४) मे आर्यसमाज के फुटकर साहित्य का उल्लेख है। परिशिष्ट (५) मे वेदशास्त्रो की व्याख्या तथा भाष्य के लिए किए गए महत्त्वपूर्ण कार्य का सोदाहरण दिग्दर्शन है।

इन परिशिष्टों का भी अपना अलग महत्त्व है। ७५ पृष्ठ चित्रो के हैं जिनमे इस इतिहास के सरक्षकों और प्रतिष्ठित सदस्यो का सक्षिप्त सचित्र परिचय है। इस प्रकार यह खड समाप्त होता है।

छठा खण्ड (स्वराज्य-संघर्ष में आर्यसमाज का योगदान (१९२६-१९४७) तथा स्वतन्त्र भारत में आर्यसमाज की गतिविधि)

इस खंड मे २८ अध्याय हैं जिनमे से १२ अध्याय प० सत्यकेतु विद्यालंकार ने, ५ भवानीलाल भारतीय ने और १३ अध्याय दत्तात्रेय तिवारी ने लिखे है। कुल ६५० पृष्ठ हैं और ८० पृष्ठ चित्रो के हैं।

बीसवी सदी के प्रथम चरण मे भारत की स्वाधीनता के लिए जो आन्दोलन चला वह दो प्रकार का था—नरम और गरम, अर्थात् क्रातिकारी और शान्तिमय। ऋषि दयानन्द से स्वराज्य और स्वदेशोन्नति की प्रेरणा पाकर आर्यसमाजी अपनी रुचि और परिस्थिति के कारण इन दोनो प्रकार के आन्दोलनो मे भाग लेते रहे। महात्मा गाधी के कार्यक्षेत्र मे उतरने से पूर्व स्वाधीनता आन्दोलन अधिकतर क्राति कारियो के हाथ मे था। तब हम देखते हैं कि क्रातिकारियो की पक्ति मे आर्य समाजी सब से आगे हैं। लोकमान्य तिलक की मृत्यु के बाद जब महात्मा गाधी ने काग्रेस की बागडोर संभाली तब उनके शान्तिमय असहयोग आन्दोलन मे भी आर्य-समाजियो ने सब से आगे रह कर भाग लिया। हो भी क्यो न मुख्य लक्ष्य था स्वराज्य प्राप्ति—फिर चाहे वह अहिंसा से प्राप्त हो, चाहे हिंसा से।

नरम और गरम दोनो प्रकारो मे आर्यसमाजियो के बढ चढ भाग लेने का एक ऐतिहासिक पहलू भी है। काग्रेस के मच से 'स्वराज्य' शब्द का सब से पहले प्रयोग सन १९०६ मे दादाभाई नौरोजी ने किया था—जिन्हे काग्रेस का पितामह कहा जाता है। यह कल्पना असगत नही है कि नौरोजी ने 'स्वराज्य' की प्रेरणा सत्यार्थप्रकाश से ग्रहण की। कारण—दादाभाई नौरोजी लन्दन में श्यामजी कृष्ण वर्मा के निवास स्थान पर लगने वाले आर्यसमाज के सत्सगो मे प्राय आया करते थे। वहा सत्यार्थप्रकाश से उनका परिचय अवश्य हुआ होगा। सत्यार्थप्रकाश से परिचित व्यक्ति 'स्वराज्य' शब्द से भी अपरिचित नही रह सकता। इस कारण यदि दादा भाई राष्ट्रीय चेतना के पितामह हैं, तो ऋषि दयानन्द उस चेतना के प्रपिता-मह हैं।

यह प्रपितामहत्व यो भी सिद्ध होता है—महात्मा गाधी गोखले को अपना गुरु मानते थे, गोखले रानाडे को और रानाडे ऋषि दयानन्द को। ऋषि के पूना-प्रवचनो के आयोजन मे रानाडे का प्रमुख हाथ था। जहा तक क्राति पथ के अनु-सरण का प्रश्न है—उसमे भी प्रपितामह ऋषि दयानन्द ही ठहरते हैं। भगतसिंह आदि क्रान्तिकारियो के गुरु भाई परमानन्द, लाला हरदयाल और विनायक

-दामोदर सावरकर आदि प्रसिद्ध क्रान्तिकारियो के गुरु श्याम जी कृष्ण वर्मा और श्याम जी कृष्ण वर्मा के गुरु ऋषि दयानन्द। राजस्थान के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी प्रताप सिंह के पिता केसरीसिंह बारहठ, केसरीसिंह के पिता कृष्णसिंह (उदयपुर के दीवान) और कृष्णसिंह के प्रेरणादाता ऋषि दयानन्द। इसलिए यदि आर्यसमाजियो ने दोनो प्रकार के आन्दोलनो मे भाग लिया तो यह अपनी गुरु-शिष्य परम्परा का निर्वाह ही था, इसमे आश्चर्य की कोई बात नही।

इसी प्रसग मे एक और बात भी ध्यान देने की है। सन् १९२० से पूर्व उत्तर भारत मे काग्रेस का अस्तित्व नगण्य था, सर्वत्र राष्ट्रीय चेतना का आधार आर्यसमाज था—केवल आर्यसमाज। आर्यसमाजियो ने ही उत्तर भारत के अधिकाश स्थानो पर काग्रेस की स्थापना की। राष्ट्रीय चेतना का प्रमुख आधार क्योकि आर्यसमाज था और उस समय क्रान्तिकारी आन्दोलन का जोर था, इसलिए आर्य नवयुवक उसी ओर आकर्षित होते थे। जरा कल्पना करिए—उस युग मे पजाब के चार प्रमुख आर्य नेता थे और उन चारो के सुपुत्र क्रान्तिकारी आन्दोलन मे शामिल थे। वे चार नेता थे—महात्मा मुशीराम महात्मा हसराज महाशय कृष्ण और खुशहालचन्द खुर्सन्द (बाद मे महात्मा आनन्द स्वामी)। इन चारो के सुपुत्र थे क्रमश—ह० हरिश्चन्द्र, बलराज, वीरेन्द्र और रणवीर—और इनमे से तीन क्रान्तिकारी आन्दोलन मे भाग लेने के कारण लम्बी लम्बी सजाए भोग रहे थे और हरिश्चन्द्र सन् १९१४ मे ही प्रसिद्ध क्रान्तिकारी राजा महेन्द्रप्रताप के साथ भारत को स्वाधीन कराने के निमित्त विदेश चले गये थे—उसके बाद वे कभी स्वदेश नही लौट सके।

इस भूमिका के साथ प्रथम अध्याय मे पजाब के और उत्तर प्रदेश के आर्यसमाजियो द्वारा असहयोग आन्दोलन मे सहयोग का सक्षिप्त वर्णन है। इस प्रसग मे डी०ए०वी० तथा अन्य आर्य शिक्षण सस्थाओ के कर्तृत्व का भी उल्लेख है। असहयोग आन्दोलन के बाद पजाब मे जिन नेताओ ने काग्रेस की बागडोर सभाली—यथा डा० गोपीचन्द भार्गव, लाला जगतनारायण, भीमसेन सच्चर, पृथ्वीसिंह आजाद, अमरनाथ विद्यालकार और चौ० माडूसिंह आदि—वे सब आर्यसमाजी थे। सर छोटूराम भी आर्यसमाजी थे। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश के विभिन्न शहरो मे जिन आर्यसमाजियो ने असहयोग आन्दोलन मे भाग लिया—उनमे प० गोविन्द बल्लभ पन्त, चौ० चरणसिंह, प० अलगूराय शास्त्री, बलदेवसिंह आर्य, श्री जयानन्द भारती, प० रेवानन्द चन्द्रभानु गुप्त डा० महबानसिंह, महावीर त्यागी, बनारसीदास गुप्त, कैलाश प्रकाश, डा० फूलसिंह, पं० नरदेव शास्त्री, धर्मदेव शास्त्री, दर्शन केसरी, अमरनाथ वैद्य, प० चन्द्रमणि विद्यालकार आदि प्रमुख हैं। प्रथम अध्याय के पृष्ठ ३६ पर सत्याग्रह मे जेल जाने वाले गुरुकुल कागडी के स्नातको की सूची भी दी गई है।

जिनमे ऐसे अनेक स्नातको के नाम हैं जिन्होंने बाद मे साहित्यिक, शैक्षणिक या सामाजिक क्षेत्र मे काम करते हुए अच्छा यश पाया।

उसके बाद दिल्ली के आर्यसमाजियो द्वारा स्वाधीनता सग्राम मे योगदान का उल्लेख है। जिनमे प्रमुख हैं—इन्द्र विद्यावाचस्पति, देशबन्धु गुप्त, श्रीकृष्ण नायर डा० सुखदेव, श्रीमती वेदकुमारी, श्रीमती सत्यवती, श्रीमती प्रकाशवती, डा० युद्धवीरसिंह श्रीमती चन्द्रावती चौधरी आदि। उन दिनो गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को भी सरकारी कोप का भाजन बनना पड़ा। एकान्त जगल मे और बस्ती से दूर होने के कारण यह गुरुकुल क्रान्तिकारियो का सुरक्षित शरणस्थान बना रहा। इस के बाद अन्य राज्यो के भी उन प्रमुख आर्यसमाजियो का उल्लेख है जिन्होने सत्याग्रह आन्दोलन मे भाग लेकर जेल यातना भोगी। भारत का ऐसा कोई प्रान्त नही था जहा के आर्यसमाजियो ने असहयोग आन्दोलन म सोत्साह भाग न लिया हो। इसके बाद दूसरे अध्याय मे क्रान्तिकारी सघर्ष पर आर्यसमाज के प्रभाव का वर्णन है जिसका कुछ सकेत हम ऊपर कर चुके है।

तीसरे चौथे और पाँचवें अध्याय मे भारत विभाजन और पाकिस्तान के निर्माण को मुसलमानो की साम्प्रदायिक राजनीति से उत्पन्न पृथक् राज्य की माँग और द्विराष्ट्र-सिद्धान्त का स्वाभाविक परिणाम बताया गया है। इस देश-विभाजन का आर्यसमाज ने और आर्यपत्रो ने खुलकर विरोध किया था, पर काग्रेस की अदूरदर्शिता के कारण पाकिस्तान बनकर ही रहा। उसका जितना दुष्प्रभाव आर्यसमाज पर पड़ा, उतना अन्य किसी पर नहीं। विभाजन के पश्चात् आर्यवीरो ने शरणार्थी शिविरो मे सेवाकार्य का दायित्व सभाला। मुस्लिम लीग ने जब पूर्वी बगाल के नोआखाली नामक स्थान पर खून की होली खेली, उस समय भी आर्यवीरो ने ही सेवा कार्य किया।

देश विभाजन और स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत सरकार अपना नया सविधान बनाने को आतुर थी। तब जो नई परिस्थितियाँ पैदा हुई उनका सामना करने के लिए कलकत्ता मे षष्ठ आर्य महासम्मेलन हुआ। आर्यसमाज कोई स्वतन्त्र राजनीतिक पार्टी तो थी नही, काग्रेस हिन्दू महासभा तथा अन्य राजनीतिक दलो मे आर्यसमाजी फैले हुए थे और अपने ढग से वे देश की राजनीति को प्रभावित करते रहते थे। उस सम्मेलन मे कई ऐसे सुझाव दिए गए जो बाद मे भारतीय सविधान के निदेशक सिद्धान्त बने। वे निदेशक सिद्धान्त हैं—सब नागरिको के लिए सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार विश्वास, धर्म-पूजा और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, अवसरों और स्थिति मे समता, व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता की रक्षा के लिए बन्धुता और सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्र। ये वही सिद्धान्त हैं जिन पर आर्यसमाज अपने जन्मकाल से ही जोर देता

भा रहा है। इसके अतिरिक्त देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी, राष्ट्र का नाम भारत, छुआछूत-जातिपाँति का विरोध और सब नागरिको के लिए समान आचार सहिता के पक्ष मे वातावरण तैयार करने म आर्यसमाज ने विशेष भूमिका निभाई। धार्मिक स्वतन्त्रता के सम्बन्ध मे सविधान सभा के सब सदस्य सहमत नही थे। कई आर्यसमाजी सदस्यो ने धर्मान्तरण पर रोक लगाने का युक्तियुक्त पक्ष रखा, और कई सदस्यो ने सविधान का मूल प्रारूप अग्रेजी के बजाय हिन्दी मे तैयार करने पर बल दिया। कई सदस्यो ने गोवध पर प्रतिबन्ध को भी सविधान मे शामिल करने की सलाह दी। आर्यसमाजियो ने पृथक निर्वाचन क्षेत्रो का और अनुसूचित जातियो तथा जनजातियो के आरक्षण का विरोध किया, किन्तु अधिकाश काग्रेसी सदस्यो की ढुलमुल नीति के कारण आर्यसमाजियो के मूलभूत निदेशक सिद्धान्त तो स्वीकार कर लिए गए, पर नीति सम्बन्धी मान्यताए स्वीकृत नहीं हो पाईं। इस सब का वर्णन छठे और सातवें अध्याय मे है।

स्वराज्य प्राप्ति के बाद नई परिस्थिति मे सभी राष्ट्रकर्मियो मे और आर्यसमाजियो मे आई शिथिलता को दूर करने के लिए मेरठ मे ७वाँ आर्य महासम्मेलन बुलाया गया जिसकी अध्यक्षता श्री विनायक राव विद्यालकार ने की। इस सम्मेलन मे मुख्य विचारणीय विषय रहे—समाजवाद और वर्णव्यवस्था मे सन्तुलन कैसे स्थापित किया जाए और आर्यसमाज को राजनीति मे खुलकर भाग लेना चाहिए या नही क्योकि अब विदेशी शासन नही था इसलिए दमन और उत्पीडन का भय भी नही था। इन दोनो विषयो पर निष्कर्ष के रूप मे यह कहा जा सकता है कि सम्मेलन ने वर्गविहीन समाज की कल्पना को असगत ठहराते हुए वर्णव्यवस्था के वैज्ञानिक और क्रियात्मक रूप पर बल दिया और राजनीति मे भाग लेने के सम्बन्ध मे प्रस्ताव पास करके आर्यजनता का निर्देश किया कि वह देश की राजनीति मे पूर्णरूप से भाग ले, परन्तु व्यवहार मे राजनीति के वैदिक आदर्शों से अणुमात्र भी विचलित न हो। सम्मेलन मे धर्मनिरपेक्षता के सम्बन्ध मे भी बहस हुई, जिसमे साम्प्रदायिक आधार पर हिन्दू राज्य बनाने का तो विरोध किया गया, किन्तु शासन व्यवस्था मे भारतीय सस्कृति के आदर्शों के प्रभाव को वाछनीय माना गया, पाश्चात्य शासन प्रणाली की नकल का विरोध किया गया। सम्मेलन मे आर्यसमाज के भावी कार्यक्रमो के सम्बन्ध मे भी दिशाबोध कराया गया, पर उसको कार्यान्वित नही किया जा सका।

मेरठ के आर्यमहासम्मेलन (१६५१ ई०) के बाद सन् १६५४ मे हैदराबाद मे आर्यमहासम्मेलन हुआ जिसका विशेष उद्देश्य था—वैदिक सस्कृति की रक्षा कैसे की जाए। इस सम्मेलन मे पाठ्य पुस्तको मे आर्यों और वेदो के सम्बन्ध मे पढ़ाई जाने वाली निराधार बातो का विरोध किया गया, परन्तु इसे कार्यान्वित नही किया जा सका। समस्त गुरुकुलो की और समस्त डी०ए०वी० तथा अन्य आर्यशिक्षण

सस्थाओं की पाठविधि एक समान करने का भी प्रस्ताव पास किया गया पर वह भी कार्यान्वित नही हो सका। हिन्दी मे अन्य प्रादेशिक भाषाओं के शब्द लेने का भी एक प्रस्ताव पास किया गया। पाकिस्तान मे रह गई भारतीय हिन्दू नारियो को वापस लाने की मांग की गई। नाबालिग हिन्दू बच्चो को लावारिस करार देकर मुस्लिम अनाथालयो मे रखने का और ईसाई प्रचारको की गतिविधियो का विरोध किया गया। कलकत्ता, मेरठ और हैदराबाद मे हुए आर्य महासम्मेलनो का विशेष उद्देश्य यह भी था कि भविष्य मे आर्यसमाज ऐसे कार्यक्रम अपनाये जिनसे उसका जन-आन्दोलन वाला रूप सुरक्षित रहे और साथ ही व्यक्तिगत और सामाजिक उन्नति का प्रयास जारी रहे। परन्तु यह कार्य कैसे किया जाए इसका कोई सक्षम उपाय सामने नही आया। तब सन १९६१ मे दिल्ली मे स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे नवम आर्य महासम्मेलन हुआ।

उक्त सम्मेलन का मुख्य विचारणीय विषय रहा कि राजनीति म भ्रष्टाचार से मुक्त रहकर नैतिक मूल्यो की स्थापना कैसे की जाए क्योकि उस समय धीरे धीरे भ्रष्टाचार देशव्यापी समस्या बनता जा रहा था। इसी सम्मेलन मे आर्यमहासम्मेलनो के उद्देश्य मे भी सशोधन किया गया जिनमे आर्यजनो के धार्मिक सास्कृतिक और सामाजिक अधिकारो पर होने वाले आक्रमणो के प्रतिकार के लिए उपायो पर व्यावहारिक आर्थिक योजनाओं का अपनाने पर और देशकालोचित परिस्थितियो के अनुसार आर्यसमाज के सगठन को सुदृढ बनाने के उपायो पर विचार करने को शामिल किया गया।

परन्तु इसी बीच आर्यसमाज गोरक्षा और हिन्दी रक्षा आन्दोलनो से गुजर चुका था, इसीलिए ९, १०, ११ अध्याय म उन दोनो आन्दोलनो का विस्तार से परिचय देना आवश्यक हो गया। फिर दो अध्यायो म ईसाइयत के प्रचार के विरुद्ध आर्यसमाज के आन्दोलन की समीक्षा है। प्रारम्भ से लेकर अब तक आर्य-समाज द्वारा इस विषय मे किए गए कार्य का विवरण है। पोप के आगमन का विरोध और उसकी प्रतिक्रिया तथा उडीसा, मध्यप्रदेश आदि प्रान्तो मे ईसाइयो के जाल को तोडने क प्रयत्नो का उल्लेख है। पृष्ठ २७९ पर जनवरी १९५० से जून १९५४ तक ईसाइयत के प्रचार के लिए विदेशो से आए धन का दश वार वणन है—जिसका कुल योग २९ करोड २७ लाख १९ हजार ८० बैठता है। इससे ईसाइयत के जाल का कुछ अनुमान लगाया जा सकता है।

आर्यसमाज के राजनीति मे भाग लेने के पक्षपाती युवको ने आर्यसभा नाम से नये सगठन की स्थापना की, जिसका सीधा सम्बन्ध तो आर्यसमाज के साथ नही

था पर उसके सब कायकर्त्ता आयसमाजी ही थे। १६६७ के चुनाव मे इसके प्रत्याशियो को मिले समथन से यह अ दाज लगाया जा सकता है कि आम आयजन आयसमाज के राजनीति मे भाग लेने के पक्ष मे थे। इसे एक तरह से ऋषि द्वारा प्रतिपादित राजायसभा का रूप ही कह सकते हैं। इस च नाव मे जो आयसमाजी नेता विजयी हुए उनके नाम इस प्रकार है—प्रो शेरसिंह प० प्रकाशवीर शास्त्री श्री रामगोपाल शालवाले श्री रणवीर सिंह शास्त्री स्वामी रामेश्वरान द और श्री शिवकुमार शास्त्री। इस समय जो आयनेता काग्रस या जनसघ की ओर से खड हुए वे भी विजयी हुए। इसका बडा कारण यह था कि ये सब आयनेता अन्य दलो के राजनीतिक नेताओ की तरह कलकित नही थे और जनता के मन मे इनका छवि साफ सुथरी थी। आयसभा ने अपने चुनाव घोषणापत्र म आर्थिक और सामाजिक नीति सम्ब धी नया कायक्रम जनता के समक्ष प्रस्तुत किया जा शिक्षित और अशिक्षित दोनो को प्रभावित करने वाला था। आय सभा ने दश को भौतिक और आध्यात्मिक रूप से समद्ध पूण प्रभुसत्ता प्रा त सुगठित अत्य त शक्तिशाली राष्ट्र के निर्माण का सकल्प व्यक्त किया। इसी अध्याय के परिशिष्ट मे पीलीभीत की भारताय आयसभा का परिचय और उसके घोषणापत्र का विवरण है।

प द्रहव अध्याय मे सब से पुरानी और सब से सशक्त पजाब आयप्रतिनिधि सभा के विभाजन का वणन है जो पाकिस्तान के निर्माण तथा पजाब और हरियाणा के अलग अलग राज्य बन जाने के कारण आवश्यक हो गया था। सावदशिक सभा क प्रधान के परामश से पजाब सभा के तीन भाग हो गए—हरियाणा दिल्ली तथा पजाब। इन तीनो सीमाओ क अलग अलग तदथ समितिया बना दी गइ और सम्पत्ति के बटवारे के लिए पजाब हरियाणा तथा दिल्ली मे ३५ ३५ व ३० प्रतिशत का अनुपात निर्धारित किया गया पर तु पजाब सभा ने इसे कभी कार्यान्वित नही होने दिया जिसके फलस्वरूप तीनो सभाओ मे एतद्विषयक विवाद अभी तक कायम है।

अलवर महासम्मेलन

१६ व अध्याय मे सावदेशिक आयमहासम्मेलनो की परम्परा का उल्लेख करते हुए उन सम्मेलनो मे जिन विषयो पर विचार हुआ उनकी समीक्षा करते हुए सत्रहव अध्याय मे सन १६७२ मे हुए ग्यारहव आयमहासम्मेलन का विवरण है—जो आयसमाज के इतिहास मे एक सवथा ही नये अध्याय का सूचक है। इसे स्वतन्त्रताप्राप्ति के पश्चात आयसमाज की सब से बडी उपलब्धि माना जा सकता है। इस आयमहासम्मेलन के अध्यक्ष बने थे मारीशस के प्रधानमत्री सर शिवसागर रामगुलाम। यह मारीशस पहले कभी ब्रिटिश उपनिवेश था और भारतीय मूल के लोग ही वहा कुली मजदूर बनाकर ले जाए गए थे परन्तु भारत के ब्रिटिश दासता

से मुक्त हो जाने के पश्चात् मारीशस वासियो ने भी प्रबल आन्दोलन के द्वारा दासता का जूआ उतार फेंका और मारीशस भी स्वतन्त्र होकर अलग देश बन गया। अलवर महासम्मेलन मे महिला सम्मेलन का उद्घाटन श्रीमती विजया राजे सिन्धिया ने और सामाजिक क्रान्ति सम्मेलन का उद्घाटन तात्कालिक रक्षा-मंत्री श्री जगजीवनराम ने किया।

अलवर के सम्मेलन को आर्यसमाज के इतिहास का नया अध्याय कहने का तात्पर्य यह है कि इसी सम्मेलन से विदेशो मे आर्य महासम्मेलन करने की नई परम्परा चली। सन् १९७३ के अगस्त मास मे मारीशस मे विशाल आर्य महासम्मेलन सार्वदेशिक सभा के सरक्षण मे हुआ। जिसमे मारीशस की प्रजा और वहा की सरकार ने तो पूर्णरूप से भाग लिया ही, भारत से भी लगभग एक हजार यात्रियो को लेकर एक जलपोत मारीशस पहुचा। पहले कभी वहा भारतीय दास बनकर पहुचे थे, अब स्वतन्त्र भारत के नागरिक स्वेच्छा से धर्म प्रचारार्थ वहा गए थे। इससे पहले कभी आर्यसमाजी इतनी बडी सख्या मे विदेशयात्रा पर नही गए थे। इस सम्मेलन का विस्तृत विवरण अठारहवे अध्याय मे है। इसी सम्मेलन के माध्यम से भविष्य मे आर्यसमाज का अन्तर्राष्ट्रीय रूप और निखर कर सामने आया और आर्यजनो मे नया उत्साह पैदा हुआ। कहा तो पौराणिक पडितो ने समुद्र यात्रा को पाप घोषित किया था और कहा अब आयसमाजी जहाज भर कर विदेशयात्रा और समुद्रयात्रा कर रहे थे। यह आर्यसमाज के इतिहास मे ही नही, भारत के इतिहास मे भी एक नया मोड था।

स्थापना शताब्दियाँ

१८७५ मे आर्यसमाज की स्थापना हुई थी इसलिए १९७५ मे आर्यसमाज की स्थापना शताब्दी धूमधाम से मनाई गई। पहले यह शताब्दी समारोह बम्बई मे मनाने का कार्यक्रम था, परन्तु परिस्थितिवश दिल्ली मे ही समारोह मनाया गया। इस समारोह को व्यापक रूप देने के लिए एक स्थापना शताब्दी समारोह समिति गठित की गई जिसके निश्चयानुसार सन् १९७५ से लेकर सन् १९८३ तक, अर्थात् ऋषि-निर्वाण शताब्दी तक, प्रतिवर्ष शताब्दी समारोहो का क्रम जारी रखने की योजना निश्चित हुई। इसी योजना के अनुसार बाद मे मेरठ, कानपुर और वाराणसी मे समारोह हुए, तदनन्तर अन्य राज्यो मे भी। सन् १९७६ मे श्रद्धानन्द बलिदान अर्धशताब्दी भी मनाई गई।

दिल्ली मे हुए स्थापना शताब्दी समारोह मे देश विदेश के लोगो ने भारी सख्या मे भाग लिया। वेद सम्मेलन म २१ वैदिक आर्य विद्वानों को सम्मानित किया गया। इस समारोह मे राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति भी शामिल हुए। अन्तर्राष्ट्रीय

विश्वधर्म सम्मेलन का उदघाटन डा० होमर जैक ने किया।

इसके बाद १९७८ के सितम्बर मास मे नैरोबी (पूर्वी अफ्रीका, केनिया) मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन हुआ जिसमे भारत से भी लगभग पाच सौ व्यक्ति और अन्य देशो के ३०० प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

उसके बाद चतुर्दश आर्य महासम्मेलन लन्दन मे हुआ। यहा आर्यसमाज ने एक चर्च को खरीद कर उसका नाम 'वन्दे मातरम् भवन' रखा गया है—जो आर्यसमाज मन्दिर का काम करता है। लन्दन का यह सार्वभौम आर्य महासम्मेलन २४ से २५ अगस्त, १९८० तक चला। सम्मेलन से पूर्व २० अगस्त से समाज मदिर मे राष्ट्रमेध यज्ञ हुआ। इस महासम्मेलन मे विद्वद्गोष्ठियो के अलावा १५ प्रताव पास हुए जिनमे से अनेक विदेशो मे वैदिक धर्म के प्रचार से सम्बन्धित थे। यहीं १९८३ मे डरबन (द० अफ्रीका) मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन करने का निश्चय हुआ।

सन् १९८१ मे सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह अक्तूबर मे मनाया गया। सत्यार्थप्रकाश के लेखन मे और ऋषि दयानन्द के जीवन मे उदयपुर का विशेष स्थान है। इस सम्मेलन मे मीनाक्षीपुरम (तमिलनाड) मे हरिजनो के सामूहिक धर्मान्तरण की समस्या पर विशेष रूप से विचार किया गया। आगे जाकर सन् १९८८ मे नाथद्वारा मदिर मे हरिजनो के प्रवेश को लेकर स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व मे आर्यसमाजियो की पद यात्रा भी निकली जिसकी देश भर के अखबारो मे काफी चर्चा रही।

सन् १९८३ मे अजमेर मे ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अभूतपूर्व धूमधाम से मनाई गई क्योकि ऋषि का देहावसान हुए सौ वर्ष पूरे हो चुके थे। इस समारोह मे देश विदेश से लगभग दस लाख लोगो ने भाग लिया जिससे आर्यसमाज की लोकप्रियता का कुछ आभास हो सकता है। इससे ५० वर्ष पूर्व सन् १९३३ मे अजमेर मे निर्वाण अर्धशताब्दी हुई थी। उस समय आर्यसमाज की पहली पीढी के अनेक आर्य नेता विद्यमान थे। इस शताब्दी के अवसर पर उन सब दिवगत नेताओ का अभाव अखरता था। पर नई पीढी के जो नये नेता उभर कर सामने आए थे उन्होने इस समारोह को सफल बनाने मे पूरे उत्साह से कार्य किया। पहले निर्वाण शताब्दी समारोह के स्थान के सम्बन्ध मे विवाद रहा, पर बाद मे सब आर्य नेता अजमेर के लिए ही सहमत हो गए। इस अवसर पर अनेक विद्वन् परिषदे भी आयोजित हुई। इस समारोह के अवसर पर भारतेतर देशो म आर्यसमाज की सेवा करने वालो को और भारत के अन्दर भी विशिष्ट सेवा करने वाले साहित्यकारो और लेखको को 'आर्यरत्न' की उपाधि के साथ १००१ रु० और प्रशस्तिपत्र प्रदान किए गए। कुछ विशिष्ट वैदिक विद्वानो को विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

एक विशेषता यह भी रही कि इस समारोह मे आर्यसमाज के अलावा विज्ञान और विद्या के किसी भी क्षेत्र मे नये कीर्तिमान स्थापित करने वाले १४ विशिष्ट व्यक्तियो को स्वणपदक प्रदान किए गए। इस सम्मान समारोह का समस्त व्यय-भार रायसाहब चौ० प्रतापसिंह ने उठाया। आर्य साहित्य के प्रमुख प्रकाशक को भी पहली बार सम्मानित किया गया। यदि इस समारोह मे केवल आर्यविद्वानो को ही सम्मानित किया जाता तो उसकी गुणज्ञता सीमित क्षेत्र तक ही व्याप्त रहती, पर आर्यसमाज से इतर विद्वानो को उनकी उपलब्धियो के लिए सम्मानित करने से आर्यसमाज की उदार असाम्प्रदायिक राष्ट्रीय विचारधारा का पता लगता है जो सर्वथा उसके इतिहास के अनुरूप है। निर्वाण शताब्दी के समापन समारोह के अवसर पर स्वामी सत्यप्रकाश जी ने उपसहार भाषण दिया और सब श्रोताओ से सामूहिक रूप से ५ प्रतिज्ञाए करवाइ। निर्वाण शताब्दी समारोह का उद्घाटन बेशक प्रधानमत्री इन्दिरा गाधी ने किया, पर भारत सरकार ने इस समारोह के लिए कोई आर्थिक सहायता नही दी, जबकि अन्य महापुरुषो से सम्बद्ध शताब्दी समारोहो पर सरकार उदारतापूर्ण आर्थिक सहायता देती है। इसी अध्याय के परिशिष्ट मे शताब्दी समारोह मे हुए कुछ विशिष्ट भाषणो का सार दिया गया है जिनमे इस बृहत् इतिहास के लेखक प० सत्यकेतु विद्यालकार के 'आर्यसमाज के भावी कार्यक्रम' के सम्बन्ध मे विचार पठनीय और मननीय हैं।

चौबीसवें अध्याय मे डरबन मे हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का विस्तृत विवरण है। पच्चीसवें अध्याय मे मीनाक्षीपुरम् से लेकर अन्य प्रदेशो तक फैले धर्म रक्षा महाभियान की रूपरेखा उसकी व्यापकता और सफलता का उल्लेख है। आर्यसमाज के इस आदोलन से प्रभावित होकर ही केन्द्रीय सरकार को मीनाक्षीपुरम् के हरिजनो के धर्मान्तरण के सम्बन्ध म जाच का आदेश देना पडा। इस अभियान के अन्तर्गत आर्यसमाज ने माग की थी कि अस्पृश्यता क कलक को मिटाया जाए। विदेशी धन पर अकुश लगे, समाज कल्याण सबधी कार्य विदेशी सस्थानो के बजाय भारत सरकार के माध्यम से हो और समस्त नागरिको के लिए समान आचार सहिता बने, एव धर्मान्तरण कर लेने पर समस्त सरकारी सुविधाएं बन्द कर दी जाये। कुछ ईसाई प्रचारको ने उच्चतम न्यायालय सुविधाएँ बन्द करने के विरोध मे याचिकाए दी, परन्तु उच्चतम न्यायालय ने उन्हे अस्वीकार कर दिया। धर्मरक्षा महाभियान की यह एक बडी उपलब्धि मानी जा सकती है।

छब्बीसवें अध्याय मे श्री ओमप्रकाश त्यागी के लोकसभा मे प्रस्तुत धर्म स्वातन्त्र्य विधेयक का विवरण है जिसका समर्थन समस्त आयसम्थाओ द्वारा किया गया था, पर वह अन्य मतो वाले लोगो और काग्रेसियो की तुष्टिकरण नीति के

कारण पारित नही हो सका। फिर भी अरुणाचल ने वह विधेयक पास कर दिया और वहां धर्म परिवर्तन को गैर कानूनी करार दे दिया गया, तथा विदेशी ईसाई पादरियो के प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। इस पर ईसाई पादरियो ने काफी शोर मचाया, पर अरुणाचल की सरकार ने दृढता का परिचय दिया। तत्पश्चात् भारत सरकार के गृहमन्त्रालय ने भी राज्यो को इस सबध मे निर्देश दिए, यद्यपि केन्द्र ने विधेयक पारित नहीं होने दिया। गृहमन्त्रालय के एक परिपत्र मे ही यह रहस्योद्घाटन भी किया गया कि सन् १९८१ मे मुस्लिम सगठनो ने ५० हजार हरिजनो के धर्मान्तरण का लक्ष्य बनाया था जिनमे से १७ हजार को वे मुसलमान बना भी चुके थे। १९८२ के अन्त तक यह सख्या दो लाख तक पहुच जाने की सम्भावना थी, लन्दन स्थित इस्लामिक कल्चरल सेटर मे मिली सूचना के अनुसार अरब देशो से आने वाले प्रभूत पेट्रो-डालर की राशि का उपयोग मुसलमानो की जनसख्या १२ करोड से बढकार २० करोड करने के लिए था। आर्यसमाज के धर्मरक्षा महाभियान से उस पर रोक लगी।

२७ वे और २८ वे अध्याय मे क्रमश अ० भा० सेवाश्रम सघ के कार्य का और आर्यवीर दलो के देश-विभाजन से पूर्व और पश्चात् कार्यकलाप के वर्णन के साथ यह खड समाप्त होता है।

सातवां खण्ड (गत वर्षों में आर्यसमाज की गतिविधि और कतिपय अवशिष्ट विषय)

इस खण्ड मे २८ अध्याय हैं जिनमे से १९ अध्याय डा० सत्यकेतु जी ने दो डा० भवानीलाल भारतीय ने और आठ अध्याय श्री दत्तात्रेय तिवारी ने लिखे हैं। ४८ पृष्ठ चित्रो के हैं और इसके अलावा आर्यसमाज के लगभग सौ कर्मठ कर्म-कर्ताओ परिव्राजको और विद्वानो का सक्षिप्त परिचय अलग है।

इस खण्ड के पहले और दूसरे अध्याय मे विभिन्न स्थानो पर होने वाले आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोहो का और सन् १९८६ मे डी ए वी शताब्दी समारोहो के विविध आयोजनो का विशद वर्णन है। तीसरे अध्याय मे जीवन मे नैतिक मूल्यो की स्थापना के लिए आर्यसमाज के कर्तृत्व का उल्लेख है जिसमे मद्यनिषेध अभियान, भ्रष्टाचार निवारण योजना, अश्लील साहित्य विरोधी अभियान, चरित्र निर्माण और नई शिक्षा नीति के निदेशक सिद्धांतों मे नैतिक मूल्यो पर बल का वर्णन है। चतुर्थ अध्याय मे राष्ट्रीय एकता के लिए आर्यसमाज के दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए चीनी और पाकिस्तानी आक्रमण के समय आर्यसमाज की विशेष भूमिका का वर्णन है। कश्मीर के उपद्रवो मे शरणार्थियों की सेवा का, हजूरीबाग आर्यसमाज

मन्दिर को जला देने पर उसके पुर्ननिर्माण का और अल्पसख्यको की समस्या के प्रति आर्यसमाज के दृष्टिकोण का उल्लेख है।

पाचवे अध्याय मे हिन्दी के प्रचार के लिए आर्यसमाज ने विभिन्न क्षेत्रो मे जो कार्य किया है और आर्यसमाजियो को जिस प्रकार दैनिक जीवन मे हिन्दी के लिए प्रेरित किया है उसका और सरकारी क्षेत्रो मे राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रूप मे हिन्दी की पूण प्रतिष्ठा के लिए किए गए प्रयत्नो का वणन है।

छठे अध्याय मे डी ए वी सगठन के देशव्यापी विस्तार का वर्णन है जिसम प्रारम्भिक काल स लेकर आधुनिक काल तक हुई प्रगति के साथ डी ए वी स्कूलो मे नैतिक शिक्षा पर जोर देन के लिए अलग से नैतिक शिक्षण प्रशिक्षण सस्थान खोलने का और साहित्य प्रकाशन के क्षेत्र मे डी ए वी के सक्रिय रूप से अग्रसर होने का वर्णन है।

सातवे आठवे नौव और दसवे अध्याय मे क्रमश जम्मू कश्मीर मे असम, सिक्किम दार्जिलिंग आदि पूर्वाञ्चल के प्रदेशो मे बिहार मे और राजस्थान मे आर्यसमाज की प्रगति का वणन है। ग्यारहवे अध्याय मे परोपकारिणी सभा के कार्यकलाप का परिचय दिया गया है। बारहवे अध्याय मे हिमाचल प्रदेश और दिल्ली की आर्यप्रतिनिधि सभाओ का सक्षिप्त काय विवरण है। तेरहवे अध्याय मे इडोनेशिया जापान, अमरीका तथा अन्य विदशो मे — जिनका पहले खण्डो मे उल्लेख नही हुआ — आर्यसमाज की गतिविधियो का दिग्दशन है।

इस खण्ड का १४ वा और १५ वा अध्याय बहुत महत्त्वपूण है क्योकि उसमे स्वतन्त्र भारत म आर्यसमाज को जिन विविध सघर्षो से गुजरना पडा उनका वर्णन है। इन सघर्षो के अलावा अन्य नए सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रो मे किए गए कार्यो का भी वर्णन है। सोलहवे और सत्रहवे अध्याय मे सार्वदेशिक सभा के कार्यकलाप और शक्ति मे वृद्धि का विशद वणन है। उसके बाद आर्यसमाज की महत्त्वपूर्ण शोध सस्थाओ और उस निमित्त ट्रस्टो का परिचय दो अध्यायो मे है। बीसवें अध्याय मे अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ का परिचय है। अगले अध्याय मे विभिन्न राज्यो मे आर्य युवक परिषदो के कार्यकलाप का उल्लेख है। फिर वैदिक यति मडल और अन्तर्राष्ट्रीय विरक्त मडल के नाम से आर्यसन्यासियो के सगठनो का परिचय है। चौबीसवे अध्याय मे विविध वानप्रस्थाश्रमो का परिचय है। तेईसवे अध्याय मे गुरुकुलो के क्रान्तिकारी रूप मे परिवर्तन है और उनके घटते प्रभाव के कारण उनके भविष्य के प्रति चिन्ता व्यक्त की गई है।

अगले तीन अध्यायो मे अन्य राज्यो की प्रतिनिधि सभाओ के कार्यकलाप का परिचय है। सत्ताईसवें अध्याय मे आर्यसमाज के सगठन में शिथिलता के सूत्रपात

का सोदाहरण वर्णन है। अन्तिम अध्याय मे ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व के सम्बन्ध मे महत्त्वपूर्ण सस्मरण, राष्ट्रीयता के सम्बन्ध मे उनका मन्तव्य वर्णित है, साथ ही कुछ ऐसी महत्त्वपूर्ण आर्य सस्थाओ का परिचय है जिनका इस बृहत् इतिहास मे कही अन्यत्र उल्लेख नही हुआ है। तदनन्तर ४५ पृष्ठो मे उन कृती विद्वानो का सक्षिप्त परिचय है जिन्होने अपनी विद्या और त्याग, तपस्या से आर्यसमाज की निष्काम भाव से सेवा की है और उन लोगो लोगो के प्रति धन्यवाद और कृतज्ञता ज्ञापन है जिन्होने इस बृहत् इतिहास की तैयार करने मे किसी भी प्रकार का सहयोग दिया है।

इस प्रकार इस इतिहास की पूर्णाहुति होती है जिससे आर्यसमाज के विराट् रूप के दिग्दर्शन होते है। प्रत्येक खण्ड का आवरण पृष्ठ भी उस खण्ड के विषय के अनुरूप कलापूर्ण ढग से तैयार किया गया है। अन्तिम खण्ड के आवरण पृष्ठ पर ओ३म् के नीचे 'पूर्णमद पूर्णमिद और 'सर्वं वै पूर्णं स्वाहा' मत्र अकित है जो यज्ञ की पूर्णाहुति का सूचक है।

यह इतिहास केवल आर्यसमाज का ही इतिहास नही है, बल्कि पिछले सौ वर्षों की समस्त राष्ट्रीय चेतना का इतिहास है, ऐसा इतिहास जिसकी अन्य इतिहास लेखक आज तक उपेक्षा करते आए हैं, परन्तु जिसके बिना भारत की राष्ट्रीय चेतना का वर्णन करने वाला कोई भी इतिहास पूर्ण नही कहा जा सकता। इस विषय पर भविष्य मे कलम चलाने वालो के लिए यह इतिहास मार्गदर्शक सिद्ध होगा। आर्यसमाज का जहा तक सम्बन्ध है, उसके लिए तो यह इतिहास पूरा विश्वकोश ही है। हमारी सम्मति मे तो प्रत्येक आर्यसमाज मे यदि केवल इस इतिहास के सातो खण्ड विद्यमान हो, कोई अन्य ग्रन्थ न भी हो, तब भी आर्यसमाज के दार्शनिक, धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक और राजनीतिक मन्तव्यो का परिचय इस इतिहास से ही प्राप्त किया जा सकता है।

एक बात की ओर आर्य नेताओ का ध्यान खीचना हम आवश्यक समझते हैं। प० सत्यकेतु जी ने छठे खण्ड और सातवें खण्ड की प्रस्तावना मे उसकी चर्चा की है। सत्यकेतु जी जैसे बहुआयामी व्यक्तित्व का धनी और इतिहासज्ञ होना आसान नही है, पर सगठित प्रयत्न से कोई भी काम पूरा हो सकता है। प० जी अपना यज्ञ अपने सामने पूरा कर गए, पर आगामी यज्ञ के लिए प्रेरणा दे गए। वह यज्ञ है इस बृहत् इतिहास के बाद एक आर्य परिचायिका तैयार करना। यह बड़ा विशाल कार्य है। स्वय पण्डित जी के अनुमान के अनुसार उस परिचायिका के लिए कम से कम दो हजार पृष्ठ चाहिए—अर्थात् इन खण्डो जैसे तीन खण्ड और। यह काम कौन करेगा ? प० जी स्वय इस यज्ञ का उद्यापन कर गए हैं। उन्होने आर्यसमाज के ५०० से अधिक कार्यकर्ताओ के चित्र और परिचय एकत्रित किए थे, पर वे स्वय भविष्यवाणी कर गए हैं कि "इस दुस्तर कार्य को हाथ मे

ले सकना मेरे लिए सम्भव नही होगा, पर कोई न कोई कर्मठ व्यक्ति तो मैदान में आएगा ही जो इस 'आर्य परिचायिका' के दुरूह कार्य को पूरा करेगा" । यज्ञ के इस शेष कार्य का दायित्व वे विरासत म आर्यसमाज को सोप गए हैं। हमारा सार्व-देशिक सभा से तथा समस्त आय नेताओ से साग्रह किन्तु विनम्र अनुरोध है कि वे इस दायित्व को वहन करके यज्ञ को पूर्णता तक पहुचाए, तभी उस इतिहास पुरुष की—जो अब स्वयम् इतिहास बन गया है—आत्मा सन्तोष और शान्ति-लाभ करेगी ।

अन्त मे पाठको से क्षमा प्रार्थना भी । इन पाँच हजार पृष्ठो मे समाहित लगभग दो सौ अध्यायो का सार-सक्षेप करते-करते भी कम से कम दो सौ-ढाई सौ पृष्ठ तो लगते ही । जैसा पहले खण्ड का परिचय देने का हमने प्रयत्न किया है, प्रत्येक खण्ड का वैसा ही नातिसक्षिप्त नाति-विस्तृत परिचय हम हम देना चाहते थे, पर समय और वर्तमान ग्रन्थ के कलेवर का देखते हुए वैसा सम्भव नही हो सका । सम्पादक महोदय ने हमारे लिए जितने पृष्ठो की सीमा निर्धारित की थी, उससे दुगने पृष्ठ तो अब भी हो गए हैं। फिर भी पाठको को कुछ खण्डो के बारे मे बेगार टालने की सी बात लग सकती है, जिसके लिए क्षमा मागने के सिवाय कोई अन्य गति नही है। आप क्षमा करेगे न !

—क्षितीश वेदालंकार
सुपर्णा, डी ८१, गुलमोहर पार्क,
नई दिल्ली ११००४९

जैसे गायें अनेक रगो की होती हैं लेकिन उन का दूध सफेद ही होता हैं, उसी तरह सत्य प्रवर्तको के कथन मे भाषा भेद होता है भाव भेद नही ।

* * *

प्रकृति अपनी प्रगति और विकास मे रुकना नही जानती । हर अकर्मण्यता पर वह अपने शाप की छाप लगाती जाती है ।

साहित्य-चितन्न

- इतिहास,
- राजनोति,
- धर्मदर्शन तथा
- साहित्य सम्बन्धी

कृतियों पर आधारित

शोध लेख।

"आर्यसमाज का इतिहास"

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार

बृहत् इतिहास के, लेखक मेधावी देव,
किया अति खोज आपने, वैदिक विचार से।
विद्यालकार-सत्य-विद्या के सदन भव्य,
भारतीय-साहित्य को, लिखा सुधाधार से ।।

सोपान सो सात खण्ड, पढेंगे बढेंगे आगे,
सत्य-ज्ञान-विचार को, जाने तत्त्वसार से।
हिन्दो सम्मेलन हुआ, देव करतूति देख,
सम्मानित किया बडे, मान उपहार से ।।

वेदो के गौरव-गुणी, 'दुर्लभा वेदविद्वास
प्रबोधक-प्रथित सो, पडित कहाये है।
पावन-प्रज्ञा के सिन्धु, प्रकाण्ड प्रदाता ज्ञान,
शोध सत्य ग्रन्थो के थे, लोग मन भाये है ।।

वेदो का सुसत्य ज्ञान, विवेक विचार साथ
परहित देव-भव्य ज्ञान दरशाये हैं।
सत्यकेतु कोविद से, आर्यो मे प्रसिद्ध विज्ञ,
लेखनी-ललित साथ, गौरव बताये है ।।

सत्यकेतु-ज्ञानकेतु, विद्याकेतु शोभे अति,
परोपकार हेतु हैं सेतु-भव सिन्धु के।
मेधाधर, विद्याधर, प्रिय देव शोध कर,
अविद्या के विनाशक, रूप धरा इन्दु हैं ।।

आर्य लोग माही आज, आर्यदेव मानी बडे,
अपनाते चले हैं हितैषी आर्य-बन्धु से।
आर्य सुजगत् माही गरिमा बडी देव,
कवि 'घनसार' लिखे-भाव तुच्छ बिन्दु से ।।

—कवि कस्तूरचन्द 'घनसार'
कवि कुटीर, पीपाड शहर (राज०)

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार—

एक दीप्त प्रतिभावान् व्यक्ति

—वेदमार्तण्ड आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति

डा० सत्यकेतु विद्यालकार गुरुकुल कागडी विश्वविद्य.लय के उन दीप्त प्रतिभावान् और मेधाशाली स्नातको मे से एक थे, जिनकी विद्वत्ता और कार्यों से गुरुकुल और आर्यसमाज प्रतिष्ठान्वित और गौरवान्वित हुए है। मैंने और सत्यकेतु जी ने गुरुकुल कागडी मे लगभग एक ही क.ल मे शिक्षा ग्रहण की थी। मुझ से वे दा कक्षा ऊपर थे। गुरुकुल की सब प्रक.र की गतिविधियो मे, अपने अध्ययन काल मे, हम दोनो अपने अन्य साथियो के साथ मिलकर एक साथ भाग लिया करते थे।

सत्यकेतु जी प्रारम्भ से बडे कुशाग्रबुद्धि छात्र थे। उस समय गुरुकुल की पाठविधि के अनुसार जो भी विषय पढाये जाते थे, उन सभी मे वे अपनी कक्षा मे सब से अधिक अक प्राप्त करते थे और बहुत ऊचे अक प्राप्त करते थे। गुरुकुल विद्यालय की विद्याधिकारी (मैट्रिक के समकक्ष) परीक्षा के लिए आर्य भाषा (हिन्दी), सस्कृत साहित्य, सस्कृत व्याकरण, धर्मशिक्षा, दर्शन, इतिहास, गणित (अकगणित, ज्यामिती, बीजगणित), विज्ञान (फिजिक्स, कैमिस्ट्री) और इगलिश ये नौ विषय नियत थे। सभी विषयो का बाहर की मैट्रिक परीक्षा की अपेक्षा बहुत ऊचा स्तर था। सत्यकेतु जी ने विद्याधिकारी परीक्षा मे भी कक्षा मे सब से अधिक और बहुत ऊचे अक प्राप्त किये थे और कक्षा मे प्रथम विभाग के ऊचे अक प्राप्त करके प्रथम स्थान प्राप्त किया था। विद्यालय के अष्टम, नवम और दशम कक्षाओ के ब्रह्मचारी आर्यभाषा और सस्कृत मे मासिक पत्रिकाएँ निकाला करते थे। छात्र इन पत्रिकाओ मे विभिन्न विषयो पर लेख कहानिया और कविताएँ लिखा करते थे। पत्रिकाएँ हाथ से लिखी जाती थी और उन्हे सुन्दर चित्रो और बेल बूटो से सजाकर निकाला जाता था। सत्यकेतु जी के इन पत्रिकाओ मे लिखे गये लेख आदि उनकी उस समय की योग्यता के प्रदर्शक होते थे और विद्यालय के छात्र और शिक्षक सभी उनकी प्रशसा

किया करते थे। छात्रो की अपनी वाग्वर्धिनी और सस्कृत सजीविनी नाम की आर्यभाषा और सस्कृत की दो सभाएँ भी हुआ करती थी। इनके मास मे दो अधिवेशन हुआ करते थे। जिनमे छात्रगण आर्यभाषा और सस्कृत मे भाषण कला का अभ्यास किया करते थे। वर्ष में एक बार इन सभाओ के जन्मोत्सव भी मनाये जाते थे, और बडी धूम-धाम के साथ मनाये जाते थे। छात्र अपनी पत्रिकाओ के विशेषाक निकालते थे। उत्सव स्थलो को खूब सजाया जाता था। छात्र अपने-अपने विशिष्ट लेख, कहानिया और कविताएँ पढते थे। उत्सवो का सभापतित्व करने के लिए अनेक बार बाहर से भी विशिष्ट व्यक्तियो को बुलाया जाता था। सत्यकेतु जी वाग्वर्धिनी और सस्कृत सजीवनी सभाओ के अधिवेशनो मे तो नियमित रूप से भाग लेते और उन के प्रमुख वक्ताओ मे रहते ही थे, इन सभाओ के जन्मोत्सवो की सफलता मे भी उनका प्रमुख हाथ रहता था। कई बार इन सभाओ के विशेष अधिवेशनो का आयोजन कर के उनमे शास्त्रार्थों का आयोजन भी किया जाता था। जब सत्यकेतु जी दशम कक्षा मे पढते थे तब मूर्तिपूजा श्राद्ध और अवतारवाद विषयो पर शास्त्रार्थों का आयोजन किया गया था। पक्ष और प्रतिपक्ष मे अष्टम, नवम और दशम कक्षाओ के कुशाग्र छात्रो ने ही भाग लिया था। कई दिन पहले से तैयारी करने के अनन्तर छात्रो ने इस विषय पर बडे अच्छे शास्त्रार्थ किये थे। सारे कुलवासी इन शास्त्रार्थों को सुनने के लिए उपस्थित होते थे। इन शास्त्रार्थों के आयोजन मे सत्यकेतु जी का प्रमुख हाथ था।

विद्याधिकारी परीक्षा उत्तीर्ण करने के अनन्तर सत्यकेतु जी गुरुकुल के महाविद्यालय मे अध्ययनार्थ प्रविष्ट हुए। महाविद्यालय का पाठ्यक्रम चार वर्ष का था। इस पाठ्यक्रम मे सस्कृत, दर्शन, वेद और अग्रेजी ये चार विषय अनिवार्य थे, तथा पाचवा कोई एक वैकल्पिक रूप मे लेना होता था। सत्यकेतु जी ने इतिहास और अर्थशास्त्र का सयुक्त विषय वैकल्पिक विषय के रूप मे लिया था। इन विषयो मे अग्रेजी का पाठ्यक्रम बाहर के बी०ए० के समकक्ष, इतिहास-अर्थशास्त्र मे एम०ए० के लगभग तथा शेष विषयो मे एम०ए० से भी अधिक होता था। सत्यकेतु जी ने इन पाचो विषयो मे कक्षा में सब से अधिक और बहुत ऊचे अक प्राप्त किये थे और प्रथम विभाग के ऊचे अक प्राप्त करके प्रथम स्थान प्राप्त किया था, और विद्यालकार की उपाधि अर्जित की थी। सन् १९२३ में वे स्नातक हुए थे। महाविद्यालय में भी वाग्वर्धिनी, सस्कृतोत्साहिनी और इग्लिश यूनियन नाम की छात्रो की सभाएँ थीं जिनमें छात्र आर्यभाषा, सस्कृत

और अंग्रेजी मे भाषण का अभ्यास किया करते थे। एक साहित्य परिषद् नाम की सभा भी थी। इस सभा मे छात्र विभिन्न विषयो में गवेषणात्मक निबन्ध लिख कर पढा करते थे। इस सभा मे पढे गये कई अच्छे निबन्ध गुरुकुल की ओर से पुस्तक रूप मे भी प्रकाशित कर दिये जाते थे। इन सभाओ के जन्मोत्सव भी धूम से मनाये जाते थे। इन सभाओ की सभी गतिविधियो में भाग लेने वाले छात्रो मे सत्यकेतु जी का प्रमुख स्थान रहता था। सस्कृतोत्साहिनी सभा के जन्मोत्सव के अवसर पर सस्कृत श्लोको मे अन्त्याक्षरी भी आयोजित की जाती थी। इस अन्त्याक्षरी मे छात्रगण स्वय अपने बनाये हुए श्लोक पढा करते थे। बहुत पहले से छात्र इस अवसर के लिए अपने श्लोक बनाने मे लग जाते थे। कभी कभी पहले से बनाये श्लोको द्वारा अन्त्याक्षरी पूर्ति की समस्या का समाधान न हो पाने की अवस्था मे दोनो पक्षो के छात्रो को तत्काल भी श्लोक बनाने पड जाते थे। कोई न कोई कुशल छात्र यह कर लेता था। सत्यकेतु जी इन अन्त्याक्षरियो मे भाग लेने वाले प्रमुख छात्र होते थे।

उन दिनो महाविद्यालय के तृतीय वर्ष के छात्रो मे से एक छात्र को कुलमन्त्री चुना जाता था। चुनाव एक वर्ष के लिए होता था और महाविद्यालय के छात्र ही चुनाव करते थे। कुलमन्त्री का काम गुरुकुल मे मनाये जाने वाले त्यौहारो और अन्य समारोहो के आयोजनो की तैयारी करना होता था। कुलमन्त्री छात्रो की कठिनाइयो को भी गुरुकुल के अधिकारियो के सम्मुख उपस्थित किया करता था और उन से मिलकर छात्रो की समस्याओ का समाधान करने का प्रयत्न किया करता था। कुलमन्त्री का यह सेवाभावी पद बडा महत्त्वपूर्ण समझा जाता था। अपने काल में सत्यकेतु जी भी कुलमन्त्री चुने गये थे और उन्होने अपने उत्तरदायित्व को बडी उत्तम रीति से निभाया था।

अपने छात्रकाल को शानदार ढग से समाप्त करने और विद्यालकार की उपाधि प्राप्त करने के अनन्तर सत्यकेतु जी गुरुकुल विश्वविद्यालय मे ही इतिहास-अर्थशास्त्र विषय के उपाध्याय नियुक्त हो गये थे। आप के अध्यापन से छात्र पूर्ण रूप से सन्तुष्ट रहते थे और आप गुरुकुल के उपाध्यायों में एक बडे योग्य उपाध्याय समझे जाते थे। इसी काल में आप ने 'मौर्य साम्राज्य का इतिहास नामक अपना' सुप्रसिद्ध ग्रन्थ लिखा जिस पर आपको हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सुप्रसिद्ध 'मगलाप्रसाद' पुरस्कार मिला। चौदह-पन्द्रह वर्ष तक गुरुकुल में उपाध्याय रहने के उपरान्त आप पेरिस विश्वविद्यालय से पी-एच०डी० की डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त

करने के लिए फ्रास चले गये। वहा जाकर आपने फ्रेन्च भाषा सीखी। हिन्दी सस्कृत और अग्रजी का उत्कृष्ट ज्ञान तो आपको पहले ही था। पी-एच०डी० उपाधि के लिए आपका शोध का विषय 'अग्रवाल जाति का इतिहास था। पेरिस विश्वविद्यालय के जगत् प्रसिद्ध विद्वान श्री रेनु के निरीक्षण और मार्गदर्शन मे आप ने अपना शोधकार्य किया था। आप के शोधकार्य से परिस विश्वविद्यालय इतना प्रभावित हुआ कि आप को दी गई पी एच०डी० की उपाधि के प्रमाण पत्र पर प्रथम विभाग मे उत्तीर्ण ऐसे शब्द लिखे गए। सामान्यत डाक्टरेट की उपाधियो के प्रमाण पत्रो पर कोई विभाग नही लिखा जाता। पेरिस से उपाधि प्राप्त करने के अनन्तर कुछ काल इग्लैड रहकर आप भारत लौट आये।

भारत आकर आपने आजीविका के लिए दिल्ली मे एक विद्यालय माटेसरी पद्धति के ढग का चलाया। यह विद्यालय कुछ जम नही पाया। इसे बन्द करके आपने मसूरी मे एक होटल खरीदा और अनेक वर्षों तक आप होटल चलाते रहे। होटल चलाने के साथ साथ आप ग्रन्थ लेखन का कार्य भी करते रहे। फिर आपने होटल का काम तो बन्द कर दिया और पूर्णरूप से ग्रन्थलेखन के काम मे ही जुट गये। आपने इतिहास और राजनीति आदि विषयो पर सब मिलाकर कोई तीन दर्जन के लगभग ग्रन्थो का प्रणयन किया। आपके ग्रन्थ खूब पसन्द किये गये। आपके अनेक ग्रंथ तो स्कूलो और कालेजो मे पाठ्य पुस्तको के रूप मे लगे हुए हैं। आप के ग्रन्थो की इतनी माग हुई कि आपने अपना ही प्रकाशन विभाग खोल लिया और उसी की ओर से आपके ग्रन्थ छपने लगे। आपके ग्रन्थो से आपकी विद्वत्ता की धाक फैल गई। आप भारत के मूर्धन्य इतिहास वेत्ताओ मे गिने जाने लगे। भारत और अन्य अनेक देशो के इतिहास पर आप अधिकारपूर्वक लिखते और बोलते थे। अनेक विश्वविद्यालयो मे उन्हे विशेष भाषणो के लिए बुलाया जाता था। अनेक विश्वविद्यालय उन्हे अपने डाक्टरेट के छात्रो के शोध-प्रबन्धो का परीक्षक नियत करते थे।

इतिहास और राजनीति विषयक ग्रथो के अतिरिक्त उन्होने कई ऐतिहासिक उपन्यासो की रचना भी की थी। इन उपन्यासो को पढकर तत्कालीन भारत का जीवित जागृत चित्र मन की आँखो के आगे उपस्थित हो जाता है। इस प्रकार ऐतिहासिक और साहित्यिक दोनो प्रकार की प्रतिभा डा० सत्यकेतु मे थी। उनके अनेक ग्रन्थो पर विभिन्न सस्थाओ की ओर से भारी पुरस्कार राशिया देकर उन्हे सम्मानित किया जाता रहा है।

अपने जीवन के अन्तिम दिनो मे उन्होने एक इतिहासकार के रूप

मे आर्यसमाज की जो सेवा की है वह आर्यसामाजिक जगत् मे सदा कृतज्ञता के साथ स्मरण की जायेगी। उन्होने कई साल लगा कर और भारी व्यय करके बडे-बडे सात भागो मे आर्यसमाज का एक बृहत् इतिहास लिखा। इतिहास की सामग्री एकत्र करने और उसकी छान-बीन करके यह विशालकाय इतिहास लिखने मे डा० सत्यकेतु ने जो परिश्रम किया है, उसे देखकर अचम्भित रह जाना पडता है। महर्षि दयानन्द जैसे लोकोत्तर महापुरुष द्वारा सस्थापित आर्यसमाज जैसी महान् क्रातिकारी सस्था का अभी तक कोई विस्तृत इतिहास नही लिखा गया था। यह एक भारी खटकने वाली बात थी। दीप्तिमान् प्रतिभाशाली विद्वान् डा० सत्यकेतु ने आर्यसमाज का यह विशालकाय इतिहास लिखकर आर्य जगत् की एक भारी कमी को पूरा किया है। इसके लिए उनकी जितनी प्रशसा की जाये और उनके प्रति जितनी कृतज्ञता प्रकट की जाये वह थोडी है।

डा० सत्यकेतु जी ने अनेक देशो की यात्राएँ भी की थी। फ्रान्स, इगलैड और यूरोप के कई देशो की यात्रा वे अपनी डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त करने के प्रसग मे ही कर आये थे। एक डेपुटेशन के साथ उन्होने चीन की यात्रा भी की थी। यात्रा का स्वयम आयोजन करके यात्रा मण्डलियो के साथ इडोनेशिया की यात्रा भी उन्होने दो बार की।

डा० साहब के उद्भट पाण्डित्य और योग्यता को सम्मानित करने के लिए गुरुकुल विश्वविद्यालय ने उन्हे विद्यामार्तण्ड (डी० लिट् के समकक्ष) की मानद उपाधि प्रदान की थी। वे गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलपति (वाइस चासलर) भी बनाये गये थे। फिर उन्हे गुरुकुल विश्वविद्यालय का कुलाधिपति (चासलर) भी बनाया गया था। गुरुकुल की सीनेट और विद्यासभा आदि के सदस्य भी वे अनेक वर्षों तक रहे।

डा० सत्यकेतु जी ने गुरुकुल विश्वविद्यालय, आर्यसमाज और साहित्य जगत् की जो अमूल्य सेवाएँ की हैं उनके कारण उनका नाम अमर रहेगा।

मैं इस उद्भट मेधाशाली विद्वान् की स्मृतियो मे उन्हे शतश नमन करता हू।

—प्रियव्रत वेदवाचस्पति
भूतपूर्व कुलपति, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय
हरिद्वार।

कालजयी मंजुल अनुबन्ध

तप पूत लेखक वैदिक विद्वान् नमन तुम को सौ बार।
दयानन्द के सच्चे सैनिक सत्यकेतु विद्यालंकार॥

तुम आये गुरुकुल मे ऐसा लगा किया भू ने शृङ्गार।
लौहलेखनी सत्य समर में चलने लगी तक-तलवार।
अपने मौलिक चिन्तन की पैनी धारा से दे दी धार।
ग्रन्थ रत्न छत्तीस दिये, मन मन्थन कर जीवन का सार।
सस्कृत हिन्दी अग्रेजी औ' रूसी भाषा के विद्वान्।
तुमको पाकर धन्य हो गया ग्राम कागडी का उद्यान।
हरिद्वार की पावन माटी भव्य भारती के सम्मान।
तुम न सुन सके अपने कानो किसी दुखी का भी अपमान।
अगणित पुरस्कार तुम को पाकर हो गये स्वय ही धन्य।
लेखक वक्ता यायावर नेता नवयुग के वीर अनन्य।
आर्यसमाजी और समाजो का लिख दिया बृहत् इतिहास।
ऐसा लगा कि वामन ने फिर नाप लिया धरती आकाश।
सोलह मार्च नवासी का नृशस हत्यारा दिन दुर्धर्ष।
कार सहित बेकार कर गया छीन ले गया मधुमय हर्ष।
आते व्यक्ति चले जाते है पर कुछ जाते छोड सुगन्ध।
और शून्य मे भी लिख जाते कालजयी मजुल अनुबन्ध।
केतु 'सत्य' का सदा सदा को स्मृति रूपी मे फहराये।
स्वप्न अधूरे पूरे हो वह पुन जन्म लेकर आये।

—प्रो० सारस्वत मोहन 'मनीषी'
डो०ए०वी० कालेज, अबोहर, पजाब)

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन के

डा० सत्यकेतु विषयक संस्मरण

समानधर्मा होने से डाक्टर सत्यकेतु के नाम से मैं पहले भी परिचित था। "मौर्य साम्राज्य" लिखने पर उन्हे 'मगलाप्रसाद' पारितोषिक मिला था। १९४३ ई० मे वे मसूरी मे होटल सचालक थे। उस समय मैं दो-तीन दिन के लिए मसूरी आया था। पता लगा था, पर मुलाकात नही हुई। १९४८ मे मुझे मालूम होने लगा था कि यदि काम करना है तो गर्मी-बरसात मे हिमालय के ही किसी भूभाग में रहकर वह हो सकता है। जाडे का तो मुझे खौफ नही था, क्योकि रूस की जिस सर्दी को मैं काट आया था, वह हमारे यहा बारह-तेरह हजार फुट के ऊपर होती है, और हिमालय की पुरियो मे कोई भी सात हजार फुट से अधिक ऊँची नही है। दार्जिलिग-कलिम्पोग से कश्मीर तक के हिमालय के बहुत से भागो को मैंने देखा है। कश्मीर, डलहौजी, शिमला एक छोर पर पडते है, इसलिए वहां रहना मुझे पसन्द नहीं था। कुल्लू-उपत्यका के नगर और मनाली अपनी ओर जरूर आकृष्ट करते थे, किन्तु उस समय वहाँ सडक बिगडी हुई थी, हर साल ही मोटर-सडक टूटने का डर रहता था, यह बडी बाधा थी। उस समय मिट्टी का तेल प्राप्त करना भी एक समस्या थी, जिसके बिना रात को रोशनी नही मिलती और काम नही हो सकता था। अनुकूल स्थान तलाश करते १९४८ मे शिमला होते मैं कनौर तक गया। वहाँ भी नजर नहीं जमी। १९४९ ई० मे कलिम्पोग-दार्जिलिग देखा, वह भी देश के दूसरे छोर पर पडते थे। सब से दिक्कत यह थी कि बहुत दूर का फासला छोटी लाइन से पार करना पडता। यह लाइन कभी बी० एन० डब्लू० आर के नाम से प्रसिद्ध थी, फिर ओ० टी० आर० नाम पडा और आजकल एन० ई० (उत्तर-पूर्वी) रेलवे कही जाती है। नाम चाहे कितना ही बदले, लेकिन गुण में कोई परिवर्तन नही हुआ। हरेक भुक्तभोगी यही कहता है, कि खुदा बचावे इस लाइन से। साल भर रहने के बाद कलिम्पोग-दार्जिलिग का भी ख्याल छोडना पडा। अब नैनीताल

और मसूरी दो ही मे किसी को अपना स्थायी निवास बनाना था।

मेरे एक मित्र ने नैनीताल जिले के रामगढ की बडी प्रशसा की। मौसम के वक्त वहाँ सेब और दूसरे फलो की भरमार हो जाती है, यह आकर्षण जरूर था। लेकिन वहाँ रहना हो सकेगा, इस पर पूरा भरोसा नही था। इसीलिए जब मालूम हुआ कि डा० सत्यकेतु नैनीताल मे है, तो उन्हे भी आने के लिए पत्र लिख दिया था। १२-१४ मन सामान लेकर हम शाम को रामगढ पहुँचे। रहने का मकान कुये मे था, अर्थात् काफी उतराई उतरनी पडती थी, जो लौटते वक्त चढाई हो जाती थी। मिट्टी के तेल ही नही खाने-पीने की चीजो के मिलने मे बडी दिक्कत थी, जो एक-दो दूकाने थी, वह तेरह-बाईस ही थी। रात भर रहकर मालूम हो गया कि यहाँ रहना हमारे लिए ठीक नही हो सकता। अगले ही दिन उन्ही कुलियो से फिर सामान उठवाकर बस के अड्डे पर गये और लाद-लूद-कर मवाली होते नैनीताल पहुँचे।

हिमालय की अनेक पुरियो को देखे होने से नैनीताल के प्रताप को देखकर आँखे चौधिया जायँ, ऐसी बात नही थी। पर नैनीताल का ताल बहुत ही सुन्दर चीज है, जो श्रीनगर (कश्मीर) को छोड कर किसी को प्राप्य नही है। हम अपना सामान उठवाकर डाक्टर साहब के पास पहुँचे।

इतिहास का एक गम्भीर विद्वान होटल चलाए, इसे देखकर "पढे फारसी बेचे तेल, यह देखो कुदरत का खेल" की कहावत याद आती थी। यह कुदरत का खेल नही, बल्कि आज के समाज की अन्धेर नगरी का खेल था। डा० सत्यकेतु ने सस्कृत और दूसरे शास्त्रो का अध्ययन गुरुकुल मे किया। गुरुकुल के स्नातको को किसी समय लोग समझते थे कि उनकी कोई योग्यता नही होती। अब गुरुकुल की डिग्री बी० ए० के बराबर समझी जाती है और वहाँ के स्नातक सीधे एम० ए० मे बैठ सकते हैं। सस्कृत, हिन्दी मे वह परीक्षा मे सबसे ऊपर रहते हैं, यह उनकी योग्यता का प्रमाण है। सस्कृत और हिन्दी साहित्य के पढने वाले के लिए यह बडे सौभाग्य की बात है, यदि वह अपने आरम्भिक आठ या दस साल को गुरुकुल मे बिता दे। दूसरे बोर्डिंग स्कूलों की अपेक्षा गुरुकुल मे खर्च भी ज्यादा नही है।

डा० सत्यकेतु गुरुकुल, कागडी के स्नातक बनने के बाद कुछ समय तक अध्यापक रहे। इसी बीच अपनी पुस्तक पर उन्हें 'मंगलाप्रसाद' पारि-

तोषिक मिला। विदेश मे जाकर अनुसधान और अधिक ज्ञान अर्जन करने की आकाक्षा हुई, पर उसके लिए पैसो की आवश्यकता थी। वह गरीब मा-बाप के सन्तान थे। गुरुकुल मे भी शुल्क कम करके दाखिल हुए थे। पर आदमी यदि दृढ सकल्प कर ले, तो "जो इच्छा करिहौ मन माही। हरि-प्रताप कछु दुर्लभ नाही। और यहा हरि आदमी का साहस है। अब वह गृहस्थ भी हो गए थे। उनकी पत्नी सुशीला देवी सस्कृत की शास्त्री और एफ० ए० पास थी। उन्होने अकेले ही नही वल्कि पत्नी और छोटे से बच्चे को भी साथ ले जाने का निश्चय किया। आखिर दरवाजा खुला और अपने परिश्रम के ही बल पर। किसी पुस्तक पर इतना रुपया मिल गया कि केतु दम्पती पेरिस पहुँच गये। पति ने पेरिस मे डी० लिट के लिए अनुसधान करना शुरू किया और शीला जी ने शिक्षण-विज्ञान को सीखना। परिवार सहित रहने पर वह अपने आप भी रसोई बना सकते थे। जिससे खर्च मे कमी होती ही थी। डाक्टर बनकर वह भारत लौटे। यूरोप मे देखकर उन्होन समझा कि भारत मे भी छोटे बच्चो का विद्यालय खोला जा सकता है। पति-पत्नी पेरिस से शिक्षा का अनुभव लेकर आये थे, उन्हे विश्वास था कि दिल्ली मे ऐसी सस्था के सफल होने की बडी सभावना है। विद्यालय खोल दिया। इसी समय विश्व-युद्ध के कारण मध्यवित्त लोगो की स्थिति खराब हो गई और विद्यालय के चलने की कोई सभावना न रहने के कारण उसे बन्द कर देना पडा।

दूसरा बुद्धिजीवी होता तो हाथ पर हाथ धरकर बैठता और किस्मत को कोसता। पर, डा० सत्यकेतु मे कोई विशेष बात थी, तभी तो साधनहीन होने पर भी उन्होने परिवार सहित विदेश मे जाकर पढने की हिम्मत की। जैसी स्थिति हो, उसके मुताबिक काम करना चाहिए। ईमानदारी कायम रहे, किसी काम के करने से सकोच नही करना चाहिए, यही उनका मोटो था। लडाई के दिनो मे हिमालय की विलासपुरियो की बन आई थी। जापान के आक्रमण को रोकने के लिए लाखो अग्रेज और अमेरिकन सैनिक हमारे देश मे पडे हुए थे। गर्मियो मे हिमालय के ठण्डे स्थान उन्हे आकृष्ट करते थे, विलासपुरियो की बन आई थी। डा० सत्यकेतु का जन्म स्थान सहारनपुर का एक गाव है। सिवालिक के दक्षिण उनकी जन्मभूमि और सिवालिक के उत्तर मसूरी है। गुरुकुल मे रहते अपनी यात्राओ मे वह मसूरी देख चुके थे। सोचा मकान किराया पर लेकर एक होटल खोल दिया जाय। १९४२ मे तीनो प्राणी जिस दिन मसूरी आये, उस दिन उनके पास सिर्फ ढाई रुपये थे। शायद कोई परि-

चित पुरुष यहाँ पर मौजूद था। "लैक्समौट मकान को उन्होने किरायें पर ले लिया। मसूरी में उधार पर चीजे मिल जाया करती हैं। "लैक्स-मौट" को उन्होने रेस्तराँ और होटल दोनो के रूप मे परिणत कर दिया। मेहमानो की कमी न थी, होटल चल निकला। लड़ाई के वक्त काफी नफा रहा। एक बार डर लगने लगा कि यह सरस्वती-पुत्र कही अपने जीवन को होटल चलाने मे ही खतम न कर दे।

लड़ाई खत्म होने के साथ इस लाइन मे डा० सत्यकेतु का दिमाग और दूर तक दौड़ने लगा कि किसी बड़े होटल को लेना चाहिए। नैनी-ताल के विशाल होटल मेंटोपोल का पता लगा। उन्होने उसे ठेके पर ले लिया। लेकिन, अब लड़ाई को खत्म हुए कई साल हो गए थे। १९४७ ई० मे अंग्रेज भी भारत छोड़कर चले गए जिन्होंने हिमालय की विलास-पुरियो को बनाया तथा आबाद किया था। डाक्टर साहब ने १९४९ ई० में इस बड़े काम को हाथ में लिया और साल भर के तजुर्बे ने बतला दिया कि घर मे आग लगी हुई है, जितना जल्दी हो निकलो। होटल के मालिक के साथ शर्तनामा लिखा जा चुका था। खैर, किसी तरह जान बची, लाखो पाये। मसूरी के "लैक्समौट" को उन्होने छोड़ा नही था। उन्हे यह भी ख्याल आया कि सभी अण्डे एक ही टोकरी मे नही रखने चाहिये। उन्होने रक्खी हुई लेखनी हाथ मे उठा ली और "यूरोप का आधुनिक इतिहास" लिख कर प्रकाशित किया।

होटल मैंट्रोपोल से जिस वक्त डाक्टर पिण्ड छुड़ा रहे थे, उसी वक्त अपना सामान लिए मैं उनके पास पहुँचा। मैं पहले ही लिख चुका था कि मुझे वहाँ एक घर की जरूरत है, जिसे खरीद कर मैं बारहो महीना रहना चाहता हूँ। उन्होने लिख दिया था—कि मकानो की कमी नही है। अपने देखकर पसन्द कर ल। नैनीताल मे तीन-चार महीने हम रहे। मकानों को भी देखा और नैनीताल की दिक्कतो को भी। अन्त में मन नही भरा। फिर मसूरी देखने को रह गई। डा० साहब भी अब नैनीताल छोड़कर मसूरी ही आ रहे थे, यह और सुभीता था। उनके सम्बन्ध से नैनीताल पहुँचा था और अब इन्ही के सम्बन्ध से मसूरी का ख्याल आया। वैसे मैं मसूरी को १९४३ ई० में देख चुका था। यह भी मालूम था कि यहाँ से बाहर आने-जाने का जितना सुभीता है, उतना हिमालय की किसी पुरी से नही। ४० मिनट में मोटर या बस से देहरादून पहुँच सकते हैं और देहरा-दून से सीधे बम्बई तथा कलकत्ता तक की ट्रेन मिलती है।

अब भी डाक्टर साहब ने यही कहा—आप आकर मकान देख लें।

मुझे हरेक काम के जल्दी करने की पडी रहती है। यह गुण भी है और दोष भी। मकान लेने मे जो जल्दी की, वह गलती थी। मैं जून १६५० में मसूरी आया, डाक्टर साहब ने कई मकान दिखलाए। मैं केन्द्र से दूर रहना चाहता था, ताकि मिलने-जुलने वालो की सख्या अधिक न हो। इससे यह भी लाभ था कि वहा मकान सस्ते थे। घूमते-घामते मसूरी के एक छोर पर अन्तिम मकान "हर्नक्लिफ" को मैंने पसन्द किया। डाक्टर साहब की सलाह म ने होते, तो साल दो साल किराये पर रहकर फिर मकान लेते। यह अच्छा होता, पर मेरे दिमाग मे यह भी ख्याल काम कर रहा था कि प्रकाशक से जो २५ हजार अग्रिम मिले हैं, कही मुद्रा स्फीति के कारण बेंक मे रक्खे-रक्खे अपने मूल्य मे आधे न हो जायें। इस समय भी मसूरी मे मकानो का दाम काफी गिर गया था, लेकिन क्या पता था कि आगे वह मिट्टी के मोल हो जायेगे। खैर, मुझे मसूरी मे लाने और बसाने मैं डाक्टर सत्यकेतु का हाथ रहा था।

यहाँ बस जाने पर अब वह हमारे स्थायी घनिष्ठ मित्र हो गये। यद्यपि हमारे निवासो की दूरी मे ढाई मील का अन्तर है, लेकिन उसके द्वारा अच्छी चहलकदमी हो जाती है।

डा० सत्यकेतु ने फिर अपने योग्य काम को ही हाथ मे लिया, उसी के लिए उन्होने बचपन से अपने को तैयार किया था। स्वतत्र भारत मे विद्यार्थियो की अग्रेजी की योग्यता दिन पर दिन गिरती जा रही थी, पर बूढे शिक्षा-विशेषज्ञ पूरी कोशिश करते थे कि शिक्षा का माध्यम अग्रेजी रहे, परीक्षा के प्रश्नोत्तर अग्रेजी मे ही लिखे जाये। लेकिन ज्यादा दिन नही बीते, उन्हे मालूम हो गया--ऐसा तभी किया जा सकता है, जब सौ मे से नव्वे विद्यार्थियो को फेल कर दिया जाय, विश्वविद्यालय को शिक्षण-सस्था नही, बल्कि कसाईखाना बना दिया जाय। तरुण पीढी इसे बर्दाश्त नही कर सकती थी, यह भी व॒ जानते थे। बूढो को भवितव्यता के सामने सिर झुकाना पडा। पहले परीक्षा में प्रश्नो के उत्तर देने मे हिन्दी को ऐच्छिक बनाया, फिर हिन्दी मैं पाठ्य पुस्तकें भी आई। विद्यार्थियो ने अध्यापको को हिन्दी पढाने के लिए भी बाध्य किया। इस प्रकार हिन्दी का रास्ता साफ हो गया। अपने प्रिय विषय--इतिहास और राजनीति के--सम्बन्ध मे डाक्टर साहब ने पुस्तके लिखनी शुरू की, उनका हर जगह स्वागत हुआ। लेकिन पाठ्य पुस्तको मे स्वार्थ लाभ देखकर इस क्षेत्र मे जल्दी ही बहुत से ग्रन्थ-कर्त्ता आ जुटे और एक दूसरे को देखकर पुस्तक तैयार करने लगे। प्रतिद्वन्द्विता जरूर आ गई, पर डाक्टर साहब अपने

विषय की पूरी जानकारी रखकर तथा ज्ञान को पचाकर कागज पर उतारते, जबकि दूसरे अधपच अल्पज्ञता का सहारा लेते। मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि उन्होंने होटल का काम छोड दिया और अब अपने परिपक्व ज्ञान का लाभ दूसरो को पहुँचाने के लिए ग्रन्थ लिखने मे लग गये हैं अब उनसे मसूरी भी छूटने जा रही है। दिल्ली काम के लिए ज्यादा पसन्द आई है। गर्मी-बरसात मे तो मुझे हिमालय के किसी कोने को पकडना पड़ेगा। पर यदि तकान न ले लिया होता तो मुझ से भी मसूरी अब तक छूट गई होती।

प्रस्तुति—डा० भवानीलाल भारतीय

(जिनका मैं कृतज्ञ' शीर्षक पुस्तक से सगृहीत)

"जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण स्वीकार कीजिए, नही तो कुछ हाथ न लगेगा क्योकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थो से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उस की उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिलकर प्रीति से करे। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नही हो सकता।"

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

डा. सत्यकेतु विद्यालंकार की साहित्य साधना

—प्रो० भवानीलाल भारतीय

भारतीय इतिहास के अप्रतिम विद्वान डा० सत्यकेतु विद्यालकार ने आर्यसमाज का सप्त खण्डात्मक इतिहास सम्पादित कर एक बहुत बडे अभाव की पूर्ति की है। यह बात नही कि इस विराट् ग्रन्थ के प्रकाशित होने से पहले आर्यसमाज के इतिहास लिखे ही नही गए थे। उर्दू मे राधा कृष्ण मेहता की तारीखे आर्यसमाज' तो १९०३ मे ही लाहौर से प्रकाशित हो चुकी थी। उसके पश्चात् १९१५ मे जब लाला लाजपतराय ने 'दि आर्यसमाज शीर्षक अपना महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ इग्लैण्ड से प्रकाशित करवाया तो आयसमाज के प्रवर्त्तक तथा उनके द्वारा सस्थापित इस महान् आन्दोलन की जानकारी अन्य देशवासियो को भी मिली, किन्तु इतना ही पर्याप्त नही था। आवश्यकता इस बात की थी कि आर्यसमाज जैसी प्रबुद्ध, प्रगति शील तथा धार्मिक-सामाजिक क्रान्ति की वाहक सस्था का सम्पूर्ण इतिवृत्त पूर्णतया वैज्ञानिक और व्यवस्थित ढग से लिखा जाये। ऐसे इतिहास लेखक की तलाश थी, जो इस महत्त्वपूर्ण कार्य को पूरे दायित्व के साथ करता।

लिखने को तो प० नरदेव शास्त्री ने दो खण्डो मे आर्यसमाज का इतिहास लिखा भी, जो १९१८ तथा १९१९ मे छपा, किन्तु यह तो इतिहास न होकर इतिहासाभास ही था। आर्यसमाज मे सर्वत्र इसकी आलोचना हुई क्योकि इसमे कुछ बातें तो ऐसी समाविष्ट हो गई थी जिनसे दयानन्द भाष्य की अपेक्षा सायण के वेद भाष्य की उत्कृष्टता सिद्ध हो रही थी तथा स्वामी दयानन्द से द्रोह कर आर्य सिद्धान्तो की सतत आलोचना करने वाले प० भीमसेन शर्मा सर्वथा निर्दोष साबित होते थे। कालान्तर में स्वामी श्रद्धानन्द ने इतिहास लेखन का गुरुतर दायित्व अपने सबल कधो पर लिया और एतद् विषयक सामग्री का सग्रह किया। इससे

पहले कि वे इस कार्य का आरम्भ करते, उनका बलिदान हो गया। यदि स्वामी श्रद्धानन्द की लौह लेखनी से यह कार्य सम्पन्न होता तो वह अपने आप मे एक अद्भुत उपलब्धि ही होती। कारण कि स्वामी जी तो स्वय आर्यसमाज के इतिहास के निर्माता ही थे, और उन्होने गत शताब्दी के अन्तिम दशक से लेकर इस शताब्दी के चौथाई भाग तक तो इस महान् आन्दोलन की समस्त गतिविधियो को अत्यन्त निकटता जागरूकता के साथ देखा था।

स्वामी श्रद्धानन्द ने इतिहास लेखन का दायित्व अपने पुत्र प० इन्द्र जी को सौंपा। उनके द्वारा सगृहीत सारी सामग्री भी प० इन्द्र जी के पास थी ही। १९५६-५७ में इन्द्र विद्यावाचस्पति ने अपनी सधी लेखनी से आर्यसमाज का इतिहास दो भागो मे लिखा, किन्तु यह भी अपर्याप्त और अपूर्ण ही था, क्योकि इतिहास लिखने के पीछे पर्याप्त श्रम और साधन की अपेक्षा होती है। सर्वोपरि बात तो यह है कि इतिहास लिखने के पहले लेखक को एतद विषयक दृष्टि का निर्धारण करना पडता है। इतिहास केवल तिथियो, व्यक्तियो या घटनाओ का विवरण ही नहीं है वह तो समसामयिक जीवन तथा उसको प्रभावित करने वाले व्यक्तियो और उनकी प्रवृत्तियो के पारस्परिक घात प्रतिघात तथा जीवन को प्रभावित करने वाले परिदृश्यो का वैज्ञानिक एव आलोचनात्मक आकलन होता है।

बहुत बाद मे, १९७९ म डा० सत्यकेतु ने जब सात खण्डो में आर्यसमाज के इतिहास का प्रणयन करने का सकल्प किया, तो ऐसा लगा मानो एक शताब्दी पूर्व स्थापित तथा महर्षि दयानन्द के स्वप्नो को साकार करने वाले इस महान् आन्दोलन को एक तस्वीर पाठको के समक्ष आ सकेगी। ऐसी बात नही है कि डा० सत्यकेतु ने इससे पूर्व सारस्वत यज्ञ मे अपनी कोई आहुति डाली ही नही थी। १९०३ म सहारनपुर जिले के एक गाव में उनका जन्म हुआ और उनकी शिक्षा गुरुकुल कांगडी में हुई, जहाँ से वे १९२४ म स्नातक बने और विद्यालकार की उपाधि ग्रहण की। उनकी विद्या पिपासा गुरुकुल के अध्ययन से ही समाप्त नही हुई और वे फ्रास जाकर डी० लिट० की उपाधि ले आये। प्रारम्भ मे वे 'अर्जुन' के सहायक सम्पादक रहे, गुरुकुल में ही उन्होने इतिहास का अध्यापन किया। उस समय आचार्य रामदेव जी स्वय स्नातको को भारत का इतिहास पढाते थे। आचार्य रामदेव ने जब तीन बृहत् खण्डो मे भारतवर्ष का इतिहास लिखने का सकल्प किया तो डा० सत्यकेतु उनके सहयोगी बने। इस ग्रन्थ–

माला के तृतीय खण्ड मे रामदेव सत्यकेतु दोनो का नाम सयुक्त लेखक के रूप मे छापा।

डा० सत्यकेतु इतिहास जगत् मे इस समय उदीयमान नक्षत्र की भाति प्रकाशित हुए, जब उन्होने मौर्य साम्राज्य का इतिहास लिखा। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने इस ग्रन्थ को 'मगलाप्रसाद' पुरस्कार से सम्मानित किया जो उस समय का सर्वोत्कृष्ट साहित्यिक सम्मान था। डा० सत्यकेतु की लेखन प्रतिभा के विविध आयाम रहे हैं। उन्होने इतिहास के शुष्क शरोर मे तो अपनी रचनाओ के द्वारा प्राण सचार किया ही, अपनी विधायक कल्पना शक्ति और कारयित्री प्रतिभा के द्वारा कुछ सुन्दर उपन्यास भी लिखे। 'अमात्य चाणक्य और 'होटल मार्डन उनकी विख्यात कथाकृतिया है। फ्रास मे रहते समय उन्होने फ्रेंच भाषा पर भी पर्याप्त अधिकार कर लिया था। इसलिए फ्रास के विख्यात कलाकार मोपासा की कहानियो का हिन्दी अनुवाद करने मे भी उन्हे कोई कठिनाई नही हुई।

आर्यसमाज का सप्त खण्डात्मक इतिहास उनके साहित्यिक यज्ञ की पूर्णाहुति है। इस कार्य को आरम्भ करने से पूर्व उन्होने दिल्ली मे अपने निवास पर कुछ विद्वानो को आमत्रित किया और एतद् विषयक चर्चा की। इस गोष्ठी मे सर्व श्री क्षेमचन्द्र सुमन, डा० वेदप्रताप वैदिक, डा० धनपति पाण्डेय, प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु तथा इन पक्तियो का लेखक भी सम्मिलित हुआ। प्रारम्भ मे तो यही उचित समझा गया कि इतिहास के विभिन्न खण्डो का लेखन पथक् पृथक् विद्वानो को सौप दिया जाय। सातो खण्डो की विशद रूपरेखा तो खुद डा० सत्यकेतु जी ने ही बना ली थी और उसे प्रकाशित भी किया जा चुका था।

किन्तु लेखन के सयुक्त दायित्व को निभाना भी सरल नही है। अन्तत यही निश्चय हुआ कि प्रधान सम्पादक डा० सत्यकेतु स्वय तथा जिस व्यक्ति को उचित समझे उसके सहयोग से वे इस ग्रन्थमाला को तैयार करें। फलत १९८२ मे इतिहास का प्रथम खण्ड छपा और उसके बाद तो प्रति वर्ष एक एक खण्ड नियमित रूप से प्रकाशित होता रहा। इतिहास लेखन का यह महान् अनुष्ठान १९८८ मे पूरा हुआ और विधि का कैसा विचित्र विधान है कि अपनी सारस्वत साधना के इस सत्र को समाप्त कर डा० सत्यकेतु ने १६ मार्च १९८९ को अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली।

आर्यसमाज के इतिहास का प्रथम खण्ड नवजागरण की 'पृष्ठभूमि

और भारत के उन्नीसवी शती के धार्मिक सास्कृतिक आदोलनो का पूरा जायजा लेता है। इस मे महर्षि दयानन्द के राष्ट्रीय योगदान की विस्तृत समीक्षा की गई है। १८८३ की घटनाओ तक का विवेचन इस खण्ड मे इतिहास लेखन की समस्त बारीकियो को ध्यान मे रखकर किया गया है। तीन अध्यायो को छोडकर जो प० हरिदत्त वेदालकार ने लिखे, यह खण्ड डा० सत्यकेतु की लेखनी से ही प्रसूत हुआ है।

द्वितीय खण्ड आर्यसमाज के प्रचार प्रसार के कार्य का मूल्याकन करता है और इसका विवेचना क्षेत्र १८८३ से १९४७ तक का है। इस प्रकार स्वामी दयानन्द के निधन काल से आरम्भ कर देश के स्वतन्त्र होने तक की अवधि की घटनाये इस भाग मे चित्रित हुई हैं। तीस अध्यायो मे समाप्त इस इतिहास के २० अध्याय डा० सत्यकेतु ने और अवशिष्ट ९ उनके सहयोगी प्रो० हरिदत्त ने लिखे। राजस्थान विषयक पन्द्रहवा अध्याय इन पक्तियो के लेखक ने लिखा। तृतीय खण्ड आर्यसमाज की शिक्षा के क्षेत्र की उपलब्धियो का समीक्षण प्रस्तुत करता है। गुरुकुल और डी० ए० वी०, दोनो प्रकार के शैक्षिक आन्दोलनो की विस्तृत चर्चा के साथ-साथ इन सस्थानो की वतमान गतिविधियो का भी पूरा लेखा जोखा इस खण्ड मे दिया गया है।

इतिहास का चतुर्थ खण्ड यद्यपि १८७५ से १९२६ तक के घटनाक्रम को वर्णित करता है कन्तु इसका महत्त्व इसलिए बढ गया है क्योकि इसमे आर्यसमाज और राजनीति जैसे सवेदनशील विषय को पूर्ण निष्पक्षता एव तटस्थता के साथ प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय मे भी प्रो० हरिदत्त डा० सत्यकेतु के सहयोगी रहे और इन पक्तियो के लेखक ने राजस्थान के स्वतन्त्रता आन्दोलनो मे आर्यसमाज की भूमिका को एक अध्याय मे विवेचित किया। पचम खण्ड का विशिष्ट महत्त्व है। आर्य-समाज के विद्वानो ने शताधिक वर्षीय कार्यकाल मे उत्तम कोटि का साहित्य लिखा और वह प्रकाशित भी हुआ। इस विस्तृत सारस्वत यज्ञ की एक रम्य झाकी दिखाना ही इस खण्ड का प्रयोजन था। इन पक्तियो के लेखक ने २१ अध्यायों मे आर्यसमाज के तत्त्वावधान में प्रणीत उस समस्त साहित्य का विषयानुसार वर्गीकरण कर विवेचन किया है। जिसके माध्यम से आर्यसमाजी लेखको की लेखन क्षमता अभिव्यक्त हुई है। प्रो० हरिदत्त ने भी चार अध्याय इसी विषय को लेकर लिखे। इस प्रकार इतिहास का यह पचम खण्ड एक प्रकार से आर्यसमाज के साहित्य का ही समग्र मूल्याकन है।

अवशिष्ट दो खण्डो मे स्वतन्त्रता पूर्व एव स्वातन्त्र्योत्तर भारत में आर्यसमाज के कार्यकलाप तथा गतिविधियो का समीक्षण हुआ है। इसी वर्ष प्रो० हरिदत्त जी का देहान्त हो गया। १९२६ से १९४७ तक की गतिविधियो का आकलन डा० सत्यकेतु ने १२ अध्याय लिखकर, डा० भवानीलाल भारतीय ने पाच अध्याय लिख कर तथा प० दत्तात्रेय तिवारी ने १६ अध्याय लिख कर किया। १९८८ मे प्रकाशित सप्तम खण्ड भी उपर्युक्त तीनों द्वारा ही लिखा गया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद आर्यसमाज के विस्तार तथा उसकी विविध आन्दोलनात्मक प्रवृत्तियो की इसमें चर्चा हुई है। इस प्रकार आर्यसमाज के इतिहास लेखन और प्रकाशन का यह महत् उद्योग डा० सत्यकेतु जी की निष्ठा लगन, अध्यवसाय तथा परिश्रम से पूरा हो सका। उनकी इच्छा थी कि अग्रेजी भाषी पाठको के लिए वे इस इतिहास का एक सक्षिप्त सस्करण अग्रेजी में भी निकालते, किन्तु अब उनके दिवगत हो जाने के पश्चात् यह चुनौती भरा काम किसी अन्य जीवट वाले व्यक्ति की राह देख रहा है।

कोई देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतन्त्र नही है जब तक अपनी भाषा मे नही बोलता।

* * *

देश के सब से बडे भू-भाग मे बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है।

—नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

सत्यकेतु सप्तक

(कविवर 'प्रणव' शास्त्री एम०ए० महोपदेशक)

सत्यकेतु के सत्य गुणो का कीर्ति केतु लहराता है।
उनके गुण गौरव की गाथा मुक्त कण-कण गाता है॥

जननी की वह कोख धन्य है, जहा जन्म का सुख पाया।
पूज्य पिता के यत्न कोटि से रत्न अनोखा जो पाया॥
धराधाम मे नाम ग्राम भी यहा अमर हो जाता है॥१॥

गुरुकुल गङ्गा वारि धार मे मल-मल खूब नहाये थे।
बिमल विवेकी गुरु चरणो मे बैठे आप सिहाये थे॥
यती व्रती ब्रह्मचारी ही तो ज्ञान मान को पाता॥२॥

सत्य साधना श्रम की सत्ता रङ्ग अनोखा भर लाई।
ज्ञान राशिया मिली कृपानिधि गुरुओ मे जो बिखराई॥
तपते तपते स्वर्ण वर्ण भी कुन्दन ही बन जाता है॥३॥

श्रद्धायुत आनन्द राशि के आशिष मिले निराले थे।
वर्णी बोध-विद्या मे जिसने सारे ही व्रत पाले थे॥
उसी विद्या से अकुर बढ़ता विटप विशाल कहाता है॥४॥

नित्य निरन्तर चली लेखनी कभी नही विश्राम किया।
गौरव ग्रन्थ अनेकों रचकर धराधाम में नाम किया॥
इसीलिए तो मस्तक सबका तुम को ही झुक जाता है॥५॥

शतवर्षी इतिहास लिखा जो आर्यसमाजी थाती है।
देव दयानन्द के स्वप्नो को सहारते प्रकटाती है॥
गुरुकुल कुलपति पद भी सुख से पूर्ण प्रतिष्ठा पाता है॥६॥

अमर हो गए अमर कर गए इतिहासो की माला को।
प्रबल प्रेरणा और चेतना जगा गए तुम ज्वाला को॥
"प्रणव" काव्य की कड़ियाँ लड़िया तुमको भेंट चढ़ाता है॥७॥

शास्त्री सदन रामनगर (कटरा)
आगरा-६ (उ० प्र०)

डा० सत्यकेतु के ऐतिहासिक उपन्यास

—डा० विष्णुदत्त राकेश

मौर्य एव शुगकाल सम्बन्धी हिन्दी उपन्यासकारो मे मिश्रबन्धु, राहुल चतुरसेन शास्त्री यशपाल, रागेय राघव, आनन्द प्रकाश जैन गुरुदत्त तथा रामरतन भटनागर मे से डा० सत्यकेतु की रचनाएँ घटनाक्रम पात्र-परिवेश और सास्कृतिक अध्ययन की दृष्टि से इतिहास के सर्वाधिक निकट हैं। शेष कथाकारो ने युगीन इतिहास की चादर पर कल्पना के रहस्य, रोमाच तथा प्रणय से परिपूर्ण चित्रो की वैयक्तिक सवेदना मूलक दृष्टि का ही उद्घाटन किया है। डा० सत्यकेतु जी वातावरण विधायकी शैली के द्वारा जहा तत्कालीन समाज, धर्म, दर्शन, ऐतिहासिक यथार्थ और वैदिक सस्कृति पर प्रकाश डालते हैं वहा बौद्धिक और वैचारिक धरातल पर घटित तत्कालीन पात्रो की वैयक्तिक और सामूहिक दृष्टि को भी स्पष्ट करते हैं। धर्मनिरपेक्ष स्वर, सामाजिक वैषम्य, वर्णाश्रमवाद, पुरुषार्थ चतुष्टय तथा लोक परलोक सम्बन्धी विचारधाराओ पर डा० सत्यकेतु जी की दृष्टि अन्य उपन्यासकारो की अपेक्षा भिन्न है और इसका मूल कारण उनका आर्य चिन्तन और जीवन दर्शन से प्रभावित होना रहा है।

भारतीय इतिहास के शुद्ध लेखन और मूल्याकन की जिस आवश्यकता की ओर महर्षि दयानन्द ने ध्यान आकृष्ट किया था, उसकी पूर्ति का प्रयत्न आचार्य रामदेव, प० जयचन्द्र विद्यालकार प० चन्द्रगुप्त वेदालकार तथा डा० सत्यकेतु जी ने मौलिक इतिहास ग्रन्थ लिखकर किया। आचार्य चाणक्य, चन्द्रगुप्त, पतजलि और पुष्यमित्र भारतीय इतिहास के निर्माता एव गौरवशाली व्यक्ति हैं, पर इनके चरित्र और कार्य का मूल्याकन पाश्चात्य दृष्टि से प्रेरित इतिहासकारो ने ठीक नही किया। डा० सत्यकेतु जी ने अतर्कित और अनुमानाश्रित इतिहास लेखन की परम्परा को चुनौती देते हुए प्राचीन भारतीय इतिहास की आधारभूत सामग्री की मौलिक और बुद्धिग्राह्य व्याख्या भी की। मौर्य साम्राज्य का इतिहास और पाटली पुत्र की कहानी से इस तथ्य की पुष्टि भली भाति हो जाती है।

अपने उपन्यासो में डा० सत्यकेतु जी ने आचार्य चाणक्य और

आचार्य पतजलि को आधार बनाकर भारतीय साम्राज्य के सगठन और वैदिक सस्कृति पर आधारित भारतीय समाज को उन्नत रूपरेखा की परिकल्पना की है। उनकी जीवन दृष्टि मे समग्रता है, अधातिरेक या आरोपित अतीत गौरव का उन्माद उनमे नही है। अतीत रस जीवन के वर्तमान को प्रेरणा देता है। डा० सत्यकेतु ने इतिहास और कल्पना के समन्वय द्वारा जन जीवन को प्रेरित करने का कार्य किया। यदि इतिहास के तथ्यो को सही ढग से उपन्यासो के माध्यम से व्यक्त किया जाता है तो इतिहास के प्रति पाठक की रुचि जाग्रत होती है। वस्तु चयन के साथ जीवनगत सभावनाओ का प्रकटोकरण इन उपन्यासो की अन्तर्निहित चेतना है। इन उपन्यासो की विशेषता यह है कि इन्होने इतिहास प्रसिद्ध विशेष चरित्रो को निर्विशेष मानव चरित्र के साथ जोड दिया है। प्रेम और त्याग के नश्वर किन्तु भास्वर चित्रो का निर्माण इसी कारण इन उपन्यासो मे बराबर हुआ है। ऐतिहासिक तथ्यो का सचयन यहाँ सोद्देश्य है। कल्पना, स्वछन्दता और रूमानियत की अपेक्षा एक विराट् ऐतिहासिक सास्कृतिक चेतना का प्रवाह इन रचनाओ मे है और ये पाठको के समक्ष मानवोचित दुर्बलता को लेकर भी उदात्त जीवन चिन्तन के साथ प्रकट होती है।

भारतीय अतीत की भीतरी सवेदना, बाहरी घटनाक्रम और दबाव तथा भरतीयेतर सास्कृतिक मान्यताओ और जीवन पद्धतियो का मिश्रित रूप इन ऐतिहासिक उपन्यासो के निर्माण की नीव कहे जा सकते है। इसी पर साहस, वीरता, राष्ट्रीयदर्प, आत्मगौरव, प्रेम-प्रणय, आत्मबल, त्याग, समपण और सद् असद् के सघर्ष के कमूरी वाला सास्कृतिक महल निर्मित किया गया है। विदेशी इतिहासकारो की मताग्रहपूर्ण धारणाओ का प्रक्षालन हुआ है तथा ऐतिहासिक प्रामाणिकता और कलात्मक प्रभावान्विति के सामजस्य से इतिहास को साहित्य का लालित्य मिला है। प्रस्तुतीकरण अथवा औपन्यासिक शिल्प की दृष्टि से भी इन उपन्यासो का साहित्यिक सामर्थ्य कलात्मक उपन्यासो से किसी मात्रा मे कम नही है।

चाणक्य और सेनानी पुष्यमित्र

चाणक्य डा० सत्यकेतु का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास है। मौर्य साम्राज्य की स्थापना और सम्पूर्ण भारत की एकता का उद्देश्य लेकर आचार्य चाणक्य ने जो उद्योग किया, उसी का विशद चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में हुआ है। भारत को राजनीतिक एकता के सूत्र में पिरोने के

अतिरिक्त आदर्श राज्य व्यवस्था और उत्तम समाज व्यवस्था का चित्रण करने वाला ग्रन्थ 'अर्थशास्त्र' लिखकर उन्होने बौद्धिक सम्पत्ति का कीर्तिमान स्थापित किया। डा० सत्यकेतु भारत के उन विचारको से पूर्ण असहमत हैं जो चाणक्य को तुलना मेकियावली से करते हैं तथा चाणक्य की राजनीति को उचित-अनुचित के विवेक से रहित मानकर साध्य की पूर्ति के लिए सचेष्ट घृणित साधनाश्रित कार्य प्रणाली को प्रोत्साहन देने वाली स्वीकार करते है। इसी उपन्यास के द्वारा लेखक ने चाणक्य के गरिमामय व्यक्तित्व को उद्घाटित किया है। चाणक्य के अनुपम कर्तृत्व पर हिन्दी में उनसे पूर्व केवल प्रसाद जी ने ही नाटक प्रस्तुत किया था। डा० सत्यकेतु जी प्रसाद के विपरीत चन्द्रगुप्त को प्रतिशोध की ज्वाला में धधकते हुए व्यक्ति के रूप मे प्रस्तुन कर चाणक्य को कर्त्तव्य बुद्धि से प्रेरित दूरदर्शी राजनीतिज्ञ के रूप मे प्रस्तुत करते हैं। प्रसाद के चाणक्य निजी अपमान से प्रेरित होकर नन्द वश के उच्छेद के लिए प्रवृत्त होते हैं पर डा० सत्यकेतु के चाणक्य गाधार नरेश आम्भि द्वारा सहायता माँगे जाने पर स्पष्ट कह देते हैं कि वह आचार्य होने के नाते सक्रिय राजनीति मे भाग नही ले सकते। चाणक्य का कथन लीजिए—'तात, इसके लिए मुझसे न कहो। तुम भली भाति जानते हो कि हम लोग क्रियात्मक राजनीति मे भाग नही लिया करते। तक्षशिला विद्या, ज्ञान और शिक्षा का सब से बडा केन्द्र है। भारत भर के राजकुलो के कुमार और अन्य विद्यार्थी यहा शिक्षा के लिए आते है। तक्षशिला के इन विद्यापीठो का गौरव नष्ट हो जाएगा यदि इनके शिक्षक जनपदो और उनके राजकुलो के आपसी झगडो मे हाथ बटाने लगेंगे। हम लोग ज्ञान देते हैं, शिक्षा देते हैं, उसका प्रयोग करना हमारे शिष्यो का काम है।'[1]

किन्तु यवनो के आक्रमण पर आचार्य विचलित हो जाते हैं। उनके सामने राष्ट्रीय सकट के बादल मडराने लगते हैं। आसन्न विघटन और सर्वनाश की चिन्ता से घिरे चाणक्य विदेशी यवनो से भारतवर्ष की रक्षा करने के लिए, सम्पूर्ण देश को एक राजनीतिक सगठन मे पिरोने के लिए तथा आर्य मर्यादा और सत्ता की प्रतिष्ठा के लिए अध्यापकीय जीवन का परित्याग कर युगानुरूप स्वधर्म का व्रत लेते हैं। केकय और गाधार के युद्ध मे उदासीन रहने वाला आचार्य अब सन्नद्ध हो जाता है। चाणक्य के इस महान् अभियान का प्रभाव सम्पूर्ण देश पर पडेगा। यही वह विन्दु है जो चाणक्य को इतिहास निर्माता के रूप मे प्रस्तुत करता है। मुद्रा-

१ (चाणक्य पृष्ठ ४६)

राक्षस और चन्द्रगुप्त जैसी नाट्य कृतियो मे भी चाणक्य के जिस उदात्त, निस्पृह तथा राष्ट्र भक्ति प्रेरित सकल्प पूर्ण व्यक्तित्व की छवि निर्मित नही हो सकी, उसकी उज्ज्वल आभा डा० सत्यकेतु के चाणक्य के प्रभामण्डल मे है। आचार्य चाणक्य का कथन लीजिए—'क्या तुम देखते नही हो कि सुदूर यवन देश मे जो एक नया तूफान उठा था, उसने सारे पाश्चात्य खण्ड को व्याप्त कर लिया है। हिन्दू कुश पर्वत माला तक यह आधी पहुच गई है। प्रभजन के वेग से उडते हुए तिनको के समान हजारो लाखो नर नारी अपने घर-बार छोडकर वाह्लीक खण्ड मे आ रहे हैं। मुझे साफ-साफ नजर आ रहा है कि यह तूफान हिन्दूकुश पर्वत को लाघकर भारतवर्ष मे प्रवेश करेगा और यहा के जनपद इस नई शक्ति के सम्मुख अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा नही कर सकेंगे। आर्य धर्म और आर्य मर्यादा के विनाश को सह सकना मेरी शक्ति मे नही है। यवन देश के म्लेच्छ लोग परास्त जनपदो की नगरियो को भस्मसात् कर देते हैं, स्त्रियो और बच्चो को गृहहीन बना देते हैं। मैं उस दिन की कल्पना करके उद्विग्न हो जाता हू जब पुष्करावती, तक्षशिला, राजगृह, साकल आदि आर्य नगरियाँ भी इन म्लेच्छो द्वारा आक्रान्त होगी और आर्य नारिया आश्रयहीन होकर इधर उधर भटकती फिरेंगी। अनाथ बच्चो का वह करुण क्रन्दन मुझे अपने कानो से सुनाई दे रहा है जिससे सम्पूर्ण आर्य भूमि का क्षितिज परिपूर्ण हो जाएगा।'[1]

प्रसाद आदि का बल नदकुल उन्मूलन पर प्रथम है पर डा० सत्यकेतु यवन आक्रमण का प्रतिरोध प्रमुख कार्य मानते हैं। चन्द्रगुप्त नद वश से क्षुब्ध है, वह माता की मुक्ति के लिए छटपटाता है पर चाणक्य का लक्ष्य महान् है वह व्यक्ति के लिए नही, राष्ट्र के लिए चिंतित है। हिमालय से समुद्र पर्यन्त सहस्र योजन विस्तीर्ण आर्य भूमि मे एक सार्वभौम शासन की स्थापना के लिए ही वह उद्योगरत है। चन्द्रगुप्त से चाणक्य ने कहा भी—'तुम्हे अपनी माता के दासी जीवन से कितना उद्वेग होता है पर उस दिन की तो कल्पना करो, जब इस देश के लाखो नर नारी विदेशी यवनराज की अधीनता मे दास्य जीवन को व्यतीत करने के लिए विवश होगे।'[2]

चाणक्य को लेखक ने इतिहास और सस्कृति का प्रतीक पुरुष सिद्ध किया है। चाणक्य का विराट् लक्ष्य, अखण्ड राष्ट्रभक्ति, तप और त्याग

---

१ चाणक्य पृष्ठ ६०।

२ वही पृष्ठ १०७।

पूर्ण जीवन, अचूक कर्म योग, आर्यावर्त की मान मर्यादा की प्रतिष्ठा, सास्कृतिक चेतना, स्वाभिमान और जातीय गौरव तथा सर्व हितकारी ब्रह्मतेज इस उपन्यास मे फूटा पडता है शूद्र और क्षत्रिय राजधर्म की मर्यादा का प्रश्न उठने पर इन्द्रदत्त के प्रति कहे गए चाणक्य के वाक्य उसके उदार दृष्टिकोण के सूचक हैं। वह शूद्र है इसकी मुझे चिन्ता नही है। शुद्ध आर्यरक्त वाहीक देश के अतिरिक्त अन्यत्र रह ही कहाँ गया है ? प्राच्य देशो के सभी क्षत्रिय व्रात्य और वर्ण सकर हैं, उनमे शूद्र रक्त का समिम्श्रण हो गया है। जब जातिया अपना विस्तार करती है, नये नये देशो को विजय करती है, उनमे जाकर आबाद होती हैं तो यही होता है। पर हाँ नन्द को आर्य मर्यादा मे स्थापित करना होगा। आर्य लोग राजकुलो और क्षत्रिय वर्ग का उन्छेद नही किया करते। वे उन्हे कायम रखते हैं और उनका सहयोग प्राप्त करते हैं। पर मगध की राजशक्ति का प्रयोग किए बिना इस देश को राजनीतिक सूत्र मे सगठित कर सकना सम्भव नही है।'[1]

कठ गण के साकल नगर मे चाणक्य की अभ्यर्थना मे दिया गया गण मुख्य वीरधर्मा का वक्तव्य लेखक के उद्देश्य को स्पष्ट करता है। भारतीय समाज का स्वरूप वैदिक युग मे क्या था और आज क्या होना चाहिए इसकी ध्वनि इस वक्तव्य मे निहित है। 'कठो का यह प्राचीन गण वैदिक युग की उस परम्परा को कायम रखे हुए है जब कि सब लोग एक साथ भोजन करते थे, एक साथ मिलकर विचार करते थे। हमारी प्रपा एक है, हमारा अन्न भाग एक है और हम लोगो मे बहुजन के हित के लिए वैयक्तिक अह भाव को सर्वथा मिटा दिया है। बहुतो के सुख और कल्याण लिए एक व्यक्ति के गौरव, अहकार और ममत्व को होम कर देना ही आर्यों की प्राचीन परम्परा है।'[2] अथर्व के 'समानी प्रपा सह वोऽन्नभाग' मत्र की छाया पर निर्मित उक्त गद्याश भारतीय समाज का आदर्श होना चाहिए। जब देश, धर्म, जाति, वर्ग, भाषा और जीवन दर्शन के नाम पर खण्ड खण्ड हो रहा हो तब इस उद्देश्य की सार्थकता प्रमाणित हो जाती है।

लेखक ने कथानक की ऐतिहासिकता को ध्यान मे रखा है। पजाब मे राजनीतिक एकता का अभाव और गाधार आदि जनपदो का आपसी राग द्वेष सिकन्दर के लिए वरदान सिद्ध हुआ। यह भी ऐतिहासिक तथ्य

१ वही पृष्ठ ८१।
२ वही पृष्ठ ८४।

है कि पजाब मे सिकन्दर का शासन देर तक स्थिर नही रह सका। यवनो के विरुद्ध जनता को भडकाने में ब्राह्मण और विद्यार्थियों का बड़ा हाथ रहा। चन्द्रगुप्त शूद्र नहो मोरिय गण का राजकुमार था। चाणक्य और चन्द्रगुप्त ने पहले उत्तर पश्चिमी भारत तथा पजाब को जीता और फिर मगध साम्राज्य को जीत कर वह सम्पूर्ण उत्तरी भारत का एक छत्र सम्राट् बन गया। चाणक्य तक्षशिला के निवासी थे। यह मूल ऐतिहासिक तथ्य है, जिसे सामने रखकर ऐतिहासिक घटनाक्रम प्रधान इस उपन्यास की रचना हुई। सिकन्दर का आक्रमण, सिल्यूकस की हार तथा सधि भी इतिहास प्रेरित तथ्य हैं। डा० सत्यकेतु ने इतिहास के प्रसगानुसार साधारण से साधारण तथ्यों, चारित्रिक विशेषताओ तथा वातावरण को सजगता के साथ प्रस्तुत किया है। नगरो, पात्रो और व्यक्तियो के प्राचीन नामो का उपयोग करते हुए भी वह किवदन्तियो से दूर रहे हैं जिनका सम्बन्ध कई रूपो मे प्राचीन ग्रन्थो मे मिलता है।

धर्मतत्र, राजतन्त्र तथा समाजतन्त्र से जुडे हुए अनेक पारिभाषिक शब्दो का प्रयोग उपन्यास मे हुआ है। ये सब शब्द चाणक्य प्रणीत अर्थ-शास्त्र मे उपलब्ध हैं। इस से मौर्य युग का वातावरण उत्पन्न हुआ है। प्रदेशो, नगरो, नदियो और पात्रो के नाम भी उस युग के अनुरूप ही रखे गए है। देश और काल की रक्षा के लिए ऐसा करना नितान्त आवश्यक था। सास्कृतिक दृष्टि से सत्यकेतु जी की भाषा परम्परा और परिवेश की रक्षा कर सकने मे समर्थ सिद्ध हुई है।

सम्पूर्ण उपन्यास ४५ खण्डो मे विभाजित है। जिस कार्य-व्यापार का प्रसार सम्पूर्ण उपन्यास मे हुआ है, उसका बीज प्रथम खण्ड मे उपलब्ध हो जाता है। चन्द्रगुप्त का पाटलिपुत्र के अन्त पुर से निकलकर तक्षशिला तक पहुच जाना हो उसके चातुर्य, आकाक्षा और साहसो चरित्र का प्रमाण है। चन्द्रगुप्त की यही विशेषता चाणक्य को प्रभावित करती है। वह कहते हैं—'तुम एक साहसी युवक हो कुमार, तुम्हारी आकाक्षाएँ महान् है और तुम मे उद्दण्ड साहस हैं। मेरे लिए यही पर्याप्त है।'[1] १६ वे खण्ड मे चन्द्रगुप्त का यह वाक्य उल्लेखनीय है कि मगध का अपमान मैं सह सकता हू, उसके राजकुल से मेरी शत्रुता है पर आर्यों की इस विशाल भूमि के अपमान की कल्पना तक मुझ असह्य तक है।'[2] अन्तिम खण्ड मे विष्णुगुप्त की विदाई है जहाँ वह आर्य भूमि की एकता और अखण्डता की रक्षा का

१ चाणक्य, पृष्ठ २०
२ वही, पृष्ठ १०७

भार चन्द्रगुप्त को सौपकर फिर तक्षशिला मे अध्यापन के लिए करभिका को साथ लेकर निकल पडता है। उसके लिए न धन वैभव का कोई मूल्य था, न राजशक्ति का ज्ञान ही उसकी एकमात्र सम्पत्ति थी, त्याग ही उन का बल था। क्षात्र धर्म पर इसी ब्रह्मतेज का नियन्त्रण भारतीय राजनीति की आधारशिला थी और इसी की स्थापना के साथ उपन्यास का भरत वाक्य पूर्ण हो जाता है।

उपन्यास मे मौर्य युगीन समाज तथा संस्कृति के विविध पक्षो का उदघाटन भी सफलतापूर्वक हुआ है। मुख्यत वैदिक औपनिषदिक, बौद्ध ईश्वर तथा निरीश्वरवादी विचारधाराओं का चित्रण हुआ है। वैदिक-अवैदिक विचारधाराओ का जो सघर्ष यज्ञवादी और यज्ञविरोधी संस्कृति के रूप मे उपनिषदो मे झलका वही ब्राह्मण और व्रात्य विचारको के रूप मे ब्राह्मण और श्रमणो के रूप मे विकसित हुआ। श्रावस्ती प्रकरण मे इस तरह का विवाद प्रस्तुत कर लेखक ने वर्णाश्रमवादो आर्य धारा की तर्क सम्मत व्याख्या प्रस्तुत की। बौद्धो की विवेकहीन, अकर्मण्य और कर्मच्युत जीवनयापन प्रणाली भिक्षुवाद के रूप मे इस युग की भयकर भूल थी। चाणक्य का ध्यान इस ओर भी गया। कस्सपगोत और धनदत्त का परस्पर सवाद इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। 'पर उपासक, त्रयी जिन यज्ञो का उपदेश करती है, वे तो एक भग्न नाव के समान है जो मनुष्य को ससार-सागर के पार नही उतार सकती। यज्ञ द्वारा मनुष्य इन्द्र का आवाहन करता है वरुण प्रजापति महेश और यम का आवाहन करता है पर क्या ये उसके पास चले आते है ?' तुम त्रयी और आन्वीक्षिकी के झगडे मे मत पडो। तुम तथागत के मार्ग का अवलम्बन करो।

भिक्षु सघ की अनुपयोगिता पर आचार्य चाणक्य की टिप्पणी महत्त्व की है। 'राजशासन द्वारा, हमे यह व्यवस्था करनी होगी कि कोई ऐसा व्यक्ति परिव्राजक या भिक्षु न बन सके जो ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ आश्रमो मे न रह चुका हो। केवल वे ही व्यक्ति भिक्षु बन सकें, जिनकी सन्तान उत्पन्न करने की शक्ति नष्ट हो गई हो और जो अपनी सन्तान तथा पत्नी के प्रति अपने कर्तव्यो को पूरा कर चुके हो। जो इसके विपरीत आचरण करे, उसके लिए दण्ड की व्यवस्था करनी होगी।[२] बालको, बालिकाओ और युवतियो का भिक्षुव्रत हास्यास्पद है। जिन युवको को

१ वही , पष्ठ ९०
२ वही , पृष्ठ ९४

गृहस्थ आश्रम मे प्रविष्ट होकर कृषि, शिल्प, व्यापार आदि द्वारा सम्पत्ति का उत्पादन करना चाहिए। वे भिक्षु बने समाज पर बोझ सिद्ध हो, यह आय परम्परा नही है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और फिर सन्यास का तारतमिक उपभोग आर्य परम्परा है। 'यदह विरजेत् तदह परिव्रजेत्' का सही स्वरूप स्पष्ट होना चाहिए।

नगरो ग्रामो, पर्वतो, वनो, नदियो, राजभवनो, मन्दिरो, उत्सवों, आमोद प्रमोद के साधनो, विद्यापीठो, ऋषियो-मुनियो, उपासना प्रणालियो, रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा, क्रीडा-व्यापार, धर्म और दर्शन का प्रतिपादन भी उपन्यासो मे हुआ है। भारतीय और यवन सस्कृति का चित्रण भी विभिन्न प्रसगो मे हुआ है। सिकन्दर की दिग्विजय यवन सस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए हुई थी। मौर्य कालीन और मौर्योत्तर भारतीय जीवन चिन्तन पर यवन सस्कृति का प्रभाव इतिहासकारो ने रेखाकित किया है। इस उपन्यास मे भी ऐसा हुआ है। षड्यन्त्रो के विविध रूप भी देखने को मिलते हैं। ये षड्यन्त्र राजमहलो, मन्दिरो और पान्थागारो तक फैले हुए है। राष्ट्रसेवा के लिए नागरिको द्वारा मुक्त दान, मन्दिर विहारो के लिए दान तथा विद्यापीठो के लिए दान की परम्परा भी मिलती है। यवनो के विरुद्ध विद्रोह की योजना का सूत्र शाकम्भरी के मन्दिर मे ही निर्मित होता है जो स्रुघ्न जनपद के बृहद् हट्ट का एक पवित्र स्थान था। ज्योतिषियो, नटो, मदारियो, वेश्याओ, मणिकाओ, विषकन्याओ, कपोत-कपोती द्वारा समाचार प्रेषण की कला और गोष्ठीशालाओ के पान महोत्सवो का सजीव चित्रण उपन्यास को समृद्ध बनाता है। दास प्रथा और स्वच्छन्द कामोपभोग के चित्रो ने भी युगीन परिवेश को साकार करने मे सहायता प्रदान की है।

उपन्यास की भाषा और सवाद भी प्रभावशाली हैं। कुछ वर्णन देखिए—'यह आर्यभूमि भी कैसी अद्भुत है। इसका चमकता हुआ नीला आसमान, इस की तारो भरी राते और इसके लहलहाते हुए खेत कितने आकर्षक है। यहाँ के निवासी भी कैसे वीर हैं, वे बलिदान को खेल समझते हैं और जीवन मृत्यु मे कोई भेद नही मानते।'[1]

'तुम जानते हो मेरे शिक्षणालय मे दासी पुत्रो की शिक्षा की व्यवस्था नही है।'

'पर मैं दासीपुत्र नही हूँ। मेरी माता राजमहिषी है और मैं राज-

---

१ चाणक्य, पृष्ठ १७२

कुमार हू। मेरी नसो मैं सूर्य वश के क्षत्रियो का शुद्ध आर्य रक्त प्रवाहित हो रहा है। मेरी प्रतिज्ञा है कि नन्द को परास्त कर मैं अपने वंश के लुप्त गौरव का उद्धार करूँ।'[1]

'नही करभिका, तुम सचमुच मेरी उपास्य देवी हो, तुम्हारी प्रतिमा सदा मेरे मन मन्दिर मे प्रतिष्ठित रहती है।'[2]

उपन्यास के पात्रो मे चाणक्य, वररुचि, शकटार, इन्द्रदत्त, आभि, पौरु, करभिक, सुभगा, वासन्ती एक प्रकार की स्तरीय भाषा का प्रयोग करते है। भावात्मक, अलकृत तथा चित्रात्मक भाषा के प्रयोग से उपन्यास की साहित्यिकता मे श्रीवृद्धि हुई है। तीन उद्धरण है—

'करभिका के नृत्य को देखकर क्षत्रप फिलिप्स और सेनापति पेरिप्लस मन्त्रमुग्ध हो गए। उसके नृत्य कौशल के साथ साथ वे देख रहे थे उसके उरोजो को उसके नितम्बो को और उसकी केशराशि को जो उसके साथ-साथ स्वय भी नाच रहे थे, उसके नृत्य मे तान सी मिलाते हुए।'[3]

'जब वह हँसती है तो फूलो की वर्षा होने लगती है। जब वह रूठती है तो उसके मुखमण्डल पर एक अद्भुत सी मादकता आ जाती है। उसका पिगल वर्ण केशपाश ऐसा मालूम पडता है मानो सूर्य बादलो मे से झाक रहा हो।'[4]

'करभिका, आगे तो आ, अपने को निरावरण तो कर दे। देखिए सेनापति, इसके रूप को देखिए। कचन का सा रग, रेशम के से केश। ऐसी सुन्दरी आपने वाह्लीक देश मे कही न देखी होगी।'[5]

पात्र और चरित्राकन की दृष्टि से यह उपन्याम बौद्धिकता एव कलात्मकता से परिपूर्ण है। आर्य गौरव की दीप्ति, भावुकता, प्रेम, त्याग, विनोदप्रियता, बलिदान, महत्त्वाकाक्षा आज्ञाकारिता, जातीय गर्व तथा प्रेरक शक्ति से ओतप्रोत पात्र मन पर गहरा प्रभाव डालते है। करभिका, चन्द्रगुप्त और चाणक्य के व्यक्तित्व के ये सामान्य गुण है। करभिका की अवतारणा उन्नत आर्य ललना की अवतारणा हेतु लेखक की कल्पना सृष्टि

२ वही, पृष्ठ १८, १९
३ वही, पृष्ठ २५१
४ वही, पृष्ठ १९७
५ वही, पृष्ठ ४४
६ वही, पृष्ठ १४१

है पर समूचे उपन्यास की आत्मा भी। चाणक्य और करभिका का त्याग प्रेम और कर्तव्य पालन का काव्य खण्ड है जो प्रत्येक पाठक को अन्त तक बाधे रहता है। इस प्रकार चाणक्य औपन्यासिक कला और उद्देश्यनिष्ठ सृजन का उत्कृष्ट प्रतीक कहा जा सकता है।

सेनानी पुष्य मित्र या पतन और उत्थान

मौर्य साम्राज्य के पतनोन्मुख काल मे ब्राह्मण धर्म और सस्कृति के पुनरुत्थान की कथा इतिहास मे शुग साम्राज्य और उसके सस्थापक सेनानी पुष्यमित्र के साथ प्रारम्भ होती है। बौद्ध ग्रन्थो मे सेनानी का चरित्र धार्मिक विद्वेष के कारण घृणित रूप मे प्रस्तुत किया है, पर सच तो यह है कि अशोक की धर्मनीति की विजय से जिस अकर्मण्य और क्लीब धर्म-सस्कृति की प्रचारणा देश मे हुई और भिक्षुसघो के कुचक्रो ने विदेशियो के आक्रमण मे राष्ट्रद्रोही भूमिका निभाई उसमे पुष्यमित्र का उदय अकारण नही हुआ। आचार्य पतजलि जैसे महान विचारक को पुष्यमित्र वैसे ही मिले जैसे चाणक्य को चन्द्रगुप्त हिन्दू धर्म के पुनरुत्थान का यह युग गौरवपूर्ण है और पतजलि ने अपने महाभाष्य मे 'अरुणत यवन साकेतम तथा इह पुष्यमित्र याजयाम लिखकर इस युग को सदा के लिए अमर कर दिया। मौर्य सम्राट वृहद्रथ की राज्यच्युति तथा यवनो को परास्त कर आर्य साम्राज्य की स्थापना द्वारा पुष्यमित्र ने पौराणिक धर्म का प्रवर्तन किया। अश्वमेध कर यज्ञो का पुनरुद्धार किया तथा सघारामो को ध्वस्त कर आचार्यकुलो की प्रतिष्ठा की। उनका पुत्र अग्निमित्र स्वय गोनर्द गुरुकुल मे आचार्य मे शिक्षा ग्रहण करता है। अशोक ने यवन राज्यो मे धर्ममहाम त्यो की नियुक्ति कर साम्प्रदायिक विद्वेष को समाप्त करने पर बल दिया था पर बाद मे इनके द्वारा निर्मित सैकडो विहार भोग और षडयन्त्रो के अडड बन गए। जनता के खून पसीने की कमाई का दुरुपयोग होने लगा। अहिसाव्रत के नाम पर शस्त्रो का परित्याग और सेनाओ की छटनी होने लगी। देश की सुरक्षा खतरे मे पड गई। सेनानी पुष्यमित्र मे डा सत्यकेतु ने इसी आशका को केन्द्र मे रखकर वीरभद्र और पुष्यमित्र के सवाद मे युग की चिन्ता व्यक्त की। एक सवाद लें—स्पष्ट भाषण के लिए मुझे क्षमा करें आचार्य आप केवल उन यवनो के सम्पर्क मे आए है जो बौद्धधर्म को अपना चुके हैं और जो भिक्षु जीवन व्यतीत कर रहे हैं। मुझे यवन सैनिको से मिलने का अवसर मिला है। उन्हे वह दिन भलीभाति स्मरण है जब कि चन्द्र-

गुप्त ने सैल्यूकस को परास्त किया था और जब यवनराज चन्द्रगुप्त के साथ अपनी कन्या का विवाह करना स्वीकार कर सधि की याचना के लिए विवश हुआ था। वे अपने जातीय अपमान को भूले नही हैं। नव-विहार के शात वातावरण के पीछे वाह्लीक नगरी मे भारत के विरुद्ध एक भयकर तूफान उठ रहा है और दिन दूर नही है जबकि एवुथिदिम की यवन सेना भारतभूमि पर आक्रमण कर अपने जातीय अपमान का प्रतिशोध करने का प्रयत्न करेगी। धर्म विजय की उपयोगिता को मैं स्वीकार करता हूँ वह हमारी ब्रह्मशक्ति को प्रकट करती है पर क्षत्रशक्ति की उपेक्षा करना मुझे समझ नही आता।'[1]

इतिहासकारो ने पुष्यमित्र को जिस महत्त्वाकाक्षी बौद्धधम विरोधी राजा के रूप मे प्रस्तुत किया है, उससे पतजलि और उसके इस सुयोग्य शिष्य की उज्ज्वल छवि सामने नही आती। इतिहासकार लिखते हैं कि सैनिक परेड के समय सेनापति पुष्यमित्र ने बृहद्रथ को मारकर सत्ता हथियाई। डा० रमाशकर त्रिपाठी की टिप्पणी है कि समवत बृहद्रथ प्रज्ञा-दुर्बल राजा था और पुष्यमित्र को सारी सेना की पूरी सहायता उपलब्ध थी, नही तो सेना के सामने ही खुले मैदान मे वह अपने स्वामी को कभी मार न सका होता।[2] हर्षं चरित के 'पुष्यमित्रस्तु सेनानी समुदधृत्य बृहद्रथम्' प्रसग को लेकर इतिहासकारो ने यह अवधारणा व्यक्त की है। मूल पाठ मे समुदधृत्य और पिपेष को देखकर ऐसा लिखा गया है पर सत्यकेतु जी ने इसका अर्थ उखाडकर और पीसकर किया है। वह लिखते हैं कि जब वह सेना का निरीक्षण कर रहा था अकस्मात् उस पर आक्रमण कर दिया गया और उसे बन्दी बना लिया गया। पाटलिपुत्र की प्राचीर पर तत्काल कुछ तूर्यकर प्रकट हुए और तुरही नाद के साथ उन्होने घोषित किया—बृहद्रथ को शासनच्युत कर दिया गया है। मन्त्री परिषद का निर्णय है कि सेनानी को राजा के पद पर अभिषिक्त किया जाए।[3] पतजलि उससे राजसूय यज्ञ करवा कर राजा बनाने का निर्णय लेते है। अश्वमेध यज्ञ के निमित्त सिधु तट पर यवनो और मागध सेना का घोर युद्ध होता है तथा विजय प्राप्त वसुमित्र (पुष्यमित्र का पौत्र) यज्ञीय अश्व को यज्ञ मण्डप मे लाकर निष्कटक राज्य की सूचना देता है।

१ पतन और उत्थान—पृष्ठ १७
२ प्राचीन भारत का इतिहास—पृष्ठ १३३
३ पतन और उत्थान—पृष्ठ ३०६

मिनेन्द्र की इस पराजय मे पुष्यमित्र और उसके परिवार की गौरव-गाथा छिपी हुई है जो पुष्यमित्र के राजा होने अथवा वास्तविक अधिकारी होने का प्रमाण है। इससे पूर्व पुष्यमित्र सिन्धु तट पर यवनो को परास्त कर चुके थे। लेखक ने पुष्यमित्र की वीरता की धाक जमाने के लिए और उनकी अनुपम वीरता तथा राष्ट्रभक्ति की दृढता प्रतिपादित करने के लिए इस घटना को पहले प्रस्तुत किया है। डा० सत्यकेतु लिखते हैं—'अम्बुलिम घाट के इस युद्ध मे पुष्यमित्र को अनुपम सफलता प्राप्त हुई। यवन सेनाएँ वाहीक देश मे पदार्पण नही कर सकी और वापस लौट जाने को विवश हो गइ। यद्यपि कपिश—गान्धार यवनो के आधिपत्य मे आ चुके थे पर वाहीक देश की स्वतन्त्रता अक्षुण्ण रही। इसी युद्ध में विजयी होने के कारण पुष्यमित्र को 'सेनानी, का गौरवमय पद प्राप्त हुआ।'[1]

मिनेन्द्र की वसुमित्र द्वारा पराजय, पतजलि द्वारा पुष्यमित्र के अश्व-मेध का सचालन और पौरोहित्य तथा कुक्कुटराम विहार का ध्वस इतिहास सम्मत घटनाएँ हैं। पाश्चात्य इतिहासकारो ने पुष्यमित्र का सम्प्रदायवादी सिद्ध करने को कोशिश की। इसके विपरीत ड० सत्यकेतु ने बोद्धभिक्षुओ के षड्यत्र, शासनसत्ता म अनावश्यक हस्तक्षेप, विदेशी आक्रान्ताओ की सहायता तथा ब्राह्मण धर्म के प्रति विद्वेष की घटनाएँ प्रस्तुत कर सेनानी पुष्यमित्र के आक्रोश की स्वाभाविकता प्रतिपादित की। कुक्कुट-राम विहार को इसलिए नष्ट नही किया गया कि पुष्यमित्र बौद्धो का विद्वेषक था या दिव्यावदान के अनुसार बौद्ध विरोधी था। अपितु इस लिए कि वह राष्ट्रद्रोहियो का आश्रय स्थल था। पुष्यमित्र का कथन लीजिए—'कौन कहता है, यह चैत्य एक पूजा स्थान है ? चैत्यो का निर्माण उपास्यदेव की पूजा के लिए किया जाता है, शासनतन्त्र के विरुद्ध षड्यन्त्रो की रचना के लिए नहो। इस चैत्य को भी हमे भूमिसात् करना ही होगा। वह यदि बौद्धधर्म विरोधी होता तो यह क्यो कहता कि 'पर भगवान तथागत की मूर्ति को सुरक्षित रखने की व्यवस्था तो हमे करनी ही चाहिए मधुरिका।'[3] ऐतिहासिक दृष्टि से भी भरहुत के बौद्ध स्तूप और वेदिका जिनका निर्माण शुगकाल मे हुआ, पुष्यमित्र की असहिष्णुता को निर्मूल कर देते हैं।[4] नागसेन और मिनेन्द्र

---

१ पतन और उत्थान—पृष्ठ १०१
२ पतन और उत्थान—पृष्ठ २४६
३ पतन और उत्थान—पृष्ठ २४६
४ प्राचीन भारत का इतिहास—पृष्ठ १३६

के सवाद से इस उपन्यास का अन्त कराना भी लेखक की सोद्देश्य सकल्पना है। वह मानो पतञ्जलि और पुष्यमित्र के कार्य का सही मूल्यांकन प्रस्तुत करना चाहते हैं। उनकी दृष्टि मे पुष्यमित्र उत्साही हिन्दू तो है पर उदार देशभक्त राजा भी। उसका यही पक्ष प्रस्तुत करना इस उपन्यास का लक्ष्य है। सत्यकेतु जी लिखते है—'एक दिन यवनराज ने आचार्य से प्रश्न किया पुष्यमित्र और पतञ्जलि के कारण क्या मध्य देश से अब सद्धर्म का पूर्णतया लोप हो जाएगा ? इसका उत्तर देते हुए नागसेन ने कहा—जिसका आदि है, उसका अन्त होना भी अवश्यम्भावी है। कार्य-कारणभाव से जिन वस्तुओ व सत्ताओ का प्रादुर्भाव होता है, उनका विनाश भी अवश्य होता है। तथागत की यही शिक्षा है पर किसी भी सत्ता का कभी पूर्णरूप से अन्त नही होता। जिसे हम वस्तुओ का विनाश कहते है, वस्तुत वह उनका रूपान्तर होना हो हुआ करता है। सद्धर्म का कभी अविकल रूप से अन्त नही होगा। भगवान् तथागत की शिक्षाएँ मध्यदेश मे स्थिर रहेंगी और वहाँ के निवासियो को सदा प्रेरणा देती रहेंगी। प्राणीमात्र के प्रति करुणा की भावना, अहिंसा और सब का हित एव कल्याण के जो उपदेश भगवान बुद्ध ने दिए थे, भारतभूमि से उनका कभी लोप नही होगा। इस देश के सब धर्म, सम्प्रदाय और पाखण्ड तथागत की इन शिक्षाओ को आत्मसात् कर लेंगे।'[1]

इस उपन्यास मे चाणक्य की अपेक्षा काल्पनिक प्रसगो की अवतारणा अधिक हुई है। अग्निमित्र और धारिणी की कथा, दिव्या की कथा, विदुला का बलिदान एव बृहद्रथ का विवाह जैसी घटनाएँ प्रेम-प्रसगो का सृजन करने के लिए रची गई हैं। पात्रो मे पुष्यमित्र, अग्निमित्र, वसुमित्र, पतजलि, बृहद्रथ, दिमित्र, मिनेडर, शालिशुक जैसे पात्र पौराणिक साहित्य तथा ऐतिहासिक साक्ष्य सम्मत हैं। महाभाष्य मे ब्राह्मण-बौद्धो के शाश्वत सघर्ष को नकुल सर्प न्याय से उपमित किया गया है। लेखक ने बौद्ध अनुश्रुतियो का उपयोग करके भी पुष्यमित्र के पक्ष को अधिक तर्कसगत रूप मे प्रस्तुत किया है। मौर्य साम्राज्य के ह्रास और ब्राह्मण राज्य के उत्थान का चित्रण भी पूर्णतया इतिहास सम्मत है।

नारी पात्र प्राय काल्पनिक हैं। धारिणी, दिव्या, मजुमती, मधुरिका आदि पात्र ऐसे ही हैं। धारिणी और दिव्या की सृष्टि कर लेखक ने अपनी सर्जनात्मक उर्वर कल्पना का परिचय दिया है। पुष्यमित्र और दिव्या की

१ पतन और उत्थान, पृष्ठ ३२०

वार्ता तथा दिव्या द्वारा धारिणी के प्रदर्शित मनस्तत्व भावात्मकता की स्थापना मे सहायक प्रसग है। प्रणय और कर्तव्यपालन की मूर्ति है धारिणी। अग्निमित्र की वह प्रबल प्रेरणा है। स्पष्ट कहती है—"मै भलीभाँति जानती हू कि प्रणय को कर्तव्य के मार्ग मे बाधक नही होना चाहिए।"[1]

डा० सत्यकेतु जन्म के आधार पर नही, कर्म के आधार पर वर्ण-व्यवस्था के समर्थक हैं। पुष्यमित्र के यह कहे जाने पर कि वह क्षत्रिय कुल में उत्पन्न नही हुआ। आचार्य कहते हैं—'तुम सैनिक तो हो वत्स, क्षत्रिय कुल मे जन्म लेने से ही कोई क्षत्रिय नही हो जाता। सम्प्रति मौर्य कुल मे उत्पन्न हुआ है पर क्या तुम उसे क्षत्रिय कहोगे ? उसकी धमनियो में चन्द्र-गुप्त और बिन्दुसार का रक्त प्रवाहित हो रहा है पर क्या इसी से उसे क्षत्रिय कहा जा सकता है ? द्रोणाचार्य ब्राह्मण थे पर महाभारत के युद्ध में उन्होने अनुपम वीरता प्रदर्शित की थी। पुराने इतिहास की बात जाने दो। सिमुक का नाम तो तुम ने सुना है, मौर्य सम्राटो को निर्वीर्य देखकर दक्षिणापथ मे उसने अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिया है। जन्म से तो वह भी ब्राह्मण ही है। जब क्षत्रिय अपने कर्तव्य से विमुख हो जावें तो ब्राह्मणो को उनका स्थान लेना ही पडता है। तुम गुण, कर्म और स्वभाव से क्षत्रिय हो वत्स।"[2] यह धारणा महर्षि दयानन्द सम्मत है। पतञ्जलि पुष्यमित्र के अश्वमेध पर जो वक्तव्य देते हैं वह आर्य परम्परा के अनुकूल ही है। वह कहते हैं—भीष्म ने ठीक कहा था कि काल राजा का निर्माण नही करता अपितु राजा द्वारा ही काल का निर्माण किया जाता है। इसी-लिए ऐसे व्यक्ति को ही राजा के पद पर होना चाहिए जिसकी बुद्धि तीक्ष्ण हो प्रतिभा और धैर्य की जिसमे अतिशयता हो और काम, क्रोध, मोह, लोभ तथा चापल्य पर जिसने काबू पाया हो। मुझे विश्वास है कि पुष्य-मित्र के नेतृत्व में मगध के शासनतन्त्र मे नई शक्ति और स्फूर्ति का सचार होगा और यवन लोग हमारी आर्यभूमि की ओर आँख उठाकर भी नही देख सकेंगे। हम सब धर्मों, सम्प्रदायो और पाखण्डो का आदर करते हैं। शासनतन्त्र किसी के धर्म मे हस्तक्षेप नही करता। सब कोई अपने विचारो और विश्वासो के अनुसार पूजा पाठ कर सकते हैं। आर्यों की यही सनातन परम्परा है। ब्राह्मणो और श्रमणो मे विरोध व विद्वेष का कोई समुचित कारण नही है। पर यदि किसी सम्प्रदाय के नेता और गुरु अपनी धार्मिक

१ पतन और उत्थान, पृष्ठ २०३
२ " " , पृष्ठ ५१

मर्यादा का अतिक्रमण कर विदेशी शत्रुओं के साथ मिल जायें और आर्य भूमि के विरुद्ध षड्यन्त्र करने में तत्पर हों तो उनके इस कुकृत्य को शासन कैसे सह सकता है। भारत हम सबकी मातृभूमि है, हम सब इसके पुत्र हैं। इस की रक्षा करना और इसके उत्कर्ष के लिए प्रयत्नशील रहना हम सबका पुनीत कर्तव्य है।'[1]

यह उद्बोधन आज के सन्दर्भ में भी प्रासगिक और सत्य है, उतना ही सत्य जितना पुष्यमित्र के युग में था। धर्मनिरपेक्षता का अर्थ यह नही कि धर्म की आड में राष्ट्रद्रोह के कार्य को पनपने दिया जाए। पतञ्जलि और पुष्यमित्र के व्यक्तित्व की यह भारतीय व्याख्या है जिसे पाश्चात्य इतिहासकारो ने तोड मरोड कर प्रस्तुत करने की कुचेष्टा की थी। इतिहास में भारतीयता का अनुशीलन, राष्ट्रीय जीवन की प्रतिष्ठा तथा नवीन दृष्टि द्वारा इतिहास और सस्कृति की सबल व्याख्या सत्यकेतु जी के उपन्यास की मूल प्रेरणा है। राष्ट्रीय जीवन और आधुनिक भारतीय समाज के उदात्तीकरण के लिए ही उन्होने उपन्यास की सृष्टि की।

उपन्यास की युगीनता की रक्षा के लिए डा० सत्यकेतु जी ने वातावरण और परिवेश की सार्थक सृष्टि की है। भौगोलिक दृष्टि से हिन्दूकुश पर्वतमाला के पार से कपिश, गाधार से लेकर मगध तक का विवरण तत्कालीन भूगोल द्वारा सम्मत है। राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक वातावरण के साथ आर्थिक परिस्थितियो का चित्रण भी यथार्थ हुआ है। तन्त्र-मन्त्र और रहस्यात्मक दैवी अनुष्ठानो का जिक्र भी है। बौद्ध और सनातन धर्म दोनो में ही इन विकृतियो का समावेश हो गया था। माया योग सिद्ध शतमात्र का आभिचारिक यज्ञ इसी ओर ध्यान आकृष्ट करता है।[2]

इसी प्रकार देशकाल और वातावरण की सृष्टि के लिए उपन्यास मे भाषा, विचार, धर्म, दर्शन समाज और सस्कृति के विविध पक्ष प्रस्तुत किए है। अश्वमेध का वर्णन भारतीय धर्मशास्त्र सम्मत है।[3] पथ्यशास्त्रज्ञों

---

१ ,, , , पृष्ठ ३१०-३११

२ ,, ,, , पृष्ठ १९८-१९९

३ 'इक्कीस अरत्नि ऊंचे इक्कीस यूप बनवाए गए। वे देवदारु, बिल्व, खदिर आदि की लकड़ी से निर्मित किए गए थे। यज्ञीय अश्व को तीन अन्य घोडो के साथ रथ मे जोतकर गगा और सोण के सगम पर स्नान के लिए ले जाया गया। अश्व को स्नान कराने से पूर्व दिव्या ने

और पानगृहों का चित्रण, अन्तर्राष्ट्रीय बन्दियो का मिलाप, सघो और राजाप्रसादो का चित्रण, युद्धो का चित्रण, गणराज्यो का चित्रण, यवन जीवन और परम्पराओ का चित्रण, भारतीय तथा यवनो के आचार-विचार, रहन-सहन तथा शारीरिक और मानसिक स्तर का चित्रण भी भी अत्यन्त सफल हुआ है। गणिकाओ का उपयोग, मॉस और मदिरा का प्रयोग तथा अनियन्त्रित स्वच्छन्द यौन विहार इस युग की विशेषताए थी जिन्होने भारतीय समाज को क्षत-विक्षत कर दिया था। यौधेयो, अग्रोदको तथा बहुधान्यक क्षेत्रो के आर्योचित रीति रिवाजो और महोत्सवो के चित्रण में लेखक की दृष्टि रमी है। आलोच्य उपन्यास में धर्मसघो का षड्यन्त्रो में लिप्त होना हमारे मन मे घृणा भर देता है। राजघरानो और राज्याश्रित वर्गों के पतन की कहानी तथा दीन-हीन जनता के शोषण और दमन की तीव्रता मन को मथे बिना नही रहती। कुकुटाराम विहार का यह चित्र कितना बीभत्स है? 'सुरा और सुन्दरी का भी प्रबन्ध हो जाएगा। आप शयनकक्ष में जाकर निश्चिन्त हो विश्राम कीजिए। कुक्कुट विहार मे किसी भी चीज की कमी नही।'[1]

उपन्यास की भाषा भावानुकूल और हँसमुख है। आलकारिक एव चित्रात्मक भाषा से भावोद्वेलन की क्षमता पैदा करना उपन्यास का सहज गुण है। विदुला के रूप वर्णन का प्रसग लीजिए—'कच्चे दूध का सा रग, कालीघटा जैसी केशराशि, लता जैसी शरीर यष्टि और हँसती हुई आखे। सम्राट् को और क्या चाहिए।' (पृष्ठ २५७)

'चम्पा का सा रग, नीलकमल सी आँखे और कम्बु की सी ग्रीवा गाती है तो वीणा बज उठती है, नाचती है तो एक-एक अग थिरकने लगता है।' (पृष्ठ २२५) वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक तथा प्रलाप शैली में लिखा गया यह उपन्यास कलात्मक दृष्टि से भी सफल है।

उपन्यास में मधुरिका का आत्मोत्सर्ग भारतीय वीर नारी के उज्ज्वल चरित्र का प्रतिपादन करता है। वह पुष्यमित्र की रक्षा के लिए

उस पर घृत मला। स्नान के अनन्तर १०१ सुवर्ण निष्को द्वारा यज्ञीय अश्व को अलकृत कर यज्ञ मण्डप में लाया गया और केन्द्रीय यूप के साथ उसे बाध दिया गया। अब दिव्या तथा राजकुल की अन्य महिलाओ ने प्रदक्षिणा करते हुए उच्चारण किया—गणाना त्वा गणपति हवामहे, निधीना त्वा निधिपति हवामहे।'

१ पतन और उत्थान—पृष्ठ २३६ पतन और उत्थान—पृष्ठ ३१६

प्राण त्याग देती है। पुष्यमित्र का पश्चाताप मधुरिका के व्यक्तित्व का महत्त्वाकन है—'ओह मधुरिका, मेरे लिए तुमने अपने प्राणो की आहुति दे दी। तुम्हारा यह बलिदान व्यर्थ नही जायेगा। तुम्हारे इस पवित्र शरीर को साक्षी करके प्रतिज्ञा करता हू कि स्थविरो और भिक्षुओ के वेश में जो ये दस्यु और आततायी आर्यभूमि को कलकित कर रहे हैं, उनका सर्वनाश करके ही दम लूगा। तुम अग्निमित्र की सहपाठिनी थी, उसकी सखा थी। तुम मेरी पुत्री के समान थी। मेरी कोई पुत्री नही है, मैं तुम्हे ही अपनी पुत्री मानता था। तुम आर्यभूमि के लिए जीयी और उसी के लिए तुमने प्राणो का उत्सर्ग किया।' (पृष्ठ २४६) पुनरुत्थान के जिन चार तत्त्वो – अतीत प्रेम, प्राचीन गौरव की नवीन अवतारणा, भारतीय इतिहास दृष्टि तथा नवीन जीवन चेतना और तत्त्वो का समावेश—की चर्चा विचारको ने की है, यह उपन्यास उन्ही तत्त्वो का विशद प्रतिपादन करता है। घटनागत और भावनागत सघर्ष और द्वन्द्व को मुखरित करता है तथा सामाजिक परिवेश और अन्तरग मनस्तत्त्व का सफल चित्रण करता है। ऐतिहासिक उपन्यासो में सत्यकेतु जी, राहुल जी, यशपाल, चतुरसेन शास्त्री और रागेय राघव से सर्वथा भिन्न दृष्टि के हैं। परम्परा और आधुनिकता तथा वैदिक समाजवाद के सूत्र उनके यहाँ एक नवीम दिशा का उद्घाटन करते हैं। युग विशेष के वस्त्राभूषण, आचार विचार, लोक-व्यवहार, उत्सव-मनोरजन, धार्मिक विश्वास तथा शासनतन्त्र का प्रतिपादन करना इतिहासाश्रित उपन्यास का गौण कार्य है, पर एक व्यापक सास्कृतिक और मानवीय चेतना का प्रकाशन मुख्य कार्य है। सत्यकेतु जी के दोनो उपन्यास इस दृष्टि से अत्यन्त सफल और सटीक कहे जा सकते हैं।

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार का दार्शनिक पक्ष

—प्रो० रत्नसिंह

डा० सत्यकेतु विद्यालकार ने सात भागो में आर्यसमाज का विस्तृत इतिहास लिखा है। इसके प्रथम भाग के तेरहवें अध्याय में महर्षि दयानन्द सरस्वती की धर्म तथा दर्शन सम्बन्धी मान्यताओ की सक्षिप्त व्याख्या प्रस्तुत की है। इनमे से केवल दो दार्शनिक समस्याओ-षड्दर्शन समन्वय तथा सत्कार्यवाद व असत्कार्यवाद पर यहा विचार किया जायेगा। यद्यपि सत्कार्यवाद व असत्कार्यवाद का विचार षड्दर्शन-समन्वय के अन्तर्गत ही आता है तथापि हम इसे एक स्वतन्त्र समस्या मानकर ही इस पर पृथक् से विचार करेंगे।

षड्दर्शन-समन्वय

चिरकाल से भारतीय दार्शनिक जगत् में नवीन भाष्यकारो ने यह विचार खडा किया हुआ है कि छह आस्तिक दर्शनो (न्याय, वैशेषिक, साख्य, योग, पूर्वमीमासा तथा वेदान्त) में परस्पर विरोध है। वर्त्तमान युग के महान् दार्शनिक महर्षि दयानन्द के मत मे इन दर्शनो मे परस्पर विरोध नही है। सत्यार्थप्रकाश के तृतीय तथा अष्टम सम्मुलास मे महर्षि ने सृष्टि-विषय के अन्तर्गत इस प्रश्न पर अति सक्षेप से विचार किया है। डा० सत्यकेतु ने इस विषय की व्याख्या करने के लिए सर्वप्रथम सत्यार्थ-प्रकाश अष्टम समुल्लास से महर्षि दयानन्द के कथन को उद्धृत किया है और उसके बाद बडे तर्कपूर्ण ढग से महर्षि दयानन्द के मन्तव्य की पुष्टि की है। महर्षि का कथन इस प्रकार है—"विरोध उसको कहते हैं कि एक कार्य में एक ही विषय पर विरुद्ध वाद होवे। छह शास्त्रो में अविरोध देखो इस प्रकार है। मीमासा में "ऐसा कोई भी कार्य जगत् मे नही होता कि जिसके बनाने मे कर्मचेष्टा न की जाये।" वैशेषिक में "समय न लगे बिना बने ही नही" न्याय मे "उपादान कारण न होने से कुछ भी नहीं बन सकता" योग मे "विद्या, ज्ञान, विचार न किया जाये तो नही बन सकता।"

साख्य में "तत्त्वो का मेल न होने से नहीं बन सकता।" और वेदान्त में "बनाने वाला न बनावे तो कोई भी पदार्थ उत्पन्न न हो सके" इसलिए सृष्टि छह कारणो से बनती है। उन छह कारणो की व्याख्या एक-एक की एक-एक शास्त्र में है। इसलिए उनमें विरोध कुछ भी नहीं। जैसे छह पुरुष मिलकर एक छप्पर उठाकर भित्तियो पर धरें वैसा ही सृष्टि रूप कार्य की व्याख्या छह शास्त्रकारो ने मिलकर पूरी की है। जैसे पाच अन्धे और एक मन्ददृष्टि को किसी ने हाथी का एक-एक देश बतलाया। उनसे पूछा कि हाथी कैसा है? उनमे से एक ने कहा खम्भे, दूसरे ने कहा सूप, तीसरे ने कहा मूसल, चौथे ने कहा, झाडू, पाचवे ने कहा चौतरा और छठे ने कहा काला-काला चार खम्भो के ऊपर कुछ भैसा सा आकार वाला है। इसी प्रकार आजकल के अनार्ष नवीन ग्रन्थो को पढने और प्राकृत भाषा वालो ने ऋषि प्रणीत ग्रन्थ न पढकर नवीन क्षुद्रबुद्धि कल्पित सस्कृत और भाषाओ के ग्रन्थ पढकर एक-दूसरे की निन्दा में तत्पर होके झूठा झगडा मचाया है।"

महर्षि दयानन्द के अभिप्राय को और अधिक स्पष्ट करने के लिए डा० सत्यकेतु ने निम्न हेतु प्रस्तुत किए हैं। १) महर्षि के मत मे छह आस्तिक दर्शन वेदो की प्रामाणिकता स्वीकार करते हैं, उन्हे स्वत प्रमाण मानते हैं। अत यह सम्भव नही कि वे किसी ऐसे मन्तव्य का प्रतिपादन करें, जो वेद विरुद्ध हो। जब सबके मन्तव्य वेदानुकूल हो तो उनमें विरोध हो ही कैसे सकता है? (२) जब छहो दर्शन ऋषियो द्वारा बनाए गए हैं, तो उन सब द्वारा प्रतिपादित मन्तव्य व ज्ञान सत्य ही होना चाहिए, और सत्य ज्ञान मे परस्पर विरोध मानना सर्वथा असगत है। (३) उनमें जो विरोध दिखाई देता है, उसका कारण यह है कि विभिन्न दर्शन शास्त्रो की प्रतिपादन शैली मे विभिन्नता है, और साथ ही उनके पारिभाषिक शब्द भी पृथक-पृथक हैं। डा० सत्यकेतु ने इस हेतु को एक उदाहरण से स्पष्ट किया है। उनका कहना है कि साख्य ने जिस अर्थ में पुरुष शब्द का प्रयोग किया है, न्याय और वैशेषिक दर्शनो मे उसी अर्थ में 'आत्मा शब्द प्रयुक्त है। साख्य को पुरुष शब्द से जीवात्मा और परमेश्वर दोनो अभिप्रेत हैं। इसी प्रकार न्याय वैशेषिक मे 'आत्मा' शब्द से परमेश्वर और जीवात्मा दोनो अभिप्रेत हैं। यहा एक शका उत्पन्न हो सकती है। वह यह कि एक ही शब्द 'पुरुष' या 'आत्मा' से कहा 'ईश्वर' का ग्रहण किया जाए और कहा 'जीवात्मा' का? एक शब्द के कई अर्थ होते हैं। कहा किसका ग्रहण किया जाये? इसके जानने की एक विधि महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के

प्रथम समुल्लास मे बतलाई है। उनका कहना है 'पुरुष शब्द के जहा-जहा सर्वज्ञादि विशेषण हो वहा-वहा परमात्मा और जहा-जहा इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुख और अल्पज्ञादि विशेषण हो वहा-वहाँ जीव का ग्रहण होता है। ठीक इसी आशय को डाक्टर सत्यकेतु ने इन शब्दो मे व्यक्त किया है, "कहाँ पुरुष अथवा आत्मा से ईश्वर का ग्रहण करणा उचित है, और कहाँ जीवात्मा का, इस बात का निर्धारण प्रसग के अनुसार किया जाना चाहिए।"

सत्कार्यवाद-असत्कार्यवाद

दर्शनशास्त्र मे सत्कार्यवाद कार्यकारणवाद की एक जटिल समस्या है। डा० सत्यकेतु ने इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द के मत की जिस सुन्दर ढग से व्याख्या की है, उस पर विचार करने से पूर्व इस समस्या को जानना आवश्यक है। सत्कार्यवाद साख्य का और असत्यकार्यवाद न्याय-वैशेषिक का मत समझा जाता है। यह वाद वस्तुओ के कार्य कारण भाव पर आश्रित है। जो वस्तु कार्य है, उसका कोई कारण अवश्य होगा। काय किसे कहते है ? जो वस्तु अपने कारण से उत्पन्न होती है, उसे कार्य कहते हैं। प्रश्न यह है, कि वह वस्तु जो अपने कारण से उत्पन्न हुई है, वह अपने जन्म से पूर्व अपने कारण मे विद्यमान थी या नही। इसके दो उत्तर है— 'थी' नही थी।' प्रथम उत्तर सत्कार्यवाद का है और दूसरा असत्कार्यवाद का। स्पष्टत ये दोनो वाद विरुद्ध प्रतीत होते हैं।

असत्कार्यवाद की युक्तियाँ

असत्कार्यवाद के समर्थक न्याय वैशेषिक का कहना है कि कार्य-कारण नियम की व्याख्या के लिए हमें यह मानना ही होगा कि "कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व कारण में पहले से उपस्थित नही रहता है।" उनका कहना है कि यदि कार्य उत्पन्न होने से पूर्व अपने कारण में उपस्थित रहता है तो फिर नई उत्पत्ति का क्या अर्थ रहेगा ? यह कहना सर्वथा व्यर्थ है कि "यह उत्पन्न हुआ है।" यदि घडा बनने से पहले ही मिट्टी मे विद्यमान है तो "यह बनाया है" कहना निरर्थक है। जो कार्य घडे से लिया जाता है वही कार्य मिटटी से लेना चाहिए क्योकि मिट्टी मे घडा पहले से ही विद्यमान है। परन्तु व्यवहार में ऐसा देखने मे नही आता। तीसरा तर्क यह है कि कि यदि कार्य (घट) उत्पन्न होने से पूर्व ही कारण (मिट्टी) में उपस्थित है तो निमित्त कारण कुम्भकार की क्या आवश्यकता है ? परन्तु हम देखते हैं कि बिना कुम्भकार के मिट्टी से घट स्वय नहीं बन जाता। चौथी बात यह है कि यदि कार्य पहले से ही उपादान कारण मे उपस्थित रहता है तो फिर

कारण व कार्य मे लोग भेद क्यो करते हैं ? मिट्टी और घडे को दो नामो से क्यो पुकारते है ? मिट्टी को ही घडा और घडे को ही मिट्टी क्यो नही कहते है ? अन्तिम बात यह है कि यदि हम यह मान ल कि कारण और कार्य मे केवल आकार का ही अन्तर है तो भी बात नही बनती क्योकि इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि काय मे कुछ ऐसी बात अवश्य है जो पहले से कारण मे उपस्थित नही रहता। अभिप्राय यह है कि कारण से कार्य मे भिन्नता रहती है, भले ही वह आकार मे क्यो न हो। इसका अर्थ है कि कार्य कारण का नया रूप है। इसलिए कार्य उत्पत्ति के पूर्व कारण मे उपस्थित नही रहता। असत्कायवाद के इस सिद्धान्त को आरम्भवाद भो कहते है क्योकि कार्य पहले से अपने कारण मे उपस्थित नही रहता वरन् उसका आरम्भ होता है।

सत्कार्यवाद की युक्तियाँ

साख्य दर्शन असत्कार्यवाद का घोर विरोध करता है। यह निम्न तर्क प्रस्तुत करता है —

१ यदि कोई कार्य वस्तु उत्पत्ति से पूर्व अपने उपादान कारण मे उपस्थित नही है तो कोई भी व्यक्ति उसको वहा से उत्पन्न नही कर सकता। क्या कोई व्यक्ति चीनी मे से नमक उत्पन्न कर सकता है ? अत जब कोई कार्य किसी उपादान से उत्पन्न होता है तो इसका स्पष्ट अर्थ है कि यह पहले से उसमे अव्यक्त रूप मे उपस्थित था। सहकारी दशाओ के उपस्थित होने से वह कार्य अभिव्यक्त हो जाता है।

२ किसी विशेष कार्य की उत्पत्ति विशेष कारण से ही होती है। कपडा धागो से बनता है, डलो से नही। स्पष्ट है जो वस्तु जहाँ है, वही से निकलेगी। क्योकि कपडा धागो से निकलता है इसलिए समझना चाहिए कि वह पहले से वहाँ विद्यमान है। यदि धागो मे कपडा नही है तो जैसे धागो मे नही है वैसे मिट्टी के डलो मे भी नही है। धागो और मिट्टी के डले दोनो मे समान रूप से कपडे का अभाव है। परन्तु क्या कारण है कि जब भी कपडा पैदा होता है तो वह धागो से ही होता है, मिट्टी के डले से कभी नही होता। स्पष्ट है कि कपडा धागो मे है मिट्टी के डले मे नही।

३ यदि हम कार्य को कारण मे अनुपस्थित मान ले तो इसका अर्थ यह होगा कि असत् से सत् की उत्पत्ति होती है। अभाव से भाव की उत्पत्ति कैसे हो सकतो है ? जो पहले नही था वह बाद मे कहाँ से आ गया ? अत हमे मानना चाहिए कि कार्य पहले ही से कारण मे विद्यमान

रहता है।

४ सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर कार्य को कारण से पृथक् नहीं पा सकते हैं। कारण किसी वस्तु का अव्यक्त रूप है और कार्य उसका व्यक्त रूप है। वस्त्र और धागो मे भिन्नता कहाँ ?

हमैंने दोनो वादों की जो युक्तियाँ दी हैं, उनसे यह तो प्रभाव अवश्य पडता है कि दोनों की युक्तियाँ प्रबल हैं, दोनो के दाँव पेच तगड़े हैं। फिर भी असत्कार्यवाद के पास इसका क्या उत्तर है कि वस्त्र के लिए धागो की ही क्यो आवश्यकता होती है, मिट्टी के डली की क्यो नही ? जब कि दोनो जगह कार्य का अभाव समान रूप से रहता है। किसी वस्तु के कार्य रूप मे आने से पूर्व कार्य का किसी प्रकार अस्तित्व स्वीकार न किए जाने पर कार्य कारण व्यवस्था सम्भव नही हो सकती। इसका समाधान महर्षि गौतम ने न्याय दर्शन मे इस प्रकार किया है—

बुद्धिसिद्धन्तु तदसत्। (४।१।५०)

वह कार्य जो उत्पत्ति से पूर्व असत कहा जाता है वस्तुत उसका अस्तित्व बुद्धि सिद्ध रहता है। जगत् मे हम एक व्यवस्था देखते हैं। कोई भी कार्य किसी भी कारण से उत्पन्न हो जाये, ऐसा देखने मे नही आता। इससे हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि कार्य का निर्माता अपनी बुद्धि द्वारा इस स्थिति को जानता है कि इन कारणो से अमुक कार्य बन सकता है। कार्य की आकृति, लम्बाई, चौडाई, गोलाई, ऊँचाई, छोटाई बडाई आदि प्रत्येक स्वरूप का उसे ज्ञान है, कि इस कारण से मैंने इस प्रकार का काय बनाना या प्रकट करना है। गम्भीरता से यदि इस पर विचार किया जाये तो यह स्पष्ट परिणाम निकलता है कि न्याय के अनुसार भी कारण मे कार्य का अस्तित्व "स्व' रूप मे तो नही पर निर्मात्री बुद्धि द्वारा उसकी रूपरेखा का निश्चय कारणो के रूप मे अवश्य रहता है। साङ्ख्य भी कार्य को प्रकट होने से पहले सर्वात्मना कार्य स्वरूप के अस्तित्व का स्वीकार नही करता है। कार्यरूपो को कारण रूप मे रहना मानता है। इस स्थिति मे सत्कार्यवाद व असत्कार्यवाद मे बाह्य रूप से दीखने वाला विरोध समाप्त हो जाता है। दोनो वादो मे वस्तु तत्व के वर्णन करने की रीति मे भले ही कुछ अन्तर हो पर मन्तव्य अर्थ मे कोई विरोध नही। महर्षि दयानन्द सरस्वती को दोनो वाद स्वीकार्य हैं।

डा० सत्यकेतु का भी यही विचार है कि सत्कार्यवाद और असत्कार्यवाद मे कोई मौलिक अन्तर नही है। महर्षि दयानन्द स्वय सत्कार्यवाद के

समर्थक हैं और यह मानते हैं कि न्याय वैशेषिक मे भी यही वाद प्रतिपादित है। इस सम्बन्ध मे महर्षि के मत की स्थापना हेतु डा० सत्यकेतु ने सत्यार्थ-प्रकाश अष्टम समुल्लास से यह पक्तिया उद्धृत की हैं—"यह सब जगत् सृष्टि के पूर्व असत् के सदृश और जीवात्मा ब्रह्म और प्रकृति मे लीन होकर वर्तमान था, अभाव न था।" इसका अभिप्राय यह है कि कार्य रूप जगत् के सब पदार्थ अव्यक्त रूप में अपने कारणो मे विद्यमान रहते हैं। यही साख्य का सत्कार्यवाद है। डा० सत्यकेतु ने यहा पूर्व पक्ष रूप मे न्याय दर्शन का एक सूत्र प्रस्तुत करके यह दिखाया है कि अभाव या असत् से ही पदार्थ की उत्पत्ति होती है। सूत्र इस प्रकार है—"अभावाद् भावोत्पत्तिर्नानुपमृद्य प्रादुर्भावात्" (४।१।१४) अभाव-असत् से भाव-सत् की उत्पत्ति हो जाती है। जैसे बीज को नष्ट किए बिना अकुर उत्पन्न नही होता। अकुर का कारण बीज न होकर बीजाभाव है। यदि इस सूत्र को न्याय दर्शन का निज मत माना जाये तो उस स्थिति में निश्चित रूप मे यही समझा जायेगा कि न्याय और साख्य में विरोध है। इस आपातत विरोध का परिहार करने के लिए डा० सत्यकेतु ने लिखा है कि वस्तुत यह सूत्र महर्षि दयानन्द की दृष्टि में न्याय मत का सिद्धान्त नही वरन् पूर्व पक्ष है। इसी कारण इसे पूर्व पक्ष के रूप मे प्रस्तुत कर महर्षि ने इसका यह उत्तर दिया है—"जो बीज का उपमर्दन करता है वह प्रथम ही बीज में था, जो न होता तो कभी उत्पन्न न होता।' (सत्यार्थप्रकाश अष्टम समु०)

इस प्रश्न पर डा० सत्यकेतु ने अपने विचार सार रूप मे इस प्रकार व्यक्त किए हैं—'वस्तुत साख्य, न्याय और वैशेषिक तीनो दर्शन कारण से काय की उत्पत्ति मानते है। इनमे भेद केवल इतना है कि न्याय वैशेषिक का यह कहना है कि उत्पन्न हुए पदार्थ का पहले अभाव था, अर्थात् वह पहले उस रूप मे नही था जिसमे कि उत्पन्न होने के पश्चात वह हो गया। साख्य और न्याय-वैशेपिक एक ही बात कहते हैं यद्यपि उनके कहने के ढग मे अन्तर है। दोनो को यही स्वीकार्य है, कि असत से सत की या अभाव से भाव की उत्पत्ति नही हो सकती।" यहा हम इतना स्पष्ट कर दे कि महर्षि दयानन्द ने अभाव से भाव की उत्पत्ति मानने वाले को नास्तिक कहा है। फिर यह कैसे सम्भव हो सकता है कि आस्तिक होते हुए न्याय वैशेषिक इस नास्तिक मत का पक्षधर बनते।

—प्रो० रत्नसिंह
बी-२१ गाधीनगर, गाजियाबाद, उ०प्र०

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार और पूर्व मध्यकालीन इतिहास

—विनोदचन्द्र सिन्हा

डा० सत्यकेतु ने बहुत पढा और बहुत लिखा। यह सब इतना किया कि इसे सही-सही व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नही हैं। डा० साहब ने मुझे तो नही पढाया था किन्तु मेरे गुरु प० हरिदत्त वेदालकार को पढाया था। ऐसी स्थिति मे मेरा रिश्ता उनसे क्या हुआ आप भली भाति समझ सकते है। हरिद्वार मे अनेक स्थानो पर उनके व्याख्यान आयोजित होते रहते थे। इतिहास के एक विद्यार्थी के रूप मे अनेक बार मैं भी उनके साथ रहा। किसी समय हरिद्वार के डिग्री कालेज मे वे बोल रहे थे। सारा हाल मत्र मुग्ध सा उन्हे सुनता रहा। जब व्याख्यान समाप्त हुआ तो कुछ विद्यार्थियो ने उन्हे घेर लिया और प्रश्न किया, 'आप ने विविध विषयो पर इतना अधिक कैसे लिख डाला ? डा० साहब ने हसते हुए उत्तर दया, "यह तो आप भी कर सकते है। केवल लगन की आवश्यकता है।" डा० सत्यकेतु बडे ही बिनोदी और सरल स्वभाव के थे। ऐसे महापुरुष के जीवन के विषय मे कुछ लिखना आवश्यक प्रतीत होता है।

डा० सत्यकेत विद्यालकार पूर्व कुलपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय का जन्म १६ सितम्बर १६०३ को जिला सहारनपुर के आलमपुर नामक स्थान पर हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा के दौर से गुजरते हुए वे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के स्नातक बने और तत्पश्चात् पेरिस विश्वविद्यालय से डी० लिट् की उपाधि प्राप्त की। डा० साहेब ने लगभग चालीस ग्रन्थो की रचना की। मुख्य रूप से ये इतिहास के ग्रन्थ थे किन्तु उन्होने सेनानी पुष्यमित्र और आचार्य चाणक्य जैसे ऐतिहासिक उपन्यास लिखे। इतिहास विषय पर सत्यकेतु विद्यालकार लिखित कुछ श्रेष्ठ पुस्तको का नाम निम्न प्रकार से गिनाया जा सकता है।

१ प्राचीन भारत
२ भारतीय सस्कृति का विकास

३ मौर्य साम्राज्य का इतिहास
४ प्राचीन भारतीय इतिहास का वैदिक युग ।
५ भारतीय इतिहास का पूर्व मध्य युग
६ प्राचीन भारत की शासन सस्थाएँ और राजनीतिक विचार
७ प्राचीन भारत का आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन
८ यूरोप का आधुनिक इतिहास
९ एशिया का आधुनिक इतिहास
१० पूर्वी और दक्षिणी-पूर्वी एशिया का इतिहास
११ मध्य एशिया तथा चीन में भारतीय सस्कृति
१२ आर्यसमाज का इतिहास ।

डा० सत्यकेतु विद्यालकार को उनकी रचनाओ पर अनेक विशेष पुरस्कार मिले । उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गोविन्द वल्लभ पत पुरस्कार, मध्य प्रदेश शासन द्वारा मोतीलाल नेहरू पुरस्कार तथा अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा मगलाप्रसाद पारितोषिक उन्हे प्राप्त हुए । इनके अतिरिक्त बगाल हिन्दी मडल, कलकत्ता नागरी प्रचारिणी सभा, हिन्दी समिति इन्दौर तथा आर्य साहित्यिक सस्थाओ द्वारा अनेक पुरस्कार डा० साहेब के ग्रन्थो पर प्रदान किए जा चुके है । डा० सत्यकेतु ने यूरोप पश्चिम एशिया तथा चीन का अनेक बार भ्रमण किया । इसी प्रसग मे यह बात उल्लेखनीय है कि डा० साहेब ने विदेश जाकर भारतीय सस्कृति की पताका वहा फहरायी है । इस सदर्भ में बृहत्तर भारत पर लिखी गई उनकी दो पुस्तक अमूल्य निधि हैं । हम भारतीय इस पर सदा गर्व करते रहेगे ।

भारतीय इतिहास पर डा सत्यकेतु ने अपनी व्यापक दृष्टि का परिचय प्रस्तुत किया है । उनका दृष्टिकोण सदैव एक सच्चे राष्ट्रवादी का रहा है । इसका अभिप्राय यह नही है कि अपनी चीजो को उन्होने बढा कर ही देखा है । जो वास्तविक स्थिति थी डा० साहेब ने उसी का प्रतिपादन किया है । पूर्व मध्यकाल पर उनका ग्रन्थ, "भारतीय इतिहास का पूर्व मध्ययुग" भारतीय इतिहास की एक अनुपम धरोहर है । यो तो इस विषय पर विभिन्न विद्वानो द्वारा अनेक ग्रन्थ विद्यमान हैं । किन्तु कही अतिशयोक्ति है और कही पूर्वाग्रह । डा० सत्यकेतु ने इन दोनो से बचने का प्रयास किया है । इतिहास लेखन वस्तु परक होना चाहिए यही उनका उद्देश्य था ।

अपने विषय पर, 'भारतीत इतिहास का पूव मध्ययुग' नामक ग्रन्थ बड़ा ही रोचक है । डा० सत्यकेतु ने इसे अत्यन्त ही सरल और सुबोध

शली मे लिखने का प्रयास किया है। यह पुस्तक बी० ए० के विद्यार्थी से लेकर शोधार्थी तक पढते हैं। इस ग्रन्थ में ७०० ई० से १२०० ई० तक की घटनाये सुनियोजित ढग से लिपि बद्ध हैं। प्राय यह माना जाता है कि सम्राट् हर्ष के साथ साथ भारतीय इतिहास का हिन्दू काल समाप्त हो जाता है। डा० साहेब के ही शब्दो मे, "हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद उत्तरी भारत मे कोई ऐसी राजशक्ति नही रह गई, जो विविध राज्यो को जीत कर अपनी अधीनता में रख सके। यशोधर्मा के समान हर्षवर्धन द्वारा की गई विजये भी कोई स्थिर परिण म उत्पन्न नही कर मकी। गुप्त सम्राटो के समय जिस सामन्त पद्धति का विकास हुआ था, वह अब अपना फल दिखा रही थी।"

हर्षवर्धन के पश्चात् डा० सत्यकेतु ने उत्तरी भारत के विविध राज्यो और उनके मध्य सघर्ष का तथ्यात्मक विवरण प्रस्तुत किया है। सातवी सदी के अन्तिम भाग में राजपूत वशो का प्रादुर्भाव हुआ। डा० साहब का मत है कि क्षत्रिय कुलो से भिन्नता प्रदर्शित करने के लिए इन्हे राजपुत्र या राजपूत कहा गया। इसमें तो तनिक सदेह नही है कि इन राजपूत राज्यो के पारस्परिक सघर्ष ने भारत का द्वार विदेशी आक्रान्ता के लिए खोल दिया।

अगले अध्यायो में डा० साहब ने बौद्ध धर्म के उत्थान और पतन पर प्रकाश डाला है। तत्पश्चात् दक्षिणा पथ के विविध राज्यो के सघर्ष का सजीव विवरण प्रस्तुत किया है। डा० सत्यकेतु की दृष्टि से सुदूर दक्षिण के राज्य भी न बच सके। उन्होने पल्लव-वश, चोल साम्राज्य तथा पाण्डय और केरल राज्य का वर्णन किया है। अन्त में उन्होने पूर्व मध्य काल की सभ्यता और सस्कृति पर प्रकाश डाला है। डा० साहब के अनुसार यह काल अराजकता और अव्यवस्था का था। धर्म के क्षेत्र में सकीर्णता का प्रवेश हुआ और सामाजिक दृष्टि से भी इस युग मे सकीर्णता उत्पन्न हुई। डा० साहब ने लिखा है, "भारत के मध्यकालीन इतिहास में विविध राजवश एक दूसरे के साथ निरतर युद्ध में व्याप्त रहे। उनके पारस्परिक सघर्ष के कारण वे परिस्थितिया नष्ट हो गई, जिनसे किसी देश को उन्नति का अवसर मिलता है।"

—प्रो० विनोदचन्द्र सिन्हा
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्व
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

डा० सत्यकेतु का राजनैतिक दर्शन

—डा० (श्रीमती) शान्ता मल्होत्रा

डा० सत्यकेतु जी विद्यालकार डी० लिट् (पेरिस) इतिहास एव राजनीतिशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान् थे। उन्होने इन दोनो विषयो में उच्च कोटि के अनेक ग्रन्थो की रचना की। उन्होने आर्यसमाज के बृहत् इतिहास को सात खण्डो मे सम्पादित किया, और इसका अधिकाश भाग उनकी लेखनी से प्रसूत है। यह इतिहास आर्यसमाज व हिन्दी साहित्य को उनकी अद्वितीय देन है।

डा० सत्यकेतु गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के स्नातक थे एव उनका चिन्तन ऋषि दयानन्द की विचार धारा से प्रभावित था। वे अनेक वर्षो तक गुरुकुल कागडी में इतिहास के प्रोफेसर रहे और तत्पश्चात् स्वतन्त्र लेखन कार्यरत रहे। वे एक जागरूक बुद्धिजीवी तथा राजनीतिक चिन्तक थे। भारत के स्वातन्त्र्य आदोलन के दौरान वे अमर शहीद भगतसिह के सम्पर्क मे भी रहे एव स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् उत्तर प्रदेश की विधान परिषद् के १९६२ से १९६८ तक सदस्य रहे।

उनका राजनीति मे आदर्शवादी एव मूल्यवादी दृष्टिकोण था। वे अवसरवादी एव मूल्यविहीन राजनीति के पक्षपाती न थे। आज के भौतिकवादी परिवेश में भारत ही क्या विश्व के अन्य देशो मे भी राजनीति मे नैतिक मूल्यो का ह्रास देखते हुए भी उनका मूल्य परक राजनीति से विश्वास नही उठा था। वे प्रत्येक राजनैतिक समस्या एव परिस्थिति का विश्लेषण कर उसका रचनात्मकपक्ष समक्ष रखते एव मूल्यो के आधार पर उसका समाधान प्रस्तुत करते।

देश की तेजी से बदलती हुई विप्लवकारी घटनाओ से वे प्रभावित एव उद्वेलित होते हुए भी इनको एक सक्रमण काल की समस्याए समझते हुए देश के उज्ज्वल भविष्य मे विश्वास रखते थे। उनका विश्वास था कि भारतीय सस्कृति के चिरन्तन मूल्यो की पुन स्थापना एव प्रसार से ही भारत

एव विश्व का कल्याण सभव है ।

डाक्टर सत्यकेतु ऋषि दयानन्द के इस मन्तव्य से सहमत थे कि प्राचीनकाल मे आर्य लोग न केवल राजनीतिक दृष्टिकोण से अग्रणी थे वरन् ज्ञान, विज्ञान, कला, धर्म, सस्कृति मे भी सबके शिरोमणि थे । अन्य देशों के लोगो ने विद्या धर्म की शिक्षा आर्यावर्त के आर्यों से ही प्राप्त की थी । अपने एक ग्रन्थ दक्षिण पूर्वी और दक्षिणी एशिया मे भारतीय सस्कृति' में डाक्टर साहब ने यह स्थापना की है कि प्राचीन समय मे दक्षिण पूर्वी एशिया के विविध देश—इण्डोनेशिया, वियतनाम, कम्बोडिया, लाओस, मलयेशिया, सियाम, फिलिप्पीन, श्रीलका और बरमा आदि—'भारत के सास्कृतिक साम्राज्य' के अग थे। तथा बारहवी सदी व उसके बाद तक भी भारत का यह सास्कृतिक साम्राज्य कायम रहा। अपने एक ग्रन्थ 'मध्य एशिया तथा चीन मे भारतीय सस्कृति' में यह स्थापित किया है कि मध्य एशिया का सिन्कियाग (चीनी तुर्किस्तान) प्रदेश आजकल चीन के अन्तर्गत है और रूसी तुर्किस्तान मे उजबेक, खिरगिज आदि अनेक सोवियत गणराज्यो की सत्ता है। पर प्राचीनकाल मे मध्य एशिया के ये प्रदेश भारत के सास्कृतिक साम्राज्य मे सम्मिलित थे । अफगानिस्तान उस समय भारत का उसी प्रकार से अग था जैसे कुरु, गान्धार, केकय आदि जनपद थे । तिब्बत, चीन, कोरिया और जापान में भारत के बौद्ध भिक्षुको ने न केवल अपने धर्म का ही प्रचार किया अपितु भारतीय सस्कृति द्वारा इन देशो की कला तथा जीवन को भी प्रभावित किया है ।

डाक्टर साहब वैदिक सस्कृति को विश्व की उच्चतम सस्कृति मानते थे। इतिहास लेखक होने के नाते उन्हे एक बार जैन इतिहास लिखने के लिए कहा गया। बहुत अधिक आर्थिक सुविधा के प्राप्त होने की सभावना को डा० साहब ने केवल इसलिए अस्वीकार किया कि वे जैन सस्कृति को वैदिक सस्कृति के समकक्ष अथवा उससे उच्चतर नही मानते थे और अपने किसी ग्रन्थ मे धनलाभ अथवा किसी भी लाभ के कारण अपनी इस मान्यता के विपरीत लिखने के लिए तैयार नही थे । उनकी वैदिक सस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा थी और वे मानते थे कि महर्षि स्वामी दयानन्द ने वैदिक सस्कृति का आधुनिक युग में पुनरुत्थान किया है। वे स्वामी दयानन्द को आधुनिक भारत के सबसे महान् चिन्तक एव अद्भुत एव मौलिक राजनैतिक चिन्तक मानते थे। इसी विश्वास के कारण उन्होंने मेरे शोध प्रबन्ध जिसका विषय है 'स्वामी दयानन्द के राजनैतिक विचार'' के निर्देशन मे गहरी रुचि ली। उनकी मान्यता थी कि धर्म, दर्शन, समाज सगठन, राज्य सस्था और आर्थिक व्यवस्था आदि के सम्बन्ध मे जो विचार स्वामी दया-

नन्द ने अपने ग्रन्था में प्रतिपादित किए है उनसे न केवल भारत अपितु सम्पूर्ण विश्व का वास्तविक कल्याण सभव है।

डा० साहब के मतानुसार "आर्यसमाज की स्थापना करते हुए महर्षि के सम्मुख यह विचार विद्यमान था कि आर्यों के विलुप्त गौरव तथा पराक्रम की पुन: स्थापना की जाए और एक बार विश्व में पुन उसी प्रकार श्रेष्ठ, सदाचारी व धार्मिक लोगो का प्रभुत्व हो जैसा कि अब से पाँच सहस्र वर्ष पहले था।" आर्यसमाज के रूप मे महर्षि ने किसी नए सप्रदाय व मत का प्रवर्तन नहीं किया था। वे आर्यों के लुप्त गौरव का पुनरुद्धार करने के लिए प्रयत्नशील थे, और आर्यसमाज की स्थापना इसी प्रयोजन से की गई थी (डाक्टर सत्यकेतु आर्यसमाज का इतिहास, प्रथम भाग, पृष्ठ स० २१)

आगे वे लिखते है "आर्यसमाज के जो दस नियम उन्होने (स्वामी दयानन्द ने) बनाए थे उनमे छठा नियम यह है "ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।" सम्पूर्ण ससार की सर्वतोमुखी उन्नति के लिए ही महर्षि ने आर्यसमाज नाम से एक सगठन का निर्माण किया था। उनका यह चरम लक्ष्य था कि ससार के सब निवासी आर्य या श्रेष्ठ होकर एक विश्वव्यापी सगठन मे सगठित हो जाए। साथ ही वे यह मानते थे कि यह महत्त्वपूर्ण कार्य आर्यावर्त भारत द्वारा ही सम्पन्न किया जा सकता है। उनका मन्तव्य था कि यह ससार का सर्वश्रेष्ठ देश है और यही वह सच्चा पारसमणि है जिसके सम्पर्क से लौह रूप अन्य देश सुवर्ण बन जाते हैं। प्राचीन समय मे चिरकाल तक भारत और उसके निवासी आर्य लोग राजनीतिक, धार्मिक एव सास्कृतिक क्षेत्रो में विश्व का नेतृत्व करते रहे क्योकि वे श्रेष्ठ थे। उनका सामाजिक जीवन आदर्श था और वेदो द्वारा प्रतिपादित सदाचरण के नियमो का अविकल रूप से पालन करते थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती को कल्पना थी कि आर्यावर्त के लोग एक बार फिर विश्व का नेतृत्व करेगे। पर यह तभी सम्भव हो सकेगा जब वे सच्चे अर्थों मे आर्य हो। (डा० सत्यकेतु, आर्यसमाज का इतिहास, प्रथम भाग पृष्ठ स० ३२)

डा० सत्यकेतु के मतानुसार आधुनिक युग मे भारत मे आर्यसमाज के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसा सगठन नही बना जिसका कार्यक्षेत्र इतना व्यापक रहा हो और जिसके द्वारा भारत के नव जागरण में इतनी अधिक सहायता मिली हो। उनके अनुसार भारत देश जो आज स्वतन्त्र है और एक ऐसे समाज के निर्माण मे तत्पर है जो सामाजिक न्याय पर आधारित है

उसका प्रधान श्रेय आर्यसमाज को ही दिया जाना चाहिए क्योंकि सदियो की मोह निद्रा के पश्चात् उन्नीसवी सदी के मध्य भाग मे पुनः जागरण और धार्मिक सुधार के जिन आदोलनो का सूत्रपात भारत मे हुआ वह महर्षि दयानन्द सरस्वती व आर्यसमाज का प्रमुख कर्तृत्वथा। आर्य-समाज का कार्य क्षेत्र केवल पढे लिखे व्यक्तियो तक सीमित नही रहा है। वह सच्चे अर्थों मे एक व्यापक जन आदोलन था जिसने सर्वसाधारण जनता मे जागृति उत्पन्न की और वह चिर निद्रा से जाग कर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए प्रवृत्त हो गई (आर्यसमाज का इतिहास—सात भागो में प्रकाशित करने की योजना पृष्ठ ३)

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ससार के उपकार एव मानव समाज के हितकल्याण एव सुख समृद्धि के लिए ही आर्यसमाज की स्थापना की थी और यह भी निर्दिष्ट कर दिया था कि 'अविद्या का नाश एव विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।" भारत की दुर्दशा का मुख्य कारण यही था कि इस देश मे अविद्या का अधकार छाया हुआ था कि इस देश मे अविद्या का अधकार छाया हुआ था। जनता का बहुत बडा भाग पूर्णतया निरक्षर था। केवल जन्म से ब्राह्मण वर्ग का ही थोडी बहुत शिक्षा पर अधिकार था। परन्तु इस ब्राह्मण वर्ग मे सस्कृत भाषा और प्राचीन शास्त्रो के अध्ययन की जो प्रणाली थी उस द्वारा न तो वेदशास्त्रो का समुचित ज्ञान हो पाता और न ही बुद्धि का प्रयोग कर नए वैज्ञानिक आविष्कार ही किए जा सकते थे। परिणाम स्वरूप भारत की जनता अनेक विध अधविश्वासो से ग्रस्त थी और समाज मे अनेक कुरीतिया प्रचलित हो गई थीं। शिक्षा के अभाव के कारण ही भारत अपनी राजनीतिक स्वतन्त्रता को भी कायम न रख सका था। इस दशा मे महर्षि दयानन्द ने शिक्षा की एक ऐसी पद्धति प्रतिपादित की थी जो भारतीय सस्कृति एव परम्पराओ के अनुरूप थी, जिसमे प्राचीन वेद-शास्त्रो के अध्ययन के साथ-साथ ज्ञान विज्ञान के अध्ययन को भी समु-चित स्थान दिया गया था। इस पद्धति के अन्तर्गत विद्या समाज के किसी एक वर्ग तक ही सीमित नही थी वरन् समाज के सभी वर्गों को शिक्षा प्राप्ति का समान अवसर एव सुविधाए प्राप्त थीं।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षा पद्धति के अविकल अनु-सरण के लिए प० गुरुदत्त विद्यार्थी एव उनके समर्थको जिनमे लाला मुन्शी-राम प्रमुख थे—गुरुकुलो की स्थापना आरम्भ की। चरित्र निर्माण के क्षेत्र में गुरुकुल शिक्षा पद्धति को डा० सत्यकेतु बहुत महत्वपूर्ण मानते थे। वे

अपने निज के जीवन की सभी उपलब्धियो को गुरुकुल कागडी की ही देन मानते थे—वे कहा करते थे कि यदि गुरुकुल कागडी न होता अथवा मैंने उसमे प्रवेश न लिया होता तो आज मैं भी किसी खेत मे हल चला रहा होता।

गुरुकुलो मे शिक्षक छात्र छात्राओ के हृदय पटल पर मान्यताए एव आदर्श अकित कर सकते हैं एव उनके चरित्र निर्माण का कार्य समुचित ढग से कर सकते हैं। नागरिको का चरित्र निर्माण ही किसी भी राष्ट्र के निर्माण की आधार शिला होता है। भारत के स्वतन्त्रता आदोलन मे गुरुकुलो के स्नातको ने एक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था। आज भी देश की परिस्थितियो को सुधारने के लिए शिक्षा पद्धति को सुधारने की आवश्यकता है। गुरुकुलो की स्थापना एव उन्हें सुचारु रूप से चलाने की आवश्यकता है। डा० सत्यकेतु गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय को सुचारु रूप से कार्य करती हुई एक महत्व-पूर्ण शिक्षण सस्था के रूप मे देखना चाहते थे। इसी भावना से उन्होने गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के उपकुलपति पद के कार्य भार को सभाला था। अपने इस कार्यकाल मे गुरुकुल कागडी मैं विलुप्त प्राय अध्ययन अध्यापन के वैदिक आदर्शों की पुन स्थापना के लिए एव गुरुकुल कागडी को भारतीय सस्कृति के क्षेत्र मे एक उच्च कोटि की शोध सस्था बनाने के लिए डाक्टर साहब ने अपने स्वास्थ्य की परवाह न करते हुए अनथक परिश्रम किया। तत्पश्चात् भी वे आजीवन गुरुकुल कागडी से किसी न किसी रूप मे जुड ही रहे, वे गुरुकुल कागडी को वैदिक सस्कृति के प्रचार एव प्रसार के क्षेत्र मे एक अग्रणी सस्था के रूप मे देखना चाहते थे। वे चाहते थे कि गुरुकुल से पढ कर निकले हुए स्नातक वदिक सस्कृति के उच्च नैतिक आदर्शों के अनुसार अपना व्यक्तिगत एव सामाजिक जीवन यापन करे तथा इन आदर्शों को देश के राजनैतिक एव सामाजिक जीवन मे स्थापित करने मे सक्षम हो।

डा० सत्यकेतु जी ने वैदिक सस्कृति एव आर्यसमाज की जो अनुपम सेवा की है वह सराहनीय एव अनुकरणीय है।

—डा० श्रीमती शान्ता मल्होत्रा (M A Phd)
प्रिंसिपल आर्य गर्ल्स कालेज अम्बाला छावनी
(हरियाणा)

डा. सत्यकेतु और विश्व इतिहास की प्रस्तुति

—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

पिछले दिनो एक मोटर दुर्घटना मे डा० सत्यकेतु विद्यालकार का असायमिक देहावसान हो गया। सत्यकेतु जी इतिहास के उद्भट विद्वान् एवं लेखक थे। 'मौर्य साम्राज्य का इतिहास, 'प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था और राजशास्त्र' के अतिरिक्त उन्होने इतिहास की अनेक मान्य पाठ्य पुस्तकें तथा ऐतिहासिक उपन्यास लिखे थे। मौर्य साम्राज्य का इतिहास के लिए उन्हे प्रतिष्ठित 'मगलाप्रसाद पारितोषिक' से सम्मानित किया गया था। पिछले दिनो उन्होने सात विशाल खण्डो मे आर्यसमाज का इतिहास' प्रकाशित किया। इतिहास सम्बन्धी अपने दर्जनो ग्रन्थो के लेखन के कारण वह वर्तमान युग के एक अधिकारी विशेषज्ञ बन गए थे। हिन्दी के इतिहास विषय के वह मूर्द्धन्य प्रवक्ता एव प्रतिनिधि विद्वान् थे। उनके असामयिक निधन से इतिहास को जो भीषण क्षति हुई है उसकी पूर्ति सम्भव नही है। इसी के साथ यह कहने मे कोई सकोच नही होना चाहिए कि हिन्दी इतिहास क्षेत्र मे अपने लेखन द्वारा उन्होने जो अमूल्य योगदान किया है, उसके कारण वह अमर हो गए हैं, परन्तु इसी के साथ हमे यह भी नही भूलना चाहिए कि इतिहास लेखन के क्षेत्र मे वह अद्वितीय थे। इस क्षेत्र मे उनकी विद्वत्ता, अनुभव एव क्षमता के अनुरूप वह चाहते हुए भी अपना मनचाहा योगदान नही कर सके। वैसा सम्भव हो सकता तो वह एक विशेषज्ञ विद्वान् के रूप मे विश्व इतिहास की झलक और भारत की खोज जैसे विषयो का एक प्रामाणिक सस्करण या स्वरूप प्रस्तुत करते।

यह ठीक है कि उन्होने 'मौर्य साम्राज्य का इतिहास' और 'प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था और राजशास्त्र' सरीखे कुछ प्रामाणिक ग्रन्थ लिखे हैं, परन्तु स्मरण रखना होगा कि विश्व एव भारत के इतिहास मे भारतीय सस्कृति एव महापुरुषो का आज तक समुचित मूल्याकन नही हो

सका है। वर्तमान समय मे भारत का प्राचीन इतिहास क्रमबद्ध रूप से उपलब्ध नही है। यद्यपि प्राचीन भारतीय साहित्य अत्यन्त विशाल एव समृद्ध है, तथापि प्राचीन भारतीय इतिहास के बारे मे उपलब्ध सामग्री अपर्याप्त है। प्राचीन साहित्य के अनुशीलन से इस बात में कोई सन्देह नही है कि प्राचीन भारतीय इतिहास शास्त्र से भली भाँति परिचित थे और वे परिवर्तनशील घटनाचक्र को क्रमबद्ध रूप से सकलित करने को समुचित महत्ता देते थे। उनकी दृष्टि मे इतिहास की गरिमा इतनी अधिक थी कि उनकी गणना वेदो मे की जाती थी, छान्दोग्य उपनिषद मे इतिहास की गिनती वेदो मे की गई है। महाभारत के अनुसार वेदो का अभिप्राय समझने के लिए इतिहास का अनुशीलन आवश्यक है। नीति ग्रन्थो मे राजाओ या शासको की निर्धारित दिनचर्या में इतिहास का अध्ययन एव श्रवण अनिवार्य कहा गया है। इस स्थापना के बावजूद यह कटु वस्तु-स्थति स्वीकार करनी होगी कि विश्व इतिहास मे भारत और भारतीय महापुरुषो के समुचित योगदान के सम्बन्ध मे प्रामाणिक ग्रन्थरत्न उपलब्ध नही है, और उनका लेखन आवश्यक है।

अग्रेज इतिहासकार विन्सेण्ट स्मिथ ने अपने विश्व इतिहास मे मौर्य साम्राज्य के सस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्य विस्तार का उल्लेख करते हुए लिखा है—दो हजार साल से भी अधिक समय व्यतीत हो गया जब भारत के प्रथम सम्राट ने उस वैज्ञानिक सीमा को प्राप्त कर लिया था, जिसके लिए उसके ब्रिटिश उत्तराधिकारी व्यर्थ मे आहे भरते रहे और जिसे सोलहवी तथा सत्रहवी सदियो के मुगल सम्राटो ने भी कभी पूर्णता के साथ प्राप्त नही किया।" मौर्य साम्राज्य, महात्मा बुद्ध तथा आचार्य उपगुप्त, भागवत धर्म के प्रवर्त्तक एव सभ्यता सस्कृति उन्नायक श्री कृष्ण आदि ने विश्व सस्कृति एव इतिहास पर अपनी उल्लेखनीय छाप छोडी है।

डा० सत्यकेतु विद्यालकार वर्षों तक इतिहास के प्राध्यापक रहे है, छात्रो को इतिहास पढाते हुए वह अक्सर कहा करते थे कि मिस्र के पिरामिडो मे सुरक्षित ममियो के साथ भारत का शुद्ध रेशम और मधु (शहद) उपलब्ध हुआ है। दूसरे शब्दो मे कहा जाए तो कहना होगा कि इन ऐतिहासिक पिरामिडो के निर्माण के समय भारत और मिस्र का सास्कृतिक एव व्यापारिक सम्बन्ध सुरक्षित था। इसी तरह हजारो वर्ष पूर्व मध्य एशिया एव दक्षिण पूर्व के विशाल अचल मे भारत के बौद्ध, वैष्णव एव शैव चिन्तन के प्रचारको ने भारतीय सस्कृति एव चिन्तन को प्राचीन विश्व मे सर्वत्र व्याप्त कर दिया था। इतना ही नही, मध्य अमेरिका में प्राप्त

पुरातत्व के स्मृति चिह्नो एव अन्य सामग्री पर भारतीय परम्पराओ एव चिन्तन की गहरी छाप दिखाई देती है। प्राध्यापक सत्यकेतु जी विश्व इतिहास मे भारतीय सस्कृति एव चिन्तन के प्रभाव के समुचित मूल्याकन के आधार पर विश्व इतिहास के पुनर्लेखन की महत्ता अगीकार करते थे। इस क्षेत्र मे विश्व भर के अभिलेखागारो एव पुरातत्त्व के सग्रहालयो में बिखरी पडी तथा दूसरी अज्ञात सामग्री को खोज कर विश्व इतिहास में भारत की भूमिका के प्रस्तुतीकरण की महत्ता अगीकार करते थे। कुछ अध्येताओ और शोध विशेषज्ञो की सहायता से सत्यकेतु जी इस दिशा मे कुछ कर जाते तो भारत और भारत का इतिहास अमर हो जाता, खेद है कि योग्यता एव क्षमता के बावजूद उन्हे ऐसा योग नही मिल सका।

भारत, उसकी सस्कृति और उसके चिन्तन का विश्व के इतिहास मे क्या योगदान है —इस विषय पर चर्चा करते हुए वह प्राय भावविभोर होकर कहते थे कि हमारी बहुमूल्य पुरातन सम्पदा एव प्राचीन ग्रन्थ-पाण्डुलिपिया विदेशी नियन्त्रण मे पहुच गई हैं। एक बार एक सगोष्ठी मे उन्होने कहा था—"दूसरे महायुद्ध मे मध्य एशिया के क्षेत्र मे एक बडा विस्तीर्ण टीला मिला, उस टीले मे अनेक गुफाएँ मिली, जिनका निर्माण अजन्ता-एलोरा की भारतीय गुफाओ के तुल्य था। वहा ३५ हजार दुर्लभ सस्कृत पाण्डुलिपिया मिली। वे पाण्डुलिपिया विश्व के तीन प्रमुख पुरातत्त्व सग्रहालयो मे स्थानान्तरित कर दी गई। इन पाण्डुलिपियो, दूसरे ग्रन्थो एव कला तथा पुरातत्त्वो के स्मृति चिह्नो में पता नही, कितना भारतीय इतिहास और सस्कृति की गाथा तिरोहित है, कहना कठिन है, सत्यकेतु जी इतिहास के विद्यार्थियो से इस अमूल्य थाती के रहस्योद्घाटन की महत्ता पर जोर देते थे।

एक बार सगोष्ठी मे सत्यकेतु जी से पूछा गया उनकी दृष्टि मे कौन से भारतीय महापुरुष हैं जिन्होने विश्व इतिहास पर अपना स्थायी एव अमर प्रभाव डाला है? प्रश्न सुनते ही वह प्रसन्न हो उठे। कहने लगे—"यह उनका मनचाहा विषय है, साथ ही यह ऐसा विषय है जिस पर इतिहास के अध्येताओ और शोधकर्ताओ को शोध एव अध्ययन कर अभी बहुत कुछ लिखना है।"

सत्यकेतु जी ने कहा—"विश्व इतिहास मे *मात्स्य न्याय* या अराजक स्थिति को दूर कर समाज को नियमित या नियन्त्रित करने के लिए मनु

महाराज का बडा योगदान है। उन्होने व्यवस्थति शासन द्वारा नियमो एव व्यवस्थाओ को को व्यवस्थित कर प्राचीन विश्व में एक नियमित नियन्त्रित व्यवस्था स्थापित की थी। मानवीय इतिहास में मनु की राज-व्यवस्था अराजक स्थिति को दूर करने में एक सशक्त क्रातिकारी व्यवस्था बनी, इसलिए विश्व इतिहास में विधिशास्त्री मनु की अद्वितीय देन है।

सत्यकेतु के मूल्याकन में महात्मा बुद्ध, सम्राट् अशोक और उनके गुरु उपगुरु (तिष्य) का अपूर्व स्थान था। महात्मा बुद्ध ने जो चिन्तन दिया उसे सम्राट् अशोक ने अपने गुरु आचार्य आचार्य उपगुप्त (तिष्य) के सत्परामर्श से विश्व भर में व्याप्त किया। अशोक के समय में स्थविर मोद्गलि पुत्र तिष्य के आयोजन के अनुसार बौद्ध धर्म का देश-विदेश में प्रचार करने का महान् अभियान किया गया, उसका केवल भारत के इतिहास मे ही नही, अपितु ससार के इतिहास में भी बहुल महत्त्व है। इन स्थविरो ने मागध साम्राज्य की अपेक्षा बहुत अधिक बडा एक ऐसा धर्म साम्राज्य कायम किया जो कुछ शताब्दियो तक ही नही, अपितु सहस्राब्दियो तक स्थिर रहा। दो हजार साल से अधिक समय बीत जाने पर भी यह धर्म साम्राज्य आशिक रूप से अब तक भी विद्यमान है। दक्षिण भारत के बाद लका, खोतन, हिमवन्त, यवन देशो तथा सुवर्ण भूमि मे उसका व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ। 'बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय' अनेक उपदेशक मण्डलिया विदेशो में गईं, वे एशिया के व्यापक क्षेत्रो में वर्षों तक धम-प्रचार करती रही।

विश्व इतिहास मे भारतीय चिन्तन के योगदान मे महापुरुष श्री कृष्ण की भूमिका की उपेक्षा नही की जा सकती। सुवर्णभूमि इण्डोनेशिया एव एशिया के बृहत्तर भागो मे श्रीकृष्ण-भागवत धर्म के प्रवर्तक की शैव भागवत, वैष्णव भागवत विचारधाराए आज भी ओत-प्रोत हैं। द० पू० एशिया के बृहत्तर अचल मे आज भी श्रीराम और श्रीकृष्ण के प्रेरक चरित्रो से जनता प्रेरणा ग्रहण करती है। विश्व इतिहास के सास्कृतिक चिन्तन मे इन भारतीय महापुरुषो के योगदान की भी उपेक्षा नही की जानी चाहिए।

डा०सत्यकेतु जी की दृष्टि मे विश्व के मानचित्र मे भारत की महत्त्व-पूण स्थिति सजोने में आचार्य चाणक्य का नाम सर्वोपरि लिया जाना चाहिए। जिसने बडे अमर्ष के साथ शास्त्र और शस्त्र का प्रयोग कर नन्द-राज के हाथ में पृथ्वी का उद्धार किया। आचार्य चाणक्य ने अपने ग्रन्थ

अर्थशास्त्र में लिखा था—"सारी पृथ्वी एक देश है। उसमे हिमालय से लेकर समुद्र पर्यन्त सीधी रेखा खीचने से जो एक सहस्र योजन विस्तीर्ण प्रदेश है, वह चक्रवर्ती राज्य का क्षेत्र है।"

(देश पृथिवी। तस्या हिमवत्समुद्रान्तरमुदीचीन। योजन सहस्र-परिमाणमतिर्यक चक्रवर्तिक्षेत्रम्) इसी के साथ आचार्य चाणक्य की दृष्टि मे प्रजा के सुख मे ही राजा का सुख है, प्रजा के हित मे ही राजा का हित है, राजा का अपना प्रिय कुछ नही।

प्रजा सुख राज्ञ प्रजानां च हिते हितम।
नाकर्मप्रिय हित राज्ञ प्रजानां तु प्रिय हितम्॥

भौ० अ० १।१६

एक ओर मुद्राराक्षस नामक सस्कृत ग्रथ मे मौर्य साम्राज्य के चक्रवर्ती शासन के प्रधान अमात्य आचार्य चाणक्य की जीर्ण शीर्ण कुटिया का विवरण पढ कर दूसरी ओर इतिहासज्ञ स्मिथ के समय विस्तीर्ण भारतीय प्रदेश की सीमा विस्तार को देखकर हृदय को सीख मिलती है कि सच्चे त्याग और तपस्या से ही भारतभूमि की पश्चिमोत्तर सीमा का सरक्षण हुआ था।

प्राध्यापक सत्यकेतु विद्यालकार विश्व इतिहास म भारतीय महा-पुरुषो के योगदान को बडी आस्था और गौरव से सुनाया करते थे, आज सत्यकेतु जी नही रहे, उनके चरणो मे सच्ची श्रद्धाजलि यही हो सकती है कि पुरातत्त्व भूगोल एव एशिया भर मे विस्तीर्ण इन महापुरुषो की गौरवगाथा नए इतिहासिक सन्दर्भ मे प्रामाणिक ढग से लिख कर सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप मे प्रस्तुत की जाए।

—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति
अभ्युदय, बी-२२ गुलमोहर पार्क,
नई दिल्ली ११००४९

वैदिक दर्शन एवं भारतीय-संस्कृति तथा डा० सत्यकेतु

—आचार्य सत्यव्रत राजेश

डा० सत्यकेतु जी गुरुकुल कागडी के छात्र प्राध्यापक कुलपति तथा कुलाधिपति के रूप मे अपने बाल्यकाल से लेकर मृत्युपर्यन्त जुडे रहे। उन्होने अपनी अन्तिम सास भी कुलमाता को ही अर्पण की। वे गुरुकुल, आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त थे। वे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे वैदिक शोधपीठ की स्थापना का सकल्प भी अपने साथ ले गए जिसमे महर्षि दयानन्द की दृष्टि से वेद तथा अन्य वैदिक साहित्य पर शोध होता तथा नीर क्षीर विवेक होकर उन ग्रन्थो का उज्ज्वल रूप हमारे सामने आता। किन्तु सपने सबके पूरे नही होते।

वे विश्वविद्यालय मे आते रहते थे। उस समय उनसे जो बात होती उससे प्रतीत होता था कि वे महर्षि दयानन्द द्वारा मान्य दार्शनिक सिद्धान्तो को ही मान्यता देते थे। वे अपने भाषण मे भी इन्ही तत्त्वो का दार्शनिक विवेचन किया करते थे जिन्हे आर्यसमाज मानता है। वैदिक दर्शन त्रैतवाद को मानता है किन्तु कुछ दार्शनिक एकमात्र प्रकृति को ही तत्त्व मानते हैं। इनके अनुसार चेतनता भी प्राकृतिक तत्त्वो के परिमाण विशेष मे मिल जाने का परिणाम है। इनमे चार्वाक मुख्य है। कुछ प्रकृति तथा जीव इन दो तत्त्वो को मानते है। जीव ही प्रगति करके ईश्वर बन जाता है ऐसा इनका सिद्धान्त है। जैन दर्शन इसी कोटि में आता है। कुछ एकमात्र ब्रह्म की ही सत्ता स्वीकार करते हैं। ब्रह्म ही अन्त करणावच्छिन्न होने पर जीव तथा अध्यास क कारण जगत् प्रतीत होने लगता है। यह नवीन वेदान्तियो का मत है।

वस्तुत वस्तु, उसका निर्माता तथा उसका उपभोक्ता इन तीन पर ही समस्त जगद् व्यापार खडा है। घट-पट से लेकर समस्त निर्मित वस्तुए अपनी, अपने बनाने वाले तथा उपयोग में लाने वाले की परिचायक हैं।

ससार का मूल कारण या उपादान कारण प्रकृति है, उसका निमित्त कारण अर्थात् बनाने वाला परमात्मा है तथा उसका उपभोक्ता है जीवसमूह। वैदिक दर्शन इन तीनो तत्त्वो को मानता है। प्रकृति जड है तथा जीव एव ईश्वर चेतन है। इनमें जीव अल्पज्ञ है तथा परमात्मा सर्वज्ञ। स्वय वेद भी त्रैतवाद का प्रतिपादक है। एक ऋचा मे कहा है—

न त विदाथ य इमा जजान० ॥ ऋ० १०।८२।७ तथा यजु० १७।३१

अर्थात् तुम उसको नही जानते जिसने इन सब (वस्तुओ) को बनाया है। यहा 'विदाथ' क्रिया, न जानने वालो की ओर सकेत करती है, 'तम् तथा य' ये दोनो पद बनाने वाले की ओर इगित कर रहे हैं तथा 'इमा (इमानि) जजान' से पद बनने वाले तत्त्व के द्योतक हैं। न जानने वाले जोव हैं, जिसे जीव नही जानता तथा जो इन सब भौतिक वस्तुओ को बनाता है वह ईश्वर है तथा जिसे बनाता अर्थात नाना रूप देता है व प्रकृति है।

एक अन्य मन्त्र है जिसमे रूपकालकार की रीति से त्रैतवाद का प्रतिपादन किया है। मन्त्र—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समान वृक्ष परि षस्वजाते।
तयोरन्य पिप्पल स्वाद्वत्यनश्नन्नन्यो अभि चाकशीति ॥

यहा कहा गया है कि दो पक्षी हैं जो साथ रहने वाले तथा मित्र हैं वे अपने समान वृक्ष पर मिलकर बैठे है। उनमे से एक इस वृक्ष के स्वादु फल को खाता है तथा दूसरा न खाते हुए केवल देखता रहता है।

वे दो पक्षी जीवात्मा तथा परमात्मा हैं, वृक्ष प्रकृति है। समानता तीनो मे नित्यत्व की है। प्रकृति के मधुर फलो का उपभोग करने वाला जीव है। तथा द्रष्टामात्र परम पिता परमात्मा है। अन्य भी वेद मे अनेक मन्त्र है। जो त्रैतवाद के विधायक हैं। पुनर्जन्म तथा मुक्ति से पुनरावृत्ति आदि भी वैदिक दर्शन की मान्यताएँ हैं। डा० सत्यकेतु जी उन सब के समर्थक थे।

डा० सत्यकेतु जी भारतीय सस्कृति, जिसे वास्तव मे वैदिक सस्कृति कहना चाहिए के अनन्य उपासक थे। वर्णाश्रम व्यवस्था, पचमहायज्ञ तथा १६ सस्कार भारतीय सस्कृति की आत्मा हैं। शिक्षक, रक्षक, पोषक तथा सेवक के रूप मे क्रमश अज्ञान, अन्याय, अभाव तथा असहयोग मिटाने रूपी दानवो से राष्ट्र तथा विश्व को बचाने की दीक्षा लेने वालो

को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र कहा जाता था। कार्य भिन्न होने पर इन चारो वर्णो मे आचार की भिन्नता नही थी। क्योकि ब्राह्मण भी आर्य था, क्षत्रिय भी आर्य था, वैश्य भी आर्य था तथा शूद्र भी आर्य था। ये चारो वर्ण गुण कर्म के अनुसार होते थे। सबके लिए प्रगति के द्वार खुले थे। ऊच नीच तथा छुआछूत का भाव यहाँ था ही नही।

जैसे मानव जीवन को कार्य की दष्टि से चार भागो मे विभक्त किया गया है उसी प्रकार आयु की दृष्टि से भी उसके चार विभाग किए गए हैं जिन्हे आश्रम कहते हैं। ये क्रमश ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास कहलाते हैं। इनमें परोपकार के लिए तैयारी तथा परोपकार के कार्य भी करने होते थे।

पचमहायज्ञ भी भारतीय सस्कृति के महत्त्वपूर्ण अग हैं। इनमें कृतज्ञता के भाव समाहित हैं। इनमें ईश्वर वृद्धजन, विद्वान्, पृथिवी आदि देव तथा जगत के कुछ प्राणियो के प्रति आभार मानते हुए सन्ध्या-स्वाध्याय, हवन तथा विद्वत्सग, वृद्धजनो के प्रति श्रद्धाभाव तथा उनकी तृप्ति के लिए प्रयत्न, बने भोजन के कुछ भाग को अग्नि तथा कुत्ते आदि को देना एव विद्वान् धर्मात्मा सन्यासी आदि अतिथियो की श्रद्धापूर्वक सेवा करनी होती है। इन्हे क्रमश ब्रह्मयज्ञ देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ तथा अतिथियज्ञ कहते हैं। गृहस्थ को इन्हें नित्य करने का विधान है।

मानव के शरीर तथा आत्मा को शुद्ध करने, अच्छे सस्कार डालने, मानसिक तथा बौद्धिक विकास करने तथा शरीर की आरोग्यता आदि की दृष्टि से ऋषियो ने वेदानुकूल जन्म से मरण पर्यन्त करने के लिए १६ सस्कारो का विधान किया है। मानव के निर्माण मे इनका भी बहुत महत्त्व है।

इस प्रकार लोक तथा परलोक की उन्नति के लिए सतत जागरूक रहना तथा अपने एव पराये, हित, मगल, कल्याण तथा उपकार मे रत रहना वैदिक सस्कृति जिसे भारतीय सस्कृति भी कहते हैं, का मूलमन्त्र था। डा० सत्यकेतु उसी के लिए जिए तथा उसी के लिए मरे। उनके जीवन से उसी सस्कृति की सुगन्ध दिग्दिगन्त मे फैली थी।

—आचार्य सत्यव्रत राजेश
प्राध्यापक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

सरस्वती के वरद पुत्र--सत्यकेतु

—सुभाष विद्यालंकार

डाक्टर सत्यकेतु विद्यालंकार बहुमुखी प्रतिभा के धनी विद्वान् थे। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के योग्यतम स्नातकों में उनका स्थान था। गुरुकुल की शिक्षा पूरी कर लेने के बाद वे कुछ समय तक पत्रकारिता के क्षेत्र में काम करते रहे किन्तु उनकी वास्तविक रुचि अध्ययन और अध्यापन में ही थी। अत वे इतिहास के प्राध्यापक बनकर गुरुकुल आ गये। वे उच्च अध्ययन के लिये पेरिस विश्वविद्यालय गये जहा उन्होने भारत की गोत्र व्यवस्था के सम्बन्ध मे शोध प्रबन्ध लिखकर डी० लिट् की उपाधि सम्मानपूर्वक प्राप्त की। पेरिस से लौटकर वे अपना सम्पूर्ण समय अध्यापन मे ही लगाना चाहते थे किन्तु तब गुरुकुल की परिस्थितिया अनुकूल न होने के कारण उनकी यह इच्छा पूरी न हो सकी। वे मसूरी मे रहकर साहित्य साधना मे जुट गये। सत्यकेतु जी ने ३६ ग्रन्थो का प्रणयन किया। इनमे से प्रत्येक ग्रन्थ उपयोगिता' विषयप्रतिपादन, शैली और साहित्य सौस्ठव की दृष्टि से अनुपमेय है।

इतिहास के क्षेत्र मे डा० सत्यकेतु जी का स्थान अद्वितीय था किन्तु इतिहास के अतिरिक्त समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, भारतीय सस्कृति और हिन्दी साहित्य के क्षेत्रो मे भी उनकी रचनाओ को उचित स्थान प्राप्त हुआ है। साहित्य साधना और राष्ट्रभाषा हिन्दी मे श्रेष्ठ ग्रन्थो की रचना करने के लिये उत्तर प्रदेश सरकार, दिल्ली प्रशासन, काशीनगरी, प्रचारिणी सभा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, बगाल हिन्दी मण्डल, कलकत्ता और हिन्दी समिति, इन्दौर आदि अनेक साहित्यिक और सास्कृतिक सस्थानो ने उन्हे पुरस्कार आदि से सम्मानित किया था। इतिहास, राजनीतिशास्त्र और समाजशास्त्र आदि विषयो के उनके ग्रन्थ न केवल उच्च कक्षाओ के छात्रो के लिये अपितु प्रशासनिक सेवाओ की परीक्षा देने वाले प्रतियोगियो के लिये भी सहायक हैं। लखनऊ, राजस्थान, बिहार, गोरखपुर, विक्रम, सागर और जबलपुर आदि अनेक विश्वविद्यालयो मे उनके ये ग्रन्थ एम०

ए० और बी०ए० के पाठ्क्रमो में निर्धारित हैं।

विद्यार्थियो और प्रतियोगियो को ध्यान में रखकर डा० सत्यकेतु ने 'प्रमुख राज्यो के सविधान' ग्रन्थ की रचना की थी। इस ग्रन्थ के अनेक सस्करण स्थापित हो चुके हैं। इसमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रान्स, सोवियतसघ और स्विटजरलैण्ड इन पॉच देशो के सविधानो का विशद विवेचन सरल और रोचक शैली मे प्रस्तुत किया गया है। ससार के सविधानो मे इन पॉच देशो की शासन पद्धतियो का अपना-अपना महत्त्व हैं। स्वतन्त्र भारत के सविधान की रचना करते समय ससार के उन्नत सौर प्रगतिशील देशो के सविधानो पर ध्यान दिया गया था। ब्रिटिश न्याय व्यवस्था की भाति भारत के लिए ग्रेट ब्रिटेन की शासन व्यवस्था विशेषरूप से महत्त्वपूर्ण रही। १९४९ के सविधान द्वारा भारत मे जो शासन व्यवस्था स्थापित को गई है उसमें ब्रिटिश-लोकतन्त्रीय सस्थाओ को बहुत अशो मे अपनाया गया है। ब्रिटेन के अधीन लका, बरमा आदि देशो ने भी स्वाधीन होने के बाद ब्रिटिश शासन-पद्धति को ही अपनाया। कैनेडा, दक्षिण अफ्रीका और आट्रेलिया आदि औपनिवेशिक देशो में तो ब्रिटिश शासन प्रणाली का ही अनुकरण किया जा रहा है। अमेरिका की शासन पद्धति ब्रिटेन से बहुत भिन्न है। वहॉ ससदीय शासन पद्धति के स्थान पर अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली अपनाई गई है और सत्ता के पृथक्करण का सिद्धान्त स्वीकार किया गया है। अमरीका महाद्वीप के अनेक स्वतन्त्र देशो ने अपने सविधान अमरीकी सविधान के आधार पर ही बनाये है।

स्विटजरलैण्ड के सविधान का विशिष्ट महत्त्व है। वहा प्रत्यक्ष लोकतन्त्र शासन पद्धति बहुत सफल रही है। इसलिए इस पद्धति का अनुशीलन करने के लिए स्विटजरलैण्ड की शासनविधि महत्त्वर्ण है।

सोवियत सघ में कम्युनिस्ट शासन प्रणाली है। एशिया के विशाल देश चीन तथा पूर्वी यूरोप के पोलैण्ड, हालैण्ड, बल्गारिया, रूमानिया, चैकोस्लोवाकिया हगरी और पूर्वी जर्मनी आदि कई देशो ने अपनी शासन व्यवस्था रूसी कम्युनिस्ट शासन प्रणाली के आधार पर निर्धारित की है। कम्युनिस्ट देश अब तक रूसी शासन प्रणाली को आदर्श मानते रहे थे, अत सोवियत सघ के सविधान का अध्ययन अपरिहार्य है।

आज से दो सौ वर्ष पूर्व हुई फ्रासीसी क्रान्ति का न केवल यूरोप के देशो को शासनप्रणालियो और विचारधारा पर गहरा असर पड़ा था बल्कि ससार के अनेक देशो पर भी फ्रान्सीसी क्रान्ति की विचारधारा का

प्रभाव पडा था। फ्रासोसी शासन पद्धति की अपनी कुछ विशेषताएँ थी। वही ससदीय शासन पद्धति होने के बावजूद ब्रिटेन की भाति दो प्रमुख राजनीतिक दल नही थे। वहा अनेक राजनीतिक दलो के कारण कोई स्थायी सरकार नही बन पाती थी। फ्रान्सीसी जनता ऐसी राजनीतिक अस्थिरता को देश के लिये हानिकारक नही मानती थी। उसकी मान्यता थी कि केवल दो राजनीतिक दलो को सत्ता लोकतन्त्रीय शासन प्रणाली के अनुरूप नही होती। इस दष्टि से फ्रान्स की सवैधानिक व्यवस्थाओ का ऐतिहासिक महत्त्व है। इन पर विद्वान् लेखक ने समुचित प्रकाश डाला है।

उपरोक्त पाच देशो के सविधान और इनके अधीन स्थापित शासनपद्धतिया ससार की शासन व्यवस्थाओ की प्रतिनिधि है। डा० सत्यकेतु ने विभिन्न देशो के सविधान और शासनपद्धतियो जैसे जटिल और दुरूह विषय को सरल भाषा और रोचक शैली में प्रस्तुत किया है। 'प्रमुख राज्यो के सविधान ग्रन्थ को भी डा० सत्यकेतु के अन्य ग्रन्थो की भाति विभिन्न विश्वविद्यालयो में राजनीतिशास्त्र के बी०ए० पाठ्यक्रम मे स्थान दिया गया है।

डा० सत्यकेतु ने सामाजिक और ऐतिहासिक उपन्यासो तथा अपने व्यावसायिक अनुभवो के आधार पर रिपोर्ताज शैली मे कई उपन्यास भी लिखे जो अत्यन्त लोकप्रिय हुए। चाणक्य पतन और उत्थान, उनके ऐतिहासिक उपन्यास हैं तो होटल माडर्न और अन्तर्दाह सामाजिक उपन्यास। आर्यसमाज का इतिहास उनकी अन्तिम रचना है जो सात खण्डो मे प्रकाशित हुई है। वे अग्रेजी मे आर्यसमाज का सक्षिप्त इतिहास महाभारत के शान्ति पर्व के आधार पर भीष्म के विचार और ऐतिहासिक उपन्यास अशोक भी लिख रहे थे किन्तु नियति को यह स्वीकार न था।

—सुभाष विद्यालकार

ओ३म्

सामवेद संहिता

भाषा काव्यानुवाद

लेखिका—श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा शास्त्री

सामवेद संहिता भाषा काव्य पुस्तक मे प्रत्येक मन्त्र का भावार्थ कविता में प्रस्तुत किया गया है। यह सामवेद की पुस्तक कथा व पाठ के लिए सर्वोत्तम साधन है। इस पुस्तक को सरल हिन्दी मे कविता मे लिखा गया है। यह ग्रन्थ संस्कृत के अनभिज्ञ व्यक्तियो को भी शीघ्र समझ मे आयेगी—इस ग्रन्थ का आर्यसमाजो के सत्सगो मे सस्वर पाठ, गायन का रसास्वादन सन्तप्त हृदयो को परमानन्द की अनुभूति प्राप्त करा सकेगा। आशा है कि आर्य जनता इस ग्रन्थ का स्वागत करेगी—और लेखिका का यह परिश्रम सफल होगा। लेखिका का एक भजन पुस्तक जिसमें प्रभु भक्ति व शिक्षाप्रद गीतो का सग्रह है। यह भजन पुस्तक 'भक्ति सगीत सुधा' के नाम से सुशोभित है। सगीत प्रेमी लाभ उठाये।

[शुभकामनाएँ—दि० आ० प्र० सभा

हार्दिक शुभ कामनाओ सहित

फोन 2201159
2210073

विद्या धन सर्वश्रेष्ठ है न भाई बाट सकता है, न चोर चुरा सकता है।

विश्वम्भर नाथ भाटिया

(प्रबन्धक)

दयानन्द मॉडल स्कूल

विवेक विहार, दिल्ली-११००३२

निवास एच-१४, कृष्ण नगर, दिल्ली-५१ फोन २२१२०७६

कारों और स्कूटरो के मालिको

आप १००० रु० का जुर्माना क्यों भरें

क्या आप जानते है ?

—कि मोटर वाहन अधिनियम १९८८ की धारा १९० के अधीन जो १ जुलाई से लागू होगी, वाहन प्रदूषण के सबंध मे निर्धारित मानको का उल्लघन करने पर आपको १००० रु० का जुर्माना देना पड सकता है।

—कि केन्द्रीय मोटर वाहन नियमो के नियम ११५ (२) मे रखे गए इन मानको के अनुसार वाहनो के खड़े रहने पर निकलने वाले धुए मे कार्बन मोनो-आक्साइड की मात्रा कारो के मामले मे ३ प्रतिशत से अधिक नही होनी चाहिए। सभी डीजल चालित वाहनो का धुआ तेज गति मे ६५ हार्टिज यूनिट से अधिक नही होना चाहिए।

क्या आप यह भी जानते हैं ?

—कि केन्द्र सरकार ने वाहन मालिको को अपने इजनो की उचित रूप से जाच करने व उन्हे सही कराने के लिए ३ माह का और समय दिया है। यदि आप एक अक्टूबर, १९८९ तक ऐसा करने मे असमर्थ रहते है और आपका वाहन मानको का उल्लघन करता है तो आप मोटर वाहन अधि-नियमो के अनुसार १००० रु० के दण्ड के भागी होगे।

आपके लाभ के लिए

—दिल्ली प्रशासन नवम्बर १९८७ से कारो और स्कूटरो से निकलने वाले धुए मे कार्बन मोनो आक्साइड की जाच करने के लिए शहर के विभिन्न पेट्रोल पम्पो मे निशुल्क सुविधा प्रदान कर रहा है।

—लगभग एक लाख वाहनो की जाच की जा चुकी है। इनमे से ४७ प्रतिशत वाहनो के धुए मे निर्धारित स्तर से अधिक मात्रा मे कार्बन मोनो आक्साइड पाई गई।

प्रति लिटर अधिक दूरी

—परिवहन निदेशालय के विशेषज्ञ आधुनिक यत्र की सहायता से वाहनो से निकलने वाले धुए की जाच करने के बाद धुए की मात्रा के बारे मे प्रमाण पत्र देते हैं और उसे ठीक करने के लिए सुझाव भी देते है। यदि जरूरी

हो तो वायु-ईंधन अनुपात सही करने के लिए कार्बोरेटर का एडजस्टमेंट नि शुल्क भी किया जाता है ।

—कार्बोरेटर के सही एडजस्टमेन्ट से वाहन प्रदूषण ही कम नहीं होता बल्कि, प्रति लिटर पैट्रोल से अधिक दूरी भी तय होती है जिससे ईंधन पर खर्च १०० रु० प्रति माह तक की बचत की जा सकती है ।

नि:शुल्क प्रदूषण जांच केन्द्र

—आपकी कार या स्कूटर से निकलने वाले धुए की मात्रा उचित स्तर तक बनाए रखने मे सहायता के लिए परिवहन निदेशालय ने दिल्ली मे अपने कार्यालयो मे प्रदूषण जाच केन्द्र स्थापित किए है जो निम्नलिखित हैं—

१ मुख्यालय ५/६ अण्डर हिल रोड

२ क्षेत्रीय कार्यालय जनकपुरी इण्डस्ट्रियल सर्विस सेटर, बी ब्लाक, जनकपुरी

३. वाहन निरीक्षण यूनिट माल रोड

४ क्षेत्रीय कार्यालय शेख सराय फेज-२ डी० डी० ए० शापिंग कम्पलेक्स सटर

५ क्षेत्रीय कार्यालय नई दिल्ली ३ तिलक मार्ग

६ वाहन निरीक्षण यूनिट बुराड़ी

इसके अतिरिक्त शहर के विभिन्न भागो मे दो चलते-फिरते जाच दल भी काय कर रहे हैं

समय और दिन

—यह सेवा प्रतिदिन (शनिवार और रविवार छोडकर) सवेरे १० से साय ५ बजे तक उपलब्ध है ।

—आप उपरोक्त किसी भी जाच केन्द्र मे आ सकते हैं और नि शुल्क जाच सेवा का लाभ उठा सकते हैं ।

आपके लाभ के लिए दिल्ली प्रशासन द्वारा दी गई सेवा को सुधारने के लिए यदि आपके पास कोई सुझाव हो तो कृपया लिखें

जग प्रवेश चन्द्र
मुख्य कार्यकारी पार्षद
दिल्ली प्रशासन
पुराना सचिवालय, दिल्ली-११००५४

॥ ओ३म् ॥

रतनचंद आर्य पब्लिक स्कूल

आर्यसमाज वाई-ब्लाक, सरोजनी नगर, नई दिल्ली-११००२३

यह स्कूल गत १५ वर्षों में आर्यसमाज मंदिर, सरोजनी नगर में सुचारु रूप से चल रहा है। इसका सम्बन्ध आर्य विद्या परिषद् दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ है। श्री रतनचन्द जी सूद इस विद्यालय के चेयरमैन हैं और उनके ट्रस्ट के द्वारा ही यह स्कूल खोला गया था।

इस विद्यालय ने गत तीन वर्षों में बहुत उन्नति की है। यह विद्यालय नई दिल्ली नगर पालिका से मान्यता प्राप्त है। इस स्कूल में नर्सरी, के०जी०, प्राइमरी कक्षाएं चल रही थीं। गत दो वर्षों से कक्षा-६ और ७ भी प्रारम्भ कर दी गयी है। इस स्कूल में आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ नैतिक शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता है तथा बच्चों को प्रार्थना मन्त्र, संध्या, हवन आदि भी सिखाये जाते हैं।

श्री रतनचन्द सूद जी के कई लाख रुपए के आर्थिक सहयोग से विद्यालय में १८ कमरों का निर्माण हो चुका है। बहुत शीघ्र ही यह स्कूल कक्षा ८ तक हो जाएगा।

अनिता कपिल	रोशन लाल गुप्ता
प्रधानाचार्या	प्रबन्धक

इन्द्रप्रस्थ भारती

हिन्दी अकादमी की त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

संपादक डा० नारायणदत्त पालीवाल

यदि आप चाहते हैं कि बेहतर पढ़ने को मिले तो आपकी इस ज़रूरत को

इन्द्रप्रस्थ भारती

हिन्दी अकादमी की साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका पूरा करती है जो महज़ एक पत्रिका नहीं पूरी किताब है।

जिसमे वर्ष भर मे छ सौ पृष्ठो की साहित्यिक सामग्री उपलब्ध करायी जाएगी,

जिसमें देश के जिम्मेदार लेखक हिस्सेदारी करेंगे।

यह पत्रिका समकालीन साहित्य का रचनात्मक मूल्यांकन और गतिविधियो को प्रस्तुत करती है। एक सौ बावन से अधिक पृष्ठ की इस पत्रिका के एक अंक का मूल्य पांच रुपये वार्षिक बीस रुपये। आपका सहयोग हमे बेहतर सेवा के लिए और अधिक प्रोत्साहित करेगा।

वार्षिक शुल्क मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट/पोस्टल आर्डर द्वारा इस पते पर भेजे —

सचिव,
हिन्दी अकादमी, दिल्ली
ए–२६/२७, सनलाइट इन्श्योरैंस बिल्डिंग,
आसफ अली रोड, नई दिल्ली–११०००२

* ओ३म् *

शुभकामनाओं सहित :

आर्यसमाज राणा प्रताप बाग

दिल्ली-११०००७

---

* ओ३म् *

शुभकामनाओ सहित :

रतनदेवी आर्य कन्या उच्चतम माध्यमिक विद्यालय

कृष्ण नगर, दिल्ली-११००५१

नेतराम शर्मा
(प्रबन्धक)

श्रीमती ईश्वर देवी धवन
(प्रधाना)

श्रीमती सुशीला गोयल
(प्रधानाचार्या)

ओ३म्

बिन्दु बिन्दु विचार

स्व० लालमन आर्य के रचित भजनो कविताओ के अश

शरीर—यह तन माटी का स्थूल बुर्ज कब ढह जाय पता नही है।

मन—मन कगाली मन धनी, मन कायर मन शेर।
मन दुखिया और मन सुखी, मन प्यारा मन बैर॥

मा—माता का ऋण ससार मे उतरा न उतर सके है।

व्यापार—धन खूब कमा आनन्द मना, पर ऐसा कोई अपराध न कर।
अपना घरबार बसाने मे औरो का घर बरबाद न कर॥

दहेज प्रथा—होकर सेठ साहूकार लडका बेचे सरे बाजार
अपने जायो का कीमत लगाओ नही।
कहा मानो विनाश कराओ नही॥

अछूत अछूत वह है जिसे छूना नही चाहिए जैसे बिजली का तार, जलता अगार साप, बिच्छू आदि, लेकिन अच्छा भला इन्सान कैसे अछूत हो सकता है।

मृत्यु भोज—एक ओर स्यापा होवे, रो रही विधवा नार।
एक ओर पचायत बैठी, खा रही जीमन हार॥
पत्थर का हृदय नही फटे।
इतने अनर्थ तो देख रहे, पर जीमन को तैयार।
कहे लालमन' इस जीमन को बार-बार धिक्कार॥
पतन से नही हटे॥

मूर्ति पूजा—कोई पत्थर से सर फोड रहा।
जड मूरत को कर जोड रहा॥
बालू से तेल निचोड रहा।
कब इससे तेल निकलता मिलता उत्तर साफ नकारो मे।

हिन्दी—इतने साल निकलने पर भी हिन्दी को दुत्कार रहे।
अ ग्रेजी रखने को अपने देश का मान उतार रहे॥
प्रान्त-प्रात मे फूट डालकर, आपस मे तकरार रहे।
हिन्दी वालो जाग उठो मौन व्रत क्यो धार रहे॥

गौ—गौ मरती विदेशी राज्य मे, अब क्यो मरती स्वराज्य मे।
गौ हत्या विरोधी विधान हे ! भगवान पूरा कब होगा॥

शराब—शराब की बोतल भर रही जो नाश देश का कर रही।
नशा नशा समान है भगवान पूरा कब होगा॥

सौजन्य—लालमन आर्य जन सेवा संस्थान

STEAD®
WIREWOUND
RESISTORS
RHEOSTATS
POTENTIOMETERS
STEAD ELECTRONIC INDUSTRIES®
17 UA, JAWAHAR NAGAR DELHI 110 007
PHONES 291 8727 291 9325 23 7810
GRAMS RHEOSTATS TELEX 031 78168 STED IN
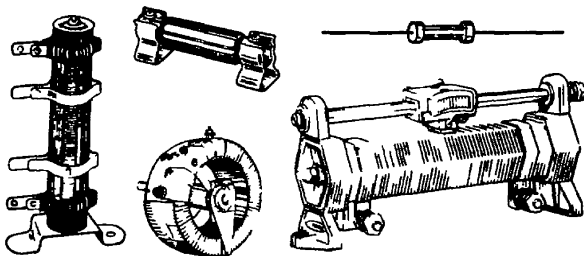
साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ अंक ४५ रविवार १ अक्तूबर १९८९ आश्विन सम्वत् २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द १६५ सृष्टि सम्वत् १९७ ...०६०

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश मे ५० पौंड १०० डालर दूरभाष १०१५०

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार का जीवन

आर्यसमाज तथा गुरुकुल कांगड़ी के लिए समर्पित था

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार स्मृति अंक का विमोचन

सुप्रसिद्ध इतिहासकार वैदिक विद्वान एव साहित्यकार डा० सत्यकेतु विद्यालकार के जन्मदिन के अवसर पर दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड मे हिन्दी दिवस क आयोजन मगलवार १९ सितम्बर १९८८ को किया गया। डा० सत्यकेतु विद्यालकार को हिन्दी अकादमी की ओर से उन की हिन्दी सेवाओ के लिए सम्मानित किया गया था। उन्होंने इतिहास और राजनीति शास्त्र की पुस्तक हिन्दी मे लिखकर एक नया अध्याय प्रारम्भ किया था इसलिए उनके जन्मदिन पर हिन्दी दिवस मनाना नितात समीचीन एव प्रासगिक है।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह ने कहा कि आज देश मे हिन्दी की उपेक्षा व भारतीय भाषाओ को पीछ छोडने का षडयन्त्र चल रहा है ताकि अग्रजी वचस्व बना रहे। आयसम ज इसे कदापि सहन नही कर सकता इसीलिए सावदेशिक सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा ने अग्रजी हटाओ—भारतीय भाषाएँ लाओ शराब बदी व गोहत्या बदी के त्रिसूत्री कायक्रम द्वारा एक राष्ट्रव्यापी अभियान चलाया है। प्रो० शेरसिंह दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा हिन्दी दिवस व आर्य सन्देश के डा० सत्यकेतु स्मृति अक के विमोचन समारोह मे हुए एक आयोजन मे मुख्य अतिथि के रूप मे बोल रहे थे।

अपने अध्यक्षीय भाषण मे पत्रकार प० क्षितीश वेदालक र ने कहा कि डा० सत्यकेतु इतिहास व राजनीति शास्त्र आदि पर हिन्दी मे अनेक उच्चकोटि के मौलिक ग्रथ इसलिए ही लिख पाये क्योकि गुरुकुल कागडी मे हिन्दी म यम से उन्होंने शिक्षा ग्रहण की थी। उन्होने आगे कहा कि डा० सत्यकेतु का बहुआयामी जीवन था और वे आय समाज का इतिहास सात खण्डो मे लिखकर अमर हो गए हैं और आय समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा। 'भाषा' के सम्पादक एव सुप्रसिद्ध हिन्दी सेवी डा० वेदप्रताप वैदिक ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि एक बहुत बडा झूठ प्रचारित किया गया कि अग्रजी विश्व भाषा है तथा ज्ञान विज्ञान की भाषा है। उन्होने आगे कहा कि ... मान एक क्रातिकारी आदान ... है। अत आज आयसमाज को ... कर अग्रजी को हटाने के लिए वि ष कायक्रम चलाना चाहिए।

भारत सरकार के प्रकाशन विभाग के निदेशक ० श्यामसिंह शशि ने कहा कि हिन्दी राष्ट्र का गौरव है तथा हमे बोलचाल व्यवहार व्यापार व सरकारी कामकाज मे इसे अपनाना चाहिए। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक डा०

शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान्

सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी पं० शिवकुमार शास्त्री

वैदिक विद्वानों तथा नेताओ द्वारा भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित

सम्माननीय प० शिवकुमार जी शास्त्री वेदो के प्रकाण्ड पण्डित यशस्वी लेखक राष्ट्रनिष्ठ सासद एव महान देशभक्त होने के साथ साथ आर्यसमाज के एक निष्ठ सिपाही थे। वे आर्यसमाज के सुयोग्य प्रहरी थे। वे सार्वदेशिक सभा तथा ... सभा के प्रतिष्ठित सदस्य रहे तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान भी रहे। आर्य महाविद्यालय ज्वालापुर के मुख्याधिष्ठाता के रूप मे उन्होंने विशेष ख्याति अर्जित की ... प० जी आर्यसमाजो के वार्षिकोत्सवों पर मच की शोभा थे। उन की अटूट सेवाओ के लिये उन्हे सार्वदेशिक सभा हरियाणा आ० प्र० सभा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश व विभिन्न आर्यसमाजो द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत भी किया गया था।

आर्यसमाज दीवान हाल मे १० सितम्बर १९८९ को दिल्ली की समस्त आयसमाजो की ओर से स्वामी ओमानन्द सरस्वती महाराज की अध्यक्षता में एक शोक सभा आयोजित की गई। इस सभा में प० क्षितीश वेद लकार प० म च्चद नद शास्त्री प० विशुद्धानन्द श स्त्री प० पृथ्वीराज शास्त्री प० बाल दिवाकर हस श्री ओ३मप्रकाश वर्मा श्रीमती शकुन्तला आर्या श्रीमती सरला महता श्री धर्मेन्द्र नाथ शास्त्री प० यशपाल सुधाशु प० जयनारायण आय श्री रामन थ सहगल श्री सूयदेव ने प० शिव कुमार जी शास्त्री के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये। उनके द्वारा की गई महान सेवाओ का उल्लेख करते हुए परमात्मा से कामना की कि उनकी आत्मा को सदगति प्राप्त हो तथ अ न व ली पीढी उनके कत त्व से प्रेरणा लेती रहे। आय समाज दीव न ह ल की ओर से श्री सूयदेव जी द्वारा घोषण की गई कि उनके द्वारा लिखित साहित्य का प्रचार प्रस र किया जायेगा तथा अप्रकाशित स हित्य को प्रकाशित किया जायगा। सभा का सञ्चालन श्री मु नचद गुप्त ने किया।

माननीय प० जी के सम्मान मे अनेक स्थानो पर शोक सभाएँ हुइ तथा शोक स देश भी प्राप्त हुए। प्रमुख सस्थाओ के नाम इस प्रकार

(शेष पृष्ठ ८ पर)

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

अभिक्रन्दयन स्तनयन्नरुण शितिङ्गो बृहच्छेपोनुभूमौ जभार।
ब्रह्मचारी सिंचति सानौ रेत पृथिव्या।
तेन जीवन्ति प्रदिशश्चतस्र ॥

अथर्व० काण्ड ११ अ० ३ सूक्त ५ १२।

पृथिवी के उन्नत स्थानो मे हो उपजाऊ शक्ति है। वह उपजाऊ शक्ति उनमे कैसे आई? प्रलय समय मे सत्त्व रज और तम इन तीनो गुणो की साम्यावस्था मे स्थिति रहती है। इस अवस्था का नाम ही प्रधान व प्रकृति रहता है। प्रलय को समाप्ति पर जब सृष्टि का समय आता है तो रज से ही उसमे हलचल उत्पन्न होती है। रज क्रिया का उत्पत्ति स्थान है अचल प्रकृति को वही चलायमान करता है और सत्य ज्ञान का उत्पत्ति स्थान है और वह उस क्रिया के कार्यों को समझने की शक्ति देता है। ज्ञान और क्रिया की उत्पत्ति ही सृष्टि की रचना के कारण हैं और इन्ही के तिरोभाव पर सृष्टि का अन्त होकर प्रलय होता है। ज्ञान ब्रह्म धर्म है और क्रिया क्षात्र धर्म है। इनकी उत्पत्ति ही जगत बनने का साधन है। इनका उदगम परमेश्वर से है और अत भी उसी मे होते है —

यस्य ब्रह्म च क्षत्र च
उभे भवत ओदने।
मृत्युयस्योपसेचन क
इत्थ वेद यत्र स ॥

श्वत और रक्त वण धारण किए अर्थात ब्राह्म और क्षात्र (ज्ञान और क्रिया का प्रसार करके नियन्ता का नियम ही चारो ओर शब्द करता है और गरजता हुआ भूमि के अन्दर उपजाऊ शक्ति लाता है अर्थात उसको प्रकाशित करता है। परमश्वर के अनादि नियम द्वारा ही जब जब तीनो गुणो की साम्यावस्था हिल कर सृष्टि रूप मे आती है तब ही महत्तत्व से आकाश आकाश से वायु वायु से अग्नि अग्नि से जल और जल से निकल कर पृथिवी प्रकाशित होती है। उसके अन्दर उपजाऊ शक्ति पूर्ववत ही रहती है परन्तु भूमि के अन्दर उपजाऊ शक्ति रहते हुए भी जब तक उसको ठीक करके उत्तम बीज उसके अन्दर नही गल जाता तब तक उसमे से अन्न औषधिया आदि उत्पन्न नही होते और जब अन्नादि उत्पन्न नही होते न रेत बन सकता है न वीर्य बन सकता है और न ही मनुष्य सृष्टि बढा कर आगे के लिए सृष्टि क्रम को जारी रख सकता है। वह बीज जिसने पृथ्वी मे गल कर मनुष्य रूपी रत्न उत्पन्न करने के लिए वीय की बुनियाद डाली अर्थात उत्तम अन्न आदि औषधियो को पैदा किया पहले पहल वह बीज पृथ्वी मे कैसे आया? उस बीज की पथ्वी मे स्थापना करने वाला वह अनादि ब्रह्मचारी है जो सारी सृष्टि मे व्यापक होते हुए भी अ प इम से प्रभावित नही होता जो सारी सृष्टि को चलायमान करता हुआ आप अचल है जो ब्रह्माड के अन्दर व्यापक होता हुआ भी उस ब्रह्माण्ड को बाहर स घरे हुए है जो रोम राम मे रमते हुए भी स्थल और सूक्ष्म दोनो इन्द्रियो के ज्ञान से परे है।

तदेजति तन्नैजति
तद दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु
सवस्यास्य बाह्यत ॥

यजु० अध्याय ४०। मन्त्र ५।

वह स्वय अनादि किन्तु इस सृष्टि का आदि ब्रह्मचारी शिक्षा देता है कि जिस भूमि मे उपजाऊ शक्ति है उसके अन्दर फल लाने वाला बीज स्थापना करने की शक्ति ब्रह्मचारी ही मे है। उत्तम से उत्तम उपजाऊ भूमि के अन्दर वही किसान ठीक बीज बो सकता है और उस से उचित फल भी प्राप्त कर सकता है जिस की इन्द्रिया अपने वश मे हो। जो स्वार्थी भोगी प्रत्येक समय प्रलोभनो मे फँसा रहता है प्रथम तो उस मे इतना सन्तोष ही नही कि वह बोने के लिए बीज बचा सके और फिर यदि बीज को खराब करके बो भी देवे तो उसमें इतना साहस नहीं कि अन्तिम फल आने तक प्रतीक्षा करे वह कच्चे फल ही तोडने लग जाता है और न तब अपने आपको सन्तुष्ट कर सकता है और न ही ससार को कुछ लाभ पहुचाता है। ब्रह्मचारी ही मे इतना बल है कि वह कर्म करता हुआ फल भोग की इच्छा को त्याग दे। यदि ब्रह्मचारी ने चारो दिशाओ मे अन्न वनस्पति औषधि उत्पन्न कर के जीवात्माओ को सीधा मार्ग दिखला दिया है। यदि कोई मनुष्य जीवित रहना चाहता है तो तभी रह सकता है जब कि वह सारे ससार के जीवन स्थिर रखने मे भाग ले यह शक्ति ब्रह्मचारी मे ही आ सकती है। इस मन्त्र का अर्थ करते हुए सायणाचार्य को भी मानना पडा है कि ब्रह्मचारी ही राष्ट्र मे सुकाल और वृष्टि का साधन है। वह बतलाता है—

यस्मिन् राष्ट्रे ब्रह्मचारी निवसति तत्र कालवृष्टिर्भवतीति तात्पर्यार्थ।

वेद के टीकाकारो ने ब्रह्मचारी शब्द से मेघ का ग्रहण किया है। यह अर्थ अयुक्त नही है क्योकि जिस मेघ की शक्तिया बिखरी हुई नही हैं जिस मेघ ने एक प्रकार से सयम द्वारा सारे जल को एकत्रित कर लिया है और साथ ही जो सम भाव से वर्षा करता है वही भूमि की उपजाऊ शक्ति को बढाता है। परन्तु यहा ब्रह्मचारी से मतलब वह खती करने वाला पुरुष है जिसके पुरुषार्थ पर ही मनुष्यो की जीवन यात्रा सम्भव है। जिस राष्ट्र में ब्रह्मचारी कृषक हैं सचमुच उस राष्ट्र मे अकाल वृष्टि कभी नही होती और इसलिए उस की सारी प्रजा सुखी रहती है। जिस देश के कृषिकारो के अन्दर स्वार्थ बुद्धि नही आती और वे कर्त्तव्य परायणता के नियम पर ही खती करते और अधिक से अधिक भूमि की उपज प्राप्त कर के जनता मे फैलाते हैं उस राष्ट्र में कोई अन्य शक्ति भी उपद्रव नही कर सकती क्योकि भूमि पति बनने का अधिकार उन्ही को है जो कि भूमि से रत्न निकालने का परिश्रम करें। इस लिए यदि भूमि पति ब्रह्मचारी हो तो राष्ट्र की रक्षा मे क्या सन्देह है।

शब्दार्थ

(अभिक्रन्दयन स्तनयन शितिङ्ग अरुण) चारो ओर शब्द करता गरजता हुआ श्वेत और रक्त वर्ण धारण किए (भूमौ बृहत शेप अनु जभार) वह बडी उपजाऊ शक्ति भूमि मे निरन्तर लाया है। (ब्रह्मचारी पृथिव्याम सानौ रेत सिंचति) ब्रह्मचारी पृथिवी के उन्नत स्थान मे बीज सींचता है (तेन चतस्र प्रदिश जीर्वन्ति) उसी से चारो प्रधान दिशाए जीवन यापन करती हैं।

वस्तुएँ शुद्ध हो जाये

ओ३म होता प्रथमामायेजे मनु समिद्धाग्निमनसा सप्तहोतभि।
त आदित्या अभय शर्म यच्छत सुगा न कत सुपथा स्वस्तये ॥

पावन यज्ञ अग्नि के द्वारा सब वस्तुएँ शुद्ध हो जायें।
जब प्रकृति वस्तुएँ शुद्ध बन तो जग का कल्याण बढाय ॥
प्रथम कोटि के यज्ञ कर्म को
दीप्त किया इस अग्नि धम को
किया मनस्वी ने आयोजित
जग हितकारी यज्ञ कर्म का।
जब बन मनस्वी अधिकारी गण तब क्यो नही स्वस्ति हम पायें।
जब प्रकृति वस्तुए शुद्ध बने तो जग का कल्याण बढाय ॥
यह केवल कर से नही किया है
सप्त होत्र ने इसे किया है
सब नाक आंख मुख कानो को
और लगा मन यज्ञ किया है।
सब प्रकृति-वस्तुएँ अभय बन तब मधुमय सुख लेकर आय।
जब प्रकृति वस्तुएँ शुद्ध बनें, तो जग का कल्याण बढाय ॥
अभय पूर्ण सब शुद्ध पदार्थ
सुविधाएँ सारे पुरुषार्थ
सुगम बनायें जीवन पथ को
हम को दे कल्याण यथार्थ।
जो किये सकलन हम ने हैं, वे शुभ शुद्ध श्रेष्ठ हो जाय।
जब प्रकृति वस्तुएँ शुद्ध बनें तो जग का कल्याण बढायें ॥

—देवनारायण भारद्वाज

ओ३म्
आर्य सन्देश

महात्मा गांधी और मद्य निषेध

आर्यसमाज अपने प्रारम्भिक काल से ही शराब खोरी को बन्द करने का पक्षधर रहा है। शराब बन्दी के लिए आर्यसमाज ने सदा से ही आदोलन भी चलाए है। महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रथ सत्यार्थप्रकाश मे राजधर्म विषयक छठे समुल्लास में राजा और सभासदो को जिन व्यसनो से बचने के लिए कहा है, उनमें से एक प्रमुख व्यसन है—मद्यपान और मादक द्रव्यो का सेवन। स्वामी जी ने मादक द्रव्यो को व्याख्या करते हुए लिखा है—बुद्धि लुम्पति यद् द्रव्य मदकारी तदुच्यते। जिसके सेवन से बुद्धि नष्ट होती है, वह वस्तु मादक है। स्वामी जी ने आर्यो के चक्रवर्ती साम्राज्य के समाप्त होने का एक प्रमुख कारण मद्य-मास का सेवन माना है। यादवो के नाश का कारण भी वे मद्यपान मानते हैं।

आर्यसमाज सदा से ही मद्यनिषेध का प्रचारक रहा है। महर्षि दयानद निर्वाण अर्ध शताब्दी के अवसर पर आर्यसमाज ने नशा-निवारण का अभियान चलाया था। इसमें शराब के साथ-साथ अन्य मादक द्रव्यो पर भी रोक लगाने की बात कही गयी थी। उस समय आयोजित नशा-बन्दी सम्मेलन मे अनेक प्रस्ताव भी पारित किए गए थे। इस समस्या का समाधान आसान नही है। यह सामान्य नियम है कि व्यक्ति अच्छाई की तरफ कम और बुराई की ओर अधिक जाते हैं। हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा कई वर्षों से मद्यनिषेध आन्दोलन चला रही है। आर्य प्रतिनिधि सभा की शताब्दी के आयोजन के अवसर पर व्यसन-मुक्ति सम्मेलन भी किया गया था। उन्हे कुछ सफलता भी मिली हैं परन्तु यह कहना अत्युक्ति न होगी कि उत्तर भारत के किसी भी प्रान्त की अपेक्षा मद्य की खपत का अनुपात हरियाणा मे सर्वाधिक है। अभी पिछले दिनो चौबीसी महम से एक पद यात्रा का आयोजन भी किया गया। आयोजको के पवित्र उद्देश्य मे सामाजिक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध सस्थाओ ने सहयोग भी दिया। इस पदयात्रा का समापन बोट क्लब पर एक विशाल रैली के साथ हुआ। राष्ट्रपति को एक ज्ञापन भी दिया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा भी इस दिशा मे सदैव प्रयत्नशील रही है। सभाप्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती इस लत के कारण बहुत चिन्तित हैं। यदि विदेशो मे ओलम्पिक्स मे अथवा अन्य प्रतियोगिताओ मे भारतीय खिलाडी किसी प्रकार के पदक प्राप्त करने में असफल होते हैं तो इसका कारण भी मद्यपान और अन्य नशीली वस्तुओ का सेवन ही है और स्वामी जी इसके लिए अनेक बार अपना रोष, आक्रोश एव दु ख प्रकट कर चुके हैं। सरकार इस दिशा मे बिल्कुल आखें मूदे हुए है। उन्हे राजस्व चाहिए, देश कही भी जाए। पिछले दिनो स्वामी जी महाराज ने आर्य-जगत् को एक त्रिसूत्री कार्यक्रम दिया है—गोवध बन्द करो, अग्रेजी हटाओ तथा शराब के ठेके उठाओ। ये तीनो ही सूत्र बहुत ही प्रासगिक हैं तथा देश-विदेश की सभी सभाओ, आयसमाजो तथा समान विचारधारा वाले अन्य सगठनो ने इनका स्वागत किया है तथा पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया है। युवा शक्ति की रक्षा के लिए इन तीनो सूत्रों की परिपालना अत्यन्त आवश्यक है। आर्यसमाजो तथा अन्य सस्थाओ मे इन सूत्रो को लेकर कार्यक्रम प्रारम्भ भी हो गये हैं। समाओ के अखबारों में इन विषयो पर लेख लिखे जा रहे हैं आर्यसमाजो मे समारोह किए जा रहे हैं। अभी दिल्ली में हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सर्वाधिक प्रखर स्वर यही था कि अग्रेजी हटाओ। नवम्बर मास मे एक रैली का आयोजन किया जायेगा, जिसका उद्देश्य होगा—गोरक्षा करो। वास्तव में जन चेतना किसी भी आन्दोलन की रीढ होती है और आर्यसमाज यही कर रहा है। यदि लोग लोग समय रहते चेत जाए तो सब ठीक हो जायेगा, अन्यथा इस जाति का नाश सुनिश्चित है।

हमने इस लेख का शीर्षक 'महात्मा गाधी और मद्यनिषेध दिया है। महात्मा गाधी की कुछ बातो का क्या अर्थ लिया जाए यह विचारणीय है। जैसे कि— मुझसे पूछा जाता है कि हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रश्न पर मैंने अपना मुह क्यों बन्द कर लिया। मैंने तो कहा कि यह सवाल मेरे हाथ से निकल गया और अब वह खुदा के हाथ मे है। जहा स्वामी श्रद्धानन्द जैसे व्यक्ति की हत्या हो सकती है वहा हिन्दू मुस्लिम एकता की बात कैसे सुनाऊ? मुसलमानो के ऐसे झगडे देखकर मैं थक गया। यदि कोई आदमी ये झगडे मिटाने के लिए अपना जीवन खर्च करता था तो वह मैं ही था। परन्तु मेरे प्रयत्नो का फल दिखाई नही दिया। मैंने तो सब्र कर लिया और खुदा पर भार डाल कर बैठ गया। ये वाक्य राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के हैं। जिस व्यक्ति के इशारे से सैकडो, हजारो लाखो, करोडो लोग चल पडते थे, वह धार्मिक सहिष्णुता के मामले मे कितना असहाय हो गया था।

उनकी असहायता की यही बात शराब बन्दी के विषय मे भी सही है। महर्षि दयानन्द तो मानते थे कि शराब मनुष्य को राक्षस बना देती है। यह बात गाधी जी भी कहते थे कि सस्ते मनोरजन के लिए मजदूर नैतिक पतन करने वाले सिनेमागृहो शराब की दुकानो और वेश्यालयो की शरण लेते हैं तथा उनकी उदात्त भावनाए मर जाती हैं। गाधी जी भी शराब का पूर्ण निषेध चाहते थे। उनका कहना था— यदि मुझे एक घण्टे के लिए भारत का डिक्टेटर बना दिया जाए तो मेरा पहला काम यह होगा कि शराब की दुकानो को बिना मुआवजा दिए बद करवा दिया जाए। ह त्र रे दुर्भाग्य—आज गाधी के नाम पर वोट बटोरने वाले शराब क हट ा । बजाय बढा रहे हैं। महात्मा गाधी की आत्मा को वे कैसा द ५ ह ह। गाधी जी ने यह भी कहा था—'हमे इस दलील के भुलावे मे नही आना चाहिए कि शराब बन्दी जोर जबरदस्ती के आधार पर नही होनी चाहिए और जो लोग शराब पीना चाहते हैं उन्हे उसकी सुविधाए मिलनी चाहिए। राज्य का यह कोई कर्त्तव्य नही कि वह अपनी प्रजा की कुटेवा के लिए अपनी ओर से सुविधाए द। मैं भारत का गरीब होना पसन्द करूंगा लेकिन मैं यह बर्दाश्त नही कर सकता कि हमारे हजारो लोग शराबी हो। महात्मा गाधी यह जानते थे कि राजस्व प्राप्ति की बात आगे चलकर आएगी पर दु ख इस बात का है कि गाधी की बात भी किसी ने नही सुनी।

महात्मा गाधी ने बीडी और सिगरेट का भी इसी प्रकार विरोध किया था—'शराब की तरह बीडी और सिगरेट के लिए भी मरे मन मे गहरा तिरस्कार है। बीडी और सिगरेट को मैं कुटेव मानता हू। यह मनुष्य की विवेक बुद्धि को जड बना देती है।

महात्मा गाधी गोरक्षा के भी प्रबल समथक थे। उन्होने कहा था—गोरक्षा मुझे मनुष्य के सारे विकासक्रम मे सबसे अलौकिक वस्तु मालूम हुई है। वे अग्रेजी सीखने के विचारहीन मोह से भी मुक्ति चाहते थे। इन विषयो पर फिर कभी लिखा जाएगा।

महात्मा गाधी का जन्मदिन २ अक्तूबर है। सारे देश मे उनकी जयन्ती मनाई जाएगी, सभी सरकारी कार्यालयो मे छुट्टिया भी रहेगी, विद्यालय भी बद रहेगे। हम नही जानते कि गाधी जी का सच्चा स्मरण कितनो को होगा। यदि हम वास्तव मे देश का समुन्नत देखना चाहते हैं तो शराब को तो एकदम बद किया ही जाना चाहिए। आयसमाज के त्रिसूत्री आन्दोलन का यह एक भाग है। सभी आयजनो को चाहिए कि वे इस दिशा में प्रबल चेतना जागृत कर और सार्वदेशिक सभा के आह्वान पर इस कार्य-क्रम को पूर्ण निष्ठा के साथ क्रियान्वित कर।

—डा० धर्मपाल

जन्म दिवस (१६ सितम्बर) के अवसर पर

शतायु हों

आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन

पद्म श्री आचार्य क्षेमचद 'सुमन' एक ऐसे आर्य साहित्य मनीषी हैं जिनके कृतित्व से देश का कोना-कोना भलीभाति परिचित है और जिनके लिए यह कहना अनुपयुक्त न होगा कि अपनी उपमा वे स्वय ही हैं। 'सुमन' जी ने एक ओर जहाँ काव्य, निबध, जीवनी, समीक्षा, इतिहास, पत्रकारिता, साहित्येतिहास स स्मरण आदि अनेक विधाओ पर लगभग ३० मौलिक ग्रथो का प्रणयन करके हिदी साहित्य के भण्डार को समृद्ध किया है वही दूसरी ओर अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रथो का सम्पादन करने का श्रेय भी उन्हे प्राप्त है। साथ ही कई प्रख्यात पत्र-पत्रिकाओ के सम्पादन मे भी आपका उल्लेखनीय योगदान रहा है। दस खण्डो मे प्रकाश्य दिवगत, हिदी सेवी नामक स दर्भ ग्रन्थ के प्रणयन द्वारा हिन्दी भाषा और साहित्य के स वधन तथा विकास का वास्तविक इतिहास प्रस्तुत करने का जो अभूतपूर्व अनुष्ठान आपने प्रारम्भ किया है, वह आपकी साहित्य-साधना की अक्षय उपलब्धि है। यह आपकी ही परिकल्पना और अनवरत साधना का परिणाम है कि अतीत के अन्धकार मे विलुप्त होते जा रहे अगणित हिन्दी लेखको मनीषियो, सेवको और साधको के योगदान का एक 'प्रामाणिक दस्तावेज हमे उपलब्ध हो सकेगा। इस सन्दर्भ ग्रन्थ के दो खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं और शेष रचना-प्रक्रिया मे है। अपनी इसी अप्रतिम उपलब्धि के कारण 'सुमन' जी को हिन्दी भाषा और साहित्य का 'चलता फिरता विश्वकोश कहा जाता है।

एक सुमन बगिया महकाता सुमनजी की हिन्दी-सेवाओ की अर्धशती पूर्ति पर उनकी स घर्षरत कर्म-साधना को रेखाकित करने वाला एक ग्रन्थ। इसका सम्पादन किया है सुमन जी के अनन्य स्नेही सुहृद श्री आनन्दीप्रसाद माथुर ने। इसका लोकार्पण भारत के उपराष्ट्रपति डा० शकरदयाल शर्मा ने १८ सितम्बर १९८९ को अपने निवास-स्थान पर किया है।

पं० क्षितीश वेदालंकार

१६ सितम्बर सन् १९१६ को ही दिल्ली मे जन्मे श्री प० क्षितीश वेदालकार की शिक्षा दीक्षा उत्तर भारत के सुप्रसिद्ध शिक्षण-स स्थान गुरुकुल कागडी महाविद्यालय हरिद्वार मे हुई थी। छात्रावस्था मे ही सन् १९३९ मे हैदराबाद रियासत मे आर्य सत्याग्रह का बिगुल बजते ही, आपने स्नातक परीक्षा का मोह छोडकर गुरुकुल के जत्थे का नेतृत्व करते हुए प्रथम सर्वाधिकारी महात्मा नारायण स्वामी जी के साथ गिरफ्तार होकर हैदराबाद निजाम के कारावास की नृशस यातनाये भोगी हैं।

आप सौमनस्य के प्रतीक, सज्जनता की मूर्ति और वैदिक-साहित्य के मर्मज्ञ होने के साथ-साथ राष्ट्रीयता के उपासक, भारतीयता के समर्थक तथा साहित्य अनुशीलन के अनन्य साधक है। आपने अनेक दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक पत्र पत्रिकाओ का सम्पादन करके पत्रकारिता के क्षेत्र मे जो ख्याति अर्जित की है वह ईर्ष्या को जन्म देने वाली है। दैनिक हिन्दुस्तान' मे सेवानिवृत्ति के पश्चात 'आर्यजगत् को आपने ऐसा सम्भाला, कि वह आयजगत् का पर्याय बन गया है। वैदिक सिद्धातो, यात्रा विवरणो निबधो तथा समीक्षा आदि के लगभग दो दर्जन ग्रन्थो की रचना करने के अतिरिक्त आपने कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ भी सम्पादित किये "पजाब तूफान के दौर मे'—आपकी कृति का देश भर में भारी स्वागत हुआ, जिसका अनुवाद भी अनेक भाषाओ मे किया जा चुका है।

वैदिक तथा सामाजिक साहित्य सृजन के साथ-साथ आप की वक्तृत्व कला की धाक भी समूचे आर्यजगत् मे जमी हुई है। आपके ओजस्वी तथा अनुसन्धानात्मक व्याख्यान आर्यजगत मे सत्प्रेरणा के स्रोत हैं उनमे वैदिक सिद्धान्तो का विषयानुकूल परिपाक है, जो शिथिल-शिराओ मे रक्त का स चार करते हैं।

ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त और आर्यसमाज के कर्मठ-सेनानी, प० क्षितीश जी वेदालकार वास्तव मे आर्यसमाज, आर्य सस्कृति एव वैदिक धर्म के मूर्तमान प्रतीक हैं। आपने अपनी लेखनी और वाणी से सुषुप्त आर्य-जाति में उत्साह एव नवजीवन का स चार किया है।

अब दोनो के ७४वें जन्म दिन (१६ सितम्बर ८९) पर "आर्य-सन्देश" समस्त आर्यजगत् और हिन्दी सेवियो की ओर से आपके दीर्घायुष्य की शुभकामना करता है।

—सुखचन्द गुप्ता

हिन्दी कविता की नहीं कम्प्यूटर की भाषा है

१४ सितम्बर, हरिद्वार। गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के तत्वावधान में "हिन्दी दिवस" सोत्साह मनाया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने मुख्य अतिथि के रूप में हिन्दी का गुणगान करते हुए कहा कि हिन्दी और भारतीय भाषाओ को उनका महत्त्वपूर्ण और उचित स्थान तब तक प्राप्त नही हो सकता, जब तक अग्रेजी को यहाँ से सदा के लिए नही हटाया जाता। अतएव "अंग्रेजी हटाओ" और "हिन्दी चलाओ" अभियान शुरू करने की प्रबल आवश्यकता है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के रीडर डा० श्यामसुन्दर शुक्ल ने कहा कि हिन्दी दबाव की नही प्रेम की भाषा है। इसका व्यापक जनाधार है।

आचार्य एव अध्यक्ष हिन्दी विभाग डा० विष्णुदत्त राकेश ने हिन्दी की सवैधानिक स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा कि हिन्दी आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और आधुनिक टैक्नोलोजी को व्यक्त करने में पूर्ण समर्थ और सक्षम है। अब वह कविता की ही नही कम्प्यूटर की भी भाषा है।

इस अवसर पर फीजी निवासी नेतराम शर्मा, मारीशस निवासी विरजानद उमा, वारगम के तेलगू भाषी छात्र बशीर अहमद तथा कुल सचिव डा० वीरेन्द्र अरोडा ने भी हिन्दी के महत्त्व पर अपने विचार व्यक्त किये।

जय हिन्दी ! जय भारती

जो भारत के भाग्य-भाल की, चमक रही शुचि बिन्दी है।
कोटि-कोटि जन जननी भाषा, हिन्दी है वह—हिन्दी है ॥

सस्कृत मा की पावन पुत्री, जिसकी पावन परिभाषा।
आचल मे है रही सजोए, मानवता की अभिलाषा ॥

'चन्द' स्वरों सग जो गूजी है, लेकर तूफानी इतिहास।
प्राकृत से अपभ्र श पालीतक जिसका क्रमश हुआ विकास ॥

'जगनिक' की ओजस्वी वाणी से जो हुई विभूषित है।
इस धरती का कण-कण जिसके, जयगानो से पोषित है ॥

है पाथेय बनी जिसकी रज, जिसमें 'भूषण' का गर्जन।
'तुलसी की जिसमें आभा है, अमर शहीदो का सर्जन ॥

अजस्र धार में जिसकी मिलती 'सूर' काव्य की धारा है।
मनुष्यता से सपूरित जो वह साहित्य हमारा है ॥

दयानन्द से ऋषियो ने है, जिस हिन्दी को दुलराया।
गाधी ने, अरविन्द, तिलक ने, जिसको मा का रूप बताया ॥

पत-महादेवी दिनकर की कृतिया जिसकी हैं प्रहरी।
जिसका जय सगीत सुनाती गगा गोदावरी गहरी ॥

लगभग चौदह बहने इसकी बहुत बडा परिवार है।
इसकी रक्षा हित कोटिक जन कटि बाधे तैयार हैं ॥

उसी भव्य हिन्दी की आओ ! चले उतारे आरती।
कोटि कोटि जन मिलकर गाओ ! जय हिन्दी ! जय भारती ॥

—राधेश्याम शर्मा

हिन्दी यदि हम ही नहीं अपनायेंगे, तो क्या इसे विदेशी अपनायेंगे?

जयपुर में मनु की प्रतिमा और आर्यसमाज

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

जयपुर हाईकोर्ट के प्रांगण में मनु की प्रतिमा लगाए जाने पर कुछ बन्धुओ ने इसका विरोध किया है। अदालत में भी इस प्रतिमा को हटाने के लिए याचिका दायर की गई है।

भगवान् मनु के विषय मे अनेक प्रकार की भ्रान्तिया-विद्वानो, बुद्धिजीवियो एव आम जनता मे व्याप्त हैं। कुछ लोगों का कहना है कि जातिवाद, भेद भाव व ऊच-नीच का प्रतिपादन मनुस्मृति मे किया गया है। इसी पक्ष को लेकर ही अनेक प्रकार के विवाद खडे किए जा रहे हैं।

जयपुर की घटना के सम्बन्ध मे कुछ उच्चकोटि के महानुभावो द्वारा आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानद सरस्वती की मनुस्मृति के विषय मे सम्मति जानने का अनुरोध किया गया है। हम बहुत दिनो से विचार कर रहे हैं कि इस विवाद ग्रस्त मामले पर स्वामी दयानन्द की क्या प्रतिक्रिया थी, उस पर विस्तार से विवेचन किया जावे। महर्षि दयानद के पदार्पण से पूर्व हिन्दू धर्मशास्त्रो मे विशेषकर वाम मार्गियो विदेशी, विधर्मी तथा बौद्ध धर्मियो द्वारा अनेक प्रकार की मिलावटे प्राचीन साहित्य मे की गई थी। पुराणो मे भी इसी परम्परानुसार परस्पर विरोधी और वेद विरुद्ध तथा असगत कहानिया एव काल्पनिक प्रकरण समय-समय पर सम्मिलित कर दिए गए। उन सबका एक ही उद्देश्य था कि ऐसी बातो के प्रचार से भविष्य मे जन सामान्य सत्य सनातन वैदिक धर्म से विमुख होकर विधर्मियो की आलोचना व कुचक्र का शिकार होकर पारस्परिक वैमनस्य मे पड कर हिन्दू समाज को तोडने मे सहायक हो। साहित्य में प्रक्षेप की यह परम्परा वाम मार्गियो से चलकर ७५० वर्ष पर्यन्त इस्लामी राज्य तथा २०० वर्ष के ब्रिटिश शासनकाल तक चलती रही। लार्ड मैकाले ने भी इसी परम्परा को प्रोत्साहन दिया।

महर्षि दयानन्द का मत —

इस सदर्भ मे हम यह स्पष्ट करना चाहते है कि महर्षि दयानन्द ने मनुस्मृति, महाभारत, वाल्मीकि रामायण व पुराणो में की गई इस प्रकार की मिलावट का स्पष्ट रूप से खण्डन किया है। दयानन्द जैसे बुद्धिजीवी व प्रखर समालोचक ने अपने व बेगाने सभी की वेद विरुद्ध आस्थाओ को उखाडने का प्रयत्न किया था और मनु के नाम पर की गई मिलावट को उन्होने कभी स्वीकार नही किया। आर्यसमाज यह घोषणा करना अपना कर्तव्य समझता है कि मनुस्मृति के जिन श्लोको पर आपत्ति की जा रही है वे मनु के नाम पर प्रक्षेप हैं। इसके बाद मे की गई इस मिलावट को निकालने के लिए आर्यसमाज अपने जन्मकाल से ही प्रचार कर रहा है। मनुस्मृति में यह स्पष्ट है—

(१) जन्मना जायते शूद्र अर्थात् (जन्म से कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य नही है)

(२) यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता (स्त्रियो के सम्मान की महिमा)

मनु महाराज ने इस प्रकार के सार्वभौम सत्य का प्रतिपादन किया है। इसलिए मनु के विषय मे कुछ समय से जो आदोलन खडा किया जा रहा है, वह मनु के विरुद्ध नही बल्कि उसके साहित्य मे की गई मिलावट है, जिसका आर्यसमाज अपने जन्मकाल से विरोधकर रहा है।

मनु की प्रतिमा का विरोध करने वाले बधुओ से हमारा निवेदन है कि वे वस्तुस्थिति का गहराई से अध्ययन करें। विदेशियो द्वारा फैलाई गई गलत फहमियो का शिकार न हो। मनुस्मृति ससार के उन ग्रन्थो मे है जिसको आधार मानकर सविधान बनाए गए है। विदेशो मे भी अनेक स्थानो पर मनु के सत्य सिद्धान्तो का सम्मान और प्रतिष्ठा है और कही कही मूर्ति भी स्थापित हैं। मनु के विरोध करने वालो से भी हमारा निवेदन है कि वे मनुस्मृति को स्वय आद्योपात पढ और बिना पढे व जाने विरोध करना उचित नही है। हम सनातन धर्मी विद्वानो से भी निवेदन करते हैं कि कोटि-कोटि हिन्दुओ को एक झण्डे के नीचे लाने के लिए इस प्रकार की मिलावटो को दूर कर धर्म के वास्तविक स्वरूप स्पष्ट करें।

महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे मनु के लगभग ७५० श्लोको को उदधृत किया है। मनुस्मृति के प्रसग मे महर्षि दयानन्द से काशी मे किसी ने प्रश्न किया था कि आप मनु का इतना समर्थन क्यो करते हैं तो महर्षि का उत्तर था कि मनु के वचन औषधि नही अपितु महौषधि हैं।

दानवीर स्व० ला० दीवान चन्द आवल अमर हैं

देने वाले दाताओ मे ऐसे तो बहुत मिल जायेंगे जो मागने पर देते हैं, नाम कमाने या काम निकालने की दृष्टि से देते हैं परन्तु ऐसे दाता विरले ही होते हैं जो किसी के डर से नही, मागने या हाथ पसारने से भी नही, अपना काम निकालने के लोभ से भी नही तथा इस जीवन में यश और कीर्ति को अपनी आखो से देखने और कानो से सुनने के लिए भी नही, एक मात्र केवल ईश्वर आज्ञा, कर्त्तव्य भावना, धर्म निष्ठा, परलोक और पुनर्जन्म में आस्था, तथा 'श्रद्धया देयम्' को ही अपना आदर्श मान कर अपनी सम्पत्ति का थोडा नही आधा नही, चौथाई नही—पूर्ण, पूर्ण ही क्या सम्पूर्ण, यही नही, सर्वस्व धन-सम्पत्ति ईश्वरार्पण करके प्रभु की इच्छा में विलीन हो जाते हैं।

इन उच्च कोटि के दानवीरों में प्रसिद्ध आर्य समाजी स्वर्गीय लाला दीवानचन्द जी आवल थे, जिनका नाम उक्त गुणो के कारण आर्य जगत् मे ही क्या सभी वर्गों, जातियो, व्यवसायियो सस्थाओ, देश और विदेशो मे अत्यन्त आदर और श्रद्धा के साथ लिया जाता रहेगा।

दानवीर स्व० ला० दीवानचन्द जी के १०५ वे जन्म दिवस, २४ सितम्बर को आर्यसमाज दीवानहाल मे आयोजित समारोह में गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति, भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री एव प्रख्यात आर्य नेता प्रो० शेरसिह ने इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि भारतीय सस्कृति हमे तप, त्याग तथा दान की प्रेरणा देती है और इसी के अनुरूप स्व० लाला दीवानचन्द जी ने जीवन पर्यन्त अपनी सात्विक कमाई से आर्यसमाजो, गुरुकुलो, शिक्षा सस्थाओ, अनाथो और विधवाओं को भरपूर दान और सहयोग दिया। उन्होंने आगे कहा देश, धर्म और जाति में प्राणो का सचार करने वाली महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सस्थापित जागृत सस्था "आर्यसमाज" का प्रतिनिधित्व करने वाला भव्य भवन "दीवान हाल" किले के सामने अपना ऊँचा मस्तक किये, गौरव के साथ लाला दीवान चन्द की अमर गाथा का बखान

(शेष पृष्ठ ८ पर)

गाधी जयन्ती पर

नमन शत बार

देव दूत हे! प्रेम प्रचारक,
मानवता के हे! उद्धारक,
दया-प्रेम-सेवा की प्रतिमा-
जर्जर भारत के उन्नायक
तुमने भरी धरा के उर मे,
नव चेतन की शक्ति अपार।
बापू! तुम्हे नमन शत बार॥

देश स्वतत्र कराया तुम ने,
उन्नति पथ दिखलाया तुम ने,
ऋषि-मुनियों के निर्देशित पथ-
पर यह राष्ट्र चलाया तुम ने,
दिव्य तुम्हारे अपराजित बल-
से था हुआ चकित ससार।
बापू! तुम्हे नमन शत बार॥

ज्योति पुञ्ज तुम ललित ललाम,
देव पुरुष-निश्छल-निष्काम,
राष्ट्र भक्ति की रही प्रवाहित-
धारा अन्तस् मे उद्दाम,
हुए प्रकम्पित देख तुम्हारी-
शक्ति धरणि के अत्याचार।
बापू तुम्हे नमन शत बार॥

□ राधेश्याम 'आर्य विद्यावाचस्पति

आर्य जगत के समाचार

मद्यनिषेध के लिए बोट क्लब तक पदयात्रा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान प्रो शेरसिह जी तथा परोपकारिणी सभा अजमेर के कार्यकर्त्ता प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती महाराज की अपील पर शराबबदी पदयात्रा का प्रारम्भ ९ अगस्त १९८९ को चौबीसी महम हरियाणा के चबूतरे से प्रारम्भ हुई। इसका उद्देश्य शराब बदी के साथ साथ दहेज आदि सामाजिक बुराइयो के खिलाफ भी जन-जागरण करना था। यह पद यात्रा १६ सितम्बर १९८९ को दिल्ली के बोट क्लब पर विशाल प्रदर्शन के साथ सम्पन्न हुई।

हजारो पैदल यात्रियो के अलावा लगभग डेट सौ बसो मे भी भरकर लोग यहाँ आए। यहा वे जनपथ राजपथ क्रासिग पर एकत्रित हुए, जहाँ पहले से एक बडा शामियाना लगाया हुआ था।

प्रो० शेरसिह के नेतृत्व मे एक प्रतिनिधि मडल राष्ट्रपति को ज्ञापन देने गया। पर वहा कहा कि राष्ट्रपति नही हैं, इसलिए ज्ञापन उनके सचिव को दे दिया जाए मगर प्रतिनिधि मडल राष्ट्रपति को ही ज्ञापन देना चाहता था। वे वापस लौट आए। फिर सलाह-मशविरे के बाद लगभग चार-पाच हजार लोग राष्ट्रपति भवन की ओर चल पडे। अपने कुरते-कमीज पर सब ने एक बैज लगा रखा था जिस पर लिखा था 'जो सरकार शराब से राजस्व जुटाती है, वह गरीबी को नही गरीब को मिटाती है।

हजारो लोगो का हुजूम पुलिस की घेराबदी तोड आगे बढ गया। उन्हे रोकने के लिए पुलिस ने लाठी-चार्ज किया। कुछ लोगो को चोटे भी आई। फिर पदयात्री वही चौक पर ही जम गए।

राष्ट्रपति के नाम आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा और सर्वखाप पचायत द्वारा तैयार किए गए ज्ञापन मे कहा गया है दुर्भाग्य की बात है कि एक-एक करके प्रदेशो की सरकारो ने अधिक राजस्व बटोरने के लिए मद्य निषेध कार्यक्रम को रद्दी की टोकरी मे फक दिया है।

वे सतो के उपदेश गाधी और नेहरू के वचन पूरी तरह भूल गए है और गरीबो के खून-पसीने की कमाई को झपटने के लिए अधी दौड मे भागे जा रहे हैं। शराब के कारण भारत की जनता आज पहले से अधिक बीमार और दिवालिया होती जा रही है।

लगभग १३० किलोमीटर पैदल चलकर आए शराबबदी पदयात्री हाथ जोडकर निवेदन करने आया है कि नित्यप्रति उजडते परिवारो, भारतीय समाज की स्वस्थ परपराओ मर्यादाओ तथा सविधान मे प्रतिपादित सिद्धातो की रक्षा के लिए शराब पर प्रतिबध लगाया जाए।

रतनदेवी आर्य गर्ल्स सीनियर सैकण्डरी स्कूल

देश के धन का सही इस्तेमाल नही : रोमेश भण्डारी

हमारे देश मे धन बहुत है परन्तु इसका उपयोग ठीक प्रकार से नही होता। इसीलिए प्रतिभा सम्पन्न होते हुए भी पुस्तको, कापियो और फीस के अभाव मे लाखो बच्चे इच्छा होते हुए भी पढाई नही कर पाते। उपराज्यपाल श्री रोमेश भण्डारी ने ये विचार २९ अगस्त, १९८९ को जमनापार रतनदेवी आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मे व्यक्त किए। इस समारोह मे इण्डियन ऑयल कार्पोरेशन ने जरूरतमद छात्रो को बीस हजार रुपये मूल्य की पुस्तके, कापियाँ, स्टेशनरी, स्कूली ड्रेस और स्कूल के लिए दो बडे टेंक मुफ्त भेंट किये। महानगर पार्षद श्री स्वर्णसिंह जोश न समारोह की अध्यक्षता की। इस समारोह में इण्डियन ऑयल कार्पोरेशन के चीफ एरिया मैनेजर महेन्द्र खमेसरा, सिद्धार्थ धर्मार्थ शिक्षा सस्था के प्रधान श्री विनयचन्द्र गर्ग जैन समाज के सचिव श्री स्वदेशभूषण जैन, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव और विद्यालय की प्रबन्ध समिति की अध्यक्षा श्रीमती ईश्वर देवी धवन प्रबन्धक श्री नेतराम शर्मा, प्राचार्या श्रीमती सुशीला गोयल तथा अन्य अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

आर्यसमाज कीर्तिनगर में

वैदिक संस्कृति सन्देश सम्मेलन

आर्यसमाज कीर्तिनगर में २१ अगस्त से २७ अगस्त तक वेदप्रचार सप्ताह मनाया गया। प्रतिदिन प्रातः काल प० सुभाष विद्यालकार के ब्रह्मत्व में यज्ञ तथा रात्रि मे स्वामी आनन्दवेश की वेद कथा तथा इससे पूर्व प० वेदव्यास एव प० ज्योतिप्रसाद के भजनोपदेश हुए। पूर्णाहुति के दिन वैदिक सस्कृति का अमर सन्देश सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी आनंदवेश ने की और इसका सयोजन प० सुभाष विद्यालकार ने किया। इस सम्मेलन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, महामत्री श्री सूर्यदेव, डा० महेश विद्यालकार, प० वेदप्रकाश शास्त्री और श्रीमती सुनीति आर्या ने अपने विचार व्यक्त किए।

वेद सम्मेलन सम्पन्न

प्रातीय आर्या महिला सभा के तत्त्वावधान मे आर्यसमाज मदिर नारायणा विहार प्रागण मे श्रीमती सरला महता की अध्यक्षता मे वेद सम्मेलन उल्लासपूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि श्रीमती प्रभात शोभा पण्डिता और मुख्य वक्ता डा० उषा शास्त्री, डा० शशिप्रभाकुमार, डा० सुनीति आर्या ने आर्य बहिनो को सम्बोधित किया। यजुर्वेद के ३२वे अध्याय पर आधृत मत्रपाठ प्रतियोगिता में नारायणा की श्रीमती विमला ओबरॉय और मदिर मार्ग की डा० चद्रप्रभा को सयुक्त रूप से प्रथम पटेलनगर की श्रीमती सुशीला मेहता को द्वितीय तथा पजाबी बाग की श्रीमती सतोष कपूर को तृतीय पुरस्कार मिले। निर्णायक थी श्रीमती प्रकाशवती बग्गा शास्त्री, श्रीमती सुशीला दीक्षित एव श्रीमती सुशीला आनद। अभ्यागतो का स्वागत किया प्रातीय आर्या महिला सभा की प्रधान श्रीमती शकुन्तला आर्या ने और सम्मेलन का सफल सयोजन श्रीमती कृष्णा चड्ढा ने किया। □

आर्यसमाज मोती बाग

आर्यसमाज मोती बाग की ओर से, मोतीबाग-प्रथम बेगम जैदी मार्किट के निकट २ सितम्बर १९८९ को रात्रि में वेद प्रचार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डा० धर्मपाल, प० यशपाल शास्त्री और प० ओ३मवीर शास्त्री स्वामी स्वरूपानद सरस्वती के भाषण हुए। प० चुन्नीलाल आर्य के भजनोपदेश हुए। विशाल जन समूह को सम्बोधित करते हुए आर्य विद्वानो ने 'मनुष्यत्व' को ग्रहण करने तथा 'राक्षसत्व' को छोडने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। आर्यसमाज के त्रिसूत्री कार्यक्रम— अग्रेजी हटाओ, भारतीय भाषायें लाओ, गोवध बद करो और शराब के ठेके उठाओ का भी प्रचार किया गया। श्री जयप्रकाश शास्त्री और उनके साथियो ने वेद प्रचार का सुन्दर प्रबध किया। □

वेदप्रचार सप्ताह

वेदप्रचार मण्डल दिल्ली देहात के तत्त्वावधान में दिनाक १७ अगस्त २६ अगस्त तक वेदप्रचार माला धूमधाम से सम्पन्न हुई। दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रो के दस गाँवों में यह कार्यक्रम दस दिनो तक चला। प्रात गायत्री महायज्ञ एवं सायकाल आर्य सगीत तथा वेद प्रवचनो ने दिल्ली देहात को जगा दिया। प्रचार का श्रेय विद्वान् पुरोहितों, उपदेशकों भजनीकों तथा दिल्ली देहात के कर्मठ युवा नेताओ को जाता है। जिन्होंने दस दिनो तक अपने समस्त निजी कार्यो से अवकाश करके रात दिनएक किया। □

गोविन्दस्वामी स्मृति दिवस

आर्यसमाज गोविद भवन दयानद वाटिका सब्जीमण्डी में रविवार २७ अगस्त १९८९ को स्वर्गीय बाबा गोविन्दराम महात्मा गोविंद स्वामी का स्मृति दिवस मनाया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, महामत्री श्री सूर्यदेव वेदप्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानद सरस्वती, श्री लाजपत राय निझावन, स्वामी शातानद सरस्वती, श्री सत्यदेव स्नातक, श्री चद्रमोहन आर्य तथा स्थानीय आर्यसमाज के अधिकारियो एव परिवार के सदस्यो ने महात्मा जी के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

卐

चाट मसाला

चाट सलाद और फलो को अत्यन्त स्वादिष्ट बनाने के लिये यह बेहतरीन मसाला है।

CHAT MASALA

Excellent for garnishing Chat Salads and fruit to provide delicious taste and flavour

अमचूर

अपनी क्वालिटी तथा शुद्धता के कारण यह खाने मे विशेष स्वाद और लज्जत पैदा करता है।

AMCHOOR (Mango Powder)

It adds special tangy taste and flavour to your dishes with its quality and purity

• BRA • PANTIES • UNDERWEAR • BANIAN •

फुटकर सेल्स डिपो :— चमनलाल इण्टरप्राइजिज

२, बोजपुरा, अजमल खाँ रोड करोल बाग, नई दिल्ली-११०००५
फोन : ५८२०३६, ५७२९२२४

R N No 32387/77 Post in N D P S O on 28 29 9 89 Licenced to post withou p epayment Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७
पूव भुगतान बिना भेजने का लाइसस न० यू १३६

(पष्ठ १ का शेष)

डा० सत्यकतु का जीवन

गगाप्रसाद विमल ने हि दी के प्रचार प्रसार मे आयसमाज की महत्वपूण भूमिका की सराहना करते हुए हिदी को राष्ट्रीय एकता व अखण्डता का आधार बताया।

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धमपाल ने कहा कि हमे मूध य साहित्यक र डा० सत्यकेतु के जीवन व आदर्शों से प्रेरणा लेनी चाहिए। प० यशपाल सुधाशु व श्री जयनाथ सहगल ने भी डा० सत्यकेतु के ०य त्त व कृति व पर प्रकाश डालने ए हिदी समाज व राष्ट्र के प्रति उनकी सेवाओ की सराहना की महामत्री सूर्यदेव ने धन्यवाद ज्ञापन एव मत्री श्री मूलचद गुप्ता ने मच स चालन किया

(पृष्ठ १ का शेष)

पं० शिवकुमार शास्त्री

हैं —आयसमाज हनुमान रोड करोलबाग शालीमार बाग म दिर माग सदर बाजार बाज र सीता राम लक्ष्मी नगर ग्रीन प क लाज पत नगर कीर्ति नगर पटेल नगर दिल्ली आयसमाज मेस्टन रोड कानपुर आयसमाज अमरोहा आय समाज सीस मऊ कानपुर। वेद सस्थान नई दि ली वेदोद्धारिणी प्रतिष्ठान नई दि ली आय महिला मण्डल करौनन्ग श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल सस्कृत मह विद्यालय खडा खुद दिल्ली पाणिनि आ य कन्या महाविद्यालय ब र । क गुरु कुल महाविद्यालय नरेला दिल्ली आ दि।

(पृष्ठ ५ का शेष)

दानवीर ला० दीवानचंद

कर कह रहे है कि धन की गति उसके सचय मे नही अपने ऐशो आराम के म धनो में खच करने मे नही अपि ु ल ० दीवानचन्द की तरह ईमानदारी और परिश्रम से प्राप्त सम्पत्ति क देश जाति और धम की रक्षा मे खच करने मे है।

आयसमाज दीवानहा ल आय समाज हनुम न रोड दीवानचन्द आय सोनियर सेकेण्डरो स्कूल ल धी कालोनी सत्यभामा कन्या उच्चतर म ध्यमिक विद्या लय करोल बा ग दीवानचन्द नर्सिंग होम दीवानचन्द औषधालय दीवानचन्द ट्रस्ट सत्यभाम ट्रस्ट अ दि स ० दीवानचन्द जी के जीवन्त स्म रक हैं जो सदा उनकी यशोगाथा गाते रहेंगे।

इस अवसर पर वैदिक विद्वान डा०महेश विद्यालकार प० यशपाल सुधाशु श्री सूर्यदेव महामत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा डा० हसराज चिकित्सा अधिकारी श्रीचन्दी ने दीवानचन्द जी के कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डालकर उनके जीवन से प्ररणा प्राप्त करने का आह्वान किया।

प्रारम्भ में आर्यसमाज दीवान हाल के मत्री मूलचन्द गुप्त ने स्व० लाला दीवानचद जी के सघर्ष मय जीवन और उनके द्वारा किये गये परोपकार के कार्यों की विस्तृत झाकी प्रस्तुत की। उसके पश्चात आय भजनोपदेशक श्री गुलाबसिंह र घव तथा आयसम ज कन्या उच्चतर म ध्यमिक विद्यालय चावडी बाजार की छ त्राओ द्वारा समूहगान प्रस्तुत किए गए।

सेवा में—

दि ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १ फोन ३१०१५० के लिए ... द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस गली न०१७ कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५१

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

वर्ष १२ : अंक ४६ | रविवार ८ अक्तूबर १९८९ | आश्विन सम्वत् २०४६ विक्रमी | दयानन्दाब्द—१६५ | सृष्टि सम्वत १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २६ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश मे ५० पौंड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन सम्पन्न

आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन ३० सितम्बर व १-२ अक्तूबर, ८९ को दिल्ली के हंसराज कालेज के विशाल सभागार में हुआ। इस आर्यसमाज के बुद्धिजीवी सम्मेलन मे भावनात्मक भाषण न होकर व्याव-हारिक एव क्रियात्मक, रचनात्मक सुझावों पर अधिक बल दिया जा रहा है। ये विचार पूर्व पीठिका के रूप मे सम्मेलन के सयोजक डा० प्रशात कुमार वेदालकार ने रखे।

इस सम्मेलन मे देश के प्राय. सभी प्रदेशो के लगभग २६० प्रति-निधि आए। पश्चिमी बगाल, उडीसा, बिहार, आध्र प्रदेश व महा-राष्ट्र आदि से प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन मे भाग लिया। इसमे आर्य समाज के अनेक सगठनो व सगठन के अतिरिक्त आर्यसमाज के हितैषी विद्वानो ने भी सोत्साह भाग लिया।

सम्मेलन का आरम्भ आर्य जगत् के आदरणीय सन्यासी व यति-मंडल के प्रधान स्वामी सर्वानन्द जी महा-राज ने अपने आशीर्वाद से किया। उन्होंने कहा कि आज भी महर्षि दयानन्द के आर्यसमाज के नियमों पर बल देने की आवश्यकता है।

अपने प्रारम्भिक भाषण मे सम्मेलन के सयोजक डा० प्रशात वेदालंकार ने आर्यसमाज को गति-शील करने के लिए अपने ११ सूत्री कार्यक्रम को प्रस्तुत किया जो निम्न प्रकार है—

१ वैदिक व भारतीय सस्कृति के अनुसन्धान को प्रश्रय देने के लिए शोध पुस्तकालयो की स्थापना।

२ सभी भाषाओ मे भारतीय संस्कृति व साहित्य के प्रकाशन की बृहद् योजना।

३ प्रत्येक प्रदेश में बुद्धिजीवियो का सगठन। सब सब विद्वानों का संगठन जो भारतीय संस्कारो से ओतप्रोत हैं, पर भारतीयता के प्रचार की वर्तमान योजना से उदा-सीन हैं।

४ प्रत्येक आर्यसमाज में योग्य पुरोहित की नियुक्ति। पुरोहित के कर्तव्यो मे आर्यसमाज के वातावरण को भव्य बनाना भी है।

५ प्रत्येक आर्यसमाज को पिछडी जातियो के बच्चो को गोद लेकर उन्हें सास्कृतिक व शिक्षित बनाने का उत्तरदायित्व सौपना।

६ सगठन को चुस्त बनाने के लिए व्यक्तियो का दो बार या अधिक से अधिक तीन बार किसी एक पद पर बने रहना।

७ प्रत्येक जिले मे किसी गुरु-कुल की स्थापना की योजना ताकि प्रत्येक को शिक्षित करने का स्वप्न पूरा किया जा सके।

८ देश की राजनीति को प्रभा-वित करने के लिए विविध दलो मे कार्यरत नेताओ का सगठन।

९ किसी साहित्यिक व सास्कृतिक पारिवारिक पत्रिका का प्रका-शन।

१० देश के प्रत्येक भाग मे आर्यसमाज के बुद्धिजीवी सम्मेलन का आयोजन।

११ उक्त उद्देश्यो की पूर्ति के लिए एक समिति का गठन जो निर-तर आर्यसमाजों व प्रतिनिधि सभाओ से उक्त उद्देश्यों की पूर्ति कराने मे सलग्न रहें।

पहला सम्मेलन गुरुकुल व आर्ष शिक्षा-प्रणाली की समस्याए व उन के समाधान के विषय मे था। यह सम्मेलन डॉ० जयदेव विद्यालकार प्रो० एवं अध्यक्ष श्रीमद्दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की अध्यक्षता में हुआ। इसके मुख्य अतिथि स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती थे। विषय-प्रतिपादन स्वामी सत्यपति जी तथा प्रो० वेदव्रत जी ने किया। डा० निरूपण विद्यालकार, डा० महावीर आचार्य हरिदेव रेल सस्थान के राजभाषा निदेशक डा० विजय कुमार मल्होत्रा तथा अनेक सस्थाओ मे सम्बद्ध आचार्यों ने उत्साहपूर्वक इस सत्र मे भाग लिया। सभी ने आज की परिस्थितियो मे भी आर्ष और गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली की आवश्यकता पर बल दिया जिससे भारतीयता के सस्कारो को शिक्षा के माध्यम से प्रसारित करने मे सहायता मिले। दूसरे सत्र का सयो-जन प्रो० जयपाल विद्यालकार ने किया। इस सम्मेलन मे वर्तमान शिक्षा नीति पर विचार किया गया।

आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन मे एक अक्तूबर को सामाजिक व राष्ट्रीय प्रश्न और आर्यसमाज सत्र सम्मेलन की अध्यक्षता पूर्व रक्षामत्री प्रो० शेरसिंह ने की।

इस अवसर पर विषय का प्रति-पादन करते हुए प्रसिद्ध पत्रकार श्री क्षितीश वेदालकार ने कहा कि जन-सख्या और निर्धनता की समस्या का हौआ खडा किया गया है। सरकार बडे बडे उद्योग धन्धे तो खोलती है परन्तु बेरोजगारो दूर करने के लिए सिचाई के लिए गावो मे पानी उप-लब्ध कराने का प्रयास नही होता। गरीबी ऊपर से थोपा गया अभिशाप है परन्तु स्वयमेव गरीबी का वरण वरदान है। हमारे म[illegible] ऋषि मुनियो ने गरीबी का [illegible] या। विलासिता को मूलभूत आवश्यक-ताओ मे सम्मिलित कर लिया गया है। बुद्धिजीवी भी विलासिता के मार्ग पर अग्रसर हैं।

प्रसिद्ध समाजसेवी एव दलितो-द्धार के नेता डा० चिन्तामणि ने कहा कि अकथनीय अत्याचारो के बावजूद समाज का जो वर्ग राम और कृष्णभक्त बना रहा उसका तो तिरस्कार किया गया और जो ईसाई बन जाता है तो पुन हिन्दू होने पर उसका आदर किया जाता

(शेष पृष्ठ ७ पर)

महर्षि निर्वाण दिवस पर

'आर्यसन्देश' का उत्कृष्ट विशेषांक

अपने सुविज्ञ पाठको की पुरजोर माग को ध्यान मे रखकर, साप्ताहिक "आर्यसन्देश" अपनी गौरवमयी परम्पराओ के अनुसार आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज के निर्वाण दिवस पर एक उत्कृष्ट लेखो से भरपूर आकर्षक विशेषाक प्रकाशित कर रहा है। यह विशेषाक नवीन तथ्यो, शिक्षाप्रद लेखों से सुसज्जित एव सग्रह-णीय होगा।

यदि आप घर बैठे ऋषियो आप्तपुरुषो, सन्तो, विद्वानों की वाणी एव सत्योपदेश पढना चाहते हैं तो आज ही साप्ताहिक "आर्यसन्देश" के नियमित ग्राहक बन जाइए और वर्ष पर्यन्त प्रकाशित होने वाले विशिष्ट विशेषाको को नि शुल्क प्राप्त कीजिए।

दानशील व्यापारिक आर्यबन्धुओ से विशेष प्रार्थना है कि वे विज्ञापन देकर आर्थिक सहयोग करे।

—सम्पादक

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव
सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

अग्नौ सूय चन्द्रमसि मातरिश्वन्, ब्रह्मचार्यऽप्सु समिधमादधाति।
तासामर्चींषि पृथगभ्रे चरन्ति, तासामाज्यं पुरुषो वर्ष आप ॥

अथर्व० काण्ड ११। अ० ३ सूक्त ५। १३।

ब्रह्मचारी पहले अग्नि मे समिधा डालता है। 'अग्नेर्वा ऋग्वेदोऽजायत' अग्नि से ऋग्वेद हुआ। ऋच स्तुतौ-ऋचा इसलिए कहते हैं कि उस वेद के मन्त्रो मे तृण मे लेकर पृथिवी पर्यन्त तथा पृथिवी से लेकर परमात्मा तक का साधारण ज्ञान दिया गया है। उस साधारण ज्ञानरूपी अग्नि को पहली समिधा से वह प्रदीप्त करता है। तब क्रमश यह यजुर्वेद द्वारा कर्मकाण्ड द्वारा प्रथम प्राप्त किए साधारण ज्ञान को कर्म मे बदल कर जाने हुए द्रव्यो के समीप होता है अर्थात उन की उपासना करता है जिस से उसे (विज्ञान) विशेष ज्ञान की प्राप्ति होती है सूर्यात सामवेद दूसरी समिधा से इस प्रकार ब्रह्मचारी विज्ञान रूपी सूर्य को प्रदीप्त करता है। तब तीसरी समिधा उस के अन्दर त्याग व विनय का भाव उत्पन्न करने वाली शाति रूपी है जो वह चन्द्र मे छोडता है। उस से प्रभावित होकर वह चन्द्रमा का गुण करता है। तब चौथी दयारूपी समिधा की आहुति आकाशगामी पवन मे देते हो वह ऊपर उठता है और वहा से पाचवी समिधा द्वारा जल धाराओ (मगल कामनाओ) की शीतल वृष्टि कर के ससार को तृप्त करता है। यह अलकार सीधा और स्पष्ट है।

ब्रह्मचारी की डाली हुई समिधा का आहुतियो मे हिलाई हुई एक-एक शक्ति की किरणे अपनी अपनी परिधि के अन्दर बलवती होकर ब्रह्मचारी के अन्दर इकटठी हो जाती हैं। जिस प्रकार सूर्य के उठाए हुए विविध प्रकार के जल के परमाणु सूर्य मण्डल मे ही इकटठे होकर पृथिवी पर शीतल जल धारा छोड उसे तृप्त करते और उस से उत्तम अन्न औषधादि उत्पन्न करते हैं इसी प्रकार ब्रह्मचारी की प्रदीप्त की हुई सब किरणे उसी मे इकटठी हो कर ससार मे आनन्द की लहर चला देती हैं।

उसका प्रथम फल यह होता है कि पुष्टिकारक पदार्थों की कमी नही रहती। इस सचाई को इस समय भारतवर्ष मे भली प्रकार अनुभव किया जा रहा है। पुष्टिकारक पदार्थ क्या हैं? घी आदि जिन की उत्पत्ति दूध से होती है। परतु वह दूध शुद्ध अवस्था मे अधिक परिणाम मे उसी देश में उत्पन्न हो सकता है जहा ब्रह्मचारी निवास करते हो। भारतवर्ष मे दूध की नदिया बहती थीं, जब यहा जीव-हिंसा का अभाव था। फिर जब शिकारी राजपुरुषों (राजपूतो) तक ही मास भक्षण सीमित रहा तब तक भी लाभदायक पशुओं की हानि न हुई और दूध घी मे प्रजा पुष्ट होती रही परतु ज्यो ही मासाहारी, भोगी विदेशियो के चरण यहाँ आए और इन्होने भारत प्रजा के शरीरो को ही नही वरन उन की बुद्धियो को भी दास बनाना शुरू किया तब से ही क्रमश यहाँ से दूध घी का ह्रास होना आरम्भ हो गया यहाँ तक कि आज बच्चो को भी दूध नही मिलता। यहा तक ही नही, प्रत्युत भोगप्रधान जीवन बन जाने मे माताओ ने अपने विषय भोग के गहरे प्रमोद मे फसकर अपनी सतान को अपने स्तनो के अमृत रूपी दुग्ध से भी वचित कर दिया। जब आत्मा को पुष्ट करने वाला सात्विक भोजन नही रहा तो फिर उत्तम सन्तान की उत्पत्ति कहा से हो सकती। भारत प्रजा की सन्तान पर एक दृष्टि डालने मे ही पता लग लग जाता है कि ब्रह्मचर्य के अभाव ने उसकी क्या दुर्दशा कर दी है। बालक दूध के लिए तडप रहे हैं और माता उन के दु ख से दु खी हो रही है परन्तु सहस्रो गायें नित्य नरपिशाचो की उदर पूर्ति के लिए कट रही हैं। यह पिशाचलीला इस लिए देखने में आती है क्योंकि कामचेष्टा ने ससार को अन्धा कर दिया है।

फिर जब सृष्टि पुरुषहीन हो रही हो, जब 'मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति' की उक्ति चरितार्थ हो रही हो, तो वृष्टि कहा से आवे और वर्षा के बिना जलाशय कहा से भरें? और जब जलाशय सर्वथा सूख चुके हों तो ससार के अन्दर स्नेह और प्रेम का जल हृदय रूपी वृक्षो को कैसे सीच सके। जिस पुष्टिकारक वीर्य से पुरुष की उत्पत्ति होती है जब उस का स्रोत ही ब्रह्मचर्य है तो फिर ब्रह्मचर्य के बिना यदि आजकल की सभ्यता विचारशीलपुरुषो की दृष्टि में निर्जीव दिखाई दे तो क्या आश्चर्य है? इस अश मे आज ससार की दशा कैसी शोचनीय है। जहां एक ओर अनावृष्टि सताती है तो दूसरी ओर वर्षा के आरम्भ होने पर अतिवृष्टि का भय रहता है। मनुष्य के मनुष्य रूप धारण किए हुए होने पर भी पशुओ से भी नीचतर व्यवहार देखने में आते हैं। सभ्यता के सब अगो के अन्दर से पीप और लहू बह रहा है, परन्तु उस के ऊपर बनावटी प्लास्टर कर के उसको छिपाया जा रहा है। जहा घर के अन्दर हाहाकार मच रहा है, वहा चिकनी चुपडी सूरते दिखला कर ससार को भ्रम में डाला जा रहा है धर्म और ब्रह्मचर्य के बिना ससार की वही दशा हो रही है। जो मर्यादा पुरुषोत्तम राम के बिना सकल समृद्धि-सम्पन्न अयोध्या की हो रही थी। इस अवस्था को देख कर कवि गोसाई तुलसीदास की उक्ति को इस प्रकार परिवर्तित किया जा सकता है—

जिमि भानु बिन दिन,
प्राण बिन तन,
चद्र बिनु
जिमि यामिनी।
तिमि ब्रह्मचर्य प्रकाश,
गुरुकुलवास बिनु,
यह सभ्यता
है भयावनो ॥

शब्दार्थ

(ब्रह्मचारी अग्नौ, सूर्ये चन्द्रमसि, मातरिश्वन्, अप्सु, समिधम् आदधाति) ब्रह्मचारी अग्नि में, सूय मे, चन्द्रमा मे, आकाशगामी पवन में, जल धाराओ मे समिधा को सब प्रकार डालता है। (तासाम् अर्चींषि पृथक् अभ्रे चरन्ति) उनकी किरणें जुदी-जुदी मेघ मण्डल में चलती हैं और (तासाम् आज्यम् पुरुष वर्ष आप) उन से घी, पुरुष, वृष्टि और सब जलाशय हैं।

उठो ! स्वशक्ति जगाओ !!

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति,
मुसाफिर खाना सुल्तानपुर (उ०प्र०)

रावण युग सा आज बढा है, धरती पर अति अत्याचार।
दानवता का ताडव-नर्तन, करता चहु ओर है हाहाकार ॥
सहमी सहमी मानवता है, करती रुदन तथा चीत्कार।
बढा असुर दल करने अपना विश्व विजय का स्वप्न साकार।

ऐसी भीषण वेला मे,
हे राम पुत्र! तुम आओ।
निर्भय, कर में धनुर्बाण ले,
दानव मार गिराओ ॥

एक नही लाखो सीताएँ, प्रतिदिन यहाँ हरी जाती।
मा-बहने असहाय बनी सी, लज्जा अपनी यहा लुटाती ॥
अबलाओ का दारुण क्रन्दन, गूज रहा है अब दिक दिक्।
अरे! राम के वशज जागो, आज तुम्हे कोटिक धिक धिक् ॥

आज दिशाओ का यह निर्मम।
क्रन्दन, उठो! हटाओ ॥
निर्भय कर में धनुर्बाण ले।
दानव मार गिराओ ॥

आज गरीबी महगाई का, राक्षस बढता जाता।
बेकारी का, अनाचार का, हुआ अनीति का नाता ॥
लोभ, मोह का, दम्भ द्वेष का, छाया चारों ओर वितान।
हाहाकार मचा है जग में, होता असुरो का सम्मान ॥

असुर सैन्य बढ रही धरा पर।
उठकर उसे भगाओ ॥
मानवता का आर्तनाद सुन।
उठो! स्वशक्ति जगाओ ॥

ओ३म्
आर्य सन्देश

श्याम जी कृष्ण वर्मा

अमर हुतात्मा श्याम जी कृष्ण वर्मा महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य थे। वे संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड पंडित थे। धारावाहिक प्रवाह पूर्ण शैली में संस्कृत में अभिभाषण करने वाले उस महान् व्यक्ति का नाम भारत के गौरवमय स्वर्ण-पृष्ठ इतिहास में सदैव स्मरण किया जाएगा। भारत की स्वाधीनता के लिए जो संग्राम १८५७ में प्रारम्भ हुआ था, जिसकी कड़ी के भाग थे—सन्यासी विद्रोह, कूका विद्रोह और क्रांतिकारी आन्दोलन, उसी बलिदानी कड़ी में श्याम जी कृष्ण वर्मा का भी नाम है।

श्याम जी कृष्ण वर्मा का जन्म ४ अक्तूबर १८५७ को गुजरात के कच्छ जिले के माण्डवी नामक ग्राम में हुआ था। १२ वर्ष की आयु में एक सन्यासिनी की सेवा करते हुए, उनकी प्रेरणा से उन्होंने संस्कृत का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। बाद में बम्बई के सेठ मथुरादास भाटिया उनके संस्कृत ज्ञान एवं जिज्ञासु प्रवृत्ति से इतने प्रभावित हुए कि उन्हें अपने व्यय पर बम्बई के विल्सन हाई स्कूल में प्रवेश दिला दिया। हाई स्कूल परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर १८ वर्ष की वय में सेठ छबीलदास ने अपनी सुपुत्री का विवाह उनसे कर दिया।

१८७४-७५ में महर्षि दयानन्द सरस्वती के भाषणों की बम्बई में धूम मची थी। उनके विद्वत्ता एवं पाण्डित्य से परिपूर्ण अकाट्य तर्कों पर आधारित भाषणों का सर्वत्र प्रभाव था। श्याम जी कृष्ण वर्मा उनके दर्शनों के लिए वहां गए और उनके विलक्षण व्यक्तित्व से इतने प्रभावित हुए कि वहीं उनके शिष्य बन गए। स्वामी जी महाराज से उन्हें अपार स्नेह एवं प्रेरणा मिली। वेदों के स्वाध्याय में उनकी प्रवृत्ति हुई। १८७७ से १८७८ तक वह आर्यसमाज के प्रचारक रहे। १८७८ में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष सर मोनियर विलियम भारत आए। वे श्याम जी कृष्ण वर्मा के संस्कृत अभिभाषणों से अत्यधिक प्रभावित हुए और उन्हें ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर नियुक्त कर लिया। महर्षि दयानन्द के अनन्य शिष्य श्याम जी इग्लैंड पहुंचे और वहां से जो उनका जीवन प्रारम्भ हुआ, वह क्रांतिकारिता का जीवन था। महर्षि दयानन्द ने अपने होनहार शिष्य को स्वराज्य व स्व धर्म हेतु कार्य करने की प्रेरणा दी थी। उन्होंने इग्लैंड में जाकर ब्रिटिश साम्राज्यवादी शक्ति से उसके घर में घुस कर लोहा लेने का निश्चय किया। उन्होंने इण्डियन सोशियोलॉजिस्ट पत्रिका और द इण्डियन होमरूल सोसायटी के माध्यम से अपना कार्य प्रारम्भ किया। भारतीय छात्रों के हित के लिए 'इण्डियन हाउस' की स्थापना की जो आगे चल कर क्रांतिकारी गतिविधियों का केन्द्र बना। उनकी प्रेरणा से वीर सावरकर ने 'स्वातन्त्र्य समर' पर एक पुस्तक लिखी जो क्रान्तिकारियों की गीता के नाम से प्रसिद्ध हुई। वीर सावरकर के अतिरिक्त क्रांतिवीर मदनलाल धींगडा भी इण्डिया हाउस के देदीप्यमान सितारे थे। मार्च १९३० में उस वीर का देहान्त हो गया। उस वीर को हम सदैव स्मरण करेंगे जो आजादी की अलख जगाता हुआ, अन्याय शोषण, पराधीनता-बन्धन, अन्ध विश्वासों के विरुद्ध सदैव प्रयत्नशील रहा।

उस कर्मठ महामानव के लिए हमारी श्रद्धांजलि।

विजय दशमी का पर्व

विजयदशमी का पर्व विजय एवं उल्लास का पर्व है। यह कहा जाता है कि इस दिन राम की रावण पर विजय हुई थी। सद् वृत्तियों की विजय दुर्वृत्तियों पर हुई थी। राक्षसों पर देवताओं की विजय हुई थी। असत्य पर सत्य की विजय हुई थी। अधर्म पर धर्म की विजय हुई थी। हमारे धार्मिक आख्यानों में ऐसे अनेक वृत्तान्त आते हैं जो इस विचारणा को को रूपायित करते हैं कि अन्याय कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, अन्तिम विजय सदैव न्याय की होती है। रामायण और महाभारत के प्रसंग तो भारतीय जनता के मानस में रचे-बसे हैं। राम की लीलाएं सर्वत्र की जाती हैं। नाटकों तथा चलचित्रों के माध्यम से उन्हें प्रदर्शित किया जाता है। आजकल दूरदर्शन पर भी प्रदर्शित किया जा रहा है। आर्यसमाज का दृष्टिकोण प्रारम्भ से ही भोण्डे प्रदर्शन के विपरीत रहा है। आर्यसमाज सात्त्विकता का पक्षधर है। हम उस मर्यादा पुरुषोत्तम राम का स्मरण करते हैं जो इस संसार के पुरुषों में महापुरुष है। जो अपने जीवन में मर्यादाओं का कहीं भी उल्लंघन नहीं करता। जो शक्ति, शील एवं सौन्दर्य का साक्षात् रूप है।

वह भगवान राम राक्षसराज रावण पर विजय प्राप्त करते हैं। निष्ठावान् श्रद्धालु भक्त अपनी आराधना के क्षणों में उन प्रसंगों को अपनी अभिन्न प्रतिमा से जोविन करते हैं। ऐसे अनेक मार्मिक प्रसंग इन लीलाओं से जुड़े हैं जो जनमानस को उद्वेलित करते हैं। उनके हृदय में प्रसन्नता, शोक, क्रोध, शौर्य, शान्ति के भावों को जागृत करते हैं। अन्तिम परिणति शान्ति में होती है। यही मानव जीवन का लक्ष्य भी है।

ये पर्व हमारे लिए संकल्प के दिवस होते हैं। आओ हम सब-मिलकर संकल्प करें कि हम अन्धविश्वास, अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध अपनी लड़ाई आजीवन जारी रखेंगे, सत्य की स्थापना के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे, विश्व और राष्ट्र में शान्ति और एकता-अखण्डता के लिए प्रयास करेंगे। संसार से मद्यादि दुर्व्यसनों को दूर करेंगे। हमारे जीवन की मूलाधार गौ की रक्षा करेंगे। विदेशी भाषा एवं संस्कृति को अपने जीवन व्यवहार से दूर रखेंगे। तभी इन पर्वों का आयोजन हमारे लिए सार्थक होगा।

—डा० धर्मपाल

आर्यजगत् एवम् आर्यों की भूमिका क्या हो ?

—नरेन्द्र विद्या वाचस्पति

आर्यसमाज की स्थापना अप्रैल १८७५ में हुई थी, उस समय से अब तक आर्यसमाज एव उसकी शिक्षा सस्थाओं का व्यापक प्रचार प्रसार हुआ है। भारत एव विदेशो मे ५००० से अधिक आर्यसमाजे हैं और सहस्रो की गिनती मे ही उसकी शिक्षण सस्थाएँ हैं। आर्य-समाज एव उसकी सस्थाओ का इतिहास बहुत गौरवपूर्ण है उसकी उपलब्धिया भी महती हैं। उन पर आर्यजगत एव आर्यजनो का गर्व करना स्वाभाविक है, परन्तु जब हम विश्व-इतिहास मे बौद्ध धर्म के अभ्युदय एव प्रसार का उदाहरण देखे और जब हम आज समस्याए, कुरीतिया अनाचार और विषम वातावरण व पर्यावरण देखते हैं तो अनुभूति होती है कि आर्यजगत् एव आर्यों की समुचित भूमिका का निर्धारण होना चाहिए।

विश्व के इतिहास में बौद्ध धर्म का प्रादुर्भाव एव अभ्युदय आज भी प्रेरणा एव उत्साह का सचार करता है। हमे स्मरण रखना होगा कि बौद्ध धर्म का प्रादुर्भाव छठी सदी ई पू० मे हुआ था। म० बुद्ध ने अपने जीवन मे मगध, काशी श्रावस्ती व पूर्वी प्रदेश म धर्म प्रचार किया था उनके शिष्यो न म० बुद्ध की शिक्षाओ का प्रसार देश की सीमाओ मे दूर दूर तक किया। म०बुद्ध न कहा था— "बहुजनो के हितो के लिए, बहुजनो के सुख के लिए लोक पर दया करने के लिए विचरण करो, एक साथ दो मत जाओ।' मौर्ययुग के प्रारम्भ तक बौद्ध धर्म का प्रसार भारत में दूर दूर तक हो गया। राजा अशोक एवम् उनके गुरु स्थविर मौदगलि पुत्र तिष्य या उपगुप्त के प्रयत्नो एव धम्म विजय का परिणाम था बौद्ध धर्म विश्वव्यापी हो गया।

यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि म० बुद्ध के जीवन, उनकी शिक्षाओ एव जीवनदर्शन के बारे मे उन्होंने स्वत कोई आत्मकथा नहीं लिखी, उन्होंने अपने सिद्धान्तो, नियमों एव चिन्तन के बारे मे स्वत कुछ नहीं लिखा, परन्तु उनके निधन के बाद की शताब्दियो मे बौद्ध धर्म का प्रादुर्भाव, विकास एव प्रसार कब किन परिस्थितियो मे हुआ, इसे 'अट्ठकथाओ' मे अधिकारी विद्वानो ने लिखा, बोधि सत्व के पूर्व जीवनो एव भविष्य की सम्भावनाओ पर जातक एव बृहद् रचनाए लिखी गईं। म० बुद्ध की शिक्षाओं चिन्तन के बारे में अनेक 'पिटक' लिखे गए सजोए गए। इस सब का फल हुआ कि म० बुद्ध के जीवन में उनका कोई साहित्य न होने के बावजूद अगली शताब्दियो म उनका अधिकृत सदेश, बौद्धिक चिन्तन उनके शिष्यो के माध्यम से विश्व भर में गूंज गया।

इसकी तुलना में जब हम महर्षि दयानन्द एव आर्यसमाज के चिन्तन, शिक्षाओ एव जीवन दर्शन के बारे मे देखते है तो महर्षि द्वारा लिखे माननीय ग्रन्थो के सस्करणो के अतिरिक्त विश्व-भाषाओ मे उनके अमर चिन्तन को व्यवस्थित रूप से रखने के लिए कोई व्यवस्थित प्रयत्न नही दिखाई देता। महर्षि के ग्रन्थो मे शिक्षा, राजनीति सामाजिक एव आर्थिक विषयो पर ही नही प्रत्युत मानव-जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे सर्वांगीण प्रगति एव अभ्युदय की शिक्षा दी गई है। आर्यसमाज के जीवन की दूसरी शताब्दी मे महर्षि की शिक्षाओ, जीवन दर्शन एव चिन्तन का आधुनिक सन्दर्भ मे व्यवस्थित एव परिमार्जित कर उसे भारतीय एव विश्व भाषाओ मे प्रस्तुत करने की महती आवश्यकता है। महर्षि की जीवनी और उनके प्रमुख ग्रथ हिन्दी अग्रेजी एव कुछ अन्य भाषाओ मे रूपान्तरित हो गए हैं परन्तु अब उन्हे आधुनिक सन्दर्भ मे अधिक व्यवस्थित रूप मे सम्पादित कर भारतीय एव विश्व भाषाओ म प्रकाशित एव प्रसारित करना चाहिए। वह सामाजिक आर्थिक, वैचारिक, सास्कृतिक दृष्टि से किस प्रकार का समाज चाहते थे वह किस प्रकार की शिक्षा प्रणाली परिवार व्यवस्था, राजप्रणाली, मानव जीवन, आचार-विचार, आहार, नैतिक एव व्यावहारिक जीवन् चाहते थे, उनके विविध ग्रन्थो में अभिव्यक्त विचारो और उनके सत्सगो भाषणो एव सवादो, पत्र व्यवहार आदि से उन्हे सजो कर 'दयानन्द विचार या चिन्तन के रूप में आधुनिक स्वरूप मे रखा जाना चाहिए। यह कार्य इतना बडा और उपयोगी है कि उसमे उच्चकोटि के अनेक विद्वान् और मनस्वी आर्यजन अपना योगदान कर सकते हैं।

उक्त कार्य महान् है और स्थायी महत्त्व का है, उसे पूर्ण कर विश्व एव भारतीय वाङ्मय मे महर्षि दयानन्द के कर्तृत्व का समुचित मूल्याकन हो सकेगा, परन्तु इसके साथ ही दो बडे कार्य अवशिष्ट हैं जिनमे आर्यजगत और आर्यजन अपनी यशस्वी भूमिका प्रस्तुत कर सकते हैं। अनेक वर्षों पहले इन पक्तियो के लेखक को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तत्कालीन अध्यक्ष अग्रणी वैज्ञानिक श्री दौलतसिह कोठारी से मिलने का सुयोग हुआ था। उस समय अत्यन्त सौजन्य का परिचय देते हुए कोठारी महोदय ने दो सत्परामर्श दिए थे। उन्होने कहा था—गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय को कृषि, विज्ञान एव वाणिज्य महाविद्यालयो को खोलने की प्रतिस्पर्धा में न पडते हुए वेद, वेदाग-दर्शन, आयुर्विज्ञान, गणित, ज्योतिष, आदि अनेक क्षेत्रो मे भारतीय चिन्तन के अनमोल ग्रन्थो को भारतीय एव विश्व भाषाओ मे रूपान्तरित करने का प्रयत्न करना चाहिए। रामायण महाभारत, गीता उपनिषद् आदि के तत्त्वज्ञान को वर्तमान सन्दर्भ मे व्यवस्थित एव सम्पादित रूप से प्रकाशित करने की आवश्यकता है। पूर्व एव ओरियण्ट का ऐसा विराट पुरातन अक्षय कोश है जिसे गुरुकुल जैसी सस्थाए अनुसधान एव समुचित भारतीय दृष्टि से प्रस्तुत कर सकती हैं। डा० कोठारी परामर्श था यदि गुरुकुल सरीखी सस्थाए पूर्व के अनमोल चिन्तन को व्यवस्थित एव आधुनिक रूप मे विश्व के सम्मुख रखें तो यह उनकी एक अद्वितीय भूमिका हो सकती है।

डा० कोठारी का दूसरा सत्परामर्श भी बहुत अधिक मननीय एव उपयोगी था। उन्होने बहुत ही स्पष्ट शब्दो मे स्वीकार किया कि इस शताब्दी के आरम्भ मे गुरुकुल कागडी ने रसायन और भौतिकी विषयो की दो मौलिक बुनियादी पुस्तके प्रकाशित की थी। दोनो पुस्तकें किसी विदेशी भाषा का रूपान्तर न थी परन्तु दोनो पुस्तकें सर्वथा मौलिक थीं। उनके पारिभाषिक शब्द मौलिक थे। डा० कोठारी जैसे अग्रगण्य वैज्ञानिक ने स्वीकार किया कि पुस्तकें इतनी सरल, बोधगम्य और पूर्ण थी कि उनके आधार पर एक नौसिखिया भी भौतिकी और रसायन के क्षेत्र मे प्रवेश कर सकता था। उन्होंने कहा कि इन दोनों ही पुस्तकों की प्रतियां उन्होंने सजो कर रखी हुई हैं। उन्होने अपना दूसरा सत्परामर्श यह दिया कि गुरुकुल कागडी जैसी सस्था को दूसरी प्रतियोगिताओ या प्रतिस्पर्धाओं में न पडते हुए उन्हें सभी प्रमुख विषयो सभी आधुनिक ज्ञान विज्ञान की विधाओ की प्राथमिक एव पूर्ण पुस्तके मौलिक रूप से लिखनी चाहिए। इस शताब्दी के प्रारम्भ में भौतिकी एवं रसायन के क्षेत्र मे गुरुकुल की जो उपलब्धि थी, उसे अधिक पूर्ण एव व्यवस्थित कर सभी विषयो मे प्रयुक्त किया जाना चाहिए था।

हिन्दी में आज अनूदित पाठ्य-पुस्तके बहुत मिल जाएगी, परन्तु प्रत्येक विषय की मौलिक पुस्तकों का अत्यन्त अभाव है। इस दिशा मे अभी बहुत कुछ किया जा सकता है। वर्षों पहले प० धर्मदत्त वैद्य ने भारतीय चिकित्सा प्रणाली के आधार तत्त्व 'त्रिदोष' पर इसी नाम का एक मौलिक सस्कृत ग्रन्थ लिखा था, उसे मद्रास आदि में बहुत अधिक सराहा गया। इसी तरह कुछ वर्ष पूर्व प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार ने होमियोपैथी पर हिन्दी में एक मौलिक ग्रन्थ लिखा था। वह किसी यूरोपीय भाषा का अनुवाद न होकर होमियोपैथी के मूल सिद्धातो, रोगो के लक्षणो और उनके निदान व चिकित्सा पर व्यवस्थित प्रकाश डालता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि आधुनिक ज्ञान-विज्ञान एव प्राचीन वाङमय और निधि को समझ कर उस तत्त्व ज्ञान को नए बुनियादी ग्रन्थो के माध्यम से भारत और विश्व के समक्ष हिन्दी मे प्रस्तुत किया जाए। आर्यजगत् और आर्यजन इस बारे में यदि व्यवस्थित प्रयत्न करे तो आज के सन्दर्भ मे उनकी एक सार्थक भूमिका हो सकती है। प्राचीन एव नवीन ज्ञान विज्ञान की व्यवस्थित प्रस्तुति से समाज-राष्ट्र की समुन्नति हो सकेगी।

अभ्युदय बी-२२,
गुलमोहर पार्क,
नई दिल्ली-११००४९

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की शताब्दी का समापन समारोह जयपुर में

दिसम्बर, १९८८ में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का शताब्दी समारोह अलवर में बडी धूमधाम से मनाया गया था। इस समारोह में आर्य जगत् के सन्यासीगण, मूर्धन्य विद्वान् एव आर्य परिवारो ने हजारों की सख्या में भाग लिया।

अलवर के इस अभूतपूर्व आयोजन से प्रेरित होकर निश्चय किया गया कि १९८९ को शताब्दी वर्ष के रूप में मनाया जाए और समापन समारोह जयपुर म आयोजित किया जावे। तदनुसार निर्णय लिया गया कि शताब्दी समारोह ७, ८ ९ फरवरी, १९९० को आयोजित किया जावे।

इस अवसर पर राष्ट्र के प्रसिद्ध बुद्धिजीवी, आर्य सन्यासी, विद्वान् आर्यसमाज के विचार को समर्पित मनीषियो को आमन्त्रित किया गया है।

१०३ ईसाई स्वेच्छा से वैदिक धर्म में प्रविष्ट

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने शुद्धि के कार्य को एक महत्वपूर्ण कार्य मानकर, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना १९२३ में की थी। आज जबकि चारों ओर से धर्मान्तरण की बातें सुनने में आती हैं जिसके कारण प्रतिवर्ष हिन्दुओं की संख्या कम हो रही है तथा अन्य सम्प्रदायों की संख्या बढ़ रही है, आर्यसमाज तथा उसकी संस्थाएं पूर्णतया सजग हैं।

पिछले दिनों १७ सितम्बर ८९ को ग्राम हसायन (उ० प्र०) जहां पूरा वाल्मीकि समाज वर्षों पूर्व ईसाई बन चुका था, में प्रधानमन्त्री श्री रामचन्द्र रिवारिया ने अपने अनेक आर्य बन्धुओं के साथ जाकर बृहद यज्ञ सम्पन्न करवा कर वहां के १०३ ईसाई भाइयों को पुनः वैदिक धर्म में दाखिल किया तथा महर्षि वाल्मीकि के महान् कार्यों का उल्लेख कर, उसके पदचिह्नों पर चलने के लिए प्रेरित किया।

आर्यसमाज महर्षिदयानन्द मार्ग अहमदाबाद

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, रामपुर दरवाजा बहार, अहमदाबाद का वार्षिक अधिवेशन १७ सितम्बर ८९ को सम्पन्न हुआ, जिसमे सर्वसहमति से निर्वाचन हुआ —

प्रधान – श्री पूनमचद नागर
मंत्री – श्री बलदेव राज सेठ
कोषाध्यक्ष—श्री राजेन्द्र अग्रवाल

स्वास्थ्य केन्द्र

आर्यसमाज डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली मे सामान्य जनता के लाभार्थ एक स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना की गई है। इस केन्द्र मे सुयोग्य एवम् अनुभवी चिकित्सको द्वारा रोगियो को प्रतिदिन प्रात ९ बजे से मध्याह्न १ बजे तक देखा जाता है।

गो-हत्या बन्द करो, शराब के ठेके उठाओ, अंग्रेजी हटाओ !

भगवान देव 'चैतन्य" महामन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश

आज भौतिक रूप से हम चाहे कितने ही सम्पन्न क्यो न हो जाए मगर यदि हमारी सस्कृति निरन्तर इसीप्रकार ह्रास को प्राप्त होती रही तो भौतिक सम्पन्नता का कोई महत्त्व नही रह जाता है। हमारे समृद्ध और सम्पन्न भारत पर विदेशी सस्कृति और ऐसी विचार-धारा का महत्त्व प्रभुत्व धीरे धीरे बढता चला जाए तो हमारी अस्मिता को ही सकट पैदा हो जायेगा। ऐसी स्थिति हमारे चारो ओर से दृढतर होती जा रही है। वोट की राजनीति ने सम्प्रदायो और मजहबो को जिस प्रकार से प्रोत्साहन देना आरम्भ किया है उससे स्थिति बहुत भयकर बन गई है। यदि दूरदृष्टि से काम लिया जाए तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस तुष्टिकरण की नीति ने हिन्दुस्तान की मूलसस्कृति के विध्वस के ऐसे बीज बो दिए हैं जिनके अकुरित और पल्लवित होने पर हमारे ये तथाकथित राजनेता हाथ मलते हुए चौराहे पर नजर आएगे। और यहा के मूल निवासी ही अस्तित्वहीन हो जाएगे। हमे चिन्ता भौतिक समृद्धि की इतनी नही है जितनी सास्कृतिक विरासत के ह्रास की है।

स्वतन्त्रता सग्राम के नरम और गर्म नेताओ ने जिस स्वतन्त्र भारत की कल्पना के लिए अपने प्राणो को आहुत किया था उस भारत का निर्माण निश्चित रूप से एक प्रतिशत भी नही हा पाया है। आज हर नेता महात्मा गाधी की दुहाई देकर अपनी कुर्सी को सुरक्षित रखने का षडयन्त्र भर रचना दिखाई देता है। गाधी जी की समाधि पर घडियाली आसू बहाने वाले नेता ही गाधी जी को नीतियो और भावनाओ को होली जला रहे ह। महात्मा गाधी ने स्वतन्त्र भारत की कल्पना राम राज्य के रूप मे की थी और उनका सब मे प्रमुख स्वप्न था—गोहत्या बन्दी शराब वन्दी और अग्रेजी को समाप्त करना। गाधी जी ने इन तीनो बुराइयो का जड-मूल से समाप्त करने के लिए समय-समय पर जो घोषणाए की हैं उनकी महानता को देखने का आज किसी के पास आँखें ही नही हैं। उन्होने स्पष्ट रूप से घोषणा की थी कि जब भी स्वतन्त्र भारत का सविधान बनाया जायेगा तो मैं कलम की पहली नोक मे गो-हत्या शराब और अग्रजी का प्रचलन अविलम्ब समाप्त कर दूगा। देश का दुर्भाग्य देखिए आज बयालीस वर्ष के स्वतन्त्र भारत मे भी इन तीनो कुरीतियो का समापन तो दूर रहा और भी अधिक सवर्धन हआ है। राजनेता अपनी अपनी गद्दियो की सुरक्षा मे ही व्यस्त है राष्ट्र की अस्मिता और गाधी जी के सपनो को साकार करने का किसी के पास समय तक नही है।

आर्यसमाज कट्टर राष्ट्रीयता मे विश्वास रखता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि आर्यसमाज ने स्वतन्त्रता सग्राम मे सर्वाधिक बलिदान दिया है। इसीलिए आज राष्ट्र की अस्मिता पर आए हुए सकट की चिन्ता आर्यसमाज को ही सर्वाधिक है। आर्यसमाज ने स्वतन्त्रता की बलिदेवी पर दी गई आहुतियो के बदले मे अपनी रोटिया नही सेकी हैं और न ही इसके बदले मे कुछ अपना स्वार्थ कभी चाहा है मगर आज आर्यसमाज पुन इस आग्रह के साथ कार्यक्षेत्र मे उतरा है कि देश की अस्मिता के लिए—गोहत्या बन्द की जाए, शराब के ठेके उठाए जाए और अग्रेजी को हटाया जाए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा ने निर्णय लिया है कि यदि सरकार ने अतिशीघ्र ऐसा नही किया तो आर्यसमाज आन्दोलन का रास्ता अपनायेगा। इस आन्दोलन का आर्य जगत मैं सर्वत्र स्वागत हुआ है। केवल आर्यसमाज ही नही हमे विश्वास है कि स्वतन्त्रता के महत्त्व सास्कृतिक विरासत की गरिमा जिस किसी के भी हृदय मे है वह हमारे कदम से कदम मिलाकर इस अभियान मे साथ चलेगा। इन तीनो कुरीतियो ने राष्ट की आत्मा को खोखला कर दिया है इसलिए जिस किसो को राष्ट्र से प्यार है, भारत मा के प्रति श्रद्धा है और अपने शहीदो के प्रति जरा सी भी सम्मान की भावना है—हम आवाहन करते हैं कि वह हमारे इस अभियान मे तन मन और धन आहुत करके पुण्य का भागी बनें। यही राष्ट्र की पुकार है और यदि आज भी हमने इस पुकार को अनसुना कर दिया तो परिणाम इतने भयकर होगे जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।

□ □

जीवन नैया

ओ३म सुत्रामाण पृथिवी द्यामनेहस सुशर्माणदिति सुप्रणीतिम् ।
दैवी नाव स्वरित्रामनागमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ॥१६॥

हम स्वय पार हो जायेगे तुम कृपा करो तो खेवैया।
जिससे हम पार उतर जाये दे दो हम को ऐसी नैया ॥

तन तरणी तुम ने हम को दी
ये सतरणी प्रति रक्षक दी
इस धरती पर कर द्यो प्रकाश
सुख करणी सुन्दर हमको दी।

हो जाय न इसमे छेद कही, डूब न कभी मेरी नैया।
जिसमे हम पार उतर जाये, दे दो हम को ऐसी नैया ॥

भलीभाति निर्माण हुआ हो
त्रुटि विहीन उत्थान हुआ हो
बन गई दिव्य प्रभु रचना यह
और स्वस्ति प्रस्थान हुआ हो।

अपराध रहित यह बनी रहे सन्ताप नही दे यह नैया।
जिस से हम पार उतर जायें, दे दो हम को ऐसी नैया ॥

गतिमान यन्त्र-बल का धौंका
क्षति छिद्र नहो दे क्षण चौंका
कर सके आत्म सुख आरोहण
भवसागर पार करे नौका।

कल्याण हमे दे जाए रे ये छत छैया बनें उछैया।
जिस से हम पार उतर जायें, दे दो हम को ऐसी नैया ॥

—देवनारायण भारद्वाज

अजमेर में

"साधना शिविर"

आध्यात्म मे रुचि रखने वाले साधको को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि परोपकारिणी सभा की ओर से आनासागर के सुरम्य तट पर ऋषि उद्यान मे साधना शिविर दिनाक १९ अक्टूबर से २९ अक्टूबर तक आयोजित किया जा रहा है।

शिविर का मार्गदर्शन प्रख्यात साधक स्वामी सत्यपति जी महाराज (आचार्य दर्शन योग विद्यालय गुजरात) करेगे। इनके सहयोगी के रूप में श्री ज्ञानेश्वर आर्य तथा विवेक भूषण आर्य साधको की सहायता करगे। शिविर मे साधको को पूरे समय शिविर स्थान पर रहना अनिवार्य होगा। प्रवेशार्थी शिविर के नियम शुल्कादि के लिए परोपकारिणी सभा, केसर गज अजमेर से पत्र-व्यवहार करें।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज राजौरीगार्डेन'

आर्यसमाज मन्दिर, जे-३/२०६ २०७ राजौरी गार्डन, नई दिल्ली की ओर से यजुर्वेद ब्रह्मपरायण यज्ञ, वेदकथा एव वार्षिकोत्सव दिनाक १६ अक्टूबर सोमवार से २२ अक्टूबर १९८९ रविवार तक समारोह पूर्वक मनाया जायेगा।

यज्ञ का सचालन तथा वेदकथा वैदिक विद्वान् प० यशपाल 'सुधाशु करेंगे।

वार्षिकोत्सव पर स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, डा० धर्मपाल प्रधान दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा, श्री सूर्यदेव महामत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, डा० महेश विद्यालंकार श्रीमती सुनीता आर्या आदि नेतागण पधारेंगे।

(पृष्ठ का शेष)

आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन सम्पन्न

है। साधन कितने भी बढ जायें परतु जब तक दृष्टिकोण नही बदलेगा तब तक समाज मे परिवर्तन नही हो सकता। यदि कथनी और करनी मे अन्तर हो तो समता का नारा पाखड व ढोग है। गरीबो की झोपडियो मे जो नैतिकता बची है उसके विकास के लिए आर्यसमाज प्रयत्न करे।

प्रसिद्ध समाज सेविका श्रीमती शोभा पडित ने कहा कि आर्यसमाज का बुद्धिजीवी सम्मेलन तभी सार्थक माना जाएगा यदि सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओ के निवारण के लिए आदोलनो से जुडें।

अध्यक्षीय भाषण में प्रो० शेर सिंह ने कहा कि राष्ट्र मे धार्मिक आर्थिक व सामाजिक शोषण के विरुद्ध शखनाद फूकने वाले आदोलन को ही आर्यसमाज कहते हैं। राष्ट्र और समाज के ज्वलन्त प्रश्नो को लेकर ही हम समाज से जुड सकते हैं। शोषण किसी भी प्रकार का हो शोषित को बचाना आर्य समाज का दायित्व है। साम्प्रदायिक शक्तियो से हमे बचना है। किसानो को शोषण से मुक्त करने के स्वामी अग्निवेश के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए उन्हे मद्यपान से भी मुक्त कराने के विचार रखे।

इस सम्मेलन मे प्रकाशन विभाग भारत सरकार के निदेशक डा० श्यामसिंह शशि राजस्थान बधुआ मुक्ति मोर्चा की सयोजिका श्रीमती माधुरी सिह व अमेठी के शिक्षा शास्त्री श्री ज्वलन्त कुमार जी ने भी अपने विचार प्रकट किए।

१ अक्तूबर को अपराह्न सत्र मे देश भर के अनेक राज्यो से आए लगभग ढाई सौ प्रतिनिधियो ने आर्यसमाज का पृथक राजनीतिक दल बनाने के पक्ष मे अपनी राय दी। ये प्रतिनिधि आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन मे भाग लेने के लिए आए थे।

हसराज महाविद्यालय के सभागार मे आर्यसमाज और राजनीति विषय पर हुई सगोष्ठी मे भाग लेते हुए अधिकाश प्रतिनिधियो ने कहा कि आर्यसमाज जिस प्रकार का राष्ट्र बनाना चाहता है उस उद्देश्य को पूरा करने मे अन्य कोई राजनीतिक दल समर्थ नही है इसलिए आर्यसमाज को अपना पृथक राजनीतिक दल बनाना ही चाहिए जिसके माध्यम से तपे हुए सदाचारी विद्वान मनीषी विधान सभाओ और लोकसभा मे पहुचकर देश की राजनीति को सही दिशा दे सके।

सगोष्ठी की अध्यक्षता आर्य समाज की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की। सगोष्ठी मे अपने विचार प्रकट करने वालो मे श्री सत्यव्रत सामवेदी (राजस्थान) श्री मगलसेन चोपडा (गुजरात) स्वामी इन्द्रवेश (उ० प्र०) श्री वीरेन्द्र (पजाब) श्री रामचन्द्रराव वन्दे मातरम (आध्रप्रदेश) प्रो० बलराज मधोक (दिल्ली) डा० भाई महावीर प्रो० शेरसिंह स्वामी अग्निवेश डा० विजयकुमार मल्होत्रा श्री वीरेश प्रताप चौधरी (सब दिल्ली)।

अन्त में स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि आर्यसमाज का अलग राजनीतिक दल बनाने के बारे मे सार्वदेशिक सभा की ओर से समस्त प्रातीय प्रतिनिधि सभाओ को परिपत्र भेज कर उन की राय ली जाएगी और उसके बाद निर्णय लिया जाएगा। अधिकाश प्रतिनिधि इसी पक्ष मे थे कि आज की इस बात का निर्णय हो जाना चाहिए। परतु अध्यक्ष महोदय ने कहा कि यह बहुत गम्भीर मसला है इसलिए इस विषय मे जल्दबाजी ठीक नही। वैसे सार्वदेशिक सभा की ओर से देश के सामने त्रिसूत्री प्रस्ताव रखा गया है और जनता से अपील की जा रही है कि इन तीनो सूत्रो का समर्थन करने वालो को ही अपना मत दे। ये तीन सूत्र हैं—

१ शराबबन्दी लागू करो
२ गोहत्या बन्द करो और
३ अग्रेजी हटाओ

जो उम्मीदवार इन तीनो बातो का समर्थन न करे उसे वोट न दिया जाये।

२ अक्तूबर को सगठन विषय पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No 32387/77 Post in N D P S.O on 5, 6-10-89 Licenced to post without prepayment. Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५१ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३९

(पृष्ठ ७ का शेष)

प्रधान श्री वीरेन्द्र जी की अध्यक्षता मे सम्मेलन होगा। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा क प्रधान डा० धर्म पाल ने विषय का प्रतिपादन किया। इस सत्र मे श्री नवनीतलाल एडवोकेट डा० दिलीप वेदालकार आचाय नरेश श्री रामसिंह आर्य श्री मगलसेन चोपडा ने अपने विच र प्रस्तुत किए। इस सम्मेलन मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और प० रामच द्र राव वन्दे मातरम भी आए। सम्मेलन का सयोजन श्री सुभाष विद्यालकार ने किया।

अन्त मे समापन समारोह हुआ। इस सत्र मे सम्मेलन के निष्कर्षों पर प्रकाश डाला गया। यह सम्मेलन प्रख्यात पत्रकार श्री क्षितीश वेदालकार की अध्यक्षता मे हुआ। इस सम्मेलन मे श्री वीरेन्द्र डा० धर्मपाल श्री सूर्यदेव श्री रामचन्द रिवाडिया श्री मगलसेन चोपडा स्वामी इन्द्रवेश आदि ने क्रियान्वयन प्रक्रिया के सम्बन्ध मे अपने विचार व्यक्त किए। यह निणय किया गया कि इस अवसर पर व्यक्त सभी विचारो को एक तीन व्यक्तियो की समिति सम्पादित करेगी। इस समिति मे प० क्षितीश वेदालकार, सुभाष विद्यालकार और डा० प्रशान्तकुमार वेद।लकार को रखा गया है। बाद मे इस पर ग्यारह सदस्यीय क्रियान्वयन समिति में विचार किया जाएगा। इस क्रियान्वयन समिति मे सभी प्रतिनिधि सभाओ के प्रधानो को भी आमन्त्रित किया जाएगा। इस अवसर पर सभी प्रतिनिधियों ने भी अपने विचार व्यक्त किए। अन्त में दिल्ली की ओर से सम्मेलन के निर्णयों के क्रियान्वयन हेतु एक महत्वपूर्ण घोषणा की गयी। श्री सूर्यदेव ने कहा कि डा० प्रशान्तकुमार के प्रस्तावो मे सर्वप्रथम कार्यक्रम वैदिक स स्कृति के पुस्तकालय की स्थापना का है। उन्होंने घोषणा की कि आयसमाज दीवानहाल मे सभी साथियो के सहयोग से इस प्रकार के एक पुस्तकालय की स्थापना की जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि उसमे चाहे जो व्यय हो वह हम वहन करेंगे। पुस्तकों के क्रय में डॉ० प्रशान्तकुमार के सहयोग की उन्होंने प्रार्थना की।

तीन दिन का आर्यसमाज शुद्धि-

निर्वाचन सम्पन्न

आर्यसमाज बम्बई

आर्यसमाज बम्बई, काकडवाडी विठ्ठलभाई पटेल मार्ग, बम्बई-४ ११४ वां वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक १७ सितम्बर को सम्पन्न हुआ, जिसमें सर्वसम्मति से निर्वाचन हुआ—

प्रधान – श्री ... प्रसाद गौतम
मन्त्री – श्री ... पाण्डेय
कोषाध्यक्ष—श्री करसनदास जे... राजा

शुद्धि सम्मेलन शान्तिपूर्ण वातावरण में सोल्लास एवं सोत्साह सम्पन्न हुआ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस गली नं०१७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी (सी०) ७५१

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ : अंक ४१ | रविवार १५ अक्तूबर १९८९ | आश्विन सम्वत् २०४६ विक्रमी | दयानन्दाब्द—१६५ | सृष्टि सवत १९७२९४९०९०
मूल्य : एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश मे ५० पौंड १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

४ अक्तूबर जन्मदिवस पर—

क्रांतिकारियों के गुरु श्यामजी कृष्ण वर्मा पर डाक टिकट

हर्ष का विषय है कि क्रांतिकारियों के सिरमौर एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त स्व० श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा की गयी महान् सेवाओ के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए, भारत सरकार की ओर से भारतीय डाक-विभाग ने एक विशेष तिरंगा डाक टिकट जारी किया है। यह टिकट श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा के १३२वें जन्मदिवस पर ४ अक्तूबर, १९८९ को उनके जन्मस्थान माडवी ग्राम, कच्छ जिला मे जारी किया गया है। इस अवसर पर विशेष प्रथम दिवस आवरण एवं विवरणिका भी प्रकाशित किए गए हैं।

इस अवसर पर प्रकाशित विवरणिका का अविकल प्रारूप निम्न प्रकार है—

श्याम जी कृष्ण वर्मा
(१८५७—१९३०)

श्यामजी कृष्ण वर्मा उन कट्टर राष्ट्रवादियो और देशभक्तो मे से थे जिन्होंने भारत की स्वतन्त्रता के लिए देश से बाहर रह कर काम किया। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के अत्यन्त महत्वपूर्ण दिनो मे उन्होंने अधिकांशत यूरोप मे घटनाओ से भरा जीवन बिताया और क्रांतिकारियों की सहायता की तथा उन के कार्यकलापो के लिए एक केन्द्र स्थापित किया।

श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म ४ अक्तूबर, १८५७ को गुजरात के कच्छ जिले के माडवी ग्राम में हुआ। बाल्यकाल मे ही उन के ऊपर से माता का साया उठ गया। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा माडवी की एक ग्रामीण पाठशाला मे तथा हाई स्कूल शिक्षा भुज मे हुई। वे एक असाधारण प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे। उन्होंने संस्कृत का गहरा ज्ञान प्राप्त किया जिसके लिए उन्हें पंडित की उपाधि से विभूषित किया गया। १८७५ मे उनका विवाह बम्बई के एक धनी व्यापारी, सेठ छबीलदास लालूभाई की पुत्री भानुमती से हुआ।

स्वामी दयानन्द सरस्वती से श्याम जी कृष्ण वर्मा अत्यन्त प्रभावित हुए और बम्बई आर्यसमाज के प्रथम अध्यक्ष बन गए। बाद मे उन्होंने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय मे सेवा आरम्भ की और बलिओल कालेज मे संस्कृत के सहायक प्रोफेसर नियुक्त किए गए। बाद मे वे ठेम्पल इन मे शामिल हुए और प्रथम भारतीय बार ऐट-लॉ हुए। जनवरी, १८८८ मे वे भारत लौटे और कुछ समय के लिए रतलाम के दीवान की नौकरी की उन्होने अजमेर मे वकालत शुरू की और एक वकील के रूप में ख्याति प्राप्त की। वे अजमेर शहर की नगरपालिका के सदस्य बने। उन्होंने पहले अजमेर के दीवान और बाद मे जूनागढ के दीवान के रूप में काम किया।

जनवरी, १९०५ मे वे इंग्लैण्ड लौटे और सक्रिय राजनीति मे भाग लेने लगे। उन्होने एक मासिक 'इण्डियन सोसिओलॉजिस्ट' का प्रकाशन आरम्भ किया जो क्रांतिकारी विचारो का एक माध्यम बन बन गया। भारत मे ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अपनी आवाज उठाने के लिए फरवरी १९०५ म उन्होने इण्डियन होम रूल सोसाइटी की स्थापना की। उन्होने इंग्लैंड की यात्रा करने वाले भारतीयों की सहायता करने के लिए लन्दन मे 'इण्डिया हाउस' की स्थापना की। विनायक दामोदर, सावरकर और उनके भाई गणेश लाला हरदयाल वीरेन चट्टोपाध्याय और वी वी एस अय्यर इण्डिया हाउस के उपक्रुतो मे से थे।

उन्होने पैम्फलेट छपवा कर, पुस्तके लिखकर और भाषण देकर भारत मे ब्रिटिश शासन का कडा विरोध किया। उनकी राजनीतिक गतिविधियो के कारण उन्हें इंग्लैण्ड छोडने के लिए बाध्य कर दिया गया। वे पेरिस गए जहा भारतीय स्वतन्त्रता का समर्थन करते हुए उन्होने अपनी गतिविधिया जारी रखी। द्वितीय विश्व युद्ध के आरंभ होने से वे पेरिस मे नही ठहर सकें

(शेष पृष्ठ २ पर)

महर्षि निर्वाण दिवस पर

'आर्यसन्देश' का उत्कृष्ट विशेषांक

अपने सुविज्ञ पाठको की पुरजोर माग को ध्यान में रखकर, साप्ताहिक "आर्यसन्देश" अपनी गौरवमयी परम्पराओं के अनुसार आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज के निर्वाण दिवस पर एक उत्कृष्ट लेखों से भरपूर आकर्षक विशेषांक प्रकाशित कर रहा है। यह विशेषांक नवीन तथ्यो, शिक्षाप्रद लेखों से सुसज्जित एवं संग्रहणीय होगा।

यदि आप घर बैठे ऋषियों, आप्तपुरुषो, सन्तों, विद्वानों की वाणी एवं सत्योपदेश पढना चाहते हैं, तो आज ही साप्ताहिक "आर्यसन्देश" के नियमित ग्राहक बन जाइए और वर्ष-पर्यन्त प्रकाशित होने वाले विशिष्ट-विशेषांको को निःशुल्क प्राप्त कीजिए।

दानशील व्यापारिक आर्यबन्धुओ से विशेष प्रार्थना है कि वे विज्ञापन देकर आर्थिक सहयोग करें।

—सम्पादक

श्री रामभज बत्रा नही रहे

सुप्रसिद्ध समाजसेवी उद्योगपति श्री रामभज बत्रा का आर्ष गुरुकुल एटा से लौटते समय २ अक्तूबर १९८९ को हृदय गति रुकने से देहावसान हो गया।

श्री रामभज बत्रा आर्यसमाज पजाबी बाग, स्वामी श्रद्धानन्द शुद्धि सभा, दलितोद्धार सभा, केन्द्रीय सभा, सार्वदेशिक सभा, प्रादेशिक सभा, टकारा ट्रस्ट तथा अन्य अनेक संस्थाओ से जुडे थे। उन्होंने आर्यसमाज को दिशा देने में आर्थिक दान तो दिया ही, अपितु अपने विचारों से भी समाज को लाभान्वित किया।

रविवार ८ अक्तूबर, १९८९ को उनकी स्मृति मे आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल की अध्यक्षता मे आर्यसमाज मन्दिर पजाबी बाग मे शोकसभा हुई। इसमे हजारो व्यक्ति सम्मिलित हुए। सभी सभाओ और आर्यसमाजों के अधिकारियो ने उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए। डा० धर्मपाल, श्री सूर्यदेव, श्री रामनाथ सहगल, श्रीमती सरला महता, श्रीमती प्रकाश आर्या, भामचन्द रिवाड़िया, प० यशपाल सुधाशु, प० क्षितीश वेदालकार तथा अन्य अनेक आर्यजनो ने उन्हे श्रद्धाजलि दी। अनेक संस्थाओ से प्राप्त शोकसन्देश भी पढे गए।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

ओ३म् आर्य सन्देश

उर्दू को उत्तर प्रदेश की द्वितीय राजभाषा बनाना भारतीय एकता और अखण्डता के लिए घातक

कांग्रेस ने उत्तर प्रदेश मे सरकारी भाषा संशोधन विधेयक पास करा लिया है। इससे उपद्रवियो ने मारकाट की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी है। दोनों पक्षो के लोग अपनी अपनी बात को सत्य सिद्ध करने के प्रयास मे हर तरह से कहना चाहेगे और जब बात शांति से कहना सम्भव नही होता तो हिंसा के मार्ग का अवलम्बन अपरिहार्य हो जाता है। बदायू के दंगे यही कहानी कहते हैं। विधानसभा मे जो तनाव था वह भी इसी बात का साक्षी है। उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने से किसी का भी हित सधेगा यह प्रश्न विचारणीय है। इससे उत्तर प्रदेश जैसे राज्य मे भी हिन्दी की विविधता को बनाए रखने मे बाधा आएगी। हम तो अभी तक यही मानते आए थे कि हिन्दी और उर्दू दोनो एक ही भाषा की दो शैलिया हैं। पर अब भाषा के स्तर पर मुसलमानो को अलग थलग करने की राजनीति मजबूत होगी। हिन्दी की बात छोड भी दे मुसलमानो के लिए भी इससे पेचीदगिया शुरू होंगी। भाषा के आधार पर पंजाब मे जो साम्प्रदायिकता पनपी थी उस ने आज उग्रवाद और आतकवाद का रूप धारण कर लिया है। वैसा ही यहा पर भी नही होगा। उत्तर प्रदेश मे अब तक हिन्दू और मुसलमानो की भाषा एक ही रही है। उसमे मजहब की कोई भी दीवार नही रही। खडी बोली के इलाके मे दोनो लोग एक ही बोली बोलते हैं। ब्रजभाषा के क्षेत्र मे भी यही बात है। जहाँ पर ईसाइयो तक ने ब्रजभाषा मे गीत बनाए हुए हैं। अवधी के क्षेत्र मे सभी अवधी बोलते हैं। यही बात बांगरू के लिए भी सही है। भाषा के आधार पर उर्दूवाद या हिन्दीवाद को बढावा देना फिरकापरस्ती को बढावा देना होगा। साम्प्रदायिक दंगे होंगे। जनता मे असंतोष बढेगा। शायद मुसलमान भी इससे खुश नही होंगे। उन मे भी असंतोष बढेगा। राम जन्मभूमि का विवाद पहले से ही है। उसमें भी यह नया विवाद आग मे घी का काम करेगा। भारतीय जनता पार्टी ने इस मामले को खूब उछाला है और इससे नुकसान भी कांग्रेस पार्टी को होगा। पार्टीबाजी से ऊपर आकर देखें तो इससे नुकसान राष्ट्रीय हितो का होगा देश की भावात्मक एकता का होगा। राष्ट्र की अखण्डता को इससे आघात पहुचेगा। साम्प्रदायिकता का जवाब दूसरी साम्प्रदायिकता से नही दिया जा सकता। इस समस्या का समाधान हिन्दू मुसलमानो की एकता मे है। उनके आपसी सहयोग में है।

उर्दू को राजभाषा बनाने के खिलाफ सुप्रसिद्ध साहित्यकार प० श्री नारायण चतुर्वेदी ने उत्तर प्रदेश सरकार का एक लाख का भारतभारती पुरस्कार ठुकरा दिया है।

इस प्रकार की संवैधानिक समस्याएँ पहले भी उठी थी। उत्तर प्रदेश के मंत्री प्रो० वासुदेव सिंह ने इस प्रकार के विधेयक का जबरदस्त विरोध किया था। उस समय के मुख्यमंत्री ने अपना विधेयक वापस ले लिया था। संविधान की धारा ३४५ के अनुसार किसी अन्य भाषा को द्वितीय राजभाषा बनाया जा सकता है परन्तु उत्तर प्रदेश में वैसी स्थिति नहीं है। वहाँ पर न तो उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाये जाने की मांग है और न ही वहाँ पर ३० प्रतिशत लोग उर्दू भाषी हैं। उर्दू को संरक्षण देना अंग्रेजी को लाद रखने के लिए है। इसस बिलगाव के बीज बोये जायेंगे।

हिन्दी को हम राजभाषा बनाना चाहते हैं। हम महर्षि दयानन्द के वाक्य को बार-बार उद्धृत करते हैं—हिन्दी ही सारे भारत को एकता के सूत्र में बांध सकती है। परन्तु हमारे व्यवहार मे हिन्दी का कितना स्थान है। हमें आत्मनिरीक्षण करना चाहिए और अपने सभी कार्यों में निमंत्रण पत्रो, नामों, सडकों, [illegible] और बोलचाल आदि मे हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए।

—डॉ० [illegible]

सम्पादक के नाम पाठकों के पत्र—

श्री नारायणदत्त अमर नहीं हो पाओगे [illegible]

प्रदेश का काम बिना साम्प्रदायिक भावना के सभी मतमतान्तर के लोग हिन्दी में भलीभांति करते हैं। केवल चुनाव के नाम पर उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाकर मां हिन्दी की हत्या के साथ-साथ आज न जाने बदायू जैसे [illegible] हत्या की [illegible] नारायणदत्त तिवारी आप पर है। कितने मुख्यमंत्री आए और गए पर एक प्रो० वासुदेव सिंह अमर हो गए। आप भी चले जायेंगे। मां हिन्दी की हत्या का दोष साथ लेकर मत जाओ। अपना नाम इतिहास मे कलंकित मत करो। करो तो ऐसा करो जो इतिहास आपको स्वर्णाक्षरो मे याद रखे। जिनके लिए आप उर्दू लाना चाहते हैं। उनका काम भलीभांति हिन्दी से चल रहा है न उनकी ऐसी कोई मांग है। वे आप के प्रलोभन मे भी नहीं आने वाले हैं और जैसा कि आप समझते हैं उनसे चुनाव मे आपके समर्थन की आशा भी व्यर्थ है।

—दर्शन देवी भारद्वाज
प्रधाना
महिला आर्यसमाज आजमगढ (उ०प्र०)

आज दिनांक २४।९।८९ को जिला बुलन्दशहर के सेकडो आर्य-समाजो के प्रतिनिधियो की करौरा मे हुई यह सभा सरकार पर आर्थिक बोझ जनता की परेशानी समता एकता की हानि नितांत अनावश्यक निहित स्वार्थ एवं थोपने की भावना तथा पडोसी मुस्लिम देशो मे भी अमान्यता आदि कारणों से उर्दू का द्वितीय राजभाषा बनाने का घोर विरोध करता है।

—धर्मेन्द्र शास्त्री
मंत्री
जिला आर्य प्रतिनिधि सभा (रजि०)
बुलन्दशहर

जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा गोरखपुर की यह सभा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने के षडयंत्र की तीव्र निन्दा करती है। उर्दू को राजभाषा बनाये जाने से प्रदेश ही नही अपितु देश में आर्थिक सामाजिक कठिनाइयाँ उत्पन्न होंगी तथा देश का अरबों रुपया व्यर्थ में खर्च होगा। इससे महात्मा गांधी स्वामी दयानन्द लोकमान्य तिलक आदि महापुरुषों के विचारो एव सिद्धांतो का हनन होगा। यह सभा सरकार से मांग करती है कि इस विधयक को तत्काल वापिस लिया जाये अन्यथा आर्य जनता इसके लिए आंदोलन करने के लिए बाध्य होगी।

विन्ध्यवासिनी प्रसाद श्रीवास्तव
मंत्री
जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा
गोरखपुर २७३०१२

(पृष्ठ १ का शेष)

और उन्होंने स्विटजरलैण्ड मे जेनेवा जाना पडा वहां उन्होंने अपना शेष जीवन बिताया। ३१ मार्च, १९३० को जेनेवा में उनका देहांत हो गया।

डिजाइनों का विवरण

डाक-टिकट का डिजाइन श्याम जी कृष्ण वर्मा मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा उपलब्ध कराए गए उनके एक फोटोग्राफ के आधार पर तैयार किया गया है।

प्रथम दिवस आवरण में सन् [illegible] में उस समय पेरिस की मशहूर दीखती इण्डिया हाउस दिखाया गया है। विरूपण का डिजाइन [illegible] ने तैयार किया है।

—[illegible]

१५ अक्तूबर स्मृति दिवस पर

स्व० महात्मा नारायण स्वामी—संस्मरण

—स्व० रघुनाथ प्रसाद पाठक

(पूज्यपाद महात्मा नारायण स्वामी जी का जीवन आर्यसमाज का उज्ज्वल इतिहास है। आर्यसमाज को सजीव रखने, अनुप्राणित करने, संघष के लिए सक्षम बनाने और बलिदान के लिए सतत सम्बद्ध रखने मे स्वामी जी का सर्वोत्तम योगदान है। उनकी अपूर्व कर्मठता, सगठन-क्षमता, प्रत्युत्पन्नमतित्व, अदम्य उत्साह, निर्भीकता, गुणग्राहिता और शास्त्र-विचक्षणता समस्त आर्यजगत् द्वारा सदैव प्रशसनीय रही है।

श्रीमद्दयानन्द जन्मशताब्दी, मथुरा भूमडल के आर्यो का सबसे पहला महोत्सव था, जिसका सुप्रबन्ध आज भी आर्य जगत् की प्रशसा का विषय बना हुआ है। हैदराबाद का आर्य सत्याग्रह (धर्मयुद्ध) आप के ही नेतृत्व मे प्रारम्भ हुआ था और आप के ही नेतृत्व मे उसमे विजयश्री प्राप्त हुई थी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के जिस पौधे को अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी ने लगाया था उसको महात्मा नारायण स्वामी जी ने निरन्तर १४ वर्ष पर्यन्त प्रधान पद पर रहकर, हरा-भरा किया था। सयुक्त प्रान्त की आर्य प्रतिनिधि सभा और गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) को नव अकुरित पौधो की अवस्था से हरे-भरे पुष्प-पल्लवित वृक्षो की अवस्था तक पहुचाना स्वामी जी ही के सद्उद्योग का सुफल था। सत्यार्थप्रकाश पर लगे प्रतिबन्ध के निराकरण के लिए १९४७ ई० मे जीवन के अन्तिम क्षणो मे सिन्ध-सत्याग्रह काल, स्वामी जी की चारित्रिक उदात्तता का परिचायक है। कन्या गुरुकुल देहरादून तथा कन्या गुरुकुल सासनी पर उनकी कृपा दृष्टि, स्त्री-शिक्षा के प्रति उनकी सतत जागरूकता की द्योतक है।

स्वामी जी महाराज ने जो उच्चकोटि का आर्य-साहित्य दिया है, वह आर्यसमाज की बहुमूल्य निधि है। उन्होने दो दर्जन स अधिक ग्रन्थो की रचना की। ईश, केन आदि ११ उपनिषदो की व्याख्या, योगदर्शन की टीका, आत्मदर्शन, कर्म रहस्य, वेद रहस्य मृत्यु और परलोक, वेद और प्रजातन्त्रीय व्यवस्था वैदिक साम्यवाद कर्तव्य दर्पण, विद्यार्थी जीवन रहस्य, वैदिक सन्ध्या रहस्य प्राणायाम विधि वैदिक धर्म। विद्यार्थी-जीवन रहस्य" की लोकप्रियता को पहचान कर सार्वदेशिक सभा ने तो "सार्वदेशिक" के विशेषाक के रूप मे इस पुस्तिका का एक बार मे ही एक लाख का सस्करण निकाल दिया था जो हाथो हाथ बिका भी था।

ऐसे उच्च व्यक्तित्व और निस्पृह समाजसेवी महात्मा नारायण स्वामी जी की पुण्य स्मृति (१५ अक्तूबर) हमारे लिए प्रणम्य है।

आर्य जगत के विख्यात पत्रकार स्व० रघुनाथ प्रसाद जी पाठक, जो जीवन पर्यन्त सार्वदेशिक सभा के कार्यालय सचालन तथा सार्वदेशिक' पत्रिका के सम्पादन मे समर्पित रहे तथा जिन्हे वर्षो तक अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा नारायण स्वामी जी का निरन्तर सान्निध्य प्राप्त हुआ ने अपनी मृत्यु से पूर्व अपने हस्त लिखित कुछ सस्मरणो की कापी मुझे समय पर सदुपयोग करने की आशा से दी थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज से सम्बन्धित सस्मरण हम २५ दिसम्बर १९८८ के 'श्रद्धानन्द-बलिदान-विशेषाक' मे दे चुके हैं। अब १५ अक्तूबर को पुण्य तिथि पर, महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज स सम्बन्धित ये अप्रकाशित सस्मरण अविकल रूप से प्रकाशित कर रहे हैं। —सम्पादक)

स्वामी जी महाराज १९२५ से १९३५ तक लगातार सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे। इसके बाद हैदराबाद का धर्म युद्ध और सिन्ध सत्याग्रह उन्हीं के नेतृत्व में हुए।

सोने का छल्ला दान में दिया

एक बार स्वामी जी ने अपने गृहस्थ जीवन के समय का सोने का एक छल्ला मुझे बेचने के लिए दिया। वह बेच दिया गया और उसके पैसे सभा के कोष मे जमा करा दिए गए। प्रचार यात्रा से लौटने पर जब उन्होने उसके पैसे मांगे तब कार्यालय को अपनी भूल ज्ञात हुई। इस पर दुःख प्रकट करके कहा गया कि यह राशि सभा के लिए अभिप्रेत समझ कर गलती से सभा के कोष मे दान रूप में जमा करा दी गई है जो वापस कर दी जाएगी। यह सुनकर वे कुछ क्षण तो मुस्कराए और दूसरे ही क्षण क्रुद्ध मुद्रा मे बोले—"यह राशि मुझे मिलनी थी सभा में क्यों जमा कराई गई? .. अब वापस करने की जरूरत नही है।"

छात्रों की सहायता

एक दिन १५, १६ वर्ष की उम्र का एक लड़का जो सनातन धर्म की दिल्ली की एक सस्कृत पाठशाला में पढ़ता था स्वामी जी के पास आया। स्वामी जी उसे जानते न थे। उसने स्वयं आकर में कहा—"मैं पढ़ना चाहता हूँ पर मेरे पिता विवाह करना चाहते हैं। स्वामी जी ने कह दिया "विवाह कर लो और द्विरागमन (गौना) ५, ७ साल के बाद कर लेना।" उस लड़के ने कहा, "गौना साथ ही होगा लड़की की आयु १७ साल की है।'

स्वामी जी को लड़के का पक्ष धर्मानुकूल जान पड़ा। उसके आने का वास्तविक कारण जान कर उसे लाहौर भेज दिया तीन वर्ष तक उसे निरन्तर अपने उस पैसे से छात्र वृत्ति देते रहे जो समाजो से प्रचारार्थ जाने पर भेंट रूप में प्राप्त होकर शेष रहता था और जो सभा के कोष मे धरोहर रूप मे जमा रहता था। इस सहायता से उसने शास्त्री परीक्षा पास कर ली।

क्रांतिकारी की सहायता

नृसिंह राव नामक एक नवयुवक क्रातिकारी दल से सम्बद्ध था। वह एक दिन बलिदान भवन में स्वामी जी से मिला और अपना वास्तविक परिचय दिए बिना ही पाच रुपए की सहायता ले गया।

उसे पुलिस ने लुधियाना मे गिरफ्तार किया। सी० आई० डी० के हाथ मे उसका मामला था। जब उससे पूछा कि गुजारे का प्रबन्ध किस प्रकार करता है तो उसने कह दिया कि बड़े लोगों से सहायता लेकर गुजारा करता हूँ। उन लोगों मे स्वामी जी का नाम भी उसने बता दिया और कहा ५) पांच रुपए उनसे लाया था। अंग्रेज अफसर ने उसके बयान की सत्यता की जाच कराना जरूरी समझा। और सी०आई० डी० के दो इन्सपेक्टरो को स्वामी जी से ज्ञात करने के लिए दिल्ली भेज दिया।

सभा कार्यालय मे आकर उन्होने स्वामी जी के विषय मे ज्ञात किया और जब उन्हे यह विदित हुआ कि स्वामी जी बाहर प्रचारार्थ गए हुए हैं तो वे लौटकर जाने लगे जब उन्हें कहा गया कि यदि वे कोई सन्देश देना चाहे तो दे दे, स्वामी जी तक पहुचा दिया जाएगा। उन्होने अपने आने का उद्देश्य बताकर पूछा कि क्या कार्यालय उनकी कोई मदद कर सकता है। स्वामी जी द्वारा जो निजी सहायता दी जाती थी उसका हिसाब सभा के खाते मे रहता था। हिसाब देखकर उन्हें बताया गया कि अमुक तारीख को नृसिंह राव को ५) पांच रुपए दिलाए गए थे। उन्हें प्राप्ति की रसीद दी। यह देखकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई और कहा इस लड़के ने अपने बयान मे ५) की ही रकम बताई थी और तारीख भी ठीक है। वह हमारे लौटते ही छूट जाएगा।

अंग्रेज अफसर ने कहा था कि यदि स्वामी जी द्वारा दी गई सहायता की बात ठीक होगी तो उसे रिहा (मुक्त) कर दिया जाएगा क्योंकि आर्यसमाज के सब से बड़े नेता कोई बात न छुपायेंगे। वे महात्मा हैं और आर्यसमाजी सच्चा व्यवहार करते हैं।" जब उन इन्सपेक्टरों से पूछा गया कि स्वामी जी महाराज का कोई अनिष्ट तो न होगा तो उन्होंने कहा— स्वामी जी धर्मात्मा हैं। वे दया भाव से ही सहायता करते होंगे। फिर वे सहायता लेने वालों की गहरी छान-बीन क्यों करने लगे? स्वामी जी के अनिष्ट की बात ही क्या हम न उनसे मिलेंगे और न कोई पत्र ही लिखेंगे? तीसरे दिन छूटकर नृसिंह राव दिल्ली आया और हिन्दुस्तान टाइम्स में उसका बयान पढ़ने को मिला।

सात्विकता

एक दिन स्वामी जी के छोटे भाई श्री ज्वालाप्रसाद उनसे भेंट करने के लिए फैजाबाद (उ० प्र०) से दिल्ली आए। कुछ देर वार्तालाप करके शहर मे घूमने चले गए। स्वामी जी के सेवक कृष्णानन्द ने स्वामी जी के भोजन के साथ उनका भोजन भी तैयार कर लिया। स्वामी जी ठीक प्रात १० बजे भोजन करके सेवक को कार्यालय के काम के लिए मुक्त कर दिया करते थे। उस दिन सेवक ने ११ बजे तक प्रतीक्षा की। जब उसने स्वामी जी स देरी की चर्चा की तो उन्होंने कह दिया कृष्णानन्द! तुम कार्यालय में चले जाओ। ज्वालाप्रसाद को तुम्हारा सादा सात्विक बिना मिर्च मसाले का भोजन रुचिकर न होगा। जब आयेंगे तब देखा जाएगा।" ज्वालाप्रसाद १२ बजे के लग-

भग लौटे। सेवक ने भोजन लाने के लिए कहा तो उन्होंने कह दिया "बाजार मे खा आया हूँ।" स्वामी जी ने जब कारण पूछा तो कहा 'आप सन्यासी हैं आपका भोजन मैं नही कर सकता और न सभा के व्यय पर बना भोजन ही कर सकता हूँ।'

ज्वालाप्रसाद जी के कोई सन्तान न थी। १५-२० हजार रुपया उनके पास था। वह उन्होने स्वामी की प्रेरणा पर आर्यसमाज द्वारा एक कन्या पाठशाला खोले जाने के लिए दे दिया और एक ट्रस्ट (न्यास) बना दिया। इसी प्रसग मे वह स्वामी जी से सलाह करने दिल्ली आए थे।

क्रोध

एक दिन जैनेन्द्र कुमार (सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार) जब वह कालेज मे पढ़ते थे। स्वामी जी के दर्शनो के लिए आए। जब उन्हे स्वामी जी के पास भेजने की अनुमति मिल गई तो वे बलिदान वाले कमरे के बाहर झिझकते हुए खड़े हो गए। स्वामी जी उन्हे देख रहे थे। उन्होंने जैनेन्द्र जी को बुला लिया। जैनेन्द्र जी से झिझकने का कारण पूछा तो उन्होने कहा—

'महाराज! सुनता हूँ आपका स्वभाव बड़ा गर्म है। आपके पास आते डर लग रहा था।'

यह सुनकर स्वामी जी हस पड़े और बोले—'बात ठीक है। मैंने अपने स्वभाव को बहुत कुछ सयत कर लिया है।" काफी देर तक धार्मिक और सांस्कृतिक विषयो पर वार्तालाप करने के बाद जैनेन्द्र जी परम सन्तुष्ट होकर चले गए।

विश्वासघात

स्वामी जी के पद-काल म सभा के एक मन्त्री सन्यासी थे जिनके भोजन का व्यय स्वामी जी वहन करते थे। इससे पूर्व उन्होने स्वामी जी के साथ गुरुकुल वृन्दावन मे असें तक जम कर वानप्रस्थ थे एक विश्वस्त सहकर्मी के रूप म कार्य किया था। वह बलिदान भवन में ही रहते थे। अचानक न्यूमोनिया से बीमार हो गए। स्वामी जी महाराज ने एक लेखक की ड्यूटी उनकी देख रेख के लिए लगा दी। इसी बीच मे उनका दत्तक पुत्र व पुत्र वधू भी आ गए। एक दिन रात को पुत्र वधू ने गलती से जलती अगीठा उनकी चारपाई के नीचे रख दी-जिससे बानो मे आग लग गई। सभा के लेखक ने जो जाग रहा था वह तुरन्त बुझा दी। सौभाग्य से नारायण स्वामी जी उस दिन वही पर थे। उस लेखक ने स्वामी जी को जगाया और दूसरे कमरे मे ले जाकर जली हुई चारपाई उन्हे दिखा दी और घटना की सही जानकारी उन्हे द दी।

उस मन्त्री महोदय ने ३-४ दिन के बाद 'वतन' के ऐडीटर को कहकर जो प्राय उनके पास आया करते थे, इस आशय का बयान छपवा दिया कि "सार्वदेशिक सभा उनके उपचार के लिए कुछ नहीं कर रही है। वे लावारिस की तरह रोग शय्या पर पड़े हैं। इतना ही नहीं सभा के एक लेखक ने उन्हे समाप्त कर देने का उपक्रम करके उनकी चारपाई मे आग लगा दी।" यह बयान शरारत पूर्ण था और सभा को बदनाम करने की नीयत से दिया गया समझा गया। स्वामी जी को वास्तविकता का पता था। उन्होने मत्री महोदय को उसका प्रतिवाद करन का आदेश दिया परन्तु जब उन्होंने ऐसा न किया तो सस्पेण्ड करके अन्तरङ्ग द्वारा उन्हे बर्खास्त करा दिया। स्वामी जी ने अपने नोट में लिखा था—

'सभा के मत्री का अपने ही लेखक के विरुद्ध अखबार मे जाना नियम, मर्यादा और अनुशासन के विपरीत था।"

दिल्ली छोड़ने के कई वर्ष बाद उन्होने स्वामी जी का एक निजी पत्र लिखकर क्षमा याचना की। स्वामी जी उनके अन्य व्यवहारो से भी नाखुश थे विशेषत रोग शय्या पर पड़े एक बाल बच्चेदार लेखक के छुट्टी का प्रार्थना पत्र आने पर छुट्टी स्वीकार करने के स्थान मे उस सर्विस से हटा देने की हृदयहीनता पर महात्मा नारायण स्वामी जी स्वय उस लेखक के घर गए। उसकी दशा देखकर दु खी हुए और उसे बहाल कर दिया। नारायण स्वामी जी ने उस निजी पत्र के उत्तर मे लिखा—'आप आत्म निरीक्षण कर। ऐसा करने पर आपका सही रूप आपके सामने आ जाएगा।'

उन स्वामी जी (मत्री जी) के साथ दत्तक पत्र ने एक कुत्ता पाल रखा था। वह लेखक जिसकी ऊपर चर्चा की गई है सन्यास एव आय मर्यादा के विरुद्ध उनके आचरण का विरोधी व आलोचक था। उसने कई बार बलिदान भवन से उस कुत्ते को हटा देने की माग की थी।

मुंशी प्रेमचन्द जी

एक दिन सुप्रसिद्ध उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द जी श्री प० इन्द्र जी के साथ मत्री महोदय के निमन्त्रण पर बलिदान भवन म जल पान के लिए आए। जीने पर चढते ही सर्वप्रथम उस कुत्ते ने जोर से भोंककर उनका स्वागत किया। श्री प्रेमचन्द जी ने जीने पर चढकर मत्री महोदय से जो कुत्ते के पास खड़े थे, पूछा—'स्वामी जी आप इस कुत्ते के किस गुण पर मोहित हैं?" इस प्रश्न न मन्त्री जी को अपनी भूल की अनुभूति करा दी और वह कुत्ता वहा से हटा दिया गया।

मुंशी प्रेमचन्द जी प० इन्द्र जी के मकान पर ठहरे थे। उन्होंने इन पंक्तियों के लेखक को बुलाकर जल-पान पर हुआ व्यय अपने पास से दे दिया। जब मन्त्री महोदय ने पैसे लौटा देने के लिए भेजा तो श्री प्रेमचन्द जी ने एक चिट के साथ पैसे लौटा दिए। उसमें लिखा था "आप सन्यासी हैं अत गृहस्थों पर आपका पैसा खर्च कराना अनुचित है। यदि जलपान पर सभा का पैसा खर्च हुआ है तब भी मुझे यह गवारा नहीं है।"

बड़ों का बड़प्पन

१९२६ के अप्रैल मास में सार्वदेशिक सभा का वार्षिक अधिवेशन हुआ था। उसमें पदाधिकारियों का निर्वाचन भी होना था। उस समय नारायण स्वामी जी सभा के प्रधान थे। इस अधिवेशन में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज भी सभा के एक सदस्य के रूप में उपस्थित थे।

प्रधान के चुनाव के समय श्री ला० नारायण दत्त जी तथा श्री म० कृष्ण जी ने खड़े होकर कहा आप दोनों महानुभावो (श्री स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा नारायण स्वामी जी) मे से एक को प्रधान पद का भार लेना है। हम आप दोनो को वोटिंग में नही लायेंगे। अत आप दोनो ही आपस मे बात करके तय कर लें कि किसे प्रधान बनना है। इस पर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा "यह जिम्मेवारी नारायण स्वामी जी को अपने ऊपर लेनी चाहिए। दफ्तर की व्यवस्था और उसका काम ये ही मेरी अपेक्षा अच्छा कर सकते हैं क्योकि इन्हे इसका काफी अनुभव है।" इस पर नारायण स्वामी जी महाराज ने कहा— 'सभा की आर्थिक स्थिति को उन्नत करना कार्यालय की व्यवस्था से भी ज्यादा जरूरी काम है जिसे मेरी अपेक्षा स्वामी जी ही भली भांति कर सकेंगे। दफ्तर की व्यवस्था मे मैं बिना प्रधान रहे भी उन्हे सहयोग देता रहूँगा।"

इस पर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा 'मैं प्रधान रहे बिना भी आर्थिक स्थिति उन्नत करता रहूँगा जैसा कि अब तक करता आ रहा हू।" फलत स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रबल अनुरोध पर नारायण स्वामी जी ने प्रधान पद पर बने रहना स्वीकार कर लिया।

× × ×

सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग बैठक हो रही थी। उसमें श्री प० चमूपति जी भी उपस्थित थे। किसी बात पर नारायण स्वामी जी (प्रधान) ने प० चमूपति जी को झिड़क दिया और यहाँ तक कह दिया—"तुम्हे आता ही क्या है?" इस पर प० चमूपति जी ने बड़ी शालीनता से कहा—"महाराज! मैंने आप से बहुत कुछ सीखा है, और सीखता रहूँगा। आप मेरे गुरुदेव हैं।"

× × ×

प० बुद्धदेव जी विद्यालंकार का मामला

हैदराबाद (दक्षिण) मे श्री प बुद्धदेव जी का माधवाचार्य (पौराणिक पंडित) के साथ मूर्तिपूजा विषय पर शास्त्रार्थ हुआ था।

उस शास्त्रार्थ मे प० बुद्धदेव जी विजयी रहे थे। परन्तु उनसे एक भूल हो गई थी और वह थी माधवाचार्य के उकसाने पर महर्षि दयानन्द के फोटो पर पैर रखने की। इस घटना को लेकर आर्य जगत् मे मुख्यत. पजाब के आर्य सामाजिक क्षेत्र मे असन्तोष व्याप्त हुआ जिसने पंडित जी के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन का रूप ले लिया। इसके पक्ष और विपक्ष मे मुख्यत आर्य सामाजिक पत्रों में बहुत कुछ कहा और लिखा गया।

अन्त मे यह मामला सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग के समक्ष लाया गया। इस माग के साथ कि पंडित जी के लिए आर्यसमाज की वेदि बद की जाय। जिस बैठक में इस विषय पर विचार हुआ था उसकी अध्यक्षता सभा प्रधान नारायण स्वामी जी कर रहे थे और पंडित बुद्धदेव जी भी उसमे उपस्थित थे।

इस विषय पर विचार शुरू होने पर श्री म० कृष्ण जी ने आरोप लगाते हुए कहा—'पंडित बुद्धदेव जी विद्यालंकार का यह कार्य कानूनी और नैतिक दोनो ही दृष्टियो से अपराध है।" कई अन्य सदस्य भी पंडित जी के विरुद्ध बोले। अन्त मे महात्मा नारायण स्वामी जी ने पंडित बुद्धदेव जी को अपना वक्तव्य देने को कहा। पंडित जी उठे और बड़ी शालीनता से कहा—

"मूर्ति पूजा के खडन मे आर्यसमाज की स्थिति की सपुष्टि में ही मैंने यह कार्य किया था जो वस्तुत मेरी बड़ी भूल थी। इस विषय पर मुझे और कुछ नही कहना है। सभा जो भी सजा देगी वह मुझे शिरोधार्य होगी" पंडित बुद्धदेव जी के इस सक्षिप्त कथन से सभी उपस्थित सदस्य बड़े प्रभावित हुए। महात्मा नारायण स्वामी जी ने पंडित जी के इस वक्तव्य को अंकित कराते हुए कहा 'यत पंडित जी ने अपनी भूल स्वीकार कर ली और स्वय ही क्षमा की याम की है अत. कोई सजा दिए जाने की जरूरत नहीं है।" एक दो सदस्यों ने इसके विरुद्ध कुछ कहना भी चाहा परन्तु यह कहकर कि ऐसा करना आर्यत्व का अपमान करना होगा। उन्हें बोलने की अनुमति न दी और लिखवा दिया कि यह मामला यहीं समाप्त किया जाता है।"

डाक्टर जोशी की गुरु-भक्ति

स्वामी जी के हाथ के अगूठे में रामगढ़ (नैनीताल) स्थित अपनी सेबो की वाटिका मे सफाई करते चोट लग गई। नाखून से काफी खून निकला। बाद मे मवाद निकलना शुरू हो गया। बरेली आदि मे चिकित्सा कराई परन्तु कोई लाभ न हुआ। दिल्ली आने पर सुप्रसिद्ध डाक्टर जोशी (जिन्हें पार्टीशन के समय एक मुस्लिम ने गोली मारकर खत्म कर दिया था) को अगूठा दिखाया गया। उन्होंने प्रारम्भिक उपचार क रूप मे मात्र पट्टी बांध दी। साथ ही सात आठ दिन तक निरन्तर पट्टी कराने का निर्देश दिया और कहा स्वामी जी को उनके चिकित्सालय (करोलबाग स्थित) मे आने की आवश्यकता नहीं है। उनका एक कम्पाउण्डर प्रतिदिन नया बाजार आकर पट्टी कर आया करेगा। दूसरे दिन डाक्टर जोशी स्वय अपनी कार मे आए और पट्टी बाध दी। स्वामी जी को सक च हुआ और कहा आपका समय मूल्यवान् है। मेरे लिए यहा आने का कष्ट न किया कर। मैं खुद पहुच जाया करूगा। इस पर डा० जोशी ने बड विनम्र भाव मे हाथ जोडकर कहा— स्वामी जी! आपको पता नही है। मेरे बड भाई के आप गुरु हैं। इस नाते मेरे भी गुरु हैं। हमारे पर्वतीय इलाके मे आपने सुधार का जो काम किया है। उससे हमारा इलाका आपका ऋणी है। आपके अगूठे की चिकित्सा यही है कि पटटी ठीक बाधी जाय। बरेली आदि मे दवाइया तो बहुत लगाई गई परन्तु पटटी ठीक न होने से आराम नही हुआ। इस पट्टी का काम स्वय मुझे करना है। अन्य किसी कम्पाउण्डर आदि पर नही छोडा जा सकता। इसीलिए मैं आया हूं और तीन चार दिन और आना है। एक हफ्ते के बाद अगूठा बिलकुल ठीक हो गया।

मन की एकाग्रता

लखनऊ के मैडीकल कालेज हस्पताल मे पेट क फोड (एपण्डी टाइ सिस) का १९२५ मे मथुरा शताब्दी क बाद आपरेशन होने वाला था। स्व मा श्रद्धानन्द जी महाराज प० गगाप्रसाद जी उपाध्याय और डा० श्याम स्वरूप जी (बरेली) तथा श्री प्रो० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री आप्रशन रूम में उपस्थित थे। सुप्रसिद्ध डा० भाटिया को आप्रशन करना था। आप्रशन के समय कवल डा० श्याम स्वरूप जी को उपस्थित रहने दिया गया। स्वामी जी को क्लोरो फार्म सुंघाए जाने की तैयारी की गई। स्वामी जी ने इस सूंघकर बेहोश होने से साफ इन्कार कर दिया और कहा बिना सुघाए ही आप्रशन करो। डाक्टर महो दय आश्चर्य चकित रह गए। यह पहला अवसर था जबकि आपके आपरेशनों की लम्बी शृखला मे उन्हे ऐसा रोगी मिला जो भयकर आप्रेशन को बिना क्लोरो फार्म सूंघ कराने का निर्देश द रहा था। आप्रशन बडा वेदना पूर्ण होगा जब डाक्टर ने यह कहा। हल्का क्लोरो फार्म सूंघने की प्रेरणा की और साथियो ने प्रबल आग्रह किया तो कह दिया मैं अपना मन दूसरी ओर लगा दूगा। मुझे आप्रेशन के होने का आभास भी न होगा।

सुतराम आप्रशन हुआ और सफल हुआ। स्वामी जी सोने और जागने की स्थिति मे रहे। कभी कुछ खबर हो जाती थी। कभी बेखबरी। यह थी उनकी योग साधना की एक झाकी। डा० भाटिया न अपने साथ के छात्रो को सम्बोधित करते हुए कहा था—

He rtrounced the world So l. s ab ve the p in He is an exa nple for you and for your Princ pal and prof ssors

अर्थात इन्होंने दुनिया को छोड दिया है। इसलिए ये कष्टों से ऊपर हो गए हैं। यह तुम्हारे और तुम्हारे गुरुओं के लिए एक मिसाल हैं।

डा० भाटिया न टाके खोलने क बाद बड विनम्र भाव मे कहा— स्वामी जी! आपने अब भी (टाके खोलत समय) मुझे जरा भी तकलीफ नही दी है इसके लिए मैं आपको धन्यवाद दता हू।

सरकारी क्षत्रो मे प्रभाव

सार्वदेशिक सभा के एक उपमन्त्री ने जो दिल्ली मे कांग्रस के एक सक्रिय कायकर्ता और बडे नेता थे सभा के नाम मे जो कांग्रस के लिए अभिप्रत था पाच हजार रुपया चैक द्वारा दान रूप मे मगवाया और वह चैक सभा के कोष में जमा हो गया। गुप्तचर (सी० आई० डी०) विभाग को किसी प्रकार इसका पता लग गया। उसने दो इसपेक्टरो को पुलिस के एक दस्ते के साथ सभा के कोष के रजिस्टरो की छानबीन के लिए बलिदान भवन भेज दिया। दोनो इसपेक्टर पुलिस क दस्त को नीचे छोड कर ऊपर कार्यालय मे आए और कैश बुक की माग की। कार्यालय ने कश बुक दिखाने मे असमथता प्रकट करके उन्हे सभा कोषाध्यक्ष श्री ला० नारायणदत्त जी से मिलने क लिए कह दिया। दैव योग से सभा कोषाध्यक्ष उस समय सभा प्रधान महात्मा नारायण स्वामी जी के कमरे मे बैठे उनसे बात चीत कर रहे थे। दोनो इन्सपेक्टर स्वामी जी के कमरे मे गए और अभि वादन करके उनके पास बैठ गए।

जब इन्सपेक्टरो ने अपने आने का कारण बताया तो स्वामी जी ने उन्हें कह दिया कि पांच हजार रुपया आया है और उस चैक के साथ भेजने वाले का कोई पत्र न होने और यह ज्ञात न होने के कारण कि किस उद्देश्य से भेजा गया है यह रकम उचन्ती खाते मे जमा करा दी गई है। यदि आप लोग कैश बुक देख कर अपनी तसल्ली करना चाहे तो कैश बुक देख ल। इस पर उन दोनो ने कैश बुक देखने की जरूरत न समझी और कहा महाराज! आप जैसे आर्यसमाजी महात्मा की बात पर हमे विश्वास है अत कैश बुक देखन की जरूरत नहीं रह गई है। आपके और सभा के सम्मान को दृष्टि मे रखते हुए हम पुलिस के दस्ते को नीचे छोडकर आपकी सेवा मे उपस्थित हुए हैं।' यह कह कर दोनो प्रसन्न मुद्रा मे चले गए।

दयालुता

एक बार एक तार बाटने वाले ने स्वामी जी के नाम मे आए हुए तार को कही फक कर उसकी प्राप्ति के स्वामी जी के जाली हस्ताक्षर करके रसीद तार घर के सम्बद्ध कार्यकर्ता को द दी। उसे स्वामी जी के रसीद पर अकित हस्ताक्षर पर स देह हुआ और उसन एक वरिष्ठ कमचारी को तस्दीक के लिए स्वामी जी के पास भज दिया। स्वामी जी ने तार प्राप्ति की अनभिज्ञता प्रकट करके उन हस्ताक्षरो को जाली बता दिया। इस पर तार विभाग न उस तार बाटने वाले के विरुद्ध कार्य वाही करने का आदेश दे दिया। उसने अपने लिखित बयान मे अपना अपराध स्वीकार करके क्षमा दान की प्रार्थना की। विभाग ने लिख दिया यदि स्वामी जी महाराज क्षमा कर दगे तो विभाग क्षमा करने पर विचार कर सकता है।

वह कमचारी स्वामी जी की सेवा मे उपस्थित हुआ और अपनी गलती पर दु ख प्रकट करते और यह कहते हुए कि मैं गरीब बाल बच्चेदार हू नौकरी छूट जाने से उन पर विपत्तियो का पहाड टूट जायगा स्वामी जी से क्षमा याचना की। बच्चो पर विपत्ति का पहाड टूट जाने की आशका से स्वामी जी का हृदय द्रवीभूत हो गया। उन्होने उसे लिखकर दे दिया कि मुझे तार न मिलने की कोई शिकायत नही है। इसे हिदायत कर दी गई है कि भविष्य मे इस प्रकार की गलती न करे। उससे लिखित आश्वासन लेकर और भविष्य के लिए चेतावनी देकर क्षमा कर दिया जाना ठीक होगा। फलत वह बरी कर दिया गया।

एक डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रट द्वारा प्रशंसा

सभा के रामलीला मैदान स्थित नये भवन (दयानन्द भवन) को भूमि का एक मामला जो स्वीकृत भूमि से कुछ अधिक भवन के निर्माण के समय घर ली गई थी रीगल बिल्डिग नई दिल्ली स्थित इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्ट मे चल रहा था। सभा से कुछ राशि हर्जाने की मागी गई थी जिसकी अदायगी के लिए सभा का भवन बेचने वाले ने इन्कार कर दिया था।

इस प्रसग म हम सभा की ओर स सम्बद्ध अधिकारी से मिलने गए। उनके आफिस के द्वार पर मिलने वालो का लम्बा क्यू लगा हुआ था। क्यू मे लगने से कई घटो के बाद उनसे मिलने का नबर आता। चपरासी के हाथ एक चिट भेज कर हम क्यू मे लग गए। चिट के मिलते ही उन अधिकारी न हमे बुला भजा। अभिवादन क बाद हमे कुर्सी पर बैठने के लिए कहा गया। उन्होने तुरन्त स्टेनो को बुलाकर एक आडर टाइप करा के हमें इस हिदायत के साथ दे दिया गया कि अमुक राशि जमा करा दी जाय। आडर की प्रति प्राप्त कर लेने पर अब हम उनस विदा मागने लगे तो उन्होने कहा बैठ जाओ आर्य समाज सम्बन्धी कई बात करनी है।

बातचीत मे उन्होने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज और महात्मा नारायण स्वामी की प्रशसा करते हुए बताया कि मैं सहारनपुर का निवासी हूं। १९२४ मे जबकि मैं किशोरावस्था म था सहारनपुर म भयकर हिन्दू मुस्लिम दगा हो गया। सहारनपुर क [illegible] मुस्लिम नगर है। इसमें मुसलमानों द्वारा हिन्दुओ की जान माल की [illegible] क्षति हुई और हिन्दुओ मे म[illegible]नो का आतक व्याप्त हो गया [illegible] हिन्दू अपने को असहाय [illegible] र क्षत अनुभव करने लगे। दैवयोग से स्वामी जी दूसरे दिन प्रात ही सहारनपुर पहुच गए जबकि उस समय तक कोई अन्य कांग्रसी या हिन्दू महा सभायी नेता हमारा सुधि लन के लिए वहा न पहुचा था। एक आयसमाजी नेता के आने का समाचार पाते ही हम हिन्दुओ की जान मे जान आई। हमारा मनोबल बढ़ा और उनके हस्तक्षेप से नगर म शान्ति स्थापित हो गई। स्वामी जी का परिचय प्राप्त होने पर और यह सुनने पर कि आर्यसमाज हिन्दुओ की रक्षा के लिए पुलिस थाने जसा काम करता है। हम कई नवयुवक आर्यसमाज की ओर आकृष्ट हो गए मेरी आगे की शिक्षा भी मुजफ्फर नगर के डी० ए० वी० हाई स्कूल मे हुई थी। महात्मा नारायण स्वामी जी की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा मैं जहा भी ज्वाइट मजिस्ट्रट या डिस्टिक्ट मजिस्ट्रट रहा और वहा स्वामी जी के उपदेश हुए जो प्राय रात मे शात वातावरण मे हुआ करते थे तो मैं नियम से उन्हे सुनने जाता था। मैंने स्वामी जी के सभी ग्रन्थ पढ़

हैं जो उच्च कोटि के हैं। इसके बाद उन्होंने कहा कि "अनेक उच्च पदस्थ अफसर हैं जो आर्यसमाज के सत्संगों में तो नहीं जाते परन्तु आर्यसमाज से बड़े प्रभावित हैं। आर्य नेताओं को चाहिए कि वे उनसे सम्पर्क बनाए रखें।" जब हम चलने लगे तो उन्होंने नारायण स्वामी की २-३ पुस्तकें भेज देने के लिए कहा जो उपहार स्वरूप उनके पास भेज दी गईं परन्तु उनकी कीमत अदा करके ही उन्होंने उन पुस्तकों का ग्रहण किया। बाद में ये सज्जन दिल्ली के अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट 'कमिश्नर) बन गए थे।

आयत्व का प्रभाव

मथुरा शताब्दी के अवसर पर श्रीयुत स्व० वेदमित्र जिज्ञासु जी ने अपने स्वर्गीय पिता की पुण्य स्मृति में ५०००के दानसे साहित्य प्रकाशनार्थ सार्व-देशिक सभा में एक स्थिर निधि कायम की थी दो हजार नकद और तीन हजार का एक प्रोनोट जो उनके एक मित्र ने उधार का लिखकर उन्हें दिया था। स्वामी जी महाराज को भेंट किया था। वह प्रोनोट स्वामी जी ने तत्कालीन सभा मन्त्री को सुरक्षित रखने के लिए दे दिया परन्तु इत्तफाक से वह प्रोनोट उनसे गुम हो गया। इस बात का पता उस समय लगा जबकि रुपए की वसूली के लिए मामला कोर्ट में ले जाया जाने वाला था। उसकी बड़ी सरगर्मी से तलाश हुई परन्तु वह न मिला। स्वामी जी को इस राशि के मारे जाने की आशंका पर बड़ी चिन्ता हुई।

उन्होंने प्रोनोट लिखने वाले को दिल्ली बुलाया। वह आए और उन्हें प्रोनोट गुम हो जाने की बात साफ तौर पर बताकर दूसरा प्रोनोट लिख देने की प्रेरणा की। उन महाशय को प्रोनोट गुम हो जाने की बात सुनकर प्रथम क्षण तो प्रसन्नता हुई परन्तु दूसरे ही क्षण वह यह कहकर प्रोनोट लिखने के लिए राजी हो गए कि "इस राशि को मय ब्याज के अदा करने की मेरी कानूनी से अधिक नैतिक जिम्मेदारी है। आपने जिस सत्यता का अवलम्बन किया है। उसी सत्यता का और आयत्व का परिचय देना मेरा कर्तव्य है।" कुछेक वर्षों के बाद यह मामला कोर्ट में गया और सभा विजयी रही। बाद में कर्जदार की पतली आर्थिक स्थिति और उसकी ईमानदारी को लक्ष्य में रखते हुए जज महोदय की विशेष प्रेरणा पर स्वामी जी महाराज ने मात्र असल रकम और सभा का हुआ खर्च प्राप्त करके मामले को समाप्त कर दिया।

आर्य अनाथालयों में कम बालक क्यों?

एक बार आर्यसमाज के अनाथालयों के सम्बन्ध में एक अंग्रेज पर्यटक के साथ स्वामी जी का वार्तालाप हुआ। उसने कहा कि भारत के किसी भी अनाथालय में तीन सौ से अधिक संख्या अनाथों की नहीं है परन्तु इंग्लैण्ड के अनाथालयों में यह संख्या कई हजार से कम न होगी। उसने उदाहरण स्वरूप दो अनाथालयों की (डा० और नाई अनाथालय इंग्लैंड के चर्च का अनाथालय) चर्चा की और बताया कि पहले में ८००० (आठ हजार) और दूसरे में १३००० तेरह हजार अनाथ हैं। श्री स्वामी जी ने उत्तर में हमारे अनाथालयों की संख्या की कमी के निम्न कारण बताए—

१ यहां व्यभिचार की सन्तानों की भरमार नहीं होती।

२ इंग्लैंड में आमतौर पर व्यभिचार के बच्चों की परवरिश अनाथालयों में हुआ करती है।

३ हमारे यहां प्रायः अनाथ और निर्धन तथा पालन पोषण में असमर्थ परिवारों के बच्चे ही अनाथालयों में जाते हैं।

सुख-दुःख की व्याख्या

जून १९३५ में सेठ जमनालाल बजाज सपरिवार नारायण आश्रम रामगढ़ गए थे। उन दिनों स्वामी जी महाराज के आश्रम के सत्संग में योगदर्शन दर्शन के आधार पर प्रवचन हुआ करते थे। उन्होंने सत्संग में शरीक होकर प्रवचनों को सुना। दूसरे दिन स्वामी जी का मुवाली में वेद विषय पर प्रवचन हुआ। जिसमें भी सेठ जमुनालाल बजाज सपरिवार शरीक हुए। वे मुवाली में ही ठहरे हुए थे। सेठ जी के निमन्त्रण पर दूसरे दिन स्वामी जी भोजन के लिए उनके निवास स्थान पर गए। भोजनोपरान्त सेठ जी ने अपने परिवार की सभी देवियों को स्वामी जी के पास लाकर बिठा दिया और उन्हें कहा—जिसकी जो इच्छा हो वह स्वामी जी से पूछे। उनकी एक पुत्री ने जिसने उस समय एम०बी०बी०एस० की डाक्टरी परीक्षा दी थी, अन्य देवियों के साथ अनेक बातें पूछीं और उनके उत्तर प्राप्त किए। उसी पुत्री ने प्रश्न किया कि सुख दुःख क्या हैं? उसे उत्तर दिया गया कि प्रश्न का उत्तर उन्हीं दोनों में मौजूद है। सुख शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है—सु+ख। इनमें से सु अच्छे को कहते हैं और ख नाम इन्द्रियों का है। इन्द्रियों का अच्छा बना लेना सुख और बुरा बना देना दुःख है।

श्री प० इन्द्र जी का पुनर्विवाह

श्री प० इन्द्र विद्यावाचस्पति जी के पुनर्विवाह को लेकर (१९२९) पंजाब और दिल्ली में कुछ आंदोलन चला। आपत्तिकर्त्ताओं का आरोप था कि इस विवाह से पंडित जी आदर्श से गिर गए हैं। इस विवाह की अनुमति श्री स्वामी जी महाराज ने दे दी थी। जब सभा की अन्तरंग में यह विषय आया और स्वामी जी द्वारा अनुमति दिए जाने पर भी आपत्ति की गई तो उन्होंने यह कह कर फिर मामला समाप्त कर दिया कि "आदर्श से गिरा हुआ कोई काम आर्यों द्वारा न होना चाहिए और न होने देना चाहिए पर तु यदि कोई क्षत वीर्य पुरुष और क्षत वीर्य स्त्री बिना पुनर्विवाह के कुपथगामी हो जाय या कुपथगामी होने की आशंका हो तो पुनर्विवाह कर लेने पर जितना अपयश हो सकता है उसकी तुलना में उस अवस्था में कहीं ज्यादा अपयश होने का खतरा है। मैंने इसी को सामने रख कर अनुमति दे दी थी।"

बिहार का भूकम्प और महात्मा गांधी

महात्मा गांधी ने (१९३४) भूकम्प के प्रसंग में बिहार में भ्रमण करते हुए अनेक जगह भाषण दिए और प्रत्येक जगह यह घोषणा की कि बिहार का भूकम्प वहां के लोगों के कर्मों का फल है और वे अत्याचार हैं जो सवर्णों ने अछूतों पर किए थे। महात्मा जी की इस घोषणा का तीव्र प्रतिवाद किया गया था। महात्मा नारायण स्वामी जी ने अपने एक प्रेस वक्तव्य में निम्न प्रकार प्रतिवाद किया था—

"महात्मा जी का यह कहना कि बिहार का भूकम्प वहां के लोगों के कर्मों का फल है न्याय, तर्क और शास्त्र सबके विरुद्ध है। तीन प्रकार के दुःखों, आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक में से केवल आध्यात्मिक दुःख मनुष्य के कर्मों का फल हुआ करते हैं, बाकी दो प्राकृतिक नियमों की प्रतिक्रियाओं से हुआ करते हैं। उनमें मानव के कर्मों का कुछ अमल दखल नहीं। यदि किंचित कल्पना के तौर पर यह मान भी लिया जावे कि भूकम्प बिहार के उच्च कहे जाने वाले लोगों के कर्मों के फल से हुआ तो फिर अछूत कहे जाने वालों को जो कष्ट हुआ वह क्यों? क्या प्राकृतिक नियमों ने भी अछूतों पर अत्याचार करने में उच्च जातियों का हाथ बटाया?'

स्वामी जी ने बिहार में जगह-जगह भ्रमण करके महात्मा गांधी के कथन का प्रतिवाद किया जिससे बिहार के लोगों का सन्तुष्ट हो जाना स्वाभाविक था और वे सन्तुष्ट हुए भी। बिहार और बंगाल के अनेक पत्रों ने स्वामी जी के व्याख्यानों को पूर्ण रूप में छापा और इस प्रकार विचारशील लोगों के समक्ष दूसरा पक्ष भी आया।

महात्मा गांधी के पुत्र को शरण दी

महात्मा गांधी का सब से बड़ा पुत्र हीरालाल कुपथगामी बनकर मुसलमान हो गया था। आर्यसमाज बम्बई ने उसे शुद्ध करके महात्मा नारायण स्वामी जी के पास उनके सत्संग से लाभ उठाने के लिए भेज दिया था। वह लगभग ३ मास दिल्ली में रहे और स्वामी जी महाराज के सत्संग से तथा उपदेशों से लाभ उठाया।

महात्मा गांधी ने स्वामी जी महाराज को एक विशेष पत्र लिखकर उसकी शुद्धि और उसके सत्संग से लाभ उठाने के कार्यक्रम पर सन्तोष व्यक्त किया था। महात्मा जी के पत्र का आशय इस प्रकार था –

'हीरालाल गांधी पुनः अपने पूर्वजों के आर्य धर्म के दायरे में आ गया है, यह जानकर सन्तोष हुआ। उम्मीद है आपके और आर्यसमाज के सम्पर्क में आ जाने पर वह सत्पथ पर आएगा और उसका जीवन सुधर जाएगा। परन्तु वह अवश्य ध्यान रखें कि वह अपने दुराचरण से कहीं आर्यसमाज को बदनाम न कर बैठे।"

बहादुराबाद की दुर्घटना

सहारनपुर के जिले में ज्वालापुर के निकट ग्राम बहादुराबाद गंग की नहर के किनारे पर है। २२-११-१९३० के दिन ईसाई मिशन की झूठी शिकायत पर आर्यसमाज को नेस्तनाबूद करने के इरादे से कर्नल गफ के सामने उसके सिपाहियों ने आर्यसमाज मन्दिर में जाकर ओ३म् की पताका उतार दी। कुछ कागजात जला डाले और समाज के उपमंत्री म० रामलाल को बुरी तरह पीटा। महात्मा नारायण स्वामी जी प्रधान सार्व० सभा ने इसका कड़ा नोटिस लिया। आंदोलन शुरू हुआ और बढ़ता ही गया। अन्त में यू० पी० सरकार ने इसका सन्तोष जनक समाधान कर दिया। महात्मा नारायण स्वामी, म० रामलाल और कर्नल गफ को नैनीताल बुलाकर कर्नल गफ से लिखित माफी मंगवाई और उससे दो सौ रुपया म० रामलाल को मुआवजे के दिलवाए तथा यू० पी० सरकार के तत्कालीन मुख्य मंत्री श्रीयुत सर ज्वालाप्रसाद ने बहादुराबाद समाज मंदिर पर लगाने के लिए शुद्ध खादी का ओ३म् ध्वज महात्मा नारायण स्वामी जी को भेंट किया जो उन्होंने १९-१०-१९३१ को बहादुराबाद जाकर समाज मंदिर पर लगा दिया।

वार्षिकोत्सव—

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

योग कर्म मे कुशलता है, योग चित्तवृत्तियो का निरोध है तथा योग समत्व है। इन तीनो मे कोई वैषम्य नही है, अपितु ये एक दूसरे के पूरक हैं। योग केवल शारीरिक क्रिया नही है। शरीर को स्वस्थ रखना तो योग की आरम्भिक क्रिया मात्र है। असली योग तो समत्व की प्राप्ति है। सुख-दु:ख में, लाभ हानि मे जय-पराजय मे—इन सभी अवस्थाओ मे विचलित न होना ही समत्व की स्थिति है। हमे चित्त-वृत्तियो का निरोध करना चाहिए, पर हमे इन को गलत रास्तो से निरोध करके, सही रास्तो की ओर प्रवृत्त करना चाहिए। सही मार्ग वह है जो एक के लिए न होकर सब के लिए श्रेयस्कर हो। ये विचार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ रोहतक मे वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित योग सम्मेलन मे व्यक्त किए।

आत्मशुद्धि आश्रम का वार्षिकोत्सव २६ सितम्बर से २ अक्तूबर तक आयोजित किया गया। इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ, नशाबन्दी सम्मेलन, योग सम्मेलन, आर्य युवा सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन तथा आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया। सार्वदेशिक सभा द्वारा निर्दिष्ट त्रिसूत्री कार्यक्रम—अग्रेजी हटाओ, शराब के ठेके उठाओ तथा गोहत्या बन्द करो का प्रतिपादन किया गया।

शोलापुर मे—

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्ध शताब्दी

डी० ए० वी० संस्थाओ के रीजनल डायरेक्टर श्री देवराज गुप्त प्रिंसिपल, दयानन्द इन्स्टीट्यूट, शोलापुर ने सूचना दी है कि शोलापुर मे हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्ध शताब्दी समारोह ४, ५ व ६ नवम्बर १९८९ को मनाया जाएगा। इस समारोह के सरक्षक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान प्रा० वेदव्यास होगे और इसकी अध्यक्षता स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, दयानन्द मठ, दीनानगर, पजाब करेंगे।

इस समारोह मे राष्ट्रीय युवा सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन तथा हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियो का अभिनन्दन समारोह आदि कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

इस समारोह मे आध्र प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती कुमुदबेन जोशी, महाराष्ट्र के वित्त मन्त्री श्री सुशील कुमार शिन्दे, आर्य सन्यासियों एवं विद्वानो को आमन्त्रित किया गया है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सुशील द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७, ... दिल्ली-३१ मे मुद्रित। रजि० नं० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ : अंक ५० रविवार २२ अक्तूबर १९८९ कार्तिक सम्वत् २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द—१६५ सृष्टि सवत १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश मे ५० पौं०, १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह की अर्धशताब्दी
२९, ३०, ३१ दिसम्बर को हैदराबाद में मनाई जाएगी

—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा विश्व की आर्यसमाजो की शिरोमणि सभा है। शनिवार १४ अक्टूबर १९८९ को इस सभा की अन्तरग सभा की और १५ अक्टूबर बर १९८९ को साधारण सभा की बैठक हुई। इन सभाओ मे सम्पूर्ण विश्व की आर्यसमाजो के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। आर्यसमाज राष्ट्रीय एकता एवम् अखण्डता का सशक्त प्रहरी रहा है। आर्यसमाज के सदस्यो ने जब कभी भी भारत मा पर किसी की वक्र दृष्टि पडी, अपने को सगठित करके उन परिस्थितियो का मुकाबला किया। आर्यसमाज ने धर्म के ऊपर किए गए अत्याचारो का भी प्रबल विरोध किया। आर्यसमाज ने अनेक आन्दोलन चलाए। उन आन्दोलनो मे हैदराबाद आर्य सत्याग्रह का विशेष स्थान है। यह सत्याग्रह आर्यो के ओज की वैजयन्ती है। आर्यो के इस सत्याग्रह के सामने निजाम हैदराबाद को घुटने टेक देने पडे थे और भारत के तत्कालीन गृहमन्त्री सरदार पटेल ने कहा था कि यदि आर्यसमाज ने पहले से ही भूमिका तैयार न की होती तो निजाम हैदराबाद के ऊपर इतनी आसानी से काबू पाना कठिन था। आर्यसमाज के इस आन्दोलन मे भाग लेने वाले सभी सत्याग्रहियो को सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के प्रयत्नो से स्वाधीनता सेनानी मान लिया गया। गृहमन्त्रालय ने एक गैर सरकारी समिति गठित की थी जिसका अध्यक्ष स्वामी जी महाराज को बनाया गया था। इस समिति ने बहुत परिश्रम करके हजारो लोगो को भारत सरकार से पेंशन स्वीकृत करा दी है। इस प्रकार उन्हे ७५०/ प्रतिमास पेशन और सपूर्ण भारत मे कही भी आने जाने के लिए रेलवे पास की सुविधा प्रदान की गई है। बकाया राशि का भुगतान भी किया गया है जो अस्सी हजार रुपये प्रति व्यक्ति तक है। यह आर्यसमाज के सगठन की विजय है। इसी सत्याग्रह की अर्धशताब्दी २९, ३०, ३१ दिसम्बर १९८९ को को हैदराबाद मे धूमधाम से मनायी जाएगी। प० रामचन्द्र राव वन्दे मातरम्, सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान को इसका सयोजक नियुक्त किया गया है।

इस बैठक मे आर्यसमाज के त्रिसूत्रीय कार्यक्रम—अग्रेजी हटाओ गोवध बन्द करो तथा शराब के ठेके उठाओ का भी जोर शोर से प्रचार प्रचार करने का निर्णय किया गया। जनजागरण हेतु आगामी वर्ष के लिए दो लाख रुपये की धनराशि इस कार्य के लिए स्वीकृत की गयी है। सम्पूर्ण भारत की प्रतिनिधि सभाओ ने इस का जोर शोर से लाग करने का प्रण किया। हरियाणा आर्यप्रतिनिधि सभा की ओर से शराब के खिलाफ एक विशाल रैली का सितम्बर मे आयोजन किया गया था। दिल्ली मे ७ नवम्बर को गोरक्षा रैली का आयोजन किया जा रहा है। सम्पूर्ण भारत मे इस प्रचार के कार्यक्रम समाज को नई दिशा देने के लिए आयोजन किए जाएगें।

इस बैठक मे यह भी निर्णय लिया गया कि आर्यसमाजो के त्रिस्तरीय सगठन अनुशासित रहे। आर्यसमाजो के ऊपर प्रान्तीय सभाए तथा सब मे ऊपर सार्वदेशिक सभा का नियन्त्रण रहे। सभी आर्यसमाज हमारी सर्वोच्च सस्था सार्वदेशिक सभा के अनुशासन मे रहे।

बैठक मे अनेक सामाजिक एवम आर्थिक पक्षो पर भी विस्तार से विचार किया गया। □

सभी आर्यसमाजों, स्त्री आर्यसमाजों तथा शिक्षण सस्थाओं के अधिकारियों की सेवा में विनम्र निवेदन

गोरक्षा दिवस

माननीय महोदय,

सादर नमस्ते। आशा है कि आप सभी स्वस्थ एव सानन्द होगे। सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा द्वारा निर्दिष्ट त्रिसूत्री कार्यक्रम—गोहत्या बन्द करो, अग्रेजी हटाओ और शराब के ठेके उठाओ, कार्यक्रम के अन्तर्गत दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो, स्त्री आर्यसमाजो तथा शिक्षण सस्थाओ की ओर से ७ नवम्बर १९८९ को एक विशाल गोरक्षा रैली का आयोजन किया गया है। उस दिन गोरक्षा के समर्थन मे आर्यसमाज तथा अन्य समानधर्मी सस्थाओ की ओर से एक शोभायात्रा भी निकाली जाएगी, जो प्रात १०.०० बजे लाल किला मैदान से प्रारम्भ होगी। यह शोभायात्रा चाँदनी चौक, नई सडक, चावडी बाजार, अजमेरी गेट, मिन्टोरोड, कनाटप्लेस ससद मार्ग होती हुई लगभग २.०० बजे सरदार पटेल चौक पहुचेगी। वहा पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती उपस्थित जनसमुदाय का सम्बोधित करेगें।

आप से विनम्र अनुरोध है कि आप अधिक से अधिक सख्या मे विशेष बसो, टैम्पुओ, ट्रको तथा निजी वाहनो द्वारा समयानुसार लाल किला मैदान पहुचे। आप अपने सुसज्जित टैम्पुओ तथा ट्रको और वाहनो पर ओ३म् ध्वज तथा बैनर अवश्य लगाए। विद्यालयो के छात्र छात्राए डम्बल लजियम आदि का टामे तैयार कर ले।

हमे पूर्ण विश्वास है कि आपका सक्रिय सहयोग गोरक्षा रैली के आयोजन मे अवश्य प्राप्त होगा। आप सभी का सक्रिय सहयोग सद्भाव आशीर्वाद ही हमारा सम्बल है।

धन्यवाद

भवदीय—
सूर्यदेव महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५ हनुमान रोड नई दिल्ली

दीपावली और ऋषि-निर्वाणोत्सव बृहद् यज्ञों से सुवासित करें

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सम्पादक—मूलचन्द गुप्त
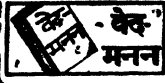
उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

आचार्यो मृत्युर्वरुण सोम ओषधय पय ।
जीमूता आसन्त्सत्वानस्तैरिद स्वराभृतम् ॥

अथर्व० काण्ड ११ । अ० ३ । सूक्त ५ । १४ ।

आचाय मृत्यु रूप होकर ब्रह्मचारी को पहला उपदेश देता है। कठोपनिषद मे यम (मृत्यु) और नचिकेता के सवाद द्वारा जिज्ञासु को पराविद्या का उपदेश बडी उत्तम विधि से दिया है। सच पूछा जाए तो कठोपनिषद को 'आचाय मृत्यु' इतने वाक्य की ही व्याख्या कह सकते हैं। इस रहस्य को सायणाचार्य तक ने अनुभव किया है। तभी तो उन्होने अपने भाष्य मे लिखा है–'यो मृत्युर्यम स नचिकेतसे ब्रह्मविद्यामुपदिश्य आचार्य सम्पन्न ।

पहला उपदेश आचार्य का ब्रह्मचारी के प्रति वह होता है जिसमे शिष्य निर्भय हो जाए। 'अभिनिवेश' बडा भारी क्लेश है। मौत का डर ही मनुष्य को तप और कर्तव्यपरायणता से रोकता है। उस डर को आचार्य पहले दूर करता है। मन, वाणी और कर्म से जन्म को प्रकृति से आत्मा का योग और मृत्यु को उनका परस्पर वियोग दिखलाकर पहले, शिष्य को निर्भय करता है। बुद्धदेव के जीवन मे 'मार' की और ईसामसीह के जीवन मे 'शैतान के बहकाने' की कहानी इसी कठोक्त रूपक का विस्तार है।

आचार्य जीवन और मृत्यु के रहस्यो का खोल कर शिष्यो के सामने रख देता है। जो स्वय मौत के डर मे कापता है वह इस रहस्य की घुण्डी कैसे खोल सकेगा ? इसी प्रथम वयस् को लक्ष्य मे रख कर कवि ने कहा है—'दश वर्षाणि ताडयेत्।' पहली ताडना से शिष्य के अन्दर असार वस्तुओ के प्रति पूरा वैराग्य उत्पन्न करके, और अभ्यास से पुष्ट कराके आचार्य जल रूप होकर उसके पापो को धो डालता है। उसी बाह्य मैल को धोने के लिए महामुनि पतञ्जलि ने तप, स्वाध्याय और परमात्मा पर पूर्ण विश्वास को क्रियायोग रूपी मुख्य साधन बतलाया है—

तपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोग । योग सूत्र २।१ ।

जब स्थूल पाप धुल जाये, तब जिज्ञासु ब्रह्मचारी को सूक्ष्म मानसिक विकारो का ज्ञान होता है और उसके अन्दर अनुताप की लहर चलती है, हृदय व्याकुल हो जाता है। उस समय सच्चा आचार्य चद्रमा रूप होकर ब्रह्मचारी की उदासीनता को आशा मे बदल देता है। तब शिष्य के अन्दर आह्लाद भर जाता है। उस आह्लाद की अवस्था मे शरीर की सुध नही रहती, अति की उसमे भी सम्भावना है। उस विकट दशा को टालने के लिए आचार्य ओषध रूप होकर ब्रह्मचारी की वृद्धि मे सहायक होता है। भोजन छादन, रहन सहन की विधि बतला कर आचार्य ब्रह्मचारी के शरीर को भी वज्र के तुल्य कर देता है। इसी वेद मे अन्यत्र आया है कि जब शिष्य गुरु के समीप समित्पाणि होकर जावे तो पहली भिक्षा यह मागे—'मेरा शरीर चट्टान की तरह दृढ हो जावे।' इसके लिए ऊपर कहा है कि दूध रूप होकर आचार्य अपने शिष्य ब्रह्मचारी के शरीर को पुष्ट करता है। यह सब कुछ आचार्य क्यो कर सकता है ? इसलिए कि जीवन के नियमो को उसने सिद्ध कर छोडा है। जिस कलाघर के अन्दर से, ठीक क्रिया करके वह ब्रह्मचारी को सुडौल शरीर, इन्द्रिया, मन और आत्मा का स्वामी बना कर निकालना चाहता है उसमे स्वय भी गुजर कर आया है। इसलिए तो संसार के बुद्धिमान् समझने लग गए हैं कि राजा के अयोग्य होने पर इतनी हानि की सम्भावना नही है जितनी आचार्य की अयोग्यता राष्ट्र को हानि पहुचा सकती है। 'यथा राजा तथा प्रजा' यह लोकोक्ति तो प्रसिद्ध है ही ; परन्तु राजा का इतना प्रभाव प्रजा पर नही पडता जितना आचार्य का शिष्य पर पडता है।

इसलिए जहा आचार्य और ब्रह्मचारी आदर्श हो, वहा ही मोक्ष सुख की प्राप्ति हो सकती है। वह आनद जिस के मध्य में दुःख काल कभी आ जावे, तभी हो सकता है—क्योंकि उत्तम आचार्य शिक्षा देने के लिए मौजूद हों।

ससार में इस समय घोर अशाति क्यो फैल रही है ? इसलिए कि आचार्यों का अभाव है। टीचर हैं, प्रोफेसर हैं, प्रिंसिपल हैं, उपाध्याय हैं, उस्ताद मौलवी हैं परन्तु शिक्षा शिष्यो को उल्टा अविद्या के गढे मे धकेल रही है। जो स्वय भोगी हैं वे दूसरो को त्याग कैसे सिखलायेंगे ? जो स्वय पापो के गन्दे कीचड मे फसे हुए हैं वे सुकुमार शिष्यो को शुद्धि का पाठ कैसे पढायेंगे ? जो स्वार्थन्धि हैं वे दूसरो को निःस्वार्थ तपस्वी कैसे बनायेंगे ? फारसी के शायर ने आजकल के शिक्षको के ही विषय में कहा है 'ऊखे श्तन् गुमस्त किरा रहबरी कुद', वह आप गुमराह है। मार्ग भूला है तो दूसरो का पथदर्शक कैसे बनेगा ? 'अन्धेनैव नीयमाना यथान्धा' यदि अन्धा अधे को लेकर मार्ग पर चले तो अपने साथ उसको भी गढे मे गिराएगा।

[illegible] मन्त्र फिर साकार कर रहा है। क्या संसार के शिक्षकवृन्द इस पवित्र घोषणा को सुनेंगे ? परमेश्वर ऐसा करे कि जो लोग सुकुमारों के भविष्य को अपने हाथ मे लेने का साहस करते हैं, वे अपनी पवित्र उत्तरदायिता को समझे।

शब्दार्थ

(आचार्य मृत्यु, वरुण, सोम, ओषधय, पय) आचार्य मृत्यु रूप होकर ससार की अमारता का उपदेश देने वाला जल रूप होकर पापो से शुद्ध करने वाला, चन्द्रमा रूप होकर हृदय के लिए आह्लादकारक, औषध रूप होकर शरीर को क्षीणता से बचाने वाला और दूध रूप होकर शरीर को पुष्ट करने वाला है। (जीमूता सत्वान आसन्) जीवन के नियमो का पुज उसके सहनशील अनुचर हैं, (तै इदम स्व आभृतम्) उन्ही के द्वारा यह मोक्षसुख लाया गया है।

तुम सहज सुन लिया करते

★

ओ३म् विश्वे यजत्रा अधिवोचतोतये त्रायध्व नो दुरेवाया अभिह्रुत ।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ॥

गुणगायन दिव्य तुम्हारा है, सो इसका लिया सहारा है।
तुम सहज सुन लिया करते हो, तुमको इसलिए पुकारा है ॥

जिस भांति हमारी रक्षा हो
जीवन की सफल परीक्षा हो
हो जावे निवारण दुर्गति से
उपदेश पूर्ण वह शिक्षा हो।

यजनीय श्रेष्ठ प्रभु या मानव, तुम से ही त्राण हमारा है।
तुम महज सुन लिया करते हो, तुमको इसलिए पुकारा है ॥

यदि जग में हिंसक बढ जायें
जो जीवन में पीडा लायें
तब परमेश्वर ही कृपा करें
प्रभु-पुत्र वीर आगे आयें।

वे नष्ट करें आतकवाद, इन का ही सदा सहारा है।
तुम सहज सुन लिया करते हो, तुमको इसलिए पुकारा है ॥

शुभ स्तुति जो आज उचारी है
यह ज्योतित दिव्य तुम्हारी है
वन्दना सुनो आह्वान करो
आई रक्षा की बारी है।

प्रभु सर्वोत्तम उत्तम सपूत, दोनो ने जगत् सवारा है।
तुम सहज सुन लिया करते हो, तुमको इसलिए पुकारा है ॥

—देवनारायण भारद्वाज

ओ३म्
आर्य सन्देश

पृथ्वी

पिछले दिनो भारतवर्ष ने पृथ्वी' का दूसरी बार सफल परीक्षण किया। इससे यह सिद्ध हो गया कि भारत प्रक्षेपास्त्र विज्ञान के क्षेत्र मे विकसित देशो के मुकाबले मे खडे होने की क्षमता रखता है। पृथ्वी' नामक प्रक्षेपास्त्र ढाई सौ किलोमीटर दूर तक मार करने की क्षमता रखता है। इस प्रक्षेपास्त्र की अपनी विशिष्टताए हैं। इसे एक बार दागने के बाद नियन्त्रण केन्द्र से कोई निर्देश देने की आवश्यकता नही पडती है। यह पूर्णत स्वचालित है। इसमे अन्दर ही कम्प्यूटर लगे हैं। इसमे लगे कम्प्यूटर बहुत ही दक्ष हैं। उनकी तुलना अमेरिकी और रूसी सयन्त्रो से की जा सकती है।

इस सबध मे एक बात और बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इस अस्त्र मे एक या दो इलैक्ट्रोनिक उपकरणो को छोडकर बाकी सभी यन्त्र स्वदेशी अनुसन्धान और तकनीक द्वारा बनाए गए है। यह अस्त्र १९८३ मे बने प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम का एक हिस्सा है। इसके छ भाग हैं—त्रिशूल, आकाश, नाग, पृथ्वी, अग्नि और अस्त्र। त्रिशूल अल्प सूचना पर पृथ्वी से हवा मे मार करने वाला अस्त्र है। इसका उपयोग तेज रफ्तार वाले विदेशी विमानो पर किया जाता है। आकाश मध्यम दूरी तक हवा में मार कर सकता है। नाग टैंक भेदक अस्त्र है। पृथ्वी का परीक्षण पिछले दिनो किया गया है। यह प्रक्षेपास्त्र २५० किलोमीटर की दूरी तक पृथ्वी पर मार करने के काम आता है। अग्नि का परीक्षण अभी कुछ दिन पहले भारत मे किया गया था। अग्नि और पृथ्वी के सफल परीक्षण से भारतीय प्रतिरक्षा को नये आयाम मिले हैं। अस्त्र' के विषय मे अभी अनुसन्धान किया जा रहा है।

भारतीय प्रक्षेपास्त्र तकनीक से अनेक देश कुपित भी हैं। यह स्वाभाविक भी है। अभी हमे पूर्णत आत्मनिर्भर होने की जरूरत है। भारत के सामने अनेक समस्याए हैं।

मदुराई क्षेत्रों मे धर्मान्तरण

धर्मान्तरण की समस्या कोई नई नही है। मीनाक्षीपुरम और रामनाथपुरम के किस्से सुविख्यात है। भारत को जनता और विशेषकर आर्य जनता यह अच्छी तरह जानती है कि यदि समय रहते इस समस्या की ओर ध्यान न दिया जाता तो यह समस्या कितनी दुर्वह हो सकती थी। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल शाल वाले (वर्तमान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती) और तत्कालीन मन्त्री श्री ओमप्रकाश त्यागी ने बडी तत्परता से इस समस्या का समाधान खोजने का प्रयास किया था। वे वहा पर तुरन्त गए भी, ताकि परिस्थितियो का सही विश्लेषण एव मूल्याकन किया जा सके। उन्होंने समस्याओ का विश्लेषण किया और समाधान भी किया। मीनाक्षीपुरम "का सारा गाव पुन वैदिक धर्म मे दीक्षित हो चुका है। वहा पर आर्यसमाज मन्दिर है और वैदिक पाठशाला चल रही है जिसका सम्पूर्ण व्ययभार सार्वदेशिक सभा, अन्य दानी महानुभावो के सहयोग से, वहन कर रही है। इस सम्पूर्ण क्रिया कलाप मे प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् का योगदान अप्रतिम है।

अब एक नई समस्या उठ खडी हुई है। हिन्दुस्तान टाइम्स के ११ सितम्बर १९८९ के दिल्ली संस्करण में मदुराई के श्री सी०एस० [illegible] के प्रेषण के आधार पर समाचार प्रकाशित हुआ है जिसका मूल स्वर यही है कि अब मदुराई में एक वर्ग विशेष के लोगों ने धमकी दी है कि यदि उनकी कठिनाइयों का समाधान नहीं किया गया और उन्हें इसी प्रकार सताया जाता रहा तो वे धर्मान्तरण कर लेंगे। इस प्रकार की धमकियां देश के अनेक कोनो से समय-समय पर उठती रहती हैं। पिछले दिनो उत्तर प्रदेश मे कुछ लोग अपना धर्म परिवर्तन करना चाहते थे। आर्यसमाज के लोगो ने वहा पर जाकर सराहनीय कार्य किया था। अब मदुराई मे भी ऐसा ही अभियान छेडना पडेगा। आर्यसमाज सामाजिक व्यवस्था का सजग प्रहरी है। मदुराई मे आर्यसमाज है। वहा के कार्यकर्त्ता सप्राण हैं। प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् का कार्यक्षेत्र वही है। यद्यपि उनके जिम्मे काम बहुत हैं परन्तु हमे विश्वास है कि उन जैसे जीवट का व्यक्ति कभी हारेगा नही, कभी थकेगा नही।

मदुराई क्षेत्रो के इन लोगो को युवको और युवतियो को, जो बहुत ही आवेश मे थे तथा बार बार धर्मान्तरण की धमकी दे रहे थे पिछले दिनो राज्यस्तर के तथा केन्द्र के नेताओ ने सम्बोधित किया और उनसे आग्रह किया कि वे शान्त रहे उनकी समस्याओ का समाधान खोजा जाएगा, परन्तु वे शान्त नही हुए। केन्द्रीय मन्त्री श्री पी चिदम्बरम ने भी उन्हें सम्बोधित किया। ये लगभग १५०० परिवार हैं। थिरुमगलम विलक्कू और अन्य जगहो पर इन्होने प्रदर्शन भी किया। यातायात ठप्प हो गया और दुकानें भी बन्द हो गयी। वहा पर साम्प्रदायिक दगे हुए थे जिनमे २७ व्यक्ति मारे गए तथा कम से कम दो करोड की सम्पत्ति का नुकसान हुआ।

हमारा उद्देश्य इस घटना का बढा चढाकर वर्णन करना नही है। हमारा उद्देश्य यही है कि इस प्रकार की समस्याओ का समय रहते समाधान किया जाए। इन समस्याओ का निदान हम सभी को मिलकर करना होगा। जब भी धर्मान्तरण की समस्या आती है यही कहा जाता है कि वर्ग विशेष के लोग गरीब लोगो को सताते हैं। हम आपसी सदभाव क्यो नही बढाते। हमारा कर्त्तव्य है कि लम्बे समय से जो लोग दलित हैं पीडित हैं, हम उन्हें अपनाए तथा उन्हे अपना मान। उन्हे सरक्षण द। उन्हें विश्वास दिलाए कि धर्म परिवर्तन की आवश्यकता नही है। उन्हे वह सब यही मिलेगा, जो उनका प्राप्य है।

—डा० धर्मपाल

सम्पादक के नाम पाठकों के पत्र—

डा० सत्यकेतु स्मृति अंक—एक प्रशंसनीय कार्य

आपने 'डा० सत्यकेतु स्मृति अक निकालकर प्रशसनीय कार्य किया है। एतदर्थ मेरी बधाई स्वीकार कर। ऐसे सुन्दर कार्य पत्र पत्रिकाओ को अमरता प्रदान करते हैं।

—(डा० कपिलदेव द्विवेदी)
निर्देशक—विश्वभारती अनुसधान परिषद ज्ञानपुर।

आर्यसन्देश के आठ पृष्ठ सप्ताह के सात दिनो के लिए चिन्तनशील सामग्री प्रदान करते है। इसका सत्यकेतु स्मृति अक वास्तव में पुस्तकालयीय सग्रह हेतु अपूर्व है।

—(वर्षा देवी)
प्रधाना महिला आर्यसमाज आजमगढ

अमरशहीद सरदार भगतसिह जी दिल्ली मे अर्जुन के तत्कालीन कार्यकर्त्ता डा० सत्यकेतु जी के ही निवास पर रहे थे, जानकर पुरानी जिज्ञासा शान्त हुई।

—(डा० कमला प्रधान)
स्वस्तिका नया हैदराबाद लखनऊ

'सुमित्रः सोम नो भव'

'आर्यसन्देश' ने इस बार प० सत्यकेतु विद्यालकार स्मृति अक प्रकाशित करके पत्र के स्तर को आशातीत रूप से ऊचा ही नही उठा दिया है, प्रत्युत उसकी विषयवस्तु, सज्जा एव आकर्षण से मन मोह लिया है। इतने सुन्दर ग्रन्थ को प्रदान कर आपने सही अर्थों मे एक उच्च आर्य मनीषी को श्रद्धाजलि प्रदान की है। 'आर्यसन्देश" के चार पन्ना आर्य विश्व को को चौकन्ना बनाये रखने मे सक्षम हैं।

—(देवनारायण भारद्वाज)
जगन्नाथ निवास रेटोपुर, नई बस्ती
आजमगढ (उ०प्र०)

दिवंगत आर्यश्रेष्ठ

जन्मदिवस (११ अक्तूबर) पर विशेष

मेहता जैमिनी

एकाधिक बार विदेश यात्रा कर वैदिक धर्म के सदेश को विश्वव्यापी बनाने वाले मेहता जैमिनी आर्योपदेशक को सम्भवत नई पीढी के आर्यसमाजी भूल गये होवे। मेहता जी का जन्म ११ अक्टूबर १८७१ ई० को पश्चिमी पजाब के कमालिया नगर मे हुआ। इनके पिता का नाम श्री रामदत्तमल था। प्रारम्भिक शिक्षा के अनन्तर आपने शिक्षा विभाग मे कार्य प्रारम्भ किया। आर्यसमाज मे प्रविष्ट होकर उसके प्रचार कार्य मे सलग्न हो गये। आपकी विदेश यात्राओं का विवरण इस प्रकार है। सर्वप्रथम आपने १९२२-२३ मे ब्रह्मा देश की यात्रा की और वहा प्रचार कार्य किया। आपकी द्वितीय प्रचार यात्रा १९२५ मे सम्पन्न हुई जिसमे आपने पुन ब्रह्मा और तदनन्तर मारीशस द्वीप मे वैदिक धर्म का सदेश प्रसारित किया। फरवरी १९२६ मे आप अपनी तृतीय समुद्र यात्रा पर निकले और दिसम्बर १९२६ तक ब्रह्मा, स्याम, सिगापुर, मलाया तथा सुमात्रा द्वीप निवासियो को आर्य सस्कृति का दिव्य सन्देश सुनाते रहे। चतुर्थ यात्रा फाजी और न्यूजीलैंड की हुई। हिन्दी और अग्रेजी दोनो भाषाओ पर आपका समान अधिकार था और आप भारतीय धर्म, सभ्यता, सस्कृति, साहित्य पर प्रभावपूर्ण ढग से व्याख्यान दिया करते थे।

१६ दिसम्बर १९१८ को पोर्ट आफ स्पेन (ट्रिनीडाड) मे उतर कर मध्य अमेरिका (ईस्ट इण्डीज) मे आपने प्रचार कार्य किया। पुन दक्षिण अमेरिका के ब्रिटिश गायना आदि प्रान्तो में गये। तत्पश्चात् डच गायना का भी भ्रमण किया। मेहता जी की पाचवी विदेश यात्रा इण्डोनेशिया, चीन तथा जापान की थी। छठी यात्रा के दौरान वे अफ्रीका गये और मोम्बासा, दारेसलाम केन्या, युगाण्डा, टैगानिका आदि मे प्रचार करते रहे। वैदिक प्रचारक का बाना धारण करने से पूर्व मेहता जी १९२० ई० तक वकालत भी करते रहे परन्तु आर्यसामाजिक गतिविधियो में आपने सदा भाग लिया। आपके द्वारा रचित ग्रन्थो की एक सूची यहा उपस्थित की जा रही है। मेहता जी की अप्रकाशित पुस्तकें—१ दीवान (अहकर १८८१ से १८९२ ई० तक रचित कविताओ का सग्रह) २ धर्म किसे कहते है? (रचनाकाल १८९०) ३ भक्ति व अन्धविश्वास (१८८९ ई०) ४ वैदिक शिक्षा (१८९१) ५ इम्तिहान बी ए में नाकामयाबी (१८९५) ६ इम्तिहान वकालत मे नाकामयाबी (१९०० ई०) ७ मेला चरागां व शालामार का इम्तिहान (१९०१) ८ साख्य शास्त्र का उर्दू अनुवाद (१९०२) ९ आत्मा पर जमीर की पहली चोट (१९०१) १० क्या आर्यसमाज धार्मिक सभा है? (१९००) ११ इबतालुल इस्लाम १२ राजतरगिणी का उर्दू अनुवाद १३ पुरुषार्थप्रकाश (उर्दू) १४ बाइबिल इन इण्डिया (उर्दू) १५ कमालिया के हालात साबका १६ निबाही राम की मौत १७ दरबार साहब अमृतसर १८ काइनाकन जहाज की तबाही १९ तारीख शाबुद्दीन इस्लाम (१९२१) २० क्या हजरत ईसा दीवाना था? (१९२२ ई०)

निम्न सूची प्रकाशित ग्रन्थो की है—१ प० लेखराम की शहादत लेखराम मेमोरियल कमेटी द्वारा १८९७ मे छपी २ प० लेखराम की कुरबानी के नतायज (३) मिर्जा कादयानी और उसके इलहामात ४ मिरजा साहब की पेशीन गोइया ५ मिरजा साहब और प० लेखराम का मुकाबिला ६ मिरजा साहब की बेजा शेखिया ७ खुदा और शैतान का मुकाबला ८ स्त्री शिक्षा ९ सच्चा दान रहेमान प्रेम देवी सोसाइटी मुलतान द्वारा १९०२ मे छपी) १० यज्ञ और कुरबानी ११ ब्रह्मचर्य की अजमत १२ ओम की माहियत १३ लडका या लडकी १४ दीबाचा सस्कारविधि (सख्या १० से १४ तक मनुष्य सुधार प्रेस मुलतान से १९०२ मे छपी) १५ सस्कार दर्पण १६ भारत से हमें क्या शिक्षा मिलती है? १७ नवजीवन शिक्षा (डा० कावन की पुस्तक का अनुवाद) १८ हिन्दू कौम मर रही है। १९ ब्रिटिश राज्य की बरकते (१९१९) २० महात्मा गाधी का पैगाम (१९२२) २१ तालीम व कौमियत (१९२१) २२ चर्खे की करामात २३ चौके की करामात २४ चक्की की करामात २५ दरामद बरामद तिजारत हिंद २६ वेदो का महत्त्व (१९२४) २७ सस्कृत भाषा का महत्त्व २८ हिन्दू जाति की अवनति के कारण २९ हिन्दू सगठन।

मेहता जी अपनी यात्रा विषयक पुस्तको के कारण विशेष रूप से स्मरण किये जायेंगे। उन्होंने अपनी विदेश यात्राओं के सस्मरणों को निम्न पुस्तकों मे लिखा—१ मारीशस यात्रा २ स्यामदेश की यात्रा (१९२७) ३ फीजी देश की यात्रा ४ दक्षिण अमेरिका की यात्रा तथा वैदिक धर्म प्रचार ५ पाताल देश की यात्रा (१९३०) ६ उत्तरी अमेरिका की यात्रा ७ जापान दर्शन (१९३०) ८ इण्डोनेशिया की झाकी (१९३१) ९ दक्षिण अफ्रीका की यात्रा तथा वैदिक धर्मप्रचार ९ विदेशों में आर्यसमाज के प्रचार का प्रभाव (१९२९) ये सभी ग्रन्थ प्रेमी प्रेस मेरठ अथवा प्रेम पुस्तकालय एव आर्य पुस्तकालय आगरा से छपे। आपके द्वारा रचित कतिपय अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं—१ अमेरिकन लेडी व भारत माता इसमें मिस कैथरिन मेयो रचित मदर इण्डिया पुस्तक का उत्तर है। २ जगद् गुरु भारत, ३ दयानन्द का ससार पर जादू, उपनिषदो का महत्त्व ५ जावा मे पाषाण चित्र लिपि रामायण ६ ससार का आगामी धर्म क्या होगा? आपने उर्दू मे निम्न ग्रन्थ लिखे—१ अमेरिका के दिलचस्प हालात २ अमेरिकी लेडी ३ न्यूजीलैंड व अमेरिका ४ जगद्गुरु भारत ५ जाइन ए जापान ६ इण्डोनेशिया ७ औरगजेब की जिंदगी का रोशन पहलू ८ आर्यसमाज का महत्त्व ९ वेदों का महत्त्व। अग्रेजी मे आपने Vedic Mission in Gentral America पुस्तक लिखी तथा प० हरिप्रसाद तथा श्रीराम भारती ने आपकी विदेशी यात्राओ विवरण Vedic propaganda in Central America तथा Vedic Mission in British East Africa शीर्षक पुस्तकों में लिख कर प्रकाशित किया। आपकी कतिपय अन्य पुस्तकें प्रकाशन की प्रतीक्षा में थीं, परन्तु उनका मुद्रण हुआ या नहीं, निश्चयात्मक रूप से नहीं कहा जा सकता। इनकी सूची इस प्रकार है—१ अफ्रीका यात्रा २ मेरा यूरोप भ्रमण ३ सत्यार्थप्रकाश का फारसी अनुवाद (यह अनुवाद १९३२ में तैयार हुआ) ४ सदेश जैमिनी ५ चोरखा ६ वेदमन्त्रो की व्याख्या ७ वेद में पितृ, अग्नि, वरुण की व्याख्या ८ शराबखोरी के भयानक परिणाम।

मेहता जी द्वारा रचित तथा प्रकाशित कुछ अन्य छोटी पुस्तिकाओ का उल्लेख इस प्रकार है—सस्कार महत्त्व, क्या वृक्षो में जीव है? नामकरण सस्कार, चूडाकर्म सस्कार। मास विरोध मुक्ति या निजात। आपने आर्य धर्मरक्षक पत्र लाहौर का सम्पादन किया। १९०२ मे मुलतान से मनुष्य सुधार नामक एक अन्य पत्र प्रकाशित किया जो १९०० तक चलता रहा।

—डा० भवानीलाल भारतीय

वेद प्रचारार्थ साइकिल रैलियों का आयोजन

२६ सितम्बर

नई दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के सयोजन मे "वेद-प्रचार व राष्ट्रीय-एकता साइकिल रैली" (दिल्ली से गुरुकुल एटा) का उद्घाटन २६ सितम्बर को कमला नेहरू पार्क पुरानी सब्जी मण्डी मे आर्यनेता श्री रामनाथ सहगल ने किया। उन्होने युवाशक्ति का आह्वान किया। वे देश की दुर्दशा, युवा पीढ़ी के भटकाव, भ्रष्टाचार के विरुद्ध जनमत जागृत कर धर्म का मर्म जन-जन तक पहुचाए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे शराब, गो-हत्या एव अग्रेजी के विरुद्ध अभियान चलाने का सन्देश दिया। उन्होंने कहा देश व धर्म की रक्षा के लिए सामाजिक कुरीतियों को दूर करने की नितान्त आवश्यकता है।

इस अवसर पर प० यशपाल 'सुधांशु' युवा विद्वान् ने "यज्ञ" सम्पन्न कराया व युवाओं को राष्ट्रीय एकता की शपथ दिलाई श्री अनिल कुमार आर्य, चन्द्रमोहन आर्य, ब्र० राजसिंह आर्य, ब्र० विश्वपाल जयन्त, श्री धर्मवीर के नेतृत्व में "साइकिल रैली" का शुभारम्भ हुआ।

२ अक्तूबर

दिल्ली। वेद प्रचार साइकिल यात्रा समिति की ओर से दिनांक २ अक्तूबर को प्रात १० बजे यज्ञोपरान्त, आर्यसमाज दीवानहाल, दिल्ली से हरिद्वार तक एक साइकिल यात्रा आयोजित की गयी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आज से लगभग सवा सौ वर्ष पूर्व हरिद्वार मे पाखड खण्डिनी पताका फहराकर सोई हिन्दू जाति को जगाया था। आज फिर से पाखड, अन्धविश्वास और कुरीतियां फैलती जा रही हैं। अत इनके विरुद्ध जनमत तैयार करने तथा सार्वदेशिक सभा द्वारा घोषित त्रि-सूत्रीय कार्यक्रम को जन-जन तक पहुचाने के उद्देश्य को सम्मुख कर आर्यवीरों के दल ने यह साइकिल यात्रा की। यात्रा का शुभारम्भ आर्यसमाज दीवान हाल के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कराया।

जीवन-प्रशंसा का स्रोत—हमारा अन्तर्बोध

—देवनारायण भारद्वाज

मनुष्य करुणानिधान परमात्मा से अपनी रक्षा, ऐश्वर्य एवं जीवन के लिए सदैव प्रार्थना करते रहते हैं। साथ ही संकट के घिर जाने पर उसे पुकारते हैं। हम यह भी चाहते हैं, कि वह हमारी पुकार को अनसुनी न करदे। पुकार को शीघ्र सुनकर तत्काल सहायता के लिए आ जावे। संसार में कोई संरक्षक हमारी सहायता तभी करता है, जब वह हमें उसका पात्र समझ लेता है। कोई कितना ही पुकारे, रात-रात भर जग कर कीर्तन करता रहे जैसा कि बहुधा नशे में धुत होकर लोग रात भर ध्वनि विस्तारक यन्त्रों से शोर मचाते देखे जाते हैं— यदि वे कुपात्र हैं तो सुनवाई संभव नहीं है। संकट में पुकार सुनकर परमात्मा या संरक्षक कोई भी आकर उस समय हमारी रक्षा करने के साथ साथ हमें आगे के लिए सतर्क भी कर देता है। यह बतलाता है कि यदि मुझे बुलाना या प्राप्त करना है या अपना जीवन सफल बनाना है तो पुकारकर्त्ता को क्या करना चाहिए ? उसे कैसे सुपात्र बनना चाहिए। प्रस्तुत मन्त्र हमारी इसी गुत्थी को सहज ही सुलझा देता है—

> तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमान-
> स्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
> अहेळमानो वरुणेह बोध्युरु
> शंस मा न आयुः प्रमोषीः ॥
>
> ऋ० मं० १ सू० २४ मं० ११

शब्दार्थ— (तत्) उस (त्वा) आपको (यामि) प्राप्त होता हूं (ब्रह्मणा) वेद से (वन्दमान) स्तुति करता हुआ (तत्) उसकी (आशास्ते) आशा करता हूं (यजमान) श्रेष्ठ कर्म करने वाला मैं (हविर्भिः) शाकल्य आदि से (अहेळमानः) निरादर अनसुनी न करते हुए (वरुण) हे सर्वव्यापक प्रभो (इह) संसार के शुभ कर्म रूपी यज्ञ में (बोधि) बोध कराओ, अनुभास कराओ (उरुशंस) सर्वथा प्रशंसनीय (मा) मत (न) हमारे (आयु) जीवन को (प्रमोषी) असमय में नष्ट करो।

भावार्थ—हे सर्वव्यापक प्रभो ! मैं वेद के मार्ग से आपको प्राप्त होता हूं, आपकी शरण में आता हूं। आपकी स्तुति करता हुआ शुभ कर्म करने वाला अपने शुभ कर्म रूपी शाकल्य के द्वारा आप से आशा या कामना करता हूं कि आप मेरी भावना को अनसुनी न करें, और मेरे शुभाचरण रूपी यज्ञ में मुझे ये कर्म किस प्रकार करने चाहिए इसका बोध कराएं, जिससे मैं सरलता पूर्वक शुभ मार्गगामी बना रहूं। हे सर्वथा प्रशंसनीय प्रभो ! आप मेरे जीवन को असमय में नष्ट न करें, जिससे मैं पूर्ण आयु प्राप्त करके अच्छे आचरण द्वारा अपने जीवन को सफल बना सकूं।

इस मन्त्र के द्वारा भक्त एक मनोहर प्रार्थना अपने इष्ट परमात्मा से करता है—हे वरुण सर्वव्यापक प्रभो ! वही तो आप हैं, जिन्हें मैं खोज-खोज कर हार गया, पर जब वेद से ज्ञान मिला तब मुझ में एक कार्य कुशलता आई। जिससे मैंने आपका स्मरण और अभिवादन किया तभी आपको प्राप्त कर सका। आपकी वन्दना करके अपने सुख की आस लगाई। शाकल्य इकट्ठा करके मैंने यज्ञ किया फिर कभी आपका अपमान या अनादर न करने का निश्चय किया। आप से बड़ा प्रशंसनीय कौन है ? आप ही हमें वह बोध प्रदान कर जिससे इस संसार में हमारी आयु व्यर्थ मत जाये अपितु आत्मा को प्रकाशित करते हुए बढ़ती ही रहे। इस मन्त्र में पांच स्तरीय जीवन निर्माण कला का समावेश है। वे हैं—ब्रह्मणा वन्दमान, यजमान अहेळमान और उरुशंस जिनमें क्रमशः प्रभु, प्रभु से आशा, हवि, बोध और आयु प्राप्त होते हैं। इन पांचों अवयवों का पृथक् पृथक् महत्त्व है, पर वे मिलकर एक ऐसा सूत्र बनाते हैं, जिससे जीवन की सफलता सुनिश्चित होती है। इतना ही नहीं एक अवयव का सदुपयोग करके दूसरा अवयव, दूसरे के सदुपयोग से तीसरा अवयव, तीसरे के सदुपयोग से चौथा अवयव और चौथे के सदुपयोग से पांचवां अवयव स्वतः ही प्रकट होने लगता है। इस मन्त्र में निहित सूत्र उस वृक्ष के समान है जिसका हर भाग जीवन निर्माण के उपयोग में आता है। जड़, तना, पत्ती, फूल और फल, इनके गुण पृथक्-पृथक् औषधियों के रूप में मानव के भिन्न-भिन्न रोगों का उपचार कर सकते हैं। इस प्रकार हमें एक ही वृक्ष से पांच औषधियां प्राप्त हो गईं। इतना ही नहीं इन पांचों औषधियों को निश्चित अनुपात में मिलाकर एक अन्य औषधि भी बन सकती है। जड़ से तना, तना से पत्ती, पत्ती से फूल, फूल से फल का निर्माण होता है। जब बीज का अंकुरण होता है, तब नन्हीं-नन्हीं पत्तियां निकलने लगती हैं। पर उनका आकार उनसे भी नन्हा बना होता है, जो बाद में बड़े आकार का हो जाता है। जिस प्रकार जड़ें भूमि से रस को प्राप्त करती हैं, तना उस रस को वहन तो करता है, परन्तु रखता नहीं पत्तियों को स्थानान्तरित कर देता है। इन्हीं पत्तियों में रस का परिपाक होकर सम्पूर्ण वृक्ष के हर भाग को वितरित हो जाता है। जिससे उसमें फूल आते हैं, और इन्हीं फूलों से मिष्ट और स्वादिष्ट फल टपकने लगते हैं। इसी प्रकार वेद से हमें वरणीय प्रभु का ज्ञान होता है हम उसके समीप पहुंचते हैं। यही ज्ञान हमें वन्दनशील बनाता है और हम अपने प्यारे प्रभु का अभिवादन करते हैं। अभिवादन को सुनकर प्रभु पूछता है—बोलो क्या चाहिए ? तभी हम अपनी कामना प्रकट करने लगते हैं। जैसी कामना होती है उसी के अनुरूप सामग्री एकत्र कर हम यज्ञ प्रारम्भ कर देते हैं, और यजमान बन जाते हैं। वेद ने जड़ के समान कार्य किया प्रभु ने रस को प्राप्त करा दिया वन्दना ने तना के तुल्य कार्य करके उस रस को कामना के आकर्षण से कहां पहुंचाया। जहां उसका परिपाक होना है। जैसे पत्रों में वृक्ष का भोजन बनता है वैसे ही यज्ञ में प्रभु रस का परिपाक होकर हविष्य का निर्माण हो गया। आपने उस वृक्ष को भी देखा होगा जो कुछ बढ़ने के बाद असमय में सूख गया। किसी कीट या व्याधि के कारण ऐसा हुआ। जड़ से पत्ती तक जाने वाले रसप्रवाह में बाधा आ गई। यदि यज्ञ से हविष्य प्राप्त करके हम प्रभु के आदिष्ट नियमों का उल्लंघन या अवहेलना करने तो हमारा जीवन भी असमय में नष्ट हो सकता है और यदि हम अवहेलना नहीं करेंगे तो हमें निरन्तर बोध प्राप्त होता रहेगा और हम प्रशंसनीय होकर अपनी सम्पूर्ण आयु को विनष्ट होने से बचा लेंगे। जड़ तना पत्ती कितनी ही स्वस्थ रहें, किन्तु फूल आने पर ही वृक्ष की सुगन्धि और शोभा होती है। फूल आ कर झड़ने लगे तो निराशा छा जाती है। परन्तु सभी प्रकार से सुरक्षित रहकर जब वृक्ष फूलों से लद जाता है तो सर्वत्र उस वृक्ष की प्रशंसा होने लगती है और निराशा आशा में बदल जाती है।

इस मन्त्र में जो वरुण का प्रयोग हुआ है—वह केवल परमात्मा के लिए ही नहीं है। रूपान्तर से वह शासक-कुलपिता, माता, आचार्य या अन्य सभी देवों के लिए भी है। वह हमारे वरणीय चयन करके निर्धारित किए लक्ष्य के लिए भी है। ऋषिवर ने सत्यार्थप्रकाश में कहा है विद्वानों का सत्कार करना, माता-पिता, आचार्य, अतिथि, न्यायकारी राजा और धर्मात्मा जन, पतिव्रता स्त्री और स्त्रीव्रत पति का सत्कार करना देव पूजा कहाती है। इसके विपरीत 'अदेव पूजा' इनकी मूर्तियों को पूज्य और इतर पाषाणादि-जड़ मूर्तियों को सर्वथा अपूज्य समझता हूं। हम इनमें से किसी एक देव का प्रसंग लें। हम संगीत सीखना चाहते हैं तो ब्रह्मणा अर्थात ज्ञान-परिचय से किसी आचार्य को हम प्राप्त कर लेते हैं। जब उनके निकट पहुंचते तो उसे नमस्ते करते और उसकी वन्दना करते यथा आवश्यकता उसकी सेवा करेंगे सत्कार भी करेंगे तभी हम उससे संगीत सिखाये जाने की आशा कर सकेंगे। आचार्य मिले उनकी सेवा करके हमने संगीत सीख भी लिया। अब उसके परिपाक या पूर्णता के लिए हम अभ्यास में स्वयं भी व्यवहार में लाना होगा। हमें यजमान बनना होगा। जैसे यज्ञ से वर्षा होकर न केवल पर्यावरण का प्रदूषण मिटता है अपितु अन्न धन भी मिलता है। वैसे हमें इस संगीत यज्ञ आयोजन से पुरस्कार प्राप्त होंगे। यहीं पर हमें सतर्क होना पड़ेगा। अपनी इस सम्पन्नता में हम अपने आचार्य को न भूल जावें या उनको उपेक्षणीय मानकर उनके नियम नीति या आदेशों की अवहेलना न करने लगें। यदि ऐसा करेंगे तो हमारा विकास असमय में ही अवरुद्ध हो जायेगा और यदि हम ऐसा न करके उनका सम्मान बनाए रखेंगे तो हमें क्रियात्मक नये नये गुरु सूत्र मिलते रहेंगे और हमारा बोध बलवान होता रहेगा। इस प्रकार लक्ष्य पूर्ति से मिलेगी हमें प्रशंसा या कीर्ति जिससे हमारा जीवन असमय में ही नष्ट नहीं होगा। सफल और सार्थक होगा। थोड़ी या बहुत जितनी आयु होगी वह प्रशंसनीय होगी।

> ब्रह्मणा (वेद धर्मज्ञान) देव प्राप्ति,
> वन्दमान (गुण स्मरण) कामना
> यजमान (गुण धारण) हविष्य
> अहेळमान (गुणवहेलना न करना) बोध
> उरु (शंसप्रशंसा) सफल दीर्घायु जीवन।

उक्त सूत्र आपकी सफलता का मार्ग प्रदर्शित करता है। आप भक्त, मुक्त, सशक्त कुछ भी बनना चाहते हैं। इसी क्रम का अनुपालन करना होगा—इसमें किसी स्तर पर भी हुआ व्यतिक्रम आप को असमय में ही नष्ट कर सकता है। डाक्टर, अभियन्ता, अधिवक्ता, प्रवक्ता, अधिकारी, व्यापारी, उपदेशक आप कुछ भी बनना चाहते हैं, तो इसी सोपान के सहारे आप उत्कर्ष प्राप्त कर सकते हैं। एक महावीर भक्त हनुमान् के मन्दिर में पहुंच कर उनकी स्तुति करता है। 'विद्यावान गुणी अति चातुर, राम काज करिबे को आतुर।' कहकर गुणगान करता है। तो जो वह गुण उसने हनुमान के जान लिये हैं—उन्हें अपने जीवन में उतारना होगा। विद्यावान और गुणी बनकर अपने स्वामी के कार्यों

को पूर्ण करने मे तत्पर रहना होगा तभी तो स्तुति की सार्थकता है। ज्ञान एक अति महनीय प्रकाश होते हुए भी अपने आप मे अकेला रहने पर सूना रह जाता है। जैसे स्वर्ण एक आभूषण और शोभा का काम तो देता है—वह बहुत मूल्यवान भी है। पर इसकी उपयोगिता तब कही अधिक बढ जाती जाती है जब असाध्य रोगी को भस्म कर स्वर्ण औषधि रूप मे कोई चिकित्सक सेवन कराके जीवनदान दे देता है। स्वर्ण को आप जानते हैं पर उसके उपयोग को नही तो यह ज्ञान एक बोझ ही रहेगा। हम स्वर्ण को सभाल कर रखने मे अपना श्रम और समय नष्ट करते हैं। हा आपत्ति काल मे उसे बेचकर निर्वाह कर सकते है। किसी कृषक पुत्र को अपने पिता से उत्तराधिकार मे कुछ खेत मिले। उसे यह ना ज्ञान है कि उसके खेत कौन कौन से हैं—पर उनसे वह अच्छा फसलोत्पादन तभी ले सकेगा जब उसे उसके गुणो का पता भी चल जायगा। कौन सा खेत मटियार कौन सा दोमट और कौन बलुई है—उसी के अनुरूप फसल खाद पानी की व्यवस्था की जायेगी। आज अनुभवी किसानो की अवहेलना न करके उनके अनुभवो से बोध प्राप्त कर कृषि क्रियाए की जायगी तो अधिक उपज होगी साथ ही साथ उसकी प्रथमा होगी और जीवन सुखी व सम्पन्न होगा।

आख कान नाक मुख त्वचा किसी वस्तु का ज्ञान करा सकती है। किन्तु उसकी वास्तविक अनुकूलता या उपयोगिता बुद्धि के बोध द्वारा ही हो सकती है। भ्रमण पर जाते समय नय लगाये छोट से वन के पास जीप रुकी। वन म कुछ हिरन भी पाले गए थ। उनकी रक्षा के लिए पटल पर अग्रजा मे एक वाक्य लिखा था—डू नॉट किल द डियर। इसका हिन्दी मे अनुवाद किया था—एक हिरन को मारना पाप है। शब्दानुसार अनुवाद मे कोई कमी न थ पर इसके अर्थ ने भाव का लोप कर दिया था क्या एक हिरन का मारना पाप है अनेक को नही। हिरन को मारना पाप है—अनुवाद भी उद्देश्य को पूरा कर सकता था। इसलिए शब्द ज्ञान के साथ साथ शब्द बोध भी आवश्यक है।

तीन चित्रकार एक राजा के पास पहुचे और दरबार मे उसका गुणगान और वन्दना करन लगे। उन्हे उससे पुरस्कार की आशा जो थी। राजा बड़ा वीर और निशानेबाज था। वह दुष्टो से अपनी प्रजा की रक्षा भी करता था। राजा ने कहा सभी चित्रकार हमारे अतिथि हैं। हम सबका भरण पोषण तो करेंगे ही पर जो हमारा चित्र बनाकर उसके नीचे सत्यम शिवम सुन्दरम लिखकर लायेगा उसे बहुत बड़ा पुरस्कार दिया जायेगा। दुर्भाग्य से राजा आकर्षक व सुन्दर व्यक्तित्व का रूपवान होते हुए भी बचपन मे एक आख खो चुका था। चित्रकारो के सामने बड़ी समस्या आ खड़ी हुई कि वे कैसे उसका सुदर चित्र बनायें। तीनो ने अपनी सूझबूझ से चित्र बनाए और राजा की सेवा मे उपस्थित किए। निश्चित दिवस पर दरबार मे चित्रो का अनावरण हुआ और उनका मूल्याकन किया गया।

एक चित्रकार न राजा का ज्यो यो एक आख वाला बना कर दिखा दिया था। राजा ने कहा इस चित्र मे सत्यता तो है पर सुन्दरता नही इसलिए वरेण्य नही है।

दूसरे चित्रकार ने राजा की मुखाकृति को आकर्षक बनाने के लिए उसके दोनो नेत्र दर्शा दिए थे। राजा ने कहा चित्र सुदर तो है पर सत्य नही। इसी लिए उपेक्षणीय है।

तीसरे चित्रकार ने राजा के हाथ में धनुष बाण पकड़ा कर लक्ष्य सधान करते हुए एक आख को बन्द व दूसरी को खुला दिखा कर चित्र बना दिया। राजा ने उसी चित्र का चयन कर लिया। चित्र सत्यम शिवम सुन्दरम की भाषा बोलने लगा था। धनुष बाण ने दुष्टों के सहार का सकेत जो प्रस्तुत कर दिया था और एक आख होने की सत्यता के साथ साथ व्यक्तित्व की सुन्दरता भी थी। पुरस्कार का अधिकारी यही चित्रकार हो गया। चित्र बनाने का ज्ञान तो तीनो को था किन्तु परिस्थिति का बोध तीसरे चित्रकार को ही था।

एक ही दृश्य से अपने मनोभाव के अनुसार व्यक्ति पृथक पृथक निष्कर्ष निकालते है। चलचित्र की कहानियो मे चाहे जितना मारधाड़ अश्लीलता अपराध हो उनमे कुछ शिक्षा भी होती है। शिक्षा कुछ ही व्यक्ति सीख पाते हैं। अपराध के नये नये ढग अधिक लोग सीख कर उनका प्रयोग कर बैठते हैं। पकड़ जाने पर समाचार की सामग्री बनते है। वाक्य एक ही होता है व्यक्ति अर्थ अलग कर लेते हैं। एक लड़का सब से कहता फिरता था कि मैं डाक्टर का लड़का हूँ। उसके इस डीग मारने मारने का उलाहना किसी ने उसकी मा तक पहुचा दिया। मा ने समझाते हुए कहा कि सबसे क्यो कहते हो मैं डाक्टर का लड़का हूँ। उसने ऐसा कहना बन्द कर दिया किन्तु एक दिन उसके डाक्टर पिता के मित्र आ गये। [illegible] तुम डाक्टर के लड़के हो [illegible] कल तक तो था पर आज मा ने मना कर दिया कि मैं डाक्टर का लड़का हूँ। किसी परिवार में अतिथि आये। गृहस्वामी से पूछा यह आपका पुत्र है? जैसा कि व्यावहारिक नम्रता प्रदर्शित करने के लिए लोग कह देते हैं जी आपका ही है। अतिथि ने थोड़ी देर बाद बात बढाने के लिए पुत्र से भी पूछ लिया—ये आपके पिता जी हैं?

पुत्र ने उसी स्वर मे उत्तर दे दिया—जी आपके ही हैं?

इसलिए प्रत्यक्ष ज्ञान के पीछे परोक्ष मे क्या बोध निहित है—यह समझना महत्वपूर्ण है। कही उपनिषद मे पढा था—

किसी महात्मा के विषय मे प्रसिद्ध था कि वे अपने रसायन से लोहे को सोना बना देते हैं। एक राजा ने बहुत सा लोहा एकत्र कर उनके आश्रम में जाकर प्रार्थना की कि हे महात्मन मेरे राज्य मे चलिये मेरा आतिथ्य स्वीकार कीजिए साथ ही हमारे लोह को सोना बना दीजिए। महात्मा ने कहा राजन कुछ दिन इस आश्रम का आतिथ्य स्वीकार कीजिए फिर चलेंगे। महात्मा के सत्सग से उनका वेद ईश्वर धर्म का ज्ञान बोध मे बदल गया। कुछ काल बाद महात्मा ने कहा कि राजन अब चलो आपके लोह का सोना बनाया जाये। राजा ने कहा मैं स्वय जो लोहा था अब सोना बन चुका हूँ फिर और सोने की अब आवश्यकता नही है। ज्ञान की व्यावहारिक चमक का नाम ही तो बोध है।

यह बोध हमे अपने गुरुजनो के आदेशो की अवहेलना से बचकर ही प्राप्त हो सकता है। हम किसी भी व्यवसाय मे क्यो न हो जब कोई विपरीत कार्य करने को उद्यत होते हैं तो अन्दर से एक सस्कार गत ध्वनि आती है कि यह अनुचित है इसे मत करो कई बार ध्वनि आने पर भी हम इसकी अवहेलना कर देते हैं तो फिर वह आनी बन्द हो जाती है और हम विपरीत कार्य के अभ्यस्त होकर व्यसन के वशीभूत हो जाते हैं। जो इस ध्वनि को सुनकर सावधान हो जाते हैं, वे यशस्वी बनते हैं। प्रशसा के पात्र होते हैं।

शास्त्रो मे ठीक ही कहा है—जिसकी कीर्ति जीवित है, वही जीवित है।

कई व्यक्ति ऐसे होते हैं जो माता-पिता की त्याग तपस्या के फलस्वरूप शिक्षित होकर आगे बढते हैं। किसी ऊचे पद पर पहुच जाते हैं। अपने उच्चस्तरीय वातावरण में वे अपने पुराने माता पिता को सबके समक्ष स्वीकार करने मे सकोच कर बैठते हैं। एक पिता मन ही मन प्रसन्न होता हुआ अपने उच्च पदस्थ पुत्र से मिलने के लिए कार्यालय मे पहुच गया—वहा उसे पुत्र ने अपना पिता नही बरेलू नौकर ही बता दिया। ऐसी अवहेलना से पिता का आशीर्वाद कैसे मिल सकेगा, और वे प्रशसा के पात्र कैसे बन सकेंगे। आयु विद्या यश और बल उसी का बढता है जो अपने बड़ों का अभिवादन करता है।

मन्त्र मे प्रयुक्त शब्द ब्रह्मणा ब्रह्म-वेद या ज्ञान के साथ साथ यज्ञ के लिए भी प्रयोग हुआ है। ब्रह्म वै यज्ञ—यज्ञो मैं श्रेष्ठतमम् कर्म के अनुसार हमे अपने जीवन को यज्ञमय बनाना चाहिए। ऋषि दयानन्द न यज्ञ की इस परिभाषा को और अधिक विस्तृत कर दिया है। सभी श्रेष्ठतम कर्म भी तो यज्ञ हैं। सन्ध्या अग्निहोत्र के साथ साथ पितृयज्ञ अतिथि यज्ञ और बलि वैश्वदेव यज्ञ सभी शुभ कर्म ही तो हैं। वैसे भी यज धातु से व्युत्पन्न यज्ञ शब्द के तीन अर्थ देव पूजा दान सगतीकरण बड़े व्यापक प्रयोजन को सिद्ध करते हैं। इन्हे हमारा जीवन प्रशसनीय होकर दीर्घायुष्य को प्राप्त होता है।

आर्यसमाज आजम गढ़
(आर्यम गढ) उ०प्र०

वार्षिकोत्सव

वैदिक योगाश्रम (गुरुकुल) शुक्रताल

वैदिक योगाश्रम (गुरुकुल) शुक्रताल जि० मुजफ्फर नगर (उ०प्र०) का पच्चीसवा वार्षिक महोत्सव आश्रम के विशाल प्रागण मे कार्तिक शुक्ला द्वादशी से पूर्णिमा तक तदनुसार १० से १३ नवम्बर १९८९ तक धूमधाम के साथ मनाया जायेगा।

महोत्सव मे अनेक वैदिक विद्वानो महात्माओ, भजनोपदेशको, केन्द्रीय एव प्रान्तीय नेताओ तथा गण्यमान्य अधिकारियो को आमन्त्रित किया गया है। इस अवसर पर—

महोत्सव के विशेष आकर्षण
सामवेद पारायण महायज्ञ
योग साधना शिविर,
आकर्षक योगासन, प्रदर्शन,
नवीन ब्रह्मचारियो का प्रवेश भी होगा।

सम्पादक के नाम पत्र–

सभी क्षेत्रों में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्ध शताब्दी मनायें।

अब से २ वर्ष पूर्व पहली बार ऋषि निर्वाण समारोह के अवसर पर अजमेर के आर्य महासम्मेलन मे 'हैदराबाद आर्य सत्याग्रह (१६३६)" मे भाग लेने वाले आर्यबन्धुओ का सार्वजनिक सम्मान किया गया था। हम ने उस समय एकमात्र मुस्लिम सत्याग्रही सैयद फैयाज अली जी को १०१ रु० भेंट किए थे। तब आर्यसमाज केसरगज ने भी उनका सम्मान किया था।

इस पहली शुरुआत के बाद इस वर्ष आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली ने इस दिशा मे हैदराबाद सत्याग्रह दिवस १७ अगस्त को ५० वर्ष पूरे होने के अवसर पर वहां पर आमन्त्रित सौ से अधिक स्वतन्त्रता सेनानियो को माला एव शाल भेंट कर सम्मानित एव दिवंगतो को श्रद्धांजलि भेंट की थी। दीवान हाल उन आर्यसमाजो मे से एक है, जो सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित आर्य पर्व-पद्धति से इस पर्व को निकाल देने पर भी उसे सदा मनाती चली आ रही है।

शोलापुर को केन्द्र बनाकर ही ५० साल पहले आर्यसमाज ने सत्याग्रह शुरू किया था और उसमे विजय के स्मारक रूप मे डी०ए०वी० कालेज की स्थापना की गई थी।

हमें आशा है कि समस्त प्रतिनिधि सभाएं एव आर्यसमाजे अपने-अपने क्षेत्र मे इस जयन्ती वर्ष मे ऐसे ही कार्यक्रम आयोजित करेगी, जिस से बलिदान की यह परम्परा आर्य युवको में ५० वर्ष पूर्व की भांति पुनर्जीवित हो सके।

—सत्यदत्त स्नातक

परोपकारिणी सभा के तत्वावधान मे

अजमेर में भव्य ऋषिमेला

४ ५, व ६ नवम्बर १६८६

महर्षि दयानन्द सरस्वती के १०६वे निर्वाण दिवस के अवसर पर अजमेर मे विशाल समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती महात्मा आर्यभिक्षुजी, दर्शनाचार्य प०उदयवीर जी शास्त्री प्रो० शेरसिंह जी—(प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा) डा० भवानीलाल भारतीय आदि विद्वान महात्मा, आर्यनेता पधार रहे हैं। डा० शिवपूजनसिंह कुशवाहा का अभिनन्दन समारोह भी सम्पन्न होगा एव देशभक्त कुंवर चांदकरण जी शारदा हिन्दी वादविवाद प्रतियोगिता भी आयोजित होगी।

ऋषि मेले के अवसर पर अजमेर से आनासागर—तट पर ऋषि उद्यान स्थित भव्य यज्ञशाला में यजुर्वेद पारायण यज्ञ, भजनोपदेश एव वेदोपदेश का आयोजन किया गया है। यज्ञ २ नवम्बर से होगा तथा पूर्णाहुति समारोह के अन्तिम दिन ६ नवम्बर को प्रात सम्पन्न होगी। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी जीवनानन्द जी महाराज होंगे।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज हनुमान रोड

आर्यसमाज हनुमान् रोड नई दिल्ली का ६८वा वार्षिक उत्सव २० से २६ नवम्बर १६८६ तक समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। इस अवसर पर ऋग्वेद पारायण यज्ञ, वेद-कथा, कवि-सम्मेलन, महिला-सम्मेलन, भाषण प्रतियोगिता, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन एव आर्य-युवक सम्मेलन होगे। इस अवसर पर आर्य जगत् के वीतराग सन्यासी, मूर्धन्य विद्वान् एव राष्ट्रीय नेता आमन्त्रित किए जा रहे हैं।

आर्यसमाज निर्माण विहार का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज निर्माण विहार दिल्ली-९२ का वार्षिकोत्सव रविवार १२ नवम्बर १६८६ को आर्यसमाज मन्दिर ए ब्लाक निर्माण विहार में बड़े समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। ६ नवम्बर से ११ नवम्बर तक रात्रि ८ ३० से ६ ३० बजे प० यशपाल "सुधांशु" के वेद प्रवचन होंगे। ७ ३० से ८ ३० बजे श्री गुलाब सिंह राघव के मनोहर भजन होंगे। १२ नवम्बर को भव्य यज्ञशाला का शिलान्यास होगा।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No 32387/77 Post in N D P.S.O. on 19 20-10-89 Licenced to post without prepayment, Licence No.
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू

ऋषि-निर्वाणोत्सव

दीपावली रविवार, २६ अक्टूबर १९८९
स्थान : रामलीला मैदान
समय प्रात ८ से १२ बजे तक

अध्यक्ष : श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती

प्रमुख वक्ता :

श्री स्वामी ज्ञानन्दबोध सरस्वती — श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती
श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती — श्री दरबारीलाल
डा० सत्यभूषण 'योगी' — श्रीमती सुनीति आर्या

इस अवसर पर स्वामी विद्यानन्द श्री द्वारा स्थापित श्री केदारनाथ दीक्षित वैदिक विद्वान् पुरस्कार डा० सत्यभूषण 'योगी' को भेट किया जाएगा।

आप सब इस श्रद्धाञ्जली सभा मे इष्ट मित्रो एव परिवार सहित भारी सख्या मे पधार कर महर्षि के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करें।

—महामन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली

महर्षि निर्वाण दिवस पर

'आर्यसन्देश' का उत्कृष्ट विशेषां

अपने सुविज्ञ पाठको की पुरजोर माग को ध्यान मे रखकर, हिक 'आर्यसन्देश अपनी गौरवमयी परम्पराओं के अनुसार आर्यस प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज के निर्वाण दि एक उत्कृष्ट लेखो से भरपूर आकर्षक विशेषाक आगामी २६ अक्टू प्रकाशित कर रहा है। यह विशेषाक नवीन तथ्यो, शिक्षाप्रद लेखो जित एव सग्रहणीय होगा।

यदि आप घर बैठे ऋषियो, आप्तपुरुषो, सन्तो, विद्वानो की सत्योपदेश पढना चाहते है तो आज ही साप्ताहिक 'आर्यसन्देश' मित ग्राहक बन जाइए और वर्ष-पर्यन्त प्रकाशित होने वाले विशि षाको को नि:शुल्क प्राप्त कीजिए।

दानशील व्यापारिक आर्यबन्धुओ से विशेष प्रार्थना है कि पन देकर आर्थिक सहयोग करें।

सेवा में—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं०१७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६